2

Emendauimus . quae corruperunt librarij, homines, consilij praecipites. quis posset unquam uitare hanc cōem tempestatem, ac calamitatē librorū? Siqua praeterita sunt, erunt huiusmodi, quae tu ipse animaduertes. quare aequū est te cognoscere, atque ignoscere. Vale. Primus numerus pagnam demonstrat. Secundus lineā.

2.46. ἀνακρουσθῆναι. 3.31. τὸ πρὸς. 7.19. ἐξεπιτοχέναι. 15.45. παραμυθώμεθα. 17.28. ἔχον. 33. παραλαβεῖν. 34.4. ἀραμμαῖα. 26. ἀποίκους. 19.2. νήσων. 3. προέχομένω. 17. δεικνυμένων. 21.12. ὡρίσθαι. 40 ἐλάθη. 23.1. ἀποθεῖσθαι 43. ῥόπος. 55. περικλύζεσθαι. 24.5. ἀναχώρησιν. 58. τεθνηκυίας. 25.5. αἰτιᾶσθαι. 30. νήριτον. 27. ἐκλάμπει. 3. μίδειαν. 26 12. ἀταλάντης. 44. ἐχρῆν. 27.37. φησὶ νήσων. ταῦτα γὰρ πάντα φησί. 46 λέγοιτ᾽. 53. διαιρεῖν. 28.31. διηκόντων. 29.37 ποντικὴν. 30.45 κομεδικῶς. 52. ῥέπει. 31.40. βόρων. 43. ὄρη. 32.12. ὡμολόγηνται, ὅτι. 42. ἀρκτικώτεροι. 45. ἤ ἐπὶ. 33.21. ὁ. 36.6 ἀκρως. 37.25. ὁρμηθεὶς. 51. σταδίων. 39.2 διάμετρος ἤ. 12. τέχνης. 25. ἐκεῖνος. 40.15. ὁρῶντες ἤδη τὸν. 18. πειρασόμεθα. 52. μετριώτερον. 41.6. ἄκρατον. 20. ῥοπικῶν καὶ τὰ. 34. πῶς γῆς εἰς. 42. διακεκαυμένης. 48. ζώνας ἐξ. 43 16. ὁ κ. 20. ἀπολλυμένους. 28. ἂν. 34. λαθεῖν. 37. ναυπηγησάμενος. 53. ὡς. 44.11. ἐνοπίων. 14. ἀσκήσεις. 30. ὑπὸ χεῖρα. 45.14 τὴν βάσιν. 44. τὰ δὲ χεῖρον. 46.23. τὸ μῆκος. 43. ἔντασιν. 47.11. τάχα. 21. δεικνύμενα. 30. προστίθενται. 31. πενταζώνον 48.12. ὁρίζων. 17. ποτέρων 36 δυναμένη. 49.25. ὡμολόγηνται. 38. οἰκεῖν. 51.1 πρὸς. 55.50. ὄρη. 56.41. μεγάλη. 57 34. τὸ πλατέρων. 48. ὁρῶν. 58.3. ὁρίζοντες. 59.24. ἀκρωτηρίου. 25. ἀκρωτηρίου. 30 ἀκρωτήριον. 60.2. ὡς. 9 παρωκεανίτιδος. 12. εὐθείας. 61.9. στάδιοι. 27. συνάπτει. 62.5. σταδίους. 24. ἐμπορίοις. 33. ταριχεία. 39 διατείνει. 50. ἀγαθοῖς. 63.7. ἀφρόταπι. 17 ἅπασα. 46 ὡραίω. 64.6. πίσαν. 39. τόπων. 50. ὑποχείριοι 65.7. μένειν. 7. γίνεσθαι. 20. ὅτι. 68.47. διατέλεσαν. 49. τόπω. 71.42. αὐται. 72.53. χοιραδώδεις. 73.3. καὶ τοῦ. 6. λελοχωμένον. 17. ῥωμαίους. 23. μέγιστα. 74. 22. στήλη. 30. δεικνύμενον. 33. τόπων. 43. στήλας, πύλας. 53. τὸ ἐντὸς 75.24. ἤ. 27. ὁρίζοντος. 42. πῶς οἴονται. 76.23. διαλάπτονται. 29. ἐσώθη. 78.15. εἰς δὲ. 16. εἰς τὰ. 22. ὄρους. 33. συναπαίρειν. 41. φιγωνίας. 51. σέκτιος. 79.11. ὑπερκείμενον. 13. αὐτοῖς. 20. σωφροσύνης. 45. ἰχθῦς. 31. ἔδωκεν. 80.37. συμμαχίμενον. 81.20. μισγόμενος. 84 34. κῶμον. 85.10. ἐκόντας. 86.6. ἀνὰ μέσον. 54 σφοδρασμοῦ. 89.41. πεζῶν. 49. διαλυθῆναι. 52. ζώνην. 90.23. ἐλευττίοις. 39. ἀποκτανθεῖσι. 48. ταπεινωθέντα. 91.6. κυλικίας. 47. ὑπώρειαν. 92.48. ἐνετῶν. 93.1 ἑξακισχιλίοις. 42. ταυρίσκων. 50. μέντοι. 94.4. ἔλεσι. 22 λαβὼν. 49. λυκοφόρος. 95.27. στάδια ᾳ. 32. πόλις. 50. παντοίως. 96. 16. μέχρι. 28. τοῦ σκοὶ προσαγορεύονται. 30. εἰς. 35. ἐπίθετο. 97.22. ὡς καὶ. 40. ᾳυλ. 98.36 ἤϊονος. 52. διαγήβρεις. 99.22. ἰούλιος. 35. γεων καὶ τὸ 42. ταύτης τε. 44. νικήσας. 46. διωνόμασται. 100.49. ἡ μιόνων. 101.7. δεῖ. 15. δολοφονηθέντος. 103.16. ἑξαστάδιον. 104.22. ὑπερβᾶσα. 46. ὁ λείρις. 47. ῥίζαν. 107.47. κῦμα. 109.14. κατακλύσαι. 111.24. ἀποκρυφθέντας. 112.53 ἀλείμματα. 113.44. καὶ ἐκ. 114.47. ἦν. 115.51. διαχρώσαντο. 117.18. αρλ΄. 120.17 θεωρῶν. 121.27 ἐκτὸς. 122.20. ἔχουσι. 24. τὴν ἐν. 123.4. ἐξίχνουν. 124.16 ὁρῶν. 36. ὕεται. 51. αστ. 127.29 ἐξαλλάττοντος. 32. γαλάτας. 128.12. ἐξακοσίους. 31. ἠνωμένας. 38. ἔλη. 53. ὑπηργμένων. 130.30 ἀρχεμάχων. 32. μετωνομάσθαι. 131.3. ἐμψύχων. 37. αἰχύλος. 132.26. ὑπελαμβάνοντο. 133.2. ὀρτυγῶν. 14 ἄρμενον. 21. μετῴκησεν. 47. ἤ. 134.46. διακείμενος 136.11. δέ τι. 16. τὸ σῶμα. 27. ἔχον. 29. ταῦροι. 137.44. ἀκυλητίας. 139.13. κύκλον. 48. ὀρεινοῖς. 141.49. στρυμόνος. 144.31. τὴν παρὰ. 151.34. πύλον. 152.4. ὁρᾶσθαι. 153.17 ἀρχαδικὸν. 155.8. ἐντεθεῖσαι. 44. καὶ αὐτὸν. 52. πισάτιδος. 156.12 θεῖον. 18 φηραίαν. 31. ἠλείαν. 157.53. φηραία. 158.8 ἕλη. 159.36. ὁμορεῖν. 160.26. πρόσω. 47. φηρῶν. 48. τὴν πόλιν. 161.7. ὅμως. 25. μέρη. 41. εἰδέναι. 162.11. λέγουσιν ἡ δὲ λέγει. 38. μυκήνας. 44. ἐχούσας. 163.9. ἐκκυμαθεῖσαι. 21. ἱκέτας. 49. πελοπίδης. 164.36. καὶ τὸ μὴ. 53. μαλέαν. 165.10. πλεύσιν. 12. ἐξανηλίσκοντο. 30. κόρινθον ἱερὸν ὄχθον 36. νιφοβόλα. 48. ἀκρωτήριον. 50. ὑιόνος. 51. πιτυώδη. 166.47. ὕβριν. 53. συμβέβηκεν. 168.12. καταπεφάνησαι. 169 31. σεισμοῦ. 170.1. ἐνάτῳ. 172.20 ἀντιπαρωδῆσαι. 173.43. μακεδόνων. 176.27 ἀστράψει. 52. γράφει. 177.8. προκληθέμενα 178.42. λέγων. 180.51. ἀποικῆσαι. 182.7 λεχθεισῶν χωρῶν τε. 22 ἐπικαιροτάτη. 47. θησαυροὶ οὓς κατεσκεύασαν. 185.33. στρατείας. 50. ὠνόμασται. 186.3. ὠνόμασται. 16. πίνδος. 187.30. μελιακοῦ. 188.14. εἰπόντος. 42. πρὸς τῷ 189.50. τιμᾶται. 190.4. λέγεσθαι. 15. τυραννίδος. 54. ἀθηνᾶς. 191.33. ἐξικόμην. 192.14. ὕλη. 196.54 ἑβδομήκοντα. 197.53. ἁλιᾶσι. 198.23. ὁμωνυμοῦσα. 196.25. φᾶναι. 200.25. παρακειλῶτιν. 33. ἀμαλθείας. 53. εἶτα ἄκρα. 201. 36. ἅλμα. 202.11. ἐπί τε τοῦ. 32. μνησχάρμαι. 203.14. κυρῆτιν γῆν δορὶ. 204.1. κυρῆτας. 28. ἐτυμολογίας. 47. ὑμνητικὴ. 205.25. ὦ. 206.32. κτίσιν. 208.17. ἐταπεινώθη. 28 ἐτύγχανεν. 209.7. καταλυθέντος. 47. ἐδυναστευσεν. 210. 4. ἐλευθερίας. 26. ἐπισπᾶσθαι. 37. ὀνομᾶσθαι. 50. τυχόντα. 212.1. τότε. 31. τεθεῖσαι. 213.40. καλύμματα. 214.6. συνοίχοις. 205.5. ὁρμήσει. 216.41. οἰκῆσαι. 218.42. ἐξίησιν. 49 ἔχουσιν. 219.11. τὸν πόρον. 221.14. κυνικὸν. 223.14 παρωχυκάσας. 224.12. dele καὶ. 16. ἀναφέχουσων. 225.45. ὁρίζει. 226.10. ἤ. 17 θρύπτοντες. 38. ὥστ᾽. 227.6 ὡς πόνων. 19 μακροκεφαλότατοι. 25. πολλὴ. 29. δείκνυσιν. 228.32. εἴτις. 229.20 ἀλωτὸς. 230.4. κρίασι. 38. δρῶν. 41. περιεχούσας. 225.43. μίμησιν. 45. μαρτυρεῖ. 234.3. τῇ σοφήνῃ. 30. ἐχούσας. 53. ἐννυνάσεις. 239.16. ἐλευθερώθη. 240. 24. ἔχει. 247.3. τὰς ἀμαζόνας. 49. δολοφονηθέντος. 242.13. φάραγγα. 26. ἱερουργιῶν. 248.13. τὸ τε. 30. γαριαθύρων. 250.11. ἀγορανομίας. 251.52. ἰὼ. 255.44. ἔλαβε. 256.2. ἔναιεν. 39. λέσβος. 258.9. λοκολώνη. 259.31. τούτους. 43. ἕων ἐν. 261.53 σκαμανδρίῳ. 262.8. ἐπίδρομον. 29. γέναι. 264.18 δεξιᾷ. 40. κεβρήνη. 54. δεικνύμενα. 265.6. ἐπόψει. 22. ἤνοπι. 267 17. κατασκευάσαι. 44. ἀπαρτᾶται. 268.36. ἐρυσίβην. 43. ὑληίαν. 45. ἀνδύρων. 271.1. πόρδακον. 272. 36. ἐκεῖνος. 274.17. ὁ τόπος. 49. γένους. 275.33. ἐχούσας. 277.28. ἔκτισεν. 32. βωμὸς. 44. ὤκει. 279.10. μέσων. 27. ἀρίστους. 40 προμαθῆναι. 54. ἐπιγράμματος. 280.29. τῷ τόπῳ. 38. κατακλῦσαι. 54. δεξιῶν. 281.41. ἐπελθεῖν. 282.10. κατοικεῖται. 14. κἀκεῖνος. 18. καθὸ. 284.45. ἀπαλειμμένοι. 47. μεσογαίαν. 285.18. ἀσφάλας. 36. χρῆσθαι. 43. φιλορωμαίοις 287. αἰτιᾶσθαι. 288.8. θεραπειῶν. 49 ἀκροασάμενος. 289.23. συγκεκλεισμένοις. 39. ἕλληνας. 42. βαρβαροφώνων. 290.30. χελιδονίων. 291.39. ἐχούσας. 292.24. ὑπερθέντας τοὺς μὲν ἐν παμφιλίᾳ τοὺς δ᾽. 293.8. τραχὺς. πλατανιστὸς. 25. ἤκω. 294.41. παχυνανοῦσι. 295.7 ἐφωράθη. 296.26. κατοικεῖσθαι. 297. τὰ ὀρύγματα. 302.49. τῇ μυσικῇ. 303.38. γενέσθαι. 304.11. πολύρριζον. 22. λιπόντων τὸ. 39. ἐπιεικαῦσθαι. 305.49. διηγοῦνται. 306.44. παροικοῦνται. 307.9. δίδονται. 310.9. διαιτᾶσθαι. 33. γυναῖκες. 311.17. παραινέσεις. 29 τοὺς βιβλίους. 312.17. ὄχλῳ τε. 52. συμβαλεῖσαι. 316.34. ἐπ᾽ ἧς. 317.3. οἱ νῦν. 12. ὤρισκεν. 17. περσικοῦ. 320.37. ὁπλοποιεῖν. 40. τιμὴν στρατεύσι. 321.10. πλοῦτον. 322.39. ἐρήμου. 326.26. τίγριος. 32. τίγρις. 49 αὐτοῖς. 328.25. διεχύσης. 335.11. φύεται. 45. ἔνδοσιν. 336. 23. ἀφροδίτης. 338.52 καταρχὰς. 342.31. ἕως Ζήνων. 344.47. χώρας. 49. συνάγεταί τε καὶ διαχεῖται. 345.25. ἐρυθρᾷ. 346.28. ἐδάφους. 49. συνεχὴς. 343.35. καὶ οἱ. 52. ἔλεσι. 350.25. ἐκκρύψει. 352.50. ἐπὶ τὸν. 353.46. ἐσύναπαι. 354.38 ἔργον ὑπὲρ καὶ. 356.19. ἐπισκοποῦντες 27. ἦ κατὰ. 358.7. οἱ κῶες μικροὶ. 361.29. ἑξήκοντα 363.11. θεράπαιναι. 348. μὲν πέμπει.

Benedictus Tyrrhenus Alberto Pio Carporum Principi. S. P. D.

Ex multorum sermone animaduerti Alberte Pie · incredibilem suauitatem, cum tui ingenij, tum morum. Atque adeo te omnem laudem ducere, ac omnem commendationem, uel à rerum omnium prudentia, uel ab animi beneficentia. Tum id ipsum perdidici ex literis Aldi Manutij · quas ad te scripsit, paucos ante annos, quàm migraret è uita, Hæ enim in lucem prolatæ sunt ac leguntur perspicua quadam admiratione omnium hominum. In quibus multa commemorata sunt de te cum magnifice, tum prudenter. Cuius quidem uiri immaturo interitu optimus quisq; non potuit non dolere uehementer. Occidit enim Sapientiss. Vir, alienissimo tempore omnium bonorum. Occidit cum uiris bonis suarum laudum gloria perfrui licuisset, ac iam pateret aditus ad omnes honores, tum cum amissa ornamenta repararentur latinæ linguæ. Neq; uero ullum tempus fuit iam inde à perdita re Romana, quo maiora incrementa ceperit dicendi uirtus, quàm quæ consecuta sunt uiuente Aldo. nimirum huius laboribus multis, atq; autoritate perfectum est, ut hæc studia uirtutum colantur uehementius in orbe terræ. Nihil enim unquam loci relictum est à sapientiss. uiro, uel socordiæ uel inertiæ, ad reparanda amissa omnia eloquentiæ ornamenta. De quo præclare dicere possemus quod de Augusto dictum accepimus, qui fuerit urbis suæ Romæ altricis, atque matris aureus partus. Sed omnis ille honos, quem ex tanta re est consecutus, consecutus est autem quamamplissimum, magna ex parte in te ipsum redundat. Ita enim semper laudato uiro probitas tua, ac singularis uirtus est uisa admirabilis, ut illa gloria, quam adeptus est dicendo, omnis illi parta sit ex tuarum laudum excellentia. Quæ tantum commodorum ætati nostræ attulerunt, ut non unius tantum uiri sapientiæ fuerint initia, sed totius urbis Romæ felicitatis. Iamuero, extincto lumine totius Græciæ, quod quidem per Aldum reuixit, non'ne & hæc liberalitas tua, in Græciam late patuisse uidebitur? Non modo suscipiendorum laborum tua uirtus fuit causa, ad quos illum conuertit Italiæ salus, uerum etiam uirtutis, ac omnium honorum, quos Vir ille egregius adeptus est. adeptus est enim omnem laudem ac omnem summam gloriam. Hæc tamen laus, ac gloriæ splendor à tua uirtute, quasi bonorum omnium parente ad illũ confluunt. Quápropter non mihi minus prudenter quàm eleganter dici uidetur, quod in ore sæpe est Andreæ Asulani, cum à te ad bonos omnes tot commoda uenerint. Nam, inquit si quicquam boni est, hac ætate, qua incidimus in tot mala, nimirum te esse huic rei caput. Ego equidem harum uirtutum beneficio prouocatus, planè mihi gloriosum fore arbitrabar tentare siquis aditus pateret ad amicitiam tuam. præstò fuit, atq; adiuuit initam animi rationem Fortuna. Tum huius beneuolentia perfectum est, ut ambirem tuum studium, ea animi uirtute, quæ in te tanta est, ut non modo humana, uerum etiam diuina in ea, commendatio esse deberet. Itaq; sub tuo nomine referre uolui in apertum, quæcunq; descripta sunt ab Aldi librarijs monumenta Strabonis Philosophi, & scriptoris locorum omnium, ac omnium gentium. Hæc una occasio sese obtulit, quæ est uisa maxime omnium apta, ad tuam beneuolentiam comparandam. Neq; ullum ante tempus fuit, ad id quod iandiu paro, mihi magis expetendum, quàm hoc inquam ipsum. Quo tempore consultum est, non minus uoluntati meæ, quàm Diuini Philosophi ornamento. Qui enim honestus iste labor, ac exquisita Strabonis eruditio, si uirtuti honos sit, maioribus unquam præmijs potuisset decorari, quàm uirtutis tuæ excellentia? Mihi uero nunquam sum uisus quicquam uel sensisse prudentius, uel fecisse honorificentius. Nam si ad hanc locorum peritiam, quam inquirit Strabo, opus est usu, ac rerum diuinarum scientia. hæc animi ornamenta, in quo homine summa sunt? Certe in te uno eximia sunt, ac præclara hæc munera diuinarum literarum. Tum quæ à me animi ratio suscipi unquam potuerit, quæ maiorem laudem mereretur, quàm quæ suscepta est deliberatio, uiro regio hæc monimenta dicandi? Quid enim tam regale est, quàm locorum, ac gentium peritiam habere? per quam reges, ac uiri Regij cognomina sapientum adepti sunt, ac ita adepti, ut nulla ætas posthac sit tacitura de illorum sapientia. Hæc etiam res non modo est ad amplificandam gloriam, sed etiam ad propagandum imperium, atq; constabiliendum. Cuius quidem dignitatem sustinere, ac ornamenta conseruare, non modo regum est, sed imperatorum. Nemo igitur est, qui non approbare possit, hanc dedicationem tibi factam fuisse auspicato. Nunc illud silentio præteriri non potuit. mihi dubiũ non esse quin in emendando potuerim errare. Res sic est, ut sine aliquo mendo scripturæ esse non possit, quamuis accurate ageretur ab exquisitissimis iudicijs, & à uiro prudenti, ac q se exercuerit in hac arte omne ætatis suæ tempus. propter imensum laborem, ac artem lubricam. Quá quidẽ ego soleo comparare cũ re rustica. Diligens Agricola q cupide agrũ colat. tametsi non parcit operæ, neq; satis unquam habet agrum excolere, alio item die si reuisit agrum, semper quo pacto nitere possit animaduertit. Quanquam id studium in quo occupati sunt Agricolæ, minus periculosum est, ac minus inuidiosum. Cum terra enim illis habenda ratio est. quæ parens est omnium, atq; altrix. Sed qui præsunt huic negotio, cum partu terræ nefando. Huiusmodi sunt isti librarij, qui interturbant omnia, ac commiscent. nihilq; non faciunt, ut omnia nimis mature conficiant. Sicuti solet fieri in re rustica. nec plus censent se sapere quàm dominum. Contra euenit in hac re nostra, quam si serò feceris, bene facias necesse sit. Proinde siquod mendum scripturæ animaduersum erit, nemo me onerare debet maledictis. in qua enim re mihi odium excitaui? præsertim cum nunquam defuit uel mea fides, uel meum studium. Errato sit oro uenia, si in tanta festinatione, aliquantum delapsi sumus. & pro communi in bonas artes beneuolentia corrigant boni uiri. Recto autem (erunt omnino quæ iure, ac merito laudari poterunt) nulla laus expetitur, sed tua tantum erga me beneuolentia. Vale.

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ

## ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΡΩΤΟΝ.



Ἡς τοῦ φιλοσόφου πραγματείας εἶναι νομίζομεν, εἴπερ ἄλλην τινὰ, καὶ τὴν γεωγραφικὴν, ἣν νῦν προῃρήμεθα ἐπισκοπεῖν. ὅτι δ' οὐ φαύλως νομίζομεν, ἐκ πολλῶν δῆλον. οἵ τε γὰρ πρῶτοι θαρρήσαντες αὐτῆς ἅψασθαι, τοιοῦτοί τινες ὑπῆρξαν, ὅμηρός τε, καὶ ἀναξίμανδρος ὁ μιλήσιος, καὶ ἑκαταῖος ὁ πολίτης αὐτοῦ. καθὼς καὶ ἐρατοσθένης φησί, καὶ δημόκριτος δὲ, καὶ εὔδοξος, καὶ δικαίαρχος, καὶ ἔφορος, καὶ ἄλλοι πλείους. ἔτι δὲ οἱ μετὰ τούτους, ἐρατοσθένης τε καὶ πολύβιος, καὶ ποσειδώνιος, ἄνδρες φιλόσοφοι. ἥ τε πολυμάθεια, δι' ἧς μόνης ἐφικέσθαι τοῦδε τοῦ ἔργου δυνατὸν, οὐκ ἄλλου τινός ἐστιν, ἢ τοῦ τὰ θεῖα, καὶ τὰ ἀνθρώπινα ἐπιβλέποντος. ὧν περ τὴν φιλοσοφίαν ἐπιστήμην φασίν. ὡς δ' αὔτως καὶ ἡ ὠφέλεια ποικίλη τις οὖσα, ἡ μὲν, πρὸς τὰ πολιτικὰ, καὶ τὰς ἡγεμονικὰς πράξεις, ἡ δὲ, πρὸς ἐπιστήμην τῶν τε οὐρανίων, καὶ τῶν ἐπὶ γῆς, καὶ θαλάττης ζώων, καὶ φυτῶν, καὶ καρπῶν, καὶ τῶν ἄλλων ὅσα ἰδεῖν παρ' ἑκάστοις ἐστὶ, τὸν αὐτὸν ὑπογράφει ἄνδρα, τὸν φροντίζοντα τῆς περὶ τὸν βίον τέχνης, καὶ εὐδαιμονίας. Ἀναλαβόντες δὲ καθ' ἕκαστον ἐπισκοπῶμεν τῶν εἰρημένων ἔτι μᾶλλον καὶ πρῶτον. ὅτι ὀρθῶς ὑπειλήφαμεν καὶ ἡμεῖς, καὶ οἱ πρὸ ἡμῶν, ὧν ἐστι καὶ ἵππαρχος, ἀρχηγέτην εἶναι τῆς γεωγραφικῆς ἐμπειρίας ὅμηρον, ὃς οὐ μόνον ἐν τῇ κατὰ τὴν ποίησιν ἀρετῇ πάντας ὑπερβέβληται τοὺς πάλαι, καὶ τοὺς ὕστερον, ἀλλὰ σχεδόν τι καὶ τῇ κατὰ τὸν βίον ἐμπειρίᾳ τὸν πολιτικόν. ἀφ' ἧς οὐ μόνον περὶ τὰς πράξεις ἐσπούδασεν ἐκεῖνος ὅπως ὅτι πλείστας γνοίη καὶ παραδώσει τοῖς ὕστερον ἐσομένοις, ἀλλὰ καὶ τὰ περὶ τοὺς τόπους τούς τε καθ' ἕκαστα, καὶ τοὺς κατὰ σύμπασαν τὴν οἰκουμένην γῆν τε, καὶ θάλατταν. οὐ γὰρ ἂν μέχρι τῶν ἐσχάτων αὐτῆς περάτων ἀφίκετο τῇ μνήμῃ κύκλῳ περιιὼν, καὶ πρῶτον μὲν τῷ ὠκεανῷ περίκλυστον ὥσπερ ἐστὶν ἀπέφαινεν αὐτήν. ἔπειτα δὲ τῶν χωρίων τὰ μὲν, ὠνόμαζε, τὰ δὲ, ὑπῃνίττετο τεκμηρίοις τισὶ, λιβύην, καὶ αἰθιοπίαν, καὶ σιδονίους, καὶ ἐρεμβοὺς, οὓς εἰκὸς λέγειν τοὺς τρωγλοδύτας ἄραβας ῥητῶς λέγων, τοὺς δὲ πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς, καὶ δύσεσιν αἰνιττόμενος ἐκ τοῦ τῷ ὠκεανῷ κλύζεσθαι. ἐνθένδε γὰρ ἀνίσχοντα ποιεῖ τὸν ἥλιον, καὶ δυόμενον εἰς τοῦτον. ὡς δ' αὔτως καὶ τὰ ἄστρα.

» Ἠέλιος μὲν ἔπειτα νέον προσέβαλλεν ἀρούρας
» Ἐξ ἀκαλαρρείταο βαθυρρόου ὠκεανοῖο.
» Ἐν δ' ἔπεσ' ὠκεανῷ λαμπρὸν φάος ἠελίοιο,
» Ἕλκον νύκτα μέλαιναν. —

Καὶ τοὺς ἀστέρας λελουμένους ἐξ ὠκεανοῦ λέγει. τῶν δ' ἑσπερίων ἀνδρῶν, καὶ τὴν εὐδαιμονίαν ἐμφανίζει, καὶ τὴν εὐκρασίαν τοῦ περιέχοντος. πεπυσμένος ὡς ἔοικε τὸν ἰβηρικὸν πλοῦτον. ἐφ' ὃν καὶ ἡρακλῆς ἐστράτευσε, καὶ οἱ φοίνικες ὕστερον. οἵπερ καὶ κατέσχον τὴν πλείστην ἀρχήν. μετὰ ταῦτα δὲ ῥωμαῖοι. ἐνταῦθα γὰρ αἱ τοῦ ζεφύρου πνοαί. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ ἠλύσιον ποιεῖ πεδίον ὁ ποιητής. εἰς ὃ πεμφθήσεσθαι τὸν μενέλαόν φησιν ὑπὸ τῶν θεῶν.

» Ἀλλά σ' ἐς ἠλύσιον πεδίον καὶ πείρατα γαίης
» Ἀθάνατοι πέμψουσιν ὅθι ξανθὸς ῥαδάμανθυς.
» Τῇ περ ῥηΐστη βιοτὴ πέλει ἀνθρώποισιν
» Οὐ νιφετὸς οὔτ' ἂρ χειμὼν πολὺς οὔτέ ποτ' ὄμβρος
» Ἀλλ' αἰεὶ ζεφύροιο λιγὺ πνείοντας ἀήτας

Ὠκεανὸς ἀνίησι καὶ αἱ τῶν μακάρων δὲ νῆσοι πρὸ τῆς μαυρουσίας εἰσὶ τῆς ἐσχάτης πρὸς δύσιν. καθ' ὃ μέρος συντρέχει καὶ τὸ τῆς ἰβηρίας τὸ ταύτῃ πέρας. ἐκ δὲ τοῦ ὀνόματος δῆλον ὅτι, καὶ ταύτας ἐνόμιζον εὐδαίμονας, διὰ τὸ πλησιάζειν τοιούτοις χωρίοις. ἀλλὰ μὴν ὅτι γε, καὶ οἱ αἰθίοπες ἔσχατοι ἐπὶ τῷ ὠκεανῷ δηλοῖ. ὅτι μὲν ἔσχατοι.

» Αἰθίοπες τοὶ διχθὰ δεδαίαται ἔσχατοι ἀνδρῶν.

Οὐδὲ τοῦ διχθὰ δεδαίαται φαύλως λεγομένου. ὡς δειχθήσεται ὕστερον. ὅτι δ' ἐπὶ τῷ ὠκεανῷ.

» Ζεὺς γὰρ ἐς ὠκεανὸν μετ' ἀμύμονας αἰθιοπῆας Χθιζὸς ἔβη μετὰ δαῖτα. —

ὅτι δὲ, καὶ ἡ πρὸς ταῖς ἄρκτοις ἐσχατιὰ παρωκεανῖτίς ἐστιν, οὕτως ᾐνίξατο εἰπὼν περὶ τῆς ἄρκτου.

» Οἴη δ' ἄμμορός ἐστι λοετρῶν ὠκεανοῖο. Διὰ μὲν γὰρ τῆς ἄρκτου, καὶ τῆς ἁμάξης, τὸν ἀρκτικὸν

δηλοῖ· οὐ γὰρ ἂν τοσούτων ἀστέρων ἐν τῷ αὐτῷ χωρίῳ περιφερομένων τῷ ἀεὶ φανερῷ, οἴην ἄμμορον εἶπε λοετρῶν ὠκεανοῖο. ὥς τ' οὐκ εὖ τὴν ἀπειρίαν αὐτοῦ καταγινώσκουσιν, ὡς μίαν ἄρκτον ἀντὶ δυεῖν εἰδότος. οὐδὲ γὰρ εἰκὸς ἦν πω, τὴν ἑτέραν μὴ ἠστροθετῆσθαι. ἀλλ' ἀφ' οὗ οἱ φοίνικες ἐσημειώσαντο καὶ ἐχρῶντο πρὸς τὸν πλοῦν, παρελθεῖν καὶ εἰς τοὺς ἕλληνας τὴν διάταξιν ταύτην. ὥσπερ καὶ τὸν βερενίκης πλόκαμον, καὶ τὸν κάνωβον, ἐχθὲς καὶ πρώην κατωνομασμένον. πολλοὺς δ' ἔτι νῦν ἀνωνύμους ὄντας καθάπερ καὶ ἄρατός φησιν. οὐδὲ κράτης οὖν ὀρθῶς γράφει· οἴη δ' ἄμμορός ἐστι λοετρῶν, φεύγων τὰ μὴ φευκτά. βελτίων δ' ἡράκλειτος καὶ ὁμηρικώτερος. ὁμοίως ἀντὶ τοῦ ἀρκτικοῦ, τὴν ἄρκτον ὀνομάζων. ἠοῦς γάρ, καὶ ἑσπέρας, τέρματα ἡ ἄρκτος. καὶ ἀντίον τῆς ἄρκτου οὖρος αἰθρίου διός. ὁ γὰρ ἀρκτικός, ἐστι δύσεως καὶ ἀνατολῆς, ὅρος, οὐχ ἡ ἄρκτος. διὰ μὲν δὴ τῆς ἄρκτου, ἣν καὶ ἅμαξαν καλεῖ, καὶ τὸν ὠρίωνα δοκεύειν φησί, τὸν ἀρκτικὸν δηλοῖ. διὰ δὲ τοῦ ὠκεανοῦ τὸν ὁρίζοντα. εἰς ὃν, καὶ ἐξ οὗ, τὰς δύσεις, καὶ τὰς ἀνατολὰς ποιεῖται. εἰπὼν δὲ αὐτοῦ στρέφεσθαι, καὶ ἀμοιρεῖν τοῦ ὠκεανοῦ. οἶδεν ὅτι κατὰ τὸ σημεῖον τὸ ἀρκτικώτατον τοῦ ὁρίζοντος γίνεται ὁ ἀρκτικός. ἀκολούθως δὴ τούτῳ τὸ ποιητικὸν ἁρμόσαντες, τὸν μὲν ὁρίζοντα ὀφείλομεν δέχεσθαι, τὸν ἐπὶ τῆς γῆς οἰκείως τῷ ὠκεανῷ. τὸν δ' ἀρκτικόν, τῆς γῆς ἁπτόμενον, ὡς ἂν πρὸς αἴσθησιν κατὰ τὸ ἀρκτικώτατον τῆς οἰκήσεως σημεῖον. ὥστε καὶ τοῦτο τὸ μέρος τῆς γῆς, κλύζοιτ' ἂν τῷ ὠκεανῷ. κατ' αὐτὸν δέ, καὶ τοὺς ἀνθρώπους οἶδε τοὺς προσβορείους μάλιστα. οὓς ὀνόμασι μὲν οὐ δηλοῖ. οὐδὲ γὰρ νῦν που κοινὸν ὄνομα αὐτοῖς κεῖται πᾶσι. τῇ διαίτῃ δὲ φράζει, νομάδας αὐτοὺς ὑπογράφων, καὶ ἀγαυοὺς ἱππημολγούς, γαλακτοφάγους ἀβίους τε, καὶ ἄλλως δ' ἐμφαίνει τὸ κύκλῳ περικεῖσθαι τῇ γῇ τὸν ὠκεανόν, ὅταν οὕτω φησὶν ἡ ἥρα.

» Εἶμι γὰρ ὀψομένη πολυφόρβου πείρατα γαίης.

» Ὠκεανόν τε θεῶν γένεσιν— Τοῖς γὰρ πέρασι πᾶσι συνῆφθαι λέγει τὸν ὠκεανόν. τὰ δὲ ἔσχατα πέρατα κύκλῳ περίκειται. ἔν τε τῇ ὁπλοποιίᾳ τῆς ἀχιλλέως ἀσπίδος κύκλῳ περιτίθησι τὸν ὠκεανὸν ἐπὶ τῆς ἴτυος. ἔχεται δὲ τῆς αὐτῆς φιλοπραγμοσύνης καὶ τὸ μὴ ἀγνοεῖν τὰ περὶ τὰς πλημμυρίδας τοῦ ὠκεανοῦ καὶ τὰς ἀμπώτεις. ἀψορρόου ὠκεανοῖο λέγοντα. καὶ τρὶς μὲν γάρ τ' ἀνίησιν ἐπ' ἤματι. τρὶς δ' ἀναροιβδεῖ. καὶ γὰρ εἰ μὴ τρίς, ἀλλὰ δίς, τάχα τῆς ἱστορίας παραπεσούσης, ἢ τῆς γραφῆς διημαρτημένης, ἀλλ' ἥ γε προαίρεσις τοιαύτη. καὶ τὸ ἐξ ἀκαλαρρείταο δέ, ἔχει τινὰ ἔμφασιν τῆς πλημμυρίδος ἐχούσης τὴν ἐπίβασιν πρᾳεῖαν. καὶ οὐ τελέως ῥοώδη. ποσειδώνιος δὲ καὶ ἐκ τοῦ σκοπέλους λέγειν τοτὲ μὲν καλυπτομένους, τοτὲ δὲ γυμνουμένους, καὶ ἐκ τοῦ ποταμὸν φάναι τὸν ὠκεανόν, εἰκάζει τὸ ῥοῶδες αὐτοῦ τὸ περὶ τὰς πλημμυρίδας ἐμφανίζεσθαι. τὸ μὲν οὖν πρῶτον εὖ, τὸ δὲ δεύτερον οὐκ ἔχει λόγον. οὔτε γὰρ ποταμίῳ ῥεύματι ἔοικεν ἐπίβασις τῆς πλημμυρίδος, πολὺ δὲ μᾶλλον ἡ ἀναχώρησις οὐ τοιαύτη. ὅ, τε τοῦ κράτητος λόγος διδάσκει τι πιθανώτερον. βαθύρροον μὲν γὰρ καὶ ἀψόρροον λέγει, ὁμοίως δέ, καὶ ποταμὸν τὸν ὅλον ὠκεανόν, λέγει δὲ καὶ μέρος τοῦ ὠκεανοῦ τι ποταμόν, καὶ ποταμοῖο ῥόον, οὐ τοῦ ὅλου, ἀλλὰ τοῦ μέρους. ὅταν οὕτω φησίν.

» Αὐτὰρ ἐπεὶ ποταμοῖο λίπεν ῥόον ὠκεανοῖο Νηῦς, ἀπὸ δ' ἵκετο κῦμα θαλάσσης εὐρυπόροιο. Οὐ γὰρ τὸν ὅλον, ἀλλὰ τὸν ἐν τῷ ὠκεανῷ τοῦ ποταμοῦ ῥόον μέρος ὄντα τοῦ ὠκεανοῦ. ὅν φησιν ὁ κράτης ἀνάχυσίν τινα καὶ κόλπον ἐπὶ τὸν νότιον πόλον ἀπὸ τοῦ χειμερινοῦ τροπικοῦ, διήκοντα, τοῦτον γὰρ δύναιτ' ἄν τις ἐκλιπὼν ἔτι εἶναι ἐν τῷ ὠκεανῷ. τὸν δὲ ὅλον ἐκλιπόντα ἔτι εἶναι ἐν τῷ ὅλῳ, οὐχ οἷόν τε. ὅμηρος δέ γε οὕτω φησί. ποταμοῖο λίπεν ῥόον. ἀπὸ δ' ἵκετο κῦμα θαλάσσης. ἥτις οὐκ ἄλλη τίς ἐστιν. ἀλλὰ ὠκεανός. γίνεται οὖν, ἐὰν ἄλλως δέχῃ. ἐκβὰς ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ, ἦλθεν εἰς τὸν ὠκεανόν. ἀλλὰ ταῦτα μὲν μακροτέρας ἐστὶ διαίτης. Ὅτι δὲ ἡ οἰκουμένη νῆσός ἐστι, πρῶτον μὲν ἐκ τῆς αἰσθήσεως, καὶ τῆς πείρας ληπτέον. πανταχῇ γὰρ ὅπου ποτ' οὖν ἐφικτὸν γέγονεν ἀνθρώποις ἐπὶ τὰ ἔσχατα τῆς γῆς προελθεῖν, εὑρίσκεται θάλαττα, ἣν δὴ καλοῦμεν ὠκεανόν. καὶ ὅπου δὴ αἰσθήσει λαβεῖν οὐχ ὑπῆρξεν, ὁ λόγος δείκνυσι. τὸ μὲν γὰρ ἑωθινὸν πλευρὸν τὸ κατὰ τοὺς ἰνδούς, καὶ τὸ ἑσπέριον, τὸ κατὰ τοὺς ἴβηρας, καὶ τοὺς μαυρουσίους, περιπλεῖται πᾶν ἐπὶ πολὺ τοῦ τε νοτίου μέρους, καὶ τοῦ βορείου. τὸ δὲ λειπόμενον, ἄπλουν ἡμῖν μέχρι νῦν, τῷ μὴ συμμῖξαι μηδένας ἀλλήλοις τῶν ἀντιπεριπλεόντων οὐ πολύ, εἴ τις συντίθησιν ἐκ τῶν παραλλήλων διαστημάτων. τῶν ἐφικτῶν ἡμῖν. οὐκ εἰκὸς δὲ διθάλαττον εἶναι τὸ πέλαγος, τὸ ἀτλαντικόν, ἰσθμοῖς διειργόμενον οὕτω στενοῖς, τοῖς κωλύουσι τὸν περίπλουν. ἀλλὰ μᾶλλον σύρρουν. καὶ συνεχές. οἵ τε γὰρ περιπλεῖν ἐπιχειρήσαντες, εἶτα ἀναστρέψαντες, οὐχ ὑπὸ ἠπείρου τινὸς ἀντιπιπτούσης τὸν ἐπέκεινα πλοῦν ἀνακρουσθῆναι φασίν, ἀλλὰ ὑπὸ ἀπορίας, καὶ ἐρημίας οὐδὲν ἧττον τῆς θαλάττης ἐχούσης τὸν πόρον, τοῖς τε πάθεσι τοῦ ὠκεανοῦ τοῖς περὶ τὰς ἀμπώτεις, καὶ τὰς πλημμυρίδας ὁμολογεῖ τοῦτο μᾶλλον. πάντη γοῦν ὁ αὐτὸς τρόπος τῶν τε μεταβολῶν ὑπάρχει. καὶ τῶν αὐξήσεων, καὶ μειώσεων ἢ οὐ πολὺ παραλλάττων. ὡς ἂν ὑφ' ἑνὸς πελάγους τῆς κινήσεως ἀποδιδομένης, καὶ ἀπὸ μιᾶς αἰτίας ἵππαρχος δ' οὐκ ἔστι πιθανός, ἀντιλέγων τῇ δόξῃ ταύτῃ. ὡς οὔθ' ὁμοιοπαθοῦντος τοῦ ὠκεανοῦ πανταχοῦ, οὔτ' εἰ δοθείη τοῦτο ἀκολουθοῦντος αὐτῷ τὸ σύρρουν εἶναι πᾶν τὸ κύκλῳ πέλαγος τὸ ἀτλαντικόν, πρὸς τὸ μὴ ὁμοιοπαθεῖν μάρτυρι χρώμενος σελεύκῳ τῷ βαβυλωνίῳ. ἡμεῖς δὲ τὸν μὲν πλείω λόγον περὶ τοῦ ὠκεανοῦ, καὶ τῶν πλημμυρίδων εἰς ποσειδώνιον ἀναβαλλόμεθα καὶ ἀθηνόδωρον, ἱκανῶς διακρατήσαντας τὸν περὶ τούτων λόγον. πρὸς δὲ τὰ νῦν, ἐπὶ τοσοῦ-

τὸν λέγομεν, ὅτι πρός τε τὴν ὁμοιοπάθειαν οὔπω βέλτιον νομίσαι, τά τε οὐράνια συνέχεσθαί τ' ἂν κρεῖττον, ταῖς ἐντεῦθεν ἀναθυμιάσεσιν, εἰ πλεῖον εἴη τὸ ὑγρὸν περικεχυμένον. ὥσπερ οὖν τὰ ἔσχατα, καὶ τὰ κύκλῳ τῆς οἰκουμένης οἶδε, καὶ φράζει σαφῶς ὁ ποιητὴς οὕτω καὶ τὰ τῆς θαλάττης τῆς ἐντός. περιέχει γὰρ ταύτην ἀπὸ στηλῶν ἀρξαμένῳ Λιβύη τε, καὶ Αἴγυπτος, καὶ Φοινίκη. ἑξῆς δὲ ἡ πέριξ τῆς Κύπρου. εἶτα σόλυμοι καὶ λύκιοι καὶ κᾶρες. μετὰ δὲ τούτους ἡ μεταξὺ μυκάλης, καὶ τῆς τρωάδος ἠιών, καὶ αἱ προκείμεναι νῆσοι ὧν ἁπασῶν μέμνηται. καὶ ἐφεξῆς τῶν περὶ τὴν προποντίδα καὶ τὸν εὔξεινον τὰ μέχρι κολχίδος καὶ τῆς ἰάσονος στρατείας. καὶ μὴν καὶ τὸν κιμμερικὸν βόσπορον οἶδε, τοὺς κιμμερίους εἰδώς. οὐ δήπου τὸ μὲν ὄνομα τῶν κιμμερίων εἰδὼς, αὐτοὺς δὲ ἀγνοῶν, οἳ κατ' αὐτὸν, ἢ μικρὸν πρὸ αὐτοῦ, μέχρις ἰωνίας ἐπέδραμον τὴν γῆν ἐκ βοσπόρου πᾶσαν. αἰνίττεται γοῦν, καὶ τὸ κλίμα τῆς χώρας αὐτῶν, ζοφῶδες ὂν καὶ ὥς φησιν

» Ἠέρι καὶ νεφέλῃ κεκαλυμμένοι, ἀλλ' οὐδέ ποτ' αὐτοὺς
» Ἠέλιος φαέθων ἐπιλάμπεται ἀκτίνεσσιν ... Ἐπὶ νὺξ ὀλοὴ τέταται.—

Γνωρίζει δὲ, καὶ τὸν ἴστρον μεμνημένος γε τοῦ μυσῶν ἔθνους θρακίου παροικοῦντος τὸν ἴστρον. καὶ μὴν καὶ τὴν ἑξῆς παραλίαν οἱ δὲ θρακίαν οὖσαν μέχρι τῆς πηνειοῦ. παίονάς τε ὀνομάζων, καὶ ἄθω, καὶ ἀξιὸν, καὶ τὰς προκειμένας τούτων νήσους. ἑξῆς δέ ἐστιν, ἡ τῶν ἑλλήνων παραλία, μέχρι θεσπρωτῶν. ἧς ἁπάσης μέμνηται. καὶ μὴν καὶ τὰ τῆς ἰταλίας ἄκρα οἶδε, τεμέσην καλῶν, καὶ σικελοὺς, καὶ τὰ τῆς ἰβηρίας ἄκρα, καὶ τὴν εὐδαιμονίαν αὐτῶν, ἣν ἀρτίως ἔφαμεν. εἰ δέ τινα ἐν τοῖς μεταξὺ διαλείμματα φαίνεται, συγγνοίη τις ἄν, καὶ γὰρ ὁ γεωγραφῶν αὐτὸς πολλὰ παρίησι τῶν ἐν μέρει. συγγνοίη δ' ἂν, καὶ εἰ μυθώδη τινὰ προσπέπλεκται τοῖς λεγομένοις, ἱστορικῶς, καὶ διδασκαλικῶς. καὶ οὐ δεῖ μέμφεσθαι. οὐδὲ γὰρ ἀληθές ἐστιν. ὅ φησιν ἐρατοσθένης, ὅτι ποιητὴς πᾶς στοχάζεται ψυχαγωγίας, οὐ διδασκαλίας χάριν. τἀναντία γὰρ οἱ φρονιμώτατοι τῶν περὶ ποιητικῆς τι φθεγξαμένων, πρώτην τινὰ λέγουσι φιλοσοφίαν τὴν ποιητικήν. ἀλλὰ πρὸς ἐρατοσθένην μὲν αὖθις ἐροῦμεν διὰ πλειόνων. ἐν οἷς καὶ περὶ τοῦ ποιητοῦ πάλιν ἔσται λόγος. νυνὶ δὲ, ὅτι μὲν ὅμηρος τῆς γεωγραφικῆς ἦρξεν, ἀρκείτω τὰ λεχθέντα. φανεροὶ δὲ, καὶ οἱ ἐπακολουθήσαντες αὐτῷ ἄνδρες ἀξιόλογοι, καὶ οἰκεῖοι φιλοσοφίας, ὧν τοὺς πρώτους μεθ' ὅμηρον, δύο φησὶν ἐρατοσθένης. ἀναξίμανδρόν τε, θαλοῦ γεγονότα γνώριμον, καὶ πολίτην, καὶ ἑκαταῖον τὸν μιλήσιον. τὸν μὲν οὖν, ἐκδοῦναι πρῶτον γεωγραφικὸν πίνακα. τὸν δὲ ἑκαταῖον καταλιπεῖν γράμμα, πιστούμενον ἐκείνου εἶναι ἐκ τῆς ἄλλης αὐτοῦ γραφῆς. ἀλλὰ μὴν ὅτι γε δεῖ πρὸς ταῦτα πολυμαθείας, εἰρήκασι συχνοί. εὖ δὲ καὶ ἵππαρχος, ἐν τοῖς πρὸς ἐρατοσθένην διδάσκει. ὅτι παντὶ καὶ ἰδιώτῃ, καὶ τῷ φιλομαθοῦντι τῆς γεωγραφικῆς ἱστορίας προσηκούσης, ἀδύνατον λαβεῖν, ἄνευ τῆς τῶν οὐρανίων, καὶ τῆς τῶν ἐκλειπτικῶν τηρήσεων ἐπικρίσεως. οἷον ἀλεξάνδρειαν τὴν αἰγύπτῳ, πότερον ἀρκτικωτέρα βαβυλῶνος ἢ νοτιωτέρα, λαβεῖν, οὐχ οἷόν τε. οὐδ' ἐφ' ὁπόσον διάστημα, χωρὶς τῆς διὰ τῶν κλιμάτων ἐπισκέψεως. ὁμοίως τὰς πρὸς ἕω προκεχωρηκυίας, ἢ πρὸς δύσιν μᾶλλον, καὶ ἧττον, οὐκ ἂν γνοίη τις ἀκριβῶς, πλὴν ἢ διὰ τῶν ἐκλειπτικῶν ἡλίου, καὶ σελήνης συγκρίσεων. οὗτος δὲ δὴ τοιαῦτά φησιν ἅπαντες ὅσοι τόπων ἰδιότητας λέγειν ἐπιχειροῦσιν, οἰκείως προσάπτονται, καὶ τῶν οὐρανίων, καὶ γεωμετρίας σχήματα, καὶ μεγέθη, καὶ ἀποστήματα, καὶ κλίματα δηλοῦντες, καὶ θάλπη, καὶ ψύχη, καὶ ἁπλῶς, τὴν τοῦ περιέχοντος φύσιν. ἐπεὶ καὶ οἶκον κατασκευάζων ὁ οἰκοδόμος, ταῦτα ἂν προορῷτο. καὶ πόλιν κτίζων ἀρχιτέκτων, μή τί γε ὅλην ἐπισκοπῶν τὴν οἰκουμένην ἀνήρ. πολὺ γὰρ τούτῳ προσήκει μᾶλλον. ἐν μὲν γὰρ τοῖς μικροῖς χωρίοις, τὸ πρὸς ἄρκτους τι ἢ πρὸς νότον κεκλίσθαι, παραλλαγὴν οὐ πολλὴν ἔχει. ἐν δὲ τῷ παντὶ κύκλῳ τῆς οἰκουμένης, πρὸς ἄρκτον μὲν τὸ μέχρι τῶν ὑστάτων ἐστὶ τῆς σκυθίας, ἢ τῆς κελτικῆς. μέχρι δὲ τῶν ὑστάτων αἰθιόπων, τὰ πρὸς νότον. τοῦτο δὲ παμπόλλην ἔχει διαφοράν. ὁμοίως δὲ, καὶ τὸ παρ' ἰνδοῖς οἰκεῖν, ἢ ἴβηρσιν. ὧν τοὺς μὲν, ἑῴους μάλιστα τοὺς δὲ ἑσπερίους. τρόπον δέ τινα καὶ ἀντίποδας ἀλλήλοις ἴσμεν. πᾶν δὲ τὸ τοιοῦτον ἐκ τῆς τοῦ ἡλίου καὶ τῶν ἄλλων ἀστέρων κινήσεως, τὴν ἀρχὴν ἔχον, καὶ ἔτι, τῆς ἐπὶ τὸ μέσον φορᾶς, ἀναβλέπειν ἀναγκάζει πρὸς τὸν οὐρανὸν, καὶ πρὸς τὰ φαινόμενα παρ' ἑκάστοις ἡμῶν τῶν οὐρανίων. ἐν δὲ τούτοις ἐξαλλάξεις ὁρῶνται παμμεγέθεις τῶν οἰκήσεων. τίς ἂν οὖν διαφορὰς τόπων ἐκτιθέμενος καλῶς καὶ ἱκανῶς διδάσκοι, μὴ φροντίσας τούτων μηδενὸς, μηδ' ἐπὶ μικρόν. καὶ γὰρ εἰ μὴ δυνατὸν, κατὰ τὴν ὑπόθεσιν τὴν τοιαύτην ἅπαντα ἀκριβοῦν. διὰ τὸ εἶναι πολιτικωτέραν, τό γε ἐπὶ τοσοῦτον ἐφ' ὅσον καὶ τῷ πολιτικῷ παρακολουθεῖν δυνατὸν, προσήκοι ἂν εἰκότως. ὁ δ' οὕτω μετεωρίσας ἤδη τὴν διάνοιαν. οὐδὲ τῆς ὅλης ἀπέχεται γῆς. φαίνεται γὰρ γελοῖον εἰ τὴν οἰκουμένην γλιχόμενος σαφῶς ἐξειπεῖν, τῶν μὲν οὐρανίων ἐτόλμησεν ἅψασθαι καὶ χρήσασθαι πρὸς τὴν διδασκαλίαν, τὴν δ' ὅλην γῆν ἧς μέρος ἡ οἰκουμένη, μήθ' ὁπόση μήθ' ὁποία τις, μήθ' ὅπου κειμένη τοῦ σύμπαντος κόσμου, μηδὲν ἐφρόντισε. μηδ' εἰ, καθ' ἓν μέρος οἰκεῖται. μόνον τὸ καθ' ἡμᾶς, ἢ κατὰ πλείω, ἢ καὶ πόσα. ὡς δ' αὕτως, καὶ τὸ ἀοίκητον αὐτῆς ποιόν τι, καὶ πόσον; καὶ διὰ τί. ἔοικεν οὖν μετεωρολογικῇ τινι πραγματείᾳ καὶ γεωμετρικῇ συνῆφθαι, τὸ τῆς γεωγραφίας εἶδος, τὰ ἐπίγεια τοῖς οὐρανίοις συνάπτον εἰς ἓν, ὡς ἐγγυτάτω ὄντα, ἀλλὰ μὴ

Δισῶτα τεῦχον, ὅσον οὐρανὸς ἐστ' ἀπὸ γαίης φέρε δὴ τῇ τοσαύτῃ πολυμαθείᾳ προσθῶμεν τὴν
ἐπίγειον ἱστορίαν. τὴν ζώων, καὶ φυτῶν, καὶ τῶν ἄλλων, ὅσα χρήσιμα, ἢ δύσχρηστα φέρει γῆ τε καὶ θάλασ
σα. οἶμαι γὰρ ἐναργὲς ἂν γενέσθαι μᾶλλον ὃ λέγω ὅτι δὲ, καὶ τὸ ὄφελος μέγα παντὶ τῷ πα
ραλαβόντι τὴν τοιαύτην ἱστορίαν ἔκ τε τῆς παλαιᾶς μνήμης, δῆλον καὶ ἐκ τοῦ λόγου. οἱ γοῦν ποιη
ταὶ φρονιμωτάτους τῶν ἡρώων ἀποφαίνουσι τοὺς ἀποδημήσαντας πολλαχοῦ, καὶ πλανηθέντας.
ἐν μεγάλῳ γὰρ τίθενται τὸ, πολλῶν ἀνθρώπων ἰδεῖν ἄστεα, καὶ νόον γνῶναι. καὶ ὁ Νέστωρ σεμνύνεται
διότι τοῖς Λαπίθαις ὡμίλησεν, ἐλθὼν μετάπεμπτος
» Τηλόθεν ἐξ ἀπίης γαίης. καλέσαντο γὰρ αὐτοί. Καὶ ὁ Μενέλεος ὡσαύτως.
» Κύπρον Φοινίκην τε καὶ Αἰγυπτίους ἐπαληθείς.
» Αἰθίοπάς θ' ἱκόμην καὶ Σιδονίους καὶ Ἐρεμβούς.
» Καὶ Λιβύην. ἵνα τ' ἄρνες ἄφαρ κεραοὶ τελέθουσι.
Προσθεὶς καὶ τὸ ἰδίωμα τῆς χώρας.
» Τρὶς γὰρ τίκτει μῆλα τελεσφόρον εἰς ἐνιαυτόν. Ἐπὶ δὲ τῶν Αἰγυπτίων Θηβῶν
» – Τῇ πλεῖστα φέρει ζείδωρος ἄρουρα. καὶ
» Αἵ θ' ἑκατόμπυλοί εἰσι διηκόσιοι δ' ἀν' ἑκάστην.
» Ἀνέρες ἐξοιχνεῦσι σὺν ἵπποισι καὶ ὄχεσφι.
Ταῦτα γὰρ τὰ τοιαῦτα παρασκευαί τινες εἰς φρόνησιν μεγάλαι τῷ μαθεῖν τῆς χώρας τὴν φύσιν,
καὶ ζώων καὶ φυτῶν ἰδέας. προσθεῖναι δὲ καὶ τὰ τῆς θαλάττης. ἀμφίβιοι γάρ τρόπον τινά ἐσμεν,
καὶ οὐ μᾶλλον χερσαῖοι, ἢ θαλάττιοι. καὶ τὸν Ἡρακλέα εἰκὸς ἀπὸ τῆς πολλῆς ἐμπειρίας τε καὶ ἱστορίας
» λεχθῆναι – Μεγάλων ἐπιίστορα ἔργων. ἐκ δὲ δὴ τῆς παλαιᾶς μνήμης καὶ ἐκ τοῦ λόγου μαρ-
τυρεῖ τὰ λεχθέντα ἐν ἀρχαῖς ὑφ' ἡμῶν. Διαφερόντως δ' ἐπάγεσθαι δοκεῖ μοι πρὸς τὰ
νῦν ὁ λόγος ἐκεῖνος, διότι τῆς γεωγραφίας τὸ πλέον ἐστὶ πρὸς τὰς χρείας τὰς πολιτικάς. χώρα γὰρ
τῶν πράξεών ἐστι γῆ καὶ ἡ θάλαττα ἣν οἰκοῦμεν. τῶν μὲν μικρῶν, μικρὰ, τῶν δὲ μεγάλων, μεγάλη.
μεγίστη δ' ἡ σύμπασα. ἣν περ ἰδίως καλοῦμεν οἰκουμένην. ὥστε τῶν μεγίστων πράξεων, αὕτη ἂν εἴη χώ
ρα. μέγιστοι δὲ τῶν στρατηλατῶν, ὅσοι δύνανται γῆς, καὶ θαλάττης ἄρχειν. ἔθνη καὶ πόλεις συνάγοντες
εἰς μίαν ἐξουσίαν, καὶ διοίκησιν πολιτικήν. δῆλον οὖν, ὅτι γεωγραφικὴ πᾶσα ἐπὶ τὰς πράξεις ἀ-
νάγεται τὰς ἡγεμονικάς. διατιθεῖσα ἠπείρους, καὶ πελάγη, τὰ μὲν, ἐντός. τὰ δὲ, ἐκτὸς συμπάσης
τῆς οἰκουμένης. πρὸς τούτους δὲ, ἡ διάθεσις, οἷς διαφέρει ταῦτα ἔχειν οὕτως, ἢ ἑτέρως, καὶ γνώριμα
εἶναι, ἢ μὴ γνώριμα. βέλτιον γὰρ ἂν διαχειρίζοιεν ἕκαστα εἰδότες τὴν χώραν ὁπόση τίς, καὶ πῶς κει
μένη τυγχάνει. καὶ τίνας διαφορὰς ἔχουσα. τάς τ' ἐν τῷ περιέχοντι, καὶ τὰς ἐν αὐτῇ. ἄλλων δὲ κα-
τ' ἄλλα μέρη δυναστευόντων, καὶ ἀπ' ἄλλης ἑστίας, καὶ ἀρχῆς τὰς πράξεις προχειριζομένων, καὶ ἐπε
κτεινόντων τὸ τῆς ἡγεμονίας μέγεθος, οὐκ ἐπίσης δυνατὸν, οὔτ' ἐκείνοις ἅπαντα γνωρίζειν, οὔτε
τοῖς γεωγραφοῦσιν. ἀλλὰ τὸ μᾶλλον, καὶ ἧττον, πολὺ ἐν ἀμφοτέροις καθορᾶται τούτοις. μόλις γὰρ
τὸ ἐπίσης πάντ' εἶναι φανερὰ συμβαίνει, τῆς συμπάσης οἰκουμένης ὑπὸ μίαν ἀρχὴν, καὶ πολιτεί
αν ὑπηγμένης. ἀλλ' οὐδ' οὕτως. ἀλλὰ τὰ ἐγγυτέρω μᾶλλον ἂν γνωρίζοιτο. καὶ προσήκει ταῦτα
διὰ πλειόνων ἐμφανίζειν, ἵνα ᾖ γνώριμα. ταῦτα γὰρ καὶ τῆς χρείας ἐγγυτέρω ἐστίν. ὥστ' οὐκ ἂν
εἴη θαυμαστὸν οὐδ' εἰ ἄλλος μὲν Ἰνδοῖς προσήκοι χωρογράφος, ἄλλος δὲ Αἰθίοψιν, ἄλλος δὲ Ἕλλησι, καὶ Ῥω
μαίοις. τί γὰρ ἂν προσήκοι τῷ παρ' Ἰνδοῖς γεωγράφῳ, καὶ τὰ κατὰ Βοιωτοὺς οὕτω φράζειν, ὡς ὁ
Οἵ θ' Ὑρίην ἐνέμοντο καὶ Αὐλίδα πετρήεσσαν. (Ὅμηρος
» Σχοῖνόν τε Σκῶλόν τε.
» Ἡμῖν δὲ προσήκει, τὰ δὲ παρ' Ἰνδοῖς οὔπω. καὶ τὰ καθ' ἕκαστα οὐκέτι. οὐδὲ γὰρ ἡ χρεία ἐπάγεται.
μέτρον δ' αὕτη μάλιστα τῆς τοιαύτης ἐμπειρίας. καὶ γὰρ, καὶ ἐν μικροῖς μὲν δῆλόν ἐστιν. οἷον ἐν τοῖς κυνηγε
σίοις. ἄμεινον γὰρ ἂν θηρεύσειέ τις εἰδὼς τὴν ὕλην, ὁποία τίς, καὶ πόση καὶ στρατοπεδεῦσαι ἢ καλῶς ἐν χωρίῳ
τὸ εἰδότος ἐστὶ, καὶ ἐνεδρεῦσαι καὶ ὁδεῦσαι. ἀλλ' ἐν τοῖς μεγάλοις ἐστὶ τηλαυγέστερον. ὅσωπερ καὶ τὰ ἆθλα
μείζω τὰ τῆς ἐμπειρίας καὶ τὰ σφάλματα ἐκ τῆς ἀπειρίας. ὁ μέν τοι Ἀγαμεμνόνειος στόλος τὴν Μυσίαν,
ὡς τὴν Τρῳάδα, πορθῶν, ἐπανιδρόμησεν αἰσχρῶς. Πέρσαι δὲ, καὶ Λίβυες, τοὺς πορθμοὺς ὑπονοή
σαντες εἶναι τοῦ πλοῦ στενοπούς. ἐγγὺς μὲν ἦλθον κινδύνων μεγάλων. τρόπαια δὲ τῆς ἀγνοίας κατέ
λιπον. οἱ μὲν τὸν τοῦ Σαλγανέως τάφον πρὸς τῷ Εὐρίπῳ τῷ Χαλκιδικῷ τοῦ σφαγέντος ὑπὸ τῶν
Περσῶν ὡς καθοδηγήσαντος φαύλως. ἀπὸ Μαλεῶν ἐπὶ τὸν Εὔριπον τοῦ στόλου. οἱ δὲ, τὸ τοῦ Πελώρου
μνῆμα. καὶ τούτου διαφθαρέντος, κατὰ τὴν ὁμοίαν αἰτίαν. πλήρης τε ναυαγίων ἡ Ἑλλὰς ὑπῆρξε κα-
τὰ τὴν Ξέρξου στρατείαν. καὶ ἡ τῶν Αἰολέων δὲ, καὶ ἡ τῶν Ἰώνων ἀποικία, πολλὰ τοιαῦτα πταίσματα
παραδέδωκεν. ὁμοίως δὲ, καὶ κατορθώματα ὅπου τι κατορθωθῆναι συνέβη παρὰ τὴν ἐμπειρίαν
τῶν τόπων. καθάπερ ἐν τοῖς περὶ Θερμοπύλας στενοῖς ὁ Ἐφιάλτης λέγεται δείξας τὴν διὰ τῶν
ὀρῶν ἀτραπὸν τοῖς Πέρσαις, ὑποχειρίους αὐτοῖς ποιῆσαι τοὺς περὶ Λεωνίδαν. καὶ δέξασθαι τοὺς βαρ

βαρβάρους ἔσω πυλῶν. ἐάσας δὲ τὰ παλαιά, τὴν νῦν ῥωμαίων στρατείαν ἐπὶ παρθυαίους, ἱκανὸν ἡγοῦμαι τοῦτο τεκμήριον. ὡς δ᾽ αὔτως τὴν ἐπὶ γερμανοὺς, καὶ κελτοὺς, ἐν ἕλεσι, καὶ δρυμοῖς ἀβάτοις, ἐρημίαις τε τοπομαχούντων τῶν βαρβάρων, καὶ τὰ ἐγγὺς πόρρω ποιούντων τοῖς ἀγνοοῦσι. καὶ τὰς ὁδοὺς ἐπικρυπτομένων. καὶ τὰς εὐπορίας τροφῆς τε, καὶ τῶν ἄλλων. Τὸ μὲν δὴ πλεῖστον ὥσπερ εἴρηται πρὸς τοὺς ἡγεμονικοὺς βίους καὶ τὰς χρείας, ἔστι δὲ καὶ τῆς ἠθικῆς φιλοσοφίας, καὶ πολιτικῆς τὸ πλέον, περὶ τοὺς ἡγεμονικοὺς βίους καὶ τὰς χρείας. σημεῖον δέ. τὰς γὰρ τῶν πολιτειῶν διαφορὰς, ἀπὸ τῶν ἡγεμονικῶν διακρίνομεν. ἄλλην μὲν ἡγεμονίαν τιθέντες τὴν μοναρχίαν ἣν καὶ βασιλείαν καλοῦμεν, ἄλλην δὲ, τὴν ἀριστοκρατείαν. τρίτην δὲ, τὴν δημοκρατίαν. τοσαύτας δὲ καὶ τὰς πολιτείας νομίζομεν ὁμωνύμως καλοῦντες ὡς ἂν ἀπ᾽ ἐκείνων τὴν ἀρχὴν ἐχούσας τῆς εἰδοποιίας. ἄλλος γὰρ νόμος τὸ τοῦ βασιλέως πρόσταγμα. ἄλλος δὲ τὸ τῶν ἀρίστων καὶ τὸ τοῦ δήμου. τύπος δὲ, καὶ σχῆμα πολιτείας ὁ νόμος. διὰ τοῦτο δὲ, καὶ τὸ δίκαιον εἶπόν τινες τὸ τοῦ κρείττονος συμφέρον. εἴπερ οὖν ἡ πολιτικὴ φιλοσοφία, περὶ τοὺς ἡγεμόνας τὸ πλέον ἐστὶν, ἔστι δὲ καὶ ἡ γεωγραφία περὶ τὰς ἡγεμονικὰς χρείας, ἔχει ἄν τι πλεονέκτημα καὶ αὐτὴ παρὰ τοῦτο. ἀλλὰ τοῦτο μὲν τὸ πλεονέκτημα, πρὸς τὰς πράξεις. Ἔχει δέ τινα καὶ θεωρίαν οὐ φαύλην ἡ πραγματεία, τὴν μὲν τεχνικήν τε καὶ μαθηματικὴν, καὶ φυσικήν. τὴν δὲ ἐν ἱστορίᾳ καὶ μύθοις κειμένην. οὐδὲν οὖσιν πρὸς τὰς πράξεις οἷον εἴ τις λέγοι τὰ περὶ τὴν ὀδυσσέως πλάνην καὶ μενελάου. καὶ ἰάσονος, εἰς φρόνησιν μὲν, οὐδὲν ἂν συλλαμβάνειν δόξειεν, ἣν ὁ πράττων ζητεῖ. πλὴν εἰ καταμίσγοι καὶ τῶν γενομένων ἀναγκαίων τὰ παραδείγματα χρήσιμα, διαγωγὴν δ᾽ ὅμως φέροι ἂν οὐκ ἀνελεύθερον τῷ ἐπιβάλλοντι ἐπὶ τοὺς τόπους τοὺς παρασχόντας τὴν μυθοποιίαν. καὶ γὰρ τοῦτο ζητοῦσιν οἱ πράττοντες διὰ τὸ ἔνδοξον, καὶ τὸ ἡδύ. ἀλλ᾽ οὐκ ἐπὶ πολύ. μᾶλλον γὰρ σπουδάζουσιν, ὡς εἰκὸς, περὶ τὰ χρήσιμα. διόπερ καὶ τῷ γεωγράφῳ τούτων μᾶλλον, ἢ ἐκείνου, ἐπιμελητέον. ὡς δ᾽ αὔτως ἔχει, καὶ περὶ τῆς ἱστορίας καὶ περὶ τῶν μαθημάτων. καὶ γὰρ τούτων τὸ χρήσιμον ἀεὶ μᾶλλον ληπτέον, καὶ τὸ πιστότερον. μάλιστα δὲ δοκεῖ καθάπερ εἴρηται, γεωμετρίας τε, καὶ ἀστρονομίας δεῖν, τῇ τοιαύτῃ ὑποθέσει. καὶ δεῖ μὲν ὡς ἀληθῶς. σχήματα γὰρ, καὶ κλίματα, καὶ μεγέθη, καὶ τὰ ἄλλα τὰ τούτοις οἰκεῖα, οὐχ οἷόν τε λαβεῖν καλῶς, ἄνευ τῆς τοιαύτης μεθόδου. ἀλλ᾽ ὥσπερ τὰ περὶ τὴν ἀναμέτρησιν τῆς ὅλης γῆς ἐν ἄλλοις δεικνύουσιν, ἐνταῦθα δ᾽ ὑποθέσθαι δεῖ, καὶ πιστεῦσαι τοῖς ἐκεῖ δειχθεῖσιν. ὑποθέσθαι δὲ καὶ σφαιροειδῆ μὲν τὸν κόσμον, σφαιροειδῆ δὲ, καὶ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς γῆς. ἔτι δὲ τούτων πρότερον, τὴν ἐπὶ τὸ μέσον τῶν σωμάτων φοράν. αὐτὸ, μόνον ἐπὶ τῆς αἰσθήσεως ἢ τῶν κοινῶν ἐννοιῶν ἐγγύς ἐστιν εἰ ἄρα ἐπισημηνάμενοι ἐν κεφαλαίῳ, μικρὰ, οἷον ὅτι γῆ σφαιροειδὴς, ἐκ μὲν τῆς ἐπὶ τὸ μέσον φορᾶς, πόρρωθεν ὑπόμνησις καὶ τὸ ἕκαστον σῶμα ἐπὶ τὸ αὐτοῦ ἄρτημα, νεύειν. ἐκ δὲ τῶν κατὰ πελάγη, καὶ τὸν οὐρανὸν φαινομένων, ἐγγύθεν. καὶ γὰρ ἡ αἴσθησις ἐπιμαρτυρεῖν δύναται, καὶ ἡ κοινὴ ἔννοια. φανερῶς γὰρ ἐπιπροσθεῖ τοῖς πλέουσιν ἡ κυρτότης τῆς θαλάττης, ὥστε μὴ προσβάλλειν τοῖς πόρρωθεν φέγγεσι, τοῖς ἐπ᾽ ἴσον ἐξηρμένοις τῇ ὄψει. ἐξαρθέντα γοῦν πλέον τῆς ὄψεως ἐφάνη. καίτοι πλέον ἀποσχόντα αὐτῆς, ὁμοίως δὲ καὶ αὐτὴ μετεωρισθεῖσα εἶδε τὰ κεκρυμμένα πρότερον ὅπερ δηλοῖ, καὶ ὁ ποιητής. τοιοῦτον γάρ ἐστι καὶ τὸ

» ὀξὺ μάλα προϊδὼν, μεγάλου ὑπὸ κύματος ἀρθείς.

καὶ τοῖς προσπλέουσι δὲ ἀεὶ καὶ μᾶλλον ἀπογυμνοῦται τὰ πρόσγεια μέρη. καὶ τὰ φανέντα ἐν ἀρχαῖς ταπεινὰ, ἐξαίρεται μᾶλλον. τῶν τε οὐρανίων ἡ περιφορὰ ἐναργής ἐστι, καὶ ἄλλως καὶ αὐτῶν γνωμονικῶν. ἐκ δὲ τούτων εὐθὺς ὑποτείνει καὶ ἡ ἔννοια. ὅτι ἐρριζωμένης εἰς ἄπειρον τῆς γῆς, οὐκ ἂν ἡ τοιαύτη περιφορὰ συνέβαινε. καὶ τὰ περὶ τῶν κλιμάτων δὲ, ἐν τοῖς περὶ τῶν οἰκήσεων δείκνυται. νυνὶ δὲ ἐξ ἑτοίμου δεῖ λαβεῖν ἔνια, καὶ ταῦθ᾽ ὅσα τῷ πολιτικῷ καὶ τῷ στρατηλάτῃ χρήσιμα. οὔτε γὰρ οὕτω δεῖ ἀγνοεῖν τὰ περὶ τὸν οὐρανὸν, καὶ τὴν θέσιν τῆς γῆς, ὥστ᾽ ἐπειδὰν γένηται κατὰ τόπους καθ᾽ οὓς ἐξήλλακταί τινα τῶν φαινομένων τοῖς πολλοῖς ἐν τῷ οὐρανῷ ταράττεσθαι καὶ τοιαῦτα λέγειν.

» ὦ φίλοι. οὐ γάρ τ᾽ ἴδμεν ὅπῃ ζόφος, οὐδ᾽ ὅπῃ ἠώς.
» οὐδ᾽ ὅπῃ ἠέλιος φαεσίμβροτος εἶσ᾽ ὑπὸ γαῖαν.
» οὐδ᾽ ὅπῃ ἀνεῖται·

οὔθ᾽ οὕτως ἀκριβοῦν, ὥστε τὰς πανταχοῦ συνανατολάς τε καὶ συγκαταδύσεις, καὶ συμμεσουρανήσεις, καὶ ἐξάρματα πόλων. καὶ τὰ κατὰ κορυφὴν σημεῖα. καὶ ὅσα ἄλλα τοιαῦτα κατὰ τὰς μεταπτώσεις τῶν ὁριζόντων ἅμα, καὶ τῶν ἀρκτικῶν διαφέροντα ἅπαντα. τὰ μὲν, πρὸς τὴν ὄψιν. τὰ δὲ, καὶ τῇ φύσει γνωρίζειν ἅπαντα. ἀλλὰ τὰ μὲν, μηδ᾽ ὅλως φροντίζειν, πλὴν εἰ θέας φιλοσόφου χάριν. τοῖς δὲ, πιστεύειν καὶ μὴ βλέπειν, τὸ διότι. καὶ γὰρ τοῦτο τοῦ φιλοσοφοῦντος μόνου. τῷ δὲ πολιτικῷ, σχολῆς οὐ τοσαύτης μέτεστιν ἢ οὐκ ἀεί. οὐ μὴν οὐδ᾽ οὕτως ὑπάρχειν ἁπλοῦν δεῖ τὸν ἐντυγχάνοντα τῇ γραφῇ ταύτῃ, καὶ ἀργὸν ὥστε μηδὲ σφαῖραν ἰδεῖν. μηδὲ κύκλους ἐν αὐτῇ. τοὺς μὲν παραλλήλους τοὺς δ᾽ ὀρθίους πρὸς τούτους. τοὺς δὲ λοξούς. μηδὲ τροπικῶν τε, καὶ ἰσημερινῶν, καὶ ζῳδιακοῦ θέσιν, δι᾽ οὗ φερόμενος ὁ ἥλιος τρέπεται, καὶ διαφορὰς διδάσκει κλιμάτων τε καὶ ἀνέμων. ταῦτα γὰρ, καὶ τὰ περὶ τῶν ὁρι-

ζοντας, καὶ τοὺς ἀρκτικούς, καὶ ὅσα ἄλλα κατὰ τὴν πρώτην ἀγωγὴν τὴν εἰς τὰ μαθήματα πα-
ραδίδοται. κατανοήσας τίς ἄλλως πῶς δύναται παρακολουθεῖν τοῖς λεγομένοις ἐνταῦθα ὅ, τε μὴ
δ' εὐθεῖαν γραμμὴν, ἢ περιφερῆ, μηδὲ κύκλον εἰδὼς, μηδὲ σφαιρικὴν ἐπιφάνειαν, ἢ ἐπίπεδον.
μή δ' ἐν τῷ οὐρανῷ. μηδὲ τοὺς ἑπτὰ τῆς μεγάλης ἄρκτου ἀστέρας καταμαθὼν, μηδ' ἄλλο τι τῶν
τοιούτων μηδὲν, ἢ οὐκ ἂν δέοιτο τῆς πραγματείας ταύτης. ἢ οὐχὶ νῦν. ἀλλ' ἐκείνης ἐντυχὼν πρότε-
ρον, ὧν χωρὶς, οὐκ ἂν εἴη γεωγραφίας οἰκεῖος. Ἁπλῶς δὲ, κοινὸν εἶναι τὸ σύγγραμμα τοῦτο δεῖ,
καὶ τὸ πολιτικὸν, καὶ δημωφελὲς ὁμοίως, ὥσπερ τὴν τῆς ἱστορίας γραφήν. κἀκεῖ δὲ πολιτικὸν λέ-
γομεν, οὐχὶ τὸν παντάπασιν ἀπαίδευτον, ἀλλὰ τὸν μετασχόντα τῆς τε ἐγκυκλίου, καὶ συνήθους
ἀγωγῆς τοῖς ἐλευθέροις, καὶ τοῖς φιλοσοφοῦσιν. οὐδὲ γὰρ ἂν, οὔτε ψέγειν δύναιτο καλῶς, οὔτ' ἐπαι-
νεῖν, οὐδὲ κρίνειν, ὅσα μνήμης ἄξια τῶν γεγονότων, ὅτῳ μηδὲν ἐμέλησεν ἀρετῆς, καὶ φρονήσεως, καὶ τῶν
εἰς ταῦτα λόγων. οὕτως δὲ, καὶ οἱ τοὺς λιμένας καὶ τοὺς περίπλους καλουμένους πραγματευθέντες, ἀτελῆ
τὴν ἐπίσκεψιν ποιοῦνται. μὴ προσθέντες ὅσα ἐκ τῶν μαθημάτων, καὶ ἐκ τῶν οὐρανίων, ἃ συνάπτειν προ-
σῆκε. διόπερ ἡμεῖς πεποιηκότες ὑπομνήματα ἱστορικὰ χρήσιμα ὡς ὑπολαμβάνομεν εἰς τὴν ἠθικὴν, καὶ
πολιτικὴν φιλοσοφίαν, ἔγνωμεν προσθεῖναι καὶ τήνδε τὴν σύνταξιν. ὁμοειδὴς γὰρ καὶ αὐτὴ, καὶ
πρὸς αὐτοὺς ἄνδρας, καὶ μάλιστα τοὺς ἐν ταῖς ὑπεροχαῖς. ἔτι δὲ τὸν αὐτὸν τρόπον ὅνπερ ἐκεῖ τὰ περὶ
τοὺς ἐπιφανεῖς ἄνδρας καὶ βίους τυγχάνει μνήμης, τὰ δὲ μικρὰ, καὶ ἄδοξα, παραλείπεται, κἀνταῦθα
καὶ τὰ μικρὰ καὶ τὰ ἀφανῆ παραπέμπειν. ἐν δὲ τοῖς ἐνδόξοις, καὶ μεγάλοις, καὶ ἐν οἷς τὸ πραγμα-
τικὸν, καὶ μνημόνευτον, καὶ ἡδὺ διατρίβειν, καθάπερ γε, καὶ ἐν τοῖς κολοσσικοῖς ἔργοις, οὐ τὸ καθ' ἕ-
καστον ἀκριβὲς ζητοῦμεν, ἀλλὰ τοῖς καθόλου προσέχομεν μᾶλλον, ἢ εἰ καλῶς τὸ ὅλον, οὕτως καὶ τού-
τοις ποιεῖσθαι δεῖ τὴν κρίσιν. κολοσσουργία γάρ τις καὶ αὐτὴ, τὰ μεγάλα φράζουσά πως ἔχει, καὶ τὰ ἄλ-
λα. πλὴν εἴ τι κινεῖν δύναται. ὅτι, καὶ τῶν μικρῶν τὸν φιλείδημον, καὶ τὸν πραγματικόν. ὅτι μὲν
οὖν σπουδαῖον τὸ προκείμενον ἔργον, καὶ φιλοσόφῳ προσῆκον, ταῦτα εἰρήσθω. εἰ δὲ πολλῶν προει-
πόντων ἐπιχειροῦμεν καὶ αὐτοὶ λέγειν περὶ τῶν αὐτῶν, οὔπω μεμπτέοι, ἂν μὴ καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον
διελεγχῶμεν ἐκείνοις ἅπαντα λέγοντες. ὑπολαβαίνομεν δ' ἄλλων ἄλλο τι κατορθωσάντων, πολὺ
μέρος ἔτι τοῦ ἔργου λείπεσθαι. πρὸς οὓς ἂν καὶ μικρὸν προσλαβεῖν δυνηθῶμεν, ἱκανὴν δεῖ τίθεσθαι
πρόφασιν τῆς ἐπιχειρήσεως. καὶ γὰρ δὴ πολύ τι τοῖς νῦν ἡ τῶν ῥωμαίων ἐπικράτεια, καὶ τῶν παρθυαί-
ων, τῆς τοιαύτης ἐμπειρίας προσδέδωκε. καθάπερ τοῖς μετὰ τὴν ἀλεξάνδρου στρατείαν. ὥς φησιν
ἐρατοσθένης. ὁ μὲν γὰρ τῆς ἀσίας πολλὴν ἀνεκάλυψεν ἡμῖν. καὶ τῶν βορείων τῆς εὐρώπης, ἅπαν-
τα μέχρι τοῦ ἴστρου. οἱ δὲ ῥωμαῖοι. τὰ ἑσπέρια τῆς εὐρώπης ἅπαντα μέχρις ἄλβιος ποταμοῦ, τοῦ τὴν
γερμανίαν δίχα διαιροῦντος. τά τε πέραν τοῦ ἴστρου, τὰ μέχρι τύρα ποταμοῦ. τὰ δὲ ἐπέκεινα μέχρι,
μαιωτῶν, καὶ τῆς εἰς κόλχους τελευτώσης παραλίας, μιθριδάτης ὁ ἐπικληθεὶς εὐπάτωρ ἐποίη-
σε γνώριμα, καὶ οἱ ἐκείνου στρατηγοί. οἱ δὲ παρθυαῖοι, τὰ περὶ τὴν ὑρκανίαν, καὶ τὴν βακτριανὴν,
καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων σκύθας, γνωριμωτέρους ἡμῖν ἐποίησαν, ἧττον γνωριζομένους ὑπὸ τῶν
πρότερον. ὥστε ἔχοιμεν ἄν τι λέγειν πλέον τῶν πρὸ ἡμῶν. ὁρᾶν δ' ἔστι τοῦτο μάλιστα ἐν τοῖς λόγοις
τοῖς πρὸς τοὺς πρὸ ἡμῶν. ἧττον μὲν ἐκ τῶν πάλαι, μᾶλλον δὲ τοὺς μετ' ἐρατοσθένη, καὶ αὐτὸν ἐκεῖ-
νον. οὓς εἰκὸς ὅσῳ περ πολυμαθέστεροι τῶν πολλῶν γεγόνασι. τοσούτῳ δυσελεγκτοτέρους εἶναι τοῖς
ὕστερον ἄν τι πλημμελῶς λέγωσιν. εἰ δ' ἀναγκασθησόμεθά που τισὶ τούτοις ἀντιλέγειν, οἷς μάλιστα ἐ-
πακολουθοῦμεν κατ' ἄλλα, δεῖ συγγνώμην ἔχειν. οὐ γὰρ πρόκειται πρὸς ἅπαντας ἀντιλέγειν, ἀλλὰ
τοὺς μὲν πολλοὺς ἐᾶν, οἷς μηδὲ ἀκολουθεῖν ἄξιον. ἐκείνους δὲ διαιτᾶν, οὓς ἐν τοῖς πλείστοις κατορθω-
κότας ἴσμεν. ἐπεὶ οὐδὲ πρὸς ἅπαντας φιλοσοφεῖν ἄξιον. πρὸς ἐρατοσθένη δὲ καὶ ποσειδώνιον,
καὶ ἵππαρχον, καὶ πολύβιον, καὶ ἄλλους τοιούτους καλόν. πρότερον δ' ἐπισκεπτέον ἐρατοσθένη,
παρατιθέντας ἅμα, καὶ τὴν ἱππάρχου πρὸς αὐτὸν ἀντιλογίαν. ἔστι δ' ὁ ἐρατοσθένης οὐχ οὕτως εὐκα-
ταστόχαστος, ὥστε μὴ δ' ἀθήνας αὐτὸν ἰδεῖν φάσκειν. ὅπερ πολέμων ἐπιχειρεῖ δεικνύναι. οὔτ'
ἐπὶ τοσοῦτον πιστὸς, ἐφ' ὅσον παρεδέξαντό τινες, καίπερ πλείστοις ἐντυχὼν, ὡς εἴρηκεν αὐτὸς ἀγα-
θοῖς ἀνδράσιν. ἐγένοντο γάρ φησιν ἐρατοσθένης ὡς οὐδέποτε, κατὰ τοῦτον τὸν καιρόν. ὑφ' ἕνα περίβο-
λον καὶ μίαν πόλιν, οἱ κατ' ἀρίστωνα, καὶ ἀρκεσίλαον ἀνθήσαντες φιλόσοφοι. οὐχ ἱκανὸν δ' οἶ-
μαι τοῦτο. ἀλλὰ τὸ κρίνειν καλῶς, οἷς μᾶλλον προσιτέον. ὁ δὲ ἀρκεσίλαον καὶ ἀρίστωνα τῶν καθ' ἑ-
αυτὸν ἀνθησάντων κορυφαίους τίθησιν. ἀπελλῆς τε αὐτῷ πολὺς ἐστὶ καὶ βίων. ὅν φησι πρῶτον
θείαν τινα περιβαλεῖν σοφίαν. ἀλλ' ὅμως πολλάκις εἰπεῖν ἄν τις εἰς αὐτὸ τοῦτο. οἵην ἐκ ῥακέων ὁ βί-
ων. ἐν αὐταῖς γὰρ ταῖς ἀποφάσεσι ταύταις. ἱκανὴν ἀσθένειαν ἐμφαίνει τῆς ἑαυτοῦ γνώμης. ὡς τοῦ ζήνωνος
τοῦ κιτιέως γνώριμος γενόμενος ἀθήνησι τῶν μὲν ἐκεῖνον διαδεξαμένων οὐδενὸς μέμνηται. τοὺς δ' ἐκείνῳ διενεχθέν-
τας, καὶ ὧν διαδοχὴ οὐδεμία σώζεται, τούτους ἀνθῆσαί φησι κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον. δηλοῖ δὲ καὶ ἡ περὶ τῶν ἀγαθῶν ἐκ-
δοθεῖσα ὑπ' αὐτοῦ πραγματεία. καὶ μελέται. καὶ εἴ τι ἄλλο τοιοῦτο, τὴν ἀγωγὴν αὐτοῦ. διότι μέσος ἦν τοῦ τε βου-
λομένου φιλοσοφεῖν, καὶ τοῦ μὴ θαρροῦντος ἐγχειρίζειν ἑαυτὸν εἰς τὴν ὑπόσχεσιν ταύτην. ἀλλὰ μόνον μέχρι τοῦ

δοκεῖν προϊόντος. ἢ καὶ παράβασίν τινα ταύτην ἀπὸ τῶν ἄλλων, τῶν ἐγκυκλίων περιεισμένην, πρὸς διατω-
γὴν, ἢ καὶ παιδιάν. ζόπον δέ τινα καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ἐστὶ τοιοῦτος. ἀλλὰ ἐκεῖνα ἐάσθω. πρὸς δὲ τὰ νῦν
ὑποκειμενέον ὅσα δύναιτ' ἂν ἐπανορθοῦν τὴν γεωγραφίαν. καὶ πρῶτον, ὅπερ ἀρτίως ὑπερεθέ-
μεθα ποιητὴν γὰρ ἔφη πάντα στοχάζεσθαι ψυχαγωγίας. οὐ διδασκαλίας. τοὐναντίον δ' οἱ, παλαιοὶ
φιλοσοφίαν τινὰ λέγουσι πρώτην τὴν ποιητικὴν. εἰσάγουσαν εἰς τὸν βίον ἡμᾶς ἐκ νέων. καὶ διδάσκου-
σαν ἤθη, καὶ πάθη καὶ πράξεις, μεθ' ἡδονῆς. οἱ δ' ἡμέτεροι, καὶ μόνον ποιητὴν ἔφασαν εἶναι τὸν σοφὸν
διὰ τοῦτο, καὶ τοὺς παῖδας αἱ τῶν ἑλλήνων πόλεις πρώτιστα διὰ τῆς ποιητικῆς παιδεύουσιν. οὐ ψυχαγω-
γίας χάριν δήπουθεν ψιλῆς, ἀλλὰ σωφρονισμοῦ. ὅπου γε καὶ οἱ μουσικοὶ ψάλλειν, καὶ αὐλίζειν, καὶ λυ-
ρίζειν διδάσκοντες, μεταποιοῦνται τῆς ἀρετῆς ταύτης. παιδευτικοὶ γὰρ εἶναί φασι, καὶ ἐπανορθω-
τικοὶ τῶν ἠθῶν. ταῦτα δ' οὐ μόνον παρὰ τῶν πυθαγορείων ἀκούειν ἐστὶ λεγόντων, ἀλλὰ καὶ ἀριστόξενος
οὕτως ἀποφαίνεται. καὶ ὅμηρος δὲ τοὺς ἀοιδοὺς σωφρονιστὰς εἴρηκε. καθάπερ τὸν τῆς κλυταιμνήστρας φύλακα.

» — ᾧ πόλλ' ἐπέτελλεν Ἀτρείδης, ζοίλω δ' ἐκείνων εἴρυσθαι ἄκοιτιν.

Τόν τε αἴγισθον, οὐ πρότερον αὐτῆς περιγενέσθαι. πρὶν ἢ

» Τὸν μὲν ἀοιδὸν ἄγων ἐς νῆσον ἐρήμην Κάλλιπεν· τὴν δ' ἐθέλων ἐθέλουσαν ἀνήγαγεν ὅνδε δόμονδε.

χωρὶς δὲ τούτων ὁ ἐρατοσθένης ἑαυτῷ μάχεται. μικρὸν γὰρ πρὸ τῆς λεχθείσης ἀποφάσεως, ἀρχό-
μενος τοῦ περὶ τῆς γεωγραφίας λόγου φησὶν ἅπαντας κατ' ἀρχὰς φιλοτίμως ἔχειν, εἰς τὸ μέσον φέρειν
τὴν ὑπὲρ τῶν τοιούτων ἱστορίαν. ὅμηρον γοῦν ὑπέρ τε τῶν αἰθιόπων, ὅσα ἐπύθετο κατατάξαι εἰς τὴν ποίη-
σιν, καὶ περὶ τῶν κατ' αἴγυπτον, καὶ λιβύην, τὰ δὲ δὴ κατὰ τὴν ἑλλάδα, καὶ τοὺς σύνεγγυς τόπους,
καὶ λίαν περιέργως ἐξενηνοχέναι. πολυτρήρωνα μὲν τὴν θίσβην λέγοντα. ἁλίαρτον δὲ ποιήεντα. ἐσχα-
τόωσαν δὲ ἀνθηδόνα, λίλαιαν δὲ πηγῆς ἔπι κηφισσοῖο. καὶ οὐδεμίαν προσθήκην κενῶς ἀπορρίπτειν.
πότερον οὖν ὁ ποιῶν ταῦτα ψυχαγωγοῦντι ἔοικεν ἢ διδάσκοντι; διδάσκοντι, νὴ δία ἀλλὰ ταῦτα μὲν
οὕτως εἴρηκε. τὰ δ' ἔξω τῆς αἰσθήσεως, καὶ οὗτος, καὶ οἱ ἄλλοι τερατολογίας μυθικῆς πεπληρώκα-
σιν. οὐκοῦν ἐχρῆν οὕτως εἰπεῖν. ὅτι ποιητὴς πᾶς πάντα τὰ μὲν, ψυχαγωγίας χάριν μόνον ἐκφέρει
τὰ δὲ διδασκαλίας. ὁ δ' ἐπήνεγκεν ὅτι ψυχαγωγίας μόνον. διδασκαλίας δ' οὔ. καὶ προσεξεργάζεται
τὶ πυνθανόμενος τί συμβάλλεται πρὸς ἀρετὴν ποιητοῦ, πολλῶν ὑπάρξαι τόπων ἔμπειρον, ἢ στρατηγίας, ἢ
γεωργίας ἢ ῥητορικῆς, ἢ οἷα δὴ περιποιεῖν αὐτῷ τινὲς ἐβουλήθησαν. τὸ μὲν οὖν ἅπαντα ζητεῖν περιποιεῖν αὐ-
τῷ προσεκπίπτοντος ἄν τις θείη τῇ φιλοτιμίᾳ. ὡς ἂν εἴ τις φησὶν ὁ ἵππαρχος ἀττικῆς εἰρεσιώνης κατηγο-
ροίη. καὶ ἂ μὴ δύναται φέρειν μῆλα καὶ ὄχνας, οὕτως ἐκείνου πᾶν μάθημα, καὶ πᾶσαν τέχνην. τοῦτο μὲν δὴ ὀρθῶς ἂν
λέγοις ὁ ἐρατόσθενες ἐκεῖνα δ' οὐκ ὀρθῶς ἀφαιρούμενος αὐτὸν τὴν τοσαύτην πολυμάθειαν. καὶ τὴν ποιητικὴν γραώ-
δη μυθολογίαν ἀποφαίνων. ᾗ δέδοται πλάττειν. φησὶν ὃ ἂν αὐτῇ φαίνηται ψυχαγωγίας οἰκεῖον. ἆρα γε οὐδὲ
τοῖς ἀκροωμένοις τῶν ποιητῶν. οὐδὲν συμβάλλεται πρὸς ἀρετὴν, λέγω δὲ τὸ πολλῶν ὑπάρξαι τόπων ἔμπει-
ρον, ἢ στρατηγίας, ἢ γεωργίας, ἢ ῥητορικῆς. ἅπερ ἡ ἀκρόασις ὡς εἰκὸς περιποιεῖ; ἀλλὰ μὴν ταῦτά γε
πάντα ὁ ποιητὴς ὀδυσσεῖ προσῆψεν. ὃν τῶν πάντων μάλιστα ἀρετῇ πάσῃ κοσμεῖ. οὗτος γὰρ αὐτῷ.

» Πολλῶν δ' ἀνθρώπων ἴδεν ἄστεα καὶ νόον ἔγνω. οὗτός τε, ὁ Εἰδὼς παντοίους τε δόλους, καὶ μήδεα πυκνά.

Οὗτος δ' ὁ πτολίπορθος αἰεὶ λεγόμενος. καὶ τὸ ἴλιον ἑλὼν

» Βουλῇ καὶ μύθοισι, καὶ ἠπεροπηΐδι τέχνῃ, Τούτου τε ἑπομένοιο, καὶ ἐκ πυρὸς αἰθομένοιο

» Ἄμφω νοστήσαιμεν — φησὶν ὁ διομήδης. καὶ μὴν ἐπὶ γε τῇ γεωργίᾳ σεμνύ-

νεται. καὶ γὰρ ἐν ἀμητῷ Ἐν ποίῃ, δρέπανον μὲν ἐγὼν εὐκαμπὲς ἔχοιμι.

» Καὶ δὲ σὺ τοῖον ἔχοις. — καὶ ἐν ἀρότῳ

» Τῷ κέ μ' ἴδοις εἰ ὦλκα διηνεκέα προταμοίμην. Καὶ οὐχ ὅμηρος μὲν οὕτω φρονεῖ περὶ τούτων, οὐ-

χὶ δὲ πάντες οἱ πεπαιδευμένοι μάρτυρι χρῶνται τῷ ποιητῇ, ὡς ὀρθῶς λέγοντι περὶ τοῦ τὴν τοιαύτην ἐμπει-
ρίαν εἰς φρόνησιν συντείνειν μάλιστα. ἡ δὲ ῥητορικὴ φρόνησίς ἐστι δήπου περὶ λόγους. ἣν ἐπιδείκνυται παρ' ὅλην
τὴν ποίησιν ὀδυσσεύς. ἐν τῇ διαπείρᾳ. ἐν ταῖς λιταῖς. ἐν τῇ πρεσβείᾳ. ἐν ᾗ φησίν.

» Ἀλλ' ὅτε δὴ ὄπα τε μεγάλην ἐκ στήθεος ἵει Καὶ ἔπεα νιφάδεσσιν ἐοικότα χειμερίῃσιν.

» Οὐκ ἂν ἔπειτ' ὀδυσῆΐ γ' ἐρίσσειε βροτὸς ἄλλος. Τίς ἂν οὖν ὑπολάβοι τὸν δυνάμενον ποιητὴν εἰ-

σάγειν ῥητορεύοντας ἄλλους, καὶ στρατηγοῦντας, καὶ τἄλλα ἐπιδεικνυμένους τὰ τῆς ἀρετῆς ἔργα, αὐ-
τὸν εἶναι τῶν φλυάρων ἕνα, καὶ τῶν θαυματοποιῶν. γοητεύειν μόνον καὶ κολακεύειν τὸν ἀκροατὴν δυνάμενον. ὠφε-
λεῖν δὲ μηδέν; πότερον δ' οὐδ' ἀρετὴν ποιητοῦ λέγοιμεν ἂν ἥντινα οὖν ἄλλην, ἢ τὴν μιμητικὴν τοῦ βίου διὰ λόγων
πῶς ἂν οὖν μιμοῖτο ἄπειρος ὢν τοῦ βίου, καὶ ἄφρων, οὐ γὰρ οὕτω φαμὲν τὴν τῶν ποιητῶν ἀρετὴν ὡς ἢ τεκτόνων, ἢ
χαλκέων. ἀλλ' ἐκείνη μὲν οὐδενὸς ἔχεται καλοῦ, καὶ σεμνοῦ. ἡ δὲ ποιητοῦ συνέζευκται τῇ τοῦ ἀνθρώπου. καὶ
οὐχ οἷόν τε ἀγαθὸν γενέσθαι ποιητήν. μὴ πρότερον γενηθέντα ἄνδρα ἀγαθόν. τὸ δὲ δὴ καὶ τὴν ῥητορι-
κὴν ἀφαιρεῖσθαι τὸν ποιητὴν, τελέως ἀφειδοῦντος ἡμῶν ἐστι. τί γὰρ οὕτω ῥητορικὸν, ὡς φράσις; τί δ' οὕτω
ποιητικόν; τίς δ' ἀμείνων ὁμήρου φράσαι νὴ δία, ἀλλ' ἑτέρα φράσις ἡ ποιητικὴ τῷ γε ἰδίως. καὶ ἐν αὐτῇ τῇ
ποιητικῇ, ἡ τραγικὴ. καὶ ἡ κωμική. καὶ ἐν τῇ πεζῇ, ἡ ἱστορικὴ, καὶ ἡ δικανική. ἆρα γε οὐδ' ὁ λόγος ἐστὶ γενικός. οὐ.

εἴδη ὁ ἔμμετρος καὶ ὁ πεζός; ἢ λόγος μὲν, ῥητορικὸς δὲ λόγος, οὐκ ἔστι γενικὸς, καὶ φράσις καὶ ἀρετὴ λόγου. ὡς δ᾽ εἰπεῖν, ὁ πεζὸς λόγος ὅ γε κατεσκευασμένος, μίμημα τοῦ ποιητικοῦ ἐστι. πρώτιστα γὰρ ἡ ποιητικὴ κατασκευὴ παρῆλθεν εἰς τὸ μέσον καὶ εὐδοκίμησεν. εἶτα ἐκείνην μιμούμενοι λύσαντες τὸ μέτρον, τἄλλα δὲ φυλάξαντες τὰ ποιητικὰ, συνέγραψαν, οἱ περὶ Κάδμον, καὶ Φερεκύδην, καὶ Ἑκαταῖον. εἶτα οἱ ὕστερον, ἀφαιροῦντες ἀεί τι τῶν τοιούτων, εἰς τὸ νῦν εἶδος κατήγαγον, ὡς ἂν ἀπὸ ὕψους τινός· καθάπερ ἄν τις καὶ τὴν κωμῳδίαν φαίη λαβεῖν τὴν σύστασιν ἀπὸ τῆς τραγῳδίας, καὶ τοῦ κατ᾽ αὐτὴν ὕψους καταβιβασθεῖσαν εἰς τὸ λογοειδὲς νυνὶ καλούμενον, καὶ τὸ ἀείδειν δὲ ἀντὶ τοῦ φράζειν τιθέμενον παρὰ τοῖς πάλαι, ταὐτὸ τοῦτο ἐκμαρτυρεῖ. διότι πηγὴ, καὶ ἀρχὴ φράσεως κατεσκευασμένης, καὶ ῥητορικῆς ὑπῆρξεν ἡ ποιητική, αὕτη γὰρ προσεχρήσατο τῷ μέλει κατὰ τὰς ἐπιδείξεις. τοῦτο δ᾽ ἦν ἡ ᾠδὴ λόγος μεμελισμένος· ἀφ᾽ οὗ δὴ ῥαψῳδίαν τ᾽ ἔλεγον, καὶ τραγῳδίαν, καὶ κωμῳδίαν. ὥστ᾽ ἐπειδὴ τὸ φράζειν πρώτιστα ἐπὶ τῆς ποιητικῆς ἐλέγετο φράσεως, αὕτη δὲ μετ᾽ ᾠδῆς, τὸ ἀείδειν αὐτοῖς τὸ αὐτὸ τῷ φράζειν ὑπῆρξε παρ᾽ ἐκείνοις. καταχρησαμένων δ᾽ αὐτῶν θατέρῳ καὶ ἐπὶ τοῦ πεζοῦ λόγου, καὶ ἐπὶ θάτερον ἡ κατάχρησις διέβη. καὶ αὐτὸ δὲ τὸ πεζὸν λεχθῆναι, τὸν ἄνευ τοῦ μέτρου λόγον, ἐμφαίνει τὸν ἀπὸ ὕψους τινὸς καταβάντα καὶ ὀχήματος εἰς τοὔδαφος. ἀλλ᾽ οὐδὲ τὰ συνεγγὺς μόνον, ὡς Ἐρατοσθένης εἴρηκε, καὶ τὰ ἐν τοῖς Ἕλλησιν, ἀλλὰ καὶ τῶν πόρρω πολλὰ λέγει καὶ διακριβοῖ Ὅμηρος. καὶ μᾶλλόν γε τῶν ὕστερον μυθολογοῦσιν, οὐ πάντα τερατευόμενος, ἀλλὰ καὶ πρὸς ἐπιστήμην ἀλληγορῶν, ἢ διασκευάζων, ἢ δημαγωγῶν, ἄλλα τε, καὶ τὰ περὶ τὴν Ὀδυσσέως πλάνην, περὶ ἧς πολλὰ διαμαρτάνει, τούς τ᾽ ἐξηγητὰς φλυάρους ἀποφαίνων, καὶ αὐτὸν τὸν ποιητήν. περὶ ὧν ἄξιον εἰπεῖν διὰ πλειόνων. καὶ πρῶτον ὅτι τοὺς μύθους ἀπεδέξαντο οὐχ οἱ ποιηταὶ μόνον, ἀλλὰ καὶ αἱ πόλεις πολὺ πρότερον. καὶ οἱ νομοθέται τοῦ χρησίμου χάριν, βλέψαντες εἰς τὸ φυσικὸν πάθος τοῦ λογικοῦ ζῴου. φιλειδήμων γὰρ ὁ ἄνθρωπος. προοίμιον δὲ τούτου τὸ φιλόμυθον. ἐντεῦθεν οὖν ἄρχεται τὰ παιδία ἀκροᾶσθαι καὶ κοινωνεῖν λόγων ἐπὶ πλεῖον. αἴτιον δ᾽ ὅτι καινολογία τίς ἐστιν ὁ μῦθος, οὐ τὰ καθεστηκότα φράζων, ἀλλ᾽ ἕτερα παρὰ ταῦτα. ἡδὺ δὲ τὸ καινὸν, καὶ ὃ μὴ πρότερον ἔγνω τις. τοῦτο δ᾽ αὐτό ἐστι καὶ τὸ ποιοῦν φιλειδήμονας. ὅταν δὲ προσῇ καὶ τὸ θαυμαστὸν, καὶ τὸ τερατῶδες, ἐπιτείνει τὴν ἡδονὴν, ἥπερ ἐστὶ τοῦ μανθάνειν φίλτρον. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν οὖν ἀνάγκη τοιούτοις δελέασι χρῆσθαι. προϊούσης δὲ τῆς ἡλικίας ἐπὶ τὴν τῶν ὄντων μάθησιν ἄγειν, ἤδη τῆς διανοίας ἐρρωμένης, καὶ μηκέτι δεομένης κολάκων, καὶ ἰδιώτης δὲ πᾶς καὶ ἀπαίδευτος, τρόπον τινὰ παῖς ἐστι. φιλομυθεῖ τε ὡσαύτως. ὁμοίως δὲ καὶ ὁ πεπαιδευμένος μετρίως· οὐδὲ γὰρ οὗτος ἰσχύει τῷ λογισμῷ. πρόσεστι γὰρ καὶ τὸ ἐκ παιδὸς ἔθος. ἐπεὶ δ᾽ οὐ μόνον ἡδὺ ἀλλὰ καὶ φοβερὸν, τὸ τερατῶδες, ἀμφοτέρων ἐστὶ χρεία τῶν εἰδῶν, πρός τε τοὺς παῖδας, καὶ τοὺς ἐν ἡλικίᾳ. τοῖς τε γὰρ παισὶ προσφέρομεν τοὺς ἡδεῖς μύθους εἰς προτροπήν. εἰς ἀποτροπὴν δὲ τοὺς φοβερούς. ἥ τε γὰρ Λάμια μῦθός ἐστι, καὶ ἡ Γοργὼ, καὶ ὁ Ἐφιάλτης· καὶ ἡ Μορμολύκη. οἵ τε πολλοὶ τῶν τὰς πόλεις οἰκούντων εἰς μὲν προτροπὴν ἄγονται τοῖς ἡδέσι τῶν μύθων, ὅταν ἀκούωσι τῶν ποιητῶν ἀνδραγαθήματα μυθώδη διηγουμένων· οἷον Ἡρακλέους ἄθλους, ἢ Θησέως. ἢ τιμὰς παρὰ θεῶν νεμομένας· ἢ νὴ Δία ὁρῶσι γραφὰς, ἢ ξόανα, ἢ πλάσματα, τοιαύτην τινὰ περιπέτειαν ἀποσημαίνοντα μυθώδη. εἰς ἀποτροπὴν δὲ, ὅταν κολάσεις παρὰ θεῶν, καὶ φόβους, καὶ ἀπειλὰς ἢ διὰ λόγων, ἢ διὰ τύπων ἀοράτων τινῶν προσδέχωνται. ἢ καὶ πιστεύωσι περιπεσεῖν τινας. οὐ γὰρ ὄχλον τε γυναικῶν, καὶ παντὸς χυδαίου πλήθους, ἐπαγαγεῖν λόγῳ δυνατὸν φιλοσόφῳ, καὶ προσκαλέσασθαι πρὸς εὐσέβειαν, καὶ ὁσιότητα καὶ πίστιν. ἀλλὰ δεῖ καὶ διὰ δεισιδαιμονίας. τοῦτο δ᾽ οὐκ ἄνευ μυθοποιίας, καὶ τερατείας. κεραυνὸς γὰρ, καὶ αἰγὶς, καὶ τρίαινα, καὶ λαμπάδες καὶ δράκοντες, καὶ θυρσόλογχα τῶν θεῶν ὅπλα μῦθοι, καὶ πᾶσα θεολογία ἀρχαϊκή. ταῦτα δ᾽ ἀπεδέξαντο οἱ τὰς πολιτείας καταστησάμενοι μορμολύκας τινὰς πρὸς τοὺς νηπιόφρονας. τοιαύτης δὲ τῆς μυθοποιίας οὔσης, καὶ καταστρεφούσης εἰς τὸ κοινωνικὸν, καὶ τὸ πολιτικὸν τοῦ βίου σχῆμα, καὶ τὴν τῶν ὄντων ἱστορίαν οἱ μὲν ἀρχαῖοι, τὴν παιδικὴν ἀγωγὴν ἐφύλαξαν μέχρι τῶν τελείων ἡλικιῶν. καὶ διὰ ποιητικῆς ἱκανῶς γὰρ σωφρονίζεσθαι πᾶσαν ἡλικίαν ὑπέλαβον. χρόνοις δ᾽ ὕστερον ἡ τῆς ἱστορίας γραφὴ, καὶ ἡ νῦν φιλοσοφία, παρελήλυθεν εἰς μέσον. αὕτη μὲν οὖν πρὸς ὀλίγους. ἡ δὲ ποιητικὴ δημωφελεστέρα, καὶ θέατρα πληροῦν δυναμένη. ἡ δὲ δὴ τοῦ Ὁμήρου ὑπερβαλλόντως. καὶ οἱ πρῶτοι δὲ ἱστορικοὶ, καὶ φυσικοὶ μυθογράφοι. Ἅτε δὴ πρὸς τὸ παιδευτικὸν εἶδος ἀναφέρων τοὺς μύθους ὁ ποιητὴς, ἐφρόντισε πολὺ μέρος τἀληθοῦς. ἐν δ᾽ ἐτίθει, καὶ ψεῦδος. τὸ μὲν ἀποδεχόμενος τὸ δὲ δημαγωγῶν, καὶ στρατηγῶν, τὰ πλήθη, ὡς δ᾽ ὅτε τις χρυσὸν περιχεύεται ἀργύρῳ ἀνὴρ, Οὕτως ἐκεῖνος ταῖς ἀληθέσι περιπετείαις προσετίθει μύθους, ἡδύνων, καὶ κοσμῶν τὴν φράσιν. πρὸς δὲ τὸ αὐτὸ τὸ τέλος τοῦ ἱστορικοῦ, καὶ τοῦ τὰ ὄντα λέγοντος, βλέπων. οὕτω δὴ τόν τε Ἰλιακὸν πόλεμον γεγονότα παραλαβὼν, ἐκόσμησε ταῖς μυθοποιίαις. καὶ τὴν Ὀδυσσέως πλάνην ὡσαύτως. ἐκ μηδενὸς δὲ ἀληθοῦς ἀνάπτειν καινὴν τερατολογίαν, οὐχ Ὁμηρικόν. προσπίπτει γὰρ ὡς εἰκὸς ὡς πιθανώτερον, ἂν οὕτω τις ψεύδοιτο, εἰ καταμίσγοι τι καὶ αὐτῶν τῶν ἀληθινῶν. ὅπερ καὶ Πολύβιός φησι περὶ τῆς Ὀδυσσέως πλάνης ἐπιχειρῶν. τοιοῦτο δ᾽ ἐστὶ καὶ τὸ ἴσκε ψεύδεα πολλὰ λέγων ἐτύμοισιν ὁμοῖα. Οὐ γὰρ πάντα ἀλλὰ πολλὰ. ἐπεὶ οὐδ᾽ ἂν ἦν ἐτύμοισιν ὁμοῖα ἔλαβον

ἔτι τῆς ἱστορίας ταῖς ἀρχαῖς. καὶ τὸν αἴολον δυναστεῦσαί φησι τῶν περὶ τὴν λιπάραν νήσων καὶ τῶν περὶ τὴν αἴ-
τνην, καὶ λεοντίνην, κύκλωπας, καὶ λαιστρυγόνας ἀξένους τινάς. διὸ καὶ τὰ περὶ τὸν πορθμὸν, ἀπροσπέλαστα
εἶναι τοῖς τότε. καὶ τὴν χάρυβδιν, καὶ τὸ σκύλλαιον ὑπὸ λῃστῶν κατέχεσθαι. οὕτω δὲ καὶ τοὺς ἄλλους τῶν ὑφ' ὁμή-
ρου λεγομένων, ἐν ἄλλοις τόποις ἱστοροῦμεν. οὕτω δὲ καὶ τοὺς κιμμερίους εἰδὼς οἰκοῦντας τὸν κιμμερικὸν
βόσπορον πρὸς βορρᾶν, καὶ ζοφώδη, μετήγαγεν εἰς σκοτεινόν τινα τόπον οἰκείως τὸν καθ' ᾅδην, χρήσι-
μον ὄντα πρὸς τὴν μυθοποιΐαν. τὴν ἐν τῇ πλάνῃ. ὅτι δ' οἶδεν αὐτοὺς, οἱ χρονογράφοι δηλοῦσιν, ἢ μι-
κρὸν πρὸ αὐτοῦ τὴν τῶν κιμμερίων ἔφοδον, ἢ κατ' αὐτὸν. ἀναγράφων δὲ ὡσαύτως καὶ τοὺς κόλχους εἰ-
δὼς, καὶ τὸν ἰάσονος πλοῦν τὸν εἰς αἴαν. καὶ τὰ περὶ κίρκης, καὶ μηδείας μυθευόμενα, καὶ ἱστορούμενα
περὶ τῆς φαρμακείας, καὶ τῆς ἄλλης ὁμοιοτροπίας, συγγενείας τε ἔπλασε τῶν οὕτω διῳκισμένων.
τῆς μὲν, ἐν τῷ μυχῷ τοῦ πόντου. τῆς δ' ἐν τῇ ἰταλίᾳ, καὶ ἐξωκεανισμὸν ἀμφοῖν. τάχα καὶ τοῦ ἰάσονος
μέχρι τῆς ἰταλίας πλανηθέντος. δείκνυται γάρ τινα σημεῖα. Καὶ περὶ τὰ κεραύνια ὄρη, καὶ πε-
ρὶ τὸν ἀδρίαν, καὶ ἐν τῷ ποσειδωνιάτῃ κόλπῳ. καὶ ταῖς πρὸ τῆς τυρρηνίας νήσοις, τῆς τῶν ἀργοναυ-
τῶν πλάνης σημεῖα. προσέδοσαν δέ τι, καὶ αἱ κυάνεαι, ἃς περ συμπληγάδας καλοῦσι πέτρας τινὲς,
τραχὺν ποιοῦσαι τὸν διέκπλουν, τὸν διὰ τοῦ βυζαντιακοῦ στόματος. ὥς τε παρὰ μὲν τὴν αἴαν ἡ αἰαίη. πα-
ρὰ δὲ τὰς συμπληγάδας, αἱ πλαγκταί, καὶ ὁ δι' αὐτῶν πλοῦς τοῦ ἰάσονος πιθανὸς ἐφάνη. παρὰ δὲ τὴν
σκύλλαν, καὶ τὴν χάρυβδιν, ὁ διὰ τῶν σκοπέλων πλοῦς. ἁπλῶς δ' οἱ τότε τὸ πέλαγος τὸ ποντικὸν,
ὥσπερ ἄλλον τινὰ ὠκεανὸν, ὑπελάμβανον. καὶ τοὺς πλέοντας ἐκεῖσε ὁμοίως ἐκτοπίζειν ἐδόκουν, ὥς
περ τοὺς ἔξω στηλῶν ἐπὶ πολὺ προϊόντας. καὶ γὰρ μέγιστον τῶν καθ' ἡμᾶς ἐνομίζετο. καὶ διὰ τοῦτο κατ' ἐ-
ξοχὴν ἰδίως πόντον προσηγόρευον. ὡς ποιητὴν τὸν ὅμηρον. ἴσως οὖν, καὶ διὰ τοῦτο μετήνεγκε τὰ ἐκ τοῦ πόν-
του πρὸς τὸν ὠκεανὸν ὡς εὐπαράδεκτα, διὰ τὴν κατέχουσαν δόξαν. οἶμαι δὲ καὶ τῶν σολύμων, τὰ ἄ-
κρα τοῦ ταύρου, τὰ περὶ τὴν λυκίαν ἕως πισιδίας κατασχόντων τὰ ὑψηλότατα. καὶ τὰς ἀπὸ τῆς με-
σημβρίας ἀναβολὰς ἐπιφανεστάτας παρεχόντων τοῖς ἐντὸς τοῦ ταύρου, καὶ μάλιστα τοῖς περὶ τὸν
πόντον, κατ' ὁμοιότητά τινα καὶ τούτους ἐξωκεανίσαι. φησὶ γὰρ ἐπὶ τοῦ πλέοντος ἐν τῇ σχεδίᾳ.
Τὸν δ' ἐξ αἰθιόπων ἀνιὼν κρείων ἐνοσίχθων  Τηλόθεν ἐκ σολύμων ὀρέων ἴδε. —

Τάχα δὲ καὶ τοὺς μονομμάτους κύκλωπας ἐκ τῆς σκυθικῆς ἱστορίας μετενήνοχε. τοιούτους γάρ τι-
νας τοὺς ἀριμασποὺς φασίν. οὓς ἐν τοῖς ἀριμασπείοις ἔπεσιν ἐκδέδωκεν ἀριστέας ὁ προκοννήσιος. δεῖ δὲ ταῦ-
τα προϋποθέμενον, σκοπεῖν. τί λέγουσιν οἱ φήσαντες περὶ σικελίαν, ἢ ἰταλίαν γενέσθαι τῷ ὀδυσσεῖ τὴν πλά-
νην καθ' ὅμηρον, ἢ μὴ γενέσθαι. ἔστι γὰρ ἀμφοτέρως τοῦτο δέξασθαι. καὶ βέλτιον, καὶ χεῖρον. βέλτιον μὲν, ἂν
οὕτω δέχηται. ὅτι πεισθεὶς ἐκεῖ τὴν πλάνην τῷ ὀδυσσεῖ γενέσθαι, λαβὼν ἀληθῆ ταύτην τὴν ὑπόθεσιν
ποιητικῶς διεσκεύασε. τοῦτο γὰρ οἰκείως ἂν λέγοιτο περὶ αὐτοῦ. καὶ οὐ μόνον γε περὶ ἰταλίαν, ἀλλὰ καὶ μέ-
χρι τῶν ἐσχάτων τῆς ἰβηρίας, ἔστιν εὑρεῖν ἴχνη τῆς ἐκείνου πλάνης, καὶ ἄλλων πλειόνων. χεῖρον δὲ, ἐάν τις
καὶ τὴν διασκευὴν, ὡς ἱστορίαν δέχηται, ἐκείνου ὠκεανὸν, καὶ ᾅδην, καὶ ἡλίου βόας, καὶ παρὰ θεαῖς ξενίας,
καὶ μεταμορφώσεις, καὶ μεγέθη κυκλώπων, καὶ λαιστρυγόνων, καὶ μορφὴν σκύλλης, καὶ διαστήματα
πλοῦ, καὶ ἄλλα πλείω τοιαῦτα τερατογραφοῦντος φανερῶς. οὔτε δὲ πρὸς τοῦτον ἄξιον ἀντιλέγειν,
οὕτω φανερῶς καταψευδόμενον τοῦ ποιητοῦ, καθάπερ οὐδ' εἰ φαίη, τοῦτον τὸν τρόπον γενέσθαι τὸν εἰς ἰθάκην κα-
τάπλουν τοῦ ὀδυσσέως, καὶ τὴν μνηστηροφονίαν, καὶ τὴν ἐπὶ τοῦ ἀγροῦ συστᾶσαν μάχην τοῖς ἰθακησίοις
πρὸς αὐτόν. οὔτε πρὸς τὸν δεξάμενον οἰκείως προσπλέκεσθαι δίκαιον. ὁ δ' ἐρατοσθένης δὲ πρὸς ἀμφο-
τέρας τὰς ἀποφάσεις ἀπήντηκεν οὐκ εὖ. πρὸς μὲν τὴν δευτέραν, ὅτι πειρᾶται διαβάλλειν τὰ φα-
νερῶς ψευδῆ, καὶ οὐκ ἄξια λόγου διὰ μακρέων. πρὸς δὲ τὴν προτέραν, ποιητήν τε ἅπαντα ἀποφήνας
φλύαρον, καὶ μήτε τόπων ἐμπειρίαν, μήτε τεχνῶν πρὸς ἀρετὴν συντείνειν νομίσας. τῶν τε μύθων,
τῶν μὲν ἐν τόποις οὐ πεπλασμένοις πεφημισμένων, οἷον ἐν ἰλίῳ, καὶ πηλίῳ καὶ ἴδῃ. τῶν δὲ ἐν πεπλα-
σμένοις, καθάπερ ἐν οἷς αἱ γοργόνες, ἢ ὁ γηρυόνης, ταύτης φησὶ τῆς ἰδέας εἶναι, καὶ τοὺς κατὰ τὴν
ὀδυσσέως πλάνην λεγομένους. τοὺς δὲ μὴ πεπλάσθαι λέγοντας, ἀλλ' ὑποκεῖσθαι, ἐξ αὐτοῦ τοῦ μὴ συμ-
φωνεῖν ἐλέγχεσθαι ψευδομένους. τὰς γοῦν σειρῆνας, τοὺς μὲν, ἐπὶ τῆς πελωριάδος καθιδρύειν, τοὺς
δὲ, ἐπὶ τῶν σειρηνουσσῶν. πλείους ἢ δισχιλίους διεχουσῶν σταδίους. εἶναι δ' αὐτὰς σκόπελον τρικόρυ-
φον, διείργοντα τὸν κυμαῖον, καὶ ποσειδωνιάτην κόλπον. Ἀλλ' οὐδ' ὁ σκόπελος οὗτος ἐστὶ τρικόρυ-
φος. οὐδ' ὅλως κορυφοῦται πρὸς ὕψος. ἀλλ' ἀγκὼν τις ἐκκεῖται μακρὸς, καὶ στενὸς ἀπὸ τῶν κατὰ συ-
ρρέντων χωρίων ἐπὶ τὸν κατὰ καπρέας πορθμόν. ἐπὶ θάτερα μὲν τῆς ὀρεινῆς, τὸ τῶν σειρήνων ἱερὸν
ἔχων. ἐπὶ θάτερα δὲ, πρὸς τῷ ποσειδωνιάτῃ κόλπῳ νησίδια τρία προκείμενα, ἔρημα, πετρώδη, ἃ κα-
λοῦσι σειρηνούσσας. ἐπ' αὐτῷ δὲ τῷ πορθμῷ, τὸ ἀθήναιον. ᾧπερ ὁμωνυμεῖ καὶ ὁ ἀγκὼν αὐτός.
Ἀλλ' οὐδ' εἰ μὴ συμφωνοῦσιν οἱ τὴν ἱστορίαν τῶν τόπων παραδιδόντες, εὐθὺς ἐκβάλλειν δεῖ τὴν σύμ-
πασαν ἱστορίαν, ἀλλ' ἔσθ' ὅτε καὶ πιστοῦσθαι τὸ καθόλου μᾶλλόν ἐστιν. οἷον τὶ λέγω, ζητουμένου, εἰ
κατὰ σικελίαν, καὶ ἰταλίαν ἡ πλάνη γέγονε. καὶ εἰ αἱ σειρῆνες ἐνταῦθά που λέγονται. ὁ μὲν φή-
σας ἐν τῇ πελωριάδι πρὸς τὸν ἐν ταῖς σειρηνούσσαις διαφωνεῖ. ἀμφότεροι δὲ πρὸς τὸν περὶ σι-

κελίαν, καὶ Ἰταλίαν λέγοντα, οὐ διαφωνοῦσιν. ἀλλὰ καὶ μείζω πίστιν παρέχουσιν. ὅτι καίπερ μὴ τὸ αὐτὸ χωρίον φράζοντες, ὅμως οὐκ ἐκβεβήκασί γε τοῦ κατὰ τὴν Ἰταλίαν, ἢ Σικελίαν. ἐὰν δὲ προσθῇ τις ὅτι ἐν Νεαπόλει, Παρθενόπης δείκνυται μνῆμα μιᾶς τῶν Σειρήνων, ἔτι πλείων προσεγίνετο πίστις. καίτοι τρίτου τινὸς λεχθέντος τοῦ τόπου τούτου. ἀλλ' ὅτι ἐν τούτῳ τῷ κόλπῳ τῷ ὑπὸ Ἐρατοσθένους λεχθέντι Κυμαίῳ, ὃν ποιοῦσιν αἱ Σειρηνοῦσσαι, καὶ ἡ Νεάπολις ἵδρυται, βεβαιοτέρως πιστεύομεν τὸ περὶ τούτους τοὺς τόπους γεγονέναι τὰς Σειρῆνας. οὔτε γὰρ τὸν ποιητὴν ἀκριβῶς ἕκαστα πυθέσθαι, οὔθ' ἡμεῖς παρ' ἐκείνου ζητοῦμεν τὸ ἀκριβές. οὐ μὴν οὐδ' οὕτως ἔχομεν, ὡς ὑπολαμβάνειν καὶ μηδὲν πεπυσμένον περὶ τῆς Ὀδυσσέως πλάνης, μήθ' ὅπου, μήθ' ὅπως γένοιτο, ῥαψῳδεῖν. Ἐρατοσθένης δὲ Ἡσίοδον μὲν εἰκάζει πεπυσμένον περὶ τῆς Ὀδυσσέως πλάνης, ὅτι κατὰ Σικελίαν, καὶ Ἰταλίαν γεγένηται, πιστεύσαντα τῇ δόξῃ ταύτῃ, μὴ μόνον τῶν ὑφ' Ὁμήρου λεγομένων μεμνῆσθαι, ἀλλὰ καὶ Αἴτνης, καὶ Ὀρτυγίας τοῦ πρὸς Συρακούσαις νησίου, καὶ Τυρρηνῶν. Ὅμηρον δὲ, μήτε εἰδέναι ταῦτα, μήτε βούλεσθαι ἐν γνωρίμοις τόποις ποιεῖν τὴν πλάνην. πότερον οὖν Αἴτνη μὲν, καὶ Τυρρηνία γνώριμα, Σκύλλαιον δὲ, καὶ Χάρυβδις, καὶ Κίρκαιον, καὶ Σειρηνοῦσαι, οὐ πάνυ; ἢ καὶ Ἡσιόδῳ μὲν ἔπρεπε μὴ φλυαρεῖν, ἀλλὰ ταῖς κατεχούσαις δόξαις ἀκολουθεῖν, Ὁμήρῳ δὲ πᾶν ὅ τι ἂν ἐπισυμβαίνῃ καὶ ῥῆμα γλῶτταν ἴῃ κελαδεῖν; χωρὶς γὰρ τῶν λεχθέντων περὶ τῆς πρεπούσης Ὁμήρῳ μυθοποιίας, καὶ τὸ πλῆθος τῶν συγγραφέων τῶν ταῦτα θρυλλούντων, καὶ τῆς κατὰ τοὺς τόπους ἐπιχωριαζούσης φήμης διδάσκειν δύναται. διὸ ταῦτα οὐ ποιητῶν πλάσματά ἐστιν, οὐδὲ συγγραφέων, ἀλλὰ γεγενημένων ἴχνη, καὶ προσώπων, καὶ πράξεων. καὶ Πολύβιος δ' ὀρθῶς ὑπονοεῖ τὰ περὶ τῆς πλάνης. τὸν γὰρ Αἴολον, τὸν προσημαίνοντα τοὺς ἔκπλους, ἐν τοῖς κατὰ τὸν πορθμὸν τόποις ἀμφιδρόμοις οὖσι καὶ δυσέκπλοις, διὰ τὰς παλιρροίας, ταμίαν τε εἰρῆσθαι τῶν ἀνέμων, καὶ βασιλέα νενομίσθαι φησί. καθάπερ Δαναὸν μὲν, τὰ ὑδρεῖα τὰ ἐν Ἄργει παραδείξαντα, Ἀτρέα δὲ, τοῦ ἡλίου τὸν ὑπεναντίον τῷ οὐρανῷ δρόμον, μάντεις τε, καὶ ἱεροσκοπουμένους ἀποδείκνυσθαι βασιλέας, τούς θ' ἱερέας τῶν Αἰγυπτίων, καὶ Χαλδαίους, καὶ Μάγους, σοφίᾳ τινὶ διαφέροντας τῶν ἄλλων, ἡγεμονίας καὶ τιμῆς τυγχάνειν παρὰ τοῖς πρὸ ἡμῶν. οὕτω δὲ καὶ τῶν θεῶν ἕκαστον τῶν χρησίμων τινὸς εὑρετὴν γενόμενον, τιμᾶσθαι. ταῦτα δὲ προοικονομησάμενος, οὐκ ἐᾷ τὸν Αἴολον ἐν μύθου σχήματι ἀκούεσθαι. οὐδ' ὅλην τὴν Ὀδυσσέως πλάνην. ἀλλὰ μικρὰ μὲν προσμεμυθεῦσθαι, καθάπερ καὶ τῷ Ἰλιακῷ πολέμῳ, τὸ δ' ὅλον περὶ Σικελίαν καὶ τῷ ποιητῇ πεποιῆσθαι, καὶ τοῖς ἄλλοις συγγραφεῦσιν, ὅσοι τὰ περὶ χωρία λέγουσι τὰ περὶ τὴν Ἰταλίαν, καὶ Σικελίαν. οὐκ ἐπαινεῖ δὲ, οὐδὲ τὴν τοιαύτην τοῦ Ἐρατοσθένους ἀπόφασιν. διότι φησὶ τότ' ἂν εὑρεῖν τινα, ποῦ Ὀδυσσεὺς πεπλάνηται, ὅταν εὕρῃ τὸν σκυτέα τὸν συρράψαντα τὸν τῶν ἀνέμων ἀσκόν. καὶ τοῦτο δ' οἰκείως εἰρῆσθαι τοῖς συμβαίνουσι περὶ τὸ Σκύλλαιον. καὶ τὴν θήραν τῶν γαλεωτῶν τὸ ἐπὶ τῆς Σκύλλης.

» αὐτοῦ δ' ἰχθυάᾳ σκόπελον περιμαιμώωσα.
» δελφῖνάς τε κύνας τε, καὶ εἴ ποθι μεῖζον ἕλῃσι
κῆτος.—

Τοὺς γὰρ θύννους ἀγεληδὸν φερομένους παρὰ τὴν Ἰταλίαν, ἐπειδὰν ἐμπέσωσι καὶ κωλυθῶσι τῆς Σικελίας ἅψασθαι, περιπίπτειν τοῖς μείζοσι τῶν ζῴων, οἷον δελφίνων, καὶ κυνῶν, καὶ ἄλλων κητωδῶν. ἐκ δὲ τῆς θήρας αὐτῶν πιαίνεσθαι τοὺς γαλεώτας. οὓς καὶ ξιφίας λέγεσθαι, καὶ κύνας φασί. συμβαίνει γὰρ ταὐτὸν ἐνθάδε, καὶ κατὰ τὰς ἀναβάσεις τοῦ Νείλου, καὶ τῶν ἄλλων ὑδάτων, ὅπερ ἐπὶ πυρὸς, καὶ ὕλης ἐμπιπραμένης. ἀθροιζόμενα γὰρ τὰ θηρία φεύγειν τὸ πῦρ, ἢ τὸ ὕδωρ, καὶ βορὰν γίνεσθαι τοῖς κρείττοσι. ταῦτα δ' εἰπὼν διηγεῖται τὴν τῶν γαλεωτῶν θήραν, ἣ συνίσταται περὶ τὸ Σκύλλαιον. σκοπὸς γὰρ ἐφέστηκε κοινὸς τοῖς ὑφορμοῦσιν ἐν δικώποις σκαφιδίοις πολλοῖς, δύο καθ' ἕκαστον σκαφίδιον. καὶ ὁ μὲν ἐλαύνει. ὁ δ' ἐπὶ τῆς πρῴρας ἕστηκε δόρυ ἔχων. σημήναντος τοῦ σκοποῦ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ γαλεώτου. φέρεται δὲ τὸ τρίτον μέρος ἔξαλον τὸ ζῷον. συνάψαντος δὲ τοῦ σκάφους, ὁ μὲν ἔπληξεν ἐκ χειρός. εἶτ' ἐξέσπασεν ἐκ τοῦ σώματος τὸ δόρυ χωρὶς τῆς ἐπιδορατίδος. ἀγκιστρώδης τε γάρ ἐστι, καὶ χαλαρῶς ἐνηρμόσθαι τῷ δόρατι ἐπίτηδες, καλώδιον δ' ἔχει μακρὸν ἐξημμένον. τοῦτ' ἐπιχαλῶσι τῷ τρωθέντι, ἕως ἂν κάμῃ σφαδάζον, καὶ ὑποφεῦγον. τότε δ' ἕλκουσιν ἐπὶ τὴν γῆν, ἢ εἰς τὸ σκάφος ἀναλαμβάνουσιν. ἐὰν μὴ μέγα ᾖ τελέως τὸ σῶμα. κἂν ἐκπέσῃ δὲ εἰς τὴν θάλατταν τὸ δόρυ, οὐκ ἀπόλωλεν. ἔστι γὰρ πηκτὸν, ἔκ τε δρυὸς, καὶ ἐλάτης. ὥστε βαπτιζομένου τοῦ δρυΐνου βάρει, μετέωρον εἶναι τὸ λοιπὸν, καὶ εὐανάληπτον. συμβαίνει δέ ποτε καὶ τιτρώσκεσθαι διὰ τοῦ σκαφιδίου τὸν κωπηλάτην, διὰ τὸ μέγεθος τοῦ ξίφους τῶν γαλεωτῶν. καὶ τὸ τὴν ἀκμὴν τοῦ ζῴου συαγρώδη εἶναι, καὶ τὴν θήραν. ἔκ τε δὴ τῶν τοιούτων εἰκάζοι τις ἄν φησι περὶ Σικελίαν γενέσθαι τὴν πλάνην κατὰ τὸν Ὅμηρον. ὅτι τῇ Σκύλλῃ προσῆψε τὴν τοιαύτην θήραν. ἣ μάλιστ' ἐπιχώριός ἐστι τῷ Σκυλλαίῳ. καὶ ἐκ τῶν περὶ τῆς Χαρύβδεως λεγομένων ὁμοίων τοῖς τοῦ πορθμοῦ πάθεσι. τὸ δὲ τρὶς μὲν γάρ τ' ἀνίησιν ἀντὶ τοῦ δὶς, γραφικὸν εἶναι ἁμάρτημα, ἢ ἱστορικόν. καὶ τὰ ἐν τῇ Μήνιγγι δὲ τοῖς περὶ τῶν Λωτοφάγων εἰρημένοις συμφωνεῖ. εἰ δέ τινα μὴ συμφωνεῖ, μεταβολὰς αἰτιᾶσθαι δεῖν, ἢ ἄγνοιαν, ἢ ποιητικὴν ἐξουσίαν. ἣ συνέστηκεν ἐξ ἱστορίας, καὶ διαθέσεως, καὶ μύθου. τῆς μὲν οὖν ἱστορίας ἀλήθειαν εἶναι τέλος, ὡς ἐν νεῶν καταλόγῳ τὰ ἑκάστοις τόποις συμβεβηκότα λέγοντος τοῦ ποιητοῦ. τὴν μὲν, πετρήεσσαν. τὴν δὲ, ἐσχατόωσαν πόλιν. ἄλλην δὲ πολυτρήρωνα. τὴν δ' ἀγχίαλον.

τῆς δὲ διαθέσεως, ἐνάργειαν εἶναι τὸ τέλος, ὡς ὅταν μαχομένους εἰσάγῃ· μύθου δὲ, ἡδονὴν, καὶ ἔκπληξιν· τὸ δὲ πάντα πλάττειν, οὐ πιθανὸν, οὐδ' ὁμηρικόν· τὴν γὰρ ἐκείνου ποίησιν φιλοσόφημα πάντας νομίζειν· οὐχ ὡς ἐρατοσθένης φησὶ, κελεύων μὴ κρίνειν πρὸς τὴν διάνοιαν τὰ ποιήματα· μηδ' ἱστορίαν ἀπ' αὐτῶν ζητεῖν, πιθανώτερόν τε τὸ

» Ἔνθεν δ' ἐννῆμαρ φερόμην ὀλοοῖς ἀνέμοισιν.

ἐν βραχεῖ διαστήματι δέχεσθαι· οἱ γὰρ ὀλοοὶ οὐκ εὐθύδρομοι· ἢ ἐξωκεανίζειν, ὡς ἂν οὐρίων πνεόντων συνεχῶς· συνθεὶς δὲ τὸ διάστημα τὸ ἐκ μαλεῶν ἐπὶ στήλας, σταδίων δισμυρίων, καὶ δισχιλίων πεντακοσίων, εἰ φησὶ τοῦτο, θείημεν ἐν ταῖς ἐννέα ἡμέραις διηνύσθαι ἰσοταχῶς, ἑκάστης ἂν ἡμέρας ὁ πλοῦς συμβαίνοι, σταδίων δισχιλίων πεντακοσίων· τίς οὖν ἱστόρηκεν ἐκ λυκίας, ἢ ῥόδου δευτεραῖόν τινα ἀφιγμένους εἰς ἀλεξάνδρειαν· ὄντος τοῦ διαστήματος, σταδίων τετρακισχιλίων· Πρὸς δὲ τοὺς ἐπιζητοῦντας πῶς τρὶς εἰς σικελίαν ἐλθὼν, οὐδ' ἅπαξ διὰ τοῦ πορθμοῦ πέπλευκεν ὀδυσσεὺς, ἀπολογεῖται· διότι καὶ οἱ ὕστερον ἔφευγον ἅπαντες τὸν πλοῦν τοῦτον· τοιαῦτα μὲν εἴρηκεν· Ἔστι δὲ τἆλλα μὲν εὖ λεγόμενα· ὅταν δ' ἀναγκάζῃ τὸν ἐξωκεανισμὸν, καὶ πρὸς ἀκριβῆ μέτρα τὸν τῶν ἡμερῶν πλοῦν ἀνάγῃ, καὶ διαστήματα, ὑπερβολὴν οὐκ ἀπολείπει τῆς ἀνωμαλίας· ἅμα μὲν γὰρ παραλείπει τὰ τοῦ ποιητοῦ ἔπη·

» Ἔνθεν δ' ἐννῆμαρ φερόμην ὀλοοῖς ἀνέμοισιν.

Ἅμα δ' ἐπικρύπτεται· καὶ γὰρ ταῦτα τοῦ ποιητοῦ.

» Αὐτὰρ ἐπεὶ ποταμοῖο λίπεν ῥόον ὠκεανοῖο Νηῦς. — καὶ τὸ

» Νήσῳ ἐν ὠγυγίῃ, ὅθι τ' ὀμφαλός ἐστι θαλάσσης.

Καὶ ὅτι ἐνταῦθα οἰκεῖ ἄτλαντος θυγάτηρ· καὶ τὸ περὶ τῶν φαιάκων.

» Οἰκέομεν δ' ἀπάνευθε πολυκλύστῳ ἐνὶ πόντῳ Ἔσχατοι· οὐδέ τις ἄμμι βροτῶν ἐπιμίσγεται ἄλλος.

Ταῦτα γὰρ πάντα φανερῶς ἐν τῷ ἀτλαντικῷ πελάγει πλαττόμενα δηλοῦται· ὁ δὲ ταῦτ' ἐπικρυπτόμενος, τὰ φανερῶς λεγόμενα ἀναιρεῖ· τοῦτο μὲν οὖν οὐκ εὖ· τὸ δὲ περὶ σικελίαν, καὶ ἰταλίαν γεγονέναι τὴν πλάνην, ὀρθῶς· καὶ ἀπὸ τοῦ ποιητοῦ βεβαιοῦται, ἐπεὶ τίς ἔπεισε ποιητὴς, ἢ συγγραφεὺς, νεαπολίτας μὲν λέγειν μνῆμα παρθενόπης τῆς σειρῆνος; τοὺς δὲ ἐν κύμῃ, καὶ δικαιαρχίᾳ, καὶ βεσουβίῳ, πυριφλεγέθοντα· καὶ ἀχερουσίαν λίμνην, καὶ νεκυομαντεῖον τὸ ἐν τῷ ἀόρνῳ· καὶ βάϊον· καὶ μισηνὸν τῶν ὀδυσσέως ἑταίρων τινάς· οὕτω δὲ καὶ τὰ περὶ σειρηνούσας, καὶ τὰ περὶ τὸν πορθμὸν, καὶ σκύλλαν, καὶ χάρυβδιν, καὶ αἴολον· ἅπερ οὔτ' ἀκριβῶς ἐξετάζειν δεῖ, οὔτ' ἄρριζα, καὶ ἀνέστια ἐᾶν, ἀληθείας μηδὲν προσαπτόμενα, μηδ' ὠφελείας ἱστορικῆς· καὶ αὐτὸς δὲ ὑπονοήσας τοῦτο ὁ ἐρατοσθένης, ὑπολάβοι τις ἄν φησι, τὸν ποιητὴν βούλεσθαι μὲν ἐν τοῖς προσεσπερίοις τόποις τὴν πλάνην τῷ ὀδυσσεῖ ποιεῖν· ἀποστῆναι δ' ἀπὸ τῶν ὑποκειμένων· τὰ μὲν, οὐκ ἀκριβῶς πεπυσμένον· τὰ δὲ, οὐδὲ προαιρούμενον οὕτως· ἀλλ' ἐπὶ τὸ δεινότερον καὶ τὸ τερατωδέστερον ἕκαστα ἐξάγειν. Τοῦτο μὲν αὐτὸ εὖ· τὸ δ' οὗ χάριν τοῦτ' ἐποίησε κακῶς δεξάμενος· οὐ γὰρ φλυαρίας· ἀλλ' ὠφελείας χάριν· ὥστε δίκαιός ἐστιν ὑπέχειν λόγον καὶ περὶ τούτου· καὶ διότι φησὶ τὰ πόρρω τερατολογεῖσθαι μᾶλλον διὰ τὸ εὐκατάψευστον· πολλοστὸν γὰρ μέρος ἐστὶ τὰ πόρρω, τερατολογούμενα τῶν ἐν τῇ ἑλλάδι, καὶ ἐγγὺς τῆς ἑλλάδος· οἷα δὴ τὰ κατὰ τοὺς ἡρακλέους ἄθλους, καὶ θησέως· καὶ τὰ ἐν κρήτῃ, καὶ σικελίᾳ μυθολογούμενα, καὶ ταῖς ἄλλαις νήσοις· καὶ τὰ περὶ τὸν κιθαιρῶνα, καὶ ἑλικῶνα, καὶ παρνασσὸν, καὶ πήλιον· καὶ τὴν ἀττικὴν ὅλην, καὶ πελοπόννησον· οὐδεὶς τε ἐκ τῶν μύθων ἄγνοιαν αἰτιᾶται τῶν μυθοποιῶν, ἔτι δὲ ἐπεὶ οὐ πάντα μυθεύουσιν, ἀλλὰ πλείω προσμυθεύουσι, καὶ μάλιστα ὅμηρος, ζητῶν τί οἱ παλαιοὶ προσμυθεύουσιν, οὐ ζητεῖ, εἰ τὰ προσμυθευόμενα ὑπῆρξεν, ἢ ἔστιν· ἀλλὰ καὶ μᾶλλον οἷς προσμυθεύεται τόποις, ἢ προσώποις, περὶ ἐκείνων ζητεῖ τἀληθές· οἷον τὴν ὀδυσσέως πλάνην, εἰ γέγονε, καὶ ποῦ· τὸ δ' ὅλον οὐκ εὖ, τὸ τὴν ὁμήρου ποίησιν εἰς ἓν συνάγειν, καὶ τὴν τῶν ἄλλων ποιητῶν· εἴς τε τἆλλα, καὶ εἰς αὐτὰ τὰ νῦν προκείμενα, τὰ τῆς γεωγραφίας· καὶ μηδὲν αὐτῷ πρεσβεῖον ἀπονέμειν· καὶ γὰρ εἰ μηδὲν ἄλλο, τόν γε τριπτόλεμον τοῦ σοφοκλέους· ἢ τὸν ἐν ταῖς βάκχαις ταῖς εὐριπίδου πρόλογον ἐπελθόντα, καὶ παραβαλόντα τὴν ὁμήρου περὶ τὰ τοιαῦτα ἐπιμέλειαν, ῥᾴδιον ἦν αἰσθέσθαι τὴν ὑπεροχὴν, ἢ τὴν διαφοράν· ὅπου γὰρ χρεία τάξεως ὧν μέμνηται τόπων, φυλάττει τὴν τάξιν· ὁμοίως μὲν τῶν ἑλληνικῶν· ὁμοίως δὲ τῶν ἄποθεν.

» Ὄσσαν ἐπ' οὐλύμπῳ μέμασαν θέμεν· αὐτὰρ ἐπ' ὄσσῃ Πήλιον εἰνοσίφυλλον. —
» Ἥρη δ' ἀΐξασα λίπε ῥίον οὐλύμποιο. Πιερίην τ' ἐπιβᾶσα, καὶ ἠμαθίην ἐρατεινὴν,
» Σεύατ' ἐφ' ἱπποπόλων θρῃκῶν ὄρεα νιφόεντα. Ἐξ ἀθόω δ' ἐπὶ πόντον. —

Καὶ ἐν τῷ καταλόγῳ τὰς μὲν πόλεις οὐκ ἐφεξῆς λέγει, οὐ γὰρ ἀναγκαῖον· τὰ δὲ ἔθνη ἐφεξῆς· ὁμοίως δὲ καὶ περὶ τῶν ἄποθεν.

» Κύπρον φοινίκην τε, καὶ αἰγυπτίους ἐπαληθείς.
» Αἰθίοπάς θ' ἱκόμην καὶ σιδονίους καὶ ἐρεμβοὺς Καὶ λιβύην. —

Ὅπερ καὶ ἵππαρχος ἐπισημαίνεται· οἱ δ' ἐφ' ὧν τάξεως χρεία, ὁ μὲν, τὸν διόνυσον ἐπιόντα τὰ ἔθνη φράζων· ὁ δὲ, τὸν τριπτόλεμον τὴν κατασπειρομένην γῆν· τὰ μὲν πολὺ διεστῶτα συνάπτουσιν ἐγγὺς, τὰ δὲ συνεχῆ διασπῶσι.

» Λιπὼν δὲ λυδῶν τὰς πολυχρύσους γύας. Φρυγῶν τε περσῶν θ' ἡλιοβλήτους πλάκας.

» Βάκτριά τε τείχη, τήν τε δύσχιμον χθόνα Μήδων ἐπελθών· Ἀραβίαν τ' εὐδαίμονα.

Τοιαῦτα δὲ καὶ ὁ Τριπτόλεμος ποιεῖ. κἀν τοῖς κλίμασι δὲ, κἀν τοῖς ἀνέμοις διαφαίνει τὸ πολυμαθὲς, τὸ περὶ τὴν γεωγραφίαν ὅμηρος. ἐν ταῖς τοποθεσίαις λέγων ἅμα καὶ ταῦτα πολλαχοῦ.

» Αὐτὴ δὲ χθαμαλὴ πανυπερτάτη εἰν ἁλὶ κεῖται
» Πρὸς ζόφον. αἱ δέ τ' ἄνευθε πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε.
Δύω δέ τε αἱ θύραι εἰσίν. αἱ μὲν, πρὸς βορέαν, αἳ δ' αὖ πρὸς νότον.
» Εἴτ' ἐπὶ δεξί' ἴωσι πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε Εἴτ' ἐπ' ἀριστερὰ τοί γε ποτὶ ζόφον.

Καὶ μὴν τὴν ἄγνοιάν γε τῶν τοιούτων, τελείαν ἡγεῖται σύγχυσιν τῶν ἁπάντων.

» Ὦ φίλοι. οὐ γάρ τ' ἴδμεν ὅπῃ ζόφος οὐδ' ὅπῃ ἠώς.
» Οὐδ' ὅπῃ ἠέλιος.— Καὶ ἐνταῦθα δ' εἰπόντος εὖ, τοῦ ποιητοῦ.
» Βορέης καὶ ζέφυρος τώ τε θρῄκηθεν ἄητον, Οὐκ εὖ δεξάμενος ὁ αὐτὸς συκοφαντεῖ. ὡς καθόλου λέγοντος, ὅτι ὁ ζέφυρος ἐκ θράκης πνεῖ. ἐκείνου λέγοντος οὐ καθόλου. ἀλλ' ὅταν κατὰ τὴν θρακίαν θάλασσαν συμπέσωσι περὶ τὸν μέλανα κόλπον αὐτοῦ τοῦ αἰγαίου μέρος ὄντα. ἐπιστροφὴν γὰρ λαμβάνει πρὸς νότον ἀκρωτηριάζουσα ἡ θράκη, καθ' ἃ συνάπτει τῇ μακεδονίᾳ. καὶ προσπίπτουσα εἰς τὸ πέλαγος, τοὺς ζεφύρους ἐντεῦθεν πνέοντας, ἀποφαίνει τοῖς ἐν θάσῳ, καὶ λήμνῳ, καὶ ἴμβρῳ, καὶ σαμοθρᾴκῃ, καὶ τῇ περὶ αὐτὰς θαλάττῃ. καθάπερ καὶ τῇ ἀττικῇ ἀπὸ τῶν σκειρωνίδων πετρῶν. ἀφ' ὧν καὶ σκείρωνες καλοῦνται οἱ ζέφυροι. καὶ μάλιστα οἱ ἀργέσται. οὐκ ἐνόησε δὲ τοῦτο ἐρατοσθένης. ὑπενόησε δ' ὅμως. αὐτὸς γοῦν διηγεῖται τὴν ἐπιστροφὴν, ἣν λέγω, τῆς χώρας. ὡς καθόλου δ' οὖν δέχεται. εἶτ' ἀπειρίαν αἰτιᾶται τοῦ ποιητοῦ. ὡς τοῦ ζεφύρου μὲν ἀπὸ τῆς ἑσπέρας πνέοντος, καὶ τῆς ἰβηρίας. τῆς δὲ θρᾴκης ἐκεῖσε μὴ διατεινούσης. πότερον οὖν τὸν ζέφυρον ἀγνοεῖ ἀπὸ ἑσπέρας πνέοντα, ἀλλ' ὅταν οὕτω φῇ, φυλάττει τὴν οἰκείαν αὐτοῦ τάξιν. Σὺν δ' εὖρός τε νότος τε πέσον. ζέφυρός τε δυσαὴς
» Καὶ βορέης.— Ἢ τὴν θρᾴκην οὐκ οἶδε μὴ προσπίπτουσαν πέραν τῶν παιονικῶν, καὶ θετταλικῶν
» ὀρῶν; Ἀλλὰ καὶ ταύτης τὴν ἐφεξῆς κατὰ τοὺς θρᾷκας εἰδὼς, καὶ οὐ κατονομάζων τήν τε παραλίαν, καὶ τὴν μεσόγαιαν, μάγνητας μέν τινας, καὶ μαλιεῖς, καὶ τοὺς ἐφεξῆς ἕλληνας καταλέγει μέχρι θεσπρωτῶν. ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς παίοσι τοὺς ὁμόρους δόλοπας. καὶ σελλοὺς περὶ δωδώνην μέχρις ἀχελῴου. θρᾳκῶν δ' οὐ μέμνηται περαιτέρω. εὐεπιφόρως δὲ ἔχει πρὸς τὴν ἐγγυτάτω, καὶ γνωριμωτάτην ἑαυτῷ θάλατταν. ὡς καὶ ὅταν φησί.

Κινήθη δ' ἀγορὴ ὡς κύματα μακρὰ θαλάσσης Πόντου ἰκαρίοιο.

Εἰσὶ δέ τινες οἵ φασι δύο τοὺς κυριωτάτους εἶναι ἀνέμους. βορέαν, καὶ νότον. τοὺς δὲ ἄλλους, κατὰ μικρὰν ἔγκλισιν διαφέρειν, τὸν μὲν ἀπὸ θερινῶν ἀνατολῶν εὖρον. χειμερινῶν δὲ ἀπηλιώτην. δύσεων δὲ θερινῶν μὲν, ζέφυρον. χειμερινῶν δὲ, ἀργέστην. τοῦ δὲ δύο εἶναι τοὺς ἀνέμους ποιοῦνται μάρτυρας, θρασυάλκην τε, καὶ τὸν ποιητὴν αὐτὸν, τὸν μὲν ἀργέστην τῷ νότῳ προσνέμειν

» Ἀργέσταο νότοιο.— Τὸν δὲ ζέφυρον τῷ βορέᾳ.
» Βορέης καὶ ζέφυρος τώ τε θρῄκηθεν ἄητον.

Φησὶ δὲ ποσειδώνιος, μηδένα οὕτως παραδεδωκέναι τοὺς ἀνέμους τῶν γνωρίμων περὶ ταῦτα. οἷον ἀριστοτέλη, τιμοσθένη, βίωνα τὸν ἀστρολόγον. ἀλλὰ τὸν μὲν ἀπὸ θερινῶν ἀνατολῶν, καικίαν. τὸν δὲ τούτῳ κατὰ διάμετρον ἐναντίον, λίβα, ἀπὸ δύσεως ὄντα χειμερινῆς. πάλιν δὲ τὸν μὲν ἀπὸ χειμερινῆς ἀνατολῆς, εὖρον. τὸν δ' ἐναντίον ἀργέστην. τοὺς δὲ μέσους, ἀπηλιώτην, καὶ ζέφυρον. τὸν δὲ ποιητὴν δυσαῆ μὲν ζέφυρον λέγειν, τὸν ὑφ' ἡμῶν καλούμενον ἀργέστην, λίβα δὲ πνέοντα, ζέφυρον. τὸν ὑφ' ἡμῶν ζέφυρον. ἀργέστην δὲ νότον, τὸν λευκόνοτον. οὗτος γὰρ ὀλίγα τὰ νέφη ποιεῖ. τοῦ λοιποῦ νότου ὅλου εὔρου πως ὄντος.

Ὡς δ' ὁπότε ζέφυρος νέφεα στυφελίξῃ
» Ἀργέσταο νότοιο βαθείῃ λαίλαπι τύπτων.

Τὸν γὰρ δυσαῆ ζέφυρον νῦν λέγει. ὡς εἴωθε διασκιδνάναι τὰ ὑπὸ τοῦ λευκονότου συναγόμενα ἀσθενῆ ὄντα. ἐπιθέτως τοῦ νότου νῦν ἀργέστου λεγομένου. ταῦτα μὲν δὴ ἐν ἀρχῇ τοῦ πρώτου τῶν γεωγραφικῶν εἰρημένα, τοιαύτην τινὰ τὴν ἐπανόρθωσιν ἔχει. ἐπιμένων δὲ τοῖς περὶ ὁμήρου ψευδῶς ὑπολειφθεῖσι καὶ ταῦτά φησιν. ὅτι οὐδὲ τὰ τοῦ νείλου στόματα οἶδε πλείω ὄντα. οὐδ' αὐτὸ τοὔνομα. ἡσίοδος δὲ οἶδε. μέμνηται γάρ. Τὸ μὲν οὖν ὄνομα εἰκὸς μή πω λέγεσθαι κατ' αὐτόν. τὰ δὲ στόματα εἰ μὲν ἦν ἀφανῆ, καὶ ὀλίγοις γνώριμα ὅτι πλείω καὶ οὐχ ἕν, δοίη τις ἂν πεπεῖσθαι αὐτόν. εἰ δὲ τῶν κατ' αἴγυπτον τὸ γνωριμώτατον, καὶ παραδοξότατον, καὶ μάλιστα πάντων μνήμης ἄξιον καὶ ἱστορίας, ὁ ποταμὸς καὶ ἦν, καὶ ἔστιν, ὡς δ' αὔτως, αἱ ἀναβάσεις αὐτοῦ καὶ τὰ στόματα, τίς ἂν ἢ τοὺς ἀγγέλλοντας αὐτῷ ποταμὸν αἰγύπτιον, καὶ χώραν, καὶ θήβας αἰγυπτίας, καὶ φάρον ὑπολάβοι μὴ γνωρίζειν ταῦτα, ἢ γνωρίζοντας μὴ λέγειν, πλὴν εἰ μὴ διὰ τὸ γνώριμον; ἔτι δ' ἀπιθανώτερον, εἰ τὴν μὲν αἰθιοπίαν ἔλεγε, καὶ σιδονίους καὶ ἐρεμβοὺς, καὶ τὴν ἔξω θάλασσαν. καὶ τὸ δίχα διῃρῆσθαι τοὺς αἰθίοπας, τὰ δ' ἐγγὺς καὶ γνώριμα μή. εἰ δὲ μὴ ἐμνήσθη τούτων, οὐ τοῦτο ση-

μένον τοῦ ἀγνοεῖν· οὐδὲ γὰρ τῆς αὐτοῦ πατρίδος ἐμνήσθη, οὐδὲ πολλῶν ἄλλων· ἀλλὰ μᾶλλον τὰ λί-
αν γνώριμα ὄντα φαίη τις μὴ δόξαι οὐκ ἄξια μνήμης εἶναι πρὸς τοὺς εἰδότας. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ τοῦτο προφέ-
ρουσιν αὐτῷ τὸ περὶ τῆς νήσου τῆς Φάρου, ὅτι φησὶ πελαγίαν, ὡς κατ᾽ ἄγνοιαν λέγοντι. τοὐναντίον
γὰρ καὶ μαρτυρίῳ χρήσαιτό τις τούτῳ πρὸς τὸ μὴ ἀγνοεῖσθαι μηδὲν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ περὶ τῶν
εἰρημένων ἄρτι περὶ τὴν Αἴγυπτον. γνοίης δ᾽ ἂν οὕτως· ἀλαζὼν γάρ δὴ πᾶς ὁ πλάνην αὑτοῦ διηγού-
μενος. τούτων δ᾽ ἦν καὶ ὁ Μενέλαος, ὃς ἀναβεβηκὼς μέχρι Αἰθιόπων, ἐπέπυστο τὰς ἀναβάσεις τοῦ
Νείλου, καὶ τὴν χοῦν ὅσην ἐπιφέρει τῇ χώρᾳ, καὶ τὸν πρὸ τῶν στομάτων πόρον, ὅσον ἤδη προσχώσας
τῇ ἠπείρῳ προσέθηκεν· ὥστε εἰκότως ὑπὸ τοῦ Ἡροδότου καὶ τὴν ὅλην Αἴγυπτον τοῦ ποταμοῦ δῶρον
λέγεσθαι· κἂν εἰ μὴ τὴν ὅλην, τήν γε ὑπὸ τῷ Δέλτα, τὴν κάτω χώραν προσαγορευομένην. ἱστό-
ρησε δὲ καὶ τὴν Φάρον πελαγίαν οὖσαν τὸ παλαιόν. προσεψεύσατο δὴ καὶ τὸ πελαγίαν εἶναι, καί-
περ μηκέτι πελαγίαν οὖσαν. ὁ δὲ ταῦτα διασκευάζων, ὁ ποιητὴς ἦν· ὥστ᾽ ἐκ τούτων εἰκάζειν, ὅτι καὶ
τὰς ἀναβάσεις ᾔδει καὶ τὰ στόματα τοῦ Νείλου. ἡ δ᾽ αὐτὴ ἁμαρτία, καὶ περὶ τοῦ ἀγνοεῖν τὸν ἰσθμὸν
τὸν μεταξὺ τοῦ Αἰγυπτίου πελάγους, καὶ τοῦ Ἀραβίου κόλπου, καὶ περὶ τοῦ ψευδῶς λέγεσθαι·
» Αἰθίοπες τοὶ διχθὰ δεδαίαται ἔσχατοι ἀνδρῶν. Καὶ γὰρ τοῦτο ἐκείνου λέγοντος καλῶς, ἐπιτιμῶσιν οἱ
ὕστεροι οὐκ εὖ. τοσοῦτον γὰρ δεῖ τοῦ τ᾽ ἀληθὲς εἶναι τὸ ἀγνοεῖν Ὅμηρον τὸν ἰσθμὸν τοῦτον, ὥστε ἐκεῖνον μὲν φη-
μὶ μὴ εἰδέναι μόνον, ἀλλὰ καὶ ἀποφαίνεσθαι ἄντικρυς· τοὺς δὲ γραμματικοὺς μηδὲ λέγοντος ἐκεί-
νου αἰσθάνεσθαι, ἀπὸ Ἀριστάρχου, καὶ Κράτητος ἀρξαμένους τῶν κορυφαίων ἐν τῇ ἐπιστήμῃ ταύτῃ.
» εἰπόντος γὰρ τοῦ ποιητοῦ, Αἰθίοπας τοὶ διχθὰ δεδαίαται ἔσχατοι ἄλλων,
περὶ τοῦ ἐπιφερομένου ἔπους διαφέρονται· ὁ μὲν Ἀρίσταρχος γράφων·
» Οἱ μὲν δυσομένου Ὑπερίονος, οἱ δ᾽ ἀνιόντος. Ὁ δὲ Κράτης·
» Ἠμὲν δυσομένου Ὑπερίονος ἠδ᾽ ἀνιόντος.

Οὐδὲν διάφορον πρὸς τὴν ἑκατέρου ὑπόθεσιν οὕτως ἢ ἐκείνως γράφειν. ὁ μὲν γὰρ ἀκολουθῶν
τοῖς μαθηματικῶς λέγεσθαι δοκοῦσι, τὴν διακεκαυμένην ζώνην κατέχεσθαι φησὶν ὑπὸ τοῦ ὠκεανοῦ.
παρ᾽ ἑκάτερον δὲ ταύτης εἶναι τὴν εὔκρατον· τήν τε καθ᾽ ἡμᾶς καὶ τὴν ἐπὶ θάτερον μέρος. ὥσπερ
οὖν οἱ παρ᾽ ἡμῖν Αἰθίοπες οὗτοι λέγονται, οἱ πρὸς μεσημβρίαν κεκλιμένοι παρ᾽ ὅλην τὴν οἰκου-
μένην, ἔσχατοι τῶν ἄλλων παροικοῦντες τὸν ὠκεανόν, οὕτως οἴεται δεῖν καὶ πέραν τοῦ ὠκεανοῦ νοεῖσθαι
τινὰς Αἰθίοπας ἐσχάτους τῶν ἄλλων, τῶν ἐν τῇ ἑτέρᾳ εὐκράτῳ, παροικοῦντας τὸν αὐτὸν τοῦτον ὠκεα-
νόν· διττοὺς δὲ εἶναι, καὶ διχθὰ δεδάσθαι ὑπὸ τοῦ ὠκεανοῦ. προκεῖσθαι δὲ τὸ
» Οἱ μὲν δυσομένου Ὑπερίονος, οἱ δ᾽ ἀνιόντος. ὅτι τοῦ ζωδιακοῦ κατὰ κορυφὴν ὄντος ἀεὶ τῷ ἐν
τῇ γῇ ζωδιακῷ· τούτου δ᾽ οὐκ ἐκβαίνοντος ἔξω ταῖν Αἰθιοπίαιν ἀμφοῖν τῇ λοξώσει, ἀνάγκη, καὶ τὴν
πάροδον τοῦ ἡλίου πᾶσαν ἐν τῷ πλάτει τούτῳ νοεῖσθαι, καὶ τὰς ἀνατολάς, καὶ τὰς δύσεις συμβαί-
νειν ἐνταῦθα ἄλλοις ἄλλας, κατ᾽ ἄλλα καὶ ἄλλα σημεῖα. εἴρηκε μὲν οὕτως ἀστρονομικώτερον νομίσας.
ἦν δὲ καὶ ἁπλούστερον εἰπεῖν αὐτόν, σώζοντα τὸ οὕτω διῃρῆσθαι δίχα τοὺς Αἰθίοπας ὡς εἴρηται. ὅτι
ἀφ᾽ ἡλίου ἀνιόντος μέχρι δύσεως, ἐφ᾽ ἑκάτερα παροικοῦσι τῷ ὠκεανῷ Αἰθίοπες. τί οὖν διαφέρει πρὸς
» τὸν νοῦν, τοῦτον ἢ οὕτως εἰπεῖν ὥσπερ αὐτὸς γράφει, ἢ ὡς Ἀρίσταρχος; Οἱ μὲν, δυσομένου Ὑπερίονος οἱ
δ᾽ ἀνιόντος. Καὶ γὰρ τοῦτ᾽ ἔστι καὶ πρὸς δύσιν, καὶ πρὸς ἀνατολὴν ἐφ᾽ ἑκάτερα τοῦ ὠκεανοῦ οἰκεῖν. ὁ δ᾽ Ἀ-
ρίσταρχος ταύτην μὲν ἐκβάλλει τὴν ὑπόθεσιν· διχθὰ δὲ μεμερισμένους οἴεται λέγεσθαι τοὺς καθ᾽ ἡμᾶς
Αἰθίοπας, τοὺς τοῖς Ἕλλησι πρὸς μεσημβρίαν ἐσχάτους. τούτους δὲ μὴ μεμερίσθαι δίχα. ὥστε εἶναι
δύο Αἰθιοπίας· τὴν μὲν, πρὸς ἀνατολήν· τὴν δὲ, πρὸς δύσιν· ἀλλὰ μίαν μόνην, τὴν πρὸς μεσημβρίαν
κειμένην τοῖς Ἕλλησιν· ἱδρυμένην δὲ κατ᾽ Αἴγυπτον. τοῦτο δὲ ἀγνοοῦντα τὸν ποιητήν, ὥσπερ καὶ τὰ
ἄλλα ὅσα εἴρηκεν Ἀπολλόδωρος ἐν τῷ περὶ νεῶν καταλόγῳ δευτέρῳ, καταψεύσασθαι τῶν τόπων
τὰ μὴ ὄντα. Πρὸς μὲν οὖν Κράτητα μακροῦ λόγου δεῖ, καὶ ἴσως οὐδὲν ὄντος πρὸς τὰ νῦν. Ἀρι-
στάρχου δὲ τοῦτο μὲν ἐπαινοῦμεν, διότι τὴν Κρατήτειον ἀφεὶς ὑπόθεσιν, δεχομένην πολλὰς ἐνστάσεις, πε-
ρὶ τῆς καθ᾽ ἡμᾶς Αἰθιοπίας ὑπονοεῖ γεγονέναι τὸν λόγον. Τὰ δ᾽ ἄλλα ἐπισκοπῶμεν, καὶ πρῶ-
τον, ὅτι καὶ αὐτὸς μικρολογεῖται μάτην περὶ τῆς γραφῆς. καὶ γὰρ ἂν ὡς ἑτέρως γράφηται, δύνα-
ται ἐφαρμόττειν τοῖς νοήμασιν αὐτοῦ. τί γὰρ διαφέρει λέγειν, ἢ οὕτως, δύο καθ᾽ ἡμᾶς εἰσὶν Αἰθίοπες· οἱ
μὲν, πρὸς ἀνατολάς· οἱ δὲ, πρὸς δύσεις· ἢ οὕτως· καὶ γὰρ πρὸς ἀνατολάς, καὶ πρὸς δύσεις. ἔπειθ᾽ ὅτι
ψευδοῦς προΐσταται δόγματος, φέρε γὰρ τὸν ποιητὴν ἀγνοεῖν μὲν τὸν ἰσθμόν· τῆς δὲ κατ᾽ Αἴγυπτον Αἰ-
θιοπίας μεμνῆσθαι, ὅταν φῇ Αἰθίοπας τοὶ διχθὰ δεδαίαται· πῶς οὖν οὐ διχθὰ δεδαίαται οὕτω;
ἀλλ᾽ ἀγνοῶν οὕτως εἴρηκεν ὁ ποιητής, πότερον δ᾽ ἡ Αἴγυπτος οὐδ᾽ οἱ Αἰγύπτιοι ἀπὸ τοῦ Δέλτα ἀρξάμε-
» νοι μέχρι πρὸς Συήνης, ὑπὸ τοῦ Νείλου δίχα διῄρηνται. Οἱ μὲν, δυσομένου Ὑπερίονος, οἱ δ᾽ ἀνιόντος.
Τί δ᾽ ἄλλο ἡ Αἴγυπτός ἐστι πλὴν ποταμία νῆσος, ἣν ἐπικλύζει τὸ ὕδωρ; αὕτη δ᾽ ἐφ᾽ ἑκάτερα τοῦ ποταμοῦ
κεῖται, πρὸς ἀνατολὴν καὶ δύσιν. ἀλλὰ μὴν ἡ Αἰθιοπία ἐπ᾽ εὐθείας ἐστὶ τῇ Αἰγύπτῳ, καὶ παραπλησίως
ἔχει πρός τε τὸν Νεῖλον, καὶ τὴν ἄλλην φύσιν τῶν τόπων. καὶ γὰρ αὕτη στενή, καὶ μακρά, καὶ ἐπίκλυ-

γος. τὰ δ' ἔξω τῆς ἐπικλύστου ἔρημά τε, καὶ ἄνυδρα, καὶ σπανίως οἰκεῖσθαι δυνάμενα. τὰ μὲν, πρὸς ἕω. τὰ δὲ, πρὸς δύσιν κεκλιμένα. πῶς οὖν οὐχὶ καὶ δίχα διῄρηνται. ἢ τοῖς μὲν τὴν ἀσίαν ἀπὸ τῆς λιβύης διαιροῦσιν, ἀξιόλογον τοῦθ' ὅριον ἐφάνη ὁ νεῖλος, μῆκος μὲν ἀνατείνων ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν πλειόνων ἢ μυρίων σταδίων, πλάτος δὲ ὥστε καὶ νήσους ἀπολαμβάνειν μυριάνδρους (ὧν μεγίστη ἐστὶν ἡ μερόη. τὸ βασίλειον, καὶ ἡ μητρόπολις τῶν αἰθιόπων.) αὐτὴν δὲ τὴν αἰθιοπίαν οὐχ ἱκανὸς ἦν διαιρεῖν δίχα καὶ μὴν οἵ γε ἐπιτιμῶντες τοῖς τὰς ἠπείρους τῷ ποταμῷ διαιροῦσι, τῶν ἐγκλημάτων τοῦτο μέγιστον προφέρουσιν αὐτοῖς. ὅτι τὴν αἴγυπτον, καὶ τὴν αἰθιοπίαν διασπῶσι. καὶ ποιοῦσι τὸ μὲν τι μέρος ἑκατέρας αὐτῶν, λιβυκόν. τὸ δ' ἀσιατικόν. ἢ εἰ μὴ βούλονται τοῦτο, ἢ οὐ διαιροῦσι τὰς ἠπείρους, ἢ οὐ τῷ ποταμῷ. Χωρὶς δὲ τούτων ἔστι καὶ ἄλλως διαιρεῖν τὴν αἰθιοπίαν. πάντες γὰρ οἱ παραπλεύσαντες τῷ ὠκεανῷ τὴν λιβύην, οἵ τε ἀπὸ τῆς ἐρυθρᾶς, καὶ οἱ ἀπὸ τῶν στηλῶν, μέχρι ποσοῦ προελθόντες, εἶτα ἀνέστρεψαν, ὑπὸ πολλῶν ἀπορίων κωλυόμενοι. ὥστε καὶ πίστιν κατέλιπον τοῖς πολλοῖς, ὡς τὸ μεταξὺ διείργοιτο ἰσθμῷ. καὶ μὴν σύρρους ἡ πᾶσα ἀτλαντικὴ θάλασσα. καὶ μάλιστα ἡ κατὰ μεσημβρίαν. ἅπαντες δὲ οὗτοι τὰ τελευταῖα χωρία ἐφ' ἃ πλέοντες ἦλθον, αἰθιοπικὰ προσηγόρευσαν, καὶ ἀπήγγειλαν οὕτως. Τί οὖν ἄλογον εἰ καὶ ὅμηρος ὑπὸ τοιαύτης ἀκοῆς ἀχθεὶς δίχα διῄρει. τοὺς μὲν, πρὸς ἀνατολὴν λέγων. τοὺς δὲ, πρὸς δύσιν, τῶν μεταξὺ οὐ γινωσκομένων, εἴτε εἰσὶν, εἴτε μὴ εἰσίν. ἀλλὰ μὴν καὶ ἄλλην τινὰ ἱστορίαν παλαιὰν εἴρηκεν ἔφορος. ἧ οὐκ ἄλογον ἐντυχεῖν καὶ ὅμηρον. λέγεσθαι γάρ φησιν ὑπὸ τῶν ταρτησσίων, αἰθίοπας τὴν λιβύην ἐπελθόντας μέχρι δύσεως, τοὺς μὲν, αὐτοῦ μεῖναι. τοὺς δὲ, καὶ τῆς παραλίας κατασχεῖν πολλήν. τεκμαίρεται δὲ ἐκ τοῦ καὶ ὅμηρον εἰπεῖν οὕτως. αἰθίοπας τοὶ διχθὰ δεδαίαται ἔσχατοι ἀνδρῶν. ταῦτα δὲ δὴ πρὸς τὸν ἀρίσταρχον λέγοι ἄν τις, καὶ πρὸς τοὺς ἀκολουθοῦντας αὐτῷ. καὶ ἄλλα τούτων ἐπιεικέστερα. ἀφ' ὧν τὴν πολλὴν ἄγνοιαν ἀφαιρήσεται τοῦ ποιητοῦ. φημὶ γὰρ κατὰ τὴν τῶν ἀρχαίων ἑλλήνων δόξαν, ὥσπερ τὰ πρὸς βορρᾶν μέρη τὰ γνώριμα ἑνὶ ὀνόματι σκύθας ἐκάλουν, ἢ νομάδας, ὡς ὅμηρος, ὕστερον δὲ καὶ τῶν πρὸς ἑσπέραν γνωσθέντων, κελτοὶ, καὶ ἴβηρες, ἢ συμμίκτως κελτίβηρες. καὶ κελτοσκύθαι, προσηγορεύοντο. ὑφ' ἓν ὄνομα τῶν καθ' ἕκαστα ἐθνῶν, ταττομένων διὰ τὴν ἄγνοιαν, οὕτω τὰ μεσημβρινὰ πάντα, αἰθιοπίαν καλεῖσθαι, τὰ πρὸς ὠκεανῷ. μαρτυρεῖ δὲ τὰ τοιαῦτα. Ὅ, τε γὰρ αἰσχύλος ἐν προμηθεῖ τῷ λυομένῳ φησὶν οὕτω. φοινικόπεδόν τ' ἐρυθρᾶς ἱερὸν χεῦμα θαλάσσης. χαλκοκέραυνόν τε παρ' ὠκεανῷ λίμναν παντοτρόφον αἰθιόπων. ἵν' ὁ παντόπτας ἥλιος αἰεὶ χρῶτ' ἀθάνατον, κάματόν θ' ἵππων θερμαῖς ὕδατος μαλακοῦ προχοαῖς ἀναπαύει. παρ' ὅλον γὰρ τὸ μεσημβρινὸν κλίμα τοῦ ὠκεανοῦ ταύτην πρὸς τὸν ἥλιον ἴσχοντος τὴν χρείαν, καὶ τὴν σχέσιν παρ' ὅλην, καὶ τοὺς αἰθίοπας αὐτῶν φαίνεται. ὅ τ' εὐριπίδης ἐπὶ τῷ φαέθοντι, τὴν κλυμένην φησὶ δοθῆναι μέροπι τῆς δ' ἄνακτι γῆς.

» Ἣν ἐκ τεθρίππων ἁρμάτων πρώτην χθόνα Ἥλιος ἀνίσχων χρυσέᾳ βάλλει φλογί.
» Καλοῦσι δ' αὐτὴν γείτονες μελάμβροτοι. Ἕω φαεννὰς ἡλίου θ' ἱπποστάσεις.

Νῦν μὲν δὴ κοινὰς ποιεῖται τὰς ἱπποστάσεις τῇ τε ἠοῖ, καὶ τῷ ἡλίῳ. ἐν δὲ τοῖς ἑξῆς πλησίον αὐτάς φησιν εἶναι τῇ οἰκήσει τοῦ μέροπος. καὶ ὅλη γε τῇ δραματουργίᾳ τοῦτο παραπέπλεκται. οὐ δή που τῆς κατ' αἴγυπτον αἰθιοπίας ἴδιον ὄν. μᾶλλον δὲ τῆς παρ' ὅλον τὸ μεσημβρινὸν κλίμα διηκούσης παραλίας. μηνύει δὲ καὶ ἔφορος τὴν παλαιὰν περὶ τῆς αἰθιοπίας δόξαν. ὥς φησιν ἐν τῷ περὶ τῆς εὐρώπης λόγῳ τῶν περὶ τὸν οὐρανὸν, καὶ τὴν γῆν τόπων εἰς τέσσαρα μέρη διῃρημένων, τὸ πρὸς τὸν ἀπηλιώτην, ἰνδοὺς ἔχειν πρὸς νότον δὲ, αἰθίοπας πρὸς δύσιν δὲ κελτούς. πρὸς βορρᾶν ἄνεμον, σκύθας. προστίθησι δ' ὅτι μείζων ἡ αἰθιοπία ἢ ἡ σκυθία. δοκεῖ γάρ φησι τὸ τῶν αἰθιόπων ἔθνος παρατείνειν ἀπ' ἀνατολῶν χειμερινῶν μέχρι δυσμῶν. ἡ σκυθία δ' ἀντίκειται τούτῳ. ὅτι δ' ὁ ποιητὴς ὁμόλογος τούτοις, καὶ ἐκ τῶνδε δῆλον. ὅτι ἡ μὲν ἰθάκη κεῖται πρὸς ζόφον ὅπερ ἐστὶ πρὸς ἄρκτον.

» Αἱ δέ τ' ἄνευθε πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε. Ὅλον δὲ νότιον πλευρὸν οὕτω λέγων καὶ ἔτι ὅταν φῇ.
» Εἴτ' ἐπὶ δεξί' ἴωσι πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε. Καὶ εἴτ' ἐπ' ἀριστερὰ τοί γε ποτὶ ζόφον ἠερόεντα.
» Καὶ πάλιν. Ὦ φίλοι. οὐ γάρ τ' ἴδμεν ὅπη ζόφος οὐδ' ὅπη ἠώς.
» Οὐδ' ὅπη ἠέλιος φαεσίμβροτος εἶσ' ὑπὸ γαῖαν. Οὐδ' ὅπη ἀννεῖται. —

Περὶ ὧν λέγεται καὶ ἐν τοῖς περὶ τῆς ἰθάκης λόγοις σαφέστερον. ὅταν οὖν φῇ.

» Ζεὺς γὰρ ἐς ὠκεανὸν μετ' ἀμύμονας αἰθιοπῆας Χθιζὸς ἔβη, —

κοινότερον λεκτέον. καὶ τὸν ὠκεανὸν τὸν καθ' ὅλον τὸ μεσημβρινὸν κλίμα τεταγμένον, καὶ τοὺς αἰθίοπας. ᾧ γὰρ ἂν τόπῳ τοῦδε τοῦ κλίματος προσβάλλοις τὴν διάνοιαν, καὶ ἐπὶ τῷ ὠκεανῷ ἔσῃ, καὶ ἐπὶ τῇ αἰθιοπίᾳ. οὕτω δὲ λέγει καὶ τὸ, τὸν δ' ἐξ αἰθιόπων ἀνιών,

» Τηλόθεν ἐκ σολύμων ὀρέων ἴδεν. — Ἴσον τῷ. ἀπὸ μεσημβρινῶν τόπων. σολύμους λέγων οὐ τοὺς ἐν τῇ πισιδίᾳ. ἀλλ' ὡς ἔφην πρότερον πλάσας τινὰς ὁμωνύμους τοὺς ἀναλόγως ἔχοντας πρός τε τὸν πλέοντα ἐν τῇ σχεδίᾳ, καὶ τοὺς ἐκεῖ μεσημβρινοὺς, ὡσὰν αἰθίοπας. ὡς οἱ πισιδικοὶ πρός τε τὸν πόντον, καὶ τοὺς ὑπὲρ τῆς αἰγύπτου αἰθίοπας. οὕτω δὲ καὶ τὸν περὶ τῶν γεράνων λό-

γεν κοινὸν ποιούμενος φησίν·
» αἵτ᾽ ἐπεὶ οὖν χειμῶνα φύγον, καὶ ἀθέσφατον ὄμβρον,
» κλαγγῇ ταί γε πέτονται ἐπ᾽ ὠκεανοῖο ῥοάων·
» ἀνδράσι πυγμαίοισι φόνον καὶ κῆρα φέρουσαι. οὐ γὰρ ἐν μὲν τοῖς κατὰ τὴν ἑλλάδα τόποις ὁρᾶ/
ται φερομένη ἡ γέρανος ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν· ἐν δὲ τοῖς κατὰ τὴν ἰταλίαν, ἢ ἰβηρίαν οὐδαμῶς· ἢ
τοῖς κατὰ τὴν κασπίαν, καὶ βακτριανήν· κατὰ πᾶσαν οὖν τὴν μεσημβρινὴν παραλίαν τοῦ ὠκεανοῦ
παρατείνοντος, ἐφ᾽ ἅπασαν δὲ καὶ χειμοφυγούντων, δέχεσθαι δεῖ καὶ τοὺς πυγμαίους μεμυθευμέ/
νους κατὰ πᾶσαν. εἰ δ᾽ οἱ ὕστερον ἐπὶ τοὺς αἰθίοπας ἐπὶ τοὺς κατ᾽ αἴγυπτον μόνους μετήγαγον, καὶ τὸν περὶ
τῶν πυγμαίων λόγον, οὐδὲν ἂν εἴη πρὸς τὰ πάλαι. καὶ γὰρ ἀχαιοὺς, καὶ ἀργείους οὐ πάντας μὲν
νῦν φαμὲν τοὺς στρατεύσαντας ἐπὶ ἴλιον· ὅμηρος δὲ καλεῖ πάντας. παραπλήσιον δ᾽ ἐστὶν ὃ λέγω καὶ
περὶ τῶν δίχα διῃρημένων αἰθιόπων· ὅτι δεῖ δέχεσθαι τοὺς παρ᾽ ὅλην τὴν ὠκεανῖτιν διατείνοντας ἀφ᾽
ἡλίου ἀνιόντος, μέχρι ἡλίου δυομένου. οἱ γὰρ οὕτω λεγόμενοι αἰθίοπες δίχα διῄρηνται φυσικῶς τῷ ἀ/
ραβίῳ κόλπῳ· ὡς ἂν μεσημβρινοῦ κύκλου τμήματι ἀξιολόγῳ ποταμοῦ δίκην ἐν μήκει σχεδόν τι καὶ
πεντακισχιλίων σταδίων ἐπὶ τοῖς μυρίοις· πλάτει δ᾽ οὐ πολὺ τῶν χιλίων μείζονι, τῷ μεγίστῳ. πρόσεστι
δὲ τῷ μήκει, καὶ τὸ τὸν μυχὸν τοῦδε τοῦ κόλπου διέχειν τῆς κατὰ πηλούσιον θαλάσσης· τριῶν, ἢ τεττάρων
ἡμερῶν ὁδὸν, ἣν ἐπέχει ὁ ἰσθμός. καθάπερ οὖν οἱ χαριέστεροι τῶν διαιρούντων τὴν ἀσίαν ἀπὸ τῆς λιβύης, ὅ/
ρον εὐφυέστερον ἡγοῦνται τοῦτον τῶν ἠπείρων ἀμφοῖν τὸν κόλπον, ἢ τὸν νεῖλον· τὸν μὲν, γὰρ διήκειν παρ᾽ ὀλί
γον παντελῶς ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν· τὸν δὲ νεῖλον πολλαπλάσιον ἀπὸ τοῦ ὠκεανοῦ διέχειν, ὥστε μὴ
διαιρεῖν πᾶσαν τὴν ἀσίαν ἀπὸ τῆς λιβύης, τοῦτον ὑπολαμβάνω τὸν τρόπον καὶ τὰ μεσημβρινὰ μέρη
πάντα καθ᾽ ὅλην τὴν οἰκουμένην, δίχα διῃρῆσθαι νομίσαι τὸν ποιητὴν τῷ κόλπῳ τούτῳ. πῶς οὖν ἠγνόει τὸν
ἰσθμὸν, ὃν οὗτος ποιεῖ πρὸς τὸ αἰγύπτιον πέλαγος, ἢ τὸ δὴ καὶ τελέως ἄλογον, εἰ τὰς μὲν αἰγυπτίας θή
βας ᾔδει σαφῶς, αἳ διέχουσι τῆς καθ᾽ ἡμᾶς θαλάττης σταδίους μικρὸν ἀπολείποντας τῶν πεντακισχιλίων·
τὸν δὲ μυχὸν τοῦ ἀραβίου κόλπου μὴ ᾔδει· μηδὲ τὸν ἰσθμὸν τὸν κατ᾽ αὐτὸν πλάτος ἔχοντα οὐ πλειό/
νων, ἢ χιλίων σταδίων· πολὺ δ᾽ ἂν ἀλογώτερον δόξειεν, εἰ τὸν μὲν νεῖλον ᾔδει ὁμωνύμως τῇ τοσαύτῃ χώ
ρᾳ λεγόμενον, τὴν δ᾽ αἰτίαν, μὴ ἑώρα τούτου. μάλιστα γὰρ ἂν προσπίπτοι τὸ εἰρημένον ὑφ᾽ ἡροδότου, διότι,
δῶρον ἦν ἡ χώρα τοῦ ποταμοῦ· καὶ διὰ τοῦτο ἠξιοῦτο τοῦ αὐτοῦ ὀνόματος. ἄλλως τε τῶν παρ᾽ ἑκάστοις ἰ/
δίων ταῦτ᾽ ἐστὶ γνωριμώτατα, ἃ καὶ παραδοξίαν ἔχει τινὰ, καὶ ἐν τῷ φανερῷ πᾶσιν ἐστί. τοιοῦτον δ᾽
ἐστὶ καὶ ἡ τοῦ νείλου ἀνάβασις· καὶ ἡ πρόσχωσις τοῦ πελάγους. καὶ καθάπερ οἱ προσχόντες πρὸς τὴν αἴ
γυπτον οὐδὲν πρότερον ἱστοροῦσι περὶ τῆς χώρας, ἢ τὴν τοῦ νείλου φύσιν, διὰ τὸ τοὺς ἐπιχωρίους μή
τε καινότερα τούτων λέγειν ἔχειν πρὸς ἀνθρώπους ξένους, μήτ᾽ ἐπιφανέστερα περὶ τῶν παρ᾽ αὐτοῖς.
(τῷ γὰρ ἱστορήσαντι περὶ τοῦ ποταμοῦ, κατάδηλος καὶ ἡ χώρα πᾶσα γίνεται ὁποία τίς ἐστιν.) οὕτω
καὶ οἱ πόρρωθεν ἀκούοντες, οὐδὲν πρότερον ἱστοροῦσι τούτου. προστίθησιν οὖν τούτῳ, καὶ τὸ φιλείδη
μον, καὶ τὸ φιλέκδημον τοῦ ποιητοῦ· ὅπερ αὐτῷ μαρτυροῦσιν, ὅσοι τὸν βίον ἀναγράφουσι· καὶ ἐξ αὐ/
τῶν δὲ λαμβάνεται τῶν ποιημάτων πολλὰ παραδείγματα τοῦ τοιούτου. οὗτος μὲν οὖν ἐκ πλειόνων ἐ
λέγχεται, καὶ εἰδὼς, καὶ λέγων ῥητῶς τὰ ῥητὰ· καὶ σιγῶν· τὰ δὲ λίαν ἐκφανῆ ἐπιθέτως λέγων. θαυ
μάζειν δὲ δεῖ τῶν αἰγυπτίων, καὶ σύρων πρὸς οὓς νῦν ἡμῖν ὁ λόγος, εἰ μηδ᾽ ἐκείνου λέγοντος τὰ παρ᾽ αὐ/
τοῖς ἐπιχώρια συνιᾶσιν· ἀλλὰ καὶ ἄγνοιαν αἰτιῶνται, ἣν αὐτοὺς ἐνόχους δείκνυσιν ὁ λόγος. ἁπλῶς δὲ τὸ μὴ
λέγειν, οὐ τοῦ μὴ εἰδέναι σημεῖόν ἐστιν. οὐδὲ γὰρ τὰς τροπὰς τοῦ εὐρίπου λέγει. οὐδὲ τὰς θερμοπύλας.
οὐδ᾽ ἄλλα πλείω τῶν γνωρίμων παρὰ τοῖς ἕλλησιν· οὐ μὴν ἠγνόει. ἀλλὰ καὶ λέγει, οὐ δοκεῖ δὲ, τοῖς
ἐθελοκωφοῦσιν· ὥστε ἐκείνους αἰτιατέον. ὁ ποιητὴς τοίνυν διιπετέας καλεῖ τοὺς ποταμούς. οὐ τοὺς
χειμάρρους μόνον, ἀλλὰ καὶ πάντας ἁπλῶς, ὅτι πληροῦνται πάντες ἀπὸ τῶν ὀμβρίμων ὑδάτων.
ἀλλὰ τὸ κοινὸν, ἐπὶ τῶν κατ᾽ ἐξοχὴν ἴδιον γίνεται. ἄλλως γὰρ ἂν τὸν χειμάρρουν ἀκούοι τις διιπε/
τῆ, καὶ ἄλλως τὸν ἀέναον. ἐνταῦθα δὲ διπλασιάζει πως ἡ ἐξοχή. καὶ καθάπερ εἰσί τινες ὑπερβολαὶ
ἐπὶ ὑπερβολαῖς, ὡς τὸ, κουφότερον εἶναι φελλοῦ σκιᾶς, δειλότερον δὲ λαγὼ φρυγὸς, ἐλάττω δ᾽ ἔ
χειν γῆν τὸν ἀγρὸν ἐπιστολῆς λακωνικῆς, οὕτως ἐξοχὴ ἐπὶ ἐξοχῆς συντρέχει τοῦ τοῦ διιπετῆ τὸν νεῖλον
λέγεσθαι. ὁ μὲν γὰρ χειμάρρους, ὑπερβέβληται τοὺς ἄλλους ποταμοὺς, τῷ διιπετὴς εἶναι. ὁ δὲ νεῖ/
λος καὶ τοὺς χειμάρρους ἐπὶ τοσοῦτον πληρούμενος καὶ πλήθους, καὶ χρόνου. ὥστ᾽ ἐπεὶ καὶ γνώρι/
μον ἦν τὸ πάθος τοῦ ποταμοῦ τῷ ποιητῇ, ὡς παραμεμυθήμεθα. καὶ κέχρηται ἐπιθέτῳ τῷ διιπετὴς τῷ
ἐπιθέτῳ τούτῳ κατ᾽ αὐτοῦ, οὐκ ἄλλως δεκτέον ἢ ὡς εἰρήκαμεν. τὸ δὲ πλείοσι στόμασιν ἐκδιδόναι, κοι
νὸν καὶ πλειόνων· ὥστε οὐκ ἄξιον μνήμης ὑπέλαβε· καὶ ταῦτα πρὸς εἰδότας. καθάπερ οὐδ᾽ ἀλκαῖος,
καίτοι φήσας ἀφῖχθαι καὶ αὐτὸς εἰς αἴγυπτον. αἱ δὲ προσχώσεις, καὶ ἐκ τῶν ἀναβάσεων μὲν δύναται
ὑπονοεῖσθαι· καὶ ἐξ ὧν δὲ εἶπε περὶ τῆς φάρου. ὁ γὰρ ἱστορῶν οὕτω περὶ τῆς φάρου, μᾶλλον δὲ ἡ κοι
νὴ φήμη, διότι μὲν τότε τοσοῦτον ἀπεῖχεν ἀπὸ τῆς ἠπείρου, ὅσον φησὶ δρόμον νεὼς ἡμερήσιον, οὐκ ἂν εἴη
διατεθρυλημένη ἐπὶ τοσοῦτον ἐψευσμένως. ὅτι δ᾽ ἡ ἀνάβασις, καὶ αἱ προσχώσεις τοιαῦταί τινες, κοι/

νεώτερον γενέσθαι εἰκὸς ἦν· ἐξ ὧν συνθεὶς ὁ ποιητὴς ὅτι πλέον ἢ τότε ἀφεστήκει τῆς γῆς ἡ νῆσος, κατὰ τὴν Μενελάου παρουσίαν, προσέθηκε παρ' ἑαυτοῦ πολλαπλάσιον διάστημα τοῦ μυθώδους χάριν. αἱ δὲ μυθοποιΐαι οὐκ ἀγνοίας χάριν. σημεῖα γοῦν δή που· οὐδὲ γὰρ τὰ περὶ τοῦ Πρωτέως, καὶ τῶν Πυγμαίων, οὐδ' αἱ τῶν φαρμάκων δυνάμεις· οὐδ' εἴ τι ἄλλο τοιοῦτον οἱ ποιηταὶ πλάττουσι· οὐ γοῦν κατ' ἄγνοιαν τῶν τοπικῶν λέγεται. ἀλλ' ἡδονῆς καὶ τέρψεως χάριν. πῶς οὖν καὶ ἄνυδρον οὖσαν ὕδωρ φησὶν ἔχειν·

» Ἐν δὲ λιμὴν εὔορμος· ὅθεν ἀπὸ νῆας ἐΐσας
» Ἐς πόντον βάλλουσιν ἀφυσσάμενοι μέλαν ὕδωρ.

Ἀλλ' οὔτε τὸ ὑδρεῖον ἐκλείπειν ἀδύνατον, οὔτε τὴν ὑδρείαν ἐκ τῆς νήσου γενέσθαι φησίν. ἀλλὰ τὴν ἀναγωγὴν μόνην, διὰ τὴν τοῦ λιμένος ἀρετήν. τὸ δ' ὕδωρ ἐκ τῆς περαίας ἀρύσασθαι παρῆν, ἐξομολογουμένου πως τοῦ ποιητοῦ δι' ἐμφάσεως, ὅτι πελαγίαν εἶπεν οὐ πρὸς ἀλήθειαν. ἀλλὰ πρὸς ὑπερβολὴν καὶ μυθοποιΐαν. ἐπεὶ δὲ καὶ τὰ περὶ τῆς πλάνης τοῦ Μενελάου λεχθέντα συνηγορεῖν δοκεῖ τῇ ἀγνοίᾳ, τῇ περὶ τοὺς τόπους ἐκείνους, βέλτιον ἴσως ἐστὶ, τὰ ἐν τοῖς ἔπεσι τούτοις ζητούμενα προεκθεμένους, ἅμα ταῦτά τε διαστεῖλαι. καὶ περὶ τοῦ ποιητοῦ ἀπολογήσασθαι καθαρώτερον. φησὶ δὲ πρὸς Τηλέμαχον ὁ Μενέλαος θαυμάσαντα τὸν τῶν βασιλείων κόσμον·

» Ἦ γὰρ πολλὰ παθὼν καὶ πόλλ' ἐπαληθεὶς
» Ἠγαγόμην ἐν νηυσί'. καὶ ὀγδοάτῳ ἔτει ἦλθον
» Κύπρον Φοινίκην τε καὶ Αἰγυπτίους ἐπαληθείς.
» Αἰθίοπας θ' ἱκόμην καὶ Σιδονίους καὶ Ἐρεμβοὺς Καὶ Λιβύην.—

Ζητοῦσι δὲ πρὸς τίνας ἦλθεν Αἰθίοπας πλέων ἐξ Αἰγύπτου. οὔτε γὰρ ἐν τῇ καθ' ἡμᾶς θαλάττῃ οἰκοῦσί τινες Αἰθίοπες, οὔτε τῷ Νείλῳ τοὺς καταῤῥάκτας ἦν διελθεῖν ναυσί. τίνες τε οἱ Σιδόνιοι. οὐ γοῦν οἵ γε ἐν Φοινίκῃ. οὐ γὰρ ἂν τὸ γένος προθεὶς, τὸ εἶδος ἐπήνεγκε. τίνες τε οἱ Ἐρεμβοί. καινὸν γὰρ τὸ ὄνομα. Ἀριστόνικος μὲν οὖν ὁ καθ' ἡμᾶς γραμματικὸς ἐν τοῖς περὶ τῆς Μενελάου πλάνης, πολλῶν ἀναγέγραφεν ἀνδρῶν ἀποφάσεις περὶ ἑκάστου τῶν ἐκκειμένων κεφαλαίων. ἡμῖν δ' ἀρκέσει κἂν ἐπιτέμνοντες λέγωμεν. οἱ μὲν δὴ πλεῦσαι φήσαντες εἰς τὴν Αἰθιοπίαν, οἱ μὲν, περίπλουν, τὸν διὰ Γαδείρων μέχρι τῆς Ἰνδικῆς εἰσάγουσιν. ἅμα καὶ τὸν χρόνον τῇ πλάνῃ συνοικειοῦντες. ὅν φησιν, ὅτι ὀγδοάτῳ ἔτει ἦλθον. οἱ δὲ, διὰ τοῦ ἰσθμοῦ, τοῦ κατὰ τὸν Ἀράβιον κόλπον. οἱ δὲ, διὰ τῶν διωρύγων τινός. οὔτε δ' ὁ περίπλους ἀναγκαῖος, ὃν Κράτης εἰσάγει, οὐχ ὡς ἀδύνατος εἶναι. καὶ γὰρ οὐδ' ἡ Ὀδυσσέως πλάνη ἀδύνατος. ἀλλ' ὅτι οὔτε πρὸς τὰς ὑποθέσεις τὰς μαθηματικὰς χρήσιμος, οὔτε πρὸς τὸν χρόνον τῆς πλάνης. καὶ γὰρ ἀκούσιοι διατριβαὶ κατεῖχον αὐτὸν ὑπὸ δυσπλοίας. φήσαντα, ὅτι ἀπὸ ἑξήκοντα νεῶν πέντε ἐλείφθησαν αὐτῷ. καὶ ἑκούσιοι χρηματισμοῦ χάριν. φησὶ γοῦν ὁ Νέστωρ.

» Ὣς ὁ μὲν, ἔνθα πολὺν βίοτον καὶ χρυσὸν ἀγείρων
» Ἠλᾶτο ξὺν νηυσί.— Κύπρον Φοινίκην τε. Καὶ Αἰγυπτίους ἐπαληθείς.

ὅ τε διὰ τοῦ ἰσθμοῦ πλοῦς ἢ τῶν διωρύγων, λεγόμενος μὲν ἠκούετο ἂν ἐν μύθου σχήματι. μὴ λεγόμενος δὲ, περιττῶς, καὶ ἀπιθάνως εἰσάγοιτο ἄν. ἀπιθάνως δὲ λέγω ὅτι πρὸ τῶν Τρωϊκῶν οὐδεμία ἦν διῶρυξ. τὸν δὲ ἐπιχειρήσαντα ποιῆσαι Σέσωστριν, ἀποστῆναί φασι μετεωροτέραν ὑπολαβόντα τὴν τῆς θαλάττης ἐπιφάνειαν. ἀλλὰ μὴν οὐδ' ὁ ἰσθμὸς ἦν πλόϊμος. ἀλλ' εἰκάζει ὁ Ἐρατοσθένης οὐκ εὖ. μὴ γάρ πω τὸ ἔκρηγμα τὸ κατὰ τὰς στήλας γεγονέναι νομίζει. ὥστε ἐνταῦθα συνάπτειν τὴν ἔξω θάλατταν τῇ ἐντός. καὶ καλύπτειν τὸν ἰσθμὸν μετεωροτέραν οὖσαν. τοῦ δ' ἐκρήγματος γενομένου ταπεινωθῆναι, καὶ ἀνακαλύψαι τὴν γῆν. τὴν κατὰ τὸ Κάσιον, καὶ τὸ Πηλούσιον, μέχρι τῆς Ἐρυθρᾶς. τίνα οὖν ἔχομεν ἱστορίαν περὶ τοῦ ἐκρήγματος τούτου; διότι πρὸ τῶν Τρωϊκῶν οὔπω ὑπῆρχεν. ἴσως δ' ὁ ποιητὴς ἅμα μὲν τὸν Ὀδυσσέα ταύτῃ διεκπλέοντα εἰς τὸν ὠκεανὸν πεποιηκὼς, ὡς ἤδη ἐκρήγματος γεγονότος, ἅμα δὲ εἰς τὴν Ἐρυθρὰν τὸν Μενέλαον, ἐκ τῆς Αἰγύπτου ναυστολῶν, ὡς οὔπω γεγονότος. ἀλλὰ καὶ τὸν Πρωτέα εἰσάγει λέγοντα αὐτῷ.

» Ἀλλά σ' ἐς Ἠλύσιον πεδίον, καὶ πείρατα γαίης Ἀθάνατοι πέμψουσι.—

Γοῖα οὖν καὶ ὅτι ἑσπέριόν τινα λέγει τόπον τοῦτον ἔσχατον, ὁ Ζέφυρος παρατεθεὶς δηλοῖ.

» Ἀλλ' αἰεὶ Ζεφύροιο λιγὺ πνείοντας ἀήτας Ὠκεανὸς ἀνίησι.—

Ταῦτα γὰρ αἰνίγματος πλήρη. εἰ δ' οὖν καὶ σύῤῥουν ποτὲ ὑπάρξαντα τὸν ἰσθμὸν τοῦτον ὁ ποιητὴς ἱστορήκει, πόσῳ μείζονα ἂν ἔχοιμεν πίστιν τοῦ, τοὺς Αἰθίοπας διχθὰ διῃρῆσθαι, πορθμῷ τηλικούτῳ διειργομένους; τίς δὲ καὶ χρηματισμὸς παρὰ τῶν ἔξω, καὶ κατὰ τὸν ὠκεανὸν Αἰθιόπων. καίτοι γὰρ θαυμάζουσι τοῦ κόσμου τῶν βασιλείων οἱ περὶ Τηλέμαχον. τὸ πλῆθος, ὅ ἐστι

» Χρυσοῦ τ' ἠλέκτρου τε καὶ ἀργύρου ἠδ' ἐλέφαντος.

Τούτων δ' οὐδενὸς πλὴν ἐλέφαντος, εὐπορία παρ' ἐκείνοις ἐστίν. ἀπορωτάτοις τῶν ἁπάντων οὖσι τοῖς πλείστοις, καὶ νομάσι. νὴ δία. ἀλλ' ἡ Ἀραβία προσῆν, καὶ τὰ μέχρι τῆς Ἰνδικῆς. τούτων δ' ἡ μὲν, εὐδαίμων κέκληται μόνη τῶν ἁπασῶν. τὴν δὲ, εἰ καὶ μὴ ὀνόματι καλοῦσιν, οὕτως ὑπολαμβάνουσί γε, καὶ ἱστοροῦσιν, ὡς εὐδαιμονεστάτην. Τὴν μὲν οὖν Ἰνδικὴν οὐκ οἶδεν Ὅμηρος. εἰδὼς δὲ ἐμέμνητο ἄν. τὴν δ' Ἀραβίαν, ἣν εὐδαίμονα προσαγορεύουσιν οἱ νῦν, τότε δ' οὐκ ἦν πλουσία. ἀλλὰ καὶ αὐτὴ ἄπορος

καὶ ἡ πόλις

καὶ ἡ πόλις αὐτῆς, σκηνιτῶν ἀνδρῶν. ὀλίγη δ' ἡ ἀρωματοφόρος. δι' ἣν καὶ τοὔνομα εὕρετο ἡ χώρα. διὰ τὸ, καὶ τὸν φόρτον εἶναι τὸν τοιοῦτον ἐν τοῖς παρ' ἡμῖν σπάνιον, καὶ τίμιον. νυνὶ μὲν οὖν εὐποροῦσι, καὶ πλουτοῦσι, διὰ τὸ καὶ τὴν ἐμπορίαν εἶναι πυκνὴν, καὶ δαψιλῆ. τότε δ' οὐκ εἰκός. αὐτῶν δὲ χάριν τῶν ἀρωμάτων. ἐμπόρῳ μὲν καὶ καμηλίτῃ γένοιτ' ἄν τις ἐκ τῶν τοιούτων φορτίων εὐπορία. Μενελάῳ δὲ λαφύρων, ἢ δωρεῶν ἔδει παρὰ βασιλέων, καὶ δυναστῶν. ἐχόντων τε ἃ δώσουσι, καὶ βουλομένων διδόναι διὰ τὴν ἐπιφάνειαν αὐτοῦ, καὶ εὔκλειαν. οἱ μὲν οὖν αἰγύπτιοι, καὶ οἱ πλησίον αἰθίοπες, καὶ ἄραβες, οὔτ' οὕτω τελέως ἄβιοι, οὔτ' ἀνήκοοι τῆς τῶν ἀτρειδῶν δόξης. καὶ μάλιστα διὰ τὴν κατόρθωσιν τοῦ ἰλιακοῦ πολέμου. ὥστ' ἐλπὶς ἦν τῆς ἐξ αὐτῶν ὠφελείας. καθάπερ ἐπὶ τοῦ θώρακος τοῦ ἀγαμέμνονος λέγεται.

» Τόν, ποτέ οἱ κινύρης δῶκε ξεινήϊον εἶναι.

Πεύθετο γὰρ κύπρονδε μέγα κλέος.–

Καὶ δὴ καὶ τὸν πλείω χρόνον τῆς πλάνης, λεκτέον μὲν ἐν τοῖς κατὰ φοινίκην, καὶ συρίαν, καὶ αἴγυπτον, καὶ λιβύην γενέσθαι, καὶ τὰ περὶ κύπρον χωρία. καὶ ὅλως τὴν καθ' ἡμᾶς παραλίαν, καὶ τὰς νήσους. καὶ γὰρ ξένια παρὰ τούτοις, καὶ τὸ, βίᾳ καὶ τὸ, ἐκ λεηλασίας πορίσασθαι, καὶ μάλιστα παρὰ τῶν συμμαχησάντων τοῖς τρωσὶν, ἐντεῦθεν ἦν. οἱ δ' ἐκτὸς καὶ πόρρω βάρβαροι, οὐδεμίαν τοιαύτην ὑπηγόρευον ἐλπίδα. εἰς οὖν τὴν αἰθιοπίαν ἀφῖχθαι λέγεται ὁ μενέλαος, οὐχ ὅτι μέχρι τῶν ὅρων τῶν πρὸς αἰγύπτῳ. τάχα μὲν γὰρ καὶ πλησιαίτεροι ἦσαν ταῖς θήβαις οἱ τότε ὅροι. ἀλλὰ καὶ οἱ νῦν πλησίον εἰσὶν, οἱ κατὰ συήνην, καὶ τὰς φίλας. ὧν ἡ μὲν, τῆς αἰγύπτου ἐστίν. αἱ δὲ φίλαι, κοινὴ κατοικία τῶν αἰθιόπων, καὶ τῶν αἰγυπτίων. ὁ οὖν εἰς θήβας ἀφιγμένος, εἰ καὶ μέχρι τῶν ὅρων ἀφίκετο ἢ καὶ περαιτέρω τῶν αἰθιόπων, καὶ ταῦτα τῇ βασιλικῇ ξενίᾳ χρώμενος, οὐδὲν ἄλογον. οὕτω δὲ καὶ κυκλώπων εἰς γαῖαν ἀφῖχθαι φησὶν ὁ ὀδυσσεὺς, μέχρι τοῦ σπηλαίου προεληλυθὼς ἀπὸ θαλάττης. ἐπ' ἐσχατιῆς γὰρ ἱδρῦσθαί που λέγει. καὶ εἰς αἰολίαν δὲ, καὶ λαιστρυγόνας, καὶ τοὺς ἄλλους τόπους. ὅπου ποτὲ καθωρμίσατο, ἐκεῖσε φησὶν ἀφῖχθαι. καὶ ὁ μενέλαος οὖν οὕτως εἰς αἰθιοπίαν ἧκεν. οὕτω δὲ καὶ εἰς λιβύην, ὅτι προσέσχε τόποις τισίν. ἀφ' οὗ, καὶ ὁ κατὰ τὴν ἀρδανίαν λιμὴν, ὁ ὑπὲρ παραιτονίου, μενέλαος καλεῖται. εἰ δὲ φοίνικας εἰπὼν ὀνομάζει, καὶ σιδονίους τὴν μητρόπολιν αὐτῶν, σχήματι συνήθει χρῆται. ὡς

» – Τρῶάς τε, καὶ ἕκτορα νηυσὶ πέλασσε. καὶ

» Οὐ γὰρ ἔτ' οἰνῆος μεγαλήτορος υἱέες ἦσαν.

» Οὐδ' ἄρ' ἔτ' αὐτὸς ἔην. θάνε δὲ ξανθὸς μελέαγρος. Καὶ ἴδην δ' ἵκανον καὶ γάργαρον.– καὶ

Οἱ δ' εὔβοιαν ἔχον καὶ χαλκίδα τ' εἰρέτριάν τε. καὶ σαπφώ. ἢ σε κύπρος, ἢ πάφος, ἢ πάνορμος. καίτοι καὶ ἄλλο τι ἦν τὸ ποιῆσαν, καίπερ ἤδη μνησθέντα τῆς φοινίκης. ἰδίως πάλιν, καὶ τὴν σιδόνα συγκαταλέξαι φησίν. ὅπερ ζητοῦσιν ἔνιοι. πρὸς μὲν γὰρ τὸ τὰ ἐφεξῆς ἔθνη καταλέξαι, ἱκανῶς εἶχεν οὕτως

» Κύπρον φοινίκην τε καὶ αἰγυπτίους ἐπαληθείς. Αἰθίοπάς θ' ἱκόμην.– (ἐπεὶ-

Ἵνα δ' ἐμφήνῃ καὶ τὴν παρὰ τοῖς σιδονίοις ἐπιδημίαν τὴν ἐπὶ πλέον γενομένην, ἐμφαίνει διὰ τῶν ἐπαίνων τῆς παρ' αὐτοῖς εὐτυχίας καὶ ἧς καλῶς εἶχεν ἔτ' ἀνακλαβεῖν, ἔτι καὶ παρακαλεῖν εὐτεχνίας, καὶ τὴν ἑλένην προεξενῶσθαι τοῖς ἀνθρώποις μετὰ ἀλεξάνδρου. διόπερ παρὰ τῷ ἀλεξάνδρῳ πολλὰ τοιαῦτα ἀποκείμενα λέγει.

» Ἔνθ' ἔσαν οἱ πέπλοι παμποίκιλοι. ἔργα γυναικῶν

» Σιδονίων. ἃς αὐτὸς ἀλέξανδρος θεοειδὴς Ἤγαγε σιδονίηθεν ἐπιπλὼς εὐρέα πόντον

Τὴν ὁδὸν ἣν ἑλένην περ ἀνήγαγε. καὶ παρὰ τῷ μενελάῳ. λέγει γὰρ πρὸς τηλέμαχον.

» Δώσω τοι κρητῆρα τετυγμένον, ἀργύρεος δὲ, Ἔστιν ἅπας. χρυσῷ δ' ἐπὶ χείλεα κεκράανται

» Ἔργον δ' ἡφαίστοιο. πόρεν δέ μοι φαίδιμος ἥρως Σιδονίων βασιλεύς. ὅτ' ἑὸς δόμος ἀμφεκάλυψε

» Κεῖσέ με νοστήσαντα.– Δεῖ δὲ δέξασθαι πρὸς ὑπερβολὴν εἰρημένον τὸ ἡφαίστου ἔργον. ὡς λέγεται ἀθηνᾶς ἔργα, τὰ καλὰ, καὶ χαρίτων, καὶ μουσῶν. ἐπεὶ ὅτι γε οἱ ἄνδρες ἦσαν καλλίτεχνοι, δηλοῖ τὸν κρατῆρα ἐπαινῶν ὃν ὁ εὔνεως ἔδωκεν ἀντὶ λυκάονος. φησὶ γάρ

» – Ἐνίκα τῷ κάλλει πᾶσαν ἐπ' αἶαν

Πολλὸν, ἐπεὶ σιδόνες πολυδαίδαλοι εὖ ἤσκησαν.

» Φοίνικες δ' ἄγον ἄνδρες.–

Περὶ δὲ τῶν ἐρεμβῶν πολλὰ μὲν εἴρηται. πιθανώτατοι δ' εἰσὶν οἱ νομίζοντες τοὺς ἄραβας λέγεσθαι. Ζήνων δ' ὁ ἡμέτερος καὶ γράφει οὕτως.

» Αἰθιόπας θ' ἱκόμην καὶ σιδονίους ἄραβάς τε.

Τὴν μὲν οὖν γραφὴν οὐκ ἀνάγκη κινεῖν παλαιὰν οὖσαν. αἰτιᾶσθαι δὲ βέλτιον τὴν τοῦ ὀνόματος μετάπτωσιν πολλὴν, καὶ ἐπιπολαίαν οὖσαν ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν. ἀμέλει δὲ καὶ ποιοῦσί τινες παραγραμματίζοντες. ἄριστα δ' ἂν δόξειεν εἰπεῖν ὁ ποσειδώνιος, κἀνταῦθα ἀπὸ τῆς τῶν ἐθνῶν συγγενείας καὶ κοινότητος ἐτυμολογῶν. τὸ γὰρ τῶν ἀρμενίων ἔθνος, καὶ τὸ τῶν σύρων, καὶ τῶν ἀράβων, πολλὴν ὁμοφυλίαν ἐμφαίνει κατά τε τὴν διάλεκτον, καὶ τοὺς βίους, καὶ τοὺς τῶν σωμάτων χαρακτῆρας. καὶ μάλιστα καθὸ πλησιόχωροι

εἰσί. δηλοῖ δ᾽ ἡ μέν ποτε μία ἐκ τῶν τριῶν συνεστῶσα τούτων ἐθνῶν. μάλιστα γὰρ ἐν τούτοις ἡ ὁμοιότης διαφαίνεται. εἰ δέ τις παρὰ τὰ κλίματα γίνεται διαφορὰ τοῖς προσβόρροις, ἐπὶ πλέον πρὸς τοὺς μεσημβρινούς, καὶ τούτοις πρὸς μέσους τοὺς ὅρους, ἀλλ᾽ ἐπικρατεῖ γε τὸ κοινόν. καὶ οἱ ἀσσύριοι δὲ, καὶ οἱ ἀριανοὶ, καὶ οἱ ἀρμένιοι παραπλησίως πως ἔχουσι, καὶ πρὸς τούτους, καὶ πρὸς ἀλλήλους. εἰκάζειν δὲ δεῖ καὶ τὰς τῶν ἐθνῶν τούτων κατονομασίας ἐμφερεῖς ἀλλήλαις εἶναι. τοὺς γὰρ ὑφ᾽ ἡμῶν σύρους καλουμένους ὑπ᾽ αὐτῶν τῶν σύρων ἀρμενίους, καὶ ἀραμμαίους καλεῖσθαι. τούτῳ δ᾽ ἐοικέναι τοὺς ἀρμενίους, καὶ τοὺς ἄραβας, καὶ ἐρεμβούς, τάχα τῶν πάλαι ἑλλήνων οὕτω καλούντων τοὺς ἄραβας. ἅμα καὶ τοῦ ἐτύμου συνεργοῦντος πρὸς τοῦτο. ἀπὸ γὰρ τοῦ εἰς τὴν ἔραν ἐμβαίνειν τοὺς τρωγλοδύτας. ἐτυμολογοῦσιν οὕτως οἱ πολλοί. οὓς μεταλαβόντες οἱ ὕστερον ἐπὶ τὸ σαφέστερον τρωγλοδύτας ἐκάλεσαν. οὗτοι δ᾽ εἰσὶν ἀράβων οἱ ἐπὶ θάτερον μέρος τοῦ ἀραβίου κόλπου κεκλιμένοι, τὸ πρὸς αἰγύπτῳ, καὶ αἰθιοπίᾳ. τούτων δ᾽ εἰκὸς μεμνῆσθαι τὸν ποιητήν. καὶ πρὸς τούτους εἰκὸς ἀφῖχθαι λέγειν τὸν μενέλαον. καθ᾽ ὃν τρόπον εἴρηται καὶ πρὸς τοὺς αἰθίοπας. τῇ γὰρ θηβαΐδι καὶ οὗτοι πλησιάζουσιν. ὁμοίως οὐκ ἐργασίας, οὐδὲ χρηματισμοῦ χάριν τούτων ὀνομαζομένων. οὐ πολὺ γὰρ ἦν τοῦτο. ἀλλὰ τοῦ μήκους, καὶ τῆς ἀποδημίας, καὶ τοῦ ἐνδόξου. ἔνδοξον γὰρ τοσοῦτον ἐκτοπίσαι. τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ,

» Πολλῶν ἀνθρώπων ἴδεν ἄστεα καὶ νόον ἔγνω. Καὶ τὸ

» Ἦ γὰρ πολλὰ παθὼν. καὶ πόλλ᾽ ἐπαληθεὶς ἠγαγόμην. Ἡσίοδος δ᾽ ἐν καταλόγῳ φησὶ

» Καὶ κούρην ἀράβοιο. τὴν ἑρμάων ἀκάκητα Γείνατο καὶ θρονίη κούρη βήλοιο ἄνακτος. Οὕτω δὲ καὶ στησίχορος λέγει. εἰκάζειν οὖν ἐστιν ὅτι ἀπὸ τούτου καὶ ἡ χώρα ἀραβία ἤδη τότε ὠνομάζετο. κατὰ δὲ τοὺς ἥρωας τυχὸν ἴσως οὔπω. οἱ δὲ πλάττοντες ἐρεμβοὺς ἴδιόν τι ἔθνος αἰθιοπικὸν, καὶ ἄλλο κηφήνων, καὶ τρίτον πυγμαίων, καὶ ἄλλα μυρία, ἧττον ἂν πιστεύοιντο. πρὸς τῷ μὴ ἀξιοπίστῳ, καὶ σύγχυσίν τινα ἐμφαίνοντες τοῦ μυθικοῦ, καὶ ἱστορικοῦ σχήματος. ὅμοιοι δ᾽ εἰσὶ τούτοις, καὶ οἱ σιδονίους ἐν τῇ κατὰ πέρσας θαλάττῃ διηγούμενοι. ἢ ἄλλοθί που τοῦ ὠκεανοῦ. καὶ τὴν τοῦ μενελάου πλάνην ἐξωκεανίζοντες. καὶ τοὺς φοίνικας δὲ ὁμοίως. τῆς δ᾽ ἀπιστίας αἴτιον οὐκ ἐλάχιστόν ἐστι, τὸ ἐναντιοῦσθαι ἀλλήλοις τοὺς λέγοντας. οἱ μὲν γὰρ καὶ τοὺς φοίνικας, καὶ τοὺς σιδονίους τοὺς καθ᾽ ἡμᾶς ἀποίκους εἶναι τῶν ἐν τῷ ὠκεανῷ φασι. προστιθέντες καὶ διὰ τί φοίνικες ἐκαλοῦντο. ὅτι καὶ ἡ θάλαττα ἐρυθρά. οἱ δ᾽ ἐκείνους τούτων. εἰσὶ δ᾽ οἳ καὶ τὴν αἰθιοπίαν εἰς τὴν καθ᾽ ἡμᾶς φοινίκην μετάγουσι. καὶ τὰ περὶ τὴν ἀνδρομέδαν ἐν ἰόπῃ συμβῆναί φασιν, οὐδὲ τοῦτο κατ᾽ ἄγνοιαν τοπικὴν, καὶ τούτων λεγομένων. ἀλλ᾽ ἐν μύθου μᾶλλον σχήματι. καθάπερ καὶ τὰ παρ᾽ ἡσιόδῳ, καὶ τοῖς ἄλλοις ἃ προφέρει ὁ ἀπολλόδωρος. οὐδ᾽ ὃν τρόπον παρατίθησι τοῖς ὁμήρου ταῦτα εἰδώς. τὰ μὲν γὰρ ὁμήρου, τὰ περὶ τὸν πόντον, καὶ τὴν αἴγυπτον παρατίθησιν, ἄγνοιαν αἰτιώμενος. ὡς λέγειν μὲν τὰ ὄντα βουλομένου. μὴ λέγοντος δὲ τὰ ὄντα. ἀλλὰ τὰ μὴ ὄντα ὡς ὄντα κατ᾽ ἄγνοιαν. ἡσιόδου δ᾽ οὐκ ἄν τις αἰτιάσαιτο ἄγνοιαν. ἡμίκυνας λέγοντος, καὶ μακροκεφάλους, καὶ πυγμαίους. οὐδὲ γὰρ αὐτοῦ ὁμήρου ταῦτα μυθεύοντος. ὧν εἰσὶ καὶ οὗτοι οἱ πυγμαῖοι. οὐδ᾽ ἀλκμᾶνος στεγανόποδας ἱστοροῦντος. οὐδ᾽ αἰσχύλου κυνοκεφάλους, καὶ στερνοφθάλμους, καὶ μονομμάτους. ὅπου γε οὐδὲ τοῖς πεζῇ συγγράφουσιν ἐν ἱστορίας σχήματι προσέχομεν περὶ πολλῶν, κἂν μὴ ἐξομολογῶνται τὴν μυθογραφίαν. φαίνεται γὰρ εὐθὺς ὅτι μύθους παραπλέκουσιν ἑκόντες. οὐκ ἀγνοίᾳ τῶν ὄντων. ἀλλὰ πλάσει τῶν ἀδυνάτων τερατείας, καὶ τέρψεως χάριν. δοκοῦσι δὲ κατ᾽ ἄγνοιαν ὅτι μάλιστα, καὶ πιθανῶς τὰ τοιαῦτα μυθεύουσι περὶ τῶν ἀδήλων, καὶ τῶν ἀγνοουμένων. θεόπομπος δὲ ἐξομολογεῖται φήσας, ὅτι καὶ μύθους ἐν ταῖς ἱστορίαις ἐρεῖ κρεῖττον, ἢ ὡς ἡρόδοτος, καὶ κτησίας, καὶ ἑλλάνικος. καὶ οἱ τὰ ἰνδικὰ συγγράψαντες. Περὶ δὲ τῶν τοῦ ὠκεανοῦ παθῶν, εἴρηται μὲν ἐν μύθου σχήματι. καὶ γὰρ τούτου στοχάζεσθαι δεῖ τὸν ποιητήν. ἀπὸ γὰρ τῶν ἀμπώτεων καὶ τῶν πλημμυρίδων ἡ χάρυβδις αὐτῷ μεμύθευται. οὐδ᾽ αὐτὴ παντάπασιν ὁμήρου πλάσμα οὖσα. ἀλλ᾽ ἀπὸ τῶν ἱστορουμένων περὶ τὸν σικελικὸν πορθμὸν διεσκευασμένη. εἰ δὲ δὶς τῆς παλιρροίας γινομένης καθ᾽ ἑκάστην ἡμέραν, καὶ νύκτα, ἐκεῖνος τρὶς εἴρηκε.

» Τρὶς μὲν γάρ τ᾽ ἀνίησιν ἐπ᾽ ἤματι. τρὶς δ᾽ ἀναροιβδεῖ, λέγοι τ᾽ ἂν καὶ οὕτως. οὐ γὰρ κατ᾽ ἄγνοιαν τῆς ἱστορίας ὑποληπτέον γενέσθαι τοῦτο. ἀλλὰ τραγῳδίας χάριν καὶ φόβου. ὃν ἡ κίρκη πολὺν τοῖς λόγοις προστίθησιν, ἀποτροπῆς χάριν. ὥστε καὶ τὸ ψεῦδος παραμίγνυσθαι. ἐν αὐτοῖς γοῦν τοῖς ἔπεσι τούτοις εἴρηκεν ἡ κίρκη.

» Τρὶς μὲν γάρ τ᾽ ἀνίησιν ἐπ᾽ ἤματι. τρὶς δ᾽ ἀναροιβδεῖ.

» Δεινόν. μὴ σύ γε κεῖθι τύχοις ὅτε ῥοιβδήσειε χάρυβδις. Οὐ γάρ κεν ῥύσαιτό σ᾽ ὑπὲκ κακοῦ οὐδ᾽ ἐνοσίχθων.

» Καί μην παρέτυχέ τε τῇ ἀναροιβδήσει ὁ ὀδυσσεύς. καὶ οὐκ ἀπώλετο ὥς φησιν αὐτός.

» Ἡ μὲν ἀνερροίβδησε θαλάσσης ἁλμυρὸν ὕδωρ.

» Αὐτὰρ ἐγὼ ποτὶ μακρὸν ἐρινεὸν ὑψόσ᾽ ἀερθεὶς Τῷ προσφὺς ἐχόμην ὡς νυκτερίς.—

Εἶτα περιμείνας τὰ ναυάγια καὶ λαβόμενος πάλιν αὐτῶν σώζεται. ὥστ᾽ ἐψεύσατο ἡ κίρκη. ὡς οὖν τοῦτο κἀκεῖνο. τὸ τρὶς μὲν γάρ τ᾽ ἀνίησιν ἐπ᾽ ἤματι, ἀντὶ τοῦ δὶς ἅμα. καὶ τῆς ὑπερβολῆς τῆς τοιαύτης συνήθους πᾶσιν οὔσης, τρισμακαρίους, καὶ τρισαθλίους, λεγόντων καὶ ὁ ποιητής.

Τρισμάκαρες δαναοί.— Καὶ ἀσπασίη τρίλλιστος. καὶ τριχθά τε καὶ τετραχθά.

Ἴσως δ᾽ ἄν τις καὶ ἀπὸ τῆς χώρας τεκμήραιτο ὅτι ὑπονοεῖ πως τἀληθές. μᾶλλον γὰρ ἐφαρμόττοι τὸ δὶς γίνεσθαι τὴν παλίρροιαν, κατὰ τὸν σύμπαντα χρόνον, τὸν τῆς ἡμέρας, καὶ νυκτὸς, ἢ τὸ τρὶς τοσοῦτον χρόνον μεῖναι τὰ ναυάγια ὑποβρύχια. ὀψὲ δὲ ἀναβληθῆναι ποθοῦντι, καὶ συνεχῶς προσεχό- (μενον τοῖς κλάδοις.

» Νωλεμέως δ᾽ ἐχόμην. ὄφρ᾽ ἐξεμέσειεν ὀπίσω

» Ἱστὸν καὶ τρόπιν αὖτις. ἐελδομένῳ δέ μοι ἦλθεν Ὀψέ. ἦμος δ᾽ ἐπὶ δόρπον ἀνὴρ ἀγορῆθεν ἀνέστη.

» Κρίνων νείκεα πολλὰ δικαζομένων αἰζηῶν.

Καὶ τό τε δή μοι δοῦρα χαρύβδιος ἐξεφαάνθη. πάντα γὰρ ταῦτα χρόνου τινὸς ἔμφασιν ἀξιολόγου δίδωσι. καὶ μάλιστα τὸ τὴν ἑσπέραν ἐπιτεῖναι, καὶ μὴ κοινῶς εἰπόντα, ἡνίκα ὁ δικαστὴς ἀνίσταται. ἀλλ᾽ ἡνίκα κρίνων νείκεα πολλά. ὥστε βραδῦναι πλέον τι. καὶ ἄλλως δὲ οὐ πιθανὴν ἂν ὑπέτεινε τῷ ναυαγίῳ τὴν ὑπαλλαγὴν, εἰ πρὶν ἀποσπασθῆναι πολὺ καὶ αὐτίκα εἰς τοὐπίσω παλίρρους μετέπιπτεν. ἀπολλόδωρος δὲ ἐπιτιμᾷ καλλιμάχῳ. συνηγορῶν τοῖς περὶ ἐρατοσθένην. διότι, καίπερ γραμματικὸς ὤν, παρὰ τὴν ὁμηρικὴν ὑπόθεσιν, καὶ τὸν ἐξωκεανισμὸν τῶν τόπων περὶ οὓς τὴν πλάνην φράζει, γαῦδον καὶ κόρκυραν ὀνομάζει. ἀλλ᾽ εἰ μὲν μηδαμοῦ γέγονεν ἡ πλάνη, ἀλλ᾽ ὅλον πλάσμα ἐστὶν ὁμήρου τοῦτο, ὀρθὴ ἡ ἐπιτίμησις. ἢ εἰ γέγονε μὲν, περὶ ἄλλους δὲ τόπους, δεῖ λέγειν εὐθὺς, καὶ περὶ τίνας, ἐπανορθούμενον ἅμα τὴν ἄγνοιαν. μή τε δὲ ὅλου πλάσματος εἶναι πιθανῶς λεγομένου, καθάπερ ἐπεδείκνυμεν. μήτ᾽ ἄλλων τόπων κατὰ πίστιν μείζω δεικνυμένων. ἀπολύοιτ᾽ ἂν τῆς αἰτίας ὁ καλλίμαχος. οὐδ᾽ ὁ σκήψιος δὲ δημήτριος εὖ. ἀλλὰ καὶ τῷ ἀπολλοδώρῳ τῶν ἁμαρτιῶν ἐνίων αἴτιος ἐκεῖνος κατέστη. πρὸς γὰρ νεάνθη τὸν κυζικηνὸν φιλοτιμοτέρως ἀντιλέγων, εἰπόντα ὅτι οἱ ἀργοναῦται πλέοντες εἰς φᾶσιν τὸν ὑφ᾽ ὁμήρου, καὶ τῶν ἄλλων ὁμολογούμενον πλοῦν, ἱδρύσαντο τὰ τῆς ἰδαίας μητρὸς ἱερὰ ἐπὶ κυζίκῳ, ἀρχὴν φησὶ μὴ εἰδέναι τὴν εἰς φᾶσιν ἀποδημίαν τὴν ἰάσονος ὅμηρον. τοῦτο δ᾽ οὐ μόνον τοῖς ὑφ᾽ ὁμήρου λεγομένοις μάχεται, ἀλλὰ καὶ τοῖς ὑφ᾽ αὐτοῦ. φησὶ γὰρ τὸν ἀχιλλέα λέσβον μὲν πορθῆσαι. καὶ ἄλλα χωρία. λήμνου δ᾽ ἀπέχεσθαι, καὶ τῶν πλησίον νήσων. διὰ τὴν πρὸς τὸν ἰάσονα καὶ τὴν πρὸς τὸν υἱὸν εὔνηον συγγένειαν τό τε τὴν νῆσον κατέχοντα. πῶς οὖν ὁ ποιητὴς τοῦτο μὲν ᾔδει διότι συγγενεῖς ἢ ὁμοεθνεῖς ἢ γείτονες, ἢ ἄλλως ὁπωσοῦν οἰκεῖοι ὑπῆρχον, ὅ, τε ἀχιλλεὺς, καὶ ὁ ἰάσων, ὅπερ οὐδαμόθεν ἄλλοθεν, ἀλλ᾽ ἐκ τοῦ θετταλοὺς ἀμφοτέρους εἶναι συνέβαινε, καὶ τὸν μὲν ἰώλκιον. τὸν δ᾽ ἐκ τῆς φθιώτιδος ἀχαΐδος ὑπάρχειν. τοῦτο δ᾽ ἠγνόει πόθεν ἦλθε τῷ ἰάσονι θετταλῷ, καὶ ἰωλκίῳ ὑπάρχοντι, ἐν μὲν τῇ πατρίδι μηδεμίαν καταλιπεῖν διαδοχήν. λήμνου δὲ καταστῆσαι κύριον τὸν υἱὸν, καὶ πελίαν μὲν ᾔδει καὶ τὰς πελιάδας, καὶ τὴν ἀρίστην αὐτῶν ἄλκηστιν, καὶ τὸν υἱὸν αὐτῆς εὔμηλον.

Τὸν ὑπ᾽ ἀδμήτῳ τέκε διὰ γυναικῶν. Ἄλκηστις πελίαο θυγατρῶν εἶδος ἀρίστη.

τῶν δὲ περὶ τὸν ἰάσονα συμβάντων, καὶ τὴν ἀργὼ καὶ τοὺς ἀργοναύτας τῶν μάλιστα ὁμολογουμένων παρὰ πᾶσιν, ἀνήκοος ἦν. ἐν δὲ τῷ ὠκεανῷ τὸν παρ᾽ αἰήτου πλοῦν ἔπλαττεν. ἀρχὴν μηδεμίαν ἐξ ἱστορίας λαβών. ὡς μὲν γὰρ ἅπαντες λέγουσιν ὅτι ἐξ ἀρχῆς ὁ πλοῦς ἐπὶ φᾶσιν ἔχει πιθανότητι, τοῦ πελίου στείλαντος. καὶ ἡ ἐπάνοδος, καὶ ἡ ἐν τῷ παράπλῳ νήσων ὅση ἐπικράτεια καὶ νὴ δία ἡ ἐπὶ πλέον γεννηθεῖσα πλάνη, καθάπερ καὶ τῷ ὀδυσσεῖ, καὶ τῷ μενελάῳ, ἐκ τῶν ἔτι νῦν δεικνυμένων πεπιστευμένων ἐστίν. ἔκ τε τῆς ὁμήρου φωνῆς, ἥ τε αἶα δείκνυται περὶ φᾶσιν πόλις, καὶ ὁ αἰήτης πεπίστευται βασιλεῦσαι τῆς κολχίδος, καὶ ἔστι τοῖς ἐκεῖ τοῦτ᾽ ἐπιχώριον τοὔνομα. ἥ τε μήδεια φαρμακὶς ἱστορεῖται. καὶ ὁ πλοῦτος τῆς ἐκεῖ χώρας, ἐκ τῶν χρυσείων καὶ ἀργυρείων καὶ σιδηρείων. καὶ δικαίαν τινὰ ὑπαγορεύει πρόφασιν τῆς στρατείας. καθ᾽ ἣν, καὶ φρίξος πρότερον ἔστειλε τὸν πλοῦν τοῦτον. καὶ ἔστιν ὑπομνήματα τῆς ἀμφοῖν στρατείας, τό, τε φρίξιον, τὸ ἐν τοῖς μεθορίοις τῆς τε κολχίδος, καὶ τῆς ἰβηρίας, καὶ τὰ ἰασόνια πολλαχοῦ, καὶ τῆς ἀρμενίας, καὶ τῆς μηδείας, καὶ τῶν πλησιοχώρων αὐταῖς τόπων δείκνυται. καὶ μὴν καὶ περὶ σινώπην, καὶ τὴν ταύτης παραλίαν, καὶ τὴν προποντίδα, καὶ τὸν ἑλλήσποντον μέχρι τῶν κατὰ τὴν λῆμνον τόπων λέγεται πολλὰ τεκμήρια τῆς τε ἰάσονος στρατείας, καὶ τῆς φρίξου. τῆς δ᾽ ἰάσονος, καὶ τῶν ἐπιδιωξάντων κόλχων. μέχρι τῆς κρήτης, καὶ τῆς ἰταλίας, καὶ τοῦ ἀδρίου, ὧν ἔνια καὶ ὁ καλλίμαχος ἐπισημαίνεται, τό τε μὴν,

» Αἰγλήτην ἀνάφην τε λακωνίδι γείτονα θήρῃ Λέγων. ἀρχόμενος

» — Ὡς ἥρωες ἀπ᾽ αἰήταο κυταίου,

» Αὖθις ἐς ἀρχαίην ἔπλεον. αἱμονίην. Τό, τε περὶ τῶν κόλχων

» Οἱ μὲν ἐπ᾽ ἰλλυρικοῖο πόρου σχάσαντες ἐρετμὰ,

» Λᾶα παρὰ ξανθῆς ἁρμονίης ὄφιος

» Ἄστυρον ἐκτίσσαντο. τὸ μὲν φυγάδων τις ἐνίσποι

Γραικός. ἀτὰρ κείνων γλῶσσ᾽ ὀνόμηνε πόλας.

Τινὲς δὲ καὶ τὸν ἴστρον ἀναπλεῦσαι φασὶ μέχρι πολλοῦ τοὺς περὶ τὸν ἰάσονα. οἱ δὲ, καὶ μέχρι τοῦ ἀδρίου οἱ μὲν, κατὰ ἄγνοιαν τῶν τόπων, οἱ δὲ καὶ ποταμὸν ἴστρον ἐκ τοῦ μεγάλου ἴστρου τὴν ἀρχὴν ἔχοντα. ἐκβάλλειν εἰς τὸν ἀδρίαν φασί. τὰ δὲ οὐκ ἀπιθάνως οὐδ᾽ ἀπίστως λέγοντες. τοιαύταις δή τισιν ἀφορμαῖς.

ὁ ποιητὴς χρησάμενος, τὰ μὲν ὁμολογεῖ τοῖς ἱστορουμένοις, προσμυθεύει δὲ τούτοις, ἔθος τι φυλάττων καὶ κοινὸν, καὶ ἴδιον. ὁμολογεῖ μὲν, ὅταν αἰήτην ὀνομάζῃ, καὶ τὸν ἰάσονα. καὶ τὴν ἀργὼ λέγῃ, καὶ παρὰ τὸν αἰήτην πλάττῃ. καὶ τὸν εὔνεων ἐν λήμνῳ καθιδρύῃ. καὶ ποιῇ τῷ ἀχιλλεῖ φίλην τὴν νῆσον. καὶ παρὰ τὴν μήδειαν, τὴν κίρκην φαρμακίδα ποιεῖ.

» Αὐτοκασιγνήτην ὀλοόφρονος αἰήταο.

Προσμυθοποιεῖ δὲ τὸν ἐξωκεανισμὸν, τὸν κατὰ τὴν πλάνην συμβάντα, τὴν ἀπ' ἐκείνου τοῦ πλοῦ. ἐπεὶ κἀκεῖνο, ὑποκειμένων μὲν τούτων, εὖ λέγεται. αἱ πλάγκται, καὶ αἱ συμπλήγαδες, καὶ τὰ στενὰ καὶ ἁρμοζόντως ἀρχαΐοις πέτραις μέλουσαι, ὡς ἐν γνωρίμοις τόποις καὶ διαστροφοῦσι τῆς ναυστολίας γενομένης. εἰ δ' ὥσπερ ὁ σκήψιός φησι παραλαβὼν μάρτυρα μίμνερμον, ὃς ἐν τῷ ὠκεανῷ ποιήσας τὴν οἴκησιν τοῦ αἰήτου, πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς ἐκτὸς, πεμφθῆναί φησιν ὑπὸ τοῦ πελίου τὸν ἰάσονα, καὶ κομίσαι τὸ δέρας, οὔτ' ἂν ἐπὶ τὸ δέρας ἐκεῖσε πομπὴ πιθανῶς λέγοιτο εἰς ἀγνῶτας, καὶ ἀφανεῖς τόπους. οὔθ' ὁ διὰ ἐρήμων, καὶ ἀοίκων, καὶ τῶν καθ' ἡμᾶς τοσοῦτον ἐκτετοπισμένων πλοῦς, οὔτ' ἔνδοξος, οὔτε πασιμέλων.

» Οὐδ' ὁπότ' ἂν μετὰ κῶας ἀνήγαγεν αὐτὸς ἰήσων — Ἐξ αἴης, τελέσας ἀλγινόεσσαν ὁδὸν

» Ὕβρει τῇ πελίῃ τελέων χαλεπῆρες ἄεθλον. — Οὐδ' ἂν ἐπ' ὠκεανοῦ καλὸν ἵκοντο ῥόον.

» Καὶ ὑποβάς — Αἰήταο πόλιν. τόθι τ' ὠκέος ἠελίοιο

» Ἀκτῖνες χρυσέῳ κείαται ἐν θαλάμῳ — Ὠκεανοῦ παρὰ χείλεσ' ἵν' ᾤχετο θεῖος ἰήσων.

Οὐδὲ τοῦτ' εὖ ἐρατοσθένης, ὅτι ἀνδρῶν οὐκ ἀξίων μνήμης ἐπιπλέον μέμνηται. τὰ μὲν, ἐλέγχων, τὰ δὲ, πιστεύων. καὶ μάρτυσι χρώμενος αὐτοῖς, οἷον δαμάστῃ καὶ τοιούτοις ἄλλοις. καὶ γὰρ εἴ τι λέγουσιν ἀληθὲς, οὐ μάρτυσί γε ἐκείνοις χρηστέον περὶ αὐτοῦ. οὐδὲ πιστευτέον διὰ τοῦτο. ἀλλ' ἐπὶ τῶν ἀξιολόγων ἀνδρῶν μόνον τῷ τοιούτῳ τρόπῳ χρηστέον. οἳ πολλὰ μὲν εἰρήκασιν εὖ. πολλὰ δὲ καὶ παραλελοίπασιν ἢ οὐχ ἱκανῶς ἐξεῖπον, οὐδὲν δὲ διεψευσμένως. ὁ δὲ, δαμάστῃ χρώμενος μάρτυρι, οὐδὲν διαφέρει τοῦ καλοῦντος μάρτυρα τὸν βεργαῖον, ἢ τὸν μεσσήνιον εὐήμερον. καὶ τοὺς ἄλλους, οὓς αὐτὸς εἴρηκε διαβάλλων τὴν φλυαρίαν. καὶ τούτου δ' ἕνα τῶν λήρων αὐτὸς λέγει. τὸν μὲν ἀράβιον κόλπον λίμνην ὑπολαμβάνειν εἶναι. διότιμον δὲ τὸν στρομβίχου, πρεσβείας ἀθηναίων ἀφηγούμενον, διὰ τοῦ κύδνου ἀναπλεῦσαι ἐκ τῆς κιλικίας ἐπὶ τὸν χοάσπην ποταμὸν, ὃς παρὰ τὰ σοῦσα ῥεῖ. καὶ ἀφικέσθαι τεσσαρακοσταῖον εἰς σοῦσα. ταῦτα δ' αὐτῷ διηγήσασθαι αὐτὸν τὸν διότιμον. εἶτα θαυμάζειν εἰ τὸν εὐφράτην, καὶ τὸν τίγριν ἦν δυνατὸν διακόψαντα τὸν κύδνον εἰς τὸν χοάσπην ἐκβαλεῖν. οὐ μόνον δὲ ταῦτ' ἄν τις ἐπισημήναιτο, ἀλλ' ὅτι καὶ περὶ τῶν τόπων οὐδὲ καθ' ἑαυτόν πω γνώριμα, εἶναί φησι τὰ καθ' ἕκαστα ἀκριβολογούμενα. καὶ κελεύσας ἡμῖν μὴ ῥᾳδίως τοῖς τυχοῦσι πιστεύειν. καὶ τὰς αἰτίας διὰ μακρῶν ἀποδοὺς, δι' ἃς οὐδὲ πιστευτέον. μεθ' ὃ λέγων ὅτι περὶ τῶν κατὰ τὸν πόντον, καὶ τὸν ἀδρίαν αὐτὸς ἐπίστευσε τοῖς τυχοῦσι. τοιγάρτοι τὸν μὲν ἰσσικὸν κόλπον ἐπίστευσεν ἑωθινώτατον τῆς καθ' ἡμᾶς θαλάττης, σημεῖον, τοῦ κατὰ διοσκουριάδα, τὴν ἐν τῷ τοῦ πόντου μυχῷ σχεδόν τι τρισχιλίοις σταδίοις ἑωθινωτέρου ὄντος, καὶ κατ' αὐτὸν ἐκ τοῦ σταδιασμοῦ οὗ φησι. τοῦ τε ἀδρίου, καὶ τὰ ἀρκτικὰ καὶ τὰ ἔσχατα διεξιὼν, οὐδενὸς ἀπέχεται μυθώδους. πεπίστευκε δὲ καὶ περὶ τῶν ἔξω στηλῶν ἡρακλείων πολλοῖς μυθώδεσι. κέρνην τε νῆσον, καὶ ἄλλους τόπους ὀνομάζων, τοὺς μηδαμοῦ νυνὶ δεικνυμένους. περὶ ὧν μνησθησόμεθα καὶ ὕστερον. εἰπών τε τοὺς ἀρχαιοτάτους πλεῖν καὶ κατὰ λῃστείαν, ἢ ἐμπορείαν, μὴ πελαγίζειν δὲ, ἀλλὰ παρὰ γῆν, καθάπερ τὸν ἰάσονα, ὃν περ καὶ μέχρι τῆς ἀρμενίας, καὶ μηδείας ἐκ τῶν κόλχων στρατεῦσαι, ἀφέντα τὰς ναῦς, ὕστερόν φησι τὸ παλαιὸν, οὔτε τὸν εὔξεινον θαρρεῖν τινὰ πλεῖν, οὔτε παρὰ λιβύην, καὶ συρίαν, καὶ κιλικίαν. εἰ μὲν οὖν τοὺς πάλαι, τοὺς πρὸ τῆς ἡμετέρας λέγει μνήμης, οὐδέν ἐμοὶ μέλει λέγειν, περὶ ἐκείνων οὔτ' εἰ ἔπλεον, οὔτ' εἰ μή. εἰ δὲ περὶ τῶν μνημονευομένων, οὐκ ἂν ὀκνήσαι τις εἰπεῖν. ὡς οἱ παλαιοὶ, μακροτέρας ὁδοὺς φανοῦνται καὶ κατὰ γῆν, καὶ κατὰ θάλατταν τελέσαντες τῶν ὕστερον, εἰ χρὴ προσέχειν τοῖς λεγομένοις. οἷ διόνυσος, καὶ ἡρακλῆς, καὶ αὐτὸς ὁ ἰάσων. ἔτι δ' οἱ ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγόμενοι, ὀδυσσεὺς, καὶ μενέλαος. καὶ θησέα δὲ, καὶ πειρίθουν μακρὰς εἰκὸς ἐστι στρατείας ὑπομείναντας, καταλιπεῖν δόξαν περὶ ἑαυτῶν, ὡς εἰς ᾅδου καταβάντας. τοὺς δὲ διοσκούρους ἐπιμελητὰς τῆς θαλάσσης λεχθῆναι, καὶ σωτῆρας τῶν πλεόντων. ἥ τε μίνω θαλαττοκρατία θρυλλεῖται, καὶ ἡ φοινίκων ναυτιλία. οἳ καὶ τὰ ἔξω τῶν ἡρακλείων στηλῶν ἐπῆλθον. καὶ πόλεις ἔκτισαν κἀκεῖ. καὶ περὶ τὰ μέσα τῆς λιβύης παραλίας μικρὸν τῶν τρωϊκῶν ὕστερον. αἰνείαν δὲ, καὶ ἀντήνορα καὶ ἐνετοὺς, καὶ ἁπλῶς τοὺς ἐκ τοῦ τρωϊκοῦ πολέμου πλανηθέντας εἰς πᾶσαν τὴν οἰκουμένην, ἄξιον μὴ τῶν παλαιῶν ἀνθρώπων νομίσαι, συνέβη γὰρ δὴ τοῖς τότε ἕλλησιν, ὁμοίως καὶ τοῖς βαρβάροις διὰ τὸν τῆς στρατείας χρόνον, ἀποβαλεῖν, τά τε ἐν οἴκῳ, καὶ τῇ στρατείᾳ περιποιηθέντα. ὥστε μετὰ τὴν τοῦ ἰλίου καταστροφὴν, τούς τε νικήσαντας ἐπὶ λῃστείαν τρέπεσθαι διὰ τὰς ἀπορείας. καὶ πολλῷ μᾶλλον τοὺς ἡττηθέντας, καὶ περιγενομένους ἐκ τοῦ πολέμου. καὶ δὴ καὶ πόλεις ὑπὸ τούτων πλεῖσται κτισθῆναι λέγονται, κατὰ πᾶσαν τὴν ἔξω τῆς ἑλλάδος παραλίαν. ἔστι δ' ὅπου καὶ τὴν μεσόγαιαν. εἰπὼν δὲ καὶ αὐτὸς ὁπόσον προὔβη τὰ τῆς οἰκουμένης εἰς γνῶσιν τοῖς μετ' ἀλέξανδρον, καὶ κατ' αὐτὸν, ἤδη μεταβέβηκεν ἐπὶ τὸν περὶ τοῦ σχήματος ἤδη λόγον. οὐχὶ περὶ τοῦ τῆς οἰκουμένης

ὅτι ἦν οἰκειότερον τῷ περὶ αὐτῆς λόγῳ. ἀλλὰ τῆς συμπάσης γῆς. δεῖν μὲν γὰρ καὶ τούτου μνησθῆναι, μὴ ἀτάκτως δέ. εἰπὼν οὖν ὅτι σφαιροειδὴς ἡ σύμπασα, οὐχ ὡς ἐκ τόρνου δέ, ἀλλ' ἔχει τινὰς ἀνωμαλίας, ἐπιφέρει τὸ πλῆθος τῶν ἐν μέρει μετασχηματισμῶν αὐτῆς. οἳ συμβαίνουσιν ἔκ τε ὕδατος, καὶ πυρὸς, καὶ σεισμῶν, καὶ ἀναφυσημάτων, καὶ ἄλλων τοιούτων. οὐδ' ἐνταῦθα τὴν τάξιν φυλάττων. τὸ μὲν γὰρ σφαιροειδὲς περὶ ὅλην τὴν γῆν ἀπὸ τῆς τοῦ ὅλου τάξεως συμβαίνει. οἱ δὲ τοιοῦτοι μετασχηματισμοὶ, τὴν μὲν ὅλην γῆν οὐδὲν ἐξαλλάττουσιν. ἐν γὰρ τοῖς μεγάλοις ἐναφανίζεται τὰ οὕτω μικρά. τῆς δὲ οἰκουμένης διαθέσεις ἑτέρας καὶ ἑτέρας τινὰς ἀπεργάζονται. καὶ τὰς προσεχεῖς αἰτίας, ἄλλας καὶ ἄλλας ἔχουσι. μάλιστα δέ φησι τὴν ζήτησιν παρασχεῖν, πῶς ἐν δισχιλίοις, καὶ τρισχιλίοις ἀπὸ θαλάττης σταδίοις, κατὰ τὴν μεσόγαιαν ὁρᾶται πολλαχοῦ κόγχων καὶ ὀστρέων, καὶ χηραμύδων πλῆθος. καὶ λιμνοθάλατται. καθάπερ φησὶ περὶ τὸ ἱερὸν τοῦ ἄμμωνος, καὶ τὴν ἐπ' αὐτῷ ὁδὸν τρισχιλίων σταδίων οὖσαν. πολλὴν γὰρ εἶναι χύσιν ὀστρέων. ἅλας τε καὶ νῦν ἔτι εὑρίσκεσθαι πολλούς. ἀναφυσήματά τε θαλάττης εἰς ὕψος ἀναβάλλειν. πρὸς ᾧ καὶ ναυάγια θαλάττια πλοίων δείκνυσθαι. ἃ ἔφασαν διὰ τοῦ χάσματος ἐκβεβράσθαι. καὶ ἐπὶ στηλιδίων ἀνακεῖσθαι δελφῖνας ἐπιγραφὴν ἔχοντας κυρηναίων θεωρῶν. ταῦτα δ' εἰπὼν τὴν στράτωνος ἐπαινεῖ δόξαν τοῦ φυσικοῦ. καὶ ἔτι ξάνθου τοῦ λυδοῦ. τοῦ μὲν ξάνθου λέγοντος, ἐπὶ ἀρταξέρξου γενέσθαι μέγαν αὐχμόν. ὥστ' ἐκλιπεῖν ποταμοὺς, καὶ λίμνας, καὶ φρέατα. αὐτόν τε εἰδέναι πολλαχῇ πρόσω ἀπὸ τῆς θαλάσσης λίθους τε κογχυλιώδεις, καὶ τὰ κτενώδη. καὶ χηραμύδων τυπώματα. καὶ λιμνοθάλασσαν ἐν ἀρμενίοις, καὶ ἐν ματιηνοῖς. καὶ ἐν φρυγίᾳ τῇ κάτω. ὧν ἕνεκα πείθεσθαι τὰ πεδία ποτὲ θάλατταν γενέσθαι. τοῦ δὲ στράτωνος ἔτι μᾶλλον ἁπτομένου τῆς αἰτιολογίας. ὅτι φησὶν οἴεσθαι τὸν εὔξεινον μὴ ἔχειν πρότερον τὸ κατὰ βυζάντιον στόμα. τοὺς δὲ ποταμοὺς βιάσασθαι, καὶ ἀνοῖξαι τοὺς εἰς αὐτὸν ἐμβάλλοντας. εἶτ' ἐκπεσεῖν τὸ ὕδωρ εἰς τὴν προποντίδα, καὶ τὸν ἑλλήσποντον. τὸ δ' αὐτὸ συμβῆναι καὶ περὶ τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν. καὶ γὰρ ἐνταῦθα τὸν κατὰ στήλας ἐκραγῆναι πόρον. πληρωθείσης ὑπὸ τῶν ποταμῶν τῆς θαλάττης. κατὰ δὲ τὴν ἔκρυσιν ἀνακαλυφθῆναι τὰ τεναγώδη πρότερον. φέρει δ' αἰτίαν. πρῶτον μὲν ὅτι τῆς ἔξω θαλάττης καὶ τῆς ἐντὸς τοὔδαφος ἕτερόν ἐστιν. ἔπειθ', ὅτι καὶ νῦν ἔτι ταινίας ὕφαλος διατέτακεν ἀπὸ τῆς εὐρώπης ἐπὶ τὴν λιβύην. ὡς ἂν μὴ μιᾶς οὔσης πρότερον, τῆς τε ἐντὸς, καὶ τῆς ἐκτὸς, καὶ βραχύτατα μὲν εἶναι, τὰ περὶ τὸν πόντον. τὸ δὲ κρητικὸν, καὶ σικελικὸν, καὶ σαρδῷον πέλαγος, σφόδρα βαθέα. τῶν γὰρ ποταμῶν πλείστων, καὶ μεγίστων ῥεόντων ἀπὸ τῆς ἄρκτου, καὶ τῆς ἀνατολῆς, ἐκεῖνα μὲν ἰλύος πληροῦσθαι. τὰ ἄλλα δὲ, μένειν βαθέα. διὸ καὶ γλυκυτάτην εἶναι τὴν ποντικὴν θάλατταν. τάς τ' ἐκρύσεις γίνεσθαι εἰς οὓς τόπους ἐγκέκλιται τὰ ἐδάφη. δοκεῖ δὲ κἂν χωσθῆναι τὸν πόντον ὅλον εἰς ὕστερον, ἂν μένωσιν αἱ ἐπιρρύσεις τοιαῦται. καὶ γὰρ νῦν ἤδη τεναγίζειν τὰ ἐν ἀριστερᾷ τοῦ πόντου. τήν τε σαλμυδησσὸν, καὶ τὰ καλούμενα στήθη ὑπὸ τῶν ναυτικῶν τὰ περὶ τὸν ἴστρον, καὶ τὴν σκυθῶν ἐρημίαν. τάχα δὴ καὶ τὸ τοῦ ἄμμωνος ἱερὸν πρότερον ἐπὶ τῆς θαλάττης ὄν, ἐκρύσεως γενομένης νῦν ἐν τῇ μεσογαίᾳ κεῖσθαι. εἰκάζει τε, καὶ τὸ μαντεῖον εὐλόγως ἐπὶ τοσοῦτον γενέσθαι ἐπιφανές τε, καὶ γνώριμον ἐπὶ θαλάττῃ ὄν. τόν τε ἐπὶ πολὺ οὕτως ἐκτοπισμὸν ἀπὸ τῆς θαλάττης, οὐκ εὔλογον ποιεῖν τὴν νῦν οὖσαν ἐπιφάνειαν, καὶ δόξαν. τήν τε αἴγυπτον τὸ παλαιὸν θαλάττῃ κλύζεσθαι, μέχρι τῶν ἑλῶν, τῶν περὶ τὸ πηλούσιον, καὶ τὸ κάσιον ὄρος, καὶ τὴν σερβωνίδα λίμνην. ἔτι γοῦν καὶ νῦν κατὰ τὴν αἴγυπτον τῆς ἁλμυρίδος ὀρυττομένης, ὑφάμμους, καὶ κογχυλιώδεις εὑρίσκεσθαι τοὺς βόθρους ὡς ἂν τεθαλαττωμένης τῆς χώρας καὶ τοῦ τόπου παντὸς τοῦ περὶ τὸ κάσιον, καὶ τὰ γέρρα καλούμενα, τεναγίζοντος, ὥστε συνάπτειν τῷ τῆς ἐρυθρᾶς κόλπῳ. ἐνδούσης δὲ τῆς θαλάττης ἀνακαλυφθῆναι. μεῖναι δὲ τὴν σερβωνίδα λίμνην. εἶτ' ἐκραγῆναι, καὶ ταύτην, ὥστε ἑλώδη γενέσθαι. ὡς δ' αὔτως καὶ τῆς ἁλμυρίδος λίμνης τοὺς αἰγιαλοὺς, θαλάττης μᾶλλον ἢ ποταμοῦ προσεοικέναι.

Τὸ μὲν οὖν ἐπικλύζεσθαί ποτε, πολὺ μέρος τῶν ἠπείρων ἐπὶ καιρούς τινας καὶ πάλιν ἀνακαλύπτεσθαι, δοίη τις ἄν. ὡς δ' αὔτως καὶ τὸ τοῖς ἐδάφεσιν ἀνώμαλον εἶναι τὴν γῆν ἅπασαν, τὴν νῦν ὕφαλον. καθάπερ γε, νὴ δία καὶ τὴν ἔξαλον, ἐν ᾗ οἰκοῦμεν, τοσαύτας δεχομένην, ὅσας αὐτὸς ἐρατοσθένης εἴρηκε μεταβολάς. ὥστε πρός γε τὸν ξάνθου λόγον, οὐδὲν ἂν ἔχοι τις προσφέρειν ἄτοπον.

Πρὸς δὲ τὸν στράτωνα λέγοι τις ἄν, ὅτι πολλῶν αἰτίων ὄντων, ἀφεὶς ταῦτα τὰ μὴ ὄντα αἰτιᾶται. πρώτην γὰρ αἰτίαν φησὶν ὅτι τῆς ἐντὸς θαλάττης, καὶ τῆς ἐκτὸς οὐ ταὐτὸ τὸ ἔδαφος, καὶ ὁ βυθὸς. πρὸς γὰρ τὸ μετεωρίζεσθαι ταύτην, καὶ ταπεινοῦσθαι, καὶ ἐπικλύζειν τόπους τινὰς, καὶ ἀναχωρεῖν ἀπ' αὐτῶν, οὐ τοῦτ' ἐστὶν αἴτιον. ἀλλὰ καὶ ἄλλα ἐδάφη, τὰ μὲν ταπεινότερα εἶναι. τὰ δὲ, ὑψηλότερα. ἀλλὰ τὸ τὰ αὐτὰ ἐδάφη ποτὲ μὲν μετεωρίζεσθαι. ποτὲ δ' αὖ ταπεινοῦσθαι. καὶ συνεξαίρειν, ἢ συνενδιδόναι τὸ πέλαγος. ἐξαρθὲν μὲν γὰρ ἐπικλύσαι ἄν. ταπεινωθὲν δὲ, ἀναδράμοι ἂν εἰς τὴν ἀρχαίαν κατάστασιν. εἰ γὰρ οὕτω, δεήσει καὶ πλεονασμῷ τῆς θαλάττης αἰφνιδίῳ γενομένῳ τὴν ἐπίκλυσιν συμβαίνειν. καθάπερ ἐν ταῖς πλημμυρίσιν, ἢ ταῖς ἀναβάσεσι τῶν ποταμῶν. τοτὲ μὲν ἐπενεχθέντος ἑτέρωθεν, τοτὲ δ' αὐξηθέντος τοῦ ὕδατος. ἀλλ' οὔθ' αἱ αὐξήσεις ἀθρόαι, καὶ αἰφνίδιοι γίνονται, οὔθ' αἱ πλημμυρίδες τοσοῦτον

ἐπιμένουσι χρόνον· οὐδ' ἄτακτοί εἰσιν· οὔτε κατὰ τὴν ἑτέραν ἐπικλύζουσι θάλατταν· οὐδ' ὅπου ἔτυχε. λοιπὸν οὖν αἰτιᾶσθαι τὸ ἔδαφος, ἢ τὸ τῇ θαλάττῃ ὑποκείμενον, ἢ τὸ ἐπικλυζόμενον· μᾶλλον δὲ τὸ ὕφαλον· πολὺ γάρ τι εὐκινητότερον, καὶ μεταβολὰς θᾶττον δέξασθαι δυνάμενον τὸ ἔνυγρον· καὶ γάρ τὸ πνευματικὸν τὸ πάντων αἴτιον τῶν τοιούτων πλέον ἐνταῦθα. ἀλλ' ὡς ἔφην, τῶν τοιούτων ἀπεργαστικόν ἐστι παθῶν, τὸ αὐτὰ τὰ ἐδάφη ποτὲ μὲν ἐξαίρεσθαι, ποτὲ δὲ ὑφίζησιν λαμβάνειν· οὕτω τὰ μὲν, μᾶλλον εἶναι ὑψηλά, τὰ δέ, ἧττον. ὁ δέ, τοῦτο λαμβάνει· νομίζων ὅπερ ἐπὶ τῶν ποταμῶν συμβαίνει, τοῦτο καὶ ἐπὶ τῆς θαλάττης ἀπαντᾶν, τὸ ἀπὸ τῶν μετεώρων τόπων εἶναι τὴν ῥύσιν. οὐ δὲ γὰρ ἂν τοῦ κατὰ Βυζάντιον ῥοῦ τὸ ἔδαφος ᾐτιᾶτο λέγων· ὑψηλότερον τὸ τοῦ Εὐξείνου, ἢ τὸ τῆς Προποντίδος, καὶ τοῦ ἑξῆς πελάγους, ἅμα καὶ αἰτίαν προστιθείς· ἀπὸ γὰρ τῆς ἰλύος τῆς ἀπὸ τῶν ποταμῶν καταφερομένης πληροῦσθαι τὸν βυθόν, καὶ βραχὺν γίνεσθαι· διὰ τοῦτο δὲ ῥεῖν καὶ εἰς τὰ ἐκτός· τὸν δ' αὐτὸν λόγον καὶ ἐπὶ τὴν ἡμετέραν θάλασσαν σύμπασαν μεταφέρει πρὸς τὴν ἐκτός· ὡς καὶ ταύτης μετεωρότερον τοὔδαφος ποιούσης τοῦ ὑποκειμένου τῷ Ἀτλαντικῷ πελάγει· καὶ γὰρ αὕτη ἐκ πολλῶν ποταμῶν πληροῦται· καὶ τὴν ὑπόστασιν τῆς ἰλύος, δέχεται τὴν ἀνάλογον. ἐχρῆν οὖν καὶ τὸν εἴσρουν ὅμοιον γίνεσθαι τῷ κατὰ Βυζάντιον τὸν κατὰ Στήλας, καὶ τὴν Κάλπην. ἀλλὰ τοῦτο μὲν ἐῶμεν· φήσουσι γὰρ κἀκεῖ τοῦτο συμβαίνειν· περισπᾶσθαι δὲ ὑπὸ τῶν ἀμπώτεων, καὶ τῶν πλημμυρίδων, καὶ ἐπικρύπτεσθαι. ἐκεῖνο δὲ πυνθάνομαι τί ἐκώλυε, πρὶν ἀνεῳγέναι τὸ στόμα τὸ κατὰ Βυζάντιον, ταπεινότερον ὂν τὸ τοῦ Εὐξείνου ἔδαφος τοῦ τῆς Προποντίδος καὶ τῆς ἑξῆς θαλάττης πληρωθῆναι ὑπὸ τῶν ποταμῶν εἴτε θαλάττας οὔσας καὶ πρότερον, εἴτε λίμνην καὶ μείζω τῆς Μαιώτιδος. εἰ γὰρ τοῦτο συγχωροῖτο προσερήσομαι καὶ τοῦτο. ἆρά γε ἡ ἐπιφάνεια τοῦ ὕδατος ἐκείνου καὶ τῆς Προποντίδος οὐχ οὕτως εἶχεν, ὥστε μέχρι μὲν ἡ αὐτὴ ἦν, μὴ βιάζεσθαι πρὸς τὴν ἔκρυσιν διὰ τὴν ἐξίσωσιν τῆς ἀντερείσεως καὶ θλίψεως, ἐπειδὴ δὲ ὑπερεπόλασεν ἡ ἐντός, βιάσασθαι καὶ ἀπεράσαι τὸ πλεονάζον, ἐκ δὲ τούτου γενέσθαι σύρρουν τὸ ἔξω πέλαγος τῷ ἐντός· καὶ τὴν αὐτὴν ἐπιφάνειαν ἐκείνῳ λαβεῖν εἴτε θαλαττίῳ· εἴτε λιμναίῳ μὲν πρότερον ὄντι. θαλαττίῳ δὲ ὕστερον, διὰ τὴν μίξιν, καὶ τὴν ἐπικράτειαν. εἰ γὰρ καὶ τοῦτο δώσουσιν, ἡ μὲν ἔκρυσις οὐκ ἂν κωλύοιτο, ἡ νῦν. οὐκ ἀπὸ ὑπερτέρου δὲ ἐδάφους· οὐδὲ ἐπικλινοῦς, ὅπερ ἠξίου Στράτων. ταῦτα δὲ μεταφέρειν καὶ ἐπὶ τὴν ὅλην, τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, καὶ τὴν ἐκτός, μὴ ἐν τοῖς ἐδάφεσι, καὶ ταῖς ἐπικλίσεσιν αὐτῶν τὴν αἰτίαν τοῦ ἔκρου τιθεμένους, ἀλλ' ἐν τοῖς ποταμοῖς. ἐπεὶ οὐκ ἀπίθανον κατ' αὐτούς. οὐδ' εἰ τὴν ὅλην θάλατταν, τὴν ἡμετέραν λίμνην πρότερον εἶναι συνέβαινε πληρουμένην ὑπὸ τῶν ποταμῶν, ἐπιπολάσασαν ἐκπεσεῖν ἔξω, διὰ τῶν κατὰ τὰς Στήλας στενῶν, ὡς ἐκ καταράκτου· ἐπαυξομένην δ' ἀεί· καὶ μᾶλλον τὴν θάλατταν σύρρουν γενέσθαι ὑπ' αὐτῆς τῷ χρόνῳ· καὶ συνδραμεῖν εἰς μίαν ἐπιφάνειαν· ἐκθαλαττωθῆναι δὲ διὰ τὴν ἐπικράτειαν· οὐ φυσικὸν δ' ὅλως, οὔτε τοῖς ποταμοῖς εἰκάζειν τὴν θάλατταν· οἱ μὲν γὰρ φέρονται κατὰ ἐπικλινὲς ῥεῖθρον· ἡ δέ, ἀκλινὴς ἕστηκεν· οἱ δὲ πορθμοὶ ῥευματίζονται κατ' ἄλλον τρόπον· οὐ διὰ τὸ τὴν ἰλύν, τὴν ἐκ τῶν ποταμῶν προσχοῦν τὸν τοῦ πελάγους βυθόν· ἡ γὰρ πρόσχωσις περὶ αὐτὰ συνίσταται τὰ στόματα τῶν ποταμῶν· οἷον περὶ μὲν τὰ τοῦ Ἴστρου, τὰ λεγόμενα Στήθη, καὶ ἡ Σκυθῶν ἐρημία· καὶ ὁ Σαλμυδησσός· καὶ ἄλλων χειμάρρων συνεργούντων πρὸς τοῦτο· περὶ δὲ τὰ τοῦ Φάσιδος ἡ Κολχικὴ παραλία· δίαμμος, καὶ ταπεινή, καὶ μαλακὴ οὖσα· περὶ δὲ τὸν Θερμώδοντα, καὶ τὸν Ἶριν ὅλη Θεμίσκυρα· τὸ τῶν Ἀμαζόνων πεδίον, καὶ τῆς Σιδήνης τὸ πλέον· οὕτω δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων· ἅπαντες γὰρ μιμοῦνται τὸν Νεῖλον· ἐξηπειροῦντες τὸν πρὸ αὐτῶν πόρον· οἱ μὲν μᾶλλον· οἱ δέ, ἧττον· ἧττον μέν, οἱ μὴ πολλὴν καταφέροντες τὴν ἰλύν· μᾶλλον δέ, οἱ πολλήν τε, καὶ μαλακόγειον χώραν ἐπιόντες· καὶ χειμάρρους δεχόμενοι πολλούς· ὧν ἐστι καὶ ὁ Πύραμος· ὁ τῇ Κιλικίᾳ πολὺ μέρος προσθείς· ἐφ' οὗ καὶ λόγιον ἐκπέπτωκέ τι τοιοῦτον.

» Ἔσεται ἐσσομένοις ὅτε Πύραμος εὐρυοδίνης Ἠϊόνα προχέων ἱερὴν ἐς Κύπρον ἵκηται.

Ἐκ μέσων γὰρ τῶν τῆς Καταονίας πεδίων ἐνεχθεὶς πλωτός· καὶ διεκπαίσας διὰ τῶν τοῦ Ταύρου στενῶν, εἰς τὴν Κιλικίαν ἐκδίδωσιν· εἰς τὸν πρὸ ταύτης τε, καὶ τῆς Κύπρου πόρον. αἴτιον δὲ τοῦ μὴ φθάνειν τὴν χοῦν εἰς τὸ πέλαγος προϊοῦσαν τὴν ὑπὸ τῶν ποταμῶν καταφερομένην, τὸ τὴν θάλατταν ἀνακόπτειν αὐτὴν εἰς τοὐπίσω παλιρροοῦσαν φύσει. ἔοικε γὰρ τοῖς ζῴοις· καὶ καθάπερ ἐκεῖνα συνεχῶς ἀναπνεῖ τε καὶ ἐκπνεῖ τὸν αὐτὸν τρόπον, καὶ αὐτὴ ἐξ αὑτῆς τε καὶ εἰς ἑαυτὴν συνεχῶς παλινδρομικήν τινα κινουμένη κίνησιν. δηλοῖ δὲ τῷ ἐπὶ τοῦ αἰγιαλοῦ ἑστῶτι κατὰ τὴν κυμάτωσιν· ἅμα γὰρ κλύζονται οἱ πόδες καὶ γυμνοῦνται, καὶ πάλιν κλύζονται· καὶ τοῦτο συνεχῶς· τῷ δὲ κλύδωνι, καὶ κῦμα ἐπιτρέχει, κἂν γαληνότατον ἦ ἐπιφερόμενον ἔχει τινὰ βίαν πλείω· καὶ ἀπορρίπτει πᾶν τὸ ἀλλότριον εἰς τὴν γῆν.

» — Πολλὸν δὲ παρὲξ ἅλα φῦκος ἔχευε.

Μᾶλλον μὲν οὖν ἐν ἀνέμῳ συμβαίνει τοῦτο. ἀλλὰ καὶ ἐν νηνεμίᾳ, καὶ ἐν ἀπογαίοις πνεύμασιν· οὐδὲ γὰρ ἧττον ἐπὶ γῆν φέρεται τὸ κῦμα ὑπεναντίως τῷ ἀνέμῳ· ὡς ἂν ἰδίαν τινὰ τῆς θαλάττης τὴν κίνησιν συγκινούμενον αὐτῇ· τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ

» — Ἀμφὶ δέ τ' ἄκρας Κυρτὸν ἐὸν κορυφοῦται· ἀποπτύει δ' ἁλὸς ἄχνην. Καὶ τὸ

» Ἠϊόνες βοόωσιν ἐρευγομένης ἁλὸς ἔξω.

ἡ μὲν οὖν ἔφοδος τοῦ κύματος ἔχει τινὰ βίαν, ὥστ᾽ ἀπωθεῖσθαι τὸ ἀλλότριον. καὶ δὴ καὶ κάθαρσίν τινα τῆς θαλάττης ταύτην φασί. καθ᾽ ἣν καὶ τὰ νεκρὰ σώματα, καὶ τὰ ναυάγια εἰς γῆν ἐκκυμαίνεται. ἡ δ᾽ ἀναχώρησις οὐκ ἔχει τοσαύτην βίαν, ὥστε νεκρὸν, ἢ ξύλον, ἢ τὸ κουφότατον φελλὸν ὑπὸ τοῦ κύματος εἰς γῆν ἀποβληθῆναι. οὕτω δὲ καὶ τῶν πλησίον αὐτῇ τόπων εἰς τὸ πέλαγος προώσει. ὑπὸ ἀφεθέντων ὑπὸ τοῦ κύματος. οὕτω δὴ καὶ τὴν χοῦν, καὶ τὸ σὺν αὐτῇ τεθολωμένον ὕδωρ ἐκκυμαίνεσθαι συμβαίνει. καὶ τοῦ βάρους ἅμα συνεργοῦντος, ὥστε θᾶττον κατενεχθῆναι πρὸς τὴν γῆν κάτω, πρὶν εἰς τὸ πρόσω πλαγίσαι. καὶ γὰρ ἡ τοῦ ποταμοῦ βία παύεται, μικρὸν προελθοῦσα τοῦ στόματος. οὕτω μὲν οὖν ἐνδέχεται προσχωσθῆναι τὸ πέλαγος πᾶν, ἀπὸ τῶν αἰγιαλῶν ἀρξάμενον, ἂν συνεχεῖς ἔχῃ τὰς ἐκ τῶν ποταμῶν ἐπιρρύσεις. τοῦτο δ᾽ ἂν συμβαίη κἂν τοῦ σαρδονίου πελάγους ὑποθώμεθα βαθύτερον τὸν πόντον. ὅπερ λέγεται τῶν ἀναμετρηθέντων βαθύτατον που χιλίων ὀργυιῶν, ὡς ποσειδώνιός φησι. τὴν μὲν οὖν τοιαύτην αἰτιολογίαν ἧττον ἄν τις ἀποδέξαιτο. μᾶλλον δ᾽ ἀπὸ τῶν φανερωτέρων καὶ τῶν καθ᾽ ἡμέραν τρόπον τινὰ ὁρωμένων, ἀναπτέον τὸν λόγον. καὶ γὰρ κατακλυσμοὶ καὶ σεισμοὶ, καὶ ἀναφυσήματα, καὶ ἀνοιδήσεις τῆς ὑφάλου γῆς, μετεωρίζουσι καὶ τὴν θάλατταν. αἱ δὲ συνιζήσεις ταπεινοῦσιν αὐτήν. οὐ γὰρ μύδροι μὲν ἀνενεχθῆναι δύνανται, καὶ μικραὶ νῆσοι, μεγάλαι δ᾽ οὔ. οὐδὲ νῆσοι μέν, ἤπειροι δ᾽ οὔ. ὁμοίως δὲ καὶ συνιζήσεις, καὶ μικραὶ, καὶ μεγάλαι γένοιντ᾽ ἄν. εἴπερ καὶ τὰ χάσματα, καὶ καταπόσεις χωρίων, καὶ κατοικιῶν. ὡς ἐπὶ βούρας τε, καὶ βιζώνης. καὶ ἄλλων πλειόνων ὑπὸ σεισμῶν γενέσθαι φασί. καὶ τὴν σικελίαν οὐδέν τι μᾶλλον ἀπόρρωγα τῆς ἰταλίας εἰκάζοι τις ἄν. ἢ ἀναβληθεῖσαν ὑπὸ τοῦ αἰτναίου πυρὸς ἐκ βυθοῦ συμμεῖναι. ὡσαύτως δὲ καὶ τὰς λιπαραίων νήσους, καὶ πιθηκούσας. ὁ δ᾽ οὕτως ἡδύς ἐστιν, ὥστε καὶ μὴ μαθηματικὸς ὢν, οὐδὲ τὴν ἀρχιμήδους βεβαιοῖ δόξαν. ὅτι φησὶν ἐκεῖνος ἐν τοῖς περὶ τῶν ὀχουμένων παντὸς ὑγροῦ καθεστηκότος, καὶ μένοντος, τὴν ἐπιφάνειαν σφαιρικὴν εἶναι. σφαίρας ταυτὸ κέντρον ἐχούσης τῇ γῇ. ταύτην γὰρ τὴν δόξαν ἀποδέχονται πάντες οἱ μαθημάτων πως ἁψάμενοι, ἐκεῖνος δὲ τὴν ἐντὸς θάλατταν καίπερ μίαν οὖσαν ὥς φησιν, οὐ νομίζει ὑπὸ μίαν ἐπιφάνειαν τετάχθαι. ἀλλ᾽ οὐδὲ τοῖς συνεγγὺς τόποις. καὶ μάρτυράς γε τῆς τοιαύτης ἀμαθίας ἀρχιτέκτονας ἄνδρας ποιεῖται. καίτοι τῶν μαθηματικῶν, καὶ τὴν ἀρχιτεκτονικὴν μέρος τῆς μαθηματικῆς ἀποφηναμένων. φησὶ γὰρ καὶ δημήτριον διακόπτειν ἐπιχειρῆσαι τὸν τῶν πελοποννησίων ἰσθμὸν, πρὸς τὸ παρασχεῖν διάπλουν τοῖς στόλοις. κωλυθῆναι δ᾽ ὑπὸ τῶν ἀρχιτεκτόνων ἀναμετρησάντων, καὶ ἀπαγγειλάντων μετεωροτέραν τὴν ἐν τῷ κορινθιακῷ κόλπῳ θάλατταν τῆς κατὰ κεγχρίας εἶναι. ὥστε εἰ διακόψει τὸ μεταξὺ χωρίον, ἐπικλυσθῆναι ἂν ἅπαντα τὸν περὶ αἴγιναν πόρον, καὶ τὴν αἴγιναν, καὶ αὐτὰς τὰς πλησίον νήσους. καὶ μηδὲ τὸν διάπλουν ἂν γενέσθαι χρήσιμον. διὰ δὲ τοῦτο καὶ τοὺς εὐρίπους ῥοώδεις εἶναι. μάλιστα δὲ τὸν κατὰ σικελίαν πορθμόν. ὅν φησιν ὁμοιοπαθεῖν ταῖς κατὰ τὸν ὠκεανὸν πλημμυρίσι τε, καὶ ἀμπώτεσι. δὶς γὰρ μεταβάλλειν τὸν ῥοῦν ἑκάστης ἡμέρας, καὶ νυκτός. καθάπερ τὸν ὠκεανόν. δὶς μὲν πλημμυρεῖν, δὶς δὲ ἀναχωρεῖν. τὴν μὲν οὖν πλημμυρίδα δεῖ ὁμολογεῖν τὴν ἐκ τοῦ τυρρηνικοῦ πελάγους εἰς τὸ σικελικὸν καταφερομένην. ὡς ἂν ἐκ μετεωροτέρας ἐπιφανείας. ὃν δὴ καὶ κατιόντα ὀνομάζεσθαι. ὁμολογεῖν δ᾽ ὅτι, καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν καιρὸν ἄρχεταί τε, καὶ παύεται καθ᾽ ὃν αἱ πλημμυρίδες. ἄρχεται μὲν γὰρ περὶ τὴν ἀνατολὴν τῆς σελήνης, καὶ τὴν δύσιν. λήγει δ᾽ ὅταν συνάπτῃ τῇ μεσουρανήσει ἑκατέρᾳ. τῇ τε ὑπὲρ γῆς, καὶ τῇ ὑπὸ γῆν. τῇ τε ἀμπώτει τὸν ἐναντίον ἐξιόντα καλεῖσθαι. ταῖς μεσουρανήσεσι τῆς σελήνης ἀμφοτέραις ἐναρχόμενον, καθάπερ αἱ ἀμπώτεις. ταῖς δὲ συνάψεσι, ταῖς πρὸς τὰς ἀνατολὰς καὶ δύσεις παυόμενον.

Περὶ μὲν οὖν τῶν πλημμυρίδων, καὶ τῶν ἀμπώτεων, εἰρήκασιν ἱκανῶς ποσειδώνιός τε, καὶ ἀθηνόδωρος. περὶ δὲ τῆς τῶν πορθμῶν παλιρροίας ἐχόντων, καὶ αὐτῶν φυσικώτερον λόγον κατὰ τὴν ὑπόθεσιν, τοσοῦτον εἰπεῖν ἀπόχρη. ὅτι οὐδὲ εἷς τρόπος τοῦ ῥοώδεις εἶναι τοὺς πορθμοὺς, ὅ γε κατ᾽ εἶδος. οὐ γὰρ ἂν ὁ μὲν σικελικὸς δὶς ἑκάστης ἡμέρας μετέβαλλεν, ὡς οὗτός φησιν. ὁ δὲ χαλκιδικὸς ἑπτάκις. ὁ δὲ κατὰ βυζάντιον οὐδὲ μετέβαλλεν. ἀλλ᾽ ἢ διετέλει τὸν ἔκρουν ἔχων μόνον, τὸν ἐκ τοῦ ποντικοῦ πελάγους εἰς τὴν προποντίδα. ὡς δὲ ἵππαρχος ἱστορεῖ καὶ μονάς ποτε ἐποιεῖτο. οὔτ᾽ εἰ τρόπον εἷς εἴη, ταύτην ἂν ἔχοι τὴν αἰτίαν ἥν φησιν ὁ ἐρατοσθένης. ὅτι ἡ ἐφ᾽ ἑκάτερα θάλαττα ἄλλην καὶ ἄλλην ἐπιφάνειαν ἔχει. οὐδὲ γὰρ ἐπὶ τῶν ποταμῶν τοῦτο γένοιτ᾽ ἄν, εἰ μὴ καταρράκτας ἔχοιεν. ἔχοντες δὲ οὐ παλιρροοῦσιν. ἀλλ᾽ ἐπὶ τὸ ταπεινότερον ἀεὶ φέρονται. καὶ τοῦτο δὲ συμβαίνει διὰ τὸ κεκλιμένον εἶναι τὸ ῥεῦμα, καὶ τὴν ἐπιφάνειαν αὐτοῦ. πελάγους δὲ τίς ἂν φαίη κεκλιμένην ἐπιφάνειαν. καὶ μάλιστα κατὰ τὰς σφαιροποιούσας ὑποθέσεις τὰ τέτταρα σώματα. ἃ δὴ καὶ στοιχεῖα φαμέν. ὥστ᾽ οὐχ ὅτι παλιρροοῦντας, ἀλλ᾽ οὐδὲ καθεστῶτας, καὶ μένοντας, συρροίας μὲν ἐν αὐτοῖς οὔσης, μὴ μιᾶς δὲ ἐπιφανείας. ἀλλὰ τῆς μὲν, ὑψηλοτέρας. τῆς δὲ, ταπεινοτέρας. οὐ γὰρ ὥσπερ ἡ γῆ κατὰ ἕξιν ἐσχημάτισται στερεὰ οὖσα, ὥστε καὶ κοιλάδας ἔχειν συμμενούσας, καὶ ἀναστήματα, οὕτω καὶ τὸ ὕδωρ. ἀλλ᾽ αὐτῇ τῇ κατὰ τὸ βάρος ῥοπῇ τὴν ὄχησιν ἐπὶ τῆς γῆς ποιεῖται. καὶ τοιαύτην λαμβάνει τὴν ἐπιφάνειαν οἵαν ὁ ἀρχιμήδης φησίν. ἐπιφέρει δὲ τοῖς περὶ τοῦ ἄμμωνος, καὶ τῆς αἰγύπτου ῥηθεῖσιν, ὅτι δοκοίη καὶ τὸ κάσιον ὄρος περικλύζεσθαι θαλάττῃ. καὶ πάντα τόπον ὅπου νῦν τὰ καλούμενα γέρρα καθ᾽ ἕκαστα

τε τεναγίζειν συνάπτοντα τῷ τῆς ἐρυθρᾶς κόλπῳ. συνελθούσης δὲ τῆς θαλάσσης ἀποκαλυφθῆναι.
τὸ δὴ τεναγίζειν τὸν λεχθέντα τόπον συνάπτοντα τῷ τῆς ἐρυθρᾶς κόλπῳ, ἀμφίβολόν ἐστιν. ἐπειδὴ τὸ
συνάπτειν, σημαίνει καὶ τὸ σύνεγγυς, καὶ τὸ ψαύειν. ὥστε εἰ ὕδατα εἴη, σύρρουν εἶναι θάτερον θατέ-
ρῳ. ἐγὼ μὲν οὖν δέχομαι καὶ τὸ συνεγγίζειν τὰ τενάγη τῇ ἐρυθρᾷ θαλάττῃ, ἕως ἔτι ἐκέκλειστο τὰ κα-
τὰ τὰς στήλας στενά. ἐκραγέντων δὲ, τὴν ἀναχώρησιν γενέσθαι ταπεινωθείσης τῆς ἡμετέρας θαλάττης,
διὰ τὴν κατὰ τὰς στήλας ἔκρυσιν. ἵππαρχος δὲ ἐκδεξάμενος τὸ συνάπτειν ταυτὸν τῷ σύρρουν γε-
νέσθαι τὴν ἡμετέραν θάλατταν τῇ ἐρυθρᾷ διὰ τὴν πλήρωσιν, αἰτιᾶται τί δή ποτε οὐχὶ τῇ κατὰ τὰς
στήλας ἐκρύσει, μεθισταμένη ἐκεῖσε ἡ καθ' ἡμᾶς θάλαττα, συμμεθίστα καὶ τὴν σύρρουν αὐτῇ γενομέ-
νην τὴν ἐρυθράν. ἀλλ' ἐν τῇ αὐτῇ διέμενεν ἐπιφανείᾳ, μὴ ταπεινουμένη. καὶ γὰρ κατ' αὐτὸν ἐρατοσθέ-
νη τὴν ἐκτὸς θάλατταν ἅπασαν σύρρουν εἶναι, ὥστε καὶ τὴν ἑσπέριον καὶ τὴν ἐρυθρὰν μίαν θάλατ-
ταν εἶναι. τοῦτο δ' εἰπὼν ἐπιφέρει τὸ ἀκόλουθον τὸ, τὸ αὐτὸ ὕψος ἔχειν τήν τε ἔξω στηλῶν θάλατταν,
καὶ τὴν ἐρυθράν. καὶ ἔτι τὴν ταύτῃ γεγονυῖαν σύρρουν. ἀλλ' οὔτ' εἰρηκέναι τοῦτό φησιν ἐρατοσθένης τὸ
σύρρουν γεγονέναι κατὰ τὴν πλήρωσιν τῇ ἐρυθρᾷ, ἀλλὰ συνεγγίσαι μόνον, οὔτ' ἀκολουθεῖν τῇ μιᾷ,
καὶ συνεχεῖ θαλάττῃ τὸ αὐτὸ ὕψος ἔχειν, καὶ τὴν αὐτὴν ἐπιφάνειαν. ὥσπερ οὐδὲ τὴν καθ' ἡμᾶς, καὶ τὴν
διὰ τὴν κατὰ τὸ λέχαιον, καὶ τὴν περὶ κεγχρεάς. ὅπερ καὶ αὐτὸς ὁ ἵππαρχος ἐπισημαίνεται ἐν
τῷ πρὸς αὐτὸν λόγῳ. εἰδὼς οὖν τὴν δόξαν αὐτοῦ τοιαύτην ἰδίᾳ τι πρὸς αὐτὸν λεγέτω, καὶ μὴ ἐξ ἑτοί-
μου λαμβανέτω, ὡς ἄρα ὁ φήσας μίαν εἶναι τὴν ἔξω θάλατταν σύμφησι καὶ ὅτι μία ἐστὶν αὐτῆς, ἡ ἐπι-
φάνεια. ψευδῆ δ' εἶναι φήσας τὴν ἐπὶ τοῖς δελφῖσιν ἐπιγραφὴν κυρηναίων θεωρῶν, αἰτίαν ἀποδίδω-
σιν οὐ πιθανήν. ὅτι ἡ μὲν τῆς κυρήνης κτίσις ἐν χρόνοις φέρεται μνημονευομένοις. τὸ δὲ μαντεῖον, οὐ-
δεὶς μέμνηται ἐπὶ θαλάττῃ ποτὲ ὑπάρξαν. Τί γὰρ εἰ μηδεὶς μὲν ἱστορεῖ, ἐκ δὲ τῶν τεκμηρίων,
ἐξ ὧν εἰκάζομεν παράλιόν ποτε τὸν τόπον γενέσθαι, οἵ τε δελφῖνες ἀνετέθησαν, καὶ ἡ ἐπιγραφὴ ἐ-
γένετο, ὑπὸ κυρηναίων θεωρῶν. συγχωρήσας δὲ τῷ μετεωρισμῷ τοῦ ἐδάφους, συμμετεωρισθεῖσαν
καὶ τὴν θάλασσαν ἐπικλύσαι. τὸν μέχρι τοῦ μαντείου τόπον, πλέον ἢ ἀπὸ θαλάττης διέχοντα τῶν τρισ-
χιλίων σταδίων, οὐ συγχωρεῖ τὸν μέχρι τοσούτου μετεωρισμὸν, ὥστε καὶ τὴν φάρον ὅλην καλυφθῆ-
ναι, καὶ τὰ πολλὰ τῆς αἰγύπτου. ὥσπερ οὐχ ἱκανοῦ ὄντος τοῦ τοσούτου ὕψους, καὶ ταῦτα ἐπικλύ-
σαι. φήσας δὲ εἴπερ πεπλήρωτο ἐπὶ τοσοῦτον ἡ καθ' ἡμᾶς θάλαττα πρὶν τὸ ἔκρηγμα, τὸ κατὰ τὰς
στήλας γενέσθαι ἐφ' ὅσον εἴρηκεν ὁ ἐρατοσθένης, χρῆναι καὶ τὴν λιβύην πᾶσαν, καὶ τὰ πολλὰ τῆς εὐ-
ρώπης, καὶ τῆς ἀσίας κεκαλύφθαι πρότερον, τούτοις ἐπιφέρει. διότι καὶ ὁ πόντος τῷ ἀδρίᾳ, σύρ-
ρους ἂν ὑπῆρξε κατά τινας τόπους. ἅτε δὴ τοῦ ἴστρου ἀπὸ τῶν κατὰ τὸν πόντον σχιζομένου, καὶ ῥέον-
τος εἰς ἑκατέραν τὴν θάλατταν, διὰ τὴν θέσιν τῆς χώρας. Ἀλλ' οὔτ' ἀπὸ τῶν κατὰ τὸν πόντον
μερῶν ὁ ἴστρος τὰς ἀρχὰς ἔχει ἀλλὰ τἀναντία, ἀπὸ τῶν ὑπὲρ τοῦ ἀδρίου ὀρῶν. οὔτ' εἰς ἑκατέραν τὴν
θάλατταν ῥεῖ, ἀλλ' εἰς τὸν πόντον μόνον σχίζεταί τε πρὸς αὐτοῖς μόνον, τοῖς στόμασι. κοινὴν δέ τινα τῶν πρὸ
αὐτοῦ τισὶν ἄγνοιαν ταύτην ἠγνόηκεν, ὑπολαβοῦσιν εἶναί τινα ὁμώνυμον τῷ ἴστρῳ ποταμὸν, ἐκβάλ-
λοντα εἰς τὸν ἀδρίαν ἀπεσχισμένον αὐτοῦ. ἀφ' οὗ καὶ τὸ γένος ἴστρον, δι' οὗ φέρεται, λαβεῖν τὴν προ-
σηγορίαν. καὶ τὸν ἰάσονα ταύτῃ ποιήσασθαι τὸν ἐκ τῶν κόλχων ἀνάπλουν. πρὸς δὲ τὴν ἀθαυμαστίαν
τῶν τοιούτων μεταβολῶν οἵας ἔφαμεν αἰτίας εἶναι τῶν ἐπικλύσεων, καὶ τῶν τοιούτων παθῶν οἷα
εἴρηται, τὰ κατὰ τὴν σικελίαν, καὶ τὰς αἰόλου νήσους, καὶ τὰς πιθηκούσας, ἄξιον παραθεῖναι, καὶ
ἄλλα πλείω τῶν ἐν ἑτέροις τόποις ὄντων, ἢ γενομένων ὁμοίων τούτοις. ἀθρόα γὰρ τὰ τοιαῦτα παρα-
δείγματα πρὸ ὀφθαλμῶν τεθέντα, παύσει τὴν ἔκπληξιν νῦν. εἰ δὲ τὸ ἀληθὲς ταράττει τὴν αἴσθη-
σιν, καὶ δείκνυσιν ἀπειρίαν τῶν φύσει συμβαινόντων, καὶ τοῦ βίου παντὸς, οἷον εἴ τις λέγοι τὰς περὶ
θήραν καὶ θηρασίαν νήσους ἱδρυμένας ἐν τῷ μεταξὺ πόρῳ κρήτης, καὶ κυρηναίας, ὧν ἡ θήρα μητρό-
πολίς ἐστι τῆς κυρήνης. καὶ τὴν αἴγυπτον, καὶ πολλὰ μέρη τῆς ἑλλάδος τοιαῦτα. ἀνὰ μέσον γὰρ θή-
ρας, καὶ θηρασίας ἐκπεσοῦσαι φλόγες ἐκ τοῦ πελάγους, ἐφ' ἡμέρας τέσσαρας, ὥστε πᾶσαν ζεῖν,
καὶ φλέγεσθαι τὴν θάλασσαν, ἀνεφύσησαν κατ' ὀλίγον ἐξαιρουμένην, ὡς ἂν ὀργανικῶς, καὶ συντιθε-
μένην ἐκ μύδρων νῆσον, ἐπέχουσαν δώδεκα σταδίων τὴν περίμετρον. μετὰ δὲ τὴν παῦλαν τοῦ πάθους,
ἐθάρρησαν πρῶτοι ῥόδιοι θαλαττοκρατοῦντες ἐπιπροσπλεῦσαι τῷ τόπῳ. καὶ ποσειδῶνος ἀσφαλίου
ἱερὸν ἱδρύσασθαι κατὰ τὴν νῆσον. ἐν δὲ τῇ φοινίκῃ φησὶ ποσειδώνιος γενομένου σεισμοῦ, καταποθῆναι
πόλιν ἱδρυμένην ὑπὲρ σιδῶνος, καὶ αὐτῆς δὲ σιδῶνος σχεδόν τι τὰ δύο μέρη πεσεῖν, ἀλλ' οὐκ ἀθρόως. ὥστε
μὴ πολὺν φθόρον ἀνθρώπων γενέσθαι, τὸ δ' αὐτὸ πάθος καὶ ἐπὶ τὴν συρίαν ὅλην διέτεινε. μετρίως δέ
πως. διέβη δὲ καὶ ἐπί τινας νήσους τάς τε κυκλάδας, καὶ τὴν εὔβοιαν. ὥστε τῆς ἀρεθούσης, ἔστι δ' ἐν χαλ-
κίδι κρήνη, τὰς πηγὰς ἀποτυφλωθῆναι. συχναῖς δ' ἡμέραις ὕστερον ἀναβλύσαι κατ' ἄλλο στόμιον. μὴ
παύεσθαι δὲ σειομένην τὴν νῆσον κατὰ τὰ μέρη, πρὶν ἢ χάσμα γῆς ἀνοιχθὲν ἐν τῷ ληλάντῳ πεδίῳ,
πηλοῦ διαπύρου ποταμὸν ἐξήμεσε. πολλῶν δὲ συναγωγὰς ποιησαμένων τοιαύτας, ἀρκέσει τὰ ὑπὸ
τοῦ σκηψίου δημητρίου συνηγμένα οἰκείως παρατεθέντα. μνησθεὶς γὰρ τῶν ἐπῶν τούτων.

κρουνὼ δ' ἵκανον καλλιρρόω· ἔνθα δὲ πηγαὶ
δοιαὶ ἀναΐσσουσι σκαμάνδρου δινήεντος. ἡ μὲν γάρ θ' ὕδατι λιαρῷ.
ἡ δ' ἑτέρη θέρεϊ προρέει εἰκυῖα χαλάζῃ,
οὐκ ἐᾷ θαυμάζειν, εἰ νυνὶ μὲν ἡ τοῦ ψυχροῦ ὕδατος μένει πηγή· ἡ δὲ τοῦ θερμοῦ οὐχ ὁρᾶται. δεῖν γάρ φησιν αἰτιᾶσθαι τὴν ἔκθλιψιν τοῦ θερμοῦ ὕδατος. μιμνήσκεται δὲ πρὸς ταῦτα τῶν ὑπὸ δημοκλέους λεγομένων, σεισμούς τινας μεγάλους, τοὺς μὲν, πάλαι περὶ λυδίαν γενομένους καὶ ἰωνίαν, μέχρι τῆς τρῳάδος ἱστοροῦντος· ὑφ' ὧν καὶ κῶμαι κατεπόθησαν· καὶ σίπυλος κατεστράφη, κατὰ τὴν ταντάλου βασιλείαν· καὶ ἐξ ἑλῶν λίμναι ἐγένοντο· τὴν δὲ τροίαν ἐπέκλυσε κῦμα. ἡ δὲ φάρος ἡ κατ' αἴγυπτον ἦν ποτε πελαγία· νῦν δὲ τρόπον τινὰ χερρόνησος γέγονεν. ὡς δ' αὔτως καὶ τύρος, καὶ κλαζομεναί. ἡμῶν δ' ἤδη διαμενόντων ἐν ἀλεξανδρείᾳ τῇ πρὸς αἰγύπτῳ, περὶ πηλούσιον, καὶ τὸ κάσιον ὄρος μετεωρισθὲν τὸ πέλαγος, ἐπέκλυσε τὴν γῆν· καὶ νῆσον ἐποίησε τὸ ὄρος· ὥστε πλωτὴν γενέσθαι τὴν παρὰ τὸ κάσιον ὁδὸν, τὴν ἐς φοινίκην. οὐδὲν οὖν θαυμαστὸν οὐδ' εἴ ποτε διαστὰς ὁ ἰσθμὸς ἢ ἵζημα λαβὼν ὁ διείργων τὸ αἰγύπτιον πέλαγος ἀπὸ τῆς ἐρυθρᾶς θαλάττης, ἀποφανεῖ πορθμὸν, καὶ σύρρουν ποιήσει τὴν ἐκτὸς θάλατταν τῆς ἐντὸς, καθάπερ ἤδη τοῦ κατὰ τὰς ἡρακλέους στήλας πορθμοῦ συνέβη. εἴρηται δὲ περὶ τῶν τοιούτων τινὰ, καὶ ἐν ἀρχαῖς τῆς πραγματείας. ἃ δεῖ συμφέρειν εἰς ἓν, καὶ τὴν πίστιν ἰσχυρὰν κατασκευάζειν, τῶν τε τῆς φύσεως ἔργων, καὶ τῶν ἄλλων γινομένων μεταβολῶν. τόν τε πειραιᾶ νησιάζοντα πρότερον, καὶ πέραν τῆς ἀκτῆς κείμενον, οὕτως φασὶν ὀνομασθῆναι. ὑπεναντίως δ' ὁ λευκὰς κορινθίων τὸν ἰσθμὸν διακοψάντων, νῆσος γέγονεν· ἀκτὴ πρότερον οὖσα. περὶ ταύτης γάρ φησι λέγειν τὸν λαέρτην.

» οἷος νήρικον εἷλον ἐϋκτίμενον πτολίεθρον.
» ἀκτὴν ἠπείροιο. —

ἐνταῦθα μὲν δὴ διακοπαὶ χειρότμητοι γεγόνασιν. ἀλλαχόθι δὲ προσχώσεις ἢ γεφυρώσεις· καθάπερ ἐπὶ τῆς πρὸς συρακούσαις νήσου, νῦν μὲν γέφυρά ἐστιν ἡ συνάπτουσα αὐτὴν πρὸς τὴν ἤπειρον· πρότερον δὲ χῶμα, ὥς φησιν ἴβυκος λογαίου λίθου, ὃν καλεῖ ἐκλεκτόν. βοῦρα δὲ, καὶ ἑλίκη, ἡ μὲν ὑπὸ χάσματος· ἡ δ' ὑπὸ κύματος ἠφανίσθη. περὶ μεθώνην δὲ τὴν ἐν τῷ ἑρμιονικῷ κόλπῳ, ἑπτὰ σταδίων τὸ ὕψος ἀνεβλήθη, γενηθέντος ἀναφυσήματος φλογώδους· μεθ' ἡμέραν μὲν ἀπρόσιτον ὑπὸ τοῦ θερμοῦ, καὶ τῆς θειώδους ὀδμῆς. νύκτωρ δ' εὐώδες, ἐκλάμπειν πόρρω, καὶ θερμαίνειν. ὥστε ζεῖν τὴν θάλατταν ἐπὶ σταδίους πέντε. θολερὰν δ' εἶναι καὶ ἐπὶ εἴκοσι σταδίους. προσχωσθῆναι δὲ πέτραις ἀπορρῶξι, πύργων οὐκ ἐλάττοσιν. ὑπὸ δὲ τῆς κωπαΐδος λίμνης ἥ τε ἄρνη κατεπόθη, καὶ μίδεια· ἃς ὠνόμακεν ὁ ποιητὴς ἐν τῷ καταλόγῳ.

» οἵ τε πολυστάφυλον ἄρνην ἔχον οἵ τε μίδειαν.

Καὶ ὑπὸ τῆς βιστωνίδος δὲ, καὶ τῆς νῦν ἀφνίτιδος λίμνης ἐοίκασι κατακεκλύσθαι πόλεις τινὲς θρᾳκῶν. οἱ δὲ, καὶ τρηρῶν ὡς συνοίκων τοῖς θρᾳξὶν ὄντων. καὶ ἡ πρότερον δὲ ἀρτεμία λεγομένη μία τῶν ἐχινάδων νήσων ἤπειρος γέγονε. καὶ ἄλλας δὲ τῶν περὶ τὸν ἀχελῷον νησίδων τὸ αὐτὸ πάθος φασὶ παθεῖν, ἐκ τῆς ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ προσχώσεως τοῦ πελάγους. συγχοῦνται δὲ, καὶ αἱ λοιπαὶ ὡς ἡσίοδος φησί. καὶ αἰτωλικαὶ δὲ ἄκραι τινὲς εἰσὶ νησίζουσαι πρότερον. καὶ ἡ ἀστερία ἤλλακται ἣν ἀστερίδα φησὶν ὁ ποιητής.

» ἔστι δέ τις νῆσος μέσσῃ ἁλὶ πετρήεσσα
» ἀστερὶς οὐ μεγάλη. λιμένες δ' ἐνὶ ναύλοχοι αὐτῇ
» ἀμφίδυμοι —

Νυνὶ δ' οὐδ' ἀγκυροβόλιον εὐφυὲς ἔχει. ἔν τε τῇ ἰθάκῃ οὐδέν ἐστιν ἄντρον τοιοῦτον, οὐδὲ νυμφαῖον, οἷόν φησιν ὅμηρος. βέλτιον δὲ αἰτιᾶσθαι μεταβολὴν ἢ ἄγνοιαν, ἢ καταψεῦσιν τῶν τόπων κατὰ τὸ μυθῶδες. τοῦτο μὲν δὴ ἀσαφὲς ὂν ἐῶ ἐν κοινῷ σκοπεῖν. ἡ δὲ ἄντισσα νῆσος ἦν πρότερον, ὡς μυρσίλος φησι, τῆς λέσβου καλουμένης πρότερον ἴσσης. καὶ τὴν νῆσον ἄντισσαν καλεῖσθαι συνέβη. νῦν δὲ τῆς λέσβου πόλις ἐστίν. οἱ δὲ καὶ τὴν λέσβον τῆς ἴδης ἀπερρωγέναι πεπιστεύκασι· καθάπερ τὴν προχύτην, καὶ τὴν πιθηκοῦσαν τοῦ μισηνοῦ. τὰς δὲ καπρέας τοῦ ἀθηναίου. τὴν σικελίαν δὲ τῆς ῥηγίνης. τὴν ὄσσαν δὲ τοῦ ὀλύμπου. γεγόνασι δὲ καὶ περὶ ταῦτα τοιαῦται μεταβολαί. καὶ ὁ λάδων δὲ ὁ ἐν ἀρκαδίᾳ ἐπέσχε ποτὲ τὸ ῥεῦμα. δοῦρις δὲ τὰς ῥάγας, τὰς κατὰ μηδίαν ὀνομάσθαι φησὶν ὑπὸ σεισμῶν, ῥαγείσης τῆς περὶ τὰς κασπίους πύλας γῆς, ὥστε ἀνατραπῆναι πόλεις συχνὰς, καὶ κώμας, καὶ ποταμοὺς ποικίλας μεταβολὰς δέξασθαι. ἴων δὲ περὶ τῆς εὐβοίας φησὶν ἐν ὀμφάλῃ σατυρεῖς

» εὐβοΐδα μὲν γῆν λεπτὸς εὐρίπου κλύδων
» βοιωτίας ἀκτῆς ἐχώρισεν ἐκτεμών.
» πρὸς κρῆτα πορθμόν. —

Δημήτριος δ' ὁ καλλατιανὸς τοὺς καθ' ὅλην τὴν ἑλλάδα ποτὲ γενομένους σεισμοὺς διηγούμενος, τῶν τε λιχάδων νήσων, καὶ τοῦ κηναίου τὰ πολλὰ καταδῦναι φησί. τά τε θερμὰ τὰ ἐν αἰδηψῷ, καὶ θερμοπύλαις ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας ἐπισχεθέντα πάλιν ῥυῆναι. τὰ δ' ἐν αἰδηψῷ, καὶ καθ' ἑτέρας ἀναρραγῆναι πηγάς. ὠρεοῦ δὲ τὸ πρὸς θαλάττῃ τεῖχος, καὶ τῶν οἰκιῶν

ἑπτακοσίας συμπεσεῖν. ἐχίνου τε, καὶ φαλάρου, καὶ ἡρακλείας τῆς τραχῖνος, τῆς μὲν πολὺ μέρος πεσεῖν. φαλάρου δὲ καὶ ἐξ ἐδάφους ἀνατραπῆναι τὸ κτίσμα. παραπλήσια δὲ συμβῆναι, καὶ λαμιεῦσι, καὶ λαρισαίοις. καὶ σκαρφίαν ἐκ θεμελίων ἀναρριφῆναι. καὶ καταδῦναι σώματα χιλίων, καὶ ἑπτακοσίων οὐκ ἐλάττω, θρονίους δὲ ὑπὲρ ἥμισυ τούτων. κύματα τε ἐξαρθὲν τριχῇ. τὸ μὲν, πρὸς σκάρφην ἐνεχθῆναι, καὶ θρόνιον. τὸ δὲ πρὸς θερμοπύλας. ἄλλο δὲ εἰς τὸ πεδίον, ἕως τοῦ φωκικοῦ δαφνοῦντος. πηγάς τε ποταμῶν ξηρανθῆναι πρὸς ἡμέρας τινάς. τὸν δὲ σπερχειὸν ἀλλάξαι τὸ ῥεῖθρον. καὶ ποιῆσαι τὰς ὁδοὺς πλωτάς. τὸν δὲ βοάγριον κατ' ἄλλης ἐνεχθῆναι φάραγγος. καὶ ἀλόπης δὲ, καὶ κύνου καὶ ὀποῦντος πολλὰ καταβλαβῆναι μέρη. οἶον δὲ τὸ ὑπερκείμενον φρούριον πᾶν ἀνατραπῆναι. ἐλατείας δὲ τοῦ τείχους καταρραγῆναι μέρος. περὶ δὲ ἄλγωνον θεσμοφορείων ὄντων πέντε, καὶ εἴκοσι παρθένους ἀναδραμούσας εἰς πύργον τῶν ἐλλιμενίων κατὰ θέαν, πεσόντος τοῦ πύργου πεσεῖν καὶ αὐτὰς εἰς τὴν θάλασσαν. λέγουσι δὲ καὶ τῆς ταλάντης, τῆς πρὸς εὐβοίᾳ, τὰ μέσα ῥήγματος γενομένου, διάπλουν δέξασθαι μεταξύ, καὶ τῶν πεδίων ἔνια, καὶ μέχρι εἴκοσι σταδίων ἐπικλυσθῆναι, καὶ τριήρη τινὰ ἐκ τῶν νεωρίων ἐξαρθεῖσαν ὑπερπεσεῖν τοῦ τείχους. προστιθέασι δὲ, καὶ τὰς ἐκ τῶν μεταστάσεων μεταβολὰς ἐπὶ πλέον τὴν ἀθαυμαστίαν ἡμῖν κατασκευάζειν ἐθέλοντες. ἣν ὑμνεῖ δημόκριτος, καὶ οἱ ἄλλοι φιλόσοφοι πάντες. παράκειται γὰρ τῷ ἀθαμβεῖ, καὶ ἀταράχῳ, καὶ ἀνεκπλήκτῳ. οἷον ἰβήρων μὲν τῶν ἑσπερίων εἰς τοὺς ὑπὲρ τοῦ πόντου, καὶ τῆς κολχίδος τόπους μετῳκισμένων. οὓς χωρίζει ὥς φησιν ἀπολλόδωρος ἀπὸ τῆς ἀρμενίας ὁ ἀράξης. κῦρος δὲ μᾶλλον, καὶ τὰ ὄρη τὰ μοσχικά. αἰγυπτίων δὲ εἴς τε αἰθίοπας καὶ κόλχους. ἐνετῶν δὲ ἐκ παφλαγονίας ἐπὶ τὸν ἀδρίαν, ἅπερ, καὶ ἐπὶ τῶν ἑλληνικῶν ἐθνῶν συνέβη. ἰώνων τε, καὶ δωριέων, καὶ ἀχαιῶν, καὶ αἰολέων, καὶ αἰνιᾶνες οἱ νῦν αἰτωλοῖς ὅμοροι περὶ τὸ δώτιον ᾤκουν, καὶ τὴν ὄσσαν μετὰ περραιβῶν. καὶ αὐτοὶ δὲ περραιβοὶ μετανάσται τινὲς. πλήρης δ' ἐστὶ τῶν τοιούτων παραδειγμάτων ἡ νῦν ἐνεστῶσα πραγματεία. τινὰ μὲν οὖν καὶ πρόχειρα τοῖς πολλοῖς ἐστιν. αἱ δὲ τῶν καρῶν, καὶ τρηρῶν, καὶ τεύκρων μεταναστάσεις, καὶ γαλατῶν, ὁμοῦ δὲ καὶ τῶν ἡγεμόνων οἱ ἐπὶ πολὺ ἐκτοπισμοί, μάδυός τε τοῦ σκυθικοῦ, καὶ τεαρκὼ τοῦ αἰθίοπος. καὶ κώβου τοῦ τρηρὸς, καὶ σεσώστριος, καὶ ψαμμιτίχου τῶν αἰγυπτίων, καὶ περσῶν τῶν ἀπὸ κύρου μέχρι ξέρξου, οὐχ ὁμοίως ἐν ἑτοίμῳ πᾶσίν εἰσιν. οἵ τε κιμμέριοι οὓς καὶ τρήρωνας ὀνομάζουσιν ἢ ἐκείνων τι ἔθνος, πολλάκις ἐπέδραμον τὰ δεξιὰ μέρη τοῦ πόντου, καὶ τὰ συνεχῆ αὐτοῖς. ποτὲ μὲν ἐπὶ παφλαγόνας, ποτὲ δὲ καὶ φρύγας ἐμβαλόντες. ἡνίκα μίδαν αἷμα ταύρου πιόντα φασὶν ἀπελθεῖν εἰς τὸ χρεών. λύγδαμις δὲ τοὺς αὑτοῦ ἄγων μέχρι λυδίας, καὶ ἰωνίας ἤλασε, καὶ σάρδεις εἷλεν. ἐν κιλικίᾳ δὲ διεφθάρη. πολλάκις δὲ, καὶ οἱ κιμμέριοι, καὶ οἱ τρῆρες ἐποιήσαντο τὰς τοιαύτας ἐφόδους. τοὺς δὲ τρῆρας καὶ κῶβον ὑπὸ μάδυος τὸ τελευταῖον ἐξελαθῆναί φασι τοῦ τῶν κιμμερίων βασιλέως.

Ταῦτα μὲν εἰρήσθω πρὸς ἅπασαν κοινὴν τὴν περίοδον τῆς γῆς ἔχοντα οἰκείαν ἱστορίαν. ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὰ ἑξῆς ἀφ' ὧν παρέβημεν. τοῦ γὰρ ἡροδότου μηδένας ὑπερβορείους εἶναι φήσαντος. μηδὲ γὰρ ὑπερνοτίους λέγοι ἄν, φησὶν εἶναι τὴν ἀπόδειξιν, καὶ ὁμοίαν ὁ ἐρατοσθένης τῷ σοφίσματι τούτῳ, εἴ τις λέγοι μηδένας εἶναι ἐπιχαιρεκάκους. μηδὲ γὰρ ἐπιχαιραγάθους, κατὰ τύχην τε εἶναι καὶ ὑπερνοτίους, κατὰ γοῦν τὴν αἰθιοπίαν μὴ ἐπιπνεῖν νότον ἀλλὰ καὶ κατωτέρω, θαυμαστὸν δ' εἰ καθ' ἕκαστον κλίμα πνέοντος ἀνέμου. καὶ πανταχοῦ τοῦ ἀπὸ μεσημβρίας νότου προσαγορευομένου. ἔστι τις οἴκησις ἐν ᾗ τοῦτο μὴ συμβαίνει. τοὐναντίον γὰρ οὐ μόνον αἰθιοπία ἔχοι ἂν τὸν καθ' ἡμᾶς νότον, ἀλλὰ καὶ ἡ ἀνωτέρω πᾶσα μέχρι τοῦ ἰσημερινοῦ. εἰ δ' ἄρα, τοῦ ἡροδότου τοῦτ' ἐχρῆν αἰτιᾶσθαι ὅτι τοὺς ὑπερβορέους τούτους ὑπέλαβε λέγεσθαι, παρ' οἷς ὁ βορέας οὐ πνεῖ. καὶ γὰρ εἰ οἱ ποιηταὶ μυθικώτερον οὕτω φασὶν, οἵ γ' ἐξηγούμενοι τὸ ὑγιὲς ἂν ἀκούσειαν, ὑπερβορέους τοὺς βορειοτάτους φασὶ λέγεσθαι. ὅρος δὲ τῶν μὲν βορείων ὁ πόλος. τῶν δὲ νοτίων ὁ ἰσημερινός. καὶ τῶν ἀνέμων δ' ὁ αὐτὸς ὅρος. ἑξῆς δὲ λέγει πρὸς τοὺς φανερῶς πεπλασμένα, καὶ ἀδύνατα λέγοντας. τὰ μὲν, γὰρ ἐν μύθου σχήματι. τὰ δ' ἱστορίας. περὶ ὧν οὐκ ἄξιον μεμνῆσθαι. οὐδ' ἐκεῖνον ἐχρῆν ἐν ὑποθέσει τοιαύτῃ φλυάρους σκοπεῖν. ἡ μὲν οὖν πρώτη διέξοδος αὐτῷ τῶν ὑπομνημάτων τοιαύτη.

Ἐν δὲ τῇ δευτέρᾳ πειρᾶται διόρθωσίν τινα ποιεῖσθαι τῆς γεωγραφίας, καὶ τὰς ἑαυτοῦ λέγει ὑπολήψεις. πρὸς ἃς πάλιν εἰ ἔστι τις ἐπανόρθωσις, πειρατέον προσφέρειν. τὸ μὲν οὖν τὰς μαθηματικάς, ὑποθέσεις ἄγειν, καὶ φυσικάς, εὖ λέγεται. καὶ ὅτι εἰ σφαιροειδὴς ἡ γῆ καθάπερ καὶ ὁ κόσμος περιοικεῖται καὶ τἄλλα τὰ τοιαῦτα. εἰ δὲ τηλικαύτη ἡλίκην αὐτὸς εἴρηκεν, οὐχ ὁμολογοῦσιν οἱ ὕστερον δ' ἐπαινοῦσι τὴν ἀναμέτρησιν. ὅμως δὲ πρὸς τὴν σημείωσιν τῶν κατὰ τὰς οἰκήσεις ἑκάστας φαινομένων, προσχρῆται τοῖς διαστήμασιν ἐκείνοις ἵππαρχος, ἐπὶ τοῦ διὰ μερόης καὶ ἀλεξανδρείας καὶ βορυσθένους μεσημβρινοῦ μικρὸν παραλλάττειν φήσας παρὰ τὴν ἀλήθειαν. καὶ περὶ τοῦ σχήματος δ' ἐν τοῖς ἑξῆς διὰ πλειόνων. καὶ δεικνὺς ὅτι σφαιροειδὴς καὶ ἡ γῆ σὺν τῇ ὑγρᾷ φύσει, καὶ ὁ οὐρανὸς ἀλλοτριολογεῖν ἂν δόξειεν. ἀρκεῖ γὰρ τὸ ἐπὶ μικρόν. ἑξῆς δὲ τὸ πλάτος τῆς οἰκουμένης ἀφορίζων φησίν. ἀπὸ μὲν μερόης ἀπὸ τοῦ δι' αὐτῆς μεσημβρινοῦ μέχρι ἀλεξανδρείας, εἶναι μυρίους, ἐνθένδε εἰς τὸν ἑλλήσποντον, περὶ ὀκτακισχ

λίους ἑκατὸν σταδίους· εἶτ' εἰς Βορυσθένη πεντακισχιλίους· εἶτ' ἐπὶ τὸν κύκλον τὸν διὰ Θούλης ὅν φησι Πυθέας ἀπὸ μὲν τῆς Βρετανικῆς, ἓξ ἡμερῶν πλοῦν ἀπέχειν πρὸς ἄρκτον, ἐγγὺς δ' εἶναι τῆς πεπηγυίας θαλάττης, ἄλλους ὡς μυρίους χιλίους πεντακοσίους. ἐὰν οὖν ἔτι προσθῶμεν ὑπὲρ τὴν Μερόην, ἄλλους τρισχιλίους τετρακοσίους, ἵνα καὶ τὴν τῶν Αἰγυπτίων νῆσον ἔχωμεν, καὶ τὴν κινναμωμοφόρον, καὶ τὴν Ταπροβάνην, ἔσεσθαι σταδίους τρισμυρίους ὀκτακισχιλίους. τὰ μὲν οὖν ἄλλα διαστήματα δεδόσθω αὐτῷ· ὡμολόγηται γὰρ ἱκανῶς. τὸ δ' ἀπὸ τοῦ Βορυσθένους ἐπὶ τὸν διὰ Θούλης κύκλον τίς ἂν δοίη νοῦν ἔχων; ὅ τε γὰρ ἱστορῶν τὴν Θούλην Πυθέας ἀνὴρ ψευδίστατος ἐξήτασται, καὶ οἱ τὴν Βρετανικὴν ἰδόντες, οὐδὲν περὶ τῆς Θούλης λέγουσιν· ἄλλας νήσους λέγοντες μικρὰς περὶ τὴν Βρετανικήν. αὐτή τε καὶ ἡ Βρετανικὴ, τὸ μῆκος ἴσως πως ἐστὶ τῇ Κελτικῇ παρεκτεταμένη· τῶν πεντακισχιλίων οὐ μείζων σταδίων· καὶ τοῖς ἄκροις τοῖς ἀντικειμένοις ἀφοριζομένη. ἀντίκειται γὰρ ἀλλήλοις τά, τε ἑῷα ἄκρα τοῖς ἑῴοις, καὶ τὰ ἑσπέρια τοῖς ἑσπερίοις· καὶ τά γε ἑῷα ἐγγὺς ἀλλήλων ἐστὶ μέχρις ἐπόψεως· τό, τε Κάντιον, καὶ αἱ τοῦ Ῥήνου ἐκβολαί. ὁ δὲ πλειόνων, ἢ δισμυρίων ἀποφαίνει τὸ μῆκος τῆς νήσου· καὶ τὸ Κάντιον ἡμερῶν τινων πλοῦν ἀπέχειν τῆς Κελτικῆς φησι· καὶ τὰ περὶ τοὺς Ὠστιαίους δὲ, καὶ τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου τὰ μέχρι Σκυθῶν, πάντα κατέψευσται τῶν τόπων, ὅστις οὖν περὶ τῶν γνωριζομένων τόπων τοσαῦτα ἔψευσται, σχολῇ γ' ἂν περὶ τῶν ἀγνοουμένων παρὰ πᾶσιν ἀληθεύειν δύναιτο. τὸν δὲ διὰ τοῦ Βορυσθένους παράλληλον, τὸν αὐτὸν εἶναι τῷ διὰ τῆς Βρετανικῆς εἰκάζουσιν, Ἵππαρχός τε καὶ ἄλλοι, ἐκ τοῦ τὸν αὐτὸν εἶναι, καὶ τὸν διὰ Βυζαντίου, τῷ διὰ Μασσαλίας. ὃν γὰρ λόγον εἴρηκε Πυθέας τοῦ ἐν Μασσαλίᾳ γνώμονος πρὸς τὴν σκιάν, τὸν αὐτὸν καὶ Ἵππαρχος κατὰ τὸν ὁμώνυμον καιρὸν εὑρεῖν ἐν τῷ Βυζαντίῳ φησὶν. ἐκ Μασσαλίας δὲ εἰς μέσην τὴν Βρετανικὴν, οὐ πλέον ἐστὶ τῶν πεντακισχιλίων σταδίων. ἀλλὰ μὴν ἐκ μέσης τῆς Βρετανικῆς οὐ πλέον τῶν τετρακισχιλίων προελθὼν, εὕροι ἂν οἰκήσιμον ἄλλως πως. τοῦτο δ' ἂν εἴη τὸ περὶ τὴν Ἰέρνην· ὥστε τὰ ἐπέκεινα εἰς ἃ ἐκτοπίζει τὴν Θούλην, οὐκέτ' οἰκήσιμα. τίνι δ' ἂν καὶ στοχασμῷ λέγοι τὸ ἀπὸ τοῦ διὰ Θούλης ἕως τοῦ διὰ Βορυσθένους μυρίων καὶ χιλίων πεντακοσίων οὐχ ὁρῶ. διαμαρτὼν δὲ τοῦ πλάτους, ἠνάγκασται καὶ τοῦ μήκους ἀστοχεῖν. ὅτι μὲν γὰρ πλέον ἢ διπλάσιον τὸ γνώριμον μῆκος ἐστὶ τοῦ γνωρίμου πλάτους, ὁμολογοῦσι καὶ οἱ ὕστερον καὶ τῶν ἄλλων οἱ χαριέστατοι. λέγω δὲ ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς Ἰνδικῆς, καὶ ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰβηρίας τοῦ Αἰθιόπων ἕως τοῦ κατὰ Ἰέρνην κύκλου. ὁρίσας δὲ τὸ λεχθὲν πλάτος, τὸ ἀπὸ τῶν ἐσχάτων Αἰθιόπων μέχρι τοῦ διὰ Θούλης, ἐκτείνει πλέον ἤδη τὸ μῆκος, ἵνα ποιήσῃ πλέον ἢ διπλάσιον τοῦ λεχθέντος πλάτους. φησὶ δ' οὖν τὸ μὲν τῆς Ἰνδικῆς μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὸ στενώτατον, σταδίων μυρίων ἑξακισχιλίων. τὸ γὰρ ἐπὶ τὰ ἀκρωτήρια τεῖνον, τρισχιλίοις εἶναι μεῖζον. τὸ δ' ἔνθεν ἐπὶ Κασπίους πύλας μυρίων τετρακισχιλίων. εἶτ' ἐπὶ τὸν Εὐφράτην μυρίων. ἐπὶ δὲ τὸν Νεῖλον ἀπὸ τοῦ Εὐφράτου πεντακισχιλίων. ἄλλους δὲ χιλίους καὶ πεντακοσίους μέχρι Κανωβικοῦ στόματος. εἶτα μέχρι τῆς Καρχηδόνος μυρίους τρισχιλίους πεντακοσίους. εἶτα μέχρι Στηλῶν ὀκτακισχιλίους τοὐλάχιστον. ὑπεραίρειν δὴ τῶν ἑπτὰ μυριάδων ὀκτακοσίοις. δεῖν δ' ἔτι προσθεῖναι τὸ ἐκτὸς Ἡρακλείων στηλῶν κύρτωμα τῆς Εὐρώπης, ἀντικείμενον μὲν τοῖς Ἴβηρσι, προπεπτωκὸς δὲ πρὸς τὴν ἑσπέραν, οὐκ ἔλαττον σταδίων τρισχιλίων. καὶ τὰ ἀκρωτήρια τά τε ἄλλα, καὶ τὰ τῶν Ὠστιμίων, ὃ καλεῖται Κάβαιον, καὶ τὰς κατὰ τοῦτο νήσους. ὧν τὴν ἐσχάτην Οὐξισάμην φησὶ Πυθέας ἀπέχειν ἡμερῶν τριῶν πλοῦν. ταῦτα δ' εἰπὼν τὰ τελευταῖα οὐδὲν πρὸς τὸ μῆκος συντείνοντα, προσέθηκε τὰ περὶ τῶν ἀκρωτηρίων, καὶ τῶν Ὠστιμίων, καὶ τῆς Οὐξισάμης, καὶ ὧν φησι, προσαρκτικά ἐστι, καὶ Κελτικά· καὶ οὐκ Ἰβηρικά, μᾶλλον δὲ Πυθέου πλάσματα. προστίθησι τοῖς εἰρημένοις τοῦ μήκους διαστήμασιν, ἄλλους σταδίους δισχιλίους μὲν πρὸς τῇ δύσει, δισχιλίους δὲ πρὸς τῇ ἀνατολῇ, ἵνα σώσῃ τὸ πλέον ἢ ἥμισυ τοῦ μήκους τὸ πλάτος εἶναι. παραμυθούμενος δ' ἔτι πλέον, ὅτι κατὰ φύσιν ἐστὶ τὸ ἀπ' ἀνατολῆς ἐπὶ δύσιν διάστημα μεῖζον λέγειν, κατὰ φύσιν εἶναι ἀπὸ τῆς ἕω πρὸς τὴν ἑσπέραν μακροτέραν εἶναι τὴν οἰκουμένην, καθάπερ εἰρήκαμεν. ὥς οἱ μαθηματικοί φησι κύκλον συνάπτειν, συμβάλλουσαν αὐτὴν ἑαυτῇ. ὥστ' εἰ μὴ τὸ μέγεθος τοῦ Ἀτλαντικοῦ πελάγους ἐκώλυε, κἂν πλεῖν ἡμᾶς ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Ἰνδικὴν διὰ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου, τὸ λοιπὸν μέρος παρὰ τὸ λεχθὲν διάστημα ὑπὲρ τὸ τρίτον μέρος ὂν τοῦ ὅλου κύκλου. εἴπερ ὁ διὰ Θινῶν ἐλάττων ἐστὶν εἴκοσι μυριάδων· ὅπου πεποιήμεθα τὸν εἰρημένον σταδιασμὸν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς εἰς τὴν Ἰβηρίαν.

Οὐ δὲ ταῦτα οὖν εὖ λέγει. οὗτος γὰρ ὁ λόγος κατὰ τῆς μὲν περὶ εὐκράτου, καὶ καθ' ἡμᾶς ζώνης λόγοιτ' ἂν κατὰ τοὺς μαθηματικούς, ἧς μέρος ἡ οἰκουμένη ἐστί. περὶ δὲ τῆς οἰκουμένης, καλοῦμεν γὰρ οἰκουμένην ἣν οἰκοῦμεν, καὶ γνωρίζομεν. ἐνδέχεται δὲ ἐν τῇ αὐτῇ εὐκράτῳ ζώνῃ, καὶ δύο οἰκουμένας εἶναι, ἢ καὶ πλείους, καὶ μάλιστα ἐγγὺς τοῦ διὰ Θινῶν κύκλου τοῦ διὰ τοῦ Ἀτλαντικοῦ πελάγους γραφομένου. πάλιν δ' ἐπιμένων τῇ περὶ τοῦ σφαιροειδῆ τὴν γῆν εἶναι ἀποδείξει τῆς αὐτῆς ἐπιτιμήσεως ἂν τυγχάνοι. ὡς δ' αὕτως καὶ πρὸς τὸν Ὅμηρον οὐ παύεται περὶ τῶν αὐτῶν διαφερόμενος. ἑξῆς δὲ περὶ τῶν ἠπείρων εἰπὼν γεγονέναι πολὺν λόγον· καὶ τοὺς μὲν, τοῖς ποταμοῖς διαιρεῖν αὐτάς, τῷ τε Νείλῳ καὶ τῷ Τανάιδι νήσους ἀποφαίνοντας.

τοὺς δὲ τοῖς ἰσθμοῖς· τῷ τε μεταξὺ τῆς κασπίας, καὶ τῆς ποντικῆς θαλάσσης, καὶ τῷ μεταξὺ τῆς ἐρυ/
θρᾶς, καὶ τοῦ ἐκρήγματος· τούτους δὲ χερρονήσους αὐτὰς λέγειν, οὐχ ὁρᾶν φησι πῶς ἂν εἰς πράγματα καταστρέ/
φοι ἡ ζήτησις αὕτη ἀλλὰ μόνον ἔριν διαιτώντων μᾶλλον κατὰ δημόκριτον εἶναι. μὴ ὄντων γὰρ ἀκρι/
βῶν ὅρων καθάπερ κολυττοῦ, καὶ μελίτης οἷον στηλῶν ἢ περιβόλων, τοῦτο μὲν ἔχειν φάναι ἡμᾶς. ὅτι
τουτὶ μέν ἐστι κολυττός· τουτὶ δὲ μελίτη· τοὺς ὅρους δὲ μὴ ἔχειν εἰπεῖν. διὸ καὶ συμβαίνειν κρίσεις πολλά/
κις περὶ χωρίων τινῶν· καθάπερ ἀργείοις μὲν, καὶ λακεδαιμονίοις περὶ θυρέας. ἀθηναίοις δὲ, καὶ
βοιωτοῖς, περὶ ὠρωποῦ. ἄλλως τε τοὺς ἕλληνας τὰς τρεῖς ἠπείρους ὀνομάσαι, οὐκ εἰς τὴν οἰκουμέ/
νην ἀποβλέψαντας. ἀλλ' εἴς τε τὴν σφετέραν, καὶ τὴν ἀπαντικρὺ τὴν καρικὴν, ἐφ' ἣ νῦν ἴωνες, καὶ οἱ ἑξῆς.
χρόνῳ δ' ἐπὶ πλέον προϊόντας ἀεὶ καὶ πλειόνων γνωριζομένων χωρῶν, εἰς τοῦτο καταστρέψαι τὴν διαίρε/
σιν. πότερον οὖν οἱ πρῶτοι διορίσαντες τὰς τρεῖς ἵνα ἀπὸ τῶν ἐσχάτων ἄρξωμαι διαιτῶντες τὴν ἔ/
ριν μὴ κατὰ δημόκριτον ἀλλὰ κατ' αὐτὸν, οὗτοι ἦσαν οἱ πρῶτοι τὴν σφετέραν ἀπὸ τῆς ἀντικειμένης
τῆς τῶν καρῶν διορίσαι ζητοῦντες, ἢ οὗτοι μὲν τὴν ἑλλάδα ἐπενόουν μόνην, καὶ τὴν καρίαν καὶ τὴν
ὀλίγην τὴν συνεχῆ. οὔτε δ' εὐρώπην οὔτε ἀσίαν οὔτε λιβύην ὡσαύτως. οἱ δὲ λοιποὶ ἐπιόντες ὅσοι
ἱκανοὶ ἐπιγράψαι τὴν τῆς οἰκουμένης ἐπίνοιαν, οὗτοί εἰσιν οἱ εἰς τρία μέρη διαιροῦντες. πῶς οὖν οὐ
τῆς οἰκουμένης ἐποιοῦντο διαίρεσιν. τίς δὲ τρία μέρη λέγων. καὶ καλῶν ἤπειρον ἕκαστον τῶν μερῶν οὐ
προσεπινοεῖ τὸ ὅλον οὗ τὸν μερισμὸν ποιεῖται. εἰ δ' ἐπινοεῖ μὲν μὴ τὴν οἰκουμένην, μέρους δέ τινος τὸν
μερισμὸν αὐτῆς ποιεῖται· τίνος ἄν τις μέρους τῆς οἰκουμένης μέρος εἶπε τὴν ἀσίαν ἢ τὴν εὐρώπην ἢ ὅ/
λως ἤπειρον. ταῦτα γὰρ εἴρηται παχυμερῶς. ἔτι δὲ παχυμερέστερον τὸ φήσαντα μὴ ὁρᾶν εἰς τί
πραγματικὸν καταστρέφει τὸ τοὺς ὅρους ζητεῖν παραθεῖναι τὸν κολυττὸν καὶ τὴν μελίτην εἶτ' εἰς τἀναν/
τία περιτρέπεσθαι. εἰ γὰρ οἱ περὶ θυρέας καὶ ὠρωποῦ πόλεμοι διὰ τὰς τῶν ὅρων ἀγνοίας ἀπέβη/
σαν, εἰς πραγματικόν τι καταστρέφοι, τὸ διαχωρίζειν τὰς χώρας, ἢ τοῦτο λέγειν ὡς ἐπὶ μὲν τῶν
χωρίων καὶ νὴ δία τῶν καθ' ἕκαστα ἐθνῶν πραγματικὸν τὸ διορίζειν ἀκριβῶς, ἐπὶ δὲ τῶν ἠπείρων περι/
ειττόν. καίτοι, οὐδὲ ἐν ταῦθα ἧττον οὐδὲν. γένοιτο γὰρ ἂν, καὶ ἐπὶ τούτων, ἡγεμόσι μεγάλοις ἀμφι/
σβήτησις, τῷ μὲν, ἔχοντι τὴν ἀσίαν, τῷ δὲ, τὴν λιβύην. ὁποτέρου δ' ἐστὶν ἡ αἴγυπτος δηλονότι ἡ κάτω
λεγομένη τῆς αἰγύπτου χώρα. κατάνας δέ τις τοῦτο διὰ τὸ σπάνιον ἄλλως φατέον διαιρεῖσθαι τὰς
ἠπείρους κατὰ μέγαν διορισμόν. καὶ πρὸς τὴν οἰκουμένην ὅλην ἀναφερόμενον. καθ' ὃν οὐδὲ
τούτου φροντιστέον εἰ οἱ τοῖς ποταμοῖς διορίσαντες ἀπολείπουσί τινα χωρία ἀδιόριστα,
τῶν ποταμῶν μὴ μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ διηκόντων. τὰς μὲν δὴ νήσους ὡς ἀληθῶς ἀπο/
λειπόντων τὰς ἠπείρους. ἐπὶ τέλει δέ φησι τοῦ ὑπομνήματος οὐκ ἐπαινέσας
τοὺς δίχα διαιροῦντας ἅπαν τὸ τῶν ἀνθρώπων πλῆθος. εἴς τε ἕλληνας
καὶ βαρβάρους καὶ τοὺς ἀλεξάνδρῳ παραινοῦντας. τοῖς μὲν ἕλλησιν
ὡς φίλοις χρῆσθαι τοῖς δὲ βαρβάροις ὡς πολεμίοις βέλτιον
εἶναι φησὶν ἀρετῇ καὶ κακίᾳ διαιρεῖν ταῦτα, πολλοὺς
γὰρ καὶ τῶν ἑλλήνων εἶναι κακοὺς καὶ τῶν βαρβάρων
ἀστείους καθάπερ ἰνδοὺς καὶ ἀριανούς. ἔτι δὲ
ῥωμαίους καὶ καρχηδονίους οὕτω θαυ/
μαστῶς πολιτευομένους.
διόπερ τὸν ἀλέξαν/
δρον ἀμελήσαν/
τα τῶν παραινούν/
των ὅσους οἷόν
τ' ἦν ἀποδέχεσθαι τῶν
εὐδοκίμων ἀνδρῶν, καὶ εὐ/
εργετεῖν ὥσπερ δι' ἄλλο τι τὸ
οὕτω διελόντων τοὺς μὲν ἐν ψόγῳ. τοὺς δ' ἐν
ἐπαίνῳ τιθεμένων, ἢ διότι τοῖς μὲν ἐπικρα/
τεῖ τὸ νόμιμον καὶ τὸ πολιτικὸν καὶ τὸ παιδείας
καὶ λόγοι οἰκεῖον. τοῖς δὲ τἀναντία. καὶ ὁ ἀλέξανδρος τὸν
οὐκ ἀμελήσας τῶν παραινούντων ἀλλ' ἀποδεξάμε/
νος τὴν γνώμην, τὰ ἀκόλουθα οὐ τὰ ἐ/
ναντία ἐποίει. πρὸς τὴν διά/
νοιαν σκοπῶν τὴν τῶν
ἐπεσταλκότων.

ἐν τῷ δευτέρῳ κατὰ λέξιν προσβαλλόμενος τὰ ἐρατοσθένους, διαιτᾷ καὶ διελέγχει ὅσα μὴ ὀρθῶς εἴρηται· ἢ διαγέγραπται· καὶ ἱππάρχου δὲ τῶν πολλῶν μεμνήσκεται ἤδη λαμβανόμενος. καὶ ἤδη τέλει ἔκθεσις σύντομος· καὶ τρόπον τινὰ σύνοψις τῆς ὅλης πραγματείας, τουτέστι τῆς γεωγραφικῆς ἱστορίας.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΔΕΥΤΕΡΟΝ.

Ἐν δὲ τῷ τρίτῳ τῶν γεωγραφικῶν καθιστάμενος, τὸν τῆς οἰκουμένης πίνακα, γραμμῇ τινι διαιρεῖ δίχα ἀπὸ δύσεως ἐπ' ἀνατολὴν παραλλήλῳ τῇ ἰσημερινῇ γραμμῇ. πέρατα δ' αὐτῆς τίθησι πρὸς δύσει μὲν τὰς ἡρακλείους στήλας. ἐπ' ἀνατολῇ δὲ τὰ ἄκρα καὶ ἔσχατα ὄρη τῶν ἀφοριζόντων ὀρῶν, τὴν πρὸς ἄρκτον τῆς ἰνδικῆς πλευράν. γράφει δὲ τὴν γραμμὴν ἀπὸ στηλῶν διά τε τοῦ σικελικοῦ πορθμοῦ, καὶ τῶν μεσημβρινῶν ἄκρων τῆς τε πελοποννήσου καὶ τῆς ἀττικῆς· καὶ μέχρι τῆς ῥοδίας καὶ τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου. μέχρι μὲν δὴ δεῦρο διὰ τῆς θαλάττης φησὶν εἶναι τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν καὶ τῶν παρακειμένων ἠπείρων. καὶ γὰρ αὐτὴν ὅλην τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν οὕτως ἐπὶ μῆκός τε τετάσθαι μέχρι τῆς κιλικίας. εἶτα ἐπ' εὐθείας πως ἐκβάλλεσθαι παρ' ὅλην τὴν ὀρεινὴν τοῦ ταύρου μέχρι τῆς ἰνδικῆς. τὸν γὰρ ταῦρον ἐπ' εὐθείας τῇ ἀπὸ στηλῶν θαλάττῃ τεταμένον, δίχα τὴν ἀσίαν διαιρεῖν ὅλην ἐπὶ μῆκος. τὸ μὲν αὐτῆς μέρος βόρειον ποιοῦντα. τὸ δὲ νότιον· ὥσθ' ὁμοίως καὶ αὐτὸν ἐπὶ τοῦ διὰ ἀθηνῶν ἱδρῦσθαι παραλλήλου· καὶ τὴν ἀπὸ στηλῶν μέχρι δεῦρο θάλατταν. ταῦτα δ' εἰπὼν οἴεται δεῖν διορθῶσαι τὸν ἀρχαῖον γεωγραφικὸν πίνακα. πολὺ γὰρ ἐπὶ τὰς ἄρκτους παραλλάττειν τὰ ἑωθινὰ μέρη τῶν ὀρῶν κατ' αὐτόν. συνεπισπᾶσθαι δὲ καὶ τὴν ἰνδικὴν ἀρκτικωτέραν γινομένην. πίστιν δὲ τούτου φέρει· μίαν μὲν τοιαύτην. ὅτι τὰ τῆς ἰνδικῆς ἄκρα, τὰ μεσημβρινώτατα, ὁμολογοῦσι πολλοὶ τοῖς κατὰ μερόην ἀνταίρειν τόποις. ἀπό τε τῶν ἀέρων, καὶ τῶν οὐρανίων τεκμαιρόμενοι. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὰ βορειότατα τῆς ἰνδικῆς τὰ πρὸς τοῖς καυκασίοις ὄρεσι, πατροκλῆς ὁ μάλιστα πιστεύεσθαι δίκαιος, διά τε τὸ ἀξίωμα καὶ διὰ τὸ μὴ ἰδιώτης εἶναι τῶν γεωγραφικῶν, φησὶ σταδίους μυρίους καὶ πεντακισχιλίους. ἀλλὰ μὴν καὶ τὸ ἀπὸ μερόης ἐπὶ τὸν διὰ ἀθηνῶν παράλληλον τοσοῦτόν πως ἐστίν, ὥστε τὰ τῆς ἰνδικῆς τὰ προσάρκτια μέρη συνάπτοντα τοῖς καυκασίοις ὄρεσιν εἰς τοῦτον τελευτᾶν τὸν κύκλον. ἄλλην δὲ πίστιν φέρει τοιαύτην. ὅτι τὸ ἀπὸ τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου διάστημα ἐπὶ τὴν θάλατταν τὴν ποντικήν, τρισχιλίων πως ἐστὶ σταδίων πρὸς ἄρκτον ἰόντι, καὶ τοὺς περὶ ἀμισὸν ἢ σινώπην τόπους. ὅσον καὶ τὸ πλάτος τῶν ὀρῶν λέγεται. ἐκ δὲ ἀμισοῦ πρὸς τὴν ἰσημερινὴν ἀνατολὴν φερομένῳ, πρῶτον μὲν ἡ κολχίς ἐστιν. ἔπειτα ἡ ἐπὶ τὴν ὑρκανίαν θάλατταν ὑπέρθεσις. καὶ ἡ ἐφεξῆς ἡ ἐπὶ βάκτρα καὶ τοὺς ἐπέκεινα σκύθας ὁδὸς δεξιὰ ἔχοντι τὰ ὄρη. αὕτη δ' ἡ γραμμὴ διὰ ἀμισοῦ πρὸς δύσιν ἐκβαλλομένη διὰ τῆς προποντίδος ἐστὶ καὶ τοῦ ἑλλησπόντου. ἀπὸ δὲ μερόης ἐπὶ τὸν ἑλλήσποντον οὐ πλείους εἰσὶ τῶν μυρίων καὶ ὀκτακισχιλίων σταδίων. ὅσοι καὶ ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ πλευροῦ τῆς ἰνδικῆς, πρὸς τὰ περὶ τοὺς βακτρίους μέρη. προστεθέντων τρισχιλίων τοῖς μυρίοις καὶ πεντακισχιλίοις. ὧν οἱ μὲν τοῦ πλάτους ἦσαν τῶν ὀρῶν, οἱ δὲ τῆς ἰνδικῆς. πρὸς δὲ τὴν ἀπόφασιν ταύτην ὁ ἵππαρχος ἀντιλέγει διαβάλλων τὰς πίστεις. οὔτε γὰρ πατροκλέα πιστὸν εἶναι, δυεῖν ἀντιμαρτυρούντων αὐτῷ, δηιμάχου τε καὶ μεγασθένους. οἳ καθ' οὓς μὲν τόπους δισμυρίων εἶναι σταδίων τὸ διάστημά φασι τὸ ἀπὸ τῆς κατὰ μεσημβρίαν θαλάττης. καθ' οὓς δὲ καὶ τρισμυρίων. τούτους γε δὴ τοιαῦτα λέγειν, καὶ τοὺς ἀρχαίους πίνακας τούτοις ὁμολογεῖν, ἀπίθανον δήπου νομίζει τὸ μόνῳ δεῖν πιστεύειν πατροκλεῖ, παρέντας τοσοῦτον ἀντιμαρτυροῦντας αὐτῷ, καὶ διορθοῦσθαι παρ' αὐτὸ τοὺς ἀρχαίους πίνακας. ἀλλὰ μὴ ἐᾶν οὕτως, ἕως ἄν τι πιστότερον περὶ αὐτῶν γνῶμεν. οἶμαι δὴ πολλὰς ἔχειν εὐθύνας τοῦτον τὸν λόγον. πρῶτον μὲν ὅτι πολλαῖς μαρτυρίαις ἐκεῖνος χρησάμενος, μιᾷ φησι, τῇ πατροκλέους αὐτὸν χρῆσθαι. τίνες οὖν ἦσαν οἱ φάσκοντες τὰ μεσημβρινὰ ἄκρα

τῆς ἰνδικῆς ἀνατείνειν τοῖς κατὰ μερόην· τινὲς δὲ οἱ τὸ ἀπὸ μερόης διάστημα μέχρι τοῦ διὰ θινῶν παραλλήλου τοσοῦτον λέγοντες· τινὲς δὲ πάλιν οἱ τὸ τῶν ὀρῶν πλάτος ἢ τὸ ἀπὸ τῆς κιλικίας ἐπὶ τὴν ἀμισὸν τὸ αὐτὸ τούτῳ λέγοντες· τινὲς δὲ οἱ ἀπὸ ἀμισοῦ διὰ κόλχων καὶ τῆς ὑρκανίας, μέχρι βακτρίων καὶ τῶν ἐπέκεινα εἰς τὴν ἑώαν θάλατταν καθηκόντων, ἐπ' εὐθείας τε εἶναι λέγοντες, καὶ ἐπὶ ἰσημερινὰς ἀνατολὰς καὶ περὶ τὰ ὄρη ἐν δεξιᾷ ἐχόντων αὐτά· ἢ πάλιν τὸ ἐπὶ τὴν δύσιν ἐπ' εὐθείας ταύτῃ τῇ γραμμῇ· διότι ἐπὶ τὴν προποντίδα ἐστὶ καὶ τὸν ἑλλήσποντον· ταῦτα γὰρ ὁ ἐρατοσθένης λαμβάνει πάντα, ὡς καὶ ἐκ μαρτυρουμένων ὑπὸ τῶν ἐν τοῖς τόποις γενομένων, ἐντετυχηκὼς ὑπομνήμασι πολλοῖς, ὧν εὐπόρει, βιβλιοθήκην ἔχων τηλικαύτην, ἡλίκην αὐτὸς ἵππαρχος φησί. καὶ αὐτὴ δὲ ἡ τοῦ πατροκλέους πίστις ἐκ πολλῶν μαρτυριῶν συνίσταται· τῶν βασιλέων τῶν πεπιστευκότων αὐτῷ τηλικαύτην ἀρχήν, τῶν ἐπακολουθησάντων αὐτῷ, τῶν ἀντιδοξούντων, ὡς αὐτὸς ὁ ἵππαρχος κατονομάζει· οἱ γὰρ κατ' ἐκείνων ἔλεγχοι, πίστεις τῶν ὑπὸ τούτου λεγομένων εἰσίν. οὐδὲ ταῦτα δὲ ἀπίθανα τοῦ πατροκλέους· ὅτι φησὶ τοὺς ἀλεξάνδρῳ συστρατεύσαντας ἐπιδρομάδην ἱστορῆσαι ἕκαστα, αὐτὸν δὲ ἀλέξανδρον ἀκριβῶσαι, ἀναγραψάντων τὴν ὅλην χώραν τῶν ἐμπειροτάτων αὐτῷ· τὴν δ' ἀναγραφὴν αὐτῷ δοθῆναί φησιν ὕστερον ὑπὸ ξενοκλέους τοῦ γαζοφύλακος.

ἔτι φησὶν ὁ ἵππαρχος ἐν τῷ δευτέρῳ ὑπομνήματι αὐτὸν τὸν ἐρατοσθένην διαβάλλειν τὴν τοῦ πατροκλέους πίστιν, ἐκ τῆς πρὸς μεγασθένην διαφωνίας περὶ τοῦ μήκους τῆς ἰνδικῆς τοῦ κατὰ τὸ βόρειον πλευρόν. τοῦ μὲν μεγασθένους λέγοντος σταδίων μυρίων πεντακισχιλίων· τοῦ δὲ πατροκλέους χιλίοις λείπειν φαμένου. ἀπὸ γάρ τινος ἀναγραφῆς σταθμῶν ὁρμηθέντα, τοῖς μὲν ἀπιστεῖν διὰ τὴν διαφωνίαν, ἐκείνῃ δὲ προσέχειν. εἰ οὖν διὰ τὴν διαφωνίαν ἐνταῦθα ἄπιστος ὁ πατροκλῆς, καί τοι παρὰ χιλίους σταδίους τῆς διαφορᾶς οὔσης, πόσῳ χρὴ μᾶλλον ἀπιστεῖν ἐν οἷς περὶ ὀκτακισχιλίους ἡ διαφορά ἐστι πρὸς δύο καὶ ταῦτα ἄνδρας συμφωνοῦντας ἀλλήλοις· τῶν μὲν λεγόντων τὸ τῆς ἰνδικῆς πλάτος σταδίων δισμυρίων, τοῦ δὲ μυρίων καὶ δισχιλίων. ἐροῦμεν δ' ὅτι οὐ ψιλὴν τὴν διαφωνίαν ἠτιᾶτο, ἀλλὰ συγκρίνων πρὸς τὴν ὁμολογίαν καὶ τὴν ἀξιοπιστίαν τῆς ἀναγραφῆς τῶν σταθμῶν. οὐ θαυμαστὸν δὲ εἰ ἀπίστου γίνεταί τι πιστότερον, καὶ εἰ τῷ αὐτῷ ἐν ἑτέροις μὲν πιστεύομεν, ἐν ἑτέροις δ' ἀπιστοῦμεν, ὅταν παρά τινος τὸ ἐστι βεβαιότερον. γελοῖόν τε τὸ τὴν παρὰ πολὺ διαφωνίαν ἀπιστοτέρους ποιεῖν νομίζειν τοὺς διαφωνοῦντας· τοὐναντίον γὰρ ἐπὶ τῶν παρὰ μικρὸν συμβαίνειν τοῦτο μᾶλλον ἔοικε. παρὰ μικρὸν γὰρ ἡ πλάνη συμβαίνει μᾶλλον οὐ τοῖς τυχοῦσι μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς πλέον τι τῶν ἑτέρων φρονοῦσιν· ἐν δὲ τοῖς παρὰ πολύ, ὁ μὲν τυχὼν ἁμάρτοι ἄν, ὁ δ' ἐπιστημονικώτερος ἧττον ἂν τοῦτο πάθοι· διὸ καὶ πιστεύεται θᾶττον. ἅπαντες μὲν τοίνυν οἱ περὶ τῆς ἰνδικῆς γράψαντες ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ψευδολόγοι γεγόνασι· καθ' ὑπερβολὴν δὲ δηΐμαχος· τὰ δὲ δεύτερα λέγει μεγασθένης· ὀνησίκριτος δὲ καὶ νέαρχος, καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι παραψελλίζοντες ἤδη, καὶ ἡμῖν δ' ὑπῆρξεν ἐπὶ πλέον κατιδεῖν ταῦτα, ὑπομνηματιζομένοις τὰς ἀλεξάνδρου πράξεις. διαφερόντως δ' ἀπιστεῖν ἄξιον δηϊμάχῳ τε καὶ μεγασθένει. οὗτοι γάρ εἰσιν οἱ τοὺς ἐνωτοκοίτας καὶ τοὺς ἀστόμους καὶ ἄρρινας ἱστοροῦντες, μονοφθάλμους τε καὶ μακροσκελεῖς καὶ ὀπισθοδακτύλους. ἀνεκαίνισαν δὲ καὶ τὴν ὁμηρικὴν τῶν πυγμαίων γερανομαχίαν, τρισπιθάμους εἰπόντες. οὗτοι δὲ καὶ τοὺς χρυσωρύχους μύρμηκας, καὶ πᾶνας σφηνοκεφάλους, ὄφεις τε καὶ βοῦς καὶ ἐλάφους σὺν κέρασι καταπίνοντας· περὶ ὧν ἕτερος τὸν ἕτερον ἐλέγχει· ὅπερ καὶ ἐρατοσθένης φησίν. ἐπέμφθησαν μὲν γὰρ εἰς τὰ παλίμβοθρα· ὁ μὲν μεγασθένης πρὸς σανδρόκοττον, ὁ δὲ δηΐμαχος πρὸς ἀμιτροχάδην τὸν ἐκείνου υἱὸν κατὰ πρεσβείαν· ὑπομνήματα δὲ τῆς ἀποδημίας κατέλιπον τοιαῦτα, ὑφ' ἧς δή ποτε αἰτίας προαχθέντες, πατροκλῆς δὲ ἥκιστα τοιοῦτος. καὶ οἱ ἄλλοι δὲ μάρτυρες οὐκ ἀπίθανοι, οἷς κέχρηται ὁ ἐρατοσθένης. εἰ γὰρ ὁ διὰ ῥόδου καὶ βυζαντίου μεσημβρινὸς ὀρθῶς εἴληπται, καὶ ὁ διὰ τῆς κιλικίας καὶ ἀμισοῦ ὀρθῶς ἂν εἴη εἰλημμένος· φαίνεται γὰρ τὸ παράλληλον ἐκ πολλῶν, ὅταν μηδετέρως ἡ σύμπτωσις ἀπελέγχηται. ὅτι τε ὁ ἐξ ἀμισοῦ πλοῦς ἐπὶ τὴν κολχίδα ὅτι ἐστὶν ἐπὶ τὴν ἰσημερινὴν ἀνατολήν, καὶ τοῖς ἀνέμοις ἐλέγχεται, καὶ ὥραις καὶ καρποῖς καὶ ταῖς ἀνατολαῖς αὐταῖς. ὡς δ' αὕτως καὶ ἡ ἐπὶ τὴν κασπίαν ὑπέρβασις, καὶ ἡ ἐφεξῆς ὁδὸς μέχρι βάκτρων. πολλαχοῦ γὰρ ἡ ἐνάργεια καὶ τὸ ἐκ πάντων συμφωνούμενον ὀργάνου πιστότερόν ἐστιν. ἐπεὶ καὶ ὁ αὐτὸς ἵππαρχος τὴν ἀπὸ στηλῶν μέχρι τῆς κιλικίας γραμμήν, ὅτι ἐστὶν ἐπ' εὐθείας, καὶ ὅτι ἐπὶ τὴν ἰσημερινὴν ἀνατολήν, οὐ πᾶσαν ὀργανικῶς καὶ γεωμετρικῶς ἔλαβεν, ἀλλ' ὅλην τὴν ἀπὸ στηλῶν μέχρι πορθμοῦ τοῖς πλέουσιν ἐπίστευσεν. ὥστ' οὐδ' ἐκεῖνος εὐλογεῖ τὸ ἐπειδὴ οὐκ ἔχομεν λέγειν οὔθ' ἡμέρας μεγίστης πρὸς τὴν βραχυτάτην λόγον, οὔτε γνώμονος πρὸς σκιὰν ἐπὶ τῇ παρορείᾳ τῇ ἀπὸ κιλικίας μέχρις ἰνδῶν· οὐδ' εἰ ἐπὶ παραλλήλου γραμμῆς ἐστιν ἡ λόξωσις ἔχομεν εἰπεῖν, ἀλλ' ἐᾶν ἀδιόρθωτον λοξὴν φυλάξαντες, ὡς οἱ ἀρχαῖοι πίνακες περιέχουσι. πρῶτον μὲν γὰρ ὅτι τὸ μὴ ἔχειν εἰπεῖν ταὐτόν ἐστι τῷ ἐπέχειν· ὁ δ' ἐπέχων οὐδ' ἑτέρωσε ῥέπει· ἐᾶν δὲ κελεύων ὡς οἱ ἀρχαῖοι ἐκεῖσε ῥέπειν. μᾶλλον δ' ἀκόλουθον ἐφύλαττεν, εἰ συνεβούλευε μηδὲ γεωγραφεῖν ὅλως· οὐδὲ γὰρ τῶν ἄλλων ὀρῶν τὰς θέσεις, οἷον ἄλπεων καὶ τῶν πυρηναίων καὶ τῶν θρᾳκίων καὶ ἰλλυρικῶν καὶ γερμανικῶν οὕτως ἔχομεν εἰπεῖν. τίς δ' ἂν ἡγή-

αυτο πιστοτέρους τῶν ὕστερον τοὺς παλαιοὺς τοσαῦτα πλημμελήσαντας περὶ τὴν πινακογραφί-
αν. ὅσα οὐ διαβέβληκεν Ἐρατοσθένης, ὧν οὐδενὶ ἀντείρηκεν Ἵππαρχος. καὶ τὰ ἑξῆς δὲ πλήρη μεγά-
λων ἀπορειῶν ἐστίν. ὅρα γὰρ εἰ τοῦτο μὲν οὐ κινοίη τις τὸ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς τὰ μεσημβρινὰ ἀνταίρειν
τοῖς κατὰ Μερόην, μηδὲ τὸ διάστημα τὸ ἀπὸ Μερόης, ἐπὶ τὸ στόμα τὸ κατὰ τὸ Βυζάντιον. ὅτι ἐστὶ περὶ
μυρίους σταδίους καὶ ὀκτακισχιλίους. ποιοίη δὲ τρισμυρίων τὸ ἀπὸ τῶν μεσημβρινῶν Ἰνδῶν μέχρι τῶν
ὀρῶν, ὅσα ἂν συμβαίη ἄτοπα. τὸ πρῶτον μὲν γὰρ εἴπερ ὁ αὐτός ἐστι παράλληλος ὁ διὰ Βυζαντίου
τῷ διὰ Μασσαλίας καθάπερ εἴρηκεν Ἵππαρχος. πιστεύσας Πυθέᾳ. ὁ δ' αὐτὸς καὶ μεσημβρινός ἐστιν,
ὁ διὰ Βυζαντίου τῷ διὰ Βορυσθένους. ὅπερ, καὶ αὐτὸς δοκιμάζει ὁ Ἵππαρχος. δοκιμάζει δὲ καὶ τὸ
ἀπὸ Βυζαντίου διάστημα ἐπὶ τὸν Βορυσθένη σταδίους εἶναι τρισχιλίους ἑπτακοσίους. τοσοῦτοι ἂν εἶεν
καὶ οἱ ἀπὸ Μασσαλίας ἐπὶ τὸν διὰ Βορυσθένους παράλληλον. ὅς γε διὰ τῆς Κελτικῆς παρωκεανίτιδος
ἂν εἴη. τοσούτους γάρ πως διελθόντες συνάπτουσι τῷ ὠκεανῷ. πάλιν δ' ἐπεὶ τὴν κιναμωμοφόρον,
ἐσχάτην ἴσμεν οἰκουμένην πρὸς μεσημβρίαν καὶ καθ' Ἵππαρχον αὐτὸν ὁ δι' αὐτῆς παράλληλος, ἀρ-
χὴ τῆς εὐκράτου καὶ τῆς οἰκουμένης ἐστί. καὶ διέχει τοῦ ἰσημερινοῦ περὶ ὀκτακισχιλίους καὶ ὀκτακο-
σίους σταδίους. ἐπεὶ οὖν φησὶν ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ τὸν διὰ Βορυσθένους διέχειν τρισμυρίους. καὶ τετρα-
κισχιλίους σταδίους. εἶεν ἂν λοιποὶ οἱ ἀπὸ τοῦ ὁρίζοντος τὴν διακεκαυμένην καὶ τὴν εὔκρατον εἰς τὴν διὰ
Βορυσθένους καὶ τῆς Κελτικῆς παρωκεανίτιδος. στάδιοι δισμύριοι πεντακισχίλιοι διακόσιοι. ὁ δέ γε
ἀπὸ τῆς Κελτικῆς πρὸς ἄρκτον πλοῦς ἔσχατος λέγεται παρὰ τοῖς νῦν, ὁ ἐπὶ τὴν Ἰέρνην. ἐπέκεινα
μὲν οὖσαν τῆς Βρεττανικῆς. ἀθλίως δὲ διὰ ψῦχος οἰκουμένην. ὥστε τὰ ἐπέκεινα νομίζειν ἀοίκητα.
οὐ πλέον δὲ τῆς Κελτικῆς τὴν Ἰέρνην διέχειν φασὶ τῶν πεντακισχιλίων. ὥστε περὶ τρισμυρίους εἶεν ἂν
ἢ μικρῷ πλείους οἱ πάντες οἱ τὸ πλάτος τῆς οἰκουμένης ἀφορίζοντες. φέρε δὴ τὴν ἀνταίρουσαν τῇ κι-
ναμωμοφόρῳ καὶ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου πρὸς ἕω, κειμένην ὑποβῶμεν. αὕτη δέ ἐστιν ἡ περὶ
τὴν Ταπροβάνην. ἡ δὲ Ταπροβάνη πεπίστευται σφόδρα ὅτι τῆς Ἰνδικῆς πρόκειται πελαγία μεγά-
λη νῆσος πρὸς νότον. μηκύνεται δὲ ἐπὶ τὴν Αἰθιοπίαν πλέον ἢ πεντακισχιλίους σταδίους ὥς φασιν.
ἐξ ἧς καὶ ἐλέφαντα κομίζεσθαι πολὺν εἰς τὰ τῶν Ἰνδῶν ἐμπόρια καὶ χελώνια, καὶ ἄλλον φόρτον.
ταύτῃ δὴ τῇ νήσῳ πλάτος προστεθὲν τὸ ἀνάλογον τῷ μήκει καὶ διάρμα τὸ ἐπ' αὐτὴν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς
τῶν μὲν τρισχιλίων σταδίων οὐκ ἂν ἔλαττον ποιήσειε διάστημα, ὅσον ἦν τὸ ἀπὸ τοῦ ὅρους τῆς οἰκου-
μένης εἰς Μερόην. εἴπερ μέλλει τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς ἀνταίρειν τῇ Μερόῃ. πιθανώτερον δ' ἐστὶ καὶ
πλείους τῶν τρισχιλίων τιθέναι, εἰ δὴ τοῦτο προσθείη τις τοῖς τρισμυρίοις, οἷς φησὶν ὁ Δηίμαχος μέ-
χρι τῆς εἰς Βακτρίους καὶ Σογδιανοὺς ὑπερθέσεως, ἐκπέσοι ἂν πάντα τὰ ἔθνη ταῦτα τῆς οἰκουμέ-
νης καὶ τῆς εὐκράτου. τίς ἂν οὖν θαρρήσειε ταῦτα λέγειν ἀκούων καὶ τῶν πάλαι καὶ τῶν νῦν τὴν εὐ-
κρασίαν, καὶ τὴν εὐκαρπίαν λεγόντων. πρῶτον μὲν τὴν τῶν προσβόρων Ἰνδῶν. ἔπειτα δὲ καὶ
τὴν ἐν τῇ Ὑρκανίᾳ καὶ τῇ Ἀρίᾳ, καὶ ἐφεξῆς τῇ τε Μαργιανῇ, καὶ τῇ Βακτριανῇ. ἅπασαι γὰρ αὗται
προσεχεῖς μέν εἰσι τῇ βορείῳ πλευρᾷ τοῦ Ταύρου, καὶ ἥ γε Βακτριανὴ, καὶ πλησιάζει τῇ εἰς Ἰνδοὺς
ὑπερθέσει. τοσαύτῃ δ' εὐδαιμονίᾳ κέχρηνται, ὥστε πάμπολυ ἀπέχειν τῆς ἀοικήτου. ἐν μέν γε
τῇ Ὑρκανίᾳ τὴν ἄμπελον μετρητὴν οἴνου φέρειν φασί. τὴν δὲ συκῆν μεδίμνους ἑξήκοντα. τὸν δὲ σῖτον
ἐκ τοῦ ἐκπεσόντος καρποῦ τῆς καλάμης πάλιν φύεσθαι. ἐν δὲ τοῖς δένδρεσι σμηνουργεῖσθαι καὶ τῶν
φύλλων ἀπορρεῖν μέλι. ὅπερ γίνεσθαι μὲν καὶ τῆς Μηδείας ἐν τῇ Ματιανῇ. καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐν
τῇ Σακασηνῇ καὶ τῇ Ἀραξηνῇ. ἀλλ' ἐνταῦθα μὲν οὐκ ἐπίσης θαυμαστόν. εἴπερ εἰσὶ νοτιώτεραι τῆς Ὑρκα-
νίας καὶ εὐκρασίᾳ διαφέρουσαι τῆς ἄλλης χώρας. ἐκεῖ δὲ μᾶλλον. ἐν δὲ τῇ Μαργιανῇ τὸν πυθμένα φα-
σὶν εὑρίσκεσθαι τῆς ἀμπέλου πολλάκις δυεῖν ἀνδρῶν ὀργυίαις περίληπτον. τὸν δὲ βότρυν δίπηχυν.
παραπλησίαν δὲ λέγουσι καὶ τὴν Ἀρίαν. εὐοινίᾳ δὲ, καὶ ὑπερβάλλειν. ἐν ᾗ γε καὶ εἰς τριετίαν πα-
ραμένειν ἐν ἀπιττώτοις ἄγγεσι τὸν οἶνον. πάμφορον δ' εἶναι καὶ τὴν Βακτριανὴν πλὴν ἐλαίου. πλη-
σίον τῇ Ἀρίᾳ παρακειμένην. εἰ δὲ καὶ ψυχρὰ μέρη τῶν τόπων τούτων ἐστὶν ὅσα ὑψηλὰ καὶ ὀρεινὰ, οὐ-
δὲν δεῖ θαυμάζειν, καὶ γὰρ ἐν τοῖς μεσημβρινοῖς κλίμασι τὰ ὄρη ψυχρά ἐστι. καὶ καθόλου τὰ μετέω-
ρα ἐδάφη κἂν πεδία ᾖ. τῆς γοῦν Καππαδοκίας καὶ πρὸς τῷ Εὐξείνῳ πολὺ βορειότερά ἐστι τῶν πρὸς
τῷ Ταύρῳ. ἀλλ' ἡ μὲν Βαγαδανία, πεδίον ἐξαίσιον μεταξὺ πίπτον τοῦ τε Ἀργαίου ὄρους καὶ τοῦ Ταύ-
ρου. σπάνιον εἴ τι που τῶν καρπίμων δένδρων φύοι. καίπερ νοτιώτερα τῆς Ποντικῆς θαλάττης σταδίοις
τρισχιλίοις. τὰ δὲ τῆς Σινώπης προάστεια καὶ τῆς Ἀμισοῦ καὶ τῆς Φαναροίας τὸ πλέον, ἐλαιόφυτά
ἐστι καὶ τὸν Ὦξον δὲ τὸν ὁρίζοντα τὴν Βακτριανὴν ἀπὸ τῆς Σογδιανῆς. οὕτω φασὶν εὔπλουν εἶναι ὥστε
τὸν Ἰνδικὸν φόρτον ὑπερκομισθέντα εἰς αὐτὸν, ῥᾳδίως εἰς τὴν Ὑρκανίαν κατάγεσθαι, καὶ τοὺς ἐ-
φεξῆς τόπους μέχρι τοῦ Πόντου διὰ τῶν ποταμῶν. τίν' οὖν τοιαύτην εὕροις εὐδαιμονίαν περὶ Βορυ-
σθένη καὶ τὴν Κελτικὴν τὴν παρωκεανῖτιν ὅπου μηδὲ φύεται ἄμπελος, ἢ μὴ τελεσφορεῖ. ἐν δὲ τοῖς νο-
τιωτέροις τούτων, καὶ ἐπιθαλαττίοις καὶ τοῖς κατὰ Βόσπορον τελεσφορεῖ. ἐν μικροκαρπίᾳ δὲ καὶ
τοῦ χειμῶνος κατορύττεται. οἱ δὲ πάγοι παρ' αὐτοῖς τοιοῦτοί τινές εἰσιν ἐπὶ τῷ στόματι τῆς λίμνης

τῆς μαιώτιδος, ὥστ' ἐν χωρίῳ, ἐν ᾧ χειμῶνος ὁ τοῦ μιθριδάτου στρατηγὸς ἐνίκησε τοὺς βαρβάρους ἱππομαχῶν ἐπὶ τῷ πάγῳ, τοὺς αὐτοὺς καταναυμαχῆσαι θέρους, λυθέντος τοῦ πάγου. ὁ δ' ἐρατοσθένης καὶ τουτὶ τὸ γράμμα προφέρεται τὸ ἐν τῷ ἀσκληπιείῳ τῶν παντικαπαιέων ἐπὶ τῇ ῥαγείσῃ χαλκῇ ὑδρείᾳ διὰ τὸν πάγον.

» Εἴ τις ἄρ' ἀνθρώπων μὴ πείθεται οἷα παρ' ἡμῖν
» Γίνεται, εἰς τήνδε γνώτω ἰδὼν ὑδρίαν.
» Ἣν οὐχ ὡς ἀνάθημα θεοῦ καλὸν ἀλλ' ἐπίδειγμα
» Χειμῶνος μεγάλου θῆχ' ἱερεὺς στράτιος

Ὅπου οὖν οὐδὲ τοῖς ἐν βοσπόρῳ συγκριτέον τὰ ἐν τοῖς διηριθμημένοις τόποις. ἀλλ' οὐδὲ τοῖς ἐν ἀμισῷ καὶ σινώπῃ. καὶ γὰρ ἐκείνων εὐκρατοτέρους ἂν εἴποι τις, σχολῇ γ' ἂν παραβάλλοιντο τοῖς κατὰ βορυσθένη καὶ τοῖς ἐσχάτοις κελτοῖς. μόλις γὰρ ἂν ταυτοκλινεῖς ἐν τοῖς κατ' ἀμισὸν καὶ σινώπην, καὶ βυζάντιον, καὶ μασσαλίαν. οἱ τοῦ βορυσθένους καὶ τῶν κελτῶν ὁμολογοῦνται νοτιώτεροι σταδίοις τρισχιλίοις καὶ ἑπτακοσίοις. οἱ δέ γε περὶ δηίμαχον, τοῖς τρισμυρίοις, ἐὰν προσλάβωσι τὸ ἐπὶ τὴν ταπροβάνην καὶ τοὺς ὅρους διακεκαυμένης. οὓς οὐκ ἐλάττους τῶν τετρακισχιλίων θετέον, ἐκτοπιοῦσιν τά τε βάκτρα. καὶ τὴν ἀρίαν εἰς τοὺς ἀπέχοντας τόπους τῆς διακεκαυμένης σταδίους τρισμυρίους, καὶ τετρακισχιλίους. ὅσους ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ ἐπὶ βορυσθένη φησὶν εἶναι ὁ ἵππαρχος. ἐκπεσοῦνται ἄρα εἰς τοὺς βορειοτέρους τοῦ βορυσθένους καὶ τῆς κελτικῆς, σταδίοις ὀκτακισχιλίοις καὶ ὀκτακοσίοις. ὅσοις νοτιώτερος ἐστὶν ὁ ἰσημερινὸς τοῦ ὁρίζοντος κύκλου τὴν διακεκαυμένην καὶ τὴν εὔκρατον. ὃν φαμὲν διὰ τῆς κινναμωμοφόρου ἰνδικῆς μάλιστα γράφεσθαι. ἡμεῖς δέ γε ἐπιδείκνυμεν μέχρι τῆς ἰέρνης μόλις οἰκήσιμα ὄντα τὰ ὑπὲρ τὴν κελτικὴν, ἅπερ οὐ πλείω τῶν πεντακισχιλίων ἐστίν. οὗτος δ' ἀποφαίνει ὁ λόγος τῆς ἰέρνης ἔτι βορειότερον εἶναι τινὰ κύκλον οἰκήσιμον σταδίοις τρισχιλίοις ὀκτακοσίοις. ἔστι δὲ βάκτρα καὶ τοῦ στόματος τῆς κασπίας θαλάσσης. εἴτε ὑρκανίας πάμπολύ τι ἀρκτικώτερα. ὅπερ τοῦ μυχοῦ τῆς κασπίας καὶ τῶν ἀρμενιακῶν καὶ μηδικῶν ὀρῶν διέχει περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους καὶ δοκεῖ τῆς αὐτῆς παραλίας μέχρι τῆς ἰνδικῆς ἀρκτικώτερον εἶναι σημεῖον, καὶ περίπλουν ἔχειν διὰ τῆς ἰνδικῆς δυνατὸν ὥς φησιν ὁ τῶν τόπων ἡγησάμενος τούτων πατροκλῆς. ἔτι τοίνυν ἡ βακτριανὴ χίλια στάδια ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἐκτείνεται, τὰ δὲ τῶν σκυθῶν πολὺ μείζω χώραν ταύτης ἐπέκεινα νέμεται. καὶ τελευτᾷ πρὸς τὴν βόρειον θάλατταν. νομαδικῶς μὲν ζῶντα δ' ὅμως. πῶς οὖν εἴπερ καὶ αὐτὰ τὰ βάκτρα τῆς οἰκουμένης ἐκπίπτει, εἴη ἂν τὸ διάστημα τοῦτο ἀπὸ τοῦ καυκάσου μέχρι τῆς βορείας θαλάττης τῆς διὰ βάκτρων ὀλίγῳ πλειόνων ἢ τετρακισχιλίων ταῦτα δὴ προστεθέντα τῷ ἀπὸ τῆς ἰέρνης ἐπὶ τὰ βόρεια σταδιασμῷ, ποιεῖ τὸ πᾶν διὰ τῆς ἀοικήτου διάστημα ἐπὶ τοῦ διὰ τῆς ἰέρνης σταδιασμοῦ, σταδίων ἑπτακισχιλίων καὶ ὀκτακοσίων. εἰ δὲ ἐάσειε τίς τούς τε τετρακισχιλίους σταδίους, αὐτά τε τὰ πρὸς τῷ καυκάσῳ μέρη τῆς βακτριανῆς, ἔσται βορειότερα τῆς ἰέρνης σταδίοις τρισχιλίοις καὶ ὀκτακοσίοις. τῆς δὲ κελτικῆς καὶ τοῦ βορυσθένους ὀκτακισχιλίοις καὶ ὀκτακοσίοις. φησὶ δέ γε ὁ ἵππαρχος κατὰ τὸν βορυσθένη καὶ τὴν κελτικὴν, ἐν ὅλαις ταῖς θεριναῖς νυξὶ παραυγάζεσθαι τὸ φῶς τοῦ ἡλίου περιϊστάμενον ἀπὸ τῆς δύσεως ἐπὶ τὴν ἀνατολήν. ταῖς δὲ χειμεριναῖς τροπαῖς πλεῖστον μετεωρίζεσθαι τὸν ἥλιον ἐπὶ πήχεις ἐννέα. ἐν δὲ τοῖς ἀπέχουσι τῆς μασσαλίας ἑξακισχιλίοις καὶ τριακοσίοις. οὓς ἐκεῖνος μὲν ἔτι κελτοὺς ὑπολαμβάνει. ἐγὼ δ' οἶμαι βρεττανοὺς εἶναι. βορειοτέρους τῆς κελτικῆς. σταδίοις χιλίοις πεντακοσίοις πολὺ μᾶλλον τοῦτο συμβαίνειν. ἐν δὲ ταῖς χειμεριναῖς ἡμέραις ὁ ἥλιος μετεωρίζεται πήχεις ἕξ τέτταρας δ' ἐν τοῖς ἀπέχουσι μασσαλίας ἐννακισχιλίους σταδίους, καὶ ἑκατόν. ἐλάττους δὲ τῶν τριῶν ἐν τοῖς ἐπέκεινα. οἳ καὶ κατὰ τὸν ἡμέτερον λόγον πολὺ ἂν εἶεν ἀρκτικώτεροι τῆς ἰέρνης. οὗτος δὲ πυθέᾳ πιστεύων, κατὰ τὰ νοτιώτερα τῆς βρεττανικῆς τὴν οἴκησιν ταύτην τίθησι, καί φησιν εἶναι τὴν μακροτάτην ἐνταῦθα ἡμέραν. ὡρῶν ἰσημερινῶν δέκα ἐννέα. ὀκτωκαίδεκα δὲ ὅπου τέτταρας ὁ ἥλιος μετεωρίζεται πήχεις. οὕς φησιν ἀπέχειν τῆς μασσαλίας ἐννακισχιλίους καὶ ἑκατὸν σταδίους. ὥσθ' οἱ νοτιώτατοι τῶν βρεττανῶν βορειότεροι τούτων εἰσίν. ἤτοι οὖν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου εἰσὶ τοῖς πρὸς τῷ καυκάσῳ βάκτροις ἐπί τινος πλησιάζοντος. εἴρηται γὰρ ὅτι κατὰ τοὺς περὶ δηίμαχον συμβήσεται βορειοτέρους εἶναι τῆς ἰέρνης τοὺς πρὸς τῷ καυκάσῳ βακτρίους, σταδίοις τρισχιλίοις ὀκτακοσίοις. προστεθέντων δὲ τούτων τοῖς, ἀπὸ μασσαλίας εἰς ἰέρνην γίνονται μύριοι δισχίλιοι πεντακόσιοι. τίς οὖν ἱστόρηκεν ἐν τοῖς ἐκεῖ τόποις λέγω δὲ τοῖς περὶ βάκτρα τοῦτο τὸ μῆκος τῶν μεγίστων ἡμερῶν. ἢ τὸ ἔξαρμα τοῦ ἡλίου τὸ κατὰ τὰς μεσουρανήσεις ἐν ταῖς χειμεριναῖς τροπαῖς. ὀφθαλμοφανῆ γὰρ πάντα ταῦτα ἰδιώτῃ. καὶ οὐ δεόμενα μαθηματικῆς σημειώσεως. ὥστε συνέγραψαν ἂν πολλοὶ καὶ τῶν παλαιῶν τῶν τὰ περσικὰ ἱστορούντων καὶ τῶν ὕστερον μέχρι, καὶ εἰς ἡμᾶς. πῶς δ' ἂν ἡ λεχθεῖσα εὐδαιμονία τῶν τόπων, ὁμολογεῖτο τοῖς τοιούτοις ἐν τῷ οὐρανῷ φαινομένοις. ἐκ δὲ τῶν εἰρημένων δῆλον ὡς καὶ σοφὸς ἀντιλέγει πρὸς τὴν ἀπόδειξιν. ὡς ἰσοδυναμούντων τῶν ζητουμένων, λαμβάνοντες πρὸς τὸ ἀποδεῖξαι τὸ ζητούμενον.

πάλιν

πολλὴ δ᾽ ἐκείνου τὸν δηΐμαχον ἰδιώτην ἐνδείξασθαι βουλομένου καὶ ἄπειρον τῶν τοιούτων. οἴεσθαι
γὰρ τὴν ἰνδικὴν μεταξὺ κεῖσθαι τῆς τε φθινοπωρινῆς ἰσημερίας καὶ τῶν τροπῶν τῶν χειμερινῶν.
μεγασθένει τε ἀντιλέγει φήσαντι ἐν τοῖς νοτίοις μέρεσι τῆς ἰνδικῆς, τάς τε ἄρκτους ἀποκρύπτεσθαι
καὶ τὰς σκιὰς ἀντιπίπτειν. μηδ᾽ ἕτερον γὰρ τούτων μηδαμοῦ τῆς ἰνδικῆς συμβαίνειν. ταῦτα δὲ φά-
σκοντος ἀμαθῶς λέγεσθαι. τό, τε γὰρ τὴν φθινοπωρινὴν τῆς ἐαρινῆς διαφέρειν οἴεσθαι κατὰ τὴν
διάστασιν τὴν πρὸς τὰς τροπὰς, ἀμαθές. τοῦ τε κύκλου τοῦ αὐτοῦ ὄντος, καὶ τῆς ἀνατολῆς. τοῦ τε διαστή-
ματος τοῦ ἐπὶ τῆς γῆς τροπικοῦ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ. ὧν μεταξὺ τίθησι τὴν ἰνδικὴν ἐκεῖνος, δειχθέντος
ἐν τῇ ἀναμετρήσει πολὺ ἐλάττονος τῶν δισμυρίων σταδίων, συμβαίνει ἂν καὶ κατ᾽ αὐτὸν ἐκεῖνον. ὅπερ
αὐτὸς νομίζει. οὐχ ὅπερ ἐκεῖνος. δυοῖν μὲν γὰρ ἢ καὶ τριῶν μυριάδων οὖσαν τὴν ἰνδικὴν, οὐδὲ πε-
σεῖν μεταξὺ τοσούτου διαστήματος, ὅσην δ᾽ αὐτὸς εἴρηκε πεσεῖν ἄν. τῆς δ᾽ αὐτῆς ἀγνοίας εἶναι καὶ τὸ μη-
δαμοῦ τῆς ἰνδικῆς ἀποκρύπτεσθαι φάσκειν τὰς ἄρκτους. μηδὲ τὰς σκιὰς ἀντιπίπτειν. ὅτε γε καὶ πεν-
τακισχιλίους προελθόντι ἀπ᾽ ἀλεξανδρείας εὐθὺς συμβαίνειν ἄρχεται. ταῦτα δὴ εἰπόντας εὐθύ-
νει πάλιν οὐκ εὖ ὁ ἵππαρχος. πρῶτον ἀπὸ τοῦ χειμερινοῦ τροπικοῦ τὸν θερινὸν δεξάμενος. εἶτ᾽ οὐκ οἰό-
μενος δεῖν μάρτυρι χρῆσθαι τῶν μαθηματικῶν ἀναστρολογήτῳ ἀνθρώπῳ. ὥσπερ τοῦ ἐρατοσθένους
προηγουμένως τὴν ἐκείνου μαρτυρίαν ἐγκρίνοντος. ἀλλ᾽ οὐ κοινῷ τινι ἔθει χρωμένου πρὸς τοὺς μα-
ταιολογοῦντας. εἷς γάρ τις τῶν πρὸς τοὺς ματαίως ἀντιλέγοντας ἐλέγχων ἐστὶν, ὅταν αὐτὴν τὴν ἐ-
κείνων ἀπόφασιν ὁποία ποτ᾽ ἐστὶ δείξωμεν ἡμῖν συνηγοροῦσαν. νυνὶ μὲν οὖν ὑποθέμενοι τὰ νοτιώ-
τατα τῆς ἰνδικῆς ἀνταίρειν τοῖς κατὰ μερόην, ὅπερ εἰρήκασι πολλοὶ καὶ πεπιστεύκασιν. ἐπεδείξα-
μεν τὰ συμβαίνοντα ἄτοπα. ἐπεὶ δὲ ὁ ἵππαρχος οὐδὲν ἀντειπὼν τῇ ὑποθέσει ταύτῃ νυνὶ, μετὰ
ταῦτα ἐν τῷ δευτέρῳ ὑπομνήματι οὐ συγχωρεῖ, σκεπτέον καὶ τοῦτον τὸν λόγον. φησὶ τοίνυν ἀνται-
ρόντων ἀλλήλοις ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου κειμένων, ἐπειδὰν τὸ μεταξὺ ᾖ μέγα διάστημα, μὴ δύνασθαι
γνωσθῆναι τοῦτ᾽ αὐτὸ ὅτι εἰσὶν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου οἱ τόποι, ἄνευ τῆς τῶν κλιμάτων συγκρί-
σεως τῆς κατὰ θάτερον τὸν τόπον. τὸ μὲν οὖν κατὰ μερόην κλίμα, φίλωνά τε τὸν συγγράψαντα τὸν
εἰς αἰθιοπίαν πλοῦν ἱστορεῖν. ὅτι πρὸ πέντε καὶ τεσσαράκοντα ἡμερῶν τῆς θερινῆς τροπῆς κατὰ κο-
ρυφὴν γίνεται ὁ ἥλιος. λέγειν δὲ καὶ τοὺς λόγους τοῦ γνώμονος. πρός τε τὰς τροπικὰς σκιὰς καὶ τὰς
ἰσημερινὰς, αὐτόν τε ἐρατοσθένη συμφωνεῖν ἔγγιστα τῷ φίλωνι. τὸ δ᾽ ἐν τῇ ἰνδικῇ κλίμα μηδένα ἱστορεῖν·
μηδ᾽ αὐτὸν ἐρατοσθένη. εἰ δὲ δὴ καὶ αἱ ἄρκτοι ἐκεῖ ἀμφότεραι ὡς οἴονται ἀποκρύπτονται, πιστεύοντες
τοῖς περὶ νέαρχον, μὴ δυνατὸν εἶναι ἐπὶ ταὐτοῦ παραλλήλου κεῖσθαι τήν τε μερόην καὶ ταῦτα
τὰ ἄκρα τῆς ἰνδικῆς. εἰ μὲν τοίνυν περὶ τῶν ἄρκτων ἀμφοτέρων ὅτι ἀποκρύπτονται συναποφαίνεται
τοῖς εἰποῦσιν ἐρατοσθένης, πῶς περὶ τοῦ ἐν τῇ ἰνδικῇ κλίματος οὐδεὶς ἀποφαίνεται. οὐδ᾽ αὐτὸς ἐρατο-
σθένης. οὗτος γὰρ ὁ λόγος περὶ τοῦ κλίματός ἐστιν. εἰ δ᾽ οὐ συναποφαίνεται, ἀπηλλάχθω τῆς αἰτίας.
οὐ συναποφαίνεται δέ γε. ἀλλὰ τοῦ δηϊμάχου φήσαντος, μηδαμοῦ τῆς ἰνδικῆς μήτ᾽ ἀποκρύπτεσθαι
τὰς ἄρκτους μήτ᾽ ἀντιπίπτειν τὰς σκιάς. ἅπερ ὑπείληφεν ὁ μεγασθένης, ἀπειρίαν αὐτοῦ καταγινώσκει.
τὸ συμπεπλεγμένον νομίζων ψεῦδος. ἐν ᾧ ὁμολογουμένως καὶ κατ᾽ αὐτὸν τὸν ἵππαρχον. τό γε μὴ
ἀντιπίπτειν τὰς σκιὰς ψεῦδος ἐμπέπλεκται. καὶ γὰρ εἰ μὴ τῇ μερόῃ ἀνταίρει, τῆς γε συήνης νοτιώ-
τερα εἶναι τὰ ἄκρα τῆς ἰνδικῆς συγχωρῶν φαίνεται. καὶ ἐν τοῖς ἑξῆς δὲ περὶ τῶν αὐτῶν ἐπιχειρῶν,
ἢ ταὐτὰ λέγει τοῖς ἐξεληλεγχθεῖσιν ὑφ᾽ ἡμῶν, ἢ λήμμασι προσχρῆται ψευδέσιν, ἢ ἐπιφέρει τὸ μὴ ἀκο-
λουθοῦν. οὔτε γὰρ τὸ ἀπὸ βαβυλῶνος εἰς θάψακον εἶναι σταδίους τετρακισχιλίους ὀκτακοσίους. ἐντεῦ-
θεν δὲ πρὸς τὴν ἄρκτον ἐπὶ τὰ ἀρμένια ὄρη, χιλίους ἑκατὸν ἀκολουθεῖ τὸ ἀπὸ βαβυλῶνος ἐπὶ τοῦ
δι᾽ αὐτῆς μεσημβρινοῦ, ἐπὶ τὰ ἀρκτικὰ ὄρη πλείους εἶναι τῶν ἑξακισχιλίων, οὔτε τὸ ἀπὸ θαψάκου ἐ-
πὶ τὰ ὄρη χιλίων καὶ ἑκατόν φησιν ἐρατοσθένης. ἀλλ᾽ εἶναί τι λοιπὸν ἀκαταμέτρητον. ὥσθ᾽ ἡ ἑξῆς ἔ-
φοδος ἐκ μὴ διδομένου λήμματος οὐκ ἂν ἐπεραίνετο. οὔτ᾽ ἀπεφήνατο οὐδαμοῦ ἐρατοσθένης τὴν θά-
ψακον τῆς βαβυλῶνος πρὸς ἄρκτους κεῖσθαι πλείοσιν ἢ τετρακισχιλίοις καὶ πεντακοσίοις σταδίοις. ἑ-
ξῆς δὲ συνηγορῶν ἐπὶ τοῖς ἀρχαίοις πίναξιν, οὐ τὰ λεγόμενα ὑπὸ τοῦ ἐρατοσθένους προφέρεται
περὶ τῆς τρίτης σφραγῖδος. ἀλλ᾽ ἑαυτῷ κεχαρισμένως πλάττει τὴν ἀπόφασιν πρὸς ἀνατροπὴν εὐ-
φυῆ. ὁ μὲν γὰρ ἀκολουθῶν τῇ θέσει τῇ προειρημένῃ τοῦ τε ταύρου καὶ τῆς ἀπὸ στηλῶν θαλάττης, διε-
λὼν τῇ γραμμῇ ταύτῃ τὴν οἰκουμένην δίχα. καὶ καλέσας τὸ μὲν, βόρειον μέρος. τὸ δὲ, νότιον, πει-
ρᾶται τούτων ἑκάτερον πάλιν τέμνειν εἰς τὰ δυνατὰ μέρη. καλεῖ δὲ ταῦτα σφραγῖδας. καὶ δὴ τοῦ
νοτίου μέρους πρώτην εἰπὼν σφραγῖδα τὴν ἰνδικὴν, δευτέραν δὲ τὴν ἀριανὴν ἐχούσας τι εὐπερί-
γραφον, ἴσχυσεν ἀμφοτέρων ἀποδοῦναι καὶ μῆκος καὶ πλάτος. τρόπον δέ τινα καὶ σχῆμα ὡς ἂν γεω-
μετρικός. τὴν μὲν γὰρ ἰνδικὴν, ῥομβοειδῆ φησι. διὰ τὸ τῶν πλευρῶν τὰς μὲν, θαλάττῃ κλύζεσθαι
τῇ τε νοτίῳ καὶ τῇ ἑῴᾳ, μὴ πάνυ κολπώδεις ἠϊόνας ποιούσῃ. τὰς δὲ λοιπὰς τὴν μὲν, τῷ ὄρει. τὴν δὲ,
τῷ ποταμῷ. κἀνταῦθα τοῦ εὐθυγράμμου σχήματος ὑποσωζομένου. τὴν δ᾽ ἀριανὴν ὁρῶν τάς γε τρεῖς
πλευρὰς ἔχουσαν εὐφυεῖς πρὸς τὸ ἀποτελέσαι παραλληλόγραμμον σχῆμα. τὴν δ᾽ ἑσπέριον οὐκ ἔχων

σημείοις ἀφορίζουσι διὰ τὸ ἐπαλλάττειν ἀλλήλοις τὰ ἔθνη, γραμμῇ τινι ὅμως δηλοῖ τῇ ἀπὸ κασπίων πυλῶν ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς καρμανίας τελευτώσῃ τὰ συνάπτοντα πρὸς τὸν περσικὸν κόλπον. ἑσπέριον μὲν οὖν καλεῖ τοῦτο τὸ πλευρόν. ἑῷον δὲ τὸ παρὰ τὸν ἰνδόν. παράλληλα δ' οὐ λέγει. οὐδὲ τὰ λοιπὰ τό, τε τῷ ὄρει γραφόμενον καὶ τὸ τῇ θαλάττῃ. ἀλλὰ μόνον τὸ μὲν, βόρειον. τὸ δὲ, νότιον. οὕτω δ' ὁλοσχερεῖ τινι τύπῳ τὴν δευτέραν ἀποδιδοὺς σφραγῖδα, πολὺ ταύτης ὁλοσχερέστερον ἀποδίδωσι τὴν τρίτην σφραγῖδα κατὰ πλείους αἰτίας. πρώτην μὲν τὴν λεχθεῖσαν, ὅτι οὐκ εὐκρινῶς ἀφώρισται ἡ ἀπὸ κασπίων πυλῶν ἐπὶ καρμανίαν. ἥτις κοινή ἐστι τρίτη, πρὸς τὴν δευτέραν σφραγῖδα πλευρά. ἔπειθ' ὅτι εἰς τὴν νότιον πλευρὰν ὁ περσικὸς ἐμπίπτει κόλπος. ὅπερ καὶ αὐτός φησιν. ὥστ' ἠνάγκασται τὴν ἐκ βαβυλῶνος λαβεῖν γραμμὴν, ὡς ἂν εὐθεῖάν τινα διὰ σούσων καὶ περσεπόλεως μέχρι τῶν ὅρων τῆς καρμανίας καὶ τῆς περσίδος, ᾗ δυνατὸς ἦν εὑρεῖν μεμετρημένην ὁδόν. σταδίων οὖσαν τὴν ὅλην μικρῷ πλειόνων ἢ ἐνακισχιλίων. ἣν νότιον μὲν καλεῖ πλευράν. παράλληλον δ' οὐ λέγει τῇ βορείῳ. δῆλον δ' ὅτι οὐδ' ὁ εὐφράτης ᾧ τὸ ἑσπέριον ἀφορίζει πλευρὸν, σύνεγγύς ἐστιν εὐθείᾳ γραμμῇ. ἀλλ' ἀπὸ τῶν ὀρῶν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν ῥυεὶς εἶτ' ἐπιστρέφει πρὸς ἕω. καὶ πάλιν πρὸς νότον μέχρι τῆς εἰς θάλατταν ἐκβολῆς. δηλοῖ δὲ τὸ μὴ εὐθύπορον τοῦ ποταμοῦ, φράζων τὸ σχῆμα τῆς μεσοποταμίας. ὃ ποιοῦσι συμπίπτοντες εἰς ἓν, ὅ, τε τίγρις καὶ ὁ εὐφράτης. ὑπηρεσίῳ παραπλήσιον ὥς φησι. καὶ μὴν τὸ ἀπὸ θαψάκου μέχρι τῆς ἀρμενίας, οὐδὲ πᾶν μεμετρημένον ἔχει τὸ ἑσπέριον πλευρὸν τὸ ἀφοριζόμενον ὑπὸ τοῦ εὐφράτου. ἀλλά φησι τὸ πρὸς τῇ ἀρμενίᾳ μέρος καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς ὄρεσι μὴ ἔχειν πόσον ἐστὶ διὰ τὸ ἀμέτρητον εἶναι. διὰ δὴ πάντα ταῦτα, τυπωδῶς φησὶν ἀποδιδόναι τὴν τρίτην μερίδα. καὶ γὰρ καὶ τὰ διαστήματα ἅ φησιν ἐκ πολλῶν συναγαγεῖν τῶν τοὺς σταθμοὺς πραγματευσαμένων ὧν τινὰς καὶ ἀνεπιγράφους καλεῖν. ἀγνωμονεῖν δὴ δόξειεν ἂν ὁ ἵππαρχος πρὸς τὴν τοιαύτην ὁλοσχέρειαν γεωμετρικῶς ἀντιλέγων. ᾧ χάριν εἰδέναι δεῖ τοῖς καὶ ὁπωσοῦν ἀπαγγείλασιν ἡμῖν τὴν τῶν τόπων φύσιν. ὅταν δὲ δὴ μηδ' ἐξ ὧν ἐκεῖνος λέγει λαμβάνῃ τὰς γεωμετρικὰς ὑποθέσεις, ἀλλ' ἑαυτῷ πλάσας, ἐκφανέστερον ἂν τὸ φιλότιμον καταμηνύοιτο. ὁ μὲν δὴ οὕτως φησὶ τὴν τρίτην μερίδα τυπωδῶς ἀποδίδοσθαι, μυρίων σταδίων ἀπὸ κασπίων πυλῶν ἐπὶ τὸν εὐφράτην. κατὰ μέρος δὲ διαιρῶν ὡς ἀναγεγραμμένην εὗρε τὴν μέτρησιν, οὕτω τίθησιν ἔμπαλιν τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ εὐφράτου ποιησάμενος. καὶ τῆς κατὰ θάψακον διαβάσεως αὐτοῦ. μέχρι μὲν δὴ τοῦ τίγριδος ὅπου ἀλέξανδρος διέβη σταδίους δισχιλίους καὶ τετρακοσίους γράφει. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τοὺς ἑξῆς τόπους διὰ γαυγαμήλων καὶ τοῦ λύκου καὶ ἀρβήλων καὶ ἐκβατάνων, ᾗ δαρεῖος ἐκ τῶν γαυγαμήλων ἔφυγε μέχρι κασπίων πυλῶν, τοὺς μυρίους ἐκπληροῖ τριακοσίους μόνον πλεονάσας. τὸ μὲν δὴ βόρειον πλευρὸν οὕτω καταμετρεῖ. οὐ παράλληλον τοῖς ὄρεσι θεὶς. οὐδὲ τῇ διὰ στηλῶν καὶ ἀθηνῶν καὶ ῥόδου γραμμῇ. ἡ γὰρ θάψακος πολὺ τῶν ὀρῶν ἀφέστηκε. συμπίπτει δὲ καὶ τὸ ὄρος καὶ ἡ ἀπὸ θαψάκου ὁδὸς ἐπὶ τὰς κασπίους πύλας. καὶ τά γε προσάρκτια μέρη τοῦ ὄρους, ταῦτ' ἐστίν. ἀποδοὺς δὲ τὸ βόρειον οὕτω πλευρόν. τὸ δὲ νότιόν φησι παρὰ μὲν τὴν θάλατταν οὐκ ἔστι λαβεῖν. διὰ τὸ τὸν περσικὸν ἐμπίπτειν κόλπον. ἀπὸ βαβυλῶνος δὲ διὰ σούσων καὶ περσεπόλεως καὶ τῶν ὁρίων τῆς τε περσίδος καὶ τῆς καρμανίας, σταδίους εἶναι ἐνακισχιλίους, νότιον μὲν λέγων. παράλληλον δ' οὐ λέγων τῷ βορείῳ τὸν νότιον. τὴν δὲ διαφωνίαν τοῦ μήκους φησὶ συμβαίνειν, τοῦ τε βορείου τεθέντος πλευροῦ καὶ τοῦ νοτίου. διὰ τὸ τὸν εὐφράτην μέχρι τινὸς πρὸς μεσημβρίαν ῥυέντα πρὸς τὴν ἕω πολὺ ἐγκλίνειν. τῶν δὲ πλαγίων πλευρῶν τὴν ἑσπερίαν λέγει πρῶτον. ἣν ὁποία τίς ἐστιν, εἴτε μία, εἴτε δύο, ἐν μέσῳ πάρεστι σκοπεῖν. ἀπὸ γὰρ τῆς κατὰ θάψακον φησὶ διαβάσεως παρὰ τὸν εὐφράτην εἰς μὲν βαβυλῶνα σταδίους εἶναι τετρακισχιλίους ὀκτακοσίους. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ εὐφράτου καὶ πόλιν τερηδόνα τρισχιλίους. τὰ δ' ἀπὸ θαψάκου πρὸς ἄρκτους, μέχρι μὲν τῶν ἀρμενίων πυλῶν καταμεμετρῆσθαι. καὶ εἶναι ὡς χιλίους ἑκατόν. τοὺς δὲ διὰ γορτυναίων καὶ ἀρμενίων μηκέτι. διὸ δὴ παραλείπειν αὐτούς. τοῦ δὲ πρὸς ἕω πλευροῦ, τὸ μὲν, διὰ τῆς περσικῆς κατὰ μῆκος ἀπὸ τῆς ἐρυθρᾶς ὡς ἐπὶ μηδείαν καὶ τὰς ἄρκτους, οὐκ ἔλαττον εἶναι δοκεῖ τῶν ὀκτακισχιλίων. ἀπὸ δέ τινων ἀκρωτηρίων, καὶ ὑπὲρ τοὺς ἐνακισχιλίους. τὸ δὲ λοιπὸν διὰ τῆς παραιτακηνῆς καὶ μηδείας ἐπὶ κασπίους πύλας ὡς τρισχιλίων. τὸν δὲ τίγριν ποταμὸν καὶ τὸν εὐφράτην, ῥέοντας ἐκ τῆς ἀρμενίας πρὸς μεσημβρίαν ἐπειδὰν παραμείψωνται τὰ τῶν γορτυναίων ὄρη κύκλον μέγαν περιβαλλομένους, καὶ ἐμπεριλαβόντας χώραν πολλὴν, τὴν μεσοποταμίαν, ἐπιστρέφειν πρὸς χειμερινὴν ἀνατολὴν καὶ τὴν μεσημβρίαν. πλέον δὲ τὸν εὐφράτην. γενόμενον δὲ τοῦτον ἔγγιον ἀεὶ τοῦ τίγριδος κατὰ τὸ σεμιράμιδος διατείχισμα καὶ κώμην καλουμένην ὦπιν, διασχόντα ταύτης ὅσον διακοσίους σταδίους καὶ ῥυέντα διὰ βαβυλῶνος ἐκπίπτειν εἰς τὸν περσικὸν κόλπον. γίνεται δέ φησι τὸ σχῆμα τῆς βαβυλωνίας καὶ μεσοποταμίας, ὑπηρεσίῳ παραπλήσιον. ὁ μὲν δὴ ἐρατοσθένης τοιαῦτ' εἴρηκε. περὶ δὲ τῆς τρίτης σφραγῖδος, καὶ ἄλλα μέν τινα ἁμαρτήματα ποιεῖ. περὶ ὧν ἐπισκεψόμεθα. ἃ δὲ ἵππαρχος

προφέρει αὐτῷ οὐ πάνυ· σκοπῶμεν δ' ἃ λέγει· βουλόμενος βεβαιοῦν τὸ ἐξ ἀρχῆς, ὅτι οὐ μετατετέον
τὴν ἰνδικὴν ἐπὶ τὰ νοτιώτερα ὡς τῷ ἐρατοσθένης ἀξιοῖ· σαφὲς ἂν γενέσθαι τοῦτο μάλιστα φησὶ ἐκ
τῶν αὐτὸς ἐκεῖνος προφέρεται. τὴν γὰρ τρίτην μερίδα κατὰ τὴν βόρειον πλευρὰν εἰπόντα ἀφορί-
ζεσθαι ὑπὸ τῆς ἀπὸ κασπίων πυλῶν ἐπὶ τὸν εὐφράτην γραμμῆς σταδίων μυρίων οὔσης, μετὰ ταῦτα
ἐπιφέρειν, ὅτι τὸ νότιον πλευρὸν τὸ ἀπὸ βαβυλῶνος εἰς τοὺς ὅρους τῆς ἀρμενίας, μικρῷ πλειόνων ἐ-
στὶν ἢ ἐννακισχιλίων. τὸ δὲ πρὸς δύσει πλευρὸν ἀπὸ θαψάκου παρὰ τὸν εὐφράτην ἐστὶν εἰς βαβυλῶνα, τε-
τρακισχίλιοι ὀκτακόσιοι στάδιοι. καὶ ἑξῆς ἐπὶ τὰς ἐκβολὰς τρισχίλιοι. τὰ δὲ πρὸς ἄρκτον ἀπὸ θαψάκου,
τὸ μὲν, ἀναμεμέτρηται μέχρι χιλίων ἑκατόν. τὸ λοιπὸν δ' οὐκέτι. ἐπεὶ τοίνυν φησὶ τὸ μὲν βόρειόν ἐστι πλευ-
ρὸν τῆς τρίτης μερίδος ὡς μυρίων. ἡ δὲ τούτῳ παράλληλος ἀπὸ βαβυλῶνος εὐθεῖα, μέχρι ἀνατολικοῦ
πλευροῦ, συνελογίσθη μικρῷ πλειόνων ἢ ἐννακισχιλίων, δῆλον ὅτι ἡ βαβυλὼν, οὐ πολλῷ πλείοσιν ἢ
χιλίοις σταδίοις ἐστὶν ἀνατολικωτέρα τῆς κατὰ θάψακον διαβάσεως. ἐροῦμεν δ' ὅτι εἰ μὲν ἐπὶ τῆς αὐτῆς
μεσημβρινῆς εὐθείας ἐπ' ἀκριβὲς ἐλαμβάνοντο αἵ τε κάσπιοι πύλαι καὶ οἱ ὅροι τῶν καρμανίων καὶ περ-
σῶν, πρὸς ὀρθάς τε ἤγετο ἀπὸ τῆς λεχθείσης μεσημβρινῆς εὐθείας, ἥτε ἐπὶ θάψακον, καὶ ἡ ἐπὶ βαβυ-
λῶνα, συνέβαινεν ἂν τοῦτο. ἡ γὰρ προσεκβαλλομένη τῇ διὰ βαβυλῶνος μέχρι τῆς διὰ θαψάκου εὐθείας
μεσημβρινῆς, ἴση ἂν ἦν πρὸς αἴσθησιν. ἡ παρισός γε τῇ ἀπὸ κασπίων πυλῶν εἰς θάψακον. ὥστε τῇ ὑπε-
ροχῇ ἐγίνετ' ἂν ἀνατολικωτέρα ἡ βαβυλὼν τῆς θαψάκου. ᾗ ὑπερέχει ἡ ἐκ κασπίων πυλῶν, εἰς θάψακον,
τῆς ἐκ τῶν καρμανίων ὁρῶν εἰς βαβυλῶνα. ἀλλ' οὔτε τὴν διορίζουσαν γραμμὴν τὸ ἑσπέριον πλευρὸν
τῆς ἀριανῆς ἐπὶ μεσημβρινοῦ κειμένην εἴρηκεν ἐρατοσθένης, οὐ δὲ τὴν ἀπὸ κασπίων πυλῶν ἐπὶ θάψα-
κον, πρὸς ὀρθὰς τῇ διὰ τῶν κασπίων πυλῶν μεσημβρινῇ. ἀλλὰ μᾶλλον τὴν τῷ ὄρει γραφομένην. πρὸς
ἣν ἡ ἐπὶ θάψακον, γωνίαν ποιεῖ. ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ σημείου κατηγμένη ἀφ' οὗ καὶ ἡ τοῦ ὄρους γραμμή. οὔθ' ἡ ἐ-
πὶ βαβυλῶνα ἀπὸ τῆς καρμανίας, ἠγμένη παράλληλος εἴρηται τῇ ἐπὶ θάψακον ἠγμένῃ. οὐδ' εἰ πα-
ράλληλος ἦν, μὴ ὀρθὴν δὲ τὴν διὰ κασπίων πυλῶν μεσημβρινὴν, οὐδὲν ἂν ἐγίνετο πλέον πρὸς τὸν συλ-
λογισμόν. ὁ δὲ, ταῦτα λαβὼν ἐξ ἑτοίμου καὶ δείξας ὡς οἴεται, διότι ἡ βαβυλὼν κατὰ ἐρατοσθένη
θαψάκου ἀνατολικωτέρα ἐστὶ, μικρῷ πλείοσιν ἢ χιλίοις σταδίοις, πάλιν ἄλλως πλάττει λῆμμα ἑαυτῷ
πρὸς τὴν ἑξῆς ἀπόδειξιν. καί φησιν. ἐὰν νοηθῇ ἀπὸ θαψάκου ἐπὶ μεσημβρίαν εὐθεῖα ἀγομένη, καὶ ἀ-
πὸ βαβυλῶνος ἐπὶ ταύτην κάθετος, τρίγωνον ὀρθογώνιον ἔσεσθαι, συνεστηκὸς ἔκ τε τῆς ἀπὸ θαψάκου
ἐπὶ βαβυλῶνα τεινούσης πλευρᾶς, καὶ τῆς ἀπὸ βαβυλῶνος καθέτου ἐπὶ τὴν διὰ θαψάκου μεσημ-
βρινὴν γραμμὴν ἠγμένης κατ' αὐτῆς τῆς διὰ θαψάκου μεσημβρινῆς. τούτου δὲ τοῦ τριγώνου τὴν μὲν
ὑποτείνουσαν τῇ ὀρθῇ, τὴν ἀπὸ θαψάκου εἰς βαβυλῶνα τίθησιν. ἥν φησι τετρακισχιλίων ὀκτακοσίων
εἶναι. τὴν δ' ἐκ βαβυλῶνος εἰς τὴν διὰ θαψάκου μεσημβρινὴν γραμμὴν κάθετον, μικρῷ πλειόνων ἢ χι-
λίων. ὅσων ἦν ἡ ὑπεροχὴ τῆς ἐπὶ θάψακον πρὸς τὴν μέχρι βαβυλῶνος. ἐκ δὲ τούτων καὶ τὴν λοιπὴν
τῶν περὶ τὴν ὀρθὴν συλλογίζεται, πολλαπλάσιον οὖσαν τῆς λεχθείσης καθέτου. προστίθησι δὲ ταύτῃ
τὴν ἀπὸ θαψάκου πρὸς ἄρκτον ἐκβαλλομένην μέχρι τῶν ἀρμενίων ὀρῶν. ἧς, τὸ μὲν, ἔφη μεμετρῆσθαι
ἐρατοσθένης καὶ εἶναι χιλίων ἑκατὸν, τὸ δ' ἀμέτρητον ἐᾷ. οὗτος δ' ἐπὶ τοὐλάχιστον ὑποτίθεται χι-
λίων. ὥστε τὸ συνάμφω δισχιλίων καὶ ἑκατὸν γίνεσθαι. ὁ προσθεὶς τῇ ἐπ' εὐθείας πλευρᾷ τοῦ τρι-
γώνου μέχρι τῆς καθέτου τῆς βαβυλῶνος πολλῶν χιλιάδων λογίζεται διάστημα τὸ ἀπὸ τῶν ἀρμενί-
ων ὀρῶν καὶ τοῦ δι' ἀθηνῶν παραλλήλου μέχρι τῆς ἐκ βαβυλῶνος καθέτου. ἥτις ἐπὶ τοῦ διὰ βαβυλῶ-
νος παραλλήλου ἵδρυται. τὸ δέ γε ἀπὸ τοῦ δι' ἀθηνῶν παραλλήλου ἐπὶ τὸν διὰ βαβυλῶνος δείκνυ-
σιν οὐ μείζονος σταδίων δισχιλίων τετρακοσίων. ὑποτεθέντος τοῦ μεσημβρινοῦ παντὸς τοσούτων σταδίων
ὅσων ἐρατοσθένης φησίν. εἰ δὲ τοῦτο, οὐκ ἂν ἦν τὰ ὄρη τὰ ἀρμένια καὶ τὰ τοῦ ταύρου ἐπὶ τοῦ δι' ἀθη-
νῶν παραλλήλου ὡς ἐρατοσθένης. ἀλλὰ πολλαῖς χιλιάσι σταδίων ἀρκτικώτερα κατ' αὐτὸν ἐκεῖνον. ἐν-
ταῦθα δὴ πρὸς τὸ τοῖς ἀνεσκευασμένοις λήμμασι προσκεχρῆσθαι πρὸς τὴν τοῦ ὀρθογωνίου τριγώνου τά-
ξιν, καὶ τοῦτο λαμβάνει πρὸς τὸ μὴ διδόμενον. τὸ τὴν ὑποτείνουσαν τῇ ὀρθῇ γωνίᾳ τὴν ἀπὸ θαψάκου
γραμμὴν εὐθεῖαν εἶναι μέχρι βαβυλῶνος ἐν σταδίοις τετρακισχιλίοις ὀκτακοσίοις. παρά τε γὰρ τὸν
εὐφράτην φησὶν εἶναι τὴν ὁδὸν ταύτην ὁ ἐρατοσθένης καὶ τὴν μεσοποταμίαν σὺν τῇ βαβυλωνίᾳ,
μεγάλῳ κύκλῳ περιέχεσθαι λέγων, ὑπό τε τοῦ εὐφράτου καὶ τοῦ τίγριδος. τὸ πλέον δὲ τῆς περιοχῆς
ὑπὸ τοῦ εὐφράτου συμβαίνει φησίν. ὥσθ' ἡ ἀπὸ θαψάκου εἰς βαβυλῶνα εὐθεῖα οὔτ' ἂν παρὰ τὸν εὐφρά-
την εἴη, οὔτ' ἂν τοσούτων σταδίων οὐδ' ἐγγύς. ἀνατέτραπται οὖν ὁ συλλογισμός. καὶ μὴν εἴρηταί γε ὅτι οὐχ οἷόν
τε δυοῖν δεδομένων γραμμῶν ἀπὸ τῶν κασπίων πυλῶν κατάγεσθαι. τὴν μὲν, ἐπὶ θάψακον. τὴν δ' ἐπὶ τὰ
τῶν ἀρμενίων ὄρη τὰ κατάλληλα τῇ θαψάκῳ, ἀπέχοντα τῆς θαψάκου τοὐλάχιστον κατ' αὐτὸν τὸν ἵππαρ-
χον δισχιλίους καὶ ἑκατὸν σταδίους ἀμφοτέρας παραλλήλους εἶναι καὶ ἀλλήλαις καὶ τῇ διὰ βαβυλῶνος. ἣν νότιον
πλευρὰν ἐρατοσθένης ἐκάλεσεν. ἐκεῖνος μὲν οὖν οὐκ ἔχων καταμεμετρημένην εἰπεῖν τὴν παρὰ τὰ
ὄρη ὁδὸν, τὴν δ' ἀπὸ θαψάκου ἐπὶ κασπίους πύλας, ταύτην εἶπε καὶ προσέθηκε τὸ, ὡς τυπωδῶς

ἀπεῖν. ἄλλως τε τῷ βουλομένῳ τὸ μῆκος εἰπεῖν τῆς μετὰ τὴν ἀριανὴν μέχρι εὐφράτου χώρας οὐ πολὺ
διέφερε ταύτην ἢ ἐκείνην καταμετρεῖν. ὁ δ' ὡς παραλλήλους ὑπακούων λέγεσθαι, τελέως ἂν δόξειε
καταγινώσκειν παιδικὴν ἀμαθίαν τ' ἀνθρώπου. ταῦτα μὲν οὖν δεῖ ἐᾶν ὡς παιδικά. ἃ δ' ἄν τις αἰτιάσαι-
το τοῦ ἐρατοσθένους, τοιαῦτά ἐστι. καθάπερ γὰρ ἡ κατὰ μέλος τομὴ, τῆς ἄλλως κατὰ μέρος διαφέρει.
διότι ἡ μὲν καὶ τὰ μέρη λαμβάνει περιγραφὴν ἔχοντα φυσικὴν ὀρθώσει τινὶ καὶ τύπῳ σημειώδει καθ'
ὃ καὶ τοῦτ' εἴρηται. τὸν δὲ, διαμελεϊστὶ ταμών. ἡ δ' οὐδὲν ἔχει τοιοῦτον, χρώμεθα δ' οἰκείως ἑκατέρᾳ πρὸς τὸν
καιρὸν, καὶ τὴν χρείαν σκοποῦντες, οὕτως ἐπὶ τῶν γεωγραφικῶν. δεῖ μὲν τομὰς ποιεῖσθαι τῶν μερῶν
τὰ καθ' ἕκαστα ἐπιόντας. μιμεῖσθαι δὲ τὰς κατὰ μέλος τομὰς μᾶλλον, ἢ τὰς, ὡς ἔτυχε. τὸ γὰρ σημειῶ-
δες καὶ τὸ εὐπερίγραφον ἐκεῖθεν λαβεῖν ἐστιν, οὗ χρείαν ἔχει ὁ γεωγράφος. εὐπερίγραφον δὲ ὅταν ἢ ποτα-
μοῖς ἢ ὄρεσιν ἢ θαλάττῃ δυνατὸν ᾖ, καὶ ἔθνει δὲ ἢ ἔθνεσι. καὶ μεγέθει ποσῷ. καὶ σχήματι, ὅπου τοῦτο δυνατόν.
πανταχοῦ δὲ, ἀντὶ τοῦ γεωμετρικῶς τὸ ἁπλῶς καὶ ὁλοσχερῶς ἱκανόν. μέγεθος γὰρ οὖν ἱκανόν ἐστιν
ἂν τὸ μέγιστον εἴπῃς μῆκος καὶ πλάτος ὡς τῆς οἰκουμένης, ἑπτὰ μυριάδων εἰ τύχοι μῆκος. πλάτος δ' ἔλατ-
τον ἢ ἥμισυ μικρῷ τοῦ μήκους. σχῆμα δ' ἄν τι τῶν γεωμετρικῶν τινὶ σχημάτων εἰκάσῃ. ἴσως τὴν σικελίαν
τριγώνῳ. ἢ τῶν ἄλλων γνωρίμων τινὶ σχημάτων. οἷον τὴν ἰβηρίαν, βύρσῃ. τὴν δὲ πελοπόννησον, πλατάνου
φύλλῳ. ὅσῳ δ' ἂν μεῖζον ᾖ τὸ τεμνόμενον, τοσῷδε καὶ ὁλοσχερεστέρας πρέποι ἂν ποιεῖσθαι τὰς τομάς. ἡ
μὲν οὖν οἰκουμένη δίχα διῄρηται. τῷ τε ταύρῳ καὶ τῇ ἐπὶ στήλας θαλάττῃ καλῶς, καὶ τοῦ νοτίου μέ-
ρους. καὶ ἡ μὲν ἰνδικὴ περιώρισται πολλοῖς. καὶ γὰρ ὄρει καὶ ποταμῷ καὶ θαλάττῃ. καὶ ἑνὶ ὀνόματι, ὡς ἔ-
θνος ἑνὸς ἔθνους. ὥστε καὶ τετράπλευρος ὀρθῶς λέγεται. καὶ ῥομβοειδής. ἡ δ' ἀριανὴ ἧττον μὲν τὸ εὐ-
περίγραφον ἔχει, διὰ τὸ τὴν ἑσπερίαν πλευρὰν συγκεχύσθαι. διώρισται δ' ὅμως ταῖς τε τρισὶ πλευ-
ραῖς ὡς ἂν εὐθείαις, καὶ τῷ ὀνόματι ὡς ἂν ἑνὸς ἔθνους. ἡ δὲ τρίτη σφραγὶς τελέως ἀπερίγραφός ἐστιν.
οὕτω γε ἀφορισθεῖσα. ἥ τε γὰρ κοινὴ πλευρὰ αὐτῇ τε καὶ τῇ ἀριανῇ συγκέχυται ὡς προείρηται. καὶ
ἡ νότιος πλευρὰ ἀργότατα εἴληπται. οὔτε γὰρ περιγράφει τὴν σφραγῖδα, διὰ μέσης τε αὐτῆς βαδί-
ζουσα καὶ πολλὰ μέρη ἀπολείπουσα πρὸς νότον. οὐ τὸ μῆκος ὑπογράφει τὸ μέγιστον. τὸ γὰρ προσάρ-
κτιον πλευρὸν μεῖζον, οὔθ' ὁ εὐφράτης ἑσπέριόν ἐστι πλευρόν. οὐδ' εἰ ἐπ' εὐθείας ῥέοι, τῶν ἄκρων αὐτοῦ
μὴ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ μεσημβρινοῦ κειμένων. τί γὰρ μᾶλλον ἑσπέριον ἢ νότιον. χωρὶς δὲ τούτων ὀλίγης οὔ-
σης τῆς ἐπὶ θάλατταν λοιπῆς, τὴν κιλίκιον καὶ τὴν συριακὴν, τὸ μὴ μέχρι δεῦρο προάγειν δυεῖν τὴν
σφραγῖδα οὐ πιθανόν. τῆς τε σεμιράμιδος καὶ τοῦ νίνου σύρων λεγομένων. ὧν τῆς μὲν, ἡ βαβυλὼν κτί-
σμα καὶ βασίλειον. τοῦ δὲ, νῖνος ὡς ἂν μητρόπολις τῆς συρίας. καὶ τῆς διαλέκτου δὲ μέχρι νῦν διαμε-
νούσης τῆς αὐτῆς. τοῖς τε ἐκτὸς τοῦ εὐφράτου καὶ τοῖς ἐντὸς, τὸ ἐνταῦθα μέντοι τοιούτῳ διασπᾶν με-
ρισμῷ ἔθνος γνωριμώτατον. καὶ τὰ μέρη συνάπτειν τοῖς ἀλλοεθνέσιν, ἥκιστα δ' ἂν πρέποι. οὐ δὲ γὰρ
ὑπὸ μεγέθους ἀπηναγκάσθαι λέγοι ἄν. καὶ γὰρ τὸ μέχρι θαλάττης, οὐ μὴν πω ἂν ἐξισάζοιτο τῇ ἰνδικῇ.
ἀλλ' οὐδὲ τῇ ἀριανῇ. προσλαβὼν καὶ τὸ μέχρι τῶν ὅρων τῆς εὐδαίμονος ἀραβίας καὶ τῆς αἰγύπτου.
ὥστε πολὺ κρεῖττον ἦν μέχρι δεῦρο προελθεῖν τῆς τρίτης εἰπόντας σφραγῖδος, τοσαύτῃ προσθήκῃ
τῇ μέχρι τῆς συριακῆς θαλάττης. τὸ μὲν νότιον πλευρὸν, οὐχ ὥσπερ ἐκεῖνος ἔχον εἶπεν οὐδ' ἐπ' εὐθείας.
ἀλλ' ἀπὸ τῆς καρμανίας εὐθὺς τὴν δεξιὰν παραλίαν. εἰσπλέοντι γὰρ τὸν περσικὸν κόλπον μέχρι τῆς
ἐκβολῆς τοῦ εὐφράτου, καὶ μετὰ ταῦτα τοῖς ὁρίοις τῆς μεσήνης καὶ τῆς βαβυλωνίας συνάπτον. ἥπερ
ἐστὶν ἀρχὴ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ διορίζοντος τὴν εὐδαίμονα ἀραβίαν ἀπὸ τῆς ἄλλης ἠπείρου. εἶτ' ἐφεξῆς αὐτὸν
τοῦτον διεξιὸν διήκοντα μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ ἀραβίου κόλπου καὶ πηλουσίου. καὶ ἔτι τοῦ κανωβικοῦ στόματος
τοῦ νείλου. τοῦτο μὲν τὸ νότιον πλευρόν. τὸ δὲ λοιπὸν ἑσπέριον. τὴν ἀπὸ τοῦ κανωβικοῦ στόματος μέχρι τῆς
κιλικίας παραλίαν. τετάρτη δ' ἂν εἴη σφραγὶς ἡ συνεστῶσα ἔκ τε τῆς εὐδαίμονος ἀραβίας καὶ τοῦ ἀ-
ραβίου κόλπου καὶ τῆς αἰγύπτου πάσης καὶ τῆς αἰθιοπίας. ταύτης δὲ τῆς μερίδος, μῆκος μὲν ἔσται τὸ
ἀφοριζόμενον, ὑπὸ δυεῖν μεσημβρινῶν. ὁ μὲν γὰρ γράφεται, διὰ τοῦ δυσμικωτάτου σημείου, τοῦ ἐπ' αὐ-
τῆς. ὁ δὲ, διὰ τοῦ ἑωθινωτάτου. πλάτος δὲ τὸ μεταξὺ δυεῖν παραλλήλων. ὧν ὁ μὲν, γράφεται διὰ τοῦ βο-
ρειοτάτου σημείου. ὁ δὲ, διὰ τοῦ νοτιωτάτου. ἐπὶ γὰρ τῶν ἀνωμάλων σχημάτων ἐφ' ὧν πλευραῖς οὐ δυνατὸν
ἀφορίσαι πλάτος καὶ μῆκος, οὕτω τὸ μέγεθος ἀφοριστέον. καθόλου δὲ νοητέον. ὅτι οὐχ ὡσαύτως λέγεται
μῆκος καὶ πλάτος, ἐπὶ ὅλου καὶ μέρους. ἀλλ' ἐφ' ὅλου μὲν τὸ μεῖζον διάστημα, καλεῖται μῆκος. τὸ δ' ἔλαττον,
πλάτος, ἐπὶ μέρους δὲ μῆκος μὲν τὸ παράλληλον τῷ τοῦ ὅλου μήκει τμῆμα ἐκείνου ὁπότερον ἂν ᾖ μεῖζον.
κἂν τὸ ληφθὲν διάστημα ἐν τῷ πλάτει μεῖζον ᾖ τοῦ ληφθέντος ἐν τῷ μήκει διαστήματος. διὸ καὶ τῆς οἰ-
κουμένης ἀπ' ἀνατολῆς ἐπὶ δύσιν μηκυνομένης, ἀπὸ δὲ ἄρκτων ἐπὶ νότον πλατυνομένης. καὶ τοῦ μὲν μή-
κους ἐπὶ παραλλήλου τινὸς τῷ ἰσημερινῷ γραφομένου. τοῦ δὲ πλάτους ἐπὶ μεσημβρινοῦ, οὐ δεῖ καὶ
τῶν μερῶν λαμβάνεσθαι. μήκη μὲν τὰ παράλληλα τῷ μήκει τμήματα αὐτοῦ. πλάτη δὲ τὰ τῷ πλά-
τει. οὕτω γὰρ ἂν ἄμεινον ὑπογράφοιτο. πρῶτον μὲν τὸ μέγεθος τῆς οἰκουμένης ὅλης. ἔπειτα καὶ ἡ διά-
θεσις καὶ τὸ σχῆμα τῶν μερῶν καθ' ἃ μὲν ἀπολείπειν, καθ' ἃ δὲ πλεονάζειν, φαινομένων τῇ τοιαύτῃ

παραθέσει. Ἐρατοσθένης δὲ τὸ μὲν τῆς οἰκουμένης λαμβάνει μῆκος ἐπὶ τῆς διὰ στηλῶν καὶ Κασπίων πυλῶν, καὶ Καυκάσου γραμμῆς, ὡς ἂν εὐθείας. τὸ δὲ τῆς τρίτης μερίδος ἐπὶ τῆς διὰ Κασπίων πυλῶν καὶ Θαψάκου. τὸ δὲ τῆς τετάρτης, ἐπὶ τῆς διὰ Θαψάκου καὶ ἡρώων πόλεως, μέχρι τῆς μεταξὺ τῶν στομάτων τοῦ Νείλου, ἣν ἀνάγκη καταστρέφειν εἰς τοὺς περὶ Κάνωβον καὶ Ἀλεξάνδρειαν τόπους. ἐνταῦθα γάρ ἐστι τὸ ἔσχατον στόμα τὸ καλούμενον Κανωβικόν τε καὶ Ἡρακλεωτικόν. εἴτ' οὖν ἐπ' εὐθείας ἀλλήλοις τὰ μήκη τίθησιν, εἴθ' ὡς ἂν γωνίαν ποιοῦντα κατὰ Θάψακον. ἀλλ' ὅτι γε οὐ παράλληλον οὐδέτερον τῷ τῆς οἰκουμένης μήκει, φανερόν ἐστιν ἐξ αὐτῶν ὧν εἴρηκεν αὐτός. τὸ μὲν γὰρ τῆς οἰκουμένης μῆκος διὰ τοῦ Ταύρου γράφει. καὶ τῆς ἐπ' εὐθείας μέχρι στηλῶν θαλάττης, κατὰ γραμμὴν τὴν διὰ τοῦ Καυκάσου καὶ Ῥόδου καὶ Ἀθηνῶν. ἀπὸ δὲ Ῥόδου εἰς Ἀλεξάνδρειαν κατὰ τὸν δι' αὐτῶν μεσημβρινὸν, πολὺ ἐλάττους φησὶ τῶν τετρακισχιλίων εἶναι σταδίων. ὥστε τοσοῦτον καὶ οἱ παράλληλοι διέχοιεν ἂν ἀλλήλων ὅ, τε διὰ Ῥόδου καὶ ὁ δι' Ἀλεξανδρείας. ὁ δ' αὐτός πώς ἐστι τούτῳ, ὁ διὰ τῆς ἡρώων πόλεως. ἢ νοτιώτερός γε τούτου. ὥσθ' ἡ συμπίπτουσα γραμμὴ τούτῳ γε τῷ παραλλήλῳ καὶ τῷ διὰ Ῥόδου καὶ Κασπίων πυλῶν, εἴτ' εὐθεῖα εἴτε κεκλασμένη, οὐκ ἂν εἴη παράλληλος οὐδετέρα. οὐκ εὖ γοῦν λαμβάνεται τὰ μήκη. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ αἱ διὰ βόρειοι λαμβάνονται μερίδες. ἀλλ' ἐπὶ τὸν Ἵππαρχον πρότερον ἐπανιόντες, τὰ ἑξῆς ἴδωμεν. πάλιν γὰρ πλάσας ἑαυτῷ λήμματα γεωμετρικῶς, ἀνασκευάζει τὰ ὑπ' ἐκείνου τυπωδῶς λεγόμενα. φησὶ γὰρ αὐτὸν λέγειν τὸ ἐκ Βαβυλῶνος εἰς μὲν Κασπίους πύλας διάστημα σταδίων ἑξακισχιλίων ἑπτακοσίων. εἰς δὲ τοὺς ὅρους τῆς Καρμανίας καὶ Περσίδος πλειόνων ἢ ἐννακισχιλίων. ὅπερ ἐπὶ γραμμῆς κεῖται πρὸς ἰσημερινὰς ἀνατολὰς, εὐθείας ἀγομένης. γίνεσθαι δὲ ταύτην κάθετον ἐπὶ τὴν κοινὴν πλευρὰν τῆς τε δευτέρας καὶ τῆς τρίτης σφραγῖδος. ὥστε κατ' αὐτὸν συνίστασθαι τρίγωνον ὀρθογώνιον, ὀρθὴν ἔχοντα τὴν πρὸς τοῖς ὅροις τῆς Καρμανίας. καὶ τὴν ὑποτείνουσαν εἶναι ἐλάττω μιᾶς τῶν περὶ τὴν ὀρθὴν ἐχουσῶν. δεῖν οὖν τὴν Περσίδα τῆς δευτέρας ποιεῖν σφραγῖδος. πρὸς ταῦτα δ' εἴρηται ὅτι οὔθ' ἡ ἐκ Βαβυλῶνος εἰς τὴν Καρμανίαν ἐπὶ παραλλήλου λαμβάνεται, οὔθ' ἡ διορίζουσα εὐθεῖα τὰς σφραγῖδας μεσημβρινὴ εἴρηται. ὥστ' οὐδὲν εἴρηται πρὸς αὐτὸν, οὐδὲ τὸ ἐπιφερόμενον. εἰρηκότος γὰρ ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς μὲν Βαβυλῶνα τοὺς λεχθέντας, εἰς δὲ Σοῦσα σταδίους εἶναι τετρακισχιλίους ἐννακοσίους, ἀπὸ δὲ Βαβυλῶνος τρισχιλίους τετρακοσίους. πάλιν ἀπὸ τῶν αὐτῶν ὁρμηθεὶς ὑποθέσεων, ἀμβλυγώνιον τρίγωνον συνίστασθαι φησὶ πρός τε ταῖς Κασπίοις πύλαις καὶ Σούσοις καὶ Βαβυλῶνι. τὴν ἀμβλεῖαν ἔχον γωνίαν πρὸς Σούσοις. τὰ δὲ τῶν πλευρῶν μήκη τὰ ἐκκείμενα, εἶτ' ἐπιλογίζεται, διότι συμβήσεται κατὰ τὰς ὑποθέσεις ταύτας, τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν μεσημβρινὴν γραμμὴν, ἐπὶ τοῦ διὰ Βαβυλῶνος καὶ Σούσων παραλλήλου δυσμικωτέραν ἔχειν τὴν κοινὴν τομὴν τῆς κοινῆς τομῆς τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου. καὶ τῆς ἀπὸ Κασπίων πυλῶν καθηκούσης εὐθείας ἐπὶ τοὺς ὅρους τοὺς τῆς Καρμανίας καὶ τῆς Περσίδος, πλείοσι τῶν τετρακισχιλίων καὶ τετρακοσίων. σχεδὸν δή τι πρὸς τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν μεσημβρινὴν γραμμὴν, ἡμίσειαν ὀρθῆς ποιεῖν γωνίαν τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν καὶ τῶν ὅρων τῆς τε Καρμανίας καὶ τῆς Περσίδος. καὶ νεύειν αὐτὴν ἐπὶ τὰ μέσα τῆς τε μεσημβρίας καὶ τῆς ἰσημερινῆς ἀνατολῆς. ταύτῃ δ' εἶναι παράλληλον τὸν Ἰνδὸν ποταμόν. ὥστε καὶ τοῦτον ἀπὸ τῶν ὀρῶν οὐκ ἐπὶ μεσημβρίαν ῥεῖν ὥς φησιν Ἐρατοσθένης. ἀλλὰ μεταξὺ ταύτης καὶ τῆς ἰσημερινῆς ἀνατολῆς, καθάπερ ἐν τοῖς ἀρχαίοις πίναξι καταγέγραπται. τίς οὖν συγχωρήσει τὸ νῦν συσταθὲν τρίγωνον ἀμβλυγώνιον εἶναι. μὴ συγχωρῶν ὀρθογώνιον εἶναι τὸ περιέχον αὐτό. τίς δ' ἐπὶ παραλλήλου κειμένην τὴν ἀπὸ Βαβυλῶνος εἰς Σοῦσα μίαν τῶν τὴν ἀμβλεῖαν περιεχουσῶν, τὴν ὅλην μὴ συγχωρῶν τὴν μέχρι Καρμανίας, τίς δὲ τῷ Ἰνδῷ παράλληλον τὴν ἀπὸ Κασπίων πυλῶν ἐπὶ τοὺς ὅρους τῆς Καρμανίας. ὧν χωρὶς κενὸς ἂν εἴη ὁ συλλογισμός. χωρὶς δὲ τούτων κἀκεῖνος εἴρηκεν ὅτι ῥομβοειδές ἐστι τὸ σχῆμα τῆς Ἰνδικῆς. καὶ καθάπερ ἡ ἑωθινὴ πλευρὰ περιέσπασται πολὺ πρὸς ἕω καὶ μάλιστα τῷ ἐσχάτῳ ἀκρωτηρίῳ. ὃ καὶ πρὸς μεσημβρίαν προπίπτει πλέον παρὰ τὴν ἄλλην ἠιόνα, οὕτω καὶ ἡ παρὰ τὸν Ἰνδὸν πλευρά. πάντα δὲ ταῦτα λέγει οὐ γεωμετρικῶς ἐλέγχων. οὐ πιθανῶς. ταῦτα δὲ καὶ αὐτὸς ἐπενέγκας ἑαυτῷ ἀπολύεται φήσας. εἰ μὲν παρὰ μικρὰ διαστήματα ὑπῆρχεν ὁ ἔλεγχος. συγγνωστὸν ἂν ἦν. ἐπειδὴ δὲ παρὰ χιλιάδας σταδίων φαίνεται διαπίπτων, οὐκ εἶναι συγγνωστά. καίτοι ἐκεῖνόν γε καὶ παρὰ τετρακοσίους σταδίους αἰσθητὰ ἀποφαίνεσθαι τὰ παραλλάγματα. ὡς ἐπὶ τοῦ δι' Ἀθηνῶν παραλλήλου καὶ τοῦ διὰ Ῥόδου. ἔστι δὲ τὸ πρὸς αἴσθησιν οὐχ ἁπλοῦν. ἀλλὰ τὸ μὲν, ἐν πλάτει μείζονι. τὸ δ' ἐν ἐλάττονι. μείζονι μὲν ἐν αὐτῷ τῷ ὀφθαλμῷ πιστευομένῃ καρποῖς ἢ κράσεσιν ἀέρων πρὸς τὴν τῶν κλιμάτων κρίσιν. ἐλάττονι δ' ἂν δι' ὀργάνων γνωμονικῶν, ἢ διοπτρικῶν. ὁ μὲν οὖν δι' Ἀθηνῶν παράλληλος, γνωμονικῶς ληφθείς. καὶ ὁ διὰ Ῥόδου καὶ Καρίας εἰκότως ἐν σταδίοις τοσούτοις, αἰσθητὴν ἐποίησε τὴν διαφοράν. ὁ δ' ἐν πλάτει μὲν τρισχιλίων σταδίων. μήκει δὲ καὶ τετρακισμυρίων ὄρους πελάγους δὲ τρισμυρίων λαμβάνων τὴν ἀπὸ δύσεως ἐπ' ἰσημερινὰς ἀνατολὰς γραμμὴν καὶ τὰ ἐφ' ἑκάτερα τὸ μέρος τὰ μὲν νότια ὀνομάζων τὰ δὲ, βόρεια. καὶ ταῦτα πλινθία καλῶν καὶ σφραγῖδας, νοείσθω πῶς καὶ ταῦτα λέγει. καὶ πλευρὰ τὰ μὲν, ἀρκτικά. τὰ δὲ, νότια. καὶ πῶς τὰ μὲν, ἑσπέρια τὰ δὲ, ἑωθινά. καὶ τὸ μὲν παρὰ πολὺ δια-

μαρτανόμενον παρορῶν, ὑπεχέτω λόγον. δίκαιον γάρ. τὸ δὲ παρὰ μικρὸν οὐδὲ παρειδὼν ἐλεγκτέος
ἐστίν. ἐνταῦθα δ᾽ οὐδέτερος αὐτῷ προσάγεταί τις ἔλεγχος. οὔτε γὰρ τὴν ἐν τοσούτων πλάτει γεωμε-
τρική τις δύναιτ᾽ ἂν ἀπόδειξις, οὔτ᾽ ἐν οἷς ἐπιχειρεῖ γεωμετρεῖν, ὁμολογουμένοις χρῆται λήμμασιν.
ἀλλ᾽ ἑαυτῷ πλάσας. βέλτιον δὲ περὶ τῆς τετάρτης λέγειν μερίδος. προστίθησι δὲ καὶ τοῦ φιλαιτίου
καὶ τοῦ μένοντος ἐπὶ τῶν αὐτῶν ὑποθέσεων ἢ τῶν παραπλησίων. τοῦτο μὲν γὰρ ὀρθῶς ἐπιτιμᾷ. διό-
τι μῆκος ὀνομάζει τῆς μερίδος ταύτης τὴν ἀπὸ θαψάκου μέχρις αἰγύπτου γραμμήν. ὥσπερ εἴ τις
παραλληλογράμμου τὴν διάμετρον μῆκος αὐτοῦ φαίη. οὐ γὰρ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου κεῖται ἥ τε
θάψακος καὶ ἡ τῆς αἰγύπτου παραλία. ἀλλ᾽ ἐπὶ διεστώτων πολὺ ἀλλήλων. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ διαγώ-
νιός πως ἄγεται καὶ λοξὴ ἡ ἀπὸ θαψάκου εἰς αἴγυπτον. τὸ δὲ θαυμάζειν πῶς ἐθάῤῥησεν εἰπεῖν ἑξακι-
σχιλίων σταδίων, τὸ ἀπὸ πηλουσίου εἰς θάψακον πλειόνων ὄντων ἢ ἑπτακισχιλίων οὐκ ὀρθῶς. λαβὼν γὰρ
δι᾽ ἀποδείξεως μὲν, ὅτι ὁ διὰ πηλουσίου παράλληλος τοῦ διὰ βαβυλῶνος, πλείοσιν ἢ δισχιλίοις καὶ πεν-
τακοσίοις σταδίοις νοτιώτερός ἐστι. κατ᾽ ἐρατοσθένη δὲ ὡς οἴεται. διότι τοῦ διὰ βαβυλῶνος ὁ διὰ τῆς θα-
ψάκου ἀρκτικώτερος τετρακισχιλίοις ὀκτακοσίοις σταδίοις, συμπίπτει φησὶ πλέους τῶν ἑπτακισχιλίων.
πῶς οὖν κατ᾽ ἐρατοσθένη δείκνυται ἡ τοσαύτη ἀπόστασις τοῦ διὰ βαβυλῶνος παραλλήλου ἀπὸ τοῦ διὰ
θαψάκου ζητῶ. ὅτι μὲν γὰρ ἀπὸ θαψάκου ἐπὶ βαβυλῶνα τοσοῦτον ἐστὶν, εἴρηκεν ἐκεῖνος. ὅτι δὲ καὶ ἀπὸ
τοῦ δι᾽ ἑκατέρου παραλλήλου ἐπὶ τὸν διὰ θατέρου, οὐκ εἴρηκεν. οὐδὲ γὰρ ὅτι ἐπὶ ταὐτοῦ μεσημβρινοῦ
ἐστὶν ἡ θάψακος καὶ ἡ βαβυλών. τἀναντία γὰρ αὐτὸς ὁ ἵππαρχος ἔδειξε κατ᾽ ἐρατοσθένη πλείοσιν ἢ δισ-
χιλίοις σταδίοις συμβαίνειν ἀνατολικωτέραν εἶναι τὴν βαβυλῶνα τῆς θαψάκου. ἡμεῖς τε παρατίθε-
μεν τὰς ἐρατοσθένους ἀποφάσεις, ἐν αἷς τὸν τίγριν καὶ τὸν εὐφράτην ἐγκυκλοῦσθαι τήν τε μεσοπο-
ταμίαν καὶ τὴν βαβυλωνίαν. καὶ τὸ πλέον γε τῆς ἐγκυκλώσεως τὸν εὐφράτην ποιεῖν. ἀπὸ γὰρ τῶν
ἄρκτων ἐπὶ μεσημβρίαν ῥυέντα, ἐπιστρέφειν πρὸς τὰς ἀνατολάς. ἐκπίπτειν δὲ ἐπὶ μεσημβρίαν. ἡ
μὲν οὖν ἐπὶ μεσημβρίαν ἐπὶ τῶν ἄρκτων ὁδὸς, ὡς ἂν μεσημβρινοῦ τινός ἐστιν. ἡ δ᾽ ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς
ἐπιστροφὴ, καὶ ἐπὶ τὴν βαβυλῶνα ἔκνευσίς τε ἐστὶν ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ καὶ οὐκ ἐπ᾽ εὐθείας. διὰ τὴν
ῥηθεῖσαν ἐγκύκλωσιν. τὴν δέ γε ὁδὸν εἴρηκε τετρακισχιλίων καὶ ὀκτακοσίων σταδίων τὴν ἐπὶ βαβυ-
λῶνα ἀπὸ θαψάκου παρὰ τὸν εὐφράτην, προσθεὶς καθάπερ ἐπίτηδες τοῦ μή τινα εὐθεῖαν αὐτὴν δέξα-
σθαι καὶ μέτρον τοῦ μεταξὺ δυοῖν παραλλήλων διαστήματος. μὴ διδομένου δὲ τούτου καινόν ἐστι καὶ τὸ ἐ-
φεξῆς δείκνυσθαι δοκοῦν. ὅτι συνισταμένου ὀρθογωνίου τριγώνου πρός τε πηλουσίῳ καὶ θαψάκῳ καὶ
τῇ τομῇ τοῦ τῆς τε διὰ θαψάκου παραλλήλου, καὶ τοῦ διὰ πηλουσίου μεσημβρινοῦ, μία τῶν περὶ τὴν ὀρ-
θὴν ἡ ἐπὶ τοῦ μεσημβρινοῦ μείζων ἔσται τῆς περὶ τὴν ὀρθὴν τῆς ἀπὸ θαψάκου εἰς πηλούσιον. καινὸν δὲ
καὶ τὸ συνάπτον τούτῳ ἀπὸ μὴ συγχωρουμένου λήμματος κατασκευαζόμενον. οὐ γὰρ δὴ δίδοται τὸ ἀπὸ
βαβυλῶνος ἐπὶ τὸν διὰ κασπίων πυλῶν μεσημβρινῶν εἶναι διάστημα τετρακισχιλίων σταδίων ὀκτα-
κοσίων. ἐλήλεγκται γὰρ ὑφ᾽ ἡμῶν ἐκ τῶν μὴ συγχωρουμένων ὑπ᾽ ἐρατοσθένους κατεσκευακότα τοῦτο
τὸν ἵππαρχον. ἵνα δ᾽ ἀνίσχυρον ᾖ τὸ ὑπὲρ ἐκείνου διδόμενον, λαβὼν τὸ εἶναι πλείους ἢ ἐννακισχιλίους
ἐκ βαβυλῶνος ἐπὶ τὴν ἐκ κασπίων πυλῶν οὕτως ἀγομένην γραμμὴν ὡς ἐκεῖνος εἴρηκεν ἐπὶ τοὺς ὅ-
ρους τῆς καρμανίας ἐδείκνυε τὸ αὐτό. οὐ τοῦτο οὖν λεκτέον πρὸς τὸν ἐρατοσθένη. ἀλλ᾽ ὅτι τῶν ἐν πλά-
τει λεγομένων καὶ μεγεθῶν καὶ σχημάτων, εἶναι τι δεῖ μέτρον. καὶ ὅπου μὲν μᾶλλον. ὅπου δὲ ἔλαττον
συγχωρητέον. ληφθέντος γὰρ τοῦ τῶν ὀρῶν πλάτους τῶν ἐπὶ τὰς ἰσημερινὰς ἀνατολὰς ἐκτεινομέ-
νων τρισχιλίων σταδίων, ὁμοίως δὲ καὶ τοῦ τῆς θαλάττης τῆς μέχρι στηλῶν μᾶλλον ἄν τις συγχωρήσειεν
ὡς ἐπὶ μιᾶς γραμμῆς ἐξετάζεσθαι τὰς παραλλήλους ἐκείνης ἐν τῷ αὐτῷ πλάτει ἀγομένας, ἢ τὰς
συμπιπτούσας. καὶ τῶν συμπιπτουσῶν τὰς ἐν αὐτῷ ἐκείνῳ τῷ πλάτει τὴν σύμπτωσιν ἐχούσας, ἢ τὰς
ἐκτὸς ὡσαύτως καὶ διισταμένας, μέχρι τοῦ μὴ ἐκβαίνειν τοῦ πλάτους ἢ τὰς ἐκβαινούσας. καὶ τὰς ἐν
μείζονι μήκει μᾶλλον ἢ τὰς ἐν ἐλάττονι, καὶ γὰρ ἡ ἀνισότης τῶν μηκῶν συγκρύπτοι τ᾽ ἂν μᾶλλον καὶ ἡ
ἀνομοιότης τῶν σχημάτων. οἷον ἐν τῷ πλάτει τοῦ ταύρου παντὸς καὶ τῆς μέχρι στηλῶν θαλάττης, ὑποκειμένων
τρισχιλίων σταδίων. νοεῖται ἕν τι παραλληλόγραμμον χωρίον, τὸ περιγράφον τό, τε ὄρος ἅπαν καὶ τὴν
λεχθεῖσαν θάλατταν. ἐὰν οὖν διέλῃς εἰς πλείω παραλληλόγραμμα τὸ μῆκος, καὶ τὴν διάμετρον, ὅλου τε
τούτου λάβῃς καὶ τῶν μερῶν, ῥᾷδιον ἂν ἡ τοῦ ὅλου διάμετρος ἡ αὐτὴ λογισθείη παράλληλός τε καὶ ἴση τῇ κα-
τὰ τὸ μῆκος πλευρᾷ ἤπερ ἡ ἐν τοῖς μέρεσι. καὶ ὅσῳ γ᾽ ἂν ἧττον ᾖ, τὸ παραλληλόγραμμον τὸ ληφθὲν ἐν μέ-
ρει, τοσῷδε μᾶλλον τοῦτ᾽ ἂν συμβαίνοι. ἥ τε γὰρ λοξότης τῆς διαμέτρου, ἧττον ἀπελέγχεται. καὶ ἡ ἀνισότης τοῦ μή-
κους ἐν τοῖς μεγάλοις. ὥστ᾽ οὐδ᾽ ἂν ὀκνήσειας ἐπ᾽ αὐτῶν τὴν διάμετρον εἰπεῖν μῆκος τοῦ σχήματος. ἐὰν οὖν
τὴν διάμετρον λοξώσῃς μᾶλλον, ὥστε ἐκπεσεῖν ἔξω τῶν πλευρῶν ἑκατέρας, ἢ τῆς γε ἑτέρας, οὐκ ἂν,
ὁμοίως ἔτι ταῦτα συμβαίνει. τοιοῦτον δή τι λέγω τὸ μέτρον τῶν ἐν πλάτει λεγομένων. ὁ δ᾽ ἀπὸ τῶν
κασπίων πυλῶν, τὴν μὲν δι᾽ αὐτῶν τῶν ὀρῶν λαμβάνων, ὡς ἂν ἐπὶ ταὐτοῦ παραλλήλου μέχρι στηλῶν ἀ-
γομένην. τὴν δ᾽ ἀπονεύουσαν εἰς θάψακον εὐθὺς ἔξω πολὺ τῶν ὀρῶν. καὶ πάλιν ἐκ θαψάκου προσεκβάλ-
λων, ἄλλην μέχρι αἰγύπτου τοσοῦτον ἐπιλαμβάνουσαν πλάτος. εἶτα τῷ μήκει τῷ ταύτης καταμετρῶν

τὸ τοῦ χωρίου μῆκος διάμετρον τετραπλεύρου, καταμετρεῖν δὴ δόξει τὸ τοῦ τετραπλεύρου μῆκος. ὅταν δὲ μὴ
διάμετρος, ἢ ἀλλὰ κεκλασμένη ἡ γραμμὴ, πολὺ μᾶλλον ἂν δόξει πλημμελεῖν. κεκλασμένη γάρ ἐστιν
ἡ ἀπὸ κασπίων πυλῶν διὰ θαψάκου πρὸς τὸν νεῖλον ἀγομένη. πρὸς μὲν ἐρατοσθένη ταῦτα. πρὸς δὲ τὸν
ἵππαρχον, κἀκεῖνο ὅτι ἐχρῆν ὡς κατηγορίαν πεποίηται τῶν ὑπ' ἐκείνου λεχθέντων, οὕτω καὶ ἐπα-
νόρθωσίν τινα ποιήσασθαι τῶν ἡμαρτημένων. ὅπερ ἡμεῖς ποιοῦμεν. ἐκεῖνος δ' εἰ καί που τούτου πεφρον-
τικε, κελεύει ἡμᾶς τοῖς ἀρχαίοις πίναξι προσέχειν, δεομένοις παμπόλλῳ τινὶ μείζονος ἐπανορθώσεως
ἢ ὁ ἐρατοσθένους πίναξ προσδεῖται. καὶ τὸ ἐπιφερόμενον δ' ἐπιχείρημα τῆς αὐτῆς ἔχεται μοχθη-
ρίας. λαμβάνει γὰρ ἐν λήμματι τὸ ἐκ τῶν μὴ διδομένων κατασκευασθὲν, ὡς ἠλέγξαμεν ἡμεῖς, ὅτι θα-
ψάκου βαβυλὼν ἀνατολικωτέρα ἐστὶν οὐ πλείοσιν ἢ χιλίοις σταδίοις. ὥστ' εἰ καὶ πάνυ συνάγεται τὸ
πλείοσιν ἢ δισχιλίοις καὶ τετρακοσίοις σταδίοις ἀνατολικωτέραν αὐτὴν εἶναι ἐκ τῶν λεγομένων ὑπὸ
τοῦ ἐρατοσθένους. ὅτι ἐπὶ τὴν τοῦ τίγριδος διάβασιν, ἧ ἀλέξανδρος διέβη, ἀπὸ θαψάκου ἐστὶ σύντομος
σταδίων δισχιλίων τετρακοσίων. ὁ δὲ τίγρις καὶ ὁ εὐφράτης ἐγκυκλωσάμενοι τὴν μεσοποταμίαν, τέ-
ως μὲν ἐπ' ἀνατολὰς φέρονται. εἶτ' ἐπιστρέφουσι πρὸς νότον καὶ πλησιάζουσι τότε ἀλλήλοις τε ἅμα
καὶ βαβυλῶνι, οὐδὲν ἄτοπον συμβαίνει τῷ λόγῳ. πλημμελεῖ δὲ καὶ ἐν τῷ ἑξῆς ἐπιχειρήματι. ἐν ᾧ
συνάγειν βούλεται, ὅτι τὴν ἀπὸ θαψάκου ἐπὶ κασπίους πύλας ὁδὸν, ἣν μυρίων σταδίων ἐρατοσθένης
εἴρηκεν, οὐκ ἐπ' εὐθείας ἀναμεμετρημένην ὡς ἐπ' εὐθείας παραδίδωσι, τῆς εὐθείας πολὺ ἐλάττονος οὔ-
σης. ἡ δ' ἔφοδος ἐστὶν αὐτῷ τοιαύτη. φησὶν εἶναι καὶ κατ' ἐρατοσθένη τὸν αὐτὸν μεσημβρινὸν, τόν τε διὰ
τοῦ κανωβικοῦ στόματος καὶ τὸν διὰ κυανέων. διέχειν δὲ τοῦτον τοῦ διὰ θαψάκου ἑξακισχιλίους τριακο-
σίους σταδίους. τὰς δὲ κυανέας τοῦ κασπίου ὄρους ἑξακισχιλίους ἑξακοσίους. ὃ κεῖται κατὰ τὴν ὑπέρθε-
σιν τὴν ἐπὶ τὸ κάσπιον πέλαγος ἐκ κολχίδος. ὥστε παρὰ τριακοσίους σταδίους, τὸ ἴσον εἶναι διάστημα
ἀπὸ τοῦ διὰ κυανέων μεσημβρινοῦ ἐπί τε θάψακον καὶ ἐπὶ τὸ κάσπιον. τρόπον δέ τινα ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ με-
σημβρινοῦ κεῖσθαι, τήν τε θάψακον καὶ τὸ κάσπιον. τούτῳ δ' ἀκολουθεῖν, τὸ ἀφεστάναι ἴσον τὰς κασπίους
πύλας. θαψάκου δὲ καὶ τοῦ κασπίου, πολὺ ἐλάττους ἀφεστάναι τῶν μυρίων. ὅσους φησὶν ἀφεστάναι ἐρα-
τοσθένης τῆς θαψάκου. πολὺ ἄρα ἐλάττους ἢ μυρίους ἀφεστάναι τοὺς ἐπ' εὐθείας. κυκλοπορίαν ἄρα εἶ-
ναι τοὺς μυρίους λογίζεται ἐκεῖνος ἐπ' εὐθείας ἀπὸ κασπίων πυλῶν εἰς θάψακον. ἐροῦμεν δὲ πρὸς αὐ-
τὸν ὅτι τοῦ ἐρατοσθένους ἐν πλάτει λαμβάνοντος εὐθείας ὅπερ οἰκεῖόν ἐστι γεωγραφίας. ἐν πλάτει
δὲ καὶ τὰς μεσημβρινάς. καὶ τὰς ἐπὶ μεσημβρίαν ἀνατολὴν, ἐκεῖνος γεωμετρικῶς αὐτὸν εὐθύνει.
καὶ ὡς ἂν δι' ὀργάνων λάβοι τις τούτων ἕκαστον. οὐδὲ αὐτὸς δι' ὀργάνων. ἀλλὰ μᾶλλον στοχασμῷ λαμβά-
νων καὶ τὸ πρὸς ὀρθὰς καὶ τὸ παραλλήλους. ἓν μὲν δὴ τοῦθ' ἁμάρτημα. ἕτερον δὲ τὸ μηδὲ τὰ κείμενα
παρ' ἐκείνῳ διαστήματα τίθεσθαι ὑπ' αὐτοῦ, μηδὲ πρὸς ἐκεῖνα τὸν ἔλεγχον προσάγεσθαι. ἀλλὰ πρὸς
τὰ ὑπ' αὐτοῦ πλαττόμενα. διόπερ πρῶτον μὲν ἐκείνου τὸ ἀπὸ τοῦ στόματος ἐπὶ φᾶσιν εἰπόντος σταδίων
ὀκτακισχιλίων. καὶ προσθέντος τοὺς εἰς διοσκουριάδα ἐντεῦθεν δ' ἑξακοσίους. τὴν δ' ἀπὸ διοσκουριάδος
εἰς τὸ κάσπιον ὑπέρθεσιν ἡμερῶν πέντε ἥτις κατ' αὐτὸν ἵππαρχον εἰκάζεται λέγεσθαι ὅσον χιλίων στα-
δίων. ὥστε τὴν σύμπασαν κατ' ἐρατοσθένη κεφαλαιοῦσθαι ἐννακισχιλίων ἑξακοσίων. αὐτὸς οὖν τέμ-
νει καὶ φησίν. ἐκ μὲν κυανέων εἰς φᾶσιν πεντακισχιλίους ἑξακοσίους. εἰς δὲ κάσπιον ἐνθένδε ἄλλους χι-
λίους. ὥστ' οὐκ ἐρατοσθένη συμβαίνοι ἂν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ πως μεσημβρινοῦ τό τε κάσπιον εἶναι καὶ τὴν
θάψακον. ἀλλὰ κατ' αὐτόν. φέρε δ' οὖν κατ' ἐρατοσθένη. πῶς οὖν τούτῳ ἕπεται τὸ τὴν ἀπὸ τοῦ κασπίου
ἐπὶ κασπίους πύλας ἴσην εἶναι τῇ ἀπὸ θαψάκου ἐπὶ τὸ αὐτὸ σημεῖον. ἐν δὲ τῷ δευτέρῳ ὑπομνήμα-
τι ἀναλαβὼν πάλιν τὴν αὐτὴν ζήτησιν τὴν περὶ τῶν ὀρῶν τῶν κατὰ τὸν ταῦρον. περὶ ὧν ἱκανῶς εἰρή-
καμεν, μεταβαίνει πρὸς τὰ βόρεια μέρη τῆς οἰκουμένης. εἶτ' ἐκτίθεται τὰ ῥηθέντα ὑπὸ τοῦ ἐρατοσθέ-
νους περὶ τῶν μετὰ τὸν πόντον τόπων. ὅτι φησὶ τρεῖς ἄκρας ἀπὸ τῶν ἄρκτων καθήκειν. μίαν μὲν, ἀφ' ἧς
ἡ πελοπόννησος. δευτέραν δὲ τὴν ἰταλικήν. τρίτην δὲ τὴν λιγυστικήν. ὑφ' ὧν κόλπους ἀπολαμβάνε-
σθαι τόν τε ἀδριατικὸν καὶ τὸν τυρρηνικόν. ταῦτα δ' ἐκθέμενος καθόλου, πειρᾶται τὰ καθ' ἕκαστα
περὶ αὐτῶν λεγόμενα ἐλέγχειν γεωμετρικῶς μᾶλλον ἢ γεωγραφικῶς. ἔστι δὲ τοσοῦτον ἁμαρτανομέ-
νων ἐν αὐτοῖς ὑπὸ τοῦ ἐρατοσθένους τὸ πλῆθος. καὶ ἔτι τιμοσθένους τοῦ τοὺς λιμένας συγγράψαντος
ὃν ἐπαινεῖ μὲν ἐκεῖνος μάλιστα τῶν ἄλλων. διαφωνῶν δ' ἐλέγχεται πρὸς αὐτὸν πλεῖστα. ὥστ' οὐκ ἄ-
ξιον ἡγοῦμαι διαιτᾶν οὔτ' ἐκείνους ἐπὶ τοσοῦτον διαμαρτάνοντας τῶν ὄντων, οὔτε τὸν ἵππαρχον. καὶ
γὰρ οὗτος τὰ μὲν, παραλείπει τῶν ἡμαρτημένων. τὰ δ' οὐκ ἐπανορθοῖ. ἀλλ' ἐλέγχει μόνον ὅτι ψευ-
δῶς ἢ μαχομένως εἴρηται. αἰτιάσαιτο μὲν γὰρ ἂν ἴσως καὶ τοῦτο τις, ὅτι φησὶν ἄκρας τρεῖς τῆς εὐρώ-
πης. μίαν μὲν τιθεὶς, τὴν ἐφ' ἧς ἡ πελοπόννησος. ἔχει γάρ τι πολυσχιδές. καὶ γὰρ τὸ σούνιον ἀκρωτη-
ριάζει ὁμοίως τῇ λακωνικῇ. οὐ πολὺ ἧττον μεσημβρινώτερον ὂν τῷ μαλέᾳ. καὶ κόλπον ἀπο-
λαμβάνον ἀξιόλογον. καὶ ἡ θρακία χερρόνησος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸ σούνιον, τόν τε μέλανα κόλ-
πον, καὶ τοὺς ἐφεξῆς τοὺς μακεδονικούς. εἰ δ' οὖν παρεῖμεν τοῦτο. καὶ τῶν διαστημάτων τὰ πλεῖ-
στα φανερῶς ψευδογραφούμενα, ἐλέγχει τὴν ἀπειρίαν τῶν τόπων ὑπερβάλλουσαν καὶ οὐ δεο-

μένην γεωμετρικὸν ἔλεγχον. ἀλλὰ φανερὸν, καὶ αὐτόθεν ἐκ μαρτυρεῖσθαι δυναμένων. οἷον
ὅτι ἐξ ἐπιδάμνου πρὸς τὸν θερμαῖον κόλπον ἡ ὑπέρβασίς ἐστι πλειόνων ἢ δισχιλίων σταδίων. ὁ δ'
ἐνακοσίων φησίν. ἐκ δὲ ἀλεξανδρείας εἰς καρχηδόνα ὑπὲρ μυρίους καὶ τρισχιλίους, οὐ πλείους
ὄντας τῶν ἐνακισχιλίων. εἴπερ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ ἐστι μεσημβρινοῦ κατὰ τοῦτον. τῇ μὲν ἀλεξανδρείᾳ
καρία, καὶ ῥόδος. τῇ δὲ καρχηδόνι ὁ πορθμός. πάντες γὰρ ὁμολογοῦσι πλειόνων εἶναι τὸν ἐκ καρί-
ας ἐπὶ πορθμὸν πλοῦν σταδίων πεντακισχιλίων. ὅτε μεσημβρινὸς ἐν μεγάλῳ μέν τινι διαστήμα-
τι λαμβανόμενος, δοθείη ἂν ὁ αὐτὸς εἶναι τῷ τοσοῦτον δυσμικωτέρῳ πρὸς τὸν ἑωθινώτερον ὅ-
σον ἡ καρχηδών ἐστι τοῦ πορθμοῦ πρὸς δύσει μᾶλλον. ἐν δὲ τρισχιλίοις σταδίοις ἔχει καταφανῆ τὸν
ἔλεγχον. ὁ δὲ καὶ τὴν ῥώμην τιθεὶς ἐπὶ ταὐτοῦ μεσημβρινοῦ τὴν τοσοῦτον καὶ καρχηδόνος δυσμι-
κωτέραν, ὑπερβολὴν οὐκ ἀπολείπει τῆς περὶ τῶν τόπων ἀπειρίας. καὶ τούτων καὶ τῶν ἐφεξῆς πρὸς
δύσιν μέχρι στηλῶν. ἱππάρχῳ μὲν οὖν μὴ γεωγραφοῦντι ἀλλ' ἐξετάζοντι τὰ λεχθέντα ἐν τῇ γεω-
γραφίᾳ τοῦ ἐρατοσθένους, οἰκεῖον ἦν ἐπὶ πλέον τὰ καθ' ἕκαστα εὐθύνειν. ἡμεῖς δ' ἐν οἷς μὲν κατορθοῖ,
τὸ πλέον δ' ἐστὶν ὅπου, καὶ πλημμελεῖ, τὸν καθ' ἕκαστα οἰκεῖον λόγον ᾠήθημεν δεῖν προσάγειν. τὰ
μὲν, ἐπανορθοῦντες. ὑπὲρ ὧν δ' ἀπολυόμενοι τὰς ἐπιφερομένας αἰτίας ὑπὸ τοῦ ἱππάρχου,
καὶ αὐτὸν τὸν ἵππαρχον συνεξετάζομεν ὅπου τί φιλαιτίως εἴρηκεν. ἐν δὲ τούτοις ὁρῶντες ὅτι τὸν
μὲν, τελέως παραπαίοντα, τὸν δὲ, δικαίως ἐπικαλοῦντα, ἀρκεῖν ὑπολαμβάνομεν ἂν ἐν αὐτῇ τῇ
γεωγραφίᾳ τὰ ὄντα λέγοντες ἐπανορθῶμεν αὐτήν, ἐφ' ὧν γὰρ συνεχῆ καὶ ἐπιπολάζοντά ἐστι τὰ
ἁμαρτανόμενα, κρεῖττον μηδὲ μεμνῆσθαι. πλὴν εἰ σπάνιόν τι καὶ καθόλου. ὅπερ πειρασόμεθα ποι-
εῖν ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα, καὶ νῦν δ' εἰρήσθω ὅτι, καὶ τιμοσθένης καὶ ἐρατοσθένης καὶ οἱ ἔτι τούτων πρό-
τεροι τελέως ἠγνόουν τά τε ἰβηρικὰ καὶ τὰ κελτικά. μυρίῳ δὲ μᾶλλον τὰ γερμανικὰ καὶ τὰ βρεττανικά.
ὡς δ' αὔτως τὰ τῶν γετῶν καὶ βασταρνῶν. ἐπὶ πολὺ δ' ἀγνοίας ἐτύγχανον ἀφιγμένοι, καὶ τῶν κατ' ἰταλίαν καὶ
τὸν ἀδρίαν καὶ τὸν πόντον καὶ τῶν ἐφεξῆς μερῶν τῶν προσαρκτικῶν. εἰ καὶ τὰ τοιαῦτα ἴσως φιλαίτια.
τοῦ γὰρ ἐρατοσθένους ἐπὶ τῶν πόρρω διεστηκότων τὰ παραδεδομένα φάσκοντος ἐρεῖν διαστήματα. μὴ
διισχυριζομένου δὲ καὶ λέγοντος ὡς παρέλαβε. προστιθέντος δ' ἔστιν ὅπου τὰ ἐπ' εὐθείας μᾶλλον καὶ
ἧττον. οὐ δεῖ προσάγειν τὸν ἀκριβῆ ἔλεγχον τοῖς μὴ ὁμολογουμένοις πρὸς ἄλληλα διαστήμασιν. ὅπερ
ποιεῖν πειρᾶται ὁ ἵππαρχος. ἐν δὲ τοῖς πρότερον λεχθεῖσι καὶ ἐν οἷς τὰ περὶ τὴν ὑρκανίαν μέχρι
βακτρίων καὶ τῶν ἐπέκεινα ἐθνῶν, ἐκτίθεται διαστήματα. καὶ ἔτι τὰ ἀπὸ κολχίδος ἐπὶ τὴν ὑρκα-
νίαν θάλατταν. οὐ γὰρ ὁμοίως ἐπί τε τούτων ἐξεταστέον αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τῶν κατὰ τὴν ἠπειρῶτιν πάλιν. καὶ
τῶν ἄλλων τῶν οὕτω γνωρίμων τόπων. ἀλλ' οὐδ' ἐπὶ τούτων γεωμετρικῶς ὅπερ εἶπον ἀλλὰ γεωγραφικῶς μᾶλλον.
αἰτιασάμενος δ' οὖν τινα τῶν αἰθιοπικῶν ἐπὶ τέλει τοῦ δευτέρου ὑπομνήματος τῶν πρὸς τὴν ἐρατοσθέ-
νους γεωγραφίαν πεποιημένων ἐν τῷ τρίτῳ φησί. τὴν μὲν πλείω θεωρίαν ἔσεσθαι μαθηματικήν.
ἐπὶ ποσὸν δὲ, καὶ γεωγραφικήν. οὐδ' ἐπὶ ποσὸν μέντοι δοκεῖ μοι ποιήσασθαι γεωγραφικήν. ἀλλὰ
πᾶσαν μαθηματικήν, διδόντος, καὶ τοῦ ἐρατοσθένους τὴν τοιαύτην πρόφασιν. πολλαχοῦ γὰρ ἐκπίπτει
πρὸς τὸ ἐπιστημονικώτερον τῆς προκειμένης ἱστορίας. ἐκπεσὼν δὲ οὐκ ἀκριβεῖς, ἀλλ' ὁλοσχερεῖς ποιεῖται
τὰς ἀποφάσεις τρόπον τινὰ, ἐν μὲν τοῖς γεωγραφικοῖς μαθηματικός. ἐν δὲ τοῖς μαθηματικοῖς γεω-
γραφικὸς ὤν. ὥστε πρὸς ἀμφότερα δίδωσιν ἀφορμὰς τοῖς ἀντιλέγουσιν. ἐν δὲ τούτῳ τῷ ὑπομνήματι
καὶ δικαίως καὶ οὗτος καὶ ὁ τιμοσθένης ὥστ' οὐδ' ἡμῖν καταλείπεται συνεπισκοπεῖν. ἀλλ' ἀρκεῖσ-
θαι τοῖς ὑπὸ τοῦ ἱππάρχου λεχθεῖσιν. ἴδωμεν δὲ καὶ ποσειδώνιον ἅ φησιν ἐν τοῖς περὶ ὠκεανοῦ. δο-
κεῖ γὰρ ἐν αὐτοῖς τὰ πολλὰ γεωγραφεῖν. τὰ μὲν οἰκείως. τὰ δὲ μαθηματικώτερον. οὐκ ἄτοπον οὖν
ἔνια, καὶ τῶν ὑπὸ τούτου λεγομένων διαιτῆσαι. τὰ μὲν νῦν, τὰ δ' ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα. ὡς ἂν ὑποπί-
πτῃ μέτρου τινὸς ἐχομένου. ἔστιν οὖν τι τῶν πρὸς γεωγραφίαν οἰκείων, τὸ τὴν γῆν ὅλην ὑποθέσθαι
σφαιροειδῆ. καθάπερ καὶ τὸν κόσμον καὶ τὰ ἄλλα παραδέξασθαι τὰ ἀκόλουθα τῇ ὑποθέσει ταύ-
τῃ. τούτων δ' ἐστὶ καὶ τὸ πενταζώνον αὐτὴν εἶναι. φησὶ δὴ ὁ ποσειδώνιος τῆς εἰς πέντε ζώνας διαιρέσεως
ἀρχηγὸν γενέσθαι παρμενίδην. ἀλλ' ἐκεῖνον μὲν σχεδόν τι διπλασίαν ἀποφαίνειν τὸ πλάτος τὴν διακε-
καυμένην τῆς μεταξὺ τῶν τροπικῶν ὑπερπιπτούσης ἑκατέρων τῶν τροπικῶν εἰς τὸ ἐκτὸς καὶ πρὸς
ταῖς εὐκράτοις. ἀριστοτέλης δὲ αὐτὴν καλεῖ τὴν μεταξὺ τῶν τροπικῶν καὶ τῶν ἀρκτικῶν εὐκράτους.
ἀμφοτέρους δ' ἐπιτιμᾷ δικαίως. διακεκαυμένην γὰρ λέγεσθαι τὸ ἀοίκητον διὰ καῦμα. τῆς δὲ μεταξὺ
τῶν τροπικῶν πλέον ἢ τὸ ἥμισυ τοῦ πλάτους, οἰκήσιμόν ἐστιν ἐκ τῶν ὑπὲρ αἰγύπτου στοχαζομένοις
αἰθιόπων. εἴπερ τὸ μὲν ἥμισυ τοῦ παντὸς πλάτους ἐστὶν, ὃ διαιρεῖ ἐφ' ἑκάτερα ὁ ἰσημερινός. τούτου
δὲ τὸ μὲν ἀπὸ τῆς συήνης ἥπερ ἐστὶν ὅριον τοῦ θερινοῦ τροπικοῦ, εἰς μερόην εἰσὶ μύριοι. τὸ δ' ἐνθένδε ἕ-
ως τῆς κινναμωμοφόρου παραλλήλου ὅπερ ἐστὶν ἀρχὴ τῆς διακεκαυμένης τρισχιλίων. τοῦτο μὲν οὖν
τὸ διάστημα πᾶν μετρητόν ἐστι. πλεῖταί τε γὰρ καὶ ὁδεύεται. τὸ δ' ἑξῆς μέχρι τοῦ ἰσημερινοῦ. λόγῳ,
δείκνυται κατὰ τὴν ὑπ' ἐρατοσθένους γενομένην ἀναμέτρησιν τῆς γῆς. ὅτι ἐστὶ σταδίων ὀκτακισχιλίων
ὀκτακοσίων. ὃν δὴ λόγον ἔχει τὰ μύρια τρισχίλια πρὸς τὰ ὀκτακισχίλια ὀκτακόσια, τοῦτον ἂν ἔ-

χρι δ' μεταξὺ τῶν τροπικῶν διάστημα πρὸς τὸ τῆς διακεκαυμένης πλάτος, καὶ τῶν νεωτέρων δὲ ἀνα-
μετρήσεων εἰσάγηται ἡ ἐλαχίστην ποιοῦσα τὴν γῆν, οἵαν ὁ ποσειδώνιος ἐγκρίνει περὶ ὀκτωκαίδεκα μυ-
ριάδας οὖσαν, περὶ ἥμισύ που ἀποφαίνει τὴν διακεκαυμένην τῆς μεταξὺ τῶν τροπικῶν. ἢ μικρῷ
τῆς ἡμισείας μείζονα. ἴσην δὲ καὶ τὴν αὐτὴν οὐδαμῶς. τοῖς τε ἀρκτικοῖς, οὔτε παρὰ πᾶσιν οὖσιν, οὔτε
τοῖς αὐτοῖς πανταχοῦ τίς ἂν διορίζοι τὰς εὐκράτους αἵπερ εἰσὶν ἀμετάπτωτοι. τὸ μὲν οὖν μὴ παρὰ πᾶ-
σιν εἶναι τοὺς ἀρκτικοὺς, οὐδὲν ἂν εἴη πρὸς τὸν ἔλεγχον. δεῖ γὰρ παρὰ τοῖς τὴν εὔκρατον οἰκοῦσιν εἶναι
πᾶσι πρὸς οὕσπερ καὶ λέγεται μόνους εὔκρατος. τὸ δὲ μὴ πανταχοῦ τὸν αὐτὸν τρόπον ἀλλὰ μεταπίπτειν
καλῶς εἴληπται. αὐτὸς δὲ διαιρῶν εἰς τὰς ζώνας, πέντε μέν φησιν εἶναι χρησίμους πρὸς τὰ οὐράνια. τού-
των δὲ περισκίους δύο τὰς ὑπὸ τοῖς πόλοις μέχρι τῶν ἐχόντων τοὺς τροπικοὺς ἀρκτικούς. ἑτεροσκίους
δὲ τὰς ἐφεξῆς ταύτας δύο μέχρι τῶν ὑπὸ τοῖς τροπικοῖς οἰκούντων. ἀμφίσκιον δὲ τὴν μεταξὺ τῶν
τροπικῶν, πρὸς δὲ τἀνθρώπεια, ταύτας τε καὶ δύο ἄλλας στενὰς τὰς ὑπὸ τοῖς τροπικοῖς καθ' ἃς ἥμι-
σύ πως μηνὸς κατὰ κορυφήν ἐστιν ὁ ἥλιος δίχα διαιρουμένας ὑπὸ τῶν τροπικῶν. ἔχειν γάρ τι ἴδιον
τὰς ζώνας ταύτας. αὐχμηράς τε ἰδίως καὶ ἀμμώδεις ὑπαρχούσας καὶ ἀφόρους, πλὴν σιλφίου,
καὶ πυρωδῶν τινῶν καρπῶν συγκεκαυμένων. ὄρη γὰρ μὴ εἶναι πλησίον. ὥστε τὰ νέφη προσπίπτον-
τα ὄμβρους ποιεῖν. μηδὲ δὴ ποταμοῖς διαρρεῖσθαι, διόπερ οὐλότριχας καὶ οὐλόκερως καὶ προχείλους
καὶ πλατύρινας γεννᾶσθαι. τὰ γὰρ ἄκρα αὐτῶν συστρέφεσθαι. καὶ τοὺς ἰχθυοφάγους δὲ κατὰ ταύ-
τας τὰς ζώνας οἰκεῖν. ὅτι δὲ ταῦτ' ἴδια τῶν ζωνῶν τούτων δηλοῦν φησι τὸ τοὺς νοτιωτέρους αὐτῶν
ἔχειν τὸ περιέχον εὐκρατότερον καὶ τὴν γῆν καρπιμωτέραν καὶ εὐυδροτέραν. πολύβιος δὲ ποιεῖ ζώ-
νας ἕξ. δύο μὲν τὰς τοῖς ἀρκτικοῖς ὑποπιπτούσας. δύο δὲ τὰς μεταξὺ τούτων τε καὶ τῶν τροπι-
κῶν τοῦ ἰσημερινοῦ. ἡ μὲν οὖν εἰς πέντε διαίρεσις, δοκεῖ μοι καὶ φυσικῶς ἅμα καὶ γεωγραφικῶς εἰρῆ-
σθαι. φυσικῶς μὲν ὅτι καὶ πρὸς τὰ οὐράνια καὶ πρὸς τὴν τοῦ περιέχοντος κρᾶσιν. πρὸς μὲν τὰ οὐ-
ράνια ὅτι τοὺς περισκίους καὶ τοὺς ἑτεροσκίους οὕτως ἂν ἄριστα διοριζομένους συνδιορίζεται καὶ
τὰ περὶ τὴν θέαν τῶν ἄστρων ὁλοσχερεῖ τινι μερισμῷ λαμβάνοντα τὴν ἐξάλλαξιν. πρὸς δὲ τὴν τοῦ πε-
ριέχοντος κρᾶσιν, ὅτι τῆς τούτου κράσεως πρὸς τὸν ἥλιον κρινομένης, διαφοραὶ τρεῖς εἰσιν αἱ γενικώτα-
ται καὶ συντείνουσαι πρός τε τὰς τῶν ζῴων καὶ φυτῶν συστάσεις. καὶ τῶν ἄλλων ἡμισυστάτων τῶν
ὑπὸ τῷ ἀέρι καὶ ἐν αὐτῷ ἐκείνῳ ὑπερβολὴ θάλπους καὶ ἔλλειψις καὶ μεσότης. αὕτη δὲ τῷ εἰς τὰς
ζώνας μερισμῷ λαμβάνει τὴν οἰκείαν διάκρισιν. αἵ τε γὰρ κατεψυγμέναι δύο τὴν ἔλλειψιν τοῦ θάλπους ὑπαγο-
ρεύουσιν, εἰς μίαν τοῦ περιέχοντος φύσιν συναγόμεναι, αἵ τ' εὔκρατοι παραπλησίως εἰς μίαν τὴν
μεσότητα ἄγονται. εἰς δὲ τὴν λοιπὴν ἡ λοιπὴ μία καὶ διακεκαυμένη. ὅτι δὲ καὶ γεωγραφικός ἐστιν
ὁ μερισμὸς δῆλον. ζητεῖ γὰρ ἡ γεωγραφία τῷ ἑτέρῳ τῶν εὐκράτων ἀφορίσαι τὸ οἰκούμενον
ὑφ' ἡμῶν τμῆμα. πρὸς δύσει μὲν οὖν καὶ ἀνατολῇ θάλαττά ἐστιν ἡ περατοῦσα. πρὸς δὲ τὰ νότια
τὰ βόρεια ὁ ἀήρ. ὁ μὲν μέσος ὁ εὔκρατος ὢν, καὶ φυτοῖς καὶ ζῴοις. ὁ δ' ἐφ' ἑκάτερα δύσκρατος
ὑπερβολῇ, καὶ ἐλλείψει τοῦ θάλπους. εἰς δὲ τὰς τρεῖς διαφορὰς ταύτας. ἐδέησε τῆς εἰς πέντε ζώ-
νας διαιρέσεως. τῷ γὰρ ἰσημερινῷ τμηθεῖσα ἡ σφαῖρα δίχα τῆς γῆς εἴς τε τὸ βόρειον ἡμισφαίριον ἐν
ᾧ ἡμεῖς ἐσμεν καὶ τὸ νότιον ὑπέγραψε τὰς τρεῖς διαφοράς. τὰ μὲν γὰρ πρὸς τῷ ἰσημερινῷ
καὶ τῇ διακεκαυμένῃ ζώνῃ διὰ καῦμα ἀοίκητά ἐστι. τὰ δὲ πρὸς τῷ πόλῳ διὰ ψῦχος. τὰ δὲ μέσα
τὰ εὔκρατα καὶ οἰκήσιμα. ὁ δὲ τὰς ὑπὸ τοῖς τροπικοῖς προστιθεὶς, οὐκ ἀνάλογον ταῖς πέντε ταύ-
τας προστίθησιν. οὐδ' ὁμοίᾳ κεχρημένας διαφορᾷ. ἀλλ' ὡς ἂν εἰ καὶ ταῖς ἐθνικαῖς διαφοραῖς ἀπέ-
φαινε ζώνας. ἄλλην μὲν τὴν αἰθιοπικήν. ἄλλην δὲ τὴν σκυθικὴν καὶ κελτικήν. τρίτην δὲ τὴν
ἀνὰ μέσον. ὁ δὲ πολύβιος τοῦτο μὲν οὐκ εὖ τὸ ποιεῖν τινας ζώνας τοῖς ἀρκτικοῖς διοριζομένας. δύο μὲν
τὰς ὑποπιπτούσας αὐταῖς. δύο δὲ τὰς μεταξὺ τούτων καὶ τῶν τροπικῶν. εἴρηται γὰρ ὅτι τοῖς με-
ταπίπτουσι σημείοις οὐχ ὁριστέον τὰ ἀμετάπτωτα. οὐδὲ τοῖς τροπικοῖς δὲ τῆς διακεκαυμένης ὅροις χρη-
στέον. καὶ γὰρ τοῦτ' εἴρηται. τὴν διακεκαυμένην μέντοι δίχα διαιρῶν πρὸς οὐ φαύλην ἐπίνοιαν φαί-
νεται κεκινημένος. πρὸς ἣν καὶ ὅλην δίχα διαιροῦμεν εὐφυῶς τὴν γῆν. εἴς τε τὸ βόρειον ἡμισφαίριον
καὶ τὸ νότιον τῷ ἰσημερινῷ. δῆλον γὰρ ὅτι διαιρεῖται κατὰ ταύτην τὴν τομὴν, καὶ ἡ διακεκαυμένη
ποιεῖ τινα ἐπιτηδειότητα. ὥστε καὶ τὸ ἡμισφαίριον ἑκάτερον, ἐξ ὅλων συντετάχθαι τριῶν ζωνῶν
ὁμοειδῶν τῶν ἐν θατέρῳ. ἡ μὲν οὖν τοιαύτη τομὴ δέχεται τὴν εἰς ἓξ ζώνας διαίρεσιν. ἡ δ' ἑτέρα
οὐ πάνυ. εἰ γοῦν τῷ διὰ τῶν πόλων δίχα τέμνοις τὴν γῆν, οὐκ ἂν εἰκότως ἑκάτερον τῶν ἡμισφαι-
ρίων. τό τε ἑσπέριον, καὶ τὸ ἀνατολικὸν τέμνοις εἰς ζώνας ἕξ, ἀλλὰ ἡ εἰς πέντε ἀρκοῦσα ἂν εἴη. τὸ γὰρ
ὁμοιοπαθὲς τῶν τμημάτων ἀμφοτέρων τῆς διακεκαυμένης ὃ ποιεῖ ὁ ἰσημερινὸς καὶ τὸ συμψαύειν
περιττὴν καὶ περίεργον ἀποφαίνει τὴν τομήν. ὁμοειδῶν μὲν οὐσῶν καὶ τῶν εὐκράτων καὶ τῶν κα-
τεψυγμένων ἀλλ' οὐ συγκειμένων. οὕτως οὖν καὶ τὴν ὅλην τὴν ἐκ τῶν τοιούτων ἡμισφαιρίων ἐπι-
νοουμένην ἀρκούντως ἂν εἰς πέντε διαιροίης. εἰ δ' ὥσπερ ἐρατοσθένης φησὶν ἡ ὑποπίπτουσα τῷ ἰσημε-
ρινῷ ἐστιν εὔκρατος. καθάπερ καὶ ὁ πολύβιος ὁμοδοξεῖ. προστίθησι δ' οὗτος καὶ διότι ὑψηλοτάτη ἐστὶ
διόπερ καὶ κατομβρεῖται τῶν βορείων νεφῶν κατὰ τοὺς ἐτησίας ἐκεῖ τοῖς ἀναστήμασι προσπιπτόν-

τῶν πλείστων, πολυκρεῖττον τρίτην τὴν εὔκρατον ταύτην ποιεῖν ζώνην τινα, ἢ τὰς ὑπὸ τοῖς τροπικοῖς
συνάγειν. συνηγορεῖ δὲ τούτοις καὶ τὰ τοιαῦτα. ὧν μέμνηται καὶ ποσειδώνιος. τὸ καὶ τὰς μεταστά-
σεις ὀξυτέρας εἶναι τὰς εἰς τὰ πλάγια. ὡς δ' αὔτως, καὶ τὰς ἀπ' ἀνατολῆς ἐπὶ δύσιν τοῦ ἡλίου. ὀ-
ξύτεραι γὰρ αἱ κατὰ μεγίστου κύκλου τῶν ὁμοταχῶν κινήσεων. ἐνίσταται δ' ὁ ποσειδώνιος τῷ πολυβίῳ
διότι φησὶ τὴν ὑπὸ τῷ ἰσημερινῷ οἴκησιν ὑψηλοτάτην. οὐδὲ γὰρ εἶναι κατὰ τὴν σφαιρικὴν ἐ-
πιφάνειαν ὕψος διὰ τὴν ὁμαλότητα. οὐδὲ δὴ ὀρεινὴν εἶναι τὴν ὑπὸ τῷ ἰσημερινῷ. ἀλλὰ μᾶλλον
πεδιάδα. ἰσόπεδόν πως τῇ ἐπιφανείᾳ τῆς θαλάττης. τοὺς δὲ πληροῦντας τὸν νεῖλον ὄμβρους ἐκ τῶν
αἰθιοπικῶν ὀρῶν συμβαίνειν. ταῦτα δ' εἰπὼν ἐνταῦθα, ἐν ἄλλοις συγχωρεῖ. φήσας ὑπονοεῖν ὄρη εἶναι
τὰ ὑπὸ τῷ ἰσημερινῷ, πρὸς δ' ἑκατέρωθεν ἀπὸ τῶν εὐκράτων ἀμφοῖν προσπίπτοντα τὰ νέφη, ποι-
εῖν τοὺς ὄμβρους. αὕτη μὲν οὖν ἡ ἀνομολογία φανερά. ἀλλὰ καὶ δοθέντος τοῦ ὀρεινὴν εἶναι τὴν ὑπὸ
τῷ ἰσημερινῷ, ἄλλη τις ἀνακύπτειν ἂν δόξειεν. οἱ γὰρ αὐτοὶ σύρρουν φασὶν εἶναι τὸν ὠκεανόν. πῶς
οὖν ὄρη κατὰ μέσον ἱδρύουσιν αὐτῶν. πλὴν εἰ νήσους τινὰς βούλονται λέγειν. ὅπως δέ ποτε τοῦτ' ἔχει,
τῆς γεωγραφικῆς μερίδος ἔξω πίπτει. δοτέον δ' ἴσως τῷ προθεμένῳ τὴν περὶ ὠκεανοῦ πραγμα-
τείαν ταῦτ' ἐξετάζειν. μνησθεὶς δὲ τῶν περιπλεῦσαι λεγομένων τὴν λιβύην. ἡρόδοτον μὲν οἴεσθαί φη-
σιν ὑπὸ δαρείου πεμφθέντας τινὰς τελέσαι τὸν περίπλουν. ἡρακλείδην δὲ τὸν ποντικὸν ἐν διαλόγῳ
ποιεῖν ἀφιγμένον παρὰ γέλωνι μάγον τινὰ περιπλεῦσαι φάσκοντα. ἀμάρτυρα δὲ ταῦτ' εἶναι φή-
σας. καὶ εὔδοξόν τινα κυζικηνὸν θεωρὸν καὶ σπονδοφόρον τοῦ τῶν κορειδίων ἀγῶνος. ἐλθεῖν εἰς αἴγυ-
πτον ἱστορεῖ κατὰ τὸν δεύτερον εὐεργέτην. συσταθῆναι δὲ καὶ τῷ βασιλεῖ καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν καὶ μά-
λιστα κατὰ τοὺς ἀνάπλους τοῦ νείλου. θαυμαστικὸν ὄντα τῶν τοπικῶν ἰδιωμάτων ἅμα, καὶ οὐκ ἀπαί-
δευτον. τυχεῖν δή τινα ἰνδὸν κομισθέντα ὡς τὸν βασιλέα ὑπὸ τῶν φυλάκων τοῦ ἀραβίου μυχοῦ. λε-
γόντων εὑρεῖν αὐτὸν ἡμιθανῆ καταχθέντα μόνον ἐν νηΐ, τίς δ' εἴη καὶ πόθεν ἀγνοεῖν μὴ συνιέντας τὴν
διάλεκτον. τὸν δὲ, παραδοῦναι τοῖς διδάξουσιν ἑλληνίζειν. ἐκμαθόντα δὲ διηγήσασθαι. διότι ἐκ τῆς
ἰνδικῆς πλέων περιπέσοι πλάνῃ, καὶ σωθείη δεῦρο. τοὺς σύμπλους ἀποβαλὼν λιμῷ. ὑπολει-
φθέντα δὲ ὑποσχέσθαι τὸν εἰς ἰνδοὺς πλοῦν ἡγήσασθαι τοῖς ὑπὸ τοῦ βασιλέως προχειρισθεῖσι. τού-
των δὲ γενέσθαι τὸν εὔδοξον, πλεύσαντα δὴ μετὰ δώρων ἐπανελθεῖν ἀντιφορτισάμενον ἀρώματα καὶ
λίθους πολυτελεῖς. ὧν τοὺς μὲν, καταφέρουσιν οἱ ποταμοὶ μετὰ τῶν ψήφων. τοὺς δ' ὀρυκτοὺς εὑρί-
σκουσι. πεπηγότας ἐξ ὑγροῦ. καθάπερ τὰ κρυστάλλινα παρ' ἡμῖν. διαψευσθῆναι δὲ τῶν ἐλπίδων. ἀφε-
λέσθαι γὰρ αὐτὸν ἅπαντα τὸν φόρτον τὸν εὐεργέτην. τελευτήσαντος δ' ἐκείνου τὸν βίον κλεοπά-
τραν τὴν γυναῖκα δέξασθαι τὴν ἀρχὴν, πάλιν οὖν καὶ ὑπὸ ταύτης πεμφθῆναι τὸν εὔδοξον μετὰ μεί-
ζονος παρασκευῆς. ἐπανιόντα δ' ἀνέμοις παρενεχθῆναι ὑπὲρ τὴν αἰθιοπίαν. προσφερόμενον
δέ τισι, τόποις ἐξοικειοῦσθαι τοὺς ἀνθρώπους μεταδόσει σιτίων τε καὶ οἴνου καὶ παλαθίδων. ὧν ἐκείνοις οὐ με-
τῆν. ἀντὶ δὲ τούτων ὑγείας τε τυγχάνειν καὶ καθοδηγίας ἀπογράφεσθαί τε τῶν ῥημάτων ἔνια. εὑρόντα δ' ἀκρό-
πρῳρον ξύλινον ἐκ ναυαγίου ἵππον ἔχον ἐγγεγλυμμένον, πυθόμενον ὡς ἀπὸ τῆς ἑσπέρας πλεόντων τι-
νῶν εἴη τὸ ναυάγιον τοῦτο, κομίζειν αὐτὸ ἀναστρέψαντα πρὸς τὸν οἰκεῖον πλοῦν, σωθέντα δ' εἰς αἴγυ-
πτον οὐκέτι τῆς κλεοπάτρας ἡγουμένης ἀλλὰ τοῦ παιδὸς, ἀφαιρεθῆναι πάλιν πάντα. φωραθῆ-
ναι γὰρ νενοσφισμένον πολλά. τὸ δ' ἀκρόπρῳρον φέροντα ἐς τὸ ἐμπόριον, δεικνύναι τοῖς ναυκλή-
ροις. γνῶναι δὲ γαδειριτῶν ὄν. τούτων γὰρ τοὺς μὲν ἐμπόρους μεγάλα στέλλειν πλοῖα. τοὺς δὲ πένητας
μικρὰ ἃ καλεῖν ἵππους ἀπὸ τῶν ἐν ταῖς πρῴραις ἐπισήμων. τούτους δὲ πλεῖν μέχρι τοῦ λίξου πο-
ταμοῦ περὶ τὴν μαυρουσίαν ἁλιευομένους. ἀλλὰ τῶν δὴ ναυκλήρων τινὰς γνωρίσαι τὸ ἀκρόπρῳρον
ἑνὸς τῶν ἀπὸ τοῦ λίξου ποταμοῦ πορρώτερον πλευσάντων καὶ μὴ σωθέντων ὑπάρξαν. ἐκ δὲ τούτου
συμβαλόντα τὸν εὔδοξον ὡς δυνατὸς εἴη ὁ περίπλους ὁ λιβυκὸς, πορευθέντα οἴκαδε, τὴν οὐσίαν ἐνθέ-
μενον πᾶσαν ἐξορμῆσαι. καὶ πρῶτον μὲν εἰς δικαιαρχίαν. εἶτ' εἰς μασσαλίαν ἐλθεῖν καὶ τὴν ἑξῆς πα-
ραλίαν μέχρι γαδείρων πανταχοῦ δὲ διακωδωνίζοντα ταῦτα καὶ χρηματιζόμενον κατασκευάσα-
σθαι πλοῖον μέγα, καὶ ἐφόλκια δύο λέμβοις λῃστρικοῖς ὅμοια, ἐμβιβάσασθαι μουσικὰ καὶ παιδισκάρια
καὶ ἰατροὺς καὶ ἄλλους τεχνίτας ἔπειτα πλεῖν ἐπὶ τὴν ἰνδικὴν μετέωρον ζεφύροις συνεχέσι. κα-
μνόντων δὲ τῷ πλῷ τῶν συνόντων ἄκοντα ἐπουρίσαι πρὸς γῆν. δεδοικότα τὰς πλημμυρίδας καὶ
τὰς ἀμπώτεις. καὶ δὴ, καὶ συμβῆναι ὅπερ ἐδεδίει. καθίσαι γὰρ τὸ πλοῖον, ἠσυχῆ δὲ ὥστε μὴ δ' ἀθρόον,
διαλυθῆναι ἀλλ' ἀποθῆναι τὰ φορτία σωθέντα εἰς γῆν. καὶ τῶν ξύλων τὰ πλεῖστα. ἐξ ὧν τρίτον λέμ-
βον συμπηξάμενον πεντηκοντόρῳ πάρισον, πλεῖν ἕως ἀνθρώποις συνέμιξε τὰ αὐτὰ ῥήματα φθεγ-
γομένοις ἅπερ πρότερον ἀπογέγραπται. ἅμα δὲ τοῦτο, τε γνῶναι ὅτι τε οἱ ἐνταῦθα ἄνθρωποι ὁμοε-
θνεῖς εἶεν τοῖς αἰθίοψιν ἐκείνοις. καὶ ὅτι ὅμοροι ἐν τῇ βόγου βασιλείᾳ. ἀφέντα δὲ τὸν ἐπὶ ἰνδοὺς πλοῦν
ἀναστρέφειν. ἐν δὲ τῷ παράπλῳ νῆσον εὔυδρον καὶ εὔδενδρον ἔρημον ἰδόντα σημειώσασθαι. σωθέντα
δὲ εἰς τὴν μαυρουσίαν, διαθέμενον τοὺς λέμβους, πεζῇ κομισθῆναι πρὸς τὸν βόγον. καὶ συμβουλεύειν
αὐτῷ τὴν ναυστολίαν ἐπανελέσθαι ταύτην ἰσχύσαι δ' εἰς τἀναντία τοὺς φίλους ὑποτείνοντας φό-

βον μὴ συμβῇ τὴν χώραν εὐεπιβούλευτον γενέσθαι. λαθραίως παρόδου τοῖς ἔξωθεν ἐπὶ στρατείαν ἐθέλουσιν. ὡς δ' ἐπύθετο λόγῳ μὲν πεμπόμενον ἑαυτὸν ἐπὶ τὴν αἰχθεῖσαν ναυστολίαν, ἔργῳ δ' ἐκτεθησόμενον εἰς ἐρήμην τινὰ νῆσον, ἐκφυγεῖν εἰς τὴν ῥωμαίων ἐπικράτειαν. κἀκεῖθεν εἰς τὴν ἰβηρίαν διάραι, πάλιν δὲ κατασκευασάμενον στρογγύλον πλοῖον, καὶ μακρὸν πεντηκόντορον, ὥστε τῷ μὲν, πελαγίζειν, τῷ δὲ πειρᾶσθαι τῆς γῆς, ἐνθέμενον γεωργικὰ, ἐργαλεῖα καὶ σπέρματα καὶ οἰκοδόμους, ὁρμῆσαι πρὸς τὸν αὐτὸν περίπλουν, διανοούμενον εἰ βραδύνοιτο ὁ πλοῦς, ἐν διαχειμάσαι τῇ προεσκεμμένῃ νήσῳ, καὶ σπείραντα καὶ ἀνελόμενον τοὺς καρποὺς τελέσαι τὸν ἐγνωσμένον ἐξ ἀρχῆς πλοῦν, ἐγὼ μὲν οὖν φησὶ μέχρι τῆς περὶ τὸν εὔδοξον ἱστορίας ἥκω. τί δ' ὕστερον συνέβη. τοὺς ἐκ γαδείρων καὶ τῆς ἰβηρίας εἰκὸς εἰδέναι. ἐκ πάντων δὴ τούτων φησὶ δείκνυσθαι, διότι ἡ οἰκουμένη κύκλῳ περιρρεῖται τῷ ὠκεανῷ

» Οὐ γάρ μιν δεσμὸς περιβάλλεται ἠπείροιο
» ἀλλ' ἐς ἀπειρεσίην κέχυται. τό μιν οὔτι μιαίνει.

Θαυμαστὸς δὴ κατὰ πάντα ἐστίν. ὅπως τὸν μὲν τοῦ μάγου περίπλουν ὃν ἡρακλείδης εἶπεν ἀμάρτυρον νομίσας καὶ αὐτῶν τῶν ὑπὸ δαρείου πεμφθέντων ὧν ἡρόδοτος ἱστορεῖ τὸ δὲ βεργαῖον διάστημα τοῦτο ἐν πίστεως μοίρᾳ τιθεὶς. εἴθ' ὑπ' αὐτοῦ πεπλασμένον εἴτ' ἄλλων πλασάντων. πιστευθέντι γὰρ ἡ ἀπιθανότης, πρῶτον μὲν τῆς κατὰ τὸν ἰνδὸν περιπετείας. οὐ γὰρ ἀράβιος κόλπος ποταμοῦ δίκην στενός ἐστι καὶ μακρὸς ἐπὶ μυρίους που σταδίους μέχρι τοῦ στόματος. καὶ τοῦτον στενοῦ παντάπασιν ὄντος. οὐκ εἰκὸς δ' οὔτ' ἔξω που τὸν πλοῦν ἔχοντα εἰς τὸν κόλπον παρωσθῆναι τοὺς ἰνδοὺς κατὰ πλάνην. τὰ γὰρ στενὰ ἀπὸ τοῦ στόματος δηλώσειν ἔμελλε τὴν πλάνην, οὔτ' εἰς τὸν κόλπον ἐπίτηδες καταχθεῖσιν, ἔτι πλάνης ἦν πρόφασις καὶ ἀνέμων ἀστάτων. λιμῷ τε πῶς περιεῖδον ἅπαντας ἀπολλυμένους σφᾶς πλὴν ἑνός. περιγενόμενός τε πῶς ἱκανὸς ἦν μόνος κατευθύνειν τὸ πλοῖον οὐ μικρὸν ὄν, τά γε τηλικαῦτα πελάγη διαίρειν δυνάμενον. τίς δ' ἡ ὀξυμάθεια τῆς διαλέκτου. ἀφ' ἧς ἱκανὸς ἦν πεῖσαι τὸν βασιλέα ὡς δυνάμενος τοῦ πλοῦ καθηγήσασθαι. τίς δ' ἡ σπάνις τῷ εὐεργέτῃ, τῶν τοιούτων καθηγεμόνων. ἤδη γνωριζομένης ὑπὸ πολλῶν ταύτης τῆς θαλάττης. ὁ δὲ δὴ σπονδοφόρος καὶ θεωρὸς τῶν κυζικηνῶν πῶς ἀφεὶς τὴν πόλιν εἰς ἰνδοὺς ἔπλει. πῶς δ' ἐπιστεύθη τηλικαύτην χρείαν. πῶς δ' ἐπανιὼν ἀφαιρεθεὶς πάντα παρὰ τὴν ἐλπίδα καὶ ἀτιμωθεὶς, ἐπὶ μείζονα ἐπιστεύθη παρασκευὴν δώρων. ἐπανιὼν δὲ καὶ παρενεχθεὶς εἰς τὴν αἰθιοπίαν. τίνος χάριν ἢ τὰς διαλέκτους ἀπεγράφετο. ἢ τὸ ἀκρόπρωρον ἐπυνθάνετο τῆς ἁλιάδος πόθεν ἐκπέσοι. τὸ γὰρ μαθεῖν ὅτι ἀπὸ δύσεως ἦν πλεόντων. ναυάγιον, οὐδενὸς ἔμελλεν ὑπάρξειν σημεῖον. ἐπεὶ καὶ αὐτὸς ἔμελλεν ἀπὸ δύσεως πλεῖν κατὰ τὴν ἐπάνοδον. ἐλθὼν οὖν εἰς ἀλεξάνδρειαν, φωραθεὶς ὡς νενοσφισμένος πολλὰ, πῶς οὐκ ἐκολάσθη. ἀλλὰ καὶ περιῄει τοὺς ναυκλήρους διαπυνθανόμενος δεικνὺς ἅμα τὸ ἀκρόπρωρον. ὁ δὲ γνωρίσας οὐχὶ θαυμαστός; ὁ δὲ πιστεύσας οὐχὶ θαυμασιώτερος; καὶ κατ' ἐλπίδα τοιαύτην ἐπανιὼν εἰς τὴν οἰκείαν. καὶ μετοικισμὸν ἐκεῖθεν ποιησάμενος εἶτα τὰ ἔξω στηλῶν. ἀλλ' οὐδ' ἐξὸν ἦν ἄνευ προστάγματος ἐξ ἀλεξανδρείας ἀνάγεσθαι. καὶ ταῦτα νενοσφισμένῳ βασιλικὰ χρήματα. οὐδέ γε λαθεῖν ἐκπλεύσαντα ἐνεδέχετο τοσαύτῃ, φρουρᾷ κεκλεισμένου τοῦ λιμένος, καὶ τῶν ἄλλων ἐξόδων, ὅσην καὶ νῦν ἔτι διαμένουσαν ἔγνωμεν ἡμεῖς ἐπιδημοῦντες τῇ ἀλεξανδρείᾳ πολὺν χρόνον καίτοι τανῦν πολὺ ἀνεῖται ῥωμαίων ἐχόντων, αἱ βασιλικαὶ δὲ φρουραὶ πολὺ ἦσαν πικρότεραι. ἐπειδὴ δὲ, καὶ ἀπῆρεν εἰς τὰ γάδειρα, καὶ ναυπηγησάμενος ἔπλει βασιλικῶς, καὶ διαλυθέντος αὐτῷ τοῦ πλοίου, πῶς μὲν ἐναυπηγήσατο τρίτον λέμβον ἐν τῇ ἐρήμῳ. πῶς δὲ πλέων πάλιν, καὶ εὑρὼν τοὺς ἑσπερίους αἰθίοπας τοῖς ἑῴοις ὁμογλώττους, οὐκ ὠρέχθη διανύσαι τὸν ἑξῆς πλοῦν. οὕτω χαῦνος ὢν πρὸς τὸ φιλέκδημον μικρὸν ἔχειν ἐλπίσας λοιπὸν τὸ ἄγνωστον. ἀλλ' ἀφεὶς ταῦτα, τῆς διὰ βόγου ναυτιλίας ἐπεθύμησε. πῶς δ' ἔγνω τὴν λάθρα κατ' αὐτοῦ συνισταμένην ἐπιβουλήν. τί δὲ τοῦτ' ἦν τῷ βόγῳ πλεονέκτημα, ὅτ' ἀνθρώπου ἀφανισμὸν ἐξὸν ἄλλως ἀποπέμψασθαι, γνοὺς δὲ τὴν ἐπιβουλὴν πῶς ἔφθη φυγὼν εἰς ἀσφαλεῖς τόπους. ἕκαστον γὰρ τῶν τοιούτων οὐκ ἀδύνατον μὲν ἀλλὰ χαλεπὸν καὶ σπανίως γινόμενον μετὰ τύχης τινός, τῷ δ' εὐτυχεῖν ἀεὶ συνέβαινεν εἰς κινδύνους καθισταμένῳ συνεχεῖς. πῶς δ' οὐκ ἔδεισεν ἀποδρὰς τὸν βόγον πλεῖν πάλιν παρὰ τὴν λιβύην σὺν παρασκευῇ δυναμένῃ συνοικίσαι νῆσον. οὐ πολὺ οὖν ἀπολείπεται ταῦτα τῶν πυθέου καὶ εὐημέρου καὶ ἀντιφάνους ψευσμάτων. ἀλλ' ἐκείνοις μὲν συγγνώμη τοῦτ' αὐτὸ ἐπιτηδεύουσιν ὥσπερ τοῖς θαυματοποιοῖς. τῷ δ' ἀποδεικτικῷ, καὶ φιλοσόφῳ, σχεδὸν δέ τι καὶ περὶ πρωτείων ἀγωνιζομένῳ, τίς ἂν συγγνοίη. ταῦτα μὲν οὖν οὐκ εὖ. τὸ δὲ ἐξαίρεσθαι τὴν γῆν ποτὲ καὶ ἱζήματα λαμβάνειν καὶ μεταβολὰς τὰς ἐκ τῶν σεισμῶν καὶ τῶν ἄλλων τῶν τοιούτων ὅσα διηριθμησάμεθα, καὶ ἡμεῖς, ὀρθῶς κεῖται; παρ' αὐτῷ. πρὸς ὃ καὶ τὸ τοῦ πλάτωνος εὖ παρατίθησιν. ὅτι ἐνδέχεται, καὶ μὴ πλάσμα εἶναι τὸ περὶ τῆς νήσου τῆς ἀτλαντίδος. περὶ ἧς ἐκεῖνος ἱστορῆσαι σόλωνα φησὶ πεπυσμένον παρὰ τῶν αἰγυπτίων ἱερέων, ὡς ὑπάρχουσα ποτὲ ἀφανισθείη τὸ μέγεθος οὐκ ἐλάττων ἠπείρου. καὶ τοῦτο βέλτιον οἴεται λέγειν ἢ διότι ὁ πλάσας αὐτὴν ἠφάνισεν. ὡς ὁ ποιητὴς τὸ τῶν ἀ-

χαῖον τεῖχος. εἰκάζει δὲ καὶ τὴν τῶν κίμβρων καὶ τὴν τῶν συγγενῶν ἐξανάστασιν, ἐκ τῆς οἰκείας γενέσθαι κατὰ θαλάττης ἔφοδον, οὐκ ἀθρόαν συμβᾶσαν. ὑπονοεῖ δὲ τὸ τῆς οἰκουμένης μῆκος ἑπτά που μυριάδων σταδίων ὑπάρχον ἥμισυ εἶναι τοῦ ὅλου κύκλου καθ᾽ ὃν εἴληπται. ὥστε φησὶν ἀπὸ τῆς δύσεως εὔρῳ πλέοντας ἐν τοσαύταις μυριάσιν ἔλθοι ἂν εἰς ἰνδούς. ἐπιχειρήσας δὲ αἰτιᾶσθαι τοὺς οὕτω τὰς ἠπείρους διορίσαντας, ἀλλὰ μὴ παραλλήλοις τισὶ τῷ ἰσημερινῷ δι᾽ ὧν ἔμελλον ἐξαλλάξεις δείκνυσθαι ζῴων τε καὶ φυτῶν καὶ ἀέρων τῶν μὲν τῇ κατεψυγμένῃ συναπτόντων. τῶν δὲ τῇ διακεκαυμένῃ, ὥστε οἱονεὶ ζώνας εἶναι τὰς ἠπείρους, ἀνασκευάζει πάλιν καὶ ἀναλύει δίκην γίνεται ἐπαινῶν πάλιν τὴν οὖσαν διαίρεσιν θετικὴν ποιούμενος τὴν ζήτησιν πρὸς οὐδὲν χρήσιμος. αἱ γὰρ τοιαῦται διατάξεις οὐκ ἐκ προνοίας γίνονται. καθάπερ οὐδὲ αἱ κατὰ τὰ ἔθνη διαφοραὶ οὐδ᾽ αἱ διάλεκτοι, ἀλλὰ κατὰ ἐπίπτωσιν καὶ συντυχίαν. καὶ τέχναι τε καὶ δυνάμεις καὶ ἐπιτηδεύσεις ἀρξάντων τινῶν κρατοῦσιν αἱ πλείους ἐν ὁποιῳοῦν κλίματι. ἔστι δέ τι καὶ παρὰ τὰ κλίματα. ὥστε τὰ μὲν φύσει ἐστὶν ἐπιχώριά τισι. τὰ δὲ ἔθει, καὶ ἀσκήσει. οὐ γὰρ φύσει ἀθηναῖοι μὲν φιλόλογοι, λακεδαιμόνιοι δ᾽ οὔ. καὶ οἱ ἔτι ἐγγυτέρω, θηβαῖοι. ἀλλὰ μᾶλλον ἔθει. οὕτως οὐδὲ βαβυλώνιοι φύσει φιλόσοφοι καὶ αἰγύπτιοι. ἀλλὰ καὶ ἀσκήσει καὶ ἔθει. καὶ ἵππων δὲ καὶ βοῶν ἀρετὰς καὶ ἄλλων ζῴων οὐ τόποι μόνον, ἀλλὰ καὶ ἀσκήσει ποιοῦσιν. ὁ δὲ συγχεῖ ταῦτα. ἐπαινῶν δὲ τὴν τοιαύτην διαίρεσιν τῶν ἠπείρων, οἵαν νῦν ἔστι παραδείγματι χρῆται, τῷ τοὺς ἰνδοὺς τῶν αἰθιόπων διαφέρειν, ὄντων τῇ λιβύῃ. εὐερνεστέρους γὰρ εἶναι καὶ ἧττον ἕψεσθαι τῇ ξηρασίᾳ τοῦ περιέχοντος. διὸ καὶ ὅμηρον πάντας λέγοντα αἰθίοπας δίχα διελεῖν,

» Οἱ μὲν δυσομένου ὑπερίονος, οἱ δ᾽ ἀνιόντος.

Καὶ εἰσάγοντα τὴν ἑτέραν οἰκουμένην ἣν οὐκ εἶδεν ὅμηρος δουλεύειν ὑποθέσει. καὶ ἔδει φησὶ μεταγράφειν οὕτως. ἠμὲν ἀπερχομένου ὑπερίονος. οἷον ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ περικλίνοντος. πρῶτον μὲν οὖν οἱ πρὸς αἰγύπτῳ αἰθίοπες, καὶ αὐτοὶ δίχα διαιροῦνται. οἱ μὲν γὰρ ἐν τῇ ἀσίᾳ εἰσίν. οἱ δ᾽ ἐν τῇ λιβύῃ. οὐδὲν διαφέροντες ἀλλήλων. ἔπειθ᾽ ὅμηρος οὐ διὰ τοῦτο διαιρεῖ τοὺς αἰθίοπας. ἢ ὅτι τοὺς ἰνδοὺς ᾔδει τινὰς τοιούτους τοῖς σώμασιν. οὐ δὲ γὰρ ἀρχὴν εἰδέναι τοὺς ἰνδοὺς εἰκὸς ὅμηρον. ὅπου οὐδ᾽ ὁ γε εὐεργέτης κατὰ τὸν εὐδόξειον μῦθον, ᾔδει τὰ κατὰ τὴν ἰνδικήν. οὐδὲ τὸν πλοῦν τὸν πλοῦν τὸν ἐπ᾽ αὐτήν. ἀλλὰ μᾶλλον κατὰ τὴν λεχθεῖσαν ὑφ᾽ ἡμῶν πρότερον διαίρεσιν. ἐκεῖ δὲ καὶ περὶ τῆς γραφῆς τῆς κρατητείου διῃτήσαμεν ὅτι οὐδὲν διαφέρει, οὕτως ἢ ἐκείνως γράφειν. ὁ δὲ τοῦτο μὲν διαφέρειν φησί. κρεῖττον δ᾽ οὕτως εἶναι μεταθεῖναι. ἠμὲν ἀπερχομένου. τί οὖν διαφέρει τοῦτο τοῦ, ἠ μὲν δυσομένου. πᾶν γὰρ τὸ τμῆμα τὸ ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ ἐπὶ δύσιν δύσις καλεῖται. καθάπερ καὶ τὸ τοῦ ὁρίζοντος ἡμικύκλιον. ὅπερ καὶ ἄρατος ἐπισημαίνεται,

» Ἧ περ ἄκραι —

» Μίσγονται δύσιές τε καὶ ἀντολαὶ ἀλλήλῃσιν.

Εἰ δ᾽ ἐπὶ τῆς κρατητείου γραφῆς, βέλτιον οὕτω φήσει τις, καὶ ἐπὶ τῆς ἀρισταρχείου δεῖν. τοσαῦτα καὶ πρὸς ποσειδώνιον. πολλὰ γὰρ καὶ ἐν τοῖς καθ᾽ ἕκαστα τυγχάνει τῆς προσηκούσης διαίτης ὅσα γεωγραφικά. ὅσα δὲ φυσικώτερα, ἐπισκεπτέον ἐν ἄλλοις, ἢ οὐ φροντιστέον. πολὺ γάρ ἐστι τὸ αἰτιολογικὸν παρ᾽ αὐτῷ. καὶ τὸ ἀριστοτελίζον. ὅπερ ἐκκλίνουσιν οἱ ἡμέτεροι διὰ τὴν ἐπίκρυψιν τῶν αἰτιῶν. πολύβιος δὲ τὴν εὐρώπην χωρογραφῶν, τοὺς καὶ ἀρχαίους ἐᾶν φησί. τοὺς δ᾽ ἐκείνους ἐλέγχοντας ἐξετάζειν, δικαίαρχόν τε καὶ ἐρατοσθένη τὸν τελευταῖον πραγματευσάμενον περὶ τῆς γεωγραφίας. καὶ πυθέαν. ὑφ᾽ οὗ παρακρουσθῆναι πολλούς. ὅλην μέν τοι βρεττανικὴν ἐμβατὸν ἢ ἐπελθεῖν φάσκοντος. τὴν δὲ περίμετρον πλειόνων τεττάρων μυριάδων ἀποδόντος τῆς νήσου. προσιστορήσαντος δὲ καὶ τὰ περὶ τῆς θούλης καὶ τῶν τόπων ἐκείνων. ἐν οἷς οὔτε γῆ καθ᾽ αὑτὴν ὑπῆρχεν ἔτι, οὔτε θάλαττα, οὔτ᾽ ἀήρ. ἀλλὰ σύγκριμά τι ἐκ τούτων πλεύμονι θαλαττίῳ ἐοικός. ἐν ᾧ φησι τὴν γῆν καὶ τὴν θάλατταν αἰωρεῖσθαι, καὶ τὰ σύμπαντα. καὶ τοῦτον ὡς ἂν δεσμὸν εἶναι τῶν ὅλων. μήποτε πορευτὸν μήτε πλωτὸν ὑπάρχοντα. τὸ μὲν οὖν τῷ πλεύμονι ἐοικὸς αὐτὸς ἑωρακέναι. τἆλλα δὲ λέγειν ἐξ ἀκοῆς. ταῦτα μὲν τὰ τοῦ πυθέου. καὶ διότι ἐπανελθὼν ἐνθένδε πᾶσαν ἐπέλθοι τὴν παρωκεανῖτιν τῆς εὐρώπης, ἀπὸ γαδείρων ἕως τανάιδος. φησὶ δ᾽ οὖν ὁ πολύβιος ἄπιστον καὶ αὐτὸ τοῦτο. πῶς ἰδιώτῃ ἀνθρώπῳ, καὶ πένητι τοσαῦτα διαστήματα πλωτά, καὶ πορευτὰ γένοιτο. τὸν δ᾽ ἐρατοσθένη διαπορήσαντα εἰ χρὴ πιστεύειν τούτοις, ὅμως περί τε τῆς βρεττανικῆς πεπιστευκέναι καὶ τῶν κατὰ γάδειρα καὶ τὴν ἰβηρίαν. πολὺ δέ φησι βέλτιον τῷ μεσσηνίῳ πιστεύειν ἢ τούτῳ. ὁ μέν τοι γε εἰς μίαν χώραν τὴν παγχαίαν λέγει πλεῦσαι. ὁ δὲ καὶ μέχρι τῶν τοῦ κόσμου περάτων κατωπτευκέναι, τὴν προσάρκτιον εὐρώπην πᾶσαν. ἣν οὐδ᾽ ἂν τῷ ἑρμῇ πιστεύσαι τις λέγοντι. ἐρατοσθένη δὲ τὸν μὲν εὐήμερον βεργαῖον καλεῖν. πυθέᾳ δὲ πιστεύειν. καὶ ταῦτα δὲ μήτε δικαιάρχου πιστεύσαντος. τὸ μὲν οὖν μήτε δικαιάρχου πιστεύσαντος γελοῖον. ὥσπερ ἐκείνῳ χρήσασθαι κανόνι προσῆκον. καθ᾽ οὗ τοσούτους ἐλέγχους αὐτὸς προφέρεται. ἐρατοσθένους δὲ εἴρηται ἡ περὶ τὰ ἑσπέρια καὶ τὰ ἀρκτικὰ τῆς εὐρώπης ἄγνοια. ἀλλ᾽ ἐκείνῳ μὲν καὶ δικαιάρχῳ συγγνώμη τοῖς μὴ κατιδοῦσι τοὺς τόπους ἐκείνους. πολυβίῳ δέ, καὶ ποσειδωνίῳ τίς ἂν συγγνοίη. ἀλλὰ μὴν πολύβιός γε ἐστὶν ὁ λαοδογματι-

καὶ καλῶς ἀποφάσεις εἰς ποιεῖται περὶ τῶν ἐν τούτοις τοῖς τόποις διαστημάτων· καὶ ἐν ἄλλοις πολλοῖς· ἀλλ' οὐδ' ἐν οἷς ἐκείνους ἐλέγχει καθαρεύει. τοῦ γοῦν δικαιάρχου μυρίους μὲν εἰπόντος τοὺς ἐπὶ στήλας ἀπὸ τῆς πελοποννήσου σταδίους, πλείους δὲ τούτων τοὺς ἐπὶ τὸν ἀδρίαν μέχρι τοῦ μυχοῦ· τοῦ δ' ἐπὶ στήλας τὸ μέχρι τοῦ πορθμοῦ, τρισχιλίους ἀποδόντος, ὡς γίνεσθαι τὸ λοιπὸν ἑπτακισχιλίους τὸ ἀπὸ πορθμοῦ μέχρι στηλῶν, τοὺς μὲν τρισχιλίους ἐᾶν φησιν εἴτ' εὖ λαμβάνονται εἴτε μή· τοὺς δ' ἑπτακισχιλίους οὐδετέρως· οὔτε τὴν παραλίαν ἐκμετρουμένῳ· οὔτε τὴν διὰ μέσου τοῦ πελάγους. τὴν μὲν γὰρ παραλίαν ἐοικέναι μάλιστ' ἀμβλείᾳ γωνίᾳ βεβηκυίᾳ ἐπί τε τοῦ πορθμοῦ καὶ τῶν στηλῶν, κορυφὴν δ' ἐχούσῃ ναρβῶνα, ὥστε συνίστασθαι τρίγωνον βάσιν ἔχον τὴν διὰ τοῦ πελάγους εὐθεῖαν· πλευρὰς δὲ τὰς τὴν γωνίαν ποιούσας τὴν λεχθεῖσαν· ὧν ἡ μὲν ἀπὸ τοῦ πορθμοῦ μέχρι ναρβῶνος, μυρίων ἐστὶ καὶ πλειόνων ἢ διακοσίων ἐπὶ τοῖς χιλίοις. ἡ δὲ λοιπὴ μικρὰ λοιπὸν ἐλαττόνων ἢ ὀκτακισχιλίων. καὶ μὴν πλεῖστον μὲν διάστημα ἀπὸ τῆς εὐρώπης ἐπὶ τὴν λιβύην ὁμολογεῖσθαι κατὰ τὸ τυρρηνικὸν πέλαγος σταδίων οὐ πλειόνων ἢ τρισχιλίων· κατὰ δὲ σαρδόνιον δὲ λαμβάνειν συναγωγήν· ἀλλ' ἔστω φησὶ καὶ ἐκεῖνο τρισχιλίων· προσλήφθω δ' ἐπὶ τούτοις δισχιλίων σταδίων, τὸ τοῦ κόλπου βάθος τὸ κατὰ ναρβῶνα· ὡς ἂν κάθετος ἀπὸ τῆς κορυφῆς ἐπὶ τὴν βάσιν τοῦ ἀμβλυγωνίου. δῆλον οὖν φησιν ἐκ τῆς παιδικῆς μετρήσεως ὅτι ἡ σύμπασα παραλία ἡ ἀπὸ τοῦ πορθμοῦ ἐπὶ στήλας ἔγγυστα ὑπερέχει τῆς διὰ τοῦ πελάγους εὐθείας, πεντακοσίοις σταδίοις. προστεθέντων δὲ τῶν ἀπὸ τῆς πελοποννήσου ἐπὶ τὸν πορθμὸν τρισχιλίων· οἱ σύμπαντες ἔσονται στάδιοι, αὐτοὶ ἐπ' εὐθείας, πλείους ἢ διπλάσιοι ὧν δικαίαρχος εἶπε. πλείους δὲ τούτων τοὺς ἐπὶ τὸν μυχὸν τὸν ἀδριατικὸν δεήσει φησὶ τιθέναι κατ' ἐκεῖνον. ἀλλ' ὦ φίλε πολύβιε φαίη τις ἄν, ὥσπερ τούτου τοῦ ψεύσματος ἐναργῆ παρίστησι τὸν ἔλεγχον ἡ πεῖρα ἐξ αὐτῶν ὧν εἴρηκας αὐτός, εἰς μὲν λευκάδα ἐκ πελοποννήσου ἑπτακοσίους· ἐκ τούτου δὲ τοὺς ἴσους εἰς κέρκυραν, καὶ πάλιν ἐκ τούτου εἰς τὰ κεραύνια τοὺς ἴσους καὶ ἐν δεξιᾷ εἰς τὴν ἰαπυγίαν· ἀπὸ δὲ τῶν κεραυνίων τὴν ἰλλυρικὴν παραλίαν σταδίων ἑξακισχιλίων ἑκατὸν πεντήκοντα, οὕτως κἀκεῖνα ψεύσματά ἐστιν ἀμφότερα· καὶ ὃ δικαίαρχος εἶπε τὸ ἀπὸ πορθμοῦ ἐπὶ στήλας εἶναι σταδίων ἑπτακισχιλίων· καὶ ὃ σὺ δοκεῖς ἀποδεῖξαι. ὁμολογοῦσι γὰρ οἱ πλεῖστοι λέγοντες τὸ διὰ πελάγους μυρίων εἶναι καὶ δισχιλίων. συμφωνεῖ δὲ τοῦτο καὶ τῇ ἀποφάσει τῇ περὶ τοῦ μήκους τῆς οἰκουμένης. μάλιστα γὰρ εἶναι φησὶ μυριάδων ἑπτά. τούτου δὲ τὸ ἑσπέριον τμῆμα τὸ ἀπὸ τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῶν ἄκρων τῆς ἰβηρίας, ἅπερ δυσμικώτερά ἐστι, μικρὸν ἀπολείπει τῶν τρισμυρίων, συντίθησι δ' οὕτως· ἀπὸ μὲν τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς ῥοδίας, πεντακισχιλίους· ἔνθεν δ' ἐπὶ σαλμώνιον τῆς κρήτης, ὅπερ ἐστὶ τὸ ἑῷον ἄκρον, χιλίους. αὐτῆς δὲ τῆς κρήτης μῆκος πλείους ἢ δισχιλίους ἐπὶ κριοῦ μέτωπον. ἐκ τούτου δ' ἐπὶ πάχυνον τῆς σικελίας τετρακισχιλίους καὶ πεντακοσίους, καὶ ἀπὸ παχύνου ἐπὶ πορθμὸν πλείους ἢ χιλίους, εἶτα τὸ δίαρμα τὸ ἐπὶ στήλας ἀπὸ πορθμοῦ μυρίους τρισχιλίους. ἀπὸ στηλῶν δ' ἐπὶ τὰ τελευταῖα τοῦ ἱεροῦ ἀκρωτηρίου τῆς ἰβηρίας τρισχιλίους. καὶ ἡ κάθετος δὲ οὐκ ἄλλως εἴληπται. εἴπερ ἡ μὲν ναρβὼν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου ἵδρυται σχεδόν τι τῷ διὰ μασσαλίας· αὕτη δὲ τῷ διὰ βυζαντίου καθάπερ καὶ ἵππαρχος πείθεται. ἡ δὲ διὰ τοῦ πελάγους ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ ἐστι τῷ διὰ πορθμοῦ καὶ τῆς ῥοδίας· ἀπὸ δὲ τῆς ῥοδίας εἰς βυζάντιον ὡς ἂν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ μεσημβρινοῦ κειμένων ἀμφοῖν, περὶ πεντακισχιλίους ὡς εἰρήκασι σταδίους. τοσοῦτοι γὰρ ἂν εἶεν καὶ οἱ τῆς εἰρημένης καθέτου. ἐπεὶ δὲ καὶ τὸ μέγιστον δίαρμα τοῦ πελάγους τούτου τὸ ἀπὸ τῆς εὐρώπης, ἐπὶ τὴν λιβύην, πεντακισχιλίων που σταδίων λέγουσιν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ γαλατικοῦ κόλπου, δοκεῖ μοι πεπλανημένως λέγεσθαι τοῦτο, ἢ πολὺ τὴν λιβύην κατὰ τοῦτο τὸ μέρος προσνεύειν ἐπὶ τὴν ἄρκτον, καὶ συνάπτειν τῷ διὰ τῶν στηλῶν παραλλήλῳ. καὶ τοῦτο οὐκ εὖ λέγεται τὸ πλησίον τῆς σαρδόνος τὴν λεχθεῖσαν κάθετον τελευτᾶν. οὐ γὰρ παραπλήσιον. ἀλλὰ πολὺ δυσμικώτερον εἶναι τὸ δίαρμα τοῦτο τῆς σαρδόνος ὅλον, σχεδόν τι ἀπολαμβανόμενον ἐν τῷ μεταξὺ πρὸς τῷ σαρδονίῳ τὸ λιγυστικὸν πέλαγος. καὶ τῆς παραλίας δὲ τὰ μήκη πεπλεόνασται. πλὴν οὐκ ἐπὶ τοσοῦτόν γε. ἑξῆς δὲ τὰ τοῦ ἐρατοσθένους ἐπανορθοῖ. τὰ μὲν εὖ τὰ δὲ χεῖρον λέγων ἢ ἐκεῖνος. ἐξ ἰθάκης μὲν γὰρ εἰς κέρκυραν, τριακοσίους εἰπόντος πλείους φησὶν εἶναι τῶν ἐνακοσίων. ἐξ ἐπιδάμνου δ' εἰς θεσσαλονίκειαν ἐνακοσίους ἀποδόντος, πλείους τῶν δισχιλίων φησί. ταῦτα μὲν εὖ. ἀπὸ δὲ μασσαλίας ἐπὶ στήλας λέγοντος ἑπτακισχιλίους· ἀπὸ δὲ πυρήνης ἑξακισχιλίους, αὐτὸς λέγει χεῖρον, πλείους ἢ ἐνακισχιλίους· τοὺς ἀπὸ μασσαλίας· ἀπὸ δὲ πυρήνης μικρὸν ἐλάττους ἢ ὀκτακισχιλίους. ἐγγυτέρω γὰρ τῆς ἀληθείας ἐκεῖνος εἴρηκεν. οἱ γὰρ νῦν ὁμολογοῦσιν εἴ τις τὰς τῶν ὁδῶν ἀνωμαλίας ὑποτέμνοιτο, μὴ μείζω τῶν ὀκτακισχιλίων σταδίων εἶναι τὸ μῆκος τὴν σύμπασαν ἰβηρίαν, ἀπὸ πυρήνης ἕως τῆς ἑσπερίου πλευρᾶς. ὁ δ' αὐτὸν τὸν τάγον ποταμόν, ὀκτακισχιλίων σταδίων τίθησι τὸ μῆκος ἀπὸ τῆς πηγῆς μέχρι τῶν ἐκβολῶν. οὐ δήπου τὸ σὺν τοῖς σκολιώμασιν. οὐ γὰρ γεωγραφικὸν τοῦτο. ἀλλ' ἐπ' εὐθείας λέγων. καίτοι γε ἀπὸ πυρήνης αἱ τοῦ τάγου πηγαὶ πλέον διέχουσιν ἢ χιλίους σταδίους. πάλιν δὲ τοῦτο μὲν ὀρθῶς ἀποφαίνεται, ὅτι ἀγνοεῖ τὰ ἰβηρικὰ ὁ ἐρατοσθένης, καὶ διότι περὶ αὐτῆς ἔσθ' ὅπου τὰ μαχόμενα ἀποφαίνεται.

ὅς γε μέχρι γαδείρων ὑπὸ γαλατῶν περιοικεῖσθαι φήσας ἔξωθεν αὐτῆς, εἴγε τὰς πρὸς δύσιν τῆς εὐ
ρώπης μέχρι γαδείρων ἔχουσιν ἐκεῖνοι. τούτων οὐκ ἐκλαθόμενος κατὰ τὴν τῆς ἰβηρίας περίοδον
τῶν γαλατῶν, οὐδαμοῦ μέμνηται. τὸ μῆκος τῆς εὐρώπης ὅτι ἔλαττόν ἐστι τοῦ συνάμφω τῆς τε λιβύης
καὶ τῆς ἀσίας ἐκτιθεὶς, οὐκ ὀρθῶς τὴν σύγκρισιν ποιεῖται. τὸ μὲν γὰρ στόμα τὸ κατὰ στήλας φησὶν
ὅτι κατὰ τὴν ἰσημερινὴν δύσιν ἐστὶν, ὁ δὲ τάναϊς ῥεῖ ἀπὸ θερινῆς ἀνατολῆς. ἐλάττωται δὴ τοῦ συνάμφω
μήκους, τοῦ μεταξὺ τῆς θερινῆς ἀνατολῆς καὶ τῆς ἰσημερινῆς. τοῦτο γὰρ ἡ ἀσία προλαμβάνει πρὸς
τὴν ἰσημερινὴν ἀνατολὴν, τοῦ πρὸς τὰς ἄρκτους ἡμικυκλίου. χωρὶς γὰρ τοῦ περισκελοῦς ἐν πράγ
μασιν εὐαποδότοις, καὶ ψεῦδός ἐστι τὸ ἀπὸ θερινῆς ἀνατολῆς τὸν τάναϊν ῥεῖν. ἅπαντες γὰρ οἱ ἔμπειροι
τῶν τόπων, ἀπὸ τῶν ἄρκτων ῥεῖν φασὶν εἰς τὴν μαιῶτιν, ὥστε τὰ στόματα τοῦ ποταμοῦ, καὶ τὸ τῆς
μαιώτιδος, καὶ αὐτὸν τὸν ποταμὸν ἐφ' ὅσον γνώριμός ἐστιν ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ μεσημβρινοῦ κεῖσθαι. οὐκ ἄ
ξιον δὲ λόγου τινὲς εἶπον οἱ μὲν ἀπὸ τῶν κατὰ τὸν ἴστρον τόπων αὐτὸν τὰς ἀρχὰς ἔχειν, καὶ ἀπὸ τῆς ἑ
σπέρας. οὐκ ἐνθυμηθέντες ὡς μεταξὺ ὁ τύρας, καὶ βορυσθένης καὶ ὕπανις μεγάλοι ποταμοὶ ῥέ
ουσιν εἰς τὸν πόντον. ὁ μὲν τῷ ἴστρῳ παράλληλος. ὁ δὲ τῷ ταναΐδι. οὔτε τοῦ τύρα τῶν πηγῶν κατωπτευ
μένων, οὔτε τοῦ βορυσθένους. οὔτε τοῦ ὑπάνιος. πολὺ ἂν εἴη ἀγνωστότερα τὰ ἐκείνων ἀρκτικώτερα.
ὥσθ' ὁ διὰ ἐκείνων ἄγων ἐπὶ τὴν μαιῶτιν τὸν τάναϊν. εἶτ' εὐθὺ στρέφων ἐπ' αὐτήν. αἱ γὰρ ἐκβολαὶ φα
νερῶς ἐν τοῖς προσαρκτίοις μέρεσι τῆς λίμνης δείκνυνται, καὶ τούτοις ἑωθινωτάτοις, πλαστὸς ἂν τις
εἴη καὶ ἀπέραντος λόγος. ὡς δ' αὔτως ἀπέραντος καὶ ὁ διὰ τοῦ καυκάσου πρὸς ἄρκτον φήσας ῥεῖν,
εἶτ' ἐπιστρέφειν εἰς τὴν μαιῶτιν. εἴρηται γὰρ καὶ τοῦτο. ἀπό μέντοι τῆς ἀνατολῆς οὐδεὶς εἴρηκε τὴν ῥύσιν.
καὶ γὰρ εἰ ἔρρει οὕτως, οὐκ ἂν ὑπεναντίως τῷ νείλῳ. καὶ τρόπον τινὰ κατὰ διάμετρον ῥεῖν αὐτὸν ἀπε
φαίνοντο οἱ χαριέστεροι. ὡς ἂν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ μεσημβρινοῦ παρακειμένου τινὸς τῆς ῥύσεως οὔσης ἑκατέ
ρῳ ποταμῷ. ἥ τε τοῦ μήκους τῆς οἰκουμένης μέτρησις, κατὰ παραλλήλου τῷ ἰσημερινῷ ἐστίν. ἐπειδὴ
καὶ αὐτὴ ἐπὶ μῆκος οὕτως ἐκτέταται, ὥστε καὶ τῶν ἠπείρων ἑκάστης οὕτω δεῖ λαμβάνειν τὸ μῆκος με
ταξὺ μεσημβρινῶν δυεῖν κείμενον, τά τε μέτρα τῶν μηκῶν σταδιασμοί εἰσιν. οὓς θηρεύομεν, ἢ δι' αὐτῶν
ἐκείνων, ἰόντες, ἢ τῶν παραλλήλων ὁδῶν, ἢ πόρων, ὁ δὲ τοῦτον ἀφεὶς τὸν τρόπον καινὸν εἰσάγει τὸν μετα
ξὺ τῆς τε θερινῆς ἀνατολῆς, καὶ τῆς ἰσημερινῆς τμήματι τοῦ ἀρκτικοῦ ἡμικυκλίου. πρὸς δὲ τὰ ἀμε
τάπτωτα, οὐδεὶς κανόσι καὶ μέτροις χρῆται τοῖς μεταπίπτουσιν. οὐδὲ τοῖς κατ' ἄλλην καὶ ἄλλην σχέσιν λεγομένοις
πρὸς τὰ καθ' αὑτὰ, καὶ διαφορὰν οὐκ ἔχοντα. τὸ μὲν οὖν μῆκος ἀμετάπτωτον καὶ καθ' αὑτὸ λέγεται.
ἀνατολὴ δ' ἰσημερινὴ καὶ δύσις. ὡς δ' αὔτως χειμερινή τε καὶ θερινή. οὐ καθ' αὑτήν. ἀλλὰ πρὸς ἡμᾶς. ἡ
μῶν δ' ἄλλοτ' ἄλλη μεταχωρούντων, ἄλλοτ' ἄλλοι τόποι καὶ δύσεων εἰσὶ, καὶ ἀνατολῶν ἰσημερινῶν
τε καὶ τροπικῶν. τὸ δὲ μῆκος μένει ταυτὸν τῆς ἠπείρου. τάναϊν μὲν οὖν καὶ νεῖλον οὐκ ἄτοπον πέρας,
ποιεῖσθαι. θερινὴν δ' ἀνατολὴν ἰσημερινὴν καινόν. προσπεπτωκυίας δὲ τῆς εὐρώπης ἄκραις πλείοσι,
βέλτιον μὲν οὗτος εἴρηκεν ἐρατοσθένους περὶ αὐτῶν, οὔπω δὲ ἱκανῶς. ἐκεῖνος μὲν γὰρ τρεῖς ἔφη. τὴν ἐπὶ
τὰς στήλας καθήκουσαν, ἐφ' ἧς ἡ ἰβηρία, καὶ τὴν ἐπὶ τὸν πορθμὸν, ἐφ' ἧς ἡ ἰταλία, καὶ τρίτην τὴν κα
τὰ μαλέας. ἐφ' ἧς τὰ μεταξὺ τοῦ ἀδρίου, καὶ τοῦ εὐξείνου, πάντ' ἔθνη, καὶ τοῦ ταναΐδος. οὗτος δὲ
τὰς μὲν δύο τὰς πρώτας ὁμοίως ἐκτίθεται. τρίτην δὲ τὴν κατὰ μαλέαν καὶ σούνιον ἐφ' ἧς ἡ ἑλλὰς,
πᾶσα καὶ ἡ ἰλλυρὶς καὶ τῆς θράκης τινά. τετάρτην δὲ τὴν κατὰ τὴν θρακίαν χερρόνησον ἐφ' ἧς τὰ κα
τὰ τὸν σηστὸν καὶ ἄβυδον στενά. ἔχουσι δ' αὐτὴν θρᾶκες. πέμπτην δὲ τὴν κατὰ τὸν κιμμερικὸν βόσπορον
καὶ τὸ στόμα τῆς μαιώτιδος. τὰς μὲν οὖν δύο τὰς πρώτας, δοτέον. ἁπλοῖς γάρ τισι περιλαμβά
νονται κόλποις. ἡ μὲν τῷ μεταξὺ τῆς κάλπης καὶ τοῦ ἱεροῦ ἀκρωτηρίου ἐν ᾧ τὰ γάδειρα, καὶ τῷ με
ταξὺ στηλῶν, καὶ τοῦ σικελίας πελάγει. ἡ δὲ τούτῳ τε καὶ τῷ ἀδρίᾳ. καίτοι ἥγε τῶν ἰαπύγων ἄκρα, πα
ρεμπίπτουσα καὶ τὴν ἰταλίαν δικόρυφον ποιοῦσα ἔχει τινὰ ἀντέμφασιν. αἱ λοιπαὶ δέ τι ἐναργέστεροι
ποικίλαι καὶ πολυμερεῖς οὖσαι, ζητοῦσιν ἄλλην διαίρεσιν. ὡς δ' αὔτως ἔχει καὶ ἡ εἰς ἓξ διαίρεσις
τὴν ὁμοίαν ἔστασιν ἀκολούθως ταῖς ἄκραις διῃρημένη. ποιησόμεθα δ' ἡμεῖς ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα τὴν προ
σήκουσαν ἐπανόρθωσιν καὶ τούτων, καὶ τῶν ἄλλων ὅσα ἔν τε τῇ εὐρώπῃ διημάρτηται, καὶ ἐν τῇ τῆς
λιβύης περιοδείᾳ. νῦν δ' ἀρκέσει ταῦτα λεχθέντα πρὸς τοὺς πρὸ ἡμῶν. οὓς ᾠήθημεν ἱκανοὺς εἶναι
παρατεθέντας ἐκμαρτυρεῖν ἡμῖν ὅτι δικαίως προειλόμεθα καὶ αὐτοὶ τὸ αὐτὸ τοῦτο ἔργον, τοσαύ
της ἐπανορθώσεως καὶ προσθήκης δεόμενον. ἐπεὶ δὲ τοῖς πρὸς ἐκείνους λόγοις συνεχής ἐστιν ἡ ἐγχείρησις
τῆς ἡμετέρας ὑποσχέσεως, λαβόντες ἀρχὴν ἑτέραν λέγομεν. ὅτι δεῖ τὸν χωρογραφεῖν ἐπιχειροῦν
τα πολλὰ τῶν φυσικῶς τε καὶ μαθηματικῶς λεγομένων ὑποθέσθαι, καὶ πρὸς τὴν ἐκείνων ὑπόνοιάν
τε καὶ πίστιν τὰ ἑξῆς πραγματεύεσθαι. εἴρηται γὰρ ὅτι οὐδ' οἰκοδόμος. οὐδ' ἀρχιτέκτων οἰκίαν ἢ πό
λιν ἱδρύσαι καλῶς οἷός τε γένοιτ' ἂν, ἀπρονοήτως ἔχων κλιμάτων τε τῶν κατὰ τὸν οὐρανὸν καὶ σχημά
των τε καὶ μεγεθῶν καὶ θάλπους καὶ ψύχους, καὶ ἄλλων τοιούτων. μήτι γε τὴν ὅλην οἰκουμένην τοποθε
τῶν. αὐτὸ γὰρ τὸ εἰς ἐπίπεδον γράφειν ἐπιφάνειαν μίαν καὶ τὴν αὐτὴν, τά τε ἰβηρικὰ, καὶ τὰ ἰνδικὰ
καὶ τὰ μέσα τούτων, καὶ μηδὲν ἧττον δύσεις καὶ ἀνατολὰς ἀφορίζειν. καὶ μεσουρανήσεις, ὡς ἂν κοινὰς

πᾶσι τῷ μὲν προσποιήσαντι τὴν τοῦ οὐρανοῦ διάθεσίν τε καὶ κίνησιν καὶ λαβόντι ὅτι σφαιρικὴ μέν
ἐστιν ἡ κατ' ἀλήθειαν τῆς γῆς ἐπιφάνεια, πλάττεται δὲ νῦν ἐπίπεδος πρὸς τὴν ὄψιν, γεωγραφικὴν
ἔχει τὴν παράδοσιν· τῷ δ' ἄλλως, οὐ γεωγραφικήν. οὐ γὰρ ὥσπερ διὰ πεδίων ἰοῦσι μεγάλων, οἷον
τῶν βαβυλωνίων, ἢ διὰ πελάγους παρίσταται τὰ πρόσω πάντα, καὶ τὰ κατόπιν καὶ ἐκ πλαγίων
ἐπίπεδα, καὶ οὐδεμίαν ἀντέμφασιν παρέχει πρὸς τὰ οὐράνια. καὶ τὰς τοῦ ἡλίου κινήσεις καὶ φύ-
σεις πρὸς ἡμᾶς καὶ τῶν ἄλλων ἄστρων, οὕτω καὶ γεωγραφοῦσιν ἀεὶ δεῖ παρίστασθαι τὰ ὅμοια. ὁ μὲν
γὰρ πελαγίζων, ἢ ὁδεύων διὰ χώρας πεδιάδος, κοιναῖς τισὶ φαντασίαις ἄγεται. καθ' ἃς καὶ ὁ ἀπαί-
δευτος καὶ ὁ πολιτικὸς ἐνεργεῖ ταῦτα. ἄπειρος ὢν τῶν οὐρανίων καὶ τὰς πρὸς ταῦτα ἀντεμφάσεις
ἀγνοεῖ. ἀνατέλλοντα μὲν γὰρ ὁρᾷ τὸν ἥλιον καὶ δύοντα καὶ μεσουρανοῦντα. τίνα δὲ τρόπον οὐκ ἐπι-
σκοπεῖ. οὐδὲ γὰρ χρήσιμον αὐτῷ πρὸς τὸ προκείμενον, ὥσπερ οὐδὲ τὸ παράλληλον ἑστάναι τῷ πα-
ρεστῶτι ἢ μή. τάχα δ' ἐπισκοπεῖ, μὲν ἀντιδοξεῖ δ' ἐν τοῖς μαθηματικῶς λεγομένοις καθάπερ οἱ ἐπι-
χώριοι. ἔχει γὰρ ὁ τόπος τοιαῦτα παραπτώματα. ὁ δὲ γεωγραφικὸς οὐκ ἐπιχωρίῳ γεωγραφεῖ. οὐδὲ
πολιτικῷ τοιούτῳ ὅστις μηδὲν ἐφρόντισε τῶν λεγομένων ἰδίως μαθημάτων. οὐδὲ γὰρ θερισταῖς καὶ σκα-
πανεῦσιν. ἀλλὰ τῷ πεισθῆναι δυναμένῳ, τὴν γῆν ἔχειν οὕτω τὴν ὅλην, ὡς οἱ μαθηματικοί φασι καὶ τὰ ἄλ-
λα τὰ πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τὴν τοιαύτην. κελεύει τε τοῖς προσιοῦσιν ἐκεῖνα προεντυμηθεῖσι τὰ ἑξῆς ἐφο-
ρᾶν. ἐκείνοις γὰρ τὰ ἀκόλουθα ὁρᾶν. ὥς τε μᾶλλον ποιήσασθαι τῶν παραδιδομένων ἀσφαλῆ τὴν χρῆσιν
τοὺς ἐντυγχάνοντας ἂν ἀκούωσι μαθηματικῶς. τοῖς δ' ἄλλως ἔχουσιν, οὔ φησι γεωγραφεῖν. τὸν δὲ μὴ
γεωγραφοῦντα πιστεῦσαι δεῖ περὶ τῶν ἐχόντων αὐτῷ τάξιν ἀρχῆς, τοῖς ἀναμετρήσασι τὴν ὅλην
γῆν γεωμέτραις. τούτους δὲ τοῖς ἀστρονομικοῖς. ἐκείνους δὲ τοῖς φυσικοῖς. ἡ δὲ φυσικὴ ἀρετή τις. τὰς δ' ἀρε-
τὰς ἀνυποθέτους φασὶν ἐξ αὑτῶν ἠρτημένας. καὶ ἐν αὑταῖς ἐχούσας τὰς τε ἀρχάς. καὶ τὰς περὶ τού-
των πίστεις. τὰ μὲν οὖν παρὰ τῶν φυσικῶν δεικνύμενα τοιαῦτά ἐστι. σφαιροειδὴς μὲν ὁ κόσμος,
καὶ ὁ οὐρανός, ἡ ῥοπὴ δ' ἐπὶ τὸ μέσον τῶν βαρέων. περὶ τοῦτο τε συνεστῶσα ἡ γῆ σφαιροειδῶς, ὁμό-
κεντρος, τῷ μὲν οὐρανῷ μένει, καὶ αὐτὴ καὶ ὁ δι' αὐτῆς ἄξων καὶ τοῦ οὐρανοῦ μέσου τεταμένος. ὁ δ' οὐ-
ρανὸς περιφέρεται περί τε αὐτήν, καὶ περὶ τὸν ἄξονα ἀπ' ἀνατολῆς ἐπὶ δύσιν. σὺν αὐτῷ δὲ οἱ ἀπλα-
νεῖς ἀστέρες ὁμοταχεῖς τῷ πόλῳ. οἱ μὲν οὖν ἀπλανεῖς ἀστέρες κατὰ τῶν παραλλήλων φέρονται κύκλων.
παράλληλοι δ' εἰσὶ γνωριμώτατοι ὅ τε ἰσημερινὸς καὶ οἱ τροπικοὶ δύο καὶ οἱ ἀρκτικοί. οἱ δὲ πλά-
νητες ἀστέρες, καὶ ἥλιος καὶ σελήνη, κατὰ λοξῶν τινων τῶν τεταμένων ἐν τῷ ζῳδιακῷ. τούτοις δὲ πι-
στεύσαντες ἢ πᾶσιν ἢ τισὶν, οἱ ἀστρονομικοί, τὰ ἑξῆς πραγματεύονται. κινήσεις καὶ περιόδους καὶ ἐ-
κλείψεις, καὶ μεγέθη. καὶ ἀποστάσεις καὶ ἄλλα μυρία. ὡς δ' αὕτως οἱ τὴν γῆν ὅλην ἀναμετροῦντες γεω-
μέτραι προστιθέασι ταῖς τῶν ἀστρονομικῶν καὶ τῶν φυσικῶν δόξαις. ταῖς δὲ τῶν γεωμετρῶν πάλιν οἱ γεωγράφοι. πεν-
ταζώνου μὲν γὰρ ὑποθέσθαι δεῖ τὸν οὐρανόν. πενταζώνου δὲ καὶ τὴν γῆν, ὁμωνύμους δὲ καὶ τὰς ζώνας ταῖς κάτω τὰς ἄνω.
τὰς δ' αἰτίας εἰρήκαμεν τῆς εἰς τὰς ζώνας διαιρέσεως. διορίζοιντο δ' ἂν αἱ ζῶναι κύκλοις παραλλήλοις τῷ
ἰσημερινῷ γραφομένοις ἑκατέρωθεν αὐτοῦ. δυσὶ μὲν τοῖς ἀπολαμβάνουσι τὴν διακεκαυμένην. δυσὶ δὲ
τοῖς μετὰ τούτους. οἳ πρὸς μὲν τῇ διακεκαυμένῃ τὰς εὐκράτους δύο ποιοῦσι. πρὸς δὲ ταῖς εὐκράτοις, τὰς
κατεψυγμένας. ὑπὸ πάντα δ' ἕκαστον τῶν οὐρανίων κύκλων. ὁ τῆς γῆς ὁμώνυμος αὐτῷ. καὶ ἡ ζώνη δὲ ὡσαύτως
τῇ ζώνῃ. εὐκράτους μὲν οὖν φασι τὰς οἰκεῖσθαι δυναμένας. ἀοικήτους δὲ τὰς ἄλλας, τὴν μὲν διὰ καῦμα. τὰς
δὲ διὰ ψῦχος. τὸν δ' αὐτὸν τρόπον, καὶ περὶ τῶν ἀρκτικῶν καὶ τῶν τροπικῶν. παρ' οἷς εἰσὶν ἀρκτικοί,
διορίζουσιν, ὁμωνύμως τοῖς ἄνω τοὺς ἐπὶ γῆς ποιοῦντες, καὶ τοὺς ἑκάστοις ὑποπίπτοντας. τοῦ δ' ἰ-
σημερινοῦ δίχα τέμνοντος τὸν ὅλον οὐρανόν, καὶ τὴν γῆν ἀνάγκη διαιρεῖσθαι ὑπὸ τοῦ ἐν αὐτῇ ἰσημε-
ρινοῦ. καλεῖται δὲ τῶν ἡμισφαιρίων ἑκάτερον τῶν τε οὐρανίων καὶ τῶν τῆς γῆς, τὸ μὲν βόρειον. τὸ δὲ νότιον. οὕτως
δὲ καὶ τῆς διακεκαυμένης, ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ κύκλου δίχα διαιρουμένης, τὸ μὲν ἐστι βόρειον αὐτῆς μέρος.
τὸ δὲ νότιον. δῆλον δ' ὅτι, καὶ τῶν εὐκράτων ζωνῶν ἡ μὲν ἐστι βόρειος. ἡ δὲ νότιος ὁ μωνύμως τῷ ἡμισ-
φαιρίῳ ἐν ᾧ ἐστι. καλεῖται δὲ βόρειον μὲν ἡμισφαίριον τὸ τὴν εὔκρατον ἐκείνην περιέχον. ἐν ᾗ ἐπὶ τὴν
δύσιν ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς βλέποντι, ἐν δεξιᾷ μέν ἐστιν ὁ πόλος. ἐν ἀριστερᾷ δ' ὁ ἰσημερινός. ἢ ἐν ᾧ πρὸς
μεσημβρίαν βλέπουσιν, ἐν δεξιᾷ μὲν ἐστι δύσις, ἐν ἀριστερᾷ δ' ἀνατολή. νότιον δὲ τὸ ἐναντίως ἔχον.
ὥς τε δῆλον ὅτι ἡμεῖς ἐσμὲν ἐν θατέρῳ τῶν ἡμισφαιρίων, καὶ τῷ βορείῳ γε. ἐν ἀμφοτέροις δ' οὐκ
ἐνδέχεται. μέσοι γὰρ μεγάλοι ποταμοί. ὠκεανὸς μὲν πρῶτα, ἔπειτα ἡ διακεκαυμένη. οὔτε δὲ ὠκεανὸς ἐν
μέσῳ τῆς καθ' ἡμᾶς οἰκουμένης ἐστὶ τέμνων ὅλην, οὔτ' οὖν διακεκαυμένον χωρίον. οὐδὲ δὴ μέρος αὐτῆς
εὑρίσκεται τοῖς κλίμασιν ὑπεναντίως ἔχον τοῖς λεχθεῖσιν ἐν τῇ βορείῳ εὐκράτῳ. λαβὼν οὖν ταῦθ' ὁ
γεωμέτρης, προσχρησάμενος τοῖς γνωμονικοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις τοῖς ὑπὸ τοῦ ἀστρονομικοῦ δεικνυμένοις,
ἐν οἷς οἵ τε παράλληλοι τῷ ἰσημερινῷ εὑρίσκονται οἱ καθ' ἑκάστην τὴν οἴκησιν. καὶ οἱ πρὸς ὀρθὰς τέμνον-
τες τούτους, γραφόμενοι δὲ διὰ τῶν πόλων, καταμετρεῖ τὴν μὲν οἰκήσιμον ἐμβατεύων. τὴν δ' ἄλλην ἐκ τοῦ
λόγου τῶν ἀποστάσεων. οὕτω δ' ἂν εὑρίσκοι πόσον ἂν εἴη τὸ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ μέχρι πόλου. ὅπερ ἐ-
στὶ τεταρτημόριον τοῦ μεγίστου κύκλου τῆς γῆς. ἔχων δὲ τοῦτο, ἔχει καὶ τὸ τετραπλάσιον αὐτοῦ. τοῦτο

δ᾽ ἐστὶν ἡ περίμετρος τῆς γῆς. ὥσπερ οὖν ὁ μὲν τὴν γῆν ἀναμετρῶν παρὰ τοῦ ἀστρονομικοῦ ἔλαβε τὰς ἀρχάς, ὁ δὲ ἀστρονόμος παρὰ τοῦ φυσικοῦ. τὸν αὐτὸν τρόπον χρὴ, καὶ τὸν γεωγράφον παρὰ τοῦ ἀναμεμετρηκότος ὅλην τὴν γῆν, ὁρμηθέντα πιστεύσαντα τούτῳ. καὶ οἷς ἐπίστευσεν οὗτος, πρῶτον μὲν ἐκθέσθαι τὴν καθ᾽ ἡμᾶς οἰκουμένην πόση τίς, καὶ ποία, τὸ σχῆμα. καὶ τὴν φύσιν οἵα ἐστί. καὶ πῶς ἔχουσα πρὸς τὴν ὅλην γῆν. ἴδιον γὰρ τοῦτο τοῦ γεωγράφου. ἔπειτα περὶ τῶν καθ᾽ ἕκαστα. τῶν τε κατὰ γῆν καὶ τῶν κατὰ θάλατταν ποιήσασθαι τὸν προσήκοντα λόγον. παρασημαινόμενοι ὅσα μὴ ἱκανῶς εἴρηται τοῖς πρὸ ἡμῶν, τοῖς μάλιστα πεπιστευμένοις ἀρίστοις γενέσθαι περὶ ταῦτα. Ὑποκείσθω δὴ σφαιροειδὴς ἡ γῆ, σὺν τῇ θαλάττῃ. μίαν, καὶ τὴν αὐτὴν ἐπιφάνειαν ἴσχουσα τοῖς πελάγεσι. συγκρύπτοιτο γὰρ ἂν τὸ ἐξέχον τῆς γῆς ἐν τῷ τοσούτῳ μεγέθει μικρὸν ὂν καὶ λανθάνειν δυνάμενον. ὥστε τὸ σφαιροειδὲς ἐπὶ τούτων. οὐχ ὡς ἂν ἐκ τόρνου φαμέν. οὐδ᾽ ὡς ὁ γεωμέτρης πρὸς λόγον. ἀλλὰ πρὸς αἴσθησιν. καὶ ταύτην παχυτέραν, νοείσθω δὴ πεντάζωνος καὶ ὁ ἰσημερινὸς τεταμένος ἐν αὐτῇ κύκλος. καὶ ἄλλος τούτῳ παράλληλος. ὁρίζων τὴν κατεψυγμένην ἐν τῷ βορείῳ ἡμισφαιρίῳ, καὶ διὰ τῶν πόλων τις τέμνων τούτους πρὸς ὀρθάς. τοῦ δὴ βορείου ἡμισφαιρίου δύο περιέχοντος τεταρτημόρια τῆς γῆς, ἃ ποιεῖ ὁ ἰσημερινὸς πρὸς τὸν διὰ τῶν πόλων, ἐν ἑκατέρῳ τούτων ἀφωρίσθω τετράπλευρον χωρίον, οὗ ἡ μὲν βόρειος πλευρά, ἥμισυ τοῦ πρὸς τῷ πόλῳ παραλλήλου ἐστίν. ἡ δὲ νότιος τοῦ ἰσημερινοῦ ἥμισυ. αἱ δὲ λοιπαὶ πλευραὶ τμήματα τοῦ διὰ τῶν πόλων, ἀντικείμενα ἀλλήλοις ἴσα τὸ μῆκος. ἐν θατέρῳ δὴ τῶν τετραπλεύρων τούτων. ὁποτέρῳ δ᾽ οὐδὲν ἂν διαφέρειν δόξειεν, ἱδρῦσθαι φαμὲν τὴν καθ᾽ ἡμᾶς οἰκουμένην περίκλυστον θαλάττῃ, καὶ ἐοικυῖαν νήσῳ. εἴρηται γὰρ ὅτι τῇ αἰσθήσει, τῷ λόγῳ δείκνυται τοῦτο, εἰ δ᾽ ἀπιστεῖ τις τῷ λόγῳ τούτῳ, διαφέροι ἂν πρὸς τὴν γεωγραφίαν, οὐ δὲ νῆσον ποιεῖν, ἢ ὅπερ ἐκ τῆς πείρας ἐλάβομεν τούτῳ συγχωρεῖν. ὅτι, καὶ ἀπὸ τῆς ἕω ἑκατέρωθεν περίπλους ἐστί. καὶ ἀπὸ τῆς ἑσπέρας πλὴν ὀλίγων τῶν μέσων χωρίων. ταῦτα δ᾽ οὐ διαφέρει θαλάττῃ, περατοῦσθαι ἢ γῇ ἀοικήτῳ. οὐ γὰρ γεωγράφων ζητεῖται γνώριμα μέρη τῆς οἰκουμένης ἐπελθεῖν. τὰ δ᾽ ἄγνωστα ἐᾶν, καθάπερ, καὶ τὰ ἔξω αὐτῆς. ἀρκέσει δ᾽ ἐπιζεύξασιν εὐθεῖαν γραμμὴν ἐπὶ τὰ ὕστατα σημεῖα τοῦ ἑκατέρωθεν παράπλου, τὸ πᾶν ἐκπληρῶσαι σχῆμα τῆς λεγομένης νήσου. ὑποκείσθω δὲ, ἡ μὲν νῆσος ἐν τῷ λεχθέντι τετραπλεύρῳ. δεῖ δὲ λαβεῖν τὸ μέγεθος αὐτῆς τὸ φαινόμενον. ἀφελόντας ἀπὸ μὲν τοῦ ὅλου μεγέθους τῆς γῆς τὸ ἡμισφαίριον τὸ καθ᾽ ἡμᾶς. ἀπὸ δὲ τούτου, τὸ ἥμισυ. ἀπὸ δ᾽ αὖ τούτου πάλιν τὸ τετράπλευρον. ἐν ᾧ δὴ κεῖσθαι τὴν οἰκουμένην φαμέν. ἀνάλογον δὲ καὶ περὶ τοῦ σχήματος ὑπολαβεῖν δεῖ τὸ φαινόμενον τοῖς ὑποκειμένοις ἐφαρμόττοντα. ἀλλ᾽ ἐπειδὴ τοῦ μεταξὺ τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ ληφθέντος παραλλήλου τούτῳ πρὸς τῷ πόλῳ τμήματος τοῦ βορείου, ἡμισφαιρίου σπόνδυλός ἐστι τὸ σχῆμα. ὁ δὲ διὰ τοῦ πόλου δίχα τέμνων τὸ ἡμισφαίριον, δίχα τέμνει, καὶ τὸν σπόνδυλον, καὶ ποιεῖ τὸ τετράπλευρον. ἔσται δηλονότι σπονδύλου ἐπιφανείας, μέρος τὸ τετράπλευρον, ᾧ ἐπίκειται, τὸ ἀτλαντικὸν πέλαγος. ἡ δ᾽ οἰκουμένη χλαμυδοειδὴς ἐν τούτῳ νῆσος, ἔλαττον ἢ ἥμισυ τοῦ τετραπλεύρου μέρους οὖσα. φανερὸν δὲ τοῦτο ἔκ τε γεωμετρίας, καὶ τοῦ πλήθους τῆς περικεχυμένης θαλάττης. καλυπτούσης τὰ ἄκρα τῶν ἠπείρων ἑκατέρωθεν, καὶ συναγούσης εἰς μύουρον σχῆμα, καὶ τρίτον τοῦ μήκους, καὶ πλάτους τοῦ μεγίστου. ὧν τὸ μὲν ἑπτὰ μυριάδων σταδίων ἐστίν. ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ περατούμενον θαλάττῃ, μηκέτι πλεῖσθαι δυναμένῃ, διὰ τὸ μέγεθος, καὶ τὴν ἐρημίαν. τὸ δ᾽ ἔλαττον τριῶν μυριάδων ὁριζόμενον τῷ ἀοικήτῳ διὰ θάλπος ἢ ψῦχος. αὐτὸ γὰρ τὸ διὰ θάλπος ἀοίκητον τοῦ τετραπλεύρου πλάτος μὲν ἔχον ὀκτακισχιλίων, καὶ ὀκτακοσίων σταδίων, μῆκος δὲ τὸ μέγιστον μυριάδων δώδεκα, καὶ ἑξακισχιλίων, ὅσον ἐστὶν ἥμισυ τοῦ ἰσημερινοῦ, πλέον ἂν εἴη τὸ λοιπόν. τούτοις δὲ συνῳδά πως ἐστί, καὶ τὰ ὑφ᾽ ἱππάρχου λεγόμενα. φησὶ γὰρ ἐκεῖνος ὑποθέμενος τὸ μέγεθος τῆς γῆς ὅπερ εἶπεν ἐρατοσθένης. ἐντεῦθεν δεῖν ποιεῖσθαι τὴν τῆς οἰκουμένης ἀφαίρεσιν. οὐ γὰρ πολὺ διοίσειν πρὸς τὰ φαινόμενα τῶν οὐρανίων καθ᾽ ἑκάστην τὴν οἴκησιν, οὕτως ἔχειν τὴν ἀναμέτρησιν, ἢ ὡς οἱ ὕστερον ἀποδεδώκασιν. ὄντος δὴ κατ᾽ ἐρατοσθένη τοῦ ἰσημερινοῦ κύκλου σταδίων μυριάδων πέντε καὶ εἴκοσι καὶ δισχιλίων, τὸ τεταρτημόριον εἴη ἂν ἓξ μυριάδες καὶ τρισχίλιοι. τοῦτο δ᾽ ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ ἐπὶ τὸν πόλον, πεντεκαίδεκα ἑξηκοστῶν σταδίων. διότι ἐστὶν ὁ ἰσημερινὸς ἑξήκοντα. τὸ δ᾽ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ ἐπὶ τὸν θερινὸν τροπικόν, τεττάρων. οὗτος δ᾽ ἐστὶν ὁ διὰ συήνης γραφόμενος παράλληλος. συλλογίζεται δὴ τὰ καθ᾽ ἕκαστα διαστήματα, ἐκ τῶν φαινομένων μέτρων. τὸν γὰρ τροπικὸν κατὰ συήνην κεῖσθαι συμβαίνει. διότι ἐνταῦθα κατὰ τὰς θερινὰς τροπάς, ἄσκιός ἐστιν ὁ γνώμων μέσης ἡμέρας. ὁ δὲ διὰ τῆς συήνης μεσημβρινός, γράφεται μάλιστα διὰ τῆς τοῦ νείλου ῥύσεως ἀπὸ μερόης, ἕως ἀλεξανδρείας. στάδιοι δ᾽ εἰσὶν οὗτοι περὶ μυρίους. κατὰ μέσον δὲ τὸ διάστημα, τὴν συήνην ἱδρῦσθαι συμβαίνει. ὥστ᾽ ἐντεῦθεν ἐπὶ μερόην πεντακισχίλιοι. προϊόντι δ᾽ ἐπ᾽ εὐθείας ὅσον τρισχιλίους σταδίους ἐπὶ μεσημβρίαν, οὐκέτι οἰκήσιμα τἆλλα ἐστὶ διὰ καῦμα. ὥστε τὸν διὰ τούτων τῶν τόπων παράλληλον τὸν αὐτὸν ὄντα τῷ διὰ τῆς κινναμωμοφόρου. πέρας, καὶ ἀρχὴν δεῖ τίθεσθαι τῆς καθ᾽ ἡμᾶς οἰκουμένης πρὸς μεσημβρίαν. ἐπεὶ οὖν πεντακισχίλιοι μέν εἰσιν οἱ ἀπὸ συήνης

εἰς μυρίους. ἄλλοι δὲ προσγεγόνασι τετρακισχίλιοι, ἕως ἂν οἱ πάντες ἐπὶ τοὺς ὅρους τῆς οἰκουμένης, ὀ-
κτακισχίλιοι. ἐπὶ δέ γε τὸν ἰσημερινὸν ἀπὸ συήνης, μύριοι ὀκτακισχίλιοι ὀκτακόσιοι. τοσοῦτοι γάρ εἰ-
σιν οἱ τῶν τεττάρων ἑξηκοντάδων, τεθείσης ἑκάστης τετρακισχιλίων καὶ διακοσίων. ὥς τε λοιποὶ εἶεν
ἂν ἀπὸ τῶν ὅρων τῆς οἰκουμένης ἐπὶ τὸν ἰσημερινὸν, ὀκτακισχίλιοι ὀκτακόσιοι. ἀπὸ δὲ ἀλεξανδρείας
δισμύριοι χίλιοι ὀκτακόσιοι. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς ἀλεξανδρείας ἐπ' εὐθείας τῇ ῥύσει τοῦ νείλου, πάν-
τες ὁμολογοῦσι τὸν ἐπὶ ῥόδον πλοῦν. κἀντεῦθεν δὲ, τὸν τῆς καρίας παράπλουν καὶ ἰωνίας, μέ-
χρι τῆς τρῳάδος καὶ βυζαντίου καὶ βορυσθένους. λαβόντες οὖν τὰ διαστήματα γνώριμα καὶ πλεό-
μενα σκοποῦσι τὰ ὑπὲρ τοῦ βορυσθένους, ἐπ' εὐθείας ταύτῃ τῇ γραμμῇ μέχρι τίνος οἰκήσιμά ἐστι.
καὶ περατοῖ τὰ προσάρκτια μέρη τῆς οἰκουμένης. οἰκοῦσι δ' ὑπὲρ τοῦ βορυσθένους ὕστατοι τῶν γνω-
ρίμων σκυθῶν, ῥοξολανοὶ. νοτιώτεροι ὄντες τῶν ὑπὲρ τῆς βρεττανικῆς ἐσχάτων γνωριζομένων.
ἤδη δὲ τὰ ἐπέκεινα διὰ ψύχος ἀοίκητά ἐστι. νοτιώτεροι δὲ, τούτων καὶ ὑπὲρ τῆς μαιώτιδος, σαυρο-
μάται καὶ σκύθαι, μέχρι τῶν ἑῴων σκυθῶν. ὁ μὲν οὖν μασσαλιώτης πυθέας, τὰ περὶ θούλην τὴν
βορειοτάτην τῶν βρεττανίδων ὕστατα λέγει. παρ' οἷς ὁ αὐτός ἐστι τῷ ἀρκτικῷ, ὁ θερινὸς τροπικὸς κύ-
κλος. παρὰ δὲ τῶν ἄλλων οὐδὲν ἱστορῶ. οὐδ' ὅτι θούλη νῆσός ἐστί τις, οὔτ' εἰ τὰ μέχρι δεῦρο οἰκήσιμά ἐ-
στιν, ὅπου ὁ θερινὸς τροπικὸς ἀρκτικὸς γίνεται. νομίζω δὲ πολὺ εἶναι νοτιώτερον τοῦτο τὸ τῆς οἰκου-
μένης πέρας τὸ προσάρκτιον. οἱ γὰρ νῦν ἱστοροῦντες περαιτέρω τῆς ἰέρνης, οὐδὲν ἔχουσι λέγειν, ἣ
πρὸς ἄρκτον πρόκειται τῆς βρεττανικῆς πλησίον ἀγρίων τελέως ἀνθρώπων, καὶ κακῶς οἰκούντων
διὰ ψύχος. ὥστ' ἐνταῦθα νομίζω τὸ πέρας εἶναι θετέον. τοῦ δὲ παραλλήλου τοῦ διὰ βυζαντίου, τοῦ
διὰ μασσαλίας πως ἰόντος ὥς φησιν ἵππαρχος πιστεύσας πυθέᾳ. φησὶ γὰρ ἐν βυζαντίῳ τὸν αὐτὸν
εἶναι λόγον τοῦ γνώμονος πρὸς τὴν σκιὰν ὃν εἶπεν ὁ πυθέας ἐν μασσαλίᾳ. τοῦ δὲ διὰ βορυσθένους ἀ-
πὸ τούτου διέχοντος περὶ τετρακισχιλίους καὶ ὀκτακοσίους, εἴη ἂν ἐκ τοῦ διαστήματος, τὸ ἀπὸ μασσαλίας
ἐπὶ τὴν βρεττανικὴν, ἐνταῦθά που πίπτων ὁ διὰ τοῦ βορυσθένους κύκλος πανταχοῦ. πολλαχοῦ δὲ
παρακρουόμενος τοὺς ἀνθρώπους ὁ πυθέας, κἀνταῦθά που διέψευσται. τὸ μὲν γὰρ τὴν ἀπὸ στηλῶν
γραμμὴν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν πορθμὸν καὶ ἀθήνας καὶ ῥόδον τόπους ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου κεῖ-
σθαι, ὁμολογεῖται παρὰ πολλῶν. ὁμολογεῖται δὲ ὅτι καὶ διὰ μέσου πως τοῦ πελάγους ἐστὶν ἡ ἀπὸ
τῶν στηλῶν ἐπὶ τὸν πορθμόν. οἵ τε πλέοντες τὸ μέγιστον δίαρμα ἀπὸ τῆς κελτικῆς ἐπὶ τὴν λιβύην εἶ-
ναι τὸ ἀπὸ τοῦ γαλατικοῦ κόλπου σταδίων πεντακισχιλίων. τοῦτο δ' εἶναι καὶ τὸ μέγιστον πλάτος τοῦ
πελάγους. ὥστ' εἴη ἂν τὸ ἀπὸ τῆς λεχθείσης γραμμῆς ἐπὶ τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου, σταδίων δισχιλίων πεν-
τακοσίων. ἐπὶ δὲ μασσαλίαν ἐλαττόνων. νοτιωτέρα γάρ ἐστιν ἡ μασσαλία τοῦ μυχοῦ κόλπου. τὸ δέ γε ἀ-
πὸ τῆς ῥοδίας ἐπὶ τὸ βυζάντιον ἐστι τετρακισχιλίων που καὶ ἐνακοσίων σταδίων. ὥς τε πολὺ ἀρκτι-
κώτερος ἂν εἴη ὁ διὰ βυζαντίου τοῦ διὰ μασσαλίας. τὸ δ' ἐκεῖθεν ἐπὶ τὴν βρεττανικὴν δύναται συμ-
φωνεῖν τῷ ἀπὸ βυζαντίου ἐπὶ βορυσθένη. τὸ δ' ἐκεῖθεν ἐπὶ τὴν ἰέρνην, οὐκέτι γνώριμον πόσον ἄν τις
θείη. οὐδ' εἰ περαιτέρω ἔτι οἰκήσιμά ἐστιν, οὐδὲν δεῖ τοῖς ἐπάνω λεχθεῖσι φροντίζειν. πρός τε γὰρ ἐπι-
στήμην, ἀρκεῖ τὸ λαβεῖν καθάπερ ἐπὶ τῶν νοτίων μερῶν. ὅτι ὑπὲρ μερόης μέχρι τετρακισχιλίων σταδίων
προελθόντι τῆς οἰκησίμου τίθεσθαι προσήκει. οὐχ ὡς ἂν τούτου ἀκριβεστάτου πέρατος ὄντος. ἀλλ' ἐγ-
γύς γε τἀκριβοῦς, οὕτω κἀκεῖ τοὺς ὑπὲρ τῆς βρεττανικῆς οὐ πλείους τούτων θετέον. ἢ μικρῷ πλεί-
ους. οἷον τετρακισχιλίους. πρός τε τὰς ἡγεμονικὰς χρείας, οὐδὲν ἂν εἴη πλεονέκτημα τὰς τοιαύτας
γνωρίζειν χώρας καὶ τοὺς ἐνοικοῦντας. καὶ μάλιστα εἰ νήσους οἰκοῖεν τοιαύτας. αἳ μήτε λυπεῖν μή-
τ' ὠφελεῖν ἡμᾶς δύνανται μηδέν. διὰ τὸ ἀνεπίπλεκτον. καὶ γὰρ τὴν βρεττανικὴν ἔχειν δυνάμενοι ῥω-
μαῖοι κατεφρόνησαν. ὁρῶντες, ὅτι οὔτε φόβος ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς ἐστιν, οὐ γὰρ ἰσχύουσι τοσοῦτον, ὥστ' ἐ-
πιδιαβαίνειν ἡμῖν, οὔτ' ὠφέλεια τοσαύτη τις εἰ κατάσχοιεν. πλέον γὰρ ἂν ἐκ τῶν τελῶν δοκεῖ προσφέ-
ρεσθαι νῦν, ἢ ὁ φόρος δύναται συντελεῖν. ἀφαιρουμένης τῆς εἰς τὸ στρατιωτικὸν δαπάνης, τὸ φρουροῦν
καὶ φορολογῆσον τὴν νῆσον. πολὺ δ' ἂν ἐπιγένοιτο τὸ ἄχρηστον ἐπὶ τῶν ἄλλων τῶν περὶ ταύτην νήσων, εἰ
δὲ προστεθείη τῷ ἀπὸ τῆς ῥοδίας μέχρι βορυσθένους διαστήματι, τὸ ἀπὸ βορυσθένους ἐπὶ τὰς ἄρκτους
τῶν τετρακισχιλίων σταδίων διάστημα, γίνεται τὸ πᾶν μύριοι δισχίλιοι ἑπτακόσιοι στάδιοι. τὸ δ' ἀπὸ τῆς ῥο-
δίας ἐπὶ τὸ νότιον πέρας ἐστὶ τῆς οἰκουμένης, μύριοι ἑξακισχίλιοι ἑξακόσιοι. ὥς τε τὸ σύμπαν πλάτος
τῆς οἰκουμένης, εἴη ἂν ἔλαττον τῶν τρισμυρίων, ἀπὸ νότου πρὸς ἄρκτον. τὸ δέ γε μῆκος, περὶ ἑπτὰ μυ-
ριάδας λέγεται. τοῦτο δ' ἐστὶν, ἀπὸ δύσεως ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς, τὸ ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς ἰβηρίας, ἐπὶ τὰ
ἄκρα τῆς ἰνδικῆς. τὸ μὲν, ὁδοῖς. τὸ δὲ, ταῖς ναυτιλίαις ἀναμεμετρημένον. ὅτι δ' ἐντὸς τοῦ λεχθέντος τετρα-
πλεύρου τὸ μῆκός ἐστι τοῦτο, ἐκ τοῦ λόγου τῶν παραλλήλων τοῦ πρὸς τὸν ἰσημερινὸν δῆλον. ὥς τε πλέον
ἢ διπλάσιόν ἐστι τοῦ πλάτους τὸ μῆκος. λέγεται δὲ καὶ χλαμυδοειδές πως τὸ σχῆμα. πολλὴ γὰρ συναγω-
γὴ τοῦ πλάτους, πρὸς τοῖς ἄκροις εὑρίσκεται. καὶ μάλιστα τοῖς ἑσπερίοις, τὰ καθ' ἕκαστα ἐπιόντων ἡ-
μῶν. νυνὶ μὲν οὖν ἐπὶ γεγράφαμεν ἐπὶ σφαιρικῆς ἐπιφανείας τὸ χωρίον. ἐν ᾧ φαμὲν ἱδρῦσθαι τὴν
οἰκουμένην. καὶ δὴ τὸν ἐγγυτάτω διὰ τῶν χειροκμήτων σχημάτων μιμούμενον τὴν ἀλήθειαν ποιήσαντα

σφαῖραν τὴν γῆν, καθάπερ τὴν κρατήτειον. ἐπὶ ταύτης ἀπολαβόντα τὸ τετράπλευρον, ἐντὸς τού-
του τιθέναι τὸν πίνακα τῆς γεωγραφίας. ἀλλ' ἐπειδὴ μεγάλης δεῖ σφαίρας ὥς τε τὸ λεχθὲν τμῆμα, ἡμισφαίρου
τῆς ὑπάρχον τὸ λεχθὲν τμῆμα, ἱκανὸν γενέσθαι δέξασθαι σαφῶς τὰ προσήκοντα μέρη τῆς οἰκουμέ-
νης. καὶ τὴν οἰκείαν παρασχεῖν ὄψιν τοῖς ἐπιβλέπουσι, τῷ μὲν δυναμένῳ κατασκευάσασθαι τηλικαύ-
την, οὕτω ποιεῖν βέλτιον. ἔστω δὲ μείζων δέκα ποδῶν ἔχουσα τὴν διάμετρον. τῷ δὲ μὴ δυναμένῳ, τηλι-
καύτην ἢ μὴ πολλῷ ταύτης ἐνδεεστέραν, ἐν ἐπιπέδῳ καταγραπτέον πίνακι τοὐλάχιστον ἑπτὰ ποδῶν.
διοίσει γὰρ μικρὸν ἐὰν ἀντὶ τῶν κύκλων. τῶν τε παραλλήλων, καὶ τῶν μεσημβρινῶν. οἷς τά τε κλίμα-
τα καὶ τοὺς ἀνέμους διασαφοῦμεν. καὶ τὰς ἄλλας διαφοράς. καὶ τὰς σχέσεις τῶν τῆς γῆς μερῶν.
πρὸς ἄλληλά τε καὶ τὰ οὐράνια εὐθείας γράφωμεν. τῶν μὲν παραλλήλων παραλλήλους. τῶν δὲ ὀρ-
θῶν πρὸς ἐκείνους ὀρθάς. τῆς διανοίας ῥᾳδίως μεταφέρειν δυναμένης τὸ ὑπὸ τῆς ὄψεως ἐν ἐπιπέ-
δῳ θεωρούμενον ἐπὶ φαινεία. σχῆμα καὶ μέγεθος, ἐπὶ τὴν περιφερῆ τε καὶ σφαιρικήν. ἀνάλογον δὲ,
καὶ περὶ τῶν λοξῶν κύκλων καὶ εὐθειῶν φαμέν. εἰ δ' οἱ μεσημβρινοὶ οἱ παρ' ἑκάστοις τοῦ πόλου γραφό-
μενοι πάντες συννεύουσιν ἐν τῇ σφαίρᾳ πρὸς ἓν σημεῖον, ἀλλ' ἐν τῷ ἐπιπέδῳ γε οὐ διοίσει πίνακι τὰς
εὐθείας μικρὰς συννευούσας ποιεῖν κῶνον τὰς μεσημβρινάς. οὐδὲ γὰρ πολλαχοῦ τοῦτ' ἀναγκαῖον. οὐ-
δ' ἐκφανής ἐστιν ὥσπερ ἡ περιφέρεια, οὕτω καὶ ἡ σύννευσις, μεταφερομένων τῶν γραμμάτων εἰς τὸν
πίνακα τὸν ἐπίπεδον. καὶ γραφομένων εὐθειῶν. καὶ δὴ καὶ τὸν ἑξῆς λόγον ὡς ἐν ἐπιπέδῳ πίνακι
τῆς γραφῆς γινομένης ἐκθήσομεν. ἐροῦμεν δὴ τὴν μὲν, ἐπελθόντες αὐτοὶ τῆς γῆς καὶ θαλάττης. περὶ
ἧς δὲ πιστεύσαντες τοῖς εἰποῦσιν ἢ γράψασιν. ἐπήλθομεν δὲ ἐπὶ δύσιν μὲν ἀπὸ τῆς ἀρμενίας μέχρι τῶν
κατὰ σαρδῶνα τόπων τῆς τυρρηνίας. ἐπὶ μεσημβρίαν δὲ ἀπὸ τοῦ εὐξείνου μέχρι τῶν τῆς αἰθιοπίας
ὅρων. οὐδὲ τῶν ἄλλων δὲ οὐδὲ εἷς ἂν εὑρεθείη τῶν γεωγραφησάντων πολύ τι ἡμῶν μᾶλλον ἐπεληλυ-
θὼς τῶν λεχθέντων διαστημάτων. ἀλλ' οἱ πλεονάσαντες περὶ τὰ δυσμικὰ μέρη τῶν πρὸς τοῖς ἀνατο-
λαῖς οὐ τοσοῦτον ἥψαντο. οἱ δὲ περὶ τἀναντία τῶν ἑσπερίων ὑστέρησαν. ὁμοίως δ' ἔχει καὶ περὶ τῶν πρὸς
νότον καὶ τὰς ἄρκτους. τὸ μέντοι πλέον κἀκεῖνοι καὶ ἡμεῖς ἀκοῇ παραλαβόντες συντίθεμεν. καὶ τό
τε σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος καὶ τὴν ἄλλην φύσιν, ὁποία καὶ ὁπόση, τὸν αὐτὸν τρόπον ὃν περ ἡ διάνοια ἐκ
τῶν αἰσθητῶν συντίθησι τὰ νοητά. σχῆμα γὰρ καὶ χρόαν καὶ μέγεθος μήλου, καὶ ὀδμὴν καὶ ἁφὴν
καὶ χυμὸν, ἀπαγγέλλουσιν αἱ αἰσθήσεις. ἐκ δὲ τούτων συντίθησιν ἡ διάνοια τὴν τοῦ μήλου νόησιν. καὶ αὐ-
τῶν δὲ τῶν μεγάλων σχημάτων, τὰ μέρη μὲν αἴσθησις ὁρᾷ. τὸ δ' ὅλον ἐκ τῶν ὁραθέντων ἡ διάνοια τίθη-
σιν. οὕτω δὲ καὶ οἱ φιλομαθεῖς ἄνδρες, ὥσπερ αἰσθητηρίοις πιστεύσαντες τοῖς ἰδοῦσι καὶ πλανηθεῖ-
σιν οὓς ἔτυχε τόπους, ἄλλοις κατ' ἄλλα μέρη τῆς γῆς, συντιθέασιν εἰς ἓν διάγραμμα τὴν τῆς ὅλης οἰ-
κουμένης ὄψιν. ἐπεὶ καὶ οἱ στρατηγοὶ πάντα μὲν αὐτοὶ πράττουσιν. οὐ πανταχοῦ δὲ πάρεισιν. ἀλ-
λὰ πλεῖστα κατορθοῦσι δι' ἑτέρων. ἀγγέλοις πιστεύοντες, καὶ πρὸς τὴν ἀκοὴν διαπέμποντες οἰκείως τὰ
προστάγματα. ὁ δ' ἀξιῶν μόνους εἰδέναι τοὺς ἰδόντας, ἀναιρεῖ τὸ τῆς ἀκοῆς κριτήριον. ἥτις πρὸς ἐπι-
στήμην ὀφθαλμοῦ πολὺ κρεῖττον ἐστί. μάλιστα δ' οἱ νῦν ἔχοιεν ἄμεινον ἀντιλέγειν, περὶ τῶν κατὰ βρε-
τανοὺς καὶ γερμανοὺς καὶ τοὺς περὶ τὸν ἴστρον, τούς τε ἐντὸς καὶ τοὺς ἐκτὸς γέτας τε καὶ τυριγέ-
τας καὶ βαστάρνας. ἔτι δὲ τοὺς περὶ τὸν καύκασον. οἷον ἀλβανοὺς καὶ ἴβηρας. ἀπήγγελται δ' ἡμῖν
καὶ ὑπὸ τῶν τὰ παρθικὰ συγγραψάντων τῶν περὶ ἀπολλόδωρον τὸν ἀρτεμιτην, ἃ πολλῶν ἐκεῖ-
νοι μᾶλλον ἀφώρισαν, τὰ περὶ τὴν ὑρκανίαν καὶ τὴν βακτριανήν. τῶν τε ῥωμαίων καὶ εἰς τὴν εὐδαί-
μονα ἀραβίαν ἐμβαλλόντων μετὰ στρατιᾶς νεωστί. ἧς ἡγεῖτο ἀνὴρ φίλος ἡμῖν καὶ ἑταῖρος αἴλιος γάλ-
λος. καὶ τῶν ἐκ τῆς ἀλεξανδρείας ἐμπόρων στόλος ἤδη πλεόντων διὰ τοῦ νείλου καὶ τοῦ ἀραβίου κόλ-
που μέχρι τῆς ἰνδικῆς. ἃ πολὺ μᾶλλον καὶ ταῦτα ἔγνωσται τοῖς νῦν ἢ τοῖς πρὸ ἡμῶν. ὅτε γοῦν γάλλος
ὑπῆρχε τῆς αἰγύπτου, συνόντες αὐτῷ καὶ συναναβάντες μέχρι συήνης, καὶ τῶν αἰθιοπικῶν ὅρων, ἱ-
στοροῦμεν ὅτι καὶ ἑκατὸν καὶ εἴκοσι νῆες πλέοιεν ἐκ μυὸς ὅρμου, πρὸς τὴν ἰνδικήν. πρότερον ἐκ τῶν
πτολεμαϊκῶν βασιλέων, ὀλίγων παντάπασι θαρρούντων πλεῖν, καὶ τὸν ἰνδικὸν ἐμπορεύεσθαι φόρ-
τον. τὰ μὲν οὖν πρῶτα καὶ κυριώτατα καὶ πρὸς ἐπιστήμην καὶ πρὸς τὰς χρείας τὰς πολιτικὰς
ταῦτα, σχῆμα καὶ μέγεθος ὡς εἰπεῖν, ἁπλούστατα ἐγχειρεῖν, τὸ πῖπτον εἰς τὸν γεωγραφικὸν πίνακα.
συμπαραδηλοῦντα καὶ τὸ ποῖόν τι καὶ πόσον μέρος τῆς ὅλης γῆς ἐστί. τοῦτο μὲν γὰρ οἰκεῖον τῷ γεωγρά-
φῳ. τὸ δὲ καὶ περὶ ὅλης ἀκριβολογεῖσθαι τῆς γῆς, καὶ περὶ σπονδύλου παντὸς ἧς λέγομεν ζώνης, ἄλλης
τινὸς ἐπιστήμης ἐστίν. οἷον εἰ περιοικεῖται καὶ κατὰ θάτερον τεταρτημόριον ὁ σπόνδυλος. καὶ γὰρ εἰ οὕ-
τως ἔχει οὐχ ὑπὸ τούτων γε οἰκεῖται τῶν παρ' ἡμῖν. ἀλλ' ἐκείνην ἄλλην οἰκουμένην θετέον ὅπερ ἐστὶ πι-
θανόν. ἡμῖν δὲ τὰ ἐν αὐτῇ ταύτῃ λεκτέον. ἔστι δή τι χλαμυδοειδὲς σχῆμα τῆς γῆς τῆς οἰκουμένης. οὗ τὸ μὲν
πλάτος ὑπογράφει τὸ μέγιστον, ἡ διὰ τοῦ νείλου γραμμή. λαβοῦσα τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ διὰ τῆς κινναμωμο-
φόρου παραλλήλου, καὶ τῆς τῶν αἰγυπτίων τῶν φυγάδων νήσου, μέχρι τοῦ διὰ τῆς ἰέρνης παραλλήλου. τὸ
δὲ μῆκος, ἡ ταύτης πρὸς ὀρθὰς ἀπὸ τῆς ἑσπέρας διὰ στηλῶν καὶ τοῦ σικελικοῦ πορθμοῦ, μέχρι τῆς ῥοδίας καὶ
τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου, παρὰ τὸν ταῦρον ἰοῦσα, τὸν διεζωκότα τὴν ἀσίαν, καὶ καταστρέφοντα ἐπὶ τὴν ἑῴαν θά-

λατίαν, μεταξὺ ἰνδῶν καὶ τῶν ὑπὲρ τῆς βακτριανῆς σκυθῶν. δεῖ δὴ νοῆσαι παραλληλόγραμμόν τινὰ ᾧ τὸ χλαμυδοειδὲς σχῆμα ἐγγέγραπται οὕτως, ὥστε τὸ μῆκος τῷ μήκει ὁμολογεῖν, καὶ ἴσον εἶναι τὸ μέγιστον. καὶ τὸ πλάτος τῷ πλάτει. τὸ μὲν δὴ χλαμυδοειδὲς σχῆμα, οἰκουμένη ἐστί. τὸ δὲ πλάτος ὁρίζεσθαι ἔφαμεν αὐτῆς, ταῖς ἐσχάταις παραλλήλοις πλευραῖς. ταῖς διοριζούσαις τό τε οἰκήσιμον αὐτῆς καὶ τὸ ἀοίκητον ἐφ' ἑκάτερα. αὗται δ' ἦσαν πρὸς ἄρκτους μὲν, ἡ διὰ τῆς ἰέρνης. πρὸς δὲ τῇ διακεκαυμένῃ. ἡ διὰ τῆς κινναμωμοφόρου. αὗται δὴ προσεκβαλλόμεναι ἐπί τε τὰς ἀνατολὰς, καὶ ἐπὶ τὰς δύσεις μέχρι τῶν ἀνταιρόντων μερῶν τῆς οἰκουμένης, ποιήσουσί τι παραλληλόγραμμον πρὸς ταῖς ἐπιζευγνυούσαις διὰ τῶν ἄκρων αὐτάς. ὅτι μὲν οὖν ἐν τούτῳ ἐστὶν ἡ οἰκουμένη, φανερὸν ἐκ τοῦ μήτε τὸ πλάτος αὐτῆς τὸ μέγιστον ἔξω πίπτειν αὐτοῦ, μήτε τὸ μῆκος. ὅτι δ' αὐτῆς χλαμυδοειδὲς τὸ σχῆμά ἐστιν, ἐκ τοῦ τὰ ἄκρα μυουρίζειν τὰ τοῦ μήκους ἑκατέρωθεν. κλυζόμενα δ' ἀπὸ τῆς θαλάττης καὶ ἀφαιρεῖν τοῦ πλάτους. τοῦτο δὲ δῆλον ἐκ τῶν περιπλευσάντων τά τε ἑῷα μέρη, καὶ τὰ δυσμικὰ ἑκατέρωθεν. τῆς τε γὰρ ἰνδικῆς νοτιωτέραν πολὺ τὴν ταπροβάνην καλουμένην νῆσον ἀποφαίνουσιν. οἰκουμένην ἔτι καὶ ἀνταίρουσαν τῇ τῶν αἰγυπτίων νήσῳ, καὶ τῇ τὸ κιννάμωμον φερούσῃ γῇ. τὴν μὲν γὰρ κρᾶσιν τῶν ἀέρων παραπλησίαν εἶναι τῆς τε μετὰ τοὺς ἰνδοὺς σκυθίας τῆς ὑστάτης, ἀρκτικώτερά ἐστι τὰ κατὰ τὸ στόμα τῆς ὑρκανίας θαλάττης. καὶ ἔτι μᾶλλον τὰ κατὰ τὴν ἰέρνην. ὁμοίως δὲ καὶ περὶ τῆς ἔξω στηλῶν λέγεται. δυσμικώτατον μὲν γὰρ σημεῖον τῆς οἰκουμένης, τὸ τῶν ἰβήρων ἀκρωτήριον. ὃ καλοῦσιν ἱερόν. κεῖται δὲ κατὰ γραμμήν πως πρὸς τὴν διὰ γαδείρων τε καὶ στηλῶν, καὶ τοῦ σικελικοῦ πορθμοῦ καὶ τῆς ῥοδίας. συμφωνεῖν γάρ καὶ τὰ ὡροσκοπεῖα καὶ τοὺς ἀνέμους φασὶ τοὺς ἑκατέρωσε φορούς. καὶ τὰ μήκη τῶν μεγίστων ἡμερῶν τε καὶ νυκτῶν, ἔστι γὰρ τεσσαρεσκαίδεκα ὡρῶν ἰσημερινῶν τε καὶ νυκτῶν, ἔν τε τῇ παραλίᾳ τῇ κατὰ γάδειρα καὶ ἴβηρας ποτὲ ὁρᾶσθαι. ποσειδώνιος δ' ἔκ τινος ὑψηλῆς οἰκίας ἐν πόλει διεχούσῃ τῶν τόπων τούτων ὅσον τετρακοσίους σταδίους, φησὶν ἰδεῖν ἀστέρα. ὃν τεκμαίρεσθαι τὸν κάνωβον αὐτὸν ἐκ τοῦ τούτου τε μικρὸν ἐκ τῆς ἰβηρίας προελθόντας ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν ὁμολογεῖν ἀφορᾶν αὐτόν. καὶ ἐκ τῆς ἱστορίας τῆς ἐν κνίδῳ. τὴν γὰρ εὐδόξου σκοπὴν, οὐ πολὺ τῶν οἰκήσεων ὑψηλοτέραν εἶναι. λέγεσθαι δ' ὅτι ἐκεῖνος ἐντεῦθεν ἀφεώρα τὸν κάνωβον ἀστέρα. εἶναι δ' ἐπὶ τοῦ ῥοδιακοῦ κλίματος τὴν κνίδον. ἐφ' οὗ καὶ τὰ γάδειρα. καὶ ἡ ταύτης παραλία. ἐντεῦθεν δὲ πρὸς μὲν τὰ νότια μέρη πλέουσιν, ἡ λιβύη κεῖται. ταύτης δὲ τὰ δυσμικώτατα, μικρὰ τῶν γαδείρων πρόκειται μᾶλλον, εἶτ' ἄκραν ποιήσαντα στενὴν ἀναχωρεῖν πρὸς ἕω καὶ νότον, καὶ πλατύνεται κατ' ὀλίγον ἕως ἂν τοῖς ἑσπερίοις αἰθίοψι συνάψῃ. οὗτοι δ' ὑπόκεινται τῶν περὶ καρχηδόνα τόπων ὕστατοι. συνάπτοντες τῇ διὰ τῆς κινναμωμοφόρου γραμμῇ. εἰς δὲ τἀναντία πλέουσιν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ ἀκρωτηρίου μέχρι τῶν ἀρτάβρων καλουμένων, ὁ πλοῦς ἐστι πρὸς ἄρκτον. ἐν δεξιᾷ ἔχουσι τὴν λυσιτανίαν. εἶθ' ὁ λοιπὸς πρὸς ἕω πᾶς ἀμβλεῖαν γωνίαν ποιῶν. μέχρι τῶν τῆς πυρήνης ἄκρων τῶν τελευτώντων εἰς τὸν ὠκεανόν. τούτοις δὲ τὰ ἑσπέρια τῆς βρεττανικῆς ἀντίκειται πρὸς ἄρκτον. ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ἀρτάβροις ἀντίκεινται πρὸς ἄρκτον, αἱ κασσιτερίδες καλούμεναι νῆσοι. πελάγιαι κατὰ τὸ βρεττανικόν πως κλίμα ἱδρυμέναι. ὥστε δῆλον ἐφ' ὅσον συνάγεται τὰ ἄκρα τῆς οἰκουμένης κατὰ μῆκος ὑπὸ τοῦ περικεχυμένου πελάγους εἰς στενόν. τοιούτου δὲ ὄντος τοῦ καθόλου σχήματος, χρήσιμον φαίνεται δύο λαβεῖν εὐθείας. αἳ τέμνουσαι πρὸς ὀρθὰς ἀλλήλας, ἡ μὲν, διὰ τοῦ μήκους ἕξει τοῦ μεγίστου παντός. ἡ δὲ, διὰ τοῦ πλάτους. καὶ ἡ μὲν, τῶν παραλλήλων ἔσται μία. ἡ δὲ, τῶν μεσημβρινῶν. ἔπειτα ταύταις παραλλήλους ἐπινοοῦντας, ἐφ' ἑκάτερα διαιρεῖν κατὰ ταύτην τὴν γῆν καὶ τὴν θάλατταν ᾗ χρώμενοι τυγχάνομεν. καὶ γὰρ τὸ σχῆμα μᾶλλον ἂν καταφανὲς γένοιτο ὁποῖον εἰρήκαμεν. καὶ τὸ μέγεθος τῶν γραμμῶν. ἄλλα καὶ ἄλλα μέτρα ἐχουσῶν, τῶν τε τοῦ μήκους καὶ τοῦ πλάτους. καὶ τὰ κλίματα ἀποδηλωθήσεται βέλτιον, τά τε ἑωθινὰ μᾶλλον καὶ τὰ ἑσπέρια. ὡς δ' αὕτως τὰ νότια καὶ τὰ βόρεια. ἐπεὶ δὲ διὰ γνωρίμων τόπων λαμβάνεσθαι δεῖ τὰς εὐθείας ταύτας, αἱ μὲν, εἰλήφθησαν ἤδη. λέγω δὲ τὰς μέσας δύο. τήν τε τοῦ μήκους καὶ τοῦ πλάτους τὰς λεχθείσας πρότερον. αἱ δ' ἄλλαι ῥᾳδίως γνωρίζοιντ' ἂν διὰ τούτων. ὥσπερ γάρ τισι στοιχείοις χρώμενοι τούτοις τὰ παράλληλα μέρη συνεχόμεθα καὶ τὰς ἄλλας σχέσεις τῶν οἰκήσεων. τάς τ' ἐπὶ γῆς καὶ πρὸς τὰ οὐράνια. πλεῖστον δ' ἡ θάλαττα γεωγραφεῖ καὶ σχηματίζει τὴν γῆν. κόλπους ἀπεργαζομένη καὶ πελάγη καὶ πορθμούς. ὁμοίως δὲ ἰσθμοὺς καὶ χερρονήσους καὶ ἄκρας. προσλαμβάνουσι δὲ ταύτῃ καὶ οἱ ποταμοὶ καὶ τὰ ὄρη. διὰ γὰρ τῶν τοιούτων ἤπειροί τε καὶ ἔθνη. καὶ πόλεων θέσεις, εὐφυεῖς ἐνενοήθησαν. καὶ τἄλλα ποικίλματα ὅσων μεστός ἐστιν ὁ χωρογραφικὸς πίναξ. ἐν δὲ τούτοις καὶ τὸ τῶν νήσων πλῆθός ἐστι κατεσπαρμένον. ἔν τε τοῖς πελάγεσι καὶ κατὰ τὴν παραλίαν πᾶσαν. ἄλλων ἄλλας ἀρετάς τε καὶ κακίας καὶ τὰς ἀπ' αὐτῶν χρείας ἐπιδεικνυμένων ἢ δυσχρηστίας. τὰς μὲν, φύσει. τὰς δὲ, ἐκ κατασκευῆς. ἃς φύσει δεῖ λέγειν. διαμένουσι γὰρ αἱ δ' ἐπίθετοι δέχονται μεταβολάς. καὶ τούτων δὲ τὰς πλείω χρόνον συμμένειν δυναμένας, ἐμφανιστέον. μὴ πολλὰ μέν. ἄλλως δ' ἐπιφάνειαν μὲν ἐχούσας τινὰς καὶ δόξαν. ἣ πρὸς τὸν ὕστερον χρόνον παραμένουσα τρόπον τινὰ συμφυῆ τοῖς τόποις ποιεῖ καὶ μηκέτι οὖσαν κατασκευήν. ὥστε δῆλον

Ἔτι δεῖ καὶ τούτων μεμνῆσθαι, περὶ πολλῶν γάρ ἐστι πόλεων τοῦτ' εἰπεῖν, ὅπερ εἶπε δημοσθένης ἐπὶ τῶν περὶ ὄλυνθον. ἃς οὕτως ἠφανίσθαι φησὶν, ὥστ' εἰ μηδὲ πώποτε ᾠκίσθησαν γνῶναι, ἄν τινα ἐπελθόντα. ἀλλ' ὅμως καὶ εἰς τούτους τοὺς τόπους καὶ εἰς ἄλλους ἀφικνοῦνται ἄσμενοι. τὰ ἴχνη ποθοῦντες ἰδεῖν τῶν οὕτω διωνομασμένων ἔργων, καθάπερ καὶ τοὺς τάφους τῶν ἐνδόξων ἀνδρῶν. οὕτω δὲ καὶ νομίμων καὶ πολιτειῶν μεμνήμεθα τῶν μηκέτι οὐσῶν ἐνταῦθα. καὶ τῆς ὠφελείας προκαλουμένης τὸν αὐτὸν τρόπον, ὅνπερ καὶ ἐπὶ τῶν πράξεων. ἢ γὰρ ζήλου χάριν ἢ ἀποτροπῆς τῶν τοιούτων. λέγομεν δ' ἀναλαβόντες ἀπὸ τῆς πρώτης ὑποτυπώσεως. ὅτι ἡ καθ' ἡμᾶς οἰκουμένη γῆ περίρρυτος οὖσα δέχεται κόλπους εἰς ἑαυτὴν ἀπὸ τῆς ἔξω θαλάττης κατὰ τὸν ὠκεανὸν, πολλούς. μεγίστους δὲ τέτταρας. ὧν ὁ μὲν βόρειος, κασπία καλεῖται θάλαττα. οἱ δ' ὑρκανίαν προσαγορεύουσιν. ὁ δὲ περσικὸς καὶ ἀράβιος, ἀπὸ τῆς νοτίας ἀναχέονται θαλάττης. ὁ μὲν, τῆς κασπίας κατ' ἀντικρὺ μάλιστα. ὁ δὲ, τῆς ποντικῆς. τὸν δὲ τέταρτον ὅσπερ πολὺ τούτους ὑπερβέβληται κατὰ τὸ μέγεθος, ἡ ἐντὸς καὶ καθ' ἡμᾶς λεγομένη θάλαττα ἀπεργάζεται. τὴν μὲν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς ἑσπέρας λαμβάνουσα. καὶ τοῦ κατὰ τὰς ἡρακλείους στήλας πορθμοῦ. μηκυνομένου δ' εἰς τὸ πρὸς ἕω μέρος, ἐν ἄλλῳ πλάτει. μετὰ δὲ ταῦτα σχιζομένη καὶ τελευτῶσα εἰς δύο κόλπους πελαγίους. τὸν μὲν, ἐν ἀριστερᾷ ὅνπερ εὔξεινον πόντον προσαγορεύομεν. τὸν δ' ἕτερον τὸν συγκείμενον ἔκ τε τοῦ αἰγυπτίου πελάγους καὶ τοῦ παμφυλίου, καὶ τοῦ ἰσσικοῦ. ἅπαντες δὲ οἱ λεχθέντες ἀπὸ τῆς ἔξω θαλάττης κόλποι, στενὸν ἔχουσι τὸν εἴσπλουν. μᾶλλον δὲ ὅ, τε ἀράβιος καὶ ὁ κατὰ στήλας. ἧττον δ' οἱ λοιποί. ἡ δὲ περικλείουσα αὐτοὺς γῆ, τριχῆ νενέμηται καθάπερ εἴρηται. ἡ μὲν οὖν εὐρώπη πολυσχημονεστάτη πασῶν ἐστίν. ἡ δὲ λιβύη τἀναντία πέπονθεν, ἡ δ' ἀσία μέσην πως ἀμφοῖν ἔχει τὴν διάθεσιν. ἅπασαι δ' ἐκ τῆς ἐντὸς παραλίας, ἔχουσι τὴν αἰτίαν τοῦ τε πολυσχήμονος καὶ τοῦ μή. ἡ δ' ἐκτὸς πλὴν τῶν λεχθέντων κόλπων ἁπλῆ καὶ χλαμυδοειδής ἐστιν ὡς εἶπον. τὰς δ' ἄλλας ἐν μικρῷ διαφορὰς ἐατέον. οὐδὲν γὰρ ἐν τοῖς μεγάλοις τὸ μικρόν. ἔτι δ' ἐπεὶ κατὰ τὴν γεωγραφικὴν ἱστορίαν οὐ σχήματα μόνον ζητοῦμεν καὶ μεγέθη τόπων, ἀλλὰ καὶ σχέσεις πρὸς ἄλληλα αὐτῶν ὥσπερ ἔφαμεν. καὶ ἐνταῦθα τὸ ποικίλον ἡ ἐντὸς παραλία παρέχεται μᾶλλον, ἢ ἡ ἐκτός. πολὺ δ' ἐστὶ καὶ τὸ γνώριμον καὶ τὸ εὔκρατον. καὶ τὸ πόλεσι καὶ ἔθνεσιν εὐνομουμένοις μᾶλλον συνοικούμενον ἐνταῦθα, ἢ ἐκεῖ. ποθοῦμέν τε εἰδέναι ταῦτα, ἐν οἷς πλείους παραδίδονται πράξεις καὶ πολιτεῖαι καὶ τέχναι, καὶ τἆλλα ὅσα εἰς φρόνησιν συνεργεῖ. αἱ χρεῖαι συνάγουσιν ἡμᾶς πρὸς ἐκεῖνα, ὧν ἐν ἐφικτῷ αἱ ἐπιπλοκαὶ καὶ κοινωνίαι. ταῦτα δ' ἐστὶν ὅσα οἰκεῖται. μᾶλλον δ' οἰκεῖται καλῶς. πρὸς ἅπαντα δὲ τὰ τοιαῦτα ὡς ἔφην ἡ παρ' ἡμῖν θάλαττα πλεονέκτημα ἔχει μέγα. καὶ δὴ καὶ ἐνθένδε ἀρκτέον τῆς περιηγήσεως. εἴρηται δὲ ὅτι ἀρχὴ τοῦδε τοῦ κόλπου ἐστὶν ὁ κατὰ τὰς στήλας πορθμός. τὸ δὲ στενότατον τούτου περὶ ἑβδομήκοντα σταδίους λέγεται. παραπλεύσαντι δὲ τὸν στενωπὸν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων ὄντα, διάστασιν λαμβάνουσιν αἱ ἠιόνες ἀθρόαν, ἡ δ' ἐν ἀριστερᾷ μᾶλλον. εἶτ' ὄψις μεγάλου φαίνεται πελάγους. ὁρίζεται δ' ἐκ μὲν τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ τῇ λιβυκῇ παραλίᾳ μέχρι καρχηδόνος. ἐκ δὲ θατέρου τῇ τε ἰβηρικῇ καὶ τῇ κελτικῇ κατὰ ναρβῶνα καὶ μασσαλίαν. καὶ μετὰ ταῦτα τῇ λιγυστικῇ. τελευταίᾳ δὲ τῇ ἰταλικῇ, μέχρι τοῦ σικελικοῦ πορθμοῦ. τὸ δ' ἑῷον τοῦ πελάγους πλευρὸν ἡ σικελία ἐστί. καὶ οἱ ἑκατέρωθεν αὐτῆς πορθμοί. ὁ μὲν πρὸς τῇ ἰταλίᾳ ἑπτὰ σταδίοις. ὁ δὲ πρὸς τῇ καρχηδόνι χιλίων καὶ πεντακοσίων σταδίων. ἡ δ' ἀπὸ τῆς τῶν στηλῶν ἐπὶ τὸ ἑπταστάδιον γραμμὴ, μέρος μέν ἐστι τῆς ἐπὶ ῥόδον καὶ τὸν ταῦρον. μέσον δέ πως τέμνει τὸ λεχθὲν πέλαγος. λέγεται δὲ σταδίων μυρίων καὶ δισχιλίων. τοῦτο μὲν δὴ τὸ μῆκος τοῦ πελάγους. πλάτος δὲ τὸ μέγιστον ὅσον πεντακισχιλίων σταδίων τὸ ἀπὸ τοῦ γαλατικοῦ κόλπου μεταξὺ μασσαλίας καὶ ναρβῶνος ἐπὶ τὴν κατ' ἀντικρὺ λιβύην. καλοῦσι δὲ τὸ πρὸς τῇ λιβύῃ πᾶν μέρος τῆς θαλάττης ταύτης, λιβυκὸν πέλαγος. τὸ δὲ πρὸς τῇ κατ' ἀντικρὺ γῇ, τὸ μὲν, ἰβηρικόν. τὸ δὲ, λιγυστικὸν, τὸ δὲ, σαρδώνιον. τελευταῖον δὲ μέχρι σικελίας τὸ τυρρηνικόν. νῆσοι δ' εἰσὶν ἐν μὲν τῇ παραλίᾳ τῇ κατὰ τὸ τυρρηνικὸν πέλαγος μέχρι τῆς λιγυστικῆς συχναί. μέγισται δὲ σαρδὼ καὶ κύρνος μετά γε τὴν σικελίαν. αὕτη δὲ καὶ τῶν ἄλλων ἐστὶ μεγίστη τῶν καθ' ἡμᾶς καὶ ἀρίστη. πολὺ δὲ τούτων λειπόμεναι, πελάγιαι μὲν πανδαρία τε καὶ ποντία. πρόσγειοι δὲ αἰθαλία τε καὶ πλανασία καὶ ἰλούα καὶ πιθήκουσαι. καὶ προχύτη καὶ καπρεῖαι. καὶ λευκωσία καὶ ἄλλαι τοιαῦται. ἐπὶ θάτερα δὲ τῆς λιγυστικῆς αἱ πρὸ τῆς λοιπῆς ἠϊόνος μέχρι στηλῶν οὐ πολλαί. ὧν εἰσὶν ἥ τε γυμνησία καὶ βύσος. οὐ πολλαὶ δ' οὐδὲ πρὸ τῆς λιβύης καὶ τῆς σικελίας. ὧν εἰσὶ κόσσουρά τε καὶ αἰγίμουρος. καὶ αἱ λιπαραίων νῆσοι. ἃς αἰόλου τινὲς προσαγορεύουσι. μετὰ δὲ τὴν σικελίαν καὶ τοὺς ἑκατέρωθεν πορθμοὺς ἄλλα πελάγη συνάπτει. τό τε πρὸ τῶν σύρτεων καὶ τῆς κυρηναίας καὶ αὐταὶ αἱ σύρτεις. καὶ τὸ αὐσόνιον μὲν πάλαι. νῦν δὲ καλούμενον σικελικὸν, σύρρουν ἐκείνῳ καὶ συνεχές. τὸ μὲν οὖν πρὸ τῶν σύρτεων καὶ τῆς κυρηναίας καλεῖται λιβυκόν. τελευτᾷ δ' εἰς τὸ αἰγύπτιον πέλαγος. τῶν δὲ σύρτεων ἡ μὲν ἐλάττων ἐστὶν ὅσον χιλίων καὶ ἑξακοσίων σταδίων τὴν περίμετρον ἔχουσα. πρόκεινται δ' ἐφ' ἑκάτερα τοῦ στόματος νῆσοι. μῆνιγξ τε καὶ κέρκινα. τῆς δὲ μεγάλης σύρτεως φησὶν ἐρατοσθένης τὸν κύκλον εἶναι πεντακισχιλίων. τὸ δὲ βάθος χιλίων ὀκτακοσίων. ἀφ' ἑσπερίδων εἰς αὐτόμαλα, καὶ τὸ τῆς

κυρηναίας μεθόριον πρὸ τὴν ἄλλην γῆν τὴν ταύτῃ λιβύην. ἄλλοι δὲ τὸν περίπλουν τετρακισχιλίων
σταδίων εἶπον. τὸ δὲ βάθος, χιλίων καὶ πεντακοσίων. ὅσον καὶ τὸ πλάτος τοῦ στόματος. τὸ δὲ σικελικὸν
πέλαγος πρὸ τῆς σικελίας ἐστὶ καὶ τῆς ἰταλίας ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρος. καὶ ἔτι τὰ μεταξὺ πόρου τοῦ
τε ῥηγίνου, μέχρι λοκρῶν, καὶ τῆς μεσσηνίας μέχρι συρακουσσῶν, καὶ παχύνου. αὔξεται δ' ἐπὶ μὲν τὸ πρὸς
ἕω μέρος μέχρι τῶν ἄκρων τῆς κρήτης. καὶ τὴν πελοπόννησον δὲ περικλύζει τὴν πλείστην. καὶ πληροῖ
τὸν κορινθιακὸν καλούμενον κόλπον. πρὸς ἄρκτους δ' ἐπί τε ἄκραν ἰαπυγίαν καὶ τὸ στόμα τοῦ ἰονίου κόλ-
που. καὶ τῆς ἠπείρου τὰ νότια μέρη, μέχρι τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου. καὶ τῆς συνεχοῦς παραλίας τῆς
ποιούσης τὸν κορινθιακὸν κόλπον πρὸς τὴν πελοπόννησον. ὁ δ' ἰόνιος κόλπος μέρος ἐστὶ τοῦ νῦν ἀδρίου
λεγομένου. τούτου δὲ τὴν μὲν ἐν δεξιᾷ πλευρὰν ἡ ἰλλυρὶς ποιεῖ. τὴν δ' εὐώνυμον ἡ ἰταλία, μέχρι τοῦ μυ-
χοῦ τοῦ κατὰ ἀκυληΐαν. ἔστι δὲ πρὸς ἄρκτον ἅμα καὶ πρὸς τὴν ἑσπέραν ἀνέχων, στενὸς καὶ μακρός. μῆ-
κος μὲν ὅσον ἑξακισχιλίων σταδίων. πλάτος δὲ τὸ μὲν μέγιστον διακοσίων ἐπὶ τοῖς χιλίοις. νῆσοι δὲ εἰσὶν
ἐνταῦθα, συχναὶ μὲν αἱ πρὸ τῆς ἰλλυρίδος. αἵ τε ἀψυρτίδες καὶ κυρικτικὴ καὶ λιβυρνίδες. ἔτι δ' ἴσ-
σα καὶ τραγούριον. καὶ ἡ μέλαινα κόρκυρα. καὶ φάρος. πρὸ τῆς ἰταλίας δὲ αἱ διομήδειοι. τοῦ σικελικοῦ
δὲ τὸ ἐπὶ κρήτην ἀπὸ παχύνου, τετρακισχιλίων καὶ πεντακοσίων σταδίων φασί. τοσοῦτον δὲ καὶ τὸ ἐ-
πὶ ταίναρον τῆς λακωνικῆς. τὸ δὲ ἀπὸ ἄκρας ἰαπυγίας ἐπὶ τὸν μυχὸν τοῦ κορινθιακοῦ κόλπου, τῶν
μὲν τρισχιλίων ἐστὶν ἔλαττον. τὸ δ' ἀπὸ ἄκρας ἰαπυγίας εἰς τὴν λιβύην πλεόντων, τετρακισχιλίων
ἐστί. νῆσοι δ' εἰσὶν ἐνταῦθα, ἥ τε κόρκυρα καὶ σύβοτα πρὸ τῆς ἠπειρώτιδος. καὶ ἐφεξῆς πρὸ τοῦ κορινθια-
κοῦ κόλπου κεφαλληνία. καὶ ἰθάκη, καὶ ζάκυνθος καὶ ἐχινάδες. τῷ δὲ σικελικῷ συνάπτει τὸ κρητικὸν
πέλαγος, καὶ τὸ σαρωνικὸν καὶ τὸ μυρτῷον. ὃ μεταξὺ τῆς κρήτης ἐστὶ καὶ τῆς ἀργείας καὶ τῆς ἀττι-
κῆς. πλάτος ἔχον τὸ μέγιστον τὸ ἀπὸ τῆς ἀττικῆς, ὅσον χιλίων καὶ διακοσίων σταδίων. μῆκος δὲ ἔλαττον
ἢ διπλάσιον. ἐν τούτῳ δὲ νῆσοι κύθηρά τε καὶ καλαυρία. καὶ αἱ περὶ αἴγιναν καὶ σαλαμῖνα καὶ τῶν
κυκλάδων τινές. τὸ δὲ συνεχὲς τὸ αἰγαῖον ἐστὶν ἤδη σὺν τῷ μέλανι κόλπῳ καὶ τῷ ἑλλησπόντῳ. καὶ τὸ
ἰκάριον καὶ καρπάθιον μέχρι ῥόδου καὶ κρήτης καὶ κύπρου καὶ τῶν πρώτων μερῶν. τῆς δ' ἀσίας
αἵ τε κυκλάδες νῆσοι εἰσὶ καὶ αἱ σποράδες. καὶ αἱ προκείμεναι τῆς καρίας καὶ ἰωνίας καὶ αἰολίδος
μέχρι τῆς τρωάδος. λέγω δὲ κῶ, καὶ σάμον καὶ χίον καὶ λέσβον καὶ τένεδον. ὡσαύτως δ' αἱ προκείμεναι
τῆς ἑλλάδος μέχρι τῆς μακεδονίας καὶ τῆς ὁμόρου θρᾴκης, εὔβοιά τε καὶ σκῦρος καὶ πεπάρηθος. καὶ
λῆμνος καὶ θάσος καὶ ἴμβρος καὶ σαμοθρᾴκη καὶ ἄλλαι πλείους. περὶ ὧν ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα δηλώ-
σομεν. ἔστι δὲ τὸ μῆκος τῆς θαλάττης ταύτης, περὶ τετρακισχιλίους ἢ μικρῷ πλείους. τὸ δὲ πλάτος πε-
ρὶ δισχιλίους. περιέχεται δὲ ὑπὸ τῶν λεχθέντων μερῶν τῆς ἀσίας, καὶ τῆς ἀπὸ σουνίου μέχρι θερ-
μαίου κόλπου πρὸς ἄρκτον ἐχούσης τὸν πλοῦν παραλίας καὶ τῶν μακεδονικῶν κόλπων μέχρι τῆς
θρᾳκίας χερρονήσου. κατὰ δὲ ταύτην ἐστί, τὸ ἑπταστάδιον τὸ κατὰ σηστὸν καὶ ἄβυδον. δι' οὗ τὸ αἰγαῖον
καὶ ὁ ἑλλήσποντος ἐκδίδωσι πρὸς ἄρκτον εἰς ἄλλο πέλαγος ὃ καλοῦσι προποντίδα. κἀκεῖνο εἰς ἄλλο
τὸν εὔξεινον προσαγορευόμενον πόντον. ἔστι δὲ διθάλαττος τρόπον τινὰ οὗτος. κατὰ μέσον γάρ πως ἄ-
κραι δύο προπίπτουσιν. ἡ μὲν, ἐκ τῆς εὐρώπης καὶ τῶν βορείων μερῶν. ἡ δ' ἐκ τῆς ἀσίας ἐναντία
ταύτῃ συνάγουσαι τὸν μεταξὺ πόρον. καὶ ποιοῦσαι δύο πελάγη μεγάλα. τὸ μὲν οὖν τῆς εὐρώπης ἀ-
κρωτήριον, καλεῖται κριοῦ μέτωπον. τὸ δὲ τῆς ἀσίας κάραμβις. διέχοντα ἀλλήλων περὶ δισχιλίους
σταδίους, καὶ πεντακοσίους. τὸ μὲν οὖν πρὸς ἑσπέραν πέλαγος, μῆκος ἐστὶν ἀπὸ βυζαντίου μέχρι τῶν
ἐκβολῶν τοῦ βορυσθένους, σταδίων τρισχιλίων ἑξακοσίων, πλάτος δὲ δισχιλίων. ἐν τούτῳ δ' ἡ λευκὴ
νῆσος ἐστί. τὸ δ' ἑῷον ἐστὶ παραμῆκες. εἰς στενὸν τελευτῶν μυχὸν, τὸν κατὰ διοσκουριάδα. ἐπὶ πεντα-
κισχιλίους ἢ μικρῷ πλείους σταδίους. τὸ δὲ πλάτος περὶ τρισχιλίους. ἡ δὲ περίμετρος τοῦ σύμπαντος
πελάγους ἐστὶ δισμυρίων που καὶ πεντακισχιλίων. εἰκάζουσι δέ τινες τὸ σχῆμα τῆς περιμέτρου ταύτης
ἐντεταμένῳ σκυθικῷ τόξῳ. τὴν μὲν νευρὰν ἐξομοιοῦντες τοῖς δεξιοῖς καλουμένοις μέρεσι τοῦ πόντου.
ταῦτα δ' ἐστὶν ὁ παράπλους ὁ ἀπὸ τοῦ στόματος, μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ κατὰ διοσκουριάδα. πλὴν γὰρ τῆς
καράμβιος, ἥ γε πᾶσα ἄλλη ἠϊὼν μικρὰς ἔχει εἰσοχάς τε καὶ ἐξοχάς. ὥστ' εὐθείᾳ ἐοικέναι. τὴν δὲ λοι-
πὴν τῷ κέρατι τοῦ τόξου διττὴν ἔχοντι τὴν ἐπιστροφήν. τὴν μὲν ἄνω περιφερεστέραν. τὴν δὲ κάτω εὐ-
θυτέραν. οὕτως, δὲ κἀκείνην ἀπεργάζεσθαι δύο κόλπους. ὧν ὁ ἑσπέριος πολὺ θατέρου περιφερέστε-
ρός ἐστιν. ὑπέρκειται δὲ τοῦ ἑωθινοῦ κόλπου πρὸς ἄρκτον, ἡ μαιῶτις λίμνη. τὴν περίμετρον ἔχουσα ἐν-
νακισχιλίων σταδίων, ἢ μικρῷ πλειόνων. ἐκδίδωσι δ' αὕτη μὲν εἰς πόντον κατὰ τὸν κιμμερικὸν κα-
λούμενον βόσπορον. οὗτος δὲ, κατὰ τὸν θρᾴκιον εἰς τὴν προποντίδα. τὸ γὰρ βυζαντιακὸν στόμα οὕτω κα-
λοῦσι θρᾴκιον βόσπορον. ὃ τετραστάδιον ἐστίν. ἡ δὲ προποντὶς χιλίων καὶ πεντακοσίων λέγεται τὸ μῆ-
κος σταδίων τὸ ἀπὸ τῆς τρωάδος ἐπὶ τὸ βυζάντιον. παρεγγὺς δέ πως ἐστὶ καὶ τὸ πλάτος. ἐνταῦθα δ' ἡ τῶν
κυζικηνῶν ἵδρυται νῆσος καὶ τὰ περὶ αὐτὴν νησία. τοιαύτη μὲν ἡ πρὸς ἄρκτον, τοῦ αἰγαίου πελά-
γους ἀνάχυσις, καὶ τοσαύτη. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς ῥοδίας, ἡ τὸ αἰγύπτιον πέλαγος ποιοῦσα, καὶ τὸ παμφύλιον, καὶ
τὸ ἰσσικὸν, ἐπὶ μὲν τῆς ἕω καὶ τῆς κιλικίας κατ' ἴσον ἐκτείνεται μέχρι καὶ πεντακισχιλίων σταδίων.

παρά τε λυκίαν καὶ παμφυλίαν καὶ τὴν κιλίκων παραλίαν πᾶσαν· ἐντεῦθεν δὲ συρία, τε καὶ φοι-
νίκη, καὶ αἴγυπτος ἐγκυκλοῖ πρὸς νότον τὴν θάλατταν καὶ πρὸς δύσιν, ἕως ἀλεξανδρείας. ἐν δὲ τῷ ἰσσι-
κῷ κόλπῳ καὶ τῷ παμφυλίῳ, κεῖσθαι συμβαίνει τὴν κύπρον, συνάπτουσαν τῷ αἰγυπτίῳ πελάγει. ἔ-
στι δ' ἀπὸ ῥόδου δίαρμα εἰς ἀλεξάνδρειαν βορέᾳ τετρακισχιλίων που σταδίων. ὁ δὲ περίπλους διπλά-
σιος. ὁ δ' ἐρατοσθένης ταύτην μὲν τῶν ναυτικῶν εἶναί φησι τὴν ὑπόληψιν, παρὰ τοῦ διάρματος τοῦ πελά-
γους. τῶν μὲν, οὕτω λεγόντων. τῶν δὲ, καὶ πεντακισχιλίους οὐκ ὀκνούντων εἰπεῖν. αὐτὸς δὲ διὰ τῶν σκιο-
θηρικῶν γνωμόνων, ἀνευρεῖν τετρακισχιλίους ἑπτακοσίους πεντήκοντα. τούτου δὴ τοῦ πελάγους τὸ πρὸς
τῇ κιλικίᾳ καὶ παμφυλίᾳ καὶ τοῦ ποντικοῦ τὰ καλούμενα δεξιὰ μέρη καὶ ἡ προποντὶς καὶ ἡ ἐφε-
ξῆς παραλία, μέχρι παμφυλίας, ποιεῖ τινα χερρόνησον μεγάλην, καὶ μέγαν ταύτης ἰσθμὸν, τὸν ἀπὸ
τῆς πρὸς ταρσῷ θαλάττης, ἐπὶ πόλιν ἀμινσὸν, καὶ τὸ τῶν ἀμαζόνων πεδίον τὴν θεμίσκυραν. ἡ γὰρ ἐν-
τὸς τῆς γραμμῆς ταύτης χώρα μέχρι καρίας καὶ ἰωνίας, καὶ τῶν ἐντὸς ἅλυος νεμομένων ἐθνῶν, πε-
ρίκλυστος ἅπασά ἐστιν ὑπὸ τοῦ αἰγαίου καὶ τῶν ἑκατέρωθεν λεχθέντων τῆς θαλάττης μερῶν. καὶ δὴ
καὶ καλοῦμεν ἀσίαν ταύτην ἰδίως καὶ ὁμωνύμως τῇ ὅλῃ. συλλήβδην δ' εἰπεῖν τῆς καθ' ἡμᾶς θαλάτ-
της, νοτιώτατον μὲν ἐστὶ σημεῖον, ὁ τῆς μεγάλης σύρτεως μυχός. καὶ μετὰ τοῦτον ἡ κατὰ αἴγυπτον ἀλεξάν-
δρεια καὶ τοῦ νείλου προχοαί. βορειότατον δὲ τοῦ βορυσθένους. εἰ δὲ καὶ τὴν μαιῶτιν προσθείη τις τῷ πε-
λάγει, καὶ γάρ ἐστιν ὡς ἂν μέρος, τὸ τοῦ ταναΐδος. δυσμικώτατος δὲ, ὁ κατὰ τὰς στήλας πορθμός. ἑωθινώ-
τατος δ' ὁ λεχθεὶς μυχὸς κατὰ τὴν διοσκουριάδα. ἐρατοσθένης δ' οὐκ εὖ τὸν ἰσσικὸν κόλπον φησίν. ὁ μὲν
γὰρ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ μεσημβρινοῦ ἵδρυται, ἐφ' οὗ περ ἥ τε ἀμινσὸς καὶ θεμίσκυρα. εἰ δὲ βούλει προσ-
λαβε καὶ τὴν σιδήνην, μέχρι φαρνακίας. ἀπὸ δὲ τούτων τῶν μερῶν πρὸς ἕω, πλοῦς ἐστι πλειόνων που ἢ
τρισχιλίων σταδίων εἰς διοσκουριάδα. ὡς ἔσται μᾶλλον ἐκ τῆς ἐν μέρει περιοδίας φανερόν. ἡ μὲν δὴ
καθ' ἡμᾶς θάλαττα, τοιαύτη τις. ὑπογραπτέον δὲ καὶ τὰς περιεχούσας αὐτὴν γᾶς. ἀρχὴν λαβοῦσιν ἀ-
πὸ τῶν αὐτῶν μερῶν, ἀφ' ὧν περ καὶ τὴν θάλατταν ὑπεγράψαμεν. εἰσπλέουσι τοίνυν τὸν κατὰ στήλας
πορθμὸν, ἐν δεξιᾷ μέν ἐστιν ἡ λιβύη μέχρι τῆς τοῦ νείλου ῥύσεως. ἐν ἀριστερᾷ δὲ ἀντιπόρθμος ἡ εὐρώπη, μέ-
χρι τοῦ ταναΐδος. τελευτῶσι δ' ἀμφότεραι περὶ τὴν ἀσίαν. ἀρκτέον δ' ἀπὸ τῆς εὐρώπης. ὅτι πολυσχήμων
τε καὶ πρὸς ἀρετὴν ἀνδρῶν εὐφυεστάτη, καὶ πολιτῶν, καὶ ταῖς ἄλλαις πλεῖστον μεταδεδωκυῖα τῶν οἰ-
κείων ἀγαθῶν. ἐπειδὴ σύμπασα οἰκήσιμός ἐστι πλὴν ὀλίγης τῆς ἀοικήτου διὰ ψῦχος. αὕτη δ' ὁμορεῖ
τοῖς ἁμαξικοῖς τοῖς περὶ τὸν τάναϊν καὶ τὴν μαιῶτιν καὶ τὸν βορυσθένη. τῆς δ' οἰκησίμου τὸ μὲν δυσχεί-
μερον καὶ τὸ ὀρεινὸν μοχθηρῶς οἰκεῖται τῇ φύσει. ἐπιμελητὰς δὲ λαβόντα ἀγαθοὺς καὶ τὰ φαύλως
οἰκούμενα καὶ ληστρικῶς, ἡμεροῦται καθάπερ οἱ ἕλληνες, ὄρη καὶ πέτρας κατέχοντες, ᾤκουν καλῶς
διὰ πρόνοιαν τὴν περὶ τὰ πολιτικὰ καὶ τὰς τέχνας, καὶ τὴν ἄλλην σύνεσιν τὴν περὶ βίον. ῥωμαῖοί
τε πολλὰ ἔθνη παραλαβόντες καὶ ἃ τὴν φύσιν ἀνήμερα διὰ τοὺς τόπους ἢ τραχεῖς ὄντας, ἢ ἀλιμένους ἢ
ψυχροὺς ἢ ἀπ' ἄλλης αἰτίας δυσοικήτους, πολλοῖς τούς τε ἀνεπιπλέκτους ἀλλήλοις ἐπέπλεξαν. καὶ
τοὺς ἀγριωτέρους πολιτικῶς ζῆν ἐδίδαξαν. ὅσον δ' ἐστὶν αὐτοῖς ἐν ὁμαλῷ καὶ εὐκράτῳ τὴν φύσιν, ἔχει συ-
νεργὸν πρὸς ταῦτα. ἐπειδὴ τὸ μὲν ἐν τῇ εὐδαίμονι χώρᾳ πᾶν ἐστιν εἰρηνικόν. τὸ δ' ἐν τῇ λυπρᾷ μάχι-
μον καὶ ἀνδρικόν. καὶ δέχεταί τινας παρ' ἀλλήλων εὐεργεσίας τὰ γένη ταῦτα. τὰ μὲν, γὰρ ἐπικου-
ρεῖ τοῖς ὅπλοις. τὰ δὲ, καρποῖς καὶ τέχναις καὶ ἠθοποιΐαις. φανεραὶ δὲ καὶ αἱ ἐξ ἀλλήλων βλάβαι, μὴ ἐ-
πικουρούντων. ἔχει δέ τι πλεονέκτημα ἡ βία τῶν τὰ ὅπλα ἐχόντων, πλὴν εἰ τῷ πλήθει κρατεῖτο. ὑπάρ-
χει δή τι καὶ πρὸς τοῦτο εὐφυὲς τῇ ἠπείρῳ ταύτῃ. ὅλη γὰρ διαπεποίκιλται πεδίοις τε καὶ ὄρεσιν. ὥσ-
τε πανταχοῦ καὶ τὸ γεωργικόν τε καὶ τὸ γεωγραφικὸν καὶ τὸ πολιτικὸν καὶ τὸ μάχιμον παρακεῖσθαι.
πλέον δ' εἶναι θάτερον, τὸ τῆς εἰρήνης οἰκεῖον. ὥς τ' ὄντων ἐπικρατεῖ τοῦτο προσλαμβανόντων καὶ τῶν
ἡγεμόνων, ἑλλήνων μὲν πρότερον. μακεδόνων δὲ, καὶ ῥωμαίων ὕστερον. διὰ τοῦτο δὲ καὶ πρὸς εἰρήνην καὶ
πρὸς πόλεμον αὐταρκεστάτη ἐστί. καὶ γὰρ τὸ μάχιμον πλῆθος ἄφθονον ἔχει καὶ τὸ ἐργαζόμενον τὴν
γῆν. καὶ τὸ τὰς πόλεις συνέχον. διαφέρει δὲ καὶ ταύτῃ. διότι τοὺς καρποὺς ἐκφέρει τοὺς ἀρίστους καὶ
τοὺς ἀναγκαίους τῷ βίῳ, καὶ μέταλλα ὅσα χρήσιμα. θυμιάματα δὲ καὶ λίθους πολυτελεῖς ἔξωθεν
μέτεισιν. ὧν τοῖς σπανιζομένοις οὐδὲν χείρων ὁ βίος ἐστὶν ἢ τοῖς εὐπορουμένοις. ὡς δ' αὕτως βοσκημάτων
μὲν πολλῶν ἀφθονίαν παρέχει. θηρίων δὲ σπάνιν. τοιαύτη μὲν ἡ ἤπειρος αὕτη καθόλου τὴν φύσιν ἐστί. κα-
τὰ μέρος δ' ἐστὶ πρώτη πασῶν ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἡ ἰβηρία βύρσῃ βοείᾳ παραπλησία. τῶν ὡς ἂν τρα-
χηλιαίων μερῶν ὑπερπιπτόντων εἰς τὴν συνεχῆ κελτικήν. ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ πρὸς ἕω. καὶ τούτοις ἐ-
ναποτέμνεται τὸ πλευρὸν ὄρος ἡ καλουμένη πυρήνη. αὕτη δ' ἐστὶ περίρρυτος τῇ θαλάττῃ. τὸ μὲν νό-
τιον τῇ καθ' ἡμᾶς μέχρι στηλῶν. τὰ δὲ λοιπὰ τῇ ἀτλαντικῇ μέχρι τῶν βορείων ἄκρων τῆς πυρήνης.
μῆκος δὲ τῆς χώρας ταύτης ἐστὶ περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους τὸ μέγιστον. πεντακισχιλίους δὲ πλά-
τος. μετὰ δὲ ταύτην ἐστὶν ἡ κελτικὴ πρὸς ἕω μέχρι ποταμοῦ ῥήνου. τὸ μὲν βόρειον πλευρὸν τῷ
βρεττανικῷ κλυζομένη πορθμῷ παντί. ἀντιπαρήκει γὰρ αὐτῇ παράλληλος ἡ νῆσος αὕτη πᾶ-
σα πάσῃ. μῆκος ὅσον πεντακισχιλίους ἐπέχουσα. τὸ δ' ἑωθινὸν τῷ ῥήνῳ ποταμῷ περιγραφο-

μῶν· παράλληλον ἔχοντι τὸ ῥεῦμα τῇ πυρήνῃ. τὸ δὲ νότιον ταῖς μὲν ἄλπεσι τὸ ἀπὸ τοῦ ῥήνου. τὸ δ' αὐτῇ τῇ καθ' ἡμᾶς θαλάττῃ. καθ' ὃ χωρίον ὁ καλούμενος γαλατικὸς κόλπος ἀναχεῖται. καὶ ἐν αὐτῷ μασσαλία τε καὶ ναρβὼν ἵδρυνται πόλεις ἐπιφανέσταται. ἀντίκειται δὲ τῷ κόλπῳ τούτῳ κατ' ἀποστροφὴν, ἕτερος κόλπος ὁμώνυμος αὐτῷ. καλούμενος γαλατικός. βλέπων πρὸς τὰς ἄρκτους καὶ τὴν βρεττανικήν. ἐνταῦθα δὲ καὶ στενώτατον λαμβάνει τὸ πλάτος ἡ κελτική. συνάγεται γὰρ εἰς ἰσθμὸν, ἐλαττόνων μὲν ἢ τρισχιλίων σταδίων. πλειόνων δ' ἢ δισχιλίων. μεταξὺ δ' ἐστὶ ῥάχις ὀρεινὴ πρὸς ὀρθὰς τῇ πυρήνῃ, τὸ καλούμενον κέμμενον ὄρος. τελευτᾷ δὲ τοῦτο εἰς μεσαίτατα τὰ τῶν κελτῶν πεδία. τῶν δὲ ἄλπεων ἅ ἐστιν ὄρη σφόδρα ὑψηλά, περιφερῆ ποιούντων γραμμὴν, τὸ μὲν κυρτὸν ἔστραπται πρὸς τὰ λεχθέντα τῶν κελτῶν πεδία καὶ τὸ κέμμενον ὄρος. τὸ δὲ κοῖλον πρὸς τὴν λιγυστικὴν καὶ τὴν ἰταλίαν. ἔθνη δὲ κατέχει πολλὰ τὸ ὄρος τοῦτο κελτικὰ πλὴν τῶν λιγύων. οὗτοι δ' ἑτεροεθνεῖς μέν εἰσι. παραπλήσιοι δὲ τοῖς βίοις. νέμονται δὲ μέρος τῶν ἄλπεων τὸ συνάπτον τοῖς ἀπεννίνοις ὄρεσι. μέρος δὲ καὶ τῶν ἀπεννίνων ὀρῶν κατέχουσι. ταῦτα δ' ἐστὶν ὀρεινὴ ῥάχις διὰ τοῦ μήκους ὅλου τῆς ἰταλίας διαπεφυκυῖα ἀπὸ τῶν ἄρκτων ἐπὶ μεσημβρίαν. τελευτῶσα δ' ἐπὶ τὸν σικελικὸν πορθμὸν, τῆς δ' ἰταλίας ἐστὶ τὰ μὲν πρῶτα μέρη, τὰ ὑποπίπτοντα ταῖς ἄλπεσι πεδία, μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ ἀδρίου, καὶ τῶν πλησίον τόπων. τὰ δ' ἑξῆς ἄκρα στενὴ καὶ μακρὰ χερρονησιάζουσα. δι' ἧς ὡς εἶπον ἐπὶ μῆκος τέταται τὸ ἀπέννινον ὄρος ὅσον ἑπτακισχιλίων. πλάτος δ' ἀνώμαλον. ποιεῖ δὲ τὴν ἰταλίαν χερρόνησον, τό τε τυρρηνικὸν πέλαγος ἀρξάμενον ἀπὸ τοῦ λιγυστικοῦ. καὶ τὸ αὐσόνιον, καὶ ὁ ἀδρίας. μετὰ δὲ τὴν ἰταλίαν καὶ τὴν κελτικὴν, τὰ πρὸς ἕω λοιπά ἐστι τῆς εὐρώπης. ἃ δίχα τέμνεται τῷ ἴστρῳ ποταμῷ. φέρεται δ' οὗτος ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω καὶ τὸν εὔξεινον πόντον. ἐν ἀριστερᾷ λιπὼν τήν τε γερμανίαν ὅλην ἀρξαμένην ἀπὸ τοῦ ῥήνου καὶ τὸ γετικὸν πᾶν. καὶ τὸ τῶν τυρεγετῶν καὶ βασταρνῶν καὶ σαυροματῶν, μέχρι ταναΐδος ποταμοῦ καὶ τῆς μαιώτιδος λίμνης. ἐν δεξιᾷ δὲ τήν τε θρᾴκην ἅπασαν καὶ τὴν ἰλλυρίδα καὶ μακεδονίαν. λοιπὴν δὲ καὶ τελευταίαν τὴν ἑλλάδα. πρόκεινται δὲ νῆσοι τῆς εὐρώπης, ἃς ἔφαμεν ἔξω μὲν στηλῶν, γάδειρά τε καὶ κατιτερίδες, καὶ βρεττανικαί. ἐντὸς δὲ στηλῶν, αἵ τε γυμνήσιαι καὶ ἄλλα νησίδια φοινίκων, καὶ τὰ τῶν μασσαλιωτῶν καὶ λιγύων. καὶ αἱ πρὸ τῆς ἰταλίας μέχρι τῶν αἰόλου νήσων καὶ τῆς σικελίας. ὅσαι τε περὶ τὴν ἤπειρον καὶ ἑλλάδα καὶ μέχρι μακεδονίας καὶ τῆς θρᾳκίας χερρονήσου. ἀπὸ δὲ τοῦ ταναΐδος καὶ τῆς μαιώτιδος τῆς ἀσίας, ἐστὶν ἤδη τὰ ἐντὸς τοῦ ταύρου συνεχῆ, τούτοις δ' ἑξῆς τὰ ἐκτός. διαιρουμένης γὰρ αὐτῆς ὑπὸ τοῦ ὄρους τοῦ ταύρου δίχα παρατείνοντος ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς παμφυλίας ἐπὶ τὴν ἑῴαν θάλατταν, κατ' ἰνδοὺς καὶ τοὺς ταύτῃ σκύθας, τὸ μὲν πρὸς ἄρκτους νενευκὸς τῆς ἠπείρου μέρος, ὃ καλοῦσιν οἱ ἕλληνες ἐντὸς τοῦ ταύρου. τὸ δὲ πρὸς μεσημβρίαν ἐκτός. τὰ δὲ συνεχῆ τῇ μαιώτιδι καὶ τῷ ταναΐδι, μέρη τὰ ἐντὸς τοῦ ταύρου ἐστί. τούτων δὲ τὰ πρῶτα μέρη τὰ μεταξὺ τῆς κασπίας θαλάττης ἐστὶ καὶ τοῦ εὐξείνου πόντου, τῇ μὲν ἐπὶ τὸν τάναιν καὶ τὸν ὠκεανὸν τελευτῶντα τόν τε ἔξω καὶ τὸν ἐπὶ τῆς ὑρκανίας θαλάττης. τῇ δ' ἐπὶ τὸν ἰσθμόν. καθ' ὃ ἐγγυτάτω ἐστὶν, ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ πόντου, ἐπὶ τὴν κασπίαν. ἔπειτα τὰ ἐντὸς τοῦ ταύρου τὰ ὑπὲρ τῆς ὑρκανίας μέχρι πρὸς τὴν κατὰ ἰνδοὺς καὶ σκύθας, τοὺς πρὸς τὴν αὐτὴν θάλατταν καὶ τὸ ἰμάϊον ὄρος. ταῦτα δ' ἔχουσι, τὰ μὲν, οἱ μαιῶται σαυρομάται, καὶ οἱ μεταξὺ τῆς ὑρκανίας καὶ τοῦ πόντου, μέχρι τοῦ καυκάσου. καὶ ἰβήρων καὶ ἀλβανῶν, σαυρομάται καὶ σκύθαι καὶ ἀχαιοί. καὶ ζυγοί, καὶ ἡνίοχοι. τὰ δ' ὑπὲρ τῆς ὑρκανίας θαλάττης, σκύθαι καὶ ὑρκανοὶ καὶ παρθυαῖοι καὶ βάκτριοι, καὶ σογδιανοί. καὶ τἆλλα τὰ ὑπερκείμενα μέρη τῶν ἰνδῶν πρὸς ἄρκτον. πρὸς νότον δὲ τῆς ὑρκανίας θαλάττης, ἐκ μέρους καὶ τοῦ ἰσθμοῦ, παντὸς μεταξὺ ταύτης καὶ τοῦ πόντου, τῆς τε ἀρμενίας ἡ πλείστη κεῖται καὶ κολχίς. καὶ καππαδοκία σύμπασα μέχρι τοῦ εὐξείνου πόντου καὶ τῶν τιβαρανικῶν ἐθνῶν. ἔτι δὲ ἡ ἐντὸς ἅλυος χώρα λεγομένη. περιέχουσα πρὸς μὲν τῷ πόντῳ καὶ τῇ προποντίδι, παφλαγόνας τε καὶ βιθυνοὺς καὶ μυσούς. καὶ τὴν ἐφ' ἑλλησπόντῳ λεγομένην φρυγίαν. ἧς ἐστι καὶ ἡ τρῳάς. πρὸς δὲ τῷ αἰγαίῳ καὶ τῇ ἐφεξῆς θαλάττῃ τήν τε αἰολίδα καὶ τὴν ἰωνίαν. καὶ καρίαν καὶ λυκίαν. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τήν τε φρυγίαν. ἧς ἐστι μέρος ἥ τε τῶν γαλλογραικῶν λεγομένη γαλατία καὶ ἡ ἐπίκτητος. καὶ λυκάονες καὶ λυδοί. ἐφεξῆς δὲ τοῖς ἐντὸς ταύρου, οἵ τε τὰ ὄρη κατέχοντες παροπαμισάδαι, καὶ τὰ παρθυαίων τε καὶ μήδων καὶ ἀρμενίων καὶ κιλίκων ἔθνη. καὶ λυκάονες καὶ πισίδαι. μετὰ δὲ τοὺς ὀρείους ἐστὶ τὰ ἐκτὸς τοῦ ταύρου, πρώτη δ' ἐστὶ τούτων ἡ ἰνδική. ἔθνος μέγιστον τῶν πάντων καὶ εὐδαιμονέστατον. τελευτῶν πρός τε τὴν ἑῴαν θάλατταν καὶ τὴν νοτίαν τῆς ἀτλαντικῆς. ἐν δὲ τῇ νοτιωτάτῃ θαλάττῃ πρόκειται τῆς ἰνδικῆς νῆσος οὐκ ἐλάττων τῆς βρεττανικῆς ἡ ταπροβάνη. μετὰ δὲ τὴν ἰνδικὴν ἐπὶ τὰ ἑσπέρια νεύουσιν ἐν δεξιᾷ δ' ἔχουσι τὰ ὄρη, χώρα ἐστὶ συχνὴ φαύλως οἰκουμένη διὰ λυπρότητα. ὑπ' ἀνθρώπων τελέως βαρβάρων οὐχ ὁμοεθνῶν. καλοῦσι δ' ἀριανοὺς ἀπὸ τῶν ὀρῶν διατείνοντας μέχρι γεδρωσίας καὶ καρμανίας. ἑξῆς δ' εἰσὶ πρὸς μὲν τῇ θαλάττῃ πέρσαι καὶ σούσιοι καὶ βαβυλώνιοι. καθήκοντες ἐπὶ τὴν κατὰ πέρσας θάλατταν. καὶ τὰ περιοικοῦντα τούτους ἔθνη μικρά. πρὸς δὲ τοῖς ὄρεσιν οἱ ἐν αὐτοῖς τοῖς ὄρεσι παρθυαῖοι, καὶ μῆδοι καὶ ἀρμένιοι. καὶ τὰ τούτοις πρόσχω-

ρα ἔθνη καὶ ἡ μεσοποταμία. μετὰ δὲ τὴν μεσοποταμίαν τὰ ἐντὸς εὐφράτου. ταῦτα δ' ἐστὶν ἥ-
τε εὐδαίμων ἀραβία πᾶσα. ἀφοριζομένη τῷ τε ἀραβίῳ κόλπῳ παντὶ, καὶ τῷ περσικῷ. καὶ ὅ-
σην οἱ σκηνῖται καὶ οἱ φύλαρχοι κατέχουσιν οἱ ἐπὶ τὸν εὐφράτην καθήκοντες καὶ τὴν συρίαν. εἶθ' οἱ
πέραν τοῦ ἀραβίου κόλπου μέχρι τοῦ νείλου, αἰθίοπές τε καὶ ἄραβες, καὶ οἱ μετ' αὐτοὺς αἰγύπτιοι καὶ
σύροι καὶ κίλικες. οἵ τε ἄλλοι, καὶ οἱ τραχειῶται λεγόμενοι. τελευταῖοι δὲ παμφύλιοι. μετὰ δὲ τὴν ἀσίαν
ἐστὶν ἡ λιβύη. συνεχὴς οὖσα τῇ τε αἰγύπτῳ καὶ τῇ αἰθιοπίᾳ. τὴν μὲν καθ' ἡμᾶς ἠϊόνα, ἐπ' εὐθείας ἔχου-
σα σχεδόν τι μέχρι στηλῶν ἀπὸ ἀλεξανδρείας ἀρξαμένην, πλὴν τῶν σύρτεων. καὶ εἴπου τις ἄλλη κόλ-
πων ἐπιστροφὴ μετρία. καὶ τῶν ταύτῃ ποιούντων ἀκρωτηρίων ἐξοχή. τὴν δὲ παρωκεανῖτιν ἀπὸ τῆς
αἰθιοπίας μέχρι τινὸς, ὡς ἂν παράλληλοι οὖσαι τῇ προτέρᾳ. μετὰ δὲ ταῦτα συναγομένην ἀπὸ τῶν
νοτίων μερῶν, εἰς ὀξεῖαν ἄκραν. μικρὸν ἔξω στηλῶν προπεπτωκυῖαν. καὶ ποιοῦσαν τραπέζιόν πως τὸ σχῆ-
μα. ἔστι δ' ὥσπερ οἵ τε ἄλλοι δηλοῦσι, καὶ δὴ καὶ γναῖος πείσων ἡγεμὼν γενόμενος τῆς χώρας διηγεῖ-
το ἡμῖν ἐοικυῖα παρδαλῇ. κατάστικτος γάρ ἐστι ταῖς οἰκήσεσι περιεχομέναις ἐρήμῳ καὶ ἀνύδρῳ γῇ. κα-
λοῦσι τε τὰς τοιαύτας οἰκήσεις αὐάσεις οἱ αἰγύπτιοι. τοιαύτη δὲ οὖσα ἔχει τινὰς ἄλλας διαφορὰς τρι-
χῆ διαιρουμένας. τῆς μὲν γὰρ καθ' ἡμᾶς παραλίας, εὐδαίμων ἐστὶν ἡ πλείστη σφόδρα. καὶ μάλιστα ἡ
κυρηναία, καὶ ἡ περὶ καρχηδόνα. μέχρι μαυρουσίων καὶ τῶν ἡρακλείων στηλῶν. οἰκεῖται δὲ μετρίως, καὶ
ἡ παρωκεανῖτις. ἡ δὲ μέση φαύλως, ἡ τὸ ἄλφιον φέρουσα, ἔρημος ἡ πλείστη καὶ τραχεῖα καὶ ἀμμώ-
δης. τὸ δ' αὐτὸ πέπονθε, καὶ τῆς ἀσίας ἡ ἐπ' εὐθείας ταύτῃ. διά τε τῆς αἰθιοπίας διήκουσα. τῆς τε τρω-
γλοδυτικῆς καὶ τῆς ἀραβίας, καὶ τῆς γεδρωσίας τῆς τῶν ἰχθυοφάγων. νέμεται δ' ἔθνη τὴν λιβύην
τὰ πλεῖστα ἄγνωστα. οὐ πολλοῖς γὰρ ἐφοδεύεσθαι συμβαίνει στρατοπέδοις. οὐδ' ἀλλοφύλοις ἀνδρά-
σιν, οἱ δ' ἐπιχώριοι, καὶ ὀλίγοι παρ' ἡμᾶς ἀφικνοῦνται οἱ πόρρωθεν. καὶ οὐ πιστὰ οὐδὲ πάντα λέγου-
σιν. ὅμως δ' οὖν τὰ λεγόμενα τοιαῦτά εἰσι. τοὺς μὲν μεσημβρινωτάτους, αἰθίοπας προσαγορεύου-
σι. τοὺς δ' ὑπὸ τούτοις τοὺς πλείστους, γαράμαντας καὶ μαυρουσίους καὶ νιγρίτας. τοὺς δ' ἔτι ὑπὸ τού-
τους, γαιτούλους. τοὺς δὲ τῆς θαλάττης ἐγγὺς ἢ καὶ ἁπτομένους αὐτῆς, πρὸς αἰγύπτῳ μὲν μαρμαρί-
δας, μέχρι τῆς κυρηναίας. ὑπὲρ δὲ ταύτης καὶ τῶν σύρτεων ψύλλους καὶ νασαμῶνας. καὶ τῶν γαι-
τούλων τινάς. εἶτα σίντας καὶ βυζακίους, μέχρι τῆς καρχηδονίας. πολλὴ δ' ἐστὶν ἡ καρχηδονία. συνά-
πτουσι δ' οἱ νομάδες αὐτῇ. τούτων δὲ τοὺς γνωριμωτάτους, τοὺς μὲν, μασυλιεῖς. τοὺς δὲ, μασαισυλί-
ους προσαγορεύουσιν. ὕστατοι δ' εἰσὶ μαυρούσιοι. πᾶσα δ' ἡ ἀπὸ καρχηδόνος μέχρι στηλῶν, ἔστιν εὐδαίμων.
θηριοτρόφος δὲ, ὥσπερ καὶ ἡ μεσόγαια πᾶσα. οὐκ ἀπεικὸς δὲ καὶ νομάδας λεχθῆναι τινὰς ἐξ αὐτῶν.
οὐ δυναμένους γεωργεῖν, διὰ τὸ πλῆθος τῶν θηρίων τὸ παλαιόν. οἱ δὲ νῦν ἅμα τῇ ἐμπειρίᾳ τῆς θήρας
διαφέροντες καὶ τῶν ῥωμαίων προσλαμβανόντων πρὸς τοῦτο διὰ τὴν σπουδὴν τὴν περὶ τὰς θη-
ριομαχίας, ἀμφοτέρων περιγίνονται. καὶ τῶν θηρίων καὶ τῆς γεωργίας. τοσαῦτα καὶ περὶ τῶν ἠ-
πείρων λέγομεν. Λοιπὸν εἰπεῖν περὶ τῶν κλιμάτων. ὅπερ καὶ αὐτὸ ἔχει καθολικὴν ὑποτύπωσιν.
ὁρμηθεῖσιν ἐκ τῶν γραμμῶν ἐκείνων, ἃ στοιχεῖα ἐκαλέσαμεν. λέγω δὲ τῆς τε τὸ μῆκος ἀφοριζούσης τὸ μέ-
γιστον, καὶ τῆς τὸ πλάτος. μάλιστα δὲ τῆς τὸ πλάτος. τοῖς μὲν οὖν ἀστρονομικοῖς ἐπὶ πλέον τοῦτο ποιη-
τέον καθάπερ ἵππαρχος ἐποίησεν. ἀνέγραψε γὰρ ὡς αὐτός φησι τὰς γιγνομένας ἐν τοῖς οὐρανίοις δια-
φορὰς καθ' ἕκαστον τῆς γῆς τόπον τῶν ἐν τῇ καθ' ἡμᾶς τεταρτημορίων τεταγμένων. λέγω δὲ τὸν ἀπὸ τοῦ
ἰσημερινοῦ μέχρι τοῦ βορείου πόλου. τοῖς δὲ γεωγραφοῦσιν οὔτε τῶν ἔξω τῆς καθ' ἡμᾶς οἰκουμένης φρον-
τιστέον. οὔτ' ἐν αὐτοῖς τοῖς τῆς οἰκουμένης μέρεσι, τὰς τοιαύτας καὶ τοσαύτας διαφορὰς παραδεκτέον
τῷ πολιτικῷ. περισκελεῖς γάρ εἰσιν. ἀλλ' ἀρκεῖ τὰς σημειώδεις καὶ ἁπλουστέρας ἐκθέσθαι τῶν ὑπ' αὐ-
τοῦ λεχθεισῶν. ὑποθεμένοις ὥσπερ ἐκεῖνος εἶναι τὸ μέγεθος τῆς γῆς σταδίων εἴκοσι πέντε μυριάδων.
καὶ δισχιλίων ὡς καὶ ἐρατοσθένης ἀποδίδωσιν. οὐ μεγάλη γὰρ παρὰ τοῦτ' ἔσται διαφορὰ πρὸς τὰ φαι-
νόμενα ἐν τοῖς μεταξὺ τῶν οἰκήσεων διαστήμασιν. εἰ δή τις εἰς τριακόσια ἑξήκοντα τμήματα τέμοι τὸν μέ-
γιστον τῆς γῆς κύκλον, ἔσται ἑπτακοσίων σταδίων ἕκαστον τῶν τμημάτων. τούτῳ δὴ χρῆται μέτρῳ πρὸς τὰ
διαστήματα ἐν τῷ λεχθέντι διὰ μερόης, μεσημβρινῷ λαμβάνεσθαι μέλλοντι. ἐκεῖνος μὲν δὴ ἄρχεται, ἀ-
πὸ τῶν ἐν τῷ μεσημβρινῷ οἰκούντων. καὶ λοιπὸν ἀεὶ δι' ἑπτακοσίων σταδίων τὰς ἐφεξῆς οἰκήσεις ἐπιὼν
κατὰ τὸν λεχθέντα μεσημβρινὸν, πειρᾶται λέγειν τὰ παρ' ἑκάστοις φαινόμενα. ἡμῖν δ' αὖ ἐντεῦθεν
ἀρκτέον. καὶ γὰρ οἰκήσιμα καὶ ταῦτά ἐστιν εἰ ὥσπερ οἴονταί τινες. ἰδία γέ τις οἰκουμένη αὕτη ἐστὶ διὰ
μέσης τῆς ἀοικήτου διὰ καῦμα, στενὴ τεταμένη. οὐκ οὖσα μέρος τῆς καθ' ἡμᾶς οἰκουμένης. ὁ δὲ γεωγρά-
φος ἐπισκοπεῖ ταύτην μόνην τὴν καθ' ἡμᾶς οἰκουμένην. αὕτη δ' ἀφορίζεται πέρασι. νοτίῳ μὲν, τῷ διὰ
τῆς κινναμωμοφόρου παραλλήλῳ. βορείῳ δὲ τῷ διὰ τῆς ἰέρνης. οὔτε δὴ τὰς τοσαύτας οἰκήσεις ἐπιτέον
ὅσας ὑπαγορεύει τὸ μεταξὺ λεχθὲν μεταξὺ διάστημα, οὔτε πάντα τὰ φαινόμενα θετέον. μεμνημένοις τοῦ
γεωγραφικοῦ σχήματος. ἀρκτέον δ' ὥσπερ ἵππαρχος ἀπὸ τῶν νοτίων μερῶν. φησὶ δὴ τοῖς οἰκοῦσιν ἐπὶ τοῦ
διὰ τῆς κινναμωμοφόρου παραλλήλῳ ὃς ἀπέχει τῆς μερόης τρισχιλίους σταδίους πρὸς νότον. τούτου δ' ὁ ἰση-
μερινὸς ὀκτακισχιλίους καὶ ὀκτακοσίους, εἶναι τὴν οἴκησιν ἐγγυτάτω, μέσην τοῦ τε ἰσημερινοῦ καὶ τοῦ θερινοῦ τρο-

κοῦ τῆς κατὰ συήνην, ἀπέχειν γὰρ τὴν συήνην πεντακισχιλίους τῆς μερόης. παρὰ δὲ τούτοις πρώτοις τὴν μικρὰν ἄρκτον ὅλην ἐν τῷ ἀρκτικῷ περιέχεσθαι, καὶ ἀεὶ φαίνεσθαι. τὸν γὰρ ἐπ᾽ ἄκρας τῆς οὐρᾶς λαμπρὸν ἀστέρα, νοτιώτατον ὄντα ἐπ᾽ αὐτοῦ ἱδρύσθαι τοῦ ἀρκτικοῦ κύκλου, ὥστ᾽ ἐφάπτεσθαι τοῦ ὁρίζοντος. τῷ δὲ λεχθέντι μεσημβρινῷ, παράλληλός πως παράκειται ἔωθεν, ὁ ἀράβιος κόλπος. τούτου δ᾽ ἔκβασις εἰς τὸ ἔξω πέλαγος, ἡ κινναμωμοφόρος ἐστίν. ἐφ᾽ ἧς ἡ ἐλεφάντων γέγονε θήρα τὸ παλαιόν. ἐκπίπτει δ᾽ ὁ παράλληλος οὗτος, τῇ μὲν ἐπὶ τοὺς νοτιωτέρους, μικρὸν τῆς ταπροβάνης, ἢ ἐπὶ τοὺς ἐσχάτους οἰκοῦντας. τῇ δ᾽ ἐπὶ τὰ νοτιώτατα, τῆς λιβύης. τοῖς δὲ κατὰ μερόην καὶ πτολεμαΐδα, τὴν ἐν τῇ τρωγλοδυτικῇ, ἡ μεγίστη ἡμέρα ὡρῶν ἰσημερινῶν ἐστι τρεισκαίδεκα. ἔστι δ᾽ αὕτη ἡ οἴκησις μέση πως τοῦ τε ἰσημερινοῦ καὶ τοῦ δι᾽ ἀλεξανδρείας, παρὰ χιλίους καὶ ἑκατόν. τοὺς πλεονάζοντας πρὸς τῷ ἰσημερινῷ. διήκει δ᾽ ὁ διὰ μερόης παράλληλος, τῇ μὲν, διὰ γνωρίμων μερῶν. τῇ δὲ, διὰ τῶν ἄκρων τῆς ἰνδικῆς. ἐν δὲ συήνῃ καὶ βερενίκῃ τῇ ἐν τῷ ἀραβίῳ κόλπῳ, καὶ τῇ τρωγλοδυτικῇ, κατὰ θερινὰς τροπὰς ὁ ἥλιος κατὰ κορυφῆς γίγνεται. ἡ δὲ μακροτάτη ἡμέρα, ὡρῶν ἰσημερινῶν ἐστι τρεισκαίδεκα καὶ ἡμισείου. ἐν δὲ τῷ ἀρκτικῷ φαίνεται καὶ ἡ μεγάλη ἄρκτος ὅλη σχεδόν τι πλὴν τῶν σκελῶν καὶ τοῦ ἄκρου τῆς οὐρᾶς, καὶ ἑνὸς τῶν ἐν τῷ πλινθίῳ ἀστέρων. ὁ δὲ διὰ συήνης παράλληλος, τῇ μὲν διὰ τῆς τῶν ἰχθυοφάγων τῶν κατὰ τὴν γεδρωσίαν καὶ τῆς ἰνδικῆς διήκει. τῇ δὲ, διὰ τῶν νοτιωτέρων, κυρήνης μὲν πεντακισχιλίοις σταδίοις παρὰ μικρόν. ἅπασι δὲ τοῖς μεταξὺ κειμένοις τοῦ τε τροπικοῦ καὶ τοῦ ἰσημερινοῦ κύκλου. μεταπίπτουσιν αἱ σκιαὶ ἐφ᾽ ἑκάτερα, πρός τε ἄρκτους καὶ μεσημβρίαν. τοῖς δ᾽ ἀπὸ συήνης ἐκ τοῦ θερινοῦ τροπικοῦ πρὸς ἄρκτους πίπτουσιν αἱ σκιαὶ κατὰ μεσημβρίαν. καλοῦνται δ᾽ οἱ μὲν, ἀμφίσκιοι, οἱ δ᾽ ἑτερόσκιοι. ἔστι δέ τις καὶ ἄλλη διαφορὰ τοῖς ὑπὸ τῷ τροπικῷ, ἣν προείπομεν ἐν τῷ περὶ τῶν ζωνῶν λόγῳ. αὐτή τε γάρ ἐστιν ἡ διάμμος, καὶ σιλφιοφόρος, καὶ ξηρὰ τῶν νοτιωτέρων μερῶν. ἀνύδρων τε καὶ ἀκάρπων ὄντων. ἐν δὲ τοῖς δι᾽ ἀλεξανδρείας, καὶ κυρήνης νοτιωτέροις ὅσον τετρακοσίοις σταδίοις. ὅπου, ἡ μεγίστη ἡμέρα ὡρῶν ἐστιν ἰσημερινῶν δεκατεσσάρων, κατὰ κορυφὴν γίνεται ὁ ἀρκτοῦρος, μικρὸν ἐκκλίνων πρὸς νότον. ἐν δὲ τῇ ἀλεξανδρείᾳ ὁ γνώμων λόγον ἔχει πρὸς τὴν ἰσημερινὴν σκιὰν, ὃν ἔχει τὰ πέντε πρὸς ἑπτά. καρχηδόνος δὲ νοτιώτεροι εἰσὶ χιλίοις καὶ τριακοσίοις σταδίοις. καὶ ἀλεξανδρείας δὲ νοτιώτεροι. εἴπερ ἐν καρχηδόνι ὁ γνώμων λόγον ἔχει πρὸς τὴν ἰσημερινὴν σκιὰν, ὃν ἔχει τὰ ἕνδεκα πρὸς τὰ ἑπτά. διήκει δ᾽ ὁ παράλληλος οὗτος, τῇ μὲν διὰ κυρήνης καὶ τῶν νοτιωτέρων καρχηδόνος, ἐνακοσίοις σταδίοις, μέχρι μαυρουσίας μέσης. τῇ δὲ δι᾽ αἰγύπτου καὶ κοίλης συρίας καὶ τῆς ἄνω συρίας, καὶ βαβυλῶνος, καὶ σουσιάδος. περσίδος, καρμανίας. γεδρωσίας τῆς ἄνω, μέχρι τῆς ἰνδικῆς. ἐν δὲ τοῖς περὶ πτολεμαΐδα τὴν ἐν τῇ φοινίκῃ καὶ σιδόνα, καὶ τύρον, ἡ μεγίστη ἡμέρα ἐστὶν ὡρῶν ἰσημερινῶν δεκατεσσάρων καὶ τετάρτου. βορειότεροι δ᾽ εἰσὶν οὗτοι ἀλεξανδρείας μὲν, ὡς χιλίοις ἑξακοσίοις σταδίοις. καρχηδόνος δὲ ὡς ἑπτακοσίοις. ἐν δὲ τῇ πελοποννήσῳ καὶ περὶ τὰ μέσα τῆς ῥοδίας καὶ περὶ ξάνθον τῆς λυκίας, ἢ τὰ μικρῷ νοτιώτερα, καὶ ἔτι τὰ συρακουσίων νοτιώτερα τετρακοσίοις σταδίοις. ἐνταῦθα ἡ μεγίστη ἡμέρα ἐστὶν, ὡρῶν ἰσημερινῶν δεκατεττάρων καὶ ἡμίσους. ἀπέχουσι δ᾽ οἱ τόποι οὗτοι ἀλεξανδρείας μὲν, τρισχιλίους ἑξακοσίους τεσσαράκοντα. διήκει δ᾽ ὁ παράλληλος οὗτος κατ᾽ ἐρατοσθένην διὰ καρίας λυκαονίας καταονίας μηδείας κασπίων πυλῶν, ἰνδῶν τῶν κατὰ καύκασον. ἐν δὲ τοῖς περὶ ἀλεξάνδρειαν μέρεσι τῆς τρωάδος κατ᾽ ἀμφίπολιν καὶ ἀπολλωνίαν τὴν ἐν ἠπείρῳ. καὶ τοὺς ῥώμης μὲν νοτιωτέρους βορειοτέρους δὲ νεαπόλεως ἡ μεγίστη ἡμέρα ἐστὶν ὡρῶν ἰσημερινῶν δεκαπέντε. ἀπέχει δὲ ὁ παράλληλος οὗτος τὰ μὲν δι᾽ ἀλεξανδρείας τῆς πρὸς αἰγύπτῳ ὡς ἑπτακισχιλίους σταδίους πρὸς ἄρκτον. τοῦ ἰσημερινοῦ ὑπὲρ δυσμυρίους ὀκτακισχιλίους ὀκτακοσίους. τοῦ δὲ διὰ ῥόδου τρισχιλίους τετρακοσίους. πρὸς νότον δὲ βυζαντίου καὶ νικαίας καὶ τῶν περὶ μασσαλίαν, χιλίους πεντακοσίους. μικρὸν δ᾽ ἀρκτικώτερος ἐστὶν ὁ διὰ λυσιμαχίας. ὅν φησιν ἐρατοσθένης διὰ μυσίας εἶναι καὶ παφλαγονίας, καὶ τῶν περὶ σινώπην καὶ ὑρκανίαν, καὶ βάκτρα. ἐν δὲ τοῖς περὶ τὸ βυζάντιον ἡ μεγίστη ἡμέρα ὡρῶν ἐστιν ἰσημερινῶν δεκαπέντε καὶ τετάρτου. ὁ δὲ γνώμων πρὸς τὴν σκιὰν λόγον ἔχει ἐν τῇ θερινῇ τροπῇ ὃν, τὰ ἑκατὸν εἴκοσι πρὸς τεσσαράκοντα δύο λείποντα πέμπτῳ. ἀπέχουσι δ᾽ οἱ τόποι οὗτοι τοῦ διὰ μέσης τῆς ῥοδίας περὶ τετρακισχιλίους καὶ ἐνακοσίους. τοῦ δ᾽ ἰσημερινοῦ ὡς τρισμυρίους τριακοσίους. εἰσπλεύσασι δὲ εἰς τὸν πόντον, καὶ προελθοῦσιν ἐπὶ τὰς ἄρκτους ὅσον χιλίους, καὶ τετρακοσίους, ἡ μεγίστη ἡμέρα γίνεται ὡρῶν ἰσημερινῶν δεκαπέντε, καὶ ἡμίσους. ἀπέχουσι δ᾽ οἱ τόποι οὗτοι ἴσον ἀπό τε τοῦ πόλου, καὶ τοῦ ἰσημερινοῦ κύκλου. καὶ ὁ ἀρκτικὸς κύκλος κατὰ κορυφὴν αὐτοῖς ἐστιν. ἐφ᾽ οὗ κεῖται ὅ τε ἐν τῷ τραχήλῳ τῆς κασσιεπείας. καὶ ὁ ἐν τῷ δεξιῷ ἀγκῶνι τοῦ περσέως μικρῷ βορειότερος ὤν. ἔν τε τοῖς ἀπέχουσι βυζαντίου πρὸς ἄρκτον, ὅσον τρισχιλίους ὀκτακοσίους. ἡ μεγίστη ἡμέρα ἐστὶν ὡρῶν ἰσημερινῶν δεκαέξ. ἡ οὖν δὴ κασσιέπεια, ἐν τῷ ἀρκτικῷ φέρεται. εἰσὶ δ᾽ οἱ τόποι οὗτοι περὶ βορυσθένη καὶ τῆς μαιώτιδος τὰ νότια. ἀπέχουσι δὲ τοῦ ἰσημερινοῦ, περὶ τρισμυρίους τετρακισχιλίους ἑκατόν. ὁ δὲ κατὰ τὰς ἄρκτους τόπος τοῦ ὁρίζοντος ἐν ὅλαις σχεδόν τι ταῖς θεριναῖς νυ-

ξὶ παραυγάζεται ὑπὸ τοῦ ἡλίου ἀπὸ δύσεως ἕως καὶ ἀνατολῆς αὐτῇ περιισταμένου τοῦ φωτός. ὁ
γὰρ θερινὸς τροπικὸς, ἀπέχει ἀπὸ τοῦ ὁρίζοντος ἑνὸς ζῳδίου. ἥμισυ καὶ δωδέκατον. τοσοῦτον οὖν
καὶ ὁ ἥλιος ἀφίσταται τοῦ ὁρίζοντος κατὰ τὸ μέσον νύκτιον. καὶ παρ' ἡμῖν δὲ τοσοῦτον τοῦ ὁρίζον/
τος ἀποσχὼν, πρὸ τοῦ ὄρθρου καὶ μετὰ τὴν ἑσπέραν ἤδη καταυγάζει τὸν περὶ τὴν ἀνατολὴν ἢ τὴν δύσιν
ἀέρα. ἐν δὲ ταῖς χειμεριναῖς, ἡμέραις ὁ ἥλιος τὸ πλεῖστον μετεωρίζεται πήχεις ἐννέα. φησὶ δ' ἐρατοσθέ/
νης τούς τῆς μερόης διέχειν μικρῷ πλείους, ἢ δισμυρίους τετραχιλίους. δεῖ γὰρ ἑλλησπόντου εἶναι μυ/
ρίους ὀκτακισχιλίους. εἶτα πεντακισχιλίους. εἰς βορυσθένη. οἱ δὲ τοῖς ἀπέχουσι τοῦ βυζαντίου, σταδίους
περὶ ἑξακισχιλίους τριακοσίους, βορειοτέροις οὖσι τῆς μαιώτιδος, κατὰ τὰς χειμερινὰς ἡμέρας μετεω
ρίζεται τὸ πλεῖστον ὁ ἥλιος, ἐπὶ πήχεις ἕξ. ἡ δὲ μεγίστη ἡμέρα ἐστὶν ὡρῶν δεκαεπτά. τὰ δ' ἐπέκεινα ἤδη
πλησιάζοντα τῇ ἀοικήτῳ διὰ ψῦχος, οὐκέτι χρήσιμα τῷ γεωγράφῳ ἐστίν. ὁ δὲ βουλόμενος καὶ ταῦ
τα μαθεῖν, καὶ ὅσα ἄλλα τῶν οὐρανίων, ἵππαρχος μὲν εἴρηκεν. ἡμεῖς δὲ παραλείπομεν διὰ τὸ σαφέ/
στερα εἶναι τῆς νῦν προκειμένης πραγματείας, παρ' ἐκείνου λαμβανέτω, φανώτερα δ' ἐστὶ καὶ τὰ
περὶ τῶν περισκίων καὶ ἀμφισκίων καὶ ἑτεροσκίων ἅ φησι ποσειδώνιος, ὅμως γε καὶ τούτων, τό γε
τοσοῦτον, ἐπιμνηστέον ὥστε τὴν ἐπίνοιαν διασαφῆσαι, καὶ τῇ χρήσιμον πρὸς τὴν γεωγραφίαν καὶ τῇ
ἄχρηστον. ἐπεὶ δὲ περὶ τῶν ἀφ' ἡλίου σκιῶν ὁ λόγος ἐστίν, ὁ δ' ἥλιος πρὸς αἴσθησιν κατὰ παραλλήλου φέ/
ρεται καθ' οὗ καὶ ὁ κόσμος, παρ' οἷς καθ' ἑκάστην κόσμου περιστροφὴν ἡμέρα γίνεται καὶ νύξ. ὅτε μὲν
ὑπὸ γῆς τοῦ ἡλίου φερομένου, ὅτε δ' ὑπὸ γῆν παρὰ τούτοις, οἵ τε ἀμφίσκιοι ἐπινοοῦνται καὶ οἱ ἑ/
τερόσκιοι. ἀμφίσκιοι μὲν, ὅσοι κατὰ μέσον ἡμέρας, τότε μὲν, ἐπὶ τάδε πιπτούσας ἔχουσι τὰς σκι
ὰς, ὅταν ὁ ἥλιος ἀπὸ μεσημβρίας τῷ γνώμονι προσπίπτῃ τῷ ὀρθῷ, πρὸς τὸ ὑποκείμενον ἐπίπεδον.
τότε δ' εἰς τοὐναντίον. ὅταν ὁ ἥλιος εἰς τοὐναντίον περιστῇ. τοῦτο δὲ συμβέβηκε μόνοις τοῖς μεταξὺ τῶν
τροπικῶν οἰκοῦσιν. ἑτερόσκιοι δ' ὅσοις ἢ ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἀεὶ πίπτουσιν ὡς ὑπὸ ἡμῖν. ἢ ἐπὶ τὰ νότια.
ὡς ὑπὸ τοῖς ἐν τῇ ἑτέρᾳ εὐκράτῳ ζώνῃ οἰκοῦσι. τοῦτο δὲ συμβαίνει πᾶσι τοῖς ἐλάττονα ἔχουσι τοῦ τρο/
πικοῦ τὸν ἀρκτικόν. ὅταν δὲ τὸν αὐτὸν, ἢ μείζονα, ἀρχὴ τῶν περισκίων ἐστί, μέχρι τῶν οἰκούντων ὑπὸ
τῷ πόλῳ. τοῦ γὰρ ἡλίου καθ' ὅλην τὴν τοῦ κόσμου περιστροφὴν ὑπὲρ γῆς φερομέ/
νου, δηλονότι, καὶ ἡ σκιὰ κύκλῳ περιενεχθήσεται περὶ τὸν γνώμονα. καθ' ὃ δὴ
καὶ περισκίους αὐτοὺς ἐκάλεσεν. οὐδὲν ὄντας πρὸς τὴν γεωγραφίαν.
οὐ γάρ ἐστιν οἰκήσιμα ταῦτα τὰ μέρη διὰ ψῦχος ὡς ὑπὸ ἐν τοῖς πρὸς
πυθέαν λόγοις εἰρήκαμεν ὥστ' οὐδὲ τοῦ μεγέθους τῆς ἀοικήτου ταύ
της φροντιστέον ἐκ τοῦ λαβεῖν, ὅτι ἔχοντες ἀρκτικὸν τὸν
τροπικὸν, ὑποπεπτώκασι τῷ γραφομένῳ κύκλῳ
ὑπὸ τοῦ πόλου τοῦ ζῳδιακοῦ, κατὰ τὴν τοῦ
κόσμου περιστροφήν. ὑποκειμέ/
νου τοῦ μεταξὺ διαστήματος,
τοῦ τε ἰσημερινοῦ καὶ τοῦ
τροπικοῦ, τεττάρων ἑ
ξηκοστῶν τοῦ
μεγί/
στου κύκλου.

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ

## ΒΙΒΛΙΟΝ ΤΡΙΤΟΝ

Ἀποδεδωκόσι δ' ἡμῖν τὸν πρῶτον τύπον τῆς γεωγραφίας, οἰκεῖός ἐστιν ὁ ἐφεξῆς λόγος περὶ τῶν καθ' ἕκαστα. καὶ γὰρ ὑπεσχόμεθα οὕτως. καὶ δοκεῖ μέχρι νῦν ὀρθῶς ἡ πραγματεία μεμερίσθαι. ἀρκτέον δὲ πάλιν ἀπὸ τῆς εὐρώπης, καὶ τῶν μερῶν αὐτῆς τούτων, ἀφ' ὧνπερ καὶ πρότερον κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. πρῶτον δὲ μέρος αὐτῆς ἐστι τὸ ἑσπέριον ὡς ἔφαμεν ἡ ἰβηρία. ταύτης δὴ τὸ μὲν πλέον, οἰκεῖται φαύλως. ὄρη γὰρ καὶ δρυμοὺς καὶ πεδία λεπτὴν ἔχοντα γῆν, οὐδὲ ταύτην ὁμαλῶς εὔυδρον οἰκοῦσι τὴν πολλήν. ἡ δὲ πρόσβορος, ψυχρά τ' ἐστὶ τελέως πρὸς τῇ τραχύτητι, καὶ παρωκεανῖτις. προσειληφυῖα τὸ ἄμικτον καὶ ἀνεπίπλεκτον τοῖς ἄλλοις. ὥσθ' ὑπερβάλλει τῇ μοχθηρίᾳ τῆς οἰκήσεως. ταῦτα μὲν δὴ τὰ μέρη τοιαῦτα. ἡ δὲ νότιος πᾶσα, εὐδαίμων σχεδόν τι, καὶ διαφερόντως ἡ ἔξω στηλῶν. ἔσται δὲ δῆλον, ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα. ὑπογράψασιν ἡμῖν πρότερον τό τε σχῆμα, καὶ τὸ μέγεθος. ἔοικε τ' βύρσῃ κατὰ μὲν μῆκος ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω. τὰ πρόσθια ἐχούσῃ μέρη πρὸς τὴν ἕω, καὶ τὰ πλάτος δ' ἀπὸ τῶν ἄρκτων πρὸς νότον. ἔχει δὲ σταδίων ἑξακισχιλίων ὅμου τὸ μῆκος. πλάτος δὲ πεντακισχιλίων. τὸ μέγιστον. ἔστι δ' ὅπου πολὺ ἔλαττον τῶν τρισχιλίων, καὶ μάλιστα πρὸς τῇ πυρήνῃ τῇ ποιούσῃ τὴν ἑῴαν πλευράν. ὄρος γὰρ διηνεκὲς ἀπὸ νότου πρὸς βορρᾶν τεταμένον. ὁρίζει τὴν κελτικὴν ἀπὸ τῆς ἰβηρίας. οὔσης δὲ καὶ τῆς κελτικῆς ἀνωμάλου τὸ πλάτος, καὶ τῆς ἰβηρίας. τὸ δὲ στενώτατον τοῦ πλάτους ἑκατέρας ἀπὸ τῆς ἡμετέρας θαλάττης ἐπὶ τὸν ὠκεανόν ἐστι, τὸ τῇ πυρήνῃ πλησιάζον μάλιστα ἐφ' ἑκάτερον αὐτῆς τὸ μέρος καὶ ποιοῦν κόλπους. τοὺς μὲν, ἐπὶ τῷ ὠκεανῷ, τοὺς δὲ, ἐπὶ τῇ καθ' ἡμᾶς θαλάττῃ. μείζους δὲ τοὺς κελτικούς. οὓς δὴ καὶ γαλατικοὺς καλοῦσι. στενώτερον τὸν ἰσθμὸν ποιοῦντας παρὰ τὸν ἰβηρικόν. καὶ δὴ τὸ μὲν ἑῷον πλευρὸν τῆς ἰβηρίας, ἡ πυρήνη ποιεῖ. τὸ δὲ, νότιον, ἥ τε καθ' ἡμᾶς θάλαττα, ἀπὸ τῆς πυρήνης μέχρι στηλῶν, καὶ ἡ ἐκτὸς τὸ ἑξῆς, μέχρι τοῦ ἱεροῦ καλουμένου ἀκρωτηρίου. τρίτον ἐστὶ τὸ ἑσπέριον πλευρὸν, παράλληλόν πως τῇ πυρήνῃ, τὸ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ ἀκρωτηρίου μέχρι τῆς πρὸς ἀρτάβροις ἄκρας ἣν καλοῦσι νέριον. τέταρτον δὲ τὸ ἐνθένδε, μέχρι τῶν βορείων ἄκρων τῆς πυρήνης. ἀναλαβόντες δὲ λέγωμεν τὰ καθ' ἕκαστα, ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ ἀκρωτηρίου ἀρξάμενοι. τοῦτο δ' ἐστὶ δυτικώτατον, οὐ τῆς εὐρώπης μόνον ἀλλὰ καὶ τῆς οἰκουμένης ἁπάσης σημεῖον. περατοῦται μὲν γὰρ ὑπὸ τῶν δυεῖν ἠπείρων ἡ οἰκουμένη πρὸς δύσιν. τοῖς τε τῆς εὐρώπης ἄκροις, καὶ τοῖς πρώτοις τῆς λιβύης. ὧν τὰ μὲν, ἴβηρες ἔχουσι. τὰ δὲ μαυρούσιοι. προύχει δὲ τὰ ἰβηρικὰ ὅσον χιλίοις, καὶ πεντακοσίοις σταδίοις κατὰ τὸ λεχθὲν ἀκρωτήριον. καὶ δὴ καὶ τὴν προσεχῆ τούτῳ χώραν. τῇ λατίνῃ φωνῇ καλοῦσι κούνεον. σφῆνα σημαίνειν βουλόμενοι. αὐτὸ δὲ τὸ ἄκρον καὶ προπεπτωκὸς εἰς τὴν θάλατταν, ἀρτεμίδωρος εἰκάζει πλοίῳ γενόμενος φησὶν ἐν τῷ τόπῳ. προσλαμβάνειν δὲ τῷ σχήματι, νησίδια τρία. τὸ μὲν, ἐμβόλου τάξιν ἔχον. τὰ δὲ ἐπωτίδων. ἐφόρμους ἔχοντα μετρίους. ἡρακλέους δ' ἱερὸν ἐνταῦθα δείκνυσθαι. ψεύσασθαι δὲ τοῦτ' ἔφορον. οὔτε γὰρ ἡρακλέους βωμὸν, οὔτ' ἄλλου τῶν θεῶν εἶναι, ἀλλὰ λίθους, συγκεῖσθαι τρεῖς ἢ τέτταρας κατὰ πολλοὺς τόπους. οὓς ὑπὸ τῶν ἀφικνουμένων στρέφεσθαι κατά τι πάτριον, καὶ μεταφέρεσθαι ψευδοποιησαμένων. θύειν δ' οὐκ εἶναι νόμιμον. οὐδὲ νύκτωρ ἐπιβαίνειν τοῦ τόπου, θεοὺς φασκόντων κατέχειν αὐτὸν ἐν τῷ τότε χρόνῳ. ἀλλὰ τοὺς ἐπὶ θέαν ἥκοντας ἐν κώμῃ πλησίον νυκτερεύειν. εἶτ' ἐπιβάλλειν ἡμέρας, ὕδωρ ἐπιφερομένους διὰ τὴν ἀνυδρίαν. ταῦτα μὲν οὖν οὕτως ἔχειν ἐγχωρεῖ. καὶ δεῖ πιστεύειν. ἃ δὲ τοῖς πολλοῖς καὶ χυδαίοις ὁμοίως εἴρηκεν, οὐ πάνυ. λέγειν γὰρ δή φησι ποσειδώνιος τοὺς πολλοὺς μείζω δύνειν τὸν ἥλιον ἐν τῇ παρωκεανίτιδι μετὰ ψόφου παραπλησίως, ὡσανεὶ σίζοντος τοῦ πελάγους κατὰ σβέσιν αὐτοῦ διὰ τὸ ἐμπίπτειν εἰς τὸν βυθόν. ψεῦδος δ' εἶναι καὶ τὸ παραχρῆμα νύκτα ἀκολουθεῖν μετὰ τὴν δύσιν. οὐ γὰρ παραχρῆμα. μικρὸν δ' ὕστερον, καθάπερ, καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις πελάγεσι τοῖς μεγάλοις. ὅπου μὲν γὰρ εἰς ὄρη δύεται, πλείω τὸν μετὰ δύσιν χρόνον τῆς ἡμέρας συμβαίνειν ἐκ τοῦ παραφωτισμοῦ. ἐκεῖ δὲ, πλεῖον μὲν οὐκ ἐπακολουθεῖν. μὴ μέντοι μηδὲ παραχρῆμα συνάπτειν τὸ σκότος. καθάπερ καὶ ἐν τοῖς μεγάλοις πεδίοις. τὴν δὲ τοῦ μεγέθους φαντασίαν, αὔξεσθαι μὲν ὁμοίως κατά τε

τὰς δύσεις καὶ τὰς ἀνατολὰς ἐν τοῖς πελάγεσι, διά τε τὰς ἀναθυμιάσεις πλείους ἐκ τῶν ὑγρῶν ἀναφέ-
ρεσθαι. διὰ δὲ τούτων ὡς δι᾽ ὑάλων κλωμένην τὴν ὄψιν, πλατυτέρας δέχεσθαι τὰς φαντασίας,
καθάπερ καὶ διὰ νέφους ξηροῦ, καὶ λεπτοῦ βλέπουσι, δυόμενον ἢ ἀνατέλλοντα τὸν ἥλιον ἢ τὴν σε-
λήνην, ἡνίκα καὶ ἐνερευθὲς φαίνεσθαι τὸ ἄστρον. τὸ δὲ ψεῦδος ἐλέγξαι φησὶ, τριάκοντα ἡμέρας δια-
τρίψας ἐν γαδείροις, καὶ τηρήσας τὰς δύσεις. ὁ δέ γε ἀρτεμίδωρος, ἑκατονταπλασίονα φησὶ δύε-
σθαι τὸν ἥλιον. καὶ αὐτίκα νύκτα καταλαμβάνειν. ὡς μὲν οὖν αὐτὸς εἶδε τοῦτο ἐν τῷ ἱερῷ ἀκρωτη-
ρίῳ, οὐχ ὑποληπτέον προσέχοντας τῇ ἀποφάσει αὐτοῦ. ἔφη γὰρ μηδένα νύκτωρ ἐπιβαίνειν. ὥστ᾽
οὐδὲ δυομένου ἡλίου οὐδεὶς ἂν ἐπιβαίνοι, ἐπείπερ εὐθὺς ἡ νὺξ καταλαμβάνει, ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ἐν ἄλλῳ τόπῳ
τῆς παρωκεανίτιδος. καὶ γὰρ τὰ γάδειρα ἐπὶ τῷ ὠκεανῷ. καὶ ὁ ποσειδώνιος ἀντιμαρτυρεῖ. καὶ ἄλ-
λοι πλείους. τῆς δὲ συνεχοῦς τῷ ἱερῷ ἀκρωτηρίῳ παραλίας, ἡ μὲν, ἐστὶν ἀρχὴ τοῦ ἑσπερίου πλευ-
ροῦ τῆς ἰβηρίας, μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ τάγου ποταμοῦ. ἡ δὲ τοῦ νοτίου, μέχρι ἄλλου ποταμοῦ, τοῦ ἄ-
να καὶ τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ. φέρεται δ᾽ ἀπὸ τῶν ἑῴων μερῶν ἑκάτερος. ἀλλ᾽ ὁ μὲν, ἐπ᾽ εὐθείας εἰς τὴν
ἑσπέραν ἀποδίδωσι πολὺ μείζων ὢν θατέρου. ὁ δ᾽ ἄνας πρὸς νότον ἐπιστρέφει. τὴν μεσοποταμίαν
ἀφορίζων. ἣν κελτοὶ νέμονται τὸ πλέον, καὶ τῶν λυσιτανῶν τινες, ἐκ τῆς περαίας τοῦ τάγου μετοι-
κισθέντες ὑπὸ ῥωμαίων. ἐν δὲ τοῖς ἄνω μέρεσι, καὶ καρπητανοὶ, καὶ ὠρητανοὶ καὶ οὐεττόνων συχνοὶ
νέμονται. αὕτη μὲν οὖν ἡ χώρα μετρίως ἐστὶν εὐδαίμων. ἡ δ᾽ ἐφεξῆς πρὸς ἕω, κειμένη καὶ νότον, ὑπερ-
βολὴν οὐκ ἀπολείπει πρὸς ἅπασαν κρινομένη τὴν οἰκουμένην. ἀρετῆς χάριν καὶ τῶν ἐκ γῆς καὶ θα-
λάττης ἀγαθῶν. αὕτη δ᾽ ἐστὶν ἣν ὁ βαῖτις διαρρεῖ ποταμός. ἀπὸ τῶν αὐτῶν μερῶν τὴν ἀρχὴν ἔχων
ἀφ᾽ ὧνπερ καὶ ὁ ἄνας καὶ ὁ τάγος. μέσος πως ἀμφοῖν τούτων ὑπάρχων κατὰ μέγεθος. παραπλη-
σίως μέντοι τῷ ἄνᾳ κατ᾽ ἀρχὰς ἐπὶ τὴν ἑσπέραν ῥυεὶς. εἶτ᾽ ἐπιστρέφει πρὸς νότον, καὶ κατὰ τὴν αὐ-
τὴν ἐκδίδωσι τούτῳ παραλίαν. καλοῦσι δ᾽ ἀπὸ μὲν τοῦ ποταμοῦ βαιτικὴν. ἀπὸ δὲ τῶν ἐνοικούντων,
τουρδητανίαν. τοὺς δ᾽ ἐνοικοῦντας τουρδητανούς τε καὶ τουρδούλους προσαγορεύουσι. οἱ μὲν, τοὺς αὐ-
τοὺς νομίζοντες. οἱ δ᾽ ἑτέρους. ὧν ἐστὶ καὶ πολύβιος. συνοικεῖν φήσας τοῖς τουρδητανοῖς πρὸς ἄρκτον, τοὺς
τουρδούλους, νυνὶ δ᾽ ἐν αὐτοῖς οὐδεὶς φαίνεται διορισμός. σοφώτατοι δ᾽ ἐξετάζονται τῶν ἰβήρων
οὗτοι. καὶ γραμματικῇ χρῶνται. καὶ τῆς παλαιᾶς μνήμης ἔχουσι τὰ συγγράμματα, καὶ ποιήματα
καὶ νόμους ἐμμέτρους ἑξακισχιλίων ἐτῶν ὥς φασι. καὶ οἱ ἄλλοι δ᾽ ἴβηρες χρῶνται γραμματικῇ, οὐ μιᾷ ἰδέᾳ οὐ-
δὲ γὰρ γλώττῃ ἰδίᾳ, τείνει δὲ ἡ χώρα αὕτη ἡ ἐντὸς τοῦ ἄνα, πρὸς ἕω μὲν μέχρι τῆς ὠρητανίας. πρὸς νότον δὲ ἀπὸ τῶν
ἐκβολῶν, μέχρι τῆς παραλίας τῆς τοῦ ἄνα, μέχρι στηλῶν. ἀνάγκη δὲ διὰ πλειόνων περὶ αὐτῆς εἰπεῖν καὶ
τῶν σύνεγγυς τόπων, ὅσα συντείνει πρὸς τὸ μαθεῖν τὴν εὐφυΐαν τῶν τόπων, καὶ τὴν εὐδαιμονίαν. τῆς δὲ πα-
ραλίας ταύτης, ἣν ὅ, τε βαῖτις καὶ ἄνας ἐκδίδωσι, καὶ τῶν ἐσχάτων τῆς μαυρουσίας εἰς μεταξὺ ἐμπί-
πτον τὸ ἀτλαντικὸν πέλαγος, ποιεῖ τὸν κατὰ στήλας πορθμὸν καθ᾽ ὃν ἡ ἐντὸς θάλαττα συνάπτει τῇ ἐκ-
τός. ἐνταῦθα δὴ ὄρος ἐστὶ τῶν ἰβήρων τῶν καλουμένων βαστιτανῶν, οὓς καὶ βαστούλους καλοῦσιν ἡ κάλ-
πη. τῇ περιοχῇ μὲν οὖν μέγα. τῷ δ᾽ ὕψει, μέγα, καὶ ὄρθιον. ὥστε πόρρωθεν νησοειδὲς φαίνεσθαι. ἐκ-
πλέουσιν οὖν ἐκ τῆς ἡμετέρας θαλάττης, εἰς τὴν ἔξω δεξιόν ἐστι τοῦτο. καὶ πρὸς αὐτὸ κάλπη πόλις
ἐν τετταράκοντα σταδίοις, ἀξιόλογος καὶ παλαιά. ναύσταθμόν ποτε γενομένη τῶν ἰβήρων. ἔνιοι δὲ καὶ ἡ-
ρακλέους κτίσμα λέγουσιν αὐτὴν. ὧν ἐστὶ καὶ τιμοσθένης. ὅς φησι καὶ ἡρακλέαν ὀνομάζεσθαι τὸ πα-
λαιόν. δείκνυσθαί τε μέγαν περίβολον, καὶ νεωσοίκους. εἶτα μελλαρία. ταριχείας ἔχουσα. καὶ με-
τὰ ταῦτα βελὼν πόλις καὶ ποταμός. ἐντεῦθεν οἱ διάπλοι μάλιστα εἰσὶν εἰς τίγιν τῆς μαυρουσίας,
καὶ ἐμπόρια καὶ ταριχεῖαι. ἦν δὲ, καὶ ζῆλις τῆς τίγγιος ἀστυγείτων. ἀλλὰ μετῴκισαν ταύτην εἰς τὴν
περαίαν ῥωμαῖοι. καὶ ἐκ τῆς τίγγιος προσλαβόντες τινὰς ἔπεμψαν δὲ καὶ παρ᾽ ἑαυτῶν ἐποίκους καὶ ὠνόμασαν
ἰουλίαν ἰοζαν τὴν πόλιν. εἶτα γάδειρα. πορθμῷ στενῷ διειργομένη νῆσος. ἀπὸ τῆς τουρδιτανίας. διέχουσα τῆς
κάλπης περὶ ἑπτακοσίους καὶ πεντήκοντα σταδίους. οἱ δὲ ὀκτακοσίους φασίν. ἔστι δὲ νῆσος αὕτη τἄλλα μὲν οὐθὲν
διαφέρουσα τῶν ἄλλων. ἀνδρεία δὲ τῶν ἐνοικούντων, τῇ περὶ τὰς ναυτιλίας, καὶ φιλίας πρὸς ῥωμαίους,
τοσαύτην ἐπίδοσιν εἰς πᾶσαν εὐτυχίαν ἔσχεν, ὥστε καίπερ ἐσχάτη ἱδρυμένη τῆς γῆς ὀνομαστοτάτη τῶν
ἁπασῶν ἐστιν. ἀλλὰ περὶ μὲν ταύτης ἐροῦμεν ὅταν, καὶ περὶ τῶν ἄλλων νήσων λέγωμεν. ἑξῆς δ᾽ ἐ-
στὶν ὁ μενεσθέως καλούμενος λιμὴν, καὶ ἡ κατὰ ἄστα ἀνάχυσις καὶ ἀνάβασις. λέγονται δὲ ἀναχύσεις,
αἱ πληρούμεναι τῇ θαλάττῃ κοιλάδες ἐν ταῖς πλημμυρίσι, καὶ ποταμῶν δίκην ἀνάπλους ἐπὶ
τὴν μεσόγαιαν ἔχουσαι καὶ τὰς ἐπ᾽ αὐτῆς πόλεις. εἶτ᾽ εὐθὺς αἱ ἐκβολαὶ τοῦ βαίτιος διχῇ σχιζόμε-
ναι. ἡ δὲ ἀπολαμβανομένη νῆσος ἀπὸ τῶν στομάτων, ἑκατὸν, ὡς δ᾽ ἔνιοι καὶ πλειόνων σταδίων ἀφορί-
ζει παραλίαν. ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ μαντεῖον τοῦ μενεσθέως ἐστί. καὶ ὁ τοῦ καιπίωνος πύργος ἵδρυται
ἐπὶ πέτρας ἀμφικλύστου. θαυμασίως κατεσκευασμένος, ὥσπερ ὁ φάρος. τῆς τῶν πλοϊζομένων σω-
τηρίας χάριν. ἥ τε γὰρ ἐκβαλλομένη χοῦς ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ, βράχεα ποιεῖ. καὶ χοιραδώδης ἐστὶν
ὁ πρὸ αὐτοῦ τόπος. ὥστε δεῖ σημείου τινὸς ἐπιφανοῦς. ἐντεῦθεν δ᾽ ὁ τοῦ βαίτιος ἀνάπλους ἐστὶ, καὶ
πόλις ἐβοῦρα. καὶ τὸ τῆς φωσφόρου ἱερόν. ἣν καλοῦσι λουκεμδουβίαν. εἶθ᾽ αἱ τῶν ἀναχύσεων πόλεις.

ἄλλων ἀνάπλοι. καὶ μετὰ ταῦτα ὁ ἄνας ποταμὸς, δίστομος καὶ οὗτος. καὶ ὁ ἐξ αὐτῶν ἀνάπλους.
εἶθ' ὕστατον τὸ ἱερὸν ἀκρωτήριον. διέχον τῶν γαδείρων ἐλάττους, ἢ δισχιλίους σταδίους. τινὲς δ' ἀπὸ μὲν
τοῦ ἱεροῦ ἀκρωτηρίου, ἐπὶ τὸ τοῦ ἄνα στόμα ἑξήκοντα μίλια φασί. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ τοῦ βαίτιος στόμα
ἑκατόν. εἶτα εἰς γάδειρα ἑβδομήκοντα. τῆς δ' οὖν ἐντὸς τοῦ ἄνα παραλίας, ὑπερκεῖσθαι συμβαίνει
τὴν τουρδιτανίαν ἣν ὁ βαῖτις διαρρεῖ ποταμός. ἀφορίζει δὲ αὐτὴν πρὸς μὲν τὴν ἑσπέραν καὶ ἄρ-
κτον, ὁ ἄνας ποταμός. πρὸς δὲ τὴν ἕω, καρπητανῶν τέ τινες, καὶ ὠρητανοί. πρὸς νότον δὲ, βαστητα-
νῶν οἱ μεταξὺ τῆς κάλπης καὶ τῶν γαδείρων, στενὴν νεμόμενοι παραλίαν. καὶ ἡ ἑξῆς θάλαττα μέχρι ἄ-
να. καὶ οἱ ἀστυτανοὶ δὲ οὓς εἶπον, τῇ τουρδιτανίᾳ πρόσκεινται. καὶ ἡ ἔξω τοῦ ἄνα καὶ οἱ πολλοὶ τῶν
προσχώρων. μέγεθος δ' οὐ πλεῖόν ἐστι τῆς χώρας ταύτης ἐπὶ μῆκος καὶ πλάτος, ἢ δισχίλιοι στάδιοι. πό-
λεις δ' ὑπερβάλλουσαι τὸ πλῆθος, καὶ γὰρ διακοσίας φασί. γνωριμώταται δὲ αἱ ἐπὶ τοῖς πο-
ταμοῖς ἱδρυμέναι καὶ ταῖς ἀναχύσεσι, καὶ τῇ θαλάττῃ διὰ τὰς χρείας. πλεῖστον δ' ἥ τε κόρδυβα ηὔξηται.
μαρκέλλου κτίσμα καὶ δόξῃ καὶ δυνάμει, καὶ ἡ τῶν γαδιτανῶν πόλις. ἡ μὲν διὰ τὰς ναυτιλίας, καὶ
διὰ τὸ προσθέσθαι ῥωμαίοις κατὰ συμμαχίας. ἡ δὲ χώρας ἀρετῇ, καὶ μεγέθει. προσλαμβάνον-
τος καὶ τοῦ ποταμοῦ βαίτιος, μέγα μέρος. ᾤκησάν τε ἐξ ἀρχῆς ῥωμαίων τε καὶ τῶν ἐπιχωρίων
ἐπίλεκτοι ἄνδρες. καὶ δὴ καὶ πρώτην ἀποικίαν ταύτην εἰς τούσδε τοὺς τόπους ἔστειλαν ῥωμαῖοι. μετὰ
δὲ ταύτην καὶ τὴν τῶν γαδιτανῶν ἡ μὲν ἴσπαλις ἐπιφανής. καὶ αὐτὴ ἄποικος ῥωμαίων. νυνὶ δὲ
τὸ μὲν ἐμπόριον, συμμένει. τῇ τιμῇ δὲ, καὶ τῷ ἐποικῆσαι νεωστὶ τοὺς καίσαρος στρατιώτας, ἡ βαῖτις
ὑπερέχει, καίπερ οὐ συνοικουμένη λαμπρῶς. μετὰ δὲ ταύτας ἰτάλικα καὶ ἴλιπα ἐπὶ τῷ βαίτι. ἀ-
στίγις δ' ἀπωτέρω, καὶ κάρμων καὶ ὀβούλκων. ἔτι δὲ ἐν αἷς οἱ πομπηΐου παῖδες κατεπολεμήθη-
σαν μούνδα καὶ ἀτέγουα. καὶ οὔρσων, καὶ τοῦκις, καὶ ἰουλία καὶ αἴγουα. ἅπασαι δ' αὗται κορδύβης οὐκ
ἄπωθεν. τρόπον δέ τινα μητρόπολις κατέστη τοῦ τόπου τούτου μούνδα. διέχει δὲ καρτηΐας ἡ μούν-
δα, σταδίους ἑξ χιλίους καὶ τετρακοσίους. εἰς ἣν ἔφυγεν ἡττηθεὶς ὁ γναῖος. εἶτ' ἐκπλεύσας ἔνθεν, καὶ
ἐκβὰς εἴς τινα ὑπερκειμένην θαλάττης ὀρεινὴν διεφθάρη. ὁ δ' ἀδελφὸς αὐτοῦ σέξτος ἐκ κορδύβης σω-
θεὶς, καὶ μικρὸν ἐν τοῖς ἴβηρσι πολεμήσας χρόνον, ὕστερον σικελίαν ἀπέστησεν. εἶτ' ἐκπεσὼν ἐνθέν-
δε εἰς τὴν ἀσίαν, ἁλοὺς ὑπὸ τῶν ἀντωνίου στρατιωτῶν, ἐν μιλήτῳ κατέστρεψε τὸν βίον. ἐν δὲ τοῖς
κελτικοῖς κονίστοργις ἐστὶ γνωριμωτάτη. ἐπὶ δὲ ταῖς ἀναχύσεσιν ἡ μάστα, εἰς ἣν οἱ τουρδιτανοὶ συ-
νιᾶσι, μάλιστα ὑπερκειμένη τοῦ ἐπινείου τῆς νήσου σταδίους οὐ πολὺ πλείους τῶν ἑκατόν. παροικεῖται
δὲ ὑπὸ πλείστων ὁ βαῖτις. καὶ ἀναπλεῖται σχεδόν τι ἐπὶ χιλίους καὶ διακοσίους σταδίους, ἐκ θαλάτ-
της μέχρι κορδύβης, καὶ τῶν μικρῶν ἐπάνω τόπων. καὶ δὴ καὶ ἐξείργασται περιττῶς, ἥ τε παραποτα-
μία καὶ τὰ ἐν τῷ ποταμῷ νησίδια. πρόσεστι δὲ καὶ τὸ τῆς ὄψεως τερπνόν. ἄλσεσι καὶ ταῖς ἄλλαις φυτουρ-
γίαις ἐκπεπονημένων τῶν χωρίων. μέχρι μὲν οὖν ἰσπάλιος ὁλκάσιν ἀξιολόγοις ὁ ἀνάπλους ἐστὶν ἐπὶ σταδίους
οὐ πολὺ λείποντας τῶν πεντακοσίων. ἐπὶ δὲ τὰς ἄνω πόλεις μέχρι ἰλίπας, ταῖς ἐλάττοσι. μέχρι δὲ κορδύβης
τοῖς ποταμίοις σκάφεσι. πηκτοῖς μὲν τανῦν. τὸ παλαιὸν δὲ καὶ μονοξύλοις. τὸ δ' ἄνω τὸ ἐπὶ κλαστῶν
οὐκ ἔστι πλόϊμον. παράλληλοι δέ τινες ῥάχεις ὀρῶν παρατείνουσι τῷ ποταμῷ. μᾶλλον τε καὶ ἧττον συνά-
πτουσαι πρὸς βορρᾶν, μετάλλων πλήρεις. πλεῖστος δ' ἔστιν ἄργυρος ἐν τοῖς τόποις, κατὰ ἰλίπαν καὶ τοὺς κα-
τὰ σισάπωνα, τόν τε παλαιὸν λεγόμενον καὶ τὸν νέον. κατὰ δὲ τὰς κωτίνας λεγομένας χαλκός τε ἅμα
γεννᾶται καὶ χρυσός. ἐν ἀριστερᾷ μὲν οὖν ἐστι τοῖς ἀναπλέουσι τὰ ὄρη ταῦτα. ἐν δεξιᾷ δὲ, πεδίον
μέγα, καὶ ὑψηλὸν καὶ εὔκαρπον. καὶ μεγαλόδενδρον καὶ εὔβοτον. ἔχει δὲ καὶ ἠιόνας ὁ ἀνάπλους. οὔ-
τε δὲ τηλικούτοις σκάφεσιν, οὔτ' ἐπὶ τοσοῦτον. ὑπέρκειται δὲ καὶ τὰ μεταλλείας ἔχοντα ὄρη. καθήκει
δὲ ταῦτα πρὸς τὸν. τάγον. τὰ μὲν οὖν τὰς μεταλλείας ἔχοντα χωρία, ἀνάγκη τραχέα τε εἶναι καὶ
παράλυπρα, οἷάπερ, καὶ τὰ τῇ καρπητανίᾳ, συνάπτοντα. καὶ ἔτι μᾶλλον τοῖς κελτίβηρσι. τοι-
αύτη δὲ καὶ ἡ βαιτουρία. ξηρὰ ἔχουσα πεδία τὰ παρήκοντα τῷ ἄνα. αὐτὴ δ' ἡ τουρδιτανία θαυμα-
στῶς εὐτυχεῖ. παμφόρου δ' οὔσης αὐτῆς, ὡσαύτως δὲ καὶ πολυφόρου, διπλασιάζεται τὰ εὐτυχή-
ματα ταῦτα τῷ ἐκκομισμῷ. τὸ γὰρ περιττεῦον τῶν καρπῶν ἀπεμπολεῖται ῥαδίως τῷ πλήθει
τῶν ναυκληρειῶν. ποιοῦσι δὲ τοῦτο οἵ τε ποταμοὶ καὶ αἱ ἀναχύσεις ὡς εἶπον. ἐμφερεῖς τοῖς ποταμοῖς οὖ-
σαι. καὶ ἀναπλεόμεναι παραπλησίως ἐκ θαλάττης, οὐ μικροῖς μόνον ἀλλὰ καὶ μεγάλοις σκάφεσιν
εἰς τὰς ἐν τῇ μεσογαίᾳ πόλεις. ἅπασα γάρ ἐστι πεδιὰς ὑπὲρ τῆς παραλίας ἐπὶ πολὺ τῆς μεταξὺ τοῦ τε
ἱεροῦ ἀκρωτηρίου καὶ τῶν στηλῶν. ἐνταῦθα δὲ πολλαχοῦ κοιλάδες εἰς τὴν μεσόγαιαν ἐκ τῆς θαλάττης ἀνέχουσι.
φάραγξι μετρίαις ἢ καὶ ῥείθροις ἐοικυῖαι ποταμίοις ἐκτεταμένοις ἐπὶ πολλοὺς σταδίους. ταύτας δὲ πληροῦ-
σιν αἱ τῆς θαλάττης ἐπιβάσεις, κατὰ τὰς πλημμυρίδας. ὥστ' ἀναπλεῖσθαι μηδὲν ἧττον, ἢ τοὺς πο-
ταμούς. ἀλλά. καὶ βέλτιον. τοῖς γὰρ κατάπλοις ἔοικε τοῖς ποταμίοις. ἀντικόπτοντος μὲν οὐδενός.
ἐπουρίζοντος δὲ τοῦ πελάγους καθάπερ τοῦ ποταμίου ῥεύματος διὰ τὴν πλημμυρίδα. αἱ δ' ἐπιβά-
σεις μείζους εἰσὶν ἐνταῦθα ἢ ἐν τοῖς ἄλλοις τόποις. ὅτι εἰς πόρον συνωθουμένη στενὸν ἡ θάλαττα ἐκ με-
γάλου πελάγους, ὃν ἡ μαυρουσία ποιεῖ πρὸς τὴν ἰβηρίαν, ἀνακοπὰς λαμβάνει. καὶ φέρεται πρὸς τὰ εἴ-

κοντα μέρη τῆς γῆς αὐτόπτης. ἔνιαι μὲν οὖν τῶν τοιούτων κοιλάδων κενοῦνται κατὰ τὰς ἀμπώτεις.
τινὰς δ' οὐ παντάπασιν ἐκλείπει τὸ ὕδωρ, ἔνιαι δὲ καὶ νήσους ἀπολαμβάνουσιν ἐν ἑαυταῖς. τοιαῦται
μὲν οὖν εἰσιν αἱ ἀναχύσεις, αἱ μεταξὺ τοῦ τε ἱεροῦ ἀκρωτηρίου καὶ τῶν στηλῶν. ἐπίδοσιν ἔχουσαι σφοδρο-
τέραν παρὰ τὰς ἐν τοῖς ἄλλοις τόποις. ἡ τοιαύτη δ' ἐπίδοσις ἔχει μέν τι καὶ πλεονέκτημα πρὸς τὰς χρείας
τῶν πλοϊζομένων. πλείους γὰρ καὶ μείζους ποιεῖ τὰς ἀναχύσεις. πολλάκις καὶ ἐπὶ ὀκτὼ σταδίους ἀναπλεο-
μένας. ὥστε τρόπον τινὰ πᾶσαν πλωτὴν παρέχεται τὴν γῆν, καὶ εὐπετῆ πρός τε τὰς ἐξαγωγὰς τῶν φορτίων
καὶ τὰς εἰσαγωγάς. ἔχει δέ τι καὶ ὀχληρόν. αἱ γὰρ ἐν τοῖς ποταμοῖς ναυτιλίαι, διὰ τὴν σφοδρότητα τῆς
πλημμυρίδος, ἰσχυροτέραν τῇ ῥύσει τῶν ποταμῶν ἀντιπνέουσαι, κίνδυνον οὐ μικρὸν τοῖς ναυτι-
λίοις ἐπιφέρουσι, καταγομένοις τε ὁμοίως καὶ ἀναγομένοις. αἱ δὲ ἀμπώτεις ἐν ταῖς ἀναχύ-
σεσιν εἰσὶ βλαβεραί. ταῖς γὰρ πλημμυρίσιν ἀνάλογον καὶ αὗται, παροξύνονται. διά τε τὸ τά-
χος, καὶ ἐπὶ ξηρᾶς πολλάκις ἐγκατέλιπον τὴν ναῦν. τά τε βοσκήματα εἰς τὰς νήσους διαβαίνοντα τὰς
πρὸς τῶν ποταμῶν πρὸ τῶν ἀναχύσεων, ποτὲ μὲν οὖν καὶ ἐπεκλύσθη. ποτὲ δὲ καὶ ἀπελείφθη. βια-
ζόμενα δ' ἐπανελθεῖν οὐκ ἴσχυσεν. ἀλλὰ διεφθάρη. τὰς δὲ βοῦς φασὶ καὶ τετηρηκυίας τὸ συμβαῖ-
νον, περιμένειν τὴν ἀναχώρησιν τῆς θαλάττης, καὶ τότε ἀπαίρειν εἰς τὴν ἤπειρον. καταμαθόντες δ'
οὖν τὴν φύσιν τῶν τόπων οἱ ἄνθρωποι, καὶ τὰς ἀναχύσεις ὁμοίως ὑπουργεῖν τοῖς ποταμοῖς δυναμένας,
πόλεις ἔκτισαν ἐπ' αὐτῶν, καὶ ἄλλας κατοικίας, καθάπερ ἐπὶ τῶν ποταμῶν. τούτων δ' ἐστὶν ἥ τε ἄστα,
καὶ νάβρισσα. καὶ ὄνοβα καὶ σόνοβα καὶ μαίνοβα, ἄλλαι πλείους. προσλαμβάνουσι δὲ, καὶ διώρυ-
γες ἔσθ' ὅπου γεγονυῖαι τοῦ πολλαχόθεν εἶναι. καὶ πολλαχόσε τὴν κομιδὴν πρὸς ἀλλήλους, καὶ
πρὸς τοὺς ἔξω. καὶ αἱ σύρροιαι δὲ ὡσαύτως ὠφελοῦσι κατὰ τὰς ἐπὶ πολὺ πλήμας, καὶ διειργομένας
ὑπὸ τῶν διειργόντων ἰσθμῶν τοὺς πόρους καὶ πλωτοὺς ἀπεργαζομένων, ὥστε πορθμεύεσθαι καὶ
ἐκ τῶν ποταμῶν εἰς τὰς ἀναχύσεις. κἀκεῖθεν δεῦρο. ἅπασα δὴ ἐμπορεία πρὸς τὴν ἰταλίαν ἐστὶ καὶ
τὴν ῥώμην. ἔχουσα τὸν πλοῦν μέχρι τῶν στηλῶν ἀγαθόν. πλὴν εἴ τίς ἐστι περὶ τὸν πορθμὸν δυσκολία
καὶ τὸν πελάγιον τὸν ἐν τῇ καθ' ἡμᾶς θαλάττῃ. διὰ γὰρ εὐδίου κλίματος οἱ δρόμοι συντελοῦνται. καὶ
μάλιστα τῷ πελαγίζοντι. τοῦτο δὲ πρόσφορόν ἐστι ταῖς ἐμπορικαῖς ὁλκάσιν. ἔχουσι δὲ καὶ οἱ ἄνεμοι τά-
ξιν οἱ πελάγιοι. πρόσεστι δὲ, καὶ ἡ νῦν εἰρήνη τῶν λῃστηρίων καταλυθέντων. ὥσθ' ἡ σύμπασα ὑπάρχει
ῥᾳστώνη τοῖς πλοϊζομένοις. ἴδιον δέ τί φησι ποσειδώνιος τηρῆσαι κατὰ τὸν ἀνάπλουν τὸν ἐκ τῆς ἰβη-
ρίας, ὅτι οἱ εὖροι κατ' ἐκεῖνο τὸ πέλαγος ἕως τοῦ σαρδῴου κόλπου πνέοιεν ἐτησίαι. διὸ καὶ τρισὶ μη-
σὶν εἰς ἰταλίαν κατᾶραι. μόλις γὰρ διενεχθεὶς περί τε τὰς γυμνησίας νήσους, καὶ περὶ σαρδόνα,
καὶ τἄλλα ἀπαντικρὺ μέρη τούτων τῆς λιβύης. ἐξάγεται δ' ἐκ τῆς τουρδητανίας σῖτός τε καὶ οἶνος
πολύς, καὶ ἔλαιον οὐ πολὺ μόνον, ἀλλὰ καὶ κάλλιστον. καὶ κηρὸς δὲ, καὶ μέλι, καὶ πίττα ἐξάγεται, καὶ
κόκκος, πολύς, καὶ μίλτος οὐ χείρων τῆς σινωπικῆς γῆς. τά τε ναυπήγια συνιστᾶσιν αὐτόθι ἐξ ἐπιχω-
ρίας ὕλης, ἅλες τε ὀρυκτοὶ παρ' αὐτοῖς εἰσί. καὶ ποταμῶν ἁλμυρῶν ῥεύματα οὐκ ὀλίγα. οὐκ ὀλί-
γη δὲ οὐδ' ἐκ τῶν ὄψων ταριχεία. οὐκ ἔνθεν μόνον. ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς ἄλλης τῆς ἐκτὸς στηλῶν παραλίας
οὐ χεῖρον τῆς ποντικῆς. πολλὴ δὲ, καὶ ἐσθὴς πρότερον ἤρχετο. νῦν δὲ ἔρια μᾶλλον τῶν κοραξῶν, καὶ
ὑπερβολή τίς ἐστι τοῦ κάλλους. ταλαντιαίους γοῦν ὠνοῦνται τοὺς κριοὺς εἰς τὰς ὀχείας. ὑπερβο-
λὴ δὲ, καὶ τῶν λεπτῶν ὑφασμάτων, ἅπερ οἱ σαλτιῆται κατασκευάζουσιν. ἄφθονος δὲ, καὶ βοσκημά-
των ἀφθονία παντοίων καὶ κυνηγεσίων. τῶν δ' ὀλεθρίων θηρίων σπάνις. πλὴν τῶν γεωρύχων λαγιδέων.
οὓς ἔνιοι λεβηρίδας προσαγορεύουσι. λυμαίνονται γὰρ φυτὰ, καὶ σπέρματα ῥιζοφαγοῦντες,
καὶ τοῦτο συμβαίνει καθ' ὅλην τὴν ἰβηρίαν σχεδόν. διατείνει δὲ, καὶ μέχρι μασσαλίας.. ὀχλεῖ δὲ καὶ τὰς
νήσους οἱ δὲ τὰς γυμνησίας οἰκοῦντες, λέγονται πρεσβεύσασθαί ποτε πρὸς ῥωμαίους κατὰ
χώρας αἴτησιν. ἐκβάλλεσθαι γὰρ ὑπὸ τῶν ζώων τούτων ἀντέχειν μὴ δυναμένων διὰ τὸ πλῆθος.
πρὸς μὲν οὖν τὸν τοσοῦτον ἴσως πόλεμον, ὃς οὐκ ἀεὶ συμβαίνει φθορὸν δέ τινι λοιμικῇ καταστά-
σει καθάπερ ὄφεων καὶ μυῶν τῶν ἀρουραίων, χρεία τῆς τοσαύτης ἐπικουρίας. πρὸς δὲ τὸ μέτρι-
ον, ἐξεύρηνται πλείους θῆραι. καὶ δὴ καὶ γαλᾶς ἀγρίας ἃς ἡ λιβύη φέρει, τρέφουσιν ἐπίτηδες.
ἃς φιμώσαντες παριᾶσιν εἰς τὰς ὀπάς. αἱ δ' ἐξέλκουσιν ἔξω τοῖς ὄνυξιν οὓς ἂν καταλάβωσιν,
ἢ φεύγειν ἀναγκάζουσιν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν. ἐκπεσόντας δὲ θηρεύουσιν οἱ ἐφεστῶτες, τὴν δ' ἀφθονίαν
τῶν ἐκκομιζομένων ἐκ τῆς τουρδητανίας, ἐμφανίζει τὸ μέγεθος, καὶ τὸ πλῆθος τῶν ναυκλή-
ρων. ὁλκάδες γὰρ μέγισται παρὰ τούτων πλέουσιν εἰς τὴν δικαιαρχίαν καὶ τὰ ὤστια τῆς ῥώμης ἐπί-
νειον. τό τε πλῆθος μικροῦ δεῖν ἐνάμιλλον τοῖς λιβυκοῖς ἐκ παραπλασιάσεως. τοιαύτης δὲ τῆς μεσο-
γαίας οὔσης, τῆς ἐν τῇ τουρδητανίᾳ, καὶ τὴν παράλιον ἐνάμιλλον τῶν εὕροι τις ἂν τοῖς ἐκ θαλάττης ἀγαθοῖς.
τά τε γὰρ ὀστρεώδη πάντα καὶ κογχοειδῆ, καὶ τοῖς πλήθεσιν ὑπερβάλλει καὶ τοῖς μεγέθεσι καθόλου
κατὰ τὴν ἔξω θάλατταν πᾶσαν. ἐνταῦθα δὲ διαφερόντως, ἅτε καὶ τῶν πλημμυρίδων καὶ τῶν ἀμ-
πώτεων ἐνταῦθα αὐξανομένων. ἃς εἰκὸς αἰτίας εἶναι καὶ τοῦ πλήθους. καὶ τοῦ μεγέθους διὰ τὴν γυ-
μνασίαν. ὡς δ' αὕτως ἔχει καὶ περὶ τῶν κητέων ἁπάντων ὀρύγων τε καὶ φαλαινῶν καὶ φυσητήρων.

ἐν ἀναφυσητῶν, φαίνεταί τις νεφώδους ὄψις κίωνος τοῖς πόρρωθεν ἀφορῶσι. καὶ οἱ γόγγροι δ' ἀπο-
θηριοῦνται, πολὺ τῶν παρ' ἡμῖν ὑπερβεβλημένοι κατὰ τὸ μέγεθος. καὶ αἱ σμύραιναι καὶ ἄλλα
πλείω τῶν τοιούτων ὄψων. ἐν δὲ καρτηΐᾳ κήρυκας δεκακοτύλους καὶ πορφύρας φασίν. ἐν δὲ τοῖς ἔξω
τόποις τόποις καὶ μείζονας ὀγδοήκοντα μνῶν τὴν σμύραιναν καὶ τὸν γόγγρον. ταλαντιαῖον δὲ, τὸν πολύ-
ποδα. διπήχεις δὲ, τὰς τευθίδας καὶ τὰ παραπλήσια. πολὺς δὲ, καὶ ὁ θύννος συνελαύνεται δεῦρο, ἀπὸ τῆς ἄ-
λλης τῆς ἔξωθεν παραλίας, πίων καὶ παχύς. τρέφεται δὲ βαλάνῳ δρυίνῃ φυομένῃ κατὰ τῆς θαλάτ-
της. χαμαιζήλῳ τινὶ παντάπασιν. ἁδρότατον δ' ἐκφερούσῃ καρπόν. ἥπερ, καὶ ἐν τῇ γῇ πολ-
λὴ φύεται κατὰ τὴν ἰβηρίαν. ῥίζας μὲν ἔχουσα μεγάλας ὡς ἂν τελείας δρυός. ἐξαιρομένη
δὲ ἐκ θάμνου, ταπεινῆς ἧττον, τοσοῦτον δ' ἐκφέρει καρπὸν, ὥστε μετὰ τὴν ἀκμὴν πλήρη τὴν παρα-
λίαν εἶναι τήν τε ἐντὸς, καὶ τὴν ἐκτὸς στηλῶν, ἣν ἐκβάλλουσιν αἱ πλήμαι. ἡ δ' ἐντὸς στηλῶν, ἐλάτ-
των ἀεὶ καὶ μᾶλλον εὑρίσκεται. λέγει δ' ὁ πολύβιος καὶ μέχρι τῆς λατίνης ἐκπίπτειν τὴν βάλανον
ταύτην. εἰ μὴ ἄρα φησὶ καὶ ἡ σαρδὼ φέρει, καὶ ἡ πλησιόχωρος ταύτῃ, καὶ οἱ θύννοι δ' ὅσῳ πλεῖον
συνεγγίζουσι ταῖς στήλαις ἔξωθεν φερόμενοι, τοσῷδ' ἰσχναίνονται, πλέον τῆς τροφῆς ἐπιλειπού-
σης. εἶναί τε παραθαλάττιον τὸ ζῷον ἐπὶ πλέον. ἥδεσθαι γὰρ τῇ βαλάνῳ καὶ πιαίνεσθαι διαφερόντως
ὑπ' αὐτῆς. φορᾶς τε τῆς βαλάνου γενομένης, φορὰν καὶ τῶν θύννων εἶναι. τοσούτοις δὲ τῆς προειρη-
μένης χώρας ἀγαθοῖς κεχορηγημένης, οὐχ ἥκιστα, ἀλλὰ καὶ μάλιστ' ἄν τις ἀποδέξαιτο καὶ θαυμάσειε
τὸ περὶ τὰς μεταλλείας εὐφυές. ἅπασα μὲν γὰρ μεστὴ τῶν τοιούτων ἐστὶν ἡ τῶν ἰβήρων χώρα. οὐ
πᾶσα δ' εὔκαρπος. οὐδ' εὐδαίμων οὕτως. καὶ μάλιστα ἡ τῶν μετάλλων εὐποροῦσα. σπάνιον δ' ἐν ἀμ-
φοτέροις τυχεῖν. σπάνιον δὲ, καὶ τὸ τὴν αὐτὴν ἐν ὀλίγῳ χωρίῳ παντοίοις πληθύνειν μετάλλοις.
ἥ τε τουρδητανία καὶ ἡ προσεχὴς αὐτῇ, λόγον οὐδένα ἄξιον καταλείπει περὶ τὴν δὲ τὴν ἀρετὴν
τοῖς ἐπαινεῖν βουλομένοις. οὔτε γὰρ χρυσὸς, οὐκ ἄργυρος. οὐ δὲ δὴ χαλκὸς, οὐδὲ σίδηρος, οὐδαμοῦ τῆς
γῆς. οὔτε τοσοῦτος οὔθ' οὕτως ἀγαθὸς ἐξήτασται, γενόμενος μέχρι νῦν. ὁ δὲ χρυσὸς οὐ μεταλλεύεται
μόνον. ἀλλὰ καὶ σύρεται. καταφέρουσι δ' οἱ ποταμοὶ καὶ οἱ χείμαρροι τὴν χρυσῖτιν ἄμμον πολλαχοῦ,
καὶ ἐν τοῖς ἀνύδροις τόποις οὖσαν. ἀλλ' ἐκεῖ μὲν ἀφανής ἐστιν, ἐν δὲ τοῖς ἐπικλύστοις ἀπολάμπει τὸ
τοῦ χρυσοῦ ψῆγμα. καὶ τοὺς ἀνύδρους δὲ φορητῷ ἐπικλύζοντες ὕδατι, στιλπνὸν ποιοῦσι τὸ ψῆγ-
μα. καὶ φρέατα δ' ὀρύσσοντες καὶ ἄλλας τέχνας ἐπινοοῦντες, πλύσει τῆς ἄμμου τὸν χρυσὸν ἐκ-
λαμβάνουσι. καὶ πλείω τῶν χρυσωρυχείων ἐστὶ νῦν τὰ χρυσοπλύσια προσαγορευόμενα. ἀξιοῦσι δὲ γα-
λάται τὰ παρ' ἑαυτοῖς εἶναι κρείττω μέταλλα ἐν τῷ κεμμένῳ ὄρει. καὶ ὑπ' αὐτῇ κείμενα τῇ πυ-
ρήνῃ. τὸ μέντοι πλέον καὶ τεῦθεν εὐδοκιμεῖ. ἐν δὲ τοῖς ψήγμασι τοῦ χρυσίου φασὶν εὑρίσκεσθαί
ποτε καὶ ἡμιλιτριαίας βώλους. ἃς καλοῦσι πάλας μικρᾶς. καθάρσεως δεομένας. φασὶ δὲ
καὶ λίθων σχιζομένων εὑρίσκειν βωλάρια θηλαῖς ὅμοια. ἐκ δὲ τοῦ χρυσοῦ ἑψομένου καὶ καθαιρο-
μένου, στυπτηριώδει τινὶ γῇ, τὸ κάθαρμα ἤλεκτρον εἶναι. πάλιν δὲ τούτου καθεψομένου, μίγμα ἔχον-
τος ἀργύρου, καὶ χρυσοῦ, τὸν μὲν ἄργυρον ἀποκαίεσθαι. τὸν δὲ χρυσὸν ὑπομένειν. εὐδιάχυτος γὰρ
ὁ τύπος καὶ λιπώδης. διὰ τοῦτο καὶ τῷ ἀχύρῳ τήκεται μᾶλλον ὁ χρυσός. ὅτι ἡ φλὸξ μαλακὴ οὖσα, σύμ-
μέτρως ἔχει πρὸς τὸ εἶκον, καὶ διαχεόμενον ῥᾳδίως. ὁ δ' ἄνθραξ ἐπαναλίσκει πολὺ ὑπερτήκων τῇ σφο-
δρότητι καὶ ἐξαίρων. ἐν δὲ τοῖς ῥείθροις σύρεται καὶ πλύνεται πλησίον ἐν σκάφαις ἢ ὀρύττεται
φρέαρ. ἡ δὲ ἀνενεχθεῖσα γῆ πλύνεται. τὰς δὲ τοῦ ἀργύρου καμίνους ποιοῦσιν ὑψηλάς. ὥστε τὴν ἐκ
τῶν βώλων λιγνὺν μετέωρον ἐξαίρεσθαι. βαρεῖα γάρ ἐστι καὶ ὀλέθριος. τῶν δὲ χαλκουργείων τινὰ κα-
λεῖται χρυσεῖα. ἐξ ὧν τεκμαίρονται χρυσὸν ἐξ αὐτῶν ὀρύττεσθαι πρότερον. ποσειδώνιος δὲ ὁ τὸ πλῆ-
θος τῶν μετάλλων ἐπαινῶν καὶ τὴν ἀρετὴν, οὐκ ἀπέχεται τῆς συνήθους ῥητορείας. ἀλλὰ συνενθου-
σιᾷ ταῖς ὑπερβολαῖς. οὐ γὰρ ἀπιστεῖν τῷ μύθῳ φησὶν, ὅτι τῶν δρυμῶν ποτὲ ἐμπρησθέντων ἡ γῆ τακεῖ-
σα ἅτε ἀργυρῖτις καὶ χρυσῖτις ὕλην εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἐξέζεσε. διὰ τὸ πᾶν ὄρος, καὶ πάντα βουνὸν εἶναι
νομίσματος. ὑπό τινος ἀφθόνου τύχης σεσωρευμένην. καθόλου δ' ἂν εἴποι φησὶν ἰδών τις τοὺς τόπους
θησαυροὺς εἶναι φύσεως ἀενάους. ἢ ταμιεῖον ἡγεμονίας ἀνέκλειπτον. οὐ γὰρ πλουσία μόνον. ἀλλὰ
καὶ ὑπόπλουτος ἦν φησὶν ἡ χώρα. καὶ παρ' ἐκείνοις ὡς ἀληθῶς τὸν ὑποχθόνιον τόπον, οὐχ ὁ ἅδης, ἀλλ'
ὁ πλούτων κατοικεῖ. ταῦτα μὲν οὖν ἐν ὡραίῳ σχήματι εἴρηκε περὶ τούτων. ὡς ἂν ἐκ μετάλλου καὶ
αὐτὸς πολλῷ χρώμενος τῷ λόγῳ. τὴν δ' ἐπιμέλειαν φράζων τὴν τῶν μεταλλευόντων, παρατίθησι τὸ
τοῦ φαληρέως. ὅτι φησὶν ἐκεῖνος ἐπὶ τῶν ἀττικῶν ἀργυρείων οὕτω συντόνως ὀρύττειν τοὺς ἀνθρώπους,
ὡς ἂν προσδοκῶντας αὐτὸν ἀνάξειν τὸν πλούτωνα. καὶ τούτων νῦν ἐμφανίζει παραπλησίαν τὴν σπου-
δὴν καὶ τὴν φιλεργίαν. σκολιὰς τεμνόντων καὶ βαθείας τὰς σύριγγας. καὶ πρὸς τοὺς ἐν αὐταῖς
ἀπαντῶντας ποταμοὺς, πολλάκις. ταῖς αἰγυπτίαις ἀναντλοῦνται σκολιαῖς. τὸ δ' ὅλον οὐ ταὐτὸν
εἶναι ποτὲ τοῖς ἀττικοῖς. ἀλλ' ἐκείνοις μὲν αἰνίγματι ἐοικέναι τὴν μεταλλείαν. ὅσα μὲν γὰρ ἀ-
νέλαβον φησὶν, οὐκ ἔλαβον. ὅσα δὲ εἶχον ἀπέβαλον. τούτοις δ' ὑπεράγαν λυσιτελῆ. τοῖς μὲν γὰρ
χαλκουργοῖς τέταρτον μέρος ἐξάγουσι τῆς γῆς τὸν χαλκόν. τῶν δὲ ἀργυρευόντων τινὶ ἰδιωτῶν ἐν τρι-

σὶν ἡμέραις εὐβοϊκὸν τάλαντον ἐξαίρουσι· τὸν δὲ κασσίτερον, οὐκ ἐπιπολῆς εὑρίσκεσθαί φησιν, ὡς τοὺς ἱστορικοὺς θρυλεῖν· ἀλλ' ὀρύττεσθαι. γεννᾶσθαι δ' ἔν τε τοῖς ὑπὲρ τοὺς λυσιτανοὺς βαρβάροις, καὶ ἐν ταῖς κασσιτερίσι νήσοις, καὶ ἐκ τῶν βρετανικῶν δὲ εἰς τὴν μασσαλίαν κομίζεσθαι. ἐν δὲ τοῖς ἀρτάβροις, οἳ τῆς λυσιτανίας ὕστατοι, πρὸς ἄρκτον καὶ δύσιν εἰσὶν, ἐξανθεῖν φασιν ἀργυρείῳ τὴν γῆν κασσιτέρῳ χρυσίῳ λευκῷ· ἀργυρομιγὲς γάρ ἐστι. τὴν δὲ γῆν ταύτην φέρειν τοὺς ποταμούς. τὴν δὲ, σκαλίσι τὰς γυναῖκας διαμώσας πλύνειν ἐν ἠθητηρίοις πλεκτοῖς ἐπὶ τὴν κίστην. οὗτος μὲν περὶ τῶν μετάλλων τοιαῦτ' εἴρηκε. πολύβιος δὲ τῶν περὶ καρχηδόνα νέαν ἀργυρείων μνησθεὶς, μέγιστα μὲν εἶναί φησι· διέχειν δὲ τῆς πόλεως ὅσον εἴκοσι σταδίους, περιειληφότα κύκλον, τετρακοσίων σταδίων· ὅπου τέτταρας μυριάδας ἀνθρώπων μένειν τῶν ἐργαζομένων· ἀναφέροντας τότε τῷ δήμῳ, τῶν ῥωμαίων καθ' ἑκάστην ἡμέραν δισμυρίας καὶ πεντακισχιλίας δραχμὰς, τὴν δὲ κατεργασίαν, τὴν μὲν ἄλλην ἐῶ· μακρὰ γάρ ἐστι. τὴν δὲ συρτὴν βῶλον τὴν ἀργυρῖτιν φησὶ κόπτεσθαι· καὶ κοσκίνοις εἰς ὕδωρ διαττᾶσθαι. κόπτεσθαι δὲ πάλιν τὰς ὑποστάσεις· καὶ πάλιν διηθουμένας ἀποχεομένων τῶν ὑδάτων κόπτεσθαι. τὴν δὲ πέμπτην ὑπόστασιν χωνευθεῖσαν ἀποχυθέντος τοῦ μολύβδου, καθαρὸν τὸ ἀργύριον ἐξάγειν. ἔστι δὲ καὶ νῦν τὰ ἀργυρεῖα· οὐ μέντοι δημόσια· οὔτε δὲ ἐνταῦθα· οὔτε ἐν τοῖς ἄλλοις τόποις· ἀλλ' εἰς ἰδιωτικὰς μετέστησαν κτήσεις. τὰ δὲ χρυσεῖα, δημοσιεύεται τὰ πλείω. ἐν δὲ καὶ κασταλῶνι καὶ ἄλλοις τόποις ἴδιόν ἐστι μέταλλον ὀρυκτοῦ μολύβδου· παραμέμικται δέ τι καὶ τούτῳ τοῦ ἀργύρου, μικρόν· οὐχ ὥστε λυσιτελεῖν ἀποκαθαίρειν αὐτόν. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν τοῦ κασταλῶνός ἐστι, καὶ τὸ ὄρος· ἐξ οὗ ῥεῖν φασι τὸν βαῖτιν· ὃν καλοῦσιν ἀργυροῦν, διὰ τὰ ἀργυρεῖα τὰ ἐν αὐτῷ. πολύβιος δὲ, καὶ τὸν ἄναν καὶ τοῦτον ἐκ τῆς κελτιβηρίας ῥεῖν φησί· διέχοντας ἀλλήλων ὅσον ἐνακοσίους σταδίους. αὐξηθέντες γὰρ οἱ κελτίβηρες, ἐποίησαν, καὶ τὴν πλησιόχωρον πᾶσαν ὁμώνυμον ἑαυτοῖς. ἐοίκασι δ' οἱ παλαιοὶ καλεῖν τὸν βαῖτιν, ταρτησσόν. τὰ δὲ γάδειρα καὶ τὰς πρὸς αὐτὴν νήσους, ἐρύθειαν. διόπερ οὕτως εἰπεῖν ὑπολαμβάνουσι στησίχορον περὶ τοῦ γηρυόνου βουκόλου, διότι γεννηθείη σχεδὸν ἀντιπέρας κλεινᾶς ἐ(ρυθίας.

» Ταρτησσοῦ ποταμοῦ παρὰ πηγὰς ἀπείρονας

» Ἀργυρορίζους— ἐν κευθμῶνι πέτρας. δυοῖν δὲ οὐσῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ, πόλιν ἐν τῷ μεταξὺ χώρῳ κατοικεῖσθαι πρότερόν φασιν· ἣν καλεῖσθαι ταρτησσὸν ὁμώνυμον τῷ ποταμῷ· καὶ τὴν χώραν ταρτησσίδα καλεῖσθαι φησὶν, ἣν νῦν τουρδοῦλοι νέμονται. καὶ ἐρατοσθένης δὲ τὴν συνεχῆ τῇ κάλπῃ, ταρτησσίδα καλεῖσθαι φησὶ, καὶ ἐρύθειαν νῆσον εὐδαίμονα. πρὸς ὃν ἀρτεμίδωρος ἀντιλέγων, καὶ ταῦτα φησὶ ψευδῶς λέγεσθαι ὑπ' αὐτοῦ. καθάπερ καὶ τὸ ἀπὸ γαδείρων ἐπὶ τὸ ἱερὸν ἀκρωτήριον διάστημα ἀπέχειν ἡμερῶν πέντε πλοῦν· οὐ πλειόνων ὄντων ἢ χιλίων καὶ ἑπτακοσίων σταδίων· καὶ τὸ τὰς ἀμπώτεις μέχρι δεῦρο περατοῦσθαι· ἀντὶ τοῦ κύκλῳ περὶ πᾶσαν τὴν οἰκουμένην συμβαίνειν· καὶ τὸ τὰ προσαρκτικὰ μέρη τῆς ἰβηρίας εὐπαροδώτερα εἶναι πρὸς τὴν κελτικὴν, ἢ κατὰ τὸν ὠκεανὸν πλέουσι· καὶ ὅσα δὴ ἄλλα εἴρηκε πυθέᾳ πιστεύσας δι' ἀλαζονείαν. ὁ δὲ ποιητὴς πολύφωνός τις ὢν καὶ πολυΐστωρ, δίδωσιν ἀφορμὰς, ὡς οὐδὲ τούτων ἀνήκοός ἐστι τῶν τόπων εἴ τις ὀρθῶς βούλοιτο συλλογίζεσθαι ἀπ' ἀμφοῖν. τῶν τε χεῖρον λεγομένων περὶ αὐτῶν, καὶ τὸν ἄμεινον καὶ ἀληθέστερον. χεῖρον μὲν ὅτι πρὸς δύσιν ἐσχάτην ἤκουεν αὐτήν· ὅπου καθάπερ φησὶν αὐτὸς εἰς τὸν ὠκεανὸν

» Ἐμπίπτει λαμπρὸν φάος ἠελίοιο.

» Ἕλκων νύκτα μέλαιναν ἐπὶ ζείδωρον ἄρουραν.

Ἡ δὲ νὺξ ὅτι δύσφημον, καὶ τῷ ᾅδῃ πλησιάζον δῆλον. ὁ δὲ ᾅδης τῷ ταρτάρῳ, εἰκάζοι ἄν τις ἀκούων τὰ περὶ ταρτησσοῦ τὸν τάρταρον ἐκεῖθεν παρονομάσαι τὸν ἔσχατον τῶν ὑποχθονίων τόπων προσθεῖναι δὲ, καὶ μῦθον τὸ ποιητικὸν σώζοντα. καθάπερ καὶ τοὺς κιμμερίους, εἰδὼς ἐν βορείοις καὶ ζοφεροῖς οἰκήσαντας τόποις, τοῖς κατὰ τὸν βόσπορον, ἵδρυσεν αὐτοὺς πρὸς τῷ ᾅδῃ. τάχα καὶ κατά τι κοινὸν τῶν ἰώνων ἔθος πρὸς τὸ φῦλον τοῦτο. καὶ γὰρ καθ' ὅμηρον ἢ πρὸ αὐτοῦ μικρὸν λέγουσι τὴν τῶν κιμμερίων ἔφοδον γενέσθαι, τὴν μέχρι τῆς αἰολίδος καὶ τῆς ἰωνίας. τὰς δὲ κυανέας ἐποίησε παραπλησίως ταῖς πλαγκταῖς, ἀεὶ τοὺς μύθους ἀπό τινων ἱστοριῶν ἐνάγων. χαλεπὰς γάρ τινας μυθεύει πέτρας καθάπερ τὰς κυανέας φασίν· ἐξ οὗ καὶ συμπληγάδες καλοῦνται. διόπερ καὶ τὸν ἰάσονος παρέθηκε δι' αὐτῶν πλοῦν, καὶ ὁ κατὰ τὰς στήλας δὲ πορθμὸς, καὶ ὁ κατὰ σικελίαν ὑπηγόρευον αὐτῷ τὸν περὶ τῶν πλαγκτῶν μῦθον. πρὸς μὲν δὴ τὸ χεῖρον, ἀπὸ τῆς τοῦ ταρτάρου μυθοποιΐας αἰνίττοιτό τις ἂν τὴν τῶν τόπων μνήμην τῶν περὶ ταρτησσόν. πρὸς δὲ τὸ βέλτιον, ἐκ τούτων. ἥ τε γὰρ ἡρακλέους στρατιὰ μέχρι δεῦρο προελθοῦσα καὶ τῶν φοινίκων, ὑπέγραφον αὐτῷ πλοῦτόν τινα καὶ ῥᾳθυμίαν τῶν ἀνθρώπων· οὗτοι γοῦν φοίνιξιν οὕτως ἐγένοντο ὑποχείριοι, ὥστε τὰς πλείους τῶν ἐν τῇ τουρδιτανίᾳ πόλεων καὶ τῶν πλησίον τόπων ὑπ' ἐκείνων νῦν οἰκεῖσθαι. καὶ ἡ τοῦ ὀδυσσέως δὲ στρατιὰ δοκεῖ μοι δεῦρο γενηθεῖσα καὶ ἱστορηθεῖσα, ὑπ' αὐτοῦ παραδοῦναι πρόφασιν· ὥστε καὶ τὴν ὀδύσσειαν καθάπερ καὶ τὴν ἰλιάδα ἀπὸ τῶν συμβάντων μεταγαγεῖν εἰς ποίησιν, καὶ τὴν συνήθη τοῖς ποιηταῖς μυθοποιΐαν. οὐ γὰρ μόνον οἱ κατὰ τὴν ἰταλίαν καὶ σικελίαν τόποι, καὶ ἄλλοι τινὲς

τῶν τοιού-

τῶν τοιούτων, σημεῖα ὑπογράφουσιν, ἀλλὰ καὶ ἐν τῇ ἰβηρίᾳ ὀδύσσεια πόλις δείκνυται. καὶ ἀθηνᾶς ἱερόν· καὶ ἄλλα μυρία ἴχνη, τῆς ἐκείνου πλάνης. καὶ ἄλλων τῶν ἐκ τοῦ τρωϊκοῦ πολέμου γενομένων, καὶ ἐπίσης κακωσάντων τούς τε πολεμηθέντας, καὶ τοὺς ἑλόντας τὴν τροίαν. καὶ γὰρ οὗτοι καδμείαν νίκην ἐτύγχανον ἠρμένοι. τῶν τε οἴκων αὐτοῖς κατεφθαρμένων, καὶ τῶν λαφύρων εἰς ἕκαστον ὀλίγων ἐληλυθότων, συνέβη τοῖς περιλειφθεῖσιν ἀπιοῦσιν ἐκ τῶν κινδύνων, κατὰ λῃστείας τετράφθαι, καὶ τοῖς ἕλλησι τοῖς μὲν, διὰ τὸ ἐκπεπορθῆσθαι. τοῖς δὲ, διὰ τὴν αἰσχύνην ἑκάστου ὑπολαβόντος.
Αἰσχρόν τοι δηρόν τε μένειν, ἀπὸ τῶν οἰκείων κενεόν τε νέεσθαι. παρ' αὐτούς. πάλαι ἥ τε τοῦ αἰνείου παραδέδοται πλάνη καὶ ἀντήνορος καὶ ἡ τῶν ἐνετῶν. ὡσαύτως καὶ ἡ διομήδους τε καὶ μενελάου καὶ ὀδυσσέως καὶ ἄλλων πλειόνων. ὁ τοίνυν ποιητὴς τὰς τοσαύτας στρατιὰς ἐπὶ τὰ ἔσχατα τῆς ἰβηρίας ἱστορηκώς, πυνθανόμενος δὲ καὶ πλοῦτον καὶ τὰς ἄλλας ἀρετάς, οἱ γὰρ φοίνικες ἐδήλουν τοῦτο, ἐνταῦθα τὸν τῶν εὐσεβῶν ἔπλασε χῶρον. καὶ τὸ ἠλύσιον. πεδίον
οὗ φησιν ὁ πρωτεὺς ἀποικίσειν τὸν μενέλαον.

» Ἀλλά σ' ἐς ἠλύσιον πεδίον καὶ πείρατα γαίης
» Ἀθάνατοι πέμψουσιν ὅθι ξανθὸς ῥαδάμανθυς.
» Τῇ περ ῥηΐστη πέλει βιοτὴ ἀνθρώποισιν.
» Οὐ νιφετός· οὔτ' ἂρ χειμὼν πολύς· οὐδέ ποτ' ὄμβρος.
» Ἀλλ' αἰεὶ ζεφύροιο λιγὺ πνείοντας ἀήτας
» Ὠκεανὸς ἀνίησιν, ἀναψύχειν ἀνθρώπους.

Τό τε γὰρ εὐάερον καὶ τὸ εὔπνουν τοῦ ζεφύρου ταύτης ἐστὶ τῆς χώρας οἰκεῖον. ἑσπερίου τε καὶ ἀλεεινῆς οὔσης τό τε ἐπὶ τοῖς πέρασι τῆς γῆς. ἐφ' ἧς καὶ ἅδην μεμυθεῦσθαι φαμέν. ὅ τε ῥαδάμανθυς παρατεθεὶς, ὑπογράφει τὸν πλησίον τῷ μίνω τόπον. περὶ οὗ φησιν.

» Ἔνθ' ἤτοι μίνωα ἴδον διὸς ἀγλαὸν υἱόν.
» Χρύσεον σκῆπτρον ἔχοντα θεμιστεύοντα νέκυσι.

Καὶ οἱ μετὰ ταῦτα δὲ ποιηταὶ παραπλήσια θρυλλοῦσι, τήν τε ἐπὶ τὰς γηρυόνου βόας στρατείαν, καὶ τὴν ἐπὶ τὰ μῆλα τῶν ἑσπερίδων τὰ χρύσεα ὡσαύτως στρατείαν. καὶ μακάρων τινὰς νήσους κατονομάζοντες. ἃς καὶ νῦν δείκνυμεν ἃς ἴσμεν οὐ πολὺ ἄπωθεν τῶν ἄκρων τῆς μαυρουσίας, τῶν ἀντικειμένων τοῖς γαδείροις. τοὺς δὲ φοίνικας λέγω μηνυτάς. καὶ τῆς ἰβηρίας καὶ τῆς λιβύης τὴν ἀρίστην οὗτοι κατέσχον πρὸ τῆς ἡλικίας τοῦ ὁμήρου. καὶ διετέλεσαν κύριοι τῶν τόπων ὄντες μέχρις οὗ ῥωμαῖοι κατέλυσαν αὐτῶν τὴν ἡγεμονίαν. τοῦ δ' ἰβηρικοῦ πλούτου καὶ ταῦτα μαρτύρια, καρχηδόνιοι μετὰ τοῦ βάρκα στρατεύσαντες, κατέλαβον ὥς φασιν οἱ συγγραφεῖς, φάτναις ἀργυραῖς, καὶ πίθοις χρωμένους τοὺς ἐν τῇ τουρδητανίᾳ. ὑπολάβοι δ' ἄν τις ἐκ τῆς πολλῆς εὐδαιμονίας καὶ μακραίωνας ὀνομασθῆναι τοὺς ἐνθάδε ἀνθρώπους. καὶ μάλιστα τοὺς ἡγεμόνας. καὶ διὰ τοῦτο ἀνακρέοντα μὲν οὕτως εἰπεῖν. ἐγὼ τ' ἂν οὔτ' ἀμαλθίης βουλοίμην κέρας, οὔτε τὰ πεντήκοντά τε καὶ ἑκατὸν ταρτησσοῦ βασιλεῦσαι. ἡρόδοτον δὲ καὶ τὸ ὄνομα τοῦ βασιλέως καταγράψαι. καλέσαντα ἀργανθώνιον. ἢ γὰρ οὕτω δέξαι τ' ἄν τις, ἢ ἴσον τούτῳ τοῦ ἀνακρέοντος, ἢ κοινότερον. οὔτε ταρτησσοῦ πολὺν χρόνον βασιλεῦσαι. ἔνιοι δὲ ταρτησσὸν τὴν νῦν καρτηΐαν προσαγορεύουσι. τῇ δὲ τῆς χώρας εὐδαιμονίᾳ καὶ τὸ ἥμερον καὶ τὸ πολιτικὸν συνηκολούθησε τοῖς τουρδητανοῖς. καὶ τοῖς κελτικοῖς δὲ διὰ τὴν γειτνίασιν ὡς εἴρηκε πολύβιος διὰ τὴν συγγένειαν. ἀλλ' ἐκείνοις μὲν ἧττον. τὰ πολλὰ γὰρ κωμηδὸν ζῶσιν. οἱ μέντοι τουρδητανοί. καὶ μάλιστα οἱ περὶ τὸν βαῖτιν, τελέως εἰς τὸν ῥωμαίων μεταβέβληνται τρόπον. οὐδὲ τῆς διαλέκτου τῆς σφετέρας ἔτι μεμνημένοι. λατῖνοί τε οἱ πλεῖστοι γεγόνασι. καὶ ἐποίκους εἰλήφασι ῥωμαίους. ὥστε μικρὸν ἀπέχουσι τοῦ πάντες εἶναι ῥωμαῖοι. αἵ τε νῦν συνῳκισμέναι πόλεις. ἥ τε ἐν τοῖς κελτικοῖς παξαυγοῦστα. καὶ ἡ ἐν τοῖς τουρδούλοις αὐγοῦστα ἠμερίτα. καὶ ἡ περὶ τοὺς κελτίβηρας καισαραυγοῦστα. καὶ ἄλλαι ἔνιαι κατοικίαι, τὴν μεταβολὴν τῶν λεχθεισῶν πολιτειῶν ἐμφανίζουσι. καὶ δὴ τῶν ἰβήρων ὅσοι ταύτης εἰσὶ τῆς ἰδέας, στολάτοι λέγονται ἢ τογάτοι. ἐν δὲ τούτοις εἰσὶ καὶ οἱ κελτίβηρες οἱ πάντων νομισθέντες ποτὲ θηριωδέστατοι, ταῦτα μὲν περὶ τούτων. ἀπὸ δὲ τοῦ ἱεροῦ πάλιν ἀκρωτηρίου τὴν ἀρχὴν λαμβάνουσιν ἐπὶ θάτερον μέρος τῆς παραλίας, τὸ πρὸς τὸν τάγον, κόλπος ἐστίν. ἔπειτα ἄκρα τὸ βαρβάριον, καὶ αἱ τοῦ τάγου ἐκβολαὶ πλησίον ἐφ' ἃς εὐθύπλοιαι. στάδιοι δ' εἰσὶ δέκα. ἐνταῦθα τὸ καὶ ἀναχύσεις. ὧν μία ἐπὶ πλείους ἢ τετρακοσίους σταδίους ἀπὸ τοῦ λεχθέντος πύργου, καθ' ἣν ὑδρεύονται ἐπὶ λακέα. ὁ δὲ τάγος καὶ τὸ πλάτος ἔχει τοῦ στόματος, εἴκοσί που σταδίων, καὶ τὸ βάθος μέγα. ὥστε μυριαγωγοῖς ἀναπλεῖσθαι. δύο δ' ἀναχύσεις ἐν τοῖς ὑπερκειμένοις ποιεῖται πεδίοις ὅταν αἱ πλήμμυραι γίνωνται. ὥστε πελαγίζειν μὲν ἐπὶ ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα σταδίους. καὶ ποιεῖν πλωτὸν τὸ πεδίον. ἐν δὲ τῇ ἐπάνω ἀναχύσει καὶ νῆσον ἀπολαμβάνειν ὅσον τριάκοντα σταδίων τὸ μῆκος. πλάτος δὲ μικρὸν ἀπολεῖπον τοῦ μήκους, εὐαλσῆ καὶ εὐάμπελον. κεῖται δ' ἡ νῆσος κατὰ

λόγον ἀπολιπεῖν κειμένην ἐν ὄρει τοῦ ποταμοῦ πλησίον ἀφεστῶσαν τῆς θαλάσσης, ὅσον πεντακοσίους σταδίους. ἔχουσαν δὲ καὶ χώραν ἀγαθὴν τὴν πέριξ. καὶ τοὺς ἀνάπλους εὐπετεῖς. μέχρι μὲν πολλοῦ, καὶ μεγάλοις σκάφεσι. τὸ δὲ λοιπὸν τοῖς ποταμίοις λέμβοις. καὶ ὑπὲρ τὴν μόρωνα δ᾽ ἔτι μακρότερος ἀνάπλους ἐστί. ταύτῃ δὲ τῇ πόλει βροῦτος ὁ καλλαϊκὸς προσαγορευθεὶς, ὁρμητηρίῳ χρώμενος ἐπολέμησε πρὸς τοὺς λυσιτανοὺς, καὶ κατέστρεψε τούτους. τοῖς δὲ τοῦ ποταμοῦ πλίθροις ἐπεχείρησε τὴν ὄλοσιν. ὡς ἂν ἔχοι τοὺς ἀνάπλους ἐλευθέρους, καὶ τὰς ἀνακομιδὰς τῶν ἐπιτηδείων. ὥστε καὶ τῶν περὶ τὸν τάγον πόλεων αὗται κράτισται. πολύϊχθυς δ᾽ ὁ ποταμὸς, καὶ ὀστρέων πλήρεις. ῥεῖ δ᾽ ἔχων τὰς ἀρχὰς, ἐκ κελτιβήρων, διὰ οὐεττώνων καὶ καρπητανῶν, καὶ λυσιτανῶν, ἐπὶ δύσιν ἰσημερινὴν, μέχρι ποσοῦ. παράλληλος ὢν τῷ τε ἀνᾳ καὶ τῷ βαίτι. μετὰ δὲ ταῦτα ἀφιστάμενος ἐκείνων ἀποκλινόντων πρὸς τὴν νότιον παραλίαν. οἱ δ᾽ ὑπερκείμενοι τῶν λεχθέντων ὀρῶν, ὠρητανοὶ μέν εἰσι νοτιώτατοι. καὶ μέχρι τῆς παραλίας διήκοντες ἐκ μέρους τῆς ἐντὸς στηλῶν. καρπητανοί τε μετὰ τούτους πρὸς ἄρκτους. εἶτα οὐεττώνες καὶ οὐακκαῖοι. δι᾽ ὧν ὁ δούρειος ῥεῖ, κατ᾽ ἀκοντίαν πόλιν τῶν οὐακκαίων ἔχων διάβασιν. καλλαϊκοὶ δ᾽ ὕστατοι, τῆς ὀρεινῆς ἐπέχοντες πολλήν. διὸ καὶ δυσμαχώτατοι ὄντες, τῷ τε καταπολεμήσαντι τοὺς λυσιτανοὺς αὐτοὶ παρέσχον τὴν ἐπωνυμίαν. καὶ νῦν ἤδη τοὺς πλείστους τῶν λυσιτανῶν, καλαϊκοὺς καλεῖσθαι παρεσκεύασαν. τῆς μὲν οὖν ὠρητανίας, κρατιστεύουσά ἐστι πόλις καστουλον, καὶ ὠρεία. τοῦ δὲ τάγου τὰ πρὸς ἄρκτον, ἡ λυσιτανία ἐστί, μέγιστον τῶν ἰβηρικῶν ἐθνῶν. καὶ πλείστοις χρόνοις ὑπὸ ῥωμαίων πολεμηθέν. περιέχει δὲ τῆς χώρας ταύτης τὸ μὲν νότιον πλευρὸν ὁ τάγος. τὸ δ᾽ ἑσπέριον καὶ τὸ ἀρκτικὸν, ὁ ὠκεανός. τὸ δὲ ἑωθινὸν, οἵ τε καρπητανοὶ καὶ οἱ οὐεττώνες καὶ οὐακκαῖοι, καὶ καλλαϊκοὶ τὰ γνώριμα ἔθνη. τἆλλα δὲ οὐκ ἄξιον ὀνομάζειν, διὰ τὴν μικρότητα καὶ τὴν ἀδοξίαν. ὑπεναντίως δὲ τοῖς νῦν, ἔνιοι καὶ τούτους λυσιτανοὺς ὀνομάζουσιν. ὅμοροι δ᾽ εἰσὶν ἐκ τοῦ πρὸς ἕω μέρους. οἱ μὲν καλλαϊκοὶ, τῷ τῶν ἀστουρίων ἔθνει καὶ τοῖς ἴβηρσιν. οἱ δ᾽ ἄλλοι, τοῖς κελτίβηρσι. τὸ μὲν οὖν μῆκος μυρίων καὶ τρισχιλίων σταδίων. τὸ δὲ πλάτος, πολὺ ἔλαττον. ὃ ποιεῖ τὸ ἑωθινὸν πλευρὸν, εἰς τὴν ἀντικειμένην παραλίαν. ὑψηλὸν δ᾽ ἐστὶ τὸ ἑωθινὸν καὶ τραχύ. ἡ δ᾽ ὑποκειμένη χώρα, πεδιὰς πᾶσα. καὶ μέχρι θαλάττης. πλὴν ὀλίγων ὀρῶν οὐ μεγάλων. ᾗ δὴ καὶ τὸν ἀριστοτέλη φησὶν ὁ ποσειδώνιος, οὐκ ὀρθῶς αἰτιᾶσθαι τὴν παραλίαν καὶ τὴν μαυρουσίαν τῶν πλημμυρίδων καὶ τῶν ἀμπώτεων. παλιρροεῖν γάρ φάναι τὴν θάλατταν, διὰ τὸ τὰς ἄκρας, ὑψηλάς τε καὶ τραχείας εἶναι. δεχομένας τε τὸ κῦμα σκληρῶς, καὶ ἀνταποδιδούσας τῇ ἰβηρίᾳ. τἀναντία γὰρ θινώδεις εἶναι καὶ ταπεινὰς τὰς πλείστας, ὀρθῶς λέγων. ἡ δ᾽ οὖν χώρα περὶ ἧς λέγομεν, εὐδαίμων τέ ἐστι καὶ ποταμοῖς μεγάλοις διαρρεῖται καὶ μικροῖς ἅπασιν ἐκ τῶν ἑωθινῶν μερῶν, παραλλήλοις τῷ τάγῳ. ἔχουσι δὲ καὶ ἀνάπλους οἱ πλείους, καὶ ψῆγμα τοῦ χρυσοῦ πλεῖστον. γνωριμώτατοι δὲ τῶν ποταμῶν, ἐφεξῆς τῷ τάγῳ μουλιάδας, ἀνάπλους ἔχων μικροὺς, καὶ οὐακούα, ὡσαύτως. μετὰ δὲ τούτους, δούριος. μακρόθεν τε ῥέων παρὰ νουμαντίαν. καὶ πολλὰς ἄλλας τῶν κελτιβήρων. καὶ οὐακκαίων κατοικίας. μεγάλοις τ᾽ ἀναπλεόμενος σκάφεσιν, ἐπὶ ὀκτακοσίους σχεδόν τι, σταδίους. εἶτ᾽ ἄλλοι ποταμοί. καὶ μετὰ τούτους, ὁ τῆς λήθης. ὅν τινες λιμαίαν. οἱ δὲ, βελιῶνα καλοῦσι. καὶ οὗτος δ᾽ ἐκ κελτιβήρων καὶ οὐακκαίων ῥεῖ. καὶ ὁ μετ᾽ αὐτὸν βαῖνις. οἱ δὲ, μίνιον φασί. πολὺ μέγιστος τῶν ἐν λυσιτανίᾳ ποταμῶν. ἐπὶ ὀκτακοσίοις καὶ αὐτὸς ἀναπλεόμενος σταδίοις. ποσειδώνιος δὲ ἐκ καντάβρων καὶ αὐτὸν ῥεῖν φησί. πρόκειται δὲ τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ νῆσος, καὶ χηλαὶ δύο ὅρμους ἔχουσαι. ἐπαινεῖν δ᾽ ἄξιον τὴν φύσιν ὅτι τὰς ὄχθας ὑψηλὰς ἔχουσιν οἱ ποταμοί. καὶ ἱκανὰς δέχεσθαι τοῖς ῥείθροις, τὴν θάλατταν, πλημμυροῦσαν, ὥστε μὴ ὑπερχεῖσθαι, μὴ δ᾽ ἐπιπολάζειν ἐν τοῖς πεδίοις. τῆς μὲν οὖν βρούτου στρατείας ὅρος οὗτος. περαιτέρω δ᾽ εἰσὶν ἄλλοι πλείους ποταμοὶ παράλληλοι τοῖς λεχθεῖσιν. ὕστατοι δ᾽ οἰκοῦσιν ἀρτάβροι περὶ τὴν ἄκραν, ἣ καλεῖται νέριον. ἣ καὶ τῆς ἑσπερίου πλευρᾶς καὶ τῆς βορείου, πέρας ἐστί. περιοικοῦσι δ᾽ αὐτὴν κελτικοί. συγγενεῖς τῶν ἐπὶ τῷ ἀνᾳ. καὶ γὰρ τούτους καὶ τουρδούλους στρατεύσαντας ἐκεῖ, στασιάσαι φασὶ μετὰ τὴν διάβασιν τοῦ λιμαίου ποταμοῦ. πρὸς δὲ τῇ στάσει καὶ ἀποβολῆς τοῦ ἡγεμόνος γενομένης, καταμεῖναι σκεδασθέντας αὐτόθι. ἐκ τούτου δὲ καὶ τὸν ποταμὸν λήθης ἀγορευθῆναι. ἔχουσι δὲ οἱ ἀρτάβροι πόλεις συχνάς. ἐν κόλπῳ συνοικουμένας. ὃν οἱ πλέοντες, χρώμενοι τοῖς τόποις. ἀρτάβρων λιμένας προσαγορεύουσιν. οἱ δὲ νῦν τοὺς ἀρτάβρους, ἀροτρέβας καλοῦσιν. ἔθνη μὲν οὖν περὶ τριάκοντα τὴν χώραν νέμεται, τὴν μεταξὺ τάγου καὶ τῶν ἀρτάβρων. εὐδαίμονος δὲ τῆς χώρας ὑπαρχούσης, κατά τε καρποὺς καὶ βοσκήματα. καὶ τὸ τοῦ χρυσοῦ καὶ ἀργύρου καὶ τῶν παραπλησίων πλῆθος ὁμοίως, οἱ πλείους αὐτῶν, τὸν ἀπὸ τῆς γῆς ἀφέντες βίον, ἐν λῃστηρίοις διετέλουν πρός τε ἀλλήλους καὶ συνεχεῖ πολέμῳ, καὶ τοὺς ὁμόρους αὐτοῖς, διαβαίνοντες τὸν τάγον, ἕως ἔπαυσαν αὐτοὺς ῥωμαῖοι ταπεινώσαντες. καὶ κώμας ποιήσαντες τὰς πόλεις αὐτῶν τὰς πλείστας. ἐνίας δὲ καὶ συνοικίζοντες βέλτιον. ἤρξαντο δὲ τῆς ἀνομίας ταύτης οἱ ὀρεινοὶ καθάπερ εἰκός. λυπρὰν γὰρ νεμόμενοι καὶ μικρὰ κεκτημένοι, τῶν ἀλλοτρίων ἐπε-

θύμενοι. οἱ δέ, ἀμυνόμενοι τούτους, ἄκυροι τῶν ἰδίων ἔργων καθίσταντο ἐξ ἀνάγκης· ὡς ἀντὶ τοῦ γεωργεῖν ἐπολέμουν καὶ οὗτοι. καὶ συνέβαινε τὴν χώραν ἀμελουμένην, στεῖραν εἶναι τῶν ἐμφύτων ἀγαθῶν. οἰκεῖσθαι δ᾽ ὑπὸ λῃστῶν. τοὺς δ᾽ οὖν Λυσιτανούς φασιν, ἐνεδρευτικούς· ἐξερευνητικούς· ὀξεῖς· κούφους· εὐεξελίκτους· ἀσπίδιον δ᾽ αὐτοὺς δίπουν ἔχειν τὴν διάμετρον· κοῖλον εἰς τὸ πρόσθεν· τελαμῶσιν ἐξηρτημένον· οὔτε γὰρ πόρπακας, οὔτ᾽ ἀντιλαβὰς ἔχει· παραξιφὶς πρὸς τούτοις ἢ κοπίς· λινοθώρακες οἱ πλείους· σπάνιοι δὲ ἁλυσιδωτοῖς χρῶνται καὶ τριλοφίαις. οἱ δ᾽ ἄλλοι νευρίνοις κράνεσιν· οἱ πεζοὶ δὲ καὶ κνημῖδας ἔχουσιν· ἀκόντια δ᾽ ἕκαστος πλείω. τινὲς δὲ καὶ δόρατι χρῶνται. ἐπιδορατίδες δὲ χάλκεαι. ἐνίους δὲ τῶν προσοικούντων τῷ Δουρίῳ ποταμῷ Λακωνικῶς διάγειν φασίν. ἀλειπτηρίοις χρωμένους δίς· καὶ πυρίαις ἐκ λίθων διαπύρων, καὶ ψυχρολουτοῦντας. καὶ μονοτροφοῦντας καθαρείως καὶ λιτῶς. θυτικοὶ δ᾽ εἰσὶ Λυσιτανοί. τά τε σπλάγχνα ἐπιβλέπουσιν οὐκ ἐκτέμνοντες. προσεπιβλέπουσι δὲ καὶ τὰς ἐν τῇ πλευρᾷ φλέβας. καὶ ψηλαφῶντες δὲ τεκμαίρονται. σπλαγχνεύονται δὲ καὶ δι᾽ ἀνθρώπων αἰχμαλώτων, καλύπτοντες σάγοις· εἶθ᾽ ὅταν πληγῇ ὑπὸ τὰ σπλάγχνα, ὑπὸ τοῦ ἱεροσκόπου μαντεύονται, πρῶτον ἐκ τοῦ πτώματος. τῶν δ᾽ ἁλόντων τὰς χεῖρας ἀποκόπτοντες τὰς δεξιάς, ἀνατιθέασι. ἅπαντες δ᾽ οἱ ὄρειοι λιτοί. ὑδροπόται. χαμαιεῦναι. βαθεῖαν καὶ κατακεχυμένοι τὴν κόμην γυναικῶν δίκην. μιτρωσάμενοι δὲ τὰ μέτωπα μάχονται. τραγοφαγοῦσι δὲ μάλιστα. καὶ τῷ Ἄρει τράγον θύουσι. καὶ τοὺς αἰχμαλώτους καὶ ἵππους, ποιοῦσι δὲ καὶ ἑκατόμβας ἑκάστου γένους Ἑλληνικῶς, ὡς καὶ Πίνδαρός φησι

» πάντα θύειν ἑκατόν.

Τελοῦσι δὲ καὶ ἀγῶνας γυμνικοὺς καὶ ὁπλιτικοὺς καὶ ἱππικούς, πυγμῇ καὶ δρόμῳ καὶ ἀκροβολισμῷ, καὶ τῇ σπειρηδὸν μάχῃ. οἱ δ᾽ ὄρειοι τὰ δύο μέρη τοῦ ἔτους δρυοβαλάνῳ χρῶνται. ξηράναντες καὶ κόψαντες. εἶτα ἀλέσαντες καὶ ἀρτοποιησάμενοι. ὥστ᾽ ἀποτίθεσθαι εἰς χρόνον, χρῶνται δὲ καὶ ζύθει. οἴνῳ δὲ σπανίζονται. τὸν δὲ γενόμενον ταχὺ ἀναλίσκουσι κατευωχούμενοι μετὰ τῶν συγγενῶν. ἀντ᾽ ἐλαίου δὲ βουτύρῳ χρῶνται. καθήμενοί τε δειπνοῦσι περὶ τοὺς τοίχους, καθέδρας οἰκοδομητὰς ἔχοντες. προκάθηνται δὲ καθ᾽ ἡλικίαν καὶ τιμήν. περιφορητὸν δὲ τὸ δεῖπνον. καὶ παρὰ πότον ὀρχοῦνται πρὸς αὐλὸν καὶ σάλπιγγα χορεύοντες. ἀλλὰ καὶ ἀναλλόμενοι καὶ ὀκλάζοντες. ἐν Βαστητανίᾳ δὲ καὶ γυναῖκες ἀναμὶξ ἀντὶ προσαντιλαμβανόμεναι τῶν χειρῶν. μελανείμονες ἅπαντες. τὸ πλέον ἐν σάγοις, ἐν οἷσπερ καὶ στιβαδοκοιτοῦσι. κηρίνοις δὲ ἀγγείοις χρῶνται καθάπερ καὶ οἱ Κελτοί. αἱ δὲ γυναῖκες ἐν ἐνδύμασι καὶ ἀνθιναῖς ἐσθῆσι διάγουσιν. ἀντὶ δὲ νομίσματος οἱ λίαν ἐν βάθει φορτίων ἀμοιβῇ χρῶνται. ἢ τοῦ ἀργύρου ἐλάσματος ἀποτέμνοντες διδόασι. τοὺς δὲ θανατουμένους καταπετροῦσι. τοὺς δὲ πατραλοίας ἔξω τῶν ὀρῶν ἢ τῶν ποταμῶν καταλεύουσι. γαμοῦσι δ᾽ ὥσπερ οἱ Ἕλληνες. τοὺς δ᾽ ἀρρώστους ὥσπερ οἱ Αἰγύπτιοι τὸ παλαιόν, προτιθέασιν εἰς τὰς ὁδούς, τοῖς πεπειραμένοις τοῦ πάθους ὑποθήκης χάριν. διφθερίνοις τε πλοίοις ἐχρῶντο, ἕως ἐπὶ Βρούτου, διὰ τὰς πλημμυρίδας καὶ τὰ τενάγη. νυνὶ δὲ καὶ τὰ μονόξυλα ἤδη σπάνια. ἅλες πορφυροί· τριφθέντες δὲ λευκοί. ἔστι δὲ τῶν ὀρείων ὁ βίος οὗτος ὥσπερ ἔφην. λέγω τοὺς τὴν βόρειον πλευρὰν ἀφορίζοντας τῆς Ἰβηρίας, Καλλαϊκοὺς καὶ Ἄστουρας καὶ Καντάβρους μέχρις Οὐασκώνων καὶ τῆς Πυρήνης. ὁμοειδεῖς γὰρ ἁπάντων οἱ βίοι. ὀκνῶ δὲ τοῖς ὀνόμασι πλεονάζειν φεύγων τὸ ἀηδὲς τῆς γραφῆς, εἰ μή τινι πρὸς ἡδονῆς ἐστιν ἀκούειν Πλευταύρους καὶ Βαρδυήτας καὶ Ἀλλότριγας. καὶ ἄλλα χείρω καὶ ἀσημότερα τούτων ὀνόματα. τὸ δὲ δυσήμερον καὶ ἀγριῶδες, οὐκ ἐκ τοῦ πολεμεῖν συμβέβηκε μόνον. ἀλλὰ καὶ διὰ τὸν ἐκτοπισμόν, καὶ γὰρ ὁ πλοῦς ἐπ᾽ αὐτοὺς μακρὸς καὶ αἱ ὁδοί. δυσεπίμικτοι δ᾽ ὄντες ἀποβεβλήκασι τὸ κοινωνικὸν καὶ τὸ φιλάνθρωπον. ἧττον δὲ νῦν τοῦτο πάσχουσι, διὰ τὴν εἰρήνην καὶ τὴν τῶν Ῥωμαίων ἐπιδημίαν. ὅσοις δ᾽ ἧττον τοῦτο συμβαίνει, χαλεπώτεροί εἰσι καὶ θηριωδέστεροι. τοιαύτης δ᾽ οὔσης, καὶ ἀπὸ τῶν τόπων λυπρότητος ἐνίοις, καὶ τῶν ὀρῶν, εἰκὸς ἐπιτείνεσθαι τὴν τοιαύτην ἀτοπίαν. ἀλλὰ νῦν ὡς εἶπον πέπαυται πολεμοῦντα πάντα. τούς τε γὰρ συνέχοντας ἔτι νῦν μάλιστα τὰ λῃστήρια Καντάβρους, καὶ τοὺς γειτονεύοντας αὐτοῖς, κατέλυσεν ὁ Σεβαστὸς Καῖσαρ. καὶ ἀντὶ τοῦ προνομεύειν τοὺς τῶν Ῥωμαίων συμμάχους, στρατεύουσι νῦν ὑπὲρ τῶν Ῥωμαίων. οἵ τε Κωνιακοὶ καὶ οἱ πρὸς ταῖς πηγαῖς τοῦ Ἴβηρος οἰκοῦντες, πλὴν τουΐσοι. ὅ τ᾽ ἐκεῖνον διαδεξάμενος Τιβέριος τριῶν ταγμάτων στρατιωτικὸν ἐπιστήσας τοῖς τόποις, τὸ ἀποδειχθὲν ὑπὸ τοῦ Σεβαστοῦ Καίσαρος, οὐ μόνον εἰρηνικοὺς, ἀλλὰ καὶ πολιτικοὺς ἤδη τινὰς αὐτῶν ἀπεργασάμενος τυγχάνει. λοιπὴ δ᾽ ἐστὶ τῆς Ἰβηρίας, ἥ τε ἀπὸ τῶν Στηλῶν, μέχρι τῆς Πυρήνης καθ᾽ ἡμᾶς παραλία, καὶ ταύτης ὑποκειμένη μεσόγαια πᾶσα. τὸ μὲν πλάτος ἀνώμαλον. τὸ δὲ μῆκος μικρῷ πλεῖον ἢ τετρακισχιλίων σταδίων. τὸ δὲ τῆς παραλίας ἐπὶ πλέον καὶ δισχιλίοις εἴρηται σταδίοις. φασὶ δὲ ἀπὸ μὲν Κάλπης τοῦ κατὰ Στήλας ὄρους, ἐπὶ Καρχηδόνα Νέαν, δισχιλίοις καὶ διακοσίοις σταδίοις. οἰκεῖσθαι δὲ τὴν ἠιόνα ταύτην ἀπὸ Βαστητανῶν, οὓς καὶ Βαστούλους καλοῦσιν. ἐκ μέρους δὲ καὶ ὑπὸ Ὠρητανῶν. ἐντεῦθεν δ᾽ ἐπὶ τὸν Ἴβηρα ἄλλους τοσούτους σχεδόν τι. ταύτην δ᾽ ἔχειν Ἐδητανούς. ἐντὸς δέ,

τῆς ἴβηρος μέχρι πυρήνης καὶ τῶν πομπηίου ἀναθημάτων, χίλιοι καὶ ἑξακόσιοι. οἰκοῦσι δὲ αὐτὴν βαστητανῶν
τε ὀλίγοι, καὶ λοιπῶν τοὺς προσαγορευομένους ἰνδικήτας, μεμερισμένους τετραχῆ. κατὰ μέρος δέ,
ἀρξαμένοις ἀπὸ κάλπης, ῥάχις ἐστὶν ὀρεινὴ τῆς βαστητανίας καὶ τῶν ὠρητανῶν. δασεῖαν ὕλην ἔχουσα
καὶ μεγαλόδενδρον. διορίζουσα τὴν παραλίαν ἀπὸ τῆς μεσογαίας. πολλαχοῦ δὲ κἀνταῦθα ἐστὶ
χρυσεῖα καὶ ἄλλα μέταλλα. πόλις δ' ἐστὶν ἐν τῇ παραλίᾳ ταύτῃ πρώτη μάλακα. ἴσον διέχουσα τῆς
κάλπης, ὅσον καὶ τὰ γάδειρα. ἐμπόριον δ' ἐστὶν ἐν τοῖς ἐν τῇ περαίᾳ νομάσι. καὶ ταριχείας δ' ἔχει με-
γάλας. ταύτην τινὲς τῇ μαινάκῃ τὴν αὐτὴν νομίζουσιν. ἣν, ὑστάτην τῶν φωκαϊκῶν πόλεων πρὸς δύ-
σει κειμένην παρειλήφαμεν. οὐκ ἔστι δέ. ἀλλ' ἐκείνη μὲν ἀπωτέρω τῆς κάλπης ἐστὶ κατεσκαμμένη. τὰ
δ' ἴχνη σώζουσα ἑλληνικῆς πόλεως. ἡ δὲ μάλακα πλησίον μᾶλλον φοινίκης τῷ σχήματι. ἐφεξῆς δ'
ἐστὶν ἡ τῶν ἐξιτανῶν πόλις. ἐξ ἧς καὶ τὰ ταρίχη ἐπωνύμως λέγεται. μετὰ ταύτην ἄβδηρα. φοινί-
κων κτίσμα καὶ αὐτή. ὑπὲρ δὲ τῶν τόπων ἐν τῇ ὀρεινῇ δείκνυται ὀδύσσεια καὶ τὸ ἱερὸν τῆς ἀθηνᾶς
ἐν αὐτῇ. ὡς ποσειδώνιός τε εἴρηκε καὶ ἀρτεμίδωρος, καὶ ἀσκληπιάδης ὁ μυρλεανὸς ἀνὴρ, ἐν τῇ τουρ-
δητανίᾳ, παιδεύσας τὰ γραμματικά. καὶ περιήγησίν τινα τῶν ἐθνῶν ἐκδεδωκὼς τῶν ταύτης. οὗ-
τος δέ φησιν ὑπομνήματα τῆς πλάνης τῆς ὀδυσσέως ἐν τῷ ἱερῷ τῆς ἀθηνᾶς, ἀσπίδας προσπεπατ-
ταλεῦσθαι καὶ ἀκροστόλια. ἐν καλλαικοῖς δὲ τῶν μετὰ τεύκρου στρατευσάντων τινὰς οἰκῆσαι. καὶ ὑπάρ-
ξαι πόλεις αὐτόθι. τὴν μὲν καλουμένην, ἕλληνες. τὴν δέ, ἀμφίλοχοι, ὡς καὶ τοῦ ἀμφιλόχου τελευ-
τήσαντος δεῦρο. καὶ τῶν συνόντων πλανηθέντων μέχρι τῆς μεσογαίας. καὶ τῶν μεθ' ἡρακλέους δέ τι-
νας καὶ τῶν ἀπὸ μεσσήνης ἱστορεῖσθαι φησιν ἐποικίσαι τὴν ἰβηρίαν. τῆς δὲ κανταβρίας, μέρος τι κα-
τασχεῖν λάκωνας. καὶ οὗτος φησὶ καὶ ἄλλος. ἐνταῦθα δὲ, καὶ ὠψικέλλαν πόλιν. ὁ ὠψικέλλα, κτίσμα
λέγουσι τοῦ μετὰ ἀντήνορος, καὶ τῶν παίδων αὐτοῦ διαβάντος ἐς τὴν ἰταλίαν. καὶ ἐν τῇ λιβύῃ δὲ πε-
πιστεύκασι τινὲς τοῖς τῶν γαδειριτῶν ἐμπόροις προσέχοντες, ὡς καὶ ἀρτεμίδωρος εἴρηκεν. ὅτι οἱ ὑπὲρ
τῆς μαυρουσίας οἰκοῦντες πρὸς τοῖς ἑσπερίοις αἰθίοψι λωτοφάγοι καλοῦνται. σιτούμενοι λωτὸν
πόαν τινὰ καὶ ῥίζαν. οὐ δεόμενοι δὲ ποτοῦ. οὐδὲ ἔχοντες, διὰ τὴν αὐχμηρίαν. διατείνοντες μέχρι τῶν ὑπὲρ
τῆς κυρήνης τόπων. ἄλλοι τε πάλιν καλοῦνται λωτοφάγοι, τὴν ἑτέραν οἰκοῦντες τῶν πρὸ τῆς μι-
κρᾶς σύρτεως νήσων τὴν μήνιγγα. οὐ δὴ θαυμάζοι τις ἂν οὔτε τοῦ ποιητοῦ τὰ περὶ τὴν ὀδυσσέως πλά-
νην μυθογραφήσαντος τοιοῦτον τρόπον. ὥστ' ἔξω στηλῶν ἐν τῷ ἀτλαντικῷ πελάγει τὰ πολλὰ διαθέ-
σθαι, τῶν λεγομένων περὶ αὐτοῦ. τὰ γὰρ ἱστορούμενα ἐγγὺς ἦν καὶ τόποις καὶ τοῖς ἄλλοις τῶν ὑπ' ἐ-
κείνου πεπλασμένων. ὥστε οὐκ ἀπίθανον ἐποίησε τὸ πλάσμα. οὔτ' εἴ τινες αὐταῖς τε ταύταις ταῖς ἱ-
στορίαις πιστεύσαντες, καὶ τῇ πολυμαθίᾳ τοῦ ποιητοῦ. καὶ πρὸς ἐπιστημονικὰς ὑποθέσεις ἔτρεψαν τὴν
ὁμήρου ποίησιν. καθάπερ κράτης τε ὁ μαλλώτης ἐποίησε καὶ ἄλλοι τινές. οἱ δ' οὕτως ἀγροίκως ἐδέξαν-
το τὴν ἐπιχείρησιν τὴν τοιαύτην. ὥστε οὐ μόνον τὸν ποιητὴν σκαπανέως ἢ θεριστοῦ δίκην ἐκ πά-
σης τῆς τοιαύτης ἐπιστήμης ἐξέβαλον, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἁψαμένους τῆς τοιαύτης πραγματείας, καὶ μαι-
νομένους ὑπέλαβον. συνηγορίαν δὲ ἢ ἐπανόρθωσιν ἤ τι τοιοῦτον ἕτερον εἰς τὰ λεχθέντα ὑπ' ἐκείνων,
εἰσενεγκεῖν οὐκ ἐθάρρησεν. οὔτε τῶν γραμματικῶν, οὔτε τῶν περὶ τὰ μαθήματα δεινῶν οὐδείς. καί-
τοι ἔμοιγε δοκεῖ δυνατὸν εἶναι καὶ συνηγορῆσαι πολλοῖς τῶν λεχθέντων. καὶ εἰς ἐπανόρθωσιν ἀγα-
γεῖν. καὶ μάλιστα εἰς ταῦτα ὅσα πυθέας παρεκρούσατο τοὺς πιστεύσαντας αὐτῷ κατὰ ἄγνοιαν. τῶν
τε ἑσπερίων τόπων, καὶ τῶν προσβόρρων, τῶν παρὰ τὸν ὠκεανόν. ἀλλὰ ταῦτα μὲν ἐάσθω, λόγον ἔχον-
τα ἴδιον καὶ μακρόν. τῆς δὲ τῶν ἑλλήνων πλάνης τῆς εἰς τὰ βάρβαρα ἔθνη, νομίζοι τις ἂν αἴτιον τὸ
διεσπάσθαι κατὰ μέρη μικρά. καὶ δυναστείας ἐπιπλοκὴν οὐκ ἐχούσας πρὸς ἀλλήλους κατ' αὐ-
θάδειαν. ὥστε ἐκ τούτου πρὸς τοὺς ἐπιόντας ἔξωθεν ἀσθενεῖς εἶναι. τοῦτο δὲ αὔθαδες. ἐν δὲ τοῖς ἴ-
βηρσι μάλιστα ἐπέτεινε. προσλαβοῦσι καὶ τὸ πανοῦργον φύσει, καὶ τὸ μὴ ἁπλοῦν. ἐπίθετοι γὰρ καὶ
λῃστρικοὶ τοῖς βίοις ἐγένοντο τὰ μικρὰ τολμῶντες, μεγάλοις δ' οὐκ ἐπιβαλλόμενοι, διὰ τὸ μεγά-
λας κατασκευάζεσθαι δυνάμεις καὶ κοινωνίας. εἰ γὰρ δὴ συνασπίζειν ἐβούλοντο ἀλλήλοις, οὔτε
καρχηδονίοις ὑπῆρξεν ἂν καταστρέψασθαι, ἐπελθοῦσι τὴν πλείστην αὐτῶν ἐκ περιουσίας. καὶ ἔτι
πρότερον τυρίοις. εἶτα κελτοῖς. οἳ νῦν κελτίβηρες καὶ βήρωνες καλοῦνται, οὔτε τῷ λῃστῇ οὐιριάθῳ
καὶ σερτωρίῳ μετὰ ταῦτα. καὶ εἴ τινες ἕτεροι δυναστείας ἐπεθύμησαν μείζονος ῥωμαῖοι τε τῷ κατὰ
μέρη πρὸς τοὺς ἴβηρας πολεμεῖν καθ' ἑκάστην διὰ ταύτην τὴν δυναστείαν, πολύν τινα διετέλεσαν
χρόνον. ἄλλοτ' ἄλλους καταστρεφόμενοι τέως ἕως ἅπαντας ὑποχειρίους ἔλαβον διακοσιοστῷ ἔτει σχε-
δόν τι, ἢ μακρότερον. ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν περιήγησιν. μετὰ ταῦτα τοίνυν ἄβδηρα ἐστὶν ἡ καρχη-
δὼν ἡ νέα, κτίσμα ἀσδρούβα, τοῦ διαδεξαμένου βάρκαν τὸν ἀννίβα πατέρα. κρατίστη πολὺ τῶν
ταύτῃ πόλεων. καὶ γὰρ ἐρυμνοτάτη, καὶ τείχει κατεσκευασμένῳ καλῶς. καὶ λιμέσι καὶ λί-
μνῃ κεκόσμηται. καὶ τοῖς τῶν ἀργυρείων μετάλλοις περὶ ὧν εἰρήκαμεν. κἀνταῦθα δὲ καὶ ἐν
τοῖς πλησίον τόποις πολλὴ ἡ ταριχεία. καὶ ἔστι τοῦτο μεῖζον ἐμπόριον τῶν μὲν ἐκ θαλάττης τῆς

ἐν τῇ μεσογαίᾳ. τὴν δ᾽ ἐκεῖθεν τοῖς ἔξω πᾶσιν. ἡ δ᾽ ἐνθένδε μέχρι τοῦ ἴβηρος παραλία, κατὰ μέ-
σον πως τὸ διάστημα ἔχει τὸν σούκρωνα ποταμὸν, καὶ τὴν ἐκβολὴν αὐτοῦ, καὶ πόλιν ὁμώνυμον. ῥεῖ
δὲ ἐκ τοῦ συνεχοῦς ὄρους τῇ ὑπερκειμένῃ ῥάχει, τῆς τε μαλάκας καὶ τῶν περὶ καρχηδόνα ὑπερ/
κειμένων τόπων, περατὸς πεζῇ. παράλληλος δέ πως τῷ ἴβηρι. μικρὸν δὲ διέχει τῆς καρχηδόνος, ἢ τοῦ
ἴβηρος. μεταξὺ μὲν οὖν τοῦ σούκρωνος καὶ τῆς καρχηδόνος, τρία πολίχνια μασσαλιωτῶν εἰσὶν οὐ πο/
λὺ ἄπωθεν τοῦ ποταμοῦ. τούτων δ᾽ ἐστὶ γνωριμώτατον, τὸ ἡμεροσκοπεῖον. ἔχον ἐπὶ τῇ ἄκρᾳ τῆς ἐφε
σίας ἀρτέμιδος ἱερὸν σφόδρα τιμώμενον, ᾧ ἐχρήσατο ὁρμητηρίῳ κατὰ θάλατταν σερτώριος. ἐρυ/
μνὸν γάρ ἐστι καὶ λῃστρικόν. κάτοπτον δὲ ἐκ πολλοῦ τοῖς προσπλέουσι. καλεῖται δὲ διάνιον. οἷον ἀρ/
τεμίσιον. ἔχον σιδηρεῖα εὐφυῆ πλησίον, καὶ νησίδια. πλανησίαν καὶ πλουμβαρίαν. καὶ λιμνοθάλατταν
ὑπερκειμένην, ἔχουσαν ἐν κύκλῳ σταδίων τετρακοσίων. εἶθ᾽ ἡ τοῦ ἡρακλέους νῆσος ἤδη πρὸς καρχηδό/
να, ἣν καλοῦσι σκομβροαρίαν ἀπὸ τῶν ἁλισκομένων σκόμβρων. ἐξ ὧν τὸ ἄριστον σκευάζεται γάρον. εἴ/
κοσι δὲ διέχει σταδίους καὶ τέτταρας τῆς καρχηδόνος. πάλιν δ᾽ ἐπὶ θάτερα τοῦ σούκρωνος ἰόντι ἐπὶ
τὴν ἐκβολὴν τοῦ ἴβηρος, σαγουντὸς, ζακυνθίων κτίσμα, ἣν ἀννίβας κατασκάψας παρὰ τὰ συγκεί
μενα πρὸς ῥωμαίους, τὸν δεύτερον αὐτοῖς ἐξῆψε πόλεμον πρὸς καρχηδονίους. πλησίον δὲ πόλεις
εἰσὶ χεῤῥόνησός τε καὶ ὀλέαστρον καὶ καρταλίας. ἐπ᾽ αὐτῇ δὲ τῇ διαβάσει τοῦ ἴβηρος, δέρτωσα κα/
τοικία. ῥεῖ δὲ ὁ ἴβηρ ἀπὸ καντάβρων, ἔχων τὰς ἀρχὰς ἀπὸ μεσημβρίας, διὰ πολλοῦ πεδίου, παράλλη
λος τοῖς πυρηναίοις ὄρεσι. μεταξὺ δὲ τῶν τοῦ ἴβηρος ἐκτροπῶν, καὶ τῶν ἄκρων τῆς πυρήνης, ἐφ᾽ ὧν ἵδρυ
ται τὰ ἀναθήματα τοῦ πομπηΐου, πρώτη ταρακὼν ἐστὶ πόλις. ἀλίμενος μέν. ἐν κόλπῳ δὲ ἱδρυμένη.
καὶ κατεσκευασμένη τοῖς ἄλλοις ἱκανῶς. καὶ οὐχ ἧττον εὐανδροῦσα νυνὶ τῆς καρχηδόνος. πρὸς γὰρ
τὰς τῶν ἡγεμόνων ἐπιδημίας, εὐφυῶς ἔχει. καὶ ἔστιν ὡς περ μητρόπολις, οὐ τῆς ἐντὸς ἴβηρος μόνον,
ἀλλὰ καὶ τῆς ἐκτὸς τῆς πολλῆς. αἵ τε γυμνήσιαι νῆσοι προκείμεναι πλησίον. καὶ ἡ ἔβυσος, ἀξιόλογοι νῆ
σοι, τὴν θέσιν εὔκαιρον τῆς πόλεως ὑπαγορεύουσιν. ἐρατοσθένης δὲ, καὶ ναύσταθμον ἔχειν φησὶν αὐτὴν,
οὐδὲ ἀγκυροβόλοις, σφόδρα εὐτυχοῦσαν, ὡς ἀντιλέγων εἴρηκεν ἀρτεμίδωρος. καὶ ἡ σύμπασα δ᾽ ἀπὸ
στηλῶν, σπανίζεται λιμέσι μέχρι δεῦρο. ἐντεῦθεν δ᾽ ἤδη τὰ ἑξῆς, εὐλίμενα. καὶ χώρα ἀγαθή. τῶν τε
λεητανῶν, καὶ λαρτολαιητῶν καὶ ἄλλων τοιούτων μέχρι ἐμπορείου αὐτὸ δ᾽ ἐστὶ μασσαλιωτῶν κτίσμα. ὅ
σον τετρακισχιλίους διέχον τῆς πυρήνης σταδίους, καὶ τῶν μεθορίων τῆς ἰβηρίας πρὸς τὴν κελτικήν.
καὶ αὕτη δ᾽ ἐστὶ πᾶσα ἀγαθὴ καὶ εὐλίμενος. ἐνταῦθα δ᾽ ἐστὶ καὶ ἡ ῥοδόπη, πολίχνιον ἐμπορειτῶν. τινὲς
δὲ κτίσμα ῥοδίων φασί. κἀνταῦθα δὲ καὶ ἐν τῷ ἐμπορείῳ τὴν ἄρτεμιν τὴν ἐφεσίαν τιμῶσιν. ἐροῦμεν
δὲ τὴν αἰτίαν. ἐν τοῖς περὶ μασσαλίαν ᾤκουν οἱ ἐμπορεῖται πρότερον. νησίον τι προκείμενον, ὃ, νῦν κα/
λεῖται παλαιὰ πόλις. νῦν δ᾽ οἰκοῦσιν ἐν τῇ ἠπείρῳ. δίπολις δ᾽ ἐστὶ, τείχει διωρισμένη, πρότερον τῶν
ἰνδικητῶν τινὰς προσοίκους ἔχουσα. οἳ καίπερ ἰδίᾳ πολιτευόμενοι, κοινὸν ὅμως περίβολον ἔχειν ἐ/
βούλοντο πρὸς τοὺς ἕλληνας ἀσφαλείας χάριν. διπλοῦν δὲ τοῦτον, τείχει μέσῳ διωρισμένῳ, τῷ χρό
νῳ δ᾽ εἰς ταυτὸ πολίτευμα συνῆλθον μικτόν τι, ἔκ τε βαρβάρων καὶ ἑλληνικῶν νομίμων. ὅπερ καὶ
ἐπ᾽ ἄλλων πολλῶν συνέβη. ῥεῖ δὲ καὶ ποταμὸς πλησίον ἐκ τῆς πυρήνης ἔχων τὰς ἀρχάς. ἡ δ᾽ ἐκβολὴ
λιμήν ἐστι τοῖς ἐμπορείταις. λινουργοὶ δὲ ἱκανῶς οἱ ἐμπορεῖται. χώραν δὲ τὴν μεσόγαιαν ἔχουσι. τὴν μὲν,
ἀγαθήν. τὴν δὲ, σπαρτοφόρον. τῆς ἀχρηστοτέρας καὶ ἑλείας σχοίνου. καλοῦσι δὲ ἰουγγάριον πεδίον. τι
νὲς δὲ καὶ τῶν τῆς πυρήνης ἄκρων νέμονται, μέχρι τῶν ἀναθημάτων τοῦ πομπηΐου. δι᾽ ὧν βαδίζουσιν
εἰς τὴν ἔξω καλουμένην ἰβηρίαν ἐκ τῆς ἰταλίας. καὶ μάλιστα τὴν βαιτικήν. αὕτη δ᾽ ἡ ὁδὸς, ποτὲ μὲν
πλησιάζει τῇ θαλάττῃ. ποτὲ δ᾽ ἀφέστηκε. καὶ μάλιστα ἐν τοῖς πρὸς ἑσπέραν μέρεσι. φέρεται δὲ ἐπὶ τα/
ρακῶνα. ἀπό τε τῶν ἀναθημάτων τοῦ πομπηΐου, διὰ τοῦ ἰουγγαρίου πεδίου, καὶ βεττέρων, καὶ τοῦ μαραθῶ
νος καλουμένου πεδίου τῇ λατίνῃ γλώττῃ, φύοντος πολὺ τὸ μάραθον. ἐκ δὲ ταρακῶνος ἐπὶ τὸν πόρον
τοῦ ἴβηρος, κατὰ δέρτωσαν πόλιν, ἐντεῦθεν διὰ σαγουντοῦ καὶ σεταβὶς πόλεως ἐνεχθεῖσα κατὰ μι
κρὸν ἀφίσταται τῆς θαλάττης, καὶ συνάπτει τῷ σπαρταρίῳ. ὡς ἂν ἁλιοσχοινοῦντι καλουμένῳ πεδίῳ.
τοῦτο δ᾽ ἐστὶ μέγα καὶ ἄνυδρον. τὴν σχοινοπλοκικὴν φύον σπάρτον. ἐξαγωγὴν ἔχουσαν εἰς πάντα τό/
πον. καὶ μάλιστα εἰς τὴν ἰταλίαν. πρότερον μὲν οὖν διὰ μέσου τοῦ πεδίου καὶ ἐγκλάστας, συνέβαινεν
εἶναι τὴν ὁδὸν, χαλεπὴν καὶ πολλήν. νυνὶ δὲ, ἐπὶ τὰ πρὸς θάλατταν μέρη πεποιήκασιν αὐτήν. ἐπι/
ψαύουσαν μόνον τοῦ σχοινοῦντος εἰς ταυτὸ, καὶ τείνουσαν τῇ προτέρᾳ τὰ περὶ κάστωνα καὶ ὀβούλ
κωνα. δι᾽ ὧν εἴς τε κορδύβην, καὶ εἰς γάδειρα ἡ ὁδὸς τὰ μέγιστα τῶν ἐμπορείων. διέχει δὲ τῆς κορδύβης ἡ
ὀβούλκων περὶ τριακοσίους σταδίους. φασὶ δ᾽ οἱ συγγραφεῖς, ἐλθεῖν καὶ καίσαρα ἐκ ῥώμης ἑπτὰ καὶ εἴ
κοσιν ἡμέραις εἰς τὴν ὀβούλκωνα, καὶ τὸ στρατόπεδον τὸ ἐνταῦθα, ἡνίκα ἔμελλε συνάπτειν εἰς τὸν περὶ τὸν
μούνδαν πόλεμον. ἡ μὲν δὴ παραλία πᾶσα ἡ ἀπὸ στηλῶν μέχρι τῆς μεθορίας τῆς ἰβήρων καὶ κελτῶν, τοιαύτη.
ἡ δ᾽ ὑπερκειμένη μεσόγαια, λέγω δὲ τὴν ἐντὸς τῶν τε πυρηναίων ὀρῶν καὶ τῆς προσαρκτίου πλευρᾶς, μέχρι ἀστύ
ρων δυεῖν. μάλιστα ὄρεσι διορίζεται. τούτων δὲ, τὸ μὲν, παράλληλόν ἐστι τῇ πυρήνῃ. τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῶν καντά/

βρων ἔχει. τελευτὴν δ' ἐπὶ τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν. καλοῦσι δὲ τοῦτο ἰδούβεδα. ἕτερον δ' ἀπὸ τοῦ μέσου, διῆκον ἐπὶ τὴν δύσιν. ἐκκλῖνον δὲ πρὸς νότον, καὶ τὴν ἀπὸ στηλῶν παραλίαν. ὃ κατ' ἀρχὰς μὲν γεώλοφόν ἐστι καὶ ψιλόν. διέξεισι δὲ τὸ καλούμενον σπαρτάριον πεδίον. εἶτα συνάπτει τῷ δρυμῷ τῷ ὑπερκειμένῳ τῆς τε καρχηδονίας καὶ τῶν περὶ τὴν μάλακαν τόπων. καλεῖται δὲ ὀρόσπεδα. μεταξὺ μὲν δὴ τῆς πυρήνης καὶ τῆς ἰδουβέδας ὁ ἴβηρ ῥεῖ ποταμός, παράλληλος τοῖς ὄρεσιν ἀμφοτέροις. πληρούμενος ἐκ τῶν ἐντεῦθεν καταφερομένων ποταμῶν, καὶ τῶν ἄλλων ὑδάτων. ἐπὶ δὲ τῷ ἴβηρι, πόλις ἐστὶ καισαραυγοῦστα καλουμένη καὶ κέλσα κατοικία τις. ἔχουσα γεφύρας λιθίνης διάβασιν. συνοικεῖται δὲ ὑπὸ πλειόνων ἐθνῶν ἡ χώρα. γνωριμωτάτου δὲ τοῦ τῶν ἰακκητανῶν λεγομένου. τοῦτο δ' ἀρξάμενον ἀπὸ τῆς παρωρείας τῆς κατὰ τὴν πυρήνην εἰς τὰ πεδία πλατύνεται. καὶ συνάπτει τοῖς περὶ ἰλέρδαν καὶ ἰλεόσκαν χωρίοις, τοῖς τῶν ἰλεργετῶν οὐ πολὺ ἄπωθεν τοῦ ἴβηρος. ἐν δὲ ταῖς πόλεσι ταύταις, ἐπολέμει τὸ τελευταῖον σερτώριος. καὶ ἐν καλάγουρι οὐασκώνων πόλει. καὶ τῆς παραλίας ἐν ταρράκωνι. καὶ ἐν τῷ ἡμεροσκοπείῳ, μετὰ τὴν ἐκ κελτιβήρων ἔκπτωσιν. ἐτελεύτα δ' ἐν ὄσκῳ. καὶ περὶ ἰλέρδαν ὕστερον ἀφράνιος καὶ πετρήϊος οἱ τοῦ πομπηΐου στρατηγοὶ κατεπολεμήθησαν ὑπὸ καίσαρος τοῦ θεοῦ. διέχει δὲ ἡ ἰλέρδα τοῦ μὲν ἴβηρος, ὡς ἐπὶ δύσιν ἰόντι σταδίους ἑκατὸν ἑξήκοντα. ταρράκωνος δὲ πρὸς νότον περὶ υξ΄. πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ ἴσκας πεντακοσίους τετταράκοντα. διὰ τούτων δὲ τῶν μερῶν ἡ ἐκ ταρράκωνος ἐπὶ τοὺς ἐσχάτους ἐπὶ τῷ ὠκεανῷ οὐάσκωνας τοὺς κατὰ πομπαίλωνα καὶ τὴν ἐπ' αὐτῷ τῷ ὠκεανῷ ἰδάνουσαν πόλιν, ὁδός ἐστι σταδίων διχιλίων τετρακοσίων, πρὸς αὐτὰ τὰ τῆς ἀκουιτανίας ὅρια καὶ τῆς ἰβηρίας. ἰακκητανοὶ δ' εἰσὶν ἐν οἷς τότε μὲν σερτώριος ἐπολέμει πρὸς πομπήϊον. ὕστερον δὲ τοῦ πομπηΐου υἱὸς σέξτος, πρὸς τοὺς καίσαρος στρατηγούς. ὑπέρκειται δὲ τῆς ἰακκητανίας πρὸς ἄρκτον τὸ τῶν οὐασκώνων ἔθνος. ἐν ᾧ πόλις πομπέλων ὡς ἂν πομπηϊόπολις. αὐτῆς δὲ τῆς πυρήνης τὸ μὲν ἰβηρικὸν πλευρὸν, εὔδενδρόν ἐστι παντοδαπῆς ὕλης, καὶ τῆς ἀειθαλοῦς. τὸ δὲ κελτικὸν ψιλόν. τὰ δὲ μέσα περιέχει, καλῶς οἰκεῖσθαι δυναμένους αὐλῶνας. ἔχουσι δ' αὐτοὺς κερρητανοὶ τὸ πλέον τοῦ ἰβηρικοῦ φύλου. παρ' οἷς πέρναι διάφοροι συντίθενται ταῖς κανταβρικαῖς ἐνάμιλλοι, πρόσοδον οὐ μικρὰν τοῖς ἀνθρώποις παρέχουσαι. ὑπερβάλλοντι δὲ τὴν ἰδούβεδαν, ἡ κελτιβηρία, παραχρῆμα, πολλὴ καὶ ἀνώμαλος. τὸ μὲν πλέον αὐτῆς ἐστι τραχὺ καὶ ποταμόκλυστον. διὰ γὰρ τούτων ὅ τε ἄνας φέρεται καὶ ὁ τάγος. καὶ οἱ ἐφεξῆς ποταμοὶ οἱ πλείους οἱ ἐπὶ τὴν ἑσπερίαν θάλατταν καταφερόμενοι. τὴν ἀρχὴν ἔχοντες ἐκ τῆς ἰβηρίας, ὧν ὁ δουρίας φέρεται, παρὰ τὴν νομαντίαν καὶ τὴν σεργουντίαν. ὁ δὲ βαῖτις ἐκ τῆς ὀροσπέδας τὰς ἀρχὰς ἔχων, διὰ τῆς ὠρητανίας εἰς τὴν βαιτικὴν ῥεῖ. οἰκοῦσι δ' ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν τοῖς κελτίβηρσι βήρωνες. καντάβροις ὅμοροι τοῖς κονίσκοις. καὶ αὐτοὶ τοῦ κελτικοῦ στόλου γεγονότες. ὧν ἐστι πόλις οὐαρεία κατὰ τὴν τοῦ ἴβηρος διάβασιν κειμένη. συνεχεῖς δ' εἰσὶ καὶ βαρδυήταις. οὓς οἱ νῦν βαρδυάλους καλοῦσιν. ἐκ δὲ τοῦ ἑσπερίου τῶν τε ἀστύρων τινὲς καὶ τῶν καλλαϊκῶν καὶ οὐακκαίων. ἔτι δ' οὐεττόνων καὶ καρπητανῶν. ἐκ δὲ τῶν νοτίων, ὠρητανοί τε καὶ ὅσοι ἄλλοι τὴν ὀρόσπεδαν οἰκοῦσι βαστητανῶν τε καὶ ἐδητανῶν. πρὸς ἕω δὲ ἰδούβεδα. αὐτῶν τε τῶν κελτιβήρων εἰς τέτταρα μέρη διῃρημένων, οἱ κράτιστοι μάλιστα πρὸς ἕω εἰσί. καὶ πρὸς νότον, οἱ ουράκοι. συνάπτοντες καρπητανοῖς καὶ ταῖς τοῦ τάγου πηγαῖς. πόλις δ' αὐτῶν ὀνομαστοτάτη νομαντία. ἔδειξαν δὲ τὴν ἀρετὴν τῷ κελτιβηρικῷ πολέμῳ τῷ πρὸς ῥωμαίους, εἰκοσαετεῖ γενομένῳ. πολλὰ γὰρ στρατεύματα σὺν ἡγεμόσιν ἐφθάρη. τὸ δὲ τελευταῖον οἱ νομαντῖνοι πολιορκούμενοι διεκαρτέρησαν. πλὴν ὀλίγων τῶν ἐνδόντων τὸ τεῖχος. καὶ οἱ λούσωνες δὲ ἑῷοί εἰσι. συνάπτοντες καὶ αὐτοὶ ταῖς τοῦ τάγου πηγαῖς, τῶν δ' ἀρουακτῶν ἐστι καὶ σέγιδα πόλις καὶ παλλαντία. διέχει δὲ νομαντία τῆς καισαραυγούστας, ἣν ἔφαμεν ἐν τῷ ἴβηρι ἱδρύσθαι, σταδίους ἐπὶ ὀκτακοσίους. καὶ σεγόβριγα δ' ἐστὶ τῶν κελτιβήρων πόλις. καὶ βίλβιλις. περὶ ἃς μέτελλος καὶ σερτώριος ἐπολέμησαν. πολύβιος δὲ τὰ τῶν οὐακκαίων καὶ τῶν κελτιβήρων ἔθνη καὶ χωρία διεξιὼν, συλλέγει ταῖς ἄλλαις πόλεσι καὶ σεγεσάμαν καὶ ἰντερκατίαν. φησὶ δὲ ποσειδώνιος, μάρκον μάρκελλον πράξασθαι φόρον ἐκ τῆς κελτιβηρίας τάλαντα ἑξακόσια. ἐξ οὗ τεκμαίρεσθαι πάρεστιν ὅτι καὶ πολλοὶ ἦσαν οἱ κελτίβηρες, καὶ χρημάτων εὐποροῦντες. καίπερ οἰκοῦντες χώραν παράλυπρον. πολυβίου δ' εἰπόντος τριακοσίας αὐτῶν καταλῦσαι πόλεις τιβέριον γράκχον, κωμῳδῶν φησι τοῦτο τῷ γράκχῳ χαρίσασθαι τὸν ἄνδρα τοὺς πύργους καλοῦντα πόλεις ὥσπερ ἐν ταῖς θριαμβικαῖς πομπαῖς. καὶ ἴσως οὐκ ἄπιστον τοῦτο λέγει. καὶ γὰρ οἱ στρατηγοὶ καὶ οἱ συγγραφεῖς, ῥᾳδίως ἐπὶ τοῦτο φέρονται τὸ ψεῦσμα, καλλωπίζοντες τὰς πράξεις. ἐπεὶ καὶ οἱ φάσκοντες πλείους ἢ χιλίας τὰς τῶν ἰβήρων ὑπάρξαι πόλεις, ἐπὶ τοῦτο φέρεσθαί μοι δοκοῦσι τὰς μεγάλας κώμας, πόλεις ὀνομάζοντες. οὔτε γὰρ ἡ τῆς χώρας φύσις, πόλεων ἐπιδεκτικὴ πολλῶν ἐστι διὰ τὴν λυπρότητα, ἢ διὰ τὸν ἐκτοπισμὸν καὶ τὸ ἀνήμερον, οὔθ' οἱ βίοι καὶ αἱ πράξεις αὐτῶν ἔξω τῶν κατὰ τὴν παραλίαν τὴν καθ' ἡμᾶς ὑπαγορεύουσι τοιοῦτον οὐδέν. ἄγριοι γὰρ οἱ κατὰ κώμας οἰκοῦντες. τοιοῦτοι δ' οἱ πολλοὶ τῶν

ἰβήρων. αἱ δὲ πόλεις ἡμαυροῦσιν οὐδ' αὗται ῥᾳδίως. ὅταν πλεονάζῃ τὸ τὰς ὕλας ἐπὶ κακῷ τῶν
πλησίον οἰκούντων. μετὰ δὲ τοὺς κελτίβηρας, πρὸς νότον εἰσὶν οἱ τὸ ὄρος οἰκοῦντες, τὴν ὀροσπέ-
δαν καὶ τὴν περὶ τὸν σούκρωνα χώραν. σιδητανοὶ μέχρι καρχηδόνος, καὶ βαστητανοὶ, καὶ ὠρητα-
νοί. σχεδὸν δέ τι καὶ μέχρι μαλάκας. πελτασταὶ δ' ἅπαντες ὡς εἰπεῖν ὑπῆρξαν ἴβηρες, καὶ κοῦφοι κα-
τὰ τὸν ὁπλισμὸν διὰ τὰς λῃστείας. οἵους ἔφαμεν τοὺς λυσιτανούς, ἀκοντίῳ καὶ σφενδόνῃ καὶ μα-
χαίρᾳ χρώμενοι. ταῖς δὲ πεζαῖς δυνάμεσι, παρεμέμικτο καὶ ἱππεία, δεδιδαγμένων ἵππων ὀρειβατεῖν.
καὶ κατοκλάζεσθαι ῥᾳδίως ἀπὸ προστάγματος, ὅτε τούτου δέοι. φέρει δὲ ἡ ἰβηρία δορκάδας πολλάς.
καὶ ἵππους ἀγρίους. ἔστι δ' ὅπου καὶ αἱ λίμναι πληθύουσιν. ὄρνεις δὲ κύκνοι καὶ τὰ παραπλήσια. πολ-
λαὶ δὲ καὶ ὠτίδες. κάστορας φέρουσι μὲν οἱ ποταμοί. τὸ δὲ καστόρειον οὐκ ἔχει τὴν αὐτὴν δύναμιν τῷ
ποντικῷ. ἴδιον γὰρ τῷ ποντικῷ πάρεστι τὸ φαρμακῶδες, καθάπερ ἄλλοις πολλοῖς. ἐπεί φησιν ὁ πο-
σειδώνιος, καὶ ὁ κύπριος χαλκὸς μόνος φέρει τὴν καδμείαν λίθον. καὶ τὸ χαλκανθὲς καὶ τὸ σπόδιον.
ἴδιον δ' εἴρηκεν ἐν ἰβηρίᾳ ὁ ποσειδώνιος, καὶ τὸ τὰς κορώνας μελαίνας εἶναι. καὶ τὸ τοὺς ἵππους
τοὺς τῶν κελτιβήρων ὑποψαρούς ὄντας. ἐπειδὰν εἰς τὴν ἔξω μετατεθῶσιν ἰβηρίαν, μεταβάλλειν
τὴν χρόαν. ἐοικέναι δὲ τοῖς παρθικοῖς. καὶ γὰρ ταχεῖς εἶναι καὶ εὐδρόμους μᾶλλον τῶν ἄλλων. καὶ
τῶν ῥιζῶν τῶν εἰς τὴν βαφὴν χρησίμων, πλῆθος. ἐλαίας δὲ πέρι, καὶ ἀμπέλου καὶ συκῆς καὶ τῶν
παραπλησίων φυτῶν, ἡ καθ' ἡμᾶς ἰβηρικὴ παραλία πάντων εὐπορεῖ. συχνὴ δὲ καὶ τῶν ἐκτός. ἡ μὲν
παρωκεανῖτις ἡ πρόσβορος ἀμοιρεῖ διὰ τὰ ψύχη. ἡ δ' ἄλλη τὸ πλέον διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν ἀνθρώ-
πων. καὶ τὸ μὴ πρὸς διαγωγὴν, ἀλλὰ μᾶλλον πρὸς ἀνάγκην καὶ ὁρμὴν θηριώδη μετὰ ἔθους φαύλου
ζῆν. εἰ μή τις οἴεται πρὸς διαγωγὴν ζῆν, τοὺς οὔρῳ λουομένους ἐν δεξαμεναῖς παλαιουμένῳ. καὶ τοὺς
ὀδόντας σμηχομένους καὶ αὐτοὺς καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν. καθάπερ τοὺς καντάβρους φασὶ, καὶ
τοὺς ὁμόρους αὐτοῖς. καὶ τοῦτο δὲ καὶ τὸ χαμευνεῖν, κοινόν ἐστι τοῖς ἴβηρσι πρὸς τοὺς κελτούς. ἔνιοι δὲ
τοὺς καλλαϊκοὺς ἀθέους φασί. τοὺς δὲ κελτίβηρας καὶ τοὺς προσβόρους τῶν ὁμόρων αὐτοῖς ἀνωνύ-
μῳ τινὶ θεῷ, ταῖς πανσελήνοις νύκτωρ πρὸ τῶν πυλῶν πανοικί τε χορεύειν καὶ παννυχίζειν. τοὺς
δὲ οὐέττωνας τότε πρῶτον, εἰς τὸ τῶν ῥωμαίων στρατόπεδον. ἰδόντας τῶν ταξιαρχῶν τινας. ἀνακάμ-
πτοντας ἐν ταῖς ὁδοῖς περιπάτου χάριν. μανίαν ὑπολαβόντες, ἡγεῖσθαι τὴν ὁδὸν αὐτοῖς ἐπὶ τὰς σκη-
νάς. ὡς δέον ἢ μένειν καθ' ἡσυχίαν ἱδρυθέντας, ἢ μάχεσθαι. τῆς δὲ βαρβαρικῆς ἰδέας καὶ τὸν τῶν γυ-
ναικῶν ἐνίων κόσμον θείη τις ἂν, ὃν εἴρηκεν ἀρτεμίδωρος, ὅπου μὲν γὰρ περιτραχήλια σιδηρᾶ φορεῖν
αὐτάς φησιν, ἔχοντα κόρακας καμπτομένους ὑπὲρ κορυφῆς. καὶ προπίπτοντας πρὸ τοῦ μετώπου
πολύ. κατὰ τούτων δὲ τῶν κοράκων ὅτε βούλονται, κατασπᾶν τὸ κάλυμμα. ὥστε ἐμπετασθὲν
σκιάδιον τῷ προσώπῳ παρέχειν. καὶ νομίζειν κόσμον. ὅπου δὲ τυμπάνιον περικεῖσθαι, πρὸς μὲν
τῷ ἰνίῳ περιφερὲς, καὶ σφίγγον τὴν κεφαλὴν μέχρι τῶν παρωτίδων. εἰς ὕψος δὲ καὶ πλάτος ἐξυ-
πτιασμένον κατ' ὀλίγον. ἄλλας δὲ τὰ προκόμια ψιλοῦν. ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστ' ἀποστίλβειν τοῦ μετώπου
μᾶλλον. τὰς δ' ὅσον ποδιαῖον τὸ ὕψος ἐπιθεμένας στυλίσκον, περιπλέκειν αὐτῷ τὴν χαίτην. εἶτα
καλύπτρᾳ μελαίνῃ περιστέλλειν. πρὸς δὲ τῇ ἀληθείᾳ τῇ τοιαύτῃ πολλὰ καὶ ἑώραται καὶ μεμύθευ-
ται περὶ πάντων κοινῇ τῶν ἰβηρικῶν ἐθνῶν. διαφερόντως δὲ τῶν προσβόρων. οὐ μόνον δὲ τὰ πρὸς
ἀνδρίαν, ἀλλὰ καὶ τὰ πρὸς ὠμότητα καὶ ἀπόνοιαν θηριώδη. καὶ γὰρ τέκνα μητέρες ἔκτειναν. πρὶν
ἁλῶναι κατὰ τὸν πόλεμον τὸν ἐν καντάβροις. καὶ παιδίον δὲ τῶν δεδεμένων αἰχμαλώτων, γονέων καὶ
ἀδελφῶν ἔκτεινε πάντας, κελεύσαντος τοῦ πατρὸς σιδήρου κυριεύσαν. γυνὴ δὲ τοὺς συναλόντας.
κληθεὶς δέ τις εἰς μεθυσκομένους, ἔβαλεν αὑτὸν εἰς πυράν. κοινὰ δὲ καὶ ταῦτα πρὸς τὰ κελτικὰ ἔ-
θνη, καὶ τὰ θρᾴκια καὶ σκυθικὰ, κοινὰ δὲ καὶ πρὸς ἀνδρείαν, τήν τε τῶν ἀνδρῶν καὶ τὴν τῶν γυναι-
κῶν. γεωργοῦσαι γὰρ αὗται, τεκοῦσαί τε διακονοῦσι τοῖς ἀνδράσιν, ἐκείνους ἀνθ' ἑαυτῶν κατακλίνα-
σαι. ἔν τε τοῖς ἔργοις πολλάκις αὗται καὶ λούουσι καὶ σπαργανοῦσιν. ἀποκλίνασαι πρός τι ῥεῖθρον. ἐν
δὲ τῇ λιγυστικῇ φησιν ὁ ποσειδώνιος διηγεῖσθαι τὸν ξένον ἑαυτῷ χαρμόλεων, μασσαλιώτην ἄνδρα,
ὅτι μισθώσαιτο ἄνδρας ὁμοῦ καὶ γυναῖκας ἐπὶ σκαφητὸν, ὠδίνασα δὲ μία τῶν γυναικῶν ἀπέλ-
θοι ἀπὸ τοῦ ἔργου πλησίον. τεκοῦσα δ' ἐπανέλθοι ἐπὶ τὸ ἔργον αὐτίκα, ὅπως μὴ ἀπολέσειε τὸν μι-
σθὸν, κἀυτὸς ἐπιπόνως ἰδὼν ἐργαζομένην, οὐκ εἰδὼς τὴν αἰτίαν πρότερον ὀψὲ μάθοι. καὶ ἀφί-
σι, δοὺς τὸν μισθόν. ἡ δ' ἐκκομίσασα τὸ νήπιον, πρός τι κρηνίον, λούσασα καὶ σπαργανώσασα οἷς εἶ-
χε διασώσειεν οἴκαδε. οὐκ ἴδιον δὲ τῶν ἰβήρων οὐδὲ τοῦτο, τὸ δύο ἐφ' ἵππων κομίζεσθαι. κατὰ δὲ
τὰς μάχας τὸν ἕτερον πεζὸν ἀγωνίζεσθαι. οὐδὲ τὸ τῶν μυῶν πλῆθος ἴδιον, ἀφ' οὗ καὶ λοιμικαὶ νό-
σοι πολλάκις ἠκολούθησαν. συνέβη δ' ἐν τῇ κανταβρίᾳ τοῦτο τοῖς ῥωμαίοις. ὥστε καὶ μισθοὺς
ἄρνυσθαι, καὶ μυοθηροῦντες πρὸς μέτρον ἀποδειχθὲν διεσώζοντο μόλις. προσελάμβανε δὲ καὶ
ἄλλων σπάνις καὶ σίτου. ἐπεσιτίζοντο δὲ ἐκ τῆς ἀκυιτανίας χαλεπῶς διὰ τὰς δυσχωρίας. τῆς
δ' ἀπονοίας καὶ τοῦτο λέγεται τῆς κανταβρων. ὅτι ἁλόντες τινὲς, ἀναπεπηγότες ἐπὶ τῶν σταυ-

ρῶν, ἐπαιωνίζον. τὰ μὲν οὖν τοιαῦτα τῶν ἠθῶν, ἀγριότητός τινος παραδείγματ' ἂν εἴη. τὰ
δὲ τοιαῦτα, ἧττον μὲν ἴσως πολιτικά. οὐ θηριώδη δὲ, οἷον τὸ παρὰ τοῖς καντάβροις τοὺς ἄν-
δρας διδόναι ταῖς γυναιξὶ προῖκα, τὸ τὰς θυγατέρας κληρονόμους ἀπολείπεσθαι. τούς τε ἀ-
δελφοὺς ὑπὸ τούτων ἐκδίδοσθαι γυναιξίν. ἔχει γάρ τινα γυναικοκρατίαν. τοῦτο δ' οὐ πάνυ πολι-
τικόν. ἰβηρικὸν δὲ καὶ τὸ ἐν ἔθει παρατίθεσθαι τοξικὸν, ὃ συντιθέασιν ἐκ βοτάνης σελίνῳ προσομοί-
ας, ἄπονον. ὥστ' ἔχειν ἐν ἑτοίμῳ πρὸς τὰ ἀβούλητα. καὶ τὸ κατασπένδειν αὑτοὺς, οἷς ἂν προσθῶν-
ται. ὥστε ἀποθνήσκειν αὐτοὺς ὑπὲρ ἑαυτῶν, τινὲς μὲν οὖν, εἰς δύο μέρη διῃρῆσθαι φασὶ τὴν χώραν
ταύτην, καθάπερ εἴπομεν. ἄλλοι δὲ πεντάμερῆ λέγουσιν. οὐκ ἔστι δὲ τἀκριβὲς ἐν τούτοις ἀποδιδόναι,
διὰ τὰς μεταβολὰς καὶ τὴν ἀδοξίαν τῶν τόπων. ἐν γὰρ τοῖς γνωρίμοις καὶ ἐνδόξοις, αἵ τε μετανα-
στάσεις γνώριμοι, καὶ οἱ μερισμοὶ τῆς χώρας, καὶ αἱ μεταβολαὶ τῶν ὀνομάτων, καὶ εἴ τι ἄλλο παραπλή-
σιον. θρυλλεῖται γὰρ ὑπὸ πολλῶν καὶ μάλιστα τῶν ἑλλήνων οἳ λαλίστατοι πάντων γεγόνασιν. ὅσα δὲ
καὶ βάρβαρα καὶ ἐκτετοπισμένα καὶ μικρόχωρα καὶ διεσπασμένα, τούτων ὑπομνήματα οὔτ' ἀ-
σφαλῆ ἐστιν, οὔτε πολλά. ὅσα δὲ δὴ πόρρω τῶν ἑλλήνων, ἐπιτείνει τὴν ἄγνοιαν. οἱ δὲ τῶν ῥωμαίων συγ-
γραφεῖς μιμοῦνται μὲν τοὺς ἕλληνας. ἀλλ' οὐκ ἐπὶ πολύ. καὶ γὰρ ἃ λέγουσι παρὰ τῶν ἑλλήνων
μεταφέρουσιν. ἐξ ἑαυτῶν δ' οὐ πολὺ μὲν προσφέρονται τὸ φιλόειδημον. ὥσθ' ὁπόταν ἔλλειψις γένη-
ται παρ' ἐκείνων, οὐκ ἔστι πολὺ τὸ ἀναπληρούμενον ὑπὸ τῶν ἑτέρων. ἄλλως τε καὶ τῶν ὀνομάτων
ὅσα ἐνδοξότατα, τῶν πλείστων ὄντ' ἑλληνικῶν. ἐπεὶ καὶ ἰβηρίαν ὑπὸ μὲν τῶν προτέρων καλεῖσθαι
πᾶσαν τὴν ἔξω τοῦ ῥοδανοῦ καὶ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ ὑπὸ τῶν γαλατικῶν κόλπων σφιγγομένου. οἱ δὲ νῦν, ὅ-
ριον αὐτῆς τίθενται τὴν πυρήνην. συνωνύμως τε τὴν αὐτὴν ἰβηρίαν λέγουσι. καὶ ἱσπανίαν μόνην
ἐκάλουν. τὴν ἐντὸς τοῦ ἴβηρος. οἱ δ' ἔτι πρότερον αὐτοὺς τούτους ἰγλῆτας. οὐ πολλὴν χώραν νεμομέ-
νους ὥς φησιν ἀσκληπιάδης ὁ μυρλεανός. ῥωμαῖοι δὲ τὴν σύμπασαν καλέσαντες ὁμωνύμως ἰβη-
ρίαν τε καὶ ἱσπανίαν, τὸ μὲν, αὐτῆς μέρος εἶπον τὴν ἐκτός. τὸ δὲ ἕτερον τὴν ἐντός. ἄλλοτε δ' ἄλλως διαι-
ροῦσι πρὸς τοὺς καιροὺς πολιτευόμενοι. νυνὶ δὲ τῶν ἐπαρχιῶν, τῶν μὲν, ἀποδειχθεισῶν τῷ δήμῳ τε
καὶ τῇ συγκλήτῳ, τῶν δὲ, τῷ ἡγεμόνι τῶν ῥωμαίων, ἡ μὲν βαιτικὴ πρόσκειται τῷ δήμῳ. καὶ πέμπε-
ται στρατηγὸς ἐπ' αὐτὴν, ἔχων ταμίαν τε καὶ πρεσβευτήν. ὅριον δ' αὐτῆς τεθείκασι πρὸς ἕω πλη-
σίον καστάλωνος. ἡ δὲ λοιπὴ, καίσαρός ἐστι. πέμπονται δ' ἀπ' αὐτοῦ δύο πρεσβευταί. στρατηγικός τε καὶ ὑ-
πατικός. ὁ μὲν στρατηγικὸς, ἔχων σὺν αὐτῷ πρεσβευτήν. δικαιοδοτήσων, λυσιτανοῖς τοῖς παρακει-
μένοις τῇ βαιτικῇ. καὶ διατεινούσῃ μέχρι τοῦ δουρίου ποταμοῦ καὶ τῶν ἐκβολῶν αὐτοῦ. καλοῦσι γὰρ
τὴν χώραν ταύτην ἰδίως, οὕτως, ἐν τῷ παρόντι. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ καὶ ἡ αὐγοῦστα ἠμερίτα ἡ λοιπή. αὕτη
δ' ἐστὶν ἡ πλείστη τῆς ἰβηρίας ὑπὸ τῷ ὑπατικῷ ἡγεμόνι. στρατιάν τε ἔχοντι ἀξιόλογον τριῶν που ταγ-
μάτων καὶ πρεσβευτὰς τρεῖς. ὧν ὁ μὲν, δύο ἔχων τάγματα παραφρουρεῖ τὴν πέραν τοῦ δουρίου
πᾶσαν, ἐπὶ τὰς ἄρκτους. ἣν οἱ μὲν, πρότερον, λυσιτανοὺς ἔλεγον. οἱ δὲ νῦν καλαϊκοὺς καλοῦσι. συ-
νάπτει δὲ τούτοις τὰ προσάρκτια ὄρη μετὰ τῶν ἀστύρων καὶ τῶν καντάβρων. ῥεῖ δὲ διὰ τῶν ἀστύρων μέλ-
σος ποταμός. καὶ μικρὸν ἀπωτέρω πόλις νοῖγα. καὶ πλησίον ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ ἀνάχυσις, ὁρίζουσα τοὺς
ἄστυρας, ἀπὸ τῶν καντάβρων. τῆς δ' ἑξῆς παρορείας μέχρι πυρήνης, ὁ δεύτερος τῶν πρεσβευτῶν με-
τὰ τοῦ ἑτέρου τάγματος. ἐπισκοπεῖ δὲ ὁ τρίτος τὴν μεσόγαιαν. συνέχει δὲ τὰ τῶν ἤδη λεγομένων
ὡς ἂν εἰρηνικῶν, καὶ εἰς τὸ ἥμερον καὶ τὸν ἰταλικὸν τύπον μετακειμένων ἐν τῇ τηβεννικῇ ἐσθῆτι. οὗ-
τοι δ' εἰσὶν οἱ κελτίβηρες καὶ οἱ πλησίον τοῦ ἴβηρος ἑκατέρωθεν οἰκοῦντες, μέχρι τῶν πρὸς θαλάττῃ με-
ρῶν. αὐτὸς δὲ ὁ ἡγεμὼν διαχειμάζει μὲν ἐν τοῖς ἐπιθαλαττίοις μέρεσι. καὶ μάλιστα τῇ καρχηδόνι καὶ
τῇ ταρακῶνι, δικαιοδοτῶν. θέρους δὲ περίεισιν. ἐφορῶν ἀεί τινα τῶν δεομένων ἐπανορθώσεως. εἰσὶ δὲ
καὶ ἐπίτροποι τοῦ καίσαρος, ἱππικοὶ ἄνδρες. οἱ διανέμοντες τὰ χρήματα τοῖς στρατιώταις εἰς τὴν διοί-
κησιν τοῦ βίου. τῶν δὲ προκειμένων νήσων τῆς ἰβηρίας, τὰς μὲν πιτυούσσας δύο, καὶ τὰς γυμνασίας
δύο, καλοῦσι βαλιαρίδας, ἃς προκεῖσθαι συμβαίνει τῆς μεταξὺ ταρακῶνος καὶ σούκρωνος παραλί-
ας. ἐφ' ἧς ἵδρυται τὸ σάγουντον. εἰσὶ δὲ καὶ πελάγιαι μᾶλλον αἱ πιτυοῦσσαι καὶ πρὸς ἑσπέραν κεκλι-
μέναι τῶν γυμνασίων, καλεῖται δ' αὐτῶν ἡ μὲν, ἔβουσος. πόλιν ἔχουσα ὁμώνυμον. κύκλος δὲ τῆς νήσου
τετρακόσιοι στάδιοι. παρώμαλος τὸ πλάτος καὶ τὸ μῆκος. ἡ δὲ, ὀφιοῦσα. ἔρημος καὶ πολὺ ἐλάττων ταύ-
της πλησίον κειμένη. τῶν δὲ γυμνασίων ἡ μὲν μείζων, ἔχει δύο πόλεις. πάλμαν καὶ πολεντίαν. τὴν μὲν,
πρὸς ἕω κειμένην, τὴν πολεντίαν. τὴν δ' ἑτέραν πρὸς δύσιν. μῆκος δὲ τῆς νήσου μικρὸν ἀπολεῖπον τῶν
ἑξακοσίων σταδίων. πλάτος δὲ διακοσίων. ἀρτεμίδωρος δὲ διπλάσιον εἴρηκε καὶ τὸ πλάτος καὶ τὸ μῆ-
κος. ἡ δ' ἐλάττων ὡς ἑβδομήκοντα διέχει σταδίους τῆς πολεντίας. κατὰ μέγεθος μὲν οὖν πολὺ τῆς μεί-
ζονος ἀπολείπεται. κατὰ δὲ τὴν ἀρετὴν οὐδὲν αὐτῆς χείρων ἐστίν. ἄμφω γὰρ εὐδαίμονες καὶ εὐλί-
μενοι. χοιραδώδεις δέ ἐστι, κατὰ τὰ στόματα, ὥστε δεῖν προσοχῆς τοῖς εἰσπλέουσι. διὰ δὲ τὴν ἀρετὴν τῶν
τόπων καὶ οἱ κατοικοῦντες εἰρηναῖοι. καθάπερ καὶ οἱ κατὰ τὴν ἔβουσον. κακούργων δέ τινων ὀλίγων κοινω-

νίας συστησαμένων πρὸς τοὺς ἐν τοῖς πελάγεσι λῃστὰς, διεβλήθησαν ἅπαντες. καὶ διέβη μέτελλος ἐπ' αὐτοὺς, ὁ βαλλιαρικὸς προσαγορευθείς. ὅς τις καὶ τὰς πόλεις ἔκτισε. διὰ δὲ τὴν αὐτὴν ἀρετὴν ἐπιβουλευόμενοι, καίπερ εἰρηναῖοι ὄντες, ὅμως σφενδονῆται ἄριστοι λέγονται. καὶ τοῦτ' ἤσκησαν. ὥς φασι διαφερόντως, ἐξότου φοίνικες κατέσχον τὰς νήσους. οὗτοι δὲ καὶ ἐνδῦσαι λέγονται πρῶτοι τοὺς ἀνθρώπους χιτῶνας πλατυσήμους. ἄζωστοι δ' ἐπὶ τὸν ἀγῶνα ἐξήεσαν. αἰγίδα περὶ τῇ χειρὶ ἔχοντες ἢ πεπυρακτωμένον ἀκόντιον. σπάνιον δὲ, καὶ λελογχωμένον σιδήρῳ μικρῷ. σφενδόνας δὲ περὶ τῇ κεφαλῇ τρεῖς μελαγκραίνας, σχοίνου εἴδους, ἐξ οὗ πλέκεται τὰ σχοινία. καὶ φιλήτας τε ἐν ἑρμηνείᾳ. λευγαλέος δὲ χιτὼν πεπινωμένος. ἀμφὶ δ' ἀραιὴ ἰξὺς εἰλεῖται. κόμμα μελάγκραινον. ὡς σχοίνῳ ἐξωσμένῳ μελαγκραίνας, ἢ τριχίνας ἢ νευρίνας. τὴν μὲν μακρόκωλον πρὸς τὰς μακροβολίας. τὴν δὲ βραχύκωλον. πρὸς τὰς ἐν βραχεῖ βολάς. τὴν δὲ μέσην πρὸς τὰς μέσας. ἠσκοῦντο δ' ἐκ παίδων οὕτως ταῖς σφενδόναις, ὥστε οὐδ' ἄλλως τοῖς παισὶν ἄρτον ἐδίδοσαν, ἄνευ τοῦ τῇ σφενδόνῃ τυχεῖν. διόπερ ὁ μέτελλος προσπλέων πρὸς τὰς νήσους, δέρρεις ἔτεινεν ὑπὲρ τῶν καταστρωμάτων σκέπην πρὸς τὰς σφενδόνας. εἰσήγαγε δ' ἐποίκους τρισχιλίους τῶν ἐκ τῆς ἰβηρίας ῥωμαίων. πρὸς δὲ τῇ εὐκαρπίᾳ τῆς γῆς καὶ τὸ μηδὲν τῶν σινομένων θηρίων εὑρίσκεσθαι, ῥᾳδίως ἐνταῦθα πρόσεστιν. οὐδὲ γὰρ τοὺς λαγιδεῖς ἐπιχωρίους εἶναί φασιν. ἀλλὰ κομισθέντων ἐκ τῆς περαίας. ὑπό τινος ἄρρενος καὶ θηλείας γενέσθαι τὴν ἐπιγονήν. ἣ τοσαύτη κατ' ἀρχὰς ὑπῆρχεν, ὥστε καὶ οἴκους ἀνατρέπειν ἐκ τῆς ὑπονομῆς καὶ δένδρα. καὶ ἐπὶ τοὺς ῥωμαίους ὥσπερ εἶπον ἀναγκασθῆναι καταφυγεῖν τοὺς ἀνθρώπους. νῦν μέντοι τὸ εὐμεταχείριστον τῆς θήρας ἐπικρατεῖν οὐκ ἐᾷ τὴν βλάβην. ἀλλὰ λυσιτελῶς οἱ ἔχοντες καρποῦνται τὴν γῆν. αὗται μὲν οὖν ἐντὸς στηλῶν τῶν ἡρακλείων καλουμένων. πρὸς αὐταῖς δὲ δύο νησίδια. ὧν θάτερον ἥρας νῆσον ὀνομάζουσι. καὶ δή τινες καὶ ταύτας στήλας καλοῦσιν. ἔξω δὲ στηλῶν, τὰ γάδειρα περὶ ὧν τοσοῦτον μόνον εἰρήκαμεν ὅτι τῆς κάλπης διέχει, περὶ ἑπτακοσίους, καὶ πεντήκοντα σταδίους. τῆς δὲ ἐκβολῆς τοῦ βαίτιδος πλησίον ἵδρυται. πλείους δ' εἰσὶ λόγοι περὶ αὐτῆς. οὗτοι γάρ εἰσιν οἱ ἄνδρες. οἱ τὰ πλεῖστα, καὶ μέγιστα ναυκλήρια στέλλοντες, εἴς τε τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, καὶ εἰς τὴν ἐκτός. οὔτε μεγάλην οἰκοῦντες νῆσον. οὔτε τῆς περαίας νεμόμενοι πολλὴν οὔτ' ἄλλων εὐποροῦντες νήσων. ἀλλὰ πλέον οἰκοῦντες τὴν θάλατταν. ὀλίγοι δ' οἰκουροῦντες. ἢ ἐν ῥώμῃ διατρίβοντες. ἐπεὶ πλήθει γε οὐδεμιᾶς ἂν ἀπολείπεσθαι δόξειε τῶν ἔξω ῥώμης πόλεων. ἤκουσα γοῦν ἐν μιᾷ τῶν καθ' ἡμᾶς τιμήσεων, πεντακοσίους ἄνδρας τιμηθέντας ἱππικοὺς γαδειτανοὺς, ὅσους οὐδένας οὐδὲ τῶν ἰταλιωτῶν πλὴν τῶν παταουινίων. τοσοῦτοι δ' ὄντες νῆσον ἔχουσιν οὐ πολὺ μείζονα τῶν ἑκατὸν σταδίων τὸ μῆκος, πλάτος δ' ἔσθ' ὅπου, καὶ σταδιαῖον. πόλιν δὲ κατ' ἀρχὰς μὲν ᾤκουν παντάπασι μικρὸν, προσέκτισε δ' αὐτοῖς βάλβος γαδιτανὸς ὁ θριαμβεύσας, ἄλλην ἣν νέαν καλοῦσι. τὴν δ' ἐξ ἀμφοῖν διδύμην, οὐ πλειόνων εἴκοσι σταδίων οὖσαν τὴν περίμετρον. οὐδὲ ταύτης στενοχωρουμένην. ὀλίγοι γὰρ οἰκουροῦσιν ἐν αὐτῇ, διὰ τὸ πάντας θαλαττεύειν τὸ πλέον. τοὺς δὲ καὶ τὴν περαίαν οἰκεῖν. καὶ μάλιστα τὴν ἐπὶ τῆς προκειμένης νησῖδος διὰ τὴν εὐφυΐαν. ἣν ὥσπερ ἀντίπολιν πεποιήκασι τῇ διδύμῃ χαίροντες τῷ τόπῳ. ὀλίγοι δὲ κατὰ σύγκρισιν καὶ ταύτην οἰκοῦσι καὶ τὸ ἐπίνειον ὃ κατεσκεύασεν αὐτοῖς βάλβος ἐν τῇ περαίᾳ τῆς ἠπείρου. κεῖται δὲ ἐπὶ τῶν ἑσπερίων τῆς νήσου μερῶν ἡ πόλις. προσεχὲς δ' αὐτῇ τελευταῖον ἐστὶ τὸ κρόνιον πρὸς τῇ νησῖδι. τὸ δ' ἡράκλειον ἐπὶ θάτερα τέτραπται τὰ πρὸς ἕω, καθ' ὃ δὴ μάλιστα τῇ ἠπείρῳ, συνάπτουσα τυγχάνει ἡ νῆσος ὅσον σταδιαῖον πορθμὸν ἀπολείπουσα. καὶ λέγουσι μὲν διέχειν τῆς πόλεως δώδεκα μίλια τὸ ἱερὸν, ἴσον ποιοῦντες τὸν τῶν ἄθλων καὶ τὸν τῶν μιλίων ἀριθμόν. ἔστι δὲ μεῖζον καὶ σχεδόν τι τοσοῦτον, ὅσον ἐστὶ τὸ τοῦ μήκους τῆς νήσου, τὸ ἀπὸ τῆς δύσεως ἐπὶ τὴν ἀνατολήν. ἐρύθειαν δὲ τὰ γάδειρα ἔοικε λέγειν ὁ φερεκύδης. ἐν ᾗ τὰ περὶ τὸν γηρυόνην μυθεύουσιν. ἄλλοι δὲ τὴν παραβεβλημένην ταύτῃ τῇ πόλει νῆσον, πορθμῷ σταδιαίῳ διειργομένην, τὸ εὔβοτον ὁρῶντες, ὅτι τῶν νεμομένων αὐτόθι προβάτων τὸ γάλα, ὀρὸν οὐ ποιεῖ, τυροποιοῦσί τε πολλῷ ὕδατι μίξαντες διὰ τὴν πιότητα. ἐν πεντήκοντά τε ἡμέραις πνίγεται τὸ ζῷον εἰ μή τις ἀποσχάζοι τι τοῦ αἵματος. ξηρὰ δ' ἐστὶν ἣν νέμονται βοτάνην. ἀλλὰ πιαίνει σφόδρα. τεκμαίρονται δ' ἐκ τοῦ πεπλάσθαι τὸν μῦθον τὸν περὶ τὰ βουκόλια τοῦ γηρυόνου. κοινῇ μέντοι συνῴκισται πᾶς ὁ αἰγιαλός. περὶ δὲ τῆς κτίσεως τῶν γαδείρων τοιαῦτα λέγεται. μέμνηνται γαδιτανοὶ χρησμοῦ τινος. ὅν τινα γενέσθαι φασὶ τυρίοις, κελεύοντα ἐπὶ τὰς ἡρακλέους στήλας ἀποικίαν πέμψαι. τοὺς δὲ πεμφθέντας κατασκοπῆς χάριν. ἐπειδὴ κατὰ τὸν πορθμὸν ἐγένοντο τὸν κατὰ τὴν κάλπην, νομίσαντες τερμόνας εἶναι τῆς οἰκουμένης καὶ τῆς ἡρακλέους στρατείας τὰ ἄκρα ποιοῦντα τὸν πορθμόν. ταῦτα δ' αὐτὰ καὶ στήλας ὀνομάζειν τὸ λόγιον, καταχθῆναι εἴς τι χωρίον ἐντὸς τῶν στενῶν. ἐν ᾧ νῦν ἐστιν ἡ τῶν ἀξιτανῶν πόλις. ἐνταῦθα δὲ θύσαντες μὴ γενομένων καλῶν τῶν ἱερείων, ἀνακάμψαι πάλιν. χρόνῳ δ' ὕστερον τοὺς πεμφθέντας προελθεῖν ἔξω τοῦ πορθμοῦ περὶ χιλίους καὶ πεντακοσίους σταδίους εἰς νῆσον ἡρακλέους ἱεράν, κειμένην κατὰ πόλιν ὀνόβαν τῆς ἰβηρίας, καὶ νομίσαντας ἐνταῦθα εἶναι τὰς στήλας

θῦσαι τῷ θεῷ· μὴ γενομένων δὲ καλῶν τῶν ἱερείων ἐπανελθεῖν οἴκαδε. τῷ δὲ τρίτῳ στόλῳ τοὺς ἀφικομένους, Γάδειρα, κτίσαι, καὶ ἱδρύσασθαι, τὸ ἱερὸν ἐπὶ τοῖς ἑῴοις τῆς νήσου, τὴν δὲ πόλιν, ἐπὶ τοῖς ἑσπερίοις. διὰ δὲ τοῦτο, τοὺς μὲν, δοκεῖν τὰ ἄκρα τοῦ πορθμοῦ τὰς στήλας εἶναι. τοὺς δὲ, τὰ Γάδειρα. τοὺς δὲ ἔτι πορρώτερον τῶν Γαδείρων ἔξω προκεῖσθαι. ἔνιοι δὲ στήλας ὑπέλαβον τὴν Κάλπην καὶ τὴν Ἀβύλυκα, τὸ ἀντικείμενον ὄρος ἐκ τῆς Λιβύης. ὅ φησιν Ἐρατοσθένης ἐν τῷ Μεταγωνίῳ νομαδικῷ ἔθνει ἱδρῦσθαι. οἱ δὲ, τὰς πλησίον ἑκατέρου νησῖδας. ὧν τὴν ἑτέραν Ἥρας νῆσον ὀνομάζουσιν. Ἀρτεμίδωρος δὲ τὴν μὲν τῆς Ἥρας νῆσον, καὶ ἱερὸν λέγει αὐτῆς ἄλλην δέ φησιν εἶναι τινά. οὐδ' Ἀβύλυκα, καὶ ὄρος. οὐδὲ Μεταγώνιον ἔθνος. καὶ τὰς πλαγκτὰς καὶ τὰς συμπληγάδας ἐνθάδε μεταφέρουσί τινες. ταύτας εἶναι νομίζοντες στήλας. ἃς Πίνδαρος καλεῖ πύλας Γαδειρίδας. εἰς ταύτας ὑστάτας ἀφῖχθαι φάσκων τὸν Ἡρακλέα. καὶ Δικαίαρχος δὲ, καὶ Ἐρατοσθένης καὶ Πολύβιος καὶ οἱ πλεῖστοι τῶν Ἑλλήνων περὶ τὸν πορθμὸν ἀποφαίνουσι τὰς στήλας. οἱ δὲ Ἴβηρες καὶ Λίβυες ἐν Γαδείροις εἶναι φασίν. οὐδὲν γὰρ ἐοικέναι στήλαις τὰ περὶ τὸν πορθμόν. οἱ δὲ τὰς ἐν τῷ Ἡρακλείῳ τῷ ἐν Γαδείροις, χαλκᾶς ὀκταπήχεις. ἐν αἷς ἀναγέγραπται τὸ ἀνάλωμα τῆς κατασκευῆς τοῦ ἱεροῦ ταύτας λέγεσθαι φασίν. ἐφ' ἃς ἐρχόμενοι οἱ τελέσαντες τὸν πλοῦν, καὶ θύοντες τῷ Ἡρακλεῖ, διαβοηθῆναι παρασκευάσαι. ὡς τοῦτ' εἶναι καὶ τῆς καὶ θαλάττης τὸ πέρας. τοῦτον δ' εἶναι πιθανώτατον καὶ Ποσειδώνιος ἡγεῖται τὸν λόγον. τὸν δὲ χρησμὸν καὶ τοὺς πολλοὺς ἀποστόλους, ψεῦσμα φοινικόν. περὶ μὲν οὖν τῶν ἀποστόλων τί ἄν τις διισχυρίσαιτο, πρὸς ἔλεγχον ἢ πίστιν, οὐδετέρως παρὰ λόγον. τὸ δὲ τὰς νησῖδας ἢ τὰ ὄρη μὴ φάσκειν ἐοικέναι στήλαις ἀλλὰ ζητεῖν ἐπὶ τῶν κυρίως λεγομένων στηλῶν τοὺς τῆς οἰκουμένης ὅρους ἢ τῆς στρατείας τῆς Ἡρακλέους. ἔχει μέν τινα νοῦν. ἔθος γὰρ δὴ παλαιὸν ὑπῆρχε τὸ τίθεσθαι τοιούτους ὅρους, καθάπερ οἱ Ῥηγῖνοι τὴν στηλίδα ἔθεσαν τὴν ἐπὶ τῷ πορθμῷ κειμένην πυργίον τι. καὶ ὁ τοῦ Πελώρου λεγόμενος πύργος ἀντίκειται ταύτῃ τῇ στηλίδι, καὶ οἱ Φιλαίνων λεγόμενοι βωμοὶ, κατὰ μέσην που τὴν μεταξὺ τῶν Σύρτεων γῆν. καὶ ἐπὶ τῷ ἰσθμῷ τῷ Κορινθιακῷ μνημονεύεται στήλη τις ἱδρυμένη πρότερον, ἣν ἔστησαν κοινῇ οἱ τὴν Ἀττικὴν σὺν τῇ Μεγαρίδι κατασχόντες Ἴωνες, ἐξελαθέντες ἐκ τῆς Πελοποννήσου. καὶ οἱ κατασχόντες τὴν Πελοπόννησον ἐπιγράψαντες. ἐπὶ μὲν τοῦ πρὸς τῇ Μεγαρίδι μέρους, τάδ' οὐχὶ Πελοπόννησος. ἀλλ' Ἰωνία. ἐκ δὲ θατέρου τάδ' ἐστὶ Πελοπόννησος. οὐκ Ἰωνία. Ἀλέξανδρος δὲ τῆς Ἰνδικῆς στρατιᾶς ὅρια βωμοὺς ἔθετο ἐν τοῖς τόποις. εἰς οὓς ὑστάτους ἀφίκετο τῶν πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς Ἰνδῶν. μιμούμενος τὸν Ἡρακλέα καὶ τὸν Διόνυσον. ἦν μὲν δὴ τὸ ἔθος τοῦτο. ἀλλὰ καὶ τοὺς τόπους εἰκός ἐστι μεταλαμβάνειν τὴν αὐτὴν προσηγορίαν. καὶ μάλιστα ἐπειδὰν ὁ χρόνος διαφθείρῃ τοὺς τεθέντας ὅρους. οὐ γὰρ νῦν οἱ Φιλαίνων μένουσι βωμοὶ, ἀλλ' ὁ τόπος μετείληφε τὴν προσηγορίαν. οὐδὲ ἐν τῇ Ἰνδικῇ στήλας φασὶν ὁραθῆναι κειμένας. οὔθ' Ἡρακλέους οὔτε Διονύσου, καὶ λεγομένων μέν τοι, καὶ δεικνυμένων τῶν τόπων τινῶν, οἱ Μακεδόνες ἐπίστευον τούτους εἶναι στήλας ἐν οἷς τι σημεῖον εὕρισκον ἢ τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ἱστορουμένων, ἢ τῶν περὶ τὸν Ἡρακλέα. καὶ ταῦθα δὴ μὲν πρώτους οὐκ ἂν ἀπιστήσαι τις, ὅροις χρήσασθαι χειροκμήτοις τισὶ βωμοῖς ἢ πύργοις ἢ στήλαις ἐπὶ τῶν τόπων εἰς οὓς ὑστάτους ἧκον τοὺς ἐπιφανεστάτους. ἐπιφανέστατοι δ' οἱ πορθμοὶ, καὶ τὰ ἐπικείμενα ὄρη, καὶ αἱ νησῖδες πρὸς τὸ ἀποδηλοῦν ἐσχατιάς τε καὶ ἀρχὰς τόπων. ἐκλιπόντων δὲ τῶν χειροκμήτων ὑπομνημάτων, μετενεχθῆναι τὸ ὄνομα εἰς τοὺς τόπους, εἴτε τὰς νησῖδάς τις βούλεται λέγειν, εἴτε τὰς ἄκρας τὰς ποιούσας τὸν πορθμόν. τοῦτο γὰρ ἤδη διορίσασθαι χαλεπὸν, ποτέροις χρὴ προσάψαι τὴν ἐπίκλησιν, διὰ τὸ ἀμφοτέροις ἐοικέναι τὰς στήλας. λέγω δὲ ἐοικέναι διότι ἐν τοῖς τοιούτοις ἵδρυνται τόποις, οἳ σαφῶς ὑπαγορεύουσι τὰς ἐσχατιάς. καθ' ὃ καὶ στόμα εἴρηται ὁ πορθμὸς, καὶ οὗτος καὶ ἄλλοι πλείους. τὸ δὲ στόμα πρὸς μὲν εἴσπλουν ἀρχή ἐστι. πρὸς δὲ ἔκπλουν ἔσχατον. τὰς οὖν ἐπὶ τῷ στόματι νησῖδας ἔχοντα, τὸ εὐπερίγραφόν τε, καὶ σημειῶδες, οὐ φαύλως στήλαις ἀπεικάζοι τις ἄν. ὡς δ' αὔτως καὶ τὰ ὄρη τὰ ἐπικείμενα τῷ πορθμῷ. καὶ ἐξοχήν τινα τοιαύτην ἐκφαίνοντα οἵας αἱ στυλίδες. ἢ αἱ στῆλαι, καὶ ὁ Πίνδαρος οὕτως ἂν ὀρθῶς λέγοι πύλας Γαδειρίδας εἰ ἐπὶ τοῦ στόματος νοοῖντο αἱ στῆλαι, πύλαις γὰρ ἔοικε τὰ στόματα. τὰ δὲ Γάδειρα οὐκ ἐν τοιούτοις ἵδρυται τόποις, ὥστ' ἀποδηλοῦν ἐσχατιάν. ἀλλ' ἐν μέσῃ πως κεῖται μεγάλῃ παραλίᾳ κολπώδει. τὸ δὲ ἐπ' αὐτὰς ἀναφέρειν τὰς ἐν τῷ Ἡρακλείῳ στήλας τὸ ἐνθάδε, ἧττον εὔλογον ἐμοὶ φαίνεται. οὐ γὰρ ἐμπόρων, ἀλλ' ἡγεμόνων μᾶλλον ἀρξάντων, τοῦ ὀνόματος τούτου κρατῆσαι πιθανὸν τὴν δόξαν. καθάπερ καὶ ἐπὶ τῶν Ἰνδικῶν στηλῶν, ἄλλως τε καὶ ἡ ἐπιγραφὴ ἥν φασιν οὐκ ἀφίδρυμα ἱερὸν δηλοῦσα, ἀλλὰ ἀναλωμάτων κεφάλαιον, ἀντιμαρτυρεῖ τῷ λόγῳ. τὰς γὰρ Ἡρακλείους στήλας, μνημεῖα εἶναι δεῖ τῆς ἐκείνου μεγαλουργίας, οὐ τῆς Φοινίκων δαπάνης. φησὶ δὲ ὁ Πολύβιος κρήνην ἐν τῷ Ἡρακλείῳ τῷ ἐν Γαδείροις εἶναι. βαθμῶν ὀλίγων κατάβασιν ἔχουσαν εἰς τὸ ὕδωρ, πότιμον δὲ εἶναι. ταύτην ταῖς παλιρροίαις τῆς θαλάττης ἀντιπαθεῖν. κατὰ μὲν τὰς πλήμας, ἐκλείπουσαν. κατὰ δὲ τὰς ἀμπώτεις, πληρουμένην. αἰτιᾶται δ' ὅτι τὸ πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ βάθους εἰς τὴν ἐπιφάνειαν τῆς γῆς ἐκπῖπτον, καλυφθείσης μὲν αὐτῆς ὑπὸ τοῦ κύματος κατὰ τὰς ἐπιβάσεις τῆς θαλάττης, εἴργεται τῶν τοιούτων ἐξόδων οἰκείων. ἀναστρέψαν δὲ εἰς τὸ ἐντὸς, ἐμφράτ-

πει τοὺς τῆς πηγῆς πόρους, καὶ ποιεῖ λειψυδρίαν. γυμνωθείσης δὲ πάλιν αὐθυπορῆσαι ἐλευθέρως τὰς
φλέβας τῆς πηγῆς. ὥστ' ἀναβλύειν εὐπόρως. ἀρτεμίδωρος δὲ ἀντειπὼν τούτῳ. καὶ ἅμα παρ' αὑτοῦ τι-
να θεὶς αἰτίαν, μνησθεὶς δὲ, καὶ τῆς σιλανοῦ δόξης τοῦ συγγραφέως, οὔ μοι δοκεῖ μνήμης ἄξια εἰπεῖν,
ὡς ἂν ἰδιώτης περὶ ταῦτα, καὶ αὐτὸς καὶ σιλανός. ποσειδώνιος δὲ ψευδῆ λέγων εἶναι τὴν ἱστορίαν
ταύτην, δύο φησὶν εἶναι φρέατα ἐν τῷ ἡρακλείῳ. καὶ τρίτον ἐν τῇ πόλει. τῶν δὲ ἐν τῷ ἡρακλείῳ, τὸ μὲν
μικρότερον, ὑδρευομένων συνεχῶς αὐθωρὸν καὶ ἐκλείπειν. καὶ διαλιπόντων τῆς ὑδρείας πλη-
ροῦσθαι πάλιν. τὸ δὲ μεῖζον δι' ὅλης τῆς ἡμέρας τὴν ὑδρείαν ἔχον μειούμενον μέντοι καθάπερ καὶ τὰ
ἄλλα φρέατα πάντα, νύκτωρ πληροῦσθαι, μηκέτι ὑδρευομένων. ἐπειδὴ δὲ συμπίπτει κατὰ τὸν τῆς
συμπληρώσεως καιρὸν ἡ ἄμπωτις, πολλάκις πεπιστεῦσθαι καινῶς ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων τὴν ἀντιπάθει-
αν. ὅτι μὲν οὖν ἡ ἱστορία πεπίστευται, καὶ οὗτος εἴρηκε, καὶ ἡμεῖς ἐν τοῖς παραδόξως θρυλλουμένοις
παρειλήφαμεν. ἠκούομεν δὲ, καὶ φρέατα εἶναι τὰ μὲν, πρὸ τῆς πόλεως ἐν τοῖς κήποις. τὰ δ' ἐν-
τός. διὰ δὲ τὴν μοχθηρίαν τοῦ ὕδατος κατὰ τὴν πόλιν δεξαμενὰς ἐπιπολάζειν τοῦ λακκαίου ὕδατος.
εἰ μέντοι καὶ τούτων τι τῶν φρεάτων ἐπιδείκνυται, τὴν τῆς ἀντιπαθείας ὑπόνοιαν, οὐκ ἴσμεν.
τὰς δ' αἰτίας εἴπερ συμβαίνει ταῦτα οὕτως, ὡς ἐν χαλεποῖς ἀποδέχεσθαι δεῖ. εἰκὸς μὲν οὕτως
ἔχειν ὡς ὁ πολύβιός φησιν. εἰκὸς δὲ καὶ τῶν φλεβῶν τινας τῶν πηγαίων νοτισθείσας ἔξωθεν χαυνοῦ-
σθαι. καὶ παράχυσιν εἰς τὰ πλάγια μᾶλλον διδόναι τοῖς ὕδασιν, ἢ ἀναθλίβειν κατὰ τὸ ἀρχαῖον ῥεῖ-
θρον εἰς τὴν κρήνην. νοτίζεσθαι δ' ἀναγκαῖον ἐπικλύσαντος τοῦ κύματος. εἰ δ' ὥσπερ ἀθηνόδωρος φη-
σὶν εἰσπνοῇ τε, καὶ ἐκπνοῇ τὸ συμβαῖνον περὶ τὰς πλημμυρίδας καὶ περὶ τὰς ἀμπώτεις ἔοικεν
εἶναι, εἶεν ἄν τινα τῶν ῥεόντων ὑδάτων. ἃ κατ' ἄλλους μὲν πόρους ἐκχεῖ τὴν ἔκρυσιν κατὰ φύσιν εἰς τὴν ἐπι-
φάνειαν. ὧν δὴ τὰ στόματα πηγὰς καὶ κρήνας καλοῦμεν. κατ' ἄλλους δὲ πόρους συνέλκεται πρὸς
τὸ τῆς θαλάττης βάθος. καὶ συνεξαίροντα μὲν ἐκείνην ὥστε πλημμυρεῖν ὅταν οἷον ἐκπνοὴ γέ-
νηται, τὸ οἰκεῖον ἀπολείπει ῥεῖθρον πάλιν ἀναχωρεῖ πρὸς τὸ οἰκεῖον ῥεῖθρον, ὅταν κἀκείνη λάβη
τὴν ἀναχώρησιν. οὐκ οἶδα δὲ πῶς κατ' ἄλλα δεινοὺς ἀποφαίνων ὁ ποσειδώνιος τοὺς φοίνικας, ἐν ταῦ-
θα μωρίαν μᾶλλον, ἢ δριμύτητα αὐτῶν κατέγνωκεν. ἡμέρα μὲν γὰρ καὶ νὺξ ἡ τοῦ ἡλίου περι-
φορὰ μετρεῖται. ποτὲ μὲν ὑπὸ γῆς ὄντος. ποτὲ δὲ ὑπὲρ γῆς φαινομένου. φησὶ δὲ τὴν τοῦ ὠκεανοῦ
κίνησιν ὑπέχειν ἀστροειδῆ περίοδον. τὴν μὲν, ἡμερούσιον ἀποδιδοῦσαν. τὴν δὲ μηνιαίαν. τὴν δ' ἐνι-
αυσιαίαν, συμπαθῶς τῇ σελήνῃ. ὅταν γὰρ αὕτη ζῳδιακοῦ, μέγεθος ὑπεραίρῃ τοῦ ὁρίζοντος, ἄρ-
χεσθαι διοιδεῖν τὴν θάλατταν καὶ ἐπιβαίνειν τῆς γῆς αἰσθητῶς μέχρι μεσουρανήσεως. ἐκκλίναντος δὲ τοῦ ἄ-
στρου, πάλιν ἀναχωρεῖν τὸ πέλαγος κατ' ὀλίγον. ἕως ἂν ζῴδιον ὑπέρσχῃ τῆς δύσεως ἡ σελήνη. εἶτα
μένειν τοσοῦτον ἐν τῇ αὐτῇ καταστάσει χρόνον, ὅσον ἡ σελήνη συνάπτει πρὸς αὐτὴν τὴν δύσιν, καὶ ἔ-
τι μᾶλλον τοσοῦτον, ὅσον κινηθεῖσα ὑπὸ γῆς ζῴδιον ἀπόσχοι ἂν τοῦ ὁρίζοντος. εἶτ' ἐπιβαίνειν πά-
λιν, ἕως τοῦ ὑπὸ γῆν μεσουρανήματος. εἶτ' ἀναχωρεῖν ἕως ἂν πρὸς τὰς ἀνατολὰς περιχωρήσασα ἡ σε-
λήνη ζῴδιον τοῦ ὁρίζοντος ἀπόσχῃ. μένειν δὲ μέχρι ἂν ζῴδιον ὑπὲρ γῆς μετεωρισθῇ. καὶ πάλιν ἐπιβαί-
νειν, ταύτην μὲν εἶναι λέγει τὴν ἡμερησίαν περίοδον, τὴν δὲ μηνιαίαν ὅτι μέγισται μὲν αἱ παλίρροιαι
γίγνονται περὶ τὰς συνόδους. εἶτα μειοῦνται, μέχρι διχοτόμου. πάλιν δ' αὔξονται, μέχρι πανσε-
λήνου, καὶ μειοῦνται πάλιν ἕως διχοτόμου φθινάδος. εἶθ' ἕως τῶν συνόδων αἱ αὐξήσεις. πλεονάζειν
καὶ χρόνῳ καὶ τάχει τὰς αὐξήσεις τὰς δ' ἐνιαυσίας, παρὰ τῶν ἐν γαδείροις πυθέσθαι φησί. λεγόντων ὡς
κατὰ θερινὰς τροπὰς μάλιστα αὔξοιντο καὶ αἱ ἀναχωρήσεις. καὶ ἐπιβάσεις εἰκάζει δ' αὐτὸς ἀπὸ τῶν τρο-
πῶν μειοῦσθαι μὲν ἕως ἰσημερίας. αὔξεσθαι δὲ ἕως χειμερινῶν τροπῶν εἶτα μειοῦσθαι μέχρι ἐαρινῆς
ἰσημερίας. εἶτα αὔξεσθαι μέχρι θερινῶν τροπῶν. τῶν δὲ περιόδων τούτων, οὐσῶν καθ' ἑκάστην ἡμέραν
καὶ νύκτα, τὸν συνάμφω χρόνον δὶς μὲν ἐπιβαινούσης τῆς θαλάττης, δὶς δὲ ἀναχωρούσης, τεταγμέ-
νως δὲ, καὶ τῶν ἡμερησίων χρόνων, καὶ τῶν νυκτερινῶν, πῶς οἷόν τε, πολλάκις μὲν συμβαίνειν κατὰ τὰς
ἀμπώτεις τὴν πλήρωσιν τοῦ φρέατος, μὴ πολλάκις δὲ τὴν λειψυδρίαν. ἢ πολλάκις μὲν μὴ ἰσάκις δὲ, ἢ
καὶ ἰσάκις δὲ, τοὺς δὲ γαδειρίτας ταῦτα μὲν ἱκανοὺς γενέσθαι τηρῆσαι καθ' ἡμέραν γινόμενα. τὰς δ' ἐνι-
αυσίους περιόδους, ἐκ τῶν ἅπαξ συμβαινόντων κατ' ἔτος τηρῆσαι τὰ καθ' ἡμέραν γινόμενα. ἀλλὰ μὴν
ὅτι γε πιστεύει αὐτοῖς, δῆλον ἐξ ὧν καὶ προσεικάζει γενέσθαι τὰς μειώσεις καὶ πάλιν αὐξήσεις. ἀπὸ τρο-
πῶν ἐπὶ τροπάς τε ἑτέρας. καὶ κεῖθεν πάλιν ἐπανόδους. καὶ μὴν, οὐ δὲ ἐκεῖνο εἰκὸς, ὅτι τηρητικοὶ ὄν-
τες τὰ μὲν συμβαίνοντα οὐκ εἶδον, τοῖς δὲ μὴ συμβαίνουσιν, ἐπίστευσαν, φησὶ δ' οὖν, σέλευκον τὸν ἀπὸ
τῆς ἐρυθρᾶς θαλάττης, καὶ ἀνωμαλίαν τινὰ ἐκ τούτοις καὶ ὁμαλότητα λέγειν κατὰ τὰς τῶν ζῳδίων
διαφοράς, ἐν μὲν γὰρ τοῖς ἰσημερινοῖς ζῳδίοις τῆς σελήνης οὔσης ὁμαλίζειν τὰ πάθη, ἐν δὲ τοῖς τρο-
πικοῖς ἀνωμαλίαν εἶναι, καὶ πλήθει καὶ τάχει. τῶν δ' ἄλλων ἕκαστον κατὰ τοὺς συνεγγισμοὺς εἶναι τὴν ἀνωμα-
λίαν. αὐτὸς δὲ κατὰ τὰς θερινὰς τροπὰς περὶ τὴν πανσέληνον φησὶν ἐν τῷ ἡρακλείῳ γενόμενος τῷ
ἐν γαδείροις, πλείους ἡμέρας, μὴ δύνασθαι συνεῖναι τὰς ἐνιαυσίους διαφοράς. περὶ μέντοι τὴν

συνόδου ἐκείνου τοῦ μηνὸς, τηρῆσαι μεγάλην παραλλαγὴν, ἐν ἡ λίπα τῆς τοῦ βαίτιος ἀνακοπῆς πα-
ρὰ τὰς ἔμπροσθεν· ἐν αἷς οὐδὲ ἕως ἡμίσους τὰς ὄχθας ἔβρεχε· τότε δ' ὑπερχεῖσθαι τὸ ὕδωρ ὥσθ'
ὑδρεύεσθαι τοὺς στρατιώτας αὐτόθι· διέχει δ' ἡ ἰλίπα τῆς θαλάττης περὶ ἑπτακοσίους σταδίους· τῶν
δ' ἐπὶ θαλάττῃ πεδίων, καὶ ἐπὶ λ̄ σταδίους εἰς βάθος καλυπτομένων ὑπὸ τῆς πλημμυρίδος· ὥστε
καὶ νήσους ἀπολαμβάνεσθαι, τὸ τῆς κρηπῖδος ὕψος· τῆς τε τοῦ νεὼ τοῦ ἐν τῷ ἡρακλείῳ, καὶ τῆς τοῦ χώ-
ματος, ὃ τοῦ λιμένος πρόκειται, τοῦ ἐν γαδείροις· οὐδ' ἐπὶ δέκα πήχεις καλυπτόμενον, ἀναμετρῆσαι φη-
σί· κἂν προσθῇ δέ τις καὶ τὸ διπλάσιον τούτου, κατὰ τὰς γινομένας ποτὲ παραυξήσεις, οὔπω πα-
ρασχεῖν ἂν τὴν ἔμφασιν, ἣν ἐν τοῖς πεδίοις παρέχεται τὸ μέγεθος τῆς πλημμυρίδος· τοῦτο μὲν δὴ
τὸ πάθος, κοινὸν ἱστορεῖται κατὰ πᾶσαν τὴν κύκλῳ παρωκεανῖτιν· τὸ δὲ τοῦ ἴβηρος ποταμοῦ, και-
νὸν καὶ ἴδιον φησὶν οὗτος· πλημμυρεῖ γὰρ ἔσθ' ὅπου καὶ χωρὶς ὄμβρων καὶ χιόνων, ἐπειδὰν τὰ βόρεια πνεύ-
ματα πλεονάσῃ· αἰτίαν δ' εἶναι τὴν λίμνην, δι' ἧς ῥεῖ· συνεκβάλλεσθαι γὰρ τὸ λιμναῖον ὑπὸ τῶν
ἀνέμων· ἱστορεῖ δὲ καὶ δένδρον ἐν γαδείροις, ὄζους ἔχον καμπτομένους εἰς ἔδαφος· πολλάκις δὲ φύλλα, ξι-
φοειδῆ πηχυαῖα τὸ μῆκος· πλάτος δὲ τετραδάκτυλα· περὶ δὲ νέαν καρχηδόνα, δένδρον ἐξ ἀκάνθης φλοι-
ὸν ἀφιέναι· ἐξ οὗ ὑφάσματα γίνεται κάλλιστα· τῷ μὲν οὖν ἐν γαδείροις, καὶ ἡμεῖς εἴδομεν ὅμοιον ἐν αἰ-
γύπτῳ κατὰ τὴν τῶν κλάδων κατάκαμψιν· τοῖς δὲ φύλλοις ἀνόμοιον· οὐδὲ καρπὸν ἔχον· τοῦτο δ' ἔ-
χειν φησί· τὰ δ' ἀκάνθινα ὑφαίνεται καὶ ἐν καππαδοκίᾳ, φέρει δ' οὐ δένδρον τὴν ἄκανθαν ἐξ ἧς ὁ
φλοιός· ἀλλὰ χαμαίζηλος ἡ βοτάνη· τῷ δὲ δένδρῳ τῷ ἐν γαδείροις, καὶ τοῦτο προσιστόρηται· ὅτι κλά-
δου μὲν ἀποκλωμένου, γάλα ῥεῖ· ῥίζης δὲ τεμνομένης, μιλτῶδες ὑγρὸν ἀναφέρεται· τοσαῦτα καὶ
περὶ τῶν γαδείρων· αἱ δὲ καττιτερίδες, δέκα μέν εἰσι, κεῖνται δ' ἐγγὺς ἀλλήλων, πρὸς ἄρκτον· ἀπὸ τοῦ
τῶν ἀρτάβρων λιμένος πελάγιαι· μία δ' αὐτῶν ἔρημός ἐστι· τὰς δ' ἄλλας οἰκοῦσιν ἄνθρωποι μελάγχλαινοι·
ποδήρεις ἐνδεδυκότες τοὺς χιτῶνας· ἐζωσμένοι περὶ τὰ στέρνα· μετὰ ῥάβδων περιπατοῦντες, ὅμοιοι,
τοῖς τράγοις ταῖς ὑπήναις· ζῶσι δ' ἀπὸ βοσκημάτων νομαδικῶς τὸ πλέον, μέταλλα δὲ ἔχοντες καττι-
τέρου καὶ μολύβδου· κέραμον ἀντὶ τούτων καὶ τῶν δερμάτων διαλλάττονται· καὶ
ἅλας καὶ χαλκώματα πρὸς τοὺς ἐμπόρους· πρότερον μὲν οὖν, φοίνικες μόνοι
τὴν ἐμπορείαν ἔστελλον ταύτην ἐκ τῶν γαδείρων, κρύπτοντες ἅπασι τὸν
πλοῦν· τῶν δὲ ῥωμαίων ἐπακολουθούντων ναυκλήρῳ τινὶ, ὅπως
καὶ αὐτοὶ γνοῖεν τὰ ἐμπορεῖα, φθόνῳ ὁ ναύκληρος ἑκὼν εἰς τέ-
ναγος ἐξέβαλε τὴν ναῦν· ἐπαγαγὼν δ' εἰς τὸν αὐτὸν ὄλε-
θρον· καὶ τοὺς ἑπομένους αὐτοῖς ἐσώθη διὰ ναυαγίου·
καὶ ἀπέλαβε δημοσίᾳ τὴν τιμὴν ὧν ἀπέλαβε
φορτίων· οἱ ῥωμαῖοι δὲ ὅμως πειρώμενοι
πολλάκις, ἐξέμαθον τὸν πλοῦν· ἐ-
πειδὴ δὲ καὶ πόπλιος κράσ-
σος διαβὰς ἐπ' αὐ-
τοὺς ἔγνω τὰ μέ-
ταλλα
ἐκ μικροῦ βά-
θους ὀρυττόμενα,
καὶ τοὺς ἄνδρας εἰρηναίους
ἐκ περιουσίας ἤδη τὴν θάλατταν
ἐργάζεσθαι, ταύτην τοῖς ἐθέλουσιν ἐπέδει-
ξε, καίπερ οὖσαν πλείω τῆς διειργούσης εἰς τὴν
βρεττανικήν· καὶ περὶ μὲν τῆς ἰβηρίας
καὶ τῶν προκειμένων νήσων ταῦ-
τα, ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ ὑπὲρ
τῶν ἄλπεων
κελτική.

ἐν τῷ τετάρτῳ τὰ περὶ γαλλίαν καὶ ἰβηρίαν. καὶ ὅσα διείργουσιν αἱ ἄλπεις τῆς ἰβηρίας ἔνδον. ἔτι δὲ καὶ βρεττανία, καὶ τῶν ὠκεανιτίδων νήσων τινές. ὅσαι καὶ δοκοῦσιν οἰκεῖσθαι καὶ βαρβάρων χώραι, καὶ ἔθνη παροικοῦντα τοῦ ἴστρου πέραν.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΤΕΤΑΡΤΟΝ.

Ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ ὑπὲρ τῶν ἄλπεων κελτική. ταύτης δὲ καὶ τὸ σχῆμα ὑπογέγραπται πρότερον τυπωδῶς, καὶ τὸ μέγεθος. νυνὶ δὲ λεκτέον τὰ καθ' ἕκαστα. οἱ μὲν δὴ τριχῇ διῄρουν ἀκυιτανοὺς καὶ βέλγας καλοῦντες καὶ κέλτας, τοὺς μὲν ἀκυιτανούς, τελέως ἐξηλλαγμένους. οὐ τῇ γλώττῃ μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς σώμασιν, ἐμφερεῖς ἴβηρσι μᾶλλον, ἢ γαλάταις. τοὺς δὲ λοιπούς, γαλατικὴν μὲν, τὴν ὄψιν. ὁμογλώττους δ' οὐ πάντας, ἀλλ' ἐνίους μικρὸν παραλλάττοντας ταῖς γλώτταις. καὶ πολιτεία δὲ, καὶ οἱ βίοι, μικρὸν ἐξηλλαγμένοι εἰσίν. ἀκυιτανοὺς μὲν οὖν καὶ κέλτας ἔλεγον, τοὺς πρὸς τῇ πυρήνῃ, διωρισμένους τῷ κεμμένῳ ὄρει. εἴρηται γὰρ ὅτι τὴν κελτικὴν ταύτην ἀπὸ μὲν τῆς δύσεως ὁρίζει τὰ πυρηναῖα ὄρη τῆς ἑκατέρωθεν θαλάττης, τῆς τε ἐντὸς καὶ τῆς ἐκτός. προσαπτόμενα. ἀπὸ δὲ τῶν ἀνατολῶν ὁ ῥῆνος παράλληλος ὢν τῇ πυρήνῃ. τὰ δ' ἀπὸ τῶν ἄρκτων καὶ τῆς μεσημβρίας, τὰ μὲν, ὁ ὠκεανὸς περιείληφεν ἀρξάμενος ἀπὸ τῶν βορείων ἄκρων τῆς πυρήνης μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ ῥήνου. τὰ δ' ἐξ ἐναντίας ἡ κατὰ μασσαλίαν καὶ νάρβωνα θάλαττα, καὶ αἱ ἄλπεις ἀπὸ τῆς λιγυστικῆς ἀρξάμεναι, μέχρι τῶν πηγῶν τοῦ ῥήνου. τῇ δὲ πυρήνῃ, πρὸς ὀρθὰς ἦκται τὸ κέμμενον ὄρος διὰ μέσων τῶν πεδίων, καὶ παύεται κατὰ μέσα πλησίον λουγδούνου. περὶ δισχιλίους ἐκταθὲν σταδίους. ἀκυιτανοὺς μὲν τοίνυν ἔλεγον τοὺς τὰ βόρεια τῆς πυρήνης μέρη κατέχοντας, καὶ τῆς κεμμένης, μέχρι πρὸς τὸν ὠκεανόν, τὰ ἐντὸς γαρούνα ποταμοῦ. κέλτας δὲ τοὺς ἐπὶ θάτερα μέρη καθήκοντας, καὶ τὴν κατὰ μασσαλίαν καὶ νάρβωνα θάλατταν, ἁπτομένους δὲ, καὶ τῶν ἀλπεινῶν ὀρῶν ἐνίων. βέλγας δ' ἔλεγον τοὺς λοιπούς τε τῶν παρωκεανιτῶν μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ ῥήνου. καί τινας τῶν παροικούντων τὸν ῥῆνον καὶ τὰς ἄλπεις. οὕτω δὲ, καὶ ὁ θεὸς καῖσαρ ἐν τοῖς ὑπομνήμασιν εἴρηκεν. ὁ δὲ σεβαστὸς καῖσαρ τετραχῇ διελών, τοὺς μὲν κέλτας τῆς ναρβωνίτιδος ἐπαρχίας ἀπέφηνεν. ἀκυιτανοὺς δ' οὕσπερ κἀκεῖνος. προσέθηκε δὲ ιδ' ἔθνη τῶν μεταξὺ τοῦ γαρούνα, καὶ τοῦ λίγηρος ποταμοῦ νεμομένων, τὴν δὲ λοιπὴν διελὼν δίχα, τὴν μὲν λουγδούνῳ προσώρισε μέχρι τῶν ἄνω μερῶν τοῦ ῥήνου, τὴν δὲ τοῖς βέλγαις. ὅσα μὲν οὖν φυσικῶς διώρισται, δεῖ λέγειν τὸν γεωγράφον, καὶ ὅσα ἐθνικῶς καὶ ὅταν ᾖ καὶ μνήμης ἄξια. ὅσα δ' οἱ ἡγεμόνες πρὸς τοὺς καιροὺς πολιτευόμενοι διατάττουσι ποικίλως, ἀρκεῖ κἂν ἐν κεφαλαίῳ τις εἴπῃ. τὸ δ' ἀκριβὲς, ἄλλοις παραχωρητέον.

ἅπασα μὲν οὖν αὕτη, ποταμοῖς κατάρρυτός ἐστιν ἡ χώρα. τοῖς μὲν, ἐκ τῶν ἄλπεων καταφερομένοις. τοῖς δ' ἐκ τοῦ κεμμένου, καὶ τῆς πυρήνης, καὶ τοῖς μὲν, εἰς τὸν ὠκεανὸν ἐκβάλλουσι. τοῖς δὲ, εἰς τὴν ἡμετέραν θάλατταν. δι' ὧν δὲ φέρονται χωρίων, πεδία ἐστὶ τὰ πλεῖστα. καὶ γεωλοφίαι, διάρρους ἔχουσαι πλωτούς. οὕτως δ' εὐφυῶς ἴσχει τὰ ῥεῖθρα πρὸς ἄλληλα, ὥστ' ἐξ ἑκατέρας τῆς θαλάττης εἰς τὴν ἑκατέραν κατακομίζεσθαι, πορευομένων ἐπ' ὀλίγον τῶν φορτίων καὶ διὰ πεδίων εὐμαρῶς. τὸ δὲ πλέον τοῖς ποταμοῖς, τοῖς μὲν, ἀναγομένων. τοῖς δὲ καταγομένων. ἔχει δέ τι πλεονέκτημα πρὸς τοῦτο ὁ ῥοδανός. καὶ γὰρ πολλαχόθεν ἐστὶ σύρρους ὥσπερ εἴρηται. καὶ συνάπτει πρὸς τὴν ἡμετέραν θάλατταν κρείττω τῆς ἐκτὸς οὖσαν. καὶ διὰ χώρας διέξεισι τῆς εὐδαιμονεστάτης τῶν ταύτῃ. τοὺς γὰρ αὐτοὺς ἐκφέρει καρποὺς ἡ ναρβωνῖτις ἅπασα, ὥσπερ ἡ ἰταλία. προϊόντι δ' ἐπὶ τὰς ἄρκτους καὶ τὸ κέμμενον ὄρος, ἡ μὲν ἐλαιόφυτος καὶ συκοφόρος, ἐκλείπει. τ' ἄλλα δὲ φύεται. καὶ ἡ ἄμπελος δὲ προϊοῦσιν, οὐ ῥᾳδίως τελεσφορεῖ. ἡ δ' ἄλλη πᾶσα, σῖτον φέρει πολύν, καὶ κέγχρον καὶ βάλανον. καὶ βοσκήματα παντοῖα, ἀργὸν δ' αὐτῆς οὐδέν. πλὴν εἴ τι ἕλεσι κεκώλυται καὶ δρυμοῖς. καίτοι καὶ τοῦτο συνοικεῖται πολυανθρωπίᾳ

μᾶλλον, ἢ ἐπιμελείᾳ. καὶ γὰρ τοκάδες αἱ γυναῖκες, καὶ θρέψαι ἀγαθαί. οἱ δ᾽ ἄνδρες μαχηταὶ μᾶλλον, ἢ γεωργοί. νῦν δ᾽ ἀναγκάζονται γεωργεῖν, καταθέμενοι τὰ ὅπλα. κοινῇ μὲν οὖν ταῦτα λέγομεν, περὶ τῆς ἐκτὸς πάσης κελτικῆς. περὶ δὲ τῶν τεταρτημορίων ἑκάστου διαλαβόντες, λέγομεν νυνὶ μεμνημένοι τυπωδῶς. καὶ πρῶτον περὶ τῆς ναρβωνίτιδος. ταύτης δὲ τὸ σχῆμα παραλληλόγραμμόν πώς ἐστιν. ἐκ μὲν τῆς ἑσπέρας γραφόμενον τῇ πυρήνῃ. πρὸς δὲ ταῖς ἄρκτοις τῷ κεμμένῳ. ταῖς δὲ λοιπαῖς, τὴν μὲν νότιον ἡ θάλαττα ποιεῖ, μεταξὺ πυρήνης καὶ μασσαλίας. τὴν δ᾽ ἑωθινὴν αἱ ἄλπεις ἐκ μέρους, καὶ τὸ μεταξὺ διάστημα τῶν ἄλπεων, ἐπ᾽ εὐθείας αὐταῖς ληφθέν. καὶ τῶν ὑπωρειῶν τοῦ κεμμένου τῶν καθηκουσῶν ἐπὶ τὸν ῥοδανὸν, καὶ ποιουσῶν ὀρθὴν γωνίαν πρὸς τὴν λεχθεῖσαν ἀπὸ τῶν ἄλπεων εὐθεῖαν. τῷ δὲ νοτίῳ πρόσκειται παρὰ τὸ λεχθὲν σχῆμα ἡ ἐφεξῆς παραλία, ἣν ἔχουσιν οἵ τε μασσαλιῶται καὶ οἱ σαλύες μέχρι λιγύων, ἐπὶ τὰ πρὸς ἰταλίαν μέρη, καὶ τὸν οὔαρον ποταμόν. οὗτος δ᾽ ἐστὶν ὡς εἶπον πρότερον, ὅριον τῆς ναρβωνίτιδος. ὑπάρχει δὲ, καὶ τῆς ἰταλίας, θέρους μὲν μικρός. χειμῶνος δὲ μέχρι ἑπτὰ σταδίων πλατυνόμενος. ἐντεῦθεν μὲν οὖν ἡ παραλία παρατείνει μέχρι τοῦ ἱεροῦ τῆς πυρηναίας ἀφροδίτης, καὶ τοῦτο δ᾽ ἐστὶν ὅριον ταύτης τε τῆς ὑπαρχίας καὶ τῆς ἰβηρικῆς. ἔνιοι δὲ τὸν τόπον ἐν ᾧ ἐστι τὰ πομπηίου τρόπαια, ὅριον ἰβηρίας ἀποφαίνουσι καὶ τῆς κελτικῆς ἔστι δ᾽ ἔνθεν δ᾽ εἰς ναρβῶνα μίλια ξγ. ἐκεῖθεν εἰς δὲ νέμαυσον, ὀγδοήκοντα ὀκτὼ. ἐκ νεμαύσου δὲ διὰ ἀργινοῦ καὶ ταρασκῶνος εἰς ὁ τὰ θερμὰ ὕδατα τὰ σέξτια καλούμενα ἅπερ πλησίον μασσαλίας ἐστὶ, νγ. ἐντεῦθεν δὲ εἰς ἀντίπολιν καὶ τὸν οὔαρον ποταμὸν ογ. ὥς τε τὰ σύμπαντα γίνεται μίλια διακόσια ἑβδομήκοντα ἑπτά, ἔνιοι δ᾽ ἀπὸ τοῦ ἀφροδισίου μέχρι τοῦ οὐάρου σταδίους ἀνέγραψαν διχιλίους ἑξακοσίους. οἱ δὲ, καὶ διακοσίους προστιθέασιν. οὐ γὰρ ὁμολογεῖται περὶ τῶν διαστημάτων. κατὰ δὲ τὴν ἑτέραν ὁδὸν τὴν διὰ οὐοκοντίων καὶ τῆς κοττίου. μέχρι μὲν οὖν γέρνου, καὶ ταρασκῶνος κοινὴ ὁδὸς ἡ ἀπὸ νεμαύσου. ἐντεῦθεν δὲ ἐπὶ μὲν τοὺς οὐοκοντίων ὅρους καὶ τὴν ἀρχὴν τῆς ἀναβάσεως τῶν ἄλπεων διὰ δρουεντίας καὶ καβαλλίωνος μίλια ἑξήκοντα τρία. πάλιν δ᾽ ἐντεῦθεν ἐπὶ τοὺς ἑτέρους ὅρους τῶν οὐοκοντίων πρὸς τὴν κοττίου μίλια ἑκατὸν ἑνὸς δέοντα, εἰς ἐπεβρόδουνον κώμην. εἶτ᾽ ἄλλοι τοσοῦτοι διὰ βριγαντίου κώμης, ἐκ σκιγγομάγου, καὶ τῆς τῶν ἄλπεων ὑπερθέσεως, ἐπὶ ὤκελον τὸ πέρας τῆς κοττίου γῆς. καὶ ἡ ἀπὸ σκιγγομάγου δὲ ἤδη ἰταλία λέγεται. ἔστι δὲ ἔνθεν δὲ ἐπὶ ὤκελον, μίλια κζ. κτίσμα δ᾽ ἐστὶ φωκαιέων ἡ μασσαλία. κεῖται δ᾽ ἐπὶ χωρίου πετρώδους. ὑποπέπτωκε δ᾽ αὐτῆς. ὁ λιμὴν, θεατροειδεῖ πέτρᾳ, βλεπούσῃ πρὸς τὸν νότον. τετείχισται δὲ καλῶς καὶ αὐτὴ καὶ ἡ πόλις σύμπασα. μέγεθος ἔχουσα ἀξιόλογον. ἐν δὲ τῇ ἄκρᾳ τὸ ἐφέσιον ἵδρυται καὶ τὸ τοῦ δελφινίου ἀπόλλωνος ἱερόν. τοῦτο μὲν κοινὸν ἰώνων ἁπάντων. τὸ δὲ ἐφέσιον, τῆς ἀρτέμιδος, ἐστὶν ἑως τῆς ἐφεσίας. ἀπαίρουσι γὰρ τοῖς φωκαιεῦσιν ἐκ τῆς οἰκείας λόγιον ἐκπεσεῖν φασίν. ἡγεμόνι χρήσασθαι τοῦ πλοῦ, παρὰ τῆς ἐφεσίας ἀρτέμιδος λαβοῦσι. τοὺς μὲν δὴ προσαχθέντας τῇ ἐφέσῳ ζητεῖν ὅντινα τρόπον ἐκ τῆς θεοῦ πορίσαιντο τὸ προσταχθὲν, ἀριστάρχῃ δὲ τῶν ἐντίμων σφόδρα γυναικῶν, παραστῆναι κατ᾽ ὄναρ τὴν θεόν. καὶ κελεῦσαι συναπαίρειν τοῖς φωκαιεῦσιν, ἀφίδρυμά τι τῶν ἱερῶν λαβούσῃ. γενομένου δὲ τούτου καὶ τῆς ἀποικίας λαβούσης τέλος, τό τε ἱερὸν ἱδρύσασθαι. καὶ τὴν ἀριστάρχην τιμῆσαι διαφερόντως ἱέρειαν ἀποδείξαντας. ἔν τε ταῖς ἀποίκοις πόλεσι πανταχοῦ τιμᾶν ἐν τοῖς πρώτοις ταύτην τὴν θεόν. καὶ τοῦ ξοάνου τὴν διάθεσιν τὴν αὐτήν. καὶ τἆλλα νόμιμα φυλάττειν τὰ αὐτὰ, ἅπερ ἐν τῇ μητροπόλει ἐννόμισται. διοικοῦνται δ᾽ ἀριστοκρατικῶς οἱ μασσαλιῶται πάντων εὐνομώτατα. ἀνδρῶν χ´ καταστήσαντες συνέδριον. διὰ βίου ταύτην ἐχόντων τὴν τιμήν. οὓς τιμούχους καλοῦσι πεντεκαίδεκα δ᾽ εἰσὶ τοῦ συνεδρίου προεστῶτες. τούτοις δὲ τὰ πρόχειρα διοικεῖν δέδοται. πάλιν δὲ τῶν πεντεκαίδεκα προκάθηνται τρεῖς οἱ πλεῖστον ἰσχύοντες. τούτων δὲ εἷς τιμοῦχος οὐ γίνεται μὴ τέκνα ἔχων μηδὲ διὰ τριγονίας ἐκ πολιτῶν γεγονώς. οἱ δὲ νόμοι ἰωνικοί. πρόκεινται δὲ δημοσίᾳ, χώραν δ᾽ ἔχουσιν ἐλαιόφυτον μὲν καὶ κατάμπελον. σίτῳ δὲ λυπροτέραν διὰ τὴν τραχύτητα. ὥς τε πεποιθότες τῇ θαλάττῃ μᾶλλον ἢ τῇ γῇ, τὸ πρὸς ναυτιλίας εὐφυὲς, εἵλοντο μᾶλλον. ὕστερον μέντοι ταῖς ἀνδραγαθίαις ἴσχυσαν προσλαβεῖν τινα τῶν πέριξ πεδίων, ἀπὸ τῆς αὐτῆς δυνάμεως. ἀφ᾽ ἧς καὶ τὰς πόλεις ἔκτισαν, ἐπιτειχίσματα. τὰς μὲν κατὰ τὴν ἰβηρίαν τοῖς ἴβηρσιν, οἷς καὶ τὰ ἱερὰ τῆς ἐφεσίας ἀρτέμιδος παρέδοσαν τὰ πάτρια ὥς τε ἑλληνιστὶ θύειν. τὴν δὲ ῥόην ἀγάθην τοῖς περὶ τὸν ποταμὸν οἰκοῦσι τὸν ῥοδανὸν βαρβάροις. τὸ δὲ ταυρέντιον, καὶ τὴν ὀλβίαν καὶ ἀντίπολιν καὶ νίκαιαν, τῷ τῶν σαλύων ἔθνει καὶ τοῖς λίγυσι τοῖς τὰς ἄλπεις οἰκοῦσιν. εἰσὶ δὲ, καὶ νεώσοικοι παρ᾽ αὐτοῖς. καὶ ὁπλοθήκη. πρότερον δὲ, καὶ πλοίων εὐπορία καὶ ὅπλων, καὶ ὀργάνων. τῶν τε πρὸς τὰς ναυτιλίας χρησίμων, καὶ τῶν πρὸς πολιορκίας ἀφ᾽ ὧν πρός τε τοὺς βαρβάρους ἀντέσχον, καὶ ῥωμαίους ἐκτήσαντο φίλους, καὶ πολλὰ καὶ αὐτοὶ χρήσιμοι κατέστησαν ἐκείνοις. κἀκεῖνοι προσελάβοντο τῆς αὐξήσεως αὐτῶν. σέξτιος γοῦν ὁ καταλύσας τοὺς σάλυας οὐ πολὺ ἄπωθεν τῆς μασσαλίας, κτίσας πόλιν ὁμώνυμον ἑαυτοῦ τε καὶ τῶν ὑδάτων τῶν θερμῶν. ὧν τινα μεταβεβληκέναι φασὶν εἰς ψυχρά, ἐνταῦθα τε φρουρὰν κατῴκισε ῥωμαίων. καὶ ἐκ τῆς παρ-

παραλίας τῆς εἰς τὴν ἰταλίαν, ἀγούσης ἀπὸ μασσαλίας ἀνέστειλε τοὺς βαρβάρους, οὐ δυναμένων
τῶν μασσαλιωτῶν ἀνείργειν αὐτοὺς τελέως. οὐδ' αὐτὸς δὲ πλέον ἴσχυσεν. ἀλλ' ἢ τοσοῦτον μόνον, ὅσον
κατὰ μὲν τὰ εὐλίμενα, ἀπὸ τῆς θαλάττης ἀπελθεῖν ἐπὶ τοὺς βαρβάρους, ἐπὶ ιβ΄ σταδίους. κατὰ
δὲ τοὺς τραχῶνας ἐπὶ η΄. τὴν δὲ λειφθεῖσαν ὑπ' ἐκείνων, τοῖς μασσαλιώταις παρέδωκεν. ἀνάκειται δ' ἐν
τῇ πόλει συχνὰ τῶν ἀκροθινίων, ἃ ἔλαβον ἀεὶ καταναυμαχοῦντες τοὺς ἀμφισβητοῦντας τῆς θαλάττης
ἀδίκως. πρότερον μὲν οὖν εὐτύχουν διαφερόντως, περί τε τὰ ἄλλα, καὶ περὶ τὴν πρὸς ῥωμαίους
φιλίαν, ἧς πολλὰ ἄν τις λάβοι σημεῖα. καὶ δὴ καὶ τὸ ξόανον τῆς ἀρτέμιδος τῆς ἐν τῷ ἀβεντίνῳ οἱ ῥω
μαῖοι, τὴν αὐτὴν διάθεσιν ἔχοντες, παρὰ τοῖς μασσαλιώταις ἀνέθεσαν. κατὰ δὲ τὴν πομπηΐου πρὸς
καίσαρα στάσιν, τῷ κρατηθέντι μέρει προσθέμενοι, τὴν πολλὴν τῆς εὐδαιμονίας ἀπέβαλον. ὅμως δ'
οὖν ἴχνη λείπεται τοῦ παλαιοῦ ζήλου παρὰ τοῖς ἀνθρώποις. καὶ μάλιστα περὶ τὰς ὀργανοποιίας,
καὶ τὴν ναυτικὴν παρασκευήν. ἐξημερουμένων δ' ἀεὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβάρων, καὶ ἀντὶ τοῦ
πολεμεῖν, τετραμμένων ἤδη πρὸς πολιτείας καὶ γεωργίας, διὰ τὴν τῶν ῥωμαίων ἐπικράτειαν,
οὐδ' αὐτοῖς ἔτι τούτοις συμβαίνοι ἂν περὶ τὰ λεχθέντα τοσαύτη σπουδή. δηλοῖ δὲ τὰ καθεστηκότα
νυνί. πάντες γὰρ οἱ χαρίεντες πρὸς τὸ λέγειν τρέπονται καὶ φιλοσοφεῖν. ὥσθ' ἡ πόλις μικρῷ μὲν πρό
τερον τοῖς βαρβάροις ἀνεῖτο παιδευτήριον. καὶ φιλέλληνας κατεσκεύαζε τοὺς γαλάτας. ὥς τε καὶ
τὰ συμβόλαια ἑλληνιστὶ γράφειν. ἐν δὲ τῷ παρόντι καὶ τοὺς γνωριμωτάτους ῥωμαίων πέπεικεν.
ἀντὶ τῆς εἰς ἀθήνας ἀποδημίας ἐκεῖσε φοιτᾶν φιλομαθεῖς ὄντας. ὁρῶντες δὲ τούτους οἱ γαλάται,
καὶ ἅμα εἰρήνην ἄγοντες, τὴν σχολὴν ἄσμενοι πρὸς τοὺς τοιούτους διατίθενται βίους, οὐ κατ' ἄνδρα,
μόνον, ἀλλὰ καὶ δημοσίᾳ. σοφιστὰς γοῦν ὑποδέχονται, τοὺς μὲν, ἰδίᾳ. τοὺς δὲ αἱ πόλεις κοινῇ μισθού
μεναι, καθάπερ καὶ ἰατρούς. τῆς δὲ λιτότητος τῶν βίων καὶ τῆς σωφροσύνης τῶν μασσαλιωτῶν, οὐκ ἐ
λάχιστον ἄν τις θείη τοῦτο τεκμήριον. ἡ γὰρ μεγίστη προὶξ αὐτοῖς ἐστιν ἑκατὸν χρυσοῖ. καὶ ἐσθῆτα, εἰς πέν
τε. καὶ πέντε εἰς χρυσοῦν κόσμον. πλέον δ' οὐκ ἔξεστι. καὶ ὁ καῖσαρ δὲ, καὶ οἱ μετ' ἐκεῖνον ἡγεμόνες πρὸς
τὰς ἐν τῷ πολέμῳ γενηθείσας ἁμαρτίας, ἐμετρίασαν. μεμνημένοι τῆς φιλίας, καὶ τὴν αὐτονο
μίαν ἐφύλαξαν ἣν ἐξ ἀρχῆς εἶχεν ἡ πόλις, ὥς τε μὴ ὑπακούειν τῶν εἰς τὴν ὑπαρχίαν πεμπομένων
στρατηγῶν, μή τε αὐτήν, μή τε τοὺς ὑπηκόους. περὶ μὲν μασσαλίας ταῦτα. ἅμα δ' ἥ τε τῶν σαλύων ὀ
ρεινὴ πρὸς ἄρκτον ἀπὸ τῆς ἑσπέρας κλίνει μᾶλλον, καὶ τῆς θαλάττης ἀφίσταται κατὰ μικρόν, καὶ ἡ
παραλία παρὰ τὴν ἑσπέραν περινεύει. μικρὸν δ' ἀπὸ τῆς πόλεως τῶν μασσαλιωτῶν προελθοῦσα ὅ
σον ἑκατὸν σταδίους, ἐπὶ ἄκραν εὐμεγέθη πλησίον λατομιῶν τινων, ἐντεῦθεν ἄρχεται κολποῦσθαι, καὶ
ποιεῖν τὸν γαλατικὸν κόλπον, πρὸς τὸ ἀφροδίσιον τὸ τῆς πυρήνης ἄκρον. καλοῦσι δ' αὐτὸν καὶ μασ
σαλιωτικόν, ἔστι δ' ὁ κόλπος διπλοῦς, ἐν γὰρ τῇ αὐτῇ περιγραφῇ, δύο κόλπους ἀφορίζον ἔκκειται,
τὸ σήτιον ὄρος. προσλαβὸν καὶ τὴν βλάσκωνα νῆσον. πλησίον ἱδρυμένην. τῶν δὲ κόλπων ὁ μὲν μείζων
ἰδίως πάλιν καλεῖται, γαλατικός. εἰς ὃν ἐκβάλλεται τὸ τοῦ ῥοδανοῦ στόμα. ὁ δ' ἐλάττων ὁ κατὰ
νάρβωνά ἐστι, μέχρι πυρήνης. ἡ μὲν οὖν νάρβων ὑπέρκειται τῶν τοῦ ἄτακος ἐκβολῶν καὶ τῆς λίμνης
τῆς ναρβωνίτιδος. μέγιστον ἐμπόριον ταύτῃ. πρὸς δὲ τῷ ῥοδανῷ πόλις ἐστὶ καὶ ἐμπόριον οὐ μικρόν, ἀ
ρελάται. ἴσον δέ πως διέχει τὰ ἐμπόρια ταῦτα, ἀλλήλων τε καὶ τῶν εἰρημένων ἄκρων. ἡ μὲν νάρ
βων, τὸ ἀφροδισίου. τὸ δ' ἀρελάτη, τῆς μασσαλίας. ἑκατέρωθεν δὲ τῆς νάρβωνος ἄλλοι ποταμοὶ ῥέου
σιν. οἱ μὲν ἐκ τῶν κεμμένων ὀρῶν. οἱ δ' ἐκ τῆς πυρήνης. πόλεις ἔχοντες εἰς ἃς ἀνάπλους οὐ πολύς ἐστι μικροῖς
πλοίοις ἐκ μὲν τῆς πυρήνης ὅ τε ῥουσκίνων ὁ ἰλλιβέρις. πόλιν ἔχων ὁμώνυμον ἑκάτερος αὐτῶν, τῆς δὲ ῥου
σκίνωνος καὶ λίμνη πλησίον ἐστί, καὶ χωρίον ὕφυδρον, μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης. ἁλυκίδων μεστόν. τὸ τοὺς
ὀρυκτοὺς κεστρεῖς ἔχον, δύο γὰρ ἢ τρεῖς ὀρύξαντι πόδας, καὶ καθέντι τριόδοντα εἰς ὕδωρ ἰλυῶδες ἐστι περιπεῖραι
τὸν ἰχθὺν ἀξιόλογον τὸ μέγεθος. τρέφεται δ' ὑπὸ τῆς ἰλύος καθάπερ αἱ ἐγχέλυες. οὗτοι μὲν ἐκ τῆς πυ
ρήνης ῥέουσιν οἱ ποταμοί, μεταξὺ ναρβῶνος καὶ τοῦ ἀφροδισίου, ἐπὶ θάτερα μέρη τῆς ναρβῶνος, ἐκ
τοῦ κεμμένου φέρονται πρὸς τὴν θάλατταν, ἐξ οὗ περ καὶ ὁ ἄταξ. ὅ τε ὄβεις καὶ ὁ ῥαύραρις, τούτων
ἐφ' οὗ μὲν βαίτερα πόλις ἀσφαλὴς ἵδρυται, πλησίον τῆς ναρβῶνος. ἐφ' οὗ δὲ ἀγάθη. κτίσμα μασ
σαλιωτῶν. ἓν μὲν οὖν ἔχει παράδοξον ἡ προειρημένη παραλία, τὸ περὶ τοὺς ὀρυκτοὺς ἰχθῦς. ἕτερον
δὲ μεῖζον τούτου σχεδὸν τι, τὸ λεχθησόμενον. μεταξὺ γὰρ τῆς μασσαλίας καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ῥοδα
νοῦ, πεδίον ἐστὶ τῆς θαλάττης διέχον εἰς ἑκατὸν σταδίους. τοσοῦτον δὲ τὴν διάμετρον. κυκλοτερὲς τὸ σχῆ
μα. καλεῖται δὲ λιθῶδες ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος. μεστὸν γάρ ἐστι λίθων χειροπληθῶν, ὑποπεφυκυῖαν
ἐχόντων αὐτοῖς ἄγρωστιν ἀφ' ἧς ἄφθονοι νομαὶ βοσκήμασιν εἰσίν. ἐν μέσῳ δ' ὕδατα, καὶ ἁλυκίδες συνί
στανται. καὶ ἅλες. ἅπασα μὲν οὖν καὶ ὑπερκειμένη χώρα, προσήνεμός ἐστι. διαφερόντως δ' εἰς τὸ
πεδίον τοῦτο, μελαμβόρειον καταιγίζει πνεῦμα βίαιον καὶ φρικῶδες. φασὶ γοῦν, σύρεσθαι, καὶ κυλιν
δεῖσθαι τῶν λίθων ἐνίους. καταβάλλεσθαι δὲ τοὺς ἀνθρώπους ἀπὸ τῶν ὀχημάτων, καὶ γυμνοῦσθαι,
καὶ ὅπλων, καὶ ἐσθῆτος ἀπὸ τῆς ἐμπνοῆς. ἀριστοτέλης μὲν οὖν φησιν, ὑπὸ σεισμῶν τῶν καλουμένων

βρεκτῶν, ἐκπεσόντας τοὺς λίθους εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, συνολισθεῖν εἰς τὰ κοῖλα τῶν χωρίων. Ποσειδώνιος δὲ λίμνην οὖσαν, παγῆναι μετὰ κλυδασμοῦ. καὶ διὰ τοῦτο εἰς πλείονας μερισθῆναι λίθους, καθάπερ τοὺς ποταμίους κάχληκας. καὶ τὰς ψήφους τὰς αἰγιαλίτιδας. ὁμοίως δὲ, καὶ λείους, καὶ ἰσομεγέθεις τῇ ὁμοιότητι, καὶ τὴν αἰτίαν ἀποδεδώκασιν ἀμφότεροι. πιθανὸς μὲν οὖν ὁ παρ' ἀμφοῖν λόγος. ἀνάγκη γὰρ τοὺς οὕτω συνεστῶτας λίθους, οὐ καθ' ἑαυτοὺς ἢ ἐξ ὑγροῦ παγέντας μεταβάλλειν, ἐκ πετρῶν μεγάλων, ῥήγματα συνεχῆ λαβουσῶν ἀποκεκρίσθαι. τὸ μέντοι δυσαπολόγητον αἰσχύλος καταμαθὼν ἢ παρ' ἄλλου παραλαβὼν, εἰς μῦθον ἐξετόπισε. φησὶ γοῦν προμηθεὺς παρ' αὐτῷ καθηγούμενος ἡρακλεῖ, τῶν ὁδῶν τῶν ἀπὸ καυκάσου πρὸς τὰς ἑσπερίδας,

» ἥξεις δὲ λιγύων ἐς ἀτάρβητον στρατὸν,
» ἔνθ' οὐ μάχης σάφ' οἶδα, καὶ θοῦρος περ ὢν μέμψῃ.
» πέπρωται γάρ σε καὶ βέλη λιπεῖν.
» ἐνταῦθ' ἑλέσθαι δ' οὔ τιν' ἐκ γαίας λίθον ἕξεις.
» ἐπεὶ πᾶς χῶρός ἐστι μαλθακός.
» ἰδὼν δ' ἀμηχανοῦντά σ' ὁ ζεὺς οἰκτερεῖ.
» νεφέλην δ' ὑποσχὼν νιφάδι στρογγύλων πέτρων ὑπόσκιον θήσει χθόνα. —
» οἷς ἔπειτα συμβαλὼν δηώσεις ῥᾳδίως λίγυν στρατόν.

ὥσπερ οὖν κρεῖττον ὂν φησὶν ὁ ποσειδώνιος εἰς αὐτοὺς τοὺς λίγυας ἐμβαλεῖν τοὺς λίθους καὶ καταχῶσαι πάντας, ἢ τοσούτους δεόμενον ποιῆσαι λίθους τὸν ἡρακλέα. τὸ μὲν οὖν τοσούτους ἀναγκαῖον ἦν, εἴπερ καὶ πρὸς ὄχλον παμπληθῆ. ὥστε ταύτῃ γε πιθανώτερος ὁ μυθογράφος τοῦ ἀνασκευάζοντος τὸν μῦθον. ἀλλὰ καὶ τἆλλα, πεπρᾶσθαι φήσας ὁ ποιητὴς, οὐκ ἐᾷ μέμφεσθαι φιλαιτίως. καὶ γὰρ ἐν τοῖς περὶ τῆς προνοίας καὶ τῆς εἱμαρμένης λόγοις, εὕροι τις ἂν πολλὰ τοιαῦτα τῶν ἀνθρώπων καὶ τῶν φύσει γινομένων. ὥστ' ἐπ' αὐτῶν φάναι, πολὺ κρεῖττον εἶναι, τόδε ἢ τόδε γενέσθαι. οἷον εὔομβρον εἶναι τὴν αἴγυπτον. ἀλλὰ μὴ τὴν αἰθιοπίαν ποτίζειν τὴν γῆν. καὶ τὸν πάριν εἰς τὴν σπάρτην πλέοντα, ναυαγίῳ περιπεσεῖν, ἀλλὰ μὴ τὴν ἑλένην ἁρπάσαντα, δίκας τῖσαι τοῖς ἀδικηθεῖσιν ὕστερον, ἡνίκα τοσοῦτον ἀπειργάσατο φθόρον, ἑλλήνων καὶ βαρβάρων, ὅσπερ εὐριπίδης ἀνήνεγκεν εἰς τὸν δία

» ζεὺς γὰρ κακὸν μὲν τρωσί. πῆμα δ' ἑλλάδι
» θέλων γενέσθαι, τὰ δ' ἐβούλευσε πατήρ.

περὶ δὲ τῶν τοῦ ῥοδανοῦ στομάτων, πολύβιος μὲν ἐπιτιμᾷ τιμαίῳ, φήσας εἶναι μὴ πεντάστομον. ἀλλὰ δίστομον. ἀρτεμίδωρος δὲ τρίστομον λέγει. τίμαιος δὲ ὕστερον ὁρῶν τυφλόστομον γινόμενον ἐκ τῆς προχώσεως, καὶ δυσείσβολον, καινὴν ἔτεμε διώρυχα. καὶ ταύτῃ δεξάμενος τὸ πλέον τοῦ ποταμοῦ, μασσαλιώταις ἔδωκεν ἀριστεῖον κατὰ τὸν πρὸς ἄμβρωνας, καὶ τωυγενοὺς πόλεμον. ἐξ οὗ πλοῦτον ἠνέγκατο πολυτελῆ. πραττόμενοι τοὺς ἀναπλέοντας καὶ τοὺς καταγομένους. ὅμως οὖν, ἔτι μένει δυσείσπλοα, διά τε τὴν λαβρότητα καὶ τὴν πρόσχωσιν καὶ τὴν ταπεινότητα τῆς χώρας, ὥστε μὴ καθορᾶσθαι μηδ' ἐγγὺς ἐν ταῖς δυσαερίαις. διόπερ, οἱ μασσαλιῶται πύργους ἀνέστησαν σημεῖα, ἐξοικειούμενοι πάντα τρόπον τὴν χώραν. καὶ δὴ καὶ τῆς ἐφεσίας ἀρτέμιδος κἀνταῦθα ἱδρύσαντο ἱερὸν χωρίον ἀπολαβόντες. ὃ ποιεῖ νῆσον τὰ στόματα τοῦ ποταμοῦ. ὑπέρκειται δὲ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ῥοδανοῦ, λιμνοθάλαττα. καλοῦσι δὲ στομαλίμνην. ὄστρεια δ' ἔχει πάμπολλα. καὶ ἄλλως εὐοψεῖ. ταύτην δ' ἔνιοι συγκατηρίθμησαν τοῖς στόμασι τοῦ ῥοδανοῦ. καὶ μάλιστα οἱ φήσαντες ἑπτάστομον αὐτόν. οὔτε τοῦτ' εὖ λέγοντες οὔτ' ἐκεῖνο. ὄρος γάρ ἐστι μεταξὺ, τὸ διεῖργον ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ, τὴν λίμνην. ἡ μὲν οὖν ἀπὸ τῆς πυρήνης ἀπὸ μασσαλίας, παραλία, τοιαύτη καὶ τοσαύτη τις. ἡ δ' ἐπὶ τὸν οὔαρον ποταμὸν, καὶ τοὺς ταύτῃ λίγυας, τάς τε τῶν μασσαλιωτῶν ἔχει πόλεις, ταυροέντιον, καὶ ὀλβίαν, καὶ ἀντίπολιν καὶ νίκαιαν. καὶ τὸ ναύσταθμον τὸ καίσαρος τοῦ σεβαστοῦ. ὃ καλοῦσι φόρον ἰούλιον. ἵδρυται δὲ τοῦτο μεταξὺ τῆς ὀλβίας καὶ τῆς ἀντιπόλεως. διέχον μασσαλίας, εἰς ἑξακοσίους σταδίους. ὁ δὲ οὔαρος μέσος ἐστὶ τῆς ἀντιπόλεως καὶ νικαίας. τῆς μὲν, ὅσον εἴκοσι. τῆς δὲ ὅσον ἑξήκοντα σταδίους διέχων. ὥσθ' ἡ νίκαια τῆς ἰταλίας γίνεται κατὰ τὸν νῦν ἀποδεδειγμένον ὅρον, καίπερ οὖσα μασσαλιωτῶν. ἐτείχισαν γὰρ τὰ κτίσματα ταῦτα τοῖς ἐπικειμένοις βαρβάροις οἱ μασσαλιῶται. τὴν τε θάλατταν ἔχειν ἐλευθέραν βουλόμενοι. τῆς χώρας ὑπ' ἐκείνων κρατουμένης. ὀρεινὴ γάρ ἐστι καὶ ἐρυμνή. πρὸς μὲν τῇ μασσαλίᾳ πλάτος τι μέτριον καταλείπουσα τῶν χωρίων τῶν ἐπιπέδων. προϊόντι δὲ ἐπὶ τὴν ἕω παντάπασιν ἀποθλίβουσα πρὸς τὴν θάλατταν. καὶ μόλις ἐῶσα πορεύσιμον αὐτὴν τὴν ὁδόν. κατέχουσι δὲ τὰ μὲν πρῶτα σάλυες. τὰ δὲ τελευταῖα πρὸς τὴν ἰταλίαν συνάπτοντες, λίγυες. περὶ ὧν λεχθήσεται μετὰ ταῦτα. νυνὶ δὲ τοσοῦτον προσθετέον, ὅτι τῆς μὲν ἀντιπόλεως ἐν τοῖς τῆς ναρβωνίτιδος μέρεσι κειμένης, τῆς δὲ νικαίας ἐν τοῖς τῆς ἰταλίας, ἡ μὲν νίκαια ὑπὸ τοῖς μασσαλιώταις μένει, καὶ τῆς ὑπαρχίας ἐστίν. ἡ δ' ἀντίπολις τῶν ἰταλιω

τίδων

τίδων ἐξετάζεται, κριθεῖσα πρὸς τοὺς μασσαλιώτας, καὶ ἐλευθερωθεῖσα τῶν παρ' ἐκείνων πραγ-
μάτων. πρόκεινται δὲ τῶν στενῶν τούτων ἀπὸ μασσαλίας ἀρξαμένοις, αἱ στοιχάδες νῆσοι, τρεῖς μὲν ἀξιό-
λογοι. δύο δὲ μικραί. γεωργοῦσι δ' αὐτὰς μασσαλιῶται. τὸ δὲ παλαιὸν, καὶ φρουρὰν εἶχον. ἱδρυμέ-
νην αὐτόθι πρὸς τὰς τῶν λῃστηρίων ἐφόδους, εὐποροῦντες καὶ λιμένων. μετὰ δὲ τὰς στοιχάδας ἡ πλα-
νασία καὶ λήρων, ἔχουσαι κατοικίας. ἐν δὲ τῇ λήρωνι καὶ ἡρῷόν ἐστι τὸ τοῦ λήρωνος. κεῖται δ' αὕτη
πρὸ τῆς ἀντιπόλεως. ἄλλα δ' ἐστὶ νησίδια οὐκ ἄξια μνήμης. τὰ μὲν, πρὸ τῆς μασσαλίας αὐτῆς, τὰ
δὲ, πρὸ τῆς ἄλλης τῆς λεχθείσης ἠιόνος. τῶν δὲ λιμένων, ὁ μὲν κατὰ τὸν ναύσταθμον ἀξιόλογος. καὶ
ὁ τῶν μασσαλιωτῶν. οἱ δ' ἄλλοι μέτριοι. τούτων δ' ἐστὶ καὶ ὁ ὀξύβιος καλούμενος λιμήν. ἐπώνυμος
τῶν ὀξυβίων λιγύων. περὶ μὲν τῆς παραλίας ταῦτα λέγομεν. τὴν δ' ὑπερκειμένην αὐτῆς χώ-
ραν, μάλιστα γεωγραφεῖ, τά τε ὄρη τὰ περικείμενα καὶ οἱ ποταμοί. διαφερόντως δὲ ὁ ῥοδανός. μέ-
γιστός τε ὢν καὶ πλεῖστον ἀνάπλουν ἔχων. ἐκ πολλῶν πληρούμενος ῥευμάτων. λεκτέον οὖν ἐφεξῆς
περὶ τούτων. ἀπὸ μασσαλίας τοίνυν ἀρξαμένοις καὶ προϊοῦσιν ἐπὶ τὴν μεταξὺ χώραν τῶν τε ἄλ-
πεων καὶ τοῦ ῥοδανοῦ, μέχρι μὲν τοῦ δρουεντία ποταμοῦ, σάλλυες οἰκοῦσιν, ἐπὶ πεντακοσίους σταδί-
ους. πορθμείῳ δὲ διαβᾶσιν εἰς καβαλλίωνα πόλιν, ἡ ἐφεξῆς πᾶσα, χώρα καουάρων ἐστὶ, μέχρι τῶν τοῦ ἴ-
σαρος συμβολῶν, πρὸς τὸν ῥοδανόν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ κέμμενον συνάπτει πως τῷ ῥοδανῷ. μῆ-
κος τὸ μέχρι δεῦρο ἀπὸ τοῦ δρουεντία, σταδίων ἐστὶν, ψʹ. οἱ μὲν οὖν σάλλυες, ἐν αὐτοῖς τά τε πεδία καὶ
τὰ ὑπερκείμενα ὄρη κατοικοῦσι. τῶν τε καουάρων ὑπέρκεινται οὐοκόντιοί τε, καὶ τρικόριοι, καὶ ἰκό-
νιοι καὶ μεδοῦλλοι. μεταξὺ δὲ τοῦ δρουεντία καὶ τοῦ ἴσαρος καὶ ἄλλοι ποταμοὶ ῥέουσιν ἀπὸ ἄλπεων,
ἐπὶ τὸν ῥοδανόν. δύο μὲν οἱ περιρρέοντες πόλιν καουάρων καὶ οὐάρων. κοινῷ ῥείθρῳ συμβάλλοντες
εἰς τὸν ῥοδανόν. τρίτος δὲ σούλγας, ὁ κατὰ οὔνδαλον πόλιν, συμμισγόμενος τῷ ῥοδανῷ. ὅπου γναῖος ὁ
βάρβαρος μεγάλῃ μάχῃ πολλὰς ἐτρέψατο κελτῶν μυριάδας. εἰσὶ δὲ ἐν τῷ μεταξὺ πόλεις ἀουενιὼν
καὶ ἀραυσιὼν, καὶ ἀερία. τῷ ὄντι φησὶν ἀρτεμίδωρος ἀερία διὰ τὸ ἐφ' ὕψους ἱδρῦσθαι μεγάλου. ἡ
μὲν οὖν ἄλλη πᾶσα, ἐστὶ πεδιὰς καὶ εὔβοτος. ἡ δ' ἐκ τῆς ἀερίας εἰς τὴν δουερίωνα ὑπερθέσεις ἔχει στε-
νὰς καὶ ὑλώδεις. καθ' ὃ δὲ συμπίπτουσιν ὁ ἴσαρ ποταμὸς καὶ ὁ ῥοδανὸς, καὶ τὸ κέμμενον ὄρος, κόϊν-
τος φάβιος μάξιμος αἰμιλιανός. οὐχ ὅλαις τρισὶ μυριάσιν, εἴκοσι μυριάδας κελτῶν κατέκοψαι.
καὶ ἔστησε τρόπαιον αὐτόθι λευκοῦ λίθου. καὶ νεὼς δύο. τὸν μὲν, ἄρεος. τὸν δ' ἡρακλέους. ἀπὸ δὲ τοῦ
ἴσαρος εἰς τὴν οὐίενναν τὴν τῶν ἀλλοβρόγων μητρόπολιν κειμένην ἐπὶ τῷ ῥοδανῷ, στάδιοι εἰσὶ τκʹ.
πλησίον δ' ὑπέρκειται τῆς οὐιέννης τὸ λούγδουνον. ἀφ' οὗ συμμίσγουσιν ἀλλήλοις, ὅ τε ἄραρ, καὶ
ὁ ῥοδανός. στάδιοι δ' εἰσὶν ἐπ' αὐτῷ πεζῇ μὲν περὶ σʹ διὰ τῆς ἀλλοβρόγων. ἀνάπλῳ δὲ μικρῷ πλεί-
ους. ἀλλόβρογες δὲ μυριάσι πολλαῖς πρότερον μὲν ἐστράτευον. νῦν δὲ γεωργοῦσι τὰ πεδία καὶ τοὺς
αὐλῶνας τοὺς ἐν ταῖς ἄλπεσι. καὶ οἱ μὲν ἄλλοι κωμηδὸν ζῶσιν. οἱ δ' ἐπιφανέστατοι τὴν οὐίενναν
ἔχοντες, κώμην πρότερον οὖσαν, μητρόπολιν δ' ὅμως τοῦ ἔθνους λεγομένην κατεσκευάκασι πόλιν. ἵ-
δρυται δ' ἐπὶ τῷ ῥοδανῷ. φέρεται δ' ἄνω τῆς πόλεως οὗτος πολὺς καὶ σφοδρός. ὅς γε καὶ διὰ
λίμνης ἐξιὼν τῆς μεγάλης, φανερὸν δείκνυσι τὸ ῥεῖθρον ἐπὶ πολλοὺς σταδίους. κατελθὼν δὲ εἰς τὰ
πεδία τῆς χώρας τῆς ἀλλοβρόγων καὶ σεγοσιαύων συμβάλλει τῷ ἄραρι κατὰ λούγδουνον πόλιν
τῶν σεγοσιαύων. ῥεῖ δὲ καὶ ὁ ἄραρ ἐκ τῶν ἄλπεων. ὁρίζων σηκοανούς τε καὶ αἰδούους. καὶ λιγκα-
σίους. παραλαβὼν δ' ὕστερον τὸν δοῦβιν ἐκ τῶν αὐτῶν ὀρῶν φερόμενον, πλωτὸν ἐπικρατήσας τῷ
ὀνόματι καὶ γενόμενος ἐξ ἀμφοῖν ἄραρ, συμμίσγει τῷ ῥοδανῷ. πάλιν δ' ἐπικρατήσας ὁ ῥοδανὸς
εἰς τὴν οὐίενναν φέρεται. συμβαίνει δὴ κατ' ἀρχὰς μὲν τοὺς τρεῖς ποταμοὺς φέρεσθαι πρὸς ἄρκτον.
εἶτα πρὸς δύσιν. εἰς ἓν δ' ἤδη συμπεσὸν ῥεῖθρον, πάλιν ἄλλην καμπὴν λαβὸν νότιον φέρεται τὸ
ῥεῦμα μέχρι τῶν ἐκβολῶν, δεξάμενον καὶ τοὺς ἄλλους ποταμούς. κἀκεῖθεν ἤδη τὴν λοιπὴν ποιεῖ-
ται, μέχρι τῆς θαλάττης ῥύσιν. ἡ μὲν οὖν μεταξὺ τῶν ἄλπεων καὶ τοῦ ῥοδανοῦ, τοιαύτη τις. τὴν δ' ἐπὶ
θάτερα μέρη τοῦ ποταμοῦ, οὐόλκαι νέμονται, τὴν πλείστην. οὓς ἀρικομίσκους προσαγορεύουσι. τού-
των δ' ἐπίνειον ἡ νάρβων λέγεται. δικαιότερον δ' ἂν καὶ τῆς ἄλλης κελτικῆς λέγοιτο. τοσοῦτον ὑπερ-
βέβληται τῷ πλήθει τῶν χρωμένων τῷ ἐμπορίῳ. οἱ μὲν οὖν οὐόλκαι γειτονεύουσι τῷ ποταμῷ τῷ ῥο-
δανῷ, τοὺς σάλλυας ἔχοντες, ἀντιπαρήκοντας αὐτοῖς ἐν τῇ περαίᾳ, καὶ τοὺς καουάρους. ἐπικρατεῖ
δὲ τὸ τῶν καουάρων ὄνομα. καὶ πάντας οὕτως ἤδη προσαγορεύουσι τοὺς ταύτῃ βαρβάρους. οὐδὲ βαρ-
βάρους ἔτι ὄντας. ἀλλὰ μετακειμένους τὸ πλέον εἰς τὸν τῶν ῥωμαίων τύπον καὶ τῇ γλώττῃ καὶ τοῖς
βίοις. τινὰς δὲ καὶ τῇ πολιτείᾳ. ἄλλα δ' ἐστὶν ἄδοξα ἔθνη καὶ μικρά. παρακείμενα τοῖς ἀρικομίσκοις
μέχρι πυρήνης. μητρόπολις δὲ τῶν ἀρικομίσκων ἐστὶ, νέμαυσος. κατὰ μὲν τὸν ἀλλότριον ὄχλον καὶ
τὸν ἐμπορικὸν, πολὺ νάρβωνος λειπομένη. κατὰ δὲ τὸν πολιτικὸν ὑπερβάλλουσα. ὑπηκόους γὰρ ἔ-
χει κώμας τέτταρας καὶ εἴκοσι τῶν ὁμοεθνῶν. εὐανδρίᾳ διαφερούσας, συντελούσας εἰς αὐτὴν ἔ-
χουσας καὶ τὸ καλούμενον λατεῖον. ὥς τε τοὺς ἀξιωθέντας ἀγορανομίας καὶ ταμιείας ἐν νεμαύ-
σῳ ῥωμαίους ὑπάρχειν. διὰ δὲ τοῦτο οὐδ' ὑπὸ τοῖς προστάγμασι τῶν ἐκ τῆς ῥώμης στρατηγῶν ἐστι

τὸ ἔθνος τοῦτο· ἵδρυται δ' ἡ πόλις κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ τῆς ἰβηρίας εἰς τὴν ἰταλίαν· θέρους μὲν εὔβατον οὖσαν· χειμῶνος δὲ καὶ ἔαρος, πηλώδη καὶ ποταμόκλυστον· τινὰ μὲν οὖν τῶν ῥευμάτων, πορθμείοις περᾶται· τινὰ δὲ γεφύραις· ταῖς μὲν, ξύλων πεποιημέναις· ταῖς δὲ, λίθων· ποιοῦσι δὲ τὰς ἐκ τῶν ὑδάτων δυσκολίας οἱ χείμαρροι· καὶ μέχρι τοῦ θέρους ἔσθ' ὅτε ἐκ τῶν ἄλπεων καταφερόμενοι μετὰ τὴν ἀπότηξιν τῶν χιόνων· τῆς δ' ὁδοῦ τῆς λεχθείσης, ἡ μὲν εὐθὺς, ἐπὶ τὰς ἄλπεις ἐστί, καθάπερ εἴπομεν ἡ σύντομος διὰ οὐοκοντίων· ἡ δὲ διὰ τῆς παραλίας τῆς μασσαλιωτικῆς καὶ τῆς λιγυστικῆς, μακροτέρα μέν· τὰς δ' ὑπερθέσεις τὰς εἰς τὴν ἰταλίαν, εὐμαρεστέρας ἔχει· ταπεινουμένων ἐνταῦθα ἤδη τῶν ὀρῶν· διέχει δ' ἡ νέμαυσος τοῦ μὲν ῥοδανοῦ, περὶ ἑκατὸν σταδίους· καθ' ὃ ἐν τῇ περαίᾳ πολίχνιον ἐστὶ ταράσκων· τῆς δὲ ναρβῶνος ψ' καὶ εἴκοσι. πρὸς δὲ τὸ κέμμενον ὄρος συνάπτοντες· ἐπιλαμβάνοντες δὲ καὶ τὸ νότιον πλευρὸν αὐτοῦ, μέχρι τῶν ἀκρωτηρίων οἰκοῦσι. τῶν τε οὐολκῶν οἱ τεκτόσαγες καλούμενοι, καὶ ἄλλοι τινές· περὶ μὲν οὖν τῶν ἄλλων ἐροῦμεν ὕστερον. οἱ δὲ τεκτόσαγες καλούμενοι τῇ πυρήνῃ πλησιάζουσιν· ἐφάπτονται δὲ μικρὰ καὶ τοῦ προσαρκτίου πλευροῦ τῶν κεμμένων· πολύχρυσόν τε νέμονται γῆν· ἐοίκασι δὲ καὶ δυναστεῦσαί ποτε καὶ εὐανδρῆσαι τοσοῦτον, ὥστε στάσεως ἐμπεσούσης, ἐξελάσαι πολὺ πλῆθος ἐξ ἑαυτῶν ἐκ τῆς οἰκείας· κοινωνῆσαι δὲ τούτοις καὶ ἄλλους ἐξ ἄλλων ἐθνῶν· τούτων δ' εἶναι καὶ τοὺς κατασχόντας τὴν φρυγίαν· τὴν ὅμορον τῇ καππαδοκίᾳ καὶ τοῖς παφλαγόσι· τούτου μὲν οὖν ἔχομεν τεκμήριον τοὺς ἔτι καὶ νῦν λεγομένους τεκτοσάγας· τριῶν γὰρ ὄντων ἐθνῶν, ἓν ἐξ αὐτῶν τὸ περὶ ἄγκυραν, πόλιν τεκτοσάγων λέγεται· τὰ δὲ λοιπὰ, δύο ἐστὶ, τρόκμοι καὶ τολιστοβόγιοι· τούτους δ' ὅτι μὲν ἐκ τῆς κελτικῆς ἀπῳκίσθησαν, μηνύει τό τε πρὸς τοὺς τεκτοσάγας σύμφυλον· ἐξ ὧν δὲ χωρίων ὡρμήθησαν, οὐκ ἔχομεν φράζειν· οὐ γὰρ παρειλήφαμεν οἰκοῦντας τινὰς νυνὶ τρόκμους ἢ τολιστοβογίους ἐκτὸς τῶν ἄλπεων· οὔτ' ἐν αὐταῖς οὔτ' ἐντός· εἰκὸς δ' ἐκλελοιπέναι διὰ τὰς ἀθρόας ἀπαναστάσεις· καθάπερ καὶ ἐπ' ἄλλων συμβαίνει πλειόνων· ἐπεὶ καὶ τὸν ἄλλον βρέννον τὸν ἐπελθόντα ἐπὶ δελφοὺς, πραῦσόν τινες φασίν· ἀλλ' οὐδὲ τοὺς πραύσους ἔχομεν εἰπεῖν, ὅπου γῆς ᾤκησαν πρότερον· καὶ τοὺς τεκτοσάγας δέ φασι μετασχεῖν τῆς ἐπὶ δελφοὺς στρατείας· καὶ τούς τε θησαυροὺς τοὺς εὑρεθέντας παρ' αὐτοῖς, ὑπὸ σκηπίωνος τοῦ στρατηγοῦ τῶν ῥωμαίων ἐν πόλει τολώσσῃ, τῶν ἐκεῖθεν χρημάτων μέρος εἶναι φασί· προσθεῖναι δὲ τοὺς ἀνθρώπους καὶ ἐκ τῶν ἰδίων οἴκων ἀνιεροῦντας καὶ ἐξιλασκομένους τὸν θεόν· προσαψάμενον δ' αὐτῶν τὸν σκηπίωνα, διὰ τοῦτο ἐν δυστυχήμασι καταστρέψαι τὸν βίον, ὡς ἱερόσυλον ἐκβληθέντα ὑπὸ τῆς πατρίδος· διαδόχους δ' ἀπολιπόντα παῖδας, ἃς συνέβη καταπορνευθείσας ὡς εἴρηκε τιμαγένης, αἰσχρῶς ἀπολέσθαι. πιθανώτερος δ' ἐστὶν ὁ ποσειδωνίου λόγος· τὰ μὲν γὰρ εὑρεθέντα ἐν τῇ τολώσσῃ χρήματα, μυρίων που καὶ πεντακισχιλίων ταλάντων γενέσθαι φησί· τὰ μὲν, ἐν σηκοῖς ἀποκείμενα· τὰ δ' ἐν λίμναις ἱεραῖς· οὐδεμίαν κατασκευὴν ἔχοντα· ἀλλ' ἀργὸν χρυσὸν καὶ ἄργυρον· τὸ δ' ἐν δελφοῖς ἱερὸν κατ' ἐκείνους ἤδη τοὺς χρόνους ὑπάρξαι κενὸν, τῶν τοιούτων· σεσυλημένον ὑπὸ τῶν φωκέων κατὰ τὸν ἱερὸν πόλεμον· εἰ δὲ καί τι ἐλείφθη; διανείμασθαι πολλούς· οὐδὲ σωθῆναι δὲ αὐτοὺς εἰκὸς εἰς τὴν οἰκείαν, ἀθλίως ἀπαλλάξαντας, μετὰ τὴν ἐκ δελφῶν ἀποχώρησιν· καὶ σκεδασθέντας ἄλλους ἐπ' ἄλλα μέρη κατὰ διχοστασίαν· ἀλλ' ὥσπερ ἐκεῖνός τε εἴρηκε καὶ ἄλλοι πλείους, ἡ χώρα πολύχρυσος οὖσα, καὶ δεισιδαιμόνων ἀνθρώπων καὶ οὐ πολυτελῶς τοῖς βίοις, πολλαχοῦ τῆς κελτικῆς ἔσχε θησαυρούς· μάλιστα δ' αὐτοῖς αἱ λίμναι τὴν ἀσυλίαν παρεῖχον, εἰς ἃς καθίεσαν ἀργύρου, ἢ καὶ χρυσίου βάρη· οἱ γοῦν ῥωμαῖοι κρατήσαντες τῶν τόπων, ἀπέδοντο τὰς λίμνας δημοσίᾳ· καὶ τῶν ὠνησαμένων πολλοὶ μύλους εὗρον σφυρηλάτους ἀργυροῦς· ἐν δὲ τῇ τολώσσῃ καὶ τὸ ἱερὸν ἦν ἅγιον· τιμώμενον σφόδρα ὑπὸ τῶν περιοίκων· καὶ τὰ χρήματα ἐπλεόνασε διὰ τοῦτο· πολλῶν ἀνατιθέντων καὶ μηδενὸς προσάπτεσθαι θαρροῦντος. ἵδρυται δ' ἡ τολῶσσα κατὰ τὸ στενώτατον τοῦ ἰσθμοῦ, τοῦ διείργοντος ἀπὸ τῆς κατὰ ναρβῶνα θαλάττης τὸν ὠκεανόν, ὅς φησι ποσειδώνιος, ἐλάττω τῶν τρισχιλίων σταδίων, ἄξιον δ' αὖ τι πάντων ἐπισημήνασθαι πάλιν ὅπερ εἴπομεν πρότερον· τὴν ὁμολογίαν τῆς χώρας, πρός τε τοὺς ποταμοὺς καὶ τὴν θάλατταν, τήν τ' ἐκτὸς ὁμοίως καὶ τὴν ἐντός· εὕροι γὰρ ἄν τις ἐπιστήσας, οὐκ ἐλάχιστον μέρος τοῦθ' ὑπάρχον, τῆς τῶν τόπων ἀρετῆς· λέγω δὲ τὸ τὰς χρείας ἐπιπλέκεσθαι τὰς τοῦ βίου μετὰ ῥᾳστώνης, ἅπασι πρὸς ἅπαντας· καὶ τὰς ὠφελείας ἀνεῖσθαι κοινάς· μάλιστα δὲ νῦν ἡνίκα ἄγοντες σχολὴν ἀπὸ τῶν ὅπλων, ἐργάζονται τὴν χώραν ἐπιμελῶς· καὶ τοὺς βίους κατασκευάζονται πολιτικούς· ὥστε ἐπὶ τῶν τοιούτων καὶ τὸ τῆς προνοίας ἔργον ἐπιμαρτυρεῖσθαι τις ἂν δόξειεν· οὐχ ὅπως ἔτυχεν, ἀλλ' ὡς ἂν μετὰ λογισμοῦ τινος διακειμένων τῶν τόπων. ὁ μέν γε ῥοδανὸς, πολύν τε ἔχει τὸν ἀνάπλουν· καὶ μεγάλοις φορτίοις καὶ ἐπὶ πολλὰ μέρη τῆς χώρας, διὰ τὸ τοὺς ἐμπίπτοντας εἰς αὐτὸν ποταμοὺς ὑπάρχειν πλωτούς· καὶ διαδέχεσθαι τὸν φόρτον πλεῖστον· ὁ δ' ἄραρ ἐκδέχεται καὶ ὁ δοῦβις ὁ εἰς τοῦτον ἐμβάλλων· εἶτα πεζεύεται μέχρι τοῦ σηκοάνα τοῦ ποταμοῦ· κἀντεῦθεν ἤδη, καταφέρεται εἰς τὸν ὠκεανὸν καὶ τοὺς ληξοβίους καὶ ὑαλέτους· ἐκ δὲ τούτων εἰς τὴν βρετανικήν,

ἐλάττων, ἡ ἡμερήσιος δρόμος ἐστίν. ἐπεὶ δ' ἐστὶν ὀξὺς καὶ δυσανάπλους ὁ ῥοδανὸς, τινὰ τῶν ἐντεῦθεν φορτίων, πεζεύεται μᾶλλον ταῖς ἁρμαμάξαις· ὅσα εἰς ἀρουέρνους κομίζεται, καὶ τὸν λείγηρα ποταμόν. καίπερ τοῦ ῥοδανοῦ καὶ τούτοις πλησιάζοντος ἐκ μέρους. ἀλλ' ἡ ὁδὸς πεδιὰς οὖσα καὶ οὐ πολλὴ, περὶ ω σταδίους ἐπάγεται μὴ χρήσασθαι τῷ ἀνάπλῳ, διὰ τὸ πεζεύεσθαι ῥᾷον. ἐντεῦθεν δ' ὁ λείγηρ εὐφυῶς ἐκδέχεται. ῥεῖ δὲ ἐκ τῶν κεμμενίων, εἰς τὸν ὠκεανόν. ἐκ δὲ ναρβῶνος ἀναπλεῖται μὲν ἐπὶ μικρὸν τῷ ἄτακι. πεζεύεται δὲ πλέον ἐπὶ τὸν γαρούναν ποταμόν. καὶ τοῦθ' ὅσον ω ἢ ψ΄ σταδίων. ῥεῖ δὲ καὶ ὁ γαρούνας εἰς τὸν ὠκεανόν. ταῦτα μὲν ὑπὲρ τῶν νεμομένων τὴν ναρβωνῖτιν ἐπικράτειαν λέγομεν. οὓς οἱ πρότερον κέλτας ὠνόμαζον. ἀπὸ τούτων δ' οἶμαι καὶ τοὺς σύμπαντας γαλάτας κελτοὺς ὑπὸ τῶν ἑλλήνων προσαγορευθῆναι, διὰ τὴν ἐπιφάνειαν· ἢ καὶ προσλαβόντων πρὸς τοῦτο καὶ τῶν μασσαλιωτῶν διὰ τὸ πλησιόχωρον. ἑξῆς δὲ περὶ τῶν ἀκουιτανῶν λεκτέον, καὶ τῶν προσωρισμένων αὐτοῖς ἐθνῶν, τεσσαρεσκαίδεκα γαλατικῶν τῶν μεταξὺ τοῦ γαρουνᾶ κατοικούντων, καὶ τοῦ λείγηρος. ὧν ἔνια ἐπιλαμβάνει καὶ τῆς τοῦ ῥοδανοῦ ποταμίας, καὶ τῶν πεδίων τῶν κατὰ τὴν ναρβωνῖτιν. ἁπλῶς γὰρ εἰπεῖν, οἱ ἀκουιτανοὶ διαφέρουσι τοῦ γαλατικοῦ φύλου. κατά τε τὰς τῶν σωμάτων κατασκευὰς καὶ κατὰ τὴν γλῶτταν. ἐοίκασι δὲ μᾶλλον ἴβηρσιν. ὁρίζονται δὲ τῷ γαρουνᾷ ποταμῷ, ἐντὸς τούτου καὶ τῆς πυρήνης οἰκοῦντες. ἔστι δὲ ἔθνη τῶν ἀκουιτανῶν πλείω μὲν τῶν εἴκοσι μικρὰ δὲ καὶ ἄδοξα. τὰ πολλὰ μὲν παρωκεανιτικά. τὰ δὲ εἰς τὴν μεσόγαιαν, καὶ τὰ ἄκρα τῶν κεμμενίων ὀρῶν μέχρι τεκτοσάγων ἀνήκοντα. ἐπειδὴ δὲ μικρὰ μερὶς ἦν ἡ τοσαύτη, προσέθεσαν καὶ τὴν μεταξὺ τοῦ γαρουνᾶ καὶ τοῦ λείγηρος. παράλληλοι δέ πως εἰσὶν οἱ ποταμοὶ τῇ πυρήνῃ. καὶ δύο ποιοῦσι παραλληλόγραμμα πρὸς αὐτὴν χωρία. ὁριζόμενα κατὰ τὰς ἄλλας πλευρὰς τῷ τε ὠκεανῷ καὶ τοῖς κεμμένοις ὄρεσι. δισχιλίων δ' ὁμοῦ σταδίων, ἐστὶν ὁ πλοῦς ἑκατέρων τῶν ποταμῶν. ἐκβάλλει δ' ὁ μὲν γαρούνας, τρισὶ ποταμοῖς αὐξηθεὶς, εἰς τὸ μεταξὺ βιτουρίγων τε τῶν ἰοσκῶν ἐπικαλουμένων καὶ σαντόνων. ἀμφοτέρων γαλατικῶν ἐθνῶν. μόνον γὰρ δὴ τὸ τῶν βιτουρίγων τούτων ἔθνος ἐν τοῖς ἀκουιτανοῖς ἀλλόφυλον ἵδρυται, καὶ οὐ συντελεῖ αὐτοῖς. ἔχει δὲ ἐμπορεῖον βουρδίγαλα ἐπικείμενον λιμνοθαλάττῃ τινὶ, ἣν ποιοῦσιν αἱ ἐκβολαὶ τοῦ ποταμοῦ. ὁ δὲ λείγηρ μεταξὺ πικτόνων τε καὶ ναμνιτῶν ἐκβάλλει. πρότερον δὲ κορβίλων ὑπῆρχεν ἐμπορεῖον. ἐπὶ τούτῳ τῷ ποταμῷ περὶ ἧς εἴρηκε πολύβιος. μνησθεὶς τῶν ὑπὸ πυθέου μυθολογηθέντων. ὅτι μασσαλιωτῶν μὲν τῶν συμμιξάντων σκηπίωνι, οὐδεὶς εἶχε λέγειν οὐδὲν μνήμης ἄξιον, ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ σκηπίωνος ὑπὲρ τῆς βρεταννικῆς, οὐδὲ τῶν ἐκ ναρβῶνος. οὐδὲ τῶν ἐκ κορβιλῶνος, αἵπερ ἦσαν ἄρισται πόλεις τῶν ταύτης. πυθέας δ' ἐθάρρησε ψεύσασθαι τοσαῦτα. τῶν δὲ σαντόνων πόλις ἐστὶ μεδιολάνιον. ἔστι δ' ἡ μὲν παρωκεανῖτις τῶν ἀκουιτανῶν ἀμμώδης ἡ πλείστη καὶ λεπτὴ, κέγχρῳ τρέφουσα. τοῖς δ' ἄλλοις καρποῖς ἀφορωτέρα. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ καὶ ὁ κόλπος ὁ ποιῶν τὸν ἰσθμὸν πρὸς τὸν ἐν τῇ ναρβωνίτιδι παραλίᾳ γαλατικὸν κόλπον. ὁμώνυμος ἐκείνῳ καὶ αὐτός. ἔχουσι δὲ τάρβελλοι τὸν κόλπον. παρ' οἷς εἰσὶ τὰ χρύσεια, σπουδαιότατα πάντων. ἐν γὰρ βόθροις ὀρυχθεῖσιν ἐπὶ μικρὸν, εὑρίσκονται καὶ χειροπληθεῖς χρυσίου πλάκες, ἔσθ' ὅτε μικρᾶς ἀποκαθάρσεως δεόμεναι. τὸ δὲ λοιπὸν ψῆγμα ἐστὶ καὶ βῶλοι. καὶ αὗται κατεργασίαν οὐ πολλὴν ἔχουσαι. ἡ δὲ μεσόγαιος καὶ ὀρεινὴ, βελτίω γῆν ἔχει. πρὸς μὲν τῇ πυρήνῃ, ἡ τῶν κονουενῶν ἐστὶ συγκλείδων. ἐν ᾗ πόλις λούγδουνος, καὶ τὰ τῶν ὀνησιῶν θερμὰ, κάλλιστα ποτιμωτάτου ὕδατος. καλὴ δὲ καὶ ἡ τῶν ψαυσκιῶν. τὰ δὲ μεταξὺ τοῦ γαρουνᾶ καὶ τοῦ λείγηρος ἔθνη, τὰ προσκείμενα τοῖς ἀκουιτανοῖς ἐστὶν, ἐλουοὶ μὲν ἀπὸ τοῦ ῥοδανοῦ τὴν ἀρχὴν ἔχοντες. οὐελλάϊοι δὲ μετὰ τούτους. οἳ προσωρίζοντό ποτε ἀρουέρνοις. νῦν δὲ τάττονται καθ' ἑαυτούς. εἶτα ἀλουέρνοι καὶ λεμοθρίκες. καὶ πετροκόριοι. πρὸς δὲ τούτοις, νιτιόβριγες. καὶ καδοῦρκοι καὶ βιτούριγες. οἱ κοῦβοι καλούμενοι. πρὸς δὲ τῷ ὠκεανῷ, σαντόνοι τε καὶ πίκτονες. οἱ μὲν, τῷ γαρουνᾷ παροικοῦντες ὡς εἴπομεν. οἱ δὲ, τῷ λείγηρι. ῥουτανοὶ δὲ καὶ γαβάλεις τῇ ναρβωνίτιδι πλησιάζουσι. παρὰ μὲν οὖν τοῖς πετροκορίοις, σιδηρουργία ἐστὶν, ἀστεία. καὶ τοῖς κούβοις βιτούριξι. παρὰ δὲ τοῖς καδούρκοις, λινουργία. παρὰ δὲ τοῖς ῥουτηνοῖς, ἀργύρεια. ἔχουσι δ' ἀργύρεια καὶ οἱ γαβαλεῖς. δεδώκασι δὲ λατίνιον οἱ ῥωμαῖοι, καὶ τῶν ἀκουιτανῶν τισί. καθάπερ αὐσκίοις καὶ κωμουενίαις. ἀρουέρνοι δὲ ἵδρυνται μὲν ἐπὶ τῷ λείγηρι. μητρόπολις δ' αὐτῶν ἐστὶ νεμωσσὸς, ἐπὶ τῷ ποταμῷ κειμένη. ῥυεὶς δ' οὗτος παρὰ κήναβον τὸ τῶν καρνούντων ἐμπορεῖον, κατὰ μέσον που τὸν πλοῦν συνοικούμενον, ἐκβάλλει πρὸς τὸν ὠκεανόν. τῆς δυνάμεως δὲ τῆς πρότερον ἀρουέρνοι, μέγα τεκμήριον παρέχονται τὸ πολλάκις πολεμῆσαι πρὸς τοὺς ῥωμαίους. τότε μὲν μυριάσιν εἴκοσι. πάλιν δὲ διπλασίαις. τοσαύταις γὰρ πρὸς καίσαρα τὸν θεὸν διηγωνίσαντο, μετὰ οὐερκιγγετόριγος. πρότερον δὲ καὶ εἴκοσι πρὸς μάξιμον τὸν αἰμιλιανόν. καὶ πρὸς δομήτιον δ' ὡσαύτως ἠνόβαρβον. πρὸς μὲν οὖν καίσαρα περί τε γεργοουΐαν πόλιν τῶν ἀρουέρνων, ἐφ' ὑψηλοῦ ὄρους κειμένην, συνέστησαν οἱ ἀγῶνες. ἐξ ἧς ἦν ὁ οὐερκιγγετόριξ. καὶ ὁ περὶ ἀλησίαν πόλιν μανδουβίων. ἔθνους ὁμόρου τοῖς ἀρουέρνοις. καὶ ταύτην ἐφ' ὑψηλοῦ λόφου κειμένην. περιεχομένην δ' ὄρεσι καὶ ποταμοῖς δυσίν. ἐν ᾗ καὶ ἑάλω ὁ ἡγεμών. καὶ ὁ πόλεμος τέλος ἔσχε. πρὸς δὲ μάξιμον αἰμιλιανὸν κατὰ τὴν συμβολὴν τοῦ ἴσαρος καὶ τοῦ ῥοδανοῦ. καθ' ἣν καὶ τὸ κέμμενον ὄρος πλησιάζει

τῷ ῥοδανῷ. πρὸς δὲ δομίτιον καταπολεμηθέντι. κατὰ τὴν συμβολὴν τοῦ τε σουλγᾶ, καὶ τοῦ ῥοδανοῦ. διέτειναν δὲ τὴν ἀρχὴν οἱ ἀρουέρνοι μέχρι ναρβῶνος καὶ τῶν ὅρων τῆς μασσαλιώτιδος. ἐκράτουν δὲ καὶ τῶν μέχρι πυρήνης ἐθνῶν, καὶ μέχρι ὠκεανοῦ καὶ ῥήνου. βιτίου δὲ πρὸς τὸν μάξιμον καὶ τὸν δομίτιον πολεμήσαντος, ὁ πατὴρ λουέριος, τοσοῦτον πλοῦτον λέγεται καὶ τρυφὴν διενεγκεῖν, ὥστε, ἐπίδειξιν ποιούμενος τοῖς φίλοις τῆς εὐπορίας, ἐπ' ἀπήνης φέρεσθαι διὰ πεδίου χρυσοῦ νόμισμα, καὶ ἀργύρου. δεῦρο κἀκεῖσε σπείρων. ὥστε συλλέγειν ἐκείνους ἀκολουθοῦντας. μετὰ δὲ τὴν ἀκουιτανὴν μερίδα, καὶ τὴν ναρβωνῖτιν, ἡ ἐφεξῆς ἐστι, μέχρι τοῦ ῥήνου παντὸς, ἀπὸ τοῦ λείγηρος ποταμοῦ καὶ τοῦ ῥοδανοῦ. καθ' οὗ συνάπτει πρὸς τὸ λούγδουνον, ἀπὸ τῆς πηγῆς κατενεχθεὶς ὁ ῥοδανός. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὰ μὲν ἄνω μέρη τὰ πρὸς ταῖς πηγαῖς τῶν ποταμῶν, τοῦ τε ῥήνου καὶ τοῦ ῥοδανοῦ, μέχρι μέσων σχεδόν τι τῶν πεδίων ὑπὸ τῷ λουγδούνῳ τέτακται. τὰ δὲ λοιπὰ καὶ παρωκεανιτικὰ, ὑπ' ἄλλῃ τέτακται μερίδι. ἣν ἰδίως βέλγαις προσνέμουσιν. ἡμεῖς δὲ κοινότερον τὰ καθ' ἕκαστα δηλώσομεν. αὐτὸ μὲν δὴ τὸ λούγδουνον, ἐκτισμένον ὑπὸ λόφῳ κατὰ τὴν συμβολὴν τοῦ τε ἄραρος ποταμοῦ καὶ τοῦ ῥοδανοῦ, κατέχουσι ῥωμαῖοι. εὐανδρεῖ δὲ μάλιστα τῶν ἄλλων πλὴν ναρβῶνος. καὶ γὰρ ἐμπορείῳ χρῶνται. καὶ τὸ νόμισμα χαράττουσιν ἐνταῦθα, τό τε ἀργυροῦν καὶ τὸ χρυσοῦν οἱ τῶν ῥωμαίων ἡγεμόνες. τό τε ἱερὸν τὸ ἀναδειχθὲν ὑπὸ πάντων κοινῇ τῶν γαλατῶν, καίσαρι τῷ σεβαστῷ, πρὸ ταύτης ἵδρυται τῆς πόλεως, ἐπὶ τῇ συμβολῇ τῶν ποταμῶν. ἔστι δὲ βωμὸς ἀξιόλογος ἐπιγραφὴν ἔχων τῶν ἐθνῶν ξ' τὸν ἀριθμόν. καὶ εἰκόνες τούτων ἑκάστου μία. καὶ ἄλλος μέγας. προκάθηται δὲ τοῦ ἔθνους τοῦ σεγοσιαύων ἡ πόλις αὕτη. κειμένη μεταξὺ τοῦ ῥοδανοῦ καὶ τοῦ δούβιος. τὰ δ' ἑξῆς ἔθνη τὰ συντείνοντα πρὸς τὸν ῥῆνον, τὰ μὲν, ὑπὸ τοῦ δούβιος ὁρίζεται. τὰ δ' ὑπὸ τοῦ ἄραρος. οὗτοι μὲν οὖν ὡς εἴρηται πρότερον, ὑπὸ τῶν ἄλπεων καὶ αὐτοὶ κατενεχθέντες, ἔπειτ' εἰς ἓν ῥεῖθρον συμπεσόντες, εἰς τὸν ῥοδανὸν καταφέρονται. ἄλλος δ' ἐστὶν ὁμοίως ἐν τοῖς ἄλπεσι τὰς πηγὰς ἔχων. σηκουανὸς ὄνομα. ῥέων. ῥεῖ δ' εἰς τὸν ὠκεανὸν, παράλληλος τῷ ῥήνῳ διὰ ἔθνους ὁμωνύμου. συνάπτοντος τῷ ῥήνῳ τὰ πρὸς ἕω. τὰ δ' εἰς τἀναντία τῷ ἄραρι. ὅθεν αἱ κάλλισται ταριχεῖαι τῶν ὑείων κρεῶν, εἰς τὴν ῥώμην κατακομίζονται. μεταξὺ μὲν οὖν τοῦ δούβιος καὶ τοῦ ἄραρος οἰκεῖ τὸ τῶν ἐδούων ἔθνος. πόλιν ἔχον καβυλλῖνον ἐπὶ τῷ ἄραρι. καὶ φρούριον βίβρακτα. οἱ δὲ ἔδουοι καὶ συγγενεῖς ῥωμαίων ὠνομάζοντο. καὶ πρῶτοι τῶν ταύτῃ προσῆλθον πρὸς τὴν φιλίαν καὶ συμμαχίαν. πέραν δὲ τοῦ ἄραρος οἰκοῦσιν οἱ σηκουανοί. διάφοροι καὶ τοῖς ῥωμαίοις ἐκ πολλοῦ γεγονότες καὶ τοῖς ἐδούοις, ὅτι πρὸς γερμανοὺς προσεχώρουν πολλάκις, κατὰ τὰς ἐφόδους αὐτῶν, τὰς ἐπὶ τὴν ἰταλίαν. καὶ παρείχοντό γε οὐ τὴν τυχοῦσαν δύναμιν. ἀλλὰ καὶ κοινωνοῦντες αὐτοῖς ἐποίουν μεγάλους. καὶ ἀφιστάμενοι, μικρούς. πρὸς δὲ τοὺς ἐδούους, καὶ διὰ ταῦτα μὲν, ἀλλ' ἐπέτεινε τὴν ἔχθραν ἡ τοῦ ποταμοῦ ἔρις, τοῦ διείργοντος αὐτούς. ἑκατέρου ἔθνους, ἴδιον ἀξιοῦντος εἶναι τὸν ἄραρα. καὶ ἑαυτῷ προσήκειν τὰ διαγωγικὰ τέλη. νυνὶ δ' ὑπὸ τοῖς ῥωμαίοις ἅπαντ' ἐστί. τὴν δ' ἐπὶ τῷ ῥήνῳ πρῶτοι τῶν ἁπάντων οἰκοῦσιν αἰτουάτιοι. παρ' οἷς εἰσὶν αἱ πηγαὶ τοῦ ποταμοῦ ἐν τῷ διαδουέλλα ὄρει. τοῦτο δ' ἐστὶ μέρος τῶν ἄλπεων, ὅθεν καὶ ὁ ἀδούας εἰς τἀναντία μέρη ῥεῖ, τὰ πρὸς τὴν ἐντὸς κελτικήν. καὶ πληροῖ τὴν λάριον λίμνην, πρὸς ᾗ ἔκτισται τὸ κῶμον. εἶτ' ἐνθένδε εἰς τὸν πάδον συμβάλλει. περὶ ὧν, ὕστερον ἐροῦμεν, καὶ ὁ ῥῆνος δὲ εἰς ἕλη μεγάλα καὶ λίμνην ἀναχεῖται μεγάλην. ἧς ἐφάπτονται καὶ ῥαιτοὶ καὶ οὐινδολόγοι τῶν ἀλπείων τινὲς, καὶ τῶν ὑπεραλπείων. φησὶ δὲ τὸ μῆκος αὐτοῦ, σταδίων ἑξακισχιλίων ἀσίνιος. οὐκ ἔστι δέ. ἀλλ' ἐπ' εὐθείας μὲν τοῦ ἡμίσους, ὀλίγον ἂν ὑπερβάλλοι. τοῖς δὲ σκολιώμασι καὶ χίλιοι προστεθέντες, ἱκανῶς ἂν ἔχοιεν καὶ γὰρ ὀξύς ἐστι. διὰ τοῦτο δὲ καὶ δυσγεφύρωτος. καὶ διὰ πεδίων ὕπτιος φέρεται καταβὰς ἀπὸ τῶν ὀρῶν τὸ λοιπόν. πῶς οὖν οἷόν τε μένειν ὀξὺν καὶ βίαιον, εἰ τῷ ὑπτιασμῷ προσδοίημεν καὶ σκολιότητας πολλὰς καὶ μακράς. φησὶ δὲ καὶ δίστομον εἶναι, μεμψάμενος τοὺς πλείω λέγοντας. ἐγκυκλοῦνται μὲν δή τινα χώραν ταῖς σκολιότησι καὶ οὗτος ὁ σηκουανὸς οὐ τοσαύτην. ἀμφότεροι δὲ ῥέουσιν ἐπὶ τὰς ἄρκτους, ἀπὸ τῶν νοτίων μερῶν. πρόκειται δ' αὐτῶν ἡ βρεταννική. τοῦ μὲν ῥήνου καὶ ἐγγύθεν, ὥστε καθορᾶσθαι τὸ κάντιον, ὅπερ ἐστὶ τὸ ἑῷον ἄκρον τῆς νήσου. τοῦ δὲ σηκουανοῦ μικρὸν ἀπωτέρω. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ ναυπήγιον συνεστήσατο, καῖσαρ ὁ θεὸς πλέων εἰς τὴν βρεταννικήν. τοῦ δὲ σηκουανοῦ τὸ πλεόμενον ὑπὸ τῶν ἐκ τοῦ ἄραρος, δεχομένων τὰ φορτία μικρῷ πλέον ἐστὶν, ἢ τὸ τοῦ λήγηρος, καὶ τὸ τοῦ γαρουνᾶ. τὸ δὲ ἀπὸ λουγδούνου μέχρι τοῦ σηκουανοῦ, ἢ χιλίων σταδίων ἐστὶν ἔλαττον, ἢ διπλάσιον τούτου, ἀπὸ τῶν εἰσβολῶν τοῦ ῥοδανοῦ μέχρι λουγδούνου. φασὶ δὲ καὶ πολυχρύσους τοὺς ἐλουηττίους λῃστὰς, μηδὲν μέντοι ἧττον ἐπὶ λῃστείαν τραπέσθαι. τὰς τῶν κίμβρων εὐπορίας ἰδόντας. ἀφανισθῆναι δ' αὐτῶν τὰ δύο φῦλα τριῶν ὄντων κατὰ στρατείας. ὅμως δ' ἐκ τῶν λοιπῶν τόπων τὸ τῶν ἐπιγόνων πλῆθος ἐδήλωσεν ὁ πρὸς καίσαρα τὸν θεὸν πόλεμος, ἐν ᾧ περὶ τετταράκοντα μυριάδες σωμάτων διεφθάρησαν. τοὺς δὲ λοιποὺς, σώζεσθαι μεθῆκεν εἰς ὀκτακισχιλίους. ὅπως μὴ τοῖς γερμανοῖς ὁμόροις οὖσιν, ἔρημον τὴν χώραν ἀναφῇ. μετὰ δὲ τοὺς ἐλουηττίους, σηκουανοὶ καὶ μεδιοματρικοὶ, κατοικοῦσι τὸν ῥῆνον. ἐν οἷς ἵδρυται γερμανικὸν ἔθνος περαιωθὲν ἐκ τῆς οἰκείας, τριβόκχοι. ἐν δὲ τοῖς σηκουανοῖς ἐστι τὸ ὄ-

ρος ὁ ἰουράσιος. διορίζει δ᾽ ἐλουηττίους, καὶ σηκουανούς. ὑπὲρ οὖν τῶν ἐλουηττίων καὶ σηκουανῶν αἰ-
δοῦοι, καὶ λίγγονες οἰκοῦσι πρὸς δύσιν. ὑπὲρ δὲ τῶν μεδιοματρικῶν, λεῦκοι καὶ τῶν λιγγόνων τι μέ-
ρος. τὰ δὲ μεταξὺ ἔθνη, τοῦ τε λείγηρος καὶ τοῦ σηκουάνα ποταμοῦ, τὰ πέραν τοῦ ῥοδανοῦ τε καὶ τοῦ ἄ-
ραρος, παράκειται πρὸς ἄρκτον. τοῖς τε ἀλλόβριξι, καὶ τοῖς περὶ τὸ λούγδουνον. τούτων δ᾽ ἐπιφα-
νέστατόν ἐστι, τὸ τῶν ἀρουέρνων, καὶ τὸ τῶν καρνούτων. δι᾽ ὧν ἀμφοῖν ἐνεχθεὶς ὁ λείγηρ, εἰς τὸν ὠκεανὸν ἐ-
ξεισι. δίαρμα δ᾽ ἐστὶν εἰς τὴν βρεττανικὴν, ἀπὸ τῶν ποταμῶν τῆς κελτικῆς, εἴκοσι καὶ τ΄ στάδιοι. ὑπὸ
γὰρ τὴν ἄμπωτιν ἀφ᾽ ἑσπέρας ἀναχθέντες, τῇ ὑστεραίᾳ περὶ ὀγδόην ὥραν καταίρουσιν εἰς τὴν νῆσον.
μετὰ δὲ τοὺς μεδιοματρικοὺς καὶ τριβόκχους, παροικοῦσι τὸν ῥῆνον τρηουάγροι. καθ᾽ οὓς πεποίη-
ται τὸ ζεῦγμα ὑπὸ τῶν ῥωμαίων νυνὶ, τῶν στρατηγούντων τὸν γερμανικὸν πόλεμον. πέραν δὲ ᾤ-
κουν οὐίβιοι κατὰ τοῦτον τὸν τόπον. οὓς μετήγαγεν ἀγρίππας ἑκόντας εἰς τὴν ἐντὸς τοῦ ῥήνου. τρηουά-
γροις δὲ συνεχεῖς, νερούιοι, καὶ τοῦτο γερμανικὸν ἔθνος. τελευταῖοι δὲ μενάπιοι τῶν ἐκβολῶν. ἐφ᾽ ἑκά-
τερα τοῦ ποταμοῦ κατοικοῦντες ἕλη, καὶ δρυμοὺς, οὐχ ὑψηλῆς, ἀλλὰ πυκνῆς ὕλης, καὶ ἀκανθώδους.
κατὰ τούτους δ᾽ ἵδρυνται, σουγάμβροι γερμανοί. πάσης δ᾽ ὑπέρκειται τῆς ποταμίας ταύτης, οἱ σούη-
βοι προσαγορευόμενοι γερμανοί. καὶ δυνάμει καὶ πλήθει διαφέροντες τῶν ἄλλων. ὑφ᾽ ὧν οἱ ἐξελαυ-
νόμενοι, κατέφευγον εἰς τὴν ἐντὸς τοῦ ῥήνου νυνί. καὶ ἄλλοι δὲ κατ᾽ ἄλλους τόπους δυναστεύουσι. καὶ δια-
δέχονται τὰ ζώπυρα τοῦ πολέμου τῶν πρώτων ἀεὶ καταλυομένων. τῶν δὲ τρηουήρων καὶ νερβίων, σέ-
νονες καὶ ῥῆμοι πρὸς ἑσπέραν οἰκοῦσιν. ἔτι δ᾽ ἀτρέβατοι καὶ ἐβούρωνες. τοῖς μεναπίοις δ᾽ εἰσὶ συνε-
χεῖς ἐπὶ τῇ θαλάττῃ μόρινοι, καὶ βελλοάκοι. καὶ ἀμβιανοὶ καὶ σουεσσίωνες. καὶ κάλετοι, μέχρι τῆς ἐκβο-
λῆς τοῦ σηκουάνα ποταμοῦ. ἐμφερὴς δ᾽ ἐστὶ τῇ τῶν μεναπίων ἥ τε τῶν μορινῶν καὶ ἡ τῶν ἀτρεβατίων
καὶ ἐβουρώνων. ὕλη γάρ ἐστιν οὐχ ὑψηλῶν δένδρων. πολλὴ μέν. οὐ τοσαύτη δὲ, ὅσην οἱ συγγραφεῖς εἰρή-
κασι τετρακισχιλίων σταδίων. καλοῦσι δ᾽ αὐτὴν ἀρδουένναν. κατὰ δὲ τὰς πολεμικὰς ἐφόδους συμπλέ-
κοντες τὰς τῶν θάμνων λύγους, βατώδεις ὄντας, ἀνέφραττον τὰς εἰσόδους, ἔστι δ᾽ ὅπου καὶ σκόλοπας
κατέπηττον. αὐτοὶ δὲ κατέδυνον εἰς τὰ βάθη πανοίκιοι, νησίδια ἔχοντες ἐν τοῖς ἕλεσι. ἐν μὲν οὖν ταῖς
ἐπομβρίαις ἀσφαλεῖς τὰς φυγὰς εἶχον. ἐν δὲ τοῖς αὐχμοῖς ἡλίσκοντο ῥᾳδίως. νυνὶ δ᾽ ἅπαντες οἱ ἐντὸς
ῥήνου καθ᾽ ἡσυχίαν ὄντες, ὑπακούουσι ῥωμαίων. περὶ δὲ τὸν σηκουάναν ποταμὸν, εἰσὶ καὶ οἱ παρήσιοι.
νῆσον ἔχοντες ἐν τῷ ποταμῷ, καὶ πόλιν λουκοτοκίαν. καὶ μέλδοι, καὶ ληξοούιοι, παρωκεανῖται οὗτοι.
ἀξιολογώτατον δ᾽ ἐστὶν ἔθνος τῶν ταύτῃ ῥῆμοι. καὶ ἡ μητρόπολις αὐτῶν δουρικόρτορα, μάλιστα συνοι-
κεῖται, καὶ δέχεται τοὺς τῶν ῥωμαίων ἡγεμόνας. μετὰ δὲ τὰ λεχθέντα ἔθνη, τὰ λοιπὰ βελγῶν ἐ-
στιν ἔθνη, τῶν παρωκεανιτῶν. ὧν οὐένετοι μέν εἰσιν οἱ ναυμαχήσαντες πρὸς καίσαρα. ἕτοιμοι γὰρ ἦσαν
κωλύειν τὸν εἰς τὴν βρεττανικὴν πλοῦν, χρώμενοι τῷ ἐμπορείῳ. κατεναυμάχησε δὲ ῥᾳδίως. οὐκ ἐμβό-
λοις χρώμενος. ἦν γὰρ παχέα τὰ ξύλα, ἀλλ᾽ ἀνέμῳ φερομένων ἐπ᾽ αὐτὸν, κατέσπων οἱ ῥωμαῖοι τὰ ἱ-
στία δορυδρεπάνοις. ἦν γὰρ σκύτινα, διὰ τὴν βίαν τῶν ἀνέμων. ἀλύσεις δ᾽ ἔτεινον ἀντὶ κάλων. πλα-
τύπυγα, δ᾽ ποιοῦσι, καὶ ὑψίπρυμνα καὶ ὑψόπρωρα διὰ τὰς ἀμπώτεις, δρυΐνης ὕλης. ἧς ἐστιν εὐπορία.
διόπερ οὐ συνάγουσι τὰς ἁρμονίας τῶν σανίδων. ἀλλ᾽ ἀραιώματα καταλείπουσι. ταῦτα δὲ βρύοις
διανάττουσι, τοῦ μὴ κατὰ τὰς νεωλκίας καπυροῦσθαι τὴν ὕλην, ἢ νοτιζομένην. τοῦ μὲν βρύου νοτιω-
τέρου ὄντος τῇ φύσει. τῆς δὲ δρυὸς ξηρᾶς καὶ ἀλιποῦς. τούτους οἶμαι τοὺς οὐενέτους οἰκιστὰς εἶναι,
τῶν κατὰ τὸν ἀδρίαν. καὶ γὰρ οἱ ἄλλοι πάντες σχεδόν τι οἱ ἐν τῇ ἰταλίᾳ κελτοὶ, μετανέστησαν ἐκ τῆς
ὑπὲρ τῶν ἄλπεων γῆς. καθάπερ καὶ οἱ βόιοι καὶ οἱ σένονες. διὰ δὲ τὴν ὁμωνυμίαν παφλαγόνας φα-
σὶν αὐτούς. λέγω δ᾽ οὐκ ἰσχυριζόμενος. ἀρκεῖ γὰρ ἐπὶ τῶν τοιούτων τὸ εἰκός. εἰσὶ δὲ οἱ ὀσίσμιοι δ᾽ εἰσὶν, οὓς τι-
μίους ὀνομάζει πυθέας, ἐπί τινος προπεπτωκυίας ἱκανῶς ἄκρας, εἰς τὸν ὠκεανὸν οἰκοῦντες. οὐκ ἐπὶ το-
σοῦτον δὲ, ἐφ᾽ ὅσον ἐκεῖνος ἔχειν φησὶ, καὶ οἱ πιστεύσαντες ἐκείνῳ. τῶν δὲ μεταξὺ ἐθνῶν τοῦ τε σηκουάνα καὶ
τοῦ λείγηρος, οἱ μὲν, τοῖς σηκουανοῖς, οἱ δὲ, τοῖς ἀρουέρνοις ὁμοροῦσι. τὸ δὲ σύμπαν φῦλον ὃ νῦν, γαλλι-
κόν τε καὶ γαλατικὸν καλοῦσιν. ἀρειμάνιόν τε καὶ θυμικόν ἐστι. καὶ ταχὺ πρὸς μάχην. ἄλλως δὲ ἁπλοῦν
καὶ οὐ κακόηθες. διὰ δὲ τοῦτο. ἐρεθισθέντες μὲν, ἀθρόοι συνίασι πρὸς τοὺς ἀγῶνας, καὶ φανερῶς καὶ
οὐ μετὰ περισκέψεως. ὥς τε καὶ εὐμεταχείριστοι γίνονται τοῖς καταστρατηγεῖν ἐθέλουσι. καὶ γὰρ ὅ-
τε βούλεται καὶ ὅπου, καὶ ἀφ᾽ ἧς ἔτυχε προφάσεως, παροξύνας τις αὐτοὺς, ἑτοίμους ἔσχε πρὸς τὸν
κίνδυνον. πλὴν βίας καὶ τόλμης, οὐδὲν ἔχοντας, τὸ συναγωνιζόμενον. παραπεισθέντες δὲ εὐμαρῶς
ἐνδιδόασι πρὸς τὸ χρήσιμον. ὥς τε καὶ παιδείας ἅπτεσθαι, καὶ λόγων, τῆς δὲ βίας, τὸ μὲν, ἐκ τῶν
σωμάτων ἐστὶ μεγάλων ὄντων. τὸ δ᾽ ἐκ τοῦ πλήθους. συνίασι δὲ καὶ κατὰ πλῆθος ῥᾳδίως διὰ τὸ ἁ-
πλοῦν, καὶ αὐθέκαστον. συναγανακτοῦντες τοῖς ἀδικεῖσθαι δοκοῦσιν ἀεὶ τῶν πλησίον. νυνὶ μὲν
οὖν, ἐν εἰρήνῃ πάντες εἰσὶ δεδουλωμένοι. καὶ ζῶντες κατὰ τὰ προστάγματα τῶν ἑλόντων αὐ-
τοὺς ῥωμαίων. ἀλλ᾽ ἐκ τῶν παλαιῶν χρόνων τοῦτο λαμβάνομεν περὶ αὐτῶν, ἐκ τῶν μέχρι νῦν
συμβαινόντων παρὰ τοῖς γερμανοῖς νομίμων. καὶ γὰρ τῇ φύσει καὶ τοῖς πολιτεύμασιν, ἐμ-
φερεῖς εἰσιν οὗτοι καὶ συγγενεῖς ἀλλήλοις. ὅμορόν τε οἰκοῦσι χώραν διοριζομένην τῷ ῥήνῳ πο-

ταμῷ. καὶ παραπλήσια ἔχουσι τὰ πλεῖστα. ἀρκτικωτέρα δ' ἐστὶν ἡ γερμανία. κειμένων τῶν τε νοτίων μερῶν πρὸς τὰ νότια, καὶ τῶν ἀρκτικῶν πρὸς τὰ ἀρκτικά. διὰ τοῦτο δὲ καὶ τὰς μεταναστάσεις αὐτῶν, ῥᾳδίως ὑπάρχει συμβαίνειν. φερομένων ἀγεληδὸν καὶ πανστρατιᾷ. μᾶλλον δὲ καὶ πανοικίων ἐξαιρόντων. ὅταν ὑπ' ἄλλων ὑπεκβάλλωνται κρειττόνων. οἵ τε ῥωμαῖοι, πολὺ ῥᾷον τούτους ἐχειρώσαντο, ἢ τοὺς ἴβηρας. καὶ γὰρ ἤρξαντο πρότερον, καὶ ἐπαύσαντο, ὕστερον ἐκείνοις πολεμοῦντες. τούτους δ' ἐν τῷ μεταξὺ χρόνῳ πάντας κατέλυσαν. τοὺς ἀναμέσον ῥήνου καὶ τῶν πυρηναίων ὀρῶν σύμπαντας. ἀθρόοι γὰρ καὶ κατὰ πλῆθος ἐμπίπτοντες ἀθρόοι κατελύοντο. οἱ δ' ἐταμίευον, καὶ κατεκερμάτιζον τοὺς ἀγῶνας ἄλλοτε ἄλλοι. καὶ κατ' ἄλλα μέρη λῃστρικῶς πολεμοῦντες. εἰσὶ μὲν οὖν μαχηταὶ πάντες τῇ φύσει. κρείττους δ' ἱππόται ἢ πεζοί. καὶ ἔστι ῥωμαίοις τῆς ἱππείας ἀρίστη παρὰ τούτων. ἀεὶ δὲ οἱ προσβορρότεροι καὶ παρωκεανῖται, μαχιμώτεροι. τούτων δὲ τοὺς βέλγας ἀρίστους φασίν, εἰς πεντεκαίδεκα ἔθνη διῃρημένους. τὰ μεταξὺ τοῦ ῥήνου καὶ τοῦ λείγηρος παροικοῦντας τὸν ὠκεανόν, ὥστε μόνους ἀντέχειν πρὸς τὴν τῶν γερμανῶν ἔφοδον, κίμβρων καὶ τευτόνων. αὐτῶν δὲ τῶν βέλγων, βελλοάκους ἀρίστους φασί, μετὰ δὲ τούτους σουεσσίωνας. τῆς δὲ πολυανθρωπίας σημεῖον. εἰς γὰρ λ' μυριάδας ἐξετάζεσθαι φασὶ τῶν βέλγων πρότερον τῶν δυναμένων φέρειν ὅπλα. εἴρηται δὲ καὶ τὸ τῶν ἐλουηττίων πλῆθος, καὶ τὸ τῶν ἀρουέρνων καὶ τῶν συμμάχων, ἐξ ὧν ἡ πολυανθρωπία φαίνεται. καὶ ὅπερ εἶπον ἡ τῶν γυναικῶν ἀρετὴ πρὸς τὸ τίκτειν καὶ ἐκτρέφειν τοὺς παῖδας. σαγηφοροῦσι δὲ καὶ κομοτροφοῦσι. καὶ ἀναξυρίσι χρῶνται περιτεταμέναις. ἀντὶ δὲ χιτώνων σχιστοὺς χειριδωτοὺς φέρουσι μέχρι αἰδοίων καὶ γλουτῶν. ἡ δ' ἐρέα, τραχεῖα μέν, ἀκρόμαλλος δέ. ἀφ' ἧς τοὺς δασεῖς σάγους ἐξυφαίνουσιν. οὓς λαίνας καλοῦσιν. οἱ μέντοι ῥωμαῖοι καὶ ἐν τοῖς προσβορωτάτοις ὑποδιφθέρας τρέφουσι ποίμνας ἱκανῶς ἀστείας ἐρέας. ὁ πλισμὸς δὲ σύμμετρος τοῖς τῶν σωμάτων μεγέθεσι. μάχαιρα μακρά, παρηρτημένη παρὰ τὸ δεξιὸν πλευρόν. καὶ θυρεὸς μακρός. καὶ λόγχαι κατὰ λόγον. καὶ μάδρις παλτοῦ τι εἶδος. χρῶνται δὲ καὶ τόξοις ἔνιοι καὶ σφενδόναις. ἔστι δέ τι καὶ γρόσφῳ ἐοικὸς ξύλον, ἐκ χειρὸς οὐκ ἐξ ἀγκύλης ἀφιέμενον. τηλεβολώτερον καὶ βέλους, ᾧ μάλιστα, καὶ πρὸς τὰς τῶν ὀρνέων χρῶνται θήρας. χαμευνοῦσι δὲ καὶ μέχρι νῦν οἱ πολλοί. καὶ καθεζόμενοι δειπνοῦσιν, ἐν στιβάσι. τροφὴ δὲ πλείστη μετὰ γάλακτος καὶ κρεῶν παντοίων. μάλιστα δὲ τῶν ὑείων καὶ νέων καὶ ἁλιστῶν. αἱ δ' ὕες καὶ ἀγραυλοῦσιν. ὕψει τε καὶ ἀλκῇ καὶ τάχει διαφέρουσαι. κίνδυνος γοῦν ἐστι τῷ ἀήθει προσιόντι. ὡσαύτως καὶ λύκῳ. τοὺς δ' οἴκους ἐκ σανίδων καὶ γέρρων ἔχουσι μεγάλους, θολοειδεῖς, ὄροφον πολὺν ἐπιβάλλοντες. οὕτως δ' ἐστὶ δαψιλῆ καὶ τὰ ποίμνια καὶ τὰ ὑοφόρβια, ὥστε τῶν σάγων καὶ τῆς ταριχείας ἀφθονίαν μὴ τῇ ῥώμῃ χορηγεῖσθαι μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς πλείστοις μέρεσι τῆς ἰταλίας. ἀριστοκρατικαὶ δ' ἦσαν αἱ πλείους τῶν πολιτειῶν. ἕνα δ' ἡγεμόνα ᾑροῦντο κατ' ἐνιαυτὸν τὸ παλαιόν. ὡς δ' αὔτως εἰς πόλεμον, εἷς ὑπὸ τοῦ πλήθους ἀπεδείκνυτο στρατηγός. νυνὶ δὲ προσέχουσι τοῖς τῶν ῥωμαίων προστάγμασι τὸ πλέον. ἴδιον δὲ τὸ ἐν τοῖς συνεδρίοις συμβαῖνον. ἐὰν γάρ τις θορυβῇ τὸν λέγοντα καὶ ὑποκρούσῃ, προσιὼν ὁ ὑπηρέτης ἐσπασμένος τὸ ξίφος, κελεύει σιγᾶν μετ' ἀπειλῆς. μὴ παυομένου δέ, καὶ δεύτερον καὶ τρίτον ποιεῖ τὸ αὐτό. τελευταῖον δὲ ἀφαιρεῖ τοῦ σάγου τοσοῦτον, ὅσον ἄχρηστον ποιῆσαι τὸ λοιπόν. τὸ δὲ περὶ τοὺς ἄνδρας καὶ τὰς γυναῖκας, τὸ διηλλάχθαι τὰ ἔργα ὑπεναντίως τοῖς παρ' ἡμῖν, κοινὸν καὶ πρὸς ἄλλους συχνοὺς τῶν βαρβάρων ἐστί. παρὰ ἅπασι δ' ὡς ἐπίπαν τρία φῦλα τῶν τιμωμένων διαφερόντως ἐστί. βάρδοι τε καὶ οὐάτεις καὶ δρυΐδαι. βάρδοι μὲν ὑμνηταὶ καὶ ποιηταί. οὐάτεις δὲ ἱεροποιοὶ καὶ φυσιολόγοι. δρυΐδαι δὲ πρὸς τῇ φυσιολογίᾳ, καὶ τὴν ἠθικὴν φιλοσοφίαν ἀσκοῦσι. δικαιότατοι δὲ νομίζονται. καὶ διὰ τοῦτο πιστεύονται, τάς τε ἰδιωτικὰς κρίσεις καὶ τὰς κοινάς. ὥστε καὶ πολέμους διῄτων πρότερον. καὶ παρατάττεσθαι μέλλοντας, ἔπαυον. τὰς δὲ φονικὰς δίκας, μάλιστα τούτοις ἐπετέτραπτο δικάζειν. ὅταν τε φορὰ τούτων ᾖ, φορὰς καὶ τῆς χώρας νομίζουσιν ὑπάρχειν. ἀφθάρτους δὲ λέγουσι καὶ οὗτοι καὶ ἄλλοι, τὰς ψυχὰς καὶ τὸν κόσμον. ἐπικρατήσειν δέ ποτε καὶ πῦρ καὶ ὕδωρ. τῷ δ' ἁπλῷ καὶ θυμικῷ, πολὺ τὸ ἀνόητον καὶ ἀλαζονικὸν πρόσεστι, καὶ τὸ φιλόκοσμον. χρυσοφοροῦσί τε γάρ, περὶ μὲν τοῖς τραχήλοις στρεπτὰ ἔχοντες. περὶ δὲ τοῖς βραχίοσι καὶ τοῖς καρποῖς ψέλια. καὶ τὰς ἐσθῆτας βαπτὰς φοροῦσι καὶ χρυσοπάστους, οἱ ἐν ἀξιώματι. ὑπὸ τοιαύτης δὲ κουφότητος, ἀφόρητοι μὲν νικῶντες. ἐκπλαγεῖς δ' ἡττηθέντες ὁρῶνται. πρόσεστι δὲ τῇ διανοίᾳ καὶ τὸ βάρβαρον καὶ τὸ ἔκφυλον. ὃ τοῖς προσβόροις ἔθνεσι παρακολουθεῖ πλεῖστον, τὸ ἀπὸ τῆς μάχης ἀπιόντας, τὰς κεφαλὰς τῶν πολεμίων ἐξάπτειν ἐκ τῶν αὐχένων τῶν ἵππων, κομίσαντας δέ, προσπατταλεύειν τὴν θέαν τοῖς προπυλαίοις. φησὶ γοῦν ποσειδώνιος αὐτὸς ἰδεῖν ταύτην πολλαχοῦ. καὶ τὸ μὲν πρῶτον ἀηθίζεσθαι. μετὰ δὲ ταῦτα φέρειν πρᾴως διὰ τὴν συνήθειαν. τὰς δὲ τῶν ἐνδόξων κεφαλάς, κεδροῦντες, ἐπεδείκνυον τοῖς ξένοις. καὶ οὐδὲ πρὸς ἰσοστάσιον χρυσὸν ἀπολυτροῦν ἠξίουν. καὶ τούτων δ' ἔπαυσαν αὐτοὺς ῥωμαῖοι. καὶ τῶν κατὰ τὰς θυσίας καὶ μαντείας ὑπεναντίως τοῖς παρ' ἡμῖν νομίμοις. ἄνθρωπον γὰρ κατεσπεισμένον παίσαντες εἰς νῶτον μαχαίρᾳ, ἐμαντεύοντο ἐκ τοῦ σφαδασμοῦ. ἔθυον δὲ οὐκ ἄνευ δρυϊδῶν. καὶ ἄλλα δὲ ἀνθρωποθυ-

αἰδῶν εἴδη λέγεται. καὶ γὰρ κατετόξευόν τινας καὶ ἀνεσταύρουν ἐν τοῖς ἱεροῖς. καὶ κατασκευάσαντες κολοσσὸν χόρτου, καὶ ξύλων ἐμβαλόντες εἰς τοῦτον, βοσκήματα καὶ παντοῖα θηρία καὶ ἀνθρώπους ὡλοκαύτουν. ἐν δὲ τῷ ὠκεανῷ φασὶν εἶναι νῆσον μικρὰν οὐ πάνυ πελαγίαν, προκειμένην τῆς ἐκβολῆς τοῦ λείγηρος ποταμοῦ. οἰκεῖν δὲ ταύτην, τὰς τῶν σαμνιτῶν γυναῖκας, διονύσῳ κατεχομένας, καὶ ἱλασκομένας τὸν θεὸν τοῦτον τελεταῖς τε, καὶ ἄλλαις ἱεροποιΐαις ἐξιλεσκομένας. οὐκ ἐπιβαίνειν δὲ ἄνδρα τῆς νήσου. τὰς δὲ γυναῖκας αὐτὰς πλεούσας, κοινωνεῖν τοῖς ἀνδράσι, καὶ πάλιν ἐπανιέναι. ἔθος δ' εἶναι κατ' ἐνιαυτὸν ἅπαξ τὸ ἱερὸν ἀποστεγάζεσθαι, καὶ στεγάζεσθαι πάλιν αὐθημερὸν πρὸ δύσεως, ἑκάστης φορτίον ἐπιφερούσης. ἧς δ' ἂν ἐκπέσοι τὸ φορτίον, διασπᾶσθαι ταύτην ὑπὸ τῶν ἄλλων. φερούσας δὲ τὰ μέρη περὶ τὸ ἱερὸν μετ' εὐασμοῦ, μὴ παύεσθαι πρότερον, πρὶν παύσονται τῆς λύττης. ἀεὶ δὲ συμβαίνειν, ὥστε τινὰ ἐμπίπτειν τὴν τοῦτο πεισομένην. τοῦτο δ' ἔτι μυθωδέστερον εἴρηκεν ἀρτεμίδωρος τὸ περὶ τοὺς κόρακας συμβαῖνον. λιμένα γάρ τινα τῆς παρωκεανίτιδος ἱστορεῖ δύο κοράκων ἐπονομαζόμενον. φαίνεσθαι δ' ἐν τούτῳ δύο κόρακας τὴν δεξιὰν πτέρυγα παράλευκον ἔχοντας. τοὺς οὖν περί τινων ἀμφισβητοῦντας, ἀφικομένους δεῦρο ἐφ' ὑψηλοῦ τόπου, σανίδα θέντας ἐπιβάλλειν ψαιστὰ, ἑκάτερον χωρίς. τοὺς δ' ὄρνεις ἐπιπτάντας τὰ μὲν ἐσθίειν. τὰ δὲ, σκορπίζειν. οὗ δ' ἂν σκορπισθῇ τὰ ψαιστὰ ἐκεῖνον νικᾶν. ταῦτα μὲν οὖν μυθωδέστερα λέγει. περὶ δὲ τῆς δήμητρος καὶ τῆς κόρης, πιστότερα. ὅτι φησὶν εἶναι νῆσον πρὸς τῇ βρετανικῇ. καθ' ἣν ὅμοια τοῖς ἐν σαμοθράκῃ περὶ τὴν δήμητραν καὶ τὴν κόρην ἱεροποιεῖται. καὶ τοῦτο δὲ τῶν πιστευομένων ἐστίν. ὅτι ἐν τῇ κελτικῇ φύεται δένδρον, ὅμοιον συκῇ. καρπὸν δ' ἐκφέρει παραπλήσιον κιονοκράνῳ κορινθιουργεῖ. ἐπιτμηθεὶς δ' οὗτος, ἀφίησιν ὀπὸν θανάσιμον πρὸς τὰς ἐπιχρίσεις τῶν βελῶν. καὶ τοῦτο δὲ τῶν θρυλλουμένων ἐστίν. ὅτι πάντες κελτοὶ φιλόνεικοί τε εἰσὶ, καὶ οὐ νομίζεται παρ' αὐτοῖς αἰσχρὸν, τὸ τῆς ἀκμῆς ἀφειδεῖν τοὺς νέους. ἔφορος δὲ, ὑπερβάλλουσάν τε τῷ μεγέθει λέγει τὴν κελτικήν. ὥστε ἧς νῦν ἰβηρίας καλοῦμεν, ἐκείνοις τὰ πλεῖστα προσνέμειν μέχρι γαδείρων. φιλέλληνάς τε ἀποφαίνει τοὺς ἀνθρώπους. καὶ πολλὰ ἰδίως λέγει περὶ αὐτῶν οὐκ ἐοικότα τοῖς νῦν. ἴδιον δὲ καὶ τοῦτο. ἀσκεῖν γὰρ αὐτοὺς, μὴ παχεῖς εἶναι μηδὲ προγάστορας. τὸν δ' ὑπερβαλλόμενον τῶν νέων τὸ τῆς ζώνης μέτρον, ζημιοῦσθαι. ταῦτα μὲν τῆς ὑπὲρ τῶν ἄλπεων κελτικῆς. ἡ δὲ βρετανικὴ, τρίγωνος μέν ἐστι τῷ σχήματι. παραβέβληται δὲ τὸ μέγιστον αὐτῆς πλευρὸν τῇ κελτικῇ. τοῦ μήκους οὔθ' ὑπερβάλλον, οὔτ' ἐλλεῖπον. ἔστι γὰρ ὅσον τετρακισχιλίων καὶ τ' ἢ υ' σταδίων ἑκάτερον. τό, τε κελτικὸν τὸ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ῥήνου μέχρι πρὸς τὰ βόρεια τῆς πυρήνης ἄκρα τὰ κατὰ ἀκουιτανίαν. καὶ τὸ ἀπὸ καντίου τοῦ κατ' ἀντικρὺ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ῥήνου ἑωθινωτάτου σημείου τῆς βρετανικῆς, μέχρι πρὸς τὸ ἑσπέριον ἄκρον τῆς νήσου, τὸ κατὰ τὴν ἀκουιτανίαν καὶ τὴν πυρήνην ἀντικείμενον. τοῦτο μὲν δὴ τοὐλάχιστον διάστημα ἀπὸ τῆς πυρήνης, ἐπὶ τὸν ῥῆνον ἐστίν. ἐπεὶ τὸ μέγιστον εἴρηται, ὅτι καὶ πεντακισχιλίων σταδίων ἐστίν. ἀλλ' εἰκὸς εἶναι τινα σύνευσιν ἐκ τῆς παραλλήλου θέσεως τῷ ποταμῷ πρὸς τὸ ὄρος ἀμφοτέρωθεν, ἐπιστροφῆς τινὸς γινομένης, κατὰ τὰς πρὸς τὸν ὠκεανὸν ἐσχατιάς. τέτταρα δ' ἐστὶ διάρματα, οἷς χρῶνται συνήθως ἐπὶ τὴν νῆσον ἐκ τῆς ἠπείρου, τὰ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τῶν ποταμῶν τοῦ τε ῥήνου. καὶ τοῦ σηκοάνα, καὶ τοῦ λείγηρος καὶ τοῦ γαρουνᾶ. τοῖς δ' ἀπὸ τῶν περὶ τὸν ῥῆνον τόπων ἀναγομένοις, οὐκ ἀπ' αὐτῶν τῶν ἐκβολῶν ὁ πλοῦς ἐστίν. ἀλλὰ ἀπὸ τῶν ὁμορούντων τοῖς μεναπίοις μορινῶν. παρ' οἷς ἐστὶ καὶ τὸ ἴτιον ᾧ ἐχρήσατο ναυστάθμῳ καῖσαρ ὁ θεὸς, διαίρων εἰς τὴν νῆσον. νύκτωρ δ' ἀνήχθη. καὶ τῇ ὑστεραίᾳ κατῆρε περὶ τετάρτην ὥραν, τ' καὶ εἴκοσι σταδίους τοῦ διάπλου τελέσας. κατέλαβε δ' ἐν ἀρούραις τὸν σῖτον. ἔστι δ' ἡ πλείστη τῆς νήσου πεδιὰς, καὶ κατάδρυμος. πολλὰ δὲ γεώλοφα τῶν χωρίων ἐστί. φέρει δὲ σῖτον καὶ βοσκήματα. καὶ χρυσὸν καὶ ἄργυρον καὶ σίδηρον. ταῦτα δὴ κομίζεται ἐξ αὐτῆς. καὶ δέρματα, καὶ ἀνδράποδα. καὶ κύνες εὐφυεῖς πρὸς τὰς κυνηγεσίας. κελτοὶ δὲ καὶ πρὸς τοὺς πολέμους χρῶνται καὶ τούτοις καὶ τοῖς ἐπιχωρίοις. οἱ δὲ ἄνδρες εὐμηκέστεροι τῶν κελτῶν εἰσί. καὶ ἧσσον ξανθότριχες. χαυνότεροι δὲ τοῖς σώμασι. σημεῖον δὲ τοῦ μεγέθους. ἀντίπαιδας γὰρ ἡμεῖς εἴδομεν ἐν ῥώμῃ, τῶν ὑψηλοτάτων αὐτόθι ὑπερέχοντας, καὶ ἡμιποδίῳ. βλαισοὺς δὲ, καὶ τἄλλα οὐκ εὐγράμμους τῇ συστάσει. τὰ δ' ἤθη τὰ μὲν, ὅμοια τοῖς κελτοῖς. τὰ δ' ἁπλούστερα καὶ βαρβαρώτερα. ὥστ' ἐνίους γάλακτος εὐποροῦντας μὴ τυροποιεῖν διὰ τὴν ἀπειρίαν. ἀπείρους δ' εἶναι καὶ κηπείας καὶ ἄλλων γεωργικῶν. δυναστεῖαι δ' εἰσὶ παρ' αὐτοῖς. πρὸς δὲ τοὺς πολέμους, ἀπήναις χρῶνται τοπλέον καθάπερ καὶ τῶν κελτῶν ἔνιοι. πόλεις δ' αὐτῶν εἰσὶν οἱ δρυμοί. περιφράξαντες γὰρ δένδρεσι καταβεβλημένοις, εὐρυχωρῆ κύκλον καὶ αὐτοὶ ἐνταῦθα καλυβοποιοῦνται. καὶ τὰ βοσκήματα κατασταθμεύουσιν, οὐ πρὸς πολὺν χρόνον. ἔπομβροι δ' εἰσὶν οἱ ἀέρες μᾶλλον ἢ νιφετώδεις. ἐν δὲ ταῖς αἰθρίαις ὁμίχλη κατέχει πολὺν χρόνον. ὥστε δι' ἡμέρας ὅλης ἐπὶ τρεῖς μόνον ἢ τέτταρας ὥρας τὰς περὶ τὴν μεσημβρίαν ὁρᾶσθαι τὸν ἥλιον. τοῦτο δὲ κἀν τοῖς μορινοῖς συμβαίνει καὶ τοῖς μεναπίοις, καὶ ὅσοι τούτων πλησιόχωροι. δὶς δὲ διέβη καῖσαρ εἰς τὴν νῆσον ὁ θεός. ἐπανῆλθε δὲ διὰ ταχέων οὐδὲν μέγα διαπραξάμενος. οὐδὲ προελθὼν ἐπὶ πολὺ τῆς νήσου, διά τε τὰς ἐν τοῖς κελτοῖς γενομένας στάσεις, τῶν τε βαρβάρων καὶ τῶν οἰκείων στρατιωτῶν. καὶ διὰ τὸ πολλὰ τῶν πλοίων ἀπολέσθαι κατὰ τὴν πανσέληνον, αὔξησιν

λαβοῦσαν τῶν ἀμπώτεων καὶ τῶν πλημμυρίδων. δύο μέν τοι ἢ τρεῖς ἐνίκησε τοὺς βρετ-
ανούς, καίπερ δύο τάγματα μόνον περαιώσας τῆς στρατιᾶς. καὶ ἀπήγαγεν ὅμηρά τε καὶ ἀνδράπο-
δα, καὶ τῆς ἄλλης λείας πλῆθος. νυνὶ μέν τοι τῶν δυναστῶν τινες τῶν αὐτόθι πρεσβεύσεσι καὶ θερα-
πείαις κατασκευασάμενοι τὴν πρὸς καίσαρα τὸν σεβαστὸν φιλίαν, ἀναθήματά τε ἀνέθηκαν ἐν τῷ
καπιτωλίῳ, καὶ οἰκείαν σχεδὸν παρεσκεύασαν τοῖς ῥωμαίοις ὅλην τὴν νῆσον. τέλη τε οὕτως ὑ-
πομένουσι βαρέα, τῶν τε εἰσαγομένων εἰς τὴν κελτικὴν ἐκεῖθεν, καὶ τῶν ἐξαγομένων ἐνθένδε.
ταῦτα δ' ἐστὶν ἐλεφάντινα ψάλια, καὶ περιαυχένια καὶ ἀλλυγούρια. καὶ ὑαλᾶ σκεύη. καὶ ἄλλος ῥῶπος
τοιοῦτος. ὥστε μηδὲν δεῖν φρουρᾶς τῆς νήσου. τοὐλάχιστον μὲν γὰρ, ἑνὸς τάγματος χρήζοι ἂν, καὶ ἱππι-
κοῦ τινος. ὥστε καὶ φόρους ἀπάγεσθαι παρ' αὐτῶν. εἰς ἴσον δὲ καθίσταιτο ἂν τὸ ἀνάλωμα τῇ στρατιᾷ
τοῖς προσφερομένοις χρήμασιν. ἀνάγκη γὰρ μειοῦσθαι τὰ τέλη φόρων ἐπιβαλλομένων. ἅμα δὲ καὶ
κινδύνους ἀπαντᾶν τινας, βίας ἐπαγομένης. εἰσὶ δὲ καὶ ἄλλαι περὶ τὴν βρεττανικὴν νῆσοι μικραί.
μεγάλη δ' ἡ ἰέρνη πρὸς ἄρκτον αὐτῇ παραβεβλημένη. προμήκης. μᾶλλον πλάτος ἔχουσα. περὶ ἧς οὐ-
δὲν ἔχομεν λέγειν σαφές. πλὴν ὅτι ἀγριώτεροι τῶν βρεττανῶν ὑπάρχουσιν οἱ κατοικοῦντες αὐτήν.
ἀνθρωποφάγοι τε ὄντες καὶ πολυφάγοι. τούς τε πατέρας τελευτήσαντας κατεσθίειν ἐν καλῷ τιθέ-
μενοι. καὶ φανερῶς μίσγεσθαι ταῖς τε ἄλλαις γυναιξὶ, καὶ μητράσι καὶ ἀδελφαῖς, καὶ ταῦτα δ'
οὕτω λέγομεν, ὡς οὐκ ἔχοντες ἀξιοπίστους μάρτυρας. καί τοι τό γε τῆς ἀνθρωποφαγίας, καὶ σκυθικὸν
εἶναι λέγεται. καὶ ἐν ἀνάγκαις πολιορκητικαῖς. καὶ κελτοὶ καὶ ἴβηρες καὶ ἄλλοι πλείους, ποιῆσαι
τοῦτο λέγονται. περὶ δὲ τῆς θούλης, ἔτι μᾶλλον ἀσαφὴς ἡ ἱστορία, διὰ τὸν ἐκτοπισμόν. ταύτην γὰρ τῶν
ὀνομαζομένων, ἀρκτικωτάτην τιθέασιν. ἃ δ' εἴρηκε πυθέας περὶ ταύτης, καὶ τῶν ἄλλων τῶν ταύτῃ
τόπων, ὅτι μὲν πέπλασται, φανερὸν ἐκ τῶν γνωριζομένων χωρίων. κατέψευσται γὰρ αὐτῶν τὰ πλεῖ-
στα ὥσπερ καὶ πρότερον εἴρηται. ὥστε δῆλός ἐστιν ἐψευσμένος μᾶλλον περὶ τῶν ἐκτετοπισμένων.
πρὸς μέν τοι τὰ οὐράνια καὶ τὴν μαθηματικὴν θεωρίαν ἱκανῶς δόξειε κεχρῆσθαι τοῖς πράγμασι, τοῖς
τῇ κατεψυγμένῃ ζώνῃ πλησιάζουσι, τὸ τῶν καρπῶν εἶναι τῶν ἡμέρων. καὶ ζώων τῶν μὲν, ἀφορίαν
παντελῆ, τῶν δὲ, σπάνιν. κέγχρῳ δὲ καὶ ἄλλοις λαχάνοις, καὶ καρποῖς καὶ ῥίζαις τρέφεσθαι. παρ' οἷς
δὲ, σῖτος καὶ μέλι γίγνεται. καὶ τὸ πόμα ἐντεῦθεν ἔχειν. τὸν δὲ σῖτον ἐπειδὴ τοὺς ἡλίους οὐκ ἔχουσι κα-
θαρούς, ἐν οἴκοις μεγάλοις κόπτουσι, συγκομισθέντων δεῦρο τῶν σταχύων. αἱ γὰρ ἅλως, ἄχρηστοι γίνονται,
διὰ τὸ ἀνήλιον καὶ τοὺς ὄμβρους. μετὰ δὲ τὴν ὑπὲρ τῶν ἄλπεων κελτικὴν καὶ τὰ ἔθνη τὰ ἔχοντα τὴν
χώραν ταύτην, περὶ αὐτῶν τῶν ἄλπεων λεκτέον, καὶ τῶν κατοικούντων αὐτάς. ἔπειτα περὶ τῆς συμ-
πάσης ἰταλίας, φυλάττουσιν ἐν τῇ γραφῇ, τὴν αὐτὴν τάξιν, ἥνπερ δίδωσιν ἡ τῆς χώρας φύσις. ἄρ-
χονται μὲν οὖν αἱ ἄλπεις, οὐκ ἀπὸ μονοίκου λιμένος ὡς εἰρήκασι τινές. ἀλλ' ἀπὸ τῶν αὐτῶν χωρίων, ἀφ'
ὧνπερ καὶ τὰ ἀπέννινα ὄρη κατὰ γένουαν, ἐμπορεῖον λιγύων. καὶ τὰ καλούμενα σαββάτων οὔαδα. ἅ-
περ ἐστὶ τενάγη. τὸ μὲν γὰρ ἀπέννινον ἀπὸ γενούας. αἱ δὲ ἄλπεις ἀπὸ τῶν σαββάτων ἔχουσι τὴν ἀρχήν, στά-
διοι δ' εἰσὶ μεταξὺ γενούας καὶ σαββάτων, σ' πρὸς τοῖς, ξ'. μετὰ δὲ τ' πρὸς τοῖς ο', ἄλβιγγαυνόν ἐστι πό-
λισμα. οἱ δ' ἐνοικοῦντες λίγυες ἴγγαυνοι καλοῦνται. ἐντεῦθεν δ' εἰς μονοίκου λιμένα υ' καὶ π'. ἐν δὲ τῷ
μεταξὺ, πόλις εὐμεγέθης, ἄλβιον, ἰντεμέλιον. καὶ οἱ κατοικοῦντες ἰντεμέλιοι. καὶ δὴ καὶ σημεῖον τίθεν-
ται, τοῦ τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῶν σαββάτων εἶναι τοῖς ἄλπεσιν ἐκ τῶν ὀνομάτων τούτων. τὰ γὰρ ἄλπια, κα-
λεῖσθαι πρότερον ἄλβια, καθάπερ καὶ ἀλπιόνια. καὶ γὰρ νῦν ἔτι τὸ ἐν τοῖς ἰάποσιν, ὄρος ὑψηλὸν συ-
νάπτον πως τῇ ἄκρᾳ καὶ ταῖς ἄλπεσιν, ἄλβιον λέγεσθαι. ὡς ἂν μέχρι δεῦρο τῶν ἄλπεων ἐκτεταμέ-
νων. τῶν οὖν λιγύων τῶν μὲν, ὄντων ἰγγαύνων. τῶν δὲ, ἰντεμελίων, εἰκότως τὰς ἀποικίας αὐτῶν ἐπὶ τῇ
θαλάττῃ, τὴν μὲν, ὀνομάζεσθαι ἄλβιον ἰντεμέλιον. οἷον ἄλπιον. τὴν δὲ, ἐπιτετμημένως μᾶλλον ἄλβιγγαυ-
νον. πολύβιος δὲ προστίθησι τοῖς δυσὶ φύλοις τῶν λιγύων τοῖς λεχθεῖσι τό τε τῶν ὀξυβίων καὶ τὸ τῶν δε-
κιήτων. ὅλως δὲ ἡ παραλία αὕτη πᾶσα μέχρι τῆς τυῤῥηνίας ἀπὸ μονοίκου λιμένος, προσεχής τέ ἐστι
καὶ ἀλίμενος. πλὴν βραχέων ὅρμων καὶ ἀγκυροβολίων. ὑπέρκεινται δὲ οἱ τῶν ὀρῶν ἐξαίσιοι κρη-
μνοὶ, στενὴν ἀπολιπόντες πρὸς θαλάττῃ πάροδον. κατοικοῦσι δὲ λίγυες. ζῶντες ἀπὸ θρεμμάτων τὸ πλέον
καὶ γάλακτος καὶ κριθίνου πόματος. νεμόμενοι τά τε πρὸς θαλάττῃ χωρία. καὶ τὸ πλέον τὰ ὄρη. ἔ-
χουσι δ' ὕλην ἐνταῦθα παμπόλλην, ναυπηγήσιμον, καὶ μεγαλόδενδρον. ὥστ' ἐνίων τοῦ πάχους τὴν
διάμετρον ὀκτὼ ποδῶν εὑρίσκεσθαι. πολλὰ δὲ καὶ τῇ ποικιλίᾳ τῶν θυΐνων, οὐκ ἔστι χείρω, πρὸς τὰς τρα-
πεζοποιίας. ταῦτά τε δὴ κατάγουσιν εἰς τὸ ἐμπορεῖον τὴν γένουαν. καὶ θρέμματα καὶ δέρματα. καὶ μέ-
λι. ἀντιφορτίζονται δὲ ἔλαιον καὶ οἶνον τὸν ἐκ τῆς ἰταλίας. ὁ δὲ παρ' αὐτοῖς ὀλίγος ἐστί. πιττίτης. αὐ-
στηρός. ἐντεῦθεν δ' εἰσὶν οἱ γίννιοι λεγόμενοι ἵπποι τε καὶ ἡμίονοι. καὶ οἱ λιγυστινοί τε χιτῶνες καὶ σά-
γοι. πλεονάζει δὲ καὶ τὸ λιγγούριον παρ' αὐτοῖς. ὃ τινὲς ἤλεκτρον προσαγορεύουσι. στρατεύονται δ' ἱπ-
πεῖς μὲν οὐ πάνυ. ὁπλῖται δὲ ἀγαθοὶ καὶ ἀκροβολισταί. ἀπὸ δὲ τοῦ χαλκάσπιδας εἶναι, τεκμαίρον-
ταί τινες ἕλληνας αὐτοὺς εἶναι. ὁ δὲ τοῦ μονοίκου λιμένος ὅρμός ἐστιν, οὐ μεγάλαις. οὐδὲ πολλαῖς ναυ-
σὶν, ἔχων ἱερὸν ἡρακλέους μονοίκου καλουμένου. ἔοικε δὲ ἀπὸ τοῦ ὀνόματος καὶ μέχρι δεῦρο διατείνειν ὁ

μασσαλιωτικοὺς παράπλους. διέχει δ' ἀπὸ τῆς πόλεως, μικρῷ πλείους ἢ σ' σταδίους. τοὐντεῦθεν δ' ἤδη μέχρι μασσαλίας καὶ μικρὸν προσωτέρω τὸ τῶν σαλύων ἔθνος, οἰκεῖ τὰς ἄλπεις τὰς ὑπερκειμένας. καὶ τινὰς τῆς αὐτῆς παραλίας ἀναμὶξ τοῖς ἕλλησι. καλοῦσι δὲ τοὺς σάλυας οἱ μὲν παλαιοὶ τῶν ἑλλήνων λίγυας. καὶ τὴν χώραν ἣν ἔχουσιν οἱ μασσαλιῶται λιγυστικήν. οἱ δ' ὕστερον κελτολίγυας ὀνομάζουσι. καὶ τὴν μέχρι λουερίωνος καὶ τοῦ ῥοδανοῦ πεδιάδα τούτοις προσνέμουσιν. ἀφ' ἧς οὐ πεζὴν μόνον. ἀλλὰ καὶ ἱππικὴν ἔστελλον στρατιάν, εἰς δέκα μέρη διῃρημένοι. πρώτους δ' ἐχειρώσαντο ῥωμαῖοι τούτους, τῶν ὑπεραλπείων κελτῶν, πολὺν χρόνον πολεμήσαντες καὶ τούτοις καὶ τοῖς λίγυσιν ἀποκεκλεικόσι τὰς εἰς τὴν ἰβηρίαν παρόδους, τὰς διὰ τῆς παραλίας. καὶ γὰρ καὶ κατὰ γῆν καὶ κατὰ θάλατταν ἐλῄζοντο. καὶ τοσοῦτον ἴσχυον ὥστε μόλις στρατοπέδοις μεγάλοις πορευτὴν εἶναι τὴν ὁδόν. ὀγδοηκοστὸν δ' ἔτος πολεμοῦντες διεπράξαντο μόλις ὥστ' ἐπὶ ιβ' σταδίους τὸ πλάτος ἀνεῖσθαι, τὴν ὁδὸν τοῖς ὁδεύουσι δημοσίᾳ. μετὰ ταῦτα μέντοι κατέλυσαν ἅπαντας. καὶ διέταξαν αὐτοὶ τὰς πολιτείας ἐπιστήσαντες φόρον. μετὰ δὲ τοὺς σάλυας ἀλβιεῖς καὶ ἀλβίοικοι καὶ οὐοκόντιοι νέμονται τὰ προσάρκτια μέρη τῶν ὀρῶν. παρατείνουσι δ' οἱ οὐοκόντιοι μέχρις ἀλλοβρίγων. ἔχοντες αὐλῶνας ἐν βάθει τῆς ὀρεινῆς ἀξιολόγους καὶ ὀχυροὺς ὧν ἔχουσιν ἐκεῖνοι. ἀλλόβριγες μὲν οὖν καὶ λίγυες ὑπὸ τοῖς στρατηγοῖς τάττονται τοῖς ἀφικνουμένοις εἰς τὴν ναρβωνῖτιν. οὐοκόντιοι δὲ καθάπερ τοὺς οὐόλκας ἔφαμεν, τοὺς περὶ νέμαυσον τάττονται καθ' αὑτούς. τῶν δὲ μεταξὺ τοῦ οὐάρου καὶ τῆς γενούας λιγύων, οἱ μὲν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τοῖς ἰταλιώταις εἰσὶν οἱ αὐτοί. ἐπὶ δὲ τοὺς ὀρεινοὺς πέμπεταί τις ὕπαρχος τῶν ἱππικῶν ἀνδρῶν καθάπερ καὶ ἐπ' ἄλλους τῶν τελέως βαρβάρων. μετὰ δ' οὐοκοντίους σικόνιοι. καὶ τρικόριοι, καὶ μετ' αὐτοὺς, μέδουλλοι ὑπὲρ τὰς ὑψηλοτάτας ἔχουσι κορυφάς, τὸ γοῦν ὀρθιώτατον αὐτῶν ὕψος, σταδίων ἑκατὸν ἔχειν φασὶ τὴν ἀνάβασιν. κἀντεῦθεν πάλιν τὴν ἐπὶ τοὺς ὅρους τοὺς τῆς ἰταλίας κατάβασιν. ἄνω δ' ἔν τισι κοίλοις χωρίοις λίμνη τε συνίσταται μεγάλη. καὶ πηγαὶ δύο οὐ πολὺ ἄπωθεν ἀλλήλων. ὧν ἐκ μὲν τῆς ἑτέρας ἐστὶν ὁ δ' ἀρουέντιος ποταμὸς χαραδρώδης. ὃς ἐπὶ τὸν ῥοδανὸν καταράττει. καὶ ὁ δουρίας εἰς τἀναντία. τῷ γὰρ πάδῳ συμμίσγει κατενεχθεὶς διὰ σαλασσῶν εἰς τὴν ἐντὸς τῶν ἄλπεων κελτικήν. ἐκ δὲ τῆς ἑτέρας πολὺ ταπεινότερος τῶν χωρίων τούτων ἀναδίδωσιν αὐτὸς ὁ πάδος, πολύς τε, καὶ ὀξύς. προϊὼν δὲ γίνεται μείζων καὶ πρᾳότερος. ἐκ πολλῶν δὲ λαμβάνει τὴν αὔξησιν. ἐν δὲ τοῖς πεδίοις ἤδη γενόμενος καὶ πλατύνεται. τῇ οὖν διαχύσει περισπᾷ καὶ ἀμβλύνει τὸν ῥοῦν. εἰς δὲ τὴν ἀδριατικὴν θάλατταν ἐμπίπτει μέγιστος γενόμενος τῶν κατὰ τὴν εὐρώπην ποταμῶν πλὴν τοῦ ἴστρου. ὑπέρκεινται δ' οἱ μὲν μέδουλλοι μάλιστα τῆς συμβολῆς τοῦ ἴσαρος πρὸς τὸν ῥοδανόν. ἐπὶ δὲ θάτερα μέρη τὰ πρὸς τὴν ἰταλίαν κεκλιμένα τῆς λεχθείσης ὀρεινῆς, ταυρινοί τε οἰκοῦσι λιγυστικὸν ἔθνος, καὶ ἄλλοι λίγυες. τούτων δ' ἐστὶ καὶ ἡ τοῦ ἰδόννου λεγομένη γῆ, καὶ τοῦ κοττίου. μετὰ δὲ τούτους καὶ τὸν πάδον σαλασσοί. ὑπὲρ δὲ τούτων ἐν ταῖς κορυφαῖς κεύτρωνες, καὶ κατόριγες καὶ οὐάραγροι καὶ ναντουᾶται, καὶ ἡ λημέννα λίμνη. δι' ἧς ὁ ῥοδανὸς φέρεται. καὶ ἡ πηγὴ τοῦ ποταμοῦ. οὐκ ἄπωθεν δὲ τούτων οὐδὲ τοῦ ῥήνου αἱ πηγαὶ οὐδ' ὁ ἀδούλας τὸ ὄρος. ἐξ οὗ ῥεῖ καὶ ὁ ῥῆνος ἐπὶ τὰς ἄρκτους. καὶ ὁ ἀδούας εἰς τἀναντία ἐμβάλλων εἰς τὴν λάριον λίμνην τὴν πρὸς τῷ κώμῳ. ὑπέρκειται δὲ τοῦ κώμου πρὸς τῇ ῥίζῃ τῶν ἄλπεων ἱδρυμένου, τῇ μὲν, ῥαιτοὶ καὶ οὐέννονες ἐπὶ τὴν ἕω κεκλιμένοι. τῇ δὲ ληπόντιοι καὶ τριδεντῖνοι καὶ στόνοι καὶ ἄλλα πλείω μικρὰ ἔθνη κατέχοντα τὴν ἰταλίαν ἐν τοῖς πρόσθεν χρόνοις λῃστρικὰ καὶ ἄπορα. νυνὶ δὲ τὰ μὲν ἐξέφθαρται. τὰ δ' ἡμέρωται τελέως. ὥστε τὰς δι' αὐτῶν ὑπερβολὰς τοῦ ὄρους πρότερον οὔσας ὀλίγας καὶ δυσπεράτους, νυνὶ πολλαχόθεν εἶναι καὶ ἀσφαλεῖς ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, καὶ εὐβάτους. ὧν ἔνι διὰ τὴν κατασκευήν. προσέθηκε γὰρ ὁ σεβαστὸς καῖσαρ τῇ καταλύσει τῶν λῃστῶν τὴν κατασκευὴν τῶν ὁδῶν, ὅσην δυνατὸν ἦν. οὐ γὰρ δυνατὸν πανταχοῦ βιάσασθαι τὴν φύσιν διὰ πετρῶν, καὶ κρημνῶν ἐξαισίων. τῶν μὲν ὑπερκειμένων τῆς ὁδοῦ. τῶν δ' ὑποπιπτόντων. ὥστε, καὶ μικρὸν ἐκβᾶσιν, ἄφυκτον εἶναι τὸν κίνδυνον. εἰς φάραγγας ἀβύσσους τοῦ πτώματος ὄντος. οὕτω δ' ἐστὶ στενὴ κατά τι αὐτοῦ ἡ ὁδὸς, ὥστ' ἰλίγγον φέρειν τοῖς πεζῇ βαδίζουσι καὶ αὐτοῖς καὶ τοῖς ὑποζυγίοις τοῖς ἀήθεσι. τὰ δ' ἐπιχώρια κομίζει τοὺς φόρτους ἀσφαλῶς. οὔτ' οὖν ταῦτα ἰάσιμα, οὐδ' αἱ καταλισθαίνουσαι πλάκες τῶν κρυστάλλων ἄνωθεν ἐξαίσιοι, συνοδίαν ὅλην ἀπολαμβάνειν δυνάμεναι. καὶ συνεξωθεῖν εἰς τὰς ὑποπιπτούσας φάραγγας. πολλαὶ γὰρ ἀλλήλαις ἐπίκεινται πλάκες, πάγων ἐπὶ πάγοις γινομένων τῆς χιόνος κρυσταλλωδῶν. καὶ τῶν ἐπιπολῆς ἀεὶ ῥᾳδίως ἀπολυομένων ἀπὸ τῶν ἐντὸς πρὶν διαλυθῆναι τελέως ἐν τοῖς ἡλίοις. ἡ δὲ τῶν σαλασσῶν πολλὴ μέν ἐστιν, ἐν αὐλῶνι βαθεῖ. τῶν ὀρῶν ἀμφοτέρων κλειόντων τὸ χωρίον. μέρος δέ τι αὐτῶν ἀνατείνει καὶ πρὸς τὰς ὑπερκειμένας κορυφάς. τοῖς οὖν ἐκ τῆς ἰταλίας ὑπερτιθεῖσι τὰ ὄρη, διὰ τοῦ λεχθέντος αὐλῶνος ἐστὶν ἡ ὁδός. εἶτα σχίζεται δίχα, καὶ ἡ μὲν, διὰ τοῦ ποινίνου λεγομένου, φέρεται ζεύγεσιν οὐ βατὴ κατὰ τὰ ἄκρα τῶν ἄλπεων. ἡ δὲ, διὰ κευτρώνων δυσμικωτέρα. ἔχει δὲ χρύσεια ἡ τῶν σαλασσῶν. ἃ κατεῖχον ἰσχύοντες οἱ σαλασσοὶ πρότερον, καθάπερ καὶ τῶν παρόδων ἦσαν κύριοι, προσελάμβανε δὲ πλεῖστον εἰς τὴν μεταλλείαν αὐ-

ρις, ὁ δουρίας ποταμὸς, ἐς τὰ χρυσοπλύσια. διόπερ ἐπὶ πολλοὺς τόπους, σχίζοντες τὰς ὑδροχείας τὸ ὕδωρ, τὸ κοινὸν ῥεῖθρον ἐξεκένουν. τοῦτο δ' ἐκείνοις μὲν συνέφερε πρὸς τὴν τοῦ χρυσοῦ θήραν. τοὺς δὲ γεωργοῦντας, τὰ ὑπ' αὐτοῖς πεδία, τῆς ἀρδείας στερουμένους, ἐλύπει. τοῦ ποταμοῦ δυναμένου ποτίζειν τὴν χώραν, διὰ τὸ ὑπερδέξιον ἔχειν τὸ ῥεῖθρον. ἐκ δὲ ταύτης τῆς αἰτίας, πόλεμοι συνεχεῖς ἦσαν ἀμφοτέροις τοῖς ἔθνεσι πρὸς ἀλλήλους. κρατησάντων δὲ ῥωμαίων, τῶν μὲν, χρυσουργιῶν ἐξέπεσον, καὶ τῆς χώρας οἱ σαλασσοί. τὰ δ' ὄρη κατέχοντες ἀκμήν. τὸ δὲ ὕδωρ ἐπώλουν τοῖς δημοσιώναις τοῖς ἐργολαβήσασι τὰ χρύσεια. καὶ πρὸς τούτοις δ' ἦσαν ἀεὶ διαφοραὶ διὰ τὴν πλεονεξίαν τῶν δημοσίων. οὕτω δὲ συνέβαινε τοὺς στρατηγιῶντας ἀεὶ τῶν ῥωμαίων, καὶ πεμπομένους ἐπὶ τοὺς τόπους, εὐπορεῖν προφάσεων, ἀφ' ὧν πολεμήσουσι. μέχρι μὲν δὴ τῶν νεωστὶ χρόνων, τοτὲ μὲν πολεμούμενοι τοτὲ δὲ καταλυόμενοι, τὸν πρὸς τοὺς ῥωμαίους πόλεμον, ἴσχυον ὅμως, καὶ πολλὰ κατέβλαπτον τοὺς δι' αὐτῶν ὑπερβάλλοντας τὰ ὄρη, κατὰ τὸ λῃστρικὸν ἔθος. οἵ γε καὶ δέκιον βροῦτον φυγόντα ἐκ μουτίνης. ἐπράξαντο δραχμὴν κατ' ἄνδρα. μεσσάλας δὲ, πλησίον αὐτῶν χειμαδεύων, τιμὴν ξύλων κατέβαλε. τῶν τε καυσίμων, καὶ τῶν πτελεΐνων ἀκοντισμάτων, καὶ τῶν γυμναστικῶν. ἐσύλησαν δέ ποτε καὶ χρήματα καίσαρος, οἱ ἄνδρες οὗτοι καὶ ἐπέβαλον κρημνοὺς στρατοπέδοις. πρόφασιν ὡς ὁδοποιοῦντες ἢ γεφυροῦντες ποταμούς. ὕστερον μέντοι κατεστρέψατο αὐτοὺς ἄρδην ὁ σεβαστός. καὶ πάντας ἐλαφυροπώλησε. κομισθέντας εἰς ἐπορεδίαν, ῥωμαίων ἀποικίαν. ἣν συνῴκισαν μὲν φρουρὰν εἶναι βουλόμενοι τοῖς σαλασσοῖς. ὀλίγον δ' ἀντέχειν ἐδύναντο οἱ αὐτόθι, ἕως ἠφανίσθη τὸ ἔθνος. τῶν μὲν οὖν ἄλλων σωμάτων τρεῖς μυριάδες ἐξητάσθησαν ἐπὶ τοῖς ἑξακισχιλίοις. τῶν δὲ μαχίμων ἀνδρῶν ὀκτακισχίλιοι. πάντας δ' ἐπώλησε τερέντιος οὐάῤῥων ὑπὸ δόρυ κατεστρεψάμενος αὐτοὺς στρατηγός. τρισχιλίους δὲ ῥωμαίων πέμψας, ᾤκισε τὴν πόλιν αὐγοῦσταν ὁ καῖσαρ ἐν ᾧ ἐστρατοπέδευσε χωρίῳ, οὐάῤῥων. καὶ νῦν εἰρήνην ἄγει πᾶσα ἡ πλησιόχωρος, μέχρι τῶν ἄκρων ὑπερβολῶν τοῦ ὄρους. ἑξῆς, δὲ τὰ πρὸς ἕω μέρη τῶν ὀρῶν. καὶ τὰ ἐπιστρέφοντα πρὸς νότον, ῥαιτοὶ καὶ οὐινδελικοὶ κατέχουσι. συνάπτοντες ἐλουητίοις καὶ βοΐοις. ἐπίκεινται γὰρ τοῖς ἐκείνων πεδίοις. οἱ μὲν οὖν ῥαιτοὶ μέχρι τῆς ἰταλίας καθήκουσι, τῆς ὑπὲρ οὐήρωνος καὶ κώμου. καὶ ὅ γε ῥαιτικὸς οἶνος τῶν ἐν τοῖς ἰταλικοῖς ἐπαινουμένων οὐκ ἀπολείπεσθαι δοκῶν; ἐν ταῖς τούτων ὑπωρείαις γίνεται. διατείνουσι δὲ, καὶ μέχρι τῶν χωρίων, δι' ὧν ὁ ῥῆνος φέρεται. τούτου δ' εἰσὶ τοῦ φύλου καὶ λεπόντιοι καὶ καμοῦνοι. οἱ δὲ οὐινδελικοὶ καὶ νωρικοὶ τὴν ἐκτὸς παρωρείαν κατέχουσι τὸ πλέον μετὰ βρεύκων καὶ γεναύνων. ἤδη τούτων ἰλλυριῶν. ἅπαντες δ' οὗτοι, καὶ τῆς ἰταλίας τὰ γειτονεύοντα μέρη κατέτρεχον ἀεί. καὶ τῆς ἐλουητίων, καὶ σηκουανῶν καὶ βοΐων, καὶ γερμανῶν. ἰταμώτατοι δὲ τῶν μὲν οὐινδελικῶν ἐξητάζοντο, λικάττιοι καὶ κλαυτινάτιοι καὶ οὐέννωνες. τῶν δὲ ῥαιτῶν, ῥουκάντιοι, καὶ κωτουάντιοι. καὶ οἱ ἐστίωνες δὲ τῶν οὐινδελικῶν εἰσι. καὶ βριγάντιοι. καὶ πόλεις αὐτῶν, βριγάντιον καὶ καμβόδουνον. καὶ ἡ τῶν λικαττίων. ὥσπερ ἀκρόπολις δαμασία. τῆς δὲ πρὸς τοὺς ἰταλιώτας τῶν λῃστῶν τούτων χαλεπότητος, λέγεταί τι τοιοῦτον. ὡς ἐπειδὰν ἕλωσι κώμην ἢ πόλιν, οὐ μόνον ἡβηδὸν ἀνδροφονοῦντας, ἀλλὰ καὶ μέχρι τῶν νηπίων προϊόντας τῶν ἀῤῥένων. καὶ μηδ' ἐνταῦθα παυομένους, ἀλλὰ, καὶ τὰς ἐγκύους γυναῖκας κτείνοντας, ὅσας φαῖεν οἱ μάντεις ἀῤῥενοκυεῖν. μετὰ δὲ τούτους. οἱ ἐγγὺς ἤδη τοῦ ἀδριατικοῦ μυχοῦ, καὶ τῶν κατὰ ἀκυληίαν τόπων οἰκοῦσι. νωρικῶν τέ τινες καὶ κάρνοι. τῶν δὲ νωρικῶν εἰσι, καὶ οἱ ταυρίσκοι. πάντας δ' ἔπαυσε τῶν ἀνέδην καταδρομῶν τιβέριος καὶ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ δροῦσος θερείᾳ μιᾷ. ὥστ' ἤδη τρίτον, καὶ τριακοστὸν ἔτος ἐστὶν, ἐξ οὗ καθ' ἡσυχίαν ὄντες, ἀπευτακτοῦσι τοὺς φόρους. κατὰ πᾶσαν δὲ τὴν τῶν ἄλπεων ὀρεινὴν, ἔστι μὲν καὶ γεώλοφα χωρία, καλῶς γεωργεῖσθαι δυνάμενα. καὶ αὐλῶνες εὖ συνεκτισμένοι, τὸ μέντοι πλέον καὶ μάλιστα περὶ τὰς κορυφὰς περὶ ὃ δὴ καὶ συνίσταντο οἱ λῃσταὶ, λυπρὸν καὶ ἄκαρπον διά τε τὰς πάχνας καὶ τὴν τραχύτητα τῆς γῆς. κατὰ σπάνιν οὖν τροφῆς τε καὶ ἄλλων, ἐφείδοντο ἔσθ' ὅτε τῶν ἐν τοῖς πεδίοις ἵν' ἔχοιεν χορηγούς. ἀντεδίδοσαν δὲ ῥητίνην πίτταν. δᾷδα. κηρόν. μέλι. τυρόν. τούτων γὰρ εὐπόρουν. ὑπέρκειται δὲ τῶν κάρνων, τὸ ἀπέννινον ὄρος. λίμνην ἔχον ἐξιεῖσαν εἰς τὸν ἴσαρον ποταμόν. ὃς παραλαβὼν ἄταγιν ἄλλον ποταμόν. εἰς τὸν ἀδρίαν ἐκβάλλει. ἐκ δὲ τῆς αὐτῆς λίμνης καὶ ἄλλος ποταμὸς εἰς τὸν ἴστρον ῥεῖ, καλούμενος ἀτησινός, καὶ γὰρ ὁ ἴστρος τὰς ἀρχὰς ἀπὸ τούτων λαμβάνει τῶν ὀρῶν. πολυσχιδῶν ὄντως, καὶ πολυκεφάλων. μέχρι μὲν γὰρ δεῦρο, ἀπὸ τῆς λιγυστικῆς, συνεχῆ τὰ ὑψηλὰ τῶν ἄλπεων διέτεινε καὶ ἑνὸς ὄρους φαντασίαν παρεῖχεν. εἶτ' ἀνεθέντα καὶ ταπεινωθέντα ἐξαίρεται πάλιν εἰς πλείω μέρη καὶ πλείους κορυφάς. πρώτη δ' ἐστὶ τούτων ἡ τοῦ ῥήνου πέραν, καὶ τῆς λίμνης κεκλιμένη πρὸς ἕω ῥάχις μετρίως ὑψηλή. ὅπου αἱ τοῦ ἴστρου πηγαὶ πλησίον σουήβων, καὶ τοῦ ἑρκυνίου δρυμοῦ. ἄλλαι δ' εἰσὶν ἐπιστρέφουσαι πρὸς τὴν ἰλλυρίδα καὶ τὸν ἀδρίαν. ὧν ἐστὶ τό τε ἀπέννινον ὄρος τὸ λεχθὲν, καὶ τὸ τοῦλλον. καὶ φλυγαδία. καὶ τὰ ὑπερκείμενα τῶν οὐινδελικῶν. ἐξ ὧν ὁ δούρας, καὶ ὁ κλάνις. καὶ ἄλλοι πλείους χαραδρώδεις ποταμοὶ συμβάλλουσιν εἰς τὸ τοῦ ἴστρου ῥεῖθρον. καὶ οἱ ἰάποδες δὲ τοῦτο ἤδη ἐπίμικτον ἰλλυριοῖς καὶ κελτοῖς ἔθνος, περὶ τούτους οἰκοῦσι τοὺς τόπους, καὶ ἡ ἄκρα πλησίον τούτων ἐστίν. οἱ μὲν

οἱ ἰάποδες πρότερον καὶ εὐανδροῦντες, καὶ τοῦ ὄρους ἐφ' ἑκάτερον τὴν οἴκησιν ἔχοντες, καὶ τοῖς λῃστηρίοις κατακρατοῦντες, ἐκπεπόνηνται τελέως ὑπὸ τοῦ σεβαστοῦ καίσαρος καταπολεμηθέντες. πόλεις δ' αὐτῶν, μέτουλον, ἀρούπεινον, μονήτιον, οὐένδον. μεθ' οὓς ἡ σεγεστικὴ πόλις ἐν πεδίῳ. παρ' ἣν ὁ ῥῆνος αὐτὸς παραρρεῖ ποταμὸς, ἐκδιδοὺς εἰς τὸν ἴστρον. κεῖται δὲ ἡ πόλις εὐφυῶς, πρὸς τὸν κατὰ τῶν δακῶν πόλεμον. ἡ δὲ ὄκρα ταπεινότατον μέρος τῶν ἄλπεων ἐστί. καθ' ὃ συνάπτουσι τοῖς καρνοῖς. καὶ δι' οὗ τὰ ἐκ τῆς ἀκυληΐας φορτία, κομίζουσιν ἁρμαμάξαις, εἰς τὸν καλούμενον πάμπορτον, σταδίων ὁδὸν, οὐ πλειόνων ἢ υ. ἐκεῖθεν δὲ τοῖς ποταμοῖς κατάγεται, μέχρι τοῦ ἴστρου καὶ τῶν ταύτῃ χωρίων. παραρρεῖ γὰρ τὸν πάμπορτον ποταμὸς, ἐκ τῆς ἰλλυρίδος φερόμενος, πλωτός. ἐκβάλλει δ' εἰς τὸν σάον, ὥστ' εὐμαρῶς εἰς τὴν σεγεστικὴν κατάγεται, καὶ τοὺς παννονίους καὶ ταυρίσκους. συμβάλλει δ' εἰς τὸν σάον κατὰ τὴν πόλιν, καὶ ὁ κόλαπις. ἀμφότεροι δ' εἰσὶ πλωτοί. ῥέουσι δ' ἀπὸ τῶν ἄλπεων. ἔχουσι δ' αἱ ἄλπεις, καὶ ἵππους ἀγρίους. καὶ βόας. φησὶ δὲ πολύβιος καὶ ἰδιόμορφόν τι ζῶον γεννᾶσθαι ἐν αὐταῖς, ἐλαφοειδὲς τὸ σχῆμα, πλὴν αὐχένος καὶ τριχώματος. ταῦτα δ' ἐοικέναι κάπρῳ. ὑπὸ δὲ τῷ γενείῳ πυρῆνα ἴσχειν ὅσον σπιθαμιαῖον ἀκρόκομον. πωλικῆς κέρκου τὸ πάχος. τῶν δ' ὑπερθέσεων τῶν ἐκ τῆς ἰταλίας εἰς τὴν ἔξω κελτικὴν, καὶ τὴν προσάρκτιον, ἡ διὰ σαλασσῶν ἐστὶν ἄγουσα ἐπὶ λούγδουνον. διττὴ δ' ἐστίν. ἡ μὲν, ἁμαξεύεσθαι δυναμένη, διὰ μήκους πλείονος ἡ διὰ κευτρώνων. ἡ δὲ ὀρθία καὶ στενή. σύντομος δὲ, ἡ διὰ τοῦ ποινίνου. τὸ δὲ λούγδουνον ἐν μέσῳ τῆς χώρας ἐστὶν, ὥσπερ ἀκρόπολις, διά τε τὰς συμβολὰς τῶν ποταμῶν, διὰ καὶ τὸ ἐγγὺς εἶναι, πᾶσι τοῖς μέρεσι. διόπερ καὶ ἀγρίππας ἐντεῦθεν τὰς ὁδοὺς ἔτεμε, τὴν διὰ τῶν κεμμένων ὀρῶν μέχρις αὐτώνων καὶ τῆς ἀκουιτανίας. καὶ τὴν ἐπὶ τὸν ῥῆνον. καὶ τρίτην τὴν ἐπὶ τὸν ὠκεανὸν, τὴν πρὸς βαλοακοῖς. καὶ ἀμιανοῖς. τετάρτη δ' ἐστὶν ἐπὶ τὴν ναρβωνῖτιν καὶ τὴν μασσαλιῶτιν παραλίαν. ἔστι δὲ, καὶ ἐν ἀριστερᾷ ἀφεῖσι τὸ λούγδουνον. καὶ τὴν ὑπερκειμένην χώραν ἐν αὐτῷ τῷ ποινίνῳ πάλιν ἐκτροπὴ διαβάντι τὸν ῥοδανὸν, ἢ τὴν λίμνην τὴν λημένναν εἰς τὰ ἐλουηττίων πεδία. κἀντεῦθεν εἰς σηκοανοὺς ὑπέρθεσις διὰ τοῦ ἰόρα ὄρους, καὶ εἰς λίγγονας. διά τε τούτων ἐπ' ἄμφω καὶ ἐπὶ τὸν ῥῆνον καὶ ἐπὶ τὸν ὠκεανὸν δίοδοι, σχίζονται. ἐπεί φησι πολύβιος ἐφ' ἑαυτοῦ κατ' ἀκυληΐαν μάλιστα, ἐν τοῖς ταυρίσκοις τοῖς νωρικοῖς, εὑρεθῆναι χρυσεῖον οὕτως εὐφυὲς, ὥστ' ἐπὶ δύο πόδας ἀποσύραντι τὴν ἐπιπολῆς γῆν, εὐθὺς ὀρυκτὸν εὑρίσκεσθαι χρυσόν. τὸ δ' ὄρυγμα μὴ πλειόνων ὑπάρχειν ἢ πεντεκαίδεκα ποδῶν. εἶναι δὲ τοῦ χρυσοῦ τὸν μὲν αὐτόθεν καθαρὸν, κυάμου μέγεθος ἢ θέρμου, τοῦ ὀγδόου μόνου ἀφεψηθέντος. τὸν δὲ δεῖσθαι μὲν χωνείας πλείονος, σφόδρα δὲ λυσιτελοῦς. συνεργασαμένων δὲ τοῖς βαρβάροις τῶν ἰταλιωτῶν ἐν διμήνῳ, παραχρῆμα τὸ χρυσίον εὐωνότερον γενέσθαι τῷ τρίτῳ μέρει καθ' ὅλην τὴν ἰταλίαν. αἰσθανομένους δὲ τοὺς ταυρίσκους, μονοπωλεῖν ἐκβαλόντας τοὺς συνεργαζομένους. ἀλλὰ νῦν ἅπαντα τὰ χρύσεια, ὑπὸ ῥωμαίοις ἐστί. κἀνταῦθα δ' ὥσπερ κατὰ τὴν ἰβηρίαν, φέρουσιν οἱ ποταμοὶ χρυσοῦ ψῆγμα πρὸς τῷ ὀρυκτῷ. οὐ μέντοι τοσοῦτον. ὁ δ' αὐτὸς ἀνὴρ περὶ τοῦ μεγέθους τῶν ἄλπεων καὶ τοῦ ὕψους λέγων, παραβάλλει τὰ ἐν τοῖς ἕλλησιν ὄρη τὰ μέγιστα. τὸ ταΰγετον. τὸ λύκαιον. παρνασσὸν ὄλυμπον. πήλιον ὄσσαν. ἐν δὲ θράκῃ αἷμον, ῥοδόπην, δούνακα. καί φησιν ὅτι τούτων μὲν ἕκαστον μικροῦ δεῖν αὐθημερὸν εὐζώνοις ἀναβῆναι δυνατόν. αὐθημερὸν δὲ, καὶ περιελθεῖν. τὰς δ' ἄλπεις, οὐδ' ἂν πεμπταῖος ἀναβαίη τις. τὸ δὲ μῆκος ἐστὶ δισχιλίων καὶ διακοσίων σταδίων, τὸ παρῆκον παρὰ τὰ πεδία. τέτταρας δ' ὑπερβάσεις ὀνομάζει μόνον. διὰ λιγύων μὲν τὴν ἔγγιστα τῷ τυρρηνικῷ πελάγει. εἶτα τὴν διὰ ταυρίνων, ἣν ἀννίβας διῆλθεν. εἶτα τὴν διὰ σαλασσῶν. τετάρτην δὲ, τὴν διὰ ῥαιτῶν, ἁπάσας κρημνώδεις. λίμνας δ' εἶναι φησὶν ἐν τοῖς ὄρεσι πλείους μὲν, τρεῖς δὲ μεγάλας. ὧν ἡ μὲν, βήνακος, ἔχει μῆκος πεντακοσίων σταδίων πλάτος δὲ, ἑκατὸν πεντήκοντα. ἐκρεῖ δὲ ποταμὸς μίγκιος. ἡ δ' ἑξῆς οὐερβανὸς, τετρακοσίων. πλάτος δὲ στενοτέρα τῆς προτέρας. ἐξίησι δὲ ποταμὸν τὸν ἀδούαν. τρίτη δὲ λάριος. μῆκος ἐγγὺς τριακοσίων σταδίων. πλάτος δὲ λ. ποταμὸν δ' ἐξίησι μέγαν τικινὸν, πάντες δ' εἰς τὸν πάδον συρρέουσι. τοσαῦτα καὶ περὶ τῶν ὀρῶν ἔχομεν λέγειν τῶν ἀλπεινῶν. μετὰ δὲ τὴν ὑπώρειαν τῶν ἄλπεων ἀρχὴ τῆς νῦν ἰταλίας.

Ἐν τῷ πέμπτῳ τὰ περὶ Ἰταλίαν ἀπὸ τῆς ὑπωρείας τῶν Ἄλπεων. μέχρι τοῦ Σικελικοῦ πορθμοῦ καὶ Ταραντίνου κόλπου, καὶ τοῦ Ποσειδωνιάτου. ἐν οἷς Βενετία. Λιγουρία. Πικηνοί. Τυσκία. Ῥώμη. Καμπανία. Λευκανία. Ἀπουλία. καὶ ὅσαι νῆσοι τῇ ταύτης θαλάσσῃ παράκεινται ἀπὸ Γενουΐτων μέχρι Σικελίας.

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΕΜΠΤΟΝ.

Μετὰ δὲ τὴν ὑπώρειαν τῶν Ἄλπεων, ἀρχὴ τῆς νῦν Ἰταλίας. οἱ γὰρ παλαιοὶ τὴν Οἰνωτρίαν, ἐκάλουν Ἰταλίαν, ἀπὸ τοῦ Σικελικοῦ πορθμοῦ, μέχρι τοῦ Ταραντίνου κόλπου, καὶ τοῦ Ποσειδωνιάτου διήκουσαν. ἐπικρατῆσαν δὲ τοὔνομα, καὶ μέχρι τῆς ὑπωρείας τῶν Ἄλπεων προὔβη. προσέλαβε δὲ καὶ τῆς Λιγυστικῆς. μέχρι Οὐάρου ποταμοῦ καὶ τῆς ταύτῃ θαλάττης, ἀπὸ τῶν ὁρίων τῶν Τυρρηνικῶν καὶ τῆς Ἰστρίας μέχρι Πόλας. εἰκάσειε δ' ἄν τις εὐτυχήσαντας αὐτοὺς πρώτους ὀνομασθέντας Ἰταλούς, μεταδοῦναι καὶ τοῖς πλησιοχώροις. εἶθ' οὕτως ἐπίδοσιν λαβεῖν, μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας. ὀψὲ δέ ποτε ἀφ' οὗ μετέδοσαν Ῥωμαῖοι τοῖς Ἰταλιώταις τὴν ἰσοπολιτείαν, ἔδοξε, καὶ τοῖς ἐντὸς Ἄλπεων Γαλάταις, καὶ Ἐνετοῖς, τὴν αὐτὴν ἀπονεῖμαι τιμήν, προσαγορεῦσαι δὲ καὶ Ἰταλιώτας πάντας καὶ Ῥωμαίους. ἀποικίας τε πολλὰς στεῖλαι. τὰς μὲν πρότερον, τὰς δ' ὕστερον. ὧν οὐ ῥᾴδιον εἰπεῖν ἀμείνους ἑτέρας. ἓν μὲν οὖν σχῆμα σύμπασαν τὴν νῦν Ἰταλίαν, οὐ ῥᾴδιον περιλαβεῖν γεωμετρικῶς. καίτοι φασὶν ἄκραν εἶναι τρίγωνον ἐκκειμένην πρὸς νότον καὶ χειμερινὰς ἀνατολάς. κορυφουμένην δὲ πρὸς τῷ Σικελικῷ πορθμῷ. βάσιν δ' ἔχουσαν τὰς Ἄλπεις. συγχωρῆσαι δὲ, καὶ τὴν πλευρὰν μίαν, τὴν ἐπὶ τὸν πορθμὸν τελευτῶσαν. κλυζομένην δ' ὑπὸ τοῦ Τυρρηνικοῦ πελάγους. τρίγωνον δὲ ἰδίως τὸ εὐθύγραμμον καλεῖται σχῆμα. ἐνταῦθα δέ, καὶ αἱ βάσεις καὶ αἱ πλευραί, περιφερεῖς εἰσίν. ὥς τε εἰ φημὶ δεῖν συγχωρεῖν, περιφερογράμμου σχήματος θετέον καὶ τὴν βάσιν καὶ τὴν πλευράν. συγχωρητέον δέ, καὶ τὴν λόξωσιν ταύτης τῆς πλευρᾶς τὴν ἐπὶ τὰς ἀνατολάς. τἄλλα δ' οὐχ ἱκανῶς εἰρήκασιν. ὑποθέμενοι μίαν πλευρὰν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδρίου μέχρι τοῦ πορθμοῦ. πλευρὰν γὰρ λέγομεν τὴν ἀγώνιον γραμμήν. ἀγώνιος δ' ἐστὶν ὅταν, ἢ μὴ συννεύῃ πρὸς τὰ ἄλληλα μέρη, ἢ μὴ ἐπὶ πολύ. ἡ δ' ἀπὸ Ἀριμίνου ἐπὶ τὴν ἄκραν τὴν Ἰαπυγίαν, καὶ ἡ ἀπὸ τοῦ πορθμοῦ ἐπὶ τὴν αὐτὴν ἄκραν, πάμπολύ τι συννεύουσιν. ὁμοίως δ' ἔχειν οἴομαι καὶ τὴν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδρίου, καὶ τὴν ἀπὸ τῆς Ἰαπυγίας. συμπίπτουσαι γὰρ ἐπὶ τοὺς περὶ Ἀρίμινον καὶ Ῥάβενναν τόπους, γωνίαν ποιοῦσιν, εἰ δὲ μὴ γωνίαν, περιφέρειάν γε ἀξιόλογον. ὥστ' εἰ ἄρα τοῦτ' ἂν εἴη μία πλευρὰ ὁ παράπλους, ὁ ἀπὸ τοῦ μυχοῦ ἐπὶ τὴν Ἰαπυγίαν, οὐκ εὐθεῖα. τὸ δὲ λοιπὸν τὸ ἐνθένδε ἐπὶ τὸν πορθμόν, ἄλλην ἂν ὑπογράφοι πλευράν. οὐδὲ ταύτην εὐθεῖαν. οὕτω δὲ τετράπλευρον μᾶλλον, ἢ τρίπλευρον φαίη ἄν τις τὸ σχῆμα. τρίγωνον δ' οὐδ' ὁπωσοῦν, πλὴν εἰ καταχρώμενος. βέλτιον δ' ὁμολογεῖν, ὅτι τῶν ἀγεωμετρήτων σχημάτων, οὐκ εὐπερίγραφος ἡ ἀπόδοσις. κατὰ μέρος δ' οὕτως εἰπεῖν δυνατόν, ὅτι τῶν μὲν Ἄλπεων, περιφερὴς ἡ ὑπώρειά ἐστι, καὶ κολπώδης, τὰ κοῖλα ἔχουσα ἐστραμμένα πρὸς τὴν Ἰταλίαν. τοῦ δὲ κόλπου τὰ μὲν μέσα πρὸς τοῖς Σαλασσοῖς ἐστί. τὰ δ' ἄκρα ἐπιστροφὴν λαμβάνει. τὰ μὲν μέχρι τῆς Ὄκρας καὶ τοῦ κατὰ τὸν Ἀδρίαν μυχοῦ. τὰ δ' εἰς τὴν Λιγυστικὴν παραλίαν μέχρι Γενούας, τοῦ τῶν Λιγύων ἐμπορείου, ὅπου τὰ Ἀπέννινα ὄρη συνάπτει ταῖς Ἄλπεσιν. ὑπόκειται δ' εὐθὺς πεδίον ἀξιόλογον πάρισόν πως ἔχον τὸ πλάτος καὶ τὸ μῆκος. σταδίων ἑκατὸν καὶ δισχιλίων. τὸ δὲ μεσημβρινὸν αὐτοῦ πλευρὸν κλείεται. τῇ τε τῶν Ἐνετῶν παραλίᾳ, καὶ τοῖς Ἀπεννίνοις ὄρεσι, τοῖς περὶ Ἀρίμινον, καὶ Ἀγκῶνα καθήκουσι. ταῦτα γὰρ ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς Λιγυστικῆς εἰς τὴν Τυρρηνίαν ἐμβάλλει. στενὴν παραλίαν ἀπολιπόντα, εἶτα ἀναχωροῦντα εἰς τὴν μεσόγαιαν κατ' ὀλίγον, ἐπειδὰν γένηται κατὰ τὴν Πισᾶτιν, ἐπιστρέφει πρὸς ἕω, καὶ πρὸς τὸν Ἀδρίαν ἕως τῶν περὶ Ἀρίμινον καὶ Ἀγκῶνα τόπων. συνάπτοντα ἐπ' εὐθείας τῇ τῶν Ἐνετῶν παραλίᾳ. ἡ μὲν οὖν ἐντὸς Ἄλπεων Κελτική, τούτοις κλείεται τοῖς ὅροις. καὶ ἔστι τῆς μὲν παρα

λίας τὸ μῆκος ὅσον τ. σταδίων ἐπὶ τοῖς ἑξακισχιλίοις, μετὰ τῶν ὀρῶν. μικρὸν δ' ἔλαττον τὸ πλάτος τῶν χιλίων. ἡ λοιπὴ δ' ἰταλία, στενὴ, καὶ παραμήκης ἐστὶ κορυφουμένη διχῶς. τῇ μὲν πρὸς τὸν σικελικὸν πορθμόν. τῇ δὲ, πρὸς τὴν ἰαπυγίαν. σφιγγομένη δ' ἑκατέρωθεν. τῇ μὲν ὑπὸ τοῦ ἀδρίου, τῇ δ' ὑπὸ τοῦ τυῤῥηνικοῦ πελάγους. ἔστι δ' ὅμοιον τὸ σχῆμα τοῦ ἀδρίου καὶ τὸ μέγεθος τῇ ἰταλίᾳ τῇ τε ἀφοριζομένῃ τοῖς ἀπεννίνοις ὄρεσι, καὶ τῇ θαλάττῃ ἑκατέρᾳ, μέχρι τῆς ἰαπυγίας καὶ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ κατὰ τὸν ταραντῖνον καὶ τὸν ποσειδωνιάτην κόλπον. τό τε γὰρ πλάτος τὸ μέγιστον ἀμφοῖν ἐστι, περὶ χιλίους καὶ τριακοσίους σταδίους. τὸ δὲ μῆκος ἔλαττον, οὐ πολὺ τῶν ἑξακισχιλίων. ἡ λοιπὴ δ' ἐστὶν ὅσην κατέχουσι βρέττιοι καὶ λευκανοί. φησὶ δὲ πολύβιος, πεζῇ μὲν εἶναι τὴν παραλίαν τὴν ἀπὸ ἰαπυγίας μέχρι πορθμοῦ καὶ τρισχιλίων σταδίων. κλύζεσθαι δ' αὐτὴν τῷ σικελικῷ πελάγει. πλέοντι δὲ, καὶ πεντακοσίων δέουσαν. τὰ δὲ ἀπέννινα ὄρη συνάψαντα τοῖς περὶ ἀρίμινον καὶ ἀγκῶνα τόποις. καὶ ἀφορίσαντα τὸ ταύτης πλάτος τῆς ἰταλίας, ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν. ἐπιστροφὴν λαμβάνει πάλιν. καὶ τέμνει τὴν χώραν ὅλην ἐπὶ μῆκος. μέχρι μὲν δὴ πευκετίων καὶ λευκανῶν, οὐ πολὺ ἀφιστάμενα τοῦ ἀδρίου. συνάψαντα δὲ λευκανοῖς. ἐπὶ τὴν ἑτέραν θάλατταν ἀποκλίνει μᾶλλον, καὶ λοιπὸν διὰ μέσων τῶν λευκανῶν καὶ βρεττίων διεξιόντα, τελευτᾷ πρὸς τὴν λευκόπετραν τῆς ῥηγίνης καλουμένης. τυπωδῶς μὲν οὖν εἴρηται περὶ τῆς νῦν ἰταλίας ἁπάσης ταῦτα. πειρασόμεθα δὲ ἀναλαβόντες εἰπεῖν περὶ τῶν καθ' ἕκαστα. καὶ πρῶτον περὶ τῶν ὑπὸ ταῖς ἄλπεσιν. ἔστι δὲ πεδίον εὔδαιμον σφόδρα, καὶ γεωλοφίαις εὐκάρποις πεποικιλμένον. διαιρεῖ δ' αὐτὸ μέσον πως ὁ πάδος. καὶ καλεῖται τὸ μὲν, ἐντὸς τοῦ πάδου, τὸ δὲ πέραν, ἐντὸς μὲν ὅσον ἐστὶ πρὸς τοῖς ἀπεννίνοις ὄρεσι, καὶ τῇ λιγυστικῇ. πέραν δὲ τὸ λοιπόν. οἰκεῖται δὲ τὸ μὲν, ὑπὸ τῶν λιγυστικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν κελτικῶν. τῶν μὲν, ὑπὸ τοῖς ὄρεσιν οἰκούντων. τῶν δ' ἐν τοῖς πεδίοις. τὸ δ' ὑπὸ τῶν κελτῶν καὶ ἐνετῶν. οἱ μὲν οὖν κελτοὶ τῆς ὑπεραλπείοις ὁμοεθνεῖς εἰσι. περὶ τῶν ἐνετῶν, διττός ἐστι λόγος. οἱ μὲν γὰρ καὶ αὐτούς φασι κελτῶν εἶναι ἀποίκους τῶν ὁμωνύμων παρωκεανιτῶν. οἱ δ' ἐκ τοῦ τρωϊκοῦ πολέμου μετ' ἀντήνορος σωθῆναι δεῦρό φασι τῶν ἐκ τῆς παφλαγονίας ἐνετῶν τινάς. μαρτύριον δὲ τούτου προφέρονται, τὴν περὶ τὰς ἱπποτροφίας ἐπιμέλειαν. ἣ νῦν μὲν, τελέως ἐκλέλοιπε. πρότερον δὲ ἐτιμᾶτο παρ' αὐτοῖς ἀπὸ τοῦ παλαιοῦ ζήλου τοῦ κατὰ τὰς ἡμιονίτιδας ἵππους. τούτου δὲ, καὶ ὅμηρος μέμνηται.

» ἐξ ἐνετῶν, ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτεράων.

Καὶ διονύσιος ὁ τῆς σικελίας τύραννος, ἐντεῦθεν τὸ ἱπποτροφεῖον συνεστήσατο τῶν ἀθλητῶν ἵππων. ὥς τε καὶ ὄνομα ἐν τοῖς ἕλλησι γενέσθαι τῆς ἐνετικῆς πωλείας. καὶ πολὺν χρόνον εὐδοκιμῆσαι τὸ γένος. ἅπασα μὲν οὖν ἡ χώρα, ποταμοῖς πληθύει, καὶ ἕλεσι. μάλιστα δ' ἡ τῶν ἐνετῶν. πρόσεστι δὲ ταύτῃ καὶ τὰ τῆς θαλάττης πάθη. μόνα γὰρ ταῦτα τὰ μέρη, σχεδόν τι τῆς καθ' ἡμᾶς θαλάττης, ὁμοιοπαθεῖ τῷ ὠκεανῷ. καὶ παραπλησίους ἐκείνῳ ποιεῖται τάς τε ἀμπώτεις καὶ τὰς πλημμυρίδας. ὑφ' ὧν τὸ πλέον τοῦ πεδίου, λιμνοθαλάττης γίνεται μεστόν. διώρυξι δὲ, καὶ παραχώμασι καθάπερ ἡ κάτω λεγομένη χώρα τῆς αἰγύπτου διοχετεύεται. καὶ τὰ μὲν ἀνέψυκται καὶ γεωργεῖται, τὰ δὲ, διάπλους ἔχει. τῶν δὲ πόλεων, αἱ μὲν, νησίζουσιν. αἱ δ' ἐκ μέρους κλύζονται. ὅσαι δὲ ὑπὲρ τῶν ἑλῶν, ἐν τῇ μεσογαίᾳ κεῖνται, τοὺς ἐκ τῶν ποταμῶν ἀνάπλους θαυμαστοὺς ἔχουσι. μάλιστα δ' ὁ πάδος. μέγιστός τε γάρ ἐστι. καὶ πληροῦται πολλάκις ἔκ τε ὀμβρίων καὶ χιόνων, διαχεόμενος δ' εἰς πολλὰ μέρη κατὰ τὰς ἐκβολὰς, τυφλὸν τὸ στόμα ποιεῖ. καὶ δυσείς βολός ἐστιν. ἡ δ' ἐμπειρία περιγίνεται, καὶ τῶν χαλεπωτάτων. τὸ μὲν οὖν ἀρχαῖον ὥσπερ ἔφην, ὑπὸ κελτῶν περιῳκεῖτο, τῶν πλείστων ὁ ποταμός. μέγιστα δ' ἦν τῶν κελτῶν ἔθνη βοῖοι καὶ ἴνσουβροι, καὶ οἱ τὴν ῥωμαίων ποτὲ ἐξ ἐφόδου καταλαβόντες σένωνες μετὰ γαισατῶν. τούτους μὲν οὖν ἐξέφθειραν ὕστερον τελέως ῥωμαῖοι. τοὺς δὲ βοΐους ἐξήλασαν ἐκ τῶν τόπων. μεταστάντες δ' εἰς τοὺς περὶ τὸν ἴστρον τόπους, μετὰ ταυρίσκων ᾤκουν πολεμοῦντες πρὸς δακούς. ἕως ἀπώλοντο πανεθνεί. τὴν δὲ χώραν οὖσαν τῆς ἰλλυρίδος μηλόβοτον τοῖς περιοικοῦσι κατέλιπον. ἴνσουβροι δὲ, καὶ νῦν εἰσί. μεδιολάνιον δ' ἔσχον μητρόπολιν. πάλαι μὲν κώμην. ἅπαντες γὰρ ᾤκουν κωμηδόν. νῦν δ' ἀξιόλογον πόλιν, πέραν τοῦ πάδου συνάπτουσάν πως ταῖς ἄλπεσι. πλησίον δὲ, καὶ βηρῶν. καὶ αὕτη πόλις μεγάλη. ἐλάττους δὲ τούτων βρηξία καὶ μάντουα καὶ ῥήγιον, καὶ κῶμον. αὕτη δ' ἦν μὲν κατοικία μετρία. πομπήιος δὲ στράβων ὁ μάγνου πατὴρ κακωθεῖσαν ὑπὸ τῶν ὑπερκειμένων ῥαιτῶν συνῴκισεν. εἶτα γάιος σκηπίων τρισχιλίους προσέθηκεν. εἶτα ὁ θεὸς καῖσαρ πεντακισχιλίους ἐπισυνῴκισεν. ὧν οἱ πεντακόσιοι τῶν ἑλλήνων ὑπῆρξαν οἱ ἐπιφανέστατοι. τούτοις δὲ, καὶ πολιτείαν ἔδωκε, καὶ ἐνέγραψεν αὐτοὺς εἰς τοὺς συνοίκους. οὐ μέντοι ᾤκησαν αὐτόθι. ἀλλὰ καὶ τοὔνομά γε τῷ κτίσματι ἐκεῖνοι κατέλιπον. νεοκωμῖται γὰρ ἐκλήθησαν ἅπαντες. τοῦτο δὲ μεθερμηνευθὲν νοβουμκώμουμ λέγεται, ἐγγὺς δὲ τοῦ χωρίου τούτου λίμνη λάριον καλουμένη. πληροῖ δ' αὐτὴν ὁ ἀδούας ποταμός. εἶτ' ἐξίησιν εἰς τὸν πάδον. τὰς δὲ πηγὰς ἔσχηκεν ἐν τῷ ἀδούλᾳ ὄρει, ὅπου καὶ ὁ ῥῆνος. αὗται μὲν οὖν πολὺ ὑπὲρ τῶν ἑλῶν ᾤκηνται. πλησίον δὲ τὸ πατάβιον. πασῶν ταύτῃ ἀρίστη τῶν πόλεων. ἣν νεωστὶ λέγεται τιμήσασθαι πεντακοσίους ἱππικούς

ἄνδρας. καὶ τὸ παλαιὸν δὲ ἔστελλε ιβ. μυριάδας στρατιᾶς. δηλοῖ δὲ καὶ τὸ πλῆθος τῆς πεμπομένης κατασκευῆς εἰς τὴν ῥώμην κατ' ἐμπορείαν. τῶν τε ἄλλων καὶ ἐσθῆτος παντοδαπῆς, τὴν εὐανδρίαν τῆς πόλεως καὶ τὴν εὐτυχίαν. ἔχει δὲ θαλάττης ἀνάπλουν ποταμῷ διὰ τῶν ἑλῶν φερομένῳ σταδίων ν̄, καὶ σ̄ ἐκ λιμένος μεγάλου. καλεῖται δ' ὁ λιμὴν μεδόακος ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ. ἐν δὲ τοῖς ἕλεσι, μεγίστη μέν ἐστι ῥάβεννα, ξυλοπαγὴς ὅλη, καὶ διάρρυτος, γεφύραις, καὶ πορθμείοις ὁδευομένη. δέχεται δ' οὐ μικρὸν τῆς θαλάττης μέρος ἐν ταῖς πλημμυρίσιν ὥστε, καὶ ὑπὸ τούτων καὶ ὑπὸ ποταμῶν εἰσκλυζόμενον τὸ βορβορῶδες πᾶν. ἰᾶται τὴν δυσαερίαν. οὕτως γοῦν ὑγιεινὸν ἐξήτασται τὸ χωρίον, ὥστε ἐνταῦθα τοὺς μονομάχους τρέφειν καὶ γυμνάζειν ἀπέδειξαν οἱ ἡγεμόνες. ἔστι μὲν οὖν καὶ τοῦτο θαυμαστὸν τῶν ἐνθάδε, τὸ ἐν ἕλει τοὺς ἀέρας ἀβλαβεῖς εἶναι καθάπερ καὶ ἐν ἀλεξανδρείᾳ τῇ πρὸς αἰγύπτῳ. τοῦ θέρους ἡ λίμνη, τὴν μοχθηρίαν ἀποβάλλει διὰ τὴν ἀνάβασιν τοῦ ποταμοῦ, καὶ τὸν τῶν τελμάτων ἀφανισμόν. ἀλλὰ καὶ τὸ περὶ τὴν ἄμπελον πάθος, θαυμάζειν ἄξιον. φύει μὲν γὰρ αὐτὴν τὰ ἕλη, καὶ ποιεῖ ταχὺ, καὶ πολὺν ἀποδιδοῦσαν καρπόν. φθείρεται δ' ἐν ἔτεσι τέτρασιν ἢ πέντε, ἔστι δὲ καὶ τὸ ἄλτινον ἐν ἕλει. παραπλήσιον ἔχον τῇ ῥαουέννῃ τὴν θέσιν. μεταξὺ δὲ βουτρεῖον τῆς ῥαουέννης πόλισμα. καὶ ἡ σπίνα. νῦν μὲν κωμίον. πάλαι δὲ ἑλληνὶς πόλις ἔνδοξος. θησαυρὸς γοῦν σπινιτῶν, ἐν δελφοῖς δείκνυται. καὶ τἄλλα ἱστορεῖται περὶ αὐτῶν. ὡς θαλαττοκρατησάντων. φασὶ δὲ καὶ ἐπὶ θαλάττῃ ὑπάρξαι. νῦν δ' ἐστὶν ἐν μεσογαίᾳ τὸ χωρίον περὶ ἐνενήκοντα τῆς θαλάττης σταδίους ἀπέχον. καὶ ἡ ῥαουέννα δὲ θετταλῶν λέγεται κτίσμα. οὐ φέροντες δὲ τὰς τῶν τυρρηνῶν ὕβρεις ἐδέξαντο ἑκόντες τῶν ὀμβρικῶν τινὰς, οἳ καὶ νῦν ἔχουσι τὴν πόλιν. αὐτοὶ δ' ἐπεχώρησαν ἐπ' οἴκου. αὗται μὲν οὖν ἐπὶ πλέον περιέχονται τοῖς ἕλεσιν, ὥστε, καὶ κλύζεσθαι. ἐπίτερπον δὲ καὶ ὀρδία καὶ ἄδρεια καὶ οὐικέτια, καὶ ἄλλα τοιαῦτα πολισμάτια, ἧττον μὲν ὑπὸ τῶν ἑλῶν ἐνοχλεῖται. μικροῖς δ' ἀνάπλοις πρὸς τὴν θάλατταν συνῆπται. τὴν δ' ἀδρίαν ἐπιφανῆ γενέσθαι πόλιν φασὶν, ἀφ' ἧς καὶ τοὔνομα τῷ κόλπῳ γενέσθαι τῷ ἀδρίᾳ. μικρὰ μεταθέσει λαβὸν ἀκυληΐα δ' ἥπερ μάλιστα τῷ μυχῷ πλησιάζει. κτίσμα μέν ἐστι ῥωμαίων ἐπιτειχισθὲν τοῖς ὑπερκειμένοις βαρβάροις. ἀναπλεῖται δὲ ὁλκάσι κατὰ τὸν νατίσωνα ποταμὸν, ἐπὶ πλείους ἑξήκοντα σταδίους. ἀνεῖται δ' ἐμπορεῖον τοῖς περὶ τὸν ἴστρον τῶν ἰλλυριῶν ἔθνεσι. κομίζουσι δ' οὗτοι μὲν τὰ ἐκ θαλάττης. καὶ οἶνον ἐπὶ ξυλίνων πίθων ἁρμαμάξαις ἀναθέντες καὶ ἔλαιον. ἐκεῖνοι δ' ἀνδράποδα, καὶ βοσκήματα, καὶ δέρματα, ἔξω δ' ἐστὶ τῶν ἐνετικῶν ὅρων ἡ ἀκυληΐα. διορίζονται δὲ ποταμῷ ῥέοντι ἀπὸ τῶν ἀλπίων ὀρῶν, ἀνάπλουν ἔχοντι, καὶ σ̄ σταδίων ἐπὶ τοῖς χιλίοις, εἰς νωρήειαν πόλιν. περὶ ἣν γναῖος ὁ κάρβων συμβαλὼν κιμβρίοις, οὐδὲν ἔπραξεν. ἔχει δὲ ὁ τόπος οὗτος, χρυσιοπλύσια εὐφυῆ. καὶ σιδηρουργεῖα. ἐν αὐτῷ δὲ τῷ μυχῷ τοῦ ἀδρίου, καὶ ἱερὸν τοῦ διομήδους ἐστὶν ἄξιον μνήμης τὸ τίμαυον, λιμένα, γὰρ ἔχει καὶ ἄλσος ἐκπρεπὲς, καὶ πηγὰς ζ' ποταμίου ὕδατος εὐθὺς εἰς τὴν θάλατταν ἐκπίπτοντος, πλατεῖ καὶ βαθεῖ ποταμῷ. πολύβιος δ' εἴρηκε πλὴν μιᾶς, τὰς ἄλλας ἁλμυροῦ ὕδατος. καὶ δὴ καὶ τοὺς ἐπιχωρίους, πηγὴν καὶ μητέρα θαλάττης ὀνομάζειν τὸν τόπον. ποσειδώνιος δέ φησι ποταμὸν τὸν τίμαυον ἐκ τῶν ὀρῶν φερόμενον, καταπίπτειν εἰς βέρεθρον. εἶθ' ὑπὸ γῆς ἐνεχθέντα περὶ ἑκατὸν καὶ λ' σταδίους ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τὴν ἐκβολὴν ποιεῖσθαι. τῆς δὲ τοῦ διομήδους δυναστείας, περὶ τὴν θάλατταν ταύτην, αἵ τε διομήδειοι νῆσοι μαρτύρια. καὶ τὰ περὶ δαυνίους καὶ τὸ ἄργος τὸ ἵππιον ἱστορούμενα. περὶ ὧν ἐροῦμεν, ἐφ' ὅσον πρὸς ἱστορίαν χρήσιμον τὰ δὲ πολλὰ τῶν μυθευομένων ἢ κατεψευσμένων, ἄλλως ἐᾶν δεῖ. οἷον, τὰ περὶ τὸν φαέθοντα καὶ τὰς ἡλιάδας τὰς ἐπ' ἀγειρουμένας περὶ τὸν ἠριδανὸν, τὸν μηδαμοῦ γῆς ὄντα. πλησίον δὲ τοῦ πάδου λεγόμενον. καὶ τὰς ἠλεκτρίδας νήσους τὰς πρὸ τοῦ πάδου, καὶ μελεαγρίδας ἐν αὐταῖς. οὐ δὲ γὰρ τούτων οὐδέν ἐστιν ἐν τοῖς τόποις. τῷ δὲ διομήδει παρὰ τοῖς ἐνετοῖς, ἀποδεδειγμέναι τινὲς ἱστοροῦνται τιμαὶ, καὶ γὰρ θύεται λευκὸς ἵππος αὐτῷ, καὶ δύο ἄλση, τὸ μὲν ἥρας ἀργείας δείκνυται. τὸ δ' ἀρτέμιδος αἰτωλίδος. προσμυθεύουσι δ' ὡς εἰκὸς τὸ ἐν τοῖς ἄλσεσι τούτοις ἡμεροῦσθαι τὰ θηρία. καὶ λύκοις ἐλάφους συναγελάζεσθαι. προσιόντων δὲ τῶν ἀνθρώπων καὶ καταψαυόντων, ἀνέχεσθαι. τὰ δὲ διωκόμενα ὑπὸ τῶν κυνῶν, ἐπειδὰν καταφύγοι δεῦρο, μηκέτι διώκεσθαι. φασὶ δέ τινα τῶν πάνυ γνωριζομένων ὡς εἴη φιλέγγυος. καὶ σκωπτόμενον ἐπὶ τούτῳ παρατυχεῖν κυνηγέταις, λύκον ἐν τοῖς δικτύοις ἔχουσιν. εἰπόντων δὲ κατὰ παιδιὰν εἰ ἐγγυᾶται τὸν λύκον, ἐφ' ᾧτε τὰς ζημίας ἃς εἴργασται, διαλύειν. ἀφήσειν, αὐτὸν ἐκ τῶν λίνων ὁμολογῆσαι. ἀφεθέντα δὲ τὸν λύκον, ἵππων ἀγέλην ἀπελάσαντα ἀκαυστηριάστων ἱκανὴν προσαγαγεῖν πρὸς τὸν τοῦ φιλεγγύου σταθμόν. τὸν δ' ἀπολαβόντα τὴν χάριν καυστηριάσαι τε τὰς ἵππους λύκον, καὶ κληθῆναι λυκοφόρους. τάχει μᾶλλον ἢ κάλλει διαφερούσας. τοὺς δ' ἀπ' ἐκείνου διαδεξαμένους τό τε καυστήριον φυλάξαι, καὶ τοὔνομα τῷ γένει τῶν ἵππων. ἔθος δὲ ποιῆσαι θήλειαν, μὴ ἐξαλλοτριοῦν ἵνα μένοι παρὰ μόνοις τὸ γνήσιον γένος ἐνδόξου γενομένης ἐνθένδε ἱππείας. νυνὶ δὲ ὥσπερ ἔφαμεν πᾶσα ἐκλέλοιπεν ἡ τοιαύτη ἄσκησις. μετὰ δὲ τὸ τίμαυον, ἡ τῶν ἰστρίων ἐστὶ παραλίας μέχρι πόλας ἣ πρόσκειται τῇ ἰταλίᾳ μεταξὺ δὲ φρούριον τεργέστε ἀκυληΐας διέχον ρ̄. καὶ π̄. σταδίους. ἡ δὲ πόλα ἵδρυται μὲν ἐν κόλπῳ λιμενοειδεῖ, νησίδια ἔχοντι

τι, εὔορμα καὶ εὔκαρπα. κτίσμα δ' ἐστὶν ἀρχαῖον κόλχων τῶν ἐπὶ τὴν μήδειαν ἐκπεμφθέντων, διαμαρτόντων δὲ τῆς πράξεως, καὶ καταδικασάντων ἑαυτῶν φυγήν, ὅσπερ ὁ καλλίμαχος εἴρηκεν.

» Τῷ μὲν φυγάδων κ' ἐνέπουσι γραικοὶ,
Ἀτὰρ κείνων γλώσσαις ἐνόμηνε πόλας.

Τὰ μὲν δὴ πέραν τοῦ πάδου χωρία, οἵ τε ἐντὸς νέμονται καὶ οἱ μέχρι πόλας. ὑπὲρ δὲ τῶν ἐνετῶν καρνοὶ καὶ κενομανοὶ καὶ μεδόακοι καὶ σύμβροι. ὧν οἱ μὲν, πολέμιοι τοῖς ῥωμαίοις ὑπῆρξαν. κενομανοὶ δὲ καὶ ἐνετοὶ συνεμάχουν, καὶ πρὸ τῆς ἀννίβα στρατιᾶς ἡνίκα βοΐους καὶ συμβρίους ἐπολέμουν, καὶ μετὰ ταῦτα. οἱ δ' ἐντὸς τοῦ πάδου, κατέχουσι μὲν ἅπασαν, ὅσην ἐγκυκλοῦται τὰ ἀπέννινα ὄρη πρὸς τὰ ἄλπεια μέχρι γενούας καὶ τῶν σαββάτων. κατεῖχον δὲ βοΐοι καὶ λίγυες, καὶ σένωνες, καὶ γαιζάται τὸ πλέον. τῶν δὲ βοΐων ἐξελαθέντων, ἀφανισθέντων δὲ, καὶ τῶν γαιζατῶν καὶ σενώνων, λείπεται τὰ λιγυστικὰ φῦλα, καὶ τῶν ῥωμαίων αἱ ἀποικίαι, τοῖς δὲ ῥωμαίοις ἀναμέμικται καὶ τὸ τῶν ὀμβρικῶν φῦλον. ἔστι δ' ὅπου, καὶ τυρρηνῶν. ταῦτα γὰρ ἄμφω τὰ ἔθνη, πρὸ τῆς τῶν ῥωμαίων ἐπὶ πλέον αὐξήσεως, εἶχέ τινα πρὸς ἄλληλα περὶ πρωτείων ἅμιλλαν, καὶ μέσον ἔχοντα, τὸν τίβεριν ποταμὸν, ῥᾳδίως ἐπιδιέβαινον ἀλλήλοις. καὶ εἴπου τινὰς ἐκ στρατείας ἐξιοῦσι ἐπ' ἀλλήλους οἱ ἕτεροι καὶ τοῖς ἑτέροις ἔρις ἦν μὴ ἀπολείπεσθαι τῆς εἰς τοὺς αὐτοὺς τόπους ἐξόδου, καὶ δὴ καὶ τῶν τυρρηνῶν στειλάντων στρατειὰν, εἰς τοὺς περὶ τὸν πάδον βαρβάρους, καὶ πραξάντων εὖ, ταχὺ δὲ πάλιν ἐκπεσόντων διὰ τὴν τρυφὴν, ἐπεστράτευσαν οἱ ἕτεροι τοῖς ἐκβαλοῦσι. εἶτ' ἐκ διαδοχῆς τῶν τόπων ἀμφισβητοῦντες, πολλὰς τῶν κατοικιῶν, τὰς μὲν, τυρρηνικὰς ἐποίησαν. τὰς δ' ὀμβρικάς. πλείους δὲ τῶν ὀμβρικῶν. ἐγγυτέρω γὰρ ἦσαν. οἱ δὲ ῥωμαῖοι παραλαβόντες καὶ πέμψαντες ἐποίκους πολλαχοῦ, συνεφύλαξαν καὶ τὰ τῶν προεποικησάντων γένη. καὶ νῦν ῥωμαῖοι μέν εἰσιν ἅπαντες. οὐδὲν δ' ἧττον ὀμβρικοί τέ τινες λέγονται καὶ τυρρηνικοὶ καθάπερ ἐνετοὶ, καὶ λίγυες καὶ ἴνσουβροι. πόλεις δ' εἰσὶν ἐντὸς τοῦ πάδου καὶ περὶ τὸν πάδον, ἐπιφανεῖς. πλακεντία μὲν καὶ κρεμώνη πλησιαίτατα, κατὰ μέσην που τὴν χώραν. μεταξὺ δὲ τούτων τε καὶ ἀριμίνου πάρμα. καὶ μουτίνη καὶ βωνωνία, πλησίον ἤδη ῥαουέννης. καὶ μικρὰ πολίσματα. ἀνὰ μέσον τούτων δι' ὧν ἡ εἰς ῥώμην ὁδὸς ἄκαρα. ῥήγιον λέπιδον νάκροι καμποι ὅπου πανήγυρις συντελεῖται κατ' ἔτος. κλίτερνα. φόρον κορνήλιον. φαουεντία δὲ, καὶ σίνα πρὸς τῷ ἰσάπει ποταμῷ καὶ τῷ ῥουβίκωνι ἤδη συνάπτουσι τῷ ἀριμίνῳ. τὸ δὲ ἀρίμινον ὀμβρικῶν ἐστὶ κατοικία. καθάπερ, καὶ ἡ ῥαουέννα. δέδεκται δ' ἐποίκους ῥωμαίους ἑκατέρα. ἔχει δὲ τὸ ἀρίμινον λιμένα, καὶ ὁμώνυμον ποταμόν. ἀπὸ δὲ πλακεντίας εἰς ἀρίμινον στάδια τ'. ὑπὲρ δὲ πλακεντίας, ἐπὶ μὲν τοὺς ὅρους τῆς κοττίου, τίκινον ἐν λ ς'. μιλίοις πόλις, καὶ ὁμώνυμος ὁ παραῤῥέων ποταμὸς, συμβάλλων τῷ πάδῳ. καὶ κλαστίδιον. καὶ δέρθων. καὶ ἄκουα στατιέλλα μικρὸν ἐκ παρόδῳ, ἡ δ' εὐθεῖα εἰς ὤκελον, παρὰ τὸν πάδον τὸν δουρίαν ποταμὸν βαραθρώδης ἡ πολλὴ πλείους καὶ ἄλλους ἔχουσα ποταμοὺς, ὧν καὶ τὸν δρουεντίαν, μιλίων ἐστὶ, περὶ ἑξήκοντα. ἐντεῦθεν δὲ ἤδη τὰ ἄλπεια ὄρη καὶ ἡ κελτική, πρὸς δὲ τοῖς ὄρεσιν ἐστὶ πόλις τοῖς ὑπερκειμένοις τῆς λούνης λουνησία. ἥν δὲ κωμηδὸν οἰκοῦσι. εὐανδρεῖ δ' ὅμως ἡ χώρα. καὶ στρατιωτικὸν ἐντεῦθεν τὸ πλέον ἐστί. καὶ τὸ τῶν ἱππικῶν πλῆθος. ἐξ ὧν καὶ ἡ σύγκλητος λαμβάνει τὴν σύνταξιν. ἔστι δὲ ἡ δέρθων πόλις ἀξιόλογος κειμένη κατὰ μέσην τὴν ὁδὸν, τὴν ἀπὸ γενούας εἰς πλακεντίαν. ἑκατέρας διέχουσα σταδίους υ'. κατὰ δὲ ταύτην τὴν ὁδὸν, καὶ ἀκουίστα καὶ ἰέλλεια. ἀπὸ δὲ πλακεντίας, εἰς μὲν ἀρίμινον, εἴρηται. εἰς δὲ ῥαουένναν, κατάπλους τῷ πάδῳ δυεῖν ἡμερῶν καὶ νυκτῶν. πολὺ δὲ, καὶ τοῖς ἐντὸς τοῦ πάδου κατεῖχε τῶν ἑλῶν. διὸ ἀννίβας χαλεπῶς διῆλθε προϊὼν ἐπὶ τυρρηνίαν ἀλλ' ἀνέψυξε τὰ πεδία ὁ σκαῦρος διωρυχαῖς πλωταῖς, ἀπὸ τοῦ πάδου μέχρι παρμησῶν. κατὰ γὰρ πλακεντίαν, ὁ τρεβίας συμβάλλων τῷ πάδῳ, καὶ ἔτι πρότερον ἄλλοι πλείους πληροῦσι πέραν τοῦ μετρίου. οὗτος δὲ ὁ σκαῦρος ἐστὶν ὁ καὶ τὴν αἰμιλίαν ὁδὸν στρώσας. τὴν διὰ πισῶν καὶ λούνης μέχρι σαββάτων. κἀντεῦθεν διὰ δέρθωνος. ἄλλη δ' ἐστὶν αἰμιλία διαδεχομένη τὴν φλαμινίαν. συνυπατευσάντων γὰρ ἀλλήλοις μάρκος λέπιδος, καὶ γάιος φλαμίνιος, καθελόντες δὲ λίγυας, ὁ μὲν τὴν φλαμινίαν ἔστρωσεν ἐκ ῥώμης διὰ τυρρηνῶν, καὶ τῆς ὀμβρικῆς, μέχρι τῶν περὶ ἀρίμινον τόπων. ὁ δὲ, τὴν ἑξῆς μέχρι βωνωνίας, κἀκεῖθεν εἰς ἀκυληΐαν παρὰ τὰς ῥίζας τὰς τῶν ἄλπεων, ἐγκυκλούμενος τὰ ἕλη. ὅριον δὲ τῆς χώρας ταύτης, ἣν ἐντὸς κελτικὴν καλοῦμεν, πρὸς τὴν λοιπὴν ἰταλίαν. τό τε ἀπέννινον ὄρος τὸ ὑπὲρ τῆς τυρρηνίας ἀπεδέδεικτο, καὶ ὁ αἶσις ποταμός. ὕστερον δὲ ὁ ῥουβίκων εἰς τὸν ἀδρίαν ἐκδιδόντες ἀμφότεροι. τῆς δ' ἀρετῆς τῶν τόπων τεκμήριον, ἥ τ' εὐανδρία καὶ τὰ μεγέθη τῶν πόλεων, καὶ ὁ πλοῦτος. οἷς πᾶσιν ὑπερβέβληνται τὴν ἄλλην ἰταλίαν οἱ ταύτῃ ῥωμαῖοι, καὶ γὰρ ἡ γεωργουμένη γῆ, πολλοὺς, καὶ παντίους ἐκφέρει καρπούς. καὶ αἱ ὗλαι τοσαύτην ἔχουσι βάλανον. ὥστ' ἐκ τῶν ἐντεῦθεν ὑοφορβίων, ἡ ῥώμη τρέφεται τὸ πλέον. ἔστι δὲ καὶ κεγχροφόρος διαφερόντως, διὰ τὴν εὐυδρίαν. τοῦτο δὲ μέγιστον λιμοῦ ἐστὶν ἄκος. πρὸς ἅπαντας γὰρ καιροὺς ἀέρων ἀντέχει. καὶ οὐδέ ποτε ἐπιλείπειν δύναται. καὶ τοῦ ἄλλου σίτου γένηται σπάνις. ἔχει δὲ, καὶ πιττουργία θαυμαστά. τοῦ δ' οἴνου τὸ πλῆθος μηνύουσιν οἱ πίθοι, ξύλινοι γὰρ μείζους οἴκων εἰσί. προσλαμβάνει δὲ πολὺ ἡ

τῆς πίττης εὐπορία πρὸς τὸ εὐώνητον. ἐρέαν δὲ τὴν μὲν μαλακὴν, οἱ περὶ μουτίνην τόποι καὶ τὸν σκουλτάνναν ποταμὸν φέρουσι πασῶν πολὺ καλλίστην, τὴν δὲ τραχεῖαν ἡ λιγυστικὴ καὶ ἡ τῶν σύμβρων, ἐξ ἧς τὸ πλέον τῆς οἰκετείας, τῶν ἰταλιωτῶν ἀμπέχεται. τὴν δὲ μέσην οἱ περὶ παταούιον ἐξ ἧς οἱ τάπητες οἱ πολυτελεῖς, καὶ γαύσαποι, καὶ τὸ τοιοῦτον εἶδος πᾶν, ἀμφίμαλλόν τε καὶ ἑτερόμαλλον. τὰ δὲ μέταλλα νυνὶ μὲν οὐχ ὁμοίως τὰ ἐνταῦθα σπουδάζεται, διὰ τὸ λυσιτελέστερα ἴσως εἶναι, τὰ ἐν τοῖς ὑπεραλπείοις κελτοῖς καὶ τῇ ἰβηρίᾳ. πρότερον δὲ ἐσπουδάζετο ἐπεὶ καὶ ἐν οὐερκέλλοις χρυσωρύχιον ἦν, κώμη δ᾽ ἐστὶ πλησίον ἰκτουμούλων καὶ ταύτης τῆς κώμης. ἄμφω δ᾽ εἰσὶ περὶ πλακεντίαν. αὕτη μὲν δὴ πρώτη μερὶς τῆς ἰταλίας, μέχρι δεῦρο περιωδευέσθω. δευτέρα δὲ λεγέσθω ἡ λιγυστικὴ ἡ ἐν αὐτοῖς τοῖς ἀπεννίνοις ὄρεσι, μεταξὺ ἱδρυμένη τῆς νῦν λεχθείσης κελτικῆς καὶ τῆς τυρρηνίας. οὐδὲν δ᾽ ἔχουσα περιηγήσεως ἄξιον πλὴν ὅτι κωμηδὸν ζῶσι, τραχεῖαν γῆν ἀροῦντες. καὶ σκάπτοντες μᾶλλον δὲ λατομοῦντες, ὥς φησι ποσειδώνιος. τρίτοι δ᾽ εἰσὶ συνεχεῖς τούτοις οἱ τυρρηνοί, τὰ πεδία ἔχοντες τὰ μέχρι τοῦ ποταμοῦ τοῦ τιβέριδος. κλυζόμενοι τὰ μὲν πρὸς ἕω μάλιστα μέρη τῷ ποταμῷ μέχρι τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ κατὰ δὲ θάτερα, τῷ τυρρηνικῷ καὶ σαρδῴῳ πελάγει. ῥεῖ δὲ ἐκ τῶν ἀπεννίνων ὀρῶν, ὁ τίβερις. πληροῦται δ᾽ ἐκ πολλῶν ποταμῶν. μέρος μέν τι δι᾽ αὐτῆς φερόμενος τῆς τυρρηνίας. τὸ δ᾽ ἐφεξῆς διορίζων ἀπ᾽ αὐτῆς. πρῶτον μὲν τὴν ὀμβρικήν. εἶτα τοὺς σαβίνους, καὶ λατίνους τοὺς πρὸς τῇ ῥώμῃ μέχρι παραλίας. παραβέβληνται δέ πως τῷ ποταμῷ μὲν καὶ τοῖς τυρρηνοῖς κατὰ πλάτος. ἀλλήλοις δὲ κατὰ μῆκος. ἀνέχουσι δὲ πρὸς τὰ ἀπέννινα ὄρη τὰ πλησιάζοντα τῷ ἀδρίᾳ πρῶτοι μὲν ὀμβρικοί. μετὰ δὲ τούτους σαβῖνοι τελευταῖοι δ᾽ οἱ τὴν λατίνην ἔχοντες ἀρξάμενοι πάντες, ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ. ἡ μὲν οὖν τῶν λατίνων χώρα, μεταξὺ κεῖται τῆς τε ἀπὸ τῶν ὠστίων παραλίας, μέχρι πόλεως σινυέσης καὶ τῆς σαβίνης, τὰ δ᾽ ὤστια ἐστὶν ἐπίνειον τῆς ῥώμης εἰς ὃ ἐκδίδωσιν ὁ τίβερις παρ᾽ αὐτὴν ῥυείς. ἐκτείνεται δὲ ἐπὶ μῆκος, μέχρι τῆς καμπανίας καὶ τῶν σαμνιτικῶν ὀρῶν. ἡ δὲ σαβίνη μεταξὺ τῶν λατίνων κεῖται, καὶ τῶν ὀμβρικῶν. ἐκτείνεται δὲ, καὶ αὐτὴ πρὸς τὰ σαμνιτικὰ ὄρη. καὶ μᾶλλον συνάπτει τοῖς ἀπεννίνοις τοῖς κατὰ οὐεστίνους τε, καὶ πελιγρίους, καὶ μαρσούς. οἱ δ᾽ ὀμβρικοί, μέσοι μὲν κεῖνται τῆς σαβίνης καὶ τῆς τυρρηνίας, μέχρι ἀριμίνου καὶ ῥαουέννης, προΐασιν ὑπερβάλλοντες τὰ ὄρη. τυρρηνοὶ δὲ παύονται ὑπ᾽ αὐτοῖς τοῖς ὄρεσι, τοῖς περικυκλοῦσιν ἐκ τῆς λιγουστικῆς εἰς τὸν ἀδρίαν. ἀπὸ τῆς οἰκείας ἀρξάμενοι θαλάττης, καὶ τοῦ τιβέριδος. τὰ καθ᾽ ἕκαστα δὲ διέξιμεν. ἀπ᾽ αὐτῶν τούτων ἀρξάμενοι. οἱ τυρρηνοὶ τοίνυν παρὰ τοῖς ῥωμαίοις ἐτρούσκοι καὶ τοῦσκοι, προσαγορεύονται. οἱ δ᾽ ἕλληνες οὕτως ὀνόμασαν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ τυρρηνοῦ τοῦ ἄτυος ὥς φασι, τοῦ στείλαντος ἐκ λυδίας ἀποίκους δεῦρο. ἐπὶ γὰρ λιμοῦ καὶ ἀφορίας ὁ ἄτυς εἷς τῶν ἀπογόνων ἡρακλέους, καὶ ὀμφάλης, δυεῖν παίδων ὄντων, κλήρῳ λυδὸν μὲν κατέσχε. τῷ δὲ τυρρηνῷ τὸν πλείω συστείλας λαὸν ἐξέστειλεν. ἐλθὼν δὲ τὴν χώραν ἀφ᾽ ἑαυτοῦ τυρρηνίαν ἐκάλεσε. καὶ δώδεκα πόλεις ἔκτισεν. οἰκιστὴν ἐπιστήσας, ταρκῶνα. ἀφ᾽ οὗ ταρκυνία ἡ πόλις. ὃν διὰ τὴν ἐκ παίδων σύνεσιν, πολιὸν γεγεννῆσθαι μυθεύουσι. τότε μὲν οὖν ὑφ᾽ ἑνὶ ἡγεμόνι ταττόμενοι μέγα ἴσχυον. χρόνοις δ᾽ ὕστερον διαλυθῆναι τὸ σύστημα, εἰκὸς καὶ κατὰ πόλεις διασπασθῆναι βίᾳ τῶν πλησιοχώρων εἴξαντας. οὐ γὰρ ἂν χώραν εὐδαίμονα ἀφέντες τῇ θαλάττῃ κατὰ λῃστείαν ἐπέθεντο, ἄλλοι πρὸς ἄλλα τρεπόμενοι πελάγη. ἐπεὶ ὅπου γε συμπνεύσαιεν ἱκανοὶ ἦσαν οὐκ ἀμύνασθαι μόνον τοὺς ἐπιχειροῦντας αὐτοῖς ἀλλὰ, καὶ ἀντεπιχειρεῖν. καὶ μακρὰς στρατείας ποιεῖσθαι. μετὰ δὲ τὴν τῆς ῥώμης κτίσιν δημάρατος ἀφικνεῖται λαὸν ἄγων ἐκ κορίνθου, καὶ δεξαμένων αὐτὸν ταρκυνιτῶν, γεννᾷ λουκούμωνα ἐξ ἐπιχωρίας γυναικός, γενόμενος δὲ ἄγκῳ μαρκίῳ, τῷ βασιλεῖ τῶν ῥωμαίων φίλος, ἐβασίλευσεν οὗτος, καὶ μετωνομάσθη λεύκιος, ταρκύνιος πρίσκος. ἐκόσμησε δ᾽ οὖν τὴν τυρρηνίαν καὶ αὐτὸς καὶ ὁ πατὴρ πρότερον. ὁ μὲν, εὐπορίᾳ δημιουργῶν τῶν συνακολουθησάντων οἴκοθεν. ὁ δὲ ταῖς ἐκ τῆς ῥώμης ἀφορμαῖς. λέγεται δὲ καὶ ὁ θριαμβικὸς κόσμος καὶ ὑπατικὸς, καὶ ἁπλῶς ὁ τῶν ἀρχόντων, ἐκ ταρκυνίων δεῦρο μετενεχθῆναι. καὶ ῥάβδοι. καὶ πελέκεις, καὶ σάλπιγγες. καὶ ἱεροποιΐαι, καὶ μαντικὴ καὶ μουσικὴ ὅση δημοσίᾳ χρῶνται ῥωμαῖοι. τούτου δ᾽ υἱὸς ἦν ὁ δεύτερος ταρκύνιος ὁ σούπερβος. ὅσπερ, καὶ τελευταῖος βασιλεύσας ἐξέπεσε. πορσίνας δ᾽ ὁ τῶν κλουσίων βασιλεὺς πόλεως τυρρηνίδος κατάγειν αὐτὸν ἐπιχειρήσας δι᾽ ὅπλων οὐχ οἷός τε ἦν, καταλυσάμενος τὴν ἔχθραν, ἀπῆλθε φίλος, μετὰ τιμῆς καὶ δωρεῶν μεγάλων. περὶ μὲν τῆς ἐπιφανείας τῶν τυρρηνῶν ταῦτα. καὶ ἔτι τὰ τοῖς καιρετανοῖς πραχθέντα. καὶ γὰρ τοὺς ἑλόντας τὴν ῥώμην γαλάτας, κατεπολέμησαν. ἀπιοῦσιν ἐπιθέμενοι κατὰ σαβίνους. καὶ ἃ παρ᾽ ἑκόντων ἔλαβον ῥωμαίων ἐκεῖνοι λάφυρα ἄκοντας ἀφείλοντο. πρὸς δὲ τούτοις τοὺς καταφυγόντας παρ᾽ αὐτοὺς τὸ ἐκ τῆς ῥώμης ἔσωσαν καὶ τὸ ἀθάνατον πῦρ. καὶ τὰς τῆς ἑστίας ἱερείας. οἱ μὲν οὖν ῥωμαῖοι διὰ τοὺς τότε φαύλως διοικοῦντας τὴν πόλιν. οὐχ ἱκανῶς ἀπομνημονεῦσαι τὴν χάριν αὐτοῖς δοκοῦσι. πολιτείαν γὰρ δόντες. οὐκ ἀνέγραψαν εἰς τοὺς πολίτας. ἀλλὰ, καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς μὴ μετέχοντας τῆς ἰσονομίας, εἰς τὰς δέλτους ἐξώριζον τὰς καιρετανῶν. παρὰ δὲ τοῖς ἕλλησιν εὐδοκίμησεν ἡ πόλις αὕτη διά τε ἀνδρείαν καὶ δικαιοσύνην. τῶν τε γὰρ λῃστη-

ρίων ἀπέχει, καὶ τὴν δύναμιν πλεῖστον, καὶ πυθοῖ τὸν ἀγυλλαίων καλούμενον, ἀνέθηκε θησαυρόν. ἄγυλλα γὰρ ἐλέγετο τὸ πρότερον, ἡ νῦν καιρέα. καὶ λέγεται πελασγῶν κτίσμα τῶν ἐκ θετταλίας ἀφιγμένων. τῶν δὲ λυδῶν οἵπερ τυρρηνοὶ μετωνομάσθησαν, ἐπιστρατευσάντων τοῖς ἀγυλλέοις, προσιὼν τῷ τείχει τις, ἐπυνθάνετο τοὔνομα τῆς πόλεως· τῶν δ' ἀπὸ τοῦ τείχους θετταλῶν τινὸς ἀντὶ τοῦ ἀποκρίνασθαι, προσαγορεύσαντος αὐτὸν χαῖρε, δεξάμενοι τὸν οἰωνὸν οἱ τυρρηνοὶ τοῦτον, ἁλοῦσαν τὴν πόλιν μετωνόμασαν. ἡ δὲ οὕτω λαμπρὰ καὶ ἐπιφανὴς πόλις, νῦν ἴχνη σώζει μόνον. εὐανδρεῖ δ' αὐτῆς μᾶλλον τὰ πλησίον θερμά· ἃ καλοῦσι καιρετανά, διὰ τοὺς φοιτῶντας θεραπείας χάριν. τοὺς δὲ πελασγοὺς ὅτι μὲν ἀρχαῖόν τι φῦλον κατὰ τὴν ἑλλάδα πᾶσαν ἐπεπόλασε, καὶ μάλιστα παρὰ τοῖς αἰολεῦσι τοῖς κατὰ θετταλίαν, ὁμολογοῦσιν ἅπαντες σχεδόν τι, νομίζειν δὲ φησὶν ἔφορος. τὸ ἀνέκαθεν ἀρκάδας ὄντας ἑλέσθαι στρατιωτικὸν βίον· εἰς δὲ τὴν αὐτὴν ἀγωγὴν προτρέποντας πολλούς, ἅπασι τοῦ ὀνόματος μεταδοῦναι· καὶ πολλὴν ἐπιφάνειαν κτήσασθαι, καὶ παρὰ τοῖς ἕλλησι καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις παρ' ὅσους ποτὲ ἀφιγμένοι τετυχήκασι. καὶ γὰρ τῆς κρήτης ἔποικοι γεγόνασιν, ὥς φησιν ὅμηρος λέγει οὖν ὀδυσσεὺς, πρὸς πηνελόπην.

» ἄλλη δ' ἄλλων γλῶσσα μεμιγμένη· ἐν μὲν ἀχαιοί.
» ἐν δέ τε καὶ κρῆτες μεγαλήτορες, ἐν δὲ κύδωνες,
» δωριέες τε τριχάϊκες· δῖοί τε πελασγοί.

καὶ τὸ πελασγικὸν ἄργος, ἡ θετταλία λέγεται, τὸ μεταξὺ τῶν ἐκβολῶν τοῦ πηνειοῦ, καὶ τῶν θερμοπυλῶν, ἕως τῆς ὀρεινῆς τῆς κατὰ πίνδον· διὰ τὸ ἐπάρξαι τῶν τόπων τούτων πελασγούς. τόν τε δία τὸν δωδωναῖον αὐτὸς ὁ ποιητὴς ὀνομάζει πελασγικόν.

» ζεῦ ἄνα δωδωναῖε πελασγικέ.

πολλοὶ δὲ, καὶ τὰ ἠπειρωτικὰ ἔθνη, πελασγικὰ εἰρήκασιν· ὡς καὶ μέχρι δεῦρο ἐπαρξάντων, πελασγούς τε πολλοὺς καὶ τῶν ἡρώων ὀνόματα καλέσαντες. οἱ ὕστερον ἀπ' ἐκείνων πολλὰ τῶν ἐθνῶν ἐπώνυμα πεποιήκασι. καὶ γὰρ τὴν λέσβον πελασγίαν εἰρήκασι καὶ τοῖς ἐν τῇ τρωάδι κίλιξιν. ὅμηρος εἴρηκε τοὺς ὁμόρους πελασγούς.

» ἱππόθοος δ' ἄγε φῦλα πελασγῶν ἐγχεσιμόρων.
» τῶν οἳ λάρισαν ἐριβώλακα ναιετάασκον.

τῷ γ' ἐφόρῳ τὸ ἐξ ἀρκαδίας, εἶναι τὸ φῦλον τοῦτο ἦρξεν ἡσίοδος. φησὶ γάρ

» υἱεῖς ἐξεγένοντο λυκάονος ἀντιθέοιο
» ὅν ποτε τίκτε πελασγός.

αἰσχύλος δ' ἐκ τοῦ περὶ μυκήνας ἄργους φησὶν ἐν ἱκέτισιν ἢ δαναΐσι τὸ γένος αὐτῶν, καὶ τὴν πελοπόννησον δὲ, πελασγίαν φησὶν ἔφορος κληθῆναι, καὶ εὐριπίδης δ' ἐν ἀρχελάῳ φησὶν ὅτι δαναὸς ὁ ν θυγατέρων πατὴρ ἐλθὼν, εἰς ἄργος, ᾤκησεν ἰνάχου πόλιν· πελασγιώτας δ' ὠνομασμένους τὸ πρὶν, δαναοὺς καλεῖσθαι νόμον ἔθηκεν. ἀντικλείδης δὲ πρώτους φησὶν αὐτοὺς τὰ περὶ λῆμνον καὶ ἴμβρον κτίσαι, καὶ δὴ τούτων τινὰς, καὶ μετὰ τυρρηνοῦ τοῦ ἄτυος εἰς ἰταλίαν συνᾶραι, καὶ οἱ τὴν ἀτθίδα συγγράψαντες, ἱστοροῦσι περὶ τῶν πελασγῶν· ὡς καὶ ἀθήνησι γενομένων τῶν πελασγῶν· διὰ δὲ τὸ πλανήτας εἶναι καὶ δίκην ὀρνέων ἐπιφοιτᾶν ἐφ' οὓς ἔτυχε τόπους, πελαργοὺς ὑπὸ τῶν ἀττικῶν κληθῆναι. τῆς δὲ τυρρηνίας, μῆκος μὲν τὸ μέγιστον εἶναι φασὶ τὴν παραλίαν ἀπὸ λούνης μέχρι, ὠστείων διχιλίων που καὶ πεντακοσίων σταδίων. πλάτος δὲ τοῦ ἡμίσους ἔλαττον τὸ πρὸς τοῖς ὄρεσιν. εἰς μὲν οὖν πίσας ἀπὸ λούνης, πλείους τῶν υ σταδίων εἰσίν, ἐντεῦθεν δ' εἰς οὐαλατέρρας σ π' πάλιν δὲ ἐνθένδε εἰς ποπλώνιον, σ ο. ἐκ δὲ ποπλωνίου εἰς κόσαν ἐγγὺς, ω. οἱ δὲ, χ φασί. πολύβιος δ' οὐκ εἶναι τοὺς πάντας α υ λ λέγει. τούτων δὴ μὲν λοῦνα, πόλις ἐστὶ, καὶ λιμὴν, καλοῦσι δ' οἱ ἕλληνες σελήνης λιμένα, καὶ πόλιν. ἡ μὲν οὖν πόλις οὐ μεγάλη. ὁ δὲ λιμὴν, μέγιστός τε καὶ κάλλιστος. ἐν αὑτῷ περιέχων πλείους λιμένας. ἐγγὺς βαθεῖς πάντας, οἷον ἂν γένοιτο τὸ ὁρμητήριον θαλαττοκρατησάντων ἀνθρώπων, τοσαύτης μὲν θαλάττης. τοσοῦτον δὲ χρόνον, περικλείεται δ' ὁ λιμὴν ὄρεσιν ὑψηλοῖς ἀφ' ὧν τὰ πελάγη κατοπτεύεται καὶ ἡ σαρδὼν, καὶ τῆς ἠιόνος ἑκατέρωθεν πολὺ μέρος. μέταλλα δὲ, λίθου λευκοῦ τε καὶ ποικίλου γλαυκίζοντος. τοσαῦτ' ἐστὶ καὶ τηλικαῦτα μονολίθους ἐκδιδόντα πλάκας καὶ στήλας, ὥστε τὰ πλεῖστα τῶν ἐκπρεπῶν ἔργων τῶν ἐν τῇ ῥώμῃ καὶ ταῖς ἄλλαις πόλεσιν, ἐντεῦθεν ἔχειν τὴν χορηγίαν· καὶ γὰρ εὐεξάγωγός ἐστιν ἡ λίθος τῶν μετάλλων. ὑπερκειμένων τῆς θαλάττης πλησίον. ἐκ δὲ τῆς θαλάττης διαδεχομένου τοῦ τιβέριος τὴν κομιδὴν, καὶ τὴν ξυλείαν τὴν εἰς τὰς οἰκοδομὰς, σελμάτων εὐθυτάτων, καὶ εὐμηκεστάτων, ἡ τυρρηνία χορηγεῖ τὴν πλείστην τῷ ποταμῷ, κατάγουσα ἐκ τῶν ὀρῶν εὐθύς. μεταξὺ δὲ λούνης καὶ πίσης, ὁ μάκρης ἐστὶ χωρίον. ᾧ πέρατι τῆς τυρρηνίας καὶ τῆς λιγυστικῆς κέχρηνται τῶν συγγραφέων πολλοί, ἡ δὲ πίσα κτίσμα. ἐστὶ τῶν ἐν τῇ πελοποννήσῳ πεισατῶν. οἱ μετὰ νέστορος ἐπὶ ἴλιον στρατεύσαντες κατὰ τὸν ἀνάπλουν ἐπλανήθησαν, οἱ μὲν, εἰς τὸ μεταπόντιον οἱ δ' εἰς τὴν πεισάτιν. ἅπαντες πύλιοι καλούμενοι δυοῖν δὲ ποταμῶν κεῖται μεταξὺ κατ' αὐτὴν τὴν συμβολήν. ἄρνου τε, καὶ αἴσαρος. ὧν ὁ μὲν, ἐξ ἀρρητίου φέρεται πολὺς οὐχὶ πᾶς. ἀλλὰ τριχῆ, σχισθείς. ὁ δ' ἐκ τῶν

ἀπεννίνων ὀρῶν· συμπεσόντες δ᾽ εἰς ἓν ῥεῖθρον, μετεωρίζουσιν ἀλλήλους ταῖς ἀντικοπαῖς ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστε τοὺς ἐπὶ τῶν ἠϊόνων ἑστῶτας ἀμφοτέρων, μηδ᾽ ἕτερον ὑπὸ θατέρου καθορᾶσθαι. ὥστ᾽ ἀνάγκη δυσανάπλωτα ἐκ θαλάττης εἶναι. στάδιοι δ᾽ εἰσὶ τοῦ ἀνάπλου, περὶ κ. μυθεύουσι δ᾽ ὅτε πρῶτον ἐκ τῶν ὀρῶν κατεφέροντο οἱ ποταμοὶ οὗτοι, κωλυόμενοι ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων μὴ συμπεσόντες εἰς ἓν κατακλύζοιεν τὴν χώραν, ὑπόσχοιντο μὴ κατακλύσειν, καὶ φυλάξαι τὴν πίστιν. δοκεῖ δ᾽ ἡ πόλις εὐτυχῆσαί ποτε. καὶ νῦν οὐκ ἀδοξεῖ, διά τε εὐκαρπίαν καὶ τὰ λιθουργία, καὶ τὴν ὕλην τὴν ναυπηγήσιμον. ᾗ τὸ μὲν παλαιὸν ἐχρῶντο πρὸς τοὺς κατὰ θάλατταν κινδύνους. καὶ γὰρ μαχιμώτεροι τυρρηνῶν ὑπῆρξαν. καὶ παρώξυνον αὐτοὺς οἱ λίγυες, πονηροὶ γείτονες παρὰ πλευρὰν ὄντες. νῦν δὲ τὸ πλέον εἰς τὰς οἰκοδομὰς ἀναλίσκεται τὰς ἐν ῥώμῃ, κἀν ταῖς ἐπαύλεσι βασίλεια κατασκευαζομένων περσικά. τῆς δ᾽ οὐολατερρανῶν, ἡ μὲν χώρα κλύζεται τῇ θαλάττῃ. τὸ δὲ κτίσμα ἐν φάραγγι βαθείᾳ. λόφος ἐστὶν ὑψηλὸς περίκρημνος πάντῃ. τὴν κορυφὴν ἐπίπεδος, ἐφ᾽ ᾗ ἵδρυται τὸ τεῖχος τῆς πόλεως. ἡ δ᾽ ἐπ᾽ αὐτὴν ἀνάβασις, πεντεκαίδεκα σταδίων ἐστὶν ἀπὸ τῆς βάσεως, ὀξεῖα πᾶσα καὶ χαλεπή. ἐνταῦθα συνέστησάν τινες τῶν τυρρηνῶν καὶ τῶν προγεγραμμένων ὑπὸ σύλλα, πληρώσαντες δὲ τέτταρα τάγματα στρατείας, διετῆ χρόνον ἐπολιορκήθησαν. εἶθ᾽ ὑπόσπονδοι παρεχώρησαν τοῦ τόπου. τὸ δὲ ποπλώνιον, ἐπ᾽ ἄκρας ὑψηλῆς ἵδρυται. κατερρωγυίας εἰς τὴν θάλατταν. καὶ χερρονησιζούσης. πολιορκίαν καὶ αὐτὸ δεδεγμένον περὶ τοὺς αὐτοὺς καιρούς. τὸ μὲν οὖν πολίχνιον πᾶν ἔρημόν ἐστι. πλὴν τῶν ἱερῶν καὶ τῶν κατοικιῶν ὀλίγων· τὸ δ᾽ ἐπίνειον οἰκεῖται βέλτιον, πρὸς τῇ ῥίζῃ τοῦ ὄρους. λιμένιον ἔχον, καὶ νεωσοίκους. διὸ, καὶ δοκεῖ μοι, μόνη τῶν τυρρηνίδων τῶν παλαιῶν. αὕτη πόλεων, ἐπ᾽ αὐτῇ τῇ θαλάττῃ ἱδρῦσθαι. αἴτιον δ᾽ ἐστὶ τὸ τῆς χώρας ἀλίμενον. διόπερ παντάπασιν ἔφευγον οἱ κτίσται τὴν θάλατταν. ἢ προεβάλλοντο ἐρύματα πρὸς αὐτῇ, ὥστε μὴ λάφυρον ἕτοιμον ἐκκεῖσθαι τοῖς ἐπιπλεύσασιν. ἔστι δὲ καὶ θυννοσκοπεῖον ὑπὸ τῇ ἄκρᾳ, κατοπτεύεται δ᾽ ἀπὸ τῆς πόλεως πόρρωθεν μὲν καὶ μόλις ἡ σαρδών. ἐγγυτέρω δ᾽ ἡ κύρνος. ξ΄ πως διέχουσα τῆς σαρδόνος σταδίους. πολὺ δὲ μᾶλλον τούτων, ἡ αἰθαλία προσεχεστέρα τῇ ἠπείρῳ ἐστὶν, ὅσον, τ΄ διέχουσα σταδίους, ὅσους καὶ τῆς κύρνου διέχει. ἄριστον δ᾽ ἀφετήριον τοῦτο τὸ χωρίον ἐστὶν ἐπὶ τὰς τρεῖς τὰς λεχθείσας νήσους. εἴδομεν δὲ, καὶ ταύτας ἡμεῖς, ἀναβάντες ἐπὶ τὸ ποπλώνιον. καὶ μέταλλά τινα ἐν τῇ χώρᾳ ἐκλελειμμένα. εἴδομεν δὲ καὶ τοὺς ἐργαζομένους τὸν σίδηρον τὸν ἐκ τῆς αἰθαλίας. κομιζόμενον. οὐ γὰρ δύναται συμπαίνεσθαι καμινευόμενος ἐν τῇ νήσῳ. κομίζεται δ᾽ εὐθὺς ἐκ τῶν μετάλλων εἰς τὴν ἤπειρον. τοῦτο δὲ δὴ παράδοξον ἡ νῆσος ἔχει. καὶ ὅτι τὰ ὀρύγματα ἀναπληροῦσθαι πάλιν τῷ χρόνῳ τὰ μεταλλευθέντα, καθάπερ τοὺς πλαταμῶνας φασὶ τοὺς ἐν ῥόδῳ, καὶ τὴν ἐν πάρῳ πέτραν τὴν μάρμαρον. καὶ τοὺς ἐν ἰνδοῖς ἅλας, οὕς φησι κλείταρχος. οὔτ᾽ οὖν ἐρατοσθένης ὀρθῶς ὁ φήσας μὴ καθορᾶσθαι μήτε τὴν κύρνον ἐκ τῆς ἠπείρου, μήτε τὴν σαρδόνα, οὔτ᾽ ἀρτεμίδωρος ὁ φήσας ἐν χιλίοις εἶναι καὶ διακοσίοις σταδίοις πελαγίας ἀμφοτέρας. καὶ γὰρ εἴ τισιν, ἡμῖν γε οὐκ ἂν ὑπῆρξαν ὁραταὶ ἐπὶ τοσοῦτον, ἐφ᾽ ὅσον σαφεῖς ἑωρῶντο καὶ μάλιστα ἡ κύρνος. ἔστι δὲ κατὰ τὴν αἰθαλίαν λιμὴν ἀργῷος ἀπὸ τῆς ἀργοῦς ὥς φασιν. ἐκεῖσε γὰρ πλεῦσαι, τὴν τῆς κίρκης οἴκησιν ζητοῦντα τὸν ἰάσονα, τῆς μηδείας ἐθελούσης ἰδεῖν τὴν θεάν. καὶ δὴ καὶ ἀπὸ τῶν ἀποξυσμάτων παγέντων, ἃ ἐποίουν οἱ ἀργοναῦται, διαμένειν ἔτι, καὶ νῦν διαποικίλους τὰς ἐπὶ τῆς ἠϊόνος ψήφους. αἱ δὲ τοιαῦται μυθοποιΐαι, τεκμήρια τῶν λεγομένων ὑφ᾽ ἡμῶν εἰσιν. ὅτι οὐ πάντα ὅμηρος αὐτὸς ἔπλαττεν. ἀλλ᾽ ἀκούων θρυλουμένων τῶν τοιούτων πολλῶν. αὐτὸς προσετίθει μήκη διαστημάτων καὶ ἐκτοπισμῶν. καὶ καθάπερ τὸν ὀδυσσέα εἰς τὸν ὠκεανὸν ἐξέβαλε, παραπλησίως καὶ τὸν ἰάσονα. γενομένης καὶ τούτῳ πλάνης τινὸς κἀκείνῳ καθάπερ, καὶ μενελάῳ. περὶ μὲν οὖν τῆς αἰθαλίας, τοσαῦτα. ἡ δὲ κύρνος ὑπὸ τῶν ῥωμαίων καλεῖται κόρσικα. οἰκεῖται δὲ φαύλως τραχεῖά τε οὖσα καὶ τοῖς πλείστοις μέρεσι δύσβατος τελέως ὥστε τοὺς κατέχοντας τὰ ὄρη, καὶ ἀπὸ λῃστηρίων ζῶντας, ἀγριωτέρους εἶναι θηρίων. ὁπόταν γοῦν ὁρμήσωσιν οἱ τῶν ῥωμαίων στρατηγοὶ, καὶ προσπεσόντες τοῖς ἐρύμασι. πολὺ πλῆθος ἕλωσι τῶν ἀνδραπόδων, ὁρᾶν ἐστιν ἐν τῇ ῥώμῃ, καὶ θαυμάζειν ὅσον ἐμφαίνεται τὸ θηριῶδες καὶ τὸ βοσκηματῶδες ἐν αὐτοῖς. ἢ γὰρ οὐχ ὑπομένουσι ζῆν ἢ ζῶντες ἀπαθείᾳ, καὶ ἀναισθησίᾳ τοὺς ὠνησαμένους ἐπιτείβουσιν. ὥστε καίπερ τὸ τυχὸν καταβάλλουσιν ὑπὲρ αὐτῶν. ὅμως μεταμέλειν. ἔστι δ᾽ ὅμως οἰκήσιμά τινα μέρη, καὶ πολίσματά που βλησίνων τε, καὶ χάραξ καὶ ἐνικονίαι, καὶ οὐάπανες. μῆκος δὲ τῆς νήσου φησὶν ὁ χωρογράφος μίλια ρξ΄. πλάτος δὲ ο΄. σαρδόνος δὲ μῆκος σ΄ καὶ πλάτος δὲ ϟη΄. κατ᾽ ἄλλους δὲ κύρνου μὲν περίμετρος, τῶν χιλίων λέγεται καὶ διακοσίων σταδίων. τῆς δὲ σαρδόνος, καὶ τετρακισχιλίους. ἔστι δὲ αὐτῆς τὸ πολὺ μέρος τραχὺ, καὶ οὐκ εἰρηναῖον. πολὺ δὲ, καὶ χώραν ἔχον εὐδαίμονα τοῖς πᾶσι· σίτῳ δὲ, καὶ διαφερόντως. πόλεις δ᾽ εἰσὶ μὲν πλείους. ἀξιόλογοι δὲ κάραλις καὶ σουλχοί. τῇ δ᾽ ἀρετῇ τῶν τόπων ἀντιπαρατάττεταί τις καὶ μοχθηρία. νοσερὰ ἡ νῆσος τοῦ θέρους. καὶ μάλιστα ἐν τοῖς εὐκαρποῦσι χωρίοις. τὰ δ᾽ αὐτὰ ταῦτα, καὶ πορθεῖται συνεχῶς ὑπὸ τῶν ὀρείων. οἳ καλοῦνται διαγησβεῖς. ἰολαεῖς πρότερον ὀνομαζόμενοι. λέγεται γὰρ ἰόλαος ἄγων τινὰς τῶν παίδων τοῦ ἡρακλέους ἐλθεῖν

λαῦρο. καὶ συνοικοῦσι τοῖς τὴν νῆσον ἔχουσι βαρβάροις. τυῤῥηνοὶ δ' ἦσαν. ὕστερον δὲ φοίνικες κατεκράτη
σαν οἱ ἐκ καρχηδόνος. καὶ μετὰ τούτων ῥωμαίοις ἐπολέμουν. καταλυθέντων δὲ ἐκείνων πάνθ' ὑπὸ ῥωμαίοις ὑ-
πῆρξε. τέτταρα δ' ἐστὶ τῶν ὀρείων ἔθνη, παράτοι. σοσινάτοι. βάλαροι. ἀκόνιτες, ἐν σπηλαίοις οἰκοῦντες. εἰ καί
τινα γῆν ἔχουσι σπόριμον, οὐδὲ ταύτην ἐπιμελῶς σπείροντες. ἀλλὰ τὰς τῶν ἐργαζομένων καθαρ-
πάζοντες. ἐπὶ μὲν τῶν αὐτόθι. ἐπὶ δὲ καὶ πλέον. τοῖς ἐν τῇ περαίᾳ πισάταις μάλιστα, οἱ δὲ πεμ
πόμενοι στρατηγοὶ, τὰ μὲν ἀντέχουσι. πρὸς ἃ δ' ἀπαυδῶσιν, ἐπειδὰν μὴ λυσιτελῇ τρέφειν συνεχῶς
ἐν τόποις νοσεροῖς στρατόπεδον. λείπεται δὴ στρατηγεῖν τέχνας τινάς, καὶ δὴ τηρήσαντες ἔθος τι τῶν
βαρβάρων πανηγυρίζουσι γὰρ ἐπὶ πλείους ἡμέρας ἀπὸ τῆς λεηλασίας, ἐπιτίθενται τότε καὶ χειροῦνται
πολλούς. γίνονται δ' ἐνταῦθα οἱ τρίχα φύοντες αἰγείαν ἀντ' ἐρέας, κριοὶ, καλούμενοι δὲ μούσμονες. ὧν
ταῖς δοραῖς θωρακίζονται. χρῶνται δὲ πέλτῃ, καὶ ξιφιδίῳ. ἀπὸ πάσης δὲ τῆς μεταξὺ ποπλωνίου καὶ πί
σης, ἱκανῶς αἱ νῆσοι κατοπτεύονται. τῷ μήκει δ' εἰσὶ καὶ παράλληλοι σχεδὸν, καὶ τρεῖς ἐπὶ νότον καὶ λι
βύην τεταμμέναι, πολὺ μέντοι τῷ μεγέθει λείπεται τῶν ἄλλων ἡ αἰθαλία. ἀπό τε τῆς λιβύης τῷ ἐγ
γυτάτῳ δίαρμα φησὶν ὁ χωρογράφος, εἰς τὴν σαρδὼ μίλια τ. μετὰ δὲ ποπλώνιον κόσσαι πόλεις μι
κρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης. ἔστι δ' ἐν κόλπῳ βουνὸς ὑψηλὸς ἀφ' οὗ τὸ κτίσμα. ὑπόκειται δ' ἡρακλέους
λιμὴν καὶ πλησίον λιμνοθάλαττα, καὶ παρὰ τὴν ἄκραν τὴν ὑπὲρ τοῦ κόλπου θυννοσκοπεῖον, ἀκολου
θεῖ γὰρ ὁ θῦνος οὐ τῇ βαλάνῳ μόνον ἀλλὰ, καὶ τῇ πορφύρᾳ παρὰ γῆν, ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς ἔξω θαλάττης,
μέχρι καὶ σικελίας. ἀπὸ δὲ τῶν κοσσῶν εἰς ὠστίαν παραπλέουσι, πολίχνια ἐστί. γραουίσκιον. καὶ πῦργοι, καὶ
ἄλσιον καὶ φρεγηνία. εἰς μὲν δὴ γραουίσκους στάδιοι τ. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τόπος ἐστὶ καλούμενος ῥηγισού
ιλλα. ἱστορεῖται δὲ γενέσθαι ἐπὶ βασίλειον, μαλαιώτου πελασγοῦ. ὃν φασι δυναστεύσαντα ἐν τοῖς τόποις
μετὰ τῶν συνοίκων πελασγῶν, ἀπελθεῖν ἐνθένδε εἰς ἀθήνας. τούτου δ' εἰσὶ τοῦ φύλου. καὶ οἱ τὴν ἄγυλλαν κα
τεσχηκότες. ἀπὸ δὲ γραουίσκων εἰς πύργους, μικρὸν ἐλάττους τῶν ρ π. ἔστι δ' ἐπίνειον τῶν καιρετανῶν
ἀπὸ ν σταδίων. ἔχει δὲ εἰλειθυίας ἱερὸν πελασγῶν ἵδρυμα. πλούσιόν ποτε γενόμενον. ἐσύλησε δ' αὐ
τὸ διονύσιος ὁ τῶν σικελιωτῶν τύραννος κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἐπὶ κύρνον. ἀπὸ δὲ τῶν πύργων εἰς ὠστίαν σξ.
ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τὸ ἄλσιον καὶ ἡ φρεγηνία. περὶ μὲν τῆς παραλίας τῆς τυῤῥηνικῆς, ταῦτα. ἐν δὲ τῇ
μεσογαίᾳ, πόλεις, πρὸς ταῖς εἰρημέναις. ἀρήτιόν τε καὶ περουσία καὶ οὐλσίνιοι καὶ σούτριον. πρὸς δὲ
ταύταις πολίχναι συχναὶ, βλῆρά τε καὶ φερεντῖνον καὶ φαλέριον, καὶ φαλίσκον, καὶ νέπιτα. καὶ
στατωνία, καὶ ἄλλαι πλείους. αἱ μὲν, ἐξ ἀρχῆς συνεστῶσαι. τινὲς δὲ τῶν ῥωμαίων οἰκισάντων ἢ ταπεινωσάντων. κα
θάπερ τοὺς οὐηΐους πολεμήσαντας πολλάκις, καὶ τὰς φιδήνας, ἔνιοι δ' οὐ τυῤῥηνούς φασι τοὺς φαλερίους. ἀλ
λὰ φαλίσκους ἴδιον ἔθνος τινὲς, καὶ τοὺς φαλίσκους πόλιν ἰδιόγλωσσον. οἱ δὲ αἰκοῦ συμβαλίσκον
λέγουσιν ἐπὶ τῇ φλαμινίᾳ ὁδῷ κείμενον μεταξὺ ὀκρίκλων καὶ ῥώμης. ὑπὸ δὲ τῷ σωράκτῳ ὄρει φε
ρωνία πόλις ἐστὶν ὁμώνυμος ἐπιχωρίᾳ τινὶ δαίμονι τιμωμένῃ σφόδρα ὑπὸ τῶν περιοίκων. ἧς τέμε
νός ἐστιν ἐν τῷ τόπῳ θαυμαστὴν ἱεροποιΐαν ἔχον γυμνοῖς γὰρ ποσὶ διεξίασιν ἀνθρακιὰν καὶ σποδιὰν με
γάλην οἱ κατεχόμενοι ὑπὸ τῆς δαίμονος ταύτης ἀπαθεῖς, καὶ συνέρχεται πλῆθος ἀνθρώπων ἅμα
τῆς τε πανηγύρεως χάριν ἣ συντελεῖται κατ' ἔτος καὶ τῆς λεχθείσης θέας μάλιστα δ' ἐστὶ μεσογαῖα
τὸ ἀῤῥήτιον πρὸς τοῖς ὄρεσιν. ἀπέχει γοῦν τῆς ῥώμης ἐν μεσογαίᾳ χιλίους σταδίους. τὸ δὲ κλούσιον
ω. ἐγγὺς δὲ τούτων ἐστὶ, καὶ ἡ περουσία. προσλαμβάνουσι δὲ πρὸς τὴν εὐδαιμονίαν τῆς χώρας καὶ λί
μναι. μεγάλαι τε καὶ πολλαὶ οὖσαι. καὶ γὰρ πλέονται καὶ τρέφουσιν ὄψον πολύ. καὶ τῶν πτηνῶν τὰ λι
μναῖα. τύφοι τε καὶ πάπυρος. ἀνθήλη τε πολλὴ κατακομίζεται ποταμοῖς εἰς τὴν ῥώμην. οὓς ἐκδιδόα
σιν αἱ λίμναι μέχρι τοῦ τιβρέως. ὧν ἐστι καὶ ἥ τε κιμινία καὶ ἡ περὶ οὐελσινίους. καὶ ἡ περὶ κλού
σιον. καὶ ἡ ἐγγυτάτω τῆς ῥώμης καὶ τῆς θαλάττης σαβάτα. ἀπωτάτω δὲ, καὶ ἡ πρὸς ἀρρητίῳ ἡ παρὰ τρασυ
μέννα. καθ' ἣν αἱ ἐκ τῆς κελτικῆς εἰς τὴν τυῤῥηνίαν ἐκβολαί. στρατοπέδοις αἷς περ καὶ ἀννίβας ἐχρή
σατο. δυοῖν οὐσῶν. ταύτης τε, καὶ τῆς ἐπ' ἀριμίνου διὰ τῆς ὀμβρικῆς. βελτίων μὲν οὖν ἡ ἐπ' ἀριμίνου
ταπεινοῦται γὰρ ἐνταῦθα ἱκανῶς τὰ ὄρη. φρουρουμένων δὲ τῶν παρόδων τούτων ἐπιμελῶς, ἠναγκά
σθη τὴν χαλεπωτέραν ἑλέσθαι. καὶ ἐκράτησεν ὅμως νικήσας μάχας μεγάλας. φλαμίνιον, πολλὴ
δὲ καὶ τῶν θερμῶν ὑδάτων ἀφθονία κατὰ τὴν τυῤῥηνίαν τῷ πλησίον εἶναι τῆς ῥώμης. οὐχ ἧττον
δ' εὐανδρεῖ τῶν ἐν βαΐαις ἃ διονόμασται πολὺ πάντων μάλιστα. τῇ δὲ τυῤῥηνίᾳ παραβέβληται κατὰ
τὸ πρὸς ἕω μέρος, ἡ ὀμβρική. τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῶν ἀπεννίνων λαβοῦσα. καὶ ἔτι περαιτέρω μέχρι τοῦ ἀδρίου
ἀπὸ γὰρ δὴ ῥαουέννης ἀρξάμενοι κατέχουσιν οὗτοι τὸ πλησίον. καὶ ἐφεξῆς, σάρσιναν. ἀρίμινον. σήναν. καὶ κα
μαρῖνον. αὐτοῦ δ' ἐστὶ καὶ ὁ αἶσις ποταμὸς, καὶ τὸ γιγγοῦνον ὄρος. καὶ σεντῖνον. καὶ μέταυρος ποταμός. καὶ τὸ ἱε
ρὸν τῆς τύχης. περὶ γὰρ τούτους τοὺς τόπους εἰσὶ τὰ ὅρια τῆς ἰταλίας τῆς πρότερον, καὶ τῆς κελτικῆς κατὰ
τὸ πρὸς τῇ θαλάττῃ ταύτῃ, μέρος. καίπερ μετατιθέντων πολλάκις τῶν ἡγεμόνων. πρότερον μὲν
γε τὸν αἶσιν ἐποιοῦντο ὅριον. πάλιν δὲ τὸν ῥουβίκωνα ποταμόν. ἔστι δ' ὁ μὲν αἶσις μεταξὺ ἀγκῶνος καὶ σηνο
γαλλίας. ὁ δὲ ῥουβίκων μεταξὺ ἀριμίνου καὶ ῥαουέννης. ἄμφω δ' ἐκπίπτουσιν εἰς ἀδρίαν. νυνὶ δὲ

συμπάσης τῆς μέχρι τῶν ἄλπεων ἀπὸ λευκάσης ἰταλίας, τούτους μὲν τοὺς ὅρους ἐατέον. τὴν
δ' ὀμβρικὴν καθ' ἣν αὐδενὶ ἧττον μέχρι καὶ ῥαουέννης, ὁμολογοῦσιν ἅπαντες διατείνειν. οἰκεῖται γὰρ ὑπὸ
τούτων. εἰς μὲν δὴ ἀρίμινον ἐνθένδε, περὶ τ' φασὶν, ἐκ δὲ ἀριμίνου τὴν ἐπὶ ῥώμης ἰόντι, κατὰ τὴν
φλαμμινίαν ὁδὸν, διὰ τῆς ὀμβρικῆς ἅπασα ἡ ὁδὸς ἐστὶ. μέχρι ὀκρίκλων καὶ τοῦ τιβέρεως σταδίων.
ν. καὶ τριακοσίων ἐπὶ τοῖς χιλίοις. τοῦτο μὲν δὴ μῆκος. τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλόν ἐστι. πόλεις δ' εἰσὶν
αἱ ἐντὸς τῶν ἀπεννίνων ὀρῶν, ἄξιαι λόγου κατ' αὐτὴν μὲν τὴν φλαμμινίαν ὁδὸν, οἵ τε ὀκρίκλοι πρὸς
τῷ τιβέρι καὶ λάρολον. καὶ ναρνία. δι' ἧς ῥεῖ ὁ ναρ ποταμὸς, συμβάλλων τῷ τιβέρι μικρὸν ὑπὲρ ὀ
κρίκλων. πλωτὸς δ' οὐ μεγάλοις σκάφεσιν. εἶτα καρσοῦλοι καὶ μηουανία. παρ' ἣν ῥεῖ ὁ τενέας.
καὶ οὗτος ἐλάττοσι σκάφεσι κατάγων ἐπὶ τὸν τίβεριν τὰ ἐκ τοῦ πεδίου. καὶ ἄλλαι δ' εἰσὶ κατοικίαι
διὰ τὴν ὁδὸν πληθυνόμεναι μᾶλλον, ἢ διὰ πολιτικὸν σύστημα, φόρον φλαμμίνιον, καὶ νουκερία. ἡ
τὰ ξύλινα ἀγγεῖα ἐργαζομένη, καὶ φόρον σεμπρώνιον. ἐν δεξιᾷ δὲ τῆς ὁδοῦ βαδίζοντι ἐκ τῶν ὀκρι
κλων εἰς ἀρίμινον, ἰντεράμνα ἐστὶ, καὶ σπολήτιον καὶ αἴσιον, καὶ καμέρτη, ἐν αὐτοῖς τοῖς ὁρίζουσι
τὴν πικεντίνην ὄρεσι. κατὰ δὲ θάτερα μέρη, ἀμερία τε καὶ τουδερ, εὐέρκης πόλις, καὶ εἰσπέλλον,
καὶ ἴτορον. πλησίον τούτου δὴ τῶν ὑπερβολῶν τοῦ ὄρους. ἅπασα δ' εὐδαίμων ἡ χώρα. μικρῷ δ' ὀ
ρειοτέρα ζειᾷ μᾶλλον ἢ πυρῷ τοὺς ἀνθρώπους τρέφουσα, ὀρεινὴ δὲ, καὶ ἡ σαβινὴ ἐφ' ἑξῆς οὖσα ταύτῃ πα
ραβεβλημένη τὸν αὐτὸν τρόπον ὃν περ αὐτὴ τῇ τυρρηνικῇ, καὶ τοῖς λατίνοις δὲ ὅσα πλησιάζει, τούτοις
τε, καὶ τοῖς ἀπεννίνοις ὄρεσι, τραχύτερα ἐστίν. ἄρχεται μὲν οὖν τὰ δύο ἔθνη ταῦτα ἀπὸ τοῦ τιβέ
ρεως καὶ τῆς τυρρηνίας. ἐκτείνεται δὲ, ἐπὶ τὰ ἀπέννινα ὄρη πρὸς τῷ ἀδρίᾳ λοξὰ, παρεμβάλλοντα
ἡ δὲ ὀμβρικὴ καὶ παραλλάττουσα ὡς εἴρηται μέχρι τῆς θαλάττης. περὶ μὲν οὖν τῶν ὀμβρικῶν ἱκα
νῶς εἴρηται. σαβῖνοι δὲ στενὴν οἰκοῦσι χώραν. ἐπὶ μῆκος δὲ διήκουσαν καὶ χιλίων σταδίων ἀπὸ τοῦ τιβέρε
ως καὶ νωμεντῆς πολίχνης, μέχρις οὐηστίνων, πόλεις δ' ἔχουσιν ὀλίγας καὶ τεταπεινωμένας, διὰ τοὺς
συνεχεῖς πολέμους, ἀμίτερνον, καὶ ῥεάτε ᾧ πλησιάζει κώμη ἰντεροκρέα, καὶ τὰ ἐν κωτισκολίαις ψυ
χρὰ ὕδατα. ἀφ' ὧν καὶ πίνουσι καὶ ἐγκαθιζόντες θεραπεύουσι νόσους. σαβίνων δ' εἰσὶ, καὶ οἱ φό
ρουλοι πέτραι, πρὸς ἀπόστασιν μᾶλλον ἢ κατοικίαν εὐφυεῖς. κύρεις δὲ νῦν μὲν κώμιόν ἐστι. ἦν δὲ πόλις ἐ
πίσημος ἐξ ἧς ὥρμηντο οἱ τῆς ῥώμης βασιλεύσαντες, τίτος τάτιος καὶ νουμᾶς πομπίλιος. ἐντεῦ
θεν δὲ, καὶ κυρίτας ὀνομάζουσιν οἱ δημηγοροῦντες τοὺς ῥωμαίους. τρήβουλα τε καὶ ἤρετον. καὶ
ἄλλαι κατοικίαι τοιαῦται, κῶμαι μᾶλλον ἢ πόλεις ἐξετάζοιντ' ἄν, ἅπασα δ' αὐτῶν ἡ γῆ διαφερόντως
ἐλαιόφυτός ἐστι καὶ ἀμπελόφυτος βάλανόν τε ἐκφέρει πολλήν. σπουδαία δὲ, καὶ βοσκήμασι τοῖς τε ἄλλοις,
καὶ δὴ τὸ τῶν ἡμιόνων γένος τῶν ῥεατίνων διωνόμασται θαυμαστῶς. ὡς δ' εἰπεῖν ἅπασα ἡ ἰταλία, θρεμμάτων
τε ἀρίστη τροφὸς καὶ καρπῶν ἐστιν ἄλλα δ' ἤδη κατὰ ἄλλα μέρη τῶν πρωτείων τυγχάνει. ἔστι δὲ, καὶ πα
λαιότατον γένος, οἱ σαβῖνοι καὶ αὐτόχθονες. τούτων δ' ἄποικοι πικεντῖνοί τε καὶ σαμνῖται,
τούτων δὲ λευκανοί. τούτων δὲ βρέττιοι. τὴν δ' ἀρχαιότητα τεκμήριον ἄν τις ποιήσαιτο, ἀνδρίας
καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς, ἀφ' ἧς ἀντέσχον, μέχρι πρὸς τὸν παρόντα χρόνον. φησὶ δ' ὁ συγγραφεὺς φά
βιος, ῥωμαίους αἰσθέσθαι τοῦ πλούτου τό τε πρῶτον. ὅτε τοῦ ἔθνους τούτου κατέστησαν κύριοι. ἔ
στρωται δὲ δι' αὐτῶν ἥ τε σαλαρία ὁδὸς οὐ πολλὴ οὖσα εἰς ἣν καὶ ἡ νωμεντανὴ συμπίπτει, κατὰ ἤ
ρητον τῆς σαβινῆς κώμης ὑπὲρ τοῦ τιβέρεως κειμένη, ὑπὲρ τῆς αὐτῆς πύλης ἀρχομένη τῆς κολ
λινῆς. ἑξῆς δ' ἡ λατίνη κεῖται, ἐν ᾗ καὶ ἡ τῶν ῥωμαίων πόλις καὶ πολλὰς συνειληφυῖα, τῆς μὴ λατίνης πρό
τερον. αἶκοι γὰρ, καὶ οὐόλσκοι καὶ ἕρνικοι. ἀβοριγῖνές τε οἱ περὶ αὐτὴν τὴν ῥώμην. καὶ ῥούτουλοι
οἱ τὴν ἀρχαίαν ἀρδέαν ἔχοντες, καὶ ἄλλα συστήματα, μείζω καὶ ἐλάττω τὰ περιοικοῦντα τοὺς
τό τε ῥωμαίους ὑπῆρξαν, ἡνίκα πρῶτον ἔκτιστο ἡ πόλις. ὧν ἔνια κατὰ κώμας αὐτονομεῖσθαι συνέ
βαινεν. ὑπ' οὐδενὶ κοινῷ φύλῳ τεταγμένα. φασὶ δὲ αἰνείαν μετὰ τοῦ πατρὸς ἀγχίσου, καὶ τοῦ παι
δὸς ἀσκανίου κατάραντες εἰς λαῦρον λαύρεντον πλησίον τῶν ὠστίων, καὶ τοῦ τιβέρεως, ἠιόνος μικρὸν
ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὅσον ἐν τέτταρσι, καὶ εἴκοσι σταδίοις, κτίσαι πόλιν. ἐπελθόντα δὲ λατῖνον τὸν
τῶν ἀβοριγίνων βασιλέα, τῶν οἰκούντων τὸν τόπον τοῦτον, ὅπου νῦν ἡ ῥώμη ἐστὶ, συμμάχοις χρήσα
σθαι τοῖς περὶ τὸν αἰνείαν ἐπὶ τοὺς γειτνιῶντας ῥουτούλους τοὺς ἀρδέαν κατέχοντας. στάδιοι δ' εἰ
σὶν ἀπὸ τῆς ἀρδέας εἰς τὴν ῥώμην ρξ. νικήσαντα δ' ἀπὸ τῆς θυγατρὸς λαουινίας ἐπώνυμον κτί
σαι πλησίον πόλιν. πάλιν δὲ ῥουτούλων συμβαλόντων εἰς μάχην, τὸν μὲν λατῖνον πεσεῖν τὸν δὲ αἰνεί
αν νικήσαντα βασιλεῦσαι. καὶ λατίνους καλέσαι τοὺς ὑφ' αὐτῷ. καὶ τούτου δὲ τελευτήσαντος καὶ
τοῦ πατρὸς, τὸν ἀσκάνιον, ἄλβαν κτίσαι ἐν τῷ ἀλβανῷ ὄρει διέχοντι τῆς ῥώμης τοσοῦτον, ὅσον
καὶ ἡ ἀρδέα. ἐνταῦθα ῥωμαῖοι σὺν τοῖς λατίνοις διὶ θύουσιν ἅπασα ἡ συναρχία ἀθροισθεῖσα. τῇ
πόλει δ' ἐφίστησιν ἄρχοντα πρὸς τὸν τῆς θυσίας χρόνον τῶν γνωρίμων τινὰ νέων. ὕστερον δὲ τετρα
κοσίοις ἔτεσιν ἱστορεῖται τὰ περὶ ἀμόλλιον, καὶ τὸν ἀδελφὸν νομήτορα. τὰ μὲν, μυθώδη. τὰ δ' ἐγγυ
τέρω πίστεως. διεδέξαντο μὲν γὰρ τὴν τῆς ἄλβας ἀρχὴν ἀμφότεροι παρὰ τῶν ἀπογόνων τοῦ ἀσκανίου

διατείνουσαν μέχρι τοῦ τιβέρεως. παραγκωνισάμενος δ᾽ ὁ νεώτερος τὸν πρεσβύτερον, ἦρχεν ὁ ἀ-
μούλιος. υἱοῦ δ᾽ ὄντος καὶ θυγατρὸς τῷ νουμίτορι, τὸν μὲν, ἐν κυνηγίᾳ δολοφονεῖ. τὴν δὲ ἵνα ἄτε-
κνος διαμένῃ, τῆς ἑστίας ἱέρειαν κατέστησε, παρθενίας χάριν. καλοῦσι δ᾽ αὐτὴν ῥέαν σιλβίαν. εἶτα
φθορὰν φωράσας, διδύμων αὐτῇ παίδων γενομένων, τὴν μὲν εἷρξεν ἀντὶ τοῦ κτεῖναι, χαριζόμε-
νος τἀδελφῷ. τοὺς δ᾽ ἐξέθηκε πρὸς τὸν τίβριν, κατά τι πάτριον. μυθεύονται μὲν οὖν ἐξ ἄρε-
ος γενέσθαι τοὺς παῖδας. ἐκτεθέντας δ᾽ ὑπὸ λυκαίνης, ὁραθῆναι σκυλακευομένους. φαύστυλον
δέ τινα τῶν περὶ τὸν τόπον συμφορβῶν ἀνελόμενον ἐκθρέψαι. δεῖ δ᾽ ὑπολαβεῖν τῶν δυνατῶν
τινά. ὑπηκόων δὲ τῷ ἀμουλίῳ λαβόντα, ἐκθρέψαι, καλέσαι δὲ τὸν μὲν, ῥωμύλον. τὸν δὲ ῥῶμον.
ἀνδρωθέντας δ᾽ ἐπιθέσθαι τῷ ἀμουλίῳ, καὶ τοῖς παισί. καταλυθέντων δ᾽ ἐκείνων καὶ τῆς ἀρ-
χῆς εἰς τὸν νουμίτορα περιστάσης, ἀπελθόντας οἴκαδε, κτίσαι τὴν ῥώμην, ἐν τόποις, οὐ πρὸς αἵρεσιν
μᾶλλον, ἢ πρὸς ἀνάγκην ἐπιτηδείοις. οὔτε γὰρ ἐρυμνὸν τὸ ἔδαφος, οὔτε χώραν οἰκείαν ἔχει τὴν πε-
ριξ ὅση πόλει πρόσφορος. ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ἀνθρώπους τοὺς συνοικήσοντας. οἱ γὰρ ὄντες ᾤκουν καθ᾽ αὑτοὺς,
συνάπτοντες πρὸς τοῖς τείχεσι τῆς κτιζομένης πόλεως. οὐδὲ τοῖς ἀλβανοῖς πάνυ προσέχοντες.
κολλατία δ᾽ ἦν, καὶ ἀντέμναι καὶ φιδῆναι, καὶ λαβῖνοι. καὶ ἄλλα τοιαῦτα τότε μὲν πολίχνια.
νῦν δὲ κῶμαι. κτίσεις ἰδιωτῶν. ἀπὸ λ. ἢ μ. μικρῷ πλειόνων τοῖς ῥώμης, σταδίων. μεταξὺ γοῦν τοῦ
πέμπτου, καὶ τοῦ ἕκτου λίθου τῶν τὰ μίλια διασημαινόντων τῆς ῥώμης καλεῖται τόπος φῆστοι. τοῦ-
τον δ᾽ ὅριον ἀποφαίνουσι τῆς τότε ῥωμαίων γῆς, οἵ θ᾽ ἱερομνήμονες θυσίαν ἐπιτελοῦσιν, ἐνταῦθα
τε καὶ ἐν ἄλλοις τόποις πλείοσιν, ὡς ὁρίοις αὐθημερόν. ἣν καλοῦσιν ἀμβαρουΐαν. γενομένης δ᾽ οὖν
στάσεως φασὶ κατὰ τὴν κτίσιν, ἀναιρεθῆναι τὸν ῥῶμον. μετὰ δὲ τὴν κτίσιν ἀνθρώπους σύγκλυδας
ὁ ῥωμύλος ἤθροιζεν. ἀποδείξας ἄσυλόν τι τέμενος μεταξὺ τῆς ἄκρας καὶ τοῦ καπιτωλίου. τοὺς
δ᾽ ἐκεῖ καταφεύγοντας τῶν ἀστυγειτόνων πολίτας ἀποφαίνων, ἐπιγαμίας δὲ τούτοις οὐ τυγχάνων
ἐπηγγείλατο ἀγῶνα ἱππικὸν τοῦ ποσειδῶνος ἱερὸν τὸν καὶ νῦν ἐπιτελούμενον. συνελθόντων
δὲ πλειόνων πολλῶν, ἐκέλευσε τὰς παρθένους ἁρπάσαι τὰς ἀφιγμένας, τοῖς δεομένοις γάμου.
μετιὼν δὲ τὴν ὕβριν, μετὰ ὅπλων τίτος τάτιος ὁ βασιλεὺς τῶν κυριτῶν ἐπὶ κοινωνίᾳ τῆς ἀρχῆς καὶ
πολιτείας συνέβη πρὸς ῥωμύλον. δολοφονηθέντος δ᾽ ἐν λαουϊνίῳ τοῦ τατίου. μόνος ἦρξεν ἑκὼν τῶν κυ-
ρίτων ὁ ῥωμύλος. μετὰ δὲ τοῦτον διεδέξατο τὴν ἀρχὴν, νουμᾶς πομπίλιος πολίτης τοῦ τατίου, παρ᾽ ἑκόντων τῶν
ὑπηκόων λαβών, αὕτη μὲν οὖν ἡ μάλιστα πιστευομένη τῆς ῥώμης κτίσις ἐστίν. ἄλλη δέ τις προτέρα,
καὶ μυθώδης. ἀρκαδικὴν λέγουσα γενέσθαι τὴν ἀποικίαν, ὑπ᾽ εὐάνδρου. τούτῳ δ᾽ ἐπιξενωθῆναι τὸν
ἡρακλέα, ἐλαύνοντα τὰς γηρυόνου βοῦς. πυθόμενον δὲ τῆς μητρὸς νικοστράτης τὸν εὔανδρον, εἶναι
δ᾽ αὐτὴν μαντικῆς ἔμπειρον, ὅτι τῷ ἡρακλεῖ πεπρωμένον ἦν τελευτήσαντι τοὺς ἄθλους, θεῷ γε-
νέσθαι, φράσαι τε πρὸς τὸν ἡρακλέα ταῦτα, καὶ τέμενος ἀναδεῖξαι. καὶ θῦσαι θυσίαν ἑλληνι-
κήν. ἣν, καὶ νῦν ἔτι φυλάττεσθαι τῷ ἡρακλεῖ. καὶ ὁ κεκύλιος ὁ τῶν ῥωμαίων συγγραφεὺς, τοῦτο
τίθεται σημεῖον, τοῦ ἑλληνικὸν εἶναι κτίσμα τὴν ῥώμην, τὸ παρ᾽ αὐτῇ τὴν πάτριον θυσίαν, ἑλλη-
νικὴν εἶναι τῷ ἡρακλεῖ καὶ τὴν μητέρα δὲ τοῦ εὐάνδρου, τιμῶσι ῥωμαῖοι. μίαν τῶν νυμφῶν,
εἶναι νομίσαντες καρμέντην μετονομασθεῖσαν. οἱ δ᾽ οὖν λατῖνοι κατ᾽ ἀρχὰς μὲν ἦσαν ὀλίγοι. καὶ
οἱ πλείους οὐ προσεῖχον ῥωμαίοις. ὕστερον δὲ καταπλαγέντες τὴν ἀρετὴν τοῦ τε ῥωμύλου, καὶ τῶν
μετ᾽ ἐκεῖνον βασιλέων, ὑπήκοοι πάντες ὑπῆρξαν. καταλυθέντων δὲ τῶν τε αἰκούων, καὶ τῶν οὐόλ-
σκων καὶ ἑρνίκων, ἔτι δὲ πρότερον ῥουτούλων τε καὶ ἀβοριγίνων, πρὸς δὲ τούτοις ῥαικῶν, καὶ ἀρ-
γυρούσκων δέ τινων καὶ πρεφέρνων, ἡ τούτων χώρα λατίνη προσηγόρευται πᾶσα. ἦν δὲ τῶν οὐόλ-
σκων τὸ πωμεντῖνον πεδίον, ὅμορον τοῖς λατίνοις. καὶ πόλις ἀπιόλα. ἣν κατέσκαψε ταρκύ-
νιος πρίσκος. αἴκουοι δὲ γειτνιῶντες μάλιστα τοῖς κυρίταις. καὶ τούτων δ᾽ ἐκεῖνος τὰς πόλεις ἐξε-
πόρθησεν. ὁ δ᾽ υἱὸς αὐτοῦ τὴν σούεσσαν εἷλε τὴν μητρόπολιν τῶν οὐόλσκων. ἕρνικοι δὲ πλησίον ᾤ-
κουν τῷ τε λαουϊνίῳ καὶ τῇ ἄλβᾳ, καὶ αὐτῇ τῇ ῥώμῃ. οὐκ ἄπωθεν δ᾽ οὐδ᾽ ἀρικία, καὶ τελλῆναι, καὶ
ἄντιον ἀλβανοὶ δὲ κατ᾽ ἀρχὰς μὲν ὡμονόουν τοῖς ῥωμαίοις. ὁμόγλωσσοί τε ὄντες, καὶ λατῖ-
νοι. βασιλευόμενοι δ᾽ ἑκάτεροι χωρὶς ἐτύγχανον. οὐδὲν δ᾽ ἧττον ἐπιγαμίαι τε ἦσαν πρὸς ἀλλή-
λους. καὶ ἱερὰ κοινὰ τὰ ἐν ἄλβᾳ. καὶ ἄλλα δίκαια πολιτικά. ὕστερον δὲ πολέμου συστάντος, ἡ μὲν
ἄλβα κατεσκάφη, πλὴν τοῦ ἱεροῦ. οἱ δ᾽ ἀλβανοὶ πολῖται ῥωμαίων ἐκρίθησαν, καὶ τῶν ἄλλων
δὲ τῶν περιοίκων πόλεων, αἱ μὲν, ἀνῃρέθησαν. αἱ δ᾽ ἐταπεινώθησαν ἀπειθοῦσαι, τινὲς δὲ, καὶ ηὐ-
ξήθησαν διὰ τὴν εὔνοιαν. νυνὶ μὲν οὖν ἡ παραλία μέχρι πόλεως σινοέσσης ἀπὸ τῶν ὠστίων λατίνη
καλεῖται. πρότερον δὲ μέχρι τοῦ κιρκαίου οὐ μόνον ἔσχηκε τὴν ἐπίδοσιν, καὶ τὴν μεσογαίας δὲ πρότε-
ρον μὲν οὐ πολλήν. ὕστερον δὲ καὶ μέχρι καμπανίας διέτεινε, καὶ σαυνιτῶν, καὶ πελιγνῶν. καὶ ἄλλων τῶν
τὸ ἀπέννινον κατοικούντων. ἅπασα δ᾽ ἐστὶν εὐδαίμων καὶ παμφόρος, πλὴν ὀλίγων χωρίων τῶν κατὰ
τὴν παραλίαν, ὅσα ἑλώδη καὶ νοσερὰ, οἷα τὰ τῶν ἀρδεατῶν. καὶ μεταξὺ ἀντίου, καὶ λαουϊνίου,

μέχρι πωμεντίου, καὶ τινῶν τῆς σιτίνης χωρίων, καὶ τῆς περὶ ταρακίναν. καὶ τὸ κιρκαῖον. ἢ εἴ τινα ὀ-
ρεινὰ καὶ πετρώδη. καὶ ταῦτα δ' οὐ τελέως ἀργά. οὐδ' ἄχρηστα. ἀλλὰ νομὰς παρέχει δαψιλεῖς ἢ
ὕλην. ἢ καρπούς τινας ἑλείους, ἢ πετραίους. τὸ δὲ καίκουβον ἑλῶδες ὄν, εὐοινοτάτην ἄμπελον τρέ-
φει, τὴν δενδρῖτιν. πόλεις δ' ἐπὶ θαλάττῃ μέν εἰσι τῶν λατίνων, τά τε ὤστια, πόλις ἀλίμενος διὰ
τὴν πρόσχωσιν, ἣν ὁ τίβερις παρασκευάζει, πληρούμενος ἐκ πολλῶν ποταμῶν. παρακινδύνως
μὲν οὖν ὁρμίζονται μετέωρα ἐν τῷ σάλῳ, τὰ ναυκλήρια. τὸ μέντοι λυσιτελὲς νικᾷ. καὶ γὰρ ἡ τῶν
ὑπηρετικῶν σκαφῶν εὐπορία, τῶν ἐκδεχομένων τὰ φορτία, καὶ ἀντιφορτιζόντων, ταχὺν ποιεῖ
τὸν ἀπόπλουν, πρὶν ἢ τοῦ ποταμοῦ ἅψασθαι, καὶ μέρους ἀποκουφισθέντα, εἰσπλεῖ καὶ ἀνάγεται
μέχρι τῆς ῥώμης, σταδίους, ϛς. κτίσμα δ' ἐστὶ τὰ ὤστια ἄγκου μαρκίου, αὕτη μὲν ἡ πόλις τοιαύτη. ἑξῆς
δ' ἐστὶν ἄντιον. ἀλίμενος καὶ αὐτὴ πόλις. ἵδρυται, δ' ἐπὶ πέτραις. διέχει δὲ τῶν ὠστίων περὶ σ̄ ξ̄ στα-
δίους. νυνὶ μὲν οὖν ἀνεῖται τοῖς ἡγεμόσιν, εἰς σχολὴν καὶ ἄνεσιν τῶν πολιτικῶν, ὅτε λάβοιεν και-
ρόν. καὶ διὰ τοῦτο κατῳκοδόμηνται πολυτελεῖς οἰκήσεις ἐν τῇ πόλει συχναί, πρὸς τὰς τοιαύτας ἐ-
πιδημίας. καὶ πρότερον δὲ ναῦς ἐκέκτηντο, καὶ ἐκοινώνουν, τῶν λῃστηρίων τοῖς τυρρηνοῖς, καί περ
ἤδη τοῖς ῥωμαίοις ὑπακούοντες. διόπερ, καὶ ἀλέξανδρος πρότερον ἐγκαλῶν ἐπέστειλε. καὶ δη-
μήτριος ὕστερον τοὺς ἄλλους τῶν λῃστῶν ἀναπέμπων τοῖς ῥωμαίοις, χαρίζεσθαι μὲν αὐτοῖς ἔφη τὰ
σώματα διὰ τὴν πρὸς τοὺς ἕλληνας συγγένειαν. οὐκ ἀξιοῦν δὲ τοὺς αὐτοὺς ἄνδρας, στρατηγεῖν τε ἅμα
τῆς ἰταλίας, καὶ λῃστήρια ἐκπέμπειν. καὶ ἐν μὲν τῇ ἀγορᾷ διοσκούρων ἱερὸν ἱδρυσαμένους τιμᾶν,
οὓς πάντες σωτῆρας ὀνομάζουσιν. εἰς δὲ τὴν ἑλλάδα πέμπειν τοὺς τῶν ἐκείνων πατρίδα λεηλατήσον-
τας. ἔπαυσαν δ' αὐτοὺς ῥωμαῖοι τῆς τοιαύτης ἐπιτηδεύσεως. ἀνὰ μέσον δὲ τούτων τῶν πόλεων, ἐστὶ τὸ
λαουΐνιον. ἔχον κοινὸν τῶν λατίνων ἱερὸν ἀφροδίτης. ἐπιμελοῦνται δ' αὐτῶν διὰ προγόνων ἀρδεᾶ-
ται. εἶτα λαύρεντον. ὑπέρκειται δὲ τούτων ἡ ἀρδέα, κατοικία ῥουτούλων ἄνω, ο̄ σταδίους ἀπὸ τῆς
θαλάττης. ἔστι δέ, καὶ ταύτης πλησίον ἀφροδίσιον, ὅπου πανηγυρίζουσι λατῖνοι. σαυνῖται δ' ἐπόρθησαν
τοὺς τόπους. καὶ λείπεται μὲν ἴχνη πόλεων, ἔνδοξα δὲ διὰ τὴν αἰνείου γέγονεν ἐπιδημίαν, καὶ τὰς ἱε-
ροποιίας ἐξ ἐκείνων τῶν χρόνων παραδεδόσθαι φασί. μετὰ δὲ ἄντιον τὸ κιρκαῖον ἐστίν, ἐν σ̄ καὶ ϟ. στα-
δίοις. ὄρος νησιάζον θαλάττῃ τε, καὶ ἕλεσι. φασὶ δέ, καὶ πολύριζον εἶναι. τάχα τῷ μύθῳ τῷ περὶ τῆς
κίρκης συνοικειοῦντες. ἔχει δὲ πολίχνιον καὶ κίρκης, καὶ ἱερόν, ἀθηνᾶς βωμόν. δείκνυσθαι δέ,
καὶ φιάλην τινά φασιν ὀδυσσέως. μεταξὺ δὲ ὅ, τε στόρας ποταμός, καὶ ἐπ' αὐτῷ ὕφορμος. ἔπειτα
προσεχὴς αἰγιαλὸς ἀλίμενος. πρὸς αὐτῷ μόνον τῷ κιρκαίῳ λιμένιον ἔχων. ὑπέρκειται δ' ἐν τῇ με-
σογαίᾳ τὸ πωμεντῖνον πεδίον. τὴν δὲ συνεχῆ ταύτῃ πρότερον αὔσονες ᾤκουν. οἵπερ, καὶ τὴν καμπα-
νίαν εἶχον. μετὰ δὲ τούτους ὄσκοι. καὶ τούτοις δὲ μετῆν τῆς καμπανίας. νῦν δ' ἅπαντα λατίνων ἐστὶ
μέχρι, σινοέσσης ὡς εἶπον. ἴδιον δέ τι τοῖς ὄσκοις, καὶ τὸ τῶν αὐσονίων ἔθνει συμβέβηκε. τῶν μὲν γὰρ ὄ-
σκων ἐκλελοιπότων ἡ διάλεκτος μένει παρὰ τοῖς ῥωμαίοις. ὥς τε καὶ ποιήματα σκηνοβατεῖσθαι,
κατά τινα ἀγῶνα πάτριον, καὶ μιμολογεῖσθαι. τῶν δ' αὐσονίων οὐδ' ἅπαξ οἰκησάντων ἐπὶ τῇ σι-
κελικῇ θαλάττῃ, τὸ πέλαγος ὅμως αὐσόνιον καλεῖται. ἑξῆς δ' ἑκατὸν σταδίοις τῷ κιρκαίῳ ταρακίνα
ἐστί. τραχινὴ καλουμένη πρότερον ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος. πρόκειται δὲ αὐτοῖς μέγα ἕλος, ὃ ποιοῦσι
δύο ποταμοί. καλεῖται δ' ὁ μείζων αὔφιδος. ἐνταῦθα δὲ συνάπτει τῇ θαλάττῃ πρῶτον ἡ ἀππηΐα ὁδὸς.
ἐστρωμένη μὲν ἀπὸ τῆς ῥώμης μέχρι βρεντησίου. πλεῖστον δ' ὁδευομένη. τῶν δ' ἐπὶ θαλάττῃ, πόλεων
τούτων ἐφαπτομένων μόνον, τῆς τε ταρακίνης καὶ τῶν ἐφεξῆς, φορμιῶν μέν, καὶ μιντούρνης, καὶ σι-
νουέσσης, καὶ τῶν ἐσχάτων, τάραντός τε καὶ βρεντησίου. πλησίον δὲ τῆς ταρακίνης βαδίζοντι, ἐπὶ
τῆς ῥώμης, παραβέβληται τῇ ὁδῷ τῇ ἀππίᾳ διῶρυξ ἐπὶ πολλοὺς τόπους πληρουμένη τοῖς ἑλεί-
οις τε καὶ τοῖς ποταμίοις ὕδασι. πλεῖται δὲ μάλιστα, νύκτωρ. ὥστ' ἐμβάντας ἐφ' ἑσπέρας ἐκβαί-
νειν πρωΐας, καὶ βαδίζειν τὸ λοιπὸν τῇ ὁδῷ τῇ ἀππίᾳ. ἀλλὰ καὶ μεθ' ἡμέραν ῥυμουλκεῖται δι' ἡ-
μιόνων. ἑξῆς δὲ φορμίαι λακωνικὸν κτίσμα ἐστίν. ὁρμίαι λεγόμενον πρότερον διὰ τὸ εὔορμον. καὶ
τὸν μεταξὺ δὲ κόλπον ἐκεῖνοι, καιάταν ὠνόμασαν, τὰ γὰρ κοῖλα πάντα καιάτας οἱ λάκωνες,
προσαγορεύουσιν. ἔνιοι δ' ἐπώνυμον τῆς αἰνείου τροφοῦ τὸν κόλπον φασίν. ἔχει δὲ μῆκος σταδίων ρ̄ ἀρ-
ξάμενος ἀπὸ τῆς ταρρακίνης, μέχρι τῆς ἄκρας τῆς ὁμωνύμου. ἀνέῳγέ τ' ἐντεῦθεν σπήλαια ὑπερ-
μεγέθη, κατοικίας μεγάλας, καὶ πολυτελεῖς δεδεγμένα. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὰς φορμίας τετταρά-
κοντα. ταύτης δ' ἀνὰ μέσον εἰσί, καὶ σινουέσσης αἱ μιντοῦρναι. σταδίους ἑκατέρας διέχουσαι περὶ
π̄. διαρρεῖ δὲ λεῖρις ποταμός, κλάνις δ' ἐκαλεῖτο πρότερον. φέρεται δ' ἄνωθεν ἐκ τῶν ἀπεννίνων
ὀρῶν, καὶ τῆς ἰουστίνης παρὰ φρεγέλλας κώμην. πρότερον δ' ἦν πόλις ἔνδοξος. ἐκπίπτει δ' εἰς ἄλ-
σος ἱερὸν τιμώμενον περιττῶς ὑπὸ τῶν ἐν μιντούρναις ὑπερκείμενον τῇ πόλει, τῶν δὲ σπηλαίων
ἐν ὄψει μάλιστα πρόκεινται δύο νῆσοι πελάγιαι, πανδαρία τε καὶ ποντία. μικραὶ μέν, οἰκούμε-
ναι δὲ καλῶς. οὐ πολὺ ἀπ' ἀλλήλων διέχουσαι. τῆς ἠπείρου δὲ ν̄ ἐπὶ σ̄, ἔχεται δὲ τοῦ καιάτου κόλ-

που τὸ κέκουβον. τούτου δὲ φουνδοι. πόλις ἐν τῇ ὁδῷ τῇ ἀππίᾳ. καὶ μὲν δὴ πάντες δ' εἰσὶν οἱ τόποι οὗτοι, σφόδρα εὔοινοι. ὁ δὲ κέκουβος καὶ ὁ φουνδανὸς, καὶ ὁ σητῖνος, τῶν διωνομασμένων εἰσὶ, καθάπερ, καὶ ὁ φάλερνος, καὶ ὁ ἄλβανος καὶ ὁ σαγάνος. ἡ δὲ σινούεσσα ἐν σινώνοις κόλπῳ ἵδρυται, ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα· σίνος γὰρ ὁ κόλπος πλησίον. ἔστι δ' αὐτῆς θερμὰ λουτρὰ κάλλιστα ποιοῦντα πρὸς νόσους ἐνίας. αὗται μὲν, αἱ ἐπὶ θαλάττῃ τῆς λατίνης πόλεις. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ, πρώτη μὲν ὑπὲρ τῶν ὠστίων ἐστὶν ἡ ῥώμη. καὶ μόνη γε ἐπὶ τῷ τιβέρι κεῖται. περὶ ἧς, ὅτι πρὸς ἀνάγκην οὐ πρὸς αἵρεσιν ἔκτισται, εἴρηται. προσθετέον δ' ὅτι, οὐδ' οἱ μετὰ ταῦτα προσκτίζοντές τινα μέρη, κύριοι τοῦ βελτίονος ἦσαν. ἀλλ' ἐδούλευον τοῖς προϋποκειμένοις. οἱ μέν γε πρῶτοι τὸ καπιτώλιον καὶ τὸ παλάτιον, καὶ τὸν κουιρῖνον λόφον ἐτείχισαν. ὃς ἦν οὕτως εὐεπίβατος τοῖς ἔξωθεν, ὥστ' ἐξ ἐφόδου τίτος τάτιος εἷλεν ἐπελθών. ἡνίκα μετῄει τὴν τῶν ἁρπαγεισῶν παρθένων ὕβριν. ἄγκος τε μάρκιος προσλαβὼν τὸ κέλλιον ὄρος, καὶ τὸ ἀβεντῖνον ὄρος, καὶ τὸ μεταξὺ τούτων πεδίον, διηρτημένα, καὶ τὸ ἀπ' ἀλλήλων καὶ ἀπὸ τῶν προτετειχισμένων, προσέθηκεν ἀναγκαίως. οὔτε γὰρ οὕτως ἐρυμνοὺς λόφους ἔξω τείχους ἐᾶσαι τοῖς βουλομένοις ἐπιτείχισμά τι, καλῶς εἶχεν, οὔθ' ὅλον ἐκπληρῶσαι τὸν τεῖχος ἴσχυσε τὸν μέχρι τοῦ κουιρίνου. ἤλεγξε δὲ σέρβιος τὴν ἔκλειψιν. ἀνεπλήρωσε γὰρ προσθεὶς τόν τε ἠσκυλῖνον λόφον, καὶ τὸν οὐιμίναλον. καὶ ταῦτα δ' εὐέφοδα τοῖς ἔξωθεν ἐστί. διόπερ τάφρον βαθεῖαν ὀρύξαντες, εἰς τὸ ἐντὸς ἐδέξαντο τὴν γῆν. καὶ ἐξέτειναν ὅσον ἑξαστάδιον χῶμα ἐπὶ τῇ ἐντὸς ὀφρύϊ τῆς τάφρου. καὶ ἐπέβαλον τεῖχος καὶ πύργους ἀπὸ τῆς κολίνας πύλης, μέχρι τῆς ἠσκυλίνας. ὑπὸ μέσῳ δὲ τῷ χώματι, τρίτη ἐστὶ πύλη ὁμώνυμος τῷ οὐιμινάλι λόφῳ. τὸ μὲν οὖν ἔρυμα τοιοῦτον ἐστὶ τὸ τῆς πόλεως. ἐρυμάτων ἑτέρων δεόμενον. καί μοι δοκοῦσιν οἱ πρῶτοι τὸν αὐτὸν λαβεῖν διαλογισμὸν περί τε σφῶν αὐτῶν, καὶ περὶ τῶν ὕστερον. διότι ῥωμαίοις προσῆκεν οὐκ ἀπὸ τῶν ἐρυμάτων, ἀλλὰ ἀπὸ τῶν ὅπλων καὶ τῆς οἰκείας ἀρετῆς ἔχειν τὴν ἀσφάλειαν καὶ τὴν ἄλλην εὐπορείαν, προβλήματα νομίζοντας, οὐ τὰ τείχη τοῖς ἀνδράσιν. ἀλλὰ τοὺς ἄνδρας τοῖς τείχεσι. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἀλλοτρίας τῆς κύκλῳ χώρας οὔσης ἀγαθῆς τε καὶ πολλῆς, τοῦ δὲ τῆς πόλεως ἐδάφους εὐεπιχειρήτου, τὸ μακαριοθησόμενον οὐδὲν ἦν τοπικὸν εὐκλήρημα. τῇ δ' ἀρετῇ καὶ τῷ πόνῳ τῆς χώρας οἰκείας γενομένης ἐφάνη συνδρομή τις ἀγαθῶν, ἅπασαν εὐφυΐαν ὑπερβάλλουσα, δι' ἣν ἐπὶ τοσοῦτον αὐξηθεῖσα ἡ πόλις ἀντέχει. τοῦτο μὲν τροφῇ, τοῦτο δὲ ξύλοις, καὶ λίθοις πρὸς τὰς οἰκοδομίας, ἃς ἀδιαλείπτως ποιοῦσιν αἱ συμπτώσεις καὶ ἐμπρήσεις, καὶ μεταπράσεις, ἀδιάλειπτοι, καὶ αὗται οὖσαι, καὶ γὰρ αἱ μεταπράσεις, ἑκούσιοί τινες συμπτώσεις εἰσὶ, καταβαλόντων καὶ ἀνοικοδομούντων πρὸς τὰς ἐπιθυμίας ἕτερα ἐξ ἑτέρων. πρὸς ταῦτ' οὖν, τό, τε τῶν μετάλλων πλῆθος, καὶ ἡ ὕλη, καὶ οἱ κατακομίζοντες ποταμοὶ, θαυμαστὴν παρέχουσι τὴν ὑποχορηγίαν. πρῶτος μὲν ἀνίων, ἐξ ἄλβας ῥέων τῆς πρὸς μάρσοις λατίνης πόλεως, καὶ διὰ τοῦ ὑπ' αὐτῇ πεδίου μέχρι τῆς πρὸς τὸν τίβεριν συμβολῆς. ἔπειθ' ὁ νὰρ, καὶ ὁ τινίας. οἱ διὰ τῆς ὀμβρικῆς εἰς τὸν αὐτὸν καταφερόμενοι ποταμὸν τὸν τίβεριν. διὰ δὲ τυρρηνίας καὶ τῆς κλουσίνης, ὁ κλάνις. ἐπεμελήθη μὲν οὖν ὁ σεβαστὸς καῖσαρ, τῶν τοιούτων ἐλαττωμάτων τῆς πόλεως. πρὸς μὲν τὰς ἐμπρήσεις, συντάξας στρατιωτικὸν ἐκ τῶν ἀπελευθέρων τὸ βοηθῆσον. πρὸς δὲ τὰς συμπτώσεις τὰ ὕψη τῶν καινῶν οἰκοδομημάτων καθελὼν, καὶ κωλύσας ἐξαίρειν ποδῶν ο̄ τὸ πρὸς ταῖς ὁδοῖς ταῖς δημοσίαις. ἀλλ' ὅμως ἐπέλιπεν ἂν ἡ ἐπανόρθωσις, εἰ μὴ τὰ μέταλλα καὶ ἡ ὕλη, καὶ τὸ τῆς πορθμείας εὐμεταχείριστον ἀντεῖχε. ταῦτα μὲν οὖν ἡ φύσις τῆς χώρας παρέχεται τὰ εὐτυχήματα τῇ πόλει. προσέθεσαν δὲ οἱ ῥωμαῖοι καὶ τὰ ἐκ τῆς προνοίας. τῶν γὰρ ἑλλήνων περὶ τὰς κτίσεις μάλιστα εὐτυχῆσαι δοξάντων, ὅτι κάλλους ἐστοχάζοντο, καὶ ἐρυμνότητος καὶ λιμένων, καὶ χώρας εὐφυοῦς, οὗτοι προυνόησαν μάλιστα ὧν ὀλιγόρησαν ἐκεῖνοι. στρώσεως ὁδῶν, καὶ ὑδάτων εἰσαγωγῆς, καὶ ὑπονόμων τῶν δυναμένων ἐκκλύζειν τὰ λύματα τῆς πόλεως εἰς τὸν τίβεριν. ἔστρωσαν δὲ, καὶ τὰς κατὰ τὴν χώραν ὁδούς. προσθέντες ἐκκοπάς τε λόφων. καὶ ἐγχώσεις κοιλάδων. ὥς τε τὰς ἁρμαμάξας δέχεσθαι πορθμείων φορτία. οἱ δ' ὑπόνομοι, συννόμῳ λίθῳ κατακαμφθέντες ὁδοὺς ἁμάξαις χόρτου πορευταῖς, ἐνίας ἀπολελοίπασι. τοσοῦτον δ' ἐστὶ τὸ εἰσαγώγιμον ὕδωρ διὰ τῶν ὑδραγωγείων, ὥς τε ποταμοὺς διὰ τῆς πόλεως καὶ τῶν ὑπονόμων ῥεῖν, ἅπασαν δὲ οἰκίαν σχεδὸν δεξαμενὰς καὶ σίφωνας καὶ κρουνοὺς ἔχειν ἀφθόνους. ὧν πλείστην ἐπιμέλειαν ἐποιήσατο μάρκος ἀγρίππας. πολλοῖς καὶ ἄλλοις ἀναθήμασι κοσμήσας τὴν πόλιν. ὡς δ' εἰπεῖν οἱ παλαιοὶ μὲν τοῦ κάλλους τῆς ῥώμης ὀλιγόρουν. πρὸς ἄλλοις μείζοσι καὶ ἀναγκαιοτέροις ὄντες. οἱ δ' ὕστερον καὶ μάλιστα οἱ νῦν καθ' ἡμᾶς, οὐδὲ, τούτου καθυστέρησαν, ἀλλ' ἀναθημάτων πολλῶν, καὶ καλῶν ἐπλήρωσαν τὴν πόλιν, καὶ γὰρ πομπήιος καὶ ὁ θεὸς καῖσαρ καὶ ὁ σεβαστὸς, καὶ οἱ τούτου παῖδες καὶ οἱ φίλοι καὶ ἡ γυνὴ καὶ ἡ ἀδελφὴ, πᾶσαν ὑπερβάλλοντο σπουδὴν, καὶ δαπάνην εἰς τὰς κατασκευάς. τούτων δὲ τὰ πλεῖστα, ὁ μάρτιος ἔχει κάμπος. πρὸς τῇ φύσει προσλαβὼν καὶ τὸν ἐκ τῆς προνοίας κόσμον. καὶ γὰρ τὸ μέγεθος τοῦ πεδίου θαυμαστὸν ἅμα. καὶ τὰς ἁρματοδρομίας,

καὶ τὴν ἄλλην ἱππασίαν, ἀκώλυτον παρέχον τῷ τοσούτῳ πλήθει, τῶν σφαίρᾳ, καὶ κίρκῳ καὶ παλαίστρᾳ γυμναζομένων. καὶ τὰ περικείμενα ἔργα, καὶ τὸ ἔδαφος ποάζον δι' ἔτους. καὶ τῶν λόφων στεφάναι, τὸ ὑπὲρ τοῦ ποταμοῦ μέχρι τοῦ ῥείθρου σκηνογραφικὴν ὄψιν ἐπιδεικνύμεναι, δυσαπάλλακτον παρέχουσι τὴν θέαν. πλησίον δ' ἐστὶ τοῦ πεδίου τούτου καὶ ἄλλο πεδίον. καὶ στοαὶ κύκλῳ παμπληθεῖς. καὶ ἄλση. καὶ θέατρα τρία. καὶ ἀμφιθέατρον. καὶ ναοὶ πολυτελεῖς, καὶ συνεχεῖς ἀλλήλοις. ὡς πάρεργον ἂν δόξαιεν ἀποφαίνειν τὴν ἄλλην πόλιν. διόπερ ἱεροπρεπέστατον νομίσαντες τοῦτον τὸν τόπον, καὶ τὰ τῶν ἐπιφανεστάτων μνήματα, ἐνταῦθα κατεσκεύασαν ἀνδρῶν, καὶ γυναικῶν. ἀξιολογώτατον δὲ τὸ μαυσώλειον καλούμενον, ἐπὶ κρηπῖδος ὑψηλῆς λευκολίθου πρὸς τῷ ποταμῷ χῶμα, ἄχρι κορυφῆς τοῖς ἀειθαλέσι τῶν δένδρων συνηρεφές, ἐπ' ἄκρῳ μὲν οὖν εἰκών ἐστι χαλκῆ τοῦ σεβαστοῦ καίσαρος. ὑπὸ δὲ τῷ χώματι, θῆκαι εἰσὶν αὐτοῦ, καὶ τῶν συγγενῶν καὶ οἰκείων. ὄπισθεν δὲ μέγα ἄλσος, περιπάτους θαυμαστοὺς ἔχον, ἐν μέσῳ δὲ τῷ πεδίῳ ὁ τῆς καύστρας αὐτοῦ περίβολος. καὶ οὗτος λίθου λευκοῦ. κύκλῳ μὲν περικείμενον ἔχων σιδηροῦν περίφραγμα. ἐντὸς δ' αἰγείροις κατάφυτον. πάλιν δ' εἴτις εἰς τὴν ἀγορὰν παρελθὼν τὴν ἀρχαίαν, ἄλλην ἐξ ἄλλης ἴδοι παραβεβλημένην ταύτην. καὶ βασιλικὰς στοὰς καὶ ναούς. ἴδοι. δὲ καὶ τὸ καπιτώλιον, καὶ τὰ ἐνταῦθα ἔργα καὶ τὰ ἐν τῷ παλατίῳ, καὶ τῷ τῆς λιβύης περιπάτῳ, ῥᾳδίως ἐκλάθοιτ' ἂν τῶν ἔξωθεν. τοιαύτη μὲν ἡ ῥώμη. τῶν δ' ἄλλων τῆς λατίνης πόλεων, τὰς μὲν ἑτέροις γνωρίσμασι. τὰς δ' ὁδοῖς τοῖς, ἀφορίσαιτ' ἄν τις ταῖς γνωριμωτάταις ὅσαι διὰ τῆς λατίνης ἔστρωνται. ἢ γὰρ ἐπὶ ταύταις, ἢ παρὰ ταύταις ἢ μεταξὺ ἵδρυνται. γνωριμώταται δὲ τῶν ὁδῶν, ἥ τε ἀππία καὶ ἡ λατίνη καὶ ἡ οὐαλερία. ἡ μὲν, τὰ πρὸς θάλατταν ἀφορίζουσα μέρη τῆς λατίνης, μέχρι σινοέσσης. ἡ δὲ, τὰ πρὸς τῇ σαβίνῃ μέχρι μαρσῶν. μέση δ' αὐτῶν ἡ λατίνη ἡ συμπίπτουσα τῇ ἀππίᾳ κατὰ κάσινον πόλιν. διέχουσα καπύης ἐννεακαίδεκα σταδίους. ἄρχεται δὲ τὸ ἀπὸ τῆς ἀππίας ἐν ἀριστερᾷ ἀπ' αὐτῆς ἐκτρεπομένη πλησίον ῥώμης. εἶτα διὰ τοῦ τουσκλανοῦ ὄρους ὑπερβᾶσα, μεταξὺ τούσκλου πόλεως, καὶ τοῦ ἀλβανοῦ ὄρους, κάτεισιν ἐπὶ ἄλγιδον πολίχνιον, καὶ πικτὰς πανδοχεῖα. εἶτα συμπίπτει καὶ ἡ λαβικανή. ἀρξαμένη μὲν ἀπὸ τῆς ἐσκυλίνης πύλης, ἀφ' ἧς καὶ ἡ πραινεστίνη, ἐν ἀριστερᾷ δ' ἀφεῖσα καὶ ταύτην, καὶ τὸ πεδίον τὸ ἐσκύλινον, πρόσεισιν ἐπὶ πλείους τῶν ρ'. καὶ κ'. σταδίων, καὶ πλησιάσασα τῷ παλαιῷ λαβικῷ, κτίσματι κατεσπασμένῳ κειμένῳ δ' ἐφ' ὕψους, τοῦτο μὲν καὶ τὸ τούσκουλον ἐν δεξιοῖς ἀπολείπει. τελευτᾷ δὲ πρὸς τὰς πικτὰς καὶ τὴν λατίνην. διέχει δὲ τῆς ῥώμης τὸ χωρίον τοῦτο σ'. καὶ ι' σταδίους. εἶθ' ἑξῆς μὲν ἐπ' αὐτῆς τῆς λατίνης, εἰσὶν ἐπίσημοι κατοικίαι καὶ πόλεις. φερέντιον. φορούσινον. παρ' ἣν ὁ κόσας ῥεῖ ποταμός. φαβρατερία. παρ' ἣν ὁ τρῆρος ῥεῖ. ἀκούινον μεγάλη πόλις ἐστί. παρ' ἣν ὁ μέλπις ῥεῖ ποταμὸς μέγας. ἰντεράμνιον ὄν. ἐν συμβολῇ δυοῖν ποταμῶν κείμενον λείριός τε καὶ ἑτέρου. κασίνου. καὶ αὕτη πόλις ἀξιόλογος ὑστάτη τῶν λατίνων. τὸ γὰρ τέανον τὸ καλούμενον σιδικῖνον ἐφεξῆς κείμενον, ἐκ τοῦ ἐπιθέτου δηλοῦται. διότι τῶν σιδικινῶν ἐστιν. οὗτοι δὲ ὄσκοι, καμπανῶν ἔθνος ἐκλελοιπός. ὥστε λέγοιτ' ἂν τῆς καμπανίας καὶ αὕτη μεγίστη οὖσα τῶν ἐπὶ τῇ λατίνῃ πόλεων, καὶ ἡ ἐφεξῆς ἡ τῶν καλήνων. καὶ αὕτη ἀξιόλογος συνάπτουσα τῷ κασιλίνῳ. ἐφ' ἑκάτερα δὲ τῆς λατίνης, ἐν δεξιᾷ μέν εἰσιν αἱ μεταξὺ αὐτῆς καὶ τῆς ἀππίας σητία τε καὶ σιγνία φέρουσαι οἶνον, ἡ μὲν, τῶν πολυτελῶν ἕνα. ἡ δὲ τὸν σταλτικώτατον κοιλίας, τὸν σίγνιον λεγόμενον. πρὸ δὲ ταύτης ἐστὶ πρίβερνον καὶ κόρα, καὶ σύεσσα τραπόντιόν τε καὶ οὐελίτραι, καὶ ἀλέτριον. ἔτι δὲ φρεγέλλαι παρ' ἣν ὁ λεῖρις ῥεῖ ὁ εἰς τὰς μιντούρνας ἐκδιδούς. νῦν μὲν κώμη. πόλις δέ ποτε γεγονυῖα ἀξιόλογος. καὶ τὰς πολλὰς τῶν ἀρτίως λεχθεισῶν παροικίας πρότερον ἐσχηκυῖα. αἳ νῦν εἰς αὐτὴν συνέρχονται, ἀγορὰς ποιούμεναι καὶ ἱερουργίας τινάς. κατεσκάφη δ' ὑπὸ ῥωμαίων ἀποστᾶσα. πλεῖσται δ' εἰσὶ, καὶ τούτων τε ἐν τῇ λατίνῃ καὶ τῶν ἐπέκεινα. ἐν τῇ ἑρνίκων τε καὶ αἴκων καὶ οὐόλσκων ἱδρυμέναι. ῥωμαίων δ' εἰσὶ κτίσματα. ἐν ἀριστερᾷ δὲ τῆς λατίνης αἱ μεταξὺ αὐτῆς, καὶ τῆς οὐαλερίας, γάβιοι μὲν ἐν τῇ πραινεστίνῃ ὁδῷ κειμένη λατόμιον ἔχουσα ὑπουργὸν τῇ ῥώμῃ μάλιστα τῶν ἄλλων. διέχουσα τὸ ἴσον τῆς ῥώμης τε καὶ πραινέστου περὶ ἑκατὸν σταδίους. εἶθ' ἡ πραίνεστος. περὶ ἧς αὐτίκα ἐροῦμεν. εἶθ' ἡ ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς ὑπὲρ πραίνεστον. ἥ τε τῶν ἑρνίκων πολίχνη, καὶ πίτουλον. καὶ ἀναγνία πόλις ἀξιόλογος. καὶ κερεάτε. καὶ σώρα παρ' ἣν ὁ λεῖρις παρεξιὼν εἰς φρεγέλλας ῥεῖ καὶ μιντούρνας. ἔπειτα ἄλλα τινὰ καὶ οὐενάφριον. ὅθεν τὸ κάλλιστον ἔλαιον. ἡ μὲν οὖν πόλις ἐφ' ὕψους κεῖται παραρρεῖ δὲ τὴν τοῦ λόφου ῥίζαν ὁ οὐλτοῦρνος. ὃς καὶ παρὰ τὸ βασιλῖνον ἐνεχθεὶς, ἐκδίδωσι κατὰ τὴν ὁμώνυμον αὐτῷ πόλιν. αἰσερνία, δὲ καὶ ἀλιφαὶ ἤδη σαμνιτικαὶ πόλεις εἰσίν. ἡ μὲν, ἀνῃρημένη κατὰ τὸν μαρσικὸν πόλεμον. ἡ δ' ἔτι συμμένουσα. ἡ οὐαλερία δ' ἄρχεται μὲν ἀπὸ τιβούρων, ἄγει δ' ἐπὶ μαρσοὺς, καὶ κορφίνιον τὴν τῶν πελιγνῶν μητρόπολιν. εἰσὶ δ' ἐν αὐτῇ λατῖναι πόλεις οὐαλερία τε, καὶ καρσέολοι. καὶ ἄλβα. πλησίον δὲ, καὶ πόλις κούκουλον. ἐν ὄψει δ' εἰσὶ τοῖς ἐν ῥώμῃ τίβουρά τε καὶ πραίνεστος καὶ τούσκλον. τίβουρα μὲν, ἐν ᾧ τὸ ἡράκλειον, καὶ ὁ καταράκτης, ὃν ποιεῖ πλωτὸς ὢν ὁ ἀνίων. ἀφ' ὕψους μεγάλου καταπίπτων εἰς φάραγγα βαθεῖαν. καὶ κατάλσει, πρὸς αὐτῇ τῇ πόλει

ἐντεῦθεν δὲ διέξεισιν εὐκαρπότατον, παρὰ τὰ μέταλλα τοῦ λίθου τοῦ τιβουρτίνου, καὶ τοῦ ἐν γαβίοις. καὶ τοῦ ἐ-
ρυθροῦ λεγομένου. ὥστε τὴν ἐκ τῶν μετάλλων ἐξαγωγὴν καὶ τὴν πορθμείαν εὐμαρῆ τελέως εἶναι, τῶν πλεί-
στων ἔργων τῆς ῥώμης, ἐντεῦθεν κατασκευαζομένων. ἐν δὲ τῷ πεδίῳ τούτῳ ὁ ἀνίων διέξεισι. καὶ τὰ ἄλβου-
λα καλούμενα ῥεῖ ὕδατα ψυχρά. ἐκ πολλῶν πηγῶν πρὸς ποικίλας νόσους, καὶ πίνουσι καὶ ἐγκαθημένοις ὑγι-
εινά. τοιαῦτα δὲ καὶ τὰ λάβανα, οὐκ ἄπωθεν τούτων, ἐν τῇ νωμεντάνῃ καὶ τοῖς περὶ ἤρητον τόποις. πραίνεστος δ'
ἐστὶν ὅπου ἐστὶ τὸ τῆς τύχης ἱερὸν ἐπίσημον χρηστηριάζον. ἀμφότεραι δ' αἱ πόλεις αὗται, τῇ αὐτῇ προσιδρυμέ-
ναι τυγχάνουσιν ὀρεινῇ. διέχουσι δ' ἀλλήλων ὅσον σταδίους ἑκατόν. τῆς δὲ ῥώμης πραίνεστος μὲν καὶ διπλάσιον. τί-
βουρα δ' ἔλαττον. φασὶ δ' ἑλληνίδας ἀμφοτέρας. πραίνεστον γοῦν πολυστέφανον καλεῖσθαι πρότερον. ἐρυμνὴ
μὲν οὖν ἑκατέρα. πολὺ δ' ἐρυμνοτέρα πραίνεστος. ἄκραν γὰρ ἔχει τῆς μὲν πόλεως ὕπερθεν ὄρος ὑψηλόν. ὄπισθεν
δ' ἀπὸ τῆς συνεχούσης ὀρεινῆς, αὐχένι διεζευγμένον. ὑπεραῖρον καὶ δυσὶ σταδίοις τούτου πρὸς ὀρθίαν ἀνάβασιν.
πρὸς δὲ τῇ ἐρυμνότητι καὶ διώρυξι κρυπταῖς διατέτρηται πανταχόθεν, μέχρι τῶν πεδίων. τῶν μὲν, ὑδρίας χά-
ριν. τῶν δ' ἐξόδων λαθραίων. ὧν ἐν μιᾷ, μάριος πολιορκούμενος ἀπέθανε. ταῖς μὲν οὖν ἄλλαις πόλεσι πλεῖστον τὸ
εὐερκὲς πρὸς ἀγαθοῦ τίθεται. πραινεστίνοις δὲ συμφορὰ γεγένηται διὰ τὰς ῥωμαίων στάσεις. καταφεύγουσι γὰρ ἐκεῖ-
σε οἱ νεωτερίσαντες. ἐκπολιορκηθέντων δὲ, πρὸς τῇ κακώσει τῆς πόλεως, καὶ τὴν χώραν ἀπαλλοτριοῦσθαι
συμβαίνει τῆς αἰτίας μεταφερομένης, ἐπὶ τοὺς ἀναιτίους. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς χώρας οὐέρεστις ποταμός. πρὸς
ἕω δὲ τῆς ῥώμης εἰσὶν αἱ λεχθεῖσαι πόλεις. ἐνδοτέρω δὲ τῆς κατ' αὐτὰς ὀρεινῆς, ἄλλη ῥάχις ἐστὶ, μεταξὺ
αὐλῶνα καταλείπουσα τὸν κατὰ ἄλγιδον ὑψηλὴ μέχρι τοῦ ἀλβανοῦ ὄρους. ἐπὶ ταύτης δὴ τὸ τοῦ-
σκλον ἵδρυται. πόλις οὐ φαύλως κατεσκευασμένη. κεκόσμηται δὲ ταῖς κύκλῳ φυτείαις καὶ οἰκο-
δομίαις. καὶ μάλιστα ταῖς ὑποπιπτούσαις ἐπὶ τὸ κατὰ τὴν ῥώμην μέρος. τὸ γὰρ τοῦσκλον ἐνταῦθα
ἐστὶ λόφος εὔγεως καὶ εὔυδρος. κορυφούμενος ἠρέμα πολλαχοῦ, καὶ δεχόμενος βασιλείων κατα-
σκευὰς ἐκπρεπεστάτας. συνεχὴς δ' ἐστὶ καὶ τὰ τῷ ἀλβανῷ ὄρει ὑποπίπτοντα. τὴν αὐτὴν τε ἀρετὴν
ἔχοντα, καὶ κατασκευήν. ἐφεξῆς δ' ἐστὶ πεδία, τὰ μὲν, πρὸς τὴν ῥώμην συνάπτοντα. καὶ τὰ προά-
στεια αὐτῆς. τὰ δὲ, πρὸς τὴν θάλατταν. τὰ μὲν οὖν πρὸς τὴν θάλατταν, ἧττον ἐστὶν ὑγιεινά. τὰ δὲ ἄλλα
εὐάγωγά τε καὶ παραπλησίως ἐξησκημένα. μετὰ δὲ τὸ ἀλβανὸν ἀρικία ἐστὶ πόλις ἐπὶ τῇ ὁδῷ τῇ ἀ-
ππίᾳ. στάδιοι δ' εἰσὶν ἐκ τῆς ῥώμης ρξ. κοῖλος δ' ἐστὶν ὁ τόπος. ἔχει δ' ὅμως ἐρυμνὴν ἄκραν, ὑπέρκει-
ται δ' αὐτῆς, τὸ μὲν λανούιον, πόλις ῥωμαίων ἐν δεξιᾷ τῆς ἀππίας ὁδοῦ. ἀφ' ἧς ἔποπτός ἐστι θά-
λαττα ἐστὶ καὶ τὸ ἄντιον. τὸ δ' ἀρτεμίσιον ὃ καλοῦσι νέμος, ἐκ τοῦ ἐν ἀριστερᾷ μέρους τῆς ὁδοῦ τῆς ἐξ
ἀρικίας ἀναβαίνουσιν εἰς τὴν ἀρικίνην τὸ ἱερόν. λέγουσι δ' εἶναι ἀφίδρυμα τῆς ταυροπόλου. καὶ
γάρ τι βαρβαρικὸν κρατεῖ καὶ σκυθικὸν περὶ τὸ ἱερὸν ἔθος. καθίσταται γὰρ ἱερεὺς, ὁ γενηθεὶς
αὐτόχειρ τοῦ ἱερωμένου πρότερον δραπέτης ἀνήρ. ξιφήρης οὖν ἐστὶν ἀεὶ περισκοπῶν τὰς ἐπιθέσεις. ἕ-
τοιμος ἀμύνεσθαι. τὸ δ' ἱερὸν ἐν ἄλσει. πρόκειται δὲ λίμνη πελαγίζουσα. κύκλῳ δ' ὀρεινὴ συνεχὴς
ὀφρὺς περίκειται. καὶ λίαν ὑψηλή. καὶ τὸ ἱερὸν καὶ τὸ ὕδωρ ἀπολαμβάνουσα ἐν κοίλῳ τόπῳ καὶ βα-
θεῖ. τὰς μὲν οὖν πηγὰς ὁρᾶν ἐστὶν ἐξ ὧν ἡ λίμνη πληροῦται. τούτων δ' ἐστὶν ἡ ἐγερία καλουμένη δαίμο-
νός τινος ἐπώνυμος. αἱ δ' ἀπορρεύσεις, ἐνταῦθα μὲν ἄδηλοί εἰσιν. ἔξω δὲ δείκνυνται πόρρω πρὸς τὴν ἐ-
πιφάνειαν ἔχουσαι. πλησίον δ' ἐστὶ τῶν χωρίων τούτων καὶ ἄλβανον ὄρος πολὺ ὑπερκύπτον τοῦ ἀρ-
τεμισίου. καὶ τῶν περὶ αὐτὸ ὀφρύων, καίπερ ὑψηλῶν οὐσῶν, καὶ ὀρθίων ἱκανῶς. ἔχει δὲ καὶ τοῦτο λίμνην
πολὺ μείζω τῆς κατὰ τὸ ἀρτεμίσιον ὄρος. προσωτέρω δὲ τούτων, αἱ λεχθεῖσαι πρότερον πόλεις τῆς
λατίνης εἰσί. μάλιστα δὲ ἐν μεσογαίᾳ, τῶν λατίνων πόλεων, ἔστιν ἡ ἄλβη, ὁμοροῦσα μαρσοῖς. ἵδρυται
ἐφ' ὑψηλοῦ πάγου λίμνης φουκίνας πλησίον. πελαγία τὸ μέγεθος. χρῶνται δ' αὐτῇ μάλιστα μὲν μαρ-
σοὶ καὶ πάντες οἱ πλησιόχωροι. φασὶ δ' αὐτὴν καὶ πληροῦσθαί ποτε μέχρι τῆς ὀρεινῆς. καὶ ταπεινοῦσθαι
πάλιν, ὥστε ἀναψύχειν τοὺς λιμνωθέντας τόπους. καὶ γεωργεῖσθαι παρέχειν, ἤτοι μεταστάσει τῶν κα-
τὰ βάθος ὑγρῶν σποράδην, καὶ ἀδήλως γίνονται. πάλιν δ' ἐπισυρρέουσιν, ἢ τελέως ἐκλείπουσι τε
αἱ πηγαὶ, καὶ πάλιν συνθλίβονται. καθάπερ περὶ τοῦ ἀμενάνου συμβαίνειν φασί. τοῦ διὰ κατάνης
ῥέοντος. ἐκλείπει γὰρ ἐπὶ πολλὰ ἔτη καὶ πάλιν ῥεῖ. ἐκ δὲ τῆς φουκίνας εἶναι τὰς πηγὰς ἱστοροῦσι
τοῦ μαρκίου ὕδατος, τοῦ τὴν ῥώμην ποτίζοντος καὶ παρὰ τἆλλα εὐδοκιμοῦντος ὕδατα. τὴν δὲ ἄλβαν
διὰ τὸ ἐν βάθει τῆς χώρας ἱδρῦσθαι καὶ διὰ τὸ εὐερκὲς ἀντὶ φρουρᾶς ἐχρήσαντο πολλάκις ῥωμαῖοι,
τοὺς φυλακῆς δεομένους ἐνταῦθα καθείργοντες. ἐπεὶ δ' ἀπὸ τῶν προσαλπείων ἐθνῶν ἀρξάμενοι καὶ τῶν
πρὸς αὐτοῖς ὀρῶν τῶν ἀπεννίνων. ἔπειθ' ὑπερβάντες ταῦτα, τὴν ἐντὸς ἐπήλθομεν πᾶσαν ὅση μεταξὺ
κεῖται τοῦ τυρρηνικοῦ πελάγους, καὶ τῶν ἀπεννίνων ὀρῶν τῶν κεκλιμένων πρὸς τὴν ἀδρίαν μέχρι σαυνιτῶν
καὶ καμπανῶν. νῦν ἐπανιόντες δηλώσομεν τὰ ἐν τοῖς ὄρεσι τούτοις οἰκοῦντα καὶ ταῖς ὑπωρείαις τῆς τε ἐκτὸς,
μέχρι τῆς παραλίας τῆς ἀδριατικῆς, καὶ τῆς ἐντός. ἀρκτέον δὲ πάλιν ἀπὸ τῶν κελτικῶν ὀρῶν. ἔστι δ' ἡ πικεντί-
νη μετὰ τὰς τῶν ὀμβρικῶν πόλεις τὰς μεταξὺ ἀριμίνου καὶ ἀγκῶνος. ὥρμηνται δὲ ἐκ τῆς σαβίνης οἱ πικεντῖνοι.
δρυοκολάπτου τὴν ὁδὸν ἡγησαμένου τοῖς ἀρχηγέταις. ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα. πῖκον γὰρ τὸν ὄρνιν τοῦτον ὀνομάζουσι. καὶ

νομίζουσιν ἄρεος ἱερόν. οἰκοῦσι δ' ἀπὸ τῶν ὀρῶν ἀρξάμενοι, μέχρι τῶν πεδίων καὶ τῆς θαλάττης. τὸ μῆκος ἔχον
τες ηὐξημένην μᾶλλον, ἢ πλάτος τὴν χώραν. ἀγαθὴν πρὸς ἅπαντα. βελτίω δὲ τοῖς ξυλίνοις καρποῖς,
ἢ σιτικοῖς. ἔστι δ' εὖρος μὲν τὸ ἀπὸ τῶν ὀρῶν ἐπὶ θάλατταν, μᾶλλον τοῖς διαστήμασι. μῆκος δ' ἀπὸ αἰσίου πο
ταμοῦ μέχρι λεάστρου, παράπλουν ἔχον σταδίων, ω. πόλις δὲ ἀγκὼν μὲν ἑλληνὶς, συρακουσίων κτίσμα,
τῶν φυγόντων τὴν διονυσίου τυραννίδα. κεῖται δ' ἐπ' ἄκρας μὲν, λιμένα ἐμπεριλαμβανούσης, τῇ πρὸς
τὰς ἄρκτους ἐπιστροφῇ. σφόδρα δ' εὔοινός ἐστι, καὶ εὔπυρόφορος. πλησίον δ' αὐτῆς, αὔξουμον πόλις
μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης. εἶτα σεπτέμπεδα καὶ πνευεντία. καὶ ποτεντία, καὶ φίρμον πικηνόν. ἐπί
νειον δὲ, ταύτης κάστελλον. ἐφεξῆς δὲ τὸ τῆς κύπρας ἱερόν. τυρρηνῶν ἵδρυμα καὶ κτίσμα. τὴν δ' ἥραν
ἐκεῖνοι κύπραν καλοῦσιν. εἶτα τρουεντῖνος ποταμὸς καὶ πόλις ἐπώνυμος. εἶτα καὶ τρυνόουν. καὶ ὁ μα
τεῖνος ποταμός. ῥέων ἀπὸ τῆς ἀδριανῶν πόλεως. ἔχον ἐπίνειον τῆς ἀδρίας ἐπώνυμον ἑαυτοῦ. ἔστι δ' ἐν
τῇ μεσογαίᾳ καὶ αὕτη καὶ τὸ ἄσκλον τὸ πικηνόν. ἐρυμνότατον χωρίον. καὶ ἐφ' ᾧ κεῖται τὸ τεῖχος. καὶ
τὰ περικείμενα ὄρη, στρατοπέδοις οὐ βάσιμα. ὑπὲρ δὲ τῆς πικεντίνης οὐήστιοί τε καὶ μαρσοί. καὶ πέλι
γνοι καὶ μαρουκῖνοι. καὶ φρεντανοὶ, σαννιτικὸν ἔθνος, τὴν ὀρεινὴν κατέχουσιν. ἐφαπτόμενοι μικρὰ τῆς
θαλάττης. ἔστι δὲ τὰ ἔθνη ταῦτα μικρὰ μὲν, ἀνδρικώτατα δέ. καὶ πολλάκις τὴν ἀρετὴν ταύτην ἐπι
δεδειγμένα ῥωμαίοις. πρῶτον μὲν ἡνίκα ἐπολέμουν. δεύτερον δὲ, ὅτε συνεστράτευον. τρίτον δ' ὅτε
δεόμενοι τυχεῖν ἐλευθερίας καὶ πολιτείας μὴ τυγχάνοντες, ἀπέστησαν. καὶ τὸν μαρσικὸν καλούμενον
ἐξῆψαν πόλεμον. κορφίνιον τὴν τῶν πελιγνῶν μητρόπολιν κοινὴν ἅπασι τοῖς ἰταλιώταις ἀποδείξαν
τες πόλιν, ἀντὶ τῆς ῥώμης, ὁρμητήριον τοῦ πολέμου, μετονομασθεῖσαν ἰταλικήν. καὶ ἐνταῦθα δὲ τοὺς συ
νεπομένους ἀθροίσαντες καὶ χειροτονήσαντες ὑπάτους καὶ στρατηγούς. δύο δ' ἔτη συνέμειναν ἐν τῷ πο
λέμῳ, μέχρι διεπράξαντο τὴν κοινωνίαν περὶ ἧς ἐπολέμουν. μαρσικὸν δὲ ὠνόμασαν αὐτὸν πόλεμον, ἀ
πὸ τῶν ἀρξάντων τῆς ἀποστάσεως. καὶ μάλιστα ἀπὸ πομπαιδίου. τὰ μὲν οὖν ἄλλα κωμηδὸν ζῶσιν. ἔχου
σι δὲ καὶ πόλεις ὑπὲρ μὲν τῆς θαλάττης τό τε κορφίνιον, καὶ σούλμων, καὶ μαρούιον καὶ τεατίνην τῶν
μαρουκίνων μητρόπολιν. ἐπ' αὐτῇ δὲ τῇ θαλάττῃ τό τε αὔτερνον, ὅμορον τῇ πευκεντίνῃ. ὁμώνυμον δὲ
τῷ ποταμῷ τῷ διορίζοντι τήν τε οὐηστίνην καὶ τὴν μαρουκίνην. ῥεῖ γὰρ ἐκ τῆς ἀμιτερνίνης. διὰ δὲ οὐη
στίνων παραλιπὼν ἐν δεξιᾷ τοὺς μαρουκίνους ὑπὲρ τῶν τῶν πελιγνῶν κειμένους ζεύγματι περατός.
τὸ δὲ πόλισμα τὸ ἐπώνυμον αὐτοῦ οὐηστίνων μέν ἐστι. κοινῷ δ' ἐπινείῳ χρῶνται, καὶ οἱ πελιγνοὶ καὶ οἱ
μαρουκῖνοι. διέχει δὲ τὸ ζεῦγμα τέτταρας καὶ εἴκοσι σταδίους ἀπὸ κορφινίου. μετὰ δὲ αὔτερνον ὄρτων ἐπί
νειον φρεντανῶν καὶ βοῦκα, καὶ αὐτὸ φρεντανῶν, ὅμορός τε αἴω τῷ ἀπούλῳ, ὀρτιόν ἐστιν ἐν τοῖς φρεντα
νοῖς πέτραι, ληστρικῶν ἀνθρώπων. δὶς αἱ οἰκήσεις, ἀπὸ τῶν ναυαγίων πήγνυνται. καὶ τ' ἄλλα θηριώδεις
εἶναι. μεταξὺ δὲ ὄρτωνος καὶ αὐτέρνου ὁ σάγρος ποταμὸς ὁρίζων τοὺς φρεντανοὺς ἀπὸ τῶν πελιγνῶν.
ὁ δὲ παράπλους ἀπὸ τῆς πικεντίνης ἐπὶ τοὺς ἀπούλους, οὓς οἱ ἕλληνες δαυνίους καλοῦσι σταδίων
ἐστὶν ὅσον, υν. ἑξῆς δὲ μετὰ τὴν λατίνην ἐστὶν, ἥ τε καμπανία παρήκουσα τῇ θαλάττῃ. καὶ ὑπὲρ ταύτην
ἡ σαμνῖτις παρήκουσα ἐν μεσογαίᾳ μέχρι φρεντανῶν καὶ τῶν δαυνίων. εἶτ' αὐτοὶ δαύνιοι. καὶ τἄλλα
ἔθνη τὰ μέχρι τοῦ σικελικοῦ πορθμοῦ. πρῶτον δὲ περὶ τῆς καμπανίας ῥητέον. ἔστι δ' ἀπὸ τῆς σινουέσ
σης, ἐπὶ μὲν τὴν ἑξῆς παραλίαν, κόλπος εὐμεγέθης. μέχρι μισηνοῦ. κἀκεῖθεν ἄλλος κόλπος πολὺ
μείζων τοῦ προτέρου. καλοῦσι δ' αὐτὸν κρατῆρα. ἀπὸ τοῦ μισηνοῦ, μέχρι τοῦ ἀθηναίου, δυοῖν ἀκρωτηρίων
κολπούμενον. ὑπὲρ δὲ τούτων τῶν ἠϊόνων καμπανία πᾶσα ἵδρυται. πεδίον εὐδαιμονέστατον τῶν ἁ
πάντων. περίκειται δ' αὐτῷ γεωλοφίαι τε εὔκαρποι, καὶ ὄρη τά τε τῶν σαυνιτῶν καὶ τὰ τῶν ὄσκων.
ἀντίοχος μὲν οὖν φησὶ τὴν χώραν ταύτην ὀπικοὺς οἰκῆσαι. τούτους δὲ καὶ αὔσονας καλεῖσθαι. πολύ
βιος δ' ἐμφαίνει, δύο ἔθνη νομίζων ταῦτα. ὀπικοὺς γάρ φησι καὶ αὔσονας οἰκεῖν τὴν χώραν ταύτην πε
ρὶ τὸν κρατῆρα. ἄλλοι δὲ λέγουσιν, οἰκούντων ὀπικῶν πρότερον, καὶ αὐσόνων. οἳ δ' ἐκείνους κατασχεῖν ὕ
στερον ὄσκων τι ἔθνος. τούτους δ' ὑπὸ κυμαίων ἐκείνους δ' ὑπὸ τυρρηνῶν ἐκπεσεῖν. διὰ γὰρ τὴν ἀρε
τὴν περιμάχητον γενέσθαι τὸ πεδίον. δώδεκα δὲ πόλεις ἐγκατοικήσαντες, τὴν οἷον κεφαλὴν, ὀνομάσαι
καπύην. διὰ δὲ τὴν τρυφὴν εἰς μαλακίαν τραπομένους, καθάπερ τῆς περὶ τὸν πάδον χώρας ἐξέστησαν,
οὕτω καὶ ταύτης παραχωρῆσαι σαυνίταις, τούτους δ' ὑπὸ ῥωμαίων ἐκπεσεῖν. τῆς δ' εὐκαρπίας ἐστὶ
σημεῖον, τὸ σῖτον ἐνταῦθα γίνεσθαι τὸν κάλλιστον. λέγω δὲ τὸν πύρινον. ἐξ οὗ καὶ ὁ χόνδρος κρείττων ὢν
πάσης καὶ ὀρύζης καὶ ἐν ὀλίγῳ σιτικῆς τροφῆς. ἱστορεῖται δ' ἔνια τῶν πεδίων σπείρεσθαι δι' ἔτους, δὶς
μὲν τῇ ζείᾳ. τὸ δὲ τρίτον ἐλύμῳ. τινὰ δὲ καὶ λαχανεύεσθαι τῷ τετάρτῳ σπόρῳ. καὶ μὴν τὸν οἶνον
τὸν κράτιστον ἐντεῦθεν ἔχουσι ῥωμαῖοι τὸν φάλερνον. καὶ τὸν στάτανον καὶ κάλανον. ἤδη δὲ καὶ ὁ σου
ρεντῖνος ἐνάμιλλος καθίσταται τούτοις. νεωστὶ πειραθεὶς ὅτι παλαίωσιν δέχεται. ὡς δ' αὔτως εὐέ
λαιός ἐστι, καὶ πᾶσα ἡ περὶ τὸ οὐένα φρον ὅμορον τοῖς πεδίοις ὄν. πόλεις δ' ἐπὶ μὲν τῇ θαλάττῃ με
τὰ τὴν σινούεσσαν, λίτερνον. ὅπου τὸ μνῆμα σκηπίωνος τοῦ πρώτου προσαγορευθέντος ἀφρι
κανοῦ. διετέλεσε γὰρ ἐνταῦθα τὸ τελευταῖον, ἀφεὶς τὰς πολιτείας κατ' ἀπέχθειαν τὴν πρός τινας.

παραῤῥεῖ δ' ὁ ὁμώνυμος τῇ πόλει ποταμός. ὡς δ' αὔτως καὶ ὁ οὐλτοῦρνος, ὁ ὁμώνυμός ἐστι τῇ παρ' αὐτὸν
πόλει ἐφεξῆς κειμένῃ. ῥεῖ δ' οὗτος διὰ οὐενάφρου καὶ τῆς καμπανίας μέσης. ταύταις δ' ἐφεξῆς ἐστι κύ-
μη. χαλκιδέων καὶ κυμαίων, παλαιότατον κτίσμα. πασῶν γάρ ἐστι πρεσβυτάτη τῶν τε σικελικῶν,
καὶ τῶν ἰταλιωτίδων. οἱ δὲ τὸν στόλον ἄγοντες, ἱπποκλῆς ὁ κυμαῖος, καὶ μεγασθένης ὁ χαλκιδεὺς, διω-
μολογήσαντο πρὸς σφᾶς αὐτοὺς, τῶν μὲν τὴν ἀποικίαν εἶναι. τῶν δὲ, τὴν ἐπωνυμίαν. ὅθεν νῦν μὲν προ-
σαγορεύεται κύμη. κτίσαι δ' αὐτὴν χαλκιδεῖς δοκοῦσι. πρότερον μὲν οὖν ηὐτύχει καὶ τὸ φλέγραιον
καλούμενον πεδίον. ἐν ᾧ τὰ περὶ τοὺς γίγαντας μυθεύουσιν, οὐκ ἄλλοθεν ὡς εἰκός. ἀλλ' ἐκ τοῦ περιμά-
χητον τὴν γῆν εἶναι δι' ἀρετήν. ὕστερον δὲ οἱ καμπανοὶ κύριοι καταστάντες τῆς πόλεως ὕβρισαν εἰς τοὺς
ἀνθρώπους πολλά. καὶ δὴ ταῖς γυναιξὶν αὐτῶν συνῴκησαν αὐτοί. ὅμως δ' οὖν ἔτι σώζεται πολλὰ
ἴχνη τοῦ ἑλληνικοῦ κόσμου. καὶ τῶν ἱερῶν καὶ τῶν νομίμων. ὀνομάζεσθαι δ' ἔνιοι κύμην ἀπὸ τῶν κυμά-
των φασί. ῥαχιώδης γὰρ καὶ προσεχὴς ὁ πλησίον αἰγιαλός. εἰσὶ δὲ καὶ κητεῖαι παρ' αὐτοῖς ἄρισται. ἐν
δὲ τῷ κόλπῳ τούτῳ καὶ ὕλη τίς ἐστι θαμνώδης. ἐπὶ πολλοὺς ἐκτεινομένη σταδίους. ἄνυδρος καὶ ἀμμώ-
δης. ἣν γαλλιναρίαν ὕλην καλοῦσιν. ἐνταῦθα δὲ λῃστήρια συνεστήσαντο οἱ πομπηΐου σέξτου ναύαρχοι, καθ'
ὃν καιρὸν σικελίαν ἀπέστησεν ἐκεῖνος. πλησίον δὲ τῆς κύμης, τὸ μισηνὸν ἀκρωτήριον. καὶ ἐν τῷ μετα-
ξὺ ἀχερουσία λίμνη, τῆς θαλάσσης ἀνάχυσίς τις τεναγώδης. κάμψαντι δὲ τὸ μισηνὸν, λιμὴν εὐθὺς ὑ-
πὸ τῇ ἄκρᾳ. καὶ μετὰ τοῦτον ἐγκολπίζουσα ἠϊὼν εἰς βάθος ἀξιόλογον. ἐν ᾗ αἱ βαῖαι καὶ τὰ θερμὰ ὕδα-
τα, καὶ τὰ πρὸς τρυφὴν καὶ πρὸς θεραπείαν νόσων ἐπιτήδεια. ταῖς δὲ βαίαις συνεχὴς ὅ, τε λοκρῖνος κόλ-
πος. καὶ ἐντὸς τούτου ὁ ἄορνος. χεῤῥόνησον ποιῶν τὴν ἀπολαμβανομένην μέχρι μισηνοῦ γῆν, ἀπὸ τῆς πλ-
αγίας τῆς μεταξὺ κύμης καὶ αὐτοῦ. λοιπὸς γάρ ἐστιν ὀλίγων σταδίων διὰ τῆς διώρυγος ἰσθμὸς ἐπ' αὐ-
τὴν κύμην καὶ τὴν πρὸς αὐτὴν θάλατταν. ἐμύθευον δ' οἱ πρὸ ἡμῶν ἐν τῷ ἀόρνῳ, τὰ περὶ τὴν νεκυίαν
τὴν ὁμηρικήν. καὶ δὴ καὶ νεκυομαντεῖον ἱστοροῦσιν ἐνταῦθα γενέσθαι. καὶ ὀδυσσέα εἰς τοῦτ' ἀφικέσθαι.
ἔστι δ' ὁ μὲν ἄορνος, κόλπος ἀγχιβαθὺς, καὶ ἀρτίστομος. λιμένος καὶ μέγεθος καὶ φύσιν ἔχων. χρείαν δ' οὐ
παρεχόμενος λιμένος, διὰ τὸ προκεῖσθαι τὸν λοκρῖνον κόλπον προσβραχὺ καὶ πολύν. περικλείεται
δ' ὁ ἄορνος, ὀφρύσιν ὀρθίαις, ὑπερκειμέναις πανταχόθεν πλὴν τοῦ εἴσπλου. νῦν μὲν ἡμέρως ἐκπε-
πονημέναις, πρότερον δὲ συνηρεφέσιν ἀγρίᾳ ὕλῃ μεγαλοδένδρῳ καὶ ἀβάτῳ. αἳ κατὰ δεισιδαιμονί-
αν κατάσκιον ἐποίουν τὸν κόλπον. προσεμύθευον δ' οἱ ἐπιχώριοι καὶ τοὺς ὄρνεις τοὺς ὑπερπετεῖς γι-
νομένους, καταπίπτειν εἰς τὸ ὕδωρ, φθειρομένους ὑπὸ τῶν ἀναφερομένων ἀέρων. καθάπερ ἐν τοῖς πλου-
τωνίοις. καὶ τοῦτο χωρίον πλουτώνιόν τι ὑπελάμβανον. καὶ τοὺς κιμμερίους ἐνταῦθα λέγεσθαι. καὶ
εἰσέπλεόν γε οἱ προθυσάμενοι καὶ ἱλασάμενοι τοὺς καταχθονίους δαίμονας. ὄντων τῶν ὑφηγουμέ-
νων τὰ τοιάδε ἱερέων, ἠργολαβηκότων τὸν τόπον. ἔστι δὲ πηγή τις αὐτόθι ποταμίου ὕδατος ἐπὶ τῇ θα-
λάσσῃ. τούτου δ' ἀπείχοντο πάντες, τὸ τῆς στυγὸς ὕδωρ νομίσαντες. καὶ τὸ μαντεῖον ἐνταῦθά που, ἵδρυ-
ται. τόν τε πυριφλεγέθοντα ἐκ τῶν θερμῶν ὑδάτων ἐτεκμαίροντο τῶν πλησίον καὶ τῆς ἀχερου-
σίας. ἔφορος δέ τις κιμμερίοις προσοικειῶν τὸν τόπον, φησὶν αὐτοὺς ἐν καταγείοις οἰκίαις οἰκεῖν ἃς κα-
λοῦσιν ἀργίλλας. καὶ διά τινων ὀρυγμάτων παρ' ἀλλήλους τε φοιτᾶν. καὶ τοὺς ξένους εἰς τὸ μαντεῖον
δέχεσθαι, πολὺ ὑπὸ γῆς ἱδρυμένον. ζῆν δ' ἀπὸ μεταλλείας καὶ τῶν μαντευομένων. καὶ τοῦ βασιλέως
ἀποδείξαντος αὐτοῖς συντάξεις. εἶναι δὲ τοῖς περὶ τὸ χρηστήριον ἔθος πάτριον, μηδένα τὸν ἥλιον ὁ-
ρᾶν. ἀλλὰ τῆς νυκτὸς ἔξω πορεύεσθαι τῶν χασμάτων. καὶ διὰ τοῦτο τὸν ποιητὴν περὶ αὐτῶν εἰπεῖν.
» ὡς ἄρα οὐδέ ποτ' αὐτοὺς ἠέλιος φαέθων ἐπιδέρκεται.

Ὕστερον δὲ διαφθαρῆναι τοὺς ἀνθρώπους, ὑπὸ βασιλέως τινός. οὐκ ἀποβάντος αὐτῷ τοῦ χρησμοῦ.
τὸ δὲ μαντεῖον ἔτι συμμένειν μεθεστηκὸς εἰς ἕτερον τόπον. τοιαῦτα μὲν οἱ πρὸ ἡμῶν ἐμυθολόγουν. νυνὶ
δὲ τῆς μὲν ὕλης τῆς περὶ τὸν ἄορνον κοπείσης ὑπὸ ἀγρίππα, τῶν δὲ χωρίων κατοικοδομηθέντων, ὑπὸ
δὲ τοῦ ἀόρνου διώρυγος ὑπονόμου τμηθείσης μέχρι κύμης, ἅπαντ' ἐκεῖνα ἐφάνη μῦθος. τοῦ κοκκηΐου τοῦ
ποιήσαντος τὴν διώρυγα ἐκείνην τε, καὶ ἐπὶ νέαν πόλιν ἐκ δικαιαρχίας ἐπὶ ταῖς βαίαις. ἐπακολου-
θήσαντός πως τῷ περὶ τῶν κιμμερίων ἀρτίως λεχθέντι λόγῳ. τυχὸν ἴσως καὶ πάτριον νομίσαντος
τῷ τόπῳ τούτῳ δι' ὀρυγμάτων εἶναι τὰς ὁδούς. ὁ δὲ λοκρῖνος κόλπος πλατύνεται μέχρι βαιῶν, χώ-
ματι εἰργόμενος ἀπὸ τῆς ἔξω θαλάττης ὀκτασταδίῳ τὸ μῆκος. πλάτος δὲ ἁμαξιτοῦ πλατείας. ὅ φασιν ἡ-
ρακλέα διαχῶσαι τὰς βοῦς ἐλαύνοντα τὰς γηρυόνου. δεχόμενον δ' ἐπιπολῆς τὸ κῦμα τοῖς χειμῶ-
σιν. ὥστε μὴ πεζεύεσθαι ῥᾳδίως. ἀγρίππας δ' ἐπεσκεύασεν. εἴσπλουν δ' ἔχει πλοίοις ἐλαφροῖς. ἐνορμί-
σασθαι μὲν ἄχρηστος. τῶν ὀστρέων δὲ θήραν ἔχων ἀφθονωτάτην. ἔνιοι δὲ τοῦτον αὐτὸν, τὴν λίμνην
εἶναι τὴν ἀχερουσίαν φασίν. ἀρτεμίδωρος δὲ αὐτὸν τὸν ἄορνον. τὰς δὲ βαίας, ἐπωνύμους εἶναι
λέγουσι, βαίου τῶν ὀδυσσέως ἑταίρου τινὸς καὶ τὸ μισηνόν. ἑξῆς δ' εἰσὶν αἱ περὶ δικαιαρχίαν ἀ-
κταὶ, καὶ αὐτὴ ἡ πόλις. ἦν δὲ πρότερον μὲν ἐπίνειον κυμαίων, ἐπ' ὀφρύος ἱδρυμένον. κατὰ δὲ τὴν
ἀννίβα στρατείαν, συνῴκησαν ῥωμαῖοι. καὶ μετωνόμασαν ποτιόλους, ἀπὸ τῶν φρεάτων. οἱ δ' ἀπὸ τῆς

δὲ συνδίας τῶν ὑδάτων, ἅπαν τὸ χωρίον ἐκεῖ μέχρι βαϊῶν, καὶ τῆς κυμαίας, ὅτι θείου πλῆρές ἐστι
καὶ πυρὸς, καὶ θερμῶν ὑδάτων. τινὲς δὲ καὶ φλέγραν διὰ τοῦτο τὴν κυμαίαν νομίζουσι κληθῆναι.
καὶ τῶν πεπτωκότων γιγάντων τὰ κεραύνια τραύματα, ἀναφέρειν τὰς τοιαύτας προχοὰς τοῦ πυρὸς
καὶ τοῦ ὕδατος. ἡ δὲ πόλις ἐμπορεῖον γεγένηται μέγιστον. χειροποιήτους ἔχουσα ὅρμους διὰ τὴν εὐφυΐαν
τῆς ἄμμου. σύμμετρος γάρ ἐστι τῇ τιτάνῳ. καὶ κόλλησιν ἰσχυρὰν καὶ πῆξιν λαμβάνει. διόπερ τῇ χά-
λικι καταμίξαντες τὴν ἀμμοκονίαν, προβάλλουσι χώματα εἰς τὴν θάλατταν. καὶ κολποῦσι τὰς ἀ-
ναπεπταμένας ἠϊόνας. ὥστ' ἀσφαλῶς ἐνορμίζεσθαι τὰς μεγίστας ὁλκάδας. ὑπέρκειται δὲ τῆς πό-
λεως εὐθὺς, ἡ τοῦ ἡφαίστου ἀγορά. πεδίον περικεκλιμένον διαπύροις ὀφρύσι καμινώδεις ἐχούσαις ἀ-
ναπνοὰς πολλαχοῦ, καὶ βρομώδεις ἱκανῶς. τὸ δὲ πεδίον θείου πλῆρές ἐστι συρτοῦ. μετὰ δὲ δικαιαρ-
χίαν ἐστὶ νεάπολις κυμαίων. ὕστερον δὲ καὶ χαλκιδεῖς ἐπῴκησαν. καὶ πιθηκουσαίων τινὲς, καὶ ἀθηναίων.
ὥστε καὶ νεάπολις ἐκλήθη διὰ τοῦτο, ὅπου δείκνυται μνῆμα τῶν σειρήνων μιᾶς παρθενόπης. καὶ
ἀγὼν συντελεῖται γυμνικὸς κατὰ μαντείαν, ὕστερον δὲ καμπανῶν τινες ἐδέξαντο συνοίκους διχοστα-
τήσαντες. καὶ ἠναγκάσθησαν τοῖς ἐχθίστοις, ὡς οἰκειοτάτοις χρήσασθαι, ἐπειδὴ τοὺς οἰκείους ἀλλοτρί-
ους ἔσχον. μηνύει δὲ τὰ τῶν δημάρχων ὀνόματα, τὰ μὲν πρῶτα ἑλληνικὰ ὄντα. τὰ δ' ὕστερα, τοῖς ἑλ-
ληνικοῖς ἀναμὶξ τὰ καμπανικά. πλεῖστα δ' ἴχνη τῆς ἑλληνικῆς ἀγωγῆς ἐνταῦθα σώζεται. γυμνάσιά
τε καὶ ἐφηβικά. φρατρίαι καὶ ὀνόματα ἑλληνικὰ καίπερ ὄντα ῥωμαίων. νυνὶ δὲ πεντετηρικὸς ἱε-
ρὸς ἀγὼν συντελεῖται παρ' αὐτοῖς. μουσικός τε καὶ γυμνικὸς ἐπὶ πλείους ἡμέρας, ἐνάμιλλος τοῖς ἐ-
πιφανεστάτοις τῶν κατὰ τὴν ἑλλάδα. ἔστι δὲ καὶ ἐνθάδε διῶρυξ κρυπτὴ τοῦ μεταξὺ ὄρους, τῆς τε δικαι-
αρχίας καὶ τῆς νεαπόλεως. ὑπεργασθέντος ὁμοίως, ὥσπερ ἐπὶ τὴν κύμην. ὁδοῦ τε ἀνοιχθείσης ἐναν-
τίοις ζεύγεσι πορευτῆς ἐπὶ πολλοὺς σταδίους. τὰ δὲ φῶτα ἐκ τῆς ἐπιφανείας τοῦ ὄρους. πολλαχόθεν
ἐκκοπεισῶν θυρίδων, διὰ βάθους πολλοῦ κατάγεται. ἔχει δὲ καὶ ἡ νεάπολις θερμῶν ὑδάτων ἐκβο-
λὰς, καὶ κατασκευὰς λουτρῶν οὐ χείρους τῶν ἐν βαΐαις. πολὺ δὲ τῷ πλήθει λειπομένας. ἐκεῖ γὰρ ἄλ-
λη πόλις γίνεται, συνῳκοδομουμένων βασιλείων ἄλλων ἐπ' ἄλλοις οὐκ ἐλαττόνων τῆς δικαιαρχίας. ἐπι-
τείνουσι δὲ τὴν ἐν νεαπόλει διαγωγὴν τὴν ἑλληνικὴν, οἱ ἐκ τῆς ῥώμης ἀναχωροῦντες δεῦρο. ἡσυχίας χά-
ριν τῶν ἀπὸ παιδείας ἐργασαμένων. ἢ καὶ ἄλλως, διὰ γῆρας, ἢ ἀσθένειαν ποθούντων ἐν ἀνέσει ζῆν.
καὶ τῶν ῥωμαίων δ' ἔνιοι χαίροντες τῷ βίῳ τούτῳ, θεωροῦντες τὸ πλῆθος τῶν ἀπὸ τῆς αὐτῆς ἀγω-
γῆς ἐπιδημούντων ἀνδρῶν, ἄσμενοι φιλοχωροῦσι, καὶ ζῶσιν αὐτόθι. ἐχόμενον δὲ, φρούριόν ἐστιν ἡ-
ράκλειον. ἐκκειμένην εἰς τὴν θάλασσαν ἄκραν ἔχον. καταπνεομένην λιβὶ θαυμαστῶς. ὥσθ' ὑγιεινὴν ποιεῖν
τὴν κατοικίαν. ὄσκοι δὲ εἶχον καὶ ταύτην καὶ τὴν ἐφεξῆς πομπαίαν, ἣν παραρρεῖ ὁ σάρνος ποταμός.
εἶτα τυῤῥηνοὶ καὶ πελασγοί. μετὰ ταῦτα δὲ σαννῖται. καὶ οὗτοι δ' ἐξέπεσον ἐκ τῶν τόπων. νώλης δὲ
καὶ νουκερίας καὶ ἀχέρων, ὁμωνύμου κατοικίας τῆς περὶ κρέωνα, ἐπίνειόν ἐστιν. ἡ ποιεῖ παρὰ τῷ σάρ-
νῳ ποταμῷ καὶ δεχομένῳ τὰ φορτία καὶ ἐκπέμποντι. ὑπέρκειται δὲ τῶν τόπων τούτων ὄρος τὸ οὐεσ-
σούϊον. ἀγροῖς περιοικούμενον παγκάλοις, πλὴν τῆς κορυφῆς. αὕτη δ' ἐπίπεδος μὲν πολὺ μέρος ἐστὶν,
ἄκαρπος δ' ὅλη. ἐκ δὲ τῆς ὄψεως, τεφρώδης. καὶ κοιλάδας φαίνει σηραγγώδεις πετρῶν αἰθαλωδῶν
κατὰ τὴν χρόαν. ὡς ἂν ἐκβεβρωμένων ὑπὸ πυρός. ὡς τεκμαίροιτ' ἄν τις τὸ χωρίον τοῦτο, καίεσθαι
πρότερον, καὶ ἔχειν κρατῆρας πυρός. σβεσθῆναι δ' ἐπιλιπούσης τῆς ὕλης. τάχα δὲ καὶ τῆς εὐκαρ-
πίας τῆς κύκλῳ, τοῦτ' αἴτιον. ὥσπερ τῇ κατάνῃ φασὶ τὸ κατατεφρωθὲν μέρος ἐκ τῆς σποδοῦ τῆς ἀ-
νενεχθείσης. ὑπὸ τοῦ αἰτναίου πυρὸς, εὐάμπελον τὴν γῆν ἐποίησεν. ἔχει μὲν γὰρ τὸ λιπαῖνον καὶ τὴν ἐκ-
πυρουμένην βῶλον, καὶ τὴν ἐκφέρουσαν τοὺς καρπούς. πλεονάζουσα μὲν οὖν τῷ λίπει πρὸς ἐκ-
πύρωσιν ἐπιτηδεία. καθάπερ ἡ θειώδης πᾶσα. ἐξικμασθεῖσα δὲ καὶ λαβοῦσα σβέσιν καὶ ἐκτέφρω-
σιν εἰς καρπογονίαν μετέβαλε. συνεχὴς δέ ἐστι τῇ πομπαίᾳ τὸ σύραιον τῶν καμπανῶν, ὅθεν πρόκειται
τὸ ἀθήναιον. ὅ τινες σειρηνουσῶν ἀκρωτήριον καλοῦσιν. ἔστι δὲ ἐπ' ἄκρῳ μὲν ἀθηνᾶς ἱερόν. ἵδρυμα ὀδυσ-
σέως. διάπλους δ' ἐνθένδε βραχὺς εἰς καπρέας νῆσον. κάμψαντι δὲ τὴν ἄκραν νησίδες εἰσὶν ἔρημοι πε-
τρώδεις, ἃς καλοῦσι σειρῆνας. ἐκ δὲ τοῦ πρὸς σύραιον μέρους, ἱερόν τι δείκνυται. καὶ ἀναθήματα πα-
λαιὰ τιμώντων τῶν πλησίον τόπων. μέχρι μὲν δεῦρο, ἔχει τέλος ὁ κόλπος ὁ κρατὴρ προσαγορευόμε-
νος. ἀφοριζόμενος δυσὶν ἀκρωτηρίοις, βλέπουσι πρὸς μεσημβρίαν, τῷ τε μισηνῷ καὶ τῷ ἀθηναίῳ.
ἅπας δ' ἐστὶ κατεσκευασμένος. τοῦτο μὲν ταῖς πόλεσιν ἃς ἔφαμεν. τοῦτο δὲ ταῖς οἰκοδομίαις καὶ φυ-
τείαις, αἳ μεταξὺ συνεχεῖς οὖσαι μιᾶς πόλεως ὄψιν παρέχονται. τοῦ μὲν οὖν μισηνοῦ πρόκειται
νῆσος ἡ προχύτη. πιθηκουσῶν δ' ἐστὶν ἀπόσπασμα. πιθηκούσας δὲ ἐρετριεῖς ᾤκησαν, καὶ χαλκιδεῖς,
εὐτυχήσαντες δι' εὐκαρπίαν. καὶ διὰ τὰ χρυσεῖα, ἐξέλιπον τὴν νῆσον κατὰ στάσιν. ὕστερον δὲ καὶ ὑπὸ σεισμῶν
ἐξελαθέντες. καὶ ἀναφυσημάτων πυρὸς καὶ θαλάσσης καὶ θερμῶν ὑδάτων, ἔχει γὰρ τοιαύτας ἀπο-
φορὰς ἡ νῆσος. ὑφ' ὧν καὶ οἱ πεμφθέντες παρὰ ἱέρωνος τοῦ τυράννου τῶν συρακουσίων ἐξέλιπον τὸ κατα-
σκευασθὲν ὑφ' ἑαυτῶν τεῖχος καὶ τὴν νῆσον. ἐπελθόντες δὲ νεαπολῖται κατέσχον. ἐντεῦθεν καὶ ὁ μυ-

θος, ὅτι φασὶ τὸν Τυφῶνα ὑποκεῖσθαι τῇ νήσῳ ταύτῃ, στρεφομένου δὲ τὰς φλόγας ἀναφυσᾶσθαι
καὶ τὰ ὕδατα. ἔστι δ' ὅτε καὶ νησίδας ἐχούσας ζέον ὕδωρ. πιθανώτερον δὲ Πίνδαρος εἴρηκεν ἐκ τῶν
φαινομένων ὁρμηθείς. ὅτι πᾶς ὁ πόρος οὗτος, ἀπὸ τῆς Κυμαίας ἀρξάμενος μέχρι τῆς Σικελίας, διά-
πυρός ἐστι. καὶ κατὰ βάθους ἔχει κοιλίας τινάς. εἰς ἓν συναπτούσας πρός τε ἀλλήλας καὶ πρὸς τὴν
ἤπειρον. διόπερ ἥ τε Αἴτνη τοιαύτην ἔχειν δείκνυται φύσιν, οἵαν ἱστοροῦσιν ἅπαντες. καὶ αἱ τῶν Λιπα-
ραίων νῆσοι. καὶ τὰ περὶ τὴν Δικαιαρχίαν καὶ Νεάπολιν, καὶ Βαΐας χωρία, καὶ αἱ Πιθηκοῦσαι. ταῦτ'
οὖν διανοηθείς, τῷ παντὶ τόπῳ τούτῳ φησὶν ὑποκεῖσθαι τὸν Τυφῶνα.

» Νῦν γε μὰν ταίου ὑπὲρ κύμ' ἁλιορκέες ὄχε,
» Σικελία τ' αὐτοῦ πιέζει στέρνα λαχνήεντα.

Καὶ Τίμαιος δὲ περὶ τῶν Πιθηκουσῶν φησιν, ὑπὸ τῶν παλαιῶν πολλὰ παραδοξολογεῖσθαι. μι-
κρὸν δὲ πρὸ ἑαυτοῦ, τὸν Ἐπωμέα λόφον ἐν μέσῃ τῇ νήσῳ τιναχθέντα ὑπὸ σεισμῶν ἀναβαλεῖν πῦρ, καὶ
τὸ μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τῆς θαλάσσης, ἐξῶσαι πάλιν ἐπὶ τὸ πέλαγος. τὸ δ' ἐκτεφρωθὲν τῆς γῆς, μετεωρι-
σμὸν λαβεῖν, κατασκῆψαι πάλιν τυφωνοειδῶς εἰς τὴν νῆσον. καὶ ἐπὶ τρεῖς τῆς θαλάττης ἀναχωρῆ-
σαι σταδίους. ἀναχωρήσασαν δ' οὐ πολύ, ὑποστρέψαι, καὶ τῇ παλιρροίᾳ κατακλύσαι τὴν νῆσον. καὶ
γενέσθαι σβέσιν τοῦ ἐν αὐτῇ πυρός. ἀπὸ δὲ τοῦ ἤχου τοὺς ἐν τῇ ἠπείρῳ φυγεῖν ἐκ τῆς παραλίας εἰς τὴν
Καμπανίαν. δοκεῖ δὲ τὰ θερμὰ ὕδατα ἐνταῦθα θεραπεύειν τοὺς λιθιῶντας. αἱ δὲ Καπρέαι δύο πολί-
χνας εἶχον τὸ παλαιόν. ὕστερον δὲ μίαν. Νεαπολῖται δὲ καὶ ταύτην κατέσχον. πολέμῳ δ' ἀποβαλόντες
τὰς Πιθηκούσσας, ἀπέλαβον πάλιν, δόντος αὐτοῖς Καίσαρος τοῦ Σεβαστοῦ. τὰς δὲ Καπρέας ἴδιον
ποιησαμένου κτῆμα, καὶ κατοικοδομήσαντος. αἱ μὲν οὖν παράλιοι πόλεις τῶν Καμπανῶν καὶ αἱ προ-
κείμεναι νῆσοι τοιαῦται. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Καπύη μέν ἐστιν ἡ μητρόπολις. κεφαλὴ τῷ ὄντι κατὰ τὴν ἐ-
τυμότητα τοῦ ὀνόματος. τὰ γὰρ ἄλλα πολίχνια νομίζοιτ' ἂν κατὰ τὴν σύγκρισιν. πλὴν Τεανοῦ, Σι-
δικινοῦ. καὶ γὰρ αὕτη ἀξιόλογος. κεῖται δ' ἐπὶ τῇ ὁδῷ τῇ Ἀππίᾳ αὐτή τε καὶ αἱ τῶν ἄλλων ἐπὶ Βρεν-
τέσιον ἄγουσαι ἀπ' αὐτῆς Καλατερία καὶ Καλύδιον καὶ Βενεουεντόν. ἐπὶ δὲ Ῥώμης Κασίλινον ἵδρυ-
ται ἐπὶ τῷ Οὐλτούρνῳ ποταμῷ. ἐν ᾗ πολιορκούμενοι Πραινεστίνων ἄνδρες μ' καὶ φ' πρὸς ἀκμάζον-
τα Ἀννίβαν ἐπὶ τοσοῦτον ἀντέσχον, ὥσθ' ὑπὸ λιμοῦ διακοσίων δραχμῶν πραθέντος μυός, ὁ μὲν
πωλήσας ἀπέθανεν. ἐσώθη δ' ὁ πριάμενος. ἰδὼν δ' αὐτοὺς πλησίον τοῦ τείχους σπείροντας γογγύλην,
ἐθαύμαζεν ὡς ἔοικεν ὁ Ἀννίβας τῆς μακροθυμίας, εἰ ἐλπίζοιεν τέως ἀνθέξειν, ὡς τελεσφορήσοι τὴν
γογγύλην. καὶ δὴ περιγενέσθαι πάντας φησί, πλὴν ἀνδρῶν ὀλίγων τῶν ἢ λιμῷ διαλυθέντων, ἢ ἐν
ταῖς μάχαις. πρὸς δὲ ταῖς ῥηθείσαις ἔτι καὶ αὗται Καμπαναὶ πόλεις εἰσὶν ὧν ἐμνήσθη πρότερον,
Κάλης τε καὶ Τεανὸν Σιδικινόν. ἃς διορίζουσιν αἱ δύο Τύχαι, ἐφ' ἑκάτερα ἱδρυμέναι τῆς Λατίνης ὁ-
δοῦ, καὶ ἔτι Σουέσσουλα καὶ Ἀτέλλα καὶ Νῶλα, καὶ Νουκερία καὶ Ἀχέρραι. καὶ Ἀβέλλα. καὶ ἄλλαι ἔτι ἐ-
λάττους τούτων κατοικίαι. ὧν ἐνίας Σαυνίτιδας φασὶν εἶναι. Σαυνῖται δὲ πρότερον μὲν καὶ μέχρι τῆς
Λατίνης τῆς περὶ Ἀρδέαν ἐξοδείας ποιούμενοι. μετὰ δὲ ταῦτα αὐτὴν τὴν Καμπανίαν πορθοῦντες πολλὴν
ἐκέκτηντο δύναμιν. καὶ γὰρ ἄλλως δεσποτικῶς ἄρχεσθαι μεμαθηκότες, ταχὺ ὑπούργουν τοῖς προ-
στάγμασι. νυνὶ δ' ἐκπεπόνηνται τελέως ὑπό τε ἄλλων, καὶ τὸ τελευταῖον ὑπὸ Σύλλα τοῦ μοναρχή-
σαντος Ῥωμαίων. ὃς ἐπειδὴ πολλαῖς μάχαις καταλύσας τὴν τῶν Ἰταλιωτῶν ἐπανάστασιν, τούτους σχε-
δὸν τοὺς μόνους συμμένοντας ἑώρα καὶ ὁμοίως ὁμοροῦντας. ὥστε καὶ ἐπ' αὐτὴν τὴν Ῥώμην ἐλθεῖν, συνέ-
στη πρὸ τοῦ τείχους αὐτοῖς. καὶ τοὺς μὲν, ἐν τῇ μάχῃ κατέκοψε κελεύσας μὴ ζωγρεῖν. τοὺς δέ, ῥίψαν-
τας τὰ ὅπλα περὶ τρισχιλίους ἄνδρας, ἢ τετρακισχιλίους φασίν, εἰς τὴν δημοσίαν ἔπαυλιν τὴν ἐν
τῷ Μαρτίῳ κάμπῳ καταγαγὼν εἷρξε. τρισὶ δὲ ὕστερον ἡμέραις ἐπιπέμψας στρατιώτας, ἅπαντας ἀ-
πέσφαξε. προγραφάς τε ποιούμενος, οὐκ ἐπαύσατο πρίν, ἢ πάντας τοὺς ἐν ὀνόματι Σαυνιτῶν διέ-
φθειρεν, ἢ ἐκ τῆς Ἰταλίας ἐξέβαλε. πρὸς δὲ τοὺς αἰτιωμένους τὴν ἐπὶ τοσοῦτον ὀργήν, ἔφη καταμα-
θεῖν ἐκ τῆς πείρας, ὡς οὐδέποτ' ἂν εἰρήνην ἀγάγοι Ῥωμαίων, οὐδὲ εἷς, ἕως ἂν συμμένωσι καθ' αὑτοὺς Σαυ-
νῖται. καὶ γάρ τοι νῦν κῶμαι γεγόνασιν αἱ πόλεις. ἔνιαι δ' ἐκλελοίπασι τελέως. Βοίανον. Αἰσερνία.
Πάννα. Τελεσία συνεχὴς Οὐενάφρῳ. καὶ ἄλλαι τοιαῦται. ὧν οὐδεμίαν ἄξιον ἡγεῖσθαι πόλιν. ἡμεῖς δ' ἐ-
πέξιμεν μέχρι τοῦ μετρίου διὰ τὴν τῆς Ἰταλίας δόξαν καὶ δύναμιν. Βενεουεντὸν δ' ὅμως συνέστηκεν
εὖ, καὶ Οὐενουσία. περὶ δὲ Σαυνιτῶν καὶ τοιοῦτός τις λόγος ἐκφέρεται. διότι πολεμοῦντες Σαβῖνοι
πολὺν χρόνον πρὸς τοὺς Ὀμβρικούς, εὔξαντο καθάπερ τῶν Ἑλλήνων τινές, τὰ γενόμενα τῷ ἔτει τού-
τῳ καθιερῶσαι. νικήσαντες δὲ τῶν γενομένων, τὰ μέν, κατέθυσαν. τὰ δέ, καθιέρωσαν. ἀφορίας δὲ γε-
νηθείσης, εἶπέ τις, ὡς ἐχρῆν καθιερῶσαι καὶ τὰ τέκνα. οἱ δ' ἐποίησαν τοῦτο. καὶ τοὺς γενομένους τότε παῖ-
δας Ἄρεως ἐπεφήμισαν. ἀνδρωθέντας δ' ἔστειλαν εἰς ἀποικίαν. ἡγήσατο δὲ ταῦρος. ἐν δὲ τῇ τῶν Ὀπι-
κῶν κατευνασθέντες, ἐτύγχανον δὲ κωμηδὸν ζῶντες, ἐκβαλόντες ἐκείνους ἱδρύθησαν αὐτόθι. καὶ τὸν
ταῦρον ἐσφαγίασαν τῷ Ἄρει τῷ δόντι αὐτὸν ἡγεμόνα κατὰ τὴν τῶν μάντεων ἀπόφασιν. εἰκὸς δὲ διὰ τοῦτο καὶ

σαβέλλους αὐτοὺς ὑποκοριστικῶς ἀπὸ τῶν γονέων προσαγορευθῆναι. σαυνίτας δ' ἀπ' ἄλλης αἰτίας,
οὓς οἱ ἕλληνες σαμνίτας λέγουσι. τινὲς δὲ καὶ λάκωνας συνοίκους αὐτοῖς γενέσθαι φασί. καὶ διὰ
τοῦτο καὶ φιλέλληνας ὑπάρξαι. τινὰς δὲ καὶ πιτανάτας καλεῖσθαι. δοκεῖ δὲ καὶ ταραντίνων πλά-
σμα τοῦτ' εἶναι. κολακευόντων δ' ὁμόρους, καὶ μέγα δυναμένους ἀνθρώπους. καὶ ἅμα ἐξοικειουμένων.
οἵ γε καὶ ὀκτὼ μυριάδας ἔστελλόν ποτε τῆς πεζῆς στρατείας. ἱππέας δ' ὀκτακισχιλίους. φασὶ δὲ νό-
μον εἶναι τοῖς σαυνίταις, καλὸν καὶ προτρεπτικὸν πρὸς ἀρετήν. οὐ γὰρ ἔξεστι διδόναι τὰς θυγατέ-
ρας οἷς ἂν ἐθέλωσιν. ἀλλὰ κρίνεσθαι κατὰ ἔτος, δέκα μὲν παρθένους. δέκα δὲ τῶν νέων τοὺς ἀρίστους.
καὶ τὰς ἀρίστας τούτων τῷ πρώτῳ τὴν πρώτην δίδοσθαι, τῷ δευτέρῳ, τὴν δευτέραν. καὶ ἑξῆς οὕ-
τως. ἐὰν δ' ὁ λαβὼν τὸ γέρας μεταβαλόμενος γένηται πονηρός, ἀτιμάζουσι καὶ ἀφαιροῦνται τὴν δο-
θεῖσαν. ἑξῆς δ' εἰσὶν ἱρπηνοί. καὶ αὐτοὶ σαυνῖται. τοὔνομα δ' ἔσχον, ἀπὸ τοῦ ἡγησαμένου λύκου τῆς ἀποι-
κίας. ἵρπον γὰρ καλοῦσιν οἱ σαυνῖται τὸν λύκον. συνάπτουσι δὲ λευκανοῖς τοῖς μεσογαίοις. περὶ μὲν
σαυνιτῶν ταῦτα. καμπανοῖς δὲ συνέβη διὰ τὴν τῆς χώρας εὐδαιμονίαν, ἐπ' ἴσον ἀγαθῶν ἀπολαῦσαι
καὶ κακῶν. ἐπὶ τοσοῦτον γὰρ ἐξετρύφησαν, ὥστ' ἐπὶ δεῖπνον ἐκάλουν πρὸς ζεύγη μονομάχων. ὁρί-
ζοντες ἀριθμὸν κατὰ τὴν τῶν δείπνων ἀξίαν. ἀννίβα δ' ἐξ ἐνδόσεως λαβόντος αὐτοὺς δεξάμενοι χει-
μαδίοις τὴν στρατείαν, οὕτως ἐξεθήλυναν ταῖς ἡδοναῖς, ὥσθ' ὁ ἀννίβας ἔφη νικῶν κινδυνεύειν ἐπὶ
τοῖς ἐχθροῖς γενέσθαι, γυναῖκας ἀντ' ἀνδρῶν τοὺς στρατιώτας ἀπολαβών. ῥωμαῖοι δὲ κρατήσαντες,
πολλοῖς κακοῖς ἐσωφρόνιζον αὐτούς. ὕστατα δὲ καὶ κατεκληρούχησαν τὴν γῆν. νυνὶ μέντοι μετ' εὐπρα-
γίας διάγουσι τοῖς ἐποίκοις ὁμονοήσαντες. καὶ τὸ ἀξίωμα φυλάττουσι τὸ ἀρχαῖον. καὶ τὸ μέγεθος τῆς
πόλεως, καὶ κατ' εὐανδρίαν. μετὰ δὲ τὴν καμπανίαν καὶ τὴν σαυνῖτιν μέχρι τῶν φρεντανῶν. ἐπὶ μὲν
τῇ τυρρηνικῇ θαλάττῃ, τὸ τῶν πικεντίνων ἔθνος οἰκεῖ. μικρὸν ἀπόσπασμα τῶν ἐν τῷ ἀδρίᾳ πικεντίνων
ὑπὸ ῥωμαίων μετῳκισμένων εἰς τὸν ποσειδωνιάτην κόλπον. ὃς νῦν παιστανὸς καλεῖται. καὶ ἡ πόλις
ἡ ποσειδωνία, παιστὸς ἐν μέσῳ τῷ κόλπῳ κειμένη. συβαρῖται μὲν οὖν ἐπὶ θαλάττῃ τεῖχος ἔθεντο. οἱ δ' οἰ-
κισθέντες ἀνωτέρω μετέστησαν. ὕστερον δὲ λευκανοὶ μὲν ἐκείνους, ῥωμαῖοι δὲ λευκανοὺς ἀφείλοντο τὴν πό-
λιν. ποιεῖ δὲ αὐτὴν ἐπίνοσον, ποταμὸς πλησίον εἰς ἕλη ἀναχεόμενος. μεταξὺ δὲ τῶν σειρηνουσῶν καὶ τῆς
ποσειδωνίας, μαρκιννα τυρρηνῶν κτίσμα, οἰκούμενον ὑπὸ σαυνιτῶν. ἐντεῦθεν εἰς πομπηΐαν διὰ νου-
κερίας οὐ πλειόνων ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων ἐστὶν ὁ ἰσθμός. διήκουσι δ' οἱ πικεντες μέχρι τοῦ σιλάριδος
ποταμοῦ, τοῦ ὁρίζοντος ἀπὸ ταύτης τῆς χώρας τὴν ἀρχαίαν καμπανίαν. ἐφ' οὗ τοῦτ' ἴδιον ἱστοροῦ-
σιν περὶ τοῦ ὕδατος τοῦ ὄντος τοῦ ποταμοῦ ποτίμου, τὸ καθιέμενον εἰς αὐτὸ φυτὸν ἀπολιθοῦσθαι.
φυλάττον τὴν χρόαν καὶ τὴν μορφήν, τῶν δὲ πικεντῶν ὑπῆρχε μητρόπολις πικεν-
τία. νυνὶ δὲ κωμηδὸν ζῶσιν ἀπωσθέντες ὑπὸ ῥωμαίων διὰ τὴν πρὸς ἀννί-
βαν κοινωνίαν. ἀντὶ δὲ στρατείας ἡμεροδρομεῖν καὶ γραμματοφο-
ρεῖν ἀπεδείχθησαν ἐν τῷ τότε δημοσίῳ, καθάπερ καὶ λευκα-
νοὶ καὶ βρέττιοι κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἐπετείχι-
σαν δ' αὐτοῖς σάλερνον ῥωμαῖοι φρουρᾶς χά-
ριν, μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης.
εἰσὶ δ' ἀπὸ σειρηνουσῶν
ἐπὶ σίλαριν στά-
διοι διακόσια ξ. μετὰ δὲ
τὸ στόμα τοῦ σιλάριδος, λευκα-
νία, καὶ τὸ τῆς ἥρας ἱερὸν
τῆς ἀργονίας, ἰάσο-
νος ἵδρυμα.

Ἐν τῷ ἕκτῳ τὰ ἐφεξῆς τῆς ἰταλίας· καὶ τὰ ἐντὸς τοῦ ἀδρίου. μέχρι μακεδονίας. ἐν οἷς ἀπουλία καὶ καλαβρία καὶ ὅσα κατὰ τὸν ἰόνιον κόλπον ἅμα ταῖς παρακειμέναις νήσοις ἀπὸ σικελίας, ἕως τῶν κεραυνίων, καὶ ἐκ τοῦ ἄλλου μέρους ἕως καρχηδόνος καὶ τῶν ταύτῃ παρακειμένων νησιδίων.

## ΣΤΡΆΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩ͂Ν ΒΙΒΛΊΟΝ ἝΚΤΟΝ.

Μετὰ δὲ τὸ στόμα τοῦ σιλάριδος, λευκανία, καὶ τὸ τῆς ἥρας ἱερὸν τῆς ἀργονίας, ἰάσονος ἵδρυμα. καὶ πλησίον ἐν πεντήκοντα σταδίοις ἡ ποσειδωνία. ἐκεῖθεν ἐκπλέοντι τὸν πόντον, νῆσος λευκωσία, μικρὸν ἔχουσα πρὸς τὴν ἤπειρον διάπλουν, ἐπώνυμος μιᾶς τῶν σειρήνων. ἐκπεσούσης δεῦρο μετὰ τὴν μυθευομένην ῥῖψιν αὐτῶν, εἰς τὸν βυθόν. τῆς δὲ νήσου πρόκειται τὸ ἀκρωτήριον ταῖς σειρηνούσσαις. καὶ ποιοῦν τὸν ποσειδωνιάτην κόλπον. κάμψαντι δ' ἄλλος συνεχὴς κόλπος, ἐν ᾧ πόλις. ἣν οἱ μὲν κτίσαντες φωκιεῖς ὑέλην. οἱ δὲ ἔλην ἀπὸ κρήνης τινός. οἱ δὲ νῦν ἐλέαν ὀνομάζουσιν. ἐξ ἧς παρμενίδης καὶ ζήνων ἐγένοντο ἄνδρες πυθαγόρειοι. δοκεῖ δέ μοι καὶ δι' ἐκείνους καὶ ἔτι πρότερον εὐνομηθῆναι. διὸ καὶ πρὸς λευκανοὺς ἀντέσχον, καὶ πρὸς ποσειδωνιάτας, καὶ κρείττους ἀπῄεσαν, καίπερ ἐνδεέστεροι καὶ χώρᾳ, καὶ πλήθει σωμάτων ὄντες. ἀναγκάζονται γοῦν διὰ τὴν λυπρότητα τῆς γῆς, τὰ πολλὰ θαλαττουργεῖν, καὶ ταριχείας συνίστασθαι, καὶ ἄλλας τοιαύτας ἐργασίας. φησὶ δ' ἀντίοχος φωκαίας ἁλούσης, ὑφ' ἁρπάγου τοῦ κύρου στρατηγοῦ, τοὺς δυναμένους ἐμβάντας εἰς τὰ σκάφη πανοικίους, πλεῦσαι πρῶτον εἰς κύρνον καὶ μασσαλίαν μετὰ κρεοντιάδου. ἀποκρουσθέντας δὲ, τὴν ἐλέαν κτίσαι. ἔνιοι δὲ τοὔνομα ἀπὸ ποταμοῦ ἐλέητος. διέχει δὲ τῆς ποσειδωνίας ὅσον σ̄ σταδίους ἡ πόλις. μετὰ δὲ ταύτην ἀκρωτήριον παλίνουρος. πρὸ δὲ τῆς ἐλεάτιδος αἱ οἰνωτρίδες νῆσοι δύο ὑφόρμους ἔχουσαι. μετὰ δὲ παλίνουρον πυξοῦς ἄκρα. καὶ λιμὴν καὶ ποταμός. ἓν γὰρ τῶν τριῶν ὄνομα. ᾤκισε δὲ μίκυθος ὁ μεσσήνης ἄρχων τῆς ἐν σικελίᾳ. πάλιν δ' ἀπῆραν οἱ ἱδρυθέντες πλὴν ὀλίγων. μετὰ δὲ πυξοῦντα, λάος κόλπος, καὶ ποταμὸς λάος. καὶ πόλις ἐσχάτη τῶν λευκανίδων, μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης. ἄποικος συβαριτῶν. εἰς ἣν ἀπὸ ἔλης στάδιοι ῡ. ὁ δὲ πᾶς τῆς λευκανίας παράπλους, χν̄. πλησίον δὲ τὸ τοῦ δράκοντος ἡρῷον, ἑνὸς τῶν ὀδυσσέως ἑταίρων ἀφ' οὗ ὁ χρησμὸς τοῖς ἰταλιώταις ἐγένετο. λάϊον ἀμφὶ δράκοντα, πολύν ποτε λαὸν ὀλεῖσθαι. ἐπὶ γὰρ ταύτην λαοὶ στρατεύσαντες οἱ κατὰ τὴν ἰταλίαν ἕλληνες ὑπὸ λευκανῶν, ἠτύχησαν, ἐξαπατηθέντες τῷ χρησμῷ. κατὰ μὲν δὴ τὴν τυρρηνικὴν παραλίαν, ταῦτ' ἐστὶ τὰ τῶν λευκανῶν χωρία, ἃ τῆς ἑτέρας οὐχ ἥπτοντο θαλάττης πρότερον. ἀλλ' οἱ ἕλληνες ἐπεκράτουν, οἱ τὸν ταραντῖνον ἔχοντες κόλπον. πρὶν δὲ τοὺς ἕλληνας ἐλθεῖν, οὐδ' ἦσαν πω λευκανοί. χῶνες δὲ, καὶ οἰνωτροὶ τοὺς τόπους ἐνέμοντο. τῶν δὲ σαυνιτῶν αὐξηθέντων ἐπὶ πολὺ, καὶ τοὺς χῶνας καὶ τοὺς οἰνώτρους ἐκβαλόντων, λευκανοὺς δ' εἰς τὴν μερίδα ταύτην ἀποικισάντων, ἅμα δὲ καὶ τῶν ἑλλήνων τὴν ἑκατέρωθεν παραλίαν μέχρι πορθμοῦ κατεχόντων, πολὺν χρόνον ἐπολέμουν οἵ τε ἕλληνες καὶ οἱ βάρβαροι πρὸς ἀλλήλους. οἱ δὲ τῆς σικελίας τύραννοι καὶ μετὰ ταῦτα καρχηδόνιοι, τοτὲ μὲν περὶ τῆς σικελίας πολεμοῦντες πρὸς ῥωμαίους, τοτὲ δὲ περὶ αὐτῆς τῆς ἰταλίας, ἅπαντας τοὺς ταύτῃ κακῶς διέθηκαν. μετὰ δὲ τοὺς ἕλληνας, ὕστερον μέν γε καὶ τῆς μεσογαίας πολλὴν ἀφῃροῦντο, ἀπὸ τῶν τρωικῶν ἀρξάμενοι χρόνων. καὶ δὴ ἐπὶ τοσοῦτον ηὔξηντο, ὥστε τὴν μεγάλην ἑλλάδα ταύτην ἔλεγον καὶ τὴν σικελίαν. νυνὶ δὲ πλὴν τάραντος, καὶ ῥηγίου, καὶ νεαπόλεως, ἐκβεβαρβαρῶσθαι συμβέβηκεν ἅπαντα. καὶ τὰ μὲν, λευκανοὺς καὶ βρεττίους κατέχειν. τὰ δὲ καμπανούς. καὶ τούτους λόγῳ. τὸ δ' ἀληθὲς ῥωμαίους, καὶ γὰρ αὐτοὶ ῥωμαῖοι γεγόνασιν. ὅμως δὲ δεῖ τῷ πραγματευομένῳ τὴν τῆς γῆς περίοδον, καὶ τὰ νῦν ὄντα λέγειν ἀνάγκη, καὶ τῶν ὑπαρξάντων ἔνια, καὶ μάλιστα ὅταν ἔνδοξα ᾖ. τῶν δὲ λευκανῶν, οἱ μὲν ἁπτόμενοι τῆς τυρρηνικῆς θαλάττης εἴρηνται. οἱ δὲ τὴν μεσόγαιαν ἔχοντες, εἰσὶν οἰκοῦντες τὸν ταραντῖνον κόλπον. οὕτω δ' εἰσὶ κεκακωμένοι τελέως αὐτοί τε καὶ βρέττιοι καὶ αὐτοὶ σαυνῖται

οἱ τούτων ἀρχηγέται, ὥστε καὶ διορίσαι χαλεπὸν τὰς κατοικίας αὐτῶν, αἴτιον δ' ὅτι οὐδὲν ἔτι σύστημα κοι-
νὸν τῶν ἐθνῶν ἑκάστου συμμένει. τά τε ἔθνη διαλέκτων γε καὶ ὁπλισμοῦ καὶ ἐσθῆτος, καὶ τῶν παραπλη-
σίων ἐκλέλοιπεν. ἄλλως τε, ἄδοξοι παντάπασίν εἰσιν, αἱ καθ' ἕκαστα καὶ ἐν μέρει κατοικίαι. ἐροῦμεν δὲ
κοινῶς ἃ παρειλήφαμεν οὐδὲν, παρὰ τοῦτο ποιούμενοι τοὺς τὴν μεσόγαιαν οἰκοῦντας. λευκανούς τε
καὶ τοὺς προσεχεῖς αὐτοῖς σαυνίτας. πετηλία μὲν οὖν μητρόπολις νομίζεται τῶν λευκανῶν, καὶ
συνοικεῖται μέχρι νῦν ἱκανῶς. κτίσμα δ' ἐστὶ φιλοκτήτου, φυγόντος τὴν μελίβοιαν κατὰ στάσιν. ἐρυ-
μνὴ δ' ἐστὶν. ὥστε καὶ σαυνῖται ποτὲ φρουρίοις ἐπετείχισαν αὐτήν. φιλοκτήτου δ' ἐστὶ καὶ ἡ παλαιὰ
κρίμισα περὶ αὐτοὺς τοὺς τόπους. ἀπολλόδωρος δ' ἐν τοῖς περὶ νεῶν τοῦ φιλοκτήτου μνησθεὶς, λέ-
γειν τινάς φησιν ὡς εἰς τὴν κροτωνιᾶτιν ἀφικόμενος, κρίμισαν ἄκραν οἰκίσαι. καὶ χώνην πόλιν ὑπὲρ αὐ-
τῆς. ἀφ' ἧς οἱ ταύτῃ χῶνες ἐκλήθησαν. παρ' αὐτοῦ δέ τινες σταλέντες εἰς σικελίαν περὶ ἔρυκα μετὰ αἰ-
γέστου τοῦ τρωὸς, αἴγεσταν τειχίσαι. καὶ ποτμέντον δὲ καὶ οὐέρτιναι, τῆς μεσογαίας εἰσί. καὶ καλασάρ-
να, καὶ ἄλλαι μικραὶ κατοικίαι, μέχρι οὐενουσίας πόλεως ἀξιολόγου. ταύτην δ' οἶμαι καὶ τὰς ἐφεξῆς
ἐπὶ καμπανίας ἰόντι, σαυνίτιδας εἶναι. ὑπὲρ δὲ τῶν θουρίων καὶ ἡ ταυριανὴ χώρα λεγομένη ἵδρυ-
ται. οἱ δὲ λευκανοὶ τὸ μὲν γένος εἰσὶ σαυνῖται. ποσειδωνιατῶν δὲ καὶ τῶν συμμάχων κρατήσαντες πο-
λέμῳ, κατέσχον τὰς πόλεις αὐτῶν. τὸν μὲν οὖν ἄλλον χρόνον, ἐδημοκρατοῦντο. ἐν δὲ τοῖς πολέμοις ᾑρεῖ-
το βασιλεὺς, ὑπὸ τῶν νεμομένων ἀρχάς. νῦν δ' εἰσὶ ῥωμαῖοι. τὴν δ' ἑξῆς παραλίαν βρέττιοι μέχρι τοῦ
σικελικοῦ κατέχουσι πορθμοῦ, σταδίων ν καὶ τ ἐπὶ τοῖς χιλίοις. φησὶ δ' ἀντίοχος ἐν τῷ περὶ τῆς ἰ-
ταλίας συγγράμματι, ταύτην ἰταλίαν κληθῆναι. καὶ περὶ ταύτης συγγράφειν. πρότερον δ' οἰνω-
τρίαν προσαγορεύεσθαι. ὅριον δ' αὐτῆς ἀποφαίνει πρὸς μὲν τῷ τυρρηνικῷ πελάγει, τὸν αὐτὸν ὅνπερ καὶ
τῆς βρεττιανῆς ἔφαμεν, τὸν λᾶον ποταμόν. πρὸς δὲ τῷ σικελικῷ, τὸ μεταπόντιον. τὴν δὲ ταραντίνην ἣ συ-
νεχής τῷ μεταποντίῳ ἐστὶν, ἐκτὸς τῆς ἰταλίας ὀνομάζει. ἰάπυγας καλῶν, ἔτι δ' ἀνώτερον, οἰνωτρούς τε
καὶ ἰταλοὺς μόνους ἔφη καλεῖσθαι, τοὺς ἐντὸς τοῦ ἰσθμοῦ πρὸς τὸν σικελικὸν κεκλιμένους πορθμόν.
ἔστι δ' αὐτὸς ὁ ἰσθμὸς ἑκατὸν καὶ ξ στάδιοι. μεταξὺ δυοῖν κόλπων. τοῦ τε ἱππωνιάτου, ὃν ἀντίοχος ναπη-
τῖνον εἴρηκε, καὶ τοῦ σκυλλητικοῦ. περίπλους δ' ἐστὶ τῆς ἀπολαμβανομένης χώρας πρὸς τὸν πορθμὸν,
ἐντὸς στάδιοι δισχίλιοι. μετὰ δὲ ταῦτα ἐπεκτείνεσθαί φησι τοὔνομα καὶ τὸ τῆς ἰταλίας καὶ τὸ τῶν οἰνω-
τρῶν, μέχρι τῆς μεταποντινῆς καὶ τῆς σειρίτιδος. οἰκῆσαι γὰρ τοὺς τόπους τούτους χῶνας. οἰνωτρι-
κὸν ἔθνος κατακεκοσμημένον, καὶ τὴν γῆν ὀνομάσαι χώνην. οὗτος μὲν οὖν ἁπλουστέρως εἴρηκε καὶ ἀρ-
χαϊκῶς. οὐδὲν διορίσας περὶ τῶν λευκανῶν καὶ τῶν βρεττίων. ἔστι δ' ἡ μὲν λευκανία μεταξὺ τῆς τε πα-
ραλίας τῆς τυρρηνικῆς καὶ τῆς σικελικῆς. τῆς μὲν, ἀπὸ τοῦ σιλάριδος μέχρι λάου. τῆς δ' ἀπὸ τοῦ με-
ταποντίου μέχρι θουρίων. κατὰ δὲ τὴν ἤπειρον ἀπὸ σαυνιτῶν μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ ἀπὸ θουρίων εἰς κηρίλ-
λους, πλησίον λάου. στάδιοι δ' εἰσὶ τοῦ ἰσθμοῦ, τ. ὑπὲρ δὲ τούτων, βρέττιοι χερρόνησον οἰκοῦντες. ἐν ταύ-
τῃ δ' ἄλλη περιείληπται χερρόνησος ἡ τὸν ἰσθμὸν ἔχουσα τὸν ἀπὸ σκυλλητίου ἐπὶ τὸν ἱππωνιάτην κόλ-
πον. ὠνόμασται δὲ τὸ ἔθνος ὑπὸ λευκανῶν. βρεττίους γὰρ καλοῦσι τοὺς ἀποστάτας, ἀπέστησαν δ' ὥς φασι
ποιμαίνοντες αὐτοῖς πρότερον. εἶθ' ὑπὸ ἀνέσεως ἐλευθεριάσαντες ἡνίκα ἐπεστράτευσε δίων διονυσίῳ,
καὶ ἐτάραξεν ἅπαντας πρὸς ἅπαντας. τὰ καθόλου μὲν δὴ ταῦτα περὶ λευκανῶν καὶ βρεττίων. λέγομεν
ἀπὸ γὰρ λάου πρώτη πόλις ἐστὶ τῆς βρεττίας τεμέση. τέμψαν δ' οἱ νῦν καλοῦσιν, αὐσόνων κτίσμα ὕστερον
δὲ καὶ αἰτωλῶν τῶν μετὰ θόαντος. οὓς ἐξέβαλον βρέττιοι. βρεττίους δὲ ἐπέτριψαν ἀννίβας τε καὶ ῥω-
μαῖοι. ἔστι δὲ πλησίον τῆς τεμέσης ἡρῷον, ἀγριελαίοις συνηρεφὲς, πολίτου τῶν ὀδυσσέως ἑταίρων. ὃν
δολοφονηθέντα ὑπὸ τῶν βαρβάρων, γενέσθαι βαρύμηνιν. ὥστε τοὺς περιοίκους δασμολογεῖν αὐ-
τῷ κατά τι λόγιον. καὶ παροιμίαν εἶναι πρὸς αὐτούς. μὴ δ' εἰς τὸν ἥρωα τὸν ἐν τεμέσῃ λεγόντων ἐπι-
κεῖσθαι αὐτοῖς. λοκρῶν δὲ τῶν ἐπιζεφυρίων ἑλόντων τὴν πόλιν, εὔθυμον μυθεύουσι τὸν πύκτην κα-
ταβάντα ἐπ' αὐτὸν, κρατῆσαι τῇ μάχῃ, καὶ βιάσασθαι παραλῦσαι τοῦ δασμοῦ τοὺς ἐπιχωρίους.
ταύτης τε τῆς τεμέσης φασὶ μεμνῆσθαι τὸν ποιητὴν, οὐ τῆς ἐν κύπρῳ ταμασσοῦ. λέγεται γὰρ ἀμφο-
τέρως τὸ ἐς τεμέσην μετὰ χαλκόν. καὶ δείκνυται χαλκουργεῖα πλησίον, ἃ νῦν ἐκλέλειπται. ταύτης
δὲ συνεχὴς τερινά. ἣν ἀννίβας καθεῖλεν, οὐ δυνάμενος φυλάττειν, ὅτε δὴ εἰς αὐτὴν κατέφυγε τὴν
βρεττίαν. εἶτα κωνσεντία μητρόπολις βρεττίων. μικρὸν δ' ὑπὲρ ταύτης πανδοσία. φρούριον ἐρυμνὸν
περὶ ἣν ἀλέξανδρος ὁ μολοττὸς διεφθάρη. ἐξηπάτησε δὲ καὶ τοῦτον ὁ ἐν δωδώνῃ χρησμός. φυλάτ-
τεσθαι κελεύων τὸν ἀχέροντα καὶ τὴν πανδοσίαν. δεικνυμένων γὰρ ἐν τῇ θεσπρωτίᾳ ὁμωνύμων
τούτοις, ἐνταῦθα κατέστρεψε τὸν βίον. τρικόρυφον δ' ἐστὶ τὸ φρούριον. καὶ παραρρεῖ ποταμὸς ἀχέ-
ρων. προσηπάτησε δὲ καὶ ἄλλο λόγιον. πανδοσία τρικόλωνε. πολύν ποτε λαὸν ὀλέσσεις. ἔδοξε γὰρ πο-
λεμίων φθορὰν οὐκ οἰκείων δηλοῦσθαι. φασὶ δὲ καὶ βασίλειον ποτὲ γενέσθαι τῶν οἰνωτρικῶν βασι-
λέων τὴν πανδοσίαν. μετὰ δὲ τὴν κωνσεντίαν ἱππώνιον λοκρῶν κτίσμα. βρεττίους δὲ κατέχοντας ἀ-
φείλοντο ῥωμαῖοι. καὶ μετωνόμασαν οὐιβῶνα οὐαλεντίαν. διὰ δὲ τὸ εὐλείμωνα εἶναι τὰ περικείμενα
χωρία καὶ ἀνθηρὰ, τὴν κόρην ἐκ σικελίας πεπιστεύκασιν ἀφικνεῖσθαι δεῦρο ἀνθολογήσουσαν. ἐκ

δὲ τούτου

δὲ τούτου ταῖς γυναιξὶν ἐν ἔθει γεγονέναι, ἀνθολογεῖν τε καὶ στεφανηπλοκεῖν· ὥστε ταῖς ἑορταῖς αἰσχρὸν εἶναι στεφάνους ὠνητοὺς φορεῖν. ἔχει δ' ἐπίνειον ὃ κατεσκεύασε ποτὲ ἀγαθοκλῆς ὁ τύραννος τῶν σικελιωτῶν κρατήσας τῆς πόλεως. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸν ἡρακλέους λιμένα πλεύσασιν, ἄρχεται ἐπιστρέφειν τὰ ἄκρα τῆς ἰταλίας, τὰ πρὸς τῷ πορθμῷ πρὸς τὴν ἑσπέραν, ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τούτῳ μέσμα πόλις λοκρῶν τῶν αὐτῶν ὁμώνυμος κρήνη μεγάλη, πλησίον ἔχουσα ἐπίνειον καλούμενον ἐμπόριον. ἐγγὺς δὲ καὶ μέταυρος ποταμὸς καὶ ὕφορμος ὁμώνυμος. πρόκεινται δὲ τῆς ἠϊόνος ταύτης αἱ τῶν λιπαραίων νῆσοι. διέχουσαι τοῦ πορθμοῦ σταδίους διακοσίους. οἱ δ' αἰόλου φασίν. οὗ καὶ τὸν ποιητὴν μεμνῆσθαι κατὰ τὴν ὀδύσσειαν. εἰσὶ δ' ἑπτὰ τὸν ἀριθμὸν ἐν ἀπόψει πᾶσι. καὶ τοῖς ἐκ τῆς σικελίας, καὶ τοῖς ἐκ τῆς ἠπείρου τοῖς κατὰ μέσμαν ἀφορῶσι. περὶ ὧν ἐροῦμεν, ὅταν περὶ τῆς σικελίας λέγωμεν. ἀπὸ δὲ τοῦ μεταύρου ποταμοῦ, μέταυρος ἕτερος. ἐκδέχεται δ' ἐντεῦθεν, τὸ σκύλλαιον πέτρα, χερρονησίζουσα ὑψηλή. τὸν ἰσθμὸν ἀμφίδυμον καὶ ταπεινὸν ἔχουσα. ὃν ἀναξίλαος ὁ τύραννος τῶν ῥηγίνων ἐπετείχισε τοῖς τυρρηνοῖς κατασκευάσας ναύσταθμον. καὶ ἀφείλετο τοὺς λῃστὰς τὸν διὰ τοῦ πορθμοῦ διάπλουν. πλησίον γάρ ἐστι καὶ ἡ καῖνυς. διέχουσα τῆς μέσμης σταδίους πεντακοσίους καὶ διακοσίους. ἣ τελευταία ποιεῖται τὰ ἄκρα στενὰ τοῦ πορθμοῦ, πρὸς τὴν ἐκ τῆς σικελίας ἄκραν τὴν πελωρίδα. ἔστι δ' αὕτη μία τῶν τριῶν τῶν ποιουσῶν τρίγωνον τὴν νῆσον. νεύει δὲ ἐπὶ θερινὰς ἀνατολάς, καθάπερ καὶ ἡ καῖνυς πρὸς τὴν ἑσπέραν. ἀντιπεριστροφήν τινα ἀπ' ἀλλήλων ποιουμένων αὐτῶν. ἀπὸ δὲ καίνυος μέχρι τοῦ ποσειδωνίου τῆς ῥηγίνων στυλίδος τοῦ πορθμοῦ, διήκει στενωπὸς ὅσον ἑξαστάδιος. μικρῷ δὲ πλέον τὸ ἐλάχιστον διάπεραμα. ἀπὸ δὲ στυλίδος ἑκατὸν εἰς ῥήγιον. ἤδη τοῦ πορθμοῦ πλατυνομένου. προϊοῦσι πρὸς τὴν ἔξω, καὶ πρὸς ἕω θάλατταν τὴν τοῦ σικελικοῦ πελάγους καλουμένου. κτίσμα δ' ἐστὶ τὸ ῥήγιον χαλκιδέων. οὓς κατὰ χρησμὸν δεκατευθέντας τῷ ἀπόλλωνι δι' ἀφορίαν, ὕστερον ἐκ δελφῶν ἀποικῆσαι δεῦρό φασι, παραλαβόντας καὶ ἄλλους τῶν οἴκοθεν. ὡς δ' ἀντίοχος φησί, ζαγκλαῖοι μετεπέμψαντο τοὺς χαλκιδέας. καὶ οἰκιστὴν ἀντίμνηστον συνέστησαν ἐκείνων. ἦσαν δὲ τῆς ἀποικίας καὶ οἱ μεσσηνίων φυγάδες τῶν ἐν πελοποννήσῳ, καταστασιασθέντες ὑπὸ τῶν μὴ βουλομένων δοῦναι δίκας, ὑπὲρ τῆς φθορᾶς τῶν παρθένων τῆς ἐν λίμναις γενομένης τοῖς λακεδαιμονίοις. ἃς καὶ αὐτοὶ ἐβιάσαντο, πεμφθείσας ἐπὶ τὴν ἱερουργίαν, καὶ τοὺς ἐπιβοηθοῦντας ἀπέκτειναν. παραχωρήσαντες οὖν εἰς μάκιστον οἱ φυγάδες, πέμπουσιν εἰς θεοῦ. μεμφόμενοι τὸν ἀπόλλωνα καὶ τὴν ἄρτεμιν, εἰ τοιούτων τυγχάνοιεν. ἀνθ' ὧν ἐτιμώρουν αὐτοῖς. καὶ πυνθανόμενοι πῶς ἂν σωθεῖεν ἀπολωλότες. ὁ δ' ἀπόλλων ἐκέλευσε στέλλεσθαι μετὰ χαλκιδέων εἰς τὸ ῥήγιον. καὶ τῇ ἀδελφῇ αὐτοῦ χάριν ἔχειν. οὐ γὰρ ἀπολωλέναι αὐτούς. ἀλλὰ σεσῶσθαι. μέλλοντάς γε δὴ μὴ συναφανισθήσεσθαι τῇ πατρίδι, ἁλωσομένῃ μικρὸν ὕστερον ὑπὸ σπαρτιατῶν. οἱ δ' ὑπήκουσαν. διόπερ οἱ τῶν ῥηγίνων ἡγεμόνες μέχρι ἀναξίλα τοῦ μεσσηνίων γένους ἀεὶ καθίσταντο. ἀντίοχος δὲ τὸ παλαιὸν ἅπαντα τὸν τόπον τοῦτον, οἰκῆσαι σικελοὺς φησί. καὶ μόργητας διαρῆναι εἰς τὴν σικελίαν ὕστερον, ἐκβληθέντας ὑπὸ τῶν οἰνωτρέων. φασὶ δέ τινες καὶ τὸ μοργάντιον ἐντεῦθεν τὴν προσηγορίαν ἀπὸ τῶν μοργήτων ἔχειν. ἴσχυσε δὲ μέγιστον ἡ τῶν ῥηγίνων πόλις. καὶ περιοικίδας ἔσχε συχνάς. ἐπιτείχισμά τε ὑπῆρξεν ἀεὶ τῇ νήσῳ, καὶ πάλαι. καὶ νεωστί, ὑφ' ἡμῶν, ἡνίκα σέξτος πομπήϊος ἀπέστησε τὴν σικελίαν. ὠνομάσθη δὲ ῥήγιον, εἴθ' ὥς φησιν αἰσχύλος διὰ τὸ συμβὰν πάθος τῇ χώρᾳ ταύτῃ, ἀπορραγῆναι γὰρ ἀπὸ τῆς ἠπείρου τὴν σικελίαν ὑπὸ σεισμῶν. ἄλλοι τε κἀκεῖνος εἴρηκεν. ἀφ' οὗ δὴ ῥήγιον κικλήσκεται. τεκμαίρονται δ' ἀπὸ τῶν περὶ τὴν αἴτνην συμπτωμάτων. καὶ τῶν κατ' ἄλλα μέρη τῆς σικελίας. καὶ τῶν κατὰ λιπάραν καὶ τὰς περὶ αὐτὴν νήσους. ἔτι δὲ τῶν κατὰ τὰς πιθηκούσας καὶ τὴν προσεχῆ περαίαν ἅπασαν, οὐκ ἀπεικὸς ὑπάρχειν καὶ τοῦτο συμβῆναι. νῦν μὲν οὖν ἀνεωγμένων τούτων τῶν στομάτων, δι' ὧν τὸ πῦρ ἀναφυσᾶται καὶ μύδροι καὶ ὕδατα ἐκπίπτει, σπάνιόν τι σείεσθαι φασὶ τὴν περὶ τὸν πορθμὸν γῆν. τότε δὲ πάντων ἐμπεφραγμένων τῶν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν πόρων, ὑπὸ γῆς σμυχόμενον τὸ πῦρ καὶ τὸ πνεῦμα, σεισμοὺς ἀπειργάζετο σφοδρούς. μοχλευόμενοι δ' οἱ τόποι πρὸς τὴν βίαν τῶν ἀνέμων ὑπεῖξάν ποτε. καὶ ἀναρραγέντες ἐδέξαντο τὴν ἑκατέρωθεν θάλατταν. καὶ ταύτην. καὶ τὴν μεταξὺ τῶν ἄλλων νήσων τῶν ταύτῃ. καὶ γὰρ ἡ προχύτη, καὶ αἱ πιθήκουσαι, ἀποσπάσματα τῆς ἠπείρου. καὶ αἱ καπρέαι, καὶ ἡ λευκωσία καὶ σειρῆνες καὶ αἱ οἰνωτρίδες. αἱ δέ, καὶ ἐκ τοῦ πελάγους ἀνέδυσαν. καθάπερ καὶ νῦν πολλαχοῦ συμβαίνει. τὰς μὲν γὰρ πελαγίας ἐκ βυθοῦ μᾶλλον ἀνενεχθῆναι πιθανόν. τὰς δὲ προκειμένας τῶν ἀκρωτηρίων καὶ πορθμῷ διῃρημένας, ἐντεῦθεν ἀπερρωγέναι δοκεῖν εὐλογώτατον. πλήν, εἴτε διὰ ταύτην τὴν αἰτίαν τοὔνομα τῇ πόλει γέγονεν, εἴτε διὰ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς πόλεως ὡς ἄν, βασίλειον τῇ λατίνῃ φωνῇ προσαγορευσάντων σαυνιτῶν διὰ τὸ τοὺς ἀρχηγέτας αὐτῶν κοινωνῆσαι ῥωμαίοις τῆς πολιτείας καὶ ἐπιπολὺ χρήσασθαι τῇ λατίνῃ διαλέκτῳ, πάρεστι σκοπεῖν ὁπότερως ἔχει τἀληθές. ἐπιφανῆ δ' οὖν πόλιν οὖσαν, καὶ πολλὰς μὲν πόλεις οἰκίσασαν, πολλοὺς δ' ἄνδρας παρεσχημένην ἀξίους λόγου, τοὺς μέν, κατὰ πολιτικὴν ἀρετήν, τοὺς δέ, κατὰ παιδείαν, κατασκάψαι διονύσιον, αἰτιασάμενον, ὅτι αἰτησαμένῳ κόρην πρὸς γάμον τὴν τοῦ δημίου θυγατέρα, προὔτειναν. ὁ δ' υἱὸς αὐτοῦ μέρος τι τοῦ κλίσματος ἀναλαβών, φοιβίαν ἐκάλεσεν ἐπὶ πύρ-

ῥοῦ. ἡ δὲ τῶν καμπανῶν φρουρὰ παρασπονδήσαντας, διέφθειρε τοὺς πλείστους. μικρὸν δὲ πρὸ τῶν
μαρσικῶν, καὶ σεισμοὶ κατήρειψαν πολὺ τῆς κατοικίας. πομπήϊον δ' ἐκβαλὼν τῆς σικελίας σεβα-
στὸς καῖσαρ, ὁρῶν λειπανδροῦσαν τὴν πόλιν, συνοίκους ἔδωκεν αὐτῇ τῶν ἐκ τοῦ στόλου τινάς. καὶ νῦν
ἱκανῶς εὐανδρεῖ. ἀπὸ δὲ τοῦ ῥηγίου πλέοντι πρὸς ἕω, λευκοπέτραν καλοῦσιν ἄκραν ἀπὸ τῆς χρόας ἐν πεντή-
κοντα σταδίοις. εἰς ἣν τελευτᾶν φασὶ τὸ ἀπέννινον ὄρος. ἐντεῦθεν δ' ἡράκλειον. ἐν δὴ τελευταῖον ἀκρωτή-
ριον νεύει πρὸς μεσημβρίαν. κάμψαντι γὰρ εὐθὺς ὁ πλοῦς λιβὶ μέχρι πρὸς ἄκραν ἰαπυγίαν, εἶτ' ἐκκλίνει
πρὸς ἄρκτον ἀεί. καὶ μᾶλλον καὶ πρὸς τὴν ἑσπέραν, ἐπὶ τὸν κόλπον τὸν ἰώνιον. μετὰ δὲ τὸ ἡράκλειον
ἄκρα τῆς λοκρίδος, ἣ καλεῖται ζεφύριον. ἔχουσα τοῖς ἑσπερίοις ἀνέμοις λιμένα, ἐξ οὗ καὶ τοὔνομα. εἶθ'
ἡ πόλις οἱ λοκροὶ οἱ ἐπιζεφύριοι. ἐπεὶ λοκρῶν ἄποικοι τῶν ἐν τῷ κρισσαίῳ κόλπῳ μικρὸν ὕστερον τῆς
ἀπὸ κρότωνος καὶ συρακουσῶν κτίσεως ἀποικισθέντες ὑπὸ εὐάνθους. ἔφορος δ' οὐκ εὖ τῶν ὀπουντίων
λοκρῶν, ἀποίκους φήσας. ἔτη μὲν οὖν τρία, ἢ τέτταρα ᾤκουν ἐπὶ τῷ ζεφυρίῳ. εἶτα μετήνεγκαν τὴν
πόλιν, συμπραξάντων καὶ συρακουσίων. ἅμα γὰρ οὗτοι. ἐν οἷς καὶ ἔστιν ἐκεῖ κρήνη λοκρία, ὅπου οἱ λοκροὶ ἐστρα
τοπεδεύσαντο. εἰσὶ δ' ἀπὸ ῥηγίου μέχρι λοκρῶν ἑξακόσιοι στάδιοι. ἵδρυται δ' ἡ πόλις ἐπ' ὀφρύος, ἣν ἐσώπιν
καλοῦσι. πρῶτοι δὲ νόμοις ἐγγράπτοις χρήσασθαι πεπιστευμένοι εἰσί. καὶ πλεῖστον χρόνον εὐνομηθέν-
τας, διονύσιος ἐκπεσὼν ἐκ τῆς συρακουσίων, ἀνομώτατα πάντων διεχρήσατο. ὅς γε προεγάμει μὲν
παρεισιὼν εἰς τὸ δωμάτιον, τὰς νυμφοστολισθείσας. συναγαγὼν δὲ τὰς ὡραίας παρθένους, περιστερὰς ὁ
λοπτέρους ἐν τοῖς συμποσίοις ἠφίει. κἀκείνας ἐκέλευε γυρεύειν γυμνάς. τινὰς δὲ καὶ σανδάλια ὑπο
δεδεμένας ἄζυγα, τὸ μὲν ὑψηλὸν, τὸ δὲ ταπεινὸν, ἐπιδιώκειν ἔφασαν τοῦ ἀπρεποῦς χάριν. δίκας μέντοι ἔτισεν, ἐ
πειδὴ πάλιν εἰς τὴν σικελίαν ἐπανῆλθεν ἀναληψόμενος τὴν ἀρχήν. καταλύσαντες γὰρ οἱ λοκροὶ τὴν
φρουρὰν, ἠλευθέρωσαν σφᾶς. καὶ τῆς γυναικὸς αὐτοῦ καὶ τῶν παιδίων κύριοι κατέστησαν. δύο δ' ἦσαν
αἱ θυγατέρες. καὶ τῶν υἱῶν ὁ νεώτερος ἤδη μειράκιον. ἅτερος γὰρ ἀπολλοκράτης συνεστρατήγει τῷ πα
τρὶ τὴν κάθοδον. πολλὰ δὲ δεομένῳ τῷ διονυσίῳ, καὶ αὐτῷ καὶ ταραντίνοις ὑπὲρ αὐτοῦ προέσθαι τὰ
πράγματα ἐφ' οἷς ἂν ἐθελήσωσιν, οὐκ ἔδοσαν. ἀλλὰ πολιορκίαν ὑπέμειναν καὶ πόρθησιν τῆς χώρας. τὸν
δὲ θυμὸν εἰς τὰς θυγατέρας τὸν πλεῖστον ἐξέχεαν. καταπορνευθείσας γὰρ, ἐστραγγάλισαν. εἶτα καύ
σαντες τὰ σώματα κατήλεσαν τὰ ὀστᾶ καὶ κατεπόντωσαν. τῆς δὲ τῶν λοκρῶν νομογραφίας μνησθεὶς
ἔφορος, ἣν ζάλευκος συνέταξεν, ἔκ τε τῶν κρητικῶν νομίμων, καὶ λακωνικῶν, καὶ ἐκ τῶν ἀρεοπαγιτι
κῶν, φησὶν ἐν τοῖς πρώτοις καινίσαι τοῦτον τὸν ζάλευκον. ὅτι τῶν πρότερον τὰς ζημίας τοῖς δικασταῖς
ἐπιτρεψάντων ὁρίζειν ἐφ' ἑκάστοις τοῖς ἀδικήμασιν, ἐκεῖνος ἐν τοῖς νόμοις διώρισεν. ἡγούμενος τὰς μὲν
γνώμας τῶν δικαστῶν οὐχὶ τὰς αὐτὰς εἶναι περὶ τῶν αὐτῶν. δεῖν δὲ τὰς αὐτὰς ἐπαινεῖν. καὶ τὸ ἁ-
πλουστέρως περὶ τῶν συμβολαίων διατάξαι. θουρίους δ' ὕστερον ἀκριβοῦν θέλοντας περὶ τῶν
ἄκρων, ἐνδοξοτέρους μὲν γενέσθαι. χείρονας δὲ, εὐνομεῖσθαι γὰρ, οὐ τοὺς ἐν τοῖς νόμοις ἅπαντας φυ-
λαττομένους τὰ τῶν συκοφαντῶν. ἀλλὰ τοὺς ἐμμένοντας τοῖς ἁπλῶς κειμένοις. τοῦτο δὲ καὶ πλάτων
εἴρηκεν. ὅτι παρ' οἷς πλεῖστοι νόμοι, καὶ δίκαι παρὰ τούτοις. καὶ βίοι μοχθηροί. καθάπερ καὶ παρ' οἷς
ἰατροὶ πολλοὶ καὶ νόσους εἰκὸς εἶναι πολλάς. τοῦ δὲ ἄληκος ποταμοῦ τοῦ διορίζοντος τὴν ῥηγίνην ἀπὸ τῆς
λοκρίδος, βαθεῖαν φάραγγα διεξιόντος, ἴδιόν τι συμβαίνειν, τὸ περὶ τοὺς τέττιγας. οἱ μὲν γὰρ ἐν τῇ τῶν
λοκρῶν περαίᾳ φθέγγονται. τοῖς δ' ἀφώνοις εἶναι συμβαίνει. τὸ δ' αἴτιον εἰκάζουσιν ὅτι τοῖς μὲν πα
λίσκιόν ἐστι τὸ χωρίον. ὥστ' ἐνδρόσους ὄντας μὴ διαστέλλειν τοὺς ὑμένας. τοῖς δ' ἡλιαζομένοις, ξηροὺς καὶ
κερατώδεις ἔχειν. ὥστ' ἀπ' αὐτῶν εὐφυῶς ἐκπέμπεσθαι τὸν φθόγγον. ἐδείκνυτο δ' ἀνδριὰς ἐν τοῖς λοκροῖς
εὐνόμου τοῦ κιθαρῳδοῦ. τέττιγα ἐπὶ τὴν κιθάραν καθήμενον ἔχων. φησὶ δὲ τίμαιος πυθίοις ποτὲ ἀγω
νιζομένους, τοῦτόν τε καὶ ἀρίστωνα ῥηγῖνον ἐρίσαι περὶ τοῦ κλήρου. τὸν μὲν δὴ ἀρίστωνα δεῖσθαι τῶν δελ
φῶν ἑαυτῷ συμπράττειν. ἱεροὺς γὰρ εἶναι τοῦ θεοῦ τοὺς προγόνους αὐτοῦ. καὶ τὴν ἀποικίαν ἐνθένδε
ἐστάλθαι. τοῦ δ' εὐνόμου φήσαντος ἀρχὴν μηδὲ μετεῖναι ἐκείνοις αὐτοῖς τῶν περὶ φωνὴν ἀγωνισμάτων,
παρ' οἷς καὶ οἱ τέττιγες εἶεν ἄφωνοι, τὰ εὐφθογγότατα τῶν ζώων, ὅμως εὐδοκιμεῖν, μηδὲν ἧττον τὸν
ἀρίστωνα καὶ ἐν ἐλπίδι τὴν νίκην ἔχειν. νικῆσαι μέντοι τὸν εὔνομον καὶ ἀνατεθῆναι τὴν λεχθεῖσαν εἰ-
κόνα ἐν τῇ πατρίδι. ἐπεὶ κατὰ τὸν ἀγῶνα, μιᾶς τῶν χορδῶν ῥαγείσης, ἐπιστὰς τέττιξ ἐκπληρώ-
σειε τὸν φθόγγον. τὴν δ' ὑπὲρ τῶν πόλεων τούτων μεσόγαιαν, βρέττιοι κατέχουσι. καὶ πόλις ἐνταῦ-
θα μαμέρτιον. καὶ ὁ δρυμὸς ὁ φέρων τὴν ἀρίστην πίτταν. ὃν βρεττιανὸν σίλαν καλοῦσιν. εὔεν-
δρος δὲ καὶ εὔυδρος. μῆκος ἑπτακοσίων σταδίων. μετὰ δὲ λοκροὺς, σάγρας. ὃν θηλυκῶς ὀνομά-
ζουσιν, ἐφ' οὗ διοσκούρων. περὶ οὓς λοκροὶ μύριοι μετὰ ῥηγίνων πρὸς δεκατρεῖς μυριάδας κρο-
τωνιατῶν συμβαλόντες ἐνίκησαν. ἀφ' οὗ τὴν παροιμίαν πρὸς τοὺς ἀπιστοῦντας ἐκπεσεῖν φα-
σὶν, ἀληθέστερα τῶν ἐπὶ σάγρα. προσμεμυθεύκασι δ' ἔνιοι καὶ διότι αὐθημερὸν τοῦ ἀγῶνος ἐ-
νεστῶτος ὀλυμπίασιν, ἀπαγγελθείη τοῖς ἐκεῖ τὸ συμβάν. καὶ εὑρεθείη τὸ τάχος τῆς ἀγγελί-
ας ἀληθές, ταύτην δὲ τὴν συμφορὰν αἰτίαν γενέσθαι τοῖς κροτωνιάταις φασὶ, τοῦ μὴ πολὺν ἔτι
συμμεῖναι χρόνον, διὰ τὸ πλῆθος τῶν τότε πεσόντων ἀνδρῶν. μετὰ δὲ τὴν σάγραν ἀχαιῶν κτί-

σμα καυλωνία. πρότερον δὲ αὐλωνία λεγομένη, διὰ τὸ προκείμενον αὐλῶνα. ἔστι δ' ἔρημος. οἱ γὰρ ἔχοντες ἐν σικελίᾳ ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἐξέπεσον. καὶ τὴν ἐκεῖ καυλωνίαν ἔκτισαν. μετὰ δὲ ταύτην σκυλλήτιον, ἄποικος ἀθηναίων τῶν μετὰ μενεσθέως. νῦν δὲ, σκυλάκιον καλεῖται. κροτωνιατῶν δ' ἐχόντων, διονύσιος λοκροῖς μέρος ὥρισεν. ἀπὸ δὲ τῆς πόλεως καὶ ὁ κόλπος σκυλλητικὸς ὠνόμασται. ποιῶν τὸν εἰρημένον ἰσθμὸν, πρὸς τὸν ἱππωνιάτην κόλπον. ἐπεχείρησε δ' ὁ διονύσιος καὶ διατειχίζειν τὸν ἰσθμὸν, στρατεύσας ἐπὶ λευκανοὺς, λόγῳ μὲν, ὡς ἀσφάλειαν παρέξων, ἀπὸ τῶν ἐκτὸς βαρβάρων, τοῖς ἐντὸς ἰσθμοῦ. τὸ δ' ἀληθὲς, λῦσαι τὴν πρὸς ἀλλήλους κοινωνίαν βουλόμενος, ὥστ' ἄρχειν τῶν ἐντὸς ἀδεῶς. ἀλλ' ἐκώλυσαν οἱ ἐκτὸς εἰσελθόντες. μετὰ δὲ τὸ σκυλλήτιον ἡ κροτωνιάτις χώρα, καὶ τῶν ἰαπύγων ἄκραι τρεῖς. μετὰ δὲ ταῦτα τὸ λακίνιον, ἥρας ἱερὸν, πλούσιον ποτὲ ὑπάρξαν. καὶ πολλῶν ἀναθημάτων μεστόν. τὰ διάρματα δ' οὐκ εὐκρινῶς λέγεται. πλὴν ὥς γε ἐπὶ τὸ πολὺ σταδίους ἀπὸ πορθμοῦ μέχρι λακινίου, πολύβιος ἀποδίδωσι δισχιλίους καὶ τ'. ἐντεῦθεν δὲ καὶ δίαρμα εἰς ἄκραν ἰαπυγίαν ψ'. τοῦτο μὲν οὖν στόμα λέγουσι τοῦ ταραντίνου κόλπου. αὐτὸς δ' ὁ κόλπος ἔχει περίπλουν ἀξιόλογον. μιλίων διακοσίων μ', ὡς ὁ χωρογράφος φησί. τ' π' εὐζώνῳ ἀρτιμίδωρος. τοσούτοις δὲ καὶ λείπων τοῦ πλάτους τοῦ στόματος τοῦ κόλπου. βλέπει δὲ πρὸς ἀνατολὰς χειμερινάς. ἀρχὴ δ' αὐτοῦ τὸ λακίνιον. κάμψαντι γὰρ εὐθὺς αἱ τῶν ἀχαιῶν πόλεις ἦσαν, αἳ νῦν οὐκ εἰσὶ πλὴν τῆς ταραντίνων. ἀλλὰ διὰ τὴν δόξαν τινῶν, ἄξιον καὶ ἐπὶ πλέον αὐτῶν μνησθῆναι. πρώτη δ' ἐστὶ κρότων ἐν ἑκατὸν καὶ ν' σταδίοις ἀπὸ τοῦ λακινίου. καὶ ποταμὸς αἴσαρος καὶ λιμὴν. καὶ ἄλλος ποταμὸς, νέαιθος. οὗ τὴν ἐπωνυμίαν γενέσθαι φασὶν, ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος. καταχθέντας γάρ τινας τῶν ἀπὸ τοῦ ἰλιακοῦ στόλου πλανηθέντων ἀχαιῶν, ἐκβῆναι λέγουσιν ἐπὶ τὴν κατάσκεψιν τῶν χωρίων. τὰς δὲ συμπλεούσας αὐτοῖς τρωάδας καταμαθούσας ἔρημα ἀνδρῶν τὰ πλοῖα ἐμπρῆσαι βαρυνομένας τὸν πλοῦν. ὥστ' ἀναγκασθῆναι μένειν ἐκείνους. καὶ τὴν γῆν σπουδαίαν ὁρῶντας, εὐθὺς δὲ καὶ ἄλλων πλειόνων εἰσαφικνουμένων καὶ ζηλούντων ἐκείνους κατὰ τὸ ὁμόφυλον, πολλὰς κατοικίας γενέσθαι. ὧν αἱ πλείους ἐπώνυμοι τῶν τρώων ἐγένοντο. καὶ ποταμὸς δὲ ὁ νέαιθος ἀπὸ τοῦ πάθους τὴν προσωνυμίαν ἔχει. φησὶ δ' ἀντίοχος τοῦ θεοῦ φήσαντος ἀχαιοῖς κρότωνα κτίζειν, ἀπελθεῖν μύσκελλον κατασκεψόμενον τὸν τόπον. ἰδόντα δ' ἐκτισμένην ἤδη σύβαριν, ποταμῷ τῷ πλησίον ὁμώνυμον, κρῖναι ταύτην ἀμείνω. ἐπανερέσθαι δ' οὖν ἀπιόντα τὸν θεὸν, εἰ λῷον εἴη ταύτην ἀντ' ἐκείνης κτίζειν. τὸν δὲ, ἀνειπεῖν. ἐτύγχανε δὲ ὑπόκυφος ὢν ὁ μύσκελλος.

» Μύσκελλε βραχύνωτε παρὲξ θεοῦ ἄλλο ματεύων. Κλάσματα θηρεύεις· ὀρθὸν δ' ὅ, τι δῷ τις ἐπαινεῖν.

Ἐπανελθόντα δὲ κτίσαι τὴν κρότωνα. συμπράξαντος καὶ ἀρχίου τοῦ τὰς συρακούσας οἰκίσαντος. προσπλεύσαντος κατὰ τύχην, ἡνίκα ὥρμητο ἐπὶ τὸν τῶν συρακουσῶν οἰκισμόν. ᾤκουν δ' ἴαπυγες τὴν κρότωνα πρότερον, ὡς ἔφορος φησί. δοκεῖ δ' ἡ πόλις τά τε πολέμια ἀσκῆσαι καὶ τὰ περὶ τὴν ἄθλησιν. ἐν μιᾷ γοῦν ὀλυμπιάδι οἱ τῶν ἄλλων προτερήσαντες τῷ σταδίῳ ἑπτὰ ἄνδρες ἅπαντες ὑπῆρξαν κροτωνιᾶται. ὥστ' εἰκότως εἰρῆσθαι δοκεῖ. διότι κροτωνιατῶν ὁ ἔσχατος, πρῶτος ἦν τῶν ἄλλων ἑλλήνων. καὶ τὴν παροιμίαν δὲ ὑγιέστερον κρότωνος λέγουσαν, ἐντεῦθεν εἰρῆσθαί φασιν. ὡς τοῦ τόπου πρὸς ὑγείαν καὶ εὐεξίαν ἔχοντός τι φορὸν διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀθλητῶν. πλείστους οὖν ὀλυμπιονίκας ἔσχε. καίπερ οὐ πολὺν χρόνον οἰκηθεῖσα διὰ τὸν φθόρον, τῶν ἐπὶ σάγρᾳ πεσόντων ἀνδρῶν τοσούτων τὸ πλῆθος. προσέλαβε δὲ τῇ δόξῃ, καὶ τὸ τῶν πυθαγορείων πλῆθος, καὶ μίλων. ἐπιφανέστατος μὲν τῶν ἀθλητῶν γεγονώς. ὁμιλητὴς δὲ πυθαγόρου, διατρίψαντος ἐν τῇ πόλει πολὺν χρόνον. φασὶ δὲ ἐν τῷ συσσιτίῳ, ποτὲ τῶν φιλοσόφων πονήσαντος στύλου τὸν μίλωνα ὑποδύντα σῶσαι ἅπαντας. ὑποσπάσαι δὲ ἑαυτόν. τῇ δ' αὐτῇ ῥώμῃ πεποιθότα εἰκὸς καὶ τὴν ἱστορουμένην ὑπό τινων εὑρέσθαι καταστροφὴν τοῦ βίου. λέγεται γοῦν ὁδοιπορῶν ποτὲ δι' ὕλης βαθείας, παραβῆναι τὴν ὁδὸν ἐπὶ πλέον. εἶθ' εὑρὼν ξύλον μέγα ἐσφηνωμένον, ἐμβαλὼν χεῖρας ἅμα καὶ πόδας εἰς τὴν διάστασιν βιάζεσθαι πρὸς τὸ διαστῆσαι τελέως. τοσοῦτον δ' ἴσχυσε μόνον, ὥστ' ἐκπεσεῖν τοὺς σφῆνας. εἶτ' εὐθὺς συμπεσεῖν τὰ μέρη τοῦ ξύλου. ἀποληφθέντα δ' αὐτὸν ἐν τοιαύτῃ πάγῃ θηρόβρωτον γενέσθαι. ἐφεξῆς δ' ἐστὶ διακοσίοις σταδίοις ἀχαιῶν κτίσμα ἡ σύβαρις δυεῖν ποταμῶν μεταξύ. κράθιδος καὶ συβάριδος. οἰκιστὴς δ' αὐτῆς ὁ ἰσελικεύς. τοσοῦτον δ' εὐτυχίᾳ διήνεγκεν ἡ πόλις αὕτη τὸ παλαιὸν, ὡς τεσσάρων μὲν ἐθνῶν τῶν πλησίον ὑπῆρξε, πέντε δὲ καὶ εἴκοσι πόλεις ὑπηκόους ἔσχε. τριάκοντα δὲ μυριάσιν ἀνδρῶν ἐπὶ κροτωνιάτας ἐστράτευσαν. πεντήκοντα δὲ σταδίων κύκλον συνεπλήρουν οἰκοῦντες ἐπὶ τῷ κράθιδι. ὑπὸ μέντοι τρυφῆς καὶ ὕβρεως τὴν εὐδαιμονίαν ἅπασαν ἀφῃρέθησαν ὑπὸ κροτωνιατῶν, ἐν ἡμέραις ἑβδομήκοντα. ἑλόντες γὰρ τὴν πόλιν ἐπήγαγον τὸν ποταμὸν καὶ κατέκλυσαν. ὕστερον δ' οἱ περιγενόμενοι, συνελθόντες ἐπῴκουν ὀλίγοι. χρόνῳ δὲ καὶ οὗτοι διεφθάρησαν ὑπὸ ἀθηναίων καὶ ἄλλων ἑλλήνων. οἱ συνοικήσοντες μὲν ἐκείνοις ἀφίκοντο. καταφρονήσαντες δὲ αὐτῶν, τοὺς μὲν διεχειρώσαντο. τὴν δὲ πόλιν εἰς ἕτερον τόπον μετέθηκαν πλησίον. καὶ θουρίους προσηγόρευσαν ἀπὸ κρήνης ὁμωνύμου. ὁ μὲν οὖν συβαρὶς τοὺς πίνοντας ἵππους πτυρτικοὺς ποιεῖ. διὸ καὶ τὰς ἀγέλας ἀπείργουσιν ἀπ' αὐτοῦ. ὁ δὲ κράθις τοὺς ἀνθρώπους ξανθοτριχεῖν καὶ λευκοτριχεῖν ποιεῖ λουομένους. καὶ ἄλλα πολλὰ πάθη ἰᾶται. θου-

εἶτ' ἀτυχήσαντες πολὺν χρόνον, ὑπὸ λευκανῶν ἠνδραποδίσθησαν. ταραντίνων δ' ἀφελομένων ἐ-
κείνους, ἐπὶ ῥωμαίους κατέφυγον. οἱ δὲ, συμπέμψαντες συνοίκους, ὀλιγανδροῦσι μετωνόμασαν δὲ κωπίας
τὴν πόλιν. μετὰ δὲ θουρίους, λαγαρία φρούριον ἐπειοῦ καὶ φωκέων κτίσμα. ὅθεν καὶ ὁ λαγαριτανὸς
οἶνος, γλυκὺς καὶ ἁπαλὸς, καὶ παρὰ τοῖς ἰατροῖς σφόδρα εὐδοκιμῶν. καὶ ὁ θουρῖνος δὲ, τῶν ἐν ὀνό-
μασιν οἴνων ἐστίν. εἶθ' ἡρακλεόπολις, μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης. καὶ ποταμοὶ δύο πλωτοὶ ἄκιρις καὶ σί-
ρις. ἐφ' οὗ πόλις ἦν ὁμώνυμος τρωϊκή. χρόνῳ δὲ τῆς ἡρακλείας ἐντεῦθεν οἰκισθείσης ὑπὸ ταραντί-
νων, ἐπίνειον αὕτη τῶν ἡρακλεωτῶν ὑπῆρξε. διεῖχε δ' ἡρακλείας μὲν τετταράκοντα καὶ εἴκοσι σταδίους, θου-
ρίων δὲ περὶ λ' καὶ τ'. τῆς δὲ τῶν τρώων κατοικίας τεκμήριον ποιοῦνται τὸ τῆς ἀθηνᾶς τῆς ἰλιάδος
ξόανον, ἱδρυμένον αὐτόθι. ὅπερ καταμύσαι μυθεύουσιν ἀποσπωμένων τῶν ἱκετῶν ἀπὸ ἰώνων τῶν
ἑλόντων τὴν πόλιν. τούτους γὰρ ἐπελθεῖν οἰκήτορας τὴν λυδῶν ἀρχήν. καὶ βίᾳ λαβεῖν τὴν πόλιν αὐ-
τοχθόνων οὖσαν. καλέσαι δὲ αὐτὴν πολίειον. δείκνυσθαι δὲ καὶ νῦν καταμύον τὸ ξόανον. ἰταμὸν μὲν
οὖν καὶ τὸ οὕτω μυθεύειν ὥστε μὴ καταμύσαι φαινόμενον. καθάπερ καὶ τὸ ἐν ἰλίῳ ἀποστραφῆναι κα-
τὰ τὸν κασάνδρας βιασμόν. ἀλλὰ καὶ καταμύον δείκνυσθαι. πολὺ δὲ ἰταμώτερον τὸ τοσαῦτα ποι-
εῖν ἐξ ἰλίου κεκομισμένα ὅσα φασὶν οἱ συγγραφεῖς. καὶ γὰρ ἐν ῥώμῃ καὶ ἐν λαουινίῳ καὶ ἐν λουκε-
ρίᾳ, καὶ ἐν σειρίτιδι ἰλιὰς ἀθηνᾶ καλεῖται. ὡς ἐκεῖθεν κομισθεῖσα. καὶ τὸ τῶν τρωάδων δὲ τόλμημα,
περιφέρεται πολλαχοῦ, καὶ ἄπιστον φαίνεται, καίπερ δυνατὸν ὄν. τινὲς δὲ καὶ ῥοδίων κτίσμα φασί.
καὶ σειρῖτιν. καὶ τὴν ἐπὶ τοῦ τεύθραντος σύβαριν. φησὶ δ' ἀντίοχος τοὺς ταραντίνους, θουρίοις καὶ κλεαν-
δρίᾳ τῷ στρατηγῷ φυγάδι ἐκ λακεδαίμονος πολεμοῦντας περὶ τῆς σειρίτιδος συμβῆναι καὶ συνοι-
κῆσαι μὲν κοινῇ. τὴν δ' ἀποικίαν κριθῆναι ταραντίνων. ὕστερον δ' ἡράκλειαν κληθῆναι, μεταβαλοῦσαν
καὶ τοὔνομα καὶ τὸν τόπον. ἑξῆς δ' ἐστὶ μεταπόντιον. εἰς ὃ ἀπὸ τοῦ ἐπινείου τῆς ἡρακλείας εἰσὶ στάδιοι
μ' πρὸς τοῖς ἑκατόν. πυλίων δὲ λέγεται κτίσμα τῶν ἐξ ἰλίου πλευσάντων μετὰ νέστορος. οὓς οὕτως εὐτυ-
χῆσαι ἀπὸ γεωργίας φασίν, ὥστε θέρος χρυσοῦν ἐν δελφοῖς ἀναθεῖναι. σημεῖον δὲ ποιοῦνται τῆς κτί-
σεως, τὸν τῶν νηλειδῶν ἐναγισμόν. ἠφανίσθη δ' ὑπὸ σαυνιτῶν. ἀντίοχος δέ φησιν, ἐκλειφθέντα τὸν
τόπον, ἐποικῆσαι τῶν ἀχαιῶν τινάς. μεταπεμφθῆναι δὲ κατὰ μῖσος τὸ πρὸς ταραντίνους τῶν ἀ-
χαιῶν, τῶν ἐκπεσόντων ἐκ τῆς λακωνικῆς. ἵνα μὴ ταραντῖνοι γειτνιῶντες ἐπιπηδήσαι ἐν τῷ τόπῳ.
δυοῖν δ' οὐσῶν τῶν πόλεων τῶν μεταξὺ, ἐγγυτέρω τοῦ τάραντος, πεισθῆναι τοὺς ἀφιγμένους ὑπὸ
συβαριτῶν, τὸ μεταπόντιον κατασχεῖν. τοῦτο μὲν γὰρ ἔχοντας, ἕξειν καὶ τὴν σειρῖτιν. εἰ δ' ἐπὶ τὴν σει-
ρῖτιν τράποιντο, προσθήσειν τοῖς ταραντίνοις τὸ μεταπόντιον ἐν πλευραῖς ὄν. πολεμοῦντας δ' ὕ-
στερον πρὸς τοὺς ταραντίνους καὶ τοὺς ὑπερκειμένους οἰνωτρούς, ἐπὶ μέρει διαλυθῆναι τῆς γῆς. ὅ-
περ γενέσθαι τῆς τότε ἰταλίας ὅριον, καὶ τῆς ἰαπυγίας. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸν μετάποντον μυθεύουσι
καὶ τὴν μελανίππην τὴν δεσμῶτιν. καὶ τὸν ἐξ αὐτῆς βοιωτόν. δοκεῖ δ' ἀντίοχος τὴν πόλιν μεταπόντιον
εἰρῆσθαι πρότερον. μέταβον παρωνομάσθαι δ' ὕστερον. τήν τε μελανίππην οὐ πρὸς τοῦτον. ἀλλὰ πρὸς
δῖον κομισθῆναι, ἐλέγχειν ἡρῷον τοῦ μετάβου, καὶ ἄσιον τὸν ποιητὴν φήσαντα; ὅτι τὸν βοιωτὸν δίου ἐ-
νὶ μεγάροις τέκεν εὐειδὴς μελανίππη. ὡς πρὸς ἐκεῖνον ἀχθεῖσαν τὴν μελανίππην. οὐ πρὸς τὸν μέταβον.
οἰκιστὴς δὲ τοῦ μεταποντίου, δαύλιος ὁ κρίσης τύραννος γεγένηται τῆς περὶ δελφοὺς ὥς φησιν ἔφο-
ρος. ἔστι δέ τις καὶ τοιοῦτος λόγος. ὡς ὁ πεμφθεὶς ὑπὸ τῶν ἀχαιῶν ἐπὶ τὸν συνοικισμόν, λεύκιπ-
πος εἴη. χρησάμενος δὲ παρὰ τῶν ταραντίνων τὸν τόπον εἰς ἡμέραν καὶ νύκτα μὴ ἀποδοίη. μεθ' ἡμέραν
μὲν λέγων πρὸς τοὺς ἀπαιτοῦντας, ὅτι καὶ εἰς τὴν ἐφεξῆς νύκτα αἰτήσαιτο καὶ λάβοι. νύκτωρ δ' ὅ-
τι καὶ πρὸς τὴν ἑξῆς ἡμέραν. ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ὁ τάρας καὶ ἡ ἰαπυγία. περὶ ὧν ἐροῦμεν ὅταν πρότερον
τὰς προκειμένας νήσους τῆς ἰταλίας περιοδεύσωμεν κατὰ τὴν ἐξ ἀρχῆς πρόθεσιν. ἀεὶ γὰρ τοῖς
ἔθνεσιν ἑκάστου τὰς γειτνιώσας προσκαταλέγοντες νήσους, καὶ νῦν ἐπειδὴ μέχρι τέλους ἐπεληλύ-
θαμεν τὴν οἰνωτρίαν ἣν περ καὶ ἰταλίαν μόνην ὠνόμαζον οἱ πρότερον, δίκαιοί ἐσμεν φυλάξαι τὴν
αὐτὴν τάξιν ἐπελθόντες τὴν σικελίαν καὶ τὰς περὶ αὐτὴν νήσους. ἔστι δ' ἡ σικελία, τρίγωνος τῷ σχή-
ματι. καὶ διὰ τοῦτο τρινακρία μὲν πρότερον. θρινακὶς δ' ὕστερον προσηγορεύθη, μετονομασθεῖσα εὐφω-
νότερον. τὸ δὲ σχῆμα διορίζουσι τρεῖς ἄκραι. πελωριὰς μὲν ἡ πρὸς τὴν καῖνυν καὶ τὴν στυλίδα καὶ τὴν
ῥηγίνων, ποιοῦσα τὸν πορθμόν. πάχυνος δὲ ἡ ἐκκειμένη πρὸς ἕω καὶ τῷ σικελικῷ κλυζομένη πε-
λάγει. βλέπουσα πρὸς τὴν πελοπόννησον καὶ τὸν ἐπὶ κρήτης πόρον. τρίτη δ' ἐστὶν ἡ προσεχὴς τῇ λι-
βύῃ, βλέπουσα πρὸς αὐτὴν ἅμα καὶ τὴν χειμερινὴν δύσιν, λιλύβαιον. τῶν δὲ πλευρῶν ἃς ἀφο-
ρίζουσιν αἱ τρεῖς ἄκραι, δύο μὲν εἰσὶ κοῖλαι, μετρίως. ἡ δὲ τρίτη, κυρτὴ ἡ ἀπὸ τοῦ λιλυβαίου κα-
θήκουσα πρὸς τὴν πελωριάδα. ἥπερ μεγίστη ἐστὶ σταδίων χιλίων καὶ ἑπτακοσίων ὡς ποσειδώνιος εἴρη-
κε. προσθεὶς καὶ εἴκοσι. τῶν δ' ἄλλων ἡ ἐπὶ πάχυνον ἀπὸ τοῦ λιλυβαίου μείζων τῆς ἑτέρας. ἐλα-
χίστη δ' ἡ τῷ πορθμῷ καὶ τῇ ἰταλίᾳ προσεχής, ἡ ἀπὸ τῆς πελωριάδος ἐπὶ τὸν πάχυνον. σταδίων ὅσον
χιλίων ἑκατὸν καὶ τριάκοντα. τὸν δὲ περίπλουν ὁ ποσειδώνιος σταδίων τετρακοσίων ἐπὶ τοῖς τετρακισχιλίοις
ἀποφαίνει. ἐν δὲ τῇ χωρογραφίᾳ μείζω λέγεται τὰ διαστήματα. κατὰ μέρος διῃρημένα μιλιασμῷ. ἐκ δὲ πε-

λοειάδος εἰς μύλας κε΄. τοσαῦτα δὲ καὶ ἐκ μυλῶν εἰς τὴν τυνδαρίδα. εἶτα εἰς ἀγάθυρσον λ΄. καὶ τὰ ἴσα εἰς ἄλαισα. καὶ πάλιν ἴσα εἰς κεφαλοίδιον. ταῦτα μὲν πολίχνια. εἰς δ' ἱμέραν ποταμὸν ιη΄ διὰ μέσης ῥέοντα τῆς σικελίας. εἶτ' εἰς πάνορμον λε΄. δ΄ δὲ καὶ λ΄ εἰς τὸ τῶν αἰγεστέων ἐμπορεῖον. λοιπαὶ δὲ εἰς λιλύβαιον λη΄. ἐντεῦθεν δὲ κάμψαντι ἐπὶ τὸ συνεχὲς πλευρὸν, εἰς μὲν τὸ ἡράκλειον οε΄. ἐπὶ δὲ τὸ ἀκραγαντίνων ἐμπορεῖον κ΄. καὶ ἄλλα κ΄ εἰς καμάριναν. εἶτ' ἐπὶ πάχυνον ν΄. ἔνθεν πάλιν κατὰ τὸ τρίτον πλευρὸν εἰς μὲν συρακούσας λς΄. εἰς δὲ κατάνην ξ΄. εἶτ' εἰς ταυρομένιον λγ΄. εἶτ' εἰς μεσσήνην λ΄. πεζῇ δὲ ἐκ μὲν παχύνου εἰς πελωριάδα ρξη΄. ἐκ δὲ μεσσήνης εἰς λιλύβαιον τῇ οὐαλερίᾳ ὁδῷ σλε΄. ἔνιοι δ' ἁπλούστερον εἰρήκασιν ὥσπερ ἔφορος, τόν γε περίπλουν ἡμερῶν καὶ νυκτῶν ε΄. ποσειδώνιός τε τοῖς κλίμασιν ἀφορίζων τὴν νῆσον. καὶ πρὸς ἄρκτον μὲν τὴν πελωρίδα, πρὸς νότον δὲ λιλύβαιον. πρὸς ἕω δὲ τὸν πάχυνον τίθησιν. ἀνάγκη δὲ τῶν κλιμάτων ἐν παραλληλογράμμῳ σχήματι διαστελλομένων, τὰ ἐγγραφόμενα τρίγωνα. καὶ μάλιστα ὅσα σκαληνά. καὶ ὧν οὐδεμία πλευρὰ τῶν τοῦ παραλληλογράμμου ἐφαρμόττει, ἀναρμόστως ἔχειν πρὸς τὰ κλίματα διὰ τὴν λόξωσιν. ὅμως δ' οὖν ἐν τοῖς τῆς σικελίας τῇ ἰταλίᾳ πρὸς νότον κειμένης, ἡ πελωριὰς ἀρκτικωτάτη λέγοιτ' ἂν καλῶς, τῶν τριῶν γωνιῶν. ὥστε τὴν ἐπιζευγνυμένην ἀπ' αὐτῆς ἐπὶ τὸν πάχυνον, ἐκκεῖσθαι πρὸς ἕω φαμὲν πρὸς ἄρκτον βλέπουσαν. ποιήσει δὲ τὴν πλευρὰν καὶ πρὸς τὸν πορθμόν. δεῖ δ' ἐπιστροφὴν μικρὰν λαμβάνειν ἐπὶ χειμερινὰς ἀνατολάς. οὕτω γὰρ ἡ ἠϊὼν παρακλίνει προϊοῦσιν ἀπὸ κατάνης εὐθὺ τὰς συρακούσας καὶ τὸν πάχυνον. δίαρμα δ' ἐστὶν ἀπὸ παχύνου. πρὸς τὸ στόμα τοῦ ἀλφειοῦ, στάδιοι δ΄. ἀρτεμίδωρος δ' ἀπὸ παχύνου φήσας ἐπὶ ταίναρον εἶναι τετρακισχιλίους καὶ ἑξακοσίους, ἀπὸ δ' ἀλφειοῦ ἐπ' ἀμισὸν ρλ΄, παρασχεῖν ἂν δοκεῖ μοι λόγον μὴ οὐχ ὁμολογούμενα λέγειν τῷ φήσαντι τετρακισχιλίους εἶναι τοὺς ἐπὶ τὸν ἀλφειὸν ἀπὸ παχύνου. ἡ δ' ἀπὸ παχύνου πρὸς λιλύβαιον, ἑσπεριωτέρα δὲ τῆς πελωριάδος, ἱκανῶς ἂν καὶ αὐτὴ δόξοι τὸ ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ σημείου πρὸς τὴν ἑσπέραν. βλέποι δ' ἂν ἅμα πρός τε τὴν ἕω καὶ πρὸς νότον. τῇ μὲν, ὑπὸ τοῦ σικελικοῦ πελάγους κλυζομένη. τῇ δ' ὑπὸ τοῦ λιβυκοῦ τοῦ πρὸς τὰς σύρτεις διήκοντος ἀπὸ τῆς καρχηδονίας. ἔξεστι δὲ καὶ ἀπὸ λιλυβαίου τοὐλάχιστον δίαρμα ἐπὶ λιβύην χίλιοι καὶ πεντακόσιοι περὶ καρχηδόνα. καὶ ὃ δὴ λέγεταί τις τῶν ὀξυδορκούντων ἀπό τινος σκοπῆς ὑπαγγέλλειν τὸν ἀριθμὸν τῶν ἀγομένων ἐκ καρχηδόνος σκαφῶν τοῖς ἐν λιλυβαίῳ. ἀπὸ δὲ τοῦ λιλυβαίου τὴν ἐπὶ πελωριάδα πλευρὰν ἀνάγκη λοξοῦσθαι πρὸς ἕω. καὶ βλέπειν πρὸς τὸ μεταξὺ τῆς ἑσπέρας καὶ τῆς ἄρκτου. πρὸς ἄρκτον μὲν ἔχουσαν τὴν ἰταλίαν. πρὸς δύσιν δὲ τὸ τυρρηνικὸν πέλαγος, καὶ τὰς αἰόλου νήσους. πόλεις δ' εἰσὶ κατὰ μὲν τὸ πλευρὸν τὸ ποιοῦν τὸν πορθμὸν, μεσσήνη πρῶτον. ἔπειτα ταυρομένιον καὶ κατάνη καὶ συράκουσαι. αἱ δὲ μεταξὺ κατάνης καὶ συρακουσῶν ἐκλελοίπασι. νάξος καὶ μέγαρα. ὅπου καὶ αἱ τῶν ποταμῶν ἐκβολαὶ συνελθοῦσαι πάντων καταρρεόντων ἐκ τῆς αἴτνης εἰς εὐλίμενα στόματα. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ τῆς ξιφωνίας ἀκρωτήριον. φησὶ δὲ ταύτας ἔφορος πρώτας κτισθῆναι πόλεις ἑλληνίδας ἐν σικελίᾳ. καὶ τῇ γενεᾷ μετὰ τὰ τρωϊκά. τοὺς γὰρ πρότερον δεδιέναι τὰ λῃστήρια τῶν τυρρηνῶν, καὶ τὴν ὠμότητα τῶν ταύτῃ βαρβάρων, ὥστε μηδὲ κατ' ἐμπορίαν πλεῖν. θεοκλέα δ' ἀθηναῖον παρενεχθέντα ἀνέμοις ἐς τὴν σικελίαν, κατανοῆσαι τήν τε οὐδένειαν τῶν ἀνθρώπων καὶ τὴν ἀρετὴν τῆς γῆς. ἐπανελθόντα δὲ ἀθηναίους μὲν μὴ πεῖσαι. χαλκιδέας δὲ τοὺς ἐν εὐβοίᾳ συχνοὺς παραλαβόντα, καὶ τῶν ἰώνων τινὰς, ἔτι δὲ δωριέων οἳ πλείους ἦσαν μεγαρεῖς, πλεῦσαι. τοὺς μὲν οὖν χαλκιδέας κτίσαι νάξον. τοὺς δὲ δωριέας μέγαρα. τὴν ὕβλαν πρότερον καλουμένην. αἱ μὲν οὖν πόλεις οὐκέτ' εἰσί. τὸ δὲ τῆς ὕβλης ὄνομα συμμένει διὰ τὴν ἀρετὴν τοῦ ὑβλαίου μέλιτος. τῶν δὲ συμμενουσῶν κατὰ τὸ λεχθὲν πλευρὸν πόλεων, ἡ μὲν μεσσήνη τῆς πελωριάδος ἐν κόλπῳ κεῖται, καμπτομένης ἐπὶ πολὺ πρὸς ἕω. καὶ μασχάλην τινὰ ποιούσης. ἀπέχει δὲ τοῦ μὲν ῥηγίου δίαρμα ἑξηκοντασάδιον. τῆς δὲ στυλίδος πολὺ ἔλαττον. κτίσμα δ' ἐστὶ μεσσηνίων, τῶν ἐν πελοποννήσῳ παρ' ὧν τοὔνομα μετήλλαξε. ζάγκλη πρότερον καλουμένη διὰ τὴν σκολιότητα τῶν τόπων. ζάγκλιον γὰρ ἐκαλεῖτο τὸ σκολιόν. ναξίων οὖσα πρότερον κτίσμα τῶν πρὸς κατάνῃ. ἐπῴκησαν δ' ὕστερον μαμερτῖνοι καμπανῶν τι φῦλον. ἐχρήσαντο δ' ὁρμητηρίῳ ῥωμαῖοι πρὸς τὸν σικελικὸν πόλεμον τὸν πρὸς καρχηδονίους. καὶ μετὰ ταῦτα πομπήϊος σέξτος ἐνταῦθα συνεῖχε τὸ ναυτικὸν, πολεμῶν πρὸς τὸν σεβαστὸν καίσαρα. ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὴν φυγὴν ἐποιήσατο ἐκπεσὼν ἐκ τῆς νήσου. δείκνυται δὲ καὶ ἡ χάρυβδις μικρὸν πρὸ τῆς πόλεως, ἐν τῷ πόρῳ βάθος ἐξαίσιον. εἰς ὃ αἱ παλίρροιαι τοῦ πορθμοῦ κατάγουσιν εὐφυῶς τὰ σκάφη τραχηλιζόμενα μετὰ συστροφῆς καὶ δίνης μεγάλης. καταποθέντων δὲ καὶ διαλυθέντων, τὰ ναυάγια παρασύρεται πρὸς ἠϊόνα τῆς ταυρομενίας. ἣν καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ συμπτώματος τούτου κοπρίαν. τοσοῦτον δ' ἐπεκράτησαν οἱ μαμερτῖνοι παρὰ τοῖς μεσσηνίοις, ὥστ' ἐπ' ἐκείνοις ὑπῆρξεν ἡ πόλις. καλοῦσι δὲ μαμερτίνους μᾶλλον ἅπαντες αὐτοὺς, ἢ μεσσηνίους. εὐοίνου τε σφόδρα τῆς χώρας οὔσης, οὐ μεσσήνιον καλοῦσι τὸν οἶνον. ἀλλὰ μαμερτῖνον, τοῖς ἀρίστοις ἐνάμιλλον ὄντα τῶν ἰταλικῶν. οἰκεῖται δ' ἱκανῶς ἡ πόλις. μᾶλλον δ' ἡ κατάνη. καὶ γὰρ οἰκήτορας δέδεκται ῥωμαίους. ἧττον δ' ἀμφοῖν τὸ ταυρομένιον. καὶ ἡ κατάνη δ' ἐστὶ ναξίων τῶν αὐτῶν κτίσμα. ταυρομένιον δὲ τῶν ἐν ὕβλῃ ζαγκλαίων. ἀπέβαλε δὲ τοὺς οἰκήτορας τοὺς ἐξ ἀρχῆς ἡ κατάνη. κατοικίσαντος ἑτέρους ἱέρωνος τοῦ συρακουσίων τυράννου, καὶ προσαγορεύσαντος αὐτὴν, αἴτνην ἀντὶ κατάνης. ταύτης δὲ καὶ

πίνδαρος κτίστορα λέγει αὐτὸν, ὅταν φῇ.

» ζάθεων ἱερῶν ὁμώνυμε πάτερ κτίστορ αἴτνης.- κατὰ δὲ τὴν τελευτὴν τοῦ ἱέρωνος κατελθόντες οἱ καταναῖοι, τούς τε ἐνοίκους ἐξέβαλον. καὶ τὸν τάφον ἀνέσκαψαν τοῦ τυράννου. οἱ δὲ αἰτναῖοι παραχωρήσαντες, τὴν ἴννησαν καλουμένην, τῆς αἴτνης ὀρεινὴν ᾤκησαν. καὶ προσηγόρευσαν τὸ χωρίον αἴτνην, διέχον τῆς κατάνης, σταδίους ὀγδοήκοντα. καὶ τὸν ἱέρωνα οἰκιστὴν ἀπέφηναν. ὑπέρκειται δὲ μάλιστα τῆς κατάνης ἡ αἴτνη. καὶ τῶν περὶ τοὺς κρατῆρας παθῶν, πλεῖστον κοινωνεῖ. καὶ γὰρ οἱ ῥύακες εἰς τὴν καταναίαν ἐγγυτάτω καταφέρονται, καὶ τὰ περὶ τοὺς εὐσεβεῖς ἐκ τεθρύλληται τὸν ἀμφίνομον καὶ τὸν ἀναπίαν. οἳ τοὺς γονέας ἐπὶ τῶν ὤμων ἀράμενοι διέσωσαν ἐπιφερομένου τοῦ κακοῦ, ὅταν τῷ ποσειδῶνι φαίνηται, τὰ περὶ τὸ ὄρος κατατεφροῦται πολλῷ βάθει τὰ καταναίων χωρία. ἡ μὲν οὖν σποδὸς λυπήσασα πρὸς καιρὸν, εὐεργετεῖ τὴν χώραν χρόνοις ὕστερον. εὐάμπελον γὰρ παρέχεται καὶ χρηστόκαρπον, τῆς ἄλλης οὐχ ὁμοίως οὔσης εὐοίνου. τάς τε ῥίζας ἐκφέρει τὰ κατατεφρωθέντα χωρία. πιαίνει δ᾽ ἐπὶ τοσοῦτον τὰ πρόβατα φασὶν, ὥστε πνίγεσθαι. διόπερ ἐκ τῶν ὤτων ἀφαιροῦσιν αἷμα δι᾽ ἡμερῶν μ᾽, ἢ ν᾽, καθάπερ εἴρηται καὶ κατὰ τὴν ἐρύθειαν συμβαῖνον εἰρήκαμεν. ὁ δὲ ῥύαξ εἰς πῆξιν μεταβάλλων, ἀπολιθοῖ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς γῆς ἐφ᾽ ἱκανὸν βάθος. ὥστε λατομίας εἶναι χρείαν, τοῖς ἀνακαλύψαι βουλομένοις τὴν ἐξ ἀρχῆς ἐπιφάνειαν. τακείσης γὰρ ἐν τοῖς κρατῆρσι τῆς πέτρας, εἶτ᾽ ἀναβλυσθείσης, τὸ ὑπερχυθὲν τῆς κορυφῆς ὑγρὸν, πηλός ἐστι μέλας ῥέων κατὰ τῆς ὀρεινῆς. εἶτα πῆξιν λαβὼν, γίνεται λίθος μυλίας. τὴν αὐτὴν φυλάττων χρόαν, ἣν ῥέων εἶχε. καὶ ἡ σποδὸς δὲ καιομένων τῶν λίθων ὡς ἀπὸ τῶν ξύλων γίνεται. καθάπερ οὖν τὸ πήγανον τῇ ξυλίνῃ σποδῷ τρέφεται, τοιοῦτον ἔχειν οἰκείωμα πρὸς τὴν ἄμπελον εἰκὸς τὴν αἰτναίαν σποδόν.

τὰς δὲ συρακούσας, ἀρχίας μὲν ἔκτισεν ἐκ κορίνθου πλεύσας περὶ τοὺς αὐτοὺς χρόνους, οἷς ᾠκίσθησαν ἥ τε νάξος καὶ τὰ μέγαρα. ἅμα δὲ μύσκελλόν τε φασὶν εἰς δελφοὺς ἐλθεῖν, καὶ τὸν ἀρχίαν χρηστηριαζομένους, ἐρέσθαι τὸν θεόν. πότερον αἱροῦνται πλοῦτον, ἢ ὑγίειαν. τὸν μὲν ἀρχίαν ἑλέσθαι τὸν πλοῦτον. μύσκελλον δὲ τὴν ὑγίειαν. τῷ μὲν, δὴ συρακούσας δοῦναι κτίζειν. τῷ δὲ, κρότωνα. καὶ δὴ συμβῆναι κροτωνιάτας μὲν οὕτως ὑγιεινὴν οἰκῆσαι πόλιν ὡς εἰρήκαμεν. συρακούσας δὲ ἐπὶ τοσοῦτον ἐκπεσεῖν πλοῦτον, ὥστε καὶ αὐτοὺς ἐν παροιμίᾳ διαδοθῆναι λεγόντων πρὸς τοὺς ἄγαν πολυτελεῖς, ὡς οὐκ ἂν ἐκγένοιτο αὐτοῖς, ἡ συρακουσίων δεκάτη. πλέοντα δὲ τὸν ἀρχίαν εἰς τὴν σικελίαν, καταλιπεῖν μετὰ μέρους τῆς στρατιᾶς τοῦ τῶν ἡρακλειδῶν γένους χερσικράτην συνοικιοῦντα τὴν νῦν κέρκυραν καλουμένην. πρότερον δὲ σχερίαν. ἐκεῖνον μὲν οὖν ἐκβαλόντα λιβυρνοὺς κατέχοντας, οἰκίσαι τὴν νῆσον. τὸν δ᾽ ἀρχίαν κατασχόντα πρὸς τὸ ζεφύριον τῶν δωριέων, εὑρόντα τινὰς δεῦρο ἀφιγμένους ἐκ τῆς σικελίας παρὰ τῶν τὰ μέγαρα κτισάντων, ἀναλαβεῖν αὐτούς. καὶ κοινῇ κτίσαι τὰς συρακούσας μετ᾽ αὐτῶν ἀπιόντας. ηὐξήθη δὲ καὶ διὰ τὴν τῆς χώρας εὐδαιμονίαν ἡ πόλις. καὶ διὰ τὴν τῶν λιμένων εὐφυΐαν. οἱ ἄνδρες ἡγεμονικοὶ κατέστησαν. καὶ συνέβη συρακουσίοις τυραννουμένοις τε δεσπόζειν τῶν ἄλλων. καὶ ἐλευθερωθεῖσιν ἐλευθεροῦν τοὺς ὑπὸ τῶν βαρβάρων καταδυναστευομένους. ἦσαν γὰρ τῶν βαρβάρων οἱ μὲν ἔνοικοι. τινὲς δ᾽ ἐκ τῆς περαίας ἐπῄεσαν. οὐδ᾽ ἐῶσα δὲ τῆς παραλίας εἴων οἱ ἕλληνες ἅπτεσθαι. τῆς δὲ μεσογαίας ἀπείργειν παντάπασιν οὐκ ἴσχυον. ἀλλὰ διετέλεσαν μέχρι δεῦρο σικελοὶ καὶ σικανοὶ καὶ μόργητες, καὶ ἄλλοι τινὲς νεμόμενοι τὴν νῆσον. ὧν ἦσαν καὶ ἴβηρες. οὕς περ πρώτους φησὶ τῶν βαρβάρων ἔφορος λέγεσθαι τῆς σικελίας οἰκιστάς. καὶ τὴν μοργάντιον δὲ εἰκὸς ὑπὸ τῶν μοργήτων ᾠκίσθαι. πόλις δ᾽ ἦν αὕτη. νῦν δ᾽ οὐκ ἔστιν. ἐπελθόντες δὲ καρχηδόνιοι καὶ τούτους οὐκ ἐπαύσαντο κακοῦντες, καὶ τοὺς ἕλληνας. ἀντεῖχον δ᾽ ὅμως οἱ συρακούσιοι. ῥωμαῖοι δ᾽ ὕστερον καὶ τοὺς καρχηδονίους ἐξέβαλον. καὶ τὰς συρακούσας ἐκ πολιορκίας εἷλον. ἐφ᾽ ἡμῶν δὲ πομπηΐου τάς τε ἄλλας κακώσαντος πόλεις καὶ δὴ καὶ τὰς συρακούσας, πέμψας ἀποικίαν ὁ σεβαστὸς καῖσαρ, πολὺ μέρος τοῦ παλαιοῦ κτίσματος ἀνέλαβε. πεντάπολις γὰρ ἦν τὸ παλαιόν. ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα σταδίων ἔχουσα τὸ τεῖχος. ἅπαντα μὲν δὴ τὸν κύκλον ἐκπληροῦν τοῦτον οὐδὲν ἔχει. τὸ δὲ συνοικούμενον τὸ πρὸς τῇ νήσῳ τῇ ὀρτυγίᾳ, μέρος, ᾠήθη δεῖν οἰκῆσαι βέλτιον. ἀξιόλογον πόλεως ἔχον περίμετρον. ἡ δ᾽ ὀρτυγία συνάπτει γεφύρᾳ πρὸς τὴν ἤπειρον οὖσα. κρήνην δ᾽ ἔχει τὴν ἀρέθουσαν, ἐξιεῖσαν ποταμὸν εὐθὺς εἰς τὴν θάλατταν. μυθεύουσι δὲ τὸν ἀλφειὸν εἶναι τοῦτον. ἀρχόμενον μὲν ἀπὸ τῆς πελοποννήσου. διὰ δὲ τοῦ πελάγους ὑπὸ γῆς τὸ ῥεῖθρον ἔχοντα μέχρι πρὸς τὴν ἀρέθουσαν. εἶτ᾽ ἐκδιδόντα πάλιν εἰς τὴν θάλατταν. τεκμηρίοις δὲ τοιούτοις τισί. καὶ γὰρ φιάλην τινὰ ἐκπεσοῦσαν εἰς τὸν ποταμὸν, ἐνόμισαν ἐν ὀλυμπίᾳ δεῦρο ἀνενεχθῆναι εἰς τὴν κρήνην, καὶ θολοῦσθαι ἀπὸ τῶν ἐν ὀλυμπίᾳ βουθυσιῶν. ὅ, τε πίνδαρος ἐπακολουθῶν τούτοις εἴρηκε.

» τὸ δὲ πνεῦμα σεμνὸν ἀλφειοῦ κρήνας Συρακουσσᾶν θάλλος ὀρτυγίας.

Συναποφαίνεται δὲ τῷ πινδάρῳ ταῦτα, καὶ τίμαιος ὁ συγγραφεύς, εἰ μὲν οὖν πρὸ τοῦ συνάψαι τῇ θαλάττῃ κατέπιπτεν ὁ ἀλφειὸς εἴς τι βάραθρον, ἦν τις ἂν πιθανότης ἐντεῦθεν διήκειν κατὰ γῆς ῥεῖθρον μέχρι τῆς σικελίας, ἀμιγὲς τῇ θαλάττῃ διασῶζον τὸ πότιμον ὕδωρ. ἐπειδὴ δὲ τὸ τοῦ ποταμοῦ στόμα φανερόν ἐστιν εἰς τὴν θάλατταν ἐκδιδόν, ἐγγὺς δὲ μηδὲν ἐν τῷ πόρρω

τῆς θαλάττης φαινόμενον στόμα, τὸ καταπῖνον τὸ ῥεῦμα τοῦ ποταμοῦ, καίπερ οὐδ' οὕτως ἂν συμμεῖναι γλυκύ, ὅμως τό γε ἐπὶ πλέον εἰ καταδύοι εἰς τὸ κατὰ γῆς ῥεῖθρον, παντάπασιν ἀμήχανόν ἐστι. τό τε γὰρ τῆς ἀρεθούσης ὕδωρ, ἀντιμαρτυρεῖ πότιμον ὄν, τό τε διὰ τοσούτου πόρου συμμένειν τὸ ῥεῦμα τοῦ ποταμοῦ, μὴ διαχεόμενον τῇ θαλάττῃ, μέχρις ἂν εἰς τὸ πεπλασμένον ῥεῖθρον ἐμπέσῃ, παντελῶς μυθῶδες. μόλις γὰρ ἐπὶ τοῦ ῥοδανοῦ τοῦτο πιστεύομεν, ᾧ συμμένει τὸ ῥεῦμα, διὰ λίμνης ἰὸν, ὁρατὴν σώζον τὴν ῥύσιν. ἀλλ' ἐκεῖ μὲν καὶ βραχὺ διάστημα καὶ οὐ κυμαινούσης τῆς λίμνης. ἐνταῦθα δὲ, ὅπου χειμῶνες ἐξαίσιοι, καὶ κλυδασμοὶ, πιθανότητος οὐδεμιᾶς οἰκεῖος ὁ λόγος. ἐπιτείνει δὲ τὸ ψεῦδος ἡ φιάλη παρατεθεῖσα. οὐδὲ γὰρ αὕτη ῥεύματι εὐπειθής. οὐχὶ τῷ τότε. οὕτω καὶ διὰ τοιούτων ὀρῶν φερομένων. φέρονται δ' ὑπὸ γῆν ποταμοὶ πολλοὶ, καὶ πολλαχοῦ τῆς γῆς. ἀλλ' οὐκ ἐπὶ τοσοῦτον διάστημα. εἰ δὲ τοῦτο δυνατὸν, τά γε προειρημένα ἀδύνατα. καὶ τὰ περὶ τοῦ ἰνάχου μύθῳ παραπλήσια. ῥεῖ γὰρ ἀπ' ἄκρας πίνδου φησὶν ὁ σοφοκλῆς. λάκμου τε, ἀπὸ περραιβῶν, εἰς ἀμφιλόχους καὶ ἀκαρνᾶνας. μίσγει δ' ὕδασι τοῦ ἀχελώου. καὶ ὑποβὰς ἐνθένδ' ἐς ἄργος διὰ κύμα τεμὼν, ἥκει δημονίκου δῆμον τὸν λυρκίου. ἐπιτείνουσι δὲ τὴν τοιαύτην τερατολογίαν, οἱ τὸν ἰνωπὸν εἰς δῆλον ἐκ τοῦ νείλου περαιοῦντες. ἀλφειὸν δὲ ζωΐλος ὁ ῥήτωρ ἐν τῷ τενεδίων ἐγκωμίῳ φησὶν ἐκ τενέδου ῥεῖν. ὁ τὸν ὅμηρον ψέγων ὡς μυθογράφον. ἴβυκος δὲ τὸν ἐν σικυῶνι ἀσωπὸν, ἐκ φρυγίας ῥεῖν φησί. βέλτιον δ' ἑκαταῖος ὅς φησι τὸν ἐν τοῖς ἀμφιλόχοις ἴναχον, ἐκ τοῦ λάκμου ῥέοντα, ἐξ οὗ καὶ ὁ αἴας ῥεῖ, ἕτερον εἶναι τοῦ ἀργολικοῦ. ὠνόμασται δ' ὑπὸ ἀμφιλόχου. καὶ τὴν πόλιν ἄργος ἀμφιλοχικὸν καλέσαντος. τοῦτον μὲν οὕτω φησὶν εἰς τὸν ἀχελῶον ἐκβάλλειν. τὸν δὲ αἴαντα εἰς ἀπολλωνίαν πρὸς τὴν δύσιν ῥεῖν. ἑκατέρωθεν δὲ τῆς νήσου λιμήν ἐστι μέγας. ὧν ὁ μείζων καὶ ὀγδοήκοντα σταδίων ἐστί. ταύτην δὲ τὴν πόλιν ἀνέλαβον ὁ καῖσαρ. καὶ τὴν κατάνην, ὡς δ' αὕτως, κεντόριπα, συμβαλομένην πολλὰ πρὸς τὴν πομπηΐου κατάλυσιν. κεῖνται δ' ὑπὲρ κατάνης τὰ κεντόριπα. συνάπτοντα, τοῖς αἰτναίοις ὄρεσι, καὶ τῷ συμαίθῳ ποταμῷ ῥέοντι εἰς τὴν καταναίαν. τῶν δὲ λοιπῶν τῆς σικελίας πλευρῶν, ἡ μὲν ἀπὸ τοῦ παχύνου πρὸς τὸ λιλύβαιον διήκουσα, ἐκλέλειπται τελέως. ἴχνη τινὰ σώζουσα τῶν ἀρχαίων κατοικιῶν. ὧν ἦν καὶ καμάρινα ἄποικος συρακουσίων. ἀκράγας δὲ ἰώνων οὖσα καὶ τὸ ἐπίνειον καὶ λιλύβαιον, ἔτι συμμένει. τῇ γὰρ καρχηδονίᾳ τούτων μάλιστα ὑποπιπτόντων τῶν μερῶν, μακροὶ καὶ συνεχεῖς οἱ πόλεμοι γενόμενοι, τὰ πολλὰ κατέφθειραν. ἡ δὲ λοιπὴ καὶ μεγίστη πλευρὰ καίπερ οὐδ' αὐτὴ πολυάνθρωπος οὖσα, ὅμως ἱκανῶς συνοικεῖται. καὶ γὰρ ἄλεσα, καὶ τυνδαρὶς, καὶ τὸ τῶν αἰγεστέων ἐμπορεῖον καὶ κεφαλοίδιον, πολίσματά ἐστι. πάνορμος δὲ καὶ ῥωμαίων ἔχει κατοικίαν. τὴν δὲ αἴγεσταν κτισθῆναι φασὶν ὑπὸ τῶν μετὰ φιλοκτήτου διαβάντων εἰς τὴν κροτωνιᾶτιν, καθάπερ ἐν τοῖς ἰταλικοῖς εἴρηται παρ' αὐτοῦ σταλέντων εἰς τὴν σικελίαν μετὰ αἰγέστου τοῦ τρωός. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ, τὴν μὲν ἔνναν, ἐν ᾗ τὸ ἱερὸν τῆς δήμητρος ἔχουσιν ὀλίγοι, κειμένην ἐπὶ λόφῳ. περιειλημμένην πλάτεσιν ὀροπεδίοις ἀροσίμοις, πάσαν. ἐκάκωσαν δ' αὐτὴν μάλιστα ἐμπολιορκηθέντες οἱ περὶ εὔνουν δραπέται. καὶ μόλις ἐξαιρεθέντες ὑπὸ ῥωμαίων. ἔπαθον δὲ τὰ αὐτὰ καὶ καταναῖοι καὶ ταυρομενῖται καὶ ἄλλοι πλείους. οἰκεῖται δὲ καὶ ὁ ἔρυξ λόφος ὑψηλός. ἱερὸν ἔχων ἀφροδίτης. τιμώμενον διαφερόντως ἱεροδούλων γυναικῶν πλῆρες τὸ παλαιόν. ἃς ἀνέθησαν κατ' εὐχὴν οἵ τ' ἐκ τῆς σικελίας καὶ ἔξωθεν πολλοί. νυνὶ δ' ὥσπερ αὐτὴ ἡ κατοικία λειπανδρεῖ, καὶ τὸ ἱερὸν, καὶ τῶν ἱερῶν σωμάτων ἐκλέλοιπε τὸ πλῆθος. ἀφίδρυμα δ' ἐστὶ καὶ ἐν ῥώμῃ τῆς θεοῦ ταύτης τὸ πρὸ τῆς πύλης τῆς κολλίνης, ἱερὸν ἀφροδίτης ἐρυκίνης λεγόμενον. ἔχον καὶ νεὼν, καὶ στοὰν περικειμένην ἀξιόλογον. ἡ δ' ἄλλη κατοικία καὶ τῆς μεσογαίας ποιμένων ἡ πλείστη γεγένηται. οὔτε γὰρ ἱμέραν ἔτι συνοικουμένην ἴσμεν, οὔτε γέλαν, οὔτε καλλίπολιν, οὔτε σελινοῦντα, οὔτ' εὔβοιαν, οὔτ' ἄλλους πλείους. ὧν τὴν ἱμέραν μὲν, οἱ ἐν μυλαῖς ἔκτισαν ζαγκλαῖοι. καλλίπολιν δὲ νάξιοι. σελινοῦντα δὲ οἱ αὐτόθι μεγαρεῖς. εὔβοιαν δὲ, οἱ λεοντῖνοι. καὶ τῶν βαρβαρικῶν δ' ἐξελείφθησαν πολλαί. καθάπερ οἱ καμικοὶ τὸ κωκάλου βασίλειον. παρ' ᾧ μίνως δολοφονηθῆναι λέγεται. τὴν οὖν ἐρημίαν κατανοήσαντες ῥωμαῖοι, κατακτησάμενοι τά τε ὄρη, καὶ τῶν πεδίων τὰ πλεῖστα, ἱπποφορβοῖς καὶ βουκόλοις καὶ ποιμέσι παρέδοσαν. ὑφ' ὧν πολλάκις εἰς κινδύνους κατέστη μεγάλους ἡ νῆσος. τὸ μὲν πρῶτον ἐπὶ λῃστείας τρεπομένων σποράδην τῶν νομέων. εἶτα καὶ κατὰ πλήθη συνισταμένων καὶ πορθούντων τὰς κατοικίας. καθάπερ ἡνίκα οἱ περὶ εὔνουν τὴν ἔνναν κατέσχον. νεωστὶ δ' ὑφ' ἡμῶν εἰς τὴν ῥώμην ἀνεπέμφθη, σέλουρός τις, αἴτνης υἱὸς λεγόμενος, στρατιᾶς ἀφηγησάμενος, καὶ λεηλασίαις πυκναῖς καταδεδραμηκὼς τὰ κύκλῳ τῆς αἴτνης πολὺν χρόνον. τοῦτον δ' ἐν τῇ ἀγορᾷ μονομάχων ἀγῶνος συνεστῶτος, εἴδομεν διασπασθέντα ὑπὸ θηρίων. ἐπὶ πήγματος γάρ τινος ὑψηλοῦ τεθεὶς ὡς ἂν ἐπὶ τῆς αἴτνης, διαλυθέντος αἰφνιδίως, καὶ συμπεσόντος, κατηνέχθη καὶ αὐτὸς εἰς γαλεάγρας θηρίων εὐδιαλύτους, ἐπιτηδὲς παρεσκευασμένας ὑπὸ τῷ πήγματι. τὴν δὲ τῆς χώρας ἀρετὴν θρυλλουμένην ὑπὸ πάντων, οὐδὲν χείρω τῆς ἰταλίας ἀποφαινομένων, τί δεῖ λέγειν. σίτῳ δὲ καὶ μέλιτι καὶ κρόκῳ καὶ ἄλλοις τισὶ, κἂν ἀμείνω τις φαίη. πρόσεστι δὲ καὶ τὸ ἐγγύθεν. ὡσανεὶ γάρ μέρος τι τῆς ἰταλίας ἐστὶν ἡ νῆσος. καὶ ὑποχορηγεῖ τῇ ῥώμῃ

καθάπερ ἐκ τῶν ἰταλιῶν ἀγρῶν ἕκαστα, ἀμαρῶς καὶ ἀταλαιπώρως. καὶ δὴ καὶ καλοῦσιν αὐτὴν ταμιεῖον τῆς ῥώμης. κομίζεται γὰρ τὰ γιγνόμενα πάντα, πλὴν ὀλίγων τῶν αὐτόθι ἀναλισκομένων δεῦρο. ταῦτα δ' ἐστὶν οὐχ οἱ καρποὶ μόνον, ἀλλὰ καὶ βοσκήματα καὶ δέρματα καὶ ἔρια καὶ τὰ τοιαῦτα. φησὶ δ' ὁ ποσειδώνιος οἷον ἀκροπόλεις ἐπὶ θαλάττης δύο τὰς συρακούσας ἱδρύσθαι καὶ τὸν ἔρυκα. μέσην δὲ ἀμφοῖν ὑπερκεῖσθαι τῶν κύκλῳ πεδίων τὴν ἔνναν. κεκάκωνται δὲ καὶ ἡ λεοντίνη πᾶσα ναξίων οὖσα καὶ αὐτὴ τῶν αὐτόθι. τῶν μὲν γὰρ ἀτυχημάτων ἐκοινώνησαν ἀεὶ τοῖς συρακουσίοις. τῶν δ' εὐτυχημάτων οὐκ ἀεί. πλησίον δὲ τῶν κεντορίπων ἐστὶ πόλισμα, ἡ μικρὸν ἔμπροσθεν λεχθεῖσα αἴτνη, τοὺς ἀναβαίνοντας ἐπὶ τὸ ὄρος δεχομένη, καὶ παραπέμπουσα. ἐντεῦθεν γὰρ ἀρχὴ τῆς ἀκρωρείας. ἔστι δὲ ψιλὰ τὰ ἄνω χωρία καὶ τεφρώδη καὶ χιόνος μεστὰ τοῦ χειμῶνος. τὰ κάτω δὲ, δρυμοῖς καὶ φυτείαις διείληπται παντοδαπαῖς. ἔοικε δὲ λαμβάνειν μεταβολὰς πολλὰς τὰ ἄκρα τοῦ ὄρους διὰ τὴν νομὴν τοῦ πυρός. τοτὲ μὲν εἰς ἕνα κρατῆρα συμφερομένου. τοτὲ δὲ σχιζομένου. καὶ τοτὲ μὲν ῥύακας ἀναπέμποντος. τοτὲ δὲ, φλόγας καὶ λιγνύς. ἄλλοτε δὲ καὶ μύδρους ἀναφυσῶντος. ἀνάγκη δὲ τοῖς πάθεσι τούτοις τούς τε ὑπὸ γῆν πόρους συμμεταβάλλειν, καὶ τὰ στόμια ἐνίοτε πλείω κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν τὴν πέριξ. ἐκδιδόναι. νεωστὶ ἀναβάντες, διηγοῦντο ἡμῖν, ὅτι καταλάβοιεν ἄνω πεδίον ὁμαλὸν, ὅσον εἴκοσι σταδίων τὴν περίμετρον. κλειόμενον ὀφρύϊ τεφρώδει τειχίου τὸ ὕψος ἐχούσῃ. ὥστε δεῖν καθάλλεσθαι τοὺς εἰς τὸ πεδίον προελθεῖν βουλομένους. ὁρᾶν τε τὸ μέσον βουνὸν τεφρώδη τὴν χρόαν, οἵαπερ καὶ ἡ ἐπιφάνεια ἐθεωρεῖτο τοῦ πεδίου. ὑπὲρ δὲ τοῦ βουνοῦ νέφος ὄρθιον διανεστηκὸς εἰς ὕψος, ὅσον διακοσίων ποδῶν, ἠρεμοῦν. εἶναι γὰρ καὶ νηνεμίαν. ἐοικέναι δὲ καπνῷ. δύο δὲ τολμήσαντας προσελθεῖν εἰς τὸ πεδίον. ἐπεὶ δὲ θερμοτέρας ἔβαινον τῆς ἄμμου καὶ βαθυτέρας, ἀναστρέψαι. μηδὲν ἔχοντας περιττότερον φράζειν τῶν φαινομένων τοῖς πόρρωθεν ἀφορῶσι. νομίζειν δ' ἐκ τῆς τοιαύτης ὄψεως, πολλὰ μυθεύεσθαι. καὶ μάλιστα οἷά φασί τινες περὶ ἐμπεδοκλέους. ὅτι καθάλοιτο εἰς τὸν κρατῆρα. καὶ καταλίποι τοῦ πάθους ἴχνος, τῶν ἐμβάδων τὴν ἑτέραν, ἃς ἐφόρει χαλκᾶς. εὑρεθῆναι γοῦν ἔξω, μικρὸν ἄπωθεν τοῦ χείλους τοῦ κρατῆρος, ὡς ἂν ἐρριμμένην, ὑπὸ τῆς βίας τοῦ πυρός. οὔτε γὰρ προσιτὸν εἶναι τὸν τόπον, οὔθ' ὁρατόν. εἰκάζειν τε μηδὲν καταρριφῆναί τι δύνασθαι ἐκεῖσε, ὑπὸ τῆς ἀντιπνοίας τῶν ἐκ βάθους ἀνέμων καὶ τῆς θερμότητος. ἣν προαπαντᾶν εὔλογον πόρρωθεν πρὶν ἢ τῷ στομίῳ τοῦ κρατῆρος προσπελάσαι. εἰ δὲ καταρριφθείη, φθάνοι ἂν διαφθαρὲν πρὶν ἀναρριφῆναι πάλιν, ὁποῖον παρελήφθη πρότερον. τὸ μὲν οὖν ἐκλείπειν ποτὲ τὰ πνεύματα καὶ τὸ πῦρ ἐπιλειπούσης ποτὲ τῆς ὕλης, οὐκ ἄλογον. οὐ μὴν ἐπὶ τοσοῦτόν γε, ὥστ' ἀντὶ τῆς τοσαύτης βίας, ἐφικτὸν ἀνθρώπῳ γενέσθαι τὸν πλησιασμόν. ὑπέρκειται δ' ἡ αἴτνη, μᾶλλον μὲν τῆς κατὰ τὸν πορθμὸν καὶ τὴν καταναίαν παραλίας. ἀλλὰ καὶ τῆς κατὰ τὸ τυρρηνικὸν πέλαγος καὶ τὰς λιπαραίων νήσους. νύκτωρ μὲν οὖν καὶ φέγγη φαίνεται λαμπρὰ ἐκ τῆς κορυφῆς. μεθ' ἡμέραν δὲ καπνῷ καὶ ἀχλύϊ κατέχεται. ἀνταίρει δὲ τῇ αἴτνῃ, τὰ νεβρώδη ὄρη, ταπεινότερα μὲν πλάτει δὲ παραλλάττοντα. ἅπασα δ' ἡ νῆσος κοίλη κατὰ γῆς ἐστι, ποταμῶν καὶ πυρὸς μεστή. καθάπερ τὸ τυρρηνικὸν πέλαγος ὡς εἰρήκαμεν, μέχρι τῆς κυμαίας. θερμῶν γοῦν ὑδάτων ἐκβολὰς κατὰ πολλοὺς ἔχει τόπους ἡ νῆσος. ὧν τὰ μὲν σελινούντια καὶ τὰ ἱμεραῖα ἁλμυρά ἐστι, τὰ δὲ αἰγεσταῖα πότιμα. περὶ ἀκράγαντα δὲ λίμναι, τὴν μὲν γεῦσιν ἔχουσι θαλάττης. τὴν δὲ φύσιν διάφορον. οὐδὲ γὰρ τοῖς ἀκολύμβοις βαπτίζεσθαι συμβαίνει. ξύλων τρόπον ἐπιπολάζουσιν. οἱ παλικοὶ δὲ κρατῆρας ἔχουσιν ἀναβάλλοντας ὕδωρ εἰς θολοειδὲς ἀναφύσημα καὶ πάλιν εἰς τὸν αὐτὸν δεχομένους μυχόν. τὸ δὲ περὶ μάταυρον σπήλαιον, ἐντὸς ἔχειν σύριγγα ἀξιόλογον μεγέθει. καὶ ποταμὸν διὰ ταύτης ῥέοντα ἀφανῆ, μέχρι πολλοῦ διαστήματος. εἶτ' ἀνακύπτοντα, πρὸς τὴν ἐπιφάνειαν καθάπερ ὁ ὀρόντης ἐν τῇ συρίᾳ, καταδὺς εἰς τὸ μεταξὺ χάσμα ἀπαμείας καὶ ἀντιοχείας, ὃ καλοῦσι χάρυβδιν, ἀνατέλλει πάλιν ἐν μ, σταδίοις. τὰ δὲ παραπλήσια καὶ ὁ τίγρις ἐν τῇ μεσοποταμίᾳ, καὶ ὁ νεῖλος ἐν τῇ λιβύῃ, μικρὸν πρὸ τῶν πηγῶν. τὸ δὲ περὶ στύμφαλον ὕδωρ ἐπὶ σ σταδίους ὑπὸ γῆν ἐνεχθὲν ἐν τῇ ἀργείᾳ, τὸν ἐρασῖνον ἐκδίδωσι ποταμόν. καὶ πάλιν τὸ πρὸς τὴν ἀρκαδικὴν ἀσέαν ὑποβρύχιον ὕδωρ, ὀψέ ποτε τόν τε εὐρώταν καὶ τὸν ἀλφειὸν ἀναδίδωσιν, ὥστε καὶ πιστευθῆναι μυθῶδές τι. ὅτι τῶν ἐπιφημισθέντων στεφάνων ἑκατέρῳ ῥιφθέντων εἰς τὸ κοινὸν ῥεῦμα, ἀναφαίνεται κατὰ τὸν ἐπιφημισμὸν, ἑκάτερος ἐν τῷ οἰκείῳ ποταμῷ. εἴρηται δὲ καὶ τὸ λεγόμενον περὶ τοῦ τιμαίου. συγγενῆ δὲ καὶ τούτοις καὶ τοῖς κατὰ τὴν σικελίαν πάθεσι, τὰ περὶ τῶν λιπαραίων νήσους. καὶ αὐτὴν τὴν λιπάραν δείκνυται. εἰσὶ δὲ ἑπτὰ μὲν τὸν ἀριθμόν. μεγίστη δὲ ἡ λιπάρα κνιδίων ἄποικος. ἐγγιστάτω τῆς σικελίας κειμένη, μετά γε τὴν θέρμισσαν. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον, μελιγουνίς. ἡγήσατο δὲ καὶ στόλῳ. καὶ πρὸς τὰς τῶν τυρρηνῶν ἐπιδρομὰς πολὺν χρόνον ἀντέσχεν. ὑπηκόους ἔχουσα τὰς νῦν λεγομένας λιπαραίων νήσους, ἃς αἰόλου τινὲς προσαγορεύουσι. καὶ δὴ καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ ἀπόλλωνος ἐκόσμησε πολλάκις τὸ ἐν δελφοῖς ἀπὸ τῶν ἀκροθινίων. ἔχει δὲ καὶ τὴν γῆν εὔκαρπον. καὶ στυπτηρίας μετάλλων πρόσοδον. καὶ θερμὰ ὕδατα. καὶ πυρὸς ἀναπνοάς. ταύτης δὲ μεταξύ πως ἐστὶ καὶ τῆς σικελίας. ἣν νῦν ἱερὰν ἡφαίστου καλοῦσι, πετρώδης πᾶσα καὶ ἔρημος. διάπυρος. ἔχει δὲ ἀναπνοὰς τρεῖς, ὡς ἂν ἐκ τριῶν κρατήρων.

ἐκ δὲ τοῦ μεγίστου, καὶ μύδρους αἱ φλόγες ἀναφέρουσιν· οἳ προσκεχώκασιν ἤδη πολὺ μέρος τοῦ πόρου. ἐκ δὲ τῆς τηρήσεως πεπίστευται, διότι τοῖς ἀνέμοις συμπαροξύνονται, καὶ αἱ φλόγες, αἵ τε ἐνταῦθα, καὶ αἱ κατὰ τὴν αἴτνην· παυομένων δὲ, παύονται, καὶ αἱ φλόγες, οὐκ ἄλογον δὲ, καὶ γὰρ οἱ ἄνεμοι, γεννῶνται, καὶ τρέφονται, τὴν ἀρχὴν λαβόντες, ἀπὸ τῶν ἐκ τῆς θαλάττης ἀναθυμιάσεων. ὥστ' ἀπὸ συγγενοῦς ὕλης, καὶ πάθους, καὶ τὸ πῦρ ἐξαναπτόμενον, οὐκ ἐᾷ θαυμάζειν τοὺς ὁρῶντας ἄλλως γέ πως τὰ τοιάδε. πολύβιος δὲ τῶν τριῶν κρατήρων, τὸν μὲν, καταπερρυηκέναι φησὶν ἐκ μέρους· τοὺς δὲ συμμένειν· τὸν δὲ μέγιστον τὸ χεῖλος ἔχειν περιφερὲς ὄν, πέντε σταδίων· κατ' ὀλίγον δὲ συνάγεσθαι, εἰς ν̄ ποδῶν διάμετρον· καθ' οὗ βάθος εἶναι τὸ μέχρι θαλάττης, σταδιαῖον, ὥστε καθορᾶν ταῖς νηνεμίαις. εἰ δὲ ταῦτ' ἐστὶ πιστὰ, οὐκ ἄπιστον ἴσως, οὐδὲ τοῖς περὶ ἐμπεδοκλέους μυθολογηθεῖσιν. ἐὰν μὲν οὖν νότος μέλλῃ πνεῖν, ἀχλὺν ὁμιχλώδη καταχεῖσθαι κύκλῳ φησὶ τῆς νησίδος, ὥστε μηδὲ τὴν σικελίαν ἄπωθεν φαίνεσθαι. ὅταν δὲ βορέας, φλόγας, καθαρὰς ἀπὸ τοῦ λεχθέντος κρατῆρος, εἰς ὕψος ἐξαίρεσθαι. καὶ βρόμους ἐκπέμπεσθαι, μείζους. τὸν δὲ ζέφυρον μέσην τινὰ ἔχειν τάξιν. τοὺς δ' ἄλλους κρατῆρας, ὁμοειδεῖς μὲν εἶναι. τῇ δὲ βίᾳ λείπεσθαι τῶν ἀναφυσημάτων. ἔκ τε δὴ τῆς διαφορᾶς τῶν βρόμων, καὶ ἐκ τοῦ πόθεν ἄρχεται τὰ ἀναφυσήματα καὶ αἱ φλόγες, καὶ αἱ λιγνύες, προσημαίνεσθαι, καὶ τὸν εἰς ἡμέραν τρίτην πάλιν μέλλοντα ἄνεμον πνεῖν. τῶν γοῦν ἐν λιπάραις γενομένης ἀπλοίας, προειπεῖν τινάς φησι τὸν ἐσόμενον, καὶ μὴ διαψεύσασθαι. ἀφ' οὗ δὴ τὸ μυθωδέστατον δοκοῦν, εἰρῆσθαι τῷ ποιητῇ, οὐ μάτην φαίνεσθαι. λεχθέν· ἀλλ' αἰνιξαμένου τὴν ἀλήθειαν, ὅταν φῇ ταμίαν τῶν ἀνέμων τὸν αἴολον. περὶ ὧν ἐμνήσθημεν καὶ πρότερον, ἱκανῶς ἐστὶν ἡ ἐπίστασις τῆς ἐναργείας λείποιτ' ἄν. ἐπίσης τε γὰρ ἄμφω πάρεστι, καὶ διαθέσει καὶ τῇ ἐναργείᾳ· ἥ γε ἡδονὴ κοινὸν ἀμφοτέρων. ἐπάνειμεν δ' ἐπὶ τὰ ἑξῆς ἀφ' ὧν παρεξέβημεν. τὴν μὲν δὴ λιπάραν καὶ τὴν θέρμισσαν εἰρήκαμεν. ἡ δὲ στρογγύλη καλεῖται μὲν ἀπὸ τοῦ σχήματος, ἔστι δὲ, καὶ αὐτὴ διάπυρος· βίᾳ μὲν, φλογὸς λειπομένη, τῷ δὲ φέγγει πλεονεκτοῦσα. ἐνταῦθα δὲ τὸν αἴολον οἰκῆσαι φασίν. τετάρτη δ' ἐστὶ διδύμη· καὶ αὕτη δ' ἀπὸ τοῦ σχήματος ὠνόμασται, τῶν δὲ λοιπῶν ἐρικοῦσσα μὲν, καὶ φοινικοῦσσα ἀπὸ τῶν φυτῶν κέκληνται· ἀνεῖνται δὲ, εἰς νομάς, ἑβδόμη δ' ἐστὶν εὐώνυμος πελαγία μάλιστα καὶ ἔρημος· ὠνόμασται δ' ὅτι μάλιστα τοῖς ἐκ λιπάρας εἰς σικελίαν πλέουσιν εὐώνυμός ἐστι. πολλάκις δὲ, καὶ φλόγες εἰς τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ πελάγους τοῦ περὶ τὰς νήσους ὤφθησαν, ἀναδραμουσῶν τῶν κατὰ βάθους κοιλιῶν τοῦ πυρὸς, ἀναστομωθέντος πόρου τινὸς, καὶ βιασαμένου πρὸς τὸ ἐκτός. ποσειδώνιος δὲ, κατὰ τὴν ἑαυτοῦ μνήμην φησὶ περὶ τροπὰς θερινάς, ἅμα τῇ ἕῳ, μεταξὺ τῆς ἱερᾶς καὶ τῆς εὐωνύμου πρὸς ὕψος ἀρθεῖσαν, ἐξαίσιον ὁραθῆναι, καὶ συμμεῖναι τινὰ χρόνον ἀναφυσωμένην συνεχῶς. εἶτα παύσασθαι. τοὺς δὲ τολμήσαντας προσπλεῖν, ἰδόντας νεκροὺς ἰχθύας ἐλαυνομένους ὑπὸ τοῦ ῥοῦ, τοὺς δὲ, καὶ θέρμῃ, καὶ δυσωδίᾳ πληγέντας, φυγεῖν. ἓν δὲ τῶν πλοιαρίων τὸ μᾶλλον πλησιάσαν τοὺς μὲν, τῶν ἐνόντων ἀποβαλεῖν, τοὺς δ' εἰς λιπάραν μόλις σῶσαι. τοτὲ μὲν ἔκφρονας γινομένους ὁμοίως τοῖς ἐπιληπτικοῖς, τοτὲ δὲ ἀνατρέχοντας εἰς τοὺς οἰκείους λογισμούς. πολλαῖς δ' ἡμέραις ὕστερον ὁρᾶσθαι πηλὸν ἐπανθοῦντα τῇ θαλάττῃ. πολλαχοῦ δὲ, καὶ φλόγας ἐκπιπτούσας, καὶ καπνοὺς, καὶ λιγνύας. ὕστερον δὲ παγῆναι, καὶ γενέσθαι τοῖς μυλίταις λίθοις ἐοικότα τὸν πάγον, τὸν δὲ τῆς σικελίας στρατηγὸν τίτον φλαμίνιον, δηλῶσαι τῇ συγκλήτῳ, τὴν δὲ πέμψασαν ἐκθύσασθαι ἔν τε τῷ νησιδίῳ καὶ ἐν λιπάραις. τοῖς τε καταχθονίοις θεοῖς καὶ τοῖς θαλαττίοις. ἀπὸ μὲν οὖν ἐρικώδους εἰς φοινικώδη, δέκα μίλια φησὶν ὁ χωρογράφος. ἔνθεν δ' εἰς διδύμην λ̄. ἔνθεν δ' εἰς λιπάραν πρὸς ἄρκτον θ̄. καὶ κ̄. ἔνθεν δ' εἰς σικελίαν θ̄. καὶ ῑ. ἑκκαίδεκα δ' ἐκ τῆς στρογγύλης. πρόκειται δὲ, τοῦ παχύνου, μελίτη. ὅθεν τὰ κυνίδια ἃ καλοῦσι μελιταῖα. καὶ γαῦδος, π̄. καὶ η̄ μίλια ἑκατέρας ἀμφότεραι διέχουσαι. κόσσουρα δὲ, πρὸ τοῦ λιλυβαίου, καὶ πρὸ τῆς ἀσπίδος καρχηδονιακῆς πόλεως. ἣν κλυπέαν καλοῦσι, μέση ἀμφοῖν κειμένη. καὶ τὸ λεχθὲν διάστημα ἐφ' ἑκατέρας ἀπέχουσα, καὶ ἡ αἰγίμουρος δὲ πρὸ τῆς σικελίας καὶ τῆς λιβύης ἐστί. καὶ ἄλλα μικρὰ νησίδια. ταῦτα μὲν περὶ τῶν νήσων. ἐπεληλυθόσι δ' ἡμῖν τὰ περὶ τὴν ἀρχαίαν ἰταλίαν, μέχρι μεταποντίου, τὰ συνεχῆ λεκτέον. συνεχὴς δ' ἐστὶν ἡ ἰαπυγία. ταύτην δὲ καὶ μεσσαπίαν καλοῦσιν οἱ ἕλληνες. οἱ δ' ἐπιχώριοι κατὰ μέρη, τὸ μὲν σαλεντίνους καλοῦσι τὸ περὶ τὴν ἄκραν τὴν ἰαπυγίαν. τὸ δὲ, καλαβρούς. ὑπὲρ τούτους πρόσβοροι πευκέτιοί τέ εἰσι καὶ δαύνιοι κατὰ τὴν ἑλλάδα διάλεκτον προσαγορευόμενοι. οἱ δ' ἐπιχώριοι πᾶσαν τὴν μετὰ τοὺς καλαβροὺς, ἀπουλίαν καλοῦσι. τινὲς δ' αὐτῶν καὶ ποίδικλοι λέγονται. καὶ μάλιστα οἱ πευκέτιοι. ἔστι δ' ἐπιχερρονησίζουσα ἡ μεσσαπία τῷ ἀπὸ βρεντεσίου μέχρι τάραντος, ἰσθμῷ κλειομένη. σταδίων ῑ. καὶ τ̄. ὅ τ' ἐπίπλους ἐστὶ περὶ τὴν ἄκραν ἰαπυγίαν σταδίων ὁμοῦ τι ῡ. τοῦ δὲ μεταποντίου μὲν διέχει σταδίους περὶ σ̄. ὁ δὲ πλοῦς ἐπ' αὐτὸν πρὸς τὰς ἀνατολάς. τοῦ δὲ κόλπου παντὸς τοῦ ταραντίνου τὸ πλέον ἀλιμένου ὄντος, ἐνταῦθα ἐστὶ μέγιστος καὶ κάλλιστος γέφυρα κλειόμενος μεγίστῃ. σταδίων δ' ἐστὶν ρ̄. τὴν περίμετρον. ἐκ δὲ τοῦ πρὸς τὸν μυχὸν μέρους ἰσθμὸν ποιεῖ πρὸς τὴν ἔξω θάλατταν· ὥστ' ἐπὶ χερρονήσῳ κεῖσθαι τὴν πόλιν. καὶ τὰ πλοῖα ὑπερνεωλκεῖσθαι ῥᾳδίως ἑκατέρωθεν ταπεινοῦ ὄντος τοῦ αὐχένος ταπει-

νον δὲ, καὶ τὸ τῆς πόλεως ἔδαφος, μικρὸν δ' ὅμως ἐπῆρται κατὰ τὴν ἀκρόπολιν. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν τεῖχος, κύκλον ἔχει μέγαν. νυνὶ δ' ἐκλέλειπται τὸ πλέον πρὸς τῷ ἰσθμῷ. τὸ δὲ πρὸς τῷ στόματι τοῦ λιμένος καθ' ὃ καὶ ἡ ἀκρόπολις συμμένει, μέγεθος ἀξιολόγου πόλεως ἐκπληροῖ. ἔχει δὲ γυμνάσιόν τε κάλλιστον, καὶ ἀγορὰν εὐμεγέθη, ἐν ᾗ καὶ ὁ τοῦ Διὸς ἵδρυται κολοσσὸς χαλκοῦς, μέγιστος μετὰ τὸν ῥοδίων. μεταξὺ δὲ τῆς ἀγορᾶς καὶ τοῦ στόματος ἡ ἀκρόπολις. μικρὰ λείψανα ἔχουσα τοῦ παλαιοῦ κόσμου τῶν ἀναθημάτων. τὰ γὰρ πολλὰ τὰ μὲν, κατέφθειραν καρχηδόνιοι, λαβόντες τὴν πόλιν. τὰ δ' ἐλαφυραγώγησαν ῥωμαῖοι, κρατήσαντες βιαίως. ὧν ἐστι καὶ ὁ ἡρακλῆς ἐν τῷ καπιτωλίῳ χαλκοῦς ὁ κολοσσικὸς λυσίππου ἔργον. ἀνάθημα μαξίμου φαβίου τοῦ ἑλόντος τὴν πόλιν. περὶ δὲ τῆς κτίσεως λέγων ἀντίοχος φησὶν ὅτι τοῦ μεσσηνιακοῦ πολέμου γενηθέντος, οἱ μὴ μετασχόντες λακεδαιμονίων τῆς στρατείας, ἐκρίθησαν δοῦλοι, καὶ ὠνομάσθησαν εἵλωτες. ὅσοις δὲ κατὰ τὴν στρατείαν παῖδες ἐγένοντο, παρθενίας ἐκάλουν καὶ ἀτίμους ἔκριναν, οἱ δ' οὐκ ἀνασχόμενοι πολλοὶ δ' ἦσαν ἐπεβούλευσαν, τοῖς τοῦ δήμου. αἰσθόμενοι δ' ὑπέπεμψαν τινάς. οἳ προσποιήσει φιλίας, ἔμελλον ἐξαγγέλλειν τὸν τρόπον τῆς ἐπιβουλῆς. τούτων δ' ἦν, καὶ φάλανθος. ὅσπερ ἐδόκει προστάτης ὑπάρχειν αὐτῶν. οὐκ ἠρέσκετο δ' ἁπλῶς τοῖς παρὰ τῆς βουλῆς ὀνομασθεῖσι. συνέκειτο μὲν δὴ τοῖς ὑακινθίοις ἐν τῷ ἀμυκλαίῳ συντελουμένου τοῦ ἀγῶνος, ἡνίκα τὴν κυνῆν περιθῆ ὁ φάλανθος ποιεῖσθαι τὴν ἐπίθεσιν. γνώριμοι δ' ἦσαν ἀπὸ τῆς κόμης οἱ τοῦ δήμου. ἐξαγγειλάντων δέ τινων λάθρα τὰ συγκείμενα τῶν περὶ φάλανθον, καὶ τοῦ ἀγῶνος ἐνεστῶτος, προελθὼν ὁ κῆρυξ εἶπε μὴ ἂν περιθῆναι κυνῆν φάλανθον, οἱ δ' αἰσθόμενοι ὡς μεμηνύκασι τὴν ἐπιβουλὴν, οἱ μὲν, διεδίδρασκον. οἱ δὲ, ἱκέτευον. κελεύσαντες δ' αὐτοὺς θαρρεῖν, φυλακῇ παρέδοσαν, τὸν δὲ φάλανθον ἔπεμψαν εἰς θεοῦ περὶ ἀποικίας. ὁ δ' ἔχρησε.

» Σατύρειόν τι δῶκα. τάραντά τε πίονα δῆμον
» Οἰκῆσαι. καὶ πῆμ' ἰαπύγεσσι γενέσθαι.

Ἧκον οὖν σὺν φαλάνθῳ οἱ παρθενίαι. καὶ ἐδέξαντο αὐτοὺς οἵ τε βάρβαροι καὶ οἱ κρῆτες, οἱ προκατασχόντες τὸν τόπον, τούτους δ' εἶναι φασὶ, τοὺς μετὰ μίνω πλεύσαντας εἰς σικελίαν, καὶ μετὰ τὴν ἐκείνου τελευτὴν τὴν ἐν καμικοῖς παρὰ κωκάλῳ συμβᾶσαν ἀπάραντας ἐκ σικελίας, κατὰ δὲ τὸν ἀνάπλουν δεῦρο παρωσθέντας. ὧν τινας ὕστερον πεζῇ περιελθόντας τὸν ἀδρίαν μέχρι μακεδονίας, βοττιαίους προσαγορευθῆναι. ἰάπυγας δὲ, λεχθῆναι πάντας φασὶ μέχρι τῆς δαυνίας, ἀπὸ ἰάπυγος, ὃν ἐκ κρήσσης γυναικὸς δαιδάλῳ γενέσθαι φασὶ καὶ ἡγήσασθαι τῶν κρητῶν. τάραντα δ' ὠνόμασαν ἀπὸ ἥρωος τινὸς τὴν πόλιν. ἔφορος δ' οὕτω λέγει περὶ τῆς κτίσεως. ἐπολέμουν λακεδαιμόνιοι μεσσηνίοις, ἀποκτείνασι τὸν βασιλέα τήλεκλον εἰς μεσσήνην ἀφικόμενον ἐπὶ θυσίαν. ὀμόσαντες μὴ πρότερον ἐπανήξειν οἴκαδε πρὶν ἢ μεσσήνην ἀνελεῖν, ἢ πάντας ἀποθανεῖν. φύλακας δὲ κατέλιπον τῆς πόλεως, στρατεύοντες τούς τε νεωτάτους καὶ πρεσβυτάτους τῶν πολιτῶν. δεκάτῳ δ' ὕστερον τοῦ πολέμου χρόνῳ, τὰς γυναῖκας τῶν λακεδαιμονίων συνελθούσας, ἐξ ἑαυτῶν πέμψαι τινὰς παρὰ τοὺς ἄνδρας, τὰς μεμψομένας ὡς οὐκ ἐπ' ἴσης πολεμοῖεν πρὸς τοὺς μεσσηνίους. οἱ μὲν γὰρ μένοντες τεκνοποιοῦνται. οἱ δὲ χήρας ἀφέντες τὰς γυναῖκας, ἐν τῇ πολεμίᾳ στρατοπεδεύοντο. καὶ κίνδυνος εἴη λειπανδρῆσαι τὴν πατρίδα. οἱ δ' ἅμα καὶ τὸν ὅρκον φυλάττοντες καὶ τὸν τῶν γυναικῶν λόγον ἐνθέμενοι, πέμπουσι τῆς στρατείας τοὺς εὐρωστοτάτους ἅμα, καὶ νεωτάτους, οὓς ᾔδεσαν οὐ μετασχόντας τῶν ὅρκων, διὰ τὸ παῖδας ἔτι ὄντας συνεξελθεῖν τοῖς ἐν ἡλικίᾳ. προσέταξαν δὲ συγγίνεσθαι ταῖς παρθένοις ἁπάσαις ἅπαντας. ἡγούμενοι πολυτεκνήσειν μᾶλλον, γενομένων δὲ τούτων, οἱ μὲν παῖδες ὠνομάσθησαν παρθενίαι. μεσσήνη δὲ ἑάλω πολεμηθεῖσα ἐννεακαίδεκα ἔτη καθάπερ καὶ τυρταῖος φησίν.

» Ἄμφω τῷ δὲ μάχοντο ἐννεακαίδεκα ἔτη
» Νωλεμέως αἰεὶ ταλασίφρονα θυμὸν ἔχοντες.
» Αἰχμηταὶ πατέρων, ἡμετέρων πατέρες
» Εἰκοστῷ. οἱ μὲν κατὰ πίονα ἔργα λιπόντες,
» Φεῦγον ἰθωμαίων ἐκ μεγάλων ὀρέων.

Τὴν μὲν οὖν μεσσηνίαν κατενείμαντο. ἐπανελθόντες δ' οἴκαδε, τοὺς παρθενίας οὐχ ὁμοίως τοῖς ἄλλοις ἐτίμων, ὡς οὐκ ἐκ γάμου γεγονότας. οἱ συνιστάμενοι μετὰ τῶν εἱλώτων ἐπεβούλευσαν τοῖς λακεδαιμονίοις. καὶ συνέθεντο ἆραι σύσσημον ἐν τῇ ἀγορᾷ πῖλον λακωνικὸν ἐπειδὰν ἐγχειρῶσι. τῶν δὲ εἱλώτων τινὲς ἐξαγγείλαντες, τὸ μὲν ἀντεπιτίθεσθαι, χαλεπὸν ἔγνωσαν. καὶ γὰρ πολλοὺς εἶναι, καὶ πάντας ὁμόφρονας, ὡς ἂν ἀλλήλων ἀδελφοὺς νομιζομένους, τοὺς μέλλοντας δ' αἴρειν τὸ σύσσημον ἐκ τῆς ἀγορᾶς ἀπιέναι προσέταξαν. οἱ μὲν, δὴ μεμηνυμένην αἰσθόμενοι τὴν τάξιν ἐπέσχον, οἱ δὲ, διὰ τῶν πατέρων ἔπεισαν αὐτοὺς εἰς ἀποικίαν ἐξελθεῖν. κἂν μὲν κατάσχωσιν ἀρκοῦντα τὸν τόπον μένειν. εἰ δὲ μὴ, τῆς μεσσηνίας τὸ πέμπτον κατανείμασθαι μέρος ἐπανιόντας. οἱ δὲ σταλέντες κατέβαλον τοὺς ἀχαιοὺς, πολεμοῦντας τοῖς βαρβάροις, μετασχόντες δὲ τῶν κινδύνων κτίζουσι τὴν τάραντον. ἴσχυσαν δέ

οἱ ταραντῖνοι, καθ' ὑπερβολὴν πολιτευόμενοι δημοκρατικῶς. καὶ γὰρ ναυτικὸν ἐκέκτηντο μέγι-
στον τῶν ταύτῃ. καὶ πεζοὺς ἔστελλον τρισμυρίους. ἱππέας δὲ, τρισχιλίους, ἱππάρχους δὲ, χιλίους.
ἀπεδέξαντο δὲ, καὶ τὴν πυθαγόρειον φιλοσοφίαν, διαφερόντως δ' ἀρχύτας ὃς προέστη τῆς πόλεως πο-
λὺν χρόνον. ἐξίσχυσε δ' ὕστερον τρυφὴ διὰ τὴν εὐδαιμονίαν, ὥστε τὰς πανδήμους ἑορτὰς πλείους
ἄγεσθαι κατ' ἔτος παρ' αὐτοῖς ἢ τὰς ἡμέρας. ἐκ δὲ τούτου καὶ χεῖρον ἐπολιτεύοντο. ἓν δ' ἐστὶ, τῶν φαύ-
λων πολιτευμάτων τεκμήριόν ἐστι, τὸ ξενικοῖς στρατηγοῖς χρῆσθαι. καὶ γὰρ τὸν μολοττὸν ἀλέξαν-
δρον μετεπέμψαντο ἐπὶ μεσαπίους καὶ λευκανούς. καὶ ἔτι πρότερον, ἀρχίδαμον τὸν ἀγησιλάου,
καὶ ὕστερον κλεώνυμον, καὶ ἀγαθοκλέα, εἶτα πύρρον, ἡνίκα συνέστησαν πρὸς ῥωμαίους. οὐδ' ἐ-
κείνοις δ' εὐπειθεῖν ἠδύναντο οὓς ἐπεκαλοῦντο. ἀλλ' εἰς ἔχθραν αὐτοὺς καθίστασαν. ὁ γοῦν ἀλέ-
ξανδρος τὴν κοινὴν ἑλλήνων τῶν ταύτῃ πανήγυριν, ἣν ἔθος ἦν ἐν ἡρακλείᾳ συντελεῖν τῆς τα-
ραντίνης. μετάγειν ἐπειρᾶτο εἰς τὴν θουρίαν κατὰ ἔχθος. ἐκέλευσε δὲ κατὰ τὸν ἀκάλανδρον ποτα-
μὸν, τειχίζειν τόπον ὅπου ἔσοιντο αἱ σύνοδοι. καὶ δὴ ἡ συμβᾶσα αὐτῷ κακοπραγία, διὰ τὴν ἐκείνων
ἀγνωμοσύνην, ἀπαντῆσαι λέγεται. περί τε τὰ ἀννίβεια, καὶ τὴν ἐλευθερίαν ἀφῃρέθησαν. ὕστε-
ρον δὲ ἀποικίαν ῥωμαίων δεξάμενοι, καθ' ἡσυχίαν ζῶσι, καὶ βέλτιον, ἢ πρότερον. πρὸς δὲ μεσαπί-
ους ἐπολέμησαν περὶ ἡρακλείας, ἔχοντες συνεργούς, τόν τε τῶν δαυνίων καὶ τὸν τῶν πευκετίων
βασιλέα. ἡ δ' ἑξῆς τῶν ἰαπυγίων χώρα παραδόξως ἐστὶν ἀστεία. ἐπιπολῆς γὰρ φαινομένη τραχεῖα,
εὑρίσκεται βαθύγειος σκαλαζομένη. ἀνυδροτέρα δ' οὖσα εὔβοτος οὐδὲν ἧττον, καὶ εὔδενδρος ὁρᾶ-
ται. εὐάνδρησε δέ ποτε καὶ τοῦτο σφόδρα τὸ χωρίον σύμπαν. καὶ ἔσχε πόλεις τρισκαίδεκα. ἀλλὰ
νῦν πλὴν τάραντος καὶ βρεντεσίου τἄλλα πολίσματά ἐστιν. οὕτως ἐκπεπόνηνται. τοὺς δὲ σαλεν-
τίνους, κρητῶν ἀποίκους φασίν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ, καὶ τὸ τῆς ἀθηνᾶς ἱερὸν πλούσιόν ποτε ὑπάρξαν.
καὶ ὁ σκόπελος. ὃν καλοῦσιν ἄκραν ἰαπυγίαν. πολὺς ἐκκείμενος εἰς τὸ πέλαγος καὶ τὰς χειμερινὰς
ἀνατολάς. ἐπιστρέφων δέ πως ἐπὶ τὸ λακίνιον, ἀνταίρων ἀπὸ τῆς ἑσπέρας αὐτῷ, καὶ κλείων τὸ στό-
μα τοῦ ταραντίνου κόλπου πρὸς αὐτόν. καὶ τὰ κεραύνια δ' ὁμοίως ὄρη, κλείει πρὸς αὐτὸν τὸ στόμα τοῦ
ἰονίου κόλπου, καὶ ἔστι τὸ δίαρμα ὅσον ψ. σταδίων ἀπ' αὐτοῦ πρός τε τὰ κεραύνια, καὶ πρὸς τὸ λακίνιον.
περίπλους δὲ τάραντός ἐστι πρὸς βρεντέσιον, μέχρι μὲν βάριδος πολίχνης, χ. στάδιοι. καλοῦσι δὲ βά-
ριν οἱ νῦν οὐερητόν. κεῖται δ' ἐπὶ τοῖς ἄκροις τῆς σαλεντίνης. καὶ τὸ πολὺ, πεζῇ μᾶλλον ἢ καταπ-
λεῦσαι εἰς αὐτὴν, ἐκ τοῦ τάραντος, εὐμαρὴς ἡ ἄφιξίς ἐστιν. ἔνθεν εἰς τὰ λευκὰ, στάδιοι π. πολίχνιον, καὶ
τοῦτο, ἐν ᾧ δείκνυται πηγὴ δυσώδους ὕδατος, μυθεύουσι δ' ὅτι τοὺς περιληφθέντας τῶν γιγάντων,
ἐν τῇ κατὰ καμπανίαν φλέγρᾳ, λευτερνίους καλουμένους, ἡρακλῆς ἐξελάσειε, καταφυγόντας
δεῦρο ὑπὸ γῆς περισταλεῖεν. ἐκ δὲ ἰχώρων, τοιοῦτον ἴσχει ῥεῦμα ἡ πηγή. διὰ τοῦτο δὲ, καὶ τὴν παρα-
λίαν ταύτην, λευτερνίαν προσαγορεύουσιν. ἐκ δὲ τῶν λευκῶν εἰς ὑδροῦντα πολίχνην ρν. ἐντεῦθεν
δ' εἰς βρεντέσιον υ, οἱ δ' ἴσοι, καὶ εἰς σάσωνα τὴν νῆσον. ἥτις μέση πως ἵδρυται τοῦ διάρματος, τοῦ ἐκ τῆς
ἠπείρου πρὸς τὸ βρεντέσιον. διόπερ οἱ δυνάμενοι κρατεῖν τῆς εὐθυπλοίας, καταίρουσιν ἐν ἀριστε-
ρᾷ ἐκ τοῦ σάσωνος πρὸς τὸν ὑδροῦντα. ἐντεῦθεν δὲ τηρήσαντες φορὰν πνεύματος προσέχουσι τοῖς μὲν
βρεντεσινῶν λιμέσιν. ἐκβάντες δὲ πεζεύουσι συντομώτερον ἐπὶ ῥωδαίων πόλεως ἑλληνίδος. ἐξ
ἧς ἦν ὁ ποιητὴς ἔννιος. ἔοικεν οὖν χερρονήσῳ τὸ περιπλεόμενον χωρίον ἐκ τάραντος εἰς βρεντέσιον.
ἡ δ' ἐκ βρεντεσίου πεζευομένη ὁδὸς εἰς τὸν τάραντα, εὐζώνῳ μιᾶς οὖσα ἡμέρας, τὸν ἰσθμὸν ποιεῖ
τῆς εἰρημένης χερρονήσου, ἣν μεσαπίαν τε καὶ ἰαπυγίαν καὶ καλαβρίαν καὶ σαλεντίνην κοινῶς οἱ
πολλοὶ προσαγορεύουσι. τινὲς δὲ διαιροῦσιν, ὡς ἐλέγομεν πρότερον. τὰ μὲν οὖν πολίχνια, τὰ ἐν τῷ
παράπλῳ εἴρηται, ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ, ῥωδαῖοί τέ εἰσι, καὶ λουπίαι, καὶ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάσσης
σαλητία. ἐπὶ δὲ τῷ ἰσθμῷ μέσῳ θυραῖοι. ἐν ᾧ βασίλειον. ἐπιδείκνυται τοῦ δυναστῶν τινός. εἰρηκότος
δ' ἡροδότου οὐρίαν εἶναι ἐν τῇ ἰαπυγίᾳ, κτίσμα κρητῶν τῶν πλανηθέντων ἐκ τοῦ μίνω στόλου εἰς σικε-
λίαν, ἤτοι αὐτὴν δεῖ δέχεσθαι, ἢ τὸ οὐερητόν. βρεντέσιον δ' ἐποικῆσαι μὲν λέγεται κρῆτας οἱ μετὰ θη-
σέως ἐπελθόντες ἐκ κνωσσοῦ. εἶθ' οἱ ἐκ τῆς σικελίας ἀπηρκότες μετὰ τοῦ ἰάπυγος. λέγεται γὰρ ἀμφοτέ-
ρως, οὐ συμμεῖναι δέ φασιν αὐτούς. ἀλλ' ἀπελθεῖν εἰς τὴν βοττιαίαν. ὕστερον δ' ἡ πόλις βασιλευομένη
πολλὴν ἀπέβαλε τῆς χώρας ὑπὸ τῶν μετὰ φαλάνθου λακεδαιμονίων. ὅμως δ' ἐκπεσόντα αὐ-
τὸν ἐκ τοῦ τάραντος ἐδέξαντο οἱ βρεντέσιοι. καὶ τελευτήσαντα ἠξίωσαν λαμπρᾶς ταφῆς. χώραν
δ' ἔχουσι βελτίω τῆς ταραντίνων. λεπτόγειος γὰρ ἐκείνη. χρυσόκαρπος δὲ, μέλι δὲ, καὶ ἔρια τῶν λίαν
ἐπαινουμένων ἐστί. καὶ εὐλίμενον δὲ μᾶλλον τὸ βρεντέσιον. ἐνὶ γὰρ στόματι πολλοὶ κλείονται λιμένες
ἄκλυστοι. κόλπων ἀπολαμβανομένων ἐντός. ὥστ' ἐοικέναι κέρασιν ἐλάφου τὸ σχῆμα. ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα.
σὺν γὰρ τῇ πόλει, κεφαλῇ μάλιστα ἐλάφου προσέοικεν ὁ τόπος. τῇ δὲ μεσαπίᾳ γλώττῃ βρεντέσιον ἡ
κεφαλὴ τοῦ ἐλάφου καλεῖται. ὁ δὲ ταραντῖνος οὐ παντελῶς ἐστιν ἄκλυστος, διὰ τὸ ἀναπεπτάσθαι. καί
τινα καὶ πρὸς βραχὺ ἔχειν τὰ περὶ τὸν μυχόν. ἐν δὲ τοῖς ἀπὸ τῆς ἑλλάδος καὶ τῆς ἀσίας διαίρουσιν,
εὐθύπλους μᾶλλον ἐστὶν ἐπὶ τὸ βρεντέσιον, καὶ δὴ καὶ δεῦρο πάντες καταίρουσιν οἷς εἰς τὴν ῥώμην πρό-

κεῖται. ὁδοὶ δύο δ' εἰσί, μία μὲν ἡμιονικὴ διὰ πευκετίων, οὓς ποιδίκλους καλοῦσι, καὶ δαυνιτῶν, καὶ σαυνιτῶν μέ-
χρι οὐενουσίου. ἐφ' ἣ ὁδῷ, ἰγνατία πόλις· εἶτα κελία, καὶ νήτιον, καὶ κανύσιον, καὶ κερδονίαι. ἡ δὲ, διὰ τά-
ραντος μικρὸν ἐν ἀριστερᾷ. ὅσον δὲ μιᾶς ἡμέρας περίοδον κυκλεύοντι ἡ ἀππία λεγομένη ἁμαξήλα-
τος μᾶλλον. ἐν ταύτῃ δὲ πόλις οὐρία τε καὶ οὐενουσία. ἡ μὲν, μεταξὺ τάραντος καὶ βρεντεσίου. ἡ
δὲ μεθορίοις σαυνιτῶν, καὶ λευκανῶν. συμβάλλουσι δ' ἄμφω κατὰ βενεουέντων καὶ τὴν καμπανίαν
ἐκ τοῦ βρεντεσίου. τοὐντεῦθεν δ' ἤδη μέχρι τῆς ῥώμης, ἀππία καλεῖται. διὰ κλαυδίου, καὶ γαλατίας,
καὶ καπύης, καὶ κασιλίνου μέχρι οὐενουσίας. τὰ δ' ἐνθένδε εἴρηται. ἡ δὲ πᾶσα ἐστὶν ἐκ ῥώμης εἰς βρεν-
τέσιον. μίλια τξ. τρίτη δ' ἐστὶν ἐκ ῥηγίου διὰ βρεττίων, καὶ λευκανῶν, καὶ τῆς σαυνίτιδος εἰς τὴν καμ-
πανίαν, συνάπτουσα εἰς τὴν ἀππίαν. μακροτέρα τῆς ἐκ βρεντεσίου τρισὶν ἢ τέτταρσιν ἡμέραις διὰ
τῶν ἀπεννίνων ὀρῶν. ὁ δ' εἰς τὴν περαίαν ἐκ τοῦ βρεντεσίου πλοῦς, ἐστὶν, ὁ μὲν, ἐπὶ τὰ κεραύνια, καὶ
τὴν ἑξῆς παραλίαν, τῆς τε ἠπείρου, καὶ τῆς ἑλλάδος. ὁ δ' εἰς ἐπίδαμνον, μείζων τοῦ προτέρου. χιλίων
γάρ ἐστι καὶ ω σταδίων, τέτριπται δὲ, καὶ οὗτος. διὰ τὸ τὴν πόλιν εὐφυῶς κεῖσθαι πρός τε τὰ τῶν ἰλλυ-
ριῶν ἔθνη, καὶ τὰ τῶν μακεδόνων. παραπλέοντι δ' ἐκ τοῦ βρεντεσίου τὴν ἀδριατικὴν παραλίαν, πό-
λις ἐστὶν ἡ σεγναλία, οὖσα κοινὴ καταγωγὴ πλέουσί τε καὶ πεζεύουσιν, εἰς βάριον. ὁ δὲ πλοῦς, νότῳ
μέχρι δεῦρο μὲν πευκετίου κατὰ θάλατταν, τῇ μεσογαίᾳ δὲ μέχρι σιλουΐου. πᾶσα δὲ τραχεῖα, καὶ ὀ-
ρεινή. πολὺ τῶν ἀπεννίνων ὀρῶν κοινωνοῦσα, ἀρκάδας δ' ἀποίκους δέξασθαι δοκεῖ. εἰσὶ δ' ἐκ βρεντε-
σίου εἰς βάριον ἑπτακόσιοί που στάδιοι. σχεδὸν δ' ἴσον ἑκατέρας διέχει. τὴν δὲ, συνεχῆ καύνιοι νέμονται.
εἶτα ἄπουλοι μέχρι φρεντανῶν. ἀνάγκη δὲ, πευκετίων καὶ δαυνίων μὴ δ' ὅλως λεγομένων ὑπὸ τῶν
ἐπιχωρίων. πλὴν εἴ το παλαιόν. ἁπάσης δὲ ταύτης τῆς χώρας ἀπουλίας λεγομένης νυνὶ μηδὲ
τοὺς ὅρους ἐπ' ἀκριβὲς λέγεσθαι τῶν ἐθνῶν τούτων. διὸ περ οὐδ' ἡμῖν διισχυριστέον περὶ αὐτῶν. ἐκ δὲ
βαρίου πρὸς τὸν ποταμὸν αὔφιδιον, ἐφ' ᾧ τὸ ἐμπορεῖον τῶν καυνυσιτῶν υ. ὁ δ' ἀνάπλους ἐπὶ τὸ ἐμ-
πορεῖον ς. πλησίον δὲ, καὶ σαλαπία, τὸ τῶν ἀργυριππηνῶν ἐπίνειον. οὐ πολὺ γὰρ δὴ τῆς θαλάττης,
ὑπέρκεινται δύο πόλεις ἐν γε τῷ πεδίῳ μέγισται τῶν ἰταλιωτίδων γεγονυῖαι πρότερον. ὡς ἐκ τῶν
περιβόλων δῆλον. τό τε καυνύσιον καὶ ἡ ἀργυρίππα. ἀλλὰ νῦν ἐλάττους εἰσίν. ἐκαλεῖτο δ' ἐξ ἀρχῆς
ἄργος ἵππιον. εἶτ' ἀργυρίππα. εἶτα νῦν ἄρποι. λέγεται δ' ἀμφότερα διομήδους κτίσματα. καὶ τὸ πεδίον,
καὶ ἄλλα πολλὰ δείκνυται τοῦ διομήδους ἐν τούτοις τοῖς τόποις δυναστείας σημεῖα. ἐν μὲν τῷ τῆς
ἀθηνᾶς ἱερῷ τῆς ἐν λουκερίᾳ, παλαιὰ ἀναθήματα. καὶ αὕτη δ' ὑπῆρξε πόλις ἀρχαία δαυνίων.
νῦν δὲ τεταπείνωται. ἐν δὲ τῇ πλησίον θαλάττῃ δύο νῆσοι διομήδειοι προσαγορευόμεναι. ὧν ἡ μὲν οἰ-
κεῖται. τὴν δ' ἐρήμην φασὶν εἶναι. ἐν ᾗ καὶ τὸν διομήδην μυθεύουσιν ἀφανισθῆναί τινες. καὶ τοὺς ἑ-
ταίρους ἀπορνιθωθῆναι, καὶ δὴ καὶ νῦν διαμένειν ἐκ μέρους. καὶ βίον τινὰ ζῆν ἀνθρώπινον. τάξει τε
διαίτης, καὶ τῇ πρὸς ἀνθρώπους ἡμερότητι τοὺς ἐπιεικεῖς. ἀπὸ δὲ τῶν κακούργων, καὶ μιαρῶν φυγῇ.
εἴρηται δὲ καὶ τὰ παρὰ τοῖς ἐνετοῖς διατεθρυλλημένα περὶ τοῦ ἥρωος τούτου, καὶ αἱ νεμηθεῖσαι τι-
μαί. δοκεῖ δὲ, καὶ ὁ σήπους διομήδους εἶναι κτίσμα. διέχων τῆς σαλαπίας ὅσον μ. καὶ ρ σταδίους. καὶ
ὠνομάζετό γε σηπιοῦς ἑλληνικῶς, ἀπὸ τῶν ἐκκυματιζομένων σηπιῶν. μεταξὺ δὲ, τῆς σαλαπίας, καὶ
τοῦ σιπουντος, ποταμός τε πλωτός. καὶ στόμα λίμνης μεγάλης. δι' ἀμφοῖν δὲ, τὰ ἐκ σιπουντος κατ-
άγεται. καὶ μάλιστα, ὁ σῖτος. δείκνυται δὲ τῆς δαυνίας, περὶ λόφον ᾧ ὄνομα δρίον, ἡρῷα, τὸ μὲν, κάλ-
χαντος ἐπ' ἄκρᾳ τῇ κορυφῇ. ἐναγίζουσι δὲ αὐτῷ μέλανα κριὸν οἱ μαντευόμενοι. ἐγκοιμώμενοι ἐν τῷ
δέρματι. τὸ δὲ, ποδαλειρίου κάτω πρὸς τῇ ῥίζῃ. διέχον τῆς θαλάττης ὅσον σταδίους ρ. ῥεῖ δ' ἐξ αὐτῶν
ποτάμιον, πάνακες πρὸς τὰς τῶν θρεμμάτων νόσους. πρόκειται δὲ τοῦ κόλπου τούτου, πελάγιον
ἀκρωτήριον ἐπὶ τ ἀνατεῖνον σταδίους πρὸς ἀνατολὰς τὸ γάργανον. κάμπτοντι δὲ τὴν ἄκραν, πολισμά-
τιον οὔριον. καὶ πρὸ τῆς ἄκρας αἱ διομήδειοι νῆσοι. ἔστι δὲ πᾶσα ἡ χώρα αὕτη πάμφορός τε καὶ πο-
λύφορος. ἵπποις τε καὶ προβάτοις ἀρίστη. ἡ δὲ ἔρια μαλακώτερα μὲν τῆς ταραντίνης ἐστὶ λαμπρὰ δὲ
ἧττον. ἡ δὲ χώρα, εὐδεινὴ διὰ τὴν κοιλότητα τῶν πεδίων. οἱ δὲ, καὶ διώρυγα φασὶ τεμεῖν ἐπιχειρῆσαι τὸν
διομήδην μέχρι τῆς θαλάττης. καταλιπεῖν δ' ἡμιτελῆ, καὶ ταύτην, καὶ ἄλλας πράξεις, μεταπεμ-
πτὸν οἴκαδε γενόμενον. κἀκεῖ καταστρέψαι τὸν βίον. εἷς μὲν οὗτος ὁ λόγος περὶ αὐτοῦ. δεύτερος
δὲ, ὡς αὐτόθι μείνειε, μέχρι καταστροφῆς τοῦ βίου. τρίτος δ' ὁ μυθώδης ὃν προεῖπον, τὸν ἐν τῇ νήσῳ
λέγων ἀφανισμόν. τέταρτον θείη τις ἂν, τὸν τῶν ἐνετῶν, καὶ γὰρ ἐκεῖνοι παρὰ σφίσι πως τὴν κατα-
στροφὴν αὐτοῦ μυθεύουσιν. ἣν ἀποθέωσιν καλοῦσι. ταῦτα μὲν οὖν κατ' ἀρτεμίδωρον κεῖται τὰ δια-
στήματα. φησὶ δ' ὁ χωρογράφος τὰ ἀπὸ τοῦ βρεντεσίου μέχρι γαργάνου μιλίων ρξε. πλεονάζει δὲ, αὐ-
τὰ ἀρτεμίδωρος. ἐντεῦθεν δ' εἰς ἀγκῶνα σνδ. μίλια φησὶν ἐκεῖνος. ὁ δ' ἀρτεμίδωρος εἰς α, σ ἐπὶ
πλησίον τὰ τοῦ ἀγκῶνος σταδίους εἴρηκε α. σ ν. πολὺ ἐνδεέστερον ἐκείνου. πολύβιος δ' ἀπὸ τῆς ἰαπυ-
γίας μεμιλιάσθαι φησί. καὶ εἶναι μίλια φξβ εἰς σίλαν πόλιν. ἐντεῦθεν δ' εἰς ἀκυληίαν ροη οὐχ ὁ-
μολογοῦντες τῷ φερομένῳ διαστήματι τῆς ἰλλυρικῆς παραλίας, ἀπὸ τῶν κεραυνίων ὀρῶν ἐπὶ τὸν
τοῦ ἀδρίου μυχὸν ὑπὲρ ἑξακισχιλίων σταδίων ἀποφαίνοντες, καὶ μείζω καθιστάντες ἐκείνου πολὺ ἐλάτ-

τινα ὄντα. καὶ πάντες δὲ πρὸς ἅπαντας μάλιστα περὶ τῶν διαστημάτων οὐχ ὁμολογοῦσι πρὸς ἀλλήλους ὡς πολλάκις λέγομεν. ἡμεῖς δ᾽ ὅπου μὲν ἐπικρίνειν δυνατὸν ἐκφέρομεν τὸ δοκοῦν ἡμῖν, ὅπου δὲ μὴ τὰ ἐκείνων οἰόμεθα εἰς μέσον τιθέναι δεῖν. ἐὰν δὲ μηδὲν παρ᾽ ἐκείνων ἔχωμεν οὐδὲν θαυμαστὸν οὐδ᾽ εἰ παραλείψομέν τι καὶ ἡμεῖς ἐν τοιαύτῃ καὶ ταύτῃ ὑποθέσει. τῶν μὲν γὰρ μεγάλων οὐδὲν ἂν παραλίποιμεν, τὰ δὲ μικρὰ καὶ γνωσθέντα μικρὸν ὀνίνησι. καὶ παραπεμφθέντα ἔλαθε. οὐκ ἔβλαψε καὶ οὐδὲν, ἢ οὐ πολὺ τοῦ παντελοῦς ἔργου παρέλυσε. μεταξὺ δ᾽ εὐθὺς ἀπὸ τοῦ γαργάνου κόλπος ὑποδέχεται βαθύς. οἱ δὲ περιοικοῦντες ἰδίως ἄπουλοι προσαγορεύονται. εἰσὶ δ᾽ ὁμόγλωττοι μὲν τοῖς δαυνίοις, καὶ πευκετίοις. οὐ δὲ τἆλλα δὲ διαφέρουσιν ἐκείνων τό γε νῦν, τὸ δὲ πάλαι διαφέρειν εἰκός. ὅθεν περ καὶ τὰ ὀνόματα ἐναντία ἁπάντων ἐπικρατεῖν. πρότερον μὲν οὖν ηὐτύχει αὕτη πᾶσα ἡ γῆ. ἀννίβας δὲ, καὶ οἱ ὕστερον πόλεμοι ἠρήμωσαν αὐτήν. ἐν ταῦθα δὲ, καὶ τὰ περὶ κάννας συνέβη. ὅπου πλεῖστος ὄλεθρος σωμάτων ῥωμαίοις καὶ τοῖς συμμάχοις ἐγένετο. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ λίμνη ἐστίν. ὑπὲρ δὲ τῆς λίμνης ἐν μεσογαίᾳ τὸ ἄπουλον τεανὸν. ὁμώνυμον τῷ σιδικινῷ, καθ᾽ ὃ δοκεῖ συνάγεσθαι τὸ τῆς ἰταλίας πλάτος ἐφ᾽ ἱκανόν, πρὸς τὸν περὶ δικαιαρχίαν τόπον. ἔλαττον ὂν ἢ α. σταδίων ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν ἰσθμὸν καταλιπόν. μετὰ δὲ τὴν λίμνην ἐπὶ τοὺς φρεντανοὺς καὶ τὴν βουκάνον παράπλους ἐστί. σ δ᾽ εἰσὶν ἐφ᾽ ἑκάτερα στάδιοι τῆς λίμνης. ἐπί τε τὴν βουκάνον, καὶ τὸ γάργανον. τὰ δ᾽ ἑξῆς, τῆς περὶ βουκάνον εἴρηται πρότερον. τοσαύτη μὲν τις καὶ τοιαύτη τίς ἐστιν ἡ ἰταλία. πολλὰ δ᾽ εἰρηκότες, τὰ μέγιστα ἐπισημανούμεθα, ὑφ᾽ ὧν νῦν εἰς τοσοῦτον ὕψος ἐξήρθησαν οἱ ῥωμαῖοι. ἓν μὲν ὅτι νήσου δίκην ἀσφαλῶς φρουρεῖται τοῖς πελάγεσι κύκλῳ, πλὴν ὀλίγων μερῶν. καὶ αὐτά τε τείχεσαι τοῖς ὄρεσι δυσβάτοις οὖσι. δεύτερον δὲ, τὸ ἀλίμενον κατὰ τὸ πλεῖστον. καὶ τοὺς ὄντας λιμένας μεγάλους εἶναι, καὶ θαυμαστούς. ὧν τὸ μὲν, πρὸς τὰς ἔξωθεν ἐπιχειρήσεις χρήσιμον. τὸ δὲ, πρὸς τὰς ἀντεπιχειρήσεις καὶ τὴν τῶν ἐμπορίων ἀφθονίαν συνεργόν. τρίτον δὲ, τὸ πολλαῖς ὑποπεπτωκέναι διαφοραῖς ἀέρων τε καὶ κράσεων. παρ᾽ ἃς, καὶ ζῷα, καὶ φυτὰ καὶ πάνθ᾽ ἁπλῶς τὰ πρὸς τὸν βίον χρήσιμα πλείστην ἐξάλλαξιν ἔχει, πρός τε τὸ βέλτιον καὶ τὸ χεῖρον. ἐκτέτακται δὲ τὸ μῆκος αὐτῆς ἐπὶ μεσημβρίαν ἀπὸ τῶν ἄρκτων τὸ πλέον. προσθήκη δ᾽ ἐστὶν ἡ σικελία τῷ μήκει τοσαύτη οὖσα, καὶ τοσοῦτον καθάπερ μέρος. εὐκρασία δ᾽ ἀέρων, καὶ δυσκρασία κρίνεται παρὰ τὰ ψύχη καὶ τὰ θάλπη, καὶ τὰ μεταξὺ τούτων, ὥστε καὶ τούτων ἀνάγκη, τὴν νῦν ἰταλίαν ἐν μέσῳ τῶν ὑπερβολῶν ἀμφοτέρων κειμένην. τοσούτην τῷ μήκει πλεῖστον τῆς εὐκράτου μετέχειν καὶ κατὰ πλείστας ἰδέας. ἔτι δὲ, καὶ ἄλλως συμβέβηκεν αὐτῇ. τῶν γὰρ ἀπεννίνων ὀρῶν δι᾽ ὅλου τοῦ μήκους διατεταμένων. ἐφ᾽ ἑκάτερα δὲ πεδία, καὶ γεωλοφίας καλλικάρπους ἀπολιπόντων, οὐδὲν μέρος αὐτῆς ἐστιν ὃ μὴ καὶ τῶν ὀρείων ἀγαθῶν καὶ τῶν πεδίων ἀπολαύον τυγχάνει. καὶ προσθετέον τὸ μέγεθος, καὶ πλῆθος, ποταμῶν τε, καὶ λιμνῶν. πρὸς δὲ τούτοις θερμῶν τε καὶ ψυχρῶν ὑδάτων ἀναβολὰς πολλαχοῦ πρὸς ὑγείαν φύσει παρασκευασμένων. καὶ μὴν καὶ μετάλλων εὐπορίαν παντοδαπῶν. ὕλης τε καὶ τροφῆς ἀνθρώποις τε καὶ βοσκήμασιν, οὐδ᾽ ἀξίως εἰπεῖν ἐστι τὴν ἀφθονίαν ὅσην παρέχεται καὶ τὴν χρυσοκαρπίαν. ἐν μέσῳ δὲ, καὶ τῶν ἐθνῶν τῶν μεγίστων οὖσα, καὶ τῆς ἑλλάδος, καὶ τῶν ἀρίστων τῆς ἀσίας μερῶν, διὰ μὲν, κρατιστεύειν ἐν ἀρετῇ τε καὶ μεγέθει τὰ περιεστῶτα αὐτὴν, πρὸς ἡγεμονίαν εὐφυῶς ἔχει. διὰ δὲ τὸ ἐγγὺς τὸ μὴ ῥαστώνης ὑπουργεῖσθαι πεπόρισται. εἰ δὲ δεῖ τῷ περὶ τῆς ἰταλίας λόγῳ προσθεῖναί τινα λόγον κεφαλαιώδη, καὶ περὶ τῶν ῥωμαίων τῶν κατασχόντων αὐτὴν, καὶ κατασκευασμένων ὁρμητήριον πρὸς τὴν σύμπασαν τὴν ἡγεμονίαν, προσειλήφθω καὶ ταῦτα. ὅτι ῥωμαῖοι μετὰ τὴν κτίσιν τῆς ῥώμης, βασιλευόμενοι διετέλεσαν σωφρόνως ἐπὶ πολλὰς γενεάς. ἔπειτα τοῦ ἐσχάτου ταρκυνίου μοχθηρῶς ἄρχοντος, τὸν μὲν ἐξέβαλον. πολιτείαν δὲ συνεστήσαντο μικτὴν, ἔκ τε μοναρχίας, καὶ ἀριστοκρατίας. κοινωνοῖς δ᾽ ἐχρήσαντο σαβίνοις τε καὶ λατίνοις. οὐκ εὐγνωμόνων δ᾽ οὔτ᾽ ἐκείνων ἀεὶ τυγχάνοντες οὔτε τῶν ἄλλων πλησιοχώρων, ἠναγκάζοντο τρόπον τινὰ τῇ ἐκείνων καταλύσει, τὴν σφετέραν ἐπαύξειν. οὕτω δ᾽ αὐτοῖς κατ᾽ ὀλίγον προϊοῦσιν εἰς ἐπίδοσιν, συνέβη τὴν πόλιν αἰφνιδίως ἀποβαλεῖν, παρὰ τὴν ἁπάντων δόξαν, παρὰ δόξαν δὲ, καὶ ἀπολαβεῖν. ἐγένετο δὲ τοῦθ᾽ ὥς φησι πολύβιος, ἔτει ἐννεακαιδεκάτῳ μετὰ τὴν ἐν αἰγὸς ποταμοῖς ναυμαχίαν, καὶ τὴν ἐπ᾽ ἀνταλκίδου γενομένην εἰρήνην. διακρουσάμενοι δὲ τούτους ῥωμαῖοι, πρῶτον μὲν λατίνους ἅπαντας ὑπηκόους ἐποιήσαντο. εἶτα τυρρηνοὺς, καὶ κελτοὺς τοὺς περὶ τὸν πάδον ἔπαυσαν τῆς πολλῆς, καὶ ἄδην ἐλευθερίας. εἶτα σαυνίτας, μετὰ δὲ τούτους ταραντίνους, καὶ πύρρον κατεπολέμησαν. εἶτα ἤδη, καὶ τὴν λοιπὴν τὴν νῦν ἰταλίαν. πλὴν τῆς περὶ τὸν πάδον. ταύτης δ᾽ ἔτι καθεστώσης ἐν πολέμῳ διέβησαν εἰς σικελίαν. ἀφελόμενοι δὲ καρχηδονίων αὐτὴν ἐπανῆλθον ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν πάδον. συνεστῶτος δ᾽ ἔτι τούτου τοῦ πολέμου, παρῆν ἀννίβας εἰς τὴν ἰταλίαν. καὶ δεύτερος οὗτος πόλεμος πρὸς καρχηδονίους συνέπεσε. καὶ μετ᾽ οὐ πολὺ τρίτος, ἐν ᾧ κατεσκάφη καρχηδὼν. ἅμα δὲ τήν τε λιβύην ἔσχον ῥωμαῖοι, καὶ τῆς ἰβηρίας ὅσον ἀφείλοντο τῶν καρχηδονίων. συνενεωτέρισαν δὲ τοῖς καρχηδονίοις, οἵ θ᾽ ἕλληνες καὶ μακεδόνες,

καὶ τῆς ἀσίας, οἱ ἐντὸς ἅλιος καὶ τοῦ ταύρου. καὶ τούτοις δὲ ἦν ἅμα συμμαχοῦντα τὰ ἔθνη περὶ χερρόνησον. ὧν ἀντίοχός τε ἦν ὁ βασιλεὺς καὶ φίλιππος καὶ περσεύς, καὶ ἰλλυριοὶ δὲ, καὶ θρᾳκῶν οἱ πλησιόχωροι. τοῖς τε ἕλλησι καὶ μακεδόσιν ἀρχὰς ἔλαβον τοῦ πρὸς ῥωμαίους πολέμου. καὶ διετέλεσαν πολεμοῦντες μέχρι καταλύσεως ἁπάντων τῶν ἐντὸς ἴστρου καὶ τῶν ἐντὸς ἅλιος. τὰ δ᾽ αὐτὰ ἔπαθον, καὶ ἴβηρες καὶ κελτοὶ. καὶ ἅπαντες οἱ λοιποὶ ὅσοι ῥωμαίων ὑπακούουσι. τήν τε γὰρ ἰβηρίαν, οὐκ ἐπαύσαντο ὑπαγόμενοι τοῖς ὅπλοις, ἕως ἅπασαν κατεστρέψαντο. νομαντίνους τε ἐξελόντες, καὶ οὐριάθον. καὶ σερτώριον ὕστερον διαφθείραντες. ὕστατον δὲ καντάβρους, οὓς ὁ σεβαστὸς καῖσαρ, τὴν κελτικὴν ἅπασαν τήν τε ἐντὸς καὶ τὴν ἐκτὸς, σὺν τῇ λιγυστικῇ πρότερον μὲν κατὰ μέρος ἀεὶ προσῆγον. ὕστερον δὲ καῖσαρ ὁ θεὸς, μετὰ ταῦτα ὁ σεβαστὸς κοινῷ πολέμῳ, καὶ ἀθρόως κατεκτήσαντο. νυνὶ δὲ γερμανοῖς προσπολεμοῦσιν ἀπὸ τούτων ὁρμώμενοι τῶν τόπων, ὡς οἰκειοτάτων. καὶ τισιν ἤδη θριάμβοις κεκοσμήκασιν ἀπ᾽ αὐτῶν τὴν πατρίδα. τῆς δὲ λιβύης, ὅση μὴ καρχηδονίων βασιλεῦσιν ἐπετέτραπτο, ὑπηκόοις οὖσιν. ἀφιστάμενοι δὲ κατελύοντο. νυνὶ δ᾽ εἰς ἰούβαν περιέστηκεν ἥ τε μαυρουσία, καὶ πολλὰ μέρη τῆς ἄλλης λιβύης διὰ τὴν πρὸς ῥωμαίους εὔνοιάν τε καὶ φιλίαν. τὰ δ᾽ ὅμοια καὶ περὶ τὴν ἀσίαν συνέβη. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν ἀπὸ τῶν βασιλέων διῳκεῖτο ὑπηκόων ὄντων. ὕστερον δὲ ἐκλιπόντων ἐκείνων, καθάπερ τῶν ἀτταλικῶν βασιλέων, καὶ σύρων καὶ παφλαγόνων, καὶ καππαδόκων, καὶ αἰγυπτίων ἀφισταμένων. καὶ ἔπειτα καταλυομένων καθάπερ ἐπὶ μιθριδάτου συνέβη τοῦ εὐπάτορος, καὶ τῆς αἰγυπτίας κλεοπάτρας, ἅπαντα τὰ ἐντὸς φάσιδος, καὶ εὐφράτου, πλὴν ἀράβων τινῶν, ὑπὸ ῥωμαίοις ἐστὶ, καὶ τοῖς ὑπ᾽ ἐκείνων ἀποδειχθεῖσι δυνάσταις. ἀρμένιοι δὲ, καὶ οἱ ὑπερκείμενοι τῆς κολχίδος ἀλβανοί τε καὶ ἴβηρες, παρουσίας δέονται μόνον τῶν ἡγησομένων. καλῶς δὲ κρατοῦνται. νεωτερίζουσι δὲ διὰ τὰς τῶν ῥωμαίων ἀσχολίας. καθάπερ καὶ οἱ πέραν τοῦ ἴστρου, τὸν εὔξεινον περιοικοῦντες. πλὴν τοῦ βοσπόρου καὶ τῶν νομάδων. τὸ μὲν γὰρ ὑπήκοον. τὸ δ᾽ ἄχρηστον εἰς πᾶν τὸ ἀκοινώνητον. φυλακῆς δὲ μόνον δεόμενον. καὶ τἆλλα δὲ, τὰ πολλὰ, σκηνιτῶν καὶ νομάδων ἐστὶ, πόρρω σφόδρα ὄντων. παρθυαῖοι δὲ, ὅμοροί τε ὄντες, καὶ μέγιστον δυνάμενοι τοσοῦτον, ὅμως ἐνέδοσαν πρὸς τὴν ῥωμαίων καὶ τῶν καθ᾽ ἡμᾶς ἡγεμόνων ὑπεροχήν. ὥστ᾽ οὐ μόνον τὰ τρόπαια ἔπεμψαν εἰς ῥώμην ἃ κατὰ ῥωμαίων ἀνέστησάν ποτε, ἀλλὰ καὶ παῖδας ἐπίστευσε φραάτης τῷ σεβαστῷ καίσαρι. καὶ παίδων παῖδας, ἐξομηρευσάμενος θεραπευτικῶς τὴν φιλίαν. οἱ δὲ νῦν μετιᾶσι πολλάκις ἐνθένδε, τὸν βασιλεύσοντα. καὶ σχεδόν τι πλησίον εἰσὶ τοῦ ὑπὸ ῥωμαίοις ποιῆσαι τὴν σύμπασαν ἐξουσίαν. καὶ αὐτὴν τὴν ἰταλίαν διαστᾶσαν πολλάκις ἀφ᾽ οὗ γε ὑπὸ ῥωμαίοις ἐστί. καὶ αὐτὴν τὴν ῥώμην, ἥ τε τῆς πολιτείας ἀρετὴ καὶ τῶν ἡγεμόνων ἐκώλυσεν ἐπὶ πλέον προελθεῖν πλημμελείας καὶ διαφθορᾶς. χαλεπὸν δὲ ἄλλως οἰκεῖν τὴν τηλικαύτην ἡγεμονίαν, ἢ ἑνὶ ἐπιτρέψαντας ὡς πατρί. οὐδέποτε γοῦν εὐπορῆσαι τοσαύτης εἰρήνης, καὶ ἀφθονίας ἀγαθῶν ὑπῆρξε ῥωμαίοις, καὶ τοῖς συμμάχοις αὐτῶν, ὅσην καῖσαρ τε ὁ σεβαστὸς παρέσχεν. ἀφ᾽ οὗ παρέλαβε τὴν ἐξουσίαν αὐτοτελῆ. καὶ νῦν ὁ διαδεξάμενος υἱὸς ἐκεῖνον, παρέχει τιβέριος κανόνα τῆς διοικήσεως, καὶ τῶν προσταγμάτων ποιούμενος ἐκεῖνον. καὶ αὐτὸν οἱ παῖδες αὐτοῦ. γερμανικός τε καὶ δροῦσος, ὑπουργοῦντες τῷ πατρί.

Τῷ ἑβδόμῳ λέγει τῆς εὐρώπης τὰ λειπόμενα μέρη. ἔστι δὲ τὰ πρὸς τὴν ἕω πέραν τοῦ ῥήνου μέχρι τοῦ ταναΐδος, καὶ τοῦ στόματος τῆς μαιώτιδος λίμνης, καὶ ὅσα μεταξὺ τοῦ ἀδρίου, καὶ τῶν ἀριστερῶν τῆς ποντικῆς θαλάσσης μερῶν, ἀπολαμβάνει πρὸς νότον, μέχρι τῆς ἑλλάδος, καὶ τῆς προποντίδος ὁ ἴστρος. ἐν οἷς καὶ μακεδονία πᾶσα.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩ͂Ν ΒΙΒΛΙΟΝ ἙΒΔΟΜΟΝ.

Εἰρημένοι δ' ἡμῖν περὶ τῆς ἰβηρίας τῶν κελτικῶν ἐθνῶν, καὶ τῶν ἰταλικῶν, σὺν ταῖς πλησίον νήσοις, ἑξῆς ἂν εἴη λέγειν τὰ λειπόμενα τῆς εὐρώπης μέρη, διελοῦσι τὸν ἐνδεχόμενον τρόπον. λείπεται δὲ τὰ πρὸς ἕω μὲν τὰ πέραν τοῦ ῥήνου μέχρι τοῦ ταναΐδος, καὶ τοῦ στόματος τῆς μαιώτιδος λίμνης, καὶ ὅσα μεταξὺ τοῦ ἀδρίου, καὶ τῶν ἀριστερῶν τῆς ποντικῆς θαλάττης μερῶν ἀπολαμβάνει πρὸς νότον, μέχρι τῆς ἑλλάδος καὶ τῆς προποντίδος ὁ ἴστρος διαιρεῖ γὰρ οὗτος ἅπασαν ὡς ἔγγιστα δίχα τὴν λεχθεῖσαν γῆν, μέγιστος τῶν κατὰ τὴν εὐρώπην ποταμῶν, ῥέων πρὸς νότον κατ' ἀρχάς. εἶτ' ἐπιστρέφων εὐθὺς ἀπὸ τῆς δύσεως ἐπὶ τὴν ἀνατολὴν καὶ τὸν πόντον. ἄρχεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν γερμανικῶν ἄκρων τῶν ἑσπερίων. πλησίον δὲ καὶ τοῦ μυχοῦ τοῦ ἀδριατικοῦ, διέχων αὐτοῦ περὶ χιλίους σταδίους. τελευτᾷ δ' εἰς τὸν πόντον, οὐ πολὺ ἄπωθεν τοῦ τύρα, καὶ τῶν τοῦ βορυσθένους ἐκβολῶν, ἐκκλίνων πως πρὸς ἄρκτους. προσάρκτια μὲν οὖν ἐστι τῷ ἴστρῳ τὰ πέραν τοῦ ῥήνου, καὶ τῆς κελτικῆς. ταῦτα δ' ἐστὶ τά τε γαλατικὰ ἔθνη, καὶ τὰ γερμανικὰ μέχρι βασταρνῶν, καὶ τυρεγετῶν, καὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ βορυσθένους. καὶ ὅσα μεταξὺ τούτου, καὶ ταναΐδος, καὶ τοῦ στόματος τῆς μαιώτιδος. εἴς τε τὴν μεσόγαιαν ἀνατείνει μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ, καὶ τῇ ποντικῇ κλύζεται θαλάττῃ. μεσημβρινὰ δὲ τά τε ἰλλυρικά, καὶ τὰ θρᾴκια, καὶ ὅσα τούτοις ἀναμέμικται τῶν κελτικῶν ἢ τινῶν ἄλλων μέχρι τῆς ἑλλάδος. λέγωμεν δὲ πρῶτον, περὶ τῶν ἐκτὸς τοῦ ἴστρου. πολὺ γὰρ ἁπλούστερα τῶν ἐπὶ θάτερα μερῶν ἐστιν. εὐθὺς τοίνυν τὰ πέραν τοῦ ῥήνου μετὰ τοὺς κελτοὺς πρὸς τὴν ἕω κεκλιμένα γερμανοὶ νέμονται. μικρὸν ἐξαλλάττοντες τοῦ κελτικοῦ φύλου. τῷ τε πλεονασμῷ τῆς ἀγριότητος καὶ τοῦ μεγέθους, καὶ τῆς ξανθότητος. τἆλλα δὲ παραπλήσιοι καὶ μορφαῖς καὶ ἤθεσι, καὶ βίοις ὄντες οἵους εἰρήκαμεν τοὺς κελτούς. διὸ δικαίως μοι δοκοῦσι ῥωμαῖοι τοῦτο αὐτοῖς θέσθαι τοὔνομα. ὡς ἂν γνησίους γαλάτας φράζειν βουλόμενοι. γνήσιοι γὰρ οἱ γερμανοὶ κατὰ τὴν ῥωμαίων διάλεκτον. ἔστι δὲ τὰ μὲν πρῶτα μέρη τῆς χώρας ταύτης τὰ πρὸς τῷ ῥήνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τῆς πηγῆς ἀρξαμένης. σχεδὸν δέ τι καὶ τοῦτ' ἐστὶ τὸ ἑσπέριον τῆς χώρας πλάτος, ἡ ποταμία πᾶσα, ταύτης δὲ τὰ μὲν, εἰς τὴν κελτικὴν μετήγαγον ῥωμαῖοι. τὰ δ' ἔφθη μεταναστάντα εἰς τὴν ἐν βάθει χώραν καθάπερ μάρσοι. λοιποὶ δ' εἰσὶν ὀλίγοι καὶ τῶν σουγάμβρων μέρος. μετὰ δὲ τοὺς παραποταμίους, τἆλλά ἐστιν ἔθνη τὰ μεταξὺ τοῦ ῥήνου καὶ τοῦ ἄλβιος ποταμοῦ, ὃς παράλληλός πως ἐκείνῳ ῥεῖ πρὸς τὸν ὠκεανόν. οὐκ ἐλάττω χώραν διεξιὼν ἤπερ ἐκεῖνος. εἰσὶ δὲ μεταξὺ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ πλωτοί. ὧν ἐν τῷ ἀμασίᾳ δρούσος βρουκτέρους κατεναυμάχησε. ῥέοντες ὡσαύτως ἀπὸ νότου πρὸς βορρᾶν. καὶ τὸν ὠκεανόν. ἐξῆρται γὰρ ἡ χώρα πρὸς νότον. καὶ συνεχῆ ταῖς ἄλπεσι ποιεῖ ῥάχιν τινά, πρὸς ἕω τεταμένην. ὡς ἂν μέρος οὖσα τῶν ἄλπεων. καὶ δὴ καὶ ἀπεφήναντό τινες οὕτως διά τε τὴν λεχθεῖσαν θέσιν, καὶ διὰ τὸ τὴν αὐτὴν ὕλην ἐκφέρειν. οὐ μὴν ἐπὶ τοσοῦτόν γε ὕψος ἀνίσχει τὰ ταύτης μέρη. ἐν ταύτῃ δ' ἐστὶ καὶ ὁ ἑρκύνιος δρυμός, καὶ τὰ τῶν σοηβῶν ἔθνη, τὰ μὲν οἰκοῦντα ἐντὸς τοῦ δρυμοῦ καθάπερ τὰ τῶν κολδούλων. ἐν οἷς ἐστι καὶ τὸ Βουίασμον, τὸ τοῦ μαροβόδου βασίλειον. εἰς ὃν ἐκεῖνος τόπον, ἄλλους τε μετανέστησε πλείους, καὶ δὴ καὶ τοὺς ὁμοεθνεῖς ἑαυτῷ μαρκομμάνους. ἐπέστη γὰρ τοῖς πράγμασιν οὗτος ἐξ ἰδιώτου, μετὰ τὴν ἐκ ῥώμης ἐπάνοδον. νέος γὰρ ἦν ἐνθάδε καὶ εὐεργετεῖτο ὑπὸ τοῦ σεβαστοῦ. ἐπανελθὼν δὲ ἐδυνάστευσε καὶ κατεκτήσατο, πρὸς οἷς εἶπον. λουΐους τε μέγα ἔθνος. καὶ ζούμους. καὶ βούτωνας καὶ μουγίλω-

νας καὶ σιβινούς. καὶ τῶν σουήβων αὐτῶν μέγα ἔθνος σόμηνωνας. πλὴν τά γε τῶν σουήβων ὡς ἔφην
ἔθνη, τὰ μὲν, ἐντὸς ᾤκει. τὰ δ᾽ ἐκτὸς τοῦ δρυμοῦ, ὅμορα τοῖς γέταις. μέγιστον μὲν τὸ τῶν σουήβων ἔ-
θνος. διήκει γὰρ ἀπὸ τοῦ ῥήνου μέχρι τοῦ ἄλβιος. μέρος δέ τι αὐτῶν, καὶ πέραν τοῦ ἄλβιος νέμεται,
καθάπερ ἑρμόνδοροι καὶ λαγκόσαργοι. νῦν δὲ, καὶ τελέως εἰς τὴν περαίαν οὗτοί γε ἐκπεπτώκασι φεύ-
γοντες. κοινὸν δ᾽ ἐστὶν ἅπασι τοῖς ταύτῃ, τὸ περὶ τὰς μεταναστάσεις εὐμαρὲς, διὰ τὴν λιτότητα τοῦ
βίου, καὶ διὰ τὸ μὴ γεωργεῖν μηδὲ θησαυρίζειν. ἀλλ᾽ ἐν καλυβίοις οἰκεῖν, ἐφήμερον ἔχουσι παρα-
σκευήν. τροφὴ δ᾽ ἀπὸ τῶν θρεμμάτων ἡ πλείστη, καθάπερ τοῖς νομάσιν. ὥστ᾽ ἐκείνους μιμούμενοι, τὰ οἰ-
κεῖα ταῖς ἁρμαμάξαις ἐπάραντες, ὅποι ἂν δόξῃ τρέπονται μετὰ τῶν βοσκημάτων. ἄλλα δ᾽ ἐνδεέστε-
ρα ἐστὶν ἔθνη γερμανικά. χηροῦσκοί τε καὶ χάττοι καὶ γαμαβριούνιοι. καὶ χαττουάριοι. πρὸς δὲ τῷ ὠκε-
ανῷ σούγαμβροί τε καὶ χαῦβοι, καὶ βούκτεροι, καὶ κίμβροι. καῦκοί τε καὶ καοῦλκοι, καὶ καμψιανοί. καὶ
ἄλλοι πλείους. ἐνταῦθα δὲ τῷ ἀμασίᾳ φέρονται. βισουργίσαι, καὶ λουπίας ποταμός. διέχων
ῥήνου, περὶ ἑξακοσίους σταδίους. ῥέων διὰ βουκτέρων τῶν ἐλαττόνων. ἔστι δὲ, καὶ σάλας ποταμός. οὗ μετα-
ξὺ, καὶ τοῦ ῥήνου πολεμῶν, καὶ κατορθῶν δροῦσος ἐτελεύτησεν ὁ γερμανικός. ἐχειρώσατο δ᾽ οὐ
μόνον τῶν ἐθνῶν τὰ πλεῖστα ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ παράπλῳ νήσους. ὧν ἐστι καὶ ἡ βυρχανὶς ἣν ἐκ
πολιορκίας εἷλε. γνώριμα δὲ ταῦτα κατέστη τὰ ἔθνη, πολεμοῦντα πρὸς ῥωμαίους. εἶτ᾽ ἐνδιδόντα
καὶ πάλιν ἀφιστάμενα. ἢ καὶ καταλιπόντα τὰς κατοικίας. κἂν πλείω δὲ γνώριμα ὑπῆρξεν εἰ
ἐπέτρεπε τοῖς στρατηγοῖς ὁ σεβαστὸς διαβαίνειν τὸν ἄλβιν, μετιοῦσι τοὺς ἐκεῖσε ἐπανισταμένους. νυνὶ
δ᾽ εὐπορώτερον ὑπέλαβε στρατηγεῖν τὸν ἐν χερσὶ πόλεμον, εἰ τῶν ἔξω τοῦ ἄλβιος καθ᾽ ἡσυχίαν ὄντων
ἀπέχοιτο. καὶ μὴ παροξύνοιτο πρὸς τὴν κοινωνίαν τῆς ἔχθρας. ἤρξαντο δὲ τοῦ πολέμου σούγαμβροι
πλησίον οἰκοῦντες τοῦ ῥήνου. μέλωνα ἔχοντες ἡγεμόνα. κἀκεῖθεν ἤδη διεῖχον ἄλλοτ᾽ ἄλλοι. δυνα-
στεύοντες καὶ καταλυόμενοι. πάλιν δ᾽ ἀφιστάμενοι. προδιδόντες, καὶ τὰ ὅμηρα καὶ τὰς πίστεις. πρὸς οὓς
ἡ μὲν ἀπιστία, μέγα ὄφελος. οἱ δὲ πιστευθέντες, τὰ μέγιστα κατέβλαψαν καθάπερ οἱ χηροῦσκοι, καὶ οἱ
τούτων ὑπήκοοι. παρ᾽ οἷς τὰ τρία τάγματα ῥωμαίων μετὰ τοῦ στρατηγοῦ οὐάρου κουιντιλλίου πα-
ρασπονδηθέντα, ἀπώλετο ἐν ἐνέδραις. ἔτισαν δὲ δίκας ἅπαντες. καὶ παρέσχον τῷ νεωτέρῳ γερ-
μανικῷ λαμπρότατον θρίαμβον. ἐν ᾧ ἐθριαμβεύθη τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν σώματα καὶ γυναι-
κῶν, σεγιμοῦντός τε καὶ σεγέστου υἱὸς, χηρούσκων ἡγεμών. καὶ ἀδελφὴ αὐτοῦ. γυνὴ δ᾽ ἀρμενίου
τοῦ πολεμαρχήσαντος ἐν τοῖς χηρούσκοις ἐν τῇ πρὸς οὔαρον κουιντίλλιον παρασπονδήσει. καὶ νῦν
ἔτι συνέχοντος τὸν πόλεμον ὄνομα, θουσνέλδα. καὶ υἱὸς τριετὴς θουμελικός. ἔτι δὲ σεσίθακος αἰ-
γιμήρου υἱὸς τῶν χηρούσκων ἡγεμόνος. καὶ γυνὴ τούτου ῥαμὶς, οὐκρομύρου θυγάτηρ. ἡγεμόνος βατ-
τῶν, καὶ δευδέριξ βαιτόριγος τοῦ μέλωνος ἀδελφοῦ, υἱὸς σούγαμβρος. αἰγέστης δὲ ὁ πενθερὸς τοῦ ἀρ-
μενίου καὶ ἐξ ἀρχῆς διέστη πρὸς τὴν γνώμην αὐτοῦ. καὶ λαβὼν καιρὸν ηὐτομόλησε. καὶ τῷ θριάμ-
βῳ παρῆν, τῶν φιλτάτων ἐν τιμῇ ἀγόμενος. ἐπόμπευσε δὲ, καὶ λίβυς τῶν χάττων ἱερεὺς, καὶ ἄλλα
δὲ σώματα ἐπομπεύθη ἐκ τῶν πεπορθημένων ἐθνῶν. καθείλκων καὶ ἀμψανῶν. βουκτέρων. νουσίπων
χηρούσκων. χάττων. χαττουαρίων. λανδῶν. τουβαττίων. διέχει δὲ τοῦ ἄλβιος ὁ ῥῆνος περὶ τρισχιλίους
σταδίους, εἴ τις εὐθυπορούσας ἔχει τὰς ὁδούς. νυνὶ δὲ διὰ σκολιᾶς καὶ ἑλώδους καὶ δρυμῶν, κυκλο-
πορεῖν ἀνάγκη. ὁ δ᾽ ἑρκύνιος δρυμὸς πυκνότερός τε ἐστὶ, καὶ μεγαλόδενδρος ἐν χωρίοις ἐρυμνοῖς, κύκλον
περιλαμβάνων μέγαν. ἐν μέσῳ δὲ ἵδρυται χώρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυναμένη, περὶ ἧς εἰρήκαμεν. ἔστι δὲ, πλησίον
αὐτοῦ ἥτε τοῦ ἴστρου πηγή. καὶ ἡ τοῦ ῥήνου. καὶ ἡ μεταξὺ ἀμφοῖν λίμνη, καὶ τὰ ἕλη τὰ ἐκ τοῦ ῥήνου διαχεόμενα ἔστι
δ᾽ ἡ λίμνη, τὴν μὲν περίμετρον σταδίων πλειόνων ἢ τ. δίαρμα δ᾽ ἐγγὺς σ. ἔχει δὲ, καὶ νῆσον ἣ ἐχρήσατο ὁρμητη-
ρίῳ, τιβέριος ναυμαχῶν πρὸς ἰουνδολικούς, νοτιωτέρα δ᾽ ἐστὶ τῶν τοῦ ἴστρου πηγῶν καὶ αὕτη καὶ ὁ ἑρκύνιος
δρυμός. ὥστ᾽ ἀνάγκη τὸν ἐκ τῆς κελτικῆς εἰς τὸν ἑρκύνιον δρυμὸν ἰόντα, πρῶτον μὲν διαπεράσαι
τὴν λίμνην. ἔπειτα τὸν ἴστρον. εἶτ᾽ ἤδη δι᾽ εὐπετεστέρων χωρίων, ἐνταῦθα τὸν δρυμὸν τὰς προβάσεις ποιεῖ-
σθαι δι᾽ ὀροπεδίων. ἡμερήσιον δ᾽ ἀπὸ τῆς λίμνης προελθὼν ὁδὸν τιβέριος, εἶδε τὰς τοῦ ἴστρου πη-
γάς. προσάπτονται δὲ τῆς λίμνης ἐπ᾽ ὀλίγον μὲν οἱ ῥαιτοί. τὸ δὲ πλέον ἐλουήττιοι, καὶ οὐινδουλι-
κοί. καὶ ἡ βοΐων ἐρημία. μέχρι παννονίων, πάντες. τὸ πλέον δ᾽ ἐλουήττιοι καὶ οὐινδολικοὶ οἰκοῦ-
σιν ὀροπέδια. ῥαιτοὶ δὲ, καὶ νωρικοὶ μέχρι τῶν ἀλπείων ὑπερβολῶν ἀνίσχουσι, καὶ πρὸς τὴν ἰτα-
λίαν περινεύουσι. οἱ μὲν, ἰνσούβροις συνάπτοντες. οἱ δὲ, καρνοῖς καὶ τοῖς περὶ τὴν ἀκυληΐαν χωρίοις
ἔστι δὲ καὶ ἄλλη ὕλη γαύβρητα μεγάλη ἔπειτα δὲ τῶν σουήβων. ἔπειτα δ᾽ ὁ ἑρκύνιος δρυμός. ἔχε-
ται δὲ κἀκεῖνος ὑπ᾽ αὐτῶν. περὶ δὲ κίμβρων τὰ μὲν, οὐκ εὖ λέγεται. τὰ δ᾽ ἔχει πιθανότητας οὐ με-
τρίας. οὔτε γὰρ τὴν τοιαύτην αἰτίαν τοῦ πλάνητας γενέσθαι καὶ λῃστρικοὺς ἀποδέξαιτ᾽ ἄν τις, ὅ-
τι χερρόνησον οἰκοῦντες μεγάλῃ πλημμυρίδι ἐξελαθεῖεν ἐκ τῶν τόπων, καὶ γὰρ νῦν ἔχουσι τὴν χώ-
ραν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ ἔπεμψαν τῷ σεβαστῷ δῶρον τὸν ἱερώτατον παρ᾽ αὐτοῖς λέβητα. αἰτού-
μενοι φιλίαν, καὶ ἀμνηστίαν τῶν ὑπηργμένων. τυχόντες δὲ, ὧν ἠξίουν ἀπῇραν. γελοῖον δὲ τῷ φυσι-
κῷ, καὶ

κῷ, καὶ αἰωνίῳ πάθει, δὶς ἑκάστης ἡμέρας συμβαίνοντι, πρὸς ὀργισθέντας ἀπελθεῖν ἐκ τοῦ τόπου. ἔοικε
δὲ πλάσματι, τὸ συμβῆναί ποτε πλημμυρίδα ὑπερβάλλουσαν. ἐπιτάσεις μὲν γὰρ καὶ ἀνέσεις δέ-
χεται, τεταγμένας δὲ καὶ περιοδιζούσας ὁ ὠκεανὸς ἐν τοῖς τοιούτοις πάθεσιν. οὐκ εὖ δ' οὐδ' ὁ φή-
σας ὅπλα αἱρεῖσθαι πρὸς τὰς πλημμυρίδας τοὺς κίμβρους. οὐδ' ὅτι ἀφοβίαν οἱ κελτοὶ ἀσκοῦντες,
κατακλύζεσθαι τὰς οἰκίας ὑπομένουσιν, εἶτ' ἀνοικοδομοῦσι. καὶ ὅτι πλείων αὐτοῖς συμβαίνει φθό-
ρος ἐξ ὕδατος, ἢ πολέμου. ὅπερ ἔφορός φησιν. ἡ γὰρ τάξις ἡ τῶν πλημμυρίδων, καὶ τὸ τὴν ἐπικλυ-
ζομένην χώραν, εἶναι γνώριμον, οὐκ ἔμελλε ταύτας τὰς ἀτοπίας παρέξειν. δὶς γὰρ ἑκάστης ἡμέρας
τούτου συμβαίνοντος, τὸ μὴ δ' ἅπαξ αἰσθάνεσθαι φυσικὴν οὖσαν τὴν παλίρροιαν καὶ ἀβλαβῆ, καὶ οὐ
μόνοις τούτοις συμβαίνουσαν ἀλλὰ τοῖς παρωκεανίταις πᾶσι, πῶς οὐκ ἀπίθανον. οὐδὲ κλείταρχος εὖ
φησὶ γὰρ τοὺς ἱππέας ἰδόντας τὴν ἔφοδον τοῦ πελάγους ἀφιππάσασθαι. καὶ φεύγοντας ἐγγὺς γενέσθαι τοῦ περικατα-
ληφθῆναι. οὔτε δὲ τοσούτῳ τάχει τὴν ἐπίβασιν ὁρωμένην ἱστοροῦμεν. ἀλλὰ λεληθότως προσιοῦσαν τὴν θά-
λατταν, οὔτε τὸ καθ' ἡμέραν γιγνόμενον καὶ πᾶσιν ἔναυλον ἤδη ὂν τοῖς πλησιάζειν μέλλουσι, πρὶν ἢ θεά-
σασθαι, τοσοῦτον ἔμελλε παρέξεσθαι φόβον ὥστε φεύγειν. ὡς ἂν εἰ ἐξ ἀδοκήτου συνέβαινε. ταῦτα δὲ δικαί-
ως ἐπιτιμᾷ τοῖς συγγραφεῦσι ποσειδώνιος. καὶ οὐ κακῶς εἰκάζει, ὅτι λῃστρικοὶ ὄντες καὶ πλάνητες οἱ κίμβροι,
καὶ μέχρι τῶν περὶ τὴν μαιῶτιν ποιήσαιντο στρατείαν. ἀπ' ἐκείνων δὲ καὶ ὁ κιμμέριος κληθεὶς βόσπορος, οἷον κιμ-
βρικός, κιμμερίους τοὺς κίμβρους ὀνομασάντων τῶν ἑλλήνων. φησὶ δὲ καὶ βοΐους τὸν ἑρκύνιον δρυμὸν
οἰκεῖν πρότερον. τοὺς δὲ κίμβρους ὁρμήσαντας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ἀποκρουσθέντας ὑπὸ τῶν βοΐων
ἐπὶ τὸν ἴστρον, καὶ τοὺς σκορδίσκους γαλάτας καταβῆναι. εἶτ' ἐπὶ τευρίστας καὶ ταυρίσκους, καὶ τού-
τους γαλάτας. εἶτ' ἐπὶ λουηττίους. πολυχρύσους μὲν ἄνδρας εἰρηναίους δέ. ὁρῶντας δὲ τὸν ἐκ τῶν
λῃστηρίων πλοῦτον, ὑπερβάλλοντα τοῦ παρ' ἑαυτοῖς, τοὺς ἑλουηττίους ἐπαρθῆναι. μάλιστα δ' αὐτῶν
τιγυρηνούς τε, καὶ τωυγενούς. ὥστε καὶ συνεξορμῆσαι. πάντες μέντοι κατελύθησαν ὑπὸ τῶν
ῥωμαίων. αὐτοί τε οἱ κίμβροι, καὶ οἱ συναράμενοι τούτοις. οἱ μὲν ὑπερβάλλοντες τὰς ἄλπεις
εἰς τὴν ἰταλίαν. οἱ δ' ἔξω τῶν ἄλπεων. ἔθος δέ τι τῶν κίμβρων διηγοῦνται τοιοῦτον, ὅτι ταῖς γυναιξὶν
αὐτῶν συστρατευούσαις, παρηκολούθουν προμάντεις ἱέρειαι πολιότριχες λευχείμονες. καρπασί-
νας ἐφαπτίδας ἐπιπεπορπημέναι. ζῶσμα χαλκοῦν ἔχουσαι. γυμνόποδες. τοῖς οὖν αἰχμα-
λώτοις διὰ τοῦ στρατοπέδου συνήντων ξιφήρεις, καταστέψασαι δ' αὐτούς, ἦγον ἐπὶ κρατῆρα χαλ-
κοῦν ὅσον ἀμφορέων εἴκοσι. εἶχον δὲ ἀναβάθραν. ἣν ἀναβᾶσα ὑπερπετὴς τοῦ λέβητος ἐλαιμοτόμει ἕκα-
στον μετεωρισθέντα. ἐκ δὲ τοῦ προχεομένου αἵματος εἰς τὸν κρατῆρα, μαντείαν τινὰ ἐποιοῦντο. ἄλ-
λαι δὲ διασχίσασαι, ἐσπλάγχνευον ἀναφθεγγόμεναι νίκην τοῖς οἰκείοις. ἐν δὲ, τοῖς ἀγῶσιν ἔτυπτον
τὰς βύρσας τὰς περιτεταμένας τοῖς γέρροις τῶν ἁρμαμαξῶν. ὥστ' ἀποτελεῖσθαι ψόφον ἐξαίσιον.
τῶν δὲ γερμανῶν ὡς εἶπον οἱ μὲν προσάρκτιοι παρήκουσι τῷ ὠκεανῷ. γνωρίζονται δ' ἀπὸ τῶν
ἐκβολῶν τοῦ ῥήνου λαβόντες τὴν ἀρχήν. μέχρι τοῦ ἄλβιος. τούτων δ' εἰσὶ γνωριμώτατοι, σύγαμ-
βροί τε καὶ κίμβροι, τὰ δὲ πέραν τοῦ ἄλβιος τὰ πρὸς τῷ ὠκεανῷ, παντάπασιν ἄγνωστα ἡμῖν ἐστιν.
οὔτε γὰρ τῶν προτέρων οὐδένας ἴσμεν τὸν παράπλουν τοῦτον πεποιημένους πρὸς τὰ ἑωθινὰ
μέρη, τὰ μέχρι τοῦ στόματος τῆς κασπίας θαλάττης, οὔθ' οἱ ῥωμαῖοι προῆλθόν πω εἰς τὰ περαιτέ-
ρω τοῦ ἄλβιος. ὡς δ' αὔτως οὐδὲ πεζοὶ παρωδεύκασιν οὐδένες. ἀλλ' ὅτι μὲν κατὰ μῆκος ἰοῦσιν
ἐπὶ τὴν ἕω, τὰ κατὰ τὸν βορυσθένην καὶ τὰ περὶ βορρᾶν μέρη τοῦ πόντου χωρία ἅπαντα, δῆλον
ἐκ τῶν κλιμάτων καὶ τῶν παραλλήλων διαστημάτων. τί δ' ἔστι πέραν τῆς γερμανίας καὶ τί τῶν
ἄλλων τῶν ἑξῆς. εἴτε βαστάρνας χρὴ λέγειν ὡς οἱ πλείους ὑπονοοῦσιν. εἴτ' ἄλλους μεταξύ, ἢ ἰα-
ζύγας ἢ ῥωξυλάνους ἢ τινὰς ἄλλους τῶν ἁμαξοίκων, οὐ ῥᾴδιον εἰπεῖν. οὐδ' εἰ μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ πα-
ρήκουσι παράπαν τὸ μῆκος, ἔστι τι ἀοίκητον ὑπὸ ψύχους, ἢ ἄλλης αἰτίας. ἢ, καὶ γένος ἀνθρώπων
ἄλλο διαδέχεται μεταξὺ τῆς θαλάττης καὶ τῶν ἑώων γερμανῶν ἱδρυμένον. τοῦτο δὲ τὸ αὐτὸ ἀ-
γνόημα καὶ περὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐφεξῆς προσαρκτίων ἔλεγχε. οὔτε γὰρ τοὺς βαστάρνας οὔτε τοὺς
σαυρομάτας, καὶ ἁπλῶς τοὺς ὑπὲρ τοῦ πόντου οἰκοῦντας ἴσμεν. οὔθ' ὁπόσον ἀπέχουσι τῆς ἀ-
τλαντικῆς θαλάττης, οὔτ' εἰ συνάπτουσιν αὐτῇ. τὸ δὲ νότιον μέρος τῆς γερμανίας, τὸ πέραν τοῦ
ἄλβιος, τὸ μὲν συνεχὲς ἀκμὴν ὑπὸ τῶν σουήβων κατέχεται. εἶτ' εὐθὺς ἡ τῶν γετῶν συνάπτει γῆ.
κατ' ἀρχὰς μὲν στενή. παρατεταμένη τῷ ἴστρῳ κατὰ τὸ νότιον μέρος, κατὰ δὲ τοὐναντίον, τῇ παρω-
ρείᾳ τοῦ ἑρκυνίου δρυμοῦ, μέρος τι καὶ αὐτὴ τῶν ὀρῶν κατέχουσα. εἶτα πλατύνεται πρὸς τὰς
ἄρκτους μέχρι τυρεγετῶν. τοὺς δ' ἀκριβεῖς ὅρους οὐκ ἔχομεν φράζειν. διὰ δὲ, τὴν ἄγνοιαν τῶν
τόπων τούτων, οἱ τὰ ῥιπαῖα ὄρη, καὶ τοὺς ὑπερβορέους μυθοποιοῦντες, λόγου ἠξίωνται. καὶ πυ-
θέας ὁ μασσαλιώτης κατεψεύσατο, τοιαῦτα τῆς παρωκεανίτιδος. προσχήματι χρώμενος τῇ περὶ
τὰ οὐράνια καὶ μαθηματικὰ ἱστορίᾳ. ἐκεῖνοι μὲν οὖν ἐάσθωσαν. οὐδὲ γὰρ εἴ τινα σοφοκλῆς τρα-
γῳδεῖ περὶ τῆς ὠρειθυίας λέγων, ὡς ἀναρπαγεῖσα ὑπὸ βορέου κομισθείη

ὑπέρ τε πόντον πάντα ἐπ' ἔσχατα χθονὸς,

» Νυκτός τε πηγὰς οὐρανοῦ τε ἀνὰ πτύχας, Φοίβου τε παλαιὸν κῆπον,—

Οὐδὲν ἂν εἴη πρὸς τὰ νῦν. ἀλλ᾽ ἐατέον ὥσπερ καὶ ἐν τῷ Φαίδρῳ, ὁ σωκράτης. ἃ δὲ ἐκ τῆς παλαιᾶς ἱστορίας καὶ τῆς νῦν παρειλήφαμεν, ταῦτα λέγωμεν. οἱ τοίνυν ἕλληνες, τοὺς γέτας, θρᾷκας ὑπελάμβανον. ᾤκουν δ᾽ ἐφ᾽ ἑκάτερα τοῦ ἴστρου καὶ οὗτοι, καὶ οἱ μυσοί. θρᾷκες ὄντες καὶ αὐτοὶ καὶ οὓς νῦν μυσοὺς καλοῦσιν. ἀφ᾽ ὧν ὡρμήθησαν, καὶ οἱ νῦν μεταξὺ λυδῶν, καὶ φρυγῶν καὶ τρώων οἰκοῦντες μυσοί. καὶ αὐτοὶ δ᾽ οἱ φρύγες βρύγες εἰσὶ, θρᾴκιόν τι ἔθνος, καθάπερ καὶ οἱ μυγδόνες, καὶ βέβρυκες καὶ μεδοβιθυνοί. καὶ βιθυνοὶ καὶ θυνοί. δοκῶ δὲ, καὶ τοὺς μαριανδυνούς. οὗτοι μὲν, οὖν τελέως ἐκλελοίπασι πάντες τὴν εὐρώπην. οἱ δὲ μυσοὶ συνέμειναν. καὶ ὅμηρον ὀρθῶς εἰκάζειν μοι δοκῶ. ποσειδώνιος δὲ τοὺς ἐν τῇ εὐρώπῃ μυσοὺς κατονομάζειν. λέγω δὲ, τοὺς ἐν τῇ θρακίᾳ. ὅταν φῇ.

» Αὐτὸς δὲ πάλιν τρέπεν ὄσσε φαεινώ.
» Ὅσφιν ἐφ᾽ ἱπποπόλων θρηκῶν καθορώμενος αἶαν
» Μυσῶν τ᾽ ἀγχεμάχων, ἐπεὶ εἴγε τοὺς κατὰ τὴν ἀσίαν μυσοὺς δέχοιτό τις, ἀπηρτημένος ἂν εἴη ὁ λόγος. τὸ γὰρ ἀπὸ τῶν τρώων, τρέψαντα τὴν ὅρασιν ἐπὶ τὴν θρᾳκῶν γῆν, συγκαταλέγειν ταύτῃ τὴν τῶν μυσῶν, τῶν οὐ νόσφιν ἐόντων. ἀλλ᾽ ὁμόρων τῇ τρῳάδι. καὶ ὄπισθεν αὐτῆς ἱδρυμένων, καὶ ἑκατέρωθεν, διειργομένων δ᾽ ἀπὸ τῆς θρᾴκης πλατεῖ ἑλλησπόντῳ, συγχέοντος ἂν εἴη τὰς ἠπείρους, καὶ ἅμα τῆς φράσεως οὐκ ἀκούοντος. τὸ γὰρ πάλιν τρέπεν μάλιστα μέν ἐστιν εἰς τοὐπίσω. ὁ δ᾽ ἀπὸ τῶν τρώων μεταφέρων τὴν ὄψιν, ἐπὶ τοὺς μὴ ὄπισθεν αὐτῶν ἐκ πλαγίων ὄντας, προσωτέρω μὲν μεταφέρει. εἰς τοὐπίσω δ᾽ οὐ πάνυ. καὶ τὸ ἐπιφερόμενον δ᾽ αὐτοῦ τὸ μαρτύριον. ὅτι τοὺς ἱππημολγοὺς, καὶ γαλακτοφάγους καὶ ἀβίους, συνῆψεν αὐτοῖς. οἵπερ εἰσὶν οἱ ἁμαξοικοὶ σκύθαι, καὶ σαρμάται. καὶ γὰρ νῦν ἀναμέμικται ταῦτα τὰ ἔθνη τοῖς θραξί. καὶ τὰ βασταρνικὰ, μᾶλλον μὲν τοῖς ἐκτὸς ἴστρου, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐντὸς, τούτοις δὲ, καὶ τὰ κελτικὰ, οἵ τε βόιοι καὶ σκορδίσκοι, καὶ ταυρίσκοι. τοὺς δὲ σκορδίσκους ἔνιοι σκορδίσκας καλοῦσι, καὶ τοὺς ταυρίσκους δὲ λιγυρίσκους καὶ ταυρίσκας φασί. λέγει δὲ τοὺς μυσοὺς ὁ ποσειδώνιος, καὶ ἐμψύχων ἀπέχεσθαι κατ᾽ εὐσέβειαν, καὶ διὰ τοῦτο καὶ θρεμμάτων. μέλιτι δὲ χρῆσθαι, καὶ γάλακτι, καὶ τυρῷ ζῶντας καθ᾽ ἡσυχίαν, διὰ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι θεοσεβεῖς τε, καὶ καπνοβάτας. εἶναι δέ τινας τῶν θρᾳκῶν, οἳ χωρὶς γυναικὸς ζῶσιν. οὓς κτίστας καλεῖσθαι. ἀνιερῶσθαί τε διὰ τιμὴν, καὶ μετὰ ἀδείας ζῆν. τούτους δὴ συλλήβδην ἅπαντας τὸν ποιητὴν εἰπεῖν ἀγαυοὺς ἱππημολγοὺς γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώπους. ἀβίους δὲ, προσαγορεύει μάλιστα, ὅτι χωρὶς γυναικῶν. ἡγούμενος ἡμιτελῆ τινα βίον τὸν χῆρον, καθάπερ καὶ τὸν οἶκον ἡμιτελῆ τὸν πρωτεσιλάου διότι χῆρος. ἀγχεμάχους δὲ τοὺς μυσοὺς ὅτι ἀπόρθητοι, καθὰ καὶ οἱ ἀγαθοὶ πολεμισταί. δεῖν δὲ ἐν τῷ δεκάτῳ ἐγγράφειν ἀντὶ τοῦ μυσῶν τ᾽ ἀγχεμάχων. τὸ μὲν οὖν τὴν γραφὴν κινεῖν ἐκ τοσούτων ἐτῶν εὐδοκιμήσασαν, περιττὸν ἴσως. πολὺ γὰρ πιθανώτερον ὠνομάσθαι μὲν ἐξ ἀρχῆς μυσούς. μετωνομάσθαι δὲ, καὶ νῦν. τοὺς ἀβίους δὲ τοὺς χήρους μᾶλλον ἢ τοὺς ἀνεστίους, καὶ τοὺς ἁμαξοικοὺς δέξαιτ᾽ ἄν τις. μάλιστα γὰρ περὶ τὰ συμβόλαια, καὶ τὴν τῶν χρημάτων ἐκτίμησιν, συνισταμένων τῶν ἀδικημάτων. τοὺς οὕτως ἀπ᾽ ὀλίγων εὐτελῶς ζῶντας δικαιοτάτους εὔλογον κληθῆναι. ἐπεὶ καὶ οἱ φιλόσοφοι τῇ σωφροσύνῃ τὴν δικαιοσύνην ἐγγυτάτω τιθέντες, τὸ αὔταρκες, καὶ τὸ λιτὸν ἐν τοῖς πρώτοις ἐζήλωσαν. ἀφ᾽ οὗ καὶ πρὸς ἐκ πτώσεις τινὰς αὐτῶν παρέωσαν ἐπὶ τὸν κυνισμὸν, τὸ δὲ χήρους γυναικῶν οἰκεῖν, οὐδεμίαν τοιαύτην ἔμφασιν ὑπογράφει. καὶ μάλιστα παρὰ τοῖς θραξὶ, καὶ τούτων τοῖς γέταις. ὅρα δ᾽ ἃ λέγει μένανδρος περὶ αὐτῶν οὐ πλάσας ὡς εἰκός. ἀλλ᾽ ἐξ ἱστορίας λαβών.

» Πάντες μὲν οἱ θρᾷκες. μάλιστα δ᾽ οἱ γέται ἡμεῖς ἁπάντων,
» Καὶ γὰρ αὐτὸς εὔχομαι ἐκεῖθεν εἶναι τὸ γένος,
» Οὐ σφόδρ᾽ ἐγκρατεῖς ἐσμέν.—

Καὶ ὑποβὰς μικρὸν τῆς περὶ τὰς γυναῖκας, ἀκρασίας τίθησι τὰ παραδείγματα. γαμεῖ γὰρ ἡμῶν οὐδὲ εἷς. οὐδ᾽ ἐκ ἢ ἔνδεκα γυναῖκας δώδεκά τε πλείους τινές. ἂν τέτταρας δ᾽ ἢ πέντε γεγαμηκὼς τύχῃ, καταστροφή τις, ἀνυμέναιος ἄνυμφος ἄθλιος οὗτος ἐπικαλεῖται ἐν τοῖς ἐκεῖ. ταῦτα γὰρ ὁμολογεῖται μὲν καὶ παρὰ τῶν ἄλλων. οὐκ εἰκὸς δὲ τοὺς αὐτοὺς, ἅμα μὲν ἄθλιον νομίζειν βίον, τὸν μὴ μετὰ πολλῶν γυναικῶν, ἅμα δὲ σπουδαῖον καὶ δίκαιον τὸν τῶν γυναικῶν χῆρον. τὸ δὲ, καὶ θεοσεβεῖς νομίζειν, καὶ καπνοβάτας τοὺς ἐρήμους γυναικῶν, σφόδρα ἐναντιοῦται ταῖς κοιναῖς ὑπολήψεσιν. ἅπαντες γὰρ τῆς δεισιδαιμονίας ἀρχηγοὺς οἴονται τὰς γυναῖκας. αὗται δὲ καὶ τοὺς ἄνδρας προκαλοῦνται, πρὸς τὰς ἐπὶ πλέον θεραπείας τῶν θεῶν, καὶ ἑορτὰς, καὶ ποτνιασμούς. σπάνιον δ᾽ εἴ τις ἀνὴρ καθ᾽ αὑτὸν ζῶν εὑρίσκεται τοιοῦτος. ὅρα δὲ πάλιν τὸν αὐτὸν ποιητὴν ἃ λέγει εἰσάγων τὸν ἀχθόμενον ταῖς περὶ τὰς θυσίας τῶν γυναικῶν ἀπάταις, καὶ λέγοντα. ἐπιτρίβουσι δ᾽ ἡμᾶς οἱ θεοὶ μάλιστα τοὺς γήμαντας. ἀεὶ γάρ τινα ἄγειν ἑορτὴν ἐστ᾽ ἀνάγκη. τὸν δὲ μισογύνην, αὐτὰ ταῦτα αἰτιώμενον. ἐθύομεν δὲ πεντάκις τῆς ἡμέρας. ἐκυμβάλιζον δ᾽ ἑπτὰ θερά-

παύεται κύκλῳ, ἀλλ' ὡλόλυζον. τὸ μὲν οὖν ἰδίως τοὺς ἀγυναίους τῶν γετῶν εὐσεβεῖς νομίζεσθαι, παρά/
λογόν τι ἐμφαίνει. τὸ δ' ἰσχύειν ἐν τῷ ἔθνει τούτῳ τὴν περὶ τὸ θεῖον σπουδὴν, ἔκ τε ὧν εἶπε ποσειδώ/
νιος, οὐκ ἀπιστέον. καὶ ἐμψύχων ἀπέχεσθαι δι' εὐσέβειαν, καὶ ἐκ τῆς ἄλλης ἱστορίας. λέγεται γάρ
τινα τῶν γετῶν ὄνομα ζάμολξιν, δουλεῦσαι πυθαγόρᾳ. καί τινα τῶν οὐρανίων παρ' ἐκείνου μαθεῖν
τὰ δὲ, καὶ παρ' αἰγυπτίων, πλανηθέντα καὶ μέχρι δεῦρο, ἐπανελθόντα, δ' εἰς τὴν οἰκίαν, ἀσπασθῆ
ναι παρὰ τοῖς ἡγεμόσι, καὶ τῷ ἔθνει, προλέγοντα τὰς ἐπισημασίας. τελευτῶντα δὲ, πεῖσαι τὸν
βασιλέα κοινωνὸν τῆς ἀρχῆς λαβεῖν, αὐτὸν, ὡς τὰ παρὰ τῶν θεῶν ἐξαγγέλλειν ἱκανόν. κατ' ἀρχὰς
μὲν, ἱερέα καταθεῖναι τοῦ μάλιστα τιμωμένου παρ' αὐτοῖς θεοῦ, μετὰ ταῦτα δὲ, καὶ θεὸν προσαγορευ
θῆναι. καὶ καταλαβόντα ἀντρώδη τινὰ χωρίον ἄβατον τοῖς ἄλλοις, ἐνταῦθα διαιτᾶσθαι, σπάνιον
ἐντυγχάνοντα τοῖς ἐκτὸς, πλὴν τοῦ βασιλέως καὶ τῶν θεραπόντων. συμπράττειν δὲ τὸν βασιλέα, ὁ/
ρῶντα τοὺς ἀνθρώπους προσέχοντας ἑαυτῷ πολὺ πλέον ἢ πρότερον. ὡς ἐκφέροντι τὰ προστάγματα συμ
βουλῇ θεῶν. τουτὶ δὲ τὸ ἔθος διέτεινεν ἄχρι, καὶ εἰς ἡμᾶς. ἀεί τινος εὑρισκομένου τοιούτου τὸ ἦθος. ὃς τῷ μὲν βα
σιλεῖ, σύμβουλος ὑπῆρχε. παρὰ δὲ τοῖς γέταις ὠνομάζετο θεός. καὶ τὸ ὄρος ὑπελήφθη ἱερὸν, καὶ προ
σαγορεύουσιν οὕτως. ὄνομα δ' αὐτῷ, κωγαίωνον. ὁμώνυμον τῷ παραῤῥέοντι ποταμῷ, καὶ δὴ ὅτε βυ
ρεβίστας ἦρχε τῶν γετῶν ἐφ' ὃν ἤδη παρεσκευάσατο καῖσαρ ὁ θεὸς στρατεύειν, δικαίνεος εἶχε ταύ/
την τὴν τιμήν. καί πως τὸ τῶν ἐμψύχων ἀπέχεσθαι πυθαγόρειον, τοῦ ζαμόλξιος ἔμεινε παραδοθέν.
τοιαῦτα μὲν οὖν κακῶς ἄν τις διαπορήσειε περὶ τῶν κειμένων παρὰ τῷ ποιητῇ περί τε μυσῶν καὶ
ἀγαυῶν ἱππημολγῶν. ἃ δ' ἀπολλόδωρος ἐν τῷ δευτέρῳ περὶ νεῶν προοιμιαζόμενος εἴρηκεν,
ἥκιστα λέγοιτ' ἄν. ἐπαινεῖ γὰρ ἐρατοσθένους ἀπόφασιν, ὅτι φησὶν ἐκεῖνος καὶ ὅμηρον, καὶ ἄλλους τοὺς
παλαιοὺς, καὶ τὰ μὲν ἑλληνικὰ εἰδέναι. τῶν δὲ πόῤῥω, πολλὴν ἔχειν ἀπειρίαν. ἀπείρους μὲν μα/
κρῶν ὁδῶν ὄντας. ἀπείρους δὲ, τοῦ ναυτίλλεσθαι. συνηγορῶν δὲ τούτοις, ὅμηρον φησὶ τὴν μὲν αὐλίδα
καλεῖν πετρήεσσαν ὥσπερ, καί ἐστι. πολύκνημον δὲ τὸν ἐτεωνόν. πολυτρήρωνα δὲ τὴν θίσβην. ποιήεντα
δὲ τὸν ἁλίαρτον. τὰ δ' ἄποθεν οὔτ' αὐτὸν εἰδέναι, οὔτε τοὺς ἄλλους. ποταμῶν γοῦν περὶ τετταράκον/
τα ῥεόντων εἰς τὸν πόντον, μηδὲ τῶν ἐνδοξοτάτων μηδενὸς μεμνῆσθαι. οἷον ἴστρου τανάϊδος. βορυσθένους
ὑπάνιος. φάσιδος. θερμώδοντος ἅλυος, ἔτι δὲ, σκυθῶν μὲν μὴ μεμνῆσθαι. πλάττειν δ' ἀγαυοὺς τι/
νὰς ἱππημολγοὺς, καὶ γαλακτοφάγους. ἀβίους τε παφλαγόνας τοὺς ἐν τῇ μεσογαίᾳ ἱστορηκέναι
παρὰ τῶν πεζῇ τοῖς τόποις πλησιασάντων. τὴν παραλίαν δὲ ἀγνοεῖν. καὶ εἰκότως γε. ἄπλουν γὰρ
εἶναι τότε τὴν θάλατταν ταύτην. καὶ καλεῖσθαι ἄξενον, διὰ τὸ δυσχείμερον καὶ τὴν ἀγριότητα τῶν περιοι
κούντων ἐθνῶν, καὶ μάλιστα τῶν σκυθῶν. ξενοθυτούντων. καὶ σαρκοφαγούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρω
μένων. ὕστερον δ' εὔξεινον κεκλῆσθαι τῶν ἰώνων, ἐν τῇ παραλίᾳ πόλιν κτισάντων. ὁμοίως δ' ἀγνοεῖν
καὶ τὰ περὶ αἴγυπτον καὶ λιβύην. οἷον τὰς ἀναβάσεις, τοῦ νείλου, καὶ προσχώσεις τοῦ πελάγους. ὧν οὐ/
δαμοῦ μεμνῆσθαι, οὐδὲ, τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ μεταξὺ τῆς ἐρυθρᾶς, καὶ τῆς αἰγυπτίας θαλάττης. οὐδὲ
τῶν κατὰ τὴν ἀραβίαν καὶ αἰθιοπίαν καὶ τὸν ὠκεανόν. εἰ μὴ ζήνωνι. τῷ φιλοσόφῳ προσεκτέον
γράφοντι.

Αἰθίοπάς θ' ἱκόμην καὶ σιδονίους ἀράβας τε. Οὐ θαυμαστὸν δ' εἶναι περὶ ὁμήρου. καὶ γὰρ τοὺς ἔτι νεωτέρους
ἐκείνου πολλὰ ἀγνοεῖν καὶ τερατολογεῖν. ἡσίοδον μὲν ἡμίκυνας λέγοντα, καὶ μεγαλοκεφάλους, καὶ
πυγμαίους. ἀλκμᾶνα δὲ στεγανόποδας. αἰσχύλον δὲ, κυνοκεφάλους, καὶ στερνοφθάλμους, καὶ μονομ/
μάτους. ἐν τῷ προμηθεῖ φησι. καὶ ἄλλα μυρία, ἀπὸ δὲ τούτων ἐπὶ τοὺς συγγραφέας βαδίζει ῥιπαῖα
ὄρη λέγοντας. καὶ τὸ ὠγύιον ὄρος, καὶ τὴν τῶν γοργόνων, καὶ ἑσπερίδων, κατοικίαν, καὶ τὴν παρὰ
θεοπόμπῳ μεροπίδα γῆν. παρ' ἑκαταίῳ δὲ, κιμμερίδα πόλιν. παρ' εὐημέρῳ δὲ τὴν παγχαίαν γῆν.
παρ' ἀριστοτέλει δὲ, ποταμίους λίθους ἐξ ἄμμους. ἐκ τῶν ὄμβρων τήκεσθαι. ἐν δὲ τῇ λιβύῃ, διονύ/
σου πόλιν εἶναι, ταύτην δ' οὐκ ἐνδέχεσθαι δὶς τὸν αὐτὸν ἐξευρεῖν. ἐπιτιμᾶν δὲ, καὶ τοῖς περὶ σικε/
λίαν τὴν πλάνην λέγουσι καθ' ὅμηρον τὴν ὀδυσσέως. εἰ γὰρ αὖ χρῆναι, τὴν μὲν πλάνην ἐκεῖ γεγονέ/
ναι φάσκειν ὅτι δὲ ποιητὴς ἐξωκεάνισεν αὐτὴν μυθολογίας χάριν, καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις συγγνώμην εἶναι,
καλλιμάχῳ δὲ μὴ πάνυ, μεταποιουμένῳ γε γραμματικῆς. ὃς τὴν μὲν γαῦδον, καλυψοῦς νῆσόν φησι. τὴν
δὲ κέρκυραν, σχερίαν ἄλλους δ' αἰτιᾶται ψεύσασθαι περὶ γερήνων καὶ τοῦ ἀκακησίου καὶ δήμου ἐν ἰ/
θάκῃ, πελεθρονίου δ' ἐν πηλίῳ. γλαυκωπίου δ' ἐν ἀθήναις, τούτοις δὲ μικρά τινα προστιθεὶς τοιαῦτα, παύ
εται τὰ πλεῖστα μετενέγκας παρὰ τοῦ ἐρατοσθένους, ὡς, καὶ πρότερον ἐμνήσθημεν οὐκ εὖ εἰρημέ
να. ὅτι μὲν γὰρ τοὺς ὕστερον ἐμπειροτέρους γεγονέναι τῶν πάλαι περὶ τὰ τοιαῦτα, καὶ ἐρατοσθένει, καὶ
τούτῳ δοτέον. τὸ δ' οὕτω πέραν τοῦ μετρίου προάγειν, καὶ μάλιστα ἐφ' ὁμήρου, δοκεῖ μοι κἂν ἐπιπλῆξαί τις
δικαίως. καὶ τοὐναντίον εἰπεῖν. ὡς περὶ ὧν ἀγνοοῦσιν αὐτοὶ, περὶ τούτων τῷ ποιητῇ προφέρουσι. τὰ μὲν οὖν ἄλ
λα ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα οἰκείας μνήμης τυγχάνει, τὰ δ' ἐν τοῖς καθόλου. νυνὶ δὲ περὶ θρᾳκῶν ἐλέγομεν. μυ/
σῶν τ' ἀγχεμάχων, καὶ ἀγαυῶν ἱππημολγῶν, γαλακτοφάγων ἀβίων τε δικαιοτάτων ἀνθρώπων, βουλό
μενοι συγκρῖναι τά τε ἐφ' ἡμῶν, καὶ τὰ ὑπὸ ποσειδωνίου λεχθέντα, καὶ τὰ ὑπὸ τούτων, πρότερον

δ' ὅτι τὴν ἐπιχείρησιν ὑπεναντίαν τοῖς προτεθεῖσι πεποίηται. προὔθετο μὲν γὰρ διδάξαι ὅτι τῶν
πόρρω τῆς ἑλλάδος, πλείων ἦν ἄγνοια τοῖς πρεσβυτέροις ἢ τοῖς νεωτέροις. ἔδειξε δὲ τἀναντία. καὶ οὐ τὰ
πόρρω μόνον, ἀλλὰ καὶ τὰ ἐν αὐτῇ ἑλλάδι. ἀλλ' ὡς ἔφην, τὰ ἄλλα μὲν ὑπερκείσθω. τὰ δὲ νῦν σκοπῶμεν.
σκυθῶν μὲν γὰρ μεμνῆσθαι κατ' ἄγνοιαν φασί. μὴ δὲ τῆς περὶ τοὺς ξένους ὠμότητος αὐτῶν, καὶ θυόντων,
καὶ σαρκοφαγούντων, καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρωμένων, δι' οὓς ἄξενος ὠνομάζετο ὁ πόντος. πλάττειν
δ' ἀγαυούς τινας ἱππημολγούς. γαλακτοφάγους. ἀβίους τε δικαιοτάτους ἀνθρώπους τοὺς οὐδαμοῦ
γῆς ὄντας. πῶς οὖν ἄξενον ὠνόμαζον, εἰ μὴ ᾔδεισαν τὴν ἀγριότητα, μὴ δ' αὐτοὺς τοὺς μάλιστα τοιούτους,
οὗτοι δ' εἰσὶ δήπου οἱ σκῦθαι, πρότεροι δ' ἱππημολγοὶ ἦσαν οἱ ἐπέκεινα τῶν μυσῶν, καὶ θρακῶν καὶ τῶν
γετῶν. οὗ δὲ γαλακτοφάγοι καὶ ἄβιοι. ἀλλὰ καὶ νῦν ἀμαξοικοὶ, καὶ νομάδες καλούμενοι ζῶντες ἀπὸ
θρεμμάτων, καὶ γάλακτος, καὶ τυροῦ, καὶ μάλιστα ἱππείου. θησαυρισμὸν δ' οὐκ εἰδότες οὐδὲ καπη-
λείαν, πλὴν ἢ φόρτον ἀντὶ φόρτου, πῶς οὖν ἠγνόει τοὺς σκύθας, ὁ ποιητής. ἱππημολγοὺς καὶ γαλα-
κτοφάγους τινὰς προσαγορεύων. ὅτι γὰρ οἱ τότε τούτους ἱππημολγοὺς ἐκάλουν, καὶ ἡσίοδος μάρτυς
ἐν τοῖς ὑπὸ ἐρατοσθένους παρατεθεῖσιν ἔπεσιν. αἰθίοπάς τε λίγυς τε ἠδὲ, σκύθας ἱππημολγούς. τί δὲ
θαυμαστὸν εἰ διὰ τὸ πλεονάζειν παρ' ἡμῖν τὰ συμβόλαια καὶ τὴν περὶ αὐτὰ ἀδικίαν, δικαιοτάτους
εἶπεν ἀγαυοὺς τοὺς ἥκιστα ἐν τοῖς συμβολαίοις καὶ τῷ ἀργυρισμῷ ζῶντας, ἀλλὰ καὶ κοινὰ κεκτημένους,
πάντα πλὴν ξίφους, καὶ ποτηρίου. ἐν δὲ τούτοις πρῶτον, καὶ τὰς γυναῖκας πλατωνικῶς ἔχοντας
κοινάς. καὶ τὰ τέκνα. καὶ αἰσχύλος δ' ἐμφαίνει συνηγορῶν τῷ ποιητῇ, φήσας περὶ τῶν σκυθῶν.
» Ἀλλ' ἱππηκῆς βοτῆρες εὔνομοι σκύθαι. Αὕτη δὴ, ἡ ὑπόληψις καὶ νῦν ἔτι συμμένει παρὰ τοῖς ἕλλησιν. ἁ-
πλουστάτους τε γὰρ αὐτοὺς νομίζομεν, καὶ ἥκιστα κακεντρεχεῖς, εὐτελεστέρους τε πολὺ ἡμῶν, καὶ αὐταρ-
κεστέρους. καί τοι ὅ γε καθ' ἡμᾶς βίος, εἰς πάντας σχεδόν τι διατέτακε τὴν πρὸς τὸ χεῖρον μεταβολὴν,
τρυφὴν, καὶ ἡδονὰς καὶ κακοτεχνίας, εἰς πλεονεξίας μυρίας πρὸς ταῦτ' εἰσάγων. πολὺ οὖν τῆς τοι-
αύτης κακίας, καὶ εἰς τοὺς βαρβάρους ἐμπέπτωκε, τούς τε ἄλλους, καὶ τοὺς νομάδας. καὶ γὰρ θαλάτ-
της ἁψάμενοι, χείρους γεγόνασι. ληστεύοντες, καὶ ξενοκτονοῦντες καὶ ἐπιπλεκόμενοι πολλοῖς, μεταλαμ-
βάνουσι τῆς ἐκείνων πολυτελείας, καὶ καπηλείας. ἃ δοκεῖ μὲν εἰς ἡμερότητα συντείνειν, διαφθείρει
δὲ, τὰ ἤθη. καὶ ποικιλίαν ἀντὶ τῆς ἁπλότητος τῆς ἀρτι λεχθείσης εἰσάγει. οἱ μέν τοι πρὸ ἡμῶν καὶ
μάλιστα οἱ ἐγγὺς τοῖς ὁμήρου χρόνοις τοιοῦτοί τινες ἦσαν, καὶ ὑπελαμβάνοντο παρὰ τοῖς ἕλλησιν ὁποίους
ὅμηρος φησίν. ὅρα δὲ γὰρ ἃ λέγει ἡρόδοτος περὶ τοῦ τῶν σκυθῶν βασιλέως, ἐφ' ὃν ἐστράτευσε δαρεῖος, καὶ
τὰ ἐπεσταλμένα παρ' αὐτοῦ ὅρα δὲ καὶ ἃ λέγει χρύσιππος περὶ τῶν τοῦ βοσπόρου βασιλέων τῶν περὶ
σιλεύκωνα. πλήρεις δὲ, καὶ αἱ περσικαὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἁπλότητος ἧς λέγω, καὶ τὰ ὑπὸ τῶν αἰγυπτίων καὶ
βαβυλωνίων. καὶ ἰνδῶν ἀπομνημονευόμενα διὰ τοῦτο δὲ, καὶ ἀνάχαρσις, καὶ ἄβαρις καί τινες ἄλλοι
παρὰ τοῖς ἕλλησι τοιοῦτοι εὐδοκίμουν, ὅτι ἐθνικόν τινα χαρακτῆρα ἐπέφαινον εὐκολίας καὶ λιτό-
τητος καὶ δικαιοσύνης, καὶ τί δεῖ τοὺς πάλαι λέγειν, ἀλέξανδρος γὰρ ὁ φιλίππου, κατὰ τὴν ἐπὶ θρᾷ-
κας τοὺς ὑπὲρ τοῦ αἵμου στρατείαν ἐμβαλὼν εἰς τριβαλούς, ὁρῶν μέχρι τοῦ ἴστρου καθήκοντας, καὶ τὴν
ἐν αὐτῷ νῆσον πεύκην, τὰ πέραν δὲ γέτας ἔχοντας, ἀφῖχθαι λέγεται μέχρι δεῦρο, καὶ ἐς μὲν τὴν νῆσον
ἀποβῆναι μὴ δύνασθαι σπάνει πλοίων, ἐκεῖσε γὰρ καταφυγόντα τὸν τῶν τριβαλῶν βασιλέα σύρμον,
ἀντισχεῖν πρὸς τὴν ἐπιχείρησιν. εἰς δὲ τοὺς γέτας διαβάντα, ἑλεῖν τὴν αὐτῶν πόλιν. καὶ ἀναστρέψαι,
διὰ ταχέων εἰς τὴν οἰκείαν λαβόντα δῶρα τῶν ἐθνῶν καὶ παρὰ τοῦ σύρμου. φησὶ δὲ πτολεμαῖος ὁ λάγου,
ταύτην τὴν στρατείαν, συμμίξαι τῷ ἀλεξάνδρῳ κελτοὺς τοὺς περὶ τὸν ἀδρίαν, φιλίας καὶ ξενίας
χάριν, δεξάμενον δὲ αὐτοὺς φιλοφρόνως τὸν βασιλέα, ἐρέσθαι παρὰ τὸν πότον τί μάλιστα εἴη ὃ φοβοῖντο
νομίζοντα αὐτὸν ἐρεῖν. αὐτοὺς δ' ἀποκρίνεσθαι, οὐδένα εἰ μὴ ἄρα ὁ οὐρανὸς αὐτοῖς ἐπιπέσοι. φιλίαν γε μὴν
ἀνδρὸς τοιούτου, περὶ παντὸς τίθεσθαι. ταῦτα δὲ ἁπλότητος τῶν βαρβάρων ἐστὶ σημεῖα. τοῦ τε μὴ συγ-
χωρήσαντος μὲν τὴν ἀπόβασιν τὴν εἰς τὴν νῆσον. δῶρα δὲ πέμψαντος καὶ συνθεμένου φιλίαν, καὶ τῶν φοβεῖσθαι
μὲν μηδένα φαμένων, φιλίαν δὲ περὶ παντὸς τίθεσθαι μεγάλων ἀνδρῶν. ὅ, τε δρομιχαίτης κατὰ τοὺς
διαδόχους ἦν τοὺς ἀλεξάνδρου γετῶν βασιλεύς. ἐκεῖνος τοίνυν λαβὼν ζωγρία, λυσίμαχον, ἐπιστρατεύσαν-
τα αὐτῷ, δείξας τὴν πενίαν τήν τε αὐτοῦ, καὶ τοῦ ἔθνους ὁμοίως δὲ, καὶ τὴν αὐτάρκειαν, ἐκέλευσε τοῖς τοιού-
τοις μὴ πολεμεῖν, ἀλλὰ φίλοις χρῆσθαι. ταῦτα δ' εἰπὼν ξενίσας, καὶ συνθέμενος φιλίαν, ἀπέλυσεν αὐ-
τόν. καὶ πλάτων ἐν τῇ πολιτείᾳ τὴν θάλατταν ὡς πονηροδιδάσκαλον φεύγειν οἴεται δεῖν, ὅτι πορρωτά-
τω τοὺς εὖ πολιτευομένους, καὶ μὴ οἰκεῖν ἐπ' αὐτῇ. ἔφορος δ' ἐν τῇ τετάρτῃ μὲν τῆς ἱστορίας, εὐρώπῃ δ' ἐ-
πιγραφομένῃ βίβλῳ, περιοδεύσας τὴν εὐρώπην μέχρι σκυθῶν, ἐπὶ τέλει φησὶν εἶναι, τῶν τε ἄλλων σκυ-
θῶν, καὶ τῶν σαυροματῶν τοὺς βίους ἀνομοίους. τοὺς μὲν γὰρ εἶναι χαλεπούς. ὥστε, καὶ ἀνθρωποφαγεῖν. τοὺς
δὲ, καὶ τῶν ἄλλων ζώων ἀπέχεσθαι. οἱ μὲν οὖν ἄλλοι φησὶ τὰ περὶ τῆς ὠμότητος αὐτῶν λέγουσιν εἰδότες.
τὸ δεινὸν δὲ, καὶ τὸ θαυμαστὸν, ἐκπληκτικὸν ὄν. δεῖν δὲ τἀναντία, καὶ λέγειν καὶ παραδείγματα ποιεῖσθαι, καὶ
αὐτὸς οὖν περὶ τῶν δικαιοτάτοις ἤθεσι χρωμένων ποιήσεσθαι τοὺς λόγους. εἶναι γάρ τινας τῶν νομά-
δων σκυθῶν γάλακτι τρεφομένους ἵππων, τῇ δικαιοσύνῃ πάντων διαφέρειν μεμνῆσθαι δ' αὐτῶν

τοὺς ποιητάς. ὅμηρον μὲν γαλακτοφάγων ἀβίων τε δικαιοτάτων ἀνθρώπων φήσαντα τὴν γῆν καθορᾶν. τὸν ἡσίοδον δὲ, ἐν τῇ καλουμένῃ γῆς περιόδῳ, τὸν φινέα ὑπὸ τῶν ἁρπυιῶν ἄγεσθαι γαλακτοφάγων ἐς γαῖαν, ἀπήνας οἰκί' ἐχόντων, εἶτα αἰτιολογεῖ, διότι ταῖς διαίταις εὐτελεῖς ὄντες, καὶ οὐ χρηματισταὶ, πρός τε ἀλλήλους εὐνομοῦνται, κοινὰ πάντα ἔχοντες τά τε ἄλλα καὶ γυναῖκας καὶ τέκνα, καὶ τὴν ὅλην συγγένειαν. πρός τε τοὺς ἐκτὸς, ἄμαχοι εἰσὶ, καὶ ἀνίκητοι. οὐδὲν ἔχοντες ὑπὲρ οὗ δουλεύσουσι. καλεῖ δὲ, καὶ χοιρίλον εἰπόντα ἐν τῇ διαβάσει τῆς σχεδίας, ἣν ἔζευξε δαρεῖος, μηλονόμοι τε σάκαι, γενεᾷ σκύθαι.

» Αὐτὰρ ἔναιον ἀσίδα πυροφόρον. Νομάδων γε μὴν ἦσαν ἄνθρωποι ἀποίκων νομίμων. καὶ τὸν ἀνάχαρσιν δὲ ἄνθρωπον σοφὸν καλῶν ὁ ἔφορος, τούτου φησὶν εἶναι τοῦ γένους. νομισθῆναι δὲ, καὶ ἑπτὰ σοφῶν ἕνα, τελείᾳ σωφροσύνῃ καὶ συνέσει. εὑρήματά τε αὐτοῦ λέγων τά τε ζώπυρα, καὶ τὴν ἀμφίβολον ἄγκυραν. καὶ τὸν κεραμεικὸν τροχόν. ταῦτα δὲ λέγω σαφῶς μὲν εἰδὼς, ὅτι καὶ οὗτος αὐτὸς οὔτε ἀληθέστατα λέγει περὶ πάντων, καὶ δὴ καὶ τὸ τοῦ ἀναχάρσιδος. πῶς γὰρ ὁ τροχὸς εὕρημα αὐτοῦ, ὃν οἶδεν ὅμηρος πρεσβύτερος ὤν.

» Ὡς δ' ὅτε τις κεραμεὺς τροχὸν ἄρμενον ἐν παλάμῃσι, Καὶ τὰ ἑξῆς. ἀλλ' ἐκεῖνα διασημῆναι βουλόμενος, ὅτι κοινῇ τινὶ φήμῃ, καὶ ὑπὸ τῶν παλαιῶν καὶ ὑπὸ τῶν ὕστερον, πεπιστεῦσθαι συνέβαινε τῶν νομάδων τοὺς μάλιστα ἀπῳκισμένους ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων τῶν ἄλλων. γαλακτοφάγους τε εἶναι καὶ ἀβίους καὶ δικαιοτάτους. ἀλλ' οὐχ ὑπὸ ὁμήρου πεπλάσθαι. περί τε τῶν μυσῶν. δίκαιός ἐστιν ὑπόσχειν λόγον τῶν ἐν τοῖς ἔπεσι λεγομένων ἀπολλόδωρος. πότερ' ἡγεῖται, καὶ τούτους εἶναι πλάσματα ὅταν φῇ ὁ ποιητὴς μυσῶν τ' ἀγχεμάχων, καὶ ἀγαυῶν ἱππημολγῶν. ἢ τοὺς ἐν τῇ ἀσίᾳ δεχόμενος, παρερμηνεύσει τὸν ποιητὴν, ὡς προείρηται πλάσμα, λέγων ὡς μὴ ὄντων ἐν τῇ θρᾴκῃ μυσῶν παρὰ τὰ ὄντα. ἔτι γοῦν ἐφ' ἡμῶν γοῦν αἴλιος κάτος μετῴκισεν ἐκ τῆς περαίας τοῦ ἴστρου πέντε μυριάδας σωμάτων παρὰ τῶν γετῶν, ὁμογλώττου τοῖς θρᾳξὶν ἔθνους, εἰς τὴν θρᾴκην καὶ νῦν οἰκοῦσιν αὐτόθι, μυσοὶ καλούμενοι. ἤτοι, καὶ τῶν πρότερον οὕτω καλουμένων, ἐν δὲ τῇ ἀσίᾳ, μυσῶν μετονομασθέντων. ἢ ὅπερ οἰκειότερόν ἐστι τῇ ἱστορίᾳ τοῦ ποιητοῦ. καὶ τῇ ἀποφάσει, τῶν καλουμένων μυσῶν πρότερον. περὶ μὲν δὴ τούτων ἅλις. ἐπάνειμι δὲ, ἐπὶ τὴν ἑξῆς περιήγησιν, τῶν δὲ γετῶν τὰ μὲν παλαιὰ ἀφείσθω. τὰ δ' εἰς ἡμᾶς ἤδη τοιαῦτα ὑπῆρξε. βοιρεβίστας ἀνὴρ γέτης, ἐπιστὰς ἐπὶ τὴν τοῦ ἔθνους ἐπιστασίαν, ἀνέλαβε κεκακωμένους τοὺς ἀνθρώπους ὑπὸ συχνῶν πολέμων. καὶ τοσοῦτον ἐπῆρεν ἐν ἀσκήσει καὶ νήψει, καὶ τὸ προσέχειν τοῖς πράγμασιν, ὥστ' ὀλίγων ἐτῶν, μεγάλην ἀρχὴν κατεστήσατο. καὶ τῶν ὁμόρων τοὺς πλείστους, ὑπέταξε τοῖς γέταις. ἤδη δὲ, καὶ ῥωμαίοις φοβερὸς ἦν διαβαίνων ἀδεῶς τὸν ἴστρον. καὶ τὴν θρᾴκην λεηλατῶν μέχρι μακεδονίας, καὶ ἰλλυρίδος. τούς τε κελτοὺς τοὺς ἀναμεμιγμένους τοῖς τε θρᾳξὶ καὶ τοῖς ἰλλυριοῖς διεπόρθησε. βοΐους, καὶ ἄρδην ἠφάνισε τοὺς ὑπὸ κριτασίρῳ, καὶ ταυρίσκους. πρὸς τὴν εὐπείθειαν τοῦ ἔθνους. συναγωνιστὴν ἔσχε δὲ κένεον ἄνδρα γόητα. καὶ πεπλανημένον κατὰ τὴν αἴγυπτον, καὶ προσημασίας ἐκμεμαθηκότα τινὰς, δι' ὧν ὑπεκρίνατο τὰ θεῖα. καὶ δι' ὀλίγου καθίστατο θεὸς, καθάπερ ἔφαμεν περὶ τοῦ ζαμόλξεως διηγούμενοι. τῆς δ' εὐπειθείας σημεῖον. ἐπείσθησαν γὰρ ἐκκόψαι τὴν ἄμπελον. καὶ ζῆν οἴνου χωρίς. ὁ μὲν οὖν βοιρεβίστας, ἔφθη καταλυθεὶς ἐπαναστάντων αὐτῷ τινῶν, πρὶν ἢ ῥωμαίους στεῖλαι στρατείαν ἐπ' αὐτόν. οἱ δὲ διαδεξάμενοι τὴν ἀρχὴν, εἰς πλείω μέρη διέστησαν. καὶ δὴ καὶ νῦν ἡνίκα ἔπεμψεν ἐπ' αὐτοὺς στρατείαν ὁ σεβαστὸς καῖσαρ, εἰς πέντε μυριάδας, τότε δὲ εἰς τέτταρας, διεστῶτες ἐτύγχανον. οἱ μὲν οὖν τοιοῦτοι μερισμοὶ πρόσκαιροι. καὶ ἄλλοτ' ἄλλοι. γέγονε δὲ, καὶ ἄλλος τῆς χώρας μερισμὸς συμμένων ἐκ παλαιοῦ. τοὺς μὲν γὰρ δάκους προσαγορεύουσι. τοὺς δὲ, γέτας. γέτας μὲν τοὺς πρὸς τὸν πόντον κεκλιμένους καὶ πρὸς τὴν ἕω. δάκους δὲ τοὺς εἰς τἀναντία πρὸς τὴν γερμανίαν καὶ τὰς τοῦ ἴστρου πηγάς. οὓς οἶμαι δάους καλεῖσθαι τὸ παλαιόν. ἀφ' οὗ, καὶ παρὰ τοῖς ἀττικοῖς ἐπεπόλασε τὰ τῶν οἰκετῶν ὀνόματα γέται καὶ δᾶοι, τοῦτο γὰρ πιθανώτερον ἢ ἀπὸ τῶν σκυθῶν, οὓς καλοῦσι δάας. πόρρω γὰρ ἐκεῖνοι περὶ τὴν ὑρκανίαν, καὶ οὐκ εἰκὸς ἐκεῖθεν κομίζεσθαι ἀνδράποδα εἰς τὴν ἀττικήν. ἐξ ὧν γὰρ ἐκομίζετο, ἢ τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις ὁμωνύμως ἐκάλουν τοὺς οἰκέτας. ὡς λυδὸν, καὶ σύρον, ἢ τοῖς ἐπιπολάζουσιν ἐκεῖ ὀνόμασι προσηγόρευον, ὡς μάνην ἢ μίδαν τὸν φρύγα. τίβιον δὲ, τὸν παφλαγόνα, ἐπὶ τοσοῦτον ὑπὸ τοῦ βοιρεβίστα τὸ ἔθνος ἐξαρθὲν, ἐταπεινώθη τελέως ὑπό τε τῶν στάσεων, καὶ τῶν ῥωμαίων. ἱκανοὶ δ' ὅμως εἰσὶν ἔτι καὶ νῦν στέλλειν τέτταρας μυριάδας. ῥεῖ δὲ δι' αὐτῶν, μάρισος ποταμὸς εἰς τὸν δανούβιον, ᾧ τὰς παρασκευὰς ἀνεκόμιζον οἱ ῥωμαῖοι τὰς πρὸς τὸν πόλεμον. καὶ γὰρ τοῦ ποταμοῦ τὰ μὲν ἄνω καὶ πρὸς ταῖς πηγαῖς μέρη, μέχρι τῶν καταρακτῶν, δανούβιον προσηγόρευον. ἃ μάλιστα διὰ τῶν δακῶν φέρεται. τὰ δὲ κάτω μέχρι τοῦ πόντου τὰ περὶ τοὺς γέτας, καλοῦσιν ἴστρον. ὁμόγλωττοι δ' εἰσὶν οἱ γέται τοῖς δάκοις. παρὰ μὲν οὖν τοῖς ἕλλησιν οἱ γέται γνωρίζονται μᾶλλον, διὰ τὸ συνεχεῖς τὰς μεταναστάσεις ἐφ' ἑκάτερα τοῦ ἴστρου ποιεῖσθαι. καὶ τοῖς θρᾳξὶ, καὶ τοῖς μυσοῖς ἀναμεμίχθαι, καὶ τὸ τῶν τρι-

βαλῶν δ᾽ ἔθνος θρακικὸν ὂν τὸ αὐτὸ πέπονθε τούτοις. μεταναστάσεις γὰρ δέδεκται τῶν πλησιοχώρων
εἰς τοὺς ἀσθενεστέρους. ἐξαναστάντων τῶν μὲν ἐκ τῆς περαίας τῶν σκυθῶν καὶ βασταρνῶν, καὶ σαυ-
ρομάτων ἐπικρατησάντων πολλάκις, ὥστε, καὶ ἐπιδιαβαίνειν τοῖς ἐξελαθεῖσι, καὶ καταμένειν τινὰς αὐτῶν ἢ ἐν
ταῖς νήσοις ἢ ἐν τῇ θράκῃ. τῶν δ᾽ ἑκατέρου μερῶν ὑπὸ ἰλλυριῶν μάλιστα κατισχυομένων, αὐξηθέντες δ᾽ οὖν
ἐπὶ πλεῖστον, οἵ τε γέται, οἵ τε δάκοι, ὥστε καὶ εἴκοσι μυριάδας ἐκπέμπειν στρατείας, νῦν ὅσον εἰς δύ-
ας μυριάδας συνεσταλμένοι τυγχάνουσι. καὶ ἐγγὺς μὲν ἥκουσι, τοῦ ὑπακούειν ῥωμαίων. οὔπως δ᾽
εἰσὶν ὑποχείριοι τελέως, διὰ τὰς ἐκ τῶν γερμανῶν ἐλπίδας, πολεμίων ὄντων τοῖς ῥωμαίοις. μετα-
ξὺ δὲ τῆς ποντικῆς θαλάττης τῆς ἀπ᾽ ἴστρου ἐπὶ τύραν, καὶ ἡ τῶν γετῶν ἐρημία, πρόκειται πεδιὰς πᾶσα,
καὶ ἄνυδρος. ἐν ᾗ δαρεῖος ἀποληφθεὶς ὁ ὑστάσπεω καθ᾽ ὃν καιρὸν διέβη τὸν ἴστρον ἐπὶ τοὺς σκύθας
ἐκινδύνευσε πανστρατιᾷ, δίψει διαλυθῆναι. συνῆκε δ᾽ ὀψὲ, καὶ ἀνέστρεψε. λυσίμαχος δ᾽ ὕστερον στρα-
τεύσας ἐπὶ γέτας. καὶ τὸν βασιλέα δρομιχαίτην, οὐκ ἐκινδύνευσε μόνον, ἀλλὰ, καὶ ἑάλω ζωγρία.
πάλιν δ᾽ ἐσώθη, τυχὼν εὐγνώμονος τοῦ βαρβάρου καθάπερ εἶπον πρότερον. πρὸς δὲ ταῖς ἐκβο-
λαῖς, μεγάλη νῆσός ἐστιν ἡ πεύκη, κατασχόντες δ᾽ αὐτὴν βαστάρναι πευκινοὶ προσηγορεύθησαν, εἰσὶ δὲ,
καὶ ἄλλαι νῆσοι πολὺ ἐλάττους. αἱ μὲν ἀνωτέρω ταύτης. αἱ δὲ πρὸς τῇ θαλάττῃ. ἑπτάστομος γάρ ἐστι.
μέγιστον δὲ, τὸ ἱερὸν στόμα καλούμενον. δι᾽ οὗ σταδίων ἀνάπλους ἐπὶ τὴν πεύκην, ἑκατὸν εἴκοσι. ἧς κα-
τὰ τὸ κάτω μέρος, ἐποίησε τὸ ζεῦγμα δαρεῖος. δύναιτο δ᾽ ἂν ζευχθῆναι, καὶ κατὰ τὸ ἄνω. τοῦτο δὲ καὶ
πρῶτον ἐστὶ στόμα ἐν ἀριστερᾷ εἰς πλέοντι εἰς τὸν πόντον. τὰ δ᾽ ἑξῆς, ἕω, παραπλέοντι ἐπὶ τύραν. διέ-
χει δ᾽ ἀπ᾽ αὐτοῦ τὸ ἕβδομον στόμα περὶ τριακοσίους σταδίους, γίνονται οὖν μεταξὺ τῶν στομάτων νησί-
δια. τὰ μὲν δὴ τρία στόματα ἐφεξῆς τῷ ἱερῷ στόματι ἐστὶ μικρά. τὰ δὲ λοιπὰ τοῦ μὲν, πολὺ ἐ-
λάττονα, τῶν δὲ, μείζονα. εὔφορος δὲ πεντάστομον εἴρηκε τὸν ἴστρον. ἐντεῦθεν δ᾽ ἐπὶ τύραν ποταμὸν
πλωτὸν, ἐνακόσιοι στάδιοι. ἐν δὲ, τῷ μεταξὺ δύο λίμναι μεγάλαι. ἡ μὲν ἀνεῳγμένη πρὸς τὴν θάλατταν
ὥστε, καὶ λιμένι χρῆσθαι, ἡ δ᾽ ἄστομος. ἐπὶ δὲ, τῷ στόματι τοῦ τύρα, πύργος ἐστὶ νεοπτολέμου καλού-
μενος. καὶ κώμη ἑρμώνακτος λεγομένη. ἀναπλεύσαντι δὲ ἑκατὸν τεσσαράκοντα σταδίους, ἐφ᾽ ἑκάτερα, πό-
λεις ἡ μὲν νικωνία. ἡ δ᾽ ἐν ἀριστερᾷ, ὀφιοῦσα. οἱ δὲ προσοικοῦντες τῷ ποταμῷ πόλιν φασὶν, ἀνιόντι ἑκα-
τὸν εἴκοσι σταδίους. διέχει δὲ, τοῦ στόματος ἡ νῆσος ἡ λευκὴ, δίαρμα πεντακοσίων σταδίων. ἱερὰ τοῦ ἀχιλλέως
πελαγία. εἶτα βορυσθένης ποταμὸς πλωτὸς ἐφ᾽ ἑξακοσίοις σταδίοις, καὶ πλησίον ἄλλος ποταμὸς ὕπανις.
καὶ νῆσος πρὸ τοῦ στόματος τοῦ βορυσθένους ἔχουσα λιμένα. πλεύσαντι δὲ τὸν βορυσθένη σταδίους διακο-
σίους, ὁμώνυμος αὐτῷ τῷ ποταμῷ πόλις. ἡ δ᾽ αὐτὴ καὶ ὀλβία καλεῖται. μέγα ἐμπορεῖον. κτίσμα μι-
λησίων. ἡ δ᾽ ὑπερκειμένη πᾶσα χώρα τοῦ λεχθέντος, μεταξὺ βορυσθένους, καὶ ἴστρου, πρώτη μέν ἐστιν
ἡ τῶν γετῶν ἐρημία, ἔπειτα οἱ τυρρεγέται. μεθ᾽ οὓς οἱ ἰάζυγες σαρμάται, καὶ οἱ βασίλειοι λεγόμενοι
καὶ οὔργοι. τὸ μὲν πλέον, νομάδες, ὀλίγοι δὲ, καὶ γεωργίας ἐπιμελούμενοι. τούτους φασὶ, καὶ παρὰ
τὸν ἴστρον οἰκεῖν, ἐφ᾽ ἑκάτερα πολλάκις, ἐν δὲ, τῇ μεσογαίᾳ βαστάρναι μὲν τοῖς τυρρεγέταις ὅμοροι καὶ γερ-
μανοῖς. σχεδόν τι καὶ αὐτοὶ τοῦ γερμανικοῦ γένους ὄντες. εἰς πλείω φῦλα διῃρημένοι. καὶ γὰρ ἀτμονοί λέγονταί τι-
νες. καὶ σιδόνες. οἱ δὲ τὴν πεύκην κατασχόντες τὴν ἐν τῷ ἴστρῳ νῆσον πευκινοί. ῥωξανοὶ δ᾽ ἀρκτικώτατοι με-
ταξὺ τοῦ ταναΐδος, καὶ τοῦ βορυσθένους νεμόμενοι πεδία. ἡ γὰρ προσάρκτιος πᾶσα ἀπὸ γερμανίας μέχρι τῆς
κασπίας, πεδιάς ἐστιν ἣν ἴσμεν. ὑπὲρ δὲ τῶν ῥωξανῶν εἴ τινες οἰκοῦσιν οὐκ ἴσμεν. οἱ δὲ ῥωξανοὶ, καὶ
πρὸς τοὺς μιθριδάτου τοῦ εὐπάτορος στρατηγοὺς ἐπολέμουν. ἔχοντες ἡγεμόνα τάσιον. ἧκον δὲ, πα-
λάκῳ συμμαχήσοντες τῷ σκιλούρου, καὶ ἐδόκουν μὲν εἶναι μάχιμοι. πρὸς μέντοι συντεταγμένην
φάλαγγα καὶ ὡπλισμένην καλῶς, τὸ βάρβαρον φῦλον ἀσθενές πᾶν ἐστι, καὶ τὸ γυμνητικόν. ἐκεῖνοι
γοῦν περὶ πέντε μυριάδας πρὸς τριακοσίους. τοὺς διοφάντῳ τῷ τοῦ μιθριδάτου στρατηγῷ συμπαρα-
ταξαμένους, οὐκ ἀντέσχον. ἀλλ᾽ οἱ πλεῖστοι διεφθάρησαν. χρῶνται δὲ, ὠμοβοΐνοις κράνεσι, καὶ θώραξι,
γερροφόροι, ἀμυντήρια δ᾽ ἔχοντες, καὶ λόγχας, καὶ ξίφος, καὶ τόξον. τοιοῦτοι δὲ, καὶ τῶν ἄλλων οἱ πλεί-
ους, τῶν δὲ νομάδων αἱ σκηναὶ, πιλωταὶ πεπήγασιν ἐπὶ ταῖς ἁμάξαις, ἐν αἷς διαιτῶνται. περὶ δὲ
τὰς σκηνὰς τὰ βοσκήματα ἀφ᾽ ὧν τρέφονται, καὶ γάλακτι καὶ τυρῷ, καὶ κρέασιν. ἀκολουθοῦσι δὲ
ταῖς νομαῖς μεταλαμβάνοντες τόπους ἀεὶ τοὺς ἔχοντας πόαν, χειμῶνος μὲν ἐν τοῖς ἕλεσι τοῖς περὶ
τὴν μαιῶτιν. θέρους δὲ, καὶ ἐν τοῖς πεδίοις, ἅπασα δ᾽ ἡ χώρα δυσχείμερός ἐστι, μέχρι τῶν ἐπὶ θαλάττῃ
τόπων τῶν μεταξὺ βορυσθένους καὶ τοῦ στόματος τῆς μαιώτιδος. αὐτῶν δὲ τῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰ ἀρ-
κτικώτατα τό τε στόμα τῆς μαιώτιδος, καὶ ἔτι μᾶλλον τὸ τοῦ βορυσθένους, ὁ μυχὸς, τοῦ ταμυράκου
κόλπου, καὶ καρκινίτου, καθ᾽ ὃν ὁ ἰσθμὸς, τῆς μεγάλης χερρονήσου, δηλοῖ δὲ, τὰ ψύχη καίπερ ἐν
πεδίοις οἰκούντων. ὄνους τε γὰρ οὐ τρέφουσι, δύσριγον γὰρ τὸ ζῶον. οἵ τε βόες οἱ μὲν ἄκερῳ γεννῶνται.
τῶν δ᾽ ἀπορρινῶσι τὰ κέρατα, καὶ γὰρ τοῦτο δύσριγον τὸ μέρος. οἵ τε ἵπποι μικροί. τὰ δὲ πρόβατα με-
γάλα. ῥήττονται δὲ χαλκαῖ ὑδρεῖαι. τὰ δ᾽ ἐνόντα συμπήττεται. τῶν δὲ πάγων ἡ σφοδρότης μάλιστα ἐκ
τῶν συμβαινόντων περὶ τὸ στόμα τῆς μαιώτιδος δῆλός ἐστιν. ἁμαξεύεται γὰρ ὁ διάπλους, ὁ εἰς φα-
ναγορείαν ἐκ τοῦ παντικαπαίου. ὥστε καὶ πηλὸν εἶναι, καὶ ὁδόν. ὀρυκτοί τε εἰσὶν οἱ ἰχθύες οἱ ἀποληφ-

φθείροντες ἐν τῷ κρυστάλλῳ τῇ προσαγορευομένῃ γαγγάμῃ, καὶ μάλιστα οἱ ἀντακαῖοι. δελφῖσι παρισοι τὸ μέ-
γεθος. νεοπτόλεμον δὲ φασὶ τὸν τοῦ μιθριδάτου στρατηγὸν, ἐν τῷ αὐτῷ πόρῳ, θέρους μὲν, ναυμαχίᾳ πε-
ριγενέσθαι τῶν βαρβάρων χειμῶνος, δ' ἱππομαχίᾳ. φασὶ δὲ, καὶ τὴν ἄμπελον ἐν τῷ βοσπόρῳ κατο-
ρύττεσθαι χειμῶνος, ἐπαμώντων πολὺ τῆς γῆς. λέγεται δὲ, καὶ τὰ καύματα σφοδρὰ γίνεσθαι.
τάχα μὲν τῶν σωμάτων ἀηθιζομένων, τάχα δὲ τῶν πεδίων ἀνηνεμούντων τότε. ἢ καὶ τοῦ πάχους τοῦ
ἀέρος ἐκθερμαινομένου πλέον, καθάπερ ἐν τοῖς νέφεσιν οἱ παρήλιοι ποιοῦσιν. ἀτέας δὲ δοκεῖ τῶν
πλείστων ἄρξαι τῶν ταύτῃ βαρβάρων, ὁ πρὸς φίλιππον πολεμήσας τὸν ἀμύντου. μετὰ δὲ, τὴν πρὸ
τοῦ βορυσθένους νῆσον, ἑξῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον, ὁ πλοῦς ἐπὶ ἄκραν τὴν τοῦ ἀχιλλείου δρόμου, ψιλὸν
μὲν χωρίον ἄλσος καλούμενον ἱερὸν ἀχιλλέως. εἶθ' ὁ ἀχίλλειος δρόμος, ἀλιτενής. χερρόνησος. ἔστι γὰρ
ταινία τις, ὅσον χιλίων σταδίων, μῆκος, ἐπὶ τὴν ἕω, πλάτος δὲ τὸ μέγιστον, δυοῖν σταδίων. ἐλάχιστον, τεσ-
σάρων πλέθρων διέχουσα τῆς ἑκατέρωθεν τοῦ αὐχένος ἠπείρου σταδίους ἑξήκοντα. ἀμμώδης. ὕδωρ ἔχου-
σα ὀρυκτόν. κατὰ μέσον δ' ὁ τοῦ ἰσθμοῦ αὐχὴν, ὅσον τετταράκοντα σταδίων. τελευτᾷ δὲ, πρὸς ἄκραν ἥν-
τα μυράκην καλοῦσιν. ἔχουσαν ὕφορμον, βλέποντα πρὸς τὴν ἤπειρον. μεθ' ἣν ὁ καρκινίτης κόλπος
εὐμεγέθης. ἀνέχων πρὸς τὰς ἄρκτους ὅσον ἐπὶ χιλίους σταδίους. οἱ δὲ καὶ τριπλασίους φασὶ μέ-
χρι τοῦ μυχοῦ. καλοῦνται δὲ ταφιοι. τὸν δὲ κόλπον, καὶ ταμυράκην καλοῦσιν ὁμωνύμως τῇ ἄκρᾳ.
ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς, ὁ διείργων τὴν σαπρὰν λεγομένην λίμνην, ἀπὸ τῆς θαλάττης σταδίων τετταρά-
κοντα καὶ ποιῶν τὴν ταυρικὴν, καὶ σκυθικὴν λεγομένην χερρόνησον. οἱ δὲ τριακόσια ἑξήκοντα, τὸ
πλάτος τοῦ ἰσθμοῦ φασίν. ἡ δὲ σαπρὰ λίμνη, σταδίων μὲν, καὶ τετρακισχιλίων λέγεται, μέρος, δ' ἐστὶ τῆς μαιώ-
τιδος τὸ πρὸς δύσιν. συνεστόμωται γὰρ αὐτῇ, στόματι μεγάλῳ. ἑλώδης δ' ἐστὶ σφόδρα, καὶ ῥαπτοῖς πλοί-
οις μόγις πλοΐμος, οἱ γὰρ ἄνεμοι τὰ τενάγη ῥᾳδίως ἀνακαλύπτουσιν. εἶτα πάλιν πληροῦσιν. ὥστε
τὰ ἕλη τοῖς μείζοσι σκάφεσιν οὐ περάσιμά ἐστιν. ἔχει δ' ὁ κόλπος νησίδια τρία. καὶ προσβραχῆ τινὰ
καὶ χοιραδώδη ὀλίγα, κατὰ τὸν παράπλουν, ἐκπλέοντι δ' ἐν ἀριστερᾷ, πολίχνη, καὶ ἄλλος λιμὴν
χερρονησιτῶν, ἔκκειται, γὰρ ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν, ἄκρα μεγάλη κατὰ τὸν παράπλουν. ἐφεξῆς μέρος
οὖσα τῆς ὅλης χερρονήσου. ἐφ' ᾗ ἵδρυται πόλις ἡρακλεωτῶν. ἄποικος τῶν ἐν τῷ πόντῳ. αὐτὸ τοῦτο κα-
λουμένη χερρόνησος. διέχουσα τὸν τύρα παράπλουν, σταδίων τετρακισχιλίων τετρακοσίων. ἐν ᾗ τὸ τῆς
παρθένου ἱερόν. δαίμονός τινος. ἧς ἐπώνυμος καὶ ἡ ἄκρα ἡ πρὸ τῆς πόλεώς ἐστιν ἐν σταδίοις ἑκατὸν καλου-
μένη παρθένιον ἔχον νεὼν τῆς δαίμονος, καὶ ξόανον. μεταξὺ δὲ, τῆς πόλεως, καὶ τῆς ἄκρας λιμένες
τρεῖς. εἶθ' ἡ παλαιὰ χερρόνησος κατεσκαμμένη. καὶ μετ' αὐτὴν, λιμὴν στενόστομος, καθ' ὃν μάλιστα οἱ ταῦροι
σκυθικὸν ἔθνος, τὰ λῃστήρια συνίσταντο τοῖς καταφεύγουσιν ἐπ' αὐτὸν ἐπιχειροῦντες, καλεῖται δὲ συμ-
βόλων λιμήν. οὗτος δὲ ποιεῖ πρὸς ἄλλον λιμένα κτενοῦντα καλούμενον, τετταράκοντα σταδίων ἰσθ-
μόν. οὗτος δ' ἐστὶν ἰσθμὸς ὁ κλείων τὴν μικρὰν χερρόνησον, ἣν ἔφαμεν τῆς μεγάλης χερρονήσου, μέρος ἔ-
χουσαν ἐν αὐτῇ, τὴν ὁμωνύμως λεγομένην χερρόνησον, αὕτη δ' ἦν πρότερον αὐτόνομος, πορθουμέ-
νη δὲ ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἠναγκάσθη προστάτην ἑλέσθαι μιθριδάτην τὸν εὐπάτορα. στρατηγοῦντα
ἐπὶ τοὺς ὑπὲρ τοῦ ἰσθμοῦ μέχρι βορυσθένους βαρβάρους, καὶ τοῦ ἀδρίου. ταῦτα δ' ἦν ἐπὶ ῥωμαί-
ους παρασκευή. ἐκεῖνος μὲν οὖν κατὰ ταύτας τὰς ἐλπίδας, ἄσμενος πέμψας εἰς τὴν χερρόνησον
στρατιὰν, ἅμα πρός τε τοὺς σκύθας ἐπολέμει, σκίλουρόν τε, καὶ τοὺς σκιλούρου παῖδας τοὺς περὶ
παλακόν. οὓς ποσειδώνιος μὲν, πεντήκοντα φησίν. ἀπολλωνίδης δὲ ὀγδοήκοντα. ἅμα δὲ τούτους τε ἐ-
χειρώσατο βίᾳ, καὶ βοσπόρου κατέστη κύριος παρ' ἑκόντος λαβὼν παρισάδου τοῦ κατέχοντος. ἐξ ἐ-
κείνου δὲ τοῦ χρόνου, τοῖς τοῦ βοσπόρου δυνάσταις, ἡ τῶν χερρονησιτῶν πόλις ὑπήκοος μέχρι νῦν ἐστι. τὸ δ' ἴ-
σον ὁ κτενοῦς διέχει, τῆς τε τῶν χερρονησιτῶν πόλεως, καὶ τοῦ συμβόλων λιμένος. μετὰ δὲ τὸν συμβόλων
λιμένα μέχρι θεοδοσίας πόλεως ἡ ταυρικὴ παραλία, χιλίων που σταδίων τὸ μῆκος, τραχεῖα καὶ ὀρεινὴ
καὶ καταιγίζουσα τοῖς βορέοις ἵδρυται. πρόκειται δ' αὐτῆς ἄκρα, πολὺ πρὸς τὸ πέλαγος καὶ τὴν
μεσημβρίαν, ἐκκειμένη. κατὰ παφλαγονίαν, καὶ ἄμαστριν πόλιν, καλεῖται δὲ κριοῦ μέτωπον. ἀντίκειται
δ' αὐτῇ τὸ τῶν παφλαγόνων ἀκρωτήριον ἡ κάραμβις τὸν διαιροῦν εἰς πελάγη δύο τὸν εὔξεινον πόντον. τὸ
τῷ ἑκατέρωθεν σφιγγόμενον πορθμῷ. διέστηκε δ' ἡ κάραμβις τῆς μὲν τῶν χερρονησιτῶν πόλεως. σταδίους δι-
σχιλίους καὶ πεντακοσίους τοῦ δὲ κριοῦ μετώπου, πολὺ ἐλάττους τὸν ἀριθμόν. συχνοὶ γοῦν τῶν διαπλευ-
σάντων τὸν πορθμὸν, ἅμα φασὶν ἀμφοτέρας ἰδεῖν τὰς ἄκρας ἑκατέρωθεν, ἐν δὲ τῇ ὀρεινῇ τῶν ταύρων,
καὶ τὸ ὄρος ἐστὶν ὁ τραπεζοῦς ὁμώνυμος τῇ πόλει, τὴν περὶ τιβαρηνίαν, καὶ τὴν κολχίδα, καὶ ἄλλο
δ' ἐστὶν ὄρος κιμμέριον κατὰ τὴν αὐτὴν ὀρεινὴν, δυναστευσάντων ποτὲ τῶν κιμμερίων ἐν βοσπόρῳ. καθ'
ὃν, καὶ κιμμερικὸς βόσπορος καλεῖται τοῦ πορθμοῦ. πᾶν ὃ ἐπέχει τῆς μαιώτιδος μετὰ δὲ τὴν ὀρεινὴν
τὴν λεχθεῖσαν, ἡ θεοδοσία ἐστὶ πόλις, πεδίον εὔγαιον ἔχουσα, καὶ λιμένα ναυσὶ, καὶ ἑκατὸν ἐπιτήδειον
οὗτος δὲ ὅρος ἦν πρότερον, τῆς τῶν βοσπορανῶν καὶ ταύρων γῆς. καὶ ἑξῆς δ' ἐστὶν, εὔγαιος χώρα
μέχρι παντικαπαίου τῆς μητροπόλεως τῶν βοσπορανῶν ἱδρυμένης ἐπὶ τῷ στόματι τῆς λίμνης,

τῆς μαιώτιδος. ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ τῆς θεοδοσίας καὶ τοῦ παντικαπαίου στάδιοι περὶ πεντακόσιοι καὶ τριάκοντα. χώρα πᾶσα σιτοφόρος, κώμας ἔχουσα, καὶ πόλιν εὐλίμενον τὴν νυμφαῖον καλουμένην. τὸ δὲ, παντικάπαιον λόφος ἐστὶ πάντη περιοικούμενος ἐν κύκλῳ σταδίων εἴκοσι. πρὸς ἕω δ᾽ ἔχει λιμένα, καὶ νεώρια, ὅσον τριάκοντα νεῶν. ἔχει δὲ, καὶ ἀκρόπολιν. κτίσμα δὲ μιλησίων. ἐμοναρχεῖτο δὲ πολὺν χρόνον, ὑπὸ δυναστῶν τῶν περὶ λεύκωνα καὶ σάτυρον καὶ παιρισάδην, αὕτη, τε καὶ αἱ πλησιόχωροι κατοικίαι, πᾶσαι αἱ περὶ τὸ στόμα τῆς μαιώτιδος ἑκατέρωθεν, μέχρι παιρισάδου, τοῦ μιθριδάτῃ παραδόντος τὴν ἀρχήν. ἐκαλοῦντο δὲ τύραννοι καίπερ οἱ πλείους ἐπιεικεῖς γεγονότες. ἀρξάμενοι ἀπὸ παιρισάδου, καὶ λεύκωνος. παιρισάδης δὲ, καὶ θεὸς νενόμισται. τούτῳ δ᾽ ὁμωνύμως καὶ ὁ ὕστατος. ὃς οὐχ οἷός τε ὢν ἀντέχειν πρὸς τοὺς βαρβάρους, φόρον πραττομένους μείζω τοῦ πρότερον, μιθριδάτῃ τῷ εὐπάτορι παρέδωκε τὴν ἀρχήν. ἐξ ἐκείνου δ᾽ ἡ βασιλεία γεγένηται ῥωμαίοις ὑπήκοος. τὸ μὲν οὖν πλέον αὐτῆς μέρος, ἐστὶν ἐπὶ τῆς εὐρώπης. μέρος δέ τι καὶ ἐπὶ τῆς ἀσίας. τὸ δὲ στόμα τῆς μαιώτιδος καλεῖται μὲν κιμμερικὸς βόσπορος. ἄρχεται δὲ, ἀπὸ μείζονος πλάτους, ἀπὸ ἑβδομήκοντά που σταδίων. καθ᾽ ὃ διαίρουσιν ἐκ τῶν περὶ παντικάπαιον τόπων, εἰς τὴν ἐγγυτάτω πόλιν τῆς ἀσίας, τὴν φαναγόρειαν. τελευτᾷ δ᾽ εἰς πολὺ στενώτερον πορθμόν. διαιρεῖ δ᾽ ὁ στενωπὸς οὗτος τὴν εὐρώπην ἀπὸ τῆς ἀσίας, καὶ ὁ τάναϊς ποταμὸς, καταντικρὺ ῥέων ἀπὸ τῶν ἄρκτων εἴς τε τὴν λίμνην, καὶ τὸ στόμα αὐτῆς. δύο δ᾽ ἔχει τὰς εἰς τὴν λίμνην ἐκβολὰς διεχούσας ἀλλήλων ὅσον σταδίους ἑξήκοντα. ἔστι δὲ, καὶ πόλις ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ. μέγιστον τῶν βαρβάρων ἐμπορεῖον, μετὰ τὸ παντικάπαιον. ἐν ἀριστερᾷ δ᾽ εἰσπλέοντι τὸν κιμμερικὸν βόσπορον, πολίχνιόν ἐστι μυρμήκιον ἐν εἴκοσι σταδίοις, ἀπὸ τοῦ παντικαπαίου. τοῦ δὲ μυρμηκίου διπλάσιον διέχει, κώμη παρθένιον, καθ᾽ ἣν στενώτατος ὁ εἴσπλους ἐστίν. ὅσον εἴκοσι σταδίων. ἔχων ἀντικειμένην ἐν τῇ ἀσίᾳ κώμην, ἀχίλλειον καλουμένην. ἐντεῦθεν δ᾽ εὐθύπλοια μὲν ἐπὶ τὸν τάναϊν καὶ τὴν κατὰ τὰς ἐκβολὰς νῆσον, στάδιοι δισχίλιοι διακόσιοι, μικρὸν ὑπερβάλλει τοῦ ἀριθμοῦ τούτου πλέοντι παρὰ τὴν ἀσίαν. πλέον δ᾽ ἢ τριπλάσιον, ἐν ἀριστερᾷ πλέοντι, μέχρι τοῦ ταναΐδος. ἐν ᾧ παράπλῳ, καὶ ὁ ἰσθμὸς ἵδρυται. οὗτος μὲν οὖν ὁ παράπλους ἔρημος πᾶς ὁ παρὰ τὴν εὐρώπην. ὁ δ᾽ ἐν δεξιᾷ οὐκ ἔρημος. ὁ δὲ σύμπας τῆς λίμνης κύκλος ὀκτακισχιλίων ἱστορεῖται σταδίων. ἡ δὲ μεγάλη χερρόνησος τῇ πελοποννήσῳ προσέοικε, καὶ τὸ σχῆμα, καὶ τὸ μέγεθος. ἔχουσι δ᾽ αὐτὴν οἱ τοῦ βοσπόρου δυνάσται κεκακωμένην πᾶσαν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων. πρότερον δ᾽ εἶχον ὀλίγην μὲν τὴν πρὸς τῷ στόματι τῆς μαιώτιδος, καὶ τῷ παντικαπαίῳ μέχρι θεοδοσίας, τῶν βοσπορείων τύραννοι, τὴν δὲ πλείστην μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ καὶ τοῦ κόλπου τοῦ καρκινίτου, σκυθικὸν ἔθνος ταῦροι. καὶ ἐκαλεῖτο ἡ χώρα αὐτῆς πᾶσα σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ ἔξω τοῦ ἰσθμοῦ μέχρι βορυσθενίους, μικρὰ σκυθία. διὰ δὲ τὸ πλῆθος τῶν ἐνθένδε περαιουμένων τόν τε τύραν, καὶ τὸν ἴστρον, καὶ ἐποικούντων τὴν γῆν, καὶ ταύτης οὐκ ὀλίγη, μικρὰ προσηγορεύθη σκυθία. τῶν θρακῶν, τὰ μὲν τῇ βίᾳ συγχωρούντων, τὰ δὲ, τῇ κακίᾳ τῆς χώρας. ἑλώδης γάρ ἐστιν ἡ πολλὴ αὐτῆς. τῆς δὲ χερρονήσου πλὴν τῆς ὀρεινῆς τῆς ἐπὶ θαλάττῃ μέχρι θεοδοσίας, ἥ γε ἄλλη πεδιὰς καὶ εὔγαιός ἐστι πᾶσα. σίτῳ δὲ, καὶ σφόδρα εὐτυχής. τριακοντάχουν γοῦν ἀποδίδωσι, διὰ τοῦ τυχόντος ὀρυκτοῦ σχιζομένη. φόρον τε ἐτέλουν, ὀκτωκαίδεκα μυριάδας μεδίμνων μιθριδάτῃ. τάλαντα δ᾽ ἀργυρείους διακοσίους. σὺν τοῖς ἀσιανοῖς χωρίοις τοῖς περὶ τὴν σινδικήν. καὶ τοῖς πρόσθεν χρόνοις ἐντεῦθεν ἦν, τὰ σιτοπομπεῖα τοῖς ἕλλησι, καθάπερ ἐκ τῆς λίμνης. αἱ ταριχεῖαι, λεύκωνα δέ φασιν ἐκ τῆς θεοδοσίας ἀθηναίοις πέμψαι μυριάδας μεδίμνων διακοσίων, καὶ δέκα. οἱ δ᾽ αὐτοὶ οὗτοι, καὶ γεωργοὶ ἐκαλοῦντ᾽ ἰδίως, διὰ τὸ τοὺς ὑπερκειμένους νομάδας εἶναι. τρεφομένους κρέασιν, ἄλλοις τε καὶ ἱππείοις. ἱππείῳ δὲ καὶ τυρῷ καὶ γάλακτι καὶ ὀξυγάλακτι. τοῦτο δὲ, καὶ ὄψημα ἐστὶν αὐτοῖς κατασκευασθέν πως, διόπερ ὁ ποιητὴς ἅπαντας εἴρηκε τοὺς ταύτῃ γαλακτοφάγους. οἱ μὲν οὖν νομάδες πολεμισταὶ μᾶλλόν εἰσιν ἢ λῃστρικοί. πολεμοῦσι δὲ ὑπὲρ τῶν φόρων, ἐπιτρέψαντες γὰρ ἔχειν τὴν γῆν τοῖς ἐθέλουσι γεωργεῖν, ἀντὶ ταύτης ἀγαπῶσι φόρους λαμβάνοντες τοὺς συντεταγμένους, μετρίους τινὰς οὐκ εἰς περιουσίαν, ἀλλ᾽ εἰς τὰ ἐφήμερα, καὶ ἀναγκαῖα τοῦ βίου. μὴ διδόντων δὲ, αὐτοῖς πολεμοῦσιν. οὕτω δὲ, καὶ δικαίους ἅμα, καὶ ἀβίους ὁ ποιητὴς εἴρηκε τοὺς αὐτοὺς τούτους ἄνδρας, ἐπεὶ τῶν γε φόρων ἀπευτακτουμένων, οὐδ᾽ ἂν καθίσαιντο εἰς πόλεμον. οὐκ ἀπευτακτοῦσι δ᾽ οὐ δυνάμει πεποιθότες. ὥστε ἢ ἀμύνασθαι ῥᾳδίως ἐπιόντας. ἢ κωλῦσαι τὴν ἔφοδον, καθάπερ ἄσανδρον ποιῆσαί φησιν ὑψικράτης, ἀποτειχίσαντα τὸν ἰσθμὸν τῆς χερρονήσου, τὸν πρὸς τῇ μαιώτιδι. τριακοσίων ὄντα, καὶ ἑξήκοντα σταδίων. ἐπιστήσαντα πύργους καθ᾽ ἕκαστον στάδιον δέκα. οἱ δὲ γεωργοὶ ταύτῃ μὲν ἡμερώτεροί τε ἅμα, καὶ πολιτικώτεροι νομίζονται εἶναι. χρηματισταὶ δ᾽ ὄντες καὶ θαλάττης ἁπτόμενοι, λῃστηρίων οὐκ ἀπέχονται. οὐδὲ, τῶν τοιούτων ἀδικιῶν καὶ πλεονεξιῶν. πρὸς δὲ, καὶ τὴν καταρίθμησιν τόποι ἐν τῇ χερρονήσῳ. καὶ τὰ φρούρια ὑπῆρξεν ἃ κατεσκεύασε σίλουρος, καὶ οἱ παῖδες. οἷς περ καὶ ὁρμητηρίοις ἐχρῶντο πρὸς τοὺς μιθριδάτου στρατηγούς, παλάκιόν τε, καὶ χάβον. καὶ νεάπολις. ἦν δὲ, καὶ εὐπατόριόν τι κτίσαντες διοφάντου μιθριδάτου στρατηγοῦντος. ἔστι δ᾽ ἄκρα

διέχουσα τοῦ τῶν χερρονησιτῶν τείχους, ὅσον πεντεκαίδεκα σταδίους. κόλπον ποιοῦσα εὐμεγέθη νεύον-
τα πρὸς τὴν πόλιν. τούτου δ᾽ ὑπέρκειται λιμνοθάλαττα, ἁλοπήγιον ἔχουσα. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ κτενοὺς
ἦν. ἵν᾽ οὖν ταῦτ᾽ ἔχοιεν οἱ βασιλικοὶ πολιορκούμενοι, τῇ τε ἄκρᾳ τῇ λεχθείσῃ, φρουρὰν ἐγκατέστησαν.
τειχίσαντες τὸν τόπον, καὶ τὸ στόμα τοῦ κόλπου τὸ μέχρι τῆς πόλεως διέχωσαν. ὥστε πεζεύεσθαι ῥα-
δίως, καὶ τρόπον τινὰ μίαν εἶναι πόλιν ἐξ ἀμφοῖν. ἐκ δὲ τούτου ῥᾷον ἀπεκρούοντο τοὺς σκύθας. ἐπεὶ
δὲ καὶ τῷ διατειχίσματι τοῦ ἰσθμοῦ πρὸς τῷ κτενοῦντι προσέβαλον, καὶ τὴν τάφρον ἐνέχουν
καλάμῳ, τὸ μεθ᾽ ἡμέραν γεφυρωθὲν μέρος, νύκτωρ ἐνεπίμπρασαν οἱ βασιλικοί, καὶ ἀντεῖχον τέως,
ἕως ἐπεκράτησαν. καὶ νῦν ὑπὸ τοῖς τῶν βοσπορανῶν βασιλεῦσιν, οὓς ἂν ῥωμαῖοι καταστήσωσιν,
ἅπαντά ἐστιν. ἴδιον δὲ τοῦ σκυθικοῦ καὶ τοῦ σαρματικοῦ παντὸς ἔθνους, τὸ τοὺς ἵππους τέμνειν εὐ-
πειθείας χάριν. μικροὶ μὲν γάρ εἰσιν. ὀξεῖς δὲ σφόδρα καὶ δυσπειθεῖς. θῆραι δ᾽ εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς ἕ-
λεσιν ἐλάφων καὶ συάγρων. ἐν δὲ τοῖς πεδίοις ὀνάγρων καὶ δορκάδων. ἴδιον δέ τι καὶ τὸ ἀετὸν μὴ γί-
νεσθαι ἐν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δὲ τῶν τετραπόδων ὁ καλούμενος κόλος μεταξὺ ἐλάφου καὶ κριοῦ
τὸ μέγεθος. λευκός. ὀξύτερος τούτων τῷ δρόμῳ. πίνων τοῖς ῥώθωσιν εἰς τὴν κεφαλήν. εἶτ᾽ ἐντεῦθεν
εἰς ἡμέρας ταμιεύων πλείους. ὥστ᾽ ἐν τῇ ἀνύδρῳ νέμεσθαι ῥᾳδίως. τοιαύτη μὲν ἡ ἐκτὸς ἴστρου πᾶ-
σα, ἡ μεταξὺ τοῦ ῥήνου καὶ τοῦ τανάϊδος ποταμοῦ, μέχρι τῆς ποντικῆς θαλάττης, καὶ τῆς μαιώτι-
δος. λοιπὴ δ᾽ ἐστὶ τῆς εὐρώπης, ἡ ἐντὸς ἴστρου καὶ τῆς κύκλῳ θαλάττης, ἀρξαμένη ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ ἀ-
δριατικοῦ, μέχρι τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ ἴστρου. ἐν ᾗ ἐστιν ἥ τε ἑλλὰς καὶ τὰ τῶν μακεδόνων καὶ τῶν ἠπει-
ρωτῶν ἔθνη, καὶ τὰ ὑπὲρ τούτων πρὸς τὸν ἰσθμὸν καθήκοντα. καὶ πρὸς τὴν ἐφ᾽ ἑκάτερα θάλατταν,
τήν τε ἀδριατικὴν, καὶ τὴν ποντικήν. πρὸς μὲν τὴν ἀδριατικὴν, τὰ ἰλλυρικά. πρὸς δὲ τὴν ἑτέραν
μέχρι προποντίδος καὶ ἑλλησπόντου, τὰ θρᾴκια. καὶ εἴ τινα τούτοις ἀναμέμικται σκυθικὰ, ἢ κελτι-
κά. δεῖ δ᾽ ἀπὸ τοῦ ἴστρου τὴν ἀρχὴν ποιήσασθαι, τὰ ἐφεξῆς λέγοντας τοῖς περιωδευθεῖσι τόποις. ταῦ-
τα δ᾽ ἐστὶ, τὰ συνεχῆ τῇ ἰταλίᾳ τε καὶ ταῖς ἄλπεσι καὶ γερμανοῖς καὶ δακοῖς καὶ γέταις. δίχα δ᾽ ἄν
τις καὶ ταῦτα διέλοι. τρόπον γάρ τινα τῷ ἴστρῳ παράλληλά ἐστι τά τε ἰλλυρικὰ καὶ τὰ παιωνι-
κὰ καὶ τὰ θρᾴκια ὄρη, μίαν πως γραμμὴν ἀποτελοῦντα διήκουσαν ἀπὸ τοῦ ἀδρίου, μέχρι πρὸς τὸν
πόντον. ἧς προσάρκτιά μέν ἐστι μέρη. τὰ μεταξὺ τοῦ ἴστρου καὶ τῶν ὀρῶν. πρὸς νότον δ᾽ ἥ τε ἑλλὰς καὶ ἡ
συνεχὴς βάρβαρος, μέχρι τῆς ὀρεινῆς. πρὸς μὲν οὖν τῷ πόντῳ, τὸ αἷμόν ἐστιν ὄρος. μέγιστον τῶν ταύ-
τῃ καὶ ὑψηλότατον. μέσην πως διαιροῦν τὴν θρᾴκην. ἀφ᾽ οὗ φησι πολύβιος, ἀμφοτέρας καθορᾶσθαι
τὰς θαλάττας. οὐκ ἀληθῆ λέγων. καὶ γὰρ τὸ διάστημα μέγα τὸ πρὸς ἀδρίαν. καὶ τὰ ἐπισκοτοῦν-
τα πολλά. πρὸς δὲ τῷ ἀδρίᾳ, πᾶσα ἡ ἀρδεία σχεδόν τι. μέση δ᾽ ἡ παιονία. καὶ αὐτὴ πᾶσα ὑψηλή.
ἐφ᾽ ἑκάτερα δ᾽ αὐτῆς ἐπὶ μὲν τὰ θρᾴκια ἡ ῥοδόπη ὅμορον ὑψηλὸν ὄρος μετὰ τὸν αἷμον. ἐπὶ δὲ θάτε-
ρα πρὸς ἄρκτον τὰ ἰλλυρικὰ, ἥ τε τῶν αὐταριατῶν χώρα, καὶ ἡ δαρδανική. λέγω μὲν δὴ τὰ ἰλλυ-
ρικὰ πρῶτα. συνάπτοντα τῷ τε ἴστρῳ, καὶ ταῖς ἄλπεσιν, ἃ κεῖται μεταξὺ τῆς ἰταλίας καὶ τῆς
γερμανίας. ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς λίμνης τῆς κατὰ τοὺς οὐινδολίκους καὶ ῥαιτοὺς καὶ τοινίους. μέρος
μὲν δή τι τῆς χώρας ταύτης ἠρήμωσαν οἱ δακοὶ καταπολεμήσαντες βοΐους καὶ ταυρίσκους ἔθνη
κελτικά. τὰ ὑπὸ κριτοσείρῳ φάσκοντες εἶναι τὴν χώραν σφετέραν, καίπερ ποταμοῦ διείργοντος
τοῦ παρίσου. ῥέοντος ἀπὸ τῶν ὀρῶν, ἐπὶ τὸν ἴστρον κατὰ τοὺς κορδίσκους καλουμένους γαλάτας. καὶ γὰρ
οὗτοι, τοῖς ἰλλυρικοῖς ἔθνεσι, καὶ τοῖς θρᾳκίοις, ᾤκησαν ἀναμίξ. ἀλλ᾽ ἐκείνους μὲν, οἱ δακοὶ κατέλυσαν.
τούτοις δὲ συμμάχοις ἐχρήσαντο πολλάκις. τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι παννόνιοι, μέχρι σεγεστικῆς καὶ ἴστρου
πρὸς ἄρκτον καὶ ἕω. πρὸς δὲ τἆλλα μέρη, ἐπὶ πλέον διατείνουσιν. ἡ δὲ σεγεστικὴ πόλις ἐστὶ παννο-
νίων ἐν συμβολῇ ποταμῶν πλειόνων, ἁπάντων πλωτῶν. εὐφυὲς ὁρμητήριον τῷ πρὸς δακοὺς πο-
λέμῳ. ὑποπέπτωκε γὰρ ταῖς ἄλπεσιν αἳ διατείνουσι μέχρι τῶν ἰαπόδων. κελτικοῦ τε ἅμα καὶ ἰλλυ-
ρικοῦ ἔθνους. ἐντεῦθεν δὲ καὶ ποταμοὶ ῥέουσι πολὺν καταφέροντες εἰς αὐτὴν τόν τε ἄλλον καὶ τὸν ἐκ
τῆς ἰταλίας φόρτον. εἰς γὰρ ναύπορτον, ἐξ ἀκυληΐας ὑπερθεῖσι τὴν ἄκραν εἰσὶ στάδιοι τετρακόσιοι
πεντήκοντα. εἰς ἣν αἱ ἁρμάμαξαι καταγίνονται, τῶν ταυρίσκων οὖσαν κατοικίαν. ἔνιοι δέ φασι πεν-
τακοσίους. ἡ δ᾽ ἄκρα ταπεινότερον μέρος τῶν ἄλπεών ἐστι. τῶν διατεινουσῶν ἀπὸ τῆς ῥαιτικῆς μέχρι
ἰαπόδων. ἐντεῦθεν ἐξαίρεται τὰ ὄρη πάλιν ἐν τοῖς ἰάποσι, καὶ καλεῖται ἄλβια. ὁμοίως δὲ καὶ τερ-
γέστης κώμης καρνικῆς ὑπέρθεσίς ἐστι, διὰ τῆς ἄκρας εἰς ἕλος λούγεον καλούμενον. πλησίον δὲ τοῦ
ναυπόρτου ποταμός ἐστι κορκόρας, ὁ δεχόμενος τὰ φορτία. οὗτος μὲν οὖν εἰς τὸν σαῦον ἐμβάλλει.
ἐκεῖνος δ᾽ εἰς τὸν δράβον. ὁ δὲ, εἰς τὸν νόαρον, κατὰ τὴν σεγεστικήν. ἐντεῦθεν δ᾽ ἤδη ὁ νόαρος πλή-
θος προσλαβὼν τὸν διὰ τῶν ἰαπόδων ῥέοντα ἐκ τοῦ ἀλβίου ὄρους κόλαπιν, συμβάλλει τῷ δα-
νουβίῳ κατὰ τοὺς κορδίσκους. ὁ δὲ πλοῦς τὰ πολλὰ τοῖς ποταμοῖς, ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐστὶν ὁ-
δὸς, ἀπὸ τεργεστῶν ἐπὶ τὸν δανούβιον σταδίων ὅσον χιλίων καὶ διακοσίων. ἐγγὺς δὲ τῆς σεγεστικῆς
ἐστὶ καὶ ἡ σύσκια φρούριον καὶ σίρμιον ἐν ὁδῷ κείμεναι τῇ εἰς ἰταλίαν. ἔθνη δ᾽ ἐστὶ τῶν παννο-

νίων βρεῦκοι, καὶ ἀνδιζήτιοι, καὶ διάσιτιάτες. καὶ πειροῦσται, καὶ μαζαῖοι, καὶ δαισιτιᾶται. ὧν βά-
βάτων ἡγεμών. καὶ ἄλλα ἄσημα ἕτερα συστήματα μικρὰ, διατείνει μέχρι καὶ δαλματίας. σχεδὸν δέ
τι καὶ σαρδιαίων, ἰόντι πρὸς νότον, ἅπασα ἡ ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ ἀδρίου παρήκουσα, ὀρεινὴ μέχρι τοῦ ῥιζο-
νικοῦ κόλπου καὶ τῆς σαρδιαίων γῆς. μεταξὺ πίπτουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τῶν παννονίων ἐθνῶν. σχε-
δὸν δέ τι καὶ ἐντεῦθεν ποιητέον τὴν ἀρχὴν τῆς συνεχοῦς περιοδείας ἀναλαβοῦσι μικρὰ τῶν λεχθέν-
των πρότερον. ἔφαμεν δὲ ἐν τῇ περιοδείᾳ τῆς ἰταλίας, ἴστρους εἶναι πρώτους τῆς ἰλλυρικῆς παρα-
λίας, συνεχεῖς τῇ ἰταλίᾳ καὶ τοῖς κάρνοις. καὶ ὅτι μέχρι πόλας ἰστρικῆς πόλεως, προήγαγον οἱ νῦν
ἡγεμόνες τοὺς τῆς ἰταλίας ὅρους. οὗτοι μὲν οὖν περὶ ὀκτακοσίους σταδίους εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ. το-
σοῦτοι δ᾽ εἰσὶ καὶ ἀπὸ τῆς ἄκρας τῆς πρὸ τῶν πόλεων ἐπὶ ἀγκῶνα ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὴν ἐνετικήν. ὁ δὲ
πᾶς ἰστρικὸς παράπλους χιλίων τριακοσίων. ἑξῆς δ᾽ ἐστὶν ὁ ἰαποδικὸς παράπλους χιλίων σταδίων. ἵ-
δρυνται γὰρ οἱ ἰάποδες ἐπὶ τῷ ἀλβίῳ ὄρει τελευταίῳ τῶν ἄλπεων ὄντι. ὑψηλῷ σφόδρα. τῇ μὲν,
ἐπὶ τοὺς παννονίους καὶ τὸν ἴστρον καθήκοντες. τῇ δ᾽ ἐπὶ τὸν ἀδρίαν, ἀρειμάνιοι μὲν, ἐκπεπονημένοι
δὲ ὑπὸ τοῦ σεβαστοῦ καίσαρος τελέως. πόλεις δ᾽ αὐτῶν μέτουλον. ἀρούπινος. μονήτιον. οὔενδον. λυ-
πρὰ δὲ τὰ χωρία. καὶ ζειᾶ καὶ κέγχρῳ τὰ πολλὰ τρεφόμενοι. ὁ δ᾽ ὁπλισμὸς κελτικὸς, κατάστικτοι
δ᾽ ὁμοίως καὶ τοῖς ἄλλοις ἰλλυριοῖς καὶ θραξί. μετὰ δὲ τὸν τῶν ἰαπόδων, ὁ λιβυρνικὸς παράπλους ἐστὶ.
μείζων τοῦ προτέρου σταδίοις. ἐν δὲ τῷ παράπλῳ, ποταμὸς φορτίοις ἀνάπλουν ἔχων μέχρι δαλματέ-
ων καὶ σκαρδῶν. καὶ λιβύρνη πόλις. παρ᾽ ὅλην δ᾽ ἣν εἶπον παραλίαν, νῆσοι μὲν αἱ ἀψυρτίδες. περὶ
ἃς ἡ μήδεια λέγεται διαφθεῖραι τὸν ἀδελφὸν ἄψυρτον διώκοντα αὐτήν, ἔπειτα ἡ κυρακτικὴ κατὰ τοὺς
ἰάποδας. εἶθ᾽ αἱ λιβυρνίδες περὶ τετταράκοντα τὸν ἀριθμόν. εἶτ᾽ ἄλλαι νῆσοι. γνωριμώταται δ᾽ ἴσσα,
τραγούριον. ἰσσέων κτίσμα. φάρος ἡ πρότερον πάρος. παρίων κτίσμα. ἐξ ἧς δημήτριος ὁ φάριος. καὶ
ἡ τῶν δαλματέων παραλία. καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτῶν σάλων. ἔστι δὲ τὸν πολὺν χρόνον πολεμησάντων
πρὸς ῥωμαίους τὸ ἔθνος τοῦτο. κατοικίας δ᾽ ἔσχεν ἀξιολόγους εἰς πεντήκοντα, ὧν τινὰς καὶ πόλεις σάλω-
νά τε καὶ πριάμωνα. καὶ νινίαν καὶ σινώτιον. τό, τε νέον καὶ τὸ παλαιὸν, ἃς ἐνέπρησεν ὁ σεβαστός. ἔστι
δὲ καὶ ἀνδήτριον ἐρυμνὸν χωρίον. δαλμίμιοι δὲ, μεγάλη πόλις, ἧς ἐπώνυμον τὸ ἔθνος. μικρὰν δ᾽ ἐποίη-
σε νασικᾶς, καὶ τὸ πεδίον μηλόβοτον διὰ τὴν πλεονεξίαν τῶν ἀνθρώπων. ἴδιον δὲ τῶν δαλματέων,
τὸ διὰ ὀκταετηρίδος χώρας ἀναδασμὸν ποιεῖσθαι. τὸ δὲ μὴ χρῆσθαι νομίσμασι πρὸς μὲν τοὺς ἐν τῇ ἰ-
ταλίᾳ ταύτῃ, ἴδιον. πρὸς ἀλλήλους δὲ τῶν βαρβάρων πολλοῖς κοινόν. ἀδριον δ᾽ ὄρος ἐστὶ, μέσον τέμνον
τὴν δαλματικήν. τὴν μὲν, ἐπὶ θαλάττιον. τὴν δ᾽ ἐπὶ θάτερα. εἶθ᾽ ὁ νάρων ποταμὸς καὶ οἱ περὶ αὐτὸν
δαόριζοι, καὶ ἀρδιαῖοι. καὶ πληραῖοι, ὧν τοῖς μὲν, πλησιάζει νῆσος ἡ μέλαινα κέρκυρα καλουμένη. καὶ
πόλις κνιδίων κτίσμα. τοῖς δὲ ἀρδιαίοις ἡ φάρος. πάρος λεγομένη πρότερον. παρίων γάρ ἐστι κτίσμα.
οὐαραλίους δ᾽ οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν τοὺς σαρδιαίους. ἀπέωσαν δ᾽ αὐτοὺς εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς θαλάτ-
της ῥωμαῖοι, λυμαινομένους αὐτὴν διὰ τῶν λῃστηρίων. καὶ ἠνάγκασαν γεωργεῖν. τραχεῖα δὲ χώρα καὶ
λυπρὰ, καὶ οὐ γεωργῶν ἀνθρώπων. ὥστ᾽ ἐξέφθαρται τελέως. μικροῦ δὲ καὶ ἐκλέλοιπε. τοῦτο δὲ καὶ
τοῖς ἄλλοις ἔθνεσι τοῖς ταύτῃ συνέβη. οἱ γὰρ πλεῖστον δυνάμενοι πρότερον, τελέως ἐταπεινώθησαν
καὶ ἐξέλιπον. γαλατῶν μὲν βόϊοι καὶ σκορδίσκαι. ἰλλυριῶν δὲ αὐταριάται καὶ ἀρδιαῖοι καὶ δαρδάνιοι.
θρακῶν δὲ τριβαλλοὶ, ὑπ᾽ ἀλλήλων μὲν ἐξ ἀρχῆς. ὕστερον δὲ ὑπὸ μακεδόνων καὶ ῥωμαίων ἐκπολεμού-
μενοι. μετὰ δ᾽ οὖν τὴν τῶν ἀρδιαίων καὶ πληραίων παραλίαν, ὁ ῥιζαίων κόλπος καὶ ῥιζαίων πόλις.
καὶ ἄλλα πολίχνια. καὶ δρίλων ποταμὸς ἀνάπλουν ἔχων πρὸς ἕω, μέχρι τῆς δαρδανικῆς. συνά-
πτει δὲ τοῖς μακεδονικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς παιονικοῖς πρὸς μεσημβρίαν. καθάπερ καὶ οἱ αὐταριάται
καὶ δασσαρήτιοι, ἄλλοι κατ᾽ ἄλλα μέρη συνεχεῖς ἀλλήλοις ὄντες, καὶ τοῖς αὐταριάταις. τῶν δὲ δαρ-
δανιατῶν εἰσὶ καὶ οἱ γαλάβριοι, παρ᾽ οἷς πόλις ἀρχαία. καὶ οἱ θουνάται, μέδοις, ἔθνει θρακίῳ πρὸς
ἕω συνάπτουσιν. ἄγριοι δ᾽ ὄντες οἱ δαρδάνιοι τελέως. ὥσθ᾽ ὑπὸ ταῖς κοπρίαις ὀρύξαντες σπήλαια
ἐνταῦθα διαίτας ποιεῖσθαι, μουσικῆς δ᾽ ὅμως ἐπεμελήθησαν. μουσικοῖς ἀεὶ χρώμενοι καὶ αὐλοῖς καὶ
τοῖς ἐντατοῖς ὀργάνοις. οὗτοι μὲν οὖν ἐν τῇ μεσογαίᾳ, μνησθησόμεθα δ᾽ αὐτῶν καὶ ὕστερον. μετὰ δὲ
τὸν ῥιζικὸν κόλπον, λισσός ἐστι πόλις. καὶ ἀκρόλισσος. καὶ ἐπίδαμνος κερκυραίων κτίσμα. ἡ νῦν δυρ-
ράχιον ὁμωνύμως τῇ χερρονήσῳ λεγομένη, ἐφ᾽ ἧς ἵδρυται. εἶθ᾽ ὁ ἄψος ποταμός. καὶ ὁ ἄως. ἐφ᾽ ᾧ
ἀπολλωνία πόλις εὐνομωτάτη. κτίσμα κορινθίων καὶ κερκυραίων. τοῦ ποταμοῦ μὲν ἀπέχουσα στα-
δίους δέκα. τῆς θαλάττης δὲ ἑξήκοντα. τὸν δ᾽ ἄωον αἴαντα καλεῖ ἑκαταῖος. καὶ φησὶν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ τό-
που, τοῦ περὶ λάκμον, μᾶλλον δὲ τοῦ αὐτοῦ μυχοῦ, τόν τε ἴναχον ῥεῖν εἰς ἄργος πρὸς νότον, καὶ τὸν αἴαν-
τα, πρὸς ἑσπέραν καὶ πρὸς τὴν ἀδρίαν. ἐν δὲ τῇ χώρᾳ τῶν ἀπολλωνιατῶν καλεῖταί τι νυμφαῖον. πέ-
τρα δ᾽ ἐστὶ πῦρ ἀναδιδοῦσα. ὑπ᾽ αὐτῇ δὲ κρῆναι ῥέουσι χλιαροῦ ἀσφάλτου. καιομένης ὡς εἰκὸς τῆς βώ-
λου τῆς ἀσφαλτίδος. μέταλλον δ᾽ ἐστὶν αὐτῆς πλησίον ἐπὶ λόφου. τὸ δὲ τμηθὲν ἐκπληροῦται πά-
λιν, τῷ χρόνῳ τῆς ἐγχωννυμένης εἰς τὰ ὀρύγματα γῆς μεταβαλλούσης ὡς εἰς ἄσφαλτον ὥς φησι ποσειδώ-

νιος. λέγει δ' ἐκεῖνος καὶ τὴν ἀμπελῖτιν γῆν ἀσφαλτώδη. τὴν ἐν σελευκείᾳ τῇ πιερίᾳ μεταλλευομένην,
ἄκος τῆς φθειριώσης ἀμπέλου. χρισθεῖσαν δὲ μετ' ἐλαίου, φθείρειν τὸ θηρίον πρὶν ἐπὶ τοὺς βλασοὺς
τῆς ῥίζης ἀναβῆναι. τοιαύτην δ' εὑρεθῆναι καὶ ἐν ῥόδῳ, πρυτανεύοντος αὐτοῦ. πλείονος δ' ἐλαίου δεῖ
σθαι. μετὰ δ' ἀπολλωνίαν βαλλιακὴ καὶ ὠρικὸν, καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτοῦ ὁ πάνορμος, καὶ τὰ κεραύνια ὄ/
ρη ἡ ἀρχὴ τοῦ σόματος τοῦ ἰονίου κόλπου καὶ τοῦ ἀδρίου. τὸ μὲν δὴ σόμα κοινὸν ἀμφοῖν ἐστι. διαφέρει δὲ
ὁ ἰόνιος, διότι τοῦ πρώτου μέρους τῆς θαλάττης ταύτης ὄνομα τοῦτ' ἐστίν. ὁ δ' ἀδρίας τῆς ἐντὸς μέχρι τοῦ
μυχοῦ. νυνὶ δὲ καὶ τῆς συμπάσης. φησὶ δὲ ὁ θεόπομπος τῶν ὀνομάτων τὸ μὲν, ἥκειν ἀπὸ τοῦ ἡγησαμένου τῶν τόπων ἐξ ὧν τὸ γένος. τὸν ἀδρίαν δὲ ποταμοῦ ἐπώνυμον γεγονέναι. σάδιοι δ' ἀπὸ τῶν
λιβυρνῶν ἐπὶ τὰ κεραύνια, μικρῷ πλείους, ἢ διχίλιοι. θεόπομπος δὲ, τὸν πάντα ἀπὸ τοῦ μυ-
χοῦ πλοῦν, ἡμερῶν ἓξ εἴρηκε. πεζῇ δὲ τὸ μῆκος τῆς ἰλλυρίδος καὶ τριάκοντα. πλεονάζειν δέ μοι δο/
κεῖ. καὶ ἄλλα οὐ πιστὰ λέγειν, τό τε συντετρῆσθαι τὰ πελάγη. ἀπὸ τοῦ εὑρίσκεσθαι κέραμόν τε θά/
σιον καὶ χῖον ἐν τῷ νάρωνι. καὶ τὸ ἄμφω κατοπτεύεσθαι τὰ πελάγη ἀπό τινος ὄρους. καὶ τῶν νήσων
τῶν λιβυρνίδων τιθείς. ὥς τε κύκλον ἔχειν καὶ πεντακοσίων σαδίων καὶ τὸ τοῦ ἴστρου ἐνὶ τῶν σομάτων εἰς
τὸν ἀδρίαν ἐμβάλλειν. τοιαῦτα καὶ τοῦ ἐρατοσθένους ἔνια παρακούσματά ἐστι λαοδογματικῶς, καθά/
περ πολύβιός φησι καὶ περὶ αὐτοῦ καὶ περὶ τῶν ἄλλων λέγων συγγραφέων. τὸν μὲν οὖν παράπλουν
ἅπαντα τὸν ἰλλυρικὸν. σφόδρα εὐλίμενον εἶναι συμβαίνει. καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς συνεχοῦς ἠϊόνος, καὶ
ἐκ τῶν πλησίων νήσων. ὑπεναντίως τῷ ἰταλικῷ τῷ ἀντικειμένῳ ἀλιμένῳ ὄντι. ἀλεεινοὶ δὲ καὶ χρησό
καρποι ὁμοίως. ἐλαιόφυτοι γὰρ καὶ εὐάμπελοι. πλὴν εἴ που τί σπάνιον ἐκτραχύνεται τελέως. τοι/
αύτη δ' οὖσα ὠλιγωρεῖτο πρότερον ἡ ἰλλυρικὴ παραλία. τάχα μὲν καὶ κατ' ἄγνοιαν τῆς ἀρετῆς. τὸ
μέν τοι πλέον διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἀνθρώπων καὶ τὸ λῃστρικὸν ἔθνος. ἡ δ' ὑπερκειμένη ταύτης πᾶ
σα ὀρεινὴ καὶ ψυχρὰ καὶ νιφοβόλος ἐστίν, ἡ δὲ, προσάρκτιος καὶ μᾶλλον. ὥς τε καὶ τῶν ἀμπέλων σπά
νιν εἶναι καὶ ἐν ταῖς ὑψώσεσι, καὶ ἐν τοῖς ἐπιπεδοτέροις. ὀροπέδια δ' ἐστὶ ταῦτα ἃ κατέχουσιν οἱ παν
νόνιοι. πρὸς νότον μὲν μέχρι δαλματέων καὶ ἀρδιαίων διατείνοντα. πρὸς ἄρκτον δὲ ἐπὶ τὸν ἴστρον τε/
λευτῶντα. πρὸς ἕω δὲ σκορδίσκοις συνάπτοντα. τῇ δὲ παρὰ τὰ ὄρη τῶν μακεδόνων καὶ θρακῶν. αὐτα/
ριάται μὲν οὖν τὸ μέγισον καὶ ἄρισον τῶν ἰλλυριῶν ἔθνος ὑπῆρξαν. ὃ πρότερον μὲν πρὸς ἀρδιαίους
συνεχῶς ἐπολέμει περὶ ἁλῶν. ἐν μεθορίοις πηγνυμένων ἐξ ὕδατος ῥέοντος ὑπὸ ἄγκει τινὶ, τοῦ ἔαρος.
ἀρυσαμένοις γὰρ καὶ ἀποθήσειν ἡμέρας πέντε ἐξεπήγνυντο οἱ ἅλες. συνέκειτο δὲ παρὰ μέρος χρῆ/
σθαι τῷ ἁλοπηγίῳ. παραβαίνοντες δὲ τὰ συγκείμενα ἐπολέμουν. καταστρεψάμενοι δέ ποτε οἱ αὐτα/
ριάται τριβαλοὺς ἀπὸ ἀγριαίων μέχρι τοῦ ἴστρου καθήκοντας ἡμερῶν πεντεκαίδεκα ὁδὸν, ἐπῆρξαν
καὶ τῶν ἄλλων θρακῶν τε καὶ ἰλλυριῶν. κατελύθησαν δ' ὑπὸ σκορδίσκων πρότερον. ὕστερον δ' ὑπὸ
ῥωμαίων. οἳ καὶ τοὺς σκορδίσκους αὐτοὺς κατεπολέμησαν πολὺν χρόνον, ἰσχύσαντας. ᾤκησαν δ' οὗ-
τοι παρὰ τὸν ἴστρον, διῃρημένοι δίχα. οἱ μὲν, μεταξὺ δυοῖν ποταμῶν οἰκοῦντες, ἐμβαλλόντων εἰς τὸν ἴ
στρον, τοῦ τε νοάρου τοῦ παρὰ τὴν σεγεστικὴν ῥέοντος, καὶ τοῦ μάργου. τινὲς δὲ βάργον φασίν. οἱ δὲ με/
γάλοι τούτου πέραν συνάπτοντες τριβαλοῖς καὶ μυσοῖς. εἶχον δὲ καὶ τῶν νήσων τινὰς οἱ σκορδίσκοι. ἐ/
πὶ τοσοῦτον δ' ηὐξήθησαν, ὥς τε καὶ μέχρι τῶν ἰλλυριῶν, καὶ τῶν παιονικῶν καὶ τῶν θρακίων προελ/
θεῖν ὀρῶν. κατέσχον οὖν καὶ τὰς νήσους τὰς ἐν τῷ ἴστρῳ τὰς πλείους. ἦσαν δὲ καὶ πόλεις αὐτοῖς ἑόρτα
καὶ καπέδουνον. μετὰ δὲ τὴν τῶν σκορδίσκων χώραν παρὰ μὲν τὸν ἴστρον, ἡ τῶν τριβαλῶν καὶ μυσῶν
ἐστιν ὧν ἐμνήσθημεν πρότερον. καὶ τὰ ἕλη τὰ τῆς μικρᾶς καλουμένης σκυθίας, τῆς ἐντὸς ἴστρου. καὶ
τούτων ἐμνήσθημεν. ὑπεροικοῦσι δ' οὗτοί τε καὶ κρόβυζοι καὶ οἱ τρωγλοδύται λεγόμενοι, τὴν περὶ
κάλατιν καὶ τομέαν καὶ ἴστρον, τόπων. εἶθ' οἱ περὶ τὸν αἷμον καὶ οἱ ὑπ' αὐτῶν οἰκοῦντες μέχρι τοῦ πόν
του κοράλλοι καὶ βέσσοι καὶ μεδῶν τινες καὶ δανθηλιτῶν. πάντα μὲν οὖν ταῦτα λῃστρικώτατα ἔ
θνη. βέσσοι δὲ ὑπὲρ τὸ πλέον τοῦ ὄρους νέμονται τοῦ αἵμου. καὶ ὑπὸ τῶν λῃστῶν λῃσταὶ προσαγορεύον
ται. καλυβῖταί τινες καὶ λυπρόβιοι. συνάπτοντες τῇ τε ῥοδόπῃ καὶ τοῖς παίοσι καὶ τῶν ἰλλυρι/
ῶν τοῖς τε αὐταριάταις καὶ τοῖς δαρδανίοις. μεταξὺ δὲ τούτων τε καὶ τῶν ἀρδιαίων, οἱ δασαρήτιοι
εἰσὶ καὶ ὑβριάνες. καὶ ἄλλα ἄσημα ἔθνη, ἃ ἐπόρθουν οἱ σκορδίσκοι, μέχρι ἠρήμωσαν τὴν χώραν καὶ δρυ
μῶν ἀβάτων ἐφ' ἡμέρας πλείους ἐποίησαν μεστήν. λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς μεταξὺ ἴστρου καὶ τῶν ὀρῶν τῶν
ἐφ' ἑκάτερα τῆς παιονίας, ἡ ποντικὴ παραλία. ἡ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ σόματος τοῦ ἴστρου μέχρι τῆς περὶ
τὸν αἷμον ὀρεινῆς. καὶ μέχρι τοῦ σόματος τοῦ κατὰ βυζάντιον. καθάπερ δὲ τὴν ἰλλυρικὴν παραλίαν
ἐπιόντες μέχρι τῶν κεραυνίων ὀρῶν προὔβημεν ἔξω τῆς ἰλλυρικῆς πιπτόντων ὀρεινῆς, ἐχόν-
των δέ τι οἰκεῖον πέρας. τὰ μεσόγαια δ' ἔθνη τούτοις ἀφωρίσμεθα, νομίζοντες σημειωδεστέρας ἔ-
σεσθαι τὰς τοιαύτας παραγραφὰς, καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ὕστερον, οὕτω κἂν ἐνταῦθα ἡ πα
ραλία κἂν ὑπερπίπτῃ τὴν, ὀρεινὴν, γραμμὴν, ὅμως εἰς οἰκεῖόν τι πέρας τελευτήσει τὸ τοῦ πόντου
σόμα, καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ἐφεξῆς. ἔστιν οὖν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ σόματος τοῦ ἴστρου ἐν δεξιᾷ ἔχου/
σι τὴν συνεχῆ παραλίαν, ἴστρος πολίχνιον ἐν πεντακοσίοις σαδίοις μιλησίων κτίσμα. εἶτα τόμις,

ἕτερον πολίχνιον ἐν διακοσίοις πεντήκοντα σταδίοις. εἶτα πόλις κάλλατις ἐν διακοσίοις ὀγδοήκοντα, ἡρακλεωτῶν ἄποικος. εἶτ' ἀπολλωνία, ἐν χιλίοις τριακοσίοις σταδίοις ἄποικος μιλησίων. τὸ πλέον τοῦ κτίσματος ἱδρυμένον ἔχουσα ἐν νησίῳ τινὶ, ὅπου ἱερὸν τοῦ ἀπόλλωνος. ἐξ οὗ μάρκος λεύκολλος, τὸν κολοσσὸν ἦρε, καὶ ἀνέθηκεν ἐν τῷ καπιτωλίῳ τὸν τοῦ ἀπόλλωνος, καλάμιδος ἔργον. ἐν τῷ μεταξὺ δὲ διαστήματι, τῷ ἀπὸ καλλάτιδος εἰς ἀπολλωνίαν, βιζώνη τέ ἐστιν, ἧς κατεπόθη πολὺ μέρος, ὑπὸ σεισμῶν, καὶ κρούλιοι καὶ ὀδησσὸς μιλησίων ἄποικος. καὶ ναύλοχος μεσημβριανῶν πολίχνιον. εἶτα τὸ αἷμον ὄρος μέχρι τῆς δεῦρο θαλάττης διῆκον. εἶτα μεσημβρία μεγαρέων ἄποικος. πρότερον δὲ μενεβρία. οἷον μενάπολις. τοῦ κτίσαντος, μένα, καλουμένου. τῆς δὲ πόλεως βρίας καλουμένης θρᾳκιστί. ὡς καὶ ἡ τοῦ σήλυος πόλις σηλυβρία προσηγόρευται. ἥ τε αἶνος πολτιοβρία ποτὲ ὠνομάζετο. εἶτ' ἀγχιάλη πολίχνιον ἀπολλωνιατῶν. καὶ αὐτὴ ἡ ἀπολλωνία. ἐν δὲ ταύτῃ τῇ παραλίᾳ ἐστὶ, καὶ τίριζις ἄκρα, χωρίον ἐρυμνόν. ᾧ ποτε καὶ λυσίμαχος ἐχρήσατο γαζοφυλακίῳ. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς ἀπολλωνίας ἐπὶ κυανέας, στάδιοι εἰσὶ περὶ τρισχιλίους καὶ πεντακοσίους. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ ἥ τε θυνιὰς τῶν ἀπολλωνιατῶν χώρα, ἀγχιάλη, καὶ αὐτὴ ἀπολλωνιατῶν, καὶ φινόπολις καὶ ἀνδριάκη. συνάπτουσα τῷ σαλμυδησσῷ. ἔστι δ' οὗτος ἔρημος αἰγιαλὸς καὶ λιθώδης. ἀλίμενος. ἀναπεπταμένος πολὺς, πρὸς τοὺς βορέας. σταδίων ὅσον ἑπτακοσίων, μέχρι κυανέων τὸ μῆκος. πρὸς ὃν οἱ ἐκπίπτοντες ὑπὸ τῶν ἀστῶν διαρπάζονται τῶν ὑπερκειμένων, θρᾳκίου ἔθνους. αἱ δὲ κυάνεαι πρὸς τῷ στόματι τοῦ πόντου εἰσὶ δύο νησίδια. τὸ μὲν, τῇ εὐρώπῃ προσεχὲς, τὸ δὲ, τῇ ἀσίᾳ. πορθμῷ διειργόμενα ὅσον εἴκοσι σταδίων. τοσοῦτον δὲ διέχει καὶ τοῦ ἱεροῦ τοῦ βυζαντίων καὶ τοῦ ἱεροῦ τοῦ χαλκηδονίων. ὅπερ ἐστὶ τοῦ στόματος τοῦ εὐξείνου τὸ στενώτατον. προϊόντι γὰρ δέκα σταδίους, ἄκρα ἐστὶ πεντασταδίον ποιοῦσα τὸν πορθμόν. εἶτα διίσταται ἐπὶ πλέον, καὶ ποιεῖν ἄρχεται τὴν προποντίδα. ἀπὸ μὲν οὖν τῆς ἄκρας τῆς τὸ πεντασταδίον ποιούσης, ἐπὶ τὸν ὑπὸ τῇ συκῇ καλούμενον λιμένα, στάδιοι πέντε καὶ τριάκοντα. ἐντεῦθεν δὲ ἐπὶ τὸ κέρας τὸ βυζαντίων πέντε. ἔστι δὲ τὸ κέρας προσεχὲς τῷ βυζαντίων τείχει. κόλπος ἀνέχων ὡς πρὸς δύσιν ἐπὶ σταδίους ἑξήκοντα. ἐοικὼς ἐλάφου κέρατι. εἰς γὰρ πλείστους σχίζεται κόλπους ὡς ἂν κλάδους τινάς. εἰς οὓς ἐμπίπτουσα ἡ πηλαμὺς, ἁλίσκεται ῥᾳδίως, διά τε τὸ πλῆθος αὐτῆς, καὶ τὴν βίαν τοῦ συνελαύνοντος ῥοῦ, καὶ τὴν στενότητα τῶν κόλπων. ὥστε καὶ χερσὶν ἁλίσκεσθαι διὰ τὴν στενοχωρίαν. γεννᾶται μὲν οὖν, τὸ ζῶον ἐν τοῖς ἕλεσι τῆς μαιώτιδος. ἰσχύσαν δὲ μικρὸν, ἐκπίπτει διὰ τοῦ στόματος ἀγεληδὸν, καὶ φέρεται παρὰ τὴν ἀσιανὴν ἠϊόνα μέχρι τραπεζοῦντος καὶ φαρνακίας. ἐνταῦθα δὲ πρότερον συνίστασθαι συμβαίνει τὴν θήραν. οὐ πολλὴ δ' ἐστίν. οὐ γάρ πω τὸ προσῆκον ἔχει μέγεθος. εἰς δὲ σινώπην προϊοῦσα, ὡραιοτέρα πρός τε τὴν θήραν καὶ τὴν ταριχείαν ἐστίν. ἐπειδὰν δὲ ἤδη συνάψῃ ταῖς κυανέαις, καὶ παραλλάξῃ ταύτας, ἐκ τῆς χαλκηδονιακῆς ἀκτῆς, λευκή τις πέτρα προσανίσχουσα φοβεῖ τὸ ζῶον. ὥστ' εὐθὺς εἰς τὴν περαίαν, τρέπεσθαι. παραλαβὼν δ' ὁ ἐνταῦθα ῥοῦς ἅμα καὶ τῶν τόπων εὐφυῶν ὄντων, πρὸς τὸ τὸν ἐκεῖσε ῥοῦν τῆς θαλάττης, ἐπὶ τὸ βυζάντιον καὶ τὸ πρὸς αὐτὸ κέρας τετράφθαι φυσικῶς, συνελαύνεται δεῦρο. καὶ παρέχει τοῖς βυζαντίοις καὶ τῷ δήμῳ τῶν ῥωμαίων, πρόσοδον ἀξιόλογον. χαλκηδόνιοι δ' ἐπὶ τῆς περαίας ἱδρυμένοι πλησίον, οὐ μετέχουσι τῆς εὐπορίας ταύτης, διὰ τὸ μὴ προσπελάζειν τοῖς λιμέσιν αὐτῶν, τὴν πηλαμύδα. ἢ δὴ καὶ τὸν ἀπόλλω φασὶ τοῖς κτίσασι τὸ βυζάντιον ὕστερον μετὰ τὴν ὑπὸ μεγαρέων χαλκηδόνος κτίσιν, χρηστηριαζομένοις, προστάξαι ποιήσασθαι τὴν ἵδρυσιν, ἀπεναντίον τῶν τυφλῶν. τυφλοὺς καλέσαντα τοὺς χαλκηδονίους. ὅτι πρότερον πλεύσαντες εἰς τοὺς τόπους, ἀφέντες τὴν περαίαν, κατασχεῖν, τοσοῦτον πλοῦτον ἔχουσαν, εἵλοντο τὴν λυπροτέραν. μέχρι μὲν δὴ βυζαντίου προήλθομεν. ἐπεὶ δ' ἡ πόλις ἐπιφανὴς πλησιάζουσα μάλιστα τῷ στόματι, εἰς γνωριμώτερον πέρας ἀπὸ τοῦ ἴστρου τὸν παράπλουν τελευτῶντα ἀπέφαινεν. ὑπέρκειται δὲ τοῦ βυζαντίου τὸ τῶν ἀστῶν ἔθνος. ἐν ᾧ πόλις καλύβη φιλίππου τοῦ ἀμύντου. τοὺς πονηροτάτους ἐνταῦθα ἱδρύσαντος. τὰ μὲν οὖν ἀφοριζόμενα ἔθνη τῷ τε ἴστρῳ καὶ τοῖς ἰλλυρικοῖς ὄρεσι καὶ θρᾳκίοις, ταῦτ' ἐστὶν ὧν ἄξιον μνησθῆναι. κατέχοντα τὴν ἀδριατικὴν παραλίαν πᾶσαν, ἀπὸ τοῦ μυχοῦ ἀρξάμενα. καὶ τὴν κατὰ ἀριστερὰ τοῦ πόντου λεγομένην ἀπὸ ἴστρου ποταμοῦ μέχρι βυζαντίου. λοιπὰ δέ ἐστι τὰ νότια μέρη τῆς λεχθείσης ὀρεινῆς. καὶ ἑξῆς τὰ ὑποπίπτοντα χωρία. ἐν οἷς ἐστιν ἡ ἑλλὰς καὶ ἡ προσεχὴς βάρβαρος, μέχρι τῶν ὀρῶν. ἑκαταῖος μὲν οὖν ὁ μιλήσιος περὶ τῆς πελοποννήσου φησὶν ὅτι πρὸ τῶν ἑλλήνων ᾤκησαν αὐτὴν βάρβαροι. σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ σύμπασα ἑλλὰς κατοικία βαρβάρων ὑπῆρξε τὸ παλαιόν. ἀπ' αὐτῶν λογιζομένοις, τῶν μνημονευομένων. πέλοπος μὲν ἐκ τῆς φρυγίας ἐπαγομένου λαὸν εἰς τὴν ἀπ' αὐτοῦ κληθεῖσαν πελοπόννησον. δαναοῦ δὲ ἐξ αἰγύπτου δρυόπων τε καὶ καυκώνων καὶ πελασγῶν καὶ λελέγων καὶ ἄλλων τοιούτων. κατανειμαμένων τὰ ἐντὸς ἰσθμοῦ. καὶ τὰ ἐκτὸς δέ. τὴν μὲν γὰρ ἀττικὴν οἱ μετὰ εὐμόλπου θρᾷκες ἔσχον. τῆς δὲ φωκίδος τὴν αὐλίδα, τηρεύς. τὴν δὲ καδμείαν οἱ μετὰ κάδμου φοίνικες. αὐτὴν δὲ τὴν βοιωτίαν ἄονες καὶ τέμμικες, καὶ ὕαντες. ὡς δὲ πίνδαρός φησιν.

» Ἦν ὅτε ὕας βοιώτιον ἔθνος ἔνεπον.

Καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομάτων δὲ ἐνίων τὸ βάρβαρον ἐμφαίνεται. κέκροψ. καὶ κόδρος, καὶ αἴκλος. καὶ κόθος, καὶ δρύ-

μας, καὶ κεῖναος· οἱ δὲ θρᾷκες καὶ ἰλλυριοὶ, καὶ ἠπειρῶται, καὶ μέχρι νῦν ἐν πλευραῖς εἰσίν· ἔτι μέντοι μᾶλλον πρότερον, ἢ νῦν, ὅπου γε καὶ τῆς ἐν τῷ παρόντι ἑλλάδος ἀναντιλέκτου οὔσης, τὴν πολλὴν οἱ βάρβαροι ἔχουσι, μακεδονίαν, μὲν θρᾷκες καί τινα μέρη τῆς θετταλίας· ἀκαρνανίας δὲ καὶ αἰτωλίας ἄνω, θεσπρωτοὶ, καὶ κασσωπαῖοι, καὶ ἀμφίλοχοι, καὶ μολοττοὶ, καὶ ἀθαμᾶνες ἠπειρωτικὰ ἔθνη· περὶ μὲν οὖν πελασγῶν εἴρηται· τοὺς δὲ λέλεγας τινὲς μὲν τοὺς αὐτοὺς καρσὶν εἰκάζουσιν· οἱ δὲ συνοίκους μόνον καὶ συστρατιώτας· διόπερ ἐν τῇ μιλησίᾳ, λελέγων κατοικίας λέγεσθαί τινας· πολλαχοῦ δὲ τῆς καρίας τάφους λελέγων καὶ ἐρύματα ἔρημα, λελέγια καλούμενα· ἥ τε νῦν ἰωνία λεγομένη πᾶσα ὑπὸ καρῶν ᾠκεῖτο καὶ λελέγων· ἐκβαλόντες δὲ τούτους οἱ ἴωνες αὐτοὶ τὴν χώραν κατέσχον, ἔτι δὲ πρότερον οἱ τὴν τροίαν ἑλόντες, ἐξήλασαν τοὺς λέλεγας, ἐκ τῶν περὶ τὴν ἴδην τόπων τῶν κατὰ πήδασον καὶ τὸν σατνιόεντα ποταμόν· ὅτι μὲν οὖν βάρβαροι ἦσαν οὗτοι· καὶ αὐτὸ τὸ κοινωνῆσαι τοῖς καρσὶ νομίζοιτ' ἂν σημεῖον, ὅτι δὲ πλάνητες καὶ μετ' ἐκείνων καὶ χωρὶς καὶ ἐκ παλαιοῦ, καὶ αἱ ἀριστοτέλους πολιτεῖαι δηλοῦσιν· ἐν μὲν γὰρ τῇ ἀκαρνάνων φησὶ, τὸ μὲν, ἔχειν αὐτῆς κουρῆτας· τὸ δὲ, πρὸς ἑσπέριον λέλεγας· εἶτα τηλεβόας· ἐν δὲ τῇ αἰτωλῶν, τοὺς νῦν λοκροὺς, λέλεγας καλεῖ· κατασχεῖν δὲ τὴν βοιωτίαν αὐτοὺς φησίν· ὁμοίως δὲ καὶ ἐν τῇ ὀπουντίων καὶ μεγαρέων· ἐν δὲ τῇ λευκαδίων καὶ αὐτόχθονα τινὰ λέλεγα ὀνομάζει· τούτου δὲ θυγατριδοῦν τηλεβόαν· τοῦ δὲ, παῖδας δύο καὶ εἴκοσι τηλεβόας· ὧν τινας οἰκῆσαι τὴν λευκάδα· μάλιστα δ' ἄν τις ἡσιόδῳ πιστεύσειεν οὕτως περὶ αὐτῶν εἰπόντι·

» Ἤτοι γὰρ λοκρὸς λελέγων ἡγήσατο λαῶν.
» Τούς ῥά ποτε κρονίδης, ζεὺς ἄφθιτα μήδεα εἰδὼς
» Λεκτοὺς ἐκ γαίης ἀλέους πόρε δευκαλίωνος.

Τῇ γὰρ ἐτυμολογίᾳ τὸ λεκτοὺς γεγονέναι τινὰς ἐκ παλαιοῦ καὶ μιγάδας, αἰνίττεσθαί μοι δοκεῖ, καὶ διὰ τὸ ἐκλελοιπέναι τὸ γένος· ἅπερ αὐτῆς, καὶ περὶ καυκώνων λέγοι νῦν, οὐδαμοῦ ὄντων· πρότερον δ' ἐν πλείοσι τόποις κατῳκισμένων, πρότερον μὲν οὖν καίπερ μικρῶν καὶ πολλῶν καὶ ἀδόξων ὄντων τῶν ἐθνῶν, ὅμως διὰ τὴν εὐανδρίαν καὶ τὸ βασιλεύεσθαι κατὰ σφᾶς, οὐ πάνυ, ἦν χαλεπὸν διαλαβεῖν τοὺς ὅρους αὐτῶν· νῦν δ' ἐρήμου τῆς πλείστης χώρας γεγενημένης, καὶ τῶν κατοικιῶν, καὶ μάλιστα τῶν πόλεων ἠφανισμένων, οὐδ' εἰ δύναιτό τις ἀκριβοῦν ταῦτα, οὐδὲν ἂν ποιοίη χρήσιμον, διὰ τὴν ἀδοξίαν καὶ τὸν ἀφανισμὸν αὐτῶν· ὃς ἐκ πολλοῦ χρόνου λαβὼν τὴν ἀρχὴν, οὐδὲ νῦν πω πέπαυται κατὰ πολλὰ μέρη, διὰ τὰς ἀποστάσεις· ἀλλ' ἐνστρατοπεδεύουσιν αὐτοῖς ῥωμαῖοι τοῖς οἴκοις· κατασταθέντες ὑπ' αὐτῶν δυνάσται· τῶν δ' οὖν ἠπειρωτῶν ἑβδομήκοντα πόλεις πολύβιος φησὶν ἀνατρέψαι παῦλον τὸν αἰμίλιον· μετὰ τὴν μακεδόνων καὶ περσέως κατάλυσιν· μολοττῶν δ' ὑπάρξαι τὰς πλείστας· πέντε δὲ καὶ δέκα μυριάδας ἀνθρώπων ἐξανδραποδίσασθαι· ὅμως δ' οὖν ἐγχειρήσομεν ἐφ' ὅσον τῇ γραφῇ τε προσήκει, καὶ ἡμῖν ἐφικτὸν ἐπελθεῖν, τὰ καθ' ἕκαστα· ἀρξάμενοι ἀπὸ τῆς κατὰ τὸν ἰόνιον κόλπον παραλίας· αὕτη δ' ἐστὶν εἰς ἣν ὁ ἔκπλους ὁ ἐκ τοῦ ἀδρίου τελευτᾷ· ταύτης δὴ τὰ πρῶτα μέρη τὰ περὶ ἐπίδαμνον καὶ ἀπολλωνίαν ἐστίν· ἐκ δὲ τῆς ἀπολλωνίας εἰς μακεδονίαν ἡ ἰγνατία ἐστὶν ὁδὸς πρὸς ἕω βεβηματισμένη κατὰ μίλιον· καὶ κατεστηλωμένη μέχρι κυψέλου καὶ ἕβρου ποταμοῦ· μιλίων δ' ἐστὶ πεντακοσίων τριάκοντα πέντε· λογιζομένῳ δὲ ὡς μὲν οἱ πολλοὶ τὸ μίλιον ὀκταστάδιον, τετρακισχίλιοι ἂν εἶεν στάδιοι, καὶ ἐπ' αὐτοῖς διακοσίοις ἑκατὸν, ὡς δὲ πολύβιος προστιθεὶς τῷ ὀκτασταδίῳ δίπλεθρον, ὅ ἐστι τρίτον σταδίου, προσθετέον ἄλλους σταδίους ἑκατὸν ἑβδομήκοντα ὀκτὼ, τὸ τρίτον τοῦ τῶν μιλίων ἀριθμοῦ· συμβαίνει δ' ἀπὸ ἴσου διαστήματος συμπίπτειν εἰς τὴν αὐτὴν ὁδὸν, τούς τ' ἐκ τῆς ἀπολλωνίας ὁρμηθέντας καὶ τοὺς ἐξ ἐπιδάμνου· ἡ μὲν οὖν πᾶσα ἰγνατία καλεῖται· ἡ δὲ πρώτη ἐπὶ κανδαουΐας λέγεται, ὄρους ἰλλυρικοῦ διὰ λυχνιδίου πόλεως, καὶ πυλῶνος, τόπου ὁρίζοντος ἐν τῇ ὁδῷ τήν τε ἰλλυρίδα καὶ τὴν μακεδονίαν· ἐκεῖθεν δ' ἐστὶ παρὰ βαρνοῦντα διὰ ἡρακλείας, καὶ λυγκιστῶν, καὶ ἐορδῶν, εἰς ἔδεσσαν καὶ πέλλαν, μέχρι θεσσαλονικείας· μίλια δ' ἐστί φησὶ πολύβιος ταῦτα διακόσια ἑξήκοντα ἑπτά· ταύτην δὴ τὴν ὁδὸν ἐκ τῶν περὶ τὴν ἐπίδαμνον καὶ τὴν ἀπολλωνίαν τόπων ἰοῦσιν, ἐν δεξιᾷ μὲν ἔστι τὰ ἠπειρωτικὰ ἔθνη, κλυζόμενα τῷ σικελικῷ πελάγει, μέχρι τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου· ἐν ἀριστερᾷ δὲ, τὰ ὄρη τὰ τῶν ἰλλυριῶν, ἅπερ διήλθομεν· καὶ τὰ ἔθνη τὰ παροικοῦντα μέχρι μακεδονίας καὶ παιόνων· εἶτα ἀπὸ μὲν ἀμβρακικοῦ κόλπου τὰ νεύοντα ἐφεξῆς πρὸς ἕω, τὰ ἀντιπαρήκοντα τῇ πελοποννήσῳ, τῆς ἑλλάδος ἐστὶν, εἶτ' ἐκπίπτει τοῦ αἰγαίου πελάγους, ἀπολιπόντα ἐν δεξιᾷ τὴν πελοπόννησον ὅλην· ἀπὸ δὲ τῆς ἀρχῆς τῶν μακεδονικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν παιονικῶν μέχρι στρυμόνος ποταμοῦ, μακεδόνες τε οἰκοῦσι καὶ παίονες· καί τινες τῶν ὀρεινῶν θρᾳκῶν· τὰ δὲ πέραν στρυμόνος ἤδη, μέχρι τοῦ ποντικοῦ στόματος καὶ τοῦ αἵμου, πάντα θρᾳκῶν ἐστί, πλὴν τῆς παραλίας· αὕτη δ' ὑφ' ἑλλήνων οἰκεῖται· τῶν μὲν, ἐπὶ τῇ προποντίδι ἱδρυμένων· τῶν δ', ἐπὶ τῷ αἰγαίῳ· τὸ δ' αἰγαῖον πέλαγος, δύο κλύζει πλευρὰς τῆς ἑλλάδος· τὴν μὲν, πρὸς ἕω βλέπουσαν· τείνουσαν δ' ἀπὸ τοῦ σουνίου πρὸς τὴν ἄρκτον μέχρι τοῦ θερμαίου κόλπου καὶ θεσσαλονικείας μακεδονικῆς πόλεως· ἣ νῦν μάλιστα τῶν ἄλλων εὐανδρεῖ· τὴν δὲ πρὸς νότον

τὴν μακεδονικὴν ἀπὸ θεσσαλονικείας μέχρι στρυμόνος. τινὲς δὲ καὶ τὴν ἀπὸ στρυμόνος μέχρι νέσου τῇ
μακεδονίᾳ προσνέμουσιν. ἐπειδὴ φίλιππος ἐσπούδασε διαφερόντως περὶ ταῦτα τὰ χωρία, ὥστ' ἐ-
ξιδιώσασθαι. καὶ συνεστήσατο προσόδους μεγίστας ἐκ τῶν μετάλλων καὶ τῆς ἄλλης εὐφυΐας τῶν τό-
πων. ἀπὸ δὲ σουνίου μέχρι πελοποννήσου, τὸ μυρτῶόν ἐστι καὶ κρητικὸν πέλαγος καὶ λιβυκὸν σὺν τοῖς
κόλποις μέχρι τοῦ σικελικοῦ, ὅπερ δὲ καὶ τὸν ἀμβρακικὸν καὶ κορινθιακὸν καὶ κρισαῖον ἐκπληροῖ κόλ-
πον. τῶν μὲν οὖν ἠπειρωτῶν ἔθνη φησὶν εἶναι θεόπομπος, τετταρεσκαίδεκα. τούτων δ' ἐνδοξότατα,
χάονάς τε καὶ μολοττοί. διὰ τὸ ἄρξαι ποτὲ πάσης τῆς ἠπειρώτιδος. πρότερον μὲν χάονας. ὕστερον δὲ μο-
λοττούς. οἳ καὶ διὰ τὴν συγγένειαν τῶν βασιλέων, ἐπὶ πλέον ηὐξήθησαν. τῶν γὰρ αἰακιδῶν ἦσαν. καὶ
διὰ τὸ παρὰ τούτοις εἶναι τὸ ἐν δωδώνῃ μαντεῖον, παλαιόν τε καὶ ὀνομαστόν. χάονες μὲν οὖν καὶ θεσ-
πρωτοὶ, καὶ μετὰ τούτους ἐφεξῆς κασσωπαῖοι. καὶ οὗτοι δ' εἰσὶ θεσπρωτοί. τὴν ἀπὸ τῶν κεραυνίων ὀ-
ρῶν, μέχρι τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου παραλίαν νέμονται, χώραν εὐδαίμονα ἔχοντες. ὁ δὲ πλοῦς ἀπὸ
τῶν χαόνων ἀρξαμένῳ πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον καὶ πρὸς τὸν ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ τὸν κορινθιακόν.
ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὸ αὐσόνιον πέλαγος. ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν ἤπειρον, εἰσὶ χίλιοι καὶ τριακόσιοι στάδιοι, ἀπὸ
τῶν κεραυνίων, ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου. ἐν τούτῳ δ' ἐστὶ τῷ διαστήματι πάνορμός τε λι-
μὴν καὶ μέγας, ἐν μέσοις τοῖς κεραυνίοις ὄρεσι. καὶ μετὰ ταῦτα ὄγχιμος ἄλλος. καθ' ὃν τὰ δυσμικὰ ἄ-
κρα τῆς κερκυραίας ἀντίκειται. καὶ πάλιν ἄλλος, κασσιόπη. ἀφ' οὗ ἐπὶ βρεντέσιον χίλιοι ἑπτακό-
σιοι στάδιοι. οἱ δ' ἴσοι καὶ ἐπὶ τάραντα ἀπ' ἄλλου ἀκρωτηρίου νοτιωτέρου τῆς κασσιόπης ὃ καλοῦσι φα-
λακρόν. μετὰ δὲ ὄγχιμον, ποσίδιον. καὶ βουθρωτὸν, ἐπὶ τῷ στόματι τοῦ καλουμένου πηλώδους λιμένος.
ἱδρυμένον ἐν τόπῳ χερρονησίζοντι, ἐποίκους ἔχον ῥωμαίους. καὶ τὰ σύβοτα. εἰσὶ δὲ νησίδες τὰ σύ-
βοτα. τῆς μὲν ἠπείρου μικρὸν ἀπέχουσαι. κατὰ δὲ τὸ ἑῷον ἄκρον τῆς κερκυραίας τὴν λευκίμμην
κείμεναι. καὶ ἄλλαι δ' ἐν τῷ παράπλῳ νησίδες εἰσὶν, οὐκ ἄξιαι μνήμης. ἔπειτα ἄκρα χειμέριον. καὶ γλυ-
κὺς λιμὴν. εἰς ὃν ἐμβάλλει ὁ ἀχέρων ποταμὸς ῥέων ἐκ τῆς ἀχερουσίας λίμνης. καὶ δεχόμενος πλείους
ποταμούς. ὥστε καὶ γλυκαίνειν τὸν κόλπον. ῥεῖ δὲ καὶ ὁ θύαμις πλησίον. ὑπέρκειται δὲ τούτου μὲν
τοῦ κόλπου κίχυρος ἡ πρότερον ἐφύρα πόλις θεσπρωτῶν. τὸ δὲ κατὰ βουθρωτὸν ἡ φοινίκη. ἐγγὺς δὲ τῆς
κιχύρου πολίχνιον βουχαίτιον. κασσωπαίων μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὄν. καὶ ἐλάτεια, καὶ πανδο-
σία. καὶ βάτιαι ἐν μεσογαίᾳ. καθήκει δ' αὐτῶν ἡ χώρα μέχρι τοῦ κόλπου. μετὰ δὲ γλυκὺν λιμένα, ἐφε-
ξῆς εἰσὶ δύο ἄλλοι λιμένες. ὁ μὲν ἐγγυτέρω καὶ ἐλάττων κόμαρος. ἰσθμὸν ποιῶν ἑξήκοντα σταδίων πρὸς
τὸν ἀμβρακικὸν κόλπον. καὶ τὸ τοῦ σεβαστοῦ καίσαρος κτίσμα, τὴν νικόπολιν. ὁ δὲ ἀπωτέρω καὶ μεί-
ζων καὶ ἀμείνων, πλησίον τοῦ στόματος τοῦ κόλπου. διέχων τῆς νικοπόλεως, ὅσον δώδεκα σταδίους. ἐφεξῆς
δὲ τὸ στόμα τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου. τούτου δὲ τοῦ κόλπου τὸ μὲν στόμα, μικρῷ τοῦ τετρασταδίου μεῖζον.
ὁ δὲ κύκλος, καὶ τριακοσίων σταδίων. εὐλίμενος δὲ πᾶς. οἰκοῦσι δὲ τοῖς μὲν ἐν δεξιᾷ εἰσπλέουσι τῶν ἑλ-
λήνων, ἀκαρνᾶνες. καὶ ἱερὸν τοῦ ἀκτίου ἀπόλλωνος ἐνταῦθα ἐστί. πλησίον τοῦ στόματος λόφος τις ἐφ' ᾧ
ὁ νεὼς, καὶ ὑπ' αὐτῷ πεδίον ἄλσος ἔχον, καὶ νεώρια. ἐν οἷς ἀνέθηκε καῖσαρ τὴν δεκαναΐαν ἀκροθίνιον.
ἀπὸ μονοκρότου μέχρι δεκήρους. ὑπὸ πυρὸς δ' ἠφανίσθαι καὶ οἱ νεώσοικοι λέγονται καὶ τὰ πλοῖα. ἐν
ἀριστερᾷ δὲ ἡ νικόπολις καὶ τῶν ἠπειρωτῶν οἱ κασσωπαῖοι μέχρι τοῦ κατὰ ἀμβρακίαν. ὑπέρκειται δὲ αὐ-
τῇ τοῦ μυχοῦ μικρόν. γόργου τοῦ κυψέλου κτίσμα. παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ ἄρατθος ποταμός. ἀνάπλουν
ἔχων ἐκ θαλάττης εἰς αὐτὴν, ὀλίγων σταδίων. ἀρχόμενος ἐκ στύμφης ὄρους, καὶ τῆς παρωρείας. ηὐτύχει
μὲν οὖν καὶ πρότερον ἡ πόλις αὕτη διαφερόντως. τὴν γοῦν ἐπωνυμίαν ἐντεῦθεν ἔσχηκεν ὁ κόλπος. μά-
λιστα δ' ἐκόσμησεν αὐτὴν πύρρος. βασιλείῳ χρησάμενος τόπῳ. μακεδόνες δ' ὕστερον καὶ ῥωμαῖοι καὶ ταύ-
την καὶ τὰς ἄλλας κατεπόνησαν συνεχέσι πολέμοις, διὰ τὴν ἀπείθειαν. ὥστε τὸ τελευταῖον ὁ σεβαστὸς
ὁρῶν ἐκλελειμμένας τελέως τὰς πόλεις, εἰς μίαν συνῴκισε τὴν ὑπ' αὐτοῦ κληθεῖσαν νικόπολιν ἐν τῷ
κόλπῳ τούτῳ. ἐκάλεσε δ' ἐπώνυμον τῆς νίκης, ἐν ᾗ κατεναυμάχησεν ἀντώνιον πρὸ τοῦ στόματος τοῦ κόλ-
που. καὶ τὴν αἰγυπτίων βασίλισσαν κλεοπάτραν, παροῦσαν ἐν τῷ ἀγῶνι καὶ αὐτήν. ἡ μὲν οὖν νικόπο-
λις εὐανδρεῖ. καὶ λαμβάνει καθ' ἡμέραν ἐπίδοσιν. χώραν τε ἔχουσα πολλὴν, καὶ τὸν ἐκ τῶν λαφύρων
κόσμον. τό τε κατασκευασθὲν τέμενος ἐν τῷ προαστείῳ τὸ μὲν εἰς τὸν ἀγῶνα τὸν πεντετηρικόν. ἐν ἄλσει
ἔχοντι γυμνάσιόν τε καὶ στάδιον. τὸ δ' ἐν τῷ ὑπερκειμένῳ τοῦ ἄλσους ἱερῷ λόφῳ τοῦ ἀπόλλωνος. ἀπο-
δέδεικται δ' ὁ ἀγὼν ὀλύμπιος τὰ ἄκτια, ἱερὸς τοῦ ἀκτίου ἀπόλλωνος. τὴν δ' ἐπιμέλειαν ἔχουσιν αὐτοῦ,
λακεδαιμόνιοι. αἱ δ' ἄλλαι κατοικίαι περιπόλιοι τῆς νικοπόλεώς εἰσιν, ἤγετο δὲ καὶ πρότερον τὰ ἄκτια,
τῷ θεῷ, στεφανίτης ἀγὼν ὑπὸ τῶν περιοίκων. νῦν δ' ἐντιμότερον ἐποίησεν ὁ καῖσαρ. μετὰ δὲ τὴν ἀμβρακίαν
τὸ ἄργος ἐστὶ τὸ ἀμφιλοχικὸν, κτίσμα ἀλκμαίωνος καὶ τῶν παίδων. ἔφορος μὲν γὰρ φησὶ τὸν ἀλκμαίω-
να μετὰ τὴν ἐπιγόνων ἐπὶ τὰς θήβας στρατείαν, παρακληθέντα ὑπὸ διομήδους, συνελθεῖν εἰς αἰτωλίαν
αὐτῷ. καὶ συγκατακτήσασθαι ταύτην τε καὶ τὴν ἀκαρνανίαν. καλοῦντος δ' αὐτοὺς ἐπὶ τὸν τρωϊκὸν πόλεμον ἀγα-
μέμνονος, τὸν μὲν διομήδη πορευθῆναι. τὸν δ' ἀλκμαίωνα μείναντα ἐν τῇ ἀκαρνανίᾳ, τὸ ἄργος κτίσαι. καλέ-
σαι δ' ἀμφιλοχικὸν ἐπώνυμον τοῦ ἀδελφοῦ. ἴναχον δὲ τὸν διὰ τῆς χώρας ῥέοντα ποταμὸν εἰς τὸν κόλπον, ἀπὸ

τοῦ κατὰ τὴν ἀργείαν προσαγορεῦσαι. θουκυδίδης δέ φησιν αὐτὸν ἀμφίλοχον, μετὰ τὴν ἐκ τροίας ἐπάνοδον, δυσαρεστοῦντα τοῖς ἐν ἄργει, παρελθεῖν εἰς τὴν ἀκαρνανίαν. διαδεξάμενον δὲ τὴν τἀδελφοῦ δυναστείαν, κτίσαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ. ἠπειρῶται δ' εἰσὶ καὶ ἀμφίλοχοι. καὶ οἱ ὑπερκείμενοι καὶ συνάπτοντες τοῖς ἰλλυρικοῖς ὄρεσι. τραχεῖαν οἰκοῦντες χώραν, μολοττοί τε καὶ ἀθαμᾶνες καὶ αἴθικες, καὶ τυμφαῖοι καὶ ὀρέσται. παρωραῖοί τε καὶ ἀτιντᾶνες, οἱ μὲν, πλησιάζοντες τοῖς μακεδόσι μᾶλλον. οἱ δὲ, τῷ ἰονικῷ κόλπῳ. λέγεται δὲ τὴν ὀρεστιάδα κατασχεῖν ποτε ὀρέστης, φεύγων τὸν τῆς μητρὸς φόνον. καὶ καταλιπεῖν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν χώραν, κτίσαι δὲ καὶ πόλιν, καλεῖσθαι δ' αὐτὴν ἄργος ὀρεστικόν. ἀναμέμικται δὲ τούτοις τὰ ἰλλυρικὰ ἔθνη, τὰ πρὸς τῷ νοτίῳ μέρει τῆς ὀρεινῆς καὶ τὰ ὑπὲρ τοῦ ἰονίου κόλπου. τῆς γὰρ ἐπιδάμνου καὶ τῆς ἀπολλωνίας, μέχρι τῶν κεραυνίων ὑπεροικοῦσι, βυλλίονές τε καὶ ταυλάντιοι. καὶ παρθῖνοι καὶ βρύγοι. πλησίον δέ που καὶ τὰ ἀργύρεια τὰ ἐν δαμαστίῳ. περισάδυές τε συνεστήσαντο τὴν δυναστείαν. καὶ ἐγχελίους καὶ σεσαρασίους καλοῦσι. πρὸς δὲ τούτοις λυγκισταί τε καὶ ἡ δευρίοπος καὶ ἡ τρίπολις πελαγονία. καὶ ἐορδοὶ καὶ ἐλίμεια καὶ ἐράτυρα. ταῦτα δὲ πρότερον μὲν κατεδυναστεύετο ἕκαστα. ὧν ἐν τοῖς ἐγχελίοις, οἱ κάδμου καὶ ἁρμονίας ἀπόγονοι ἦρχον. καὶ τὰ μυθευόμενα περὶ αὐτῶν ἐκεῖ δείκνυται. οὗτοι μὲν οὖν οὐχ ὑπὸ ἰθαγενῶν ἤρχοντο. οἱ δὲ λυγκισταὶ ὑπ' ἀρραβαίῳ ἐγένοντο. τοῦ βακχιαδῶν γένους ὄντι. τούτου δ' ἦν θυγατριδῆ ἡ φιλίππου μήτηρ, ἀμύντου τοῦ εὐρυδίκης. ἵρρα δὲ θυγάτηρ. καὶ τῶν ἠπειρωτῶν δὲ, μολοττοὶ ὑπὸ πύρρῳ τῷ νεοπτολέμῳ τοῦ ἀχιλλέως καὶ τοῖς ἀπογόνοις αὐτοῦ θετταλοῖς οὖσι γεγονότες. οἱ λοιποὶ δ' ὑπὸ ἰθαγενῶν ἤρχοντο. εἶτ' ἐπικρατούντων ἀεί τινων κατέστρεψεν ἅπαντα εἰς τὴν μακεδόνων ἀρχὴν, πλὴν ὀλίγων τῶν ὑπὲρ τοῦ ἰονίου κόλπου. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ λυγκιστὸν, καὶ πελαγονίαν, καὶ ὀρεστιάδα, καὶ ἐλίμειαν τὴν ἄνω μακεδονίαν ἐκάλουν. οἱ δ' ὕστερον καὶ ἐλευθέραν. ἔνιοι δὲ καὶ σύμπασαν τὴν μέχρι κερκύρας, μακεδονίαν προσαγορεύουσιν. αἰτιολογοῦντες ἅμα ὅτι καὶ κουρᾷ, καὶ διαλέκτῳ, καὶ χλαμύδι, καὶ ἄλλοις τοιούτοις χρῶνται παραπλησίως. ἔνιοι δὲ καὶ δίγλωττοί εἰσι. καταλυθείσης δὲ τῆς μακεδόνων ἀρχῆς, ὑπὸ ῥωμαίοις ἔπεσε. διὰ δὲ τούτων ἐστὶ τῶν ἐθνῶν ἡ ἐγνατία ὁδὸς, ἐξ ἐπιδάμνου καὶ ἀπολλωνίας περὶ, τὴν ἐπὶ κανδαουΐας ὁδὸν, αἵ τε λίμναι εἰσὶν αἱ περὶ λυχνιδοῦντα. ταριχείας ἰχθύων αὐτάρκεις ἔχουσαι. καὶ ποταμοὶ, οἵ τε εἰς τὸν ἰόνιον κόλπον ἐκπίπτοντες, καὶ οἱ ἐπὶ τὰ νότια μέρη. ὅ τ' ἴναχος καὶ ὁ ἄρατθος, καὶ ὁ ἀχελῶος, καὶ ὁ εὔηνος. ὁ λυκόρμας πρότερον καλούμενος. ὁ μὲν, εἰς τὸν κόλπον τὸν ἀμβρακικὸν ἐμβάλλων. ὁ δὲ, εἰς τὸν ἀχελῶον. αὐτὸς δὲ ὁ ἀχελῶος εἰς τὴν θάλατταν καὶ ὁ εὔηνος. ὁ μὲν, τὴν ἀκαρνανίαν διεξιὼν, ὁ δὲ, τὴν αἰτωλίαν. ὁ δ' ἐριγὼν πολλὰ δεξάμενος ῥεύματα ἐκ τῶν ἰλλυρικῶν ὀρῶν καὶ λυγκιστῶν καὶ βρυγῶν καὶ δευριόπων καὶ πελαγόνων, εἰς τὸν ἀξιὸν ἐκδίδωσι. πρότερον μὲν οὖν καὶ πόλεις ἦσαν ἐν τοῖς ἔθνεσι τούτοις. τρίπολις γοῦν ἡ πελαγονία ἐλέγετο. ἧς καὶ ἄζωρος ἦν καὶ ἐπὶ τῷ ἐριγῶνι πᾶσαι αἱ τῶν δευριοπῶν πόλεις ᾤκηντο. ὧν τὸ βρυάνιον καὶ ἀλαλκομεναὶ καὶ στύμβαρα. κύδριαι δὲ βρυγῶν. αἰγίνιον δὲ τυμφαίων. ὅμορον, αἰθικίᾳ καὶ τρίκκῃ. πλησίον δ' ἤδη τῆς τε μακεδονίας καὶ τῆς θετταλίας περὶ τὸ ποῖον ὄρος καὶ τὸν πίνδον, αἴθικές τε καὶ τοῦ πηνειοῦ πηγαί. ὧν ἀμφισβητοῦσι τυμφαῖοί τε καὶ ὑπὸ τῇ πίνδῳ θετταλοὶ, καὶ πόλις ὀξύνεια παρὰ τὸν ἴωνα ποταμὸν, ἀπέχουσα ἀζώρου τῆς τριπολίτιδος, σταδίους εἴκοσι καὶ ἑκατὸν, πλησίον δὲ καὶ ἀλαλκομεναὶ καὶ αἰγίνιον. καὶ εὔρωπος. καὶ αἱ τοῦ ἴωνος εἰς τὸν πηνειὸν συμβολαί. τότε μὲν οὖν ὡς εἶπον καίπερ οὖσα τραχεῖα καὶ ὀρῶν πλήρης, ταμάρου καὶ πολυανοῦ καὶ ἄλλων πλειόνων, ὅμως εὐανδρεῖ ἥ τε ἤπειρος πᾶσα καὶ ἡ ἰλλυρίς. νῦν δὲ τὰ πολλὰ μὲν ἐρημία κατέχει. τὰ δ' οἰκούμενα κωμηδὸν καὶ ἐν ἐρειπίοις λείπεται. ἐκλέλοιπε δέ πως καὶ τὸ μαντεῖον τὸ ἐν δωδώνῃ καθάπερ τἆλλα. ἔστι δὲ ὥς φησιν ἔφορος πελασγῶν ἵδρυμα. οἱ δὲ πελασγοὶ τῶν περὶ τὴν ἑλλάδα δυναστευσάντων, ἀρχαιότατοι λέγονται. καὶ ὁ ποιητής φησιν οὕτω.

» Ζεῦ ἄνα δωδωναῖε πελασγικέ. ὁ δ' ἡσίοδος,
» Δωδώνην φηγόν τε πελασγῶν ἕδρανον ἦεν.

Περὶ μὲν οὖν τῶν πελασγῶν, ἐν τοῖς τυρρηνικοῖς εἴρηται. περὶ δὲ δωδώνης, τοὺς μὲν περιοικοῦντας τὸ ἱερὸν διότι βάρβαροι, διασαφεῖ καὶ ὁ ὅμηρος ἐκ τῆς διαίτης, ἀνιπτόποδας. χαμαιεύνους λέγων. πότερον δὴ χρὴ λέγειν, ἑλλοὺς ὡς πίνδαρος, ἢ σελλοὺς ὡς ὑπονοοῦσι παρ' ὁμήρῳ κεῖσθαι, ἡ γραφὴ ἀμφίβολος οὖσα οὐκ ἐᾷ διισχυρίζεσθαι. φιλόχορος δέ φησι καὶ τὸν περὶ δωδώνην τόπον ὥσπερ τὴν εὔβοιαν ἑλλοπίαν κληθῆναι. καὶ γὰρ ἡσίοδον οὕτω λέγειν.

» Ἔστι τις ἑλλοπίη· πολυλήιος ἠδ' εὐλείμων.
» ἔνθάδε δωδώνη τις ἐπ' ἐσχατιῇ πεπόλισται.

Οἴονται δέ φησιν ὁ ἀπολλόδωρος ἀπὸ τῶν ἑλλῶν τῶν περὶ τὸ ἱερὸν, οὕτω καλεῖσθαι. τὸν μέντοι ποιητὴν οὕτω λέγειν ἑλλοὺς, ἑλλάς. ἑλλοὺς ὑπολαμβάνει τοὺς περὶ τὸ ἱερὸν, προσθεὶς ὅτι καὶ σελλήεντά τινα ὀνομάζει ποταμόν. ὀνομάζει μὲν οὖν ὅταν φῇ.

» Τηλόθεν ἐξ ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο σελλήεντος.

Ἐν δὲ θεσπρωτοῖς ἔφορος· ἀλλ' ἐν τοῖς ἐν τῇ ἠλείοις· ἐκεῖ γὰρ εἶναι τὸν σελλήεντα. ἐν δὲ θεσπρωτοῖς οὐδένα. οὐδ' ἐν μολοττοῖς. τὰ δὲ μυθευόμενα περὶ τῆς δρυὸς καὶ τῶν πελειῶν, καὶ εἴ τινα ἄλλα τοιαῦτα, καθάπερ καὶ περὶ δελφῶν, τὰ μὲν, ποιητικώτερά ἐστι, τὰ δ' οἰκεῖα τῆς νῦν περιοδείας. ἡ δωδώνη τοίνυν τὸ μὲν παλαιὸν ὑπὸ θεσπρωτοῖς ἦν. καὶ τὸ ὄρος ὁ τόμαρος, ἢ τμάρος, ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται, ὑφ' ᾧ κεῖται τὸ ἱερὸν, καὶ οἱ τραγικοί τε, καὶ πίνδαρος, θεσπρωτίδα εἰρήκασι τὴν δωδώνην. ὕστερον δὲ ὑπὸ μολοττοῖς ἐλέγετο. ἀπὸ δὲ τοῦ τομάρου τοὺς ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένους ὑποφήτας τοῦ διός. οὓς καὶ ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας καλεῖ, τομούρους φασὶ λεχθῆναι. καὶ ἐν μὲν τῇ ὀδυσσείᾳ, οὕτω γράφουσί τινες. ἅ φησιν ἀμφίλοχος, συμβουλεύων τοῖς μνηστῆρσι μὴ πρότερον ἐπιτίθεσθαι τῷ τηλεμάχῳ, πρὶν ἂν τὸν δία ἔρωνται.

» Ἢν μὲν καὶ νήσωσι διὸς μεγάλοιο τομοῦροι,
» Αὐτός τε κτανέω, τούς τ' ἄλλους πάλιν ἀνάξω.
» Εἰ δέ κ' ἀποτροπῆσι θεὸς, παύεσθαι ἄνωγα.

Βέλτιον γὰρ εἶναι τομούρους, ἢ θέμιστας γράφειν. οὐδαμοῦ γοῦν τὰ μαντεῖα θέμιστας λέγεσθαι παρὰ τῷ ποιητῇ, ἀλλὰ τὰς βουλὰς καὶ τὰ πολιτεύματα καὶ νομοθετήματα. τομούρους δ' εἰρῆσθαι, ἐπιτετμημένως τμαρούς. οἷον τομαροφύλακας. οἱ μὲν οὖν νεώτεροι λέγουσι τομόρους. ὁμήρῳ δ' ἁπλούστερον δεῖ δέχεσθαι, θέμιστας, καταχρηστικῶς καὶ βουλὰς τὰ προστάγματα. καὶ τὰ βουλήματα τὰ μαντικά, καθάπερ καὶ τὰ νόμιμα. τοιοῦτον γὰρ καὶ τὸ

» Ἐκ δρυὸς ὑψικόμοιο διὸς βουλὴν ἐπακοῦσαι.

Κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἄνδρες ἦσαν οἱ προφητεύοντες. καὶ τοῦτ' ἴσως καὶ ὁ ποιητὴς ἐμφαίνει. ὑποφήτας γὰρ καλεῖν, ἐν οἷς τάττοιντο καὶ οἱ προφῆται. ὕστερον δ' ἀπεδείχθησαν τρεῖς γραῖαι. ἐπειδὴ καὶ σύνναος τῷ διῒ προσαπεδείχθη καὶ ἡ διώνη. σουΐδας ἐν τοῖς θετταλοῖς μυθώδεις λόγους προσχαριζόμενος. ἐκεῖθέν τέ φησιν εἶναι τὸ ἱερὸν μετενηνεγμένον ἐκ τῆς περὶ σκότουσαν πελασγίας. ἔστι δ' ἡ σκότουσα τῆς πελασγιώτιδος θετταλίας. συνακολουθῆσαι δὲ γυναῖκας τὰς πλείστας. ὧν ἀπογόνους εἶναι τὰς νῦν προφήτιδας. ἀπὸ δὲ τούτου καὶ πελασγικὸν δία, κεκλῆσθαι. κινέας δ' ἔτι μυθωδέστερον.

## ὙΠΌΘΕΣΙΣ

ἐν τῷ ὀγδόῳ λέγει τὰ περὶ τῆς εὐρώπης· μακεδονίας τὰ λειπόμενα· καὶ ἑλλάδα πᾶσαν ὡς· ἐν ᾗ καὶ ἐγχρονίζει διὰ τὸ πολύγνωστον τῆς χώρας διακρίνων, καὶ συγκρινῆ ποιῶν· τὰ ἀδιακρίτως, καὶ ἀδιορίστως ἀπὸ τῶν ποιητῶν τε καὶ ἱστορικῶν περὶ τῶν ταύτῃ πόλεων εἰρημένα· καὶ μάλιστα ἐν καταλόγῳ τε καὶ ἄλλοθι πολλαχοῦ τῆς ποιήσεως.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ὈΓΔΟΟΝ.

Ἐπεὶ δ' ἐπελθόντες ἀπὸ τῶν τῆς εὐρώπης ἑσπερίων μερῶν, ὅσα τῇ θαλάττῃ περιέχεται τῇ ἐντὸς καὶ τῇ ἐκτὸς, τά τε βάρβαρα ἔθνη περιωδεύσαμεν πάντα ἐν αὐτῇ, μέχρι τοῦ τανάιδος, καὶ τῆς ἑλλάδος, οὐ πολὺ μέρος τῆς μακεδονίας, ἀποδώσωμεν νυνὶ τὰ λοιπὰ τῆς ἑλλαδικῆς γεωγραφίας, ἅπερ ὅμηρος μὲν πρῶτος, ἔπειτα καὶ ἄλλοι πλείους ἐπραγματεύσαντο. οἱ μὲν, ἰδίᾳ λιμένας, ἢ περίπλους, ἢ περιόδους γῆς, ἤ τι τοιοῦτον ἄλλο ἐπιγράψαντες ἐν οἷς καὶ τὰ ἑλλαδικὰ περιέχεται. οἱ δ' ἐν τῇ κοινῇ τῆς ἱστορίας γραφῇ χωρὶς ἀποδείξαντες τὴν τῶν ἠπείρων τοπογραφίαν, καθάπερ ἔφορός τε ἐποίησε καὶ πολύβιος. ἄλλοι δ' εἰς τὸν φυσικὸν τόπον, καὶ τὸν μαθηματικὸν προσέλαβόν τινα τῶν τοιούτων, καθάπερ ποσειδώνιος καὶ ἵππαρχος. τὰ μὲν οὖν τῶν ἄλλων, εὐδιαίτητα. τὰ δ' ὁμήρου σκέψεως δεῖται κριτικῆς, ποιητικῶς λέγοντος, καὶ οὐ τὰ νῦν, ἀλλὰ τ' ἀρχαῖα, ὧν ὁ χρόνος ἠμαύρωκε τὰ πολλά. ὅμως δ' οὖν δυνατὸν ἐγχειρητέον, ἀρξαμένοις ἀφ' ὧν περ ἀπελίπομεν. ἐτελεύτα δ' ἡμῖν ὁ λόγος ἀπὸ μὲν τῆς ἑσπέρας, καὶ τῶν ἄρκτων, εἰς τὰ ἠπειρωτικὰ ἔθνη, καὶ τὰ τῶν ἰλλυριῶν. ἀπὸ δὲ τῆς ἕω, εἰς τὰ τῶν μακεδόνων, μέχρι βυζαντίου. μετὰ δ' οὖν τοὺς ἠπειρώτας, καὶ τοὺς ἰλλυριοὺς τῶν ἑλλήνων ἀκαρνᾶνές εἰσι, καὶ αἰτωλοὶ, καὶ λοκροὶ ὀζόλαι. πρὸς δὲ τούτοις φωκεῖς καὶ βοιωτοί. τούτοις δ' ἀντίπορθμος ἡ πελοπόννησος. ἀπολαμβάνουσα μεταξὺ τὸν κορινθιακὸν κόλπον, καὶ σχηματίζουσά τε τοῦτον, καὶ σχηματιζομένη ὑπ' αὐτοῦ. μετὰ δὲ μακεδονίαν, θετταλοὶ μέχρι μαλιέων, καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐκτὸς ἰσθμοῦ, καὶ αὐτῶν τῶν ἐντός. ἑλληνικὰ τούτοις μὲν οὖν πολλὰ ἔθνη γεγένηται. τὰ δ' ἀνωτάτω τοσαῦτα, ὅσα καὶ διαλέκτους παρειλήφαμεν τὰς ἑλληνίδας. τούτων δ' αὐτῶν τεττάρων οὐσῶν, καὶ τὴν μὲν ἰάδα τῇ παλαιᾷ ἀτθίδι τὴν αὐτὴν φαμέν. καὶ γὰρ ἴωνες ἐκαλοῦντο οἱ τότε ἀττικοί. καὶ ἐκεῖθεν εἰσὶν οἱ τὴν ἀσίαν ἐποικήσαντες ἴωνες, καὶ χρησάμενοι τῇ νῦν λεγομένῃ γλώττῃ ἰάδι. τὴν δὲ δωρίδα τῇ αἰολίδι. πάντες γὰρ οἱ ἐκτὸς ἰσθμοῦ πλὴν ἀθηναίων καὶ μεγαρέων, καὶ τῶν περὶ παρνασὸν δωριέων, καὶ νῦν ἔτι αἰολεῖς καλοῦνται. καὶ τοὺς δωριέας δὲ ὀλίγους ὄντας, καὶ τραχυτάτην οἰκοῦντας χώραν, εἰκὸς διὰ τὸ ἀνεπίμικτον παρατρέψαι τὴν γλῶτταν, καὶ τὰ ἄλλα ἔθη πρὸς τὸ ὁμογενὲς, ὁμογενεῖς πρότερον ὄντας. τὸ δ' αὐτὸ καὶ τοῖς ἀθηναίοις συνέβη. λεπτὴν τε καὶ τραχεῖαν οἰκοῦντας χώραν, ἀπορθήτους μὲν εἶναι, καὶ αὐτόχθονας νομισθῆναι διὰ τοῦτό φησιν ὁ θουκυδίδης. κατέχοντας τὴν αὐτὴν ἀεὶ μηδενὸς ἐξελαύνοντος αὐτοὺς μὴ δ' ἐπιθυμοῦντος ἔχειν τὴν ἐκείνων. τοῦτο τοίνυν αὐτὸ καὶ τοῦ ἑτερογλώττου καὶ τοῦ ἑτεροεθνοῦς, αἴτιον, ὡς εἰκὸς ὑπῆρξε καίπερ ὀλίγοις οὖσιν. οὕτω δὲ τοῦ αἰολικοῦ ἔθνους ἐπικρατοῦντος ἐν τοῖς ἐκτὸς ἰσθμοῦ, καὶ οἱ ἐντὸς αἰολεῖς πρότερον ἦσαν. εἶτ' ἐμίχθησαν. ἰώνων μὲν ἐκ τῆς ἀττικῆς τὸν αἰγιαλὸν κατασχόντων. τῶν δ' ἡρακλειδῶν τοὺς δωριέας καταγαγόντων. ὑφ' ὧν τά τε μέγαρα ᾠκίσθησαν, καὶ πολλαὶ τῶν ἐν τῇ πελοποννήσῳ πόλεων. οἱ μὲν οὖν ἴωνες ἐξέπεσον πάλιν ταχέως ὑπὸ ἀχαιῶν αἰολικοῦ ἔθνους. ἐλείφθη δ' ἐν τῇ πελοποννήσῳ τὰ δύο ἔθνη. τό τε αἰολικὸν καὶ τὸ δωρικόν. ὅσοι μὲν οὖν ἧττον τοῖς δωριεῦσιν ἐπεπλέκοντο καθάπερ συνέβη τοῖς τε ἀρκάσι καὶ ἠλείοις. τοῖς μὲν, ὀρεινοῖς τελέως οὖσι, καὶ οὐκ ἐμπεπτωκόσιν εἰς τὸν κλῆρον. τοῖς δ' ἱεροῖς νομισθεῖσι τοῦ ὀλυμπίου διὸς, καὶ καθ' αὑτοὺς εἰρήνην ἄγουσι

πολὺν χρόνον. ἄλλως τε καὶ τοῦ αἰολικοῦ γένους οὖσι, καὶ δεδεγμένοις τὴν ὀξύλῳ συγκατελθοῦσαν στρατιὰν περὶ τὴν τῶν ἡρακλειδῶν κάθοδον, οὗτοι αἰολιστὶ διηλέχθησαν. οἱ δ᾽ ἄλλοι μικτῇ τινι ἐχρήσαντο τῇ ἐξ ἀμφοῖν. οἱ μὲν, μᾶλλον. οἱ δ᾽ ἧττον αἰολίζοντες, σχεδὸν δ᾽ ἔτι καὶ νῦν κατὰ πόλεις, ἄλλοι ἄλλως διαλέγονται. δοκοῦσι δὲ δωρίζειν ἅπαντες, διὰ τὴν συμβᾶσαν ἐπικράτειαν. τοιαῦτα μὲν οὖν τὰ τῶν ἑλλήνων ἔθνη, καὶ οὕτως ὡς τύπῳ εἰπεῖν ἀφωρισμένα. λέγωμεν δὴ ἴδια ἀναλαβόντες ὅσα χρὴ τρόπον τῇ τάξει περὶ αὐτῶν. ἔφορος μὲν οὖν ἀρχὴν εἶναι τῆς ἑλλάδος τὴν ἀκαρνανίαν εἶναί φησιν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων μερῶν, ταύτην γὰρ συνάπτειν πρώτην τοῖς ἠπειρωτικοῖς ἔθνεσιν. ἀλλ᾽ ὥσπερ οὗτος τῇ παραλίᾳ χρώμενος μέτρῳ, ἐντεῦθεν ποιεῖται τὴν ἀρχὴν, ἡγεμονικόν τι τὴν θάλατταν κρίνων πρὸς τὰς τοπογραφίας, ἐπεὶ ἄλλως γ᾽ ἐνεχώρει κατὰ τὴν μακεδόνων, καὶ θετταλῶν τὴν ἀρχὴν ἀποφαίνεσθαι τῆς ἑλλάδος, οὕτω καὶ ἡμῖν προσήκει ἀκολουθοῦσι τῇ φύσει τῶν τόπων, σύμβολον ποιεῖσθαι τὴν θάλασσαν. αὕτη δ᾽ ἐκ τοῦ σικελικοῦ πελάγους προπεσοῦσα, τῇ μὲν, ἀναχεῖται πρὸς τὸν κορινθιακὸν κόλπον. τῇ δ᾽ ἀποτελεῖ χερρόνησον μεγάλην τὴν πελοπόννησον, ἰσθμῷ στενῷ κλειομένην. ἔστι δὲ ταῦτα δύο μέγιστα συστήματα τῆς ἑλλάδος. τό τε ἐντὸς ἰσθμοῦ, καὶ τὸ ἐκτὸς πυλῶν μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ πηνειοῦ. τοῦτο δ᾽ ἐστὶ τὸ θετταλικόν. ἔστι δὲ καὶ μεῖζον, καὶ ἐπιφανέστερον τὸ ἐντὸς ἰσθμοῦ. σχεδὸν δέ τι, καὶ ἀκρόπολίς ἐστιν ἡ πελοπόννησος συμπάσης τῆς ἑλλάδος. χωρὶς γὰρ τῆς λαμπρότητος, καὶ δυνάμεως τῶν ἐνοικησάντων ἐθνῶν, αὐτὴ ἡ τῶν τόπων θέσις, ὑπογράφει τὴν ἡγεμονίαν ταύτην. κόλποις γὰρ καὶ ἄκραις πολλαῖς, καὶ τοῖς σημειωδεστάτοις χερρονήσοις μεγάλαις. διαπεποικιλμένην ἐκ διαδοχῆς ἑτέρα τὴν ἑτέραν ἔχει. ἔστι δὲ πρώτη μὲν τῶν χερρονήσων ἡ πελοπόννησος. ἰσθμῷ κλειομένη, τετταράκοντα σταδίων. δευτέρα δὲ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα, ἧς ἰσθμός ἐστιν ὁ ἐκ παγῶν τῶν μεγαρικῶν. εἰς νίσαιαν τὸ μεγαρέων ἐπίνειον, ὑπερβολῆ σταδίων ἑκατὸν εἴκοσι ἀπὸ θαλάσσης ἐπὶ θάλασσαν. τρίτη δ᾽ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα. ἧς, ἰσθμὸς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ κρισσαίου κόλπου, μέχρι θερμοπυλῶν. ἡ δ᾽ ἐπινοουμένη εὐθεῖα γραμμὴ, ὅσον πεντακοσίων ὀκτὼ σταδίων. τὴν μὲν βοιωτίαν ἅπασαν ἐντὸς ἀπολαμβάνουσα. τὴν δὲ φωκίδα τέμνουσα λοξὴν καὶ τοὺς ἐπικνημιδίους. τετάρτη δὲ ἡ ἀπὸ τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου, διὰ τῆς οἴτης καὶ τῆς τραχινίας εἰς τὸν μαλιακὸν κόλπον καθήκοντα, ἔχουσα τὸν ἰσθμὸν, καὶ τὰς θερμοπύλας, ὅσον ὀκτακοσίων, ὄντα σταδίων. πλειόνων δ᾽ ἢ χιλίων ἄλλος ἐστὶν, ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ κόλπου τοῦ ἀμβρακικοῦ διὰ θετταλῶν καὶ μακεδόνων, εἰς τὸν θερμαῖον διήκων μυχόν. ὑπαγορεύει δή τινα τάξιν οὐ φαύλην, ἡ τῶν χερρονήσων διαδοχή. δεῖ δ᾽ ἀπὸ τῆς ἐλαχίστης ἄρξασθαι, καὶ ὡς ἐπιφανεστάτης. ἔστι τοίνυν ἡ πελοπόννησος ἐοικυῖα φύλλῳ πλατάνου τὸ σχῆμα. ἴση δὲ σχεδόν τι κατὰ μῆκος καὶ κατὰ πλάτος, ὅσων χιλίων τετρακοσίων σταδίων. τὸ μὲν, ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω. τοῦτο δ᾽ ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ χελωνάτα δι᾽ ὀλυμπίας καὶ τῆς μεγαλοπολίτιδος ἐπὶ τὸν ἰσθμόν. τὸ δ᾽ ἀπὸ τοῦ νότου πρὸς τὴν ἄρκτον. ὅ ἐστι τὸ ἀπὸ μαλεῶν δι᾽ ἀρκαδίας εἰς αἴγιον. ἡ δὲ περίμετρος μὴ κατακολπίζοντι, τετρακισχιλίων σταδίων, ὡς πολύβιος. ἀρτεμίδωρος δὲ καὶ τετρακοσίους προστίθησι. κατακολπίζοντι, δὲ πλείους τῶν ἑξακοσίων, ἐπὶ τοῖς πεντακισχιλίοις. ὁ δ᾽ ἰσθμὸς κατὰ τὸν διολκὸν, δι᾽ οὗ τὰ πορθμεῖα ὑπερνεολκοῦσιν ἀπὸ τῆς ἑτέρας εἰς τὴν ἑτέραν θάλατταν, εἴρηται, ὅτι τετταράκοντα σταδίων ἐστίν. ἔχουσι δὲ τῆς χερρονήσου ταύτης τὸ μὲν ἑσπέριον μέρος, ἠλεῖοι καὶ μεσσήνιοι. κλυζόμενοι τῷ σικελικῷ πελάγει. προσλαμβάνουσι δὲ καὶ τῆς ἑκατέρωθεν παραλίας, ἡ μὲν ἠλεία πρὸς ἄρκτον ἐπιστρέφουσα, καὶ τὴν ἀρχὴν τοῦ κορινθιακοῦ κόλπου μέχρι ἄκρας ἀράξου. καθ᾽ ἣν ἀντίπορθμός ἐστιν ἥ τε ἀκαρνανία, καὶ αἱ προκείμεναι νῆσοι, ζάκυνθος καὶ κεφαλληνία. καὶ ἰθάκη, καὶ ἐχινάδες. ὧν ἐστὶ καὶ τὸ δουλίχιον. τῆς δὲ μεσσηνίας τὸ πλέον, ἀνεωγμένον πρὸς νότον, καὶ τὸ λιβυκὸν πέλαγος, μέχρι τῶν καλουμένων θυρίδων πλησίον ταινάρου. ἑξῆς δὲ μετὰ τὴν ἠλείαν, ἐστὶ τὸ τῶν ἀχαιῶν ἔθνος πρὸς ἄρκτους βλέπον, καὶ τῷ κορινθιακῷ κόλπῳ παρατεῖνον. τελευτᾷ δ᾽ εἰς τὴν σικυωνίαν. ἐντεῦθεν δὲ σικυὼν καὶ κόρινθος ἐκδέχεται μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ. μετὰ δὲ τὴν μεσσηνίαν ἡ λακωνικὴ, καὶ ἡ ἀργεία. μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ καὶ αὐτή. κόλποι δ᾽ ἐνταῦθα ὅ τε μεσσηνιακὸς, καὶ ὁ λακωνικός. καὶ τρίτος ὁ ἀργολικός. τέταρτος δ᾽ ὁ ἑρμιονικὸς, καὶ σαρωνικὸς, οἱ δὲ, σαλαμινιακὸν καλοῦσιν. ὧν τοὺς μὲν, ἡ λιβυκή. τοὺς δ᾽ ἡ κρητικὴ θάλασσα πληροῖ, καὶ τὸ μυρτῷον πέλαγος. τινὲς δὲ καὶ τὸν σαρωνικὸν πόρον πέλαγος ὀνομάζουσι, μέση δ᾽ ἐστὶν ἡ ἀρκαδία, πᾶσιν ἐπικειμένη, καὶ γειτνιῶσα τοῖς ἄλλοις ἔθνεσιν. ὁ δὲ κορινθιακὸς κόλπος, ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ εὐήνου. τινὲς δέ φασιν ἀχελώου τοῦ ὁρίζοντος ἀκαρνᾶνας, καὶ αἰτωλοὺς καὶ ἀράξους. ἐνταῦθα γὰρ πρῶτον ἀξιόλογον συναγωγὴν λαμβάνουσι πρὸς ἀλλήλας, αἱ ἑκατέρωθεν ἀκταί. προϊοῦσαι δὲ πλέον, τελέως συμπίπτουσι κατὰ τὸ ῥίον, καὶ ἀντίρριον. ὅσον δὴ πέντε σταδίων ἀπολείπουσαι πορθμόν. ἔστι δὲ τὸ μὲν ῥίον, τῶν ἀχαιῶν. ἀλιτενὴς ἄκρα. δρεπανοειδῆ τινα ἐπιστροφὴν εἰς τὸ ἐντὸς ἔχουσα. καὶ δὴ καλεῖται δρέπανον. κεῖται δὲ μεταξὺ πατρῶν καὶ αἰγίου. ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα. τὸ δ᾽ ἀντίρριον, ἐν μεθορίοις αἰτωλίας, καὶ λοκρίδος ἵδρυται. καλοῦσι δὲ μολύκριον ῥίον. εἶτα ἐντεῦθεν διίσταται πάλιν ἡ παραλία μετρίως ἑκατέρωθεν. προϊοῦσα δ᾽ εἰς τὸν κρισσαῖον

κόλπον ἐνταῦθα τελευτᾷ, κλειόμενον τοῖς προσεσπερίοις, τῆς βοιωτίας καὶ τῆς μεγαρικῆς τέρμασιν. ἔχει δὲ περίμετρον ὁ κορινθιακὸς κόλπος, ἀπὸ μὲν τοῦ εὐήνου μέχρι τοῦ ἀράξου ποταμοῦ σταδίων δισχιλίων διακοσίων τετταράκοντα. εἰ δ' ἀπὸ τοῦ ἀχελώου, πλεονάζοι ἂν που ἑκατὸν σταδίοις. ἀπὸ δὲ ἀχελώου ἐπὶ τὸν εὔηνον ἀκαρνᾶνές εἰσιν. εἶθ' ἑξῆς ἐπὶ τὸ ἀντίρριον, αἰτωλοί. τὸ δὲ λοιπὸν μέχρι ἰσθμοῦ, φωκέων ἐστὶ, καὶ βοιωτῶν, καὶ τῆς μεγαρίδος στάδιοι χίλιοι ἑκατὸν εἴκοσι δυοῖν δέοντες. ἡ δὲ ἀπὸ ἀντιρρίου μέχρι ἰσθμοῦ θάλαττα, ἀλκυονὶς καλεῖται. μέρος οὖσα τοῦ κρισαίου κόλπου. διέχουσα ἀπὸ τοῦ ἰσθμοῦ μέχρι τοῦ ἀράξου, σταδίους τριάκοντα. ἐπὶ τοῖς, ὡς μὲν οὖν τύπῳ εἰπεῖν, τοιαύτη τις καὶ τοσαύτη ἡ πελοποννήσου θέσις ἐστὶ τῆς ἀντιπόρθμου, τῆς μέχρι τοῦ μυχοῦ. τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ μεταξὺ ἀμφοῖν κόλπος.

Μετὰ δὲ ταῦτα τὰ καθ' ἕκαστα ἐροῦμεν τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς ἠλείας ποιησάμενοι. νῦν μὲν δὴ πᾶσαν ἠλείαν ὀνομάζουσι, τὴν μεταξὺ ἀχαιῶν τε καὶ μεσσηνίων παραλίαν, ἔχουσαν εἰς τὴν μεσόγαιαν τὴν πρὸς ἀρκαδίᾳ τῇ κατὰ φολόην, καὶ ἀζᾶνας, καὶ παρρασίους, τὸ δὲ παλαιὸν, εἰς πλείους δυναστείας διῄρητο. εἶτ' εἰς δύο, τήν τε τῶν ἐπειῶν καὶ τὴν ὑπὸ νέστορι τῷ νηλέως. καθάπερ καὶ ὅμηρος εἴρηκε. τὴν μὲν, ἐπειῶν ὀνομάζουσι πόλιν. τὴν δὲ, παρ' ἤλιδα δίαν, ὅθι κρατέουσιν ἐπειοί. τὴν δ' ὑπὸ τῷ νέστορι, πύλον. δι' ἧς τὸν ἀλφειὸν, ῥεῖν φησιν,

» Ἀλφειοῦ, ὅς τ' εὐρὺ ῥέει πυλίων διὰ γαίης. Πύλον μὲν οὖν καὶ πόλιν οἶδεν ὁ ποιητής.

» Οἱ δὲ, πύλον νηλῆος ἐϋκτίμενον πτολίεθρον ἷξον. Οὐ διὰ τῆς πόλεως δὲ οὐδὲ παρ' αὐτὴν ῥεῖ ὁ ἀλφειός. ἀλλὰ παρ' αὐτὴν μὲν ἕτερος. ὃν οἱ μὲν, παμισὸν, οἱ δὲ, ἄμαθον καλοῦσιν. ἀφ' οὗ καὶ ἡ πύλος ἠμαθόεις εἰρῆσθαι δοκεῖ. διὰ δὲ τῆς χώρας τῆς ἠλείας ὁ ἀλφειός. ἦλις δὲ ἡ νῦν πόλις, οὔπω ἔκτιστο καθ' ὅμηρον. ἀλλ' ἡ χώρα κωμηδὸν ᾠκεῖτο. ἐκαλεῖτο δὲ κοίλη ἦλις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος. τοιαύτη γάρ ἐστιν ἡ πλείστη καὶ ἀρίστη. ὀψὲ δέ ποτε συνῆλθον εἰς τὴν νῦν πόλιν τὴν ἦλιν, μετὰ τὰ περσικὰ ἐκ πολλῶν δήμων. σχεδὸν δὲ καὶ τοὺς ἄλλους τόπους τοὺς κατὰ πελοπόννησον πλὴν ὀλίγων, οὓς κατέλεξεν ὁ ποιητὴς, οὐ πόλεις, ἀλλὰ χώρας ὀνομάζει. συστήματα δήμων ἐχούσας ἑκάστην πλείω. ἐξ ὧν ὕστερον αἱ γνωριζόμεναι πόλεις συνῳκίσθησαν. οἷον τῆς ἀρκαδίας μαντίνεια μὲν, ἐκ πέντε δήμων ὑπ' ἀργείων συνῳκίσθη. τεγέα δ' ἐξ ἐννέα. ἐκ τοσούτων δὲ καὶ ἡραία ὑπὸ κλεομβρότου, ἢ ὑπὸ κλεωνύμου. ὡς δ' αὔτως αἴγιον, ἐξ ἑπτὰ ἢ ὀκτὼ δήμων συνεπολίσθη. πάτραι δὲ ἐξ ἑπτά. δύμη δὲ ἐξ ὀκτώ. οὕτω δὲ καὶ ἡ ἦλις, ἐκ τῶν περιοικίδων συνεπολίσθη μία τούτων. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς πόλεως ὁ πηνειὸς ποταμὸς παρὰ τὸ γυμνάσιον αὐτῆς. ἔπραξαν δὲ τοῦτο ἠλεῖοι χρόνοις ὕστερον πολλοῖς τῆς εἰς αὐτοὺς μεταστάσεως τῶν χωρίων τῶν ὑπὸ τῷ νέστορι. ἦν δὲ ταῦτα ἥτε πισᾶτις ἧς ἡ ὀλυμπία μέρος, καὶ ἡ τριφυλία, καὶ ἡ τῶν καυκώνων. τριφύλιοι δ' ἐκλήθησαν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ἀπὸ τοῦ τρία φῦλα συνεληλυθέναι. τό τε τῶν ἀπ' ἀρχῆς ἐπειῶν, καὶ τὸ τῶν ἐποικησάντων ὕστερον μινυῶν, καὶ τῶν ὕστατα ἐπικρατησάντων ἠλείων. οἱ δ' ἀντὶ τῶν μινυῶν, ἀρκάδας φασὶν ἀμφισβητήσαντας τῆς χώρας πολλάκις, ἀφ' οὗ καὶ ἀρκαδικὸς πύλος ἐκλήθη ὁ αὐτὸς καὶ τριφυλιακός. ὅμηρος δὲ ταύτην ἅπασαν τὴν χώραν μέχρι μεσσήνης καλεῖ πύλον, ὁμωνύμως τῇ πόλει. ὅτι δὲ διῄρητο ἡ κοίλη ἦλις ἀπὸ τῶν ὑπὸ τῷ νέστορι τόπων, ὁ τῶν νεῶν κατάλογος δηλοῖ τοῖς τῶν ἡγεμόνων, καὶ τῶν κατοικιῶν ὀνόμασι. λέγω δὲ ταῦτα, συμβάλλων τά τε νῦν, καὶ τὰ ὑφ' ὁμήρου λεγόμενα. ἀνάγκη γὰρ ἀντεξετάζεσθαι ταῦτα ἐκείνοις διὰ τὴν τοῦ ποιητοῦ δόξαν, καὶ συντροφίαν πρὸς ἡμᾶς. τό τε νομίζοντος ἑκάστου κατορθοῦσθαι τὴν παροῦσαν πρόθεσιν, ὅταν ἢ μηδὲν ἀντιπίπτῃ τοῖς οὕτω σφόδρα πιστευθεῖσι περὶ τῶν αὐτῶν λόγοις. δεῖ δὲ τά τε ὄντα λέγειν, καὶ τὰ τοῦ ποιητοῦ παρατιθέντας ἐφ' ὅσον προσήκει προσκοπεῖν. ἔστι δ' ἄκρα τις τῆς ἠλείας πρόσβορος ἀπὸ ἑξήκοντα σταδίων δύμης ἀχαϊκῆς πόλεως ἄραξος. ταύτην μὲν οὖν ἀρχὴν τίθεμεν τῆς τῶν ἠλείων παραλίας, μετὰ δὲ ταύτην ἐστὶν ἐπὶ ἑσπέραν προϊοῦσι, τὸ τῶν ἠλείων ἐπίνειον ἡ κυλλήνη. ἀνάβασιν ἔχουσα ἐπὶ τὴν νῦν πόλιν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων. μέμνηται δὲ τῆς κυλλήνης ταύτης καὶ ὅμηρος λέγων, κυλλήνιον ἀρχὸν ἐπειῶν. οὐ γὰρ ἀπὸ τοῦ ἀρκαδικοῦ ὄρους ὄντα ἔμελλεν ἡγεμόνα τῶν ἐπειῶν ἀποφῆναι. ἔστι δὲ καὶ κώμη μετρία τὸν ἀσκληπιὸν ἔχουσα τὸν κολώτου, θαυμαστὸν ἰδεῖν ξόανον ἐλεφάντινον. μετὰ δὲ κυλλήνην ἀκρωτήριον ὁ χελωνάτας. δυσμικώτατον τῆς πελοποννήσου σημεῖον, πρόκειται δ' αὐτοῦ νησία βραχέα. ἐν μεθορίοις τῆς τε κυλλήνης καὶ ἤλιδος, καὶ τῆς τῶν πισατῶν. ὅθεν εἰς κεφαλληνίαν πλέοντι ἐκ κυλλήνης στάδιοι ὀγδοήκοντα. αὐτοῦ δέ που καὶ ὁ ἐλίσσων, ἢ ἔλισσα ῥεῖ ποταμὸς ἐν τῇ λεχθείσῃ μεθορίᾳ. μεταξὺ δὲ τοῦ χελωνάτα, καὶ τῆς κυλλήνης ὅ τε πηνειὸς ἐκδίδωσι ποταμὸς, καὶ ὁ σελλήεις ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγόμενος ῥέων ἐκ τῆς φολόης. ἐφ' ὧν ἔφυρα πόλις. ἑτέρα τῆς θεσπρωτῆς καὶ θετταλικῆς, καὶ τῆς κορίνθου, τετάρτη τις ἐπὶ τῇ ὁδῷ κειμένη τῇ ἐπὶ θαλασσίωνα. ἤτοι ἡ αὐτὴ οὖσα τῇ βοινωᾷ. τὴν γὰρ οἰνόην οὕτω καλεῖν εἰώθασιν ἢ πλησίον ἐκείνης. διέχουσα τῆς ἠλείων πόλεως σταδίων ἑκατὸν εἴκοσι. ἐξ ἧς ἡ τληπολέμου ἡρακλῆος δοκεῖ λέγεσθαι μήτηρ. ἐκεῖ γὰρ μᾶλλον αἱ τοῦ ἡρακλέους στρατεῖαι.

» Τὴν ἄγετ' ἐξ ἐφύρης ποταμοῦ ἀπὸ σελλήεντος.

Πρὸς ἐκείναις τε, οὐδεὶς ποταμὸς σελλήεις. καὶ ὁ τοῦ μέγητος.
Τόν ποτε φυλεὺς

» Ἤγαγεν ἐξ ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο σελλήεντος.

Καὶ ἑξῆς τὰ φάρμακα τὰ ἀνδροφόνα. εἰς ἔφυραν γὰρ ἀφῖχθαι φησὶ τὸν ὀδυσσέα, φάρμακον ἀνδροφόνον διζήμενον. καὶ τὸν τηλέμαχον οἱ μνηστῆρες. ἠὲ καὶ εἰς ἔφυραν φασὶν, ὄφρ' ἔνθεν θυμοφθόρα φάρμακ' ἐνείκῃ. καὶ γὰρ αὐτὴν αὐγέου θυγατέρα τοῦ τῶν ἐπειῶν βασιλέως, ὁ νέστωρ ἐν τῇ διηγήσει τοῦ πρὸς αὐτοὺς πολέμου φαρμακίδα εἰσάγει, πρῶτος ἐγὼν ἕλον ἄνδρα, φήσας ἄνδρα μούλιον αἰχμητήν. γαμβρὸς δ' ἦν αὐγείαο. πρεσβυτάτην δὲ θυγατέρα εἶχεν.

» Ἣ τόσα φάρμακα ᾔδη ὅσα τρέφει εὐρεῖα χθών.

Ἔστι δὲ καὶ περὶ σικυῶνα σελλήεις ποταμός. καὶ ἔφυρα πλησίον κώμη. καὶ ἐν τῇ ἀγραίᾳ τῆς αἰτωλίας, ἔφυρα κώμη. οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς, ἔφυροι. καὶ ἄλλοι οἱ περραιβῶν πρὸς μακεδονίᾳ. καὶ οἱ κρανώνιοι, καὶ οἱ θεσπρωτικοί. οἱ ἐκ κιχύρου τῆς πρότερας ἐφύρης. ἀπολλόδωρος δὲ διδάσκων ὃν τρόπον ὁ ποιητὴς εἴωθε διαστέλλεσθαι τὰς ὁμωνυμίας. οἷον ἐνθάδ' ὀρχομενοῦ, τὸν μὲν ἀρκαδικὸν πολύμηλον καλῶν. τὸν δὲ βοιωτικὸν μινύειον, καὶ σάμον θρακίην συντιθεὶς μεσσηγύς τε σάμοιο καὶ ἴμβρου. ἵνα χωρίσῃ ἀπὸ τῆς ἰωνικῆς, οὕτω φησὶ καὶ τὴν θεσπρωτικὴν ἔφυραν διαστέλλεσθαι τῷ τηλόθεν. καὶ τῷ, ποταμοῦ ἄπο σελλήεντος. ταῦτα δ' οὐχ ὁμολογεῖ τοῖς ὑπὸ τοῦ σκηψίου δημητρίου λεγομένοις. παρ' οὗ μεταφέρει τὰ πλεῖστα. ἐκεῖνος γὰρ οὔ φησιν εἶναι σελλήεντα ἐν θεσπρωτοῖς ποταμόν. ἀλλ' ἐν τῇ ἠλείᾳ παρὰ τὴν ἐκεῖ ἔφυραν, ὡς προείπομεν. τοῦτο τε οὖν εἴρηκε σκέψεως δεόμενον, καὶ περὶ τῆς οἰχαλίας, ὅτι φησὶν οὐ μιᾶς οὔσης, μίαν εἶναι πόλιν εὐρύτου οἰχαλιῆος. δῆλον οὖν, ὅτι τὴν θετταλικὴν ἐφ' ἧς φησιν.

» Οἵ τ' ἔχον οἰχαλίην πόλιν εὐρύτου οἰχαλιῆος.

Τίς οὖν ἐστιν, ἐξ ἧς ὁρμηθέντα αἱ μοῦσαι αὐτώμεναι θάμυριν τὸν θρήϊκα παῦσαν ἀοιδῆς. φησὶ γὰρ, οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' εὐρύτου οἰχαλιῆος. εἰ μὲν γὰρ ἡ θετταλική, οὐκ εὖ πάλιν ὁ σκήψιος ἀρκαδικήν τινα λέγων, ἣν νῦν ἀνδανίαν καλοῦσιν. εἰ δ' οὗτος εὖ, καὶ ἡ ἀρκαδικὴ πόλις εὐρύτου εἴρηται. ὥστ' οὐ μία μόνον. ἐκεῖνος δὲ μίαν φησί. μεταξὺ δὲ τῆς τοῦ μινυειοῦ καὶ τῆς σελλήεντος ἐκβολῆς πύλος ᾤκεῖτο, κατὰ τὸ σκόλλιον. οὐχ ἡ τοῦ νέστορος πόλις. ἀλλ' ἑτέρα τις ἡ πρὸς τὸν ἀλφειόν. ἧς οὐδὲν κοινώνημα. οὐ δὲ τῇ πρὸς τὸ παμεισόν, εἴτε ἄμαθον χρὴ καλεῖν. βιάζονται δ' ἔνιοι μνηστευόμενοι τὴν νέστορος δόξαν καὶ τὴν εὐγένειαν. τριῶν γὰρ πύλων ἱστορουμένων ἐν πελοποννήσῳ, καθ' ὅτι καὶ τὸ ἔπος εἴρηται τοῦτο.

» Ἔστι πύλος πρὸ πύλοιο. πύλος γε μὲν ἐστί.

Καὶ ἄλλος. τούτου τε καὶ τοῦ λεπρεατικοῦ τοῦ ἐν τριφυλίᾳ, τρίτου δὲ τοῦ μεσσηνιακοῦ κατὰ κορυφάσιον, ἕκαστοι τὴν παρὰ σφίσιν ἠμαθόεντα πειρῶνται δεικνύναι. καὶ τὴν τοῦ νέστορος πατρίδα τοῦτον ἀποφαίνουσιν. οἱ μὲν οὖν πολλοὶ τῶν ἑτέρων συγγραφέων καὶ ποιητῶν μεσσήνιον φασὶ τὸν νέστορα. τῷ σωζομένῳ μέχρι εἰς αὐτοὺς προστιθέμενοι. οἱ δ' ὁμηρικώτεροι τοῖς ἔπεσιν ἀκολουθοῦντες, τοῦτον εἶναι φασὶ τὸν τοῦ νέστορος πύλον. οὗ τὴν χώραν διέξεισιν ὁ ἀλφειός. διέξεισι δὲ τὴν πισάτιν καὶ τριφυλίαν. οἱ δ' οὖν ἐκ τῆς κοίλης ἤλιδος, καὶ τοιαύτην φιλοτιμίαν προσετίθεσαν τῷ παρ' αὐτοῖς πύλῳ, καὶ γνωρίσματα δεικνῦντες, γέρανον τόπον, καὶ γέροντα ποταμόν, καὶ ἄλλον γερήνιον. εἶτ' ἀπὸ τούτων ἐνθάδε πως γερήνιον εἰρῆσθαι πιστούμενοι τὸν νέστορα. τοῦτο δὲ ταὐτὸν καὶ οἱ μεσσήνιοι πεποιήκασι. καὶ πιθανώτεροί γε φαίνονται. μᾶλλον γὰρ γνώριμα φασὶν εἶναι τὰ παρ' ἐκείνοις γέρηνα συνοικούμενά ποτε εὖ. τοιαῦτα μὲν τὰ περὶ τὴν κοίλην ἦλιν ὑπάρχουσι νυνί. ὁ δὲ ποιητὴς εἰς τέσσαρα μέρη διελὼν τὴν δὲ τὴν χώραν, τέτταρας δὲ καὶ τοὺς ἡγεμόνας εἰπὼν, οὐ σαφῶς εἴρηκεν.

» Οἳ δ' ἄρα, βουπράσιόν τε καὶ ἤλιδα δῖαν ἔναιον.

Καὶ ἑξῆς. ἕως τοῦ, πολέες δ' ἔμβαινον ἐπειοί. τὸ μὲν γὰρ ἐπειοὺς ἀμφοτέρους προσαγορεύειν τούς τε βουπρασιεῖς καὶ τοὺς ἠλείους, ἠλείους δὲ μηκέτι καλεῖν τοὺς βουπρασιεῖς, οὐ τὴν ἠλείαν δόξειεν ἂν εἰς τέσσαρα μέρη διαιρεῖν. ἀλλὰ τὴν τῶν ἐπειῶν. εἰς ἣν δύο μέρη διεῖλε πρότερον. οὐ δ' ἂν μέρος εἴη τῆς ἤλιδος τὸ βουπράσιον. ἀλλὰ τῶν ἐπειῶν μᾶλλον. ὅτι γὰρ ἐπειοὺς καλεῖ τοὺς βουπρασιεῖς, δῆλον.

» Ὡς ὁπότε κρείον τ' ἀμαρυγκέα θάπτον ἐπειοὶ

Βουπρασίῳ. τὸ δὲ βουπράσιον εἶναί τινα χώραν τῆς ἠλείας κατοικίαν ἔχουσαν ὁμώνυμον. νυνὶ δὲ φαίνεται τῆς ἤλιδος ὂν μέρος καὶ τοῦτο. πάλιν δὲ τῷ συγκαταριθμεῖσθαι βουπράσιον καὶ ἤλιδα δῖαν λέγοντα, εἶτ' εἰς τέσσαρας διαιρεῖν μερίδας, ὡς ἂν κοινῷ δοκεῖ τῷ τε βουπρασίῳ, καὶ τῇ ἤλιδι αὐτὰς τέσσαρας μερίδας ὑποτάττειν, ἦν δ' ὡς ἔοικε κατοικία τῆς ἠλείας τὸ βουπράσιον ἀξιόλογος. ἣ νῦν οὐκέτ' ἐστίν, ἡ δὲ χώρα καλεῖται μόνον οὕτως ἡ ἐνθάδε τῆς ὁδοῦ, τῆς ἐνθάδε δύμην ἐξ ἤλιδος τῆς νῦν πόλεως. ὑπολάβοι δ' ἄν τις καὶ ὑπεροχήν τινα ἔχειν τότε τὸ βουπράσιον παρὰ τὴν ἦλιν ὡς καὶ οἱ ἐπειοὶ παρὰ τούτους. ὕστερον δ' ἀντ' ἐπειῶν ἠλεῖοι ἐκλήθησαν. καὶ τὸ βουπράσιον μὲν δὴ μέρος ἦν τῆς ἤλιδος. ποιητικῷ δέ τινι σχήματι συγκαταλέγειν τὸ μέρος τῷ ὅλῳ φασὶ τὸν ὅμηρον.

» -ὡς τὸ, ἀν᾽ ἑλλάδα καὶ μέσον ἄργος.
» Καὶ ἀν᾽ ἑλλάδα παρθένω τε.
Καὶ κουρῆτες τ᾽ ἐμάχοντο καὶ αἰτωλοί.
» Καὶ οἳ δ᾽ ἐκ δουλιχίοιο, ἐχινάων θ᾽ ἱεράων.
Καὶ γὰρ τὸ δουλίχιον, τῶν ἐχινάδων. χρῶνται δὲ καὶ οἱ νεώτεροι. ἱππῶναξ.
» Κυπρίων βέκος φαγοῦσι καὶ ἀμαθουσίων πυρόν.
Κύπριοι γὰρ καὶ οἱ ἀμαθούσιοι. καὶ ἀλκμὰν δέ,
» Κύπρον ἱμερτὰν λιποῖσα καὶ πάφον περιρρύταν, Καὶ αἰσχύλος.
» Κύπρου πάφου τ᾽ ἔχουσα πάντα κλῆρον.

Εἰ δ᾽ οὐκ εἴρηκεν ἐπειοὺς τοὺς βουπρασίους, οὐδ᾽ ἄλλα πολλὰ τῶν ὄντων φήσομεν. ἀλλὰ τοῦτ᾽ οὐκ ἔστιν ἀπόδειξις τοῦ μὴ εἶναι. ἀλλὰ τοῦ μὴ εἰπεῖν μόνον. ἑκαταῖος δ᾽ ὁ μιλήσιος ἑτέρους λέγει τῶν ἠλείων τοὺς ἐπειούς, τῷ γοῦν ἡρακλεῖ συστρατεῦσαι τοὺς ἐπειοὺς ἐπὶ αὐγέαν καὶ συνανελεῖν αὐτῷ τόν τε αὐγέαν καὶ τὴν ἦλιν. φησὶ δὲ καὶ τὴν δύμην, ἐπειΐδα καὶ ἀχαιΐδα. πολλὰ μὲν οὖν καὶ μὴ ὄντα λέγουσιν οἱ ἀρχαῖοι συγγραφεῖς. συντεθραμμένοι τῷ ψεύδει διὰ τῆς μυθογραφίας. διὰ δὲ τοῦτο καὶ οὐχ ὁμολογοῦσι πρὸς ἀλλήλους περὶ τῶν αὐτῶν. οὐ μὴν ἄπιστον. οὐδ᾽ εἴποτε τοῖς ἠλείοις διάφοροι ὄντες οἱ ἐπειοὶ καὶ ἑτερόεθνεῖς εἰς ταυτὸ συνῆλθον κατ᾽ ἐπικράτειαν. καὶ κοινὴν ἐνέμοντο πολιτείαν. ἐπεκράτουν δὲ καὶ μέχρι δύμης. ὁ μὲν γὰρ ποιητὴς οὐκ ὠνόμακε τὴν δύμην. οὐκ ἀπεικὸς δ᾽ ἐστί, τότε μὲν αὐτὴν ὑπὸ τοῖς ἐπειοῖς ὑπάρξαι, ὕστερον δὲ τοῖς ἴωσιν, ἢ μὴ δ᾽ ἐκείνοις, ἀλλὰ τοῖς τὴν ἐκείνων χώραν κατασχοῦσιν ἀχαιοῖς. τῶν δὲ τεττάρων μερίδων, ὧν ἐστὶ καὶ τὸ βουπράσιον, ἡ μὲν ὑρμίνη, καὶ ἡ μύρσινος, τῆς ἠλείας ἐστίν, αἱ δὲ λοιπαὶ ἐπὶ τῶν ὅρων ἤδη τῆς πισάτιδος ὡς οἴονταί τινες, ὑρμίνη μὲν οὖν πολίχνιον ἦν. νῦν δ᾽ οὐκ ἔστιν. ἀλλ᾽ ἀκρωτήριον πλησίον κυλλήνης ὀρεινόν. καλούμενον ὅρμινα, ἢ ὕρμινα. μύρσινος δὲ τὸ νῦν μυρτούντιον. ἐπὶ θάλατταν καθήκουσα, κατὰ τὴν ἐκ δύμης εἰς ἦλιν ὁδὸν κατοικία, σταδίους τῆς ἠλείων πόλεως διέχουσα ἑβδομήκοντα. πέτραν δ᾽ ὠλενίην εἰκάζουσι, τὴν νῦν σκόλλιν. ἀνάγκη γὰρ εἰκότα λέγειν καὶ τῶν τόπων, καὶ τῶν ὀνομάτων μεταβεβλημένων. ἐκείνου τε μὴ σφόδρα ἐπὶ πολλῶν σαφηνίζοντος. ἔστι δ᾽ ὄρος πετρῶδες κοινὸν δυμαίων τε καὶ τριταιέων, καὶ ἠλείων. ἐχόμενον ἑτέρου τινὸς ἀρκαδικοῦ ὄρους λαμπείας. ὃ τῆς ἤλιδος μὲν διέστηκεν ἑκατὸν πρὸς τοῖς τριάκοντα σταδίους. τριταίας δὲ ἑκατόν. τοὺς ἴσους ἀχαϊκῶν πόλεων. τὸ δ᾽ ἀλείσιον ἐστὶ τὸ νῦν ἀλεσιαῖον. χώρα περὶ τὴν ἀμφιλοχίδα. ἐν ᾗ κατὰ μῆνα ἀγορὰν συνάγουσιν οἱ περίοικοι. κεῖται δὲ ἐπὶ τῆς ὀρεινῆς ὁδοῦ, τῆς ἐξ ἤλιδος εἰς ὀλυμπίαν. πρότερον δ᾽ ἦν πόλις τῆς πισάτιδος ἄλλοτε ἄλλως τῶν ὅρων ἐπαλλαττόντων, διὰ τὰς τῶν ἡγεμόνων μεταβολάς. τὸ δ᾽ ἀλείσιον καὶ ἀλεισίου κολώνην ὁ ποιητὴς καλεῖ. ὅταν φῇ.
» Ἐπὶ βουπρασίου πολυπύρου βήσαμεν ἵππους.
» Πέτρης τ᾽ ὠλενίης καὶ ἀλεισίου, ἔνθα κολώνη
» Κέκληται- Ὑπερβατῶς γὰρ δεῖ δέξασθαι, ἴσον τῷ, καὶ ἔνθα ἀλεισίου κολώνη κέκληται. ἔνιοι δὲ καὶ ποταμὸν δεικνύουσιν ἀλείσιον. λεγομένων δέ τινων ἐν τῇ τριφυλίᾳ καυκώνων πρὸς τῇ μεσσηνίᾳ. λεγομένης δὲ καὶ τῆς δύμης καυκωνίδος ὑπό τινων, ὄντος δὲ καὶ ποταμοῦ ἐν τῇ δυμαίᾳ μεταξὺ δύμης καὶ τριταίας, ὃς καλεῖται καὶ καύκων θηλυκῶς. ζητοῦσι δὲ περὶ τῶν καυκώνων, ὡς μὴ διττοὶ λέγονται. οἱ μὲν, περὶ τὴν τριφυλίαν. οἱ δὲ, περὶ δύμην καὶ ἦλιν καὶ τὸν καύκωνα. ἐμβάλλει δ᾽ οὗτος εἰς ἕτερον ὃς τευθέας ἀρσενικῶς καλεῖται. ὁμώνυμος πολίχνῃ τινὶ τῶν εἰς τὴν δύμην συνῳκισμένων, πλὴν ὅτι χωρὶς τοῦ σ τευθέα λέγεται θηλυκῶς αὕτη. ἐκτεινόντων τὴν ἐσχάτην συλλαβήν, ὅπου τὸ τῆς νεμιδίας ἀρτέμιδος ἱερόν. ὁ δὲ τευθέας, εἰς τὸν ἀχελῶον ἐμβάλλει τὸν κατὰ δύμην ῥέοντα. ὁμώνυμον τῷ κατὰ τὴν ἀκαρνανίαν καὶ πεῖρον. τοῦ δ᾽ ἡσιόδου εἰπόντος.
» ᾤκει δ᾽ ὠλενίην πέτρην ποταμοῦ παρ᾽ ὄχθας
» Εὐρέος πείροιο,- Μεταγράφουσί τινες πώροιο, οὐκ εὖ. τὸ δὲ τῶν καυκώνων ζητοῦσι πῶς, ὅτι τῆς ἀθηνᾶς τῷ μέντῃ ὁμοιωθείσης, εἰπούσης πρὸς νέστορα.
» Αὐτὰρ ἠῶθεν μετὰ καύκωνας μεγαθύμους Εἶμι ἔνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται,

Δοκεῖ σημαίνεσθαι χώρα τις ἐν τῇ τῶν ἐπειῶν. ἣν οἱ καύκωνες εἶχον, ἕτεροι ὄντες τῶν ἐν τῇ τριφυλίᾳ, ἐπεκτείνοντες καὶ μέχρι δυμαίας τυχόν. οὔτε δὲ τὴν δύμην ὁπόθεν καυκωνίδα εἰρῆσθαι συμβέβηκε, παραλιπεῖν ἄξιον, οὔτε τὸν ποταμὸν ὁπόθεν καύκων εἴρηται, διὰ τὸ τοὺς καύκωνας παρέχειν ζήτησιν, οἵτινές ποτ᾽ εἰσίν, ὅπου φησὶν ἡ ἀθηνᾶ βαδίζειν, κατὰ τὴν τοῦ χρέους κομιδήν. εἰ γὰρ μὴ δεξόμεθα τοὺς ἐν τῇ τριφυλίᾳ λέγεσθαι τοὺς περὶ λέπρειον, οὐκ οἶδ᾽ ὅπως πιθανὸς ἔσται ὁ λόγος. διὸ καὶ γράφουσί τινες. ἔνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται ἤλιδι δίῃ, οὐκ ὀλίγον, δῆλον δὲ μᾶλλον τοῦτ᾽ ἔσται ἐπειδὰν τὴν πισάτιν καὶ τὴν ἑξῆς τριφυλίαν διεξίωμεν μέχρι τῆς τῶν μεσσηνίων μεθορίας. μετὰ δὲ τὴν χελωνάταν ὁ τῶν πισατῶν αἰγιαλὸς πολύς. εἶτ᾽ ἄκρα φειά.
» Ἦν δὲ πολίχνη φειὰς παρ τείχεσιν ἰαρδάνου ἀμφὶ ῥέεθρα.

Ἔστι γὰρ καὶ ποτάμιον πλησίον· ἔνιοι δ' ἀρχὴν τῆς πισάτιδος, τὴν φειὰν φασί. πρόκειται δὲ ταύ-
της νησίον καὶ λιμήν· ὅθεν εἰς ὀλυμπίαν τὸ ἐγγύτατον ἐκ θαλάττης, στάδιοι ἑκατὸν εἴκοσι. εἶτ' ἄλλη ἄ-
κρα ἐπὶ πολὺ προέχουσα πρὸς δύσιν, καθάπερ ὁ χελωνάτας· ἀφ' ἧς πάλιν πρὸς κεφαλλωνίαν στάδιοι ἑκατὸν
εἴκοσι. εἶθ' ὁ ἀλφειὸς ἐκδίδωσι· διέχων τοῦ χελωνάτα στάδια διακόσια ὀγδοήκοντα. ἀράξου δὲ πεντα-
κόσια τεσσαράκοντα ἑπτά. ῥεῖ δ' ἐκ τῶν αὐτῶν τόπων, ἐξ ὧν καὶ ὁ εὐρώτας· καλεῖται δὲ ἀσέα κώμη τῆς
μεγαλοπολίτιδος, πλησίον ἀλλήλων ἔχουσα δύο πηγάς, ἐξ ὧν ῥέουσιν οἱ λεχθέντες ποταμοί· δύντες
δ' ὑπὸ γῆν ἐπὶ συχνοὺς σταδίους, ἀνατέλλουσι πάλιν. εἶθ' ὁ μὲν, εἰς τὴν λακωνικήν· ὁ δ' εἰς τὴν πισά-
τιν κατάγεται. ὁ μὲν οὖν εὐρώτας κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς βλεμινάτιδος ἀναδείξας τὸ ῥεῖθρον, παρ' αὐ-
τὴν σπάρτην ῥυεὶς καὶ διεξιὼν αὐλῶνα τινὰ μακρὸν κατὰ τὸ ἕλος, οὗ μέμνηται ὁ ποιητής, ἐκδίδωσι
μεταξὺ γυθίου τοῦ τῆς σπάρτης ἐπινείου, καὶ ἀκραίων. ὁ δ' ἀλφειὸς παραλαβὼν τόν τε κελάδοντα,
καὶ τὸν ἐρύμανθον καὶ ἄλλους ἀσημοτέρους, διὰ τῆς φρίξης καὶ τῆς πισάτιδος καὶ τριφυλίας ἐνε-
χθεὶς, παρ' αὐτὴν τὴν ὀλυμπίαν, ἐπὶ θάλατταν τὴν σικελικὴν ἐκπίπτει, μεταξὺ φειᾶς τε καὶ ἐπιτα-
νης. πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τὸ τῆς ἀλφειονίας ἀρτέμιδος ἢ ἀλφειούσης, ἄλσος ἐστί. λέγεται γὰρ ἀμφοτέ-
ρως. ἀπέχει τῆς ὀλυμπίας, εἰς ὀγδοήκοντα σταδίους. ταύτῃ δὲ τῇ θεῷ καὶ ἐν ὀλυμπίᾳ κατ' ἔτος, συντε-
λεῖται πανήγυρις. καθὰ καὶ τῇ ἐλαφίᾳ καὶ τῇ δαφνίᾳ. μεστὴ δ' ἐστὶν ἡ γῆ πᾶσα ἀρτεμισίων καὶ ἀ-
φροδισίων· καὶ νυμφαίων ἐν ἄλσεσιν ἀνθέων, ὡς τὸ πολὺ διὰ τὴν εὐυδρίαν. συχνὰ δὲ καὶ ἑρμεῖα ἐν ταῖς
ὁδοῖς· ποσείδια δ' ἐπὶ ταῖς ἀκταῖς. ἐν δὲ τῷ τῆς ἀλφειονίας ἱερῷ, γραφαὶ κλεάνθους καὶ ἀρήγοντος,
ἀνδρῶν κορινθίων. τοῦ μὲν, τροίας ἅλωσις καὶ ἀθηνᾶς γοναί. τοῦ δ' ἄρτεμις ἀναφερομένη, ἐπὶ γρυπὸς
σφόδρα εὐδοκίμου. εἶτα τὸ διεῖργον ὄρος τῆς τριφυλίας, τὴν μακιστίαν ἀπὸ τῆς πισάτιδος. εἶτ' ἄλλος
ποταμὸς χαλκίς· καὶ κρήνη κρουνοί· καὶ κατοικία χαλκίς· καὶ τὸ σαμικὸν μετὰ ταῦτα. ὅπου τὸ μά-
λιστα τιμώμενον τοῦ σαμίου ποσειδῶνος ἱερόν. ἔστι δ' ἄλσος ἀγριελαιῶν πλῆρες. ἐπεμελοῦντο δ' αὐ-
τοῦ μακίστιοι. οὗτοι δὲ καὶ τὴν ἐκεχειρίαν ἐπήγγελλον, ἣν καλοῦσι σάμιον. συντελοῦσι δ' εἰς τὸ ἱερὸν πάν-
τες τριφύλιοι. κατὰ ταῦτα δέ πως τὰ ἱερὰ ὑπέρκειται τῆς θαλάττης ἐν τριάκοντα ἢ μικρῷ πλείο-
σι σταδίοις, ὁ τριφυλιακὸς πύλος καὶ λεπρεατικός· ὃν καλεῖ ὁ ποιητὴς ἠμαθόεντα. καὶ παραδίδωσι
τοῦ νέστορος πατρίδα. ὡς ἄν τις ἐκ τῶν ἐπῶν τοῦ ὁμήρου τεκμαίροιτο. εἴτε τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ
πρὸς ἄρκτον, ἀμάθου καλουμένου πρότερον, ὃς νῦν μάμαος καὶ ἀρκαδικὸς καλεῖται, ὡς τ' ἐντεῦθεν
ἠμαθόεντα κεκλῆσθαι, εἴτε τούτου μὲν παμισοῦ καλουμένου ὁμωνύμως τοῖς ἐν τῇ μεσσηνίᾳ δυσί,
τῆς δὲ πόλεως ἄδηλον ἐχούσης τὴν ἐτυμολογίαν τοῦ ἐπιθέτου. καὶ γὰρ τὸ ἀμαθώδη τὸν ποταμὸν, ἢ
τὴν χώραν, εἶναι ψεῦδος φασί. καὶ τὸ τῆς σκιλλουντίας δὲ ἀθηνᾶς ἱερὸν τὸ περὶ σκιλλοῦντα τῶν ἐ-
πιφανῶν ἐστὶν ὀλυμπίας πλησίον κατὰ τὸν φέλλωνα. πρὸς ἕω δ' ἐστὶν ὄρος τοῦ πύλου πλησίον, ἐπώνυ-
μον μίνθης· ἣν μυθεύουσι παλλακὴν τοῦ ᾅδου γενομένην, πατηθεῖσαν ὑπὸ τῆς κόρης, εἰς τὴν κη-
παίαν μίνθην μεταβαλεῖν· ἣν τινες ἡδύοσμον καλοῦσι. καὶ δὴ καὶ τέμενός ἐστιν ᾅδου πρὸς τῷ ὄρει τι-
μώμενον ὑπὸ μακιστίων· καὶ δήμητρος ἄλσος ὑποκείμενον τοῦ πυλιακοῦ πεδίου. τὸ δὲ πεδίον εὔγεών
ἐστι τοῦτο· τῇ θαλάττῃ δὲ συνάπτον, παρατείνει παρά τε τὸ μεταξὺ τοῦ τε σαμικοῦ καὶ ποταμοῦ νέ-
δας διάστημα. θινώδης δὲ καὶ στενός ἐστιν ὁ τῆς θαλάσσης αἰγιαλός· ὥστ' οὐκ ἂν ἀπογνοίη τις ἐντεῦθεν ἠμα-
θόεντα ὠνομάσθαι τὸν πύλον. πρὸς ἄρκτον δ' ὅμορα ἦν τῷ πύλῳ δύο πολίδια. τριφυλιακά, ὕπανα
καὶ κτύπανσα. ὧν τὸ μὲν, εἰς ἦλιν συνῳκίσθη. τὸ δὲ ἔμεινε. καὶ ποταμοὶ δὲ δύο ἐγγὺς ῥέουσιν. ὅ τε δα-
λίων καὶ ὁ ἀχέρων, ἐμβάλλοντες εἰς τὸν ἀλφειόν. ὁ δὲ ἀχέρων κατὰ τὴν πρὸς τὸν ᾅδην οἰκειότητα ὠ-
νόμασται. ἐκτετίμηται γὰρ δὴ σφόδρα, τά γε τῆς δήμητρος καὶ τῆς κόρης ἱερὰ ἐνταῦθα καὶ τοῦ
ᾅδου. τάχα διὰ τὰς ὑπεναντιότητας ἅς, φησὶ ὁ σκήψιος δημήτριος. καὶ γὰρ εὔκαρπός ἐστι. καὶ
ἐρυσίβην γεννᾷ καὶ θρύον ἡ τριφυλία. διόπερ ἀντὶ μεγάλης φορᾶς, πυκνὰς ἀφορίας γενέσθαι συμ-
βαίνει κατὰ τοὺς τόπους. τοῦ δὲ πύλου πρὸς νότον ἐστὶ τὸ λέπρεον. ἦν δὲ καὶ αὕτη πόλις ὑπὲρ τῆς θα-
λάττης ἐν τετταράκοντα σταδίοις. μεταξὺ δὲ τοῦ λεπραίου καὶ τοῦ ἀννίου τὸ ἱερὸν τοῦ σαμίου ποσει-
δῶνος. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἱερὸν ἐν ᾧ καταληφθῆναι φησὶν ὁ ποιητὴς ὑπὸ τηλεμάχου τὴν θυσίαν συντε-
λοῦντας τοὺς πυλίους.

» Οἱ δὲ, πύλον νηλῆος ἐυκτίμενον πτολίεθρον ἷξον.
» Τοὶ δ' ἐπὶ θινὶ θαλάσσης ἱερὰ ῥέζον
» Ταύρους παμμέλανας ἐνοσίχθονι κυανοχαίτῃ.

Ἔξεστι μὲν γὰρ τῷ ποιητῇ καὶ πλάττειν τὰ μὴ ὄντα. ὅταν οὖν δυνατὸν ἐφαρμόττειν τοῖς οὖσι
τὰ ἔπη, καὶ σώζειν τὴν διήγησιν, τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσήκει μᾶλλον. χώραν δ' εἶχον εὐδαίμονα οἱ
λεπρεάται. τούτοις δ' ὅμοροι κυπαρισσεῖς. ἄμφω δὲ τὰ χωρία ταῦτα καύκωνες κατεῖχον. καὶ τοὺς
μακίστους δὲ ὅν τινες πλατανιστοῦντα καλοῦσιν. ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ δ' ἐστὶ τὸ πόλισμα. φασὶ δ' εἶναι
τῇ λεπρεάτιδι, καὶ καύκωνος εἶναι μνῆμα. εἴτ' ἀρχηγέτου τινὸς, εἴτ' ἄλλως ὁμωνύμου τῷ ἔ-
θνει. πλείους δ' εἰσὶ λόγοι περὶ καυκώνων. καὶ γὰρ ἀρκαδικὸν ἔθνος φασὶ καθάπερ τὸ πελασγικὸν,

καὶ πλανητικὸν ἄλλως ὡς περ ἐκεῖνο. ἱστορεῖ γοῦν ὁ ποιητὴς καὶ τοῖς τρωσὶν ἀφιγμένους συμμάχους.
πόθεν δ' οὐ λέγει. δοκοῦσι δ' ἐκ παφλαγονίας. ἐκεῖ γὰρ ὀνομάζουσι καυκωνιάτας τινὰς μαριανδυ-
νοῖς ὁμόρους. οἳ καὶ αὐτοὶ παφλαγόνες εἰσί. μνησθησόμεθα δ' αὐτῶν ἐπὶ πλέον, ὅταν εἰς ἐκεῖνον προέλ-
θῃ τὸν τόπον ἡ γραφή. νυνὶ δὲ περὶ τῶν ἐν τριφυλίᾳ καυκώνων ἔτι καὶ ταῦτα προσιστορητέον. οἱ μὲν
γὰρ καὶ ὅλην τὴν νῦν ἠλείαν, ἀπὸ μεσσηνίας μέχρι δύμης, καυκωνίαν λεχθῆναι φασίν. ἀντίμαχος γοῦν
ἐπειοὺς καὶ καύκωνας ἅπαντας προσαγορεύει. τινὲς δέ, ὅλην μὲν μὴ κατασχεῖν αὐτούς. δίχα δὲ με-
μερισμένους οἰκεῖν. τοὺς μὲν, πρὸς τῇ μεσσηνίᾳ κατὰ τὴν τριφυλίαν. τοὺς δέ, πρὸς τῇ δύμῃ κατὰ τὴν
βουπρασίδα καὶ τὴν κοίλην ἦλιν. ἀριστοτέλης δ' ἐνταῦθα μάλιστα οἶδεν ἱδρυμένους αὐτούς, καὶ δὴ τοῖς
ὑφ' ὁμήρου λεγομένοις ὁμολογεῖ μᾶλλον ἡ ὑστάτη ἀπόφασις. τό, τε ζητούμενον πρότερον, λαμβάνει λύ-
σιν, ὁ μὲν γὰρ νέστωρ ὑπόκειται τὴν τριφυλιακὴν οἰκῶν πύλον. τά τε πρὸς νότον καὶ τὰ ἑωθινά. ταῦ-
τα δ' ἐστὶ τὰ συγκυροῦντα πρὸς τὴν μεσσηνίαν καὶ τὴν λακωνικὴν, ἃ ὑπ' ἐκείνῳ τε ἐστίν. ἔχουσι δ' οἱ καύ-
κωνες. ὥς τε τοῖς ἀπὸ πύλου βαδίζουσιν εἰς λακεδαιμονίαν, ἀνάγκη διὰ τὴν καυκώνων εἶναι ὁδόν. τὸ
δ' ἱερὸν τοῦ σαμίου ποσειδῶνος καὶ ὁ κατ' αὐτὸ ὅρμος, εἰς ὃν κατήχθη τηλέμαχος, πρὸς δύσιν καὶ πρὸς
ἄρκτον ἀπονεύει. εἰ μὲν τοίνυν οἱ καύκωνες ἐνταῦθα μόνον οἰκοῦσιν, οὐ σώζεται τῷ ποιητῇ ὁ λόγος. κε-
λεύει γὰρ ἡ μὲν ἀθηνᾶ κατὰ τὸν σωτάδην τῷ νέστορι, τὸν μὲν τηλέμαχον εἰς λακεδαίμονα πέμψαι
σὺν δίφρῳ τε καὶ υἱεῖ, εἰς τὰ πρὸς ἕω μέρη. αὐτὴ δ' ἐπὶ ναῦν βαδιεῖσθαι νυκτερεύσουσα φησὶν ἐπὶ τὴν
δύσιν, καὶ εἰς τοὐπίσω.

» Αὐτὰρ ἠῶθεν μετὰ καύκωνας μεγαθύμους                    Πορεύσεσθαι ἐπὶ τὸ χρέος πάλιν
εἰς τοὔμπροσθεν. τίς οὖν ὁ τρόπος. παρῆν γὰρ τῷ νέστορι λέγειν. ἀλλ' οἵ γε καύκωνες ὑπ' ἐμοί εἰσι. καὶ
πρὸ ὁδοῦ τοῖς εἰς λακεδαίμονα βαδίζουσιν. ὥς τε τί οὐ συνοδεύεις τοῖς περὶ τηλέμαχον, ἀλλ' ἀναχω-
ρεῖς εἰς τοὐπίσω. ἅμα δ' οἰκεῖον ἦν τῷ βαδίζοντι ἐπὶ χρέους κομιδῇ, οὐκ ὀλίγου ὡς φησὶ πρὸς ἀνθρώ-
πους ὑπὸ τῷ νέστορι ὄντας, αἰτήσασθαί τινα παρ' αὐτοῦ βοήθειαν, εἰ τι ἀγνωμονοῖεν ὡς περ εἰώθεσαν περὶ
τὸ συμβόλαιον. οὐ γέγονε δὲ τοῦτο. εἰ μὲν τοίνυν ἐνταῦθα μόνον οἰκοῖεν οἱ καύκωνες, ταῦτ' ἂν συμ-
βαίνοι τὰ ἄτοπα. μεμερισμένων δέ τινων καὶ εἰς τοὺς πρὸς δύμην τόπους τῆς ἠλείας, ἐκεῖσε ἂν εἴη λέ-
γουσα τὴν ἄφοδον ἡ ἀθηνᾶ. καὶ οὐκ ἂν, ἔτι οὐθ' ἡ εἰς τὴν ναῦν κατάβασις ἔχοι τι ἀπεμφαῖνον, οὐθ' ὁ τῆς
συνοδίας ἀπασμὸς, εἰς τἀναντία τῆς ὁδοῦ οὔσης. παραπλησίως δ' ἂν καὶ τὰ περὶ τῆς πύλου διά-
πορούμενα τύχοι τῆς προσηκούσης διαίτης, ἐπελθούσης μικρὸν ἔτι τῆς χωρογραφίας μέχρι τῆς πύ-
λου τῆς μεσσηνιακοῦ. καὶ παρωνάται δέ τινες ἐλέγοντο εἶναι ἐν τῇ ὀρεινῇ τῆς τριφυλίας κατέχοντες
ὄρη. περὶ τὸ λέπρεον καὶ μάκιστον καθήκοντα ἐπὶ θάλατταν πλησίον τοῦ σαμιακοῦ ποσειδείου. ὑ-
πὸ τούτοις ἐστὶν ἐν τῇ παραλίᾳ δύο ἄντρα. τὸ μὲν, νυμφῶν ἀνιγριάδων. τὸ δέ, ἐν ᾧ τὰ περὶ τὰς ἀτλαν-
τίδας, καὶ τὴν δαρδάνου γένεσιν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ ἄλση. τό τε ἰωναῖον καὶ τὸ εὐρυκύδιον. τὸ μὲν
οὖν σαμικὸν ἔστιν ἔρυμα. πρότερον δὲ καὶ πόλις σάμος προσαγορευομένη διὰ τὸ ὕψος ἴσως. ἐπειδὴ σά-
μους ἐκάλουν τὰ ὕψη. τάχα δὲ καὶ τῆς ἀρήνης ἀκρόπολις ἦν τοῦτο. ἧς ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνη-

» Οἳ δὲ πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ ἀρήνην ἐρατεινήν,                    (ται ὁ ποιητής.
Οὐδαμοῦ γὰρ σαφῶς εὑρίσκοντες, ἐνταῦθα μάλιστα εἰκάζουσι τὴν ἀρήνην, ὅπου καὶ ὁ παρακείμε-
νος ἄνιγρος ποταμὸς, καλούμενος πρότερον μινυήιος, ἐκδίδωσιν οὐ μικρὸν σημεῖον. λέγει γὰρ ὁ ποιη-

» Ἔστι δέ τις ποταμὸς μινυήιος εἰς ἅλα βάλλων,                    (τής.
» Ἐγγύθεν ἀρήνης.—                    Πρὸς γὰρ δὴ τῷ ἄντρῳ τῶν ἀνιγριάδων νυμφῶν, ἔστι πηγή. ὑφ' ἧς ἕ-
λειον καὶ τυφῶδες τὸ ὑποπίπτον γίνεται χωρίον. ὑποδέχεται δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ ὕδατος ὁ ἄνι-
γρος βαθὺς, καὶ ὕπτιος ὢν, ὥς τε λιμνάζειν. θινώδης δ' ὢν ὁ τόπος, ἐξ εἴκοσι σταδίων βαθεῖαν ὀσμὴν
παρέχει. καὶ τοὺς ἰχθύας ἀβρώτους ποιεῖ. μυθεύουσι δ' οἱ μὲν, ἀπὸ τοῦ τῶν τετρωμένων κενταύρων τι-
νὰς, ἐνταῦθ' ἀπονίψασθαι τὸν ἐκ τῆς ὕδρας ἰόν. οἱ δ' ἀπὸ τοῦ μελάμποδα τοῖς ὕδασι τούτοις χρήσα-
σθαι πρὸς τὸν τῶν προιτίδων καθαρμόν. ἀλφοὺς δὲ καὶ λεύκας καὶ λειχῆνας ἰᾶται τὸ ἐντεῦθεν
λουτρόν. φασὶ δὲ καὶ τὸν ἀλφειὸν ἀπὸ τῆς τῶν ἀλφῶν θεραπείας οὕτω παρωνομάσθαι. ἐπεὶ οὖν ἥ
τε ὑπτιότης τοῦ ἄνιγρου καὶ αἱ ἀνακοπαὶ τῆς θαλάσσης μονὴν μᾶλλον, ἢ ῥύσιν παρέχουσι τοῖς ὕδα-
σι, μινυήιον φασὶν εἰρῆσθαι πρότερον. παρατρέψαι δέ τινας τοὔνομα. καὶ ἀντ' αὐτοῦ ποιῆσαι μινυή-
ιον. ἔχει δ' ἡ ἐτυμότης καὶ ἄλλας ἀφορμάς. εἴτ' ἀπὸ τῶν μετὰ χλωρίδος τῆς νέστορος ἐξ ὀρχομενοῦ τοῦ
μινυείου ἐλθόντων μινυῶν, οἱ τῶν ἐτῶν αὐτῶν ἀπόγονοι ὄντες, ἐκ λήμνου μὲν εἰς λακεδαίμονα ἐξέ-
πεσον. ἐντεῦθεν δ' εἰς τριφυλίαν, καὶ ᾤκησαν περὶ τὴν ἀρήνην ἐν τῇ χώρᾳ τῇ νῦν ὑπαισία καλου-
μένῃ. οὐκ ἐχούσῃ οὐκέτι τὰ τῶν μινυῶν κτίσματα. ὧν τινὲς μετὰ θήρα τοῦ αὐτεσίωνος. ἦν δ' οὗτος
τοῦ πολυνείκους ἀπόγονος, πλεύσαντες εἰς τὴν μεταξὺ κυρηναίας, καὶ κρήτης νῆσον. καλλίστην
τὸ πάροιθεν, τὸ δ' ὕστερον οὔνομα θήρην ὥς φησι καλλίμαχος, ἔκτισαν τὴν μητρόπολιν τῆς κυρή-
νης. θήραν, ὁμώνυμον δ' ἀπέδειξαν τῇ πόλει, καὶ τὴν νῆσον. μεταξὺ δ' αἰγίρου καὶ τοῦ ὄρους ἀφ'
οὗ ὁ ἰαρδάνης ῥεῖ, λειμὼν δείκνυται καὶ τάφος ἐπιφανὴς, καὶ ἀχαιαὶ πέτραι ἀπότομοι τῷ αὐ-

τοῦ ὄρους. ὑπὲρ οὗ, ἡ σάμος ὡς ἔφαμεν γέγονε πόλις. ἧς δὴ οὐ πάνυ ὑπὸ τῶν τοὺς περίπλους γραψάντων μνημονεύεται. τάχα μὲν διὰ τὸ πάλαι κατεσπάσθαι. τάχα δὲ καὶ διὰ τὴν θέσιν, ὅτι ἐν ἀφανεῖ κεῖται. τὸ δὲ ποσείδιον, ἄλσος ἐστὶν ὡς εἴρηται πρὸς τῇ θαλάττῃ. τούτῳ δὲ κορυφὴ ὑψηλὴ ἐπιπροσθεῖ τὸ σαμικόν. οὕτω γὰρ νῦν καλεῖται, ὅπου ἡ σάμος ἦν. ὥστε ἐκ θαλάττης μὴ ὁρᾶσθαι. ἐνταῦθα δὲ πεδίον ἐστὶ σαμικὸν ὀνομαζόμενον. ἐξ οὗ δὴ καὶ μάλιστα ἄν τις τεκμαίροιτο πόλιν ὑπάρξαι τὴν σάμον. ἔστι δὲ καὶ ῥαδινή. εἰς ἣν στησίχορος τὸ ποίημα γεγραφέναι δοκεῖ. οὗ ἡ ἀρχή.

» Ἄγε μοῦσα λίγεια ἄρξον ἀοιδᾶς ἐρατῶν
» Ὕμνους σαμίων περὶ παίδων
» Ἐρατᾷ φθεγγομένα λύρᾳ. Ἐντεῦθεν λέγει τοὺς παῖδας. ἐκδοθεῖσαν γὰρ τὴν ῥαδινὴν εἰς κόρινθον τυράννῳ φησὶν ἐκ τῆς σάμου πλεῦσαι, πνέοντος ζεφύρου, οὐ δήπουθεν τῆς ἰωνικῆς σάμου. τῷ δ' αὐτῷ ἀνέμῳ καὶ ἀρχιθέωρον εἰς δελφοὺς ὄντα ἀδελφὸν αὐτῆς ἐλθεῖν καὶ τὸν ἀνεψιὸν ἐρῶντα αὐτῆς ἅρματι εἰς κόρινθον ἐξορμῆσαι παρ' αὐτήν. ὅ τε τύραννος κτείνας ἀμφοτέρους, ἅρματι ἀποπέμπει τὰ σώματα. μεταγνοὺς δ' ἀνακαλεῖ καὶ θάπτει. ἀπὸ δὲ τοῦ πύλου τούτου, καὶ τοῦ λεπρεαίου τετρακοσίων που σταδίων διάστημα, ἐπὶ τὴν μεσσηνιακὴν πύλον καὶ τὸ κορυφάσιον, ἐπὶ θαλάττῃ κείμενα φρούρια. καὶ τὴν παρακειμένην σφαγίαν νῆσον. ἀπὸ δὲ ἀλφειοῦ ἑπτακοσίων πεντήκοντα. ἀπὸ δὲ τοῦ χελωνάτα χιλίων τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τό, τε, τοῦ μακίστου ἡρακλέους ἱερόν ἐστι, καὶ ὁ ἀκίδων ποταμὸς ῥεῖ παρὰ τάφον ἰαρδάνου καὶ χάαν πόλιν ποτὲ ὑπάρξασαν πλησίον λεπρεαίου. ὅπου καὶ τὸ πεδίον τὸ αἰπάσιον. περὶ ταύτης τῆς χάας, γενέσθαι φασὶν ἔνιοι τὸν πόλεμον τοῖς ἀρκάσι πρὸς πυλίους, ὃν ἔφρασεν ὅμηρος καὶ δεῖν οἴονται γράφειν.

» Ἡβῷμ' ὡς ὅτ' ἐπ' ὠκυρόῳ κελάδοντι μάχοντο
» Ἀγρόμενοι πύλιοί τε καὶ ἀρκάδες ἐγχεσίμωροι Φειᾶς πὰρ τείχεσσιν.—

Οὐ κελάδοντι. οὐ δὲ φειᾶς ἀντὶ τοῦ φᾶς χάας πὰρ τείχεσι, τῷ γὰρ τάφῳ τοῦ ἰαρδάνου τοῦτον πλησιάζειν καὶ τοῖς ἀρκάσι, τὸν τόπον μᾶλλον, ἢ ἐκεῖνον. κυπαρισσία τε ἐστὶν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τῇ τριφυλιακῇ καὶ πύργοι, καὶ ὁ ἀκίδων ποταμὸς καὶ νέδα, ὅ νυνὶ μὲν οὖν τῇ τριφυλίᾳ πρὸς τὴν μεσσηνίαν ὅριον ἐστὶ τὸ τῆς νέδας ῥεῦμα λάβρον ἐκ τοῦ λυκαίου κατιόν, ἀρκαδικοῦ ὄρους ἐκ πηγῆς. ἣν ἀναρρῆξαι τεκοῦσαν τὸν δία μυθεύεται ῥέαν νίπτρων χάριν. ῥεῖ δὲ παρὰ φιγαλίαν καθ' ὃ γειτνιῶσι πυργῖται τριφυλίων ἔσχατοι κυπαρισσεῦσι πρώτοις μεσσηνίων. τὸ δὲ παλαιὸν ἄλλως διώριστο. ὥς καί τινας τῶν πέραν τῆς νέδας ὑπὸ τῷ νέστορι εἶναι τόν τε κυπαρισσήεντα, καὶ ἄλλα τινὰ ἐπέκεινα, καὶ καθάπερ καὶ τὴν θάλατταν τὴν πυλίαν ὁ ποιητὴς ἐπεκτείνει μέχρι τῶν ἑπτὰ πόλεων, ὧν ὑπέσχετο ἀγαμέμνων τῷ ἀχιλλεῖ.

» Πᾶσαι δ' ἐγγὺς ἁλὸς νέαται πύλου ἠμαθόεντος.

Τοῦτο γὰρ ἴσον τῷ, ἐγγὺς ἁλὸς τῆς πυλίας. ἐφεξῆς δὲ τῷ κυπαρισσήεντι ἐπὶ τὸν μεσσηνιακὸν πύλον παραπλέοντι τὸ κορυφάσιον. ἥ τε ἐρανα. ἣν τινες οὐκ εὖ ἀρήνην νομίζουσιν οὐκ εὖ κεκλῆσθαι πρότερον ὁμωνύμως τῇ πυλιακῇ. ἔστι δὲ καὶ πλαταμώδης. ἀφ' ἧς ἐπὶ τὸ κορυφάσιον καὶ τὴν νῦν καλουμένην πύλην στάδιοι ἑκατὸν εἴκοσι. ἔστι δὲ καὶ κενήειον καὶ ἐπ' αὐτῷ πολίχνιόν τι ὁμωνύμως καλούμενον. οὐκ ἄν, δ' ἐξετάζομεν ἴσως ἐπὶ τοσοῦτον τὰ παλαιά. ἀλλ' ἤρκει λέγειν ὡς ἔχει νῦν ἕκαστα, εἰ μή τις ἦν ἐκ παίδων ἡμῖν φήμη παραδεδομένη περὶ τούτων. ἄλλων δ' ἄλλα εἰπόντων, ἀνάγκη διαιτᾶν. πιστεύονται δ' ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ οἱ ἐνδοξότατοι, καὶ πρεσβύτατοι καὶ κατ' ἐμπειρίαν πρῶτοι. ὁμήρου δὲ εἰς ταῦτα ὑπερβεβλημένου πάντας, ἀνάγκη συνεπισκοπεῖν καὶ τὰ ὑπ' ἐκείνου λεχθέντα, καὶ συγκρούειν, πρὸς τὰ νῦν καθάπερ καὶ μικρῷ πρόσθεν ἔφαμεν, περὶ μὲν οὖν τῆς κοίλης ἤλιδος καὶ τοῦ βουπρασίου τὰ ὑφ' ὁμήρου λεχθέντα προεπέσκεπται ἡμῖν. περὶ δὲ τῆς ὑπὸ τῷ νέστορι οὕτω φασί.

» Οἳ δὲ πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ ἀρήνην ἐρατεινήν,
» Καὶ θρύον ἀλφειοῖο πόρον καὶ ἐΰκτιστον αἰπύ
» Καὶ κυπαρισσήεντα καὶ ἀμφιγένειαν ἔναιον
» Καὶ πτελεὸν καὶ ἕλος καὶ δώριον. ἔνθά τε μοῦσαι

Ἀντόμεναι. καὶ ἑξῆς. πύλος μὲν οὖν ἐστι, περὶ ἧς ἡ ζήτησις. αὐτίκα δ' ἐπισκεψόμεθα περὶ αὐτῆς. περὶ δὲ ἀρήνης εἴρηται, ἣν δὲ νῦν λέγει θρύον, ἐν ἄλλοις καλεῖ θρυόεσσαν.

» Ἔστι δέ τις θρυόεσσα πόλις αἰπεῖα κολώνη.
» Τηλοῦ ἐπ' ἀλφειῷ, Ἀλφειοῦ δὲ πόρον φησίν, ὅτι πεζῇ περατὸς ἦν. δοκεῖ κατὰ τοῦτον τὸν τόπον. καλεῖται δὲ νῦν ἐπιτάλιον τῆς μακιστίας χωρίον. τὸ ἐΰκτιστον δ' αἰπύ, ἔνιοι μὲν ζητοῦσι πότερον ἐπίθετον. καὶ τίς ἡ πόλις. καὶ εἰ αἱ νῦν μαργάλαι τῆς ἀμφιπόλεως. αὗται μὲν οὖν οὐ φυσικὸν ἔρυμα. ἕτερον δὲ δείκνυται φυσικὸν ἐν τῇ μακιστίᾳ. ὁ μὲν οὖν τοῦ ἑτέρου νοῶν φράζεσθαι ὄνομα, φησὶ τῆς πόλεως τὸ αἰπύ, ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος φυσικῶς, ὡς ἕλος καὶ αἰγιαλόν, καὶ ἄλλα πλείω. ὁ δὲ τὴν μαργάλαν τοὔμπαλιν ἴσως. θρύον δὲ καὶ θρυόεσσαν τὸ ἐπιτάλιον φασίν. ὅτι πᾶσα μὲν ἡ αὐτὴ

χώρα θρυώδης· μάλιστα δ' οἱ ποταμοί. ἐπὶ πλέον δέ, διαφαίνεται τοῦτο κατὰ τοὺς περάτους τοῦ ῥεέθρου τόπους, τάχα δὲ φασὶ θρύον μὲν εἰρῆσθαι τὸν πόρον. εὔτυκτον δ' αἰπὺ, τὸν ἐπὶ τάλιον. ἔστι γὰρ ἐρυμνὸν φύσει, καὶ τι ἐν ἄλλοις αἰπεῖαν κολώνην λέγει.

» Θρυόεσσα πόλις αἰπεῖα κολώνη.

Ὁ δὲ κυπαρισσήεις ἐστὶ μὲν περὶ τὴν πρότερον μακιστίαν· ἣν ἴσμεν, καὶ πέραν τῆς νέδας ἔτι τὴν μακιστίαν, ἀλλ' οὐκ οἰκεῖται. ὡς οὐδὲ τὸ μάκιστον. ἄλλη δ' ἐστὶν ἡ μεσσηνιακὴ κυπαρισσία ὁμώνυμος μὲν οὖν. ὁμοίως δὲ νῦν καλεῖν λέγεται κυπαρισσία, ἐνικῶς καὶ θηλυκῶς. ὁ δὲ ποταμὸς κυπαρισσήεις, καὶ ἀμφιγένεια δὲ, τῆς μακιστίας ἐστὶ περὶ τὸν ὑψόεντα. ὅπου τὸ τῆς λητοῦς ἱερόν. τὸ δὲ πτελεὸν κτίσμα γέγονε τῶν ἐκ πτελεοῦ τοῦ θετταλικοῦ ἐποικησάντων. λέγεται κἀκεῖ.

» Ἀγχίαλον τ' ἀντρῶνα. ἠδὲ πτελεὸν λεχεποίην.

Ἔστι δὲ καὶ δρυμῶδες χωρίον ἀοίκητον, πτελεάσιμον καλούμενον. ἕλος δ' οἱ μὲν, περὶ τὸν ἀλφειόν, χώραν τινὰ φασίν. οἱ δέ, καὶ πόλιν ὡς τὴν λακωνικήν.

» Ἕλος τ' ἔφαλον πολίεθρον—

Οἱ δέ, περὶ τὸ ἀλώριον ἕλος, οὗ τῆς ἡλείας ἀρτέμιδος ἱερὸν τῆς ὑπὸ τοῖς ἀρκάσιν, ἐκεῖνοι γὰρ εἶχον τὴν ἱερωσύνην. δώριον δέ, οἱ μὲν, ὄρος οἱ δέ, πεδίον φασίν. οὐδὲν δέ, νῦν δείκνυται, ὅμως δέ, ἔνιοι τὴν νῦν ὀλουριν, ἢ ὀλουραν, ἐν τῷ καλουμένῳ αὐλῶνι τῆς μεσσηνίας κειμένην, δώριον λέγουσιν. αὐτοῦ δέ που καὶ ἡ οἰχαλία ἡ τοῦ εὐρύτου, ἡ νῦν ἀνδανία πολίχνιον ἀρκαδικόν. ὁμώνυμον τῷ θετταλικῷ καὶ τῷ εὐβοϊκῷ. ὅθεν φησὶν ὁ ποιητής, ἐς τὸ δώριον ἀφικόμενον θάμυριν τὸν θρᾷκα, ὑπὸ μουσῶν ἀφαιρεθῆναι τὴν μουσικήν. ἐκ δὲ τούτων δῆλον ὡς ἐφ' ἑκάτερα τοῦ ἀλφειοῦ ὑπὸ νέστορα χώρα ἐστίν. ἣν πᾶσαν ὀνομάζει πυλίων γῆν. οὐδαμοῦ δὲ ὁ ἀλφειὸς οὔτε τῆς μεσσηνίας ἐφάπτεται οὔτε τῆς κοίλης ἤλιδος. ἐν ταύτῃ γὰρ τῇ χώρᾳ ἐστὶν ἡ πατρὶς τοῦ νέστορος. ἣν φαμὲν τριφυλιακὸν πύλον καὶ ἀρκαδικὸν καὶ λεπρεατικόν. καὶ γὰρ δὴ οἱ μὲν ἄλλοι πύλοι ἐπὶ θαλάττῃ δείκνυνται. οὗτος δέ, πλείους τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ αὐτῆς. ὅπερ καὶ ἐκ τῶν ἐπῶν δῆλον. ἐπί τε γὰρ τοὺς τηλεμάχου ἑταίρους ἄγγελος πέμπεται πρὸς τὸ πλοῖον, καλῶν ἐπὶ ξένια, ὅ, τε τηλέμαχος κατὰ τὴν ἐκ σπάρτης ἐπάνοδον τὸν πεισίστρατον οὐκ ἐᾷ πρὸς τὴν πόλιν ἐλαύνειν. ἀλλὰ παρατρέψαντα ἐπὶ τὴν ναῦν σπεύδειν, ὡς οὐ τὴν αὐτὴν οὖσαν, ἐπὶ τὴν πόλιν καὶ τὸν ὅρμον. ὅ, τε ἀπόπλους τοῦ τηλεμάχου οὕτως ἂν οἰκείως λέγοιτο;

» Βὰν δὲ παρὰ κρουνοὺς καὶ χαλκίδα καλλιρέεθρον.

» Δύσετό τ' ἠέλιος, σκιόωντό τε πᾶσαι ἀγυιαί.

» Ἡ δέ, φεὰς ἐπέβαλλεν ἀγαλλομένη διὸς οὔρῳ.

» Ἠδὲ παρ' ἤλιδα δῖαν ὅθι κρατέουσιν ἐπειοί.

Μέχρι μὲν γὰρ δὴ δεῦρο πρὸς τὴν ἄρκτον ὁ πλοῦς. ἐντεῦθεν δὲ ἐπὶ τὸ πρὸς ἕω μέρος ἐπιστρέφει. παρεῖσι δὲ τὸν εὐθὺν πλοῦν ἡ ναῦς, καὶ τὸν ἐξ ἀρχῆς καὶ τὸν εἰς ἰθάκην, διὰ τὸ τοὺς μνηστῆρας ἐκεῖ, τὴν ἐνέδραν θέσθαι. ἐν πορθμῷ ἰθάκης τε σάμοιό τε.

» Ἔνθεν δ' αὖ νήσοισιν ἐπιπροέηκε θοῇσι.

Θοὰς δὲ εἴρηκε τὰς ὀξείας. τῶν ἐχινάδων δ' εἰσὶν αὗται, πλησιάζουσαι τῇ ἀρχῇ τοῦ κορινθιακοῦ κόλπου, καὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ ἀχελώου, παραλλάξας δὲ τὴν ἰθάκην, ὥστε κατὰ νότου γενέσθαι, κάμπτεται πάλιν πρὸς τὸν οἰκεῖον δρόμον τὸν μεταξὺ ἀκαρνανίας καὶ ἰθάκης καὶ κατὰ θάτερα μέρη τῆς νήσου ποιεῖται τὴν καταγωγήν. οὐ κατὰ τὸν πορθμὸν τὸν κεφαλληνιακόν, ὃν ἐφρούρουν οἱ μνηστῆρες. εἰ γοῦν τὸν ἠλειακὸν πύλον εἶναί τις τὸν νέστορος ὑπονοήσειεν, οὐκ ἂν, οἰκείως λέγοιτο ἡ ἐντεῦθεν ἀναχθεῖσα ναῦς παρὰ κρουνοὺς ἐνεχθῆναι καὶ χαλκίδα μέχρι δύσεως. εἶτα φεαῖς ἐπιβαλεῖν νύκτωρ καὶ τό τε τὴν ἠλείαν παραπλεῖν. οὗτοι γὰρ οἱ τόποι πρὸς νότον τῆς ἠλείας εἰσί. πρῶται αἱ φεαί. εἶθ' ἡ χαλκίς. εἶθ' οἱ κρουνοί, εἶθ' ὁ πύλος ὁ τριφυλιακὸς καὶ τὸ σαμικόν. τῷ μὲν οὖν πρὸς νότον πλέοντι ἐκ τοῦ ἠλιακοῦ πύλου οὗτος ἂν ὁ πλοῦς εἴη. τῷ δὲ πρὸς ἄρκτον ὅπου ἐστὶν ἡ ἰθάκη, ταῦτα μὲν πάντα ὀπίσω λέγεται. αὐτὴ δὲ ἡ ἠλεία παραπλευστέα ἦν καὶ πρὸ δύσεώς γε. ὁ δέ φησι μετὰ δύσιν. καὶ μὴν εἰ καὶ πάλιν ὑποθεῖτό τις τὸν μεσσηνιακὸν πύλον, καὶ τὸ κορυφάσιον ἀρχὴν τοῦ παρὰ νέστορος πλοῦ, πολὺ ἂν εἴη τὸ διάστημα, καὶ πλείονος χρόνου. αὐτὸ γοῦν τὸ ἐπὶ τὸν τριφυλιακὸν πύλον, καὶ τὸ σαμικὸν ποσειδώνιον τετρακοσίων ἐστὶ σταδίων. καὶ ὁ περίπλους παρὰ κρουνοὺς καὶ χαλκίδα. καὶ φεαὶ ἀδόξων ποταμῶν ὀνόματα. μᾶλλον δὲ ὀχετῶν. ἀλλὰ παρὰ τὴν νέδαν πρῶτον. εἶτα κυδώνην ἔπειτα ἀλφειὸν καὶ τοὺς τόπους τούτων τοὺς μεταξύ. καὶ τὰς μεταξὺ χώρας. ὕστερον δὴ ἄρα κἀκείνων ἐχρῆν μνησθῆναι, καὶ γὰρ παρ' ἐκείνους ὑπῆρχεν ὁ πλοῦς. καὶ μὴν ἥ γε τοῦ νέστορος διήγησις ἣν διατίθεται πρὸς πάτροκλον περὶ τοῦ γενομένου τοῖς πυλίοις πρὸς ἠλείους πολέμου, συνηγορεῖ, τοῖς ὑφ' ἡμῶν ἐπιχειρουμένοις, ἐάν σκοπῇ τις τὰ ἔπη. φησὶ γὰρ ἐν αὐτοῖς ὅτι πορθήσαντος ἡρακλέους τὴν πύλον, ὥστε τὴν νεότητα ἐκλειφθῆναι πᾶσαν, δώδεκα δὴ παίδων ὄντων, νηλεῖ μόνον

αὐτῷ, περιγενέσθαι. τὸν νέστορα νέον τελέως. καταφρονήσαντες δ᾽ οἱ ἐπειοὶ τοῦ νηλέως διὰ γῆρας καὶ ἐρημίαν, ὑπερηφάνως καὶ ὑβριστικῶς ἐχρῶντο τοῖς πυλίοις. ἀντὶ τούτων ὁ νέστωρ συναγαγὼν, τοὺς οἰκείους ὅσους οἷός τε ἦν, ἐπελθεῖν φησὶν ἐπὶ τὴν ἠλείαν, καὶ περιελάσαι παμπόλλην λείαν. πεντήκοντα βοῶν ἀγέλας, τόσα πώεα οἰῶν τόσα συῶν συβόσια. τοσαῦτα δὲ, καὶ αἰπόλια. ἵππους δὲ ξανθοὺς πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν, ὑπὸ πώλους τὰς πλείστας. καὶ τὰ μὲν, ἠλασάμεσθα πύλον φησὶ νηλήιον εἴσω. ἐννύχιοι προτὶ ἄστυ. ὡς μεθ᾽ ἡμέραν μὲν τῆς λεηλασίας γεγενημένης, καὶ τῆς τροπῆς τῶν ἐκβοηθησάντων ὅτε κτανεῖν λέγει τὸν ἰτυμονέα. νύκτωρ δὲ, τῆς ἐφόδου γενομένης. ὥστ᾽ ἐννυχίους πρὸς τὸ ἄστυ γενέσθαι. περὶ δὲ τὴν διανομὴν, καὶ θυσίαν ὄντων οἱ ἐπειοὶ, τῇ τρίτῃ τῶν ἡμερῶν κατὰ πλῆθος ἀθροισθέντες, πεζοί τε καὶ ἱππεῖς ἀντεπεξῆλθον. καὶ τὸ θρύον τὸ ἐπὶ τῷ ἀλφειῷ κείμενον περιεστρατοπέδευσαν. αἰσθόμενοι δ᾽ εὐθὺς οἱ πύλιοι βοηθεῖν ὥρμησαν. νυκτερεύσαντες δὲ περὶ τὸν μινύειον ποταμὸν ἐγγύθεν ἀρήνης, ἐντεῦθεν ἔνδιοι πρὸς τὸν ἀλφειὸν ἀφικνοῦνται. τοῦτο δ᾽ ἐστὶ κατὰ μεσημβρίαν. θύσαντες δὲ τοῖς θεοῖς καὶ νυκτερεύσαντες ἐπὶ τῷ ποταμῷ, συμβάλλουσιν εἰς μάχην εὐθὺς ἕωθεν. λαμπρᾶς δὲ, τῆς τροπῆς γενομένης, οὐκ ἐπαύσαντο διώκοντές τε, καὶ κτείνοντες, πρὶν βουπρασίου ἐπιβῆσαι;

» Πέτρης τ᾽ ὠλενίης, καὶ ἀλησίου, ἔνθα κολώνη
» κέκληται. ὅθεν αὖτις ἀπέτραπε λαὸν ἀθήνη. Καὶ ὑποβάς
» — αὐτὰρ ἀχαιοὶ
ἂψ ἀπὸ βουπρασίοιο πύλονδ᾽ ἔχον ὠκέας ἵππους.

ἐκ τούτων δὴ πῶς ἂν ἢ τὸν ἠλειακὸν πύλον ὑπολάβοι τις ἢ τὸν μεσσηνιακὸν λέγεσθαι, τὸν μὲν ἠλειακὸν ὅτι τούτου πορθουμένου, συνεπορθεῖτο, καὶ ἡ τῶν ἐπειῶν ὑφ᾽ ἡρακλέους. αὕτη δ᾽ ἐστὶν ἡ ἠλεία. πῶς οὖν ἔμελλον οἱ συμπεπορθημένοι, καὶ ὁμόφυλοι, τοιαύτην ὑπερηφάνειαν, καὶ ὕβριν κτήσασθαι κατὰ τῶν συναδικηθέντων. πῶς δ᾽ ἂν τὴν οἰκείαν κατέτρεχον, καὶ ἐλεηλάτουν. δ᾽ ἂν πῶς ἅμα καὶ αὐγέας ἦρχε τῶν αὐτῶν καὶ νηλεὺς ἐχθροὶ ὄντες ἀλλήλων. εἴγε,

» Τῷ νηλεῖ χρεῖος μέγ᾽ ὀφείλετ᾽ ἐν ἤλιδι δίῃ.
» Τέσσαρες ἀθλοφόροι ἵπποι.

Καὶ ἑξῆς. εἰ δ᾽ ἐνταῦθα ᾤκει, ὁ νηλεὺς, ἐνταῦθα, καὶ ὁ νέστωρ ὑπῆρχε. πῶς οὖν τῶν μὲν ἠλείων, καὶ βουπρασίων. Τέσσαρες ἀρχοὶ. ἔσαν, δέκα δ᾽ ἀνδρὶ ἑκάστῳ.

» Νῆες ἕποντο θοαὶ, πολέες δ᾽ ἔμβαινον ἐπειοί.

Εἰς τέσσαρα δὲ, καὶ ἡ χώρα διῄρητο. ὧν. οὐδενὸς ὑπῆρχεν ὁ νέστωρ.

» Οἱ δὲ πύλον τ᾽ ἐνέμοντο καὶ ἀρήνην ἐρατεινήν,

Καὶ τὰ ἑξῆς τὰ μέχρι μεσσήνης, οἱ δὲ, δὴ ἀντεπεξιόντες ἐπειοὶ τοῖς πυλίοις, πῶς ἐπὶ τὸν ἀλφειὸν ἐξορμῶσι, καὶ τὸ θρύον. πῶς δ᾽ ἐκεῖ τῆς μάχης γενομένης, τρεφθέντες, εἰς τὸ βουπρασίου. φεύγουσι. πάλιν δ᾽ εἰ τὸν μεσσηνιακὸν πύλον ἐπόρθησεν ὁ ἡρακλῆς, πῶς οἱ τοσοῦτον ἀφεστῶτες, ὕβριζον εἰς αὐτοὺς, καὶ ἐν συμβολαίοις ἦσαν πολλοῖς. καὶ ταῦτ᾽ ἀπεστέρουν χρεοκοποῦντες. ὥστε διὰ ταῦτα συμβῆναι τὸν πόλεμον, πῶς δ᾽ ἐπὶ τὴν λεηλασίαν ἐξιὼν νέστωρ, τοσαύτην περιελάσας λείαν συῶν τε, καὶ προβάτων. ὧν οὐδὲν ὠκυπορεῖν οὐδὲ μακροπορεῖν δύναται, πλειόνων ἢ χιλίων σταδίων ὁδὸν διήνυσεν εἰς τὴν πρὸς τῷ κορυφασίῳ πύλον. οἱ δὲ, τρίτῳ ἤματι πάντες, ἐπὶ τὴν θρυόεσσαν καὶ τὸν ποταμὸν τὸν ἀλφειὸν ἥκουσι πολιορκήσοντες τὸ φρούριον, πῶς δ᾽ ταῦτα τὰ χωρία προσήκοντα ἦν τοῖς ἐν μεσσηνίᾳ δυναστεύουσιν, ἐχόντων καυκώνων, καὶ τριφυλίων καὶ πισατῶν. τὰ δὲ γέρηνα ἢ τὴν γερηνίαν, ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται, τάχα μὲν ἐπίτηδες ὠνόμασάν τινές. δύναται δὲ, καὶ κατὰ τύχην οὕτως ὠνομάσθαι τὸ χωρίον. τὸ δ᾽ ὅλον τῆς μεσσηνίας ὑπὸ μενελάῳ τεταγμένης, ὑφ᾽ ᾧ καὶ ἡ λακωνικὴ ἐτέτακτο. ὡς δῆλον ἔσται καὶ ἐκ τῶν ὕστερον, καὶ τοῦ μὲν παμίσου ῥέοντος διὰ ταύτης, καὶ τοῦ μέδωνος. ἀλφειοῦ δ᾽ οὐδαμῶς. ὅστ᾽ εὐρὺ ῥέει πυλίων διὰ γαίης, ἧς ὑπῆρχεν ὁ νέστωρ, τίς ἂν γένοιτο πιθανὸς λόγος εἰς τὴν ἀλλοτρίαν ἀρχὴν ἐκβιβάζων τὸν ἄνδρα. ἀφαιρούμενος δὲ, τὰς συγκαταλεγείσας αὐτῷ πόλεις, καὶ πάνθ᾽ ὑπ᾽ ἐκείνῳ ποιῶν. λοιπὸν δ᾽ ἐστὶν εἰπεῖν περὶ τῆς ὀλυμπίας καὶ τῆς εἰς τοὺς ἠλείους ἁπάντων μεταπτώσεως. ἔστι δ᾽ ἐν τῇ πισάτιδι τὸ ἱερὸν σταδίους τῆς ἤλιδος ἐλάττους ἢ τριακοσίους διέχον πρόκειται δ᾽ ἄλσος ἀγριελαίων ἐν ᾧ τὸ στάδιον. παραρρεῖ δ᾽ ὁ ἀλφειὸς ἐκ τῆς ἀρκαδίας ῥέων εἰς τὴν τριφυλιακὴν θάλασσαν μεταξὺ δύσεως, καὶ μεσημβρίας, τὴν δ᾽ ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἐξ ἀρχῆς μὲν, διὰ τὸ μαντεῖον τοῦ ὀλυμπίου διός. ἐκείνου δ᾽ ἐκλειφθέντος οὐδὲν ἧττον συνέμεινεν ἡ δόξα, τοῦ ἱεροῦ. καὶ τὴν αὔξησιν ὅσην ἴσμεν ἔλαβε διά τε τὴν πανήγυριν, καὶ τὸν ἀγῶνα τὸν ὀλυμπιακόν. στεφανίτην τε, καὶ ἱερὸν νομισθέντα μέγιστον τῶν ἁπάντων. ἐκοσμήθη δ᾽ ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἀναθημάτων, ἅπερ ἐκ πάσης ἀνετίθετο τῆς ἑλλάδος. ὧν ἦν καὶ ὁ χρυσοῦς σφυρήλατος ζεύς. ἀνάθημα κυψέλου τοῦ κορινθίων τυράννου. μέγιστον δὲ τούτων ὑπῆρξε τὸ τοῦ διὸς ξόανον ὃ ἐποίησε φειδίας χαρμίδου ἀθηναῖος ἐλεφάντινον. τηλικοῦτον τὸ μέγεθος, ὡς καίπερ μεγίστου ὄντος τοῦ νεὼ, δοκεῖν

ἀποχῆσαι τῆς συμμετρίας τὸν τεχνίτην, καθήμενον ποιήσαντα· ἁπτόμενον δὲ σχεδόν τι τῇ κορυφῇ τῆς ὀροφῆς· ὥστ᾽ ἔμφασιν ποιεῖν, ἐὰν ὀρθὸς γένηται διαναστάς, ἀποστεγάσειν τὸν νεών. ἀνέγραψαν δέ τινες τὰ μέτρα τοῦ ξοάνου. καὶ καλλίμαχος ἐν ἰάμβῳ τινὶ ἐξεῖπε. πολλὰ δὲ συνέπραξε τῷ φειδίᾳ, πάναινος, ὁ ζωγράφος ἀδελφιδοῦς ὢν αὐτοῦ, καὶ συνεργολάβος, πρός τε τὴν τοῦ ξοάνου κατασκευήν, διὰ τὴν τῶν χρωμάτων κόσμησιν. καὶ μάλιστα τῆς ἐσθῆτος. δείκνυνται δέ, καὶ γραφαί τε πολλαί τε καὶ θαυμασταὶ περὶ τὸ ἱερόν, ἐκείνου ἔργα. ἀπομνημονεύουσι δὲ τοῦ φειδίου, ὅτι πρὸς τὸν πάναινον εἶπε πυνθανόμενον, πρός τι παράδειγμα μέλλει ποιήσειν τὴν εἰκόνα τοῦ διός, ὅτι πρὸς τὴν ὁμήρου, δι᾽ ἐπῶν ἐκτεθεῖσαν τούτων.

» Ἦ, καὶ κυανέῃσιν ἐπ᾽ ὀφρύσι νεῦσε κρονίων.
» Ἀμβρόσιαι δ᾽ ἄρα χαῖται ἐπερρώσαντο ἄνακτος,
» Κρατὸς ἀπ᾽ ἀθανάτοιο. μέγαν δ᾽ ἐλέλιξεν ὄλυμπον.

Εἰρῆσθαι γὰρ μάλα δοκεῖ καλῶς, ἔκ τε τῶν ἄλλων, καὶ τῶν ὀφρύων, ὅτι προκαλεῖ τὴν διάνοιαν ὁ ποιητὴς ἀναζωγραφεῖν μέγαν τινὰ τύπον, καὶ μεγάλην δύναμιν τοῦ διός, καθάπερ, καὶ ἐπὶ ἥρας ἅμα φυλάττων, τὸ ἐφ᾽ ἑκατέρων πρέπον. ἔφη μὲν γὰρ

» Εἴσατο δ᾽ ἐν θρόνῳ. ἐλέλιξε δὲ μακρὸν ὄλυμπον.

Τὸ δ᾽ ἐπ᾽ ἐκείνης συμβὰν ὅλῃ κινηθείσῃ. τοῦτ᾽ ἐπὶ τοῦ διὸς ἀπαντῆσαι, ταῖς ὀφρύσι μόνον νεύσαντος, συμπαθούσης δέ τι, καὶ τῆς κόμης, κομψῶς δ᾽ εἴρηται καὶ τὸ ὁ τὰς τῶν θεῶν εἰκόνας, ἢ μόνος ἰδὼν ἢ μόνος δείξας. ἄξιοι δέ, μάλιστα τὴν αἰτίαν ἔχειν τῆς περὶ τὸ ὀλυμπίασιν ἱερόν, μεγαλοπρεπείας τε καὶ τιμῆς ἠλεῖοι. κατὰ μὲν γὰρ τὰ τρωϊκά, καὶ ἔτι πρὸ τούτων οὐκ ηὐτύχουν. ὑπό τε τῶν πυλίων ταπεινωθέντες, καὶ ὑφ᾽ ἡρακλέους ὕστερον, ἡνίκα αὐγέας ὁ βασιλεύων αὐτῶν κατελύθη. σημεῖον δέ, εἰς γὰρ τὴν τροίαν ἐκεῖνοι μὲν τετταράκοντα ναῦς ἔστειλαν. πύλιοι δέ, καὶ νέστωρ, ἐνενήκοντα. ὕστερον δὲ μετὰ τὴν τῶν ἡρακλειδῶν κάθοδον, συνέβη τἀναντία. αἰτωλοὶ γὰρ συγκατελθόντες ἡρακλείδαις μετὰ ὀξύλου, καὶ συνοικήσαντες ἐπειοῖς κατὰ συγγένειαν παλαιάν, ηὔξησαν τὴν κοίλην ἦλιν. καὶ τῆς πισάτιδος ἀφείλοντο πολλήν. καὶ ὀλυμπία ὑπ᾽ ἐκείνοις ἐγένετο, καὶ δή, καὶ ὁ ἀγὼν εὕρημά ἐστιν ἐκείνων ὀλυμπιακός. καὶ τὰς ὀλυμπιάδας τὰς πρώτας, ἐκεῖνοι συνετέλουν. ἐᾶσαι γὰρ δεῖ τὰ παλαιά. καὶ περὶ τῆς κτίσεως τοῦ ἱεροῦ, καὶ περὶ τῆς θέσεως τοῦ ἀγῶνος. τῶν μὲν ἕνα τῶν ἰδαίων δακτύλων ἡρακλέα λεγόντων ἀρχηγέτην τούτων. τῶν δὲ τὸν ἀλκμήνης καὶ διός. ὃν καὶ ἀγωνίσασθαι πρῶτον, καὶ νικῆσαι. τὰ γὰρ τοιαῦτα πολλαχῶς λέγεται, καὶ οὐ πάνυ πιστεύεται. ἐγγυτέρω δὲ τῆς πίστεως, ὅτι μέχρι τῆς ἕκτης καὶ εἰκοστῆς ὀλυμπιάδος ἀπὸ τῆς πρώτης, ἐν ᾗ κόροιβος ἐνίκα στάδιον ἠλεῖος, τὴν προστασίαν εἶχον τοῦ τε ἱεροῦ, καὶ τοῦ ἀγῶνος ἠλεῖοι. κατὰ δὲ τὰ τρωϊκά, ἢ οὐκ ἦν ἀγὼν στεφανίτης, ἢ οὐκ ἔνδοξος. οὔθ᾽ οὗτος οὔτ᾽ ἄλλος οὐδεὶς τῶν νῦν ἐνδόξων. οὔτε μέμνηται τούτων ὅμηρος οὐδενός. ἀλλ᾽ ἑτέρων τινῶν ἐπιταφίων. καίτοι δοκεῖ τισὶ τοῦ ὀλυμπιακοῦ μεμνῆσθαι, ὅταν φῇ τὸν αὐγέαν ἀποστερῆσαι τέτταρας ἀθλοφόρους ἵππους, ἐλθόντας μετ᾽ ἄεθλα. φασὶ δὲ τοὺς πισάτας μὴ μετασχεῖν τοῦ τρωϊκοῦ πολέμου. ἱεροὺς νομισθέντας τοῦ διός. ἀλλ᾽ οὔθ᾽ οἱ πισᾶται οὔθ᾽ ὑπὸ αὐγέᾳ τὸ ὑπῆρχον ἐν ᾗ ἐστὶ καὶ ἡ ὀλυμπία. ἀλλ᾽ ἡ ἠλεία μόνον, οὔτ᾽ ἐν ἠλείᾳ συνετελέσθη ὁ ὀλυμπιακὸς ἀγών, οὐδ᾽ ἅπαξ. ἀλλ᾽ ἀεὶ ἐν ὀλυμπίᾳ. ὁ δὲ νῦν παρατεθεὶς ἐν ἤλιδι φαίνεται γενόμενος ἐν ᾗ, καὶ τὸ χρέος ὠφείλετο, καὶ γὰρ τῷ χρέος ὠφείλεται ἐν ἤλιδι δίῃ.

» Τέσσαρες ἀθλοφόροι ἵπποι. Καὶ οὗτος μὲν οὐ στεφανίτης. περὶ τρίποδος γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι. ἐκεῖνος δὲ μετὰ τὴν ἕκτην καὶ εἰκοστὴν ὀλυμπιάδα. οἱ δὲ πισᾶται, τὴν οἰκείαν ἀπολαβόντες, αὐτοὶ συνετέλουν τὸν ἀγῶνα ὁρῶντες εὐδοκιμοῦντα. χρόνοις δ᾽ ὕστερον μεταπεσούσης πάλιν τῆς πισάτιδος εἰς τοὺς ἠλείους, μετέπεσε πάλιν εἰς αὐτούς, καὶ ἡ ἀγωνοθεσία. συνέπραξαν δὲ καὶ λακεδαιμόνιοι μετὰ τὴν ἐσχάτην κατάλυσιν τῶν μεσσηνίων, συμμαχήσασιν αὐτοῖς, τἀναντία τῶν νέστορος ἀπογόνων, καὶ τῶν ἀρκάδων. συμπολεμησάντων τοῖς μεσσηνίοις. καὶ ἐπὶ τοσοῦτόν γε συνέπραξαν ὥστε τὴν χώραν ἅπασαν τὴν μέχρι μεσσήνης ἠλείαν ῥηθῆναι, καὶ διαμεῖναι μέχρι, καὶ νῦν. πισατῶν δέ, καὶ τριφυλίων, καὶ καυκώνων μηδ᾽ ὄνομα λειφθῆναι, τὸν αὐτὸν δὲ τὸν πύλον τὸν ἠμαθόεντα, εἰς τὸ λέπρεον συνῴκισαν. χαριζόμενοι τοῖς λεπρεάταις κρατήσασι πολέμου, καὶ ἄλλας πολλὰς τῶν κατοικιῶν κατέσπασαν. ὅσας ἑώρων αὐτοπραγεῖν ἐθελούσας, καὶ φόρους ἐπράξαντο. διωνομάσθη δὲ πλεῖστον ἡ πισᾶτις, τότε μὲν πρῶτον, διὰ τοὺς ἡγεμόνας δυνηθέντας πλεῖστον. οἰνόμαόν τε καὶ πέλοπα τὸν ἐκεῖνον διαδεξάμενον, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ πολλοὺς γενομένους, καὶ ὁ σαλμωνεὺς δ᾽ ἐνταῦθα βασιλεῦσαι λέγεται. τῶν γοῦν ὀκτὼ πόλεων μεριζομένης τῆς πισάτιδος, μία τούτων λέγεται καὶ ἡ σαλμώνη. διὰ ταῦτα δή, καὶ τὸ ἱερὸν τὸ ὀλυμπίασι, διατεθρύληται σφόδρα ἡ χώρα. δεῖ δὲ τῶν παλαιῶν ἱστοριῶν ἀκούειν οὕτως, ὡς μὴ ὁμολογουμένων σφόδρα. οἱ γὰρ νεώτεροι πολλά, καὶ νομίζουσι, ὥς τε καὶ τἀναντία λέγειν. οἱ τὸν μὲν αὐγέαν, τῆς πισάτιδος ἄρξαι. τὸν δ᾽ οἰνόμαον, καὶ τὸν σαλμωνέα τῆς ἠλείας. ἔνιοι δ᾽ εἰς ταυτὸ συνάγουσι τὰ ἔθνη. δεῖ δὲ τοῖς ὁμολογουμένοις ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἀκολουθεῖν. ἐπεὶ οὐδὲ τοὔνομα τὴν πισᾶτιν ἐτυμολογοῦσιν ὁμοίως. οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ πόλεως ὁ-

μωνύμου τῇ κρώνῃ πόλει τὴν δὲ κρώνην · πίσαν εἰρῆσθαι. οἱ πίσσαν. ὁ ποτὲ ἐστὶ ποτίσραν. τὴν
δὲ πόλιν ἱδρυμένην ἐφ᾽ ὕψους, δεικνύουσι μεταξὺ δυοῖν ὀρῶν, ὄσσης, καὶ ὀλύμπου, ὁμωνύμων τοῖς
ἐν θετταλίᾳ. τινὲς δὲ πόλιν μὲν οὐδεμίαν γεγονέναι πίσαν φασίν. εἶναι γὰρ ἂν μίαν τῶν ὀκτώ. κρή-
νην δὲ μόνην, ἣν νῦν καλεῖσθαι βίσσαν. κικυσίου πλησίον πόλεως μεγίστης τῶν ὀκτώ, στησίχορος δὲ καλ-
λεῖ πόλιν τὴν χώραν πίσαν λεγομένην. ὡς ὁ ποιητὴς τὴν λέσβον, μάκαρος πόλιν, εὐριπίδης δ᾽ ἐν ἴωνι.

» εὔβοι᾽ ἀθήναις ἐστί τις γείτων πόλις. Καὶ ἐν ῥαδαμάνθυι.

» οἳ γῆν ἔχουσ᾽ εὐβοΐδα πρόσχωρον πόλιν, Σοφοκλῆς δ᾽ ἐν μυσοῖς.

» Ἀσία μὲν ἡ σύμπασα κλήζεται ξένε.

» Πόλις δὲ μυσῶν μυσία προσήγορος.

Ἡ δὲ, σαλμώνη πλησίον τῆς ὁμωνύμου κρώνης, ἐξ ἧς ῥεῖ ὁ ἐνιπεύς. ἐμβάλλει δ᾽ εἰς τὸν ἀλφειὸν, καλ-

» λεῖται δὲ νῦν βαρνίχιος. τούτου ἐρασθῆναι τὴν τυρώ φασιν.

» Ἡ ποταμοῦ ἠράσατ᾽ ἐνιπῆος θείο.

„Ἐνταῦθα γὰρ βασιλεῦσαι τὸν πατέρα αὐτῆς σαλμωνέα, καθάπερ καὶ εὐριπίδης ἐν αἰόλῳ φησί.
τὸν δ᾽ ἐν τῇ θετταλίᾳ ἐνισέα γράφουσιν. ὃς ἀπὸ τῆς ὄθρυος ῥέων, δέχεται τὸν ἀπιδανὸν κατενεχθέν-
τα ἐκ φαρσάλου. ἐγγὺς δὲ σαλμώνης ἡράκλεια. καὶ αὕτη μία τῶν ὀκτώ. διέχουσα περὶ τετταρ-
ράκοντα σταδίους τῆς ὀλυμπίας. κειμένη παρὰ τὸν κυθήριον ποταμὸν, οὗ τὸ τῶν ἰωνιάδων νυμ-
φῶν ἱερὸν, τῶν πεπιστευμένων θεραπεύειν νόσους τοῖς ὕδασι. παρὰ δὲ, τὴν ὀλυμπίαν ἐστὶ καὶ ἡ ἔπινα.
καὶ αὕτη τῶν ὀκτώ. δι᾽ ἧς ῥεῖ ποταμὸς παρθενίας, ὡς εἰς φυραίαν ἰόντων. ἡ δὲ φηραία ἐστὶ τῆς ἀρ-
καδίας. ὑπέρκειται δὲ δυμαίας βουπρασίου καὶ ἤλιδος. ἅ ἐστι πρὸς ἄρκτον τῇ πισάτιδι. αὐτὴ
δέ ἐστι, καὶ τὸ κικύσιον τῶν ὀκτώ. καὶ τὸ δυσπόντιον κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐξ ἤλιδος εἰς ὀλυμπίαν, ἐν πε-
δίῳ κείμενον. ἐξελείφθη δὲ, καὶ ἀπῆραν οἱ πλείους εἰς ἐπίδαμνον, καὶ ἀπολλωνίαν. καὶ ἡ φολόη
δ᾽ ὑπέρκειται τῆς ὀλυμπίας ἐγγυτάτω, ὄρος ἀρκαδικόν. ὥστε τὰς ὑπωρείας τῆς πισάτιδος εἶναι
καὶ πᾶσα δ᾽ ἡ πισάτις καὶ τῆς τριφυλίας τὰ πλεῖστα ὁμορεῖ τῇ ἀρκαδίᾳ. διὰ τοῦτο δὲ, καὶ ἀρ-
καδικὰ εἶναι δοκεῖ τὰ πλεῖστα τῶν πυλιακῶν, ἐν καταλόγῳ φραζομένων χωρίων. οὐ μέντοι
φασὶν ἔμπειροι. τὸν γὰρ ἀμαρύνθον εἶναι ὁρίζοντα τὴν ἀρκαδίαν. τῶν εἰς τὸν ἀλφειὸν ἐμπιπτόν-
των ποταμῶν. ἔξω δ᾽ ἐκείνου τὰ χωρία ἱδρύσθαι ταῦτα, ἔφορος δέ φησιν, αἰτωλὸν ἐκπεσόντα ὑπὸ
σαλμωνέως τοῦ βασιλέως, ἐπειῶν τε καὶ πισατῶν ἐκ τῆς ἠλείας εἰς τὴν αἰτωλίαν, ὀνομάσαι τε ἀφ᾽
αὐτοῦ τὴν χώραν καὶ συνοικίσαι τὰς αὐτόθι πόλεις. τούτου δ᾽ ἀπόγονον ὑπάρξαντα ὄξυλον φίλον
τοῖς περὶ τήμενον ἡρακλείδαις, ἡγήσασθαί τε τὴν ὁδὸν κατιοῦσιν εἰς πελοπόννησον. καὶ μερίσαι
τὴν πολεμίαν αὐτοῖς χώραν. καὶ τἆλλα ὑποθέσθαι τὰ περὶ τὴν κατάκτησιν τῆς χώρας. ἀντὶ
δὲ, τούτων λαβεῖν χάριν, τὴν εἰς τὴν ἠλείαν κάθοδον, προγονικὴν οὖσαν. κατελθεῖν δὲ ἀθροίσαντας στρα-
τείαν ἐξ αἰτωλίας, ἐπὶ τοὺς κατέχοντας ἐπειοὺς τὴν ἦλιν, ἀπαντησάντων δὲ τῶν ἐπειῶν μεθ᾽ ὅπλων, ἐπειδὴ
ἀντίπαλοι ἦσαν αἱ δυνάμεις, εἰς μονομαχίαν προελθεῖν κατὰ ἔθος τὸ παλαιὸν τῶν ἑλλήνων πυραί-
χμην αἰτωλὸν, δέγμενόν δ᾽ ἐπειόν, τὸν μὲν δέγμενον μετὰ τόξου ψιλὸν, ὡς περιεσόμενον ῥᾳδίως ὁ πλίτου διὰ
τῆς ἑκηβολίας. τὸν δὲ μετὰ σφενδόνης καὶ πήρας λίθων, ἐπειδὴ κατέμαθε τὸν δόλον. τυχεῖν δὲ νεωστὶ ὑπὸ τῶν
αἰτωλῶν εὑρημένον τὸ τῆς σφενδόνης εἶδος, μακροβολωτέρας δ᾽ οὔσης τῆς σφενδόνης, πεσεῖν τὸν
δέγμενον καὶ κατασχεῖν τοὺς αἰτωλοὺς τὴν γῆν ἐκβαλόντας τοὺς ἐπειούς. παραλαβεῖν δὲ, καὶ τὴν
ἐπιμέλειαν τοῦ ἱεροῦ τοῦ ὀλυμπιάσιν, ἣν εἶχον οἱ ἀχαιοί. διά τε τὴν ὀξύλου φιλίαν πρὸς τοὺς ἡρα-
κλείδας. συνομολογηθῆναι δὲ ῥᾳδίως ἐκ πάντων μεθ᾽ ὅρκου τὴν ἠλείαν ἱερὰν εἶναι τοῦ διός. τὸν
δ᾽ ἐπιόντα ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην μεθ᾽ ὅπλων, ἐναγῆ εἶναι. ὡσαύτως ἐναγῆ, καὶ τὸν μὴ ἐπαμύ-
νοντα εἰς δύναμιν. ἐκ δὲ, τούτου καὶ τοὺς κτίσαντας τὴν ἠλείων πόλιν ὕστερον, ἀτείχιστον ἐᾶσαι, καὶ τοὺς
δι᾽ αὐτῆς τῆς χώρας ἰόντας στρατοπέδῳ, τὰ ὅπλα παραδόντας, ἀπολαμβάνειν μετὰ τὴν ἐκ τῶν ὅρων
ἔκβασιν. ἴφιτόν τε θεῖναι τὸν ὀλυμπιακὸν ἀγῶνα, ἱερῶν ὄντων τῶν ἠλείων. ἐκ δὲ τῶν τοιούτων αὔξησιν
λαβεῖν τοὺς ἀνθρώπους. τῶν γὰρ ἄλλων ἀεὶ πολεμούντων πρὸς ἀλλήλους, μόνοις ὑπάρξαι πολλὴν εἰ-
ρήνην. οὐκ αὐτοῖς μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς ξένοις. ὥστε, καὶ εὐανδρῆσαι μάλιστα πάντων παρὰ τοῦτο. φεί-
δωνα δὲ, τὸν ἀργεῖον δέκατον μὲν ὄντα ἀπὸ τημένου, δυνάμει δ᾽ ὑπερβεβλημένον τοὺς κατ᾽ αὐτὸν.
ἀφ᾽ ἧς τήν τε λῆξιν ὅλην ἀνέλαβε τὴν τημένου διεσπασμένην εἰς πλείω μέρη, καὶ μέτρα ἐξεῦρε τὰ
φειδώνεια καλούμενα. καὶ σταθμοὺς, καὶ νόμισμα κεχαραγμένον. τό τε ἄλλο, καὶ τὸ ἀργυροῦν. πρὸς
τούτοις, ἐπιθέσθαι, καὶ ταῖς ὑφ᾽ ἡρακλέους αἱρεθείσαις πόλεσι, καὶ τοὺς ἀγῶνας ἀξιοῦν τιθέναι αὐ-
τὸν, οὓς ἐκεῖνος ἔθηκε, τούτων δὲ εἶναι, καὶ τὸν ὀλυμπιακόν. καὶ δὴ βιασάμενον ἐπελθόντα θεῖναι
αὐτόν. οὔτε τῶν ἠλείων ἐχόντων ὅπλα ὥστε κωλύειν διὰ τὴν εἰρήνην, τῶν τε ἄλλων κρατουμένων τῇ δυ-
ναστείᾳ. οὐ μὴν τούς γε ἠλείους ἀναγράψαι τὴν θέσιν ταύτην. ἀλλὰ καὶ ὅπλα κτήσασθαι διὰ ταῦ-
τα, καὶ ἀρξαμένους ἐπικουρεῖν σφίσιν αὐτοῖς. συμπράττειν δὲ, καὶ λακεδαιμονίους. εἴτε φθονήσαν-
τας τῇ διὰ τὴν εἰρήνην εὐτυχίᾳ. εἴτε καὶ συνεργοὺς ἕξειν νομίσαντας πρὸς τὸ καταλῦσαι τὸν φεί-

δῶνα ἀφῃρημένων αὐτοὺς τὴν ἡγεμονίαν τῶν πελοποννησίων, ἣν ἐκεῖνοι προσεκέκτηντο. καὶ δὴ καὶ συγκαταλῦσαι τὸν φείδωνα. τοὺς δὲ, συγκατασκευάσαι τοῖς ἠλείοις, τήν τε πισάτιν, καὶ τὴν τριφυλίαν. ὁ δὲ παράπλους ἅπας ὁ τῆς νῦν ἠλείας, μὴ κατακολπίζοντι, χιλίων ὁμοῦ, καὶ διακοσίων ἐστὶ σταδίων. ταῦτα μὲν περὶ τῆς ἠλείας. ἡ δὲ μεσσηνία συνεχής ἐστι τῇ ἠλείᾳ, περινεύουσα τὸ πλέον ἐπὶ τὸν νότον καὶ τὸ λιβυκὸν πέλαγος. αὕτη δ᾽ ἐπὶ μὲν τῶν τρωϊκῶν, ὑπὸ μενελάῳ ἐτέτακτο μέρος, οὖσα τῆς λακωνικῆς. ἐκαλεῖτο δ᾽ ἡ χώρα μεσσήνη. τὴν δὲ νῦν ὀνομαζομένην πόλιν μεσσήνην, ἧς ἀκρόπολις ἡ ἰθώμη ὑπῆρξεν, οὔπω συνέβαινεν ἐκτίσθαι. μετὰ δὲ τὴν μενελάου τελευτὴν, ἐξασθενησάντων τῶν διαδεξαμένων τὴν ἀρχὴν, οἱ νηλεῖδαι τῆς μεσσηνίας ἐπῆρχον, καὶ δὴ κατὰ τὴν τῶν ἡρακλειδῶν κάθοδον καὶ τὸν τότε γενηθέντα μερισμὸν τῆς χώρας, ἦν μέλανθος βασιλεὺς τῶν μεσσηνίων. καθ᾽ αὑτοὺς ταττομένων. πρότερον δ᾽ ὑπήκοοι ἦσαν τοῦ μενελάου. σημεῖον δὲ, ἐκ γὰρ τοῦ μεσσηνιακοῦ κόλπου, καὶ τοῦ συνεχοῦς ἀσιναίου λεγομένου, ἀπὸ τῆς μεσσηνιακῆς ἀσίνης, αἱ ἑπτὰ ἦσαν πόλεις ἃς ὑπέσχετο δώσειν ἀγαμέμνων ἀχιλλεῖ

» καρδαμύλην. ἐνόπην τε καὶ ἱρὴν ποιήεσσαν.
» φηράς τε ζαθέας ἠδ᾽ ἄνθειαν βαθύλειμον
» καλήν τ᾽ ἔπειαν, καὶ πήδασον ἀμπελόεσσαν.

Οὐκ ἂν τάς τε μὴ προσηκούσας μήτ᾽ αὐτῷ μήτε τῷ ἀδελφῷ ὑπισχόμενος. ἐκ δὲ τῶν φηρῶν, καὶ συστρατεύσαντας τῷ μενελάῳ δηλοῖ ὁ ποιητής. τὸν μὲν, καὶ συγκαταλέγων τῷ λακωνικῷ καταλόγῳ. τὴν δὲ, ἐν τῷ μεσσηνιακῷ κόλπῳ. ἔστι δὲ, ἡ μεσσήνη, μετὰ τριφυλίαν. κοινὴ δ᾽ ἐστὶ ν ἀμφοῖν ἄκρα, μεθ᾽ ἣν τὸ κορυφάσιον. καὶ ἡ κυπαρισσία. ὑπέρκειται δ᾽ ὄρος ἐν ἑπτὰ σταδίοις τὸ αἰγαλέον τούτου τε καὶ τῆς θαλάττης. ἡ μὲν οὖν παλαιὰ πύλος ἡ μεσσηνιακὴ, ὑπὸ τῷ αἰγαλέῳ πόλις ἦν. κατεσπασμένης δὲ ταύτης, ὑπὸ τῷ κορυφασίῳ τινὲς αὐτῶν ᾤκησαν προσεκτήσαντο δ᾽ αὐτὴν ἀθηναῖοι τὸ δεύτερον, ἐπὶ σικελίαν πλέοντες μετ᾽ εὐρυμέδοντος, καὶ στρατοκλέους. ἐπιτείχισμα τοῖς λακεδαιμονίοις, αὐτοῦ δ᾽ ἐστὶ καὶ ἡ κυπαρισσία ἡ μεσσηνιακή. καὶ ἡ προσκειμένη πλησίον τοῦ πύλου σφαγία νῆσος. ἡ δ᾽ αὐτὴ καὶ σφακτηρία λεγομένη; περὶ ἣν ἀπέβαλον ζωγρίᾳ λακεδαιμόνιοι τριακοσίους ἐξ ἑαυτῶν ἄνδρας ὑπ᾽ ἀθηναίων ἐκπολιορκηθέντας; κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην, αὐτῶν κυπαρισσίων πελάγιαι πρόκεινται δύο νῆσοι προσαγορευόμεναι στροφάδες. τετρακοσίους ἀπέχουσαι μάλιστά πως τῆς ἠπείρου σταδίους. ἐν τῷ λιβυκῷ, καὶ μεσημβρινῷ πελάγει. φησὶ δὲ θουκυδίδης, ναύσταθμον ὑπάρξαι τῶν μεσσηνίων ταύτην τὴν πύλον. διέχει, δὲ σπάρτης, σταδίους τετρακοσίους. ἑξῆς δ᾽ ἐστὶ μεθώνη. ταύτην δ᾽ εἶναι φασὶ τὴν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ πήδασον προσαγορευομένην. μίαν τῶν ἑπτὰ, ὧν ὑπέσχετο τῷ ἀχιλλεῖ ἀγαμέμνων. ἐνταῦθα ἀγρίππας τὸν τῶν μαυρουσίων βασιλέα τῆς ἀντωνίου στάσεως ὄντα βόγον, κατὰ τὸν πόλεμον τὸν ἀκτιακὸν διέφθειρε, λαβὼν ἐξ ἐπίπλου τὸ χωρίον, τῇ δὲ μεθώνῃ συνεχής ἐστιν ὁ ἀκρίτας, ἀρχὴ τοῦ μεσσηνιακοῦ κόλπου, καλοῦσι δ᾽ αὐτὸν, καὶ ἀσιναῖον ἀπὸ ἀσίνης πολίχνης πρώτης ἐν τῷ κόλπῳ. ὁμωνύμου τῇ ἑρμιονικῇ. αὕτη μὲν οὖν ἡ ἀρχὴ πρὸς δύσιν τοῦ κόλπου ἐστί. πρὸς ἕω δὲ, αἱ καλούμεναι θυρίδες ὅμοροι τῇ νῦν λακωνικῇ τῇ κατὰ κιναίδιον καὶ ταίναρον. μεταξὺ δ᾽ ἀπὸ τῶν θυρίδων ἀρξαμένοις, ὁ πύλός ἐστι. καλεῖται δ᾽ ὑπό τινων βαίτυλος. εἶτα λεῦκτρον. τῶν ἐν βοιωτίᾳ λεύκτρων ἄποικος, εἶτ᾽ ἐπὶ πέτρας, ἐρυμνῆς ἵδρυται καρδαμύλη. εἶτα φηραί. ὅμορος θουρία, καὶ γερηνία. ἀφ᾽ οὗ τόπου γερήνιον τὸν νέστορα κληθῆναι φασί. διὰ τὸ ἐνταῦθα σωθῆναι αὐτὸν ὡς προειρήκαμεν. δείκνυται δ᾽ ἐν τῇ γερηνίᾳ, τρικκαῖον ἱερὸν, ἀσκληπιοῦ ἀφίδρυμα τοῦ ἐν τῇ θετταλικῇ τρίκκῃ. οἰκῆσαι δὲ λέγεται πέλοψ τό τε λεῦκτρον, καὶ χαράδραν, καὶ θαλάμους τοὺς νῦν βοιωτοὺς καλουμένους. τὴν ἀδελφὴν νιόβην ἐκδοὺς ἀμφίονι καὶ ἐκ βοιωτίας ἀγόμενος τινάς. περὶ δὲ φηρὰς, νέδων ἐκβάλλει ῥέων διὰ τῆς λακωνικῆς. ἕτερος ὢν τῆς νέδας. ἔχει δ᾽ ἱερὸν ἐπίσημον ἀθηνᾶς νεδουσίας, καὶ ἐν ποιαέσσῃ δ᾽ ἐστὶν ἀθηνᾶς νεδουσίας ἱερὸν ἐπώνυμον τόπου τινὸς νέδοντος. ἐξ οὗ φασιν οἰκῆσαι τήλεκλον ποιάεσσαν, καὶ ἐχειάς, καὶ τράγιον. τῶν δὲ προταθεισῶν ἑπτὰ πόλεων τῷ ἀχιλλεῖ, περὶ μὲν καρδαμύλης, καὶ φηρῶν εἰρήκαμεν, καὶ πηδάσου. ἐνόπην δ᾽ οἱ μὲν, τὰ πέλλανα φασὶν, οἱ δὲ, τόπον τινὰ περὶ καρδαμύλην, οἱ δὲ, τὴν γερηνίαν. τὴν δὲ, ἱρὴν κατὰ τὸ ὄρος δεικνύουσι τὸ κατὰ τὴν μεγαλόπολιν τῆς ἀρκαδίας ὡς ἐπὶ ἀνδανίαν ἰόντι ἣν ἔφαμεν, οἱ χαλίαν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ εἰρῆσθαι, οἱ δὲ τὴν νῦν μεσόλαν οὕτω καλεῖσθαι φασί. καθήκουσαν εἰς τὸν μεταξὺ κόλπον τοῦ ταϋγέτου καὶ τῆς μεσσηνίας. ἡ δ᾽ ἔπεια νῦν θουρία καλεῖται, ἣν ἔφαμεν ὅμορον φηραῖς. ἵδρυται δ᾽ ἐπὶ λόφου ὑψηλοῦ ἀφ᾽ οὗ καὶ τοὔνομα. ἀπὸ δὲ τῆς θουρίας, καὶ ὁ θουριάτης κόλπος. ἐν ᾧ πόλις μία ἦν τοὔνομα ῥίον ἀπεναντίον ταινάρου. ἄνθειαν δὲ, οἱ μὲν, αὐτὴν τὴν θουρίαν φασὶν ἔπειαν δὲ, τὴν μεθώνην. οἱ δὲ, τὴν μεταξὺ ἀσίνης, τῶν μεσσηνίων πόλεων οἰκειότατα βαθύλειμον λεχθεῖσαν. ἧς πρὸς θαλάττῃ πόλις κορώνη καὶ ταύτην δέ τινες πήδασον λεχθῆναι φασὶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. πᾶσαι δ᾽ ἐγγὺς ἁλὸς καρδαμύλη μὲν, ἐπ᾽ αὐτῇ. φυραία δ᾽ ἀπὸ πέντε σταδίων. ὕφορμον ἔχουσα θερινόν. αἱ δ᾽ ἄλλαι, ἀνωμάλοις κέχρηνται τοῖς ἀπὸ θαλάττης διαστήμασι πλη

σιοι δὲ κορώνης, κατὰ μέσον πως τὸν κόλπον, ὁ πάμισος ποταμὸς ἐκβάλλει. ταύτην μὲν οὖν ἐν δεξιᾷ
ἔχων καὶ τὰς ἑξῆς, ὧν εἰσιν ἐσχάτη πρὸς δύσιν, ἡ πύλος, κυπαρισσία. μέση δὲ τούτων θουρία. ἣν οὐκ εὖ
τινὲς αἴπειαν εἶναι νενομίκασι πρότερον. θουρίαν δὲ, καὶ φηρὰς ἐν ἀριστερᾷ. μέγιστος δ᾽ ἐστὶ ποταμῶν
τῶν ἐντὸς ἰσθμοῦ, καίπερ οὐ πλείους ἢ ἑκατὸν σταδίους ἐκ τῶν πηγῶν ῥυεὶς τῷ ὕδατι δαψιλὴς διὰ
τοῦ μεσσηνιακοῦ πεδίου, καὶ τῆς μακαρίας καλουμένης. ἀφέστηκέ τε τῆς νῦν μεσσηνίων πόλεως ὁ πο-
ταμὸς σταδίους διακοσίους πεντήκοντα. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος πάμισος χαραδρώδης μικρὸς, περὶ λεῦ-
κτρον ῥέων τὸ λακωνικόν. περὶ οὗ κρίσιν ἔσχον μεσσήνιοι πρὸς λακεδαιμονίους ἐπὶ φιλίππου. τὸν
δὲ πάμισον ἀμαθὸν τινὲς ὠνόμαζον, ὡς προείπομεν. ἔφορος δὲ τὸν κρεσφόντην ἐπειδὴ εἷλε μεσσή-
νην, διελεῖν φησὶν ὡς προειρήκαμεν, εἰς πέντε πόλεις αὐτήν. ὥστε τὴν στενύκλαρον μὲν, ἐν τῷ μέσῳ τῆς
χώρας ταύτης κειμένην, ἀποδεῖξαι βασίλειον αὐτῷ τῆς βασιλείας. ἐν τοῖς ἄλλοις δὲ βασιλέας πέμψαι,
πρεσβύτην εἰς πύλον, καὶ ῥίον. τοὺς μεσσηνίους ἅπαντας τοῖς δωριεῦσιν ἰσονόμους ποιήσοντα. ἀγα-
νακτούντων δὲ, τῶν δωριέων, μεταγνόντα μόνην τὴν στενύκλαρον εἰς νομίσαι πόλιν. εἰς ταύτην δὲ τοὺς
δωριέας συναγαγεῖν πάντας. ἡ δὲ μεσσηνίων πόλις ἔοικε κορίνθῳ. ὑπέρκειται γὰρ τῆς πόλεως ἑ-
κατέρας, ὄρος ὑψηλὸν καὶ ἀπότομον. τείχει κοινῷ περιειλημμένον, ὥστ᾽ ἀκροπόλει χρῆσθαι, τὸ μὲν
καλούμενον ἰθώμη. τὸ δὲ ἀκροκόρινθος. ὥστ᾽ οἰκείως δοκεῖ δημήτριος ὁ φαληρεὺς πρὸς φίλιππον
εἰπεῖν. τὸν παρακελευόμενον τούτων ἔχεσθαι τῶν πόλεων ἀμφοῖν, ἐπιθυμοῦντα τῆς πελοπον-
νήσου. τῶν κεράτων γὰρ ἀμφοῖν, ἔφη, κατέξεις τὴν βοῦν. κέρατα μὲν λέγων τὴν ἰθώμην, καὶ
τὸν ἀκροκόρινθον. βοῦν δὲ τὴν πελοπόννησον. καὶ δὴ διὰ τὴν εὐκαιρίαν ταύτην ἀμφήριστοι γεγόνα-
σιν αἱ πόλεις αὗται, κόρινθον μὲν οὖν κατέσκαψαν, καὶ ἀνέστησαν πάλιν, μεσσήνην δὲ ἀνεῖλον μὲν,
λακεδαιμόνιοι. πάλιν δ᾽ ἀνέλαβον θηβαῖοι, καὶ μετὰ ταῦτα φίλιππος ἀμύντου. αἱ δ᾽ ἀκροπόλεις
ἀοίκητοι διέμειναν. τὸ δ᾽ ἐν λίμναις τῆς ἀρτέμιδος ἱερὸν λιμναῖον, ἐφ᾽ ᾧ μεσσήνιοι περὶ τὰς παρ-
θένους ὑβρίσαι δοκοῦσι τὰς ἀφιγμένας ἐπὶ τὴν θυσίαν, ἐν μεθορίοις ἐστὶ τῆς λακωνικῆς καὶ τῆς μεσ-
σηνίας. ὅπου κοινὴν συνετέλουν πανήγυριν, καὶ θυσίαν ἀμφότεροι. μετὰ δὲ τὴν ὕβριν οὐ διδόν-
των δίκας τῶν μεσσηνίων, συστῆναί φασι τὸν πόλεμον. ἀπὸ δὲ, τῶν λιμνῶν τούτων, καὶ τὸ ἐν σπάρ-
τῃ λιμναῖον εἴρηται τῆς ἀρτέμιδος ἱερόν. πλεονάκις δ᾽ ἐπολέμησαν διὰ τὰς ἀποστάσεις τῶν μεσση-
νίων. τὴν μὲν οὖν πρώτην κατάκτησιν αὐτῶν φησὶ τυρταῖος ἐν τοῖς ποιήμασι κατὰ τοὺς τῶν πατέ-
ρων πατέρας γενέσθαι. τὴν δὲ δευτέραν καθ᾽ ἣν ἑλόμενοι συμμάχους ἠλείους καὶ ἀργείους καὶ πι-
σάτας ἀπέστησαν. ἀρκάδων μὲν ἀριστοκράτην τὸν ὀρχομενοῦ βασιλέα παρεχομένων στρατηγόν. πι-
σατῶν δὲ παντάλεοντα τὸν ὀμφαλίωνος. ἡνίκα φησὶν αὐτὸς στρατηγῆσαι τὸν πόλεμον τοῖς λακε-
δαιμονίοις. καὶ γὰρ εἶναί φησιν ἐκεῖθεν ἐν τῇ ποιήσει ἐλεγεία ἣν ἐπιγράφουσιν εὐνομίαν

» Αὐτὸς γὰρ κρονίων καλλιστεφάνου πόσις ἥρης
» Ζεὺς ἡρακλείδαις τήνδε δέδωκε πόλιν.
» Οἷσιν ἅμα προλιπόντες ἐρινεὸν ἠνεμόεντα.

Εὐρεῖαν πέλοπος νῆσον ἀφικόμεθα. ὥστε ἢ ταῦτα ἀκυρωτέα ὄντα ἐλεγεῖα, ἢ φιλο-
χόρῳ ἀπιστητέον, καὶ καλλισθένει, καὶ ἄλλοις πλείοσιν εἰποῦσιν, ἐξ ἀθηνῶν καὶ ἀφιδνῶν ἀφικέσθαι,
δεηθέντων λακεδαιμονίων κατὰ χρησμὸν, ὃς ἐπέταττε παρ᾽ ἀθηναίων λαβεῖν ἡγεμόνα, ἐπὶ μὲν οὖν
τοῦ τυρταίου ὁ δεύτερος ὑπῆρξε πόλεμος. τρίτον δὲ, καὶ τέταρτον συστῆναί φασιν, ἐν ᾧ κατελύθη-
σαν οἱ μεσσήνιοι. ὁ δὲ πᾶς παράπλους ὁ μεσσηνιακὸς στάδιοι ὀκτακόσιοι που, κατακολπίζοντι. ἀλλὰ
γὰρ εἰς πλείω λόγον τοῦ μετρίου πρόϊμεν, ἀκολουθοῦντες τῷ πλήθει τῶν ἱστορουμένων, περὶ χώ-
ρας ἐκλελειμμένης τῆς πλείστης. ὅπου γε καὶ ἡ λακωνικὴ λιπανδρεῖ, κρινομένη πρὸς τὴν παλαιὰν
εὐανδρίαν. πλὴν γὰρ τῆς σπάρτης, αἱ λοιπαὶ πολίχναι τινές εἰσι περὶ τριάκοντα τὸν ἀριθμόν.
τὸ δὲ παλαιὸν ἑκατόμπολιν φασὶν αὐτὴν καλεῖσθαι. καὶ τὰ ἑκατόμβαια διὰ τοῦτο θύεσθαι,
παρ᾽ αὐτοῖς κατ᾽ ἔτος. ἔστι δ᾽ οὖν μετὰ τὸν μεσσηνιακὸν κόλπον, ὁ λακωνικὸς μεταξὺ ταινάρου καὶ μα-
λεῶν. ἐκκλίνων μικρὸν ἀπὸ μεσημβρίας πρὸς ἕω. διέχουσι δὲ σταδίους ἑκατὸν τριάκοντα αἱ θυρίδες
τοῦ ταινάρου ἐν τῷ μεσσηνιακῷ οὖσαι κόλπῳ. ῥοώδης κρημνός. τούτων δ᾽ ὑπέρκειται τὸ ταΰγετον. ἔστι δ᾽ ὄ-
ρος μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὑψηλόν τε, καὶ ὄρθιον, συνάπτον κατὰ τὰ προσάρκτια μέρη ταῖς
ἀρκαδικαῖς ὑπωρείαις. ὥστε καταλείπεσθαι μεταξὺ αὐλῶνα. καθ᾽ ὃν ἡ μεσσηνία συνεχής ἐστι τῇ
λακωνικῇ. ὑποπέπτωκε δὲ τῷ ταϋγέτῳ ἡ σπάρτη ἐν μεσογαίᾳ, καὶ ἀμύκλαι. οὗ τὸ τοῦ ἀπόλλω-
νος ἱερὸν, καὶ ἡ φαρίς. ἔστι μὲν οὖν ἐν κοιλοτέρῳ χωρίῳ, τὸ τῆς πόλεως ἔδαφος καίπερ ἀπολαμβά-
νον ὄρη μεταξύ. ἀλλ᾽ οὐδέν γε μέρος αὐτοῦ λιμνάζει. τὸ δὲ παλαιὸν ἐλίμναζε τὸ προάστειον, καὶ
ἐκάλουν αὐτὸ λίμνας, καὶ τὸ τοῦ διονύσου ἱερὸν ἐν λίμναις ἐφ᾽ ὑγροῦ βεβηκὸς ἐτύγχανε. νῦν δ᾽
ἐπὶ ξηροῦ τὴν ἵδρυσιν ἔχει, ἐν δὲ τῷ κόλπῳ τῆς παραλίας, τὸ μὲν ταίναρον ἀκτή ἐστιν ἐκκειμένη
τὸ ἱερὸν ἔχουσα τοῦ ποσειδῶνος ἐν ἄλσει ἱδρυμένον. πλησίον δ᾽ ἐστὶν ἄντρον δι᾽ οὗ τὸν κέρβερον,
ἀναχθῆναι μυθεύουσιν ὑφ᾽ ἡρακλέους ἐξ ᾅδου. ἐν τοῦθεν δ᾽ εἰς μὲν φυκοῦντα ἄκραν, δίαρμά ἐστι,

τῆς κυρηναίας πρὸς νότον σταδίων τετρακισχιλίων, εἰς δὲ πάχυνον πρὸς δύσιν, τὸ τῆς σικελίας ἀκρωτή-
ριον τετρακισχιλίων ἑξακοσίων. τινὲς δὲ τετρακισχιλίων φασίν. εἰς δὲ, μαλέας πρὸς ἕω ἑξακοσίων
ἑβδομήκοντα κατακολπίζοντι, εἰς δὲ ὄνου γνάθον, ταπεινὴν χερρόνησον ἐνδοτέρω τῆς μαλέας πεν-
τακοσίων εἴκοσι. πρόκειται δὲ κατὰ τούτου κύθηρα ἐν τετταράκοντα σταδίοις νῆσος εὐλίμενος. πό-
λιν ἔχουσα ὁμώνυμον, ἣν ἔσχεν εὐρυκλῆς ἐν μέρει κτήσεως ἰδίας ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν λακεδαιμονίων
ἡγεμών. περίκειται δὲ, νησίδια πλείω, τὰ μὲν, ἐγγύς. τὰ δὲ, μικρὸν ἀπωτέρω. εἰς δὲ κόρυκον
ἄκραν τῆς κρήτης, ἐγγύτατα, πλοῦς ἐστι σταδίων διακοσίων καὶ πεντήκοντα. μετὰ δὲ ταίναρον πλέον-
τι ἐπὶ τὴν ὄνου γνάθον, καὶ μαλέας, ἀμαθοῦς ἐστι πόλις. εἶτα ἀσίνη. καὶ γύθιον τὸ τῆς σπάρτης ἐ-
πίνειον, ἐν διακοσίοις καὶ τετταράκοντα σταδίοις ἱδρυμένον. ἔχει δ' ὥς φασι τὸν ναύσταθμον ὀρυκτόν.
εἶθ' ὁ εὐρώτας ἐκδίδωσι μεταξὺ γυθίου, καὶ ἀκραίων. τέως μὲν οὖν ὁ πλοῦς ἐστι παρ' αἰγιαλόν. ἐπὶ
διακοσίων, καὶ τεττάρων σταδίων. εἶθ' ἑλώδης ὑπέρκειται χωρίον, καὶ κώμη ἕλος. πρότερον δ' ἦν
πόλις καθάπερ καὶ ὅμηρος φησίν.

οἵ τ' ἄρ' ἀμύκλας εἶχον ἕλος τ' ἔφαλον πτολίεθρον.

Κτίσμα δ' ἑλίου φασὶ τοῦ περσέως. ἔστι δὲ, καὶ πεδίον καλούμενον λεύκη. εἶτα πόλις ἐπὶ χερρονή-
σου ἱδρυμένη κυπαρισσία, λιμένα ἔχουσα. εἶτα ἡ ὄνου γνάθος, λιμένα ἔχουσα. εἶτα βοία πόλις. εἶ-
τα μαλέαι. στάδιοι δ' εἰς αὐτὰς ἀπὸ τῆς ὄνου γνάθου πεντήκοντα, καὶ ἑκατόν. ἔστι δὲ, καὶ ἀσωπὸς πόλις
ἐν τῇ λακωνικῇ. τῶν δ' ὑφ' ὁμήρου καταλεγομένων, τὴν μὲν μέσσην οὐδαμοῦ δείκνυσθαι φασί. με-
σσόαν δ' οὐ τῆς χώρας εἶναι μέρος τῆς σπάρτης. καθάπερ καὶ τὸ λιμναῖον. ἔνιοι δὲ κατὰ ἀποκοπὴν
δέχονται τὴν μεσσήνην. εἴρηται γὰρ ὅτι καὶ αὐτὴ μέρος ἦν τῆς λακωνικῆς. παραδείγμασι δὲ χρῶν-
ται τοῦ μὲν ποιητοῦ, τῷ κρῖ, καὶ δῶ, καὶ μάψ. καὶ ἔτι ἥρως αὐτομέδων τε, καὶ ἄλκιμος. ἀντὶ τοῦ
ἀλκιμέδων. ἡσιόδου δὲ, ὅτι τὸ βριθὺ, καὶ τὸ βριαρὸν βρῖ, λέγει. σοφοκλῆς δὲ, καὶ ἴων τὸ ῥᾴδιον
ῥᾶ. ἐπίχαρμος δὲ, τὸ λίαν, λί. συρακὼ δὲ τὰς συρακούσας, παρ' ἐμπεδοκλεῖ δὲ, μία γίνεται ἀμ-
φοτέρων ὄψ ἡ ὄψις. καὶ παρ' ἀντιμάχῳ, δήμητρος τοι ἐλευσινίη ἱερὴ ὄψ. καὶ τὸ ἄλφιτον ἄλφι.
εὐφορίων δὲ, καὶ τὸν ἧλον. λέγει ἧλ. παρὰ φιλητᾷ δὲ, δμῶες δ' εἰς ταλάρους λευκὸν ἄγουσιν ἔρι.
εἰς ἄνεμον δὲ τὰ πηδά, τὰ πηδάλια ἄρατος φησί. δωδὼ δὲ τὴν δωδώνην, σιμίας. τῶν δ' ἄλλων
τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κατωνομασμένων, τὰ μὲν, ἀνήρηται. τῶν δ' ἴχνη λείπεται. τὰ δὲ μετωνόμα-
σται. καθάπερ αἱ αὐγεῖαι, αἰγαῖαι. οὐ γὰρ ἐν τῇ λοκρίδι οὐδ' ὅλως περίεισι. τὴν δὲ λᾶν, οἱ διόσκουροι
ποτὲ ἐκ πολιορκίας ἑλεῖν ἱστοροῦνται. ἀφ' οὗ δή, λαπέρσαι προσηγορεύθησαν. καὶ σοφοκλῆς λέγει
που, νὴ τὼ λαπέρσα, νὴ τὸν εὐρώταν. τρίτον νὴ τοὺς ἐν ἄργει καὶ κατὰ σπάρτην θεούς. φασὶ δ' ἔ-
φορος ὅτι οἱ κατασχόντες τὴν λακωνικὴν ἡρακλεῖδαι, εὐρυσθένης τε καὶ προκλῆς, διεῖλον εἰς ἓξ μέρη,
καὶ πολίσαι τὴν χώραν. μίαν μὲν οὖν τῶν μερίδων τὰς ἀμύκλας ἐξαίρετον δοῦναι τῷ προδόντι αὐ-
τοῖς τὴν λακωνικὴν καὶ πείσαντι τὸν κατέχοντα αὐτήν, ὑπόσπονδον ἀπελθεῖν μετὰ τῶν ἀχαιῶν
εἰς τὴν ἰωνίαν, τὴν δὲ σπάρτην βασίλειον ἀποφῆναι σφίσιν αὐτοῖς, εἰς δὲ τὰς ἄλλας πέμψαι βασι-
λέας, ἐπιτρέψαντας δέχεσθαι συνοίκους τοὺς βουλομένους τῶν ξένων, διὰ τὴν λειπανδρίαν. χρῆ-
" σθαι δὲ λαῒ μὲν ὡ — εὐλίμενον αἴγυς δὲ πρὸς τοὺς πολέμους —
" γὰρ ἡμερεῖν τοῖς κύκλῳ φαραία δὲ — ἀπὸ τῶν ἐκτὸς ἀσφάλειαν ἐχούσῃ ὑπακούοντας δ' ἅ-
παντας τοὺς περιοίκους σπαρτιατῶν, ὅμως ἰσονόμους εἶναι μετέχοντας, καὶ πολιτείας, καὶ ἀρ-
χείων. καλεῖσθαι δὲ εἵλωτας. ἆγιν δὲ τὸν εὐρυσθένους, ἀφελέσθαι τὴν ἰσοτιμίαν, καὶ συντελεῖν
προστάξαι τῇ σπάρτῃ. τοὺς μὲν οὖν ἄλλους ὑπακοῦσαι. τοὺς δ' ἑλείους τοὺς ἔχοντας τὸ ἕλος, ἀπο-
στάντας κατὰ κράτος ἁλῶναι πολέμῳ, καὶ κριθῆναι δούλους ἐπὶ τακτοῖς τισίν, ὥστε
τὸν ἔχοντα, μήτ' ἐλευθεροῦν ἐξεῖναι, μήτε πωλεῖν ἔξω τῶν ὅρων τούτους. τοῦτον δὲ λεχθῆναι τὸν
πρὸς τοὺς εἵλωτας πόλεμον. σχεδὸν δέ τι, καὶ τὴν εἱλωτείαν τὴν ὕστερον συμμείνασαν, μέχρι τῆς ῥω-
μαίων ἐπικρατείας, οἱ περὶ ἆγιν εἰσὶν οἱ καταδείξαντες. τρόπον γάρ τινα δημοσίους δούλους εἶχον
οἱ λακεδαιμόνιοι τούτους. κατοικίας τινὰς αὐτοῖς ἀποδείξαντες καὶ λειτουργίας ἰδίας. περὶ δὲ
τῆς λακώνων πολιτείας καὶ τῶν γενομένων παρ' αὐτοῖς μεταβολῶν, τὰ μὲν πολλὰ παρείοι τις ἂν
διὰ τὸ γνώριμον. τινῶν δ' ἄξιον ἴσως μνησθῆναι. ἀχαιοὺς γὰρ τοὺς φθιώτας φασὶ συγκατελθόν-
τας πέλοπι εἰς τὴν πελοπόννησον, οἰκῆσαι τὴν λακωνικήν. τοσοῦτον δ' ἀρετῇ διενεγκεῖν, ὥστε τὴν πελο-
πόννησον ἐκ πολλῶν ἤδη χρόνων ἄργος λεγομένην, τότε ἀχαϊκὸν ἄργος λεχθῆναι καὶ οὐ μόνον γε τὴν
πελοπόννησον, ἀλλὰ καὶ ἰδίως τὴν λακωνικὴν οὕτω προσαγορευθῆναι. τὸ γοῦν τοῦ ποιητοῦ. με-
νέλαος ποῦ ἔην. ἢ οὐκ ἄργεος ἦεν ἀχαιικοῦ. δέχονται οὕτως, ἢ οὐκ ἦν ἐν τῇ λακωνικῇ. κατὰ δὲ τὴν τῶν
ἡρακλειδῶν κάθοδον, φιλονόμου προδόντος τὴν χώραν τοῖς δωριεῦσι, μεταναστῆναι ἐκ τῆς λακω-
νικῆς εἰς τὴν τῶν ἰώνων, τὴν καὶ νῦν ἀχαΐαν καλουμένην. ἐροῦμεν δὲ περὶ αὐτῶν ἐν τοῖς ἀχαϊκοῖς, οἱ
δὲ κατασχόντες τὴν λακωνικήν, κατ' ἀρχὰς μὲν ἐσωφρόνουν. ἐπεὶ δὲ λυκούργῳ τὴν πολιτείαν ἐπέ-
τρεψαν, τοσοῦτον ὑπερεβάλλοντο τοὺς ἄλλους, ὥστε μόνοι τῶν ἑλλήνων καὶ γῆς, καὶ θαλάττης ὑπῆρ-

ξαι. διετέλεσάν τε ἄρχοντες τῶν ἑλλήνων ἕως ἀφείλοντο αὐτοὺς τὴν ἡγεμονίαν θηβαῖοι. καὶ μετ' ἐκείνους εὐθὺς, μακεδόνες. οὐ μὴν τελέως γε οὐδὲ τούτοις εἶξαν. ἀλλὰ φυλάττοντες τὴν αὐτονομίαν, ἔριν εἶχον περὶ πρωτείων ἀεὶ, πρός τε τοὺς ἄλλους ἕλληνας καὶ πρὸς τοὺς τῶν μακεδόνων βασιλέας. καταλυθέντων δὲ, τούτων ὑπὸ ῥωμαίων, μικρὰ μέν τινα προσέκρουσαν τοῖς πεμπομένοις ὑπὸ ῥωμαίων στρατηγοῖς, τυραννούμενοι τότε, καὶ πολιτευόμενοι μοχθηρῶς. ἀναλαβόντες δὲ σφᾶς, ἐτιμήθησαν διαφερόντως. καὶ ἔμειναν ἐλεύθεροι πλὴν τῶν φιλικῶν λειτουργιῶν, ἄλλο συντελοῦντες οὐδέν. νεωστὶ δ' εὐρυκλῆς αὐτοὺς ἐτάραξε. δόξας ἀποχρήσασθαι τῇ καίσαρος φιλίᾳ πέρα τοῦ μετρίου, πρὸς τὴν ἐπίστασιν αὐτῶν. ἐπαύσατο δ' ἡ ἀρχὴ ταχέως, ἐκείνου μὲν παραχωρήσαντος εἰς τὸ χρεών. τοῦ δ' υἱοῦ τὴν φιλίαν ἀπεστραμμένου τὴν τοιαύτην πᾶσαν, συνέβη δὲ καὶ τοὺς ἐλευθερολάκωνας λαβεῖν τινα τάξιν πολιτείας, ἐπειδὴ ῥωμαίοις προσέθεντο πρῶτοι οἱ περίοικοι τυραννουμένης τῆς σπάρτης, οἵ τε ἄλλοι, καὶ οἱ εἵλωτες. ἑλλάνικος μὲν οὖν εὐρυσθένη, καὶ προκλέα φησὶ διατάξαι τὴν πολιτείαν, ἔφορος δ' ἐπιτιμᾷ. φήσας λυκούργου μὲν αὐτὸν μηδαμοῦ μεμνῆσθαι. τὰ δ' ἐκείνου ἔργα, τοῖς μὴ προσήκουσιν ἀνατιθέναι. μόνῳ γοῦν λυκούργῳ, ἱερὸν ἱδρῦσθαι, καὶ θύεσθαι κατ' ἔτος. ἐκείνοις δὲ, καίπερ οἰκισταῖς γενομένοις, μηδὲ τοῦτο δεδόσθαι. ὥστε τοὺς ἀπ' αὐτῶν, τοὺς μὲν, εὐρυσθενίδας, τοὺς δὲ, προκλείδας καλεῖσθαι. οὐδ' ἀρχηγέτας νομισθῆναι. ὃ περ πᾶσιν ἀποδίδοται τοῖς οἰκισταῖς. καὶ αἰτίαν τούτου λέγει, ὅτι ἐπήλυδας ἀνθρώπους δεξάμενος δι' ἐκείνων ἐδυνάστευσε. περὶ δὲ τῆς φύσεως τῶν τόπων καὶ τούτων, καὶ τῶν μεσσηνιακῶν, ταῦτα μὲν ἀποδεκτέον λέγοντος εὐριπίδου. τὴν γὰρ λακωνικὴν φησὶν ἔχειν πολλὴν μὲν ἄροτον, ἐκπονεῖν δ' οὐ ῥᾴδιον, κοίλη γὰρ ὄρεσι περίδρομος τραχεῖά τε δυσείσβολός τε πολεμίοις. τὴν δὲ, μεσσηνιακὴν καλλίκαρπον. κατάρρυτόν τε μυρίοισι νάμασι, καὶ βουσὶ καὶ ποιμέσιν εὐβοτάτην, οὔτ' ἐν πνοαῖσι χείματος δυσχείμερον, οὔτ' αὖ τεθρίπποις ἡλίου θερμὴν ἄγαν. καὶ ὑποβὰς τῶν πάλων φησὶν ὧν οἱ ἡρακλεῖδαι περὶ τῆς χώρας ἐποιήσαντο, τὸν μὲν πρότερον, γενέσθαι γαίας λακαίνης κύριον, φαῦλον κλῆρον. τὸν δὲ δεύτερον μεσσήνης. ἀρετὴν ἐχούσης μείζονα, ἢ λόγῳ φράσαι. οἵαν καὶ ὁ τυρταῖος φράζει. τὴν δὲ λακωνικὴν, καὶ τὴν μεσσηνίαν ὁρίζειν αὐτοῦ φήσαντος, παμισὸν εἰς θάλασσαν ἐξορμώμενον, οὐ συγχωρητέον. ὃς διὰ μέσης ῥεῖ τῆς μεσσηνίας, οὐδαμοῦ τῆς νῦν λακωνικῆς ἁπτόμενος. οὐκ εὖ δὲ, οὐδ' ὅτι τῆς μεσσηνίας ὁμοίως ἐπιθαλαττίας οὔσης τῇ λακωνικῇ, φησὶν αὐτὴν πρόσω ναυτίλοισιν εἶναι. οὐδὲ τὴν ἦλιν εὖ διορίζει. πρόσω δὲ βάντι ποταμὸν, ἦλις ἡ διὸς γείτων κάθηται. καὶ ἐπάγει καὶ τὸν ἔλεγχον, ἡ μὲν οὐκ ἀναγκαῖον ὄντα. εἴτε γὰρ τὴν νῦν ἠλείαν βούλεται λέγειν ἥτις ὁμορεῖ τῇ μεσσηνίᾳ, ταύτης οὐ προσάπτεται ὁ παμισὸς ὥσπερ γε τῆς λακωνικῆς. εἴρηται γὰρ ὅτι διὰ μέσης ῥεῖ τῆς μεσσηνίας. ἔς τε τὴν παλαιὰν τὴν κοίλην καλουμένην, πολὺ μᾶλλον ἐκπίπτει τῆς ἀληθείας. διαβάσι τε γὰρ τὸν παμισόν. ἔστι πολλὴ τῆς μεσσηνίας. εἶθ' ἡ τῶν λεπρεατῶν ἐπαρχία, ἅπασα, καὶ μακιστίων, ἣν τριφυλίαν ἐκάλουν. εἶθ' ἡ πισάτις, καὶ ἡ ὀλυμπία. εἶτα μετὰ τριακοσίους σταδίους ἡ ἦλις. γραφόντων δὲ, τῶν μὲν, λακεδαίμονα κητώεσσαν. τῶν δὲ, καιετάεσσαν, ζητοῦσι τὴν καιετάεσσαν τίνα δέχεσθαι χρὴ, εἴτε ἀπὸ τῶν κητῶν εἴτε μεγάλην. ὅπερ δοκεῖ πιθανώτερον εἶναι. τήν τε καιετάεσσαν, οἱ μὲν, καλαμινθώδη δέχονται. οἱ δὲ, ὅτι οἱ ἀπὸ τῶν σεισμῶν ῥωχμοὶ καιετοὶ λέγονται. καὶ καιάδας τὸ δεσμωτήριον, ἐντεῦθεν τὸ παρὰ λακεδαιμονίοις σπήλαιόν τι. ἔνιοι δὲ κώους μᾶλλον τὰ τοιαῦτα κοιλώματα λέγεσθαι φασίν. ἀφ' οὗ, καὶ τὸ θηρσὶν ὀρεσκώοισιν. εὔσειστος δ' ἡ λακωνική. καὶ δὴ τοῦ ταϋγέτου κορυφήν τινα ἀπορραγῆναι τινὲς μνημονεύουσιν. εἰσὶ δὲ λατομίαι λίθου πολυτελοῦς, τοῦ μὲν, ταιναρίου ἐν ταινάρῳ παλαιαί. νεωστὶ δὲ, καὶ ἐν τῷ ταϋγέτῳ μετάλλων ἀνέῳξαν τινὲς εὐμέγεθες, χορηγὸν ἔχοντες τὴν τῶν ῥωμαίων πολυτέλειαν. ὅτι δὲ λακεδαίμων ὁμωνύμως λέγεται, καὶ ἡ χώρα, καὶ ἡ πόλις δηλοῖ, καὶ ὅμηρος. λέγω δὲ χώραν σὺν τῇ μεσσηνίᾳ. περὶ μὲν δὴ τῶν τόξων ὅταν λέγῃ.

» Καλὰ τά οἱ ξεῖνος λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας Ἴφιτος εὐρυτίδης Εἶτ' ἐπήνεγκε, τὼ δ' ἐν μεσσήνῃ ξυμβλήτην ἀλλήλοιιν οἴκῳ ἐν ὀρσιλόχοιο. τῆς φηρῆς τὴν χώραν λέγει. ἧς μέρος ἦν καὶ ἡ μεσσηνία. οὐ διήνεγκεν οὖν αὐτῷ καὶ οὕτως εἰπεῖν. κοινῶς λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας. καὶ τὼ δ' ἐν μεσσήνῃ ξυμ-

» βλήτην. ὅτι γὰρ αἱ φηραί εἰσιν ὁ τοῦ ὀρσιλόχου οἶκος, δῆλον. Ἐς φηρὰς δ' ἵκοντο διοκλῆος ποτὶ δῶμα. υἱέος ὀρσιλόχοιο, ὅτε τηλέμαχος, καὶ ὁ πεισίστρατος, αἱ δὲ, φηραὶ τῆς μεσσηνίας εἰσίν. ὅταν δ' ἐκ τῶν φηρῶν ὁρμηθέντας τοὺς περὶ τηλέμαχον πανημερίους φῇ σείειν ζυγὸν εἶτ' εἴποι δύσετό τ' ἠέλιος. οἱ δ' ἷξον κοίλην λακεδαίμονα. πρὸς δ' ἄρα δώματ' ἔλων μενελάου, τὴν πόλιν δεῖ δέχεσθαι. εἰ δ' ἐμὴν ἐκ λακεδαίμονος εἰς λακεδαίμονα φανεῖται λέγων τὴν ἄφιξιν. ἄλλως τε οὐ πιθανὸν μὴ ἐν σπάρτῃ τὴν οἴκησιν εἶναι τοῦ μενελάου. μὴ δ' οὕτως ἐκεῖ τὸν τηλέμαχον λέγειν. εἶμι γὰρ εἰς σπάρτην τε, καὶ εἰς πύλον. δοκεῖ γὰρ συνεπιπλέκειν τοῦτο τοῖς τῆς χώρας ἐπιθέτοις αὖ, εἰ μὴ νὴ δία ποιητική τις τοῦτο συγχωρήσει ἐξουσία. ἐναντίον γὰρ τὴν μεσσήνην μετὰ τῆς λακωνικῆς καὶ πύλου τῆς ὑπὸ τῷ νέστορι μηδὲ δὴ καθ' αὑτὴν τάττεσθαι ἐν τῷ καταλόγῳ. μηδὲ κοινωνοῦσαν τῆς στρατείας. μετὰ δὲ μαλέας ὁ ἀργολικὸς ἐκδέχεται κόλπος, καὶ ὁ ἑρμιονικός. ὁ μὲν, μέχρι τοῦ σκυλαίου πλέοντι ὡς πρὸς ἕω βλέπων, καὶ

πων, καὶ πρὸς τὰς κυκλάδας. ὁ δὲ ἑωθινώτερος τούτου, μέχρι πρὸς αἴγιναν, καὶ ἐπιδαυρίαν, τὰ μὲν δὴ
πρῶτα τοῦ ἀργολικοῦ, λάκωνες ἔχουσι. τὰ δὲ λοιπὰ ἀργεῖοι. ἐν οἷς ἐστι τῶν μὲν λακώνων τὸ δήλιον,
ἱερὸν ἀπόλλωνος. ὁμώνυμον τῷ βοιωτικῷ, καὶ μινώα φρούριον. ὁμώνυμος, καὶ αὕτη τῇ μεγαρικῇ.
καὶ ἡ λιμηρὰ ἐπίδαυρος, ὡς ἀρτεμίδωρός φησιν. ἀπολλόδωρος δὲ κυθήρων πλησίον ἱστορεῖ ταύτην.
εὐλίμενον δὲ οὖσαν, βραχέως καὶ ἐπιτετμημένως λιμηρὰν εἰρῆσθαι. ὡς ἂν λιμενηρά. μεταβεβληκέ-
ναι δὲ τοὔνομα. ἔστι δὲ τραχὺς ὁ παράπλους εὐθὺς ἀπὸ μαλεῶν ἀρξάμενος μέχρι πολλοῦ ὁ λακωνικός.
ἔχει δ' ὅμως ὑφόρμους, καὶ λιμένας, ἡ λοιπὴ δ' ἐστὶ παραλία εὐλίμενος. νησίδιά τε πολλὰ πρόκει-
ται αὐτῆς οὐκ ἄξια μνήμης. τῶν δ' ἀργείων αἵ τε πρασιαί, καὶ τὸ τημένιον, ἐν ᾧ τέθαπται τήμενος.
καὶ ἔτι πρότερον τὸ χωρίον, δι' οὗ ῥεῖ ποταμὸς ἡ λέρνη καλουμένη. ὁμώνυμος τῇ λίμνῃ, ἐν ᾗ μεμύ-
θευται τὰ περὶ τὴν ὕδραν. τὸ δὲ τημένιον ἀπέχει τοῦ ἄργους εἰκοσιὲξ στάδια ὑπὲρ θαλάσσης. ἀπὸ δὲ
τοῦ ἄργους εἰς τὸ ἡραῖον, τεσσαράκοντα ἐνθεν. δὲ εἰς μυκήνας δέκα. μετὰ δὲ τὸ τημένιον ἡ ναυπλία
τὸ τῶν ἀργείων ναύσταθμον. τὸ δ' ἔτυμον, ἀπὸ τοῦ ταῖς ναυσὶ προσπλεῖσθαι. ἀπὸ τούτου δὲ πεπλάσθαι
φασὶ τὸν ναύπλιον, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ παρὰ τοῖς νεωτέροις, οὐ γὰρ ὅμηρον ἀμνημονῆσαι ἂν
τούτων. τοῦ μὲν παλαμήδους τοσαύτην σοφίαν, καὶ σύνεσιν ἐπιδεικνυμένου, δολοφονηθέντος δὲ
ἀδίκως, τοῦ δὲ ναυπλίου τοσούτων ἀπεργασαμένου φθόρον ἀνθρώπων περὶ τὸν καφηρέα. ἡ δὲ γενεαλο-
γία πρὸς τῷ μυθώδει, καὶ τοῖς χρόνοις διημάρτηται. δεδόσθω γὰρ ποσειδῶνος εἶναι, ἀμυμώνης
δὲ πῶς, τὸν κατὰ τρωϊκὰ ἔτι ζῶντα. ἐφεξῆς δὲ τῇ ναυπλίᾳ, τὰ σπήλαια, καὶ οἱ ἐν αὐτοῖς οἰκοδο-
μητοὶ λαβύρινθοι. κυκλώπεια δ' ὀνομάζουσιν. εἶτ' ἄλλα χωρία, καὶ ἐφεξῆς ὁ ἑρμιονικὸς κόλπος, καὶ
ἐπεὶ τοῦ τόπου τάξαντος ὑπὸ τῇ ἀργείᾳ. καὶ ἡμῖν οὐ παροπτέος ἐνέφαινεν ὁ μερισμὸς τῆς πε-
ριοδείας οὗτος, ἄρχεται δ' ἀπὸ ἀσίνης πολίχνης. εἶθ' ἑρμιόνη καὶ τροιζήν. ἐν παράπλῳ δὲ πρόκει-
ται καλαβρεία νῆσος, κύκλον ἔχουσα τριάκοντα σταδίων. πορθμῷ δὲ, τετρασταδίῳ διεστῶσα τῆς ἠπεί-
ρου. εἶθ' ὁ σαρωνικὸς κόλπος. οἱ δὲ πόντον λέγουσιν. οἱ δὲ πόρον. καθ' ὃ, καὶ πέλαγος λέγεται σαρωνι-
κόν. καλεῖται δὲ πᾶς ὁ συνάπτων πόρος ἀπὸ τῆς ἑρμιονικῆς, καὶ τῆς περὶ τὸν ἰσθμὸν θαλάττης, τῷ
τε μυρτώῳ πελάγει, καὶ τῷ κρητικῷ. τοῦ δὲ σαρωνικοῦ ἐπίδαυρός τε ἐστὶ, καὶ ἡ προκειμένη νῆσος αἰγι-
να. εἶτα κεγχρεαὶ τὸ τῶν κορινθίων ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη ναύσταθμον. εἶτα λιμὴν σχοινοῦς, πλεύσαν-
τι πέντε, καὶ τεσσαράκοντα σταδίους. ἀπὸ δὲ μαλεῶν τοὺς πάντας περὶ χιλίους, καὶ ὀκτακοσίους.
κατὰ δὲ τὴν σχοινοῦντα, ὁ δίολκος τὸ στενώτατον τοῦ ἰσθμοῦ. περὶ ὃν τὸ τοῦ ἰσθμίου ποσειδῶνος ἱερόν.
ἀλλὰ νῦν τὸ μὲν, ὑπερκείσθω. ἔξω γάρ ἐστι τῆς ἀργείας. ἀναλαβόντες δ' ἐφοδεύσωμεν πάλιν τὰ
κατὰ τὴν ἀργείαν. καὶ πρῶτον ποσαχῶς λέγεται παρὰ τῷ ποιητῇ τὸ ἄργος, καὶ καθ' αὑτό, καὶ μετὰ
τοῦ ἐπιθέτου. ἀχαιικὸν ἄργος καλοῦντος, ἢ ἴασον, ἢ ἵππιον. ἢ ἱππόβοτον. ἢ πελασγικόν. καὶ γὰρ ἡ πόλις
» ἄργος λέγεται. ἄργος τε σπάρτη τε. Οἳ δ' ἄργος τ' εἶχον τίρυνθά τε, Καὶ ἡ πελοπόννησος. ἡμετέρῳ ἐνὶ
οἴκῳ ἐν ἄργει, οὐ γὰρ ἡ πόλις γε ἦν οἶκος αὐτοῦ. καὶ ὅλη, ἡ ἑλλάς. ἀργείους γοῦν πάντας καλεῖ. κα-
θάπερ καὶ δαναούς, καὶ ἀχαιούς. τὴν γοῦν ὁμωνυμίαν τοῖς ἐπιθέτοις διαστέλλεται. τὴν μὲν θετταλίαν,
πελασγικὸν ἄργος καλῶν. νῦν αὖ τοὺς ὅσσοι τὸ πελασγικὸν ἄργος ἔναιον. τὴν δὲ πελοπόννησον, εἰδέκεν
ἄργος ἱκόμεθ' ἀχαιικόν. ἢ οὐκ ἄργεος ἦεν ἀχαιικοῦ. σημαίνων ἐνταῦθα, ὅτι καὶ ἀχαιοὶ ἰδίως ὠνομάζοντο
οἱ πελοποννήσιοι κατ' ἄλλην σημασίαν. ἴασόν τε ἄργος τὴν πελοπόννησον λέγει. εἰ πάντες γ' ἐσίδοιεν ἀν'
ἴασον ἄργος ἀχαιοὶ τὴν πηνελόπην, ὅτι πλείους ἂν λάβοι μνηστῆρας. οὐ γὰρ τοὺς ἐξ ὅλης τῆς ἑλλάδος
εἰκονίζει. ἀλλὰ τοὺς ἐγγύς. ἱππόβοτον δὲ, καὶ ἵππιον κοινῶς εἴρηκε. περὶ δὲ τῆς ἑλλάδος καὶ ἑλλήνων, καὶ πα-
νελλήνων ἀντιλέγεται. θουκυδίδης μὲν γὰρ τὸν ποιητὴν μηδαμοῦ βαρβάρους εἰπεῖν φησί. διὰ τὸ μηδὲ ἕλληνάς
πω τὸ ἀντίπαλον, εἰς ἓν ὄνομα ἀποκεκρίσθαι. ἀπολλόδωρος δὲ μόνους τοὺς ἐν θετταλίᾳ καλεῖσθαί φησιν
ἕλληνας, μυρμιδόνες δ' ἐκαλοῦντο καὶ ἕλληνες. ἡσίοδον μέντοι, καὶ ἀρχίλοχον, ἤδη εἰδέναι καὶ ἕλληνας
λεγομένους τοὺς σύμπαντας καὶ πανέλληνας, τὸν μὲν περὶ τῶν προιτίδων λέγοντα ὡς πανέλληνες ἐμνή-
στευον αὐτάς. τὸν δὲ ὡς πανελλήνων ὀϊζὺς ἐς θάσον συνέδραμεν. ἄλλοι δ' ἀντιθέασιν ὅτι καὶ βαρβάρους
εἴρηκεν εἰπών γε βαρβαροφώνους τοὺς κᾶρας. καὶ ἕλληνας τοὺς πάντας. ἀνδρὸς τοῦ κλέος εὐρὺ, καθ' ἑλ-
λάδα, καὶ μέσον ἄργος. ἡ μὲν οὖν πόλις ἡ τῶν ἀργείων ἐν χωρίοις ἐπιπέδοις ἵδρυται τὸ πλέον. ἄκραν δ' ἔ-
χει τὴν καλουμένην λάρισσαν, λόφον εὐερκῆ μετρίως. ἔχοντα ἱερὸν διός, ῥεῖ δ' αὐτῆς πλησίον ὁ ἴναχος, χα-
ραδρώδης ποταμός, ἔχων τὰς πηγὰς ἐκ λυρκείου τοῦ κατὰ τὴν κυνουρίαν ὄρους τῆς ἀρκαδίας. περὶ δὲ τῶν
μυθευομένων πηγῶν εἴρηται, ὅτι πλάσματα τῶν ποιητῶν ἐστί. πλάσμα δὲ καὶ τὸ ἄργος ἄνυδρον.
» Θεοὶ δ' αὖ θέσαν ἄργος ἄνυδρον. Τῆς τε χώρας κοίλης οὔσης, καὶ ποταμοῖς διαρρεομένης, καὶ ἕ-
λη καὶ λίμνας παρεχομένης. καὶ τῆς πόλεως εὐπορουμένης ὕδασι φρεάτων πολλῶν, καὶ ἐπιπολαίων.
» αἰτιῶνται δὲ τῆς ἀπάτης τό, Καί κεν ἐλέγχιστος πολυδίψιον ἄργος ἱκοίμην.

Τοῦτο δ' ἤτοι ἀντὶ τοῦ, πολυπόθητον κεῖται. ἢ χωρὶς τοῦ δ. ἀντὶ πολυΐψιον. ὡς πολύφθορόν τε δῶμα
πελοπιδῶν. τό δὲ φησὶ σοφοκλῆς. τὸ γὰρ προϊάψαι καὶ τὸ ἰάψαι καὶ τὸ ἰάψασθαι φθοράν τινα, καὶ βλάβην
(σημαίνει.
» Νῦν μὲν πειρᾶται. τάχα δ' ἴψεται υἷας ἀχαιῶν,

Καὶ τὸ χρόα καλὸν ἰάψαι. καὶ ἄϊδι προΐαψεν. ἄλλως τε οὐ τὴν πόλιν λέγει τὸ ἄργος, οὐ γὰρ ἐκεῖσε ἔμελλεν ἀναφίξεσθαι. ἀλλὰ τὴν πελοπόννησον. οὐδήπου, καὶ ταύτην διψηρὰν οὖσαν. καὶ σὺν τῷ δ. δὲ ὑπερβατῶς δέχονται κατὰ συναλοιφὴν μετὰ τοῦ συνδέσμου τοῦ δέ. ἵν᾽ ᾖ οὕτω.

» Καί κεν ἐλέγχιστος πολυδίψιον ἄργος ἱκοίμην. Ἀντὶ τοῦ εἰς ἄργος. εἰς μὲν δὴ ἴναχός ἐστιν ὁ διαῤῥέων τὴν ἀργείαν. ἄλλος δὲ ποταμὸς ἐράσινος ἐν τῇ ἀργείᾳ ἐστίν. οὗτος δὲ τὰς ἀρχὰς ἐκ στυμφάλου τῆς ἀρκαδίας λαμβάνει, καὶ τῆς ἐκεῖ λίμνης τῆς καλουμένης στυμφαλίδος. ἐν ᾗ τὰς ὄρνις μυθολογοῦσι τὰς ὑπὸ τοῦ ἡρακλέους τοξεύμασι καὶ τυμπάνοις ἐξελαθείσας. καὶ αὐτὰς καλοῦσι στυμφαλίδας. δύντα δ᾽ ὑπὸ γῆς φασὶ τοῦτον τὸν ποταμόν, ἐκπίπτειν εἰς τὴν ἀργείαν, καὶ ποιεῖν ἐπίῤῥυτον, τὸ πεδίον. τὸν δ᾽ ἐράσινον, καλοῦσι, καὶ ἀρσῖνον. ῥεῖ δὲ, καὶ ἄλλος ὁμώνυμος ἐκ τῆς ἀρκαδίας εἰς τὸν κατὰ βούραν αἰγιαλόν, ἄλλος δ᾽ ἐστὶν ὁ ἐρετρικός, καὶ ὁ ἐν τῇ ἀττικῇ, κατὰ βαυρῶνα. δείκνυται δὲ, καὶ ἀμυμώνη τις κρήνη κατὰ λέρνην. ἡ δὲ λέρνη, λίμνη τῆς ἀργείας ἐστὶ, καὶ τῆς μυκηναίας. ἐν ᾗ τὴν ὕδραν ἱστοροῦσι. διὰ δὲ τοὺς γινομένους καθαρμοὺς ἐν αὐτῇ, παροιμία τις ἐξέπεσε λέρνη κακῶν. τὴν μὲν οὖν χώραν συγχωροῦσιν εὐυδρεῖν. αὐτὴν δὲ τὴν πόλιν, ἐν ἀνύδρῳ χωρίῳ κεῖσθαι. φρεάτων δ᾽ εὐπο-

» ρεῖν, ἃ ταῖς δαναΐσιν ἀνάπτουσιν, ὡς ἐκείνων ἐξευρουσῶν, ἀφ᾽ οὗ, καὶ τὸ ἔπος εἰπεῖν τοῦτο. Ἄργος ἄνυδρον ἐὸν, δαναοὶ θέσαν ἄργος ἔνυδρον, Τῶν δὲ φρεάτων τέτταρα, καὶ ἱερὰ ἀποδειχθῆναι, καὶ τιμᾶσθαι διαφερόντως, ἐν ἀπορίᾳ ὑδάτων, ἀπορίαν εἰσάγοντες. τὴν δ᾽ ἀκρόπολιν τῶν ἀργείων οἰκῆσαι λέγεται δαναός. ὃς τοσοῦτον τοὺς πρὸ αὐτοῦ δυναστεύοντας ἐν τοῖς τόποις ὑπερβαλέσθαι δοκεῖ, ὥς τε κατ᾽ εὐριπίδην πελασγιώτας ὠνομασμένους τὸ πρὶν, δαναοὺς καλεῖσθαι νόμον ἔθηκ᾽ ἀν᾽ ἑλλάδα. ἔστι δὲ καὶ τάφος αὐτοῦ, κατὰ μέσην τὴν τῶν ἀργείων ἀγορὰν, καλεῖται δὲ πάλινθος. οἶμαι δ᾽ ὅτι, καὶ πελασγιώτας καὶ δαναοὺς ὥσπερ, καὶ ἀργείους. ἡ δόξα τῆς πόλεως ταύτης, ἀπ᾽ αὐτῆς καὶ τοὺς ἄλλους ἕλληνας καλεῖσθαι παρεσκεύασεν. οὕτω δὲ, καὶ ἰασίδας, καὶ ἴασον ἄργος καὶ ἀπίαν, καὶ ἀπιδόνας οἱ νεώτεροι φασίν. ὅμηρος δ᾽ ἀπιδόνας μὲν οὐ λέγει. ἀπίαν δὲ τὴν πόῤῥω μᾶλλον. ὅτι δ᾽ ἄργος τὴν πελοπόννησον λέγει, προσλαβεῖν ἐστι, καὶ τάδε. ἀργείη, ἑλένη. καὶ ἔστι πόλις ἐφύρη μυχῷ ἄργεος. καὶ μέσον ἄργος, καὶ πολλῇσι νήσοισι καὶ ἄργει παντὶ ἀνάσσειν. ἄργος δὲ, καὶ τὸ πεδίον. λέγεται παρὰ τοῖς νεωτέροις. παρ᾽ ὁμήρῳ δ᾽ οὐδ᾽ ἅπαξ. μάλιστα δ᾽ οἴονται μακεδονικὸν, καὶ θετταλικὸν εἶναι. τῶν δ᾽ ἀπογόνων τοῦ δαναοῦ διαδεξαμένων τὴν ἐν ἄργει δυναστείαν. ἐπιμιχθέντων δὲ τούτοις τῶν ἀμυθαονιδῶν. ὡρμημένων ἐκ τῆς πισάτιδος καὶ τῆς τριφυλίας. οὐκ ἂν θαυμάζειέ τις. εἰ συγγενεῖς ὄντες οὕτω διεῖλον τὴν χώραν εἰς δύο βασιλείας τὸ πρῶτον. ὥς τε τὰς ἡγεμονίας οὔσας ἐν αὐταῖς δύο πόλεις ἀποδειχθῆναι πλησίον ἀλλήλων ἱδρυμένας. ἐν ἐλάττοσιν, ἢ πεντήκοντα σταδίοις. τό, τε ἄργος καὶ τὰς μυκήνας καὶ τὸ ἡραῖον εἶναι κοινὸν ἱερὸν τὸ πρὸς ταῖς μυκήναις ἀμφοῖν, ἐν ᾧ τὰ πολυκλείτου ξόανα τῇ μὲν τέχνῃ κάλλιστα τῶν πάντων. πολυτελείᾳ δὲ, καὶ μεγέθει, τῶν φειδίου λειπόμενα. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν οὖν τὸ ἄργος ἐπεκράτει μᾶλλον. εἶθ᾽ αἱ μυκῆναι μείζον᾽ ἐπίδοσιν ἔλαβον διὰ τὴν τῶν πελοπιδῶν εἰς αὐτὰς μετανάστασιν. περιστάντων γὰρ εἰς τοὺς ἀτρέως παῖδας ἁπάντων, ἀγαμέμνων ὢν πρεσβύτερος παραλαβὼν τὴν ἐξουσίαν, ἅμα τύχῃ τε καὶ ἀρετῇ πρὸς τοῖς οὖσι, πολλὴν προσεκτήσατο τῆς χώρας. καὶ δὴ καὶ τὴν λακωνικὴν τῇ μυκηναίᾳ προσέθηκε. μενέλαος μὲν δὴ, τὴν λακωνικὴν ἔσχε. μυκήνας δὲ, καὶ τὰ μέχρι κορίνθου, καὶ σικυῶνος, καὶ τῆς ἰώνων μὲν τότε, καὶ αἰγιαλέων καλουμένης, ἀχαιῶν δ᾽ ὕστερον, ἀγαμέμνων παρέλαβε. μετὰ δὲ τὰ τρωϊκὰ τῆς ἀγαμέμνονος ἀρχῆς καταλυθείσης, ταπεινωθῆναι μυκήνας, καὶ μάλιστα μετὰ τὴν τῶν ἡρακλειδῶν κάθοδον. κατασχόντες γὰρ οὗτοι τὴν πελοπόννησον, ἐξέβαλον τοὺς πρότερον κρατοῦντας, ὥσθ᾽ οἱ τὸ ἄργος ἔχοντες, εἶλον καὶ τὰς μυκήνας συντελούσας εἰς ἕν. χρόνοις δ᾽ ὕστερον κατεσκάφησαν ὑπ᾽ ἀργείων. ὥς τε νῦν μηδ᾽ ἴχνος εὑρίσκεσθαι τῆς μυκηναίων πόλεως. ὅπου δὲ, μυκῆναι τοιαῦτα πεπόνθασιν, οὐ δεῖ θαυμάζειν οὐδ᾽ εἴ τινες τῶν ὑπὸ τῷ ἄργει καταλεγομένων ἀφανεῖς νυνὶ εἰσίν. ὁ μὲν δὴ κατάλογος ἔχει οὕτως.

» Οἳ δ᾽ ἄργος τ᾽ εἶχον τίρυνθά τε τειχιόεσσαν.

» Ἑρμιόνην τ᾽ ἀσίνην τε βαθὺν κατὰ κόλπον ἐχούσας,

» Τροιζῆν᾽ ἠϊόνας τε, καὶ ἀμπελόεντ᾽ ἐπίδαυρον Οἵ τ᾽ ἔχον αἴγιναν μάσητά τε κοῦροι ἀχαιῶν

Ταῦτα δὲ, περὶ μὲν τοῦ ἄργους εἴρηται. περὶ δὲ τῶν ἄλλων λεκτέον. τῇ μὲν οὖν τίρυνθι ὁρμητηρίῳ χρήσασθαι δοκεῖ προῖτος, καὶ τειχίσαι διὰ κυκλώπων, οὓς ἑπτὰ μὲν εἶναι. καλεῖσθαι δὲ γαστερόχειρας, τρεφομένους ἐκ τῆς τέχνης. ἧκεν δὲ μεταπέμπτους ἐκ λυκίας. καὶ ἴσως τὰ σπήλαια τὰ περὶ τὴν ναυπλίαν καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς ἔργα τούτων ἐπώνυμά ἐστιν. ἡ δ᾽ ἀκρόπολις λυκύμνα ἐπώνυμος λυκυμνίου. διέχει δὲ τῆς ναυπλίας περὶ δώδεκα σταδίους. ἔρημος δ᾽ ἐστὶ κἀκείνη, καὶ ἡ πλησίον μιδέα. ἑτέρα οὖσα τῆς βοιωτικῆς. ἐκείνη γάρ ἐστι μίδεα, ὡς πρόνοια, αὕτη δὲ μιδέα ὡς τεγέα. ταύτῃ δ᾽ ὅμορος πρόσυμνα, καὶ αὕτη ἱερὸν ἔχουσα ἥρας. ἠρήμωσαν δὲ τὰς πλείστας οἱ ἀργεῖοι, ἀπειθούσας. οἱ δ᾽ οἰκήτορες οἱ μὲν, ἐκ τίρυνθος εἰς ἐπίδαυρον ἀφίκοντο. οἱ δὲ, ἐκ τῆς ἑρμιόνης εἰς τοὺς ἁλιεῖς καλουμένους. οἱ δ᾽ ἐκ τῆς ἀσίνης. καὶ αὕτη δὲ κώμη τῆς ἀργείας πλησίον ναυπλίας λακεδαιμονίων, εἰς τὴν μεσσηνίαν μετῳκί-

ἐνθένδε. καὶ ὁ ὁμώνυμος τῇ ἀργολικῇ ἀσίνῃ πολίχνη. ὅτι λακεδαιμόνιοι ὥς φησιν ὁ θεόπομπος πολλὴν κα-
τακτησάμενοι τῆς ἀλλοτρίας εἰς ταύτην κατῴκιζον οὓς ἂν ὑποδέξαιντο τῶν φυγόντων ἐπ' αὐ-
τούς. καὶ οἱ ἐκ τῆς ναυπλίας ἐκεῖσε ἀνεχώρησαν. ἑρμιόνη δ' ἐστὶ τῶν οὐκ ἀσήμων πόλεων. ἧς τὴν πα-
ραλίαν ἔχουσιν ἁλιεῖς λεγόμενοι θαλαττουργοί τινες ἄνδρες. παρ' ἑρμιονεῦσι δὲ τεθρύλληται τὴν εἰς ᾅδου
κατάβασιν σύντομον εἶναι. διόπερ οὐκ ἐντιθέασιν ἐνταῦθα τοῖς νεκροῖς ναῦλον. δρυόπων δ' οἰκητήριον
φασὶ καὶ τὴν ἀσίνην. εἴτ' ἐκ τῶν περὶ τὸν σπερχειὸν τόπων ὄντας αὐτοὺς δρύοπος τοῦ ἀρκάδος κατοικήσαντος ἐν-
ταῦθα, ὡς ἀριστοτέλης φησὶν ἢ ὑφ' ἡρακλέους ἐκ τῆς περὶ τὸν παρνασσὸν δωρίδος ἐξελάσαντος αὐτούς.
τὸ δὲ σκύλλαιον τὸ ἐν τῇ ἑρμιόνῃ, ὠνομάσθαι φασὶν ἀπὸ σκύλλης τῆς νίσου θυγατρός. ἣν ἐξ ἔρωτος προ-
δοῦσαν μίνῳ τὴν νισαίαν καταποντωθῆναι φασὶν ὑπ' αὐτοῦ. δεῦρο δ' ἐκκυμανθεῖσαν, ταφῆς τυχεῖν,
ἠιόνες δὲ, κώμη τις ἦν, ἣν ἐρημώσαντες μυκηναῖοι ναύσταθμον ἐποίησαν. ἀφανισθείσης δ' ὕστερον οὐδὲ
ναύσταθμον ἐστί. τροιζὴν δὲ, ἱερά ἐστι ποσειδῶνος. ἀφ' οὗ καὶ ποσειδωνία ποτὲ ἐλέγετο. ὑπέρκειται δὲ τῆς
θαλάττης εἰς πεντεκαίδεκα σταδίους. οὐδ' αὕτη ἄσημος πόλις. πρόκειται δὲ, τοῦ λιμένος αὐτῆς πώγω-
νος τοὔνομα καλαυρεία νησίδιον ὅσον τριάκοντα σταδίους ἔχον τὸν κύκλον. ἐνταῦθα ἦν ἄσυλον ποσει-
δῶνος ἱερὸν, καὶ φασὶ τὸν θεὸν τοῦτον ἀλλάξασθαι πρὸς μὲν λητὼ τὴν καλαυρείαν ἀντιδόντα δῆλον
πρὸς ἀπόλλωνα δὲ ταίναρον ἀντιδόντα πυθώ. ἔφορος δὲ, καὶ τὸν χρησμὸν λέγει.

» Ἶσόν τοι, δῆλόν τε καλαυρείαν τε νέμεσθαι. Πυθώ τ' ἠγαθέην, καὶ ταίναρον ἠνεμόεντα.

Ἦν δὲ, καὶ ἀμφικτυονία τις περὶ τὸ ἱερὸν τοῦτο, ἑπτὰ πόλεων, αἳ μετεῖχον τῆς θυσίας. ἦσαν δὲ,
ἑρμιών. ἐπίδαυρος. αἴγινα. ἀθῆναι. πρασιεῖς. ναυπλιεῖς. ὀρχομενὸς ὁ μινύειος. ὑπὲρ μὲν οὖν τῶν ναυ-
πλιέων, ἀργεῖοι συνετέλουν. ὑπὲρ πρασιέων δὲ, λακεδαιμόνιοι. οὕτω δ' ἐπεκράτησεν ἡ τιμὴ τοῦ θεοῦ
τούτου παρὰ τοῖς ἕλλησιν, ὥστε, καὶ μακεδόνες δυναστεύοντες ἤδη μέχρι δεῦρο ἐφύλαττόν πως τὴν
ἀσυλίαν, καὶ τοὺς ἱκέτας ἀποσπᾶν ᾐδοῦντο τοὺς εἰς καλαυρείαν καταφυγόντας. ὅπου γε οὐδὲ δη-
μοσθένη ἐθάρρησεν ἀρχίας βιάσασθαι στρατιώτας ἔχων ὃς προσετέτακτο ὑπὸ ἀντιπάτρου ζῶντα ἀγα-
γεῖν κἀκεῖνον, καὶ τῶν ἄλλων ῥητόρων ὃν ἂν εὕροι τῶν ἐν αἰτίαις ὄντων ταῖς παραπλησίαις. ἀλλὰ πεί-
θειν ἐπειρᾶτο. οὐ μὴν ἔπεισέ γε. ἀλλ' ἔφθη, φαρμάκῳ παραλύσας ἑαυτὸν τοῦ ζῆν. τροιζὴν δὲ, καὶ πιτθεὺς,
οἱ πέλοπος, ὁρμηθέντες ἐκ τῆς πισάτιδος, ὁ μὲν τὴν πόλιν ὁμώνυμον ἑαυτοῦ κατέλιπεν. ὁ δὲ πιτθεὺς
ἐβασίλευσεν. ἐκεῖνον διαδεξάμενος. ἄνθης δ' ὁ προκατέχων πλεύσας, ἁλικαρνασὸν ἔκτισεν. ἐροῦμεν δ' ἐν
τοῖς καρικοῖς καὶ τοῖς τρωϊκοῖς. ἡ ἐπίδαυρος δ' ἐκαλεῖτο ἐπίταυρος. φησὶ γὰρ ἀριστοτέλης κατασχεῖν αὐτὴν
κᾶρας. ὥσπερ, καὶ ἑρμιόνην. τῶν δ' ἡρακλειδῶν κατελθόντων, ἴωνας αὐτοῖς συνοικῆσαι τοὺς ἐκ τῆς ἀττικῆς
τετραπόλεως συνεπομένους εἰς ἄργος, καὶ αὕτη δ' οὐκ ἄσημος ἡ πόλις. καὶ μάλιστα διὰ τὴν ἐπιφάνειαν
τοῦ ἀσκληπιοῦ θεραπεύειν νόσους παντοδαπὰς πεπιστευμένου. καὶ τὸ ἱερὸν πλῆρες ἔχοντος ἀεὶ τῶν τε
καμνόντων καὶ τῶν ἀνακειμένων πινάκων, ἐν οἷς ἀναγεγραμμέναι τυγχάνουσιν αἱ θεραπεῖαι καθά-
περ ἐν κῷ τε καὶ τρίκκῃ. κεῖται δ' ἡ πόλις ἐν μυχῷ τοῦ σαρωνικοῦ κόλπου καὶ τὸν περίπλουν ἔχουσα στα-
δίων πεντεκαίδεκα. βλέπουσα πρὸς ἀνατολὰς θερινάς. περικλείεται δ' ὄρεσιν ὑψηλοῖς μέχρι πρὸς
τὴν θάλατταν. ὥστ' ἐρυμνὴ κατεσκευάσθαι φυσικῶς πανταχόθεν. μεταξὺ δὲ τροιζῆνος καὶ ἐπιδαύρου, χω-
ρίον ἦν ἐρυμνὸν μέθανα καὶ χερρόνησος ὁμώνυμος τούτῳ. παρὰ θουκυδίδῃ δὲ ἔν τισιν ἀντιγράφοις,
μεθώνη φέρεται ὁμώνυμος τῇ μακεδονικῇ. ἐν ᾗ φίλιππος ἐξεκόπη τὸν ὀφθαλμὸν πολιορκῶν. διό-
περ οἴεταί τινας ἐξαπατηθέντας, ὁ σκήψιος δημήτριος τὴν ἐν τῇ τροιζῆνι, μεθώνην ὑπονοεῖν. καθ' ἧς
ἀράσασθαι λέγεται τοὺς ὑπὸ ἀγαμέμνονος πεμφθέντας ναυτολόγους, μηδέποτε παύσασθαι τειχοδο-
μεῖν, οὐ τούτων, ἀλλὰ τῶν μακεδόνων ἀνανευσάντων, ὥς φησι θεόπομπος. τούτους δ' οὐκ εἰκὸς ἐγγὺς ὄντας
ἀπειθῆσαι. αἴγινα δ' ἐστὶ μὲν καὶ τόπος τις τῆς ἐπιδαυρίας. ἔστι δὲ καὶ νῆσος πρὸς τῇ ἠπείρῳ ταύτῃ. ἣν ἐν τοῖς
ἀρτίως παρατεθεῖσιν ἔπεσι βούλεται φράζειν ὁ ποιητής. διὸ καὶ γράφουσί τινες νῆσόν τ' αἴγιναν. ἀντὶ τοῦ,
οἵ τ' ἔχον αἴγιναν. διαστελλόμενοι τὴν ὁμωνυμίαν, ὅτι μὲν οὖν τῶν σφόδρα γνωρίμων ἐστὶν ἡ νῆσος, τί δεῖ λέγειν.
ἐντεῦθεν, γὰρ αἰακός τε λέγεται, καὶ οἱ ὑπ' αὐτόν. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ καὶ θαλαττοκρατήσασά ποτε καὶ περὶ πρω-
τείων ἀμφισβητήσασα ποτὲ πρὸς ἀθηναίους. ἐν τῇ περὶ σαλαμῖνα ναυμαχίᾳ κατὰ τὰ περσικά.
λέγονται δὲ στάδια ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα ὁ κύκλος τῆς νήσου πόλιν δ' ὁμώνυμον ἔχει τετραμμένην πρὸς
λίβα. περιέχουσι δ' αὐτὴν ἥ τε ἀττικὴ, καὶ ἡ μεγαρὶς, καὶ τῆς πελοποννήσου τὰ μέχρι ἐπιδαύρου σχεδόν τι
ἑκατὸν στάδια ἑκάστη διέχουσα. τὸ δὲ ἑωθινὸν μέρος, καὶ τὸ νότιον, πελάγει κλύζεται τῷ τε μυρτώῳ, καὶ τῷ κρη-
τικῷ. νησίδια δὲ, περίκειται πολλὰ μὲν, πρὸς τῇ ἠπείρῳ. βέλβινα δὲ πρὸς τὸ πέλαγος ἀνατείνουσα. ἡ δὲ χώ-
ρα αὐτῆς κατὰ βάθους μὲν γεώδης ἐστί. πετρώδης δ' ἐπιπολῆς. καὶ μάλιστα ἡ πεδιάς. διόπερ ψιλὴ πᾶσά
ἐστι, κριθοφόρος δὲ ἱκανῶς. μυρμιδόνας δὲ κληθῆναι φασὶν οὐχ ὡς ὁ μῦθος, τοὺς αἰγινήτας. ὅτι λοιμοῦ
μεγάλου συμπεσόντος οἱ μύρμηκες ἄνθρωποι γένοιντο κατ' εὐχὴν αἰακοῦ, ἀλλ' ὅτι μυρμήκων τρόπον ὀρύττοντες
τὴν γῆν ἐπιφέροιεν ἐπὶ τὰς πέτρας ὥστ' ἔχειν γεωργεῖν. ἐν δὲ τοῖς ὀρύγμασιν οἰκεῖν φειδόμενοι πλίνθων.
ὠνομάζετο δ' οἰνώνη πάλαι ὁμώνυμος δυσὶ δήμοις τῆς ἀττικῆς. τῷ τε πρὸς ἐλευθέραις. οἰνώνης σύγ-
χορτα ναίειν πεδία ταῖς δ' ἐλευθέραις. καὶ μιᾷ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ μαραθῶνα, καθ' ἧς ἡ

παροιμία οἰνώνη τὴν χαράδραν. ἐπῴκησαν δ' αὐτὴν ἀργεῖοι καὶ κρῆτες καὶ ἐπιδαύριοι, καὶ δωριεῖς. ὕστερον δὲ κατεκληρούχησαν τὴν νῆσον ἀθηναῖοι. ἀφελόμενοι δὲ λακεδαιμόνιοι τοὺς ἀθηναίους τὴν νῆσον, ἀπέδοσαν τοῖς ἀρχαίοις οἰκήτορσιν, ἀποίκους δ' ἔστειλαν αἰγινῆται, εἴς τε κυδωνίαν τὴν ἐν κρήτῃ, καὶ εἰς ὀμβρικούς. ἔφορος δ' ἐν αἰγίνῃ ἄργυρον πρῶτον κοπῆναί φησιν ὑπὸ φείδωνος. ἐμπόριον γὰρ γενέσθαι, διὰ τὴν λυπρότητα τῆς χώρας, τῶν ἀνθρώπων θαλαττουργούντων ἐμπορικῶς. ἀφ' οὗ τὸν ῥῶπον αἰγιναίαν ἐμπολὴν λέγεσθαι. ὁ δὲ ποιητὴς ἔνια μὲν χώρας λέγει συνεχῶς, ὡς πρὸ καὶ κεῖται.

» Οἳ θ' ὑρίην ἐνέμοντο, αὐλίδα,

» Οἳ δ' ἄργος τ' εἶχον τιρυνθά τε τειχιόεσσαν.

» Ἑρμιόνην, ἀσίνην τε βαθὺν κατὰ κόλπον ἐχούσας Τροιζῆνά τ' ἠϊόνας τε,

Ἄλλοτε δ' οὐχ ὡς ἔστι τῇ τάξει, χοῖνον τε σκῶλόν τε θέσπειαν γραῖαν τε. τάς τ' ἐν ἠπειρώταις νήσοις συμφράζει, οἵ ῥ' ἰθάκην εἶχον, καὶ κροκύλει' ἐνέμοντο, τὰ γὰρ κροκύλεια ἐν τοῖς ἀκαρνᾶσιν. οὕτω δὲ, καὶ νῦν τῇ αἰγίνῃ, τὴν μάσητα συνῆψεν, ὄντα τῆς ἀργολικῆς ἠπείρου, θυρέας δὲ ὅμηρος μὲν οὐκ ὀνόμασεν. οἱ δ' ἄλλοι θρυλλοῦσι περὶ ὧν ἀργείοις, καὶ λακεδαιμονίοις συνέστη ἀγὼν, τριακοσίοις πρὸς τριακοσίους. ἐνίκων δὲ λακεδαιμόνιοι στρατηγοῦντος ὀθρυάδα. εἶναι δέ φησι τὸ χωρίον τοῦτο θουκυδίδης ἐν τῇ κυνοσουρίᾳ κατὰ τὴν μεθορίαν τῆς ἀργείας, καὶ τῆς λακωνικῆς. εἰσὶ δὲ καὶ ὕσιαι, τόπος γνώριμος τῆς ἀργολικῆς. καὶ κεγχρεαὶ αἳ κεῖνται ἐπὶ τῇ ὁδῷ τῇ ἐκ τεγέας εἰς ἄργος. διὰ τοῦ παρθενίου ὄρους, καὶ τοῦ κρεοπώλου. ὅμηρος δ' αὐτὰς οὐκ οἶδεν. οὐδὲ, τὸ λυκούργιον. οὐδ' ὀρνεάς. κῶμαι δ' εἰσὶ τῆς ἀργείας. ἡ μὲν, ὁμώνυμος τῷ ὄρει. αἱ δὲ, ταῖς ὀρνεαῖς, ταῖς μεταξὺ κορίνθου, καὶ σικυῶνος ἱδρυμέναις. τῶν δὲ κατὰ πελοπόννησον πόλεων ἔνδοξόταται γεγόνασι, καὶ μέχρι νῦν εἰσιν ἄργος τε σπάρτη τε. διὰ δὲ τὸ πολυθρύλλητον, ἥκιστα δεῖ μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν. τὰ γὰρ ὑπὸ πάντων εἰρημένα λέγειν δόξομεν. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν, ηὐδοκίμει τὸ ἄργος μᾶλλον. ὕστερον δὲ, καὶ μέχρι παντὸς ὑπερέβαλλοντο λακεδαιμόνιοι, καὶ διετέλεσαν τὴν αὐτονομίαν φυλάττοντες. πλὴν εἴ τι που μικρὸν, προσπταίειν αὐτοὺς συνέβαινεν. ἀργεῖοι δὲ πύρρον μὲν οὐκ ἐδέξαντο. ἀλλὰ πρὸ τοῦ τείχους ἔπεσε, γραιδίου τινὸς ὡς ἔοικε κεραμίδα ἀφέντος ἄνωθεν ἐπὶ τὴν κεφαλήν. ὑπ' ἄλλοις δ' ἐγένοντο βασιλεῦσι. μετασχόντες δὲ τοῦ τῶν ἀχαιῶν συστήματος, σὺν ἐκείνοις εἰς τὴν τῶν ῥωμαίων ἐξουσίαν ἦλθον. καὶ νῦν συνέστηκεν ἡ πόλις, δευτερεύουσα τῇ τάξει μετὰ τὴν σπάρτην. ἑξῆς δὲ λέγομεν περὶ τῶν ὑπὸ μυκήναις καὶ τῷ ἀγαμέμνονι τεταγμένων τόπων ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν ἔχει δ' οὕτως τὰ ἔπη.

» Οἳ δὲ μυκήνας εἶχον ἐϋκτίμενον πτολίεθρον,

» Ἀφνειόν τε κόρινθον ἐϋκτιμένας τε κλεωνάς.

» Ὀρνειάς τ' ἐνέμοντο ἀραιθυρέην τ' ἐρατεινήν.

» Καὶ σικυῶν' ὅθ' ἄδρηστος πρῶτ' ἐμβασίλευεν.

» Οἵ θ' ὑπερησίην τε, καὶ αἰπεινὴν γονόεσσαν. Πελλήνην τ' εἶχον, ἠδ' αἴγιον ἀμφενέμοντο,

» Αἰγιαλόν τ' ἀνὰ πάντα καὶ ἀμφ' ἑλίκην εὐρεῖαν.

Αἱ μὲν οὖν μυκῆναι νῦν οὐκέτι εἰσίν. ἔκτισε δ' αὐτὰς περσεύς. διεδέξατο δὲ σθένελος. εἶτ' εὐρυσθεύς. οἱ δ' αὐτοὶ, καὶ τοῦ ἄργους ἦρξαν. εὐρυσθεὺς μὲν οὖν στρατεύσας εἰς μαραθῶνα ἐπὶ τοὺς ἡρακλέους παῖδας, καὶ ἰόλαον, βοηθησάντων ἀθηναίων, ἱστορεῖται πεσεῖν ἐν τῇ μάχῃ. καὶ τὸ μὲν ἄλλο σῶμα, γαργηττοῖ ταφῆναι. τὴν δὲ κεφαλὴν χωρὶς ἐν τῇ κορίνθῳ. ἀποκόψαντος αὐτὴν ἰολάου περὶ τὴν κρήνην τὴν μακαρίαν, ὑπὸ ἁμαξιτόν. καὶ ὁ τόπος καλεῖται εὐρυσθέως κεφαλή. αἱ δὲ μυκῆναι μετέπεσον εἰς τοὺς πελοπίδας, ὁρμηθέντας ἀπὸ τῆς πισάτιδος εἶτ' εἰς τοὺς ἡρακλείδας καὶ τοὺς τὸ ἄργος ἔχοντας. μετὰ δὲ τὴν ἐν σαλαμῖνι ναυμαχίαν, ἀργεῖοι μετὰ κλεωναίων, καὶ τεγεατῶν ἐπελθόντες ἄρδην τὰς μυκήνας ἀνεῖλον καὶ τὴν χώραν διενείμαντο. διὰ δὲ τὴν ἐγγύτητα τὰς δύο πόλεις εἰς μίαν οἱ τραγικοὶ συνωνύμως προσαγορεύουσιν. εὐριπίδης δὲ, καὶ ἐν τῷ αὐτῷ δράματι, ποτὲ μὲν μυκήνας καλῶν. ποτὲ δ' ἄργος τὴν αὐτὴν πόλιν, καθάπερ ἐν ἰφιγενείᾳ, καὶ ὀρέστῃ. κλεωναὶ δ' εἰσὶ πόλισμα ἐπὶ τῇ ὁδῷ κείμενον τῇ ἐξ ἄργους εἰς κόρινθον ἐπὶ λόφου περιοικουμένου πανταχόθεν, καὶ τετειχισμένου καλῶς. ὥστ' οἰκείως εἰρῆσθαί μοι δοκεῖ τὸ εὐκτιμένας κλεωνάς. ἐνταῦθα δὲ, καὶ ἡ νεμέα μεταξὺ κλεωνῶν, καὶ φλιοῦντος. καὶ τὸ ἄλσος ἐν ᾧ καὶ τὰ νέμεα συντελεῖν ἔθος τοῖς ἀργείοις. καὶ τὰ περὶ τὸν νεμεαῖον λέοντα μυθευόμενα. καὶ ἡ βέμβινα κώμη. διέχουσι δ' αἱ κλεωναὶ τοῦ μὲν ἄργους σταδίους εἴκοσι καὶ ἑκατόν. κορίνθου δὲ, ὀγδοήκοντα. καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ ἀκροκορίνθου κατωπτεύσαμεν τὸ κτίσμα. ὁ δὲ κόρινθος ἀφνειὸς μὲν λέγεται διὰ τὸ ἐμπόριον ἐπὶ τῷ ἰσθμῷ κείμενον. καὶ δυοῖν λιμένων κύριος. ὧν ὁ μὲν, τῆς ἀσίας. ὁ δὲ τῆς ἰταλίας ἐγγύς ἐστι. καὶ ῥᾳδίας ποιεῖ τὰς ἑκατέρωθεν ἀμοιβὰς τῶν φόρτων πρὸς ἀλλήλους τοῖς τοσοῦτον ἀφεστῶσιν. ἦν δ' ὥσπερ ὁ πορθμὸς οὐκ εὔπλους ὁ κατὰ τὴν σικελίαν τὸ παλαιὸν οὕτω, καὶ τὰ πελάγη. καὶ μάλιστα τὸ ὑπὲρ τῶν μαλεῶν, διὰ τὰς ἀντιπνοίας, ἀφ' οὗ καὶ παροιμιάζονται, μαλέας δὲ, κάμψας ἐπιλάθου τῶν οἴκαδε. ἀγαπητὸν οὖν ἑκατέροις ἦν τοῖς τε ἐκ τῆς ἀσίας καὶ τοῖς ἐκ τῆς ἰταλίας ἐμπόροις ἀφεῖσι τὸν ἐπὶ μαλέας πλοῦν, εἰς κόρινθον κατάγεσθαι αὐ-

φόρτον αὐτόθι. καὶ πεζῇ τε τῶν ἐκκομιζομένων ἐκ τῆς πελοποννήσου καὶ τῶν εἰσαγομένων ἔπιπτε τὰ τέλη τοῖς τὰ κλεῖθρα ἔχουσι, διέμεινε δὲ τοῦτο καὶ εἰς ὕστερον μέχρι παντός. τοῖς δ' ὕστερον, καὶ πλείω προσεγένετο πλεονεκτήματα. καὶ γὰρ ὁ ἰσθμικὸς ἀγὼν ἐκεῖ συντελούμενος, ὄχλους ἐπήγετο. καὶ οἱ βακχιάδαι τυραννήσαντες, πλούσιοι καὶ πολλοί, καὶ γένος λαμπροί, διακόσια ἔτη σχεδόν τι κατέσχον τὴν ἀρχήν, καὶ τὸ ἐμπόριον ἀδεῶς ἐκαρπώσαντο. τούτους τε κύψελος καταλύσας αὐτὸς ἐτυράννησε καὶ μέχρι τριγονίας ὁ οἶκος αὐτοῦ συνέμεινε. τοῦ δὲ περὶ τὸν οἶκον τοῦτον πλούτου μαρτύριον, τὸ ὀλυμπίασιν ἀνάθημα κυψέλου. σφυρήλατος χρυσοῦς ἀνδριὰς εὐμεγέθης. δημάρατός τε εἷς τῶν ἐν κορίνθῳ δυναστευσάντων, φυγὼν τὰς ἐκεῖ στάσεις, τοσοῦτον ἐνηνέγκατο πλοῦτον οἴκοθεν εἰς τὴν τυρρηνίαν, ὥστε αὐτὸς μὲν, ἦρξε τῆς δεξαμένης αὐτὸν πόλεως. ὁ δ' υἱὸς αὐτοῦ, καὶ ῥωμαίων κατέστη βασιλεύς. τό τε τῆς ἀφροδίτης ἱερὸν οὕτω πλούσιον ὑπῆρξεν, ὥστε πλείους ἢ χιλίας ἱεροδούλους ἐκέκτητο ἑταίρας. ἃς ἀνετίθεσαν τῇ θεῷ, καὶ ἄνδρες, καὶ γυναῖκες. καὶ διὰ ταύτας οὖν πολυοχλεῖτο ἡ πόλις, καὶ ἐπλουτίζετο. οἱ γὰρ ναύκληροι ῥᾳδίως ἐξανηλίσκοντο. καὶ διὰ τοῦτο ἡ παροιμία φησίν. οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐς κόρινθον ἔσω πλοῦς. καὶ δὴ καὶ μνημονεύεταί τις ἑταίρα πρὸς τὴν ὀνειδίζουσαν, ὅτι οὐ φιλεργὸς εἴη, οὐδ' ἐρίων ἅπτοιτο, εἰπεῖν, ἐγὼ μέντοι ἡ τοιαύτη τρεῖς ἤδη καθεῖλον ἱστοὺς ἐν βραχεῖ χρόνῳ τούτῳ, τὴν δὲ τοποθεσίαν τῆς πόλεως ἐξ ὧν ἱερώνυμός τε εἴρηκε καὶ εὔδοξος καὶ ἄλλοι καὶ αὐτοὶ δὲ εἴδομεν νεωστὶ ἀναληφθείσης ὑπὸ τῶν ῥωμαίων, τοιάνδε εἶναι συμβαίνει. ὄρος ὑψηλὸν ὅσον τριῶν ἥμισυ σταδίων ἔχον τὴν κάθετον, τὴν δ' ἀνάβασιν καὶ τριάκοντα σταδίων εἰς ὀξεῖαν τελευτᾷ κορυφήν. καλεῖται δὲ ἀκροκόρινθος. οὗ τὸ μὲν πρὸς ἄρκτον μέρος ἐστὶ τὸ μάλιστα ὄρθιον. ὑφ' ᾧ κεῖται ἡ πόλις ἐπὶ τραπεζώδους ἐπιπέδου χωρίου πρὸς αὐτῇ τῇ ῥίζῃ τοῦ ἀκροκορίνθου. αὐτῆς μὲν οὖν τῆς πόλεως ὁ κύκλος, καὶ τετταράκοντα σταδίων ὑπῆρχεν, ἐτετείχιστο δ' ὅσον τῆς πόλεως γυμνὸν ἦν τοῦ ὄρους. συμπεριείληπτο δὲ τῷ περιβόλῳ τούτῳ, καὶ τὸ ὄρος αὐτὸ ὁ ἀκροκόρινθος, ᾗ δυνατὸν ἦν τειχισμὸν δέξασθαι. καὶ ἡμῖν ἀναβαίνουσιν, ἦν δῆλα τὰ ἐρείπια τῆς χοινίας. ὥσθ' ἡ πᾶσα περίμετρος ἐγένετο περὶ πέντε καὶ ὀγδοήκοντα σταδίους. ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων μερῶν ἧττον ὄρθιόν ἐστι τὸ ὄρος. ἀνατέταται μὲν τὸ ἐνθένδε ἱκανῶς. καὶ περίοπτόν ἐστιν. ἡ μὲν οὖν κορυφὴ ναΐδιον ἔχει ἀφροδίτης. ὑπὸ δὲ τῇ κορυφῇ τήν τε πειρήνην εἶναι συμβαίνει κρήνην. ἔκρυσιν μὲν οὐκ ἔχουσαν. μεστὴν δ' ἀεὶ διαυγοῦς καὶ ποτίμου ὕδατος. φασὶ, δὲ, καὶ ἐνθένδε καὶ ἐξ ἄλλων ὑπονόμων τινῶν φλεβίων. συνθλίβεσθαι τὴν πρὸς τῇ ῥίζῃ τοῦ ὄρους κρήνην ἐκρέουσαν εἰς τὴν πόλιν, ὥσθ' ἱκανῶς ἀπ' αὐτῆς ὑδρεύεσθαι. ἔστι δὲ καὶ τὸ φρεάτιον εὐπορία κατὰ τὴν πόλιν. λέγουσι δὲ καὶ κατὰ τὸν ἀκροκόρινθον. οὐ μὴν ἡμεῖς γε εἴδομεν. τοῦ δ' οὖν εὐριπίδου φήσαντος, οὕτως ἥκω περίκλυστον προλιποῦσ' ἀκροκόρινθον πόλιν ἀφροδίτας, τὸ, περίκλυστον ἤτοι κατὰ βάθους λεκτέον. ἐπεὶ, καὶ φρέατα καὶ ὑπόνομοι λιβάδες, διήκουσι δι' αὐτῆς. ἢ τὸ παλαιὸν ὑπολιπτέον, τὴν πειρήνην ἐπιπολάζειν, καὶ καταρρέοντα ποιεῖν τὸ ὄρος. ἐνταῦθα δέ φασι πίνοντα τὸν πήγασον, ἁλῶναι ὑπὸ βελλεροφόντου. πτηνὸν ἵππον ἐκ τοῦ τραχήλου τῆς μεδούσης ἀναπαλέντα κατὰ τὴν γοργοτομίαν. τὸν δ' αὐτόν φασι καὶ τὴν ἵππου κρήνην ἀναβαλεῖν ἐν τῷ ἑλικῶνι, πλήξαντα τῷ ὄνυχι τὴν ὑποπεσοῦσαν πέτραν. ὑπὸ δὲ τῇ πειρήνῃ, τὸ σισύφειον ἐστιν, ἱεροῦ τινος ἢ βασιλείου λευκολίθου πεποιημένου. διασῶζον ἐρείπια οὐκ ὀλίγα. ἀπὸ δὲ τῆς κορυφῆς πρὸς ἄρκτον μὲν ἀφορᾶται ὅ, τε παρνασσὸς, καὶ ὁ ἑλικών. ὄρη ὑψηλὰ καὶ νιβοφόλα. καὶ ὁ κρισαῖος κόλπος ὑποπεπτωκὼς ἀμφοτέροις. περιεχόμενος ὑπὸ τῆς φωκίδος καὶ τῆς βοιωτίδος, καὶ τῆς μεγαρίδος. καὶ τῆς ἀντιπόρθμου κορινθίας τῇ φωκίδι, καὶ σικυωνίας. πρὸς ἑσπέραν δὲ, ὑπέρκειται τούτων ἁπάντων τὰ καλούμενα ὄνεια ὄρη. διατείνοντα μέχρι βοιωτίας, καὶ κιθαιρῶνος ἀπὸ τῶν σκειρωνίδων πετρῶν. ἀπὸ τῆς παρὰ ταύτας ὁδοῦ πρὸς τὴν ἀττικήν. ἀρχὴ δὲ τῆς παραλίας ἑκατέρας, τῆς μὲν, τὸ λέχαιον. τῆς δὲ κεγχρεαὶ κώμη καὶ λιμήν. ἀπέχων τῆς πόλεως ὅσον ἑβδομήκοντα στάδια. τούτῳ μὲν οὖν χρῶνται πρὸς τοὺς ἐκ τῆς ἀσίας. πρὸς δὲ τοὺς ἐκ τῆς ἰταλίας τῷ λεχαίῳ. τὸ δὲ λέχαιον ὑποπέπτωκε τῇ πόλει κατοικίαν ἔχον οὐ πολλήν. σκέλη δὲ καθείλκυσται σταδίων περὶ δώδεκα ἑκατέρωθεν τῆς ὁδοῦ τῆς περὶ τὸ λέχαιον. ἐντεῦθεν δὲ παρεκτείνουσα ἡ ἠϊὼν μέχρι παγῶν τῆς μεγαρίδος, κλύζεται μὲν ὑπὸ τοῦ κορινθιακοῦ κόλπου, κοίλη δ' ἐστί, καὶ ποιεῖ τὸν δίολκον πρὸς τὴν ἑτέραν ἠϊόνα τὴν κατὰ σχοινοῦντα, πλησίον ὄντα τῶν κεγχρεῶν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τοῦ λεγχαίου καὶ παγῶν τὸ τῆς ἀκραίας μαντεῖον ἥρας ὑπῆρχε τὸ παλαιὸν καὶ αἱ ὀλμιαὶ τὸ ποιοῦν ἀκρωτήριον τὸν κόλπον. ἐν ᾧ ἥ τε οἰνόη, καὶ πηγαί. τὸ μὲν, τῶν μεγαρέων φρούριον, ἡ δ' οἰνόη, τῶν κορινθίων. ἀπὸ δὲ τῶν κεγχρεῶν ὁ σχοινοῦς καθ' ὃν τὸ στενὸν τοῦ διολκοῦ. ἔπειθ' ἡ κρομυωνία. πρόκειται δὲ, τῆς ἠϊόνος ταύτης, ὅ τε σαρωνικὸς κόλπος, καὶ ὁ ἐλευσινιακός. τρόπον τινὰ ὁ αὐτὸς ὢν συνεχὴς τῷ ἑρμιονικῷ. ἐπὶ δὲ τῷ ἰσθμῷ, καὶ τὸ τοῦ ἰσθμίου ποσειδῶνος ἱερὸν, ἄλσει πιτυώδει συνηρεφὲς, ὅπου τὸν ἀγῶνα τῶν ἰσθμίων κορίνθιοι συνετέλουν. ἡ δὲ κρομυὼν ἔστι κώμη τῆς κορινθίας. πρότερον δὲ τῆς μεγαρίδος. ἐν ᾗ μυθεύουσι τὰ περὶ τὴν κρομυωνίαν ὗν. ἣν μητέρα τοῦ καλυδωνίου κάπρου φασί, καὶ τῶν θησέως ἄθλων ἕνα τοῦτον παραδιδόασι τὴν τῆς ὑὸς ταύτης ἐξαίρεσιν. καὶ ἡ τενέα δ' ἐστὶ κώ

μὴ τῆς κορινθίας, ἐν ᾗ τὸ τενεάτου ἀπόλλωνος ἱερόν. λέγεται δὲ καὶ ἀρχίαν τὸν στείλαντα τὴν εἰς συρακούσας ἀποικίαν, τοὺς πλείστους τῶν ἐποίκων ἐντεῦθεν συνεπακολουθῆσαι. καὶ μετὰ ταῦτα εὐθηνεῖν μάλιστα τῶν ἄλλων τὴν κατοικίαν ταύτην, τὰ δ' ὕστατα καὶ καθ' αὑτοὺς πολιτεύεσθαι. προσθέσθαι τε τοῖς ῥωμαίοις ἀποστάντας κορινθίων, καὶ κατασκαφείσης τῆς πόλεως συμμεῖναι. φέρεται δὲ καὶ χρησμὸς ὁ δοθείς τινι τῶν ἐκ τῆς ἀσίας ἐρωτῶντι, εἰ λῷον εἴη μετοικεῖν εἰς κόρινθον, εὐδαίμων ὁ κόρινθος, ἐγὼ δ' εἴην τενεάτης. ὅπερ κατ' ἄγνοιαν τινὲς παραφθείρουσιν, ἐγὼ δ' εἴην τεγεάτης. λέγεται δ' ἐνταῦθα ἐκθρέψαι πόλυβος τὸν οἰδίπουν. δοκεῖ δὲ καὶ συγγένειά τις εἶναι τενεδίοις πρὸς τούτους ἀπὸ τέννου τοῦ κύκνου, καθάπερ εἴρηκεν ἀριστοτέλης. καὶ ἡ τοῦ ἀπόλλωνος δὲ τιμὴ παρ' ἀμφοτέροις ὁμοία οὖσα, δίδωσιν οὐ μικρὰ σημεῖα. κορίνθιοι δὲ ὑπὸ φιλίππῳ ὄντες ἐκείνῳ τε συνεφιλονείκησαν, καὶ ἰδίᾳ πρὸς ῥωμαίους ὑπεροπτικῶς εἶχον. ὥστε τινές, καὶ τῶν πρέσβεων παριόντων τὴν οἰκίαν αὐτῶν, ἐθάρρησαν καταντλῆσαι βόρβορον. ἀντὶ τούτων μὲν οὖν, καὶ ἄλλων ὧν ἐξήμαρτον, ἔτισαν δίκας αὐτίκα. πεμφθείσης γὰρ ἀξιολόγου στρατιᾶς, αὐτή τε κατεσκάφη ὑπὸ λευκίου μομμίου, καὶ τἆλλα μέχρι μακεδονίας ὑπὸ ῥωμαίοις ἐγένετο. ἐν ἄλλοις ἄλλων πεμπομένων στρατηγῶν. τὴν δὲ χώραν ἔσχον σικυώνιοι τὴν πλείστην τῆς κορινθίας. πολύβιος δὲ τὰ συμβάντα περὶ τὴν ἅλωσιν οἴκτου μέρει λέγων, προστίθησι, καὶ τὴν στρατιωτικὴν ὀλιγωρίαν τὴν περὶ τὰ τῶν τεχνῶν ἔργα, καὶ τὰ ἀναθήματα. φησὶ γὰρ ἰδεῖν παρών, ἐρριμμένους πίνακας ἐπ' ἐδάφους. πεττεύοντας δὲ τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τούτων. ὀνομάζει δ' αὐτῶν, ἀριστείδου γραφὴν τοῦ διονύσου. ἐφ' οὗ τινὲς εἰρῆσθαί φασι τό, οὐδὲν πρὸς τὸν διόνυσον, καὶ τὸν ἡρακλέα τὸν καταπονούμενον τῷ τῆς δηιανείρας χιτῶνι. τοῦτον μὲν οὖν οὐχ ἑωράκαμεν ἡμεῖς. τὸν δὲ διόνυσον ἀνακείμενον ἐν τῷ δημητρείῳ τῷ ἐν ῥώμῃ κάλλιστον ἔργον ἑωρῶμεν. ἐμπρησθέντος δὲ τοῦ νεὼ, συνηφανίσθη καὶ ἡ γραφὴ νεωστί. σχεδὸν δέ τι, καὶ τὰ τῶν ἄλλων ἀναθημάτων τῶν ἐν ῥώμῃ, τὰ πλεῖστα, καὶ ἄριστα, ἐντεῦθεν ἀφῖχθαι. τινὰ δέ, καὶ αἱ κύκλῳ τῆς ῥώμης πόλεις ἔσχον. μεγαλόφρων γὰρ ὢν μᾶλλον ἢ φιλότεχνος ὁ μόμμιος ὥς φασι, μετεδίδου ῥᾳδίως τοῖς δεηθεῖσι. λεύκουλος δὲ κατασκευάσας τὸ τῆς εὐτυχίας ἱερὸν, καὶ στοάν τινα, χρῆσιν ᾐτήσατο ὧν εἶχεν ἀνδριάντων ὁ μόμμιος, ὡς κοσμήσων τὸ ἱερὸν μέχρι ἀναδείξεως. εἶτ' ἀποδώσων. οὐκ ἀπέδωκε δέ, ἀλλ' ἀνέθηκε, κελεύσας αἴρειν εἰ βούλεται. πρᾴως δ' ἤνεγκεν ἐκεῖνος, οὐ φροντίσας οὐδέν. ὥστ' ηὐδοκίμει τοῦ ἀναθέντος μᾶλλον. πολὺν δὲ χρόνον ἐρήμη μείνασα ἡ κόρινθος ἀνελήφθη πάλιν ὑπὸ καίσαρος τοῦ θεοῦ διὰ τὴν εὐφυΐαν. ἐποίκους πέμψαντος τοῦ ἀπελευθερικοῦ γένους πλείστους. οἱ τὰ ἐρείπια κινοῦντες, καὶ τοὺς τάφους συνανασκάπτοντες, εὕρισκον ὀστρακίνων τορευμάτων πλήθη. πολλὰ δὲ καὶ χαλκώματα. θαυμάζοντες δὲ τὴν κατασκευὴν, οὐδένα τάφον ἀσκευώρητον εἴασαν. ὥστε, εὐπορήσαντες τῶν τοιούτων, καὶ διατιθέμενοι πολλοῦ, νεκροκορινθίων ἐπλήρωσαν τὴν ῥώμην. οὕτω γὰρ ἐκάλουν τὰ ἐκ τῶν τάφων ληφθέντα, καὶ μάλιστα τὰ ὀστράκινα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἐτιμήθη σφόδρα ὁμοίως τοῖς χαλκώμασι τοῖς κορινθιουργέσιν. εἶτ' ἐπαύσαντο τῆς σπουδῆς ἐκλιπόντων τῶν ὀστράκων, καὶ οὐδὲ κατορθουμένων τῶν πλείστων. ἡ μὲν οὖν πόλις τῶν κορινθίων μεγάλη τε, καὶ πλουσία διὰ παντὸς ὑπῆρξεν ἀνδρῶν τε ηὐπόρησεν ἀγαθῶν εἴς τε τὰ πολιτικὰ, καὶ εἰς τὰς τέχνας τὰς δημιουργικάς. μάλιστα γὰρ, καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν σικυῶνι ηὐξήθη γραφική τε, καὶ πλαστική, καὶ πᾶσα ἡ τοιαύτη δημιουργία. χώραν δ' ἔσχεν οὐκ εὔγεων σφόδρα. ἀλλὰ σκολιάν τε, καὶ τραχεῖαν. ἀφ' οὗ πάντες ὀφρυόεντα κόρινθον εἰρήκασι. καὶ παροιμιάζονται κόρινθος ὀφρύεται, καὶ κοιλαίνεται. ὀρνεαὶ δ' εἰσὶν αἱ ἐπώνυμοι τῷ παραρρέοντι ποταμῷ, νῦν μὲν ἔρημοι. πρότερον δ' οἰκούμεναι καλῶς. ἱερὸν ἔχουσαι πριάπου τιμώμενον, ἀφ' ὧν καὶ ὁ τὰ πριάπεια ποιήσας εὐφρόνιος ὀρνεάτην καλεῖ τὸν θεόν. κεῖνται δ' ὑπὲρ τοῦ πεδίου τοῦ σικυωνίων. τὴν δὲ χώραν ἔσχον ἀργεῖοι. ἀραιθυρέα δ' ἐστὶν ἡ νῦν καλουμένη φλιασία. πόλιν δ' εἶχεν ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ πρὸς ὄρει κοιλώσσῃ, οἱ δ' ὕστερον, ἀναστάντες ἐκεῖθεν, πρὸ τριάκοντα σταδίων ἔκτισαν πόλιν, ἣν ἐκάλεσαν φλιοῦντα. τῆς δὲ κοιλώσσης μέρος ὁ καρνεάτης. ὅθεν λαμβάνει τὴν ἀρχὴν ἀσωπὸς ὁ παραρρέων τὴν σικυωνίαν. καὶ ποιῶν τὴν ἀσωπίαν χώραν μέρος οὖσαν τῆς σικυωνίας. ἔστι δ' ἀσωπὸς καὶ ὁ παρὰ θήβας ῥέων, καὶ πλαταιὰς, καὶ τανάγραν. ἄλλος δ' ἐστὶν ἐν ἡρακλείᾳ, τῇ τραχινίᾳ. παρὰ κώμην ῥέων ἣν παρασωπίους ὀνομάζουσι. τέταρτος δ' ὁ ἐν πάρῳ. κεῖται δ' ὁ φλιοῦς ἐν μέσῳ σικυωνίας ἀργείας κλεωνῶν, καὶ στυμφάλου κύκλῳ περιεχόμενος. τιμᾶται δ' ἐν φλιοῦντι, καὶ σικυῶνι τὸ τῆς δίας ἱερόν. καλοῦσι δ' οὕτω τὴν ἥβην. τὴν δὲ σικυῶνα πρότερον μηκώνην ἐκάλουν. ἔτι δὲ πρότερον αἰγιαλούς. ἀνῴκισε δ' αὐτὴν ἀπὸ θαλάσσης ὅσον εἴκοσι, στάδια οἱ δὲ δώδεκα φασὶν ἐπὶ λόφον ἐρυμνὸν δημήτριος. τὸ δὲ παλαιὸν κτίσμα ἐπίνειόν ἐστιν ἔχον λιμένα. ὁρίζει δὲ τὴν σικυωνίαν καὶ τὴν κορινθίαν ποταμὸς νεμέα. ἐτυραννήθη δὲ πλεῖστον χρόνον. ἀλλ' ἀεὶ τοὺς τυράννους ἐπιεικεῖς ἄνδρας ἔσχεν. ἄρατον δ' ἐπιφανέστατον. ὃς καὶ τὴν πόλιν ἠλευθέρωσε. καὶ ἀχαιῶν ἦρξε. παρ' ἑκόντων λαβὼν τὴν ἐξουσίαν. καὶ τὸ σύστημα ηὔξησε, προσθεὶς αὐτῷ τήν τε πατρίδα, καὶ τὰς ἄλλας πόλεις τὰς ἐγγύς. ὑπερησίην δὲ, καὶ τὰς ἑξῆς πόλεις ἃς λέγει ὁ ποιητής, καὶ τὸν αἰγιαλὸν τῶν ἀχαιῶν ἤδη συμβέβηκεν εἶναι μέχρι δύμης, καὶ τῶν ὅρων τῆς ἠλείας. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν παλαιὸν ἴωνες

ἐκράτουν, ἐξ ἀθηναίων τὸ γένος ὄντες. ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν παλαιὸν, αἰγιάλεια. καὶ οἱ ἐνοικοῦντες αἰγια-
λεῖς. ὕστερον δ' ἀπ' ἐκείνων ἰωνία, καθάπερ καὶ ἡ ἀττικὴ ἀπὸ ἴωνος τοῦ ξούθου. φασὶ δὲ δευκαλίωνος μὲν
ἕλληνα εἶναι. τοῦτον δὲ περὶ τὴν φθίαν τῶν μεταξὺ πηνειοῦ καὶ ἀσωποῦ δυναστεύσαντα, τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν
παίδων παραδοῦναι τὴν ἀρχήν. τοὺς δ' ἄλλους ἔξω διαπέμψαι, ζητήσοντας ἵδρυσιν ἕκαστον αὐτῷ. ὧν
δῶρος μὲν τοὺς περὶ παρνασσὸν δωριέας συνῴκισε, κατέλιπεν ἐπωνύμους αὐτοῦ. ξοῦθος δὲ τὴν ἐρε-
χθέως θυγατέρα γήμας. ᾤκισε τὴν τετράπολιν τῆς ἀττικῆς. οἰνόην. μαραθῶνα. προβάλινθον. καὶ
τρικόρυνθον. τῶν δὲ τούτου παίδων ἀχαιὸς μὲν φόνον ἀκούσιον πράξας, ἔφυγεν εἰς λακεδαιμονίαν
καὶ ἀχαιοὺς τοὺς ἐκεῖ κληθῆναι παρεσκεύασεν. ἴων δὲ τοὺς μετ' εὐμόλπου νικήσας θρᾶκας. οὕ-
τως ηὐδοκίμησεν, ὥστ' ἐπέτρεψαν αὐτῷ τὴν πολιτείαν. ἀθηναῖοι ὁ δὲ πρῶτον μὲν εἰς τέτταρας φυ-
λὰς διεῖλε τὸ πλῆθος. εἶτα εἰς τέτταρας βίους. τοὺς μὲν γὰρ γεωργοὺς ἀπέδειξε. τοὺς δὲ, δημιουρ-
γούς. τοὺς δὲ, ἱεροποιούς. τετάρτους δὲ τοὺς φύλακας. τοιαῦτα δὲ πλείω διατάξας, τὴν χώραν ἐ-
πώνυμον ἑαυτοῦ κατέλιπεν. οὕτω δὲ πολυανδρῆσαι τὴν χώραν συνέπεσε τότε, ὥστε καὶ ἀποικίαν τῶν
ἰώνων ἔστειλαν εἰς πελοπόννησον ἀθηναῖοι. καὶ τὴν χώραν ἣν κατέσχον, ἐπώνυμον ἑαυτῶν ἐποίησαν.
ἰωνίαν ἀντ' αἰγιαλείας κληθεῖσαν. οἵ τε ἄνδρες ἀντὶ αἰγιαλέων ἴωνες προσηγορεύθησαν, εἰς δώδεκα
πόλεις μερισθέντες. μετὰ δὲ τὴν ἡρακλειδῶν κάθοδον, ὑπ' ἀχαιῶν ἐξελαθέντες, ἐπανῆλθον πά-
λιν εἰς ἀθήνας. ἐκεῖθεν δὲ, μετὰ τῶν κοδριδῶν ἔστειλαν τὴν ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰς τὴν ἀσίαν. ἔκτισαν
δὲ δώδεκα πόλεις ἐν τῇ παραλίᾳ τῆς καρίας, καὶ τῆς λυδίας. εἰς τοσαῦτα μέρη διελόντες σφᾶς
ὅσα καὶ ἐν τῇ πελοποννήσῳ, κατεῖχον. οἱ δ' ἀχαιοὶ φθιῶται μὲν ἦσαν τὸ γένος. ᾤκησαν δ' ἐν λα-
κεδαίμονι. τῶν δ' ἡρακλειδῶν ἐπικρατησάντων, ἀναληφθέντες ὑπὸ τισαμενοῦ τοῦ ὀρέστου παιδὸς
ὡς προειρήκαμεν τοῖς ἴωσιν ἐπέθεντο. καὶ γενόμενοι κρείττους, τοὺς μὲν, ἐξέβαλον. αὐτοὶ δὲ κατέ-
σχον τὴν γῆν. καὶ διεφύλαξαν τὸν αὐτὸν τῆς χώρας μερισμὸν, ὃν περ, καὶ παρέλαβον. οὕτω δ' ἴσχυσαν
ὥστε τὴν ἄλλην πελοπόννησον ἐχόντων τῶν ἡρακλειδῶν, ὧν ἀπέστησαν, ἀντεῖχον ὅμως πρὸς ἅπαν-
τας, ἀχαΐαν ὀνομάσαντες τὴν χώραν. ἀπὸ μὲν οὖν τισαμενοῦ μέχρι ὠγύγου, βασιλευόμενοι διετέ-
λεσαν. εἶτα δημοκρατηθέντες, τοσοῦτον ηὐδοκίμησαν περὶ τὰς πολιτείας, ὥστε τοὺς ἰταλιώτας
μετὰ τὴν στάσιν τὴν πρὸς τοὺς πυθαγορείους, τὰ πλεῖστα τῶν νομίμων μετενέγκασθαι παρὰ τούτων
συνέβη. μετὰ δὲ τὴν ἐν λεύκτροις μάχην, ἐπέτρεψαν θηβαῖοι τούτοις τὴν δίαιταν, περὶ τῶν ἀντιλε-
γομένων ταῖς πόλεσι πρὸς ἀλλήλας, ὕστερον δ' ὑπὸ τῶν μακεδόνων λυθείσης τῆς κοινωνίας, ἀνέ-
λαβον σφᾶς πάλιν κατὰ μικρόν. ἦρξαν δὲ, πύρρου στρατεύσαντος εἰς τὴν ἰταλίαν, τέτταρες συνοῦσαι
πόλεις. ὧν ἦσαν πάτραι καὶ δύμη. εἶτα προσελάμβανόν τινας τῶν δώδεκα. πλὴν ὠλένου, καὶ ἑλί-
κης. τῆς μὲν, οὐ συνελθούσης. τῆς δ' ἀφανισθείσης ὑπὸ κύματος. ἐξαρθὲν γὰρ ὑπὸ σεισμοῦ τὸ πέ-
λαγος, κατέκλυσε, καὶ αὐτὴν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ ἑλικωνίου ποσειδῶνος, ὃ καὶ νῦν ἔτι τιμῶσιν ἴωνες, καὶ
θύουσιν ἐκεῖ τὰ πανιώνια. μέμνηται δ' ὡς ὑπονοοῦσί τινες ταύτης τῆς θυσίας, ὅμηρος ὅταν φῇ.

» Αὐτὰρ ὁ θυμὸν ἄϊσθε καὶ ἤρυγεν ὡς ὅτε ταῦρος.

» Ἤρυγεν ἑλκόμενος ἑλικώνιον ἀμφὶ ἄνακτα.

Τεκμαίρονταί τε, νεώτερον εἶναι ἰωνικῆς ἀποικίας τὸν ποιητήν. μεμνημένον γε τῆς πανιωνι-
κῆς θυσίας, ἣν ἐν τῇ πριηνέων χώρᾳ συντελοῦσιν ἴωνες τῷ ἑλικωνίῳ ποσειδῶνι. ἐπεὶ καὶ αὐτοὶ οἱ πριηνεῖς
ἐξ ἑλίκης εἶναι λέγονται. καὶ δὴ πρὸς τὴν θυσίαν ταύτην βασιλέα καθιστᾶσιν ἄνδρα νέον πριηνέα, τὸν
τῶν ἱερῶν ἐπιμελησόμενον. τεκμηριοῦνται δ' ἔτι μᾶλλον τὸ προκείμενον, ἐκ τῶν περὶ τοῦ ταύρου πε-
φασμένων. τότε γὰρ νομίζουσι καλλιερεῖν περὶ τὴν θυσίαν ταύτην ἴωνες, ὅταν θυόμενος ὁ ταῦρος
μυκήσηται. οἱ δ' ἀντιλέγοντες μεταφέρουσιν εἰς τὴν ἑλίκην τὰ λεχθέντα τεκμήρια περὶ τοῦ ταύρου,
καὶ τῆς θυσίας ὡς ἐκεῖ νενομισμένων τούτων, καὶ τοῦ ποιητοῦ παραβάλλοντος τὰ ἐκεῖ συντελούμενα.
κατεκλύσθη δὴ ἑλίκη δυσὶν ἔτεσι πρὸ τῶν λευκτρικῶν. ἐρατοσθένης δὲ καὶ αὐτὸς ἰδεῖν φησι τὸν τόπον.
καὶ τοὺς πορθμέας λέγειν. ὡς ἐν τῷ πόρῳ ὀρθὸς ἑστήκει ποσειδῶν χάλκεος ἔχων ἱππόκαμπον ἐν τῇ χειρί. κίν-
δυνον φέροντα τοῖς δικτυεῦσιν. ἡρακλείδης δέ φησι καθ' αὐτὸν γενέσθαι τὸ πάθος νύκτωρ, δώδεκα στα-
δίους διεχούσης τῆς πόλεως ἀπὸ θαλάσσης. καὶ τούτου τοῦ χωρίου παντὸς σὺν τῇ πόλει καλυφθέν-
τος. δισχιλίους δὲ παρὰ τῶν ἀχαιῶν πεμφθέντας, ἀνελέσθαι μὲν τοὺς νεκροὺς μὴ δύνασθαι. τοῖς δ'
ὁμόροις νεῖμαι τὴν χώραν. συμβῆναι δὲ τὸ πάθος κατὰ μῆνιν ποσειδῶνος. τοὺς γὰρ ἐκ τῆς ἑ-
λίκης ἐκπεσόντας ἴωνας, αἰτεῖν πέμψαντας παρὰ τῶν ἑλικέων, μάλιστα μὲν τὸ βρέτας τοῦ πο-
σειδῶνος. εἰ δὲ μὴ, τοῦ γε ἱεροῦ τὴν ἀφίδρυσιν, οὐ δόντων δὲ πέμψαι πρὸς τὸ κοινὸν τῶν ἀχαιῶν.
τῶν δὲ, ψηφισαμένων, οὐδ' ὡς ὑπακοῦσαι. τῷ δ' ἑξῆς χειμῶνι συμβῆναι τὸ πάθος. τοὺς δ' ἀ-
χαιοὺς ὕστερον δοῦναι τοῖς ἴωσι τὴν ἀφίδρυσιν. ἡσίοδος δὲ καὶ ἄλλης ἑλίκης μέμνηται θετταλικῆς.
εἴκοσι μὲν δὴ ἔτη διετέλεσαν γραμματέα κοινὸν ἔχοντες, καὶ στρατηγοὺς δύο κατ' ἐνιαυτὸν οἱ ἀχαιοί.
καὶ κοινοβούλιον εἰς ἕνα τόπον συνήγετο αὐτοῖς ἐκαλεῖτο δὲ ἀρνάριον. ἐν ᾧ τὰ κοινὰ ἐχρημάτιζον
καὶ οὗτοι καὶ οἱ ἴωνες πρότερον. εἶτα ἔδοξεν ἕνα χειροτονεῖσθαι στρατηγόν. ἄρατος δὲ στρατηγήσας, ἀ-

φέλετο ἀντίγονον τὸν ἀκροκόρινθον, καὶ τὴν πόλιν τοῖς ἀχαιοῖς προσέθηκε, καθάπερ καὶ τὴν πατρίδα. προσελάβετο δὲ καὶ μεγαρέας, καὶ τὰς παρ' ἑκάστοις τυραννίδας καταλύων, ἀχαιοὺς ἐποίει τοὺς ἐλευθερωθέντας. καὶ μετ' ὀλίγα τὴν δὲ πελοπόννησον, ἐλευθεροῖ τῶν τυραννίδων. ὥστε καὶ ἄργος, καὶ ἑρμιὼν, καὶ φλιοῦς, καὶ μεγαλόπολις ἡ μεγίστη τῶν ἐν ἀρκαδίᾳ προσετέθη τοῖς ἀχαιοῖς, ὅτε δὴ καὶ πλεῖστον ηὔξητο. ἦν δὲ ὁ καιρὸς, ἡνίκα ῥωμαῖοι καρχηδονίους ἐκ τῆς σικελίας ἐκβαλόντες, ἐστράτευσαν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν πάδον γαλάτας. μέχρι δὲ τῆς φιλοποίμενος στρατηγίας συμμείναντες ἱκανῶς οἱ ἀχαιοὶ, διελύθησαν κατ' ὀλίγον, ἤδη ῥωμαίων ἐχόντων τὴν ἑλλάδα σύμπασαν. καὶ οὐ τὸν αὐτὸν τρόπον ἑκάστοις χρωμένων, ἀλλὰ τοὺς μὲν, συνέχειν. τοὺς δὲ, καταλύειν βουλομένων. εἶτα λέγει αἰτίαν τοῦ ἐμπλατύνεσθαι τοῖς περὶ ἀχαιῶν λόγοις τὸ, ὅτι τοσοῦτον αὐξηθέντας, ὡς καὶ λακεδαιμονίους ὑπερβαλλέσθαι μὴ ἀξίως γνωρίζεσθαι. ἡ δὲ τάξις τῶν τόπων οὓς κατῴκουν, εἰς δώδεκα μερὴ διῃρημένη, τοιαύτη τίς ἐστι. μετὰ σικυῶνα πελλήνη κεῖται. εἶτα αἴγειρα δευτέρα. τρίτη αἰγαὶ ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα. τετάρτη, βοῦρα. μετ' αὐτὴν ἑλίκη. εἰς ἣν κατέφυγον ἴωνες μάχῃ κρατηθέντες ὑπ' ἀχαιῶν. καὶ τὸ τελευταῖον ἐξέπεσον ἐνθένδε. μετὰ δὲ ἑλίκην αἴγιον, καὶ ῥύπες. καὶ πατρεῖς καὶ φαρεῖς. εἶτ' ὤλενος. παρ' ὃν ποταμὸς μέγας μέλας. εἶτα δύμη καὶ τριταιεῖς. οἱ μὲν οὖν ἴωνες κωμηδὸν ᾤκουν. οἱ δ' ἀχαιοὶ πόλεις ἔκτισαν, ὧν εἰς τινὰς ὕστερον συνῴκισαν, καὶ ἐκ τῶν ἄλλων μερίδων ἐνίας, καθάπερ τὰς αἰγὰς εἰς αἴγειραν. αἰγαῖοι δ' ἐλέγοντο οἱ ἐνοικοῦντες. ὤλενον δὲ, εἰς δύμην. δείκνυται δ' ἴχνος μεταξὺ πατρῶν, καὶ δύμης τοῦ παλαιοῦ τῶν ὠλενίων κτίσματος. αὐτοῦ δὲ, καὶ τοῦ ἀσκληπιοῦ ἱερὸν ἐπίσημον. δύμης μὲν ἀπέχον τετταράκοντα σταδίους. πατρῶν δὲ ὀγδοήκοντα. ὁμώνυμοι δ' εἰσὶ ταῖς μὲν αἰγαῖς ταύταις, αἱ ἐν εὐβοίᾳ. τῷ δὲ ὠλένῳ, τὸ ἐν αἰτωλίᾳ κτίσμα. καὶ αὐτὸ ἴχνη σῶζον μόνον. ὁ δὲ ποιητὴς τοῦ μὲν ἐν ἀχαΐᾳ ὠλένου οὐ μέμνηται. ὥσπερ οὐδ' ἄλλων πλειόνων τῶν περὶ τὸν αἰγιαλὸν οἰκούντων. ἀλλὰ κοινότερον λέγων.

» Αἰγιαλόν τ' ἀνὰ πάντα, καὶ ἀμφ' ἑλίκην εὐρεῖαν. τοῦ δ' αἰτωλικοῦ μέμνηται ὅταν φῇ.
» Πλευρῶν' ἐνέμοντο, καὶ ὤλενον τὰς δ' αἰγὰς δ' ἀμφοτέρας λέγει. τὴν μὲν ἀχαϊκήν.
» Οἱ δέ τοι εἰς ἑλίκην τε, καὶ αἰγὰς δῶρ' ἀνάγουσι. ὅταν δὲ φῇ
» Αἰγάς, ἔνθα δέ οἱ κλυτὰ βένθεσι δώματα λίμνης. ἔνθ' ἵππους ἔστησε ποσειδάων.

βέλτιον δέχεσθαι τοὺς ἐν εὐβοίᾳ. ἀφ' ὧν εἰκὸς, καὶ τὸ πέλαγος αἰγαῖον κληθῆναι. ἐκεῖ δὲ καὶ τῷ ποσειδῶνι ἡ πραγματεία πεποίηται, ἡ περὶ τὸν τρωϊκὸν πόλεμον. πρὸς δὲ ταῖς ἀχαϊκαῖς αἰγαῖς ὁ κρᾶθις ῥεῖ ποταμός. ἐκ δυεῖν ποταμῶν αὐξόμενος. ἀπὸ τοῦ κίρνασθαι τὴν ὀνομασίαν ἔχων, ἀφ' οὗ, καὶ ὁ ἐν ἰταλίᾳ κρᾶθις, ἑκάστη δὲ τῶν δώδεκα μερίδων ἐκ δήμων συνειστήκει ἑπτὰ, καὶ ὀκτώ. τοσοῦτον εὐανδρεῖν τὴν χώραν συνέβαινεν. ἔστι δ' ἡ πελλήνη σταδίους ἑξήκοντα τῆς θαλάττης ὑπερκειμένη. φρούριον ἐρυμνὸν, ἔστι δὲ καὶ κώμη πελλήνη. ὅθεν καὶ αἱ πελληνικαὶ χλαῖναι. ἃς καὶ ἆθλα ἐτίθεσαν ἐν τοῖς ἀγῶσι. κεῖται δὲ μεταξὺ αἰγαίων, καὶ πελλήνης, τὰ δὲ πέλανα ἕτερον τούτων ἐστὶ λακωνικὸν χωρίον. ὡς πρὸς τὴν μεγαλοπολῖτιν νεῦον. αἴγειρα δὲ ἐπὶ βουνοῦ κεῖται. βοῦρα δ' ὑπέρκειται τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντα που σταδίοις, ἣν ὑπὸ σεισμῶν καταποθῆναι συνέβη. ἀπὸ δὲ τῆς ἐνταῦθα κρήνης συβάριδος τὸν κατὰ τὴν ἰταλίαν ποταμὸν ὀνομασθῆναι φασίν, ἡ δ' αἰγὰ, καὶ γὰρ οὕτω λέγουσι τὰς αἰγάς, νῦν μὲν οὐκ οἰκεῖται. τὴν δὲ πόλιν ἔχουσιν αἰγιεῖς, αἴγιον δὲ ἱκανῶς οἰκεῖται. ἱστοροῦσι δ' ἐνταῦθα καὶ τὸν δία ὑπ' αἰγὸς τραφῆναι καθάπερ φησὶ καὶ ἄρατος.

» Αἲξ ἱερή. τὴν μέν τε λόγος διῒ μαζὸν ἐπισχεῖν. ἐπιλέγει δὲ καὶ ὅτι,
» Ὠλενίην δέ μιν αἶγα διὸς καλέουσ' ὑποφῆται.

δηλῶν τὸν τόπον, διότι πλησίον ὠλενίη. αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ κεραυνία, ἐπὶ πέτρας ὑψηλῆς ἱδρυμένη. αἰγιέων δ' ἐστὶ καὶ ταῦτα. καὶ ἑλίκη, καὶ τὸ τοῦ διὸς ἄλσος τὸ ἀμάριον. ὅπου συνήεσαν οἱ ἀχαιοὶ βουλευσόμενοι περὶ τῶν κοινῶν. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς αἰγιέων πόλεως ποταμὸς σελινοῦς. ὁμώνυμος τῷ τε ἐν ἐφέσῳ παρὰ τὸ ἀρτεμίσιον ῥέοντι, καὶ τῷ ἐν τῇ νῦν ἠλείᾳ τῷ παραρρέοντι τὸ χωρίον ὅ φησιν ὠνήσασθαι τῇ ἀρτέμιδι ξενοφῶν, κατὰ χρησμόν. ἄλλος δὲ σελινοῦς ὁ παρὰ ὑβλαίοις μεγαρεῦσιν, οὓς ἀνέστησαν καρχηδόνιοι. τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν ἀχαϊκῶν εἴτε μερίδων, ῥύπες μὲν οὐκ οἰκοῦνται. τὴν δὲ χώραν ῥυπίδα καλουμένην ἔσχον αἰγιεῖς καὶ φαριεῖς. καὶ αἰσχύλος δὲ λέγει που.

» Βοῦράν θ' ἱερὰν καὶ κεραυνίας ῥύπας. ἐκ δὲ τῶν ῥυπῶν ἦν μύσκελος ὁ κρότωνος οἰκιστής.

τῆς δὲ ῥυπίδος καὶ τὸ λεῦκτρον ἦν δῆμος τῶν ῥυπῶν. μετὰ δὲ τούτους πάτραι πόλις ἀξιόλογος. μεταξὺ δὲ τὸ ῥίον, καὶ τὸ αἴγιον. ἀπέχον πατρῶν στάδια τετταράκοντα. ῥωμαῖοι δὲ νυνὶ μετὰ τὴν ἀκτιακὴν νίκην ἵδρυσαν αὐτόθι τῆς στρατείας μέρος ἀξιόλογον. καὶ διαφερόντως εὐανδρεῖ νῦν ἀποικία ῥωμαίων οὖσα. ἔχει δὲ ὕφορμον μέτριον. ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ δύμη πόλις ἀλίμενος πασῶν δυσμικωτάτη. ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα. πρότερον δ' ἐκαλεῖτο στρατός. διαιρεῖ δὲ αὐτὴν ἀπὸ τῆς ἠλείας κατὰ βουπράσιον ὁ λάρισος ποταμός. ῥέων ἐξ ὄρους. τοῦτο δ' οἱ μὲν, σκόλιν καλοῦσιν. ὅμηρος δὲ πέτραν ὠλενίην. τοῦ δ' ἀντιμάχου καυκωνίδα τὴν δύμην εἰπόντος, οἱ μὲν, ἐδέξαντο ἀπὸ τῶν καυκώνων ἐπιθέτως εἰρῆσθαι αὐτό. μέ

χρι δεῦρο καθηκόντων, καθάπερ ἐπάνω προείπομεν. οἱ δ' ἀπὸ καύκωνος ποταμοῦ τινος, ὡς αἱ θῆβαι
δίρκαιαι, καὶ ἀσωπίδες. ἄργος δ' ἰνάχειον. τροία δὲ σιμουντίς. δέδεκται δ' οἰκιστὰς καὶ ἡ δύμη μικρὸν
πρὸ ἡμῶν, ἀνθρώπους μιγάδας. οὓς ἀπὸ τοῦ πειρατικοῦ πλήθους περιλιπεῖς ἔσχε πομπήιος καταλύ-
σας τὰ λῃστήρια. καὶ ἱδρύσας τοὺς μὲν, ἐν σόλοις τοῖς κιλικίοις. τοὺς δ' ἄλλοθι, καὶ δὴ καὶ ἐνταῦθα, ἡ δὲ
φαρὰ συνορεῖ μὲν τῇ δυμαίᾳ. καλοῦνται δὲ οἱ μὲν ἐκ ταύτης τῆς φαρᾶς, φαριεῖς. οἱ δ' ἐκ τῆς μεσση-
νιακῆς φαράται. ἔστι δ' ἐν τῇ φαραϊκῇ, δίρκη κρήνη. ὁμώνυμος τῇ ἐν θήβαις. ἡ δ' ὤλενος, ἔστι μὲν ἔρη-
μος. κεῖται δὲ μεταξὺ πατρῶν καὶ δύμης. ἔχουσι δὲ δυμαῖοι τὴν χώραν. εἶτ' ἄραξος τὸ ἀκρωτήριον τῆς
ἠλείας. ἀπὸ ἰσθμοῦ στάδιοι χίλιοι. ἀρκαδία δ' ἐστὶν ἐν μέσῳ μὲν τῆς πελοποννήσου. πλείστην δὲ χώραν ὀρει-
νὴν ἀποτέμνεται. μέγιστον δ' ὄρος ἐν αὐτῇ κυλλήνη. τὴν γοῦν κάθετον οἱ μὲν, εἴκοσι στάδια φασίν. οἱ δ'
ὅσον πεντεκαίδεκα. δοκεῖ δὲ παλαιότατα ἔθνη εἶναι τὰ ἀρκαδικὰ τῶν ἑλλήνων. ἀζᾶνές τε καὶ πα-
ῤῥάσιοι καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι. διὰ δὲ τὴν τῆς χώρας παντελῆ κάκωσιν, οὐκ ἂν, προσήκοι μακρολογεῖν ὑπὲρ
αὐτῶν. αἵ τε γὰρ πόλεις ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἠφανίσθησαν, ἔνδοξοι γενόμεναι πρότερον. τήν
τε χώραν οἱ γεωργήσαντες ἐκλελοίπασιν ἐξ ἐκείνων ἔτι τῶν χρόνων ἐξ ὧν εἰς τὴν προσαγορευθεῖσαν
μεγαλόπολιν, αἱ πλεῖσται συνῳκίσθησαν. νυνὶ δὲ καὶ αὐτὴ ἡ μεγαλόπολις τὸ τοῦ κωμικοῦ πέπονθε.
καὶ ἐρημία μεγάλη 'στὶν ἡ μεγαλόπολις. βοσκήμασι δ' εἰσὶ νομαὶ δαψιλεῖς. καὶ μάλιστα ὄνοις καὶ ἵπ-
ποις τοῖς ἱπποβάταις. ἔστι δὲ καὶ τὸ γένος τῶν ἵππων ἄριστον τὸ ἀρκαδικόν. καθάπερ καὶ τὸ ἀργολικὸν
καὶ τὸ ἐπιδαύριον. καὶ ἡ τῶν αἰτωλῶν δὲ καὶ ἀκαρνάνων ἐρημία πρὸς ἱπποτροφίαν εὐφυὴς γέγονεν,
οὐχ ἧττον τῆς θετταλίας. μαντίνειαν μὲν οὖν ἐποίησεν ἔνδοξον ἐπαμινώνδας, τῇ δευτέρᾳ νικήσας μά-
χῃ λακεδαιμονίους. ἐν ᾗ καὶ αὐτὸς ἐτελεύτα. καὶ αὐτὴ δὲ καὶ ὀρχομενὸς καὶ ἡραία καὶ κλείτωρ καὶ
φενεὸς, καὶ στύμφαλος, καὶ μαίναλος, καὶ μεθύδριον, καὶ καφυεῖς, καὶ κύναιθα, ἢ οὐκέτ' εἰσὶν, ἢ μόλις
αὐτῶν ἴχνη φαίνεται καὶ σημεῖα. τεγέα δ' ἔτι μετρίως συμμένει, καὶ τὸ ἱερὸν τῆς ἀλέας ἀθηνᾶς.
τιμᾶται δ' ἐπὶ μικρὸν, καὶ τὸ τοῦ λυκαίου διὸς ἱερὸν κατὰ τὸ λύκαιον ὄρος. τῶν δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ
» ῥίπην τε στρατίην τε καὶ ἠνεμόεσσαν ἐνίσπην (λεγομένων.
εὑρεῖν τε χαλεπόν. Καὶ εὑροῦσιν, οὐδὲν ὄφελος διὰ τὴν ἐρημίαν. ὄρη δ' ἐπιφανῆ πρὸς τῇ κυλλή-
νῃ φολόη, καὶ λύκαιον καὶ μαίναλον, καὶ τὸ παρθένιον καλούμενον. καθῆκον ἐπὶ τὴν ἀργείαν ἀπὸ
τῆς τεγεάτιδος. περὶ δὲ ἀλφειοῦ καὶ εὐρώτα τὸ συμβεβηκὸς παράδοξον εἴρηται. καὶ τὸ περὶ ἐρασῖνον τὸ
ἐκδιδόντα ἐκ τῆς στυμφαλίδος λίμνης εἰς τὴν ἀργείαν νυνὶ, πρότερον δ' οὐκ ἔχοντα ἔκρυσιν τῶν βε-
ρέθρων ἃ καλοῦσιν οἱ ἀρκάδες ζέρεθρα, τυφλῶν ὄντων καὶ μὴ δεχομένων ἀπέκρυσιν. ὥστε τὴν τῶν στυμ-
φαλίων πόλιν, νῦν μὲν καὶ πεντήκοντα διέχειν σταδίους ἀπὸ τῆς λίμνης. τότε δ' ἐπ' αὐτῆς κεῖσθαι.
τἀναντία δ' ὁ λάδων ἔπαθε. τοῦ ῥεύματος ἐπισχεθέντος ποτὲ διὰ τὴν ἔμφραξιν τῶν πηγῶν. συμπεσόν-
τα γὰρ τὰ περὶ φενεὸν βέρεθρα ὑπὸ σεισμοῦ δι' ὧν νῦν ἡ φορὰ, μονὴν ἐποίησε τοῦ ῥεύματος, μέχρι
τῶν κατὰ βάθους φλεβῶν τῆς πηγῆς. καὶ οἱ μὲν, οὕτω λέγουσιν. ἐρατοσθένης δὲ φησί. περὶ φενεὸν μὲν
τὸν ἀνίαν καλούμενον ποταμὸν, λιμνάζειν τὰ πρὸ τῆς πόλεως. καταδύεσθαι δ' εἰς τινας ἰσθμούς. οὓς
καλεῖσθαι ζέρεθρα. τούτων δ' ἐμφραχθέντων, ἔσθ' ὅτε ὑπερχεῖσθαι τὸ ὕδωρ εἰς τὰ πεδία. πάλιν δ' ἀνα-
στομουμένων, ἄθρουν ἐκ τῶν πεδίων ἐκπεσὸν, εἰς τὸν λάδωνα καὶ εἰς τὸν ἀλφειὸν ἐμβάλλειν, ὥστε καὶ τῆς ὀ-
λυμπίας ποτὲ κλυσθῆναι τὴν περὶ τὸ ἱερὸν γῆν, τὴν δὲ λίμνην συσταλῆναι. τὸν ἐρασῖνον δὲ περὶ στύμ-
φαλον ῥέοντα ὑποδύντα ὑπὸ τὸ ὄρος ἐν τῇ ἀργείᾳ, πάλιν ἀναφανῆναι. διὸ δὴ καὶ ἰφικράτη πο-
λιορκοῦντα τὸν στύμφαλον, καὶ μηδὲν περαίνοντα, ἐπιχειρῆσαι τὴν κατάδυσιν ἀποφράξαι, σπόγγους
πορισάμενον πολλοὺς, παύσασθαι δὲ διοσημίας γενομένης. περὶ φενεὸν δ' ἐστὶ καὶ τὸ καλούμενον στυ-
γὸς ὕδωρ. λιβάδιον ὀλεθρίου ὕδατος νομιζόμενον ἱερόν. τοσαῦτα καὶ περὶ ἀρκαδίας εἰρή-
σθω. πολυβίου δ' εἰρηκότος τὸ ἀπὸ μαλεῶν ἐπὶ τὰς ἄρκτους μέχρι τοῦ ἴστρου διάστημα
περὶ μυρίους σταδίους, εὐθύνει τοῦτο ὁ ἀρτεμίδωρος οὐκ ἀτόπως. κατ' ἐκεῖνον
γὰρ συμβαίνει, ἑξακισχιλίων πεντακοσίων. αἴτιον δὲ τούτου, τὸ μὴ τὴν σύν-
τομον καταμετρεῖν. ἀλλὰ τὴν τυχοῦσαν, ἣν ἐπορεύθη τῶν στρατη-
γῶν τις. οὐκ ἄτοπον δ' ἴσως καὶ τοὺς οἰκιστὰς προσθεῖναι, τῶν
τὴν πελοπόννησον οἰκούντων, οὓς εἶπεν ἔφορος τοὺς με-
τὰ τὴν ἡρακλειδῶν κάθοδον. κορίνθου μὲν ἀ-
λήτην. σικυῶνος δὲ φάλκην. ἀχαΐας δὲ
τισαμενόν. ἤλιδος δ' ὄξυλον. μεσση-
νης δὲ κρεσφόντην. λακεδαί-
μονος δ' εὐρυσθένη, καὶ
προκλῆ. ἄργους
δὲ τήμενον. καὶ περὶ τὴν
ἀκτὴν αἰγαῖον, καὶ δηϊφόντην.

## ὙΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ ἘΝΝΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

Ἐν τῷ ἐννάτῳ περὶ τῆς ἑλλάδος, ἀθηνῶν μάλιστα πανηγυρικὴν ἔκφρασιν. καὶ βοιωτίαν καὶ θετταλίαν μετὰ τῆς παραλίας αὐτῆς.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙ/ΒΛΙΟΝ ἘΝΝΑΤΟΝ.

Περιωδευκόσι δὲ τὴν πελοπόννησον, ἣν πρώτην ἔφαμεν καὶ ἐλα-
χίστην τῶν συντιθεισῶν τὴν ἑλλάδα χερρονήσων, ἑξῆς ἂν εἴη, τὰς
συνεχεῖς ἐπελθεῖν. ἦν δὲ δευτέρα μὲν, ἡ προστιθεῖσα τῇ πελοπον/
νήσῳ τὴν μεγαρίδα. τρίτη δὲ ἡ πρὸς ταύτῃ προσλαμβάνουσα τὴν
ἀττικὴν, καὶ τὴν βοιωτίαν, καὶ τῆς φωκίδος τι μέρος. καὶ τῶν ἐ/
πικνημιδίων λοκρῶν. ὥστε τὸν κρομμυῶνα τῶν μεγαρέων εἶναι,
καὶ μὴ κορινθίων. περὶ τούτων οὖν λεκτέον νῦν. φησὶ δ' εὔδοξος
εἴ τις νοήσειεν ἀπὸ τῶν κεραυνίων ὀρῶν, ἐπὶ σούνιον τὸ τῆς ἀττικῆς
ἄκρον, ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη, τεταμένην εὐθεῖαν ἐν δεξιᾷ μὲν ἀπο/
λείψειν τὴν πελοπόννησον ὅλην πρὸς νότον, ἐν ἀριστερᾷ δὲ καὶ
πρὸς τὴν ἄρκτον τὴν ἀπὸ τῶν κεραυνίων ὀρῶν συνεχῆ παραλίαν
μέχρι τοῦ κρισσαίου κόλπου, καὶ τῆς μεγαρίδος συμπάσης τε τῆς ἀττικῆς, νομίζειν δ' οὐ δ' ἂν--
τὴν ἠϊόνα τὴν ἀπὸ σουνίου μέχρι-- ἔχειν ἐπιστροφὴν, εἰ μὴ
προσῆν-- τὰ συνεχῆ τῷ ἰσθμῷ χωρία τὸ ἑρμιονικὸν, καὶ τὴν ἀκτὴν ὡς δ'
αὕτως-- ἰὼν ἐπὶ τὸν κορινθιακὸν κόλπον ἔχειν τινὰ τοσαύτην--
ἔφθην. ὥστε κοιλαίνεσθαι κολποειδῶς καθ' αὑτὸν, ὅπου τὸ ῥίον καὶ τὸ ἀν/
τίρριον συναγόμενα εἰς στενόν. ὥστε ποιεῖν τὴν ἔμφασιν ταύτην. ὁμοίως δὲ καὶ τὰ περὶ τὸν--
τὸν μυχὸν εἰς ὃν καταλήγειν συμβαίνει τὴν θάλατταν. οὕτω δ' εἰρηκότος εὐ/
δόξου μαθηματικοῦ ἀνδρὸς, καὶ σχημάτων ἐμπείρου καὶ κλιμάτων, καὶ τοὺς τόπους τούτους εἰδότος,
δεῖ νοεῖν τὴν πλευρὰν τῆς ἀττικῆς σὺν τῇ μεγαρίδι τὴν ἀπὸ σουνίου μέχρι ἰσθμοῦ κοίλην μέν. ἀλλ' ἐ/
πὶ μικρόν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ κατὰ μέσην που τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν ὁ πειραιεὺς τὸ τῶν ἀθηναίων ἐ/
πίνειον. διέχει γὰρ τοῦ μὲν σχοινοῦντος τοῦ κατὰ τὸν ἰσθμὸν, περὶ τριακοσίους καὶ πεντήκοντα στα/
δίους. τοῦ δὲ σουνίου τριάκοντα καὶ τριακοσίους. τόσον πως ἐστὶ διάστημα καὶ τὸ ἐπὶ πηγὰς, ἀπὸ τοῦ
πειραιῶς, ὅσον περ καὶ ἐπὶ σχοινοῦντα. δέκα δ' ὅμως σταδίοις πλεονάζειν φασί. κάμψαντι δὲ τὸ σού/
νιον, πρὸς ἄρκτον μὲν ὁ πλοῦς ἐκκλίνων πρὸς δύσιν. ἀκτὴ δ' ἐστὶν ἀμφιθάλαττος. στενὴ τὸ πρῶτον,
εἶτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν πλατύνεται, μηνοειδῆ δ' οὐδὲν ἧττον, ἐπιστροφὴν λαμβάνει πρὸς, ὠρωπὸν τῆς
βοιωτίας. τὸ κυρτὸν ἔχουσα πρὸς θαλάττῃ. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ δεύτερον πλευρὸν ἑῷον τῆς ἀττικῆς. τὸ δὲ
λοιπὸν ἤδη τὸ προσάρκτιον ἐστὶ πλευρὸν, ἀπὸ τῆς ὠρωπίας ἐπὶ δύσιν παρατεῖνον μέχρι τῆς μεγα/
ρίδος, ἡ ἀττικὴ ὀρεινὴ, πολυώνυμός τις. διείργουσα τὴν βοιωτίαν ἀπὸ τῆς ἀττικῆς. ὥσθ' ὅπερ εἶπον
ἐν τοῖς ἔμπροσθεν, ἰσθμὸν γίνεσθαι τὴν βοιωτίαν. ἀμφιθάλαττον οὖσαν τῆς τρίτης χερρονήσου τῆς λε/
χθείσης. ἀπολαμβάνοντα ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ πελοποννήσῳ, τήν τε μεγαρίδα καὶ τὴν ἀττικήν. διὰ δὴ
τοῦτο καὶ ἀκτὴν φασὶ λεχθῆναι τὸ παλαιὸν καὶ ἀκτικὴν τὴν νῦν ἀττικὴν παρωνομασθεῖσαν. ὅτι τοῖς
ὄρεσιν ὑποπέπτωκε τὸ πλεῖστον μέρος αὐτῆς ἁλιτενὲς καὶ στενόν. μήκει δ' ἀξιολόγῳ κεχρημένον, προ
πεπτωκὸς μέχρι τοῦ σουνίου. ταύτας οὖν διέξιμεν ἀναλαβόντες τὰς παραλίας ἐφ' ἧς παρεπέμπο/
μεν. μετὰ δὴ κρομμυῶνα ὑπέρκειται τῆς ἀττικῆς, αἱ σκειρωνίδες πέτραι, πάροδον οὐκ ἀπολείπουσαι
πρὸς θαλάττῃ. ὑπὲρ αὐτῶν δ' ἐστὶν ἡ ὁδὸς, ἡ ἐπὶ μεγάρων καὶ τῆς ἀττικῆς ἀπὸ τοῦ ἰσθμοῦ. οὕτω δὲ σφό/
δρα πλησιάζει ταῖς πέτραις ἡ ὁδὸς, ὥστε πολλαχοῦ, καὶ παράκρημνός ἐστι διὰ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος
δύσβατόν τε καὶ ὑψηλόν. ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται τὰ περὶ τοῦ σκείρωνος καὶ τοῦ πιτυοκάμπτου τῶν
ληϊζομένων τὴν λεχθεῖσαν ὀρεινήν. οὓς καθεῖλε θησεύς. ἀπὸ δὲ τῶν ἄκρων τούτων καταιγίζοντα

σκαιὸν τὸν ἀργέστην, σκείρωνα προσηγορεύκασιν Ἀθηναῖοι. μετὰ δὲ τὰς σκειρωνίδας πέτρας, ἄκρα πρόκειται Μινώα, ποιοῦσα τὸν ἐν τῇ Νισαίᾳ λιμένα. ἡ δὲ Νίσαια, ἐστὶν ἐπίνειον τῶν Μεγαρέων. δέκα καὶ ὀκτὼ σταδίους τῆς πόλεως διέχον. σκέλεσιν ἑκατέρωθεν συναπτόμενον πρὸς αὐτήν. ἐκαλεῖτο δὲ καὶ τοῦτο Μινώα. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν Ἴωνες εἶχον τὴν χώραν ταύτην, οἵπερ καὶ τὴν Ἀττικήν, οὔπω τῶν Μεγάρων ἐκτισμένων. διόπερ οὐδ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τῶν τόπων τούτων ἰδίως. ἀλλ' Ἀθηναίους καλῶν τοὺς ἐν τῇ Ἀττικῇ πάντας, συμπεριείληφε καὶ τούτους τῷ κοινῷ ὀνόματι Ἀθηναίους νομίζων, ὡς ὅταν φῇ ἐν τῷ καταλόγῳ.

» Οἳ δ' ἄρ' Ἀθήνας εἶχον ἐϋκτίμενον πτολίεθρον,

Δέχεσθαι δεῖ καὶ τοὺς νῦν Μεγαρέας ὡς καὶ αὐτοὺς μετασχόντας τῆς στρατείας. σημεῖον δέ. ἡ γὰρ Ἀττικὴ τὸ παλαιόν, Ἰωνία καὶ Ἰὰς ἐκαλεῖτο. καὶ ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ.

» Ἔνθάδε Βοιωτοὶ καὶ Ἴωνες,

Τοὺς Ἀθηναίους λέγει. ταύτης δ' ἦν καὶ ἡ Μεγαρὶς μερίς, καὶ δὴ καὶ περὶ τῶν ὁρίων ἀμφισβητοῦντες πολλάκις οἵ τε Πελοποννήσιοι καὶ οἱ Ἴωνες, ἐν οἷς ἦν καὶ ἡ Κρομμυωνία, συνέβησαν, καὶ στήλην ἔστησαν ἐπὶ τοῦ συνομολογηθέντος τόπου, περὶ αὐτὸν τὸν Ἰσθμόν. ἐπιγραφὴν ἔχουσαν ἐπὶ μὲν τοῦ πρὸς τὴν Πελοπόννησον μέρους, τάδ' ἐστὶ Πελοπόννησος. οὐκ Ἰωνία. ἐπὶ δὲ τοῦ πρὸς τὰ Μέγαρα, τάδ' οὐχὶ Πελοπόννησος. ἀλλ' Ἰωνία. οἵ τε δὴ τὴν Ἀτθίδα συγγράψαντες, πολλὰ διαφωνοῦντες, τοῦτό γε ὁμολογοῦσιν οἵ γε λόγου ἄξιοι. ὅτι τῶν Πανδιονιδῶν τεσσάρων ὄντων, Αἰγέως τε καὶ Λύκου καὶ Πάλλαντος, καὶ τετάρτου Νίσου, καὶ τῆς Ἀττικῆς εἰς τέτταρα μέρη διαιρεθείσης, ὁ Νῖσος τὴν Μεγαρίδα λάχοι. καὶ κτίσαι τὴν Νίσαιαν. Φιλόχορος μὲν οὖν ἀπὸ Ἰσθμοῦ μέχρι Πυθίου διήκειν αὐτοῦ φησὶ τὴν ἀρχήν, Ἄνδρων δὲ μέχρι Ἐλευσῖνος καὶ τοῦ Θριασίου πεδίου, τὴν εἰς τέτταρα μέρη διανομήν, ἄλλων ἄλλως εἰρηκότων. ἀρκεῖ ταῦτα παρὰ Σοφοκλέους λαβεῖν. φησὶ δ' ὁ Αἰγεύς.

» Ὅτι ὁ πατὴρ ὥρισεν ἐμοὶ μὲν ἀπελθεῖν εἰς ἀκτὰς
» Τῆς δὲ γῆς, πρεσβεῖα νείμας.
» Τῷ δὲ Λύκῳ τὸν ἀντίπλευρον κῆπον Εὐβοίας νέμων.
» Νίσῳ δὲ τὴν ὅμαλον ἐξαιρεῖ χθόνα Σκείρωνος ἀκτῆς.
» Τῆς δὲ γῆς τὸ πρὸς νότον,
Ὁ σκληρὸς οὗτος καὶ γίγαντας ἐκτρέφων
» Εἴληχε Πάλλας.—

Ὅτι μὲν οὖν ἡ Μεγαρὶς τῆς Ἀττικῆς μέρος ἦν, τούτοις χρῶνται τεκμηρίοις. μετὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον, καὶ τὸν τῆς χώρας μερισμόν, ὑπ' αὐτῶν καὶ τῶν συγκατελθόντων αὐτοῖς Δωριέων, ἐκπεσεῖν τῆς οἰκείας συνέβη πολλοὺς εἰς τὴν Ἀττικήν. ὧν ἦν καὶ ὁ τῆς Μεσσήνης βασιλεὺς Μέλανθος. οὗτος δὲ καὶ τῶν Ἀθηναίων ἐβασίλευσεν ἑκόντων, νικήσας ἐκ μονομαχίας τὸν Βοιωτῶν βασιλέα Ξάνθον. συνοικούσης δὲ τῆς Ἀττικῆς διὰ τοὺς φυγάδας, φοβηθέντες οἱ Ἡρακλεῖδαι, παροξυνάντων αὐτοὺς μάλιστα τῶν ἐν Κορίνθῳ καὶ τῶν ἐν Μεσσήνῃ, τῶν μέν, διὰ τὴν γειτνίασιν, τῶν δέ, ὅτι Κόδρος ἐβασίλευε τῆς Ἀττικῆς τότε ὁ τοῦ Μελάνθου παῖς, ἐστράτευσαν ἐπὶ τὴν Ἀττικήν. ἡττηθέντες δὲ μάχῃ, τῆς μὲν ἄλλης ἐξέστησαν γῆς, τὴν Μεγαρικὴν δὲ κατέσχον. καὶ τήν τε πόλιν ἔκτισαν τὰ Μέγαρα, καὶ τοὺς ἀνθρώπους Δωριέας ἀντὶ Ἰώνων ἐποίησαν. ἠφάνισαν δὲ καὶ τὴν στήλην τὴν ὁρίζουσαν τούς τε Ἴωνας, καὶ τοὺς Πελοποννησίους, πολλαῖς δὲ κέχρηται μεταβολαῖς ἡ τῶν Μεγαρέων πόλις. συμμένει δ' ὅμως μέχρι νῦν. ἔσχε δέ ποτε καὶ φιλοσόφων διατριβὰς τῶν προσαγορευθέντων Μεγαρικῶν. Εὐκλείδην διαδεξαμένων Σωκρατικὸν ἄνδρα Μεγαρέα τὸ γένος. καθάπερ καὶ Φαίδωνα μὲν τὸν Ἠλεῖον, οἱ Ἠλιακοὶ διεδέξαντο, καὶ τοῦτον Σωκρατικόν. ὧν ἦν καὶ Πύρρων. Μενέδημον δὲ τὸν Ἐρετριέα οἱ Ἐρετριακοί. ἔστι δ' ἡ χώρα τῶν Μεγαρέων παράλυπρος, καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, καὶ τὸ πλέον αὐτῆς, ἐπέχει τὰ καλούμενα Ὄνεια ὄρη. ῥάχις τις. μηκυνομένη μὲν ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν ἐπὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Κιθαιρῶνα. διείργουσα δὲ τὴν κατὰ Νίσαιαν θάλασσαν ἀπὸ τῆς κατὰ Κρίσαν Ἀλκυονίδος προσαγορευομένης. πρόκειται δ' ἀπὸ Νισαίας πλέοντι ἐπὶ τὴν Ἀττικήν, πέντε νησία. εἶτα Σαλαμίς. ἑβδομήκοντά που σταδίων οὖσα τὸ μῆκος. οἱ δ' ὀγδοήκοντα φασίν. ἔχει δ' ὁμώνυμον πόλιν. τὴν μὲν ἀρχαίαν ἔρημον πρὸς Αἴγιναν τετραμμένην. καὶ πρὸς νότον καθάπερ καὶ Αἰσχύλος εἴρηκεν.

» Αἴγινα δ' αὕτη πρὸς νότου κεῖται πνοάς.

Τὴν δὲ νῦν, ἐν κόλπῳ κειμένην ἐπὶ χερρονησοειδοῦς τόπου συνάπτοντος πρὸς τὴν Ἀττικήν. ἐκαλεῖτο δ' ἑτέροις ὀνόμασι τὸ παλαιόν. καὶ γὰρ Σκιρὰς, καὶ Κυχρεία, ἀπό τινων ἡρώων. ἀφ' οὗ μὲν Ἀθηνᾶ τε λέγεται Σκιράς, καὶ τόπος Σκίρα ἐν τῇ Ἀττικῇ, καὶ ἐπὶ Σκίρῳ σις ἱεροποιΐα τις. καὶ ὁ μὴν ὁ Σκιροφοριών. ἀφ' οὗ δὲ καὶ Κυχρειώδης ὄφις. ὅν φησιν Ἡσίοδος τραφέντα ὑπὸ Κυχρέως, ἐξελαθῆναι ὑπὸ Εὐρυλόχου λυμαινόμενον τὴν νῆσον. ὑποδέξασθαι δὲ αὐτὸν τὴν Δήμητραν εἰς Ἐλευσῖνα, καὶ γενέσθαι ταύτης ἀμφίπολον. ὠνομάσθη δὲ καὶ Πιτυοῦσσα ἀπὸ τοῦ φυτοῦ. ἐπιφανὴς δὲ ἡ νῆσος ὑπῆρξε διά τε τοὺς Αἰακίδας ὑπάρξαντας αὐτῆς, καὶ μάλιστα δι' Αἴαντα τὸν Τελαμῶνος. καὶ διὰ τὸ περὶ τὴν νῆσον ταύτην

καταναυμαχηθῆναι ξέρξην ὑπὸ τῶν ἑλλήνων, καὶ φυγεῖν εἰς τὴν οἰκείαν. συναπέλαυσαν δὲ καὶ
αἰγινῆται τῆς περὶ τὸν ἀγῶνα τοῦτον δόξης, γείτονές τε ὄντες καὶ ναυτικὸν ἀξιόλογον παρασχόμενοι. βώ-
καρος δ' ἐστὶν ἐν σαλαμῖνι ποταμός. ὁ νῦν βωκαλίας καλούμενος. καὶ νῦν μὲν ἔχουσιν ἀθηναῖοι τὴν
νῆσον, τὸ δὲ παλαιὸν πρὸς μεγαρέας ὑπῆρξεν αὐτοῖς ἔρις περὶ αὐτῆς. καὶ φασὶν οἱ μὲν, πεισίστρατον.
οἱ δὲ σόλωνα παρεγγράψαντα ἐν τῷ νεῶν καταλόγῳ μετὰ τὸ ἔπος τοῦτο.

» Αἴας δ' ἐκ σαλαμῖνος ἄγει δυοκαίδεκα νῆας, — ἑξῆς τούτῳ.
» Στῆσε δ' ἄγων ἵν' ἀθηναίων ἵσταντο φάλαγγες.

Μάρτυρι χρήσασθαι τῷ ποιητῇ, τοῦ τὴν νῆσον ἐξ ἀρχῆς ἀθηναίων ὑπάρξαι. οὐ παραδέχονται δὲ
τοῦθ' οἱ κριτικοὶ, διὰ τὸ πολλὰ τῶν ἐπῶν ἀντιμαρτυρεῖν αὐτοῖς. διὰ τί γὰρ ναυλοχῶν ἔσχατος φαίνεται
ὁ αἴας, οὐ μετ' ἀθηναίων, ἀλλὰ μετὰ τῶν ὑπὸ πρωτεσιλάου θετταλῶν.

» Ἔνθ' ἔσαν αἴαντός τε νέες καὶ πρωτεσιλάου.

Καὶ ἐν τῇ ἐπιπωλήσει ἀγαμέμνονος.

» Εὗρ' υἱὸν πετεῶο μενεσθῆα πλήξιππον.
» Ἑστᾶτ' ἀμφὶ δ' ἀθηναῖοι μήστωρες ἀϋτῆς.
» Αὐτὰρ ὁ πλησίον ἑστήκει πολύμητις ὀδυσσεὺς,
» Πὰρ δέ οἱ κεφαλλήνων ἀμφὶ στίχες.

Ἐπὶ δὲ τὸν αἴαντα καὶ τοὺς σαλαμινίους πάλιν.

» Ἦλθον δ' ἐπ' αἰάντεσσι — Καὶ παρ' αὐτούς.
» Ἰδομενεὺς δ' ἑτέρωθεν. — Οὐ μενεσθεύς. οἱ μὲν οὖν ἀθηναῖοι τοιαύτην

τινὰ σκήψασθαι μαρτυρίαν παρ' ὁμήρου δοκοῦσιν. οἱ δὲ μεγαρεῖς ἀντιπαρῳδῆσαι αὐτοῖς οὕτως.

» Αἴας δ' ἐκ σαλαμῖνος ἄγεν δυοκαίδεκα νῆας.
» Ἔκ τε πολίχνης.
» Ἔκ τ' αἰγειρούσης νισαίης τε τριπόδων τε.

Ἅ ἐστι χωρία μεγαρικά, ὧν οἱ τρίποδες τριποδίσκιον λέγονται. καθ' ὃ ἡ νῦν ἀγορὰ τῶν μεγαρέων κεῖ-
ται. τινὲς δ' ἀπὸ τοῦ τὴν ἱέρειαν τῆς πολιάδος ἀθηνᾶς, χλωροῦ, τυροῦ, τοῦ μὲν αὐτόθι χωρίου μὴ ἅπτε-
σθαι, ξενικὸν δὲ μόνον προσφέρεσθαι, χρῆσθαι δὲ καὶ τῷ σαλαμινίῳ, ξένην φασὶ τῆς ἀττικῆς τὴν σα-
λαμῖνα, οὐκ εὖ. καὶ γὰρ τὸν ἀπὸ τῶν ἄλλων νήσων τῶν ὁμολογουμένων, τῇ ἀττικῇ προσχώρων, προσφέ-
ρεται ξενικὸν, πάντα τὸν διαπόντιον νοησάντων τῶν ἀρξάντων τοῦ ἔθνους τούτου. ἔοικε δὲ τὸ παλαιὸν
ἡ νῦν σαλαμὶς καθ' αὑτὴν τετάχθαι. τὰ δὲ μέγαρα τῆς ἀττικῆς ὑπάρξαι μέρος. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ
τῇ κατὰ σαλαμῖνα, κεῖσθαι συμβαίνει τὰ ὅρια τῆς μεγαρικῆς καὶ τῆς ἀτθίδος, ὄρη δύο, ἃ καλοῦσι
κέρατα. εἶτ' ἐλευσὶν πόλις. ἐν ᾗ τὸ τῆς δήμητρος ἱερὸν τῆς ἐλευσινίας καὶ ὁ μυστικὸς σηκὸς, ὃν κατε-
σκεύασεν ἰκτῖνος, ὄχλον θεάτρου δέξασθαι δυνάμενον. ὃς καὶ τὸν παρθενῶνα ἐποίησε τὸν ἐν ἀκρο-
πόλει τῇ ἀθηνᾷ. περικλέους ἐπιστατοῦντος τῶν ἔργων. ἐν δὲ τοῖς δήμοις καταριθμεῖται ἡ πόλις. εἶ-
τα τὸ θριάσιον πεδίον καὶ ὁμώνυμος αἰγιαλὸς καὶ δῆμος. εἶθ' ἡ ἄκρα ἡ ἀμφιάλη, καὶ τὸ ὑπερκείμε-
νον λατόμιον. καὶ ὁ εἰς σαλαμῖνα πορθμὸς, ὅσον διστάδιος. ὃν διαχοῦν ἐπειρᾶτο ξέρξης. ἔφθη δὲ ἡ
ναυμαχία γενομένη, καὶ ἡ φυγὴ τῶν περσῶν. ἐνταῦθα δὲ καὶ αἱ φαρμακοῦσσαι δύο νῆσοι. ὧν ἐν τῇ μεί-
ζονι κίρκης τάφος δείκνυται. ὑπὲρ δὲ τῆς ἀκτῆς ταύτης, ὄρος ἐστὶν ὃ καλεῖται κορυδαλός. καὶ ὁ
δῆμος οἱ κορυδαλεῖς. εἶθ' ὁ φώρων λιμὴν, καὶ ἡ ψυτταλία, νησίον ἔρημον πετρῶδες. ὅ τινες εἶπον λιμέ-
να τοῦ πειραιῶς. πλησίον δὲ καὶ ἡ ἀταλάντη, ὁμώνυμος τῇ περὶ εὔβοιαν καὶ λοκρούς. καὶ ἄλλο νη-
σίον ὅμοιον τῇ ψυτταλίᾳ καὶ τοῦτο. εἶθ' ὁ πειραιεὺς καὶ αὐτὸς ἐν τοῖς δήμοις ταττόμενος. καὶ ἡ μου-
νυχία. λόφος δ' ἐστὶν ἡ μουνυχία χερρονησίζων καὶ κοῖλος. καὶ ὑπόνομος πολὺ μέρος. φύσει τε καὶ ἐ-
πίτηδες, ὥστ' οἰκήσεις δέχεσθαι. στομίῳ δὲ μικρῷ τὴν εἴσοδον ἔχων. ὑποπίπτουσι δ' αὐτῷ λιμέ-
νες τρεῖς. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν ἐτετείχιστο καὶ συνῴκιστο ἡ μουνυχία παραπλησίως ὡς ἡ τῶν
ῥοδίων πόλις. προσειληφυῖα τῷ περιβόλῳ, τὸν πειραιᾶ. καὶ τοὺς λιμένας, πλήρεις νεωρίων. ἐν
οἷς καὶ ἡ ὁπλοθήκη φίλωνος ἔργον. ἀξιόν τε ἦν ναύσταθμον, τετρακοσίαις ναυσίν. ὧν οὐκ ἐλάττους
ἔστελλον ἀθηναῖοι. τῷ δὲ τείχει τούτῳ συνῆπτε τὰ καθειλκυσμένα ἐκ τοῦ ἄστεος σκέλη. ταῦτα δ'
ἦν μακρὰ τείχη, τετταράκοντα σταδίων τὸ μῆκος. συνάπτοντα τὸ ἄστυ τῷ πειραιεῖ. οἱ δὲ πολλοὶ πό-
λεμοι τὸ τεῖχος κατήρειψαν καὶ τὸ τῆς μουνυχίας ἔρυμα. τόν τε πειραιᾶ συνέστειλαν εἰς ὀλίγην
κατοικίαν, τὴν περὶ τοὺς λιμένας, καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ διὸς τοῦ σωτῆρος. τοῦ δὲ ἱεροῦ τὰ μὲν στοΐ-
δια, ἔχει πίνακας θαυμαστοὺς, ἔργα, τῶν ἐπιφανῶν τεχνιτῶν. τὸ δ' ὕπαιθρον, ἀνδριάντας. κατέ-
σπασται δὲ καὶ τὰ μακρὰ τείχη. λακεδαιμονίων μὲν καθελόντων πρότερον. ῥωμαίων δ' ὕ-
στερον. ἡνίκα σύλλας ἐκ πολιορκίας εἷλε, καὶ τὸν πειραιᾶ, καὶ τὸ ἄστυ. τὸ δ' ἄστυ αὐτὸ, πέτρα ἐ-
στὶν ἐν πεδίῳ περιοικουμένη κύκλῳ. ἐπὶ δὲ τῇ πέτρᾳ τὸ τῆς ἀθηνᾶς ἱερόν. ὅ τε ἀρχαῖος νεὼς
ὁ τῆς πολιάδος. ἐν ᾧ ὁ ἄσβεστος λύχνος. καὶ ὁ παρθενὼν ὃν ἐποίησεν ἰκτῖνος. ἐν ᾧ τὸ τοῦ φει-

δίου ἔργον ἐλεφάντινον, ἡ ἀθηνᾶ. ἀλλὰ γὰρ εἰς πλῆθος ἐμπίπτων τῶν περὶ τῆς πόλεως ταύτης ὑμνου-
μένων τε καὶ διαβοωμένων, ὀκνῶ πλεονάζειν, μὴ συμβῆ τῆς προθέσεως ἐκπεσεῖν τὴν γραφήν. ἔπεισι γὰρ
ὅ φησιν ἡγησίας, ὁρῶ τὴν ἀκρόπολιν, καὶ τὸ περὶ τῆς τριαίνης ἔχει τι σημεῖον. ὁρῶ τὴν ἐλευσῖνα καὶ
τῶν ἱερῶν γέγονα μύστης. ἐκεῖνο λεωκόριον. τοῦτο θησεῖον. οὐ δύναμαι δηλῶσαι καθ᾽ ἓν ἕκαστον. ἡ γὰρ
ἀττικὴ θεῶν ἐστι κτίσμα καὶ προγόνων ἡρώων. ἀλλ᾽ οὗτός γε ἑνὸς μόνου ξοάνου τῶν ἐν τῇ ἀκροπόλει μέ-
μνηται. πολέμων δὲ ὁ περιηγητής, τέτταρα βιβλία συνέγραψε περὶ τῶν ἀναθημάτων τῶν ἐν τῇ ἀ-
κροπόλει. τὸ δ᾽ ἀνάλογον συμβαίνει καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων μερῶν τῆς πόλεως καὶ τῆς χώρας. ἐλευσῖνά τε
εἰπὼν ἕνα τῶν ἑκατὸν καὶ ἑβδομήκοντα δήμων. πρὸς δὲ, καὶ τεττάρων ὥς φασιν, οὐδένα τῶν ἄλλων
ὠνόμακεν, ἔχουσι δὲ καὶ εἰ μὴ πάντες, οἵ γε πολλοὶ μυθοποιίας συχνὰς καὶ ἱστορίας. καθάπερ ἀφίδνα
μὲν, τὴν ἑλένης ἁρπαγὴν ὑπὸ θησέως, καὶ τὴν διοσκούρων ἐκπόρθησιν αὐτῆς, καὶ ἀνακομιδὴν τῆς
ἀδελφῆς. μαραθὼν δὲ τὸν περσικὸν ἀγῶνα. ῥαμνοῦς δὲ τὸ τῆς νεμέσεως ξόανον. ὅ τινες μὲν, διοδότου φα-
σὶν ἔργον. τινὲς δὲ, ἀγορακρίτου τοῦ παρίου. καὶ μεγέθει καὶ κάλλει σφόδρα κατορθωμένον. καὶ ἐνάμιλ-
λον τοῖς φειδίου ἔργοις, οὕτω δὲ καὶ δεκέλεια μὲν ὁρμητήριον τῶν πελοποννησίων κατὰ τὸν δεκελικὸν
πόλεμον, φυλὴ δὲ ὅθεν ἐπήγαγε τὸν δῆμον θρασύβουλος εἰς πειραιᾶ, κἀκεῖθεν εἰς ἄστυ. οὕτω καὶ ἐπ᾽
ἄλλων πλειόνων ἔστιν ἱστορεῖν πολλά. καὶ εἰς τὸ λεωκόριον, καὶ τὸ θησεῖον, οὓς ἔχει καὶ τὸ λύκειον καὶ αὐ-
τὸ τὸ ὀλύμπιον. ὅπερ ἡμιτελὲς κατέλιπε τελευτῶν ὁ ἀναθεὶς βασιλεύς. ὁμοίως δὲ καὶ ἡ ἀκαδημία,
καὶ οἱ κῆποι τῶν φιλοσόφων, καὶ τὸ ᾠδεῖον, καὶ ἡ ποικίλη στοὰ, καὶ τὰ κατὰ τὴν πόλιν ἱερά. ἔχοντα
πάντα ἔργα τεχνιτῶν μνήμης ἄξια. πολὺ δ᾽ ἂν πλείων εἴη λόγος. εἰ τοὺς ἀρχηγέτας τοῦ κτίσματος ἐ-
ξετάζοι τις, ἀρξάμενος ἀπὸ κέκροπος. οὐδὲ γὰρ ὁμοίως λέγουσιν ἅπαντες. τοῦτο δὲ καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομά-
των δῆλον. ἀκτικὴν μὲν γὰρ ἀπὸ ἀκταίωνος φασίν. ἀτθίδα δὲ καὶ ἀττικὴν ἀπὸ ἀτθίδος τοῦ κραναοῦ.
ἀφ᾽ οὗ καὶ κραναοὶ οἱ ἔνοικοι. μοψοπίαν δὲ ἀπὸ μόψοπου. ἰωνίαν δὲ ἀπὸ ἴωνος τοῦ ξούθου. ποσειδωνίαν
δὲ καὶ ἀθήνας ἀπὸ τῶν ἐπωνύμων θεῶν. εἴρηται δ᾽ ὅτι καὶ ἐνταῦθα φαίνεται τὸ τῶν πελασγῶν ἔθνος
ἐπιδημῆσαν. καὶ ὅτι ὑπὸ τῶν ἀττικῶν πελασγοὶ προσηγορεύθησαν διὰ τὴν πλάνην. ὅσω δὲ πλέον ἐ-
στὶ τὸ φιλόδημον περὶ τὰ ἔνδοξα καὶ πλείους οἱ λαλήσαντές τι περὶ αὐτῶν, τοσῷδε μείζων ὁ ἔλεγχος,
ἐὰν μὴ κρατῇ τις τῆς ἱστορίας. οἷον ἐν τῇ συναγωγῇ τῶν ποταμῶν, ὁ καλλίμαχος γελᾶν φησιν εἴ τις θαρ-
ρεῖ γράφειν τὰς τῶν ἀθηναίων παρθένους,

ἀφύσσεσθαι καθαρὸν γάνος ἠριδανοῖο.

Οὗ καὶ τὰ βοσκήματα ἀπόσχοιτ᾽ ἄν. εἰσὶ μὲν οὖν αἱ πηγαὶ καθαροῦ καὶ ποτίμου ὕδατος ὥς φα-
σιν, ἐκτὸς τῶν διοχάρους καλουμένων πυλῶν, πλησίον τοῦ λυκείου. πρότερον δὲ καὶ κρήνη κατεσκεύαστό
τις, πλησίον πολλοῦ, καὶ καλοῦ ὕδατος. εἰ δὲ μὴ νῦν, τί ἂν εἴη θαυμαστὸν, εἰ πάλαι πολὺ καὶ καθαρὸν ἦν,
ὥστε καὶ πότιμον εἶναι, μετέβαλε δὲ ὕστερον, ἐν μὲν οὖν τοῖς καθ᾽ ἕκαστα τοσούτοις οὖσιν, οὐκ ἐνδέ-
χεται διατρίβειν, οὐ μὴν οὐδὲ σιγῇ παρελθεῖν, ὥστε μὴ δ᾽ ἐν κεφαλαίῳ μνησθῆναι τινῶν. τοσαῦτ᾽ οὖν ἀπό-
χρη προσθήσειν. ὅτι φησὶ φιλόχωρος πορθουμένης τῆς χώρας, ἐκ θαλάττης μὲν ὑπὸ καρῶν. ἐκ γῆς
δὲ ὑπὸ βοιωτῶν, οὓς ἐκάλουν ἄονας, κέκροπα πρῶτον εἰς δυοκαίδεκα πόλεις συνοικῆσαι τὸ πλῆθος.
ὧν ὀνόματα, κεκροπία. τετράπολις. ἐπακρία. δεκέλεια. ἐλευσίς. ἀφίδνα. λέγουσι δὲ καὶ πληθυντικῶς
ἀφίδνας. θόρικος. βραυρὼν. κύθηρος. σφηττός. κηφισία. φάληρος. πάλιν δ᾽ ὕστερον εἰς μίαν πόλιν συ-
ναγαγεῖν λέγεται τὴν νῦν, τὰς δώδεκα θησεύς. ἐβασίλευον μὲν οὖν ἀθηναῖοι πρότερον. εἶτ᾽ εἰς δη-
μοκρατίαν μετέστησαν. τυράννων δ᾽ ἐπιθεμένων αὐτοῖς, πεισιστράτου καὶ τῶν παίδων, ὕστερόν
τε ὀλιγαρχίας γενομένης, τῆς τε τῶν τετρακοσίων καὶ τῆς τῶν τριάκοντα τυράννων οὓς ἐπέ-
στησαν λακεδαιμόνιοι, τούτους μὲν διεκρούσαντο ῥᾳδίως. ἐφύλαξαν δὲ τὴν δημοκρατίαν μέχρι τῆς
ῥωμαίων ἐπικρατείας. καὶ γὰρ εἴ τι μικρὸν ὑπὸ τῶν μακεδονικῶν βασιλέων παρελυπήθησαν
ὥστε ὑπακούειν αὐτῶν ἀναγκασθῆναι, τόν γε ὁλοσχερῆ τύπον τῆς πολιτείας, τὸν αὐτὸν διετήρουν. ἔνιοι
δέ φασι καὶ βέλτιστα τότε αὐτοὺς πολιτεύσασθαι δεκαετῆ χρόνον, ὃν ἦρχε μακεδόνων, κάσανδρος.
οὗτος γὰρ ὁ ἀνὴρ πρὸς μὲν τὰ ἄλλα δοκεῖ τυραννικώτερος γενέσθαι. πρὸς ἀθηναίους δὲ εὐγνωμόνησε
λαβὼν ὑπήκοον τὴν πόλιν. ἐπέστησε γὰρ τῶν πολιτῶν δημήτριον τὸν φαληρέα τὸν θεοφράστου τοῦ φι-
λοσόφου γνώριμον. ὃς οὐ μόνον οὐ κατέλυσε τὴν δημοκρατίαν, ἀλλὰ καὶ ἐπηνώρθωσε. δηλοῖ δὲ τὰ
ὑπομνήματα ἃ συνέγραψε περὶ τῆς πολιτείας ταύτης ἐκεῖνος. ἀλλ᾽ οὕτως ὁ φθόνος ἴσχυσε, καὶ
ἡ πρὸς ὀλίγους ἀπέχθεια, ὥστε μετὰ τὴν κασάνδρου τελευτὴν, ἠναγκάσθη φυγεῖν εἰς αἴγυπτον.
τὰς δ᾽ εἰκόνας αὐτοῦ πλείους, ἢ τριακοσίας κατέσπασαν οἱ ἐπαναστάντες, καὶ κατεχώνευσαν. ἔ-
νιοι δὲ προστιθέασιν, ὅτι καὶ εἰς ἀμίδας. ῥωμαῖοι δ᾽ οὖν παραλαβόντες αὐτοὺς δημοκρατουμένους,
ἐφύλαξαν τὴν αὐτονομίαν αὐτοῖς καὶ τὴν ἐλευθερίαν, ἐπιπεσὼν δ᾽ ὁ μιθριδατικὸς πόλεμος, τυ-
ράννους αὐτοῖς κατέστησεν, οὓς ὁ βασιλεὺς ἐβούλετο. τὸν δ᾽ ἰσχύσαντα μάλιστα τὸν ἀριστίωνα, καὶ ταύ-
την βιασάμενον τὴν πόλιν, ἐκ πολιορκίας ἑλὼν σύλλας ὁ τῶν ῥωμαίων ἡγεμὼν, ἐκόλασε. τῇ πό-
λει δὲ συγγνώμην ἔνειμε. καὶ μέχρι νῦν ἐν ἐλευθερίᾳ τέ ἐστι καὶ τιμῇ παρὰ τοῖς ῥωμαίοις.

Μετὰ δὲ τὸν πειραιᾶ, φαληρεῖς δῆμος, ἐν τῇ ἐφεξῆς παραλίᾳ. εἶθ' ἁλιμούσιοι. αἰξωνεῖς. ἁλιεῖς οἱ αἰξωνικοί,
ἀναγυράσιοι. εἶθ' ὠρεῖς. λαμπρεῖς. αἰγινεῖς. ἀναφλύστιοι. ἀζηνιεῖς. οὗτοι μὲν οἱ μέχρι τῆς ἄκρας τοῦ σου-
νίου, μεταξὺ δὲ τῶν λεχθέντων δήμων, μακρὰ ἄκρα πρώτη μετὰ τοὺς αἰξωνέας, ζωστήρ. εἶτ' ἄλλη μετὰ
θορέας, ἀστυπάλαια. ὧν τῆς μὲν, πρόκειται νῆσος φαύρα. τῆς δὲ, ἐλεοῦσα. καὶ κατὰ τοὺς αἰξωνέας
ὑδροῦσσα. περὶ δὲ ἀνάφλυστον ἐστὶ τὸ πανεῖον, καὶ τὸ τῆς κωλιάδος ἀφροδίτης ἱερὸν, εἰς ὃν τόπον ἐκκυ-
μανθῆναι τὰ τελευταῖα τὰ ἐκ τῆς περὶ σαλαμῖνα ναυμαχίας τῆς περσικῆς ναυάγια φασί. περὶ
ὧν καὶ τὸν ἀπόλλω προειπεῖν.

» Κωλιάδες δὲ γυναῖκες, ἐρετμοῖσι φρίξουσι.

Πρόκειται δὲ καὶ τούτων τῶν τόπων, βέλβινα νῆσος, οὐ πολὺ ἄποθεν. καὶ ὁ πρόκλου χάραξ. ἔρη-
μοι δ' αἱ πλεῖσται τούτων. κάμψαντι δὲ τὴν κατὰ τὸ σούνιον ἄκραν, ἀξιόλογος δῆμος σουνίον. εἶτα θό-
ρικος. εἶτα ποταμὸς δῆμος οὕτω καλούμενος. ἐξ οὗ οἱ ἄνδρες ποτάμιοι. εἶτα πρασία, στειρία βραυ-
“ ρων, ὅπου τὸ τῆς βραυρωνίας ἀρτέμιδος ἱερόν.-- νίδες. ὅπου τὸ τῆς ταυροπόλου
“ --εἶτα μυῤῥινοῦς. προβάλινθος. μαραθών. ὅπου μιλτιάδης τὰς μετὰ δάτιος τοῦ
πέρσου δυνάμεις ἄρδην διέφθειρεν. οὐ περιμείνας ὑστερίζοντας λακεδαιμονίους διὰ τὴν πανσέλη-
νον. ἐνταῦθα μεμυθεύκασι καὶ τὸν μαραθώνιον ταῦρον, ὃν ἀνεῖλε θησεύς. μετὰ δὲ μαραθῶνα τρικόρυ-
θος. εἶτα ῥαμνοῦς. τὸ τῆς νεμέσεως ἱερόν. εἶτα ψαφὶς ἡ τῶν ὠρωπίων. ἐνταῦθα δέ που, καὶ τὸ ἀμφια-
ράειον ἐστὶ τετιμημένον ποτὲ μαντεῖον. ὅπου φυγόντα τὸν ἀμφιάρεων ὥς φησι σοφοκλῆς,

» Ἐδέξατο ῥαγεῖσα θηβαία κόνις.

» Αὐτοῖσιν ὅπλοις καὶ τετρωρίστῳ δίφρῳ.

Ὠρωπὸς δ' ἐν ἀμφισβητησίμῳ γεγένηται πολλάκις. ἵδρυται γὰρ ἐν μεθορίῳ τῆς τε ἀττικῆς καὶ
τῆς βοιωτίας. πρόκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης, πρὸ μὲν τοῦ θουρίου, καὶ τοῦ σουνίου, νῆσος ἑλέ-
νη, τραχεῖα καὶ ἔρημος. παραμήκης, ὅσον ἑξήκοντα σταδίους τὸ μῆκος. ἧς φασὶ μεμνῆσθαι τὸν ποιητήν;
ἐν οἷς ἀλέξανδρος λέγει πρὸς τὴν ἑλένην.

» Οὐδ' ὅτε σε πρῶτον λακεδαίμονος ἐξ ἐρατεινῆς

» Ἅρπάξας ἐν ποντοπόροισι νέεσσι,

» Νήσῳ δ' ἐν κραναῇ ἐμίγην φιλότητι καὶ εὐνῇ.

Ταύτην γὰρ λέγει κραναὴν, τὴν νῦν ἑλένην, ἀπὸ τοῦ ἐκεῖ γενέσθαι τὴν μίξιν. μετὰ δὲ τὴν ἑλένην, ἡ
εὔβοια πρόκειται τῆς ἑξῆς παραλίας. ὁμοίως στενὴ καὶ μακρά. καὶ κατὰ μῆκος τῇ ἠπείρῳ παραβε-
βλημένη καθάπερ ἡ ἑλένη. ἔστι δὲ ἀπὸ σουνίου πρὸς τὸ νότιον τῆς εὐβοίας ἄκρον, ὃ καλοῦσι λευκὴν ἀ-
κτὴν, σταδίων τριακοσίων πλοῦς. ἀλλὰ περὶ εὐβοίας μὲν ἐρήσεται ὕστερον. τοὺς δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ δή-
μους τῆς ἀττικῆς μακρὸν εἰπεῖν διὰ τὸ πλῆθος. τῶν δ' ὀρῶν ἃ ἐν ὀνόματι μάλιστα ἐστὶν, ὅ, τε ὑμηττὸς, καὶ
βριλησσὸς, καὶ λυκαβηττὸς, ἔτι δὲ πάρνης, καὶ κορυδαλὸς, μαρμάρου δ' ἐστὶ τῆς τε ὑμηττίας, καὶ τῆς
πεντελικῆς κάλλιστα μέταλλα πλησίον τῆς πόλεως. ὁ δ' ὑμηττὸς καὶ μέλι ἄριστον ποιεῖ. τὰ δ' ἀργύρεια τὰ
ἐν τῇ ἀττικῇ κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀξιόλογα. νυνὶ δ' ἐκλείπει. καὶ δὴ καὶ οἱ ἐργαζόμενοι, τῆς μεταλλείας ἀ-
σθενῶς ὑπακουούσης, τὴν παλαιὰν ἐκβολάδα καὶ σκωρίαν ἀναχωνεύοντες, εὕρισκον ἔτι ἐξ αὐτῆς ἀ-
ποκαθαιρόμενον ἀργύριον, τῶν ἀρχαίων ἀπείρως καμινευόντων. τοῦ δὲ μέλιτος ἀρίστου ὄντος τῶν
πάντων τοῦ ἀττικοῦ, πολὺ βέλτιστον φασὶ τὸ ἐν τοῖς ἀργυρείοις. ὃ καὶ ἀκάπνιστον καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τρό-
που τῆς σκευασίας. ποταμοὶ δ' εἰσὶν, ὁ μὲν κηφισσὸς ἐκ τρινεμέων τὰς ἀρχὰς ἔχων. ῥέων δὲ διὰ τοῦ πε-
δίου, ἐφ' οὗ καὶ ἡ γέφυρα καὶ οἱ γεφυρισμοί. διὰ δὲ τῶν σκελῶν τῶν ἀπὸ τοῦ ἄστεος εἰς τὸν πειραιᾶ καθη-
κόντων, ἐκδίδωσιν εἰς τὸ φαληρικόν. χειμαῤῥώδης τὸ πλέον. θέρους δὲ μειοῦται τελέως. ἔτι δὲ τοιοῦτος
μάλιστα ὁ ἰλισσὸς, ἐκ θατέρου μέρους τοῦ ἄστεος ῥέων εἰς τὴν αὐτὴν παραλίαν, ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς ἄγρας
καὶ τοῦ λυκείου μερῶν, καὶ τῆς πηγῆς, ἣν ὕμνηκεν ἐν φαίδρῳ πλάτων. περὶ μὲν τῆς ἀττικῆς ταῦτα. ἑ-
ξῆς δ' ἐστὶν ἡ βοιωτία. περὶ ἧς λέγοντα, καὶ περὶ τῶν συνεχῶν ἐθνῶν ἀνάμνησιν ποιήσασθαι χρὴ τοῦ σα-
φοῦς χάριν, ὧν εἴπομεν πρότερον. λέγωμεν δὲ τὴν ἀπὸ σουνίου παραλίαν, μέχρι θεσσαλονίκης, ἐπὶ τὰς
ἄρκτους τετάσθαι μικρὸν ἐκκλίνουσαν τὴν ὑπεραίρουσαν θάλασσαν πρὸς ἕω. τὰ δ' ὑπερκείμε-
να, πρὸς δύσιν ὡς ἂν ταινίας τινὰς διὰ τῆς χώρας ἐκτάσης τεταμένας παραλλήλους. ὧν πρώτη ἐ-
στὶν ἡ ἀπὸ μεγαρέων ὡς ἂν ταινία τις. τὸ μὲν ἑωθινὸν μέρος ταινιοῦσα τὴν ἀπὸ σουνίου μέχρι ὠρωποῦ
καὶ τῆς ταύτῃ παραλίας. τὸ δ' ἑσπέριον τόν τε ἰσθμὸν, καὶ τὴν ἀλκυονίδα θάλατταν τὴν κατὰ πη-
“ γὰς μέχρι τῶν-- τῶν περὶ κρέουσαν. τὰ δὲ λοιπὰ-- μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ
“ παραλίαν καὶ τὴν ὡς ἂν-- ὀρεινὴν, τὴν διείργουσαν ἀπὸ τῆς--
“ δευτέρα δ' ἐστὶν ἡ βοιωτία, ἀπὸ τῆς ἕω ἐπὶ δύσιν τεταμένη. ταινία τις ἀπὸ τῆς
κατ' εὔβοιαν θαλάσσης ἐπὶ θάλατταν τὴν κατὰ τὸν κρισαῖον κόλπον ἰσομήκης πως τῇ ἀττικῇ, ἢ
καὶ ἐλάττων κατὰ μῆκος. ἀρετῇ μέντοι τῆς χώρας, πάμπολυ διαφέρει. εὔφορος δὲ καὶ ταύτῃ
κρείττω τὴν βοιωτίαν ἀποφαίνει τῶν ὁμόρων ἐθνῶν. καὶ ὅτι μόνη τριθάλαττός ἐστι, καὶ λιμένων εὐπορεῖ

πλειόνων· ἐπὶ μὲν τῷ κρισαίῳ κόλπῳ, καὶ τῷ κορινθιακῷ, τὰ ἐκ τῆς ἰταλίας καὶ σικελίας, καὶ
τῆς λιβύης δεχομένη, ἐπὶ δὲ τῶν πρὸς εὔβοιαν μερῶν, ἐφ' ἑκάτερα τοῦ εὐρίπου σχιζομένης τῆς παρα-
λίας· τῇ μὲν, ἐπὶ τὴν αὐλίδα, καὶ ταναγρικὴν τῇ ἐπὶ τὸ σαλγανέα, καὶ τὴν ἀνθηδόνα, τῇ μὲν,
εἶναι συνεχῆ τὴν κατ' αἴγυπτον, καὶ κύπρον, καὶ τὰς νήσους θάλασσαν· τῇ δὲ, τὴν κατὰ μακεδό-
νας, καὶ τὴν προποντίδα, καὶ τὸν ἑλλήσποντον· προστίθησι δὲ, καὶ ὅτι τὴν εὔβοιαν, τρόπον τινὰ μέρος
αὐτῆς πεποίηκεν ὁ εὔριπος· οὕτω στενὸς ὢν καὶ γεφύρᾳ συνεζευγμένος πρὸς αὐτὴν δίπλέθρῳ· τὴν
μὲν οὖν χώραν ἐπαινεῖ διὰ ταῦτα, καὶ φησὶ πρὸς ἡγεμονίαν εὐφυῶς ἔχειν· ἀγωγῇ δὲ καὶ παιδείᾳ μὴ
χρησαμένους. ἐπεὶ μηδὲ τοὺς ἀεὶ προϊσταμένους αὐτῆς εἰ καί ποτε κατώρθωσαν, ἐπὶ μικρὸν τὸν χρό-
νον συμμεῖναι. καθάπερ ἐπαμεινώνδας ἔδειξε· τελευτήσαντος γὰρ ἐκείνου, τὴν ἡγεμονίαν ἀποβαλεῖν
εὐθὺς τοὺς θηβαίους συνέβη, γευσαμένους αὐτῆς μόνον· αἴτιον δ' εἶναι, τὸ λόγων καὶ ὁμιλίας τῆς
πρὸς ἀνθρώπους ὀλιγωρῆσαι. μόνης δ' ἐπιμεληθῆναι τῆς κατὰ πόλεμον ἀρετῆς. ἔδει δὲ προσθεῖναι ὅ-
τι τοῦτο πρὸς ἕλληνας μάλιστα χρήσιμόν ἐστιν. ἐπεὶ πρός γε τοὺς βαρβάρους βία, λόγου κρείττων ἐστί.
καὶ ῥωμαῖοι δὲ τὸ παλαιὸν μὲν, ἀγριωτέροις ἔθνεσι πολεμοῦντες, οὐδὲν ἐδέοντο τῶν τοιούτων παιδευ-
μάτων· ἀφ' οὗ δὲ ἤρξαντο πρὸς ἡμερώτερα ἔθνη καὶ φῦλα τὴν πραγματείαν ἔχειν, ἐπέθεντο καὶ ταύτῃ
τῇ ἀγωγῇ, καὶ κατέστησαν πάντων κύριοι. ἡ δ' οὖν βοιωτία, πρότερον μὲν ὑπὸ βαρβάρων ᾠκεῖτο ἀό-
νων καὶ τεμμίκων ἐκ τοῦ σουνίου πεπλανημένων· καὶ λελέγων, καὶ ὑάντων. εἶτα φοίνικες ἔσχον οἱ με-
τὰ κάδμου· ὃς τήν τε καδμείαν ἐτείχισε, καὶ τὴν ἀρχὴν τοῖς ἐκγόνοις ἀπέλιπεν. ἐκεῖνοι δὲ τὰς θήβας
τῇ καδμείᾳ προσέκτισαν· καὶ συνεφύλαξαν τὴν ἀρχὴν, ἡγούμενοι τῶν πλείστων βοιωτῶν· ἕως τῆς τῶν
ἐπιγόνων στρατείας. κατὰ δὲ τούτους ὀλίγον χρόνον ἐκλιπόντες τὰς θήβας, ἐπανῆλθον πάλιν. ὡς
δ' αὕτως ὑπὸ θρᾳκῶν, καὶ πελασγῶν ἐκπεσόντες, ἐν θετταλίᾳ συνεστήσαντο τὴν ἀρχὴν μετὰ ἀρναίων
ἐπὶ πολὺν χρόνον· ὥστε καὶ βοιωτοὺς κληθῆναι ἅπαντας. εἶτ' ἀνέστρεψαν εἰς τὴν οἰκείαν· ἤδη τοῦ αἰο-
λικοῦ στόλου παρεσκευασμένου περὶ αὐλίδα τῆς βοιωτίας, ὃν ἔστελλον εἰς τὴν ἀσίαν οἱ τοῦ ὀρέστου παῖ-
δες. προσθέντες δὲ τῇ βοιωτίᾳ τὴν ὀρχομενίαν, οὐ γὰρ ἦσαν κοινῇ πρότερον, οὐδ' ὅμηρος μετὰ βοιω-
τῶν αὐτοὺς κατέλεξεν, ἀλλ' ἰδίᾳ, μινύας προσαγορεύσας, μετ' ἐκείνων ἐξέβαλον τοὺς μὲν πελασγοὺς
εἰς ἀθήνας· ἀφ' ὧν ἐκλήθη μέρος τι τῆς πόλεως πελασγικόν· ᾤκησαν δ' ὑπὸ τῷ ὑμηττῷ· τοὺς δὲ θρᾷ-
κας εἰς τὸν παρνασσόν· ὕαντες δὲ τῆς φωκίδος ὕαν πόλιν ᾤκισαν. φησὶ δ' ἔφορος, τοὺς μὲν θρᾷκας ποιη-
σαμένους σπονδὰς πρὸς τοὺς βοιωτοὺς, ἐπιθέσθαι νύκτωρ, στρατοπεδεύουσιν ὀλιγωρότερον, ὡς εἰρή-
νης γεγονυίας, διακρουσαμένων αὐτοὺς, αἰτιωμένων τε ἅμα ὅτι τὰς σπονδὰς παραβαίνοι, μὴ παρα-
βαίνειν φάσκειν ἐκείνους· συνθέσθαι γὰρ ἡμέρας· νύκτωρ δ' ἐπιθέσθαι· ἀφ' οὗ δὴ καὶ τὴν παροιμίαν
εἰρῆσθαι θρᾳκία παρεύρεσις. τοὺς δὲ πελασγοὺς μένοντος ἔτι τοῦ πολέμου χρηστηριασαμένους ἀπελθεῖν,
ἀπελθεῖν δὲ καὶ τοὺς βοιωτοὺς, τὸ μὲν οὖν τοῖς πελασγοῖς δοθέντα χρησμὸν, ἔφη μὴ ἔχειν εἰπεῖν. τοῖς δὲ
βοιωτοῖς ἀνελεῖν τὴν προφῆτιν, ἀσεβήσαντας εὖ πράξειν· τοὺς δὲ θεωροὺς ὑπονοήσαντας χαριζο-
μένην τοῖς πελασγοῖς τὴν προφῆτιν κατὰ τὸ συγγενὲς, ἐπεὶ καὶ τὸ ἱερὸν πελασγικὸν ἐξ ἀρχῆς ὑπῆρ-
ξεν, οὕτως ἀνελεῖν, ἁρπάσαντας τὴν ἄνθρωπον εἰς πυρὰν ἐμβαλεῖν· ἐνθυμηθέντας εἴτε κακουργήσασαν
εἴτε μὴ, πρὸς ἀμφότερα ὀρθῶς ἔχειν· εἰ μὲν παρεχρηστηρίασε, κολα-
σθείσης αὐτῆς· εἰ δ' οὐδὲν ἐκακούργησε, τὸ προσταχθὲν αὐτῶν πραξάντων. τοὺς δὲ περὶ τὸ ἱερὸν, τὸ μὲν
ἀκρίτους κτείνειν τοὺς πράξαντας καὶ ταῦτ' ἐν ἱερῷ, μὴ δοκιμάσαι· καθιστάναι δ' εἰς κρίσιν· καλεῖν δ' ἐ-
πὶ τὰς ἱερείας· ταύτας δ' εἶναι τὰς προφήτιδας· αἱ γὰρ λοιπαὶ τρεῖς οὖσαι περιῆσαν. λεγόν-
των δ' ὡς οὐδαμοῦ νόμος εἴη δικάζειν γυναῖκας, προσελέσθαι καὶ ἄνδρας ἴσους ταῖς γυναιξὶ τὸν
ἀριθμόν· τοὺς μὲν οὖν ἄνδρας ἀπογνῶναι· τὰς δὲ γυναῖκας καταγνῶναι· ἴσων δὲ τῶν ψήφων γενομέ-
νων, τὰς ἀπολυούσας νικῆσαι. ἐκ δὲ τούτων βοιωτοῖς μόνοις ἄνδρας προθεσπίζειν ἐν δωδώνῃ· τὰς
μέντοι προφήτιδας, ἐξηγουμένας τοὐναντίον, εἰπεῖν ὅτι προστάττοι ὁ θεὸς τοῖς βοιωτοῖς, τοὺς παρ'
αὐτοῖς τρίποδας συλλαβόντας, εἰς δωδώνην πέμπειν κατ' ἔτος· καὶ δὴ ποιεῖν τοῦτο· ἀεὶ γάρ τινα τῶν
ἀνακειμένων τριπόδων, νύκτωρ καθαιροῦντας, καὶ κατακαλύπτοντας ἱματίοις, ὡς ἂν λάθρα τρι-
ποδοφορεῖν εἰς δωδώνην, μετὰ δὲ ταῦτα τὴν αἰολικὴν ἀποικίαν συνέπραξαν τοῖς περὶ πενθίλον,
πλείστους ἐξ ἑαυτῶν συμπέμψαντες, ὥστε καὶ βοιωτικὴν προσαγορευθῆναι. ὕστερον δὲ χρόνοις πολ-
λοῖς ὁ περσικὸς πόλεμος περὶ πλαταιὰς γενόμενος, διελυμήνατο τὴν χώραν. εἶτ' ἀνέλαβον σφᾶς
πάλιν ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστε καὶ τῆς τῶν ἑλλήνων ἀρχῆς ἀμφισβητῆσαι θηβαίους, δυσὶ μάχαις κρα-
τήσαντας λακεδαιμονίους. ἐπαμεινώνδου δὲ πεσόντος ἐν τῇ μάχῃ, ταύτης μὲν τῆς ἐλπίδος διεσφά-
λησαν. ὑπὲρ δὲ τῶν ἑλλήνων ὅμως ἐπολέμησαν πρὸς φωκέας τοὺς τὸ ἱερὸν συλήσαντας τὸ κοι-
νόν. κακωθέντες δ' ὑπό τε τούτου τοῦ πολέμου, καὶ τῶν μακεδόνων ἐπιθεμένων τοῖς ἕλλη-
σιν, ὑπὸ τῶν αὐτῶν τούτων, καὶ ἀπέβαλον τὴν πόλιν κατασκαφεῖσαν. καὶ ἀνέλαβον ἀνακτισθεῖ-
σαν. ἐξ ἐκείνου δ' ἤδη πράττοντες ἀεὶ χεῖρον ἀεὶ μέχρι εἰς ἡμᾶς, οὐδὲ κώμης ἀξιολόγου τύπον σώ-
ζουσι. καὶ ἄλλαι δὲ πόλεις ἀνάλογον, πλὴν τανάγρας καὶ θεσπιῶν· αὗται δ' ἱκανῶς συμμένουσι πρὸς

ἐκείνας κειμέναι. ἑξῆς δὲ τὴν περιήγησιν τῆς χώρας ποιητέον, ἀρξαμένους ἀπὸ τῆς πρὸς εὔβοιαν
παραλίας, τῆς συνεχοῦς τῇ ἀττικῇ. ἀρχὴ δ᾽ ὁ ὠρωπὸς, καὶ ὁ ἱερὸς λιμὴν, ὃν καλοῦσι δελφίνιον. καθ᾽ ὃν
ἡ παλαιὰ ἐρέτρεια ἐν τῇ εὐβοίᾳ. διάπλουν ἔχουσα ἑξήκοντα σταδίων. μετὰ δὲ τὸ δελφίνιον ἐστὶν ὁ ὠρω-
πὸς ἐν εἴκοσι σταδίοις. κατὰ δὲ τοῦτον ἐστὶν ἡ νῦν ἐρέτρεια, διάπλους δ᾽ ἐπ᾽ αὐτὴν στάδιοι τετταράκοντα.
εἶτα δήλιον τὸ ἱερὸν τοῦ ἀπόλλωνος, ἐκ δήλου ἀφιδρυμένον, ταναγραίων πολίχνιον. αὐλίδος διέχον
σταδίους τριάκοντα. ὅπου μάχῃ λειφθέντες ἀθηναῖοι προτροπάδην ἔφυγον. ἐν δὲ τῇ φυγῇ πεσόντα
ἀφ᾽ ἵππου ξενοφῶντα τὸν γρύλλου ἰδὼν κείμενον σωκράτης ὁ φιλόσοφος στρατεύων πεζὸς, τοῦ ἵπ-
που γεγονότος ἐκποδὼν, ἀνέλαβε τοῖς ὤμοις αὐτοῦ, καὶ ἔσωσεν ἐπὶ πολλοὺς σταδίους, ἕως ἐπαύσατο ἡ
φυγή. εἶτα λιμὴν μέγας, ὃν καλοῦσι βαθὺν λιμένα. εἶθ᾽ ἡ αὐλὶς πετρῶδες χωρίον. καὶ κώμη ταναγραίων.
λιμὴν δ᾽ ἐστὶ πεντήκοντα πλοίοις. ὥστ᾽ εἰκὸς τὸν ναύσταθμον τῶν ἑλλήνων, ἐν τῷ μεγάλῳ ὑπάρξαι λιμέ-
νι. καὶ ὁ εὔριπος δ᾽ ἐστὶ πλησίον ὁ, χαλκίδος. εἰς ὃν ἀπὸ σουνίου, στάδιοι ἑβδομήκοντα. ἔστι δ᾽ ἐπ᾽ αὐτῷ
γέφυρα δίπλεθρος ὡς εἴρηκα. πύργος δ᾽ ἑκατέρωθεν ἐφέστηκεν. ὁ μὲν, ἐκ τῆς χαλκίδος. ὁ δ᾽ ἐκ τῆς βοιω-
τίας. διῳκοδόμητο δ᾽ εἰς αὐτοὺς σύριγξ. περὶ δὲ τῆς παλιρροίας τοῦ εὐρίπου, τοσοῦτον μόνον εἰπεῖν ἱ-
κανὸν, ὅτι ἑπτάκις μεταβάλλειν φασὶ καθ᾽ ἡμέραν ἑκάστην καὶ νύκτα. τὴν δ᾽ αἰτίαν, ἐν ἄλλοις σκεπτέον.
πλησίον δ᾽ ἐστὶν ἐφ᾽ ὕψους κείμενον χωρίον σαλγανεύς. ἐπώνυμον τοῦ ταφέντος ἐπ᾽ αὐτῷ σαλγανέως
ἀνδρὸς βοιωτίου. καθηγησαμένου τοῖς πέρσαις, εἰσπλέουσιν εἰς τὸν διάπλουν τοῦτον ἐκ τοῦ μαλιακοῦ
κόλπου. ὃν φασιν ἀναιρεθῆναι πρινὴ τῷ εὐρίπῳ συνάπτειν ὑπὸ τοῦ ναυάρχου μεγαβάτου, νομισθέν-
τος κακούργου. ὡς ἐξαπάτης ἐμβαλόντα τὸν στόλον εἰς τυφλὸν τῆς θαλάσσης στενωπόν. αἰσθόμενον δὲ
τὸν βάρβαρον τὴν περὶ αὐτὸν ἀπάτην, μεταγνῶναί τε καὶ ταφῆς ἀξιῶσαι τὸν ἀναιτίως ἀποθανόν-
τα. καὶ ἡ γραῖα δ᾽ ἐστὶ, τόπος ὠρωποῦ πλησίον. καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ ἀμφιαράου, καὶ τὸ ναρκίσσου τοῦ ἐρετριέως
μνῆμα. ὃ καλεῖται σιγηλοῦ. ἐπειδὴ σιγῶσι παριόντες. τινὲς δὲ τὴν τάναγραν τὴν αὐτὴν φασίν. ἡ
ποιμανδρὶς δ᾽ ἐστὶν ἡ αὐτὴ, τῇ ταναγρικῇ. καλοῦνται γὰρ καὶ γεφυραῖοι οἱ ταναγραῖοι. ἐκ κνωπίας δὲ τῆς
θηβαϊκῆς μεθιδρυμένον δεῦρο τὸ ἀμφιαράειον. καὶ ὁ μυκαλησσὸς δὲ κώμη τῆς ταναγρικῆς. κεῖται δὲ
παρ᾽ ὁδὸν θηβαίων εἰς χαλκίδα. καλοῦσι δὲ βοιωτικῶς μυκαλιττόν, ὡς δ᾽ αὕτως καὶ τὸ ἅρμα, τῆς τα-
ναγραϊκῆς κώμη ἔρημος, περὶ μυκαλιττὸν, ἀπὸ τοῦ ἀμφιαράου ἅρματος, λαβοῦσα τοὔνομα. ἑτέρα οὖ-
σα τοῦ ἅρματος τοῦ κατὰ τὴν ἀττικήν. ὅ ἐστι περὶ φυλὴν δῆμον τῆς ἀττικῆς, ὅμορον τῇ τανάγρᾳ. ἐνταῦ-
θα δὲ ἡ παροιμία τὴν ἀρχὴν ἔσχεν, ἡ λέγουσα. ὁπότε δι᾽ ἅρματος ἀστράψῃ ἀστραπήν τινα σημειουμένων
κατὰ χρησμὸν τῶν λεγομένων πυθαϊστῶν βλεπόντων ὡς ἐπὶ τὸ ἅρμα. καὶ τότε πεμπόντων τὴν θυ-
σίαν εἰς δελφοὺς, ὅταν ἀστράψαντα ἴδωσιν. ἐτήρουν δ᾽ ἐπὶ τρεῖς μῆνας. καθ᾽ ἕκαστον μῆνα ἐπὶ τρεῖς ἡ-
μέρας καὶ νύκτας, ἀπὸ τῆς ἐσχάρας τοῦ ἀστραπαίου διός. ἔστι δ᾽ αὕτη ἐν τῷ τείχει μεταξὺ τοῦ πυθίου καὶ
τοῦ ὀλυμπίου. περὶ δὲ τοῦ ἅρματος τοῦ βοιωτικοῦ, οἱ μὲν, φασὶν ἐκπεσόντα ἐκ τοῦ ἅρματος ἐν τῇ μάχῃ
τοῦ ἀμφιαράου κατὰ τὸν τόπον οὗ νῦν ἐστι τὸ ἱερὸν αὐτοῦ, τὸ ἅρμα ἔρημον ἐνεχθῆναι περὶ τὸν ὁμώνυ-
μον τόπον. οἱ δὲ, τοῦ ἀδράστου συντριβῆναι τὸ ἅρμα φεύγοντος φασὶν ἐνταῦθα. τὸν δὲ, διὰ τοῦ ἀρείονος
σωθῆναι. φιλόχορος δ᾽ ὑπὸ τῶν κωμητῶν σωθῆναι φησὶν αὐτόν. διὰ τοῦτο ἰσοπολιτείαν αὐτοῖς πα-
ρὰ τῶν ἀργείων ὑπάρξαι. ἔστι δὲ τῷ ἐκ θηβῶν εἰς ἄργος ἀπιόντι, ἐν ἀριστερᾷ, ἡ τάναγρα, ἐν δεξιᾷ κεῖται
καὶ ὑρία δὲ τῆς ταναγραίας νῦν ἐστι. πρότερον δὲ τῆς θηβαΐδος, ὅπου ὁ ὑριεὺς μεμύθευται καὶ ἡ τοῦ
ὠρίωνος γένεσις. ἥν φησι πίνδαρος ἐν τοῖς διθυράμβοις. κεῖται δ᾽ ἐγγὺς αὐλίδος. ἔνιοι δὲ τὰς ὑσίας, ὑ-
ρίην λέγεσθαί φασι. τῆς παρασωπίας οὖσαν ὑπὸ τῷ κιθαιρῶνι. πλησίον ἐρυθρῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ.
ἄποικοι ὑριέων. κτίσμα δὲ νυκτέως, τοῦ ἀντιόπης πατρός. εἰσὶ δὲ καὶ ἐν τῇ ἀργείᾳ ὑσιαί. οἱ δ᾽ ἐξ αὐτῶν
ὑσιᾶται λέγονται. τῶν δ᾽ ἐρυθρῶν τούτων, ἄποικοι, αἱ ἐν ἰωνίδι ἐρυθραί. καὶ αἰολέων δὲ κώμη ταναγρι-
κὴ, ἀπὸ τῶν ἐλαιῶν ὠνομασμένη. μετὰ δὲ σαλγανέα ἀνθηδὼν πόλις λιμένα ἔχουσα, ἐσχάτη τῆς βοιω-
τιακῆς παραλίας τῆς πρὸς εὔβοιαν. καθάπερ καὶ ὁ ποιητὴς εἴρηκεν.

» Ἀνθηδόνα τε ἐσχατόωσαν. Εἰσὶ μέντοι ἔτι, καὶ προϊόντι μικρὸν, πολίχναι δύο τῶν
βοιωτῶν. λαρύμνα τε παρ᾽ ἣν ὁ κηφισσὸς ἐκδίδωσι, καὶ ἔτι ἐπέκεινα ἄλλαι ὁμώνυμοι τοῖς ἀττικοῖς δή-
μοις. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην κεῖσθαι φασὶν αἰγὰς τὰς ἐν εὐβοίᾳ. ἐν αἷς τὸ τοῦ ποσειδῶνος ἱερὸν
τοῦ αἰγαίου, ἐμνήσθημεν δ᾽ αὐτοῦ καὶ πρότερον. δίαρμα δ᾽ ἐστὶν ἀπὸ μὲν τῆς ἀνθηδόνος εἰς αἰγὰς, ἑκατὸν
εἴκοσι στάδιοι. ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων τόπων, πολὺ ἐλάττους. κεῖται δ᾽ ἐπὶ ὄρους ὑψηλοῦ τὸ ἱερόν. ἦν δέ ποτε
καὶ πόλις. ἐγγὺς δὲ τῶν αἰγῶν, καὶ αἱ ὀροβίαι. ἐν δὲ τῇ ἀνθηδονίᾳ μεσσάπιον ὄρος, ἐστὶν, ἀπὸ μεσσάπου. ὃς
εἰς τὴν ἰαπυγίαν ἐλθὼν, μεσσαπίαν τὴν χώραν ἐκάλεσεν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ περὶ τὸν γλαῦκον μυθεύε-
ται τὸν ἀνθηδόνιον. ὃν φασὶν εἰς κῆτος μεταβαλεῖν. πλησίον δ᾽ ἐστὶν ἀνθηδόνος ἱεροπρεπὴς τόπος τῆς
βοιωτίας, ἴχνη πόλεως ἔχων ὁ καλούμενος ἴσος, συστέλλοντι τὴν πρώτην συλλαβήν. οἴονται δέ τινες

» Ἴσαν τε ζαθέην. ἀνθηδόνα τ᾽ ἐσχατόωσαν. (δεῖν γράφειν.

ἐκτείνοντες τὴν πρώτην συλλαβὴν ποιητικῶς διὰ τὸ μέτρον. ἀντὶ τοῦ νίσαν τε ζαθέην. ἡ γὰρ νῖσα
οὐδαμοῦ φαίνεται τῆς βοιωτίας, ὡς φησιν ἀπολλόδωρος ἐν τοῖς περὶ νεῶν. ὥστ᾽ οὐκ ἂν εἴη, εἰ μὴ τὴν

νίσαν οὕτως

νίσαν οὕτως εἴρηκεν. ἦν γὰρ ὁ ἶσος πόλις ἐν τῇ μεγαρικῇ. ἐκεῖθεν ἀπῳκισμένη πρὸς--- ἀνθῶνος
ἐκλέλειπται δὲ νῦν. τινὲς δὲ γράφουσι

» Κρεῦσάν τε ζαθέην.

Τὴν νῦν κρέουσαν δεχόμενοι, τὸ τῶν θεσπιέων ἐπίνειον ἐν τῷ κρισαίῳ κόλπῳ ἱδρυμένον. ἄλλοι
δὲ φηρὰς τε ζαθέας. ἔτι δὲ τῆς τετρακώμης τῆς περὶ τάναγραν ἐλεῶνος ἅρματι μυκαλησσοῦ φω-
ρῶν. γράφουσι δὲ καὶ οὕτω. νίσαν τε ζαθέην. κώμη δ᾽ ἐστὶ τοῦ ἑλικῶνος ἡ νίσα. ἡ μὲν οὖν παραλία τοιαύ-
τη τις ἡ πρὸς εὔβοιαν. τὰ δ᾽ ἑξῆς ἐν τῇ μεσογαίᾳ πεδία ἐστὶ κοῖλα πάντοθεν ἐκ τῶν ἄλλων μερῶν ὄ-
ρεσι περικλειόμενα. τοῖς ἀττικοῖς μὲν πρὸς νότον. πρὸς ἄρκτον δὲ τοῖς φωκικοῖς. ἀπὸ δὲ τῆς ἑσπέρας
ὁ κιθαιρὼν λοξὸς, ἐμπίπτει μικρὸν ὑπὲρ τῆς κρισαίας θαλάττης. ἔχων τὴν ἀρχὴν συνεχῆ τοῖς με-
γαρικοῖς καὶ τοῖς ἀττικοῖς ὄρεσιν. εἶτ᾽ ἐπιστρέφων εἰς τὰ πεδία. παυόμενος δὲ περὶ τὴν θηβαίαν. τῶν
δὴ πεδίων τούτων, τὰ μὲν λιμνάζει ποταμῶν ἀναχεομένων εἰς αὐτά. τῶν δ᾽ ἐμπιπτόντων, εἶτα ἐκρύ-
σεις λαμβανόντων, τὰ μὲν ἀνέψυκται. τὰ δὲ, καὶ γεωργεῖται παντοδαπῶς διὰ τὴν εὐκαρπίαν. ὑπάν-
τρου δὲ καὶ συραγγώδους οὔσης κατὰ βάθος τῆς γῆς, σεισμοὶ γενόμενοι πολλάκις ἐξαίσιοι, τοὺς μὲν, ἔ-
φραξαν τῶν πόρων. τοὺς δὲ, ἀνέῳξαν. τοὺς μὲν, μέχρι τῆς ἐπιφανείας, τοὺς δὲ διὰ ὑπονόμων, συμβαί-
νει δὴ καὶ τοῖς ὕδασι, τοῖς μὲν δι᾽ ὑπονόμων φέρεσθαι τὰ ῥεῖθρα. τοῖς δ᾽ ἐπιπολῆς, τοῖς τε λιμναίοις, καὶ
τοῖς ποταμίοις. ἐγχωσθέντων δὲ κατὰ βάθος τῶν πόρων, αὔξεσθαι λίμνας συμβαίνει μέχρι τῶν
οἰκουμένων τόπων, ὥς τε καὶ πόλεις καταπίνεσθαι καὶ χώρας. ἀνοιχθέντων δὲ τῶν αὐτῶν, ἢ ἄλλων, ἀ-
νακαλύπτεσθαι καὶ τοὺς αὐτοὺς τόπους ποτὲ μὲν πλεῖσθαι. ποτὲ δὲ πεζεύεσθαι, καὶ τὰς αὐτὰς πό-
λεις, ποτὲ μὲν ἐπὶ τῇ λίμνῃ, ποτὲ δ᾽ ἄποθεν, κεῖσθαι. διττῶς δὲ τοῦτο δυνατόν. ἢ γὰρ μενουσῶν ἀκινήτων
τῶν πόλεων ὅταν ἡ αὔξησις τῶν ὑδάτων ἥττων, ἢ τῆς ὑπερχύσεως, διὰ τὸ ὕψος τῶν οἰκήσεων, ἢ διὰ ἀπό-
στασιν, καὶ διὰ ἀνοικισμὸν, ὅταν τῷ πλησιασμῷ κινδυνεύσαντες πολλάκις ἀπαλλαγὴν ποιήσωνται
τοῦ φόβου, τὴν μετάληψιν τῶν χωρίων τῶν ἄποθεν, ἢ τῶν ἐν ὕψει. παρακολουθεῖ δὲ τοῖς οὕτως ἀνοικισθεῖσι,
τὸ τὴν αὐτὴν προσηγορίαν φυλάττειν, ἐτύμως πρότερον λεγομένοις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τοπικῶς. νῦν
μηκέτ᾽ ἔχουσιν ὡς πρότερον, πλαταιὰς γὰρ ἀπὸ τῆς πλάτης τῶν κωπῶν εἰρῆσθαι πιθανόν. καὶ πλαταιέας
τοὺς ἀπὸ κωπηλασίας ζῶντας. ἀλλὰ νῦν ἄπωθεν τῆς λίμνης οἰκοῦντες, οὐκέτ᾽ ἂν προσαγορεύοιντο ἐτύμως.
ἕλος τε καὶ ἑλεὼν, καὶ εἰλέσιον ἐκλήθη διὰ τὸ ἐπὶ τοῖς ἕλεσιν ἱδρύσθαι. νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔχει τὰ πάν-
τα, ἢ ἀνοικισθέντων, ἢ τῆς λίμνης ἐπὶ πολὺ ταπεινωθείσης, διὰ τὰς ὕστερον γενομένας ἐκρύσεις. καὶ ἔστι τοῦ-
το δυνατὸν, δηλοῖ δὲ καὶ ὁ κηφισσὸς τοῦτο μάλιστα. τὴν κωπαΐδα λίμνην πληρῶν. αὐξομένης γὰρ αὐ-
τῆς ὥς τε κινδυνεύειν καταποθῆναι τὰς κώπας, ὅ, τε ποιητὴς ὀνομάζει. καὶ ἀπ᾽ αὐτῶν ἡ λίμνη τὴν
ἐπωνυμίαν εἴληφε. χάσμα δὲ γενηθὲν πρὸς τῇ λίμνῃ πλησίον τῶν κωπῶν. ἀνέῳξεν ὑπὸ γῆς ῥεῖθρον
ὅσον τριάκοντα σταδίων. καὶ ἐδέξατο τὸν ποταμόν. εἶτα ἐξέρρηξεν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν κατὰ λαρίμναν
τῆς λοκρίδος, τὴν ἄνω. καὶ γὰρ ἑτέρα ἐστὶν ἧς εἴπομεν ἐπὶ τῇ θαλάσσῃ ἡ βοιωτική. ἣν προσέθεσαν ῥω-
μαῖοι τὴν ἄνω. καλεῖται δ᾽ ὁ τόπος ἀγχόη. ἔστι δὲ λίμνη ὁμώνυμος. ἐντεῦθεν δ᾽ ἤδη ὁ κηφισσὸς ἐκδί-
δωσιν ἐπὶ τὴν θάλατταν. τότε μὲν οὖν παυσαμένης τῆς πλημμυρίδος, παῦλα καὶ τοῦ κινδύνου τοῖς
παροικοῦσιν ὑπῆρξε. πλὴν τῶν ἤδη καταποθεισῶν πόλεων. πάλιν δ᾽ ἐγχουμένων τῶν πόρων, ὁ μεταλ-
λευτὴς κράτης ἀνὴρ χαλκιδεὺς ἀνακαθαίρειν τὰ ἐμφράγματα ἐπαύσατο, στασιασάντων τῶν βοιω-
τῶν. καίπερ ὡς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς ἀλέξανδρον ἐπιστολῇ φησιν, ἀνεψυγμένων ἤδη πολλῶν. ἐν οἷς οἱ μὲν,
τὸν ὀρχομενὸν οἰκεῖσθαι τὸν ἀρχαῖον ὑπελάμβανον. οἱ δ᾽ ἐλευσῖνα, καὶ ἀθήνας παρὰ τὸν τρίτωνα πο-
ταμὸν, λέγεται καὶ κατὰ κέκροπα. ἡνίκα τῆς βοιωτίας ὑπῆρξε καλουμένης τότε ὠγυγίας. ἀφανι-
σθῆναι δὲ ταύτας ἐπικλυσθείσας ὕστερον. γενέσθαι δέ φασι καὶ κατὰ ὀρχομενὸν χάσμα. καὶ δέξασθαι
τὸν μέλανα ποταμὸν τὸν ῥέοντα διὰ τῆς ἁλιαρτίας, καὶ ποιοῦντα ἐνταῦθα τὸ ἕλος τὸ φῦον τὸν αὐλη-
τικὸν κάλαμον. ἀλλ᾽ οὗτος ἠφάνισται τελέως. εἴτε τοῦ χάσματος διαχέαντος αὐτὸν εἰς ἀδήλους πόρους,
εἴτε τῶν περὶ ἁλίαρτον ἑλῶν καὶ λιμνῶν προσαναλισκόντων αὐτόν. ἀφ᾽ ὧν ποιήεντα καλεῖ τὸν τό-
πον ὁ ποιητής. καὶ ποιήεντ᾽ ἁλίαρτον λέγων. οὗτοι μὲν ἐκ τῶν φωκικῶν ὀρῶν οἱ ποταμοὶ καταφέρον-
ται. ὧν ὁ κηφισσὸς ἐκ λιλαίας φωκικῆς πόλεως τὴν ἀρχὴν λαμβάνει, καθάπερ καὶ ὅμηρος φησίν. »
Οἵ τε λίλαιαν ἔχον πηγῆς ἔπι κηφισσοῖο. Διὰ ἐλατείας δὲ ῥυεὶς μεγίστης τῶν ἐν φωκεῦσι πόλεων, καὶ διὰ
παρὰ ποταμίων, καὶ φανοτέων ὁμοίως φωκικῶν πολισμάτων, εἰς χαιρώνειαν τῆς βοιωτίας πρόεισιν.
εἶτα διὰ τῆς ὀρχομενίας, καὶ τῆς κορωνιακῆς εἰς τὴν κωπαΐδα λίμνην ἐξίησι. καὶ ὁ περμησσὸς δὲ καὶ
ὁ ὀλμειὸς ἐκ τοῦ ἑλικῶνος συμβάλλοντες ἀλλήλοις, εἰς τὴν αὐτὴν ἐμπίπτουσι λίμνην τὴν κωπαΐδα τοῦ
ἁλιάρτου πλησίον, καὶ τὰ τούτου δὲ ῥεύματα, εἰς αὐτὴν ἐμβάλλει. ἔστι μὲν οὖν μεγάλη, τὴν περίμετρον
ἔχουσα, ὀγδοήκοντα καὶ τριακοσίων σταδίων. αἱ δ᾽ ἐκρύσεις οὐδαμοῦ φαίνονται πλὴν τοῦ δεχομένου
τὸν κηφισσὸν χάσματος καὶ τῶν ἑλῶν, μεταξὺ κειμένων λειμώνων, ἔστιν ἥ τε τρεφυλία. καὶ ἡ κωπαΐς.

» Ὅς ῥ᾽ ἐν ὕλῃ ναίεσκε μέγα πλούτοιο μεμηλὼς, (μέμνηται καὶ ὅμηρος.
» λίμνῃ κεκλιμένος κηφισίδι.

Οὐ γὰρ λίμνην τὴν κωπαΐδα βούλεται λέγειν, ὡς οἴονταί τινες· ἀλλὰ τὴν ὑλικὴν προσαγορευομένην, τῇ προσῳδίᾳ ὡς λυρικὴν ἀπὸ τῆς πλησίον πόλεως, ἣν καλοῦσιν ὕλας· ὡς λύρας καὶ θύρας· οὔτε ὕδην ὡς ἔνιοι γράφουσιν· ὃς ῥ' ἐν ὕδῃ ναιέσκεν· ἡ μὲν γάρ ἐστιν ἐν λυδίᾳ· τμώλῳ ὑπὸ νιφόεντι, ὕδης ἐν πίονι δήμῳ, ἡ δὲ, βοιωτική. ἐπιφέρει γοῦν τῷ λίμνῃ κεκλιμένος κηφισίδι, πὰρ δέ οἱ ἄλλοι ναῖον βοιωτοί· ἡ μὲν γάρ ἐστι μεγάλη καὶ οὐκ ἐν τῇ θηβαΐδι· καὶ μικρὰ ἐκεῖθεν διὰ ὑπονόμων πληρουμένη, κειμένη μεταξὺ θηβῶν καὶ ἀνθηδόνος· ὅμηρος δ' ἑνικῶς ἐκφέρει· ποτὲ μὲν ἐκτείνων τὴν πρώτην συλλαβὴν, ὡς ἐν τῷ καταλόγῳ· οἵ θ' ὕλην καὶ πετεῶνα· ποιητικῶς· ποτὲ δὲ συστέλλων· ὃς ῥ' ἐν ὕλῃ ναίεσκεν ὁ τύχιος,

» Σκυτοτόμων ὄχ' ἄριστος ὕλῃ ἔνι οἰκία ναίων.

Οὐ δ' ἐνταῦθα δὲ γραφόντων τινῶν ὕδῃ ἔνι. οὐ γὰρ ὁ αἴας ἐκ τῆς λυδίας τὸ σάκος μετεπέμπετο.---

λίμναι τὴν τάξιν τῶν ἐφεξῆς τόπων.---

λόγῳ περιληφθῆναι σαφῶς ὅτι-- τοῖς ὀνόμασι τῶν τόπων. τήν τε-- χαλεπὸν φησὶν ἐν τούτοις καὶ ἀσήμοις τοῖς πλείστοις, καὶ ἐν μεσογαίᾳ· μηδαμοῦ τῇ τάξει διαπεσεῖν· ἡ παραλία δ' ἔχει τι πλεονέκτημα πρὸς τοῦτο· καὶ γνωριμώτεροι οἱ τόποι καὶ ἡ θάλαττα, τό γε ἑξῆς ὑπαγορεύει βέλτιον, διόπερ καὶ ἡμεῖς ἐκεῖθεν πειρώμεθα-- ἐνταῦθα δ' ἐάσαντες τοῦτο τῷ--

ἀριθμήσει προστιθέντες ὅ,τι ἂν χρήσιμον ᾖ.-- ἡμῖν. ὑπ' ἐκείνου δὲ παραληφθὲν ἄρχεται-- Καὶ τῆς αὐλίδος. περὶ ὧν εἰρήκαμεν. σχοῖνος δ' ἐστὶ, χώρα τῆς θηβαϊκῆς κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐπὶ ἀνθηδόνος· διέχουσα θηβῶν ὅσον πεντήκοντα σταδίους· ῥεῖ δὲ καὶ ποταμὸς δι' αὐτῆς σχοινοῦς· σκῶλος δ' ἐστὶ κώμη τῆς παρασωπίας ὑπὸ τῷ κιθαιρῶνι· δυσοίκητος τόπος καὶ τραχύς· ἀφ' οὗ καὶ ἡ παροιμία.

» Εἰς σκῶλον μήτ' αὐτὸς εἶναι μήτ' ἄλλῳ ἕπεσθαι.

Καὶ τὸν πενθέα δὲ ἐνθένδε καταγόμενον διασπασθῆναι φασίν. ἦν δὲ καὶ τῶν περὶ ὄλυνθον πόλεων ὁμώνυμος αὐτῇ σκῶλος. εἴρηται δ' ὅτι παρασώπιοι, καὶ κώμη τις καλεῖται ἐν ἡρακλείᾳ τῇ τραχινίᾳ. παρ' ἣν ῥεῖ ἀσωπὸς ποταμὸς, καὶ ὅτι ἐν σικυῶνι ἄλλος ἐστὶ ποταμὸς ἀσωπός. καὶ ἡ χώρα ἀσωπία· δι' ἧς ῥέουσι καὶ οἱ ἄλλοι ποταμοὶ ὁμώνυμοι τῷ ποταμῷ τούτῳ. ὁ ἐτεωνὸς δὲ σκάφλαι μετωνομάσθη. καὶ αὕτη δὲ τῆς παρασωπίας. ὁ γὰρ ἀσωπὸς καὶ ὁ ἰσμηνὸς διὰ τοῦ πεδίου ῥέουσι τοῦ πρὸ τῶν θηβῶν. ἔστι δὲ καὶ ἡ δίρκη κρήνη, καὶ πότνια· ἐφ' ὧν μυθεύεται τὰ περὶ τὸν ποτνιέα γλαῦκον, τὸν διασπασθέντα ὑπὸ τῶν ποτνιάδων ἵππων τῆς πόλεως πλησίον. καὶ ὁ κιθαιρὼν δὲ οὐκ ἄποθεν τῶν θηβῶν τελευτᾷ. παρ' αὐτὸν δὲ ὁ ἀσωπὸς ῥεῖ. τὴν ὑπώρειαν αὐτοῦ κλύζων, καὶ ποιῶν τοὺς παρασωπίους εἰς κατοικίας πλείονας διῃρημένους· ἅπαντας δ' ὑπὸ θηβαίοις ὄντας. ἕτεροι δ' ἐν τῇ πλαταιέων φασὶ τόν τε σκῶλον καὶ τὸν ἐτεωνὸν καὶ τὰς ἐρυθράς· καὶ γὰρ παρὰ πλαταιὰς, καὶ παρὰ τάναγραν ἐκδίδωσιν· ἐν δὲ τῇ θηβαίων εἰσὶ, καὶ αἱ θεράπναι· καὶ ὁ τευμησός· ὃν ἐκόσμησεν ἀντίμαχος διὰ πολλῶν ἐπῶν. τὰς μὴ προσούσας ἀρετὰς διαριθμούμενος.

» Ἔστι τις ἠνεμόεις ὀλίγος λόφος.

Γνώριμα δὲ τὰ ἔπη, θέσπειαι δὲ πλέον τὰς νῦν θεσπιὰς πολλῶν ὀνομάτων. τῶν μὲν, ἀμφοτέρως λεγομένων καὶ ἑνικῶς καὶ πληθυντικῶς· καθάπερ καὶ ἀρρενικῶς καὶ θηλυκῶς· τῶν δ' ὁποτέρως. ἔστι δὲ πόλις πρὸς τῷ ἑλικῶνι. νοτιωτέρα αὐτοῦ. ἐπικειμένη δὲ τῷ κρισαίῳ κόλπῳ, καὶ αὐτὴ καὶ ὁ ἑλικών. ἐπίνειον δ' ἔχουσιν, αἱ θεσπιαὶ, κρέουσαν. ἣν καὶ κρεουσίαν καλοῦσιν. ἐν δὲ τῇ τῶν θεσπιέων ἔστι καὶ ἡ ἄσκρη, κατὰ τὸ πρὸς ἑλικῶνα μέρος, ἡ τοῦ ἡσιόδου πατρίς. ἐν δεξιᾷ γάρ ἐστι τοῦ ἑλικῶνος. ἐφ' ὑψηλοῦ καὶ τραχέος τόπου κειμένη. ἀπέχουσα τῶν θεσπιῶν ὅσον τετταράκοντα σταδίους. ἣν κεκωμῴδηκεν αὐτὸς ἐκεῖνος περὶ τοῦ πατρὸς λόγων. ὅτι ἐκ κύμης τῆς αἰολίδος.

» Νάσσατο δ' ἄγχ' ἑλικῶνος ὀϊζυρῇ ἐνὶ κώμῃ.

» Ἄσκρῃ χεῖμα κακῇ, θέρει ἀργαλέῃ· οὐδέποτ' ἐσθλῇ.

Ὁ δ' ἑλικὼν συνεχής ἐστι τῇ φωκίδι ἐκ τῶν πρὸς ἄρκτον αὐτῆς μερῶν. μικρὰ δὲ καὶ ἐκ τῶν πρὸς ἑσπέραν καὶ τὸν ὕστατον λιμένα τῆς φωκίδος, ὃν καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος μυχόν, ὑπέρκειται γὰρ κατὰ τοῦτον μάλιστα τὸν λιμένα τοῦ κρισαίου κόλπου, καὶ ὁ ἑλικὼν καὶ ἡ ἄσκρη. καὶ ἔτι αἱ θέσπειαι, καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτῆς ἡ κρέουσα. τοῦτο δὲ καὶ κοιλότατον νομίζεται τὸ μέρος τοῦ κρισαίου κόλπου. καὶ ἁπλῶς τοῦ κορινθιακοῦ. στάδιοι δ' εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ λιμένος εἰς κρέουσαν ἐν,--

ἐντεῦθεν δὲ ἑκατὸν εἴκοσι, ἕως τῆς ἄκρας ἣν-- καλοῦσιν. ἐν δὲ τῷ κοιλοτάτῳ τοῦ κόλπου τούτου, συμβέβηκε τὰς πηγὰς κεῖσθαι καὶ τὴν οἰνόην. περὶ ἧς εἰρήκαμεν. ὁ μὲν οὖν ἑλικὼν οὐ πολὺ διεστηκὼς τοῦ παρνασοῦ ἐνάμιλλός ἐστιν ἐκείνῳ, κατά τε ὕψος καὶ περίμετρον. ἄμφω γὰρ χιονόβολα τὰ ὄρη, καὶ πετρώδη. περιγράφεται δ' οὐ πολλῇ χώρα. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ τό τε τῶν μουσῶν ἱερὸν, καὶ ἡ ἵππου κρήνη, καὶ τὸ τῶν λιβηθρίδων νυμφῶν ἄντρον. ἐξ οὗ τεκμαίροιτ' ἄν τις, θρᾷκας εἶναι τοὺς τὸν ἑλικῶνα ταῖς μούσαις

καταθορυβήσαντας. οἱ καὶ τὴν πιερίαν καὶ τὸ λείβηθρον, καὶ τὴν πίμπλειαν τοῖς αὐτοῖς θεαῖς ἀνέδειξαν. ἐκαλοῦντο δὲ πίερες. ἐκλιπόντων δ' ἐκείνων, μακεδόνες νῦν ἔχουσι τὰ χωρία ταῦτα. εἴρηται δ' ὅτι τὴν βοιωτίαν ταύτην ἐπῴκησάν ποτε θρᾷκες βιασάμενοι τοὺς βοιωτούς, καὶ πελασγοὶ, καὶ ἄλλοι βάρβαροι. αἱ δὲ θεσπιαὶ, πρότερον μὲν ἐγνωρίζοντο διὰ τὸν ἔρωτα τὸν πραξιτέλους. ὃν ἔγλυψε μὲν ἐκεῖνος. ἀνέθηκε δὲ γλυκέρα ἡ ἑταίρα θεσπιεῦσιν ἐκεῖθεν οὖσα τὸ γένος. λαβοῦσα δῶρον παρὰ τοῦ τεχνίτου. πρότερον μὲν οὖν ὀψόμενοί τινες τὸν ἔρωτα ἀνέβαινον ἐπὶ τὴν θέαν, ἄλλως οὐκ οὖσαν ἀξιοθέατον. νυνὶ δὲ μόνη συνέστηκε τῶν βοιωτικῶν πόλεων καὶ τάναγρα. τῶν δ' ἄλλων ἐρείπια, καὶ ὀνόματα λέλειπται. ταῖς δὲ θεσπιαῖς ὁ ποιητὴς καταλέγει γραῖαν καὶ μυκαλησσόν. περὶ ὧν εἰρήκαμεν. ὡς δ' αὔτως καὶ περὶ τῶν ἄλλων.

» Οἵ τ' ἄρ' ἀμφ' ἅρμ' ἐνέμοντο καὶ εἰλέσιον, καὶ ἐρυθράς.

» Εἶχον ἠδ' ὕλην καὶ πετεῶνα.

Πετεὼν δὲ κώμη τῆς θηβαΐδος ἐγγὺς τῆς ἐπ' ἀνθηδόνα ὁδοῦ. ἡ δ' ὠκαλέη μέση ἁλιάρτου καὶ ἀλαλκομενίου. ἑκατέρου τριάκοντα σταδίους ἀπέχουσα. παραρρεῖ δ' αὐτὴν ποταμὸν ὁμώνυμον, μεδεὼν δ' ὁ μὲν φωκικὸς ἐν τῷ κρισαίῳ κόλπῳ, διέχων βοιωτίας σταδίους ἑκατὸν ἑξήκοντα. ὁ δὲ βοιωτικὸς ἀπ' ἐκείνου κέκληται. πλησίον δ' ἐστὶν ὀγχηστοῦ ὑπὸ τῷ φοινικίῳ ὄρει. ἀφ' οὗ καὶ μετωνόμασται φοινικῆς. τῆς δὲ θηβαΐας, καὶ τοῦτο λέγεται. πετεὼν δὲ τῆς ἁλιαρτίας, καὶ μεδεὼν, καὶ ὠκαλέαι. εἶτα φησὶν ὅμηρος κώπας.

» Εὔτρησίν τε πολυτρήρωνά τε θίσβην.

Περὶ μὲν οὖν κωπῶν εἴρηται. προσάρκτιος δ' ἐστὶν αὕτη τῇ κωπαΐδι λίμνῃ. αἱ δ' ἄλλαι κύκλῳ εἰσίν. αἱ δὲ ἀκραιφίαι, φοινικὶς, ὀγχηστὸς, ἁλίαρτος. ὠκάλαι. ἀλαλκομεναὶ, τιλφούσιον. κορώνεια. καὶ τό γε παλαιὸν οὐκ ἦν τῆς λίμνης κοινὸν ὄνομα. ἀλλὰ καθ' ἑκάστην πρὸς αὐτῇ κατοικίαν ἐκείνης ἐπώνυμος ἐλέγετο, κωπαῒς μὲν τῶν κωπῶν. ἁλίαρτος δὲ ἁλιάρτου, καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων. ὕστερον δ' ἡ πᾶσα κωπαῒς ἐλέχθη, κατ' ἐπικράτειαν. κοιλότατον γὰρ τοῦτο τὸ χωρίον φησὶ πίνδαρος. καὶ κηφισσίδα καλεῖ ταύτην. παρατίθησι γοῦν τὴν τιλφῶσσαν κρήνην ὑπὸ τῷ τιλφωσσίῳ ὄρει ῥέουσαν πλησίον ἁλιάρτου καὶ ἀλαλκομενῶν. ἐφ' ᾗ τὸ τοῦ τειρεσίου μνῆμα. αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ τοῦ τιλφωσσίου ἀπόλλωνος ἱερόν. ὁ δὲ ποιητὴς ἐφεξῆς ταῖς κώπαις, εὔτρησιν τίθησι κώμιον θεσπιέων. ἐνταῦθα φασὶ ζῆθον, καὶ ἀμφίωνα οἰκῆσαι πρὶν βασιλεῦσαι θηβῶν. ἡ δὲ θίσβη θίσβαι νῦν λέγονται. οἰκεῖται δὲ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάσσης ὅμορον θεσπιεῦσι τὸ χωρίον, καὶ τῇ κορωνιακῇ. ὑποπεπτωκὸς ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τῷ ἑλικῶνι καὶ αὐτό. ἐπίνειον δ' ἔχει πετρῶδες περιστερῶν μεστόν. ἀφ' οὗ φησιν ὁ ποιητὴς πολυτρήρωνά τε θίσβην. πλοῦς δ' ἐστὶν ἐνθένδε εἰς σικυῶνα σταδίων ἑκατὸν ἑξήκοντα, ἑξῆς δὲ κορώνειαν καταλέγεται καὶ ἁλίαρτον, καὶ πλαταιὰς καὶ γλισσάντα. ἡ μὲν οὖν κορώνεια, ἐγγὺς τοῦ ἑλικῶνος ἐστὶν ἐφ' ὕψους ἱδρυμένη. κατελάβοντο δ' αὐτὴν ἐπανιόντες ἐκ τῆς θετταλικῆς ἄρνης οἱ βοιωτοὶ μετὰ τὰ τρωϊκὰ, ὅτε περ καὶ τὸν ὀρχομενὸν ἔσχον. κρατήσαντες δὲ τῆς κορωνείας ἐν τῷ πρὸ αὐτῆς πεδίῳ, τὸ τῆς ἰωνίας ἀθηνᾶς ἱερὸν ἱδρύσαντο. ὁμώνυμον τῷ θετταλικῷ. καὶ τὸν παραρρέοντα ποταμὸν κουάριον προσηγόρευσαν, ὁμοφώνως τῷ ἐκεῖ. ἀλκαῖος δὲ καλεῖ κωράλιον λέγων. ἆσσ' ἀθαάα ἀπολε--
ἀπὸ κορωνείας ἐπὶ δαι---

» Ναύοιθεν ἀμφὶ κωραλίω ποταμῶ παρ' ὄχθαις.

Ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ παμβοιώτια συνετέλουν. συγκαθίδρυται δὲ τῇ ἀθηνᾷ ὁ ἅδης, κατά τινα ὥς φασι μυστικὴν αἰτίαν. οἱ μὲν οὖν ἐν τῇ κορωνείᾳ κορώνιοι λέγονται. οἱ δ' ἐν τῇ μεσσηνιακῇ κορωνεῖς. ἁλίαρτος δὲ νῦν οὐκέτι ἐστὶ κατασκαφεῖσα ἐν τῷ πρὸς περσέα πολέμῳ. τὴν χώραν δ' ἔχουσιν ἀθηναῖοι δόντων ῥωμαίων. ἔκειτο δὲ ἐν στενῷ χωρίῳ μεταξὺ ὑπερκειμένου ὄρους, καὶ τῆς κωπαΐδος λίμνης πλησίον τοῦ περμησσοῦ, καὶ τοῦ ὀλμείου, καὶ τοῦ ἕλους τοῦ φύοντος τὸν αὐλητικὸν κάλαμον. πλαταιαὶ δὲ ἃς ἑνικῶς εἶπεν ὁ ποιητὴς, ὑπὸ τῷ κιθαιρῶνι εἰσὶ μεταξὺ αὐτοῦ, καὶ θηβῶν. κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν εἰς ἀθήνας καὶ μέγαρα ἐπὶ τῶν ὅρων τῶν τῆς ἀττικῆς, καὶ τῆς μεγαρίδος. εἰσὶ γὰρ ἐλευθεραὶ πλησίον. ἃς οἱ μὲν, τῶν πλαταιῶν. οἱ δὲ, τῆς βοιωτίας φασίν. εἴρηται δ' ὅτι παραρρεῖ τὰς πλαταιὰς ὁ ἀσωπός. ἐνταῦθα μαρδόνιον καὶ τὰς τριάκοντα μυριάδας περσῶν αἱ τῶν ἑλλήνων δυνάμεις ἄρδην ἠφάνισαν. ἱδρύσαντό τε ἐλευθερίου διὸς ἱερόν. καὶ ἀγῶνα γυμνικὸν στεφανίτην ἀπέδειξαν, ἐλευθέρια προσαγορεύσαντες. ταφή τε δείκνυται δημοσία τῶν τελευτησάντων ἐν τῇ μάχῃ. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ σικυωνίᾳ δῆμος πλαταιαί. ὅθεν περ ἦν μνασάλκης ὁ ποιητὴς μνασάλκεος. τὸ μνῆμα τὸ πλαταιάδα. γλισσάντα δὲ λέγει κατοικίαν ἐν τῷ ὑπάτῳ ὄρει. ὅ ἐστιν ἐν τῇ θηβαϊκῇ πλησίον τευμησσοῦ, καὶ τῆς καδμείας. γεώλοφα καλεῖται δρι-- πίπτει τὸ ἄονιον καλούμενον πεδίον. ὃ διατείνει ἀπὸ τοῦ ὑπάτου ὄρους. τὸ δ' οὔπω ῥηθὲν, οἵ θ' ὑποθήβας εἶχον, οἱ μὲν, δέχονται πολίδιόν τι ὑποθήβας καλούμενον. οἱ δὲ, τὰς ποτνίας. τὰς γὰρ θήβας ἐκλελεῖφθαι διὰ τὴν τῶν ἐπιγόνων στρατείαν, καὶ μὴ μετασχεῖν τοῦ πολέμου τοῦ τρωϊκοῦ. οἱ δὲ, μετασχεῖν μὲν, οἰκεῖν δὲ ὑπὸ τῇ καδμείᾳ τό τε

ἐν τοῖς ὑπὸ πέλοψι χωρίοις, μετὰ τὴν τῶν ἐπιγόνων ἔφοδον, τὴν καδμείαν ἀδυνατοῦντας ἀνακτίσαι.
ἐπεὶ δ᾽ ἡ καδμεία ἐκαλεῖτο θῆβαι, ἀπὸ θήβας εἰπεῖν ἀντὶ τοῦ ἀπὸ τῆ καδμεία οἰκοῦντας, τὸν
ποιητὴν τοὺς τότε θηβαίους. ὀγχηστὸς δ᾽ ἐστὶν ὅπου τὸ ἀμφικτυονικὸν συνήγετο ἐν τῇ ἁλιαρτία πρὸς
τῇ κωπαΐδι λίμνῃ, καὶ τῷ τηνερικῷ πεδίῳ. ἐν ὕψει κείμενος ψιλός. ἔχων ποσειδῶνος ἱερὸν καὶ αὐ-
τὸ ψιλόν. οἱ δὲ ποιηταὶ κοσμοῦσιν. ἄλση καλοῦντες τὰ ἱερὰ πάντα κἂν ᾖ ψιλά, τοιοῦτον ἐστὶ καὶ τὸ τοῦ
πινδάρου περὶ τοῦ ἀπόλλωνος λεγόμενον.

» Κινηθεὶς ἐπήει γῆν τε καὶ θάλασσαν.
» Καὶ σκοπιαῖσι μεγάλαις ὀρέων ὕπερ ἔστα.
» Καὶ μυχοὺς δινάσατο βαλλόμενος κρηπῖδας ἄλσεων.

Οὐκ εὖ δὲ ἀλκαῖος ὥσπερ τὸ τοῦ ποταμοῦ ὄνομα ὡς μικρὸν ἀνωτέρω εἴρηται, παρέτρεψε τοῦ κουα-
ρίου. οὕτω καὶ τοῦ ὀγχηστοῦ κατέψευσται πρὸς ταῖς ἐσχατιαῖς τοῦ ἑλικῶνος αὐτὸν τιθείς. ὁ δ᾽ ἐστὶν ἄπω-
θεν ἱκανῶς τούτου τοῦ ὄρους. τὸ δὲ τηνερικὸν πεδίον, ἀπὸ τηνέρου προσηγόρευται. μυθεύεται δ᾽ ἀπόλ-
λωνος υἱὸς ἐκ μελίας, προφήτης τοῦ μαντείου, κατὰ τὸ πτῶον ὄρος. ὅ φησιν εἶναι τρικόρυφον ὁ αὐ-
τὸς ποιητής.

» Καί ποτε τὸν τρικάρανον πτώου κευθμῶνα κατέσχε.

Καὶ τὸν τήνερον καλεῖ ναοπόλον μάντιν δαπέδοισιν ὁμοκλέα. ὑπέρκειται δὲ τὸ πτῶον, τοῦ τη-
νερικοῦ πεδίου καὶ τῆς κωπαΐδος λίμνης πρὸς ἀκραιφίῳ. θηβαίων δ᾽ ἦν τό, τε μαντεῖον καὶ τὸ ὄ-
ρος. τὸ δ᾽ ἀκραίφιον καὶ αὐτὸ κεῖται ἐν ὕψει. φασὶ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι ἄρνην ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ, ὁ-
μώνυμον τῇ θετταλικῇ. οἱ δέ, φασὶ καὶ τὴν ἄρνην ὑπὸ τῆς λίμνης καταποθῆναι καὶ τὴν μίδειαν.
ζηνόδοτος δὲ γράφων.

» Οἵ δὲ πολυστάφυλον ἄσκρην ἔχον,

Οὐκ ἔοικεν ἐντυχεῖν τοῖς ὑπὸ τοῦ ἡσιόδου περὶ τῆς πατρίδος λεχθεῖσι. καὶ τοῖς ὑπ᾽ εὐδόξου πο-
λὺ χείρω λέγοντος περὶ τῆς ἄσκρης. πῶς γάρ ἄν τις πολυστάφυλον τὴν τοιαύτην ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέ-
γεσθαι πιστεύσειεν. οὐκ εὖ δὲ οὔτε οἱ τάρνην ἀντὶ τῆς ἄρνης γράφοντες. οὐδὲ γὰρ μία δείκνυται τάρ-
νη παρὰ βοιωτοῖς. ἐν δὲ λυδοῖς ἐστιν. ἧς καὶ ὅμηρος μέμνηται.

» Ἰδομενεὺς δ᾽ ἄρα φαῖστον ἐνήρατο τέκτονος υἱὸν
» Βώρου, ὃς ἐκ τάρνης ἐριβώλακος εἰληλούθει.

Λοιπαὶ δ᾽ εἰσὶ τῶν μὲν περικειμένων τῇ λίμνῃ αἵ τε ἀλαλκομεναὶ καὶ τὸ τιλφώσιον. τῶν δ᾽ ἄλλων
χαιρώνεια καὶ λεβαδία καὶ λεῦκτρα, περὶ ὧν ἄξιον μνησθῆναι. ἀλαλκομενῶν τοίνυν μέμνηται ὁ ποιη-
τής. ἀλλ᾽ οὐκ ἐν καταλόγῳ. ἥρη τ᾽ ἀργείη καὶ ἀλαλκομενηῒς ἀθήνη. ἔχει δ᾽ ἀρχαῖον ἱερὸν ἀθηνᾶς. σφό-
δρα τιμώμενον. καὶ φασί γε τὴν θεὸν γεγενῆσθαι ἐνταῦθα, καθάπερ καὶ τὴν ἥραν ἐν ἄργει. καὶ διὰ
τοῦτο τὸν ποιητὴν ὡς ἀπὸ πατρίδων τούτων ἀμφοτέρας οὕτως ὀνομάζειν. διὰ τοῦτο δ᾽ ἴσως οὐδ᾽ ἐν τῷ
καταλόγῳ μέμνηται τῶν ἐνταῦθα ἀνδρῶν. ἐπειδὴ ἱεροὶ ὄντες, παρεῖντο τῆς στρατείας. καὶ γοῦν καὶ ἀπόρ-
θητος ἀεὶ διετέλεσεν ἡ πόλις. οὔτε μεγάλη οὖσα οὔτ᾽ ἐν εὐερκεῖ χωρίῳ κειμένη. ἀλλ᾽ ἐν πεδίῳ. τὴν δὲ
θεὸν σεβόμενοι πάντες ἀπείχοντο πάσης βίας. ὥς τε καὶ θηβαῖοι κατὰ τὴν τῶν ἐπιγόνων στρατείαν
ἐκλιπόντες τὴν πόλιν, ἐκεῖσε λέγονται καταφυγεῖν. καὶ εἰς τὸ ὑπερκείμενον ὄρος ἐρυμνὸν τὸ τιλ-
φώσιον. ὑφ᾽ ᾧ τίλφωσσα κρήνη. καὶ τὸ τοῦ τειρεσίου μνῆμα, ἐκεῖ τελευτήσαντος κατὰ τὴν φυγήν. χαι-
ρώνεια δ᾽ ἐστὶν ὀρχομενοῦ πλησίον. ὅπου φίλιππος ὁ ἀμύντου μεγάλως νικήσας ἀθηναίους τε καὶ βοιω-
τοὺς καὶ κορινθίους κατέστη τῆς ἑλλάδος κύριος. δείκνυται δὲ κἀνταῦθα ταφὴ τῶν πεσόντων ἐν τῇ
μάχῃ δημοσία. περὶ δὲ τοὺς τόπους τοὺς αὐτοὺς καὶ ῥωμαῖοι τὰς μιθριδάτου δυνάμεις πολλῶν μυ-
ριάδων κατηγωνίσαντο. ὥστ᾽ ὀλίγους ἐπὶ θάλασσαν σωθέντας φυγεῖν ἐν ταῖς ναυσί. τοὺς δ᾽ ἄλλους
τοὺς μὲν, ἀπολέσθαι. τοὺς δέ, καὶ ἁλῶναι. λεβάδεια δ᾽ ἐστὶν ὅπου διὸς τροφωνίου μαντεῖον ἵδρυται. χά-
σματος ὑπονόμου κατάβασιν ἔχον. καταβαίνει δ᾽ αὐτὸς ὁ χρηστηριαζόμενος. κεῖται δὲ μεταξὺ τοῦ
ἑλικῶνος καὶ τῆς χαιρωνείας, κορωνείας πλησίον. τὰ δὲ λεῦκτρα ἐστίν, ὅπου λακεδαιμονίους μεγά-
λῃ μάχῃ νικήσας ἐπαμινώνδας, ἀρχὴν εὗρε τῆς καταλύσεως αὐτῶν. οὐκέτι γὰρ ἐξ ἐκείνου τὴν τῶν
ἑλλήνων ἡγεμονίαν ἀναλαβεῖν ἴσχυσαν, ἣν εἶχον πρότερον. καὶ μάλιστα ἐπειδὴ καὶ τῇ δευτέρᾳ συμ-
βολῇ τῇ περὶ μαντίνειαν κακῶς ἔπραξαν. τὸ μέντοι μὴ ὑφ᾽ ἑτέροις εἶναι καί περ οὕτως ἐπταικόσι, συ-
νέμεινε μέχρι τῆς ῥωμαίων ἐπικρατείας. καὶ παρὰ τούτοις δὲ τιμώμενοι διατελοῦσι διὰ τὴν τῆς πο-
λιτείας ἀρετήν. δείκνυται δ᾽ ὁ τόπος οὗτος κατὰ τὴν ἐκ πλαταιῶν εἰς θεσπιὰς ὁδόν. ἑξῆς δ᾽ ὁ ποιη-
τὴς μέμνηται τοῦ τῶν ὀρχομενίων καταλόγου. χωρίζων αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ βοιωτικοῦ ἔθνους. καλεῖ δὲ μι-
νύειον τὸν ὀρχομενὸν ἀπὸ ἔθνους τῶν μινυῶν. ἐντεῦθεν δὲ ἀποικῆσαι τινὰς τῶν μινυῶν εἰς ἰωλκὸν φα-
σίν. ὅθεν τοὺς ἀργοναύτας μινύας λεχθῆναι. φαίνεται δὲ τὸ παλαιὸν καὶ πλουσία τις γεγονυῖα πό-
λις, καὶ δυναμένη μέγα. τοῦ μὲν οὖν πλούτου μάρτυς καὶ ὅμηρος. διαριθμούμενος γὰρ τοὺς τόπους
τοὺς πολυχρηματίσαντας φησίν.

» Οὐδ᾽ ὅσ᾽ ἐς ὀρχομενὸν ποτινίσεται· οὐδ᾽ ὅσα θήβας
» Αἰγυπτίας. Τῆς δυνάμεως δὲ ὅτι θηβαῖοι δασμὸν ἐτέλουν τοῖς ὀρχομενίοις καὶ
ἐργίνῳ τῷ τυραννοῦντι αὐτῶν· ὃν ὑφ᾽ ἡρακλέους καταλυθῆναι φασίν· ἐτεοκλῆς δὲ τῶν βασιλευσάν-
των ἐν ὀρχομενῷ τις, χαρίτων ἱερὸν ἱδρυσάμενος, πρῶτος ἀμφότερα ἐμφαίνει, καὶ πλοῦτον καὶ δύ-
ναμιν· ὃς εἴτ᾽ ἐν τῷ λαμβάνειν χάριτας, εἴτ᾽ ἐν τῷ διδόναι κατορθῶν, εἴτε καὶ ἀμφότερα, τὰς θεὰς ἐ-
τίμησε ταύτας. ἀνάγκη γὰρ πρὸς εὐεργεσίαν εὐφυῆ γενόμενον ἐκεῖνον πρὸς τὴν τῶν θεῶν τούτων
ὁρμῆσαι τιμήν· ὥστε ταύτην μὲν ἐκέκτητο ἤδη τὴν δύναμιν. ἀλλὰ πρὸς ταύτῃ καὶ χρημάτων ἔδει.
οὔτε γὰρ μὴ ἔχων τις πολλὰ διδοίη ἂν πολλά, οὔτε λαμβάνων πολλά, οὐκ ἂν ἔχοι πολλά; εἰ δ᾽ ἀμφό-
τερα συνέχει, τὴν ἀμοιβὴν ἔχει· τὸ γὰρ κενούμενον ἅμα καὶ πληρούμενον πρὸς τὴν χρείαν, ἀεὶ πλή-
ρές ἐστιν. ὁ δὲ διδοὺς μέν, μὴ λαμβάνων δέ, οὐδ᾽ ἂν ἐνθάτερα κατορθοίη· παύσεται γὰρ διδούς, ἐ-
πιλείποντος τοῦ ταμείου. παύσονται δὲ καὶ οἱ διδόντες τῷ λαμβάνοντι μόνον, χαριζομένῳ δὲ μηδέν,
ὥστ᾽ οὐδ᾽ οὕτως ἑτέρως ἂν κατορθοίη. ὅμοια δὲ καὶ περὶ δυνάμεως λέγοιτ᾽ ἄν, χωρὶς δὲ τοῦ κοινοῦ λό-
γου, διότι τὰ χρήματ᾽ ἀνθρώποισι τιμιώτατα, δύναμίν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποις ἔχει, καὶ ἐκ τῶν
καθ᾽ ἕκαστα σκοπεῖν χρή. μάλιστα γὰρ τοὺς βασιλέας δύνασθαι φαμέν· διόπερ καὶ δυνάστας προ-
σαγορεύομεν. δύνανται δ᾽ ἄγοντες ἐφ᾽ ἃ βούλονται τὰ πλήθη, διὰ πειθοῦς ἢ βίας. πείθουσι μὲν
οὖν δι᾽ εὐεργεσίας μάλιστα· οὐ γὰρ ἥγε διὰ τῶν λόγων ἐστὶ βασιλική· ἀλλ᾽ αὕτη μὲν ῥητορική. βασιλι-
κὴν δὲ πειθὼ λέγομεν ὅταν εὐεργεσίας φέρωσι καὶ διάγωσιν ἐφ᾽ ἃ βούλονται. πείθουσι μὲν δὴ δι᾽
εὐεργεσιῶν. βιάζονται δὲ διὰ τῶν ὅπλων, ταῦτα δ᾽ ἄμφω χρημάτων ὠνιά ἐστι. καὶ γὰρ στρατείαν
ἔχει πλείστην, ὁ τρέφειν δυνάμενος· καὶ εὐεργετεῖν δύναται πλεῖστον, ὁ πλεῖστα κεκτημένος. λέγουσι
δὲ τὸ χωρίον ὅπερ ἡ λίμνη κατέχει νῦν ἡ κωπαΐς, ἀνεψῦχθαι πρότερον. καὶ γεωργεῖσθαι παντο-
δαπῶς ὑπὸ τοῖς ὀρχομενίοις, ὧν πλησίον οἰκοῦσι. καὶ τοῦτ᾽ οὖν τεκμήριον τιθέασι. τὴν δ᾽ ἀσπληδό-
να, χωρὶς τῆς πρώτης συλλαβῆς ἐκάλουν τινές. εἶτ᾽ εὐδείελος μετωνομάσθη, καὶ αὐτὴ καὶ ἡ χώρα· τά-
χα τι ἰδίωμα προσφερομένη ἐκ τοῦ δειλινοῦ κλίματος οἰκεῖον τοῖς κατοικοῦσι, καὶ μάλιστα τὸ εὐχεί-
μερον. ψυχρότατα μὲν γὰρ τὰ ἄκρα τῆς ἡμέρας ἐστί. τούτων δὲ τὸ δειλινὸν τοῦ ἑωθινοῦ ψυχρότε-
ρον. εἰς ἐπίτασιν γὰρ ἄγει πλησιάζον τῇ νυκτί· τὸ δ᾽ εἰς ἄνεσιν ἀφιστάμενον τῆς νυκτός. ἴαμα δὲ τοῦ ψύ-
χους ὁ ἥλιος. τὸ οὖν ἡλιαζόμενον πλεῖστον ἐν τῷ ψυχροτάτῳ καιρῷ εὐχειμερώτερον. διέχει δὲ τοῦ ὀρ-
χομενοῦ σταδίους εἴκοσι. μεταξὺ δ᾽ ὁ μέλας ποταμός. ὑπέρκειται δ᾽ ὀρχομενίας ὁ πανοπεὺς φωκική
πόλις καὶ ὑάμπολις. τούτοις δ᾽ ὁμορεῖ ὀποῦς, ἡ τῶν λοκρῶν μητρόπολις τῶν ἐπικνημιδίων. πρότε-
ρον μὲν οὖν οἰκεῖσθαι τὸν ὀρχομενόν φασιν ἐπὶ πεδίῳ· ἐπιπολαζόντων δὲ τῶν ὑδάτων ἀνοικισθῆ-
ναι πρὸς τὸ ἀκόντιον ὄρος. παρατεῖνον ἐπὶ ἑξήκοντα σταδίους, μέχρι παραποταμίων τῶν ἐν τῇ φω-
κίδι. ἱστοροῦσι δὲ τοὺς ἐν τῷ πόντῳ καλουμένους ἀχαιοὺς ἀποίκους ὀρχομενίων εἶναι τῶν μετὰ ἰαλ-
μένου πλανηθέντων ἐκεῖσε, μετὰ τὴν τῆς τροίας ἅλωσιν. καὶ περὶ καρύστον δ᾽ ἦν τις ὀρχομενός. εὐπορ
τὴν τοιαύτην ὕλην ὑπὸ βεβλήκασιν ἡμῖν οἱ τὰ περὶ τῶν νεῶν συγγράψαντες. οἷς ἀκολουθοῦμεν
ὅταν οἰκεῖα λέγωσι πρὸς τὴν ἡμετέραν ὑπόθεσιν. μετὰ δὲ τὴν βοιωτίαν καὶ τὸν ὀρχομενόν, ἡ φωκίς ἐστι
πρὸς ἄρκτον παραβεβλημένη τῇ βοιωτίᾳ παραπλησίως ἀπὸ θαλάσσης εἰς θάλασσαν τό γε παλαιόν.
ὁ γὰρ δαφνοῦς ἦν τότε τῆς φωκίδος· σχίζων ἐφ᾽ ἑκάτερα τὴν λοκρίδα. καὶ μέσος ταττόμενος τοῦ τε
ὀπουντίου κόλπου, καὶ τῆς τῶν ἐπικνημιδίων παραλίας. νῦν δὲ λοκρῶν ἐστιν ἡ χώρα. τὸ δὲ πόλισμα
κατέσκαπται. ὥστ᾽ οὐδ᾽ ἐκεῖ καθήκει οὐκέτι μέχρι τῆς πρὸς εὐβοίᾳ θαλάττης ἡ φωκίς. τῷ δὲ κρισ-
σαίῳ κόλπῳ συνῆπται. αὐτὴ γὰρ ἡ κρίσα τῆς φωκίδος ἐστὶν ἐπ᾽ αὐτῆς ἱδρυμένη τῆς θαλάσσης. καὶ
κίρρα. καὶ ἀντίκιρρα. καὶ τὰ ὑπὲρ αὐτῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ συνεχῆ κείμενα χωρία πρὸς τῷ παρνα-
σῷ· δελφοί τε καὶ κίρφις καὶ δαυλίς, καὶ αὐτὸς ὁ παρνασσὸς τῆς τε φωκίδος ὤν, καὶ ἀφορίζων τὸ ἑ-
σπέριον πλευρόν. ὃν τρόπον δ᾽ ἡ φωκὶς τῇ βοιωτίᾳ παράκειται, τοῦτον καὶ ἡ λοκρὶς τῇ φωκίδι ἑκα-
τέρα. διττὴ γάρ ἐστι διῃρημένη ὑπὸ τοῦ παρνασσοῦ δίχα. ἡ μέν, ἐκ τοῦ ἑσπερίου μέρους παρακειμένη τῷ
παρνασσῷ· καὶ μέρος αὐτοῦ νεμομένη. καθήκουσα δ᾽ ἐπὶ τὸν κρισσαῖον κόλπον. ἡ δ᾽ ἐκ τοῦ πρὸς ἕω τελευ-
τῶσα ἐπὶ τὴν πρὸς εὐβοίᾳ θάλασσαν. καλοῦνται δ᾽ οἱ μέν, ἑσπέριοι λοκροὶ καὶ ὀζόλαι. ἔχουσί τε ἐ-
πὶ τῇ δημοσίᾳ σφραγίδι τὸν ἑσπέριον ἀστέρα ἐγκεχαραγμένον. οἱ δ᾽ ἕτεροι δίχα πως καὶ αὐτοὶ διῃρη-
μένοι, οἱ μὲν ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, ὅμοροι φωκεῦσι καὶ βοιωτοῖς. οἱ δ᾽ ἐπικνημίδιοι ἀπὸ ὄ-
ρους κνημῖδος προσεχεῖς οἰταίοις τε καὶ μαλιεῦσιν. ἐν μέσῳ δὲ ἀμφοῖν τῶν τε ἑσπερίων καὶ τῶν ἑτέρων
παρνασσός. παραμήκης εἰς τὸ προσάρκτιον μέρος ἐκτεινόμενος, ἀπὸ τῶν περὶ δελφοὺς τόπων, μέ-
χρι τῆς συμβολῆς τῶν τε οἰταίων ὀρῶν καὶ τῶν αἰτωλικῶν· καὶ τῶν ἀνὰ μέσον δωριέων. πάλιν γὰρ ὥς-
περ ἡ λοκρὶς-- οὖσα τοῖς φωκεῦσι παραβέβληται, οὕτω--
μετὰ τῆς αἰτωλίας καί τινων ἀνὰ μέσον--
δωρικῆς τετραπόλεως τῇ λοκρίδι ἑκατέρᾳ καὶ τῷ παρνασσῷ καὶ τοῖς δωριεῦσιν. ὑπὲρ τούτων
δὲ καὶ τῶν αἰτωλῶν οἱ προσάρκτιοι, καὶ ἀθαμᾶνες ἐκ τῶν ἠπειρωτικῶν ἐθνῶν, καὶ τῶν μακεδονι-

κῶν ὅπερ ἔφαμεν καὶ πρότερον, παραλλήλους ὥσπερ τινὰς τεταμένας ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὰς ἀρκτοὺς ταινίας κατανοῆσαι τὰς λεχθείσας χώρας. ἱεροπρεπὴς δ' ἐστὶ πᾶς ὁ παρνασός. ἔχων ἄντρα τε καὶ ἄλλα χωρία. τιμώμενά τε καὶ ἁγιστευόμενα. ὧν ἐστι γνωριμώτατον καὶ κάλλιστον τὸ κωρύκιον. νυμφῶν ἄντρον ὁμώνυμον τῷ κιλικίῳ. τὸ δὲ πλευρὸν τοῦ παρνασοῦ, τὸ μὲν ἑσπέριον νέμονται, λοκροί τε ὀζόλαι, καί τινες τῶν δωριέων καὶ αἰτωλοί. κατὰ τὸν κόρακα, προσαγορευόμενον αἰτωλικὸν ὄρος. τὸ δὲ, φωκεῖς καὶ δωριεῖς. οἱ πλείους ἔχοντες τὴν τετράπολιν παρακειμένην πως τῷ παρνασῷ. πλεονάζουσι δὲ τοῖς πρὸς ἕω μέρεσιν. αἱ μὲν οὖν κατὰ τὸ μῆκος πλευραὶ τῶν λεχθεισῶν ταινιῶν τε καὶ ταινιῶν ἑκάστης, παραμήκεις ἅπασαί εἰσιν. ἡ μὲν, οὖσα προσάρκτιος. ἡ δ' ἑσπέριος. αἱ δὲ λοιπαὶ ἑσπέριοι ταῖς ἑώαις οὐκ εἰσὶ παραμήκεις. οὐδ' ἡ παραλία ἑκατέρα. ἥ τε τοῦ κρισαίου μέχρι τοῦ ἀρκτίου. καὶ ἡ πρὸς εὔβοιαν μέχρι τῆς-- παράλληλοι ἀλλήλαις εἰσίν. εἰς ἅς τε-- τὰ ἔθνη. ἀλλ' οὔτω δέχεσθαι δεῖ τὰ σχήματα τῶν τοιούτων χωρίων ὡς ἂν ἐν τριγώνῳ-- γραμμῶν πλειόνων τὰ γὰρ-- παράλληλα μὲν ἀλλήλοις ἔσται. καὶ τὰς-- πλευρὰς ἕξει παραλλήλους. ὁ μὲν οὖν ὁλοσχερὴς τύπος οὗτος τῆς λοιπῆς καὶ ἐφεξῆς περιοδείας. τὰ καθ' ἕκαστα δ' ἑξῆς λέγομεν ἀπὸ τῆς φωκίδος ἀρξάμενοι. ταύτης δ' ἐπιφανέσταται δύο πόλεις δελφοὶ καὶ ἐλάτεια. δελφοὶ μὲν διὰ τὸ ἱερὸν τοῦ πυθίου ἀπόλλωνος καὶ τὸ μαντεῖον ἀρχαῖον ὄν. εἴ γε ἀγαμέμνων ἀπ' αὐτοῦ χρηστηριάσασθαι λέγεται ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. ὁ γὰρ κιθαρῳδὸς ᾄδων εἰσάγεται.

» Νεῖκος ὀδυσσῆος καὶ πηλείδεω ἀχιλῆος,
» ὥς ποτε δηρίσαντο. ἄναξ δ' ἀνδρῶν ἀγαμέμνων χαῖρε νόῳ.
» ὣς γάρ οἱ χρείων μυθήσατο φοῖβος ἀπόλλων πυθοῖ.

Δελφοὶ μὲν δὴ διὰ ταῦτα γνώριμοι. ἐλάτεια δὲ ὅτι πασῶν μεγίστη τῶν ἐνταῦθα πόλεων, καὶ ἐπικαιροτάτη διὰ τὸ ἐπικεῖσθαι τοῖς στενοῖς. καὶ τὸν ἔχοντα ταύτην, ἔχειν τὰς εἰσβολὰς τὰς εἰς τὴν φωκίδα καὶ τὴν βοιωτίαν. ὄρη γάρ ἐστιν οἰταῖα πρῶτον. ἔπειτα τὰ τῶν λοκρῶν καὶ τῶν φωκέων. οὐ πανταχοῦ στρατοπέδοις βάσιμα τοῖς ἐκ θετταλίας εἰσβάλλουσιν. ἀλλ' ἔχει παρόδους στενὰς μέν. ἀφωρισμένας δὲ, ἃς αἱ παρακείμεναι πόλεις, φρουροῦσιν. ἁλουσῶν δ' ἐκείνων κρατεῖσθαι συμβαίνει καὶ τὰς παρόδους. ἐπεὶ δ' ἡ τοῦ ἱεροῦ ἐπιφάνεια τοῦ ἐν δελφοῖς ἔχει πρεσβεῖον, καὶ ἅμα ἡ θέσις τῶν χωρίων ἀρχὴν ὑπαγορεύει φυσικήν, ταῦτα γάρ ἐστι τὰ ἑσπεριώτατα μέρη τῆς φωκίδος, ἐντεῦθεν ἀρκτέον. εἴρηται δ' ὅτι καὶ ὁ παρνασὸς τῶν ἑσπερίων μερῶν ἵδρυται τῆς φωκίδος. τούτου δὴ τὸ μὲν πρὸς δύσιν πλευρὸν, οἱ λοκροὶ κατέχουσιν οἱ ὀζόλαι. τὸ δὲ νότιον οἱ δελφοί. πετρῶδες χωρίον. θεατροειδές. κατὰ κορυφὴν ἔχον τὸ μαντεῖον καὶ τὴν πόλιν. σταδίων ἑκκαίδεκα. κύκλον πληροῦσα. ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ λυκώρεια. ἐφ' οὗ τόπου πρότερον ἵδρυντο οἱ δελφοὶ ὑπὲρ τοῦ ἱεροῦ. νῦν δ' ἐπ' αὐτῷ οἰκοῦσι περὶ τὴν κρήνην τὴν κασταλίαν. πρόκειται δὲ τῆς πόλεως ἡ κίρφις, ἐκ τοῦ νοτίου μέρους ὄρος ἀπότομον. νάπην ἀπολιπὸν μεταξὺ, δι' ἧς ὁ πλεῖστος διαρρεῖ ποταμός. ὑποπέπτωκε δὲ τῇ κίρφι πόλις ἀρχαία κίρρα, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἱδρυμένη. ἀφ' ἧς ἀνάβασις εἰς δελφοὺς, ὀγδοήκοντα που σταδίων. ἵδρυται δ' ἀπαντικρὺ σικυῶνος. πρόκειται δὲ τῇ κίρρᾳ τὸ κρισαῖον πεδίον εὔδαιμον. πάλιν δ' ἐφεξῆς ἐστιν ἄλλη πόλις κρίσα. ἀφ' ἧς ὁ κόλπος κρισαῖος. εἶτα ἀντίκυρα, ὁμώνυμος τῇ κατὰ τὸν μαλιακὸν κόλπον καὶ τὴν οἴτην. καὶ δή φασιν ἐκεῖ τὸν ἐλλέβορον φύεσθαι τὸν ἀστεῖον. ἐνταῦθα δὲ σκευάζεσθαι βέλτιον. καὶ διὰ τοῦτο ἀποδημεῖν δεῦρο πολλοὺς, καθάρσεως καὶ θεραπείας χάριν. γίνεσθαι γάρ τι σησαμοειδὲς φάρμακον ἐν τῇ φωκικῇ μεθ' οὗ σκευάζεσθαι τὸν οἰταῖον ἐλλέβορον. αὕτη μὲν οὖν συμμένει. ἡ δὲ κίρρα καὶ ἡ κρίσα κατεσπάσθησαν. ἡ μὲν πρότερον ὑπὸ κρισαίου, αὐτὴ δ' ἡ κρίσα, ἡ δ' ὕστερον ὑπ' εὐρυλόχου τοῦ θετταλοῦ κατὰ τὸν κρισαῖον πόλεμον. εὐτυχήσαντες γὰρ οἱ κρισαῖοι διὰ τὰ ἐκ τῆς σικελίας καὶ τῆς ἰταλίας τέλη, πικρῶς ἐτελώνουν τοὺς ἐπὶ τὸ ἱερὸν ἀφικνουμένους. καὶ παρὰ τὰ προστάγματα τῶν ἀμφικτυόνων. τὰ δ' αὐτὰ καὶ τοῖς ἀμφισσεῦσι συνέβη. λοκρῶν δ' εἰσὶν οὗτοι τῶν ὀζολῶν. ἐπελθόντες γὰρ οὗτοι τήν τε κρίσαν ἀνέλαβον, καὶ τὸ πεδίον τὸ ὑπὸ τῶν ἀμφικτυόνων ἀνιερωθὲν αὖθις κατεγεώργουν. καὶ χείρους ἦσαν περὶ τοὺς ξένους τῶν πάλαι κρισαίων. καὶ τούτους οὖν ἐτιμωρήσαντο οἱ ἀμφικτυόνες, καὶ τῷ θεῷ τὴν χώραν ἀπέδοσαν. νῦν μὲν οὖν ὠλιγώρηται δ' ἱκανῶς καὶ τὸ ἱερόν. πρότερον δ' ὑπερβαλλόντως. δηλοῦσι δ' οἵ τε θησαυροὶ καὶ δῆμοι κατεσκεύασαν. εἰς οὓς καὶ χρήματα ἀνετίθετο καθιερωμένα καὶ ἔργα τῶν ἀρίστων δημιουργῶν, καὶ ὁ ἀγὼν ὁ πυθικός, καὶ τὸ πλῆθος τῶν ἱστορουμένων χρησμῶν. φασὶ δ' εἶναι τὸ μαντεῖον, ἄντρον κοῖλον κατὰ βάθος. οὐ μάλα εὐρύστομον. ἀναφέρεσθαι δ' ἐξ αὐτοῦ πνεῦμα ἐνθουσιαστικόν. ὑπερκεῖσθαι δὲ τοῦ στομίου τρίποδα ὑψηλόν. ἐφ' ὃν τὴν πυθίαν ἀναβαίνουσαν, δεχομένην τὸ πνεῦμα, ἀποθεσπίζειν ἔμμετρά τε καὶ ἄμετρα. ἐντείνειν δὲ καὶ ταῦτα εἰς μέτρον ποιητάς τινας ὑπουργοῦντας τῷ ἱερῷ. πρώτην δὲ φημονόην φασὶ γενέσθαι πυθίαν. κεκλῆσθαι δὲ καὶ τὴν προφῆτιν, οὕτω καὶ τὴν πόλιν ἀπὸ τοῦ πυθέσθαι. ἐκτετάσθαι δὲ τὴν πρώτην συλλαβὴν ὡς ἐπὶ τοῦ ἀθανάτου καὶ ἀκαμάτου καὶ διαβ

κόνου. ἡ μὲν οὖν ἐπίνοια αὕτη τῆς τε τῶν πόλεων κτίσεως καὶ τῆς τῶν κοινῶν ἱερῶν ἐκτιμήσεως. καὶ γὰρ κατὰ πόλεις συνῄεσαν καὶ κατὰ ἔθνος. φυσικῶς κοινωνικοὶ ὄντες. καὶ ἅμα τῆς παρ᾽ ἀλλήλων χρείας χάριν, καὶ εἰς τὰ ἱερὰ τὰ κοινὰ ἀπήντων διὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας, ἑορτὰς καὶ πανηγύρεις συντελοῦντες. φιλικὸν γὰρ πᾶν τὸ τοιοῦτον ἀπὸ τῶν ὁμοτραπέζων ἀρξάμενον, καὶ ὁμοσπόνδων καὶ ὁμορόφων. ὅσῳ δὲ πλείων καὶ ἐκ πλειόνων ἡ ἐπιδημία, τοσῷδε μεῖζον καὶ τὸ ὄφελος ἐνομίζετο. ἡ μὲν οὖν ἐπὶ τὸ πλεῖστον τιμὴ τῷ ἱερῷ τούτῳ, διὰ τὸ χρηστήριον συνέβη. δόξαντι ἀψευδεστάτῳ τῶν πάντων ὑπάρξαι. προσλάβοιτο δέ τι καὶ ἡ θέσις τοῦ τόπου. τῆς γὰρ Ἑλλάδος ἐν μέσῳ πώς ἐστι τῆς συμπάσης. τῆς τε ἐντὸς ἰσθμοῦ καὶ τῆς ἐκτός. ἐνομίσθη δὲ καὶ τῆς οἰκουμένης. καὶ ἐκάλεσαν τῆς γῆς ὀμφαλόν. προσπλάσαντες καὶ μῦθον, ὅν φησι Πίνδαρος. ὅτι συμπέσοιεν ἐνταῦθα οἱ ἀετοὶ, οἱ ἀφεθέντες ὑπὸ τοῦ Διός. ὁ μὲν, ἀπὸ τῆς δύσεως. ὁ δ᾽ ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς. οἱ δὲ, κόρακάς φασι. δείκνυται δὲ καὶ ὀμφαλός τις ἐν τῷ ναῷ τεταινιωμένος. καὶ ἐπ᾽ αὐτῷ αἱ δύο εἰκόνες τοῦ μύθου. τοιαύτης δὲ τῆς εὐκαιρίας οὔσης τῆς περὶ τοὺς Δελφοὺς, συνῄεσάν τε ῥᾳδίως ἐκεῖσε. μάλιστα δ᾽ οἱ ἐγγύθεν. καὶ δὴ καὶ τὸ Ἀμφικτυονικὸν σύστημα ἐκ τούτου συνετάχθη. περί τε τῶν κοινῶν βουλευσόμενον. καὶ τοῦ ἱεροῦ τὴν ἐπιμέλειαν ἕξον κοινοτέραν. ἅτε καὶ χρημάτων ἀποκειμένων πολλῶν. καὶ ἀναθημάτων, φυλακῆς, καὶ ἁγιστείας δεομένων μεγάλης. τὰ πάλαι μὲν οὖν ἀγνοεῖται. Ἀκρίσιος δὲ τῶν μνημονευομένων πρῶτος διατάξαι δοκεῖ τὰ περὶ τοὺς Ἀμφικτύονας, καὶ πόλεις ἀφορίσαι τὰς μετεχούσας τοῦ συνεδρίου, καὶ ψῆφον ἑκάστῃ δοῦναι. τῇ μὲν, καθ᾽ αὑτὴν, τῇ δὲ, μεθ᾽ ἑτέρας, ἢ μετὰ πλειόνων. ἀποδεῖξαι δὲ καὶ τὰς Ἀμφικτυονικὰς δίκας ὅσαι πόλεσι πρὸς πόλεις εἰσίν. ὕστερον δ᾽ ἄλλαι πλείους διατάξεις γεγόνασιν, ἕως κατελύθη καὶ τοῦτο τὸ σύνταγμα, καθάπερ καὶ τὸ τῶν Ἀχαιῶν. αἱ μὲν οὖν πρῶται δώδεκα συνελθεῖν λέγονται πόλεις. ἑκάστη δ᾽ ἔπεμπε πυλαγόραν, δὶς κατ᾽ ἔτος οὔσης τῆς συνόδου, ἔαρός τε καὶ μετοπώρου. ὕστερον δὲ καὶ πλείους συνῆλθον πόλεις. τὴν δὲ σύνοδον πυλαίαν ἐκάλουν. τὴν μὲν, ἐαρινὴν, τὴν δὲ, μετοπωρινὴν, ἐπειδὴ ἐν Πύλαις συνῄγοντο, ἃς καὶ Θερμοπύλας καλοῦσιν. ἔθυον δὲ τῇ Δήμητρι οἱ πυλαγόραι. τὸ μὲν οὖν ἐξ ἀρχῆς τοῖς ἐγγὺς μετῆν καὶ τούτων καὶ τοῦ μαντείου. ὕστερον δὲ καὶ οἱ πόρρωθεν ἀφικνοῦντο καὶ ἐχρῶντο τῷ μαντείῳ. καὶ ἔπεμπον δῶρα, καὶ θησαυροὺς κατεσκεύαζον καθάπερ Κροῖσος, καὶ ὁ πατὴρ Ἀλυάττης. καὶ Ἰταλιωτῶν τινες, καὶ Σικελοί. ἐπίφθονος δ᾽ ὢν ὁ πλοῦτος δυσφύλακτός ἐστι κἂν ἱερὸς ᾖ. νυνί γέ τοι πενέστατόν ἐστι τὸ ἐν Δελφοῖς ἱερόν. χρημάτων δὲ χάριν τῶν ἀναθημάτων τὰ μὲν, ἦρται. τὰ δὲ πλείω μένει. πρότερον δὲ πολυχρήματον ἦν τὸ ἱερὸν, καθάπερ Ὅμηρός τε εἴρηκεν,

Οὐδ᾽ ὅσα λάϊνος οὐδὸς ἀφήτορος ἐντὸς ἐέργει
Φοίβου Ἀπόλλωνος Πυθοῖ ἐνὶ πετρηέσσῃ.

Καὶ οἱ θησαυροὶ δηλοῦσι. καὶ ἡ σύλησις ἡ γενηθεῖσα ὑπὸ τῶν Φωκέων. ἐξ ἧς ὁ Φωκικὸς καὶ ἱερὸς καλούμενος ἐξήφθη πόλεμος. αὕτη μὲν οὖν ἡ σύλησις γέγονε κατὰ Φίλιππον τὸν Ἀμύντου. προτέραν δ᾽ ἄλλην ἐπινοοῦσιν ἀρχαίαν. ἣ τὸν ὑφ᾽ Ὁμήρου λεγόμενον πλοῦτον ἐξεφόρησεν. οὐδὲ γὰρ ἴχνος αὐτοῦ σωθῆναι πρὸς τοὺς ὕστερον χρόνους, ἐν οἷς οἱ περὶ Ὀνόμαρχον καὶ Φάυλλον ἐσύλησαν τὸ ἱερὸν, ἀλλὰ τὰ μὲν-- νεώτερα ἐκείνων εἶναι τῶν χρημάτων.-- λέγει δὲ καὶ ἀποκεῖσθαι γὰρ ἐν θησαυροῖς ἀπὸ λαφύρων ἀνατεθέντα. ἐπιγραφὰς σώζοντα. ἐν αἷς καὶ οἱ ἀναθέντες. Γύγου γὰρ καὶ Κροίσου καὶ Συβαριτῶν καὶ Σπινητῶν τῶν περὶ Ἀδρίαν, καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων οὐ-- ἥκοι τὰ παλαιὰ χρήματα ἀναμεμίχθαι. καὶ ἄλλοι τόποι διασημαίνουσιν ὑπὸ τούτων σκευωρηθέντες τῶν ἀνδρῶν. ἔνιοι δὲ τὸν ἀφήτορα δεξάμενοι λέγεσθαι θησαυρόν. ἀφήτορος δ᾽ οὐδὸν, κατὰ γῆς θησαυρισμὸν, ἐν τῷ ναῷ κατορύχθαι φασὶ τὸν πλοῦτον ἐκεῖνον, καὶ τοὺς περὶ τὸν Ὀνόμαρχον ἐπιχειρήσαντας ἀνασκάπτειν νύκτωρ, σεισμῶν γενομένων μεγάλων, ἔξω τοῦ ναοῦ ἐκπεσεῖν, καὶ παύσασθαι τῆς ἀνασκαφῆς. ἐμβαλεῖν δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις φόβον τῆς τοιαύτης ἐπιχειρήσεως. τῶν δὲ, τὸν μὲν πτέρινον, εἰς τοὺς μύθους τακτέον. τὸν δὲ δεύτερον, Τροφωνίου καὶ Ἀγαμήδους ἔργον φασί. τὸν δὲ νῦν Ἀμφικτύονες κατεσκεύασαν. δείκνυται δ᾽ ἐν τῷ τεμένει τάφος Νεοπτολέμου κατὰ χρησμὸν γενόμενος, Μαχαιρέως Δελφοῦ ἀνδρὸς ἀνελόντος αὐτόν. ὡς μὲν ὁ μῦθος δίκας αἰτοῦντα τὸν θεὸν τοῦ πατρῴου φόνου. ὡς δὲ τὸ εἰκὸς ἐπιτιθέμενον τῷ ἱερῷ. τοῦ δὲ Μαχαιρέως ἀπόγονον φασὶ Βράγχον τὸν προστατήσαντα τοῦ ἐν Διδύμοις ἱεροῦ. ἀγὼν δὲ ὁ μὲν ἀρχαῖος ἐν Δελφοῖς κιθαρῳδῶν ἐγενήθη. παιᾶνα ᾀδόντων εἰς τὸν θεόν. ἔθηκαν δὲ Δελφοί. μετὰ δὲ τὸν Κρισαῖον πόλεμον, οἱ δ᾽ Ἀμφικτύονες ἱππικὸν καὶ γυμνικὸν ἐπ᾽ Εὐρυλόχου διέταξαν στεφανίτην. καὶ Πύθια ἐκάλεσαν. προσέθεσαν δὲ τοῖς κιθαρῳδοῖς αὐλητάς τε καὶ κιθαριστὰς χωρὶς ᾠδῆς, ἀποδώσοντάς τι μέλος. ὃ καλεῖται νόμος Πυθικός. πέντε δ᾽ αὐτοῦ μέρη ἐστὶν, ἀνάκρουσις. ἄμπειρα. κατακελευσμός. ἴαμβοι καὶ δάκτυλοι. σύριγγες. ἐμελοποίησε μὲν οὖν Τιμοσθένης ὁ ναύαρχος τοῦ δευτέρου Πτολεμαίου. ὁ καὶ τοὺς λιμένας συντάξας ἐν δέκα βίβλοις. βούλεται δὲ τὸν ἀγῶνα τοῦ Ἀπόλλωνος τὸν πρὸς τὸν δράκοντα διὰ τοῦ μέλους ὑμνεῖν. ἀνάκρουσιν μὲν τὸ προοίμιον δηλῶν. ἄμπειραν δὲ τὴν πρώτην κατάπειραν τοῦ ἀγῶνος. κατακελευσμὸν δὲ τὸν ἀγῶνα. ἰάμβους δὲ καὶ δακτύλους τὸν ἐπιπαιανισμὸν τὸν ἐπὶ τῇ νίκῃ μετὰ τοιούτων ῥυθμῶν. ὧν

ὁ μὲν ὕμνος, οἰκεῖος ἐστίν. ὁ δ' ἴαμβος κακισμοῖς καὶ τὸ ἰαμβίζειν. σύριγγες δὲ τὴν ἔκλειψιν τοῦ θηρίου
μιμούμενοι, ὡς ἂν καταστρέφοντος εἰς ἐσχάτους τινὰς συριγμούς. ἔφορος δ' ᾧ τὸ πλεῖστον χρώμεθα διὰ
τὴν περὶ ταῦτα ἐπιμέλειαν, καθάπερ καὶ πολύβιος μαρτυρῶν τυγχάνει, ἀνὴρ ἀξιόλογος, δοκεῖ μοι
τἀναντία ποιεῖν ἔσθ' ὅτε τῇ προαιρέσει καὶ ταῖς ἐξ ἀρχῆς ὑποσχέσεσιν. ἐπιτιμήσας γοῦν τοῖς φιλο-
μυθοῦσιν ἐν τῇ τῆς ἱστορίας γραφῇ, καὶ τὴν ἀλήθειαν ἐπαινέσας, προστίθησι τῷ περὶ τοῦ μαντείου τού-
του λόγῳ, σεμνήν τινα ὑπόσχεσιν, ὡς πανταχοῦ μὲν ἄριστον νομίζει τἀληθές. μάλιστα δὲ κατὰ τὴν ὑ-
πόθεσιν ταύτην. ἄτοπον γὰρ εἰ περὶ μὲν τῶν ἄλλων ἀεὶ τὸν τοιοῦτον τρόπον διώκομεν φησί, περὶ δὲ τοῦ
μαντείου λέγοντες ὃ πάντων ἐστὶν ἀψευδέστατον τοῖς οὕτως ἀπίστοις καὶ ψευδέσι χρησόμεθα λόγοις. ταῦ-
τα δ' εἰπὼν, ἐπιφέρει παραχρῆμα, ὅτι ὑπολαμβάνουσι κατασκευάσαι τὸ μαντεῖον, ἀπόλλωνα μετὰ
θέμιδος. ὠφελῆσαι βουλόμενον τὸ γένος ἡμῶν. εἶτα τὴν ὠφέλειαν εἰπὼν, ὅτι εἰς ἡμερότητα πρου-
καλεῖτο, καὶ ἐσωφρόνιζε τοῖς μὲν, χρηστηριάζων. καὶ τὰ μὲν, προστάττων. τὰ δ' ἀπαγορεύων. τοὺς δ' οὐ-
δ' ὅλως προσιέμενος. ταῦτα δὲ διοικεῖν νομίζουσι φησὶν αὐτόν. οἱ μὲν, αὐτὸν τὸν θεὸν σωματοειδῆ γινό-
μενον. οἱ δ' ἀνθρώποις ἔννοιαν παραδιδόντα τῆς ἑαυτοῦ βουλήσεως. ὑποβὰς δὲ περὶ τῶν δελφῶν οἵ-
τινές εἰσι διαλεγόμενος, φησὶ τὸ παλαιὸν παρνασίους τινὰς αὐτόχθονας καλουμένους οἰκεῖν τὸν παρ-
νασόν. καθ' ὃν χρόνον τὸν ἀπόλλωνα τὴν γῆν ἐπιόντα, ἡμεροῦν τοὺς ἀνθρώπους, ἀπό τε τῶν ἡμέρων καρ-
πῶν καὶ τῶν βίων. ἐξ ἀθηνῶν ὁρμηθέντα ἐπὶ δελφοὺς ταύτην ἰέναι τὴν ὁδὸν, ᾗ νῦν ἀθηναῖοι τὴν
πυθιάδα πέμπουσι. γενόμενον δὲ κατὰ πανοπέας, τιτυὸν καταλῦσαι, ἔχοντα τόπον, βίαιον ἄν-
δρα καὶ παράνομον. τοὺς δὲ παρνασίους συμμίξαντας αὐτῷ. καὶ ἄλλον μηνῦσαι χαλεπὸν ἄνδρα πύ-
θωνα τοὔνομα. ἐπίκλησιν δὲ δράκοντα. κατατοξεύοντα δ' ἐπικελεύειν ἵε παιάν. ἀφ' οὗ τὸν παια-
νισμὸν οὕτως ἐξ ἔθους παραδοθῆναι τοῖς μέλλουσι συμπίπτειν εἰς παράταξιν. ἐμπρησθῆναι δὲ καὶ σκη-
νὴν τότε τοῦ πύθωνος ὑπὸ τῶν δελφῶν καθάπερ καὶ νῦν ἔτι καὶ ἀεὶ ὑπόμνημα ποιουμένους τῶν τότε
γενομένων. τί δ' ἂν εἴη μυθωδέστερον, ἢ ἀπόλλων τοξεύων καὶ κολάζων τιτυοὺς καὶ πύθωνας, καὶ ὁδεύων
ἐξ ἀθηνῶν εἰς δελφοὺς. καὶ γῆν πᾶσαν ἐπιών. εἰ δὲ ταῦτα μὴ ὑπελάμβανε μύθους εἶναι, τί ἐχρῆν
τὴν μυθευομένην θέμιν γυναῖκα καλεῖν. τὸν δὲ μυθευόμενον δράκοντα, ἄνθρωπον. πλὴν εἰ συγχεῖν ἐ-
βούλετο τόν τε τῆς ἱστορίας καὶ τὸν τοῦ μύθου τόπον. παραπλήσια τούτοις καὶ τὰ περὶ τῶν αἰτωλῶν
εἰρημένα. φήσας γὰρ ἀπορθήτους αὐτοὺς ἐκ παντὸς τοῦ χρόνου, ποτὲ μὲν αἰολέας φησὶν οἰκῆσαι τοὺς
κατέχοντας βαρβάρους ἐκβαλόντας, ποτὲ δ' αἰτωλὸν μετὰ τῶν ἐξ ἤλιδος ἐπειῶν. τούτους δ' ὑπ' ἀλ-
λήλων τῶν ἐχθρῶν. τούτους δ' ὑπ' ἀλκμαίωνος καὶ διομήδους. ἀλλ' ἐπάνειμι ἐπὶ τοὺς φωκέας. ἐξ
ἀρχῆς γὰρ ἐν τῇ παραλίᾳ μετὰ τὴν ἀντίκιρραν πολίχνιόν ἐστιν ὄπισθεν ὁ μαραθών. εἶτ' ἄκρα φαρύγιον
ἔχουσα ὕφορμον. εἶθ' ὁ λιμὴν ὕστατος ὁ προσαγορευθεὶς μυχὸς ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος. ὑπὸ ἑλικῶνι καὶ
τῇ ἄσκρῃ κείμενος. οὐδ' αἱ ἄβαι δὲ τὸ μαντεῖον ἄποθεν τῶν τόπων τούτων ἐστίν. οὐδ' ἡ ἄμβρυσος ὁμώνυ-
μος τῇ βοιωτικῇ. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ μετὰ δελφοὺς ὡς πρὸς τὴν ἕω δαυλὶς πολίχνιον. ὅπου τηρέα τὸν
θρᾷκα φασὶ δυναστεῦσαι. καὶ τὰ περὶ φιλομήλαν καὶ πρόκνην ἐκεῖ μυθεύουσι. θουκυδίδης δ' ἐν μεγά-
ροις φησί. τοὔνομα δὲ τοῦ τόπου γεγονέναι ἀπὸ τοῦ δάσους. δαυλοὺς γὰρ καλοῦσι τὰ δάση. ὅμηρος μὲν
οὖν δαυλίδα εἶπεν. οἱ δ' ὕστερον, δαυλίαν. καὶ τὸ κυπάρισσον δ' ἔχον δέχονται διττῶς. οἱ μὲν, ὁμωνύ-
μως τῷ φυτῷ, οἱ δὲ παρωνύμως κώμην ὑπὸ τῇ λυκωρείᾳ. πανοπεὺς δ' ὁ νῦν φανοτεὺς, ὅμορος τοῖς
περὶ λεβάδειαν τόποις, ἡ τοῦ ἐπειοῦ πατρίς. καὶ τὰ περὶ τιτυὸν ἐνταῦθα μυθεύουσιν, ὅμηρος δέ φη-
σιν ὅτι οἱ φαίακες τὸν ῥαδάμανθυν εἰς εὔβοιαν ἤγαγον. ὀψόμενον τιτυὸν γαιήϊον υἱὸν, καὶ ἐλαρειόν τι σπή-
λαιον ἀπὸ τῆς τιτυοῦ μητρὸς ἐλάρας, δείκνυται κατὰ τὴν νῆσον. καὶ ἡρῷον τιτυοῦ καὶ τιμαί τινες.
πλησίον δὲ λεβαδείας, καὶ ἡ τραχίν. ὁμώνυμος τῇ οἰταίᾳ φωκικὴ πολίχνη. οἱ δ' ἐνοικοῦντες τραχί-
νιοι λέγονται. ἡ δ' ἀνεμώρεια ὠνόμασται ἀπὸ τοῦ συμβαίνοντος, πάθους. καταιγίζει γὰρ εἰς αὐτὴν ὁ
καλούμενος κατοπτήριος χῶρος, κρημνός τις, ἀπὸ παρνασοῦ διήκων. ὅριον δ' ἦν ὁ τόπος οὗτος δελφῶν
καὶ φωκέων, ἡνίκα ἀπέστησαν τοὺς δελφοὺς ἀπὸ τοῦ κοινοῦ συστήματος τῶν φωκέων λακεδαιμόνιοι.
καὶ ἐπέτρεψαν καθ' αὑτοὺς πολιτεύεσθαι. τινὲς δ' ἀνεμώλειαν καλοῦσιν. εἶθ' ὑάμπολις μετὰ ταῦτα ἐ-
κλήθη. εἰς ἣν ἐκ βοιωτίας ἐκπεσεῖν τοὺς ὕαντας ἔφαμεν. ἔστι δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ μάλιστα καὶ αὕτη πλη-
σίον τῶν παραποταμίων, ἑτέρα τῆς ἐν παρνασῷ ὑαμπόλεως. καὶ ἐλάτεια, ἡ μεγίστη πόλις τῶν φωκικῶν,
ἣν ὅμηρος μὲν οὐκ οἶδε, νεωτέρα γάρ ἐστι τῆς ἡλικίας ἐκείνου. ἐπιτηδείως δ' ἵδρυται πρὸς τὰς ἐκ τῆς
θαλάσσης εἰσβολάς. δηλοῖ δὲ τὴν εὐφυΐαν ταύτην καὶ δημοσθένης. φράζων τὸν θόρυβον τὸν γενηθέν-
τα ἀθήνησιν αἰφνιδίως. ἐπειδὴ ἧκέ τις ἀπαγγέλλων, ὡς τοὺς πρυτάνεις, ὡς ἐλάτεια κατείληπται. πα-
ραποτάμιοι δ' εἰσὶ κατοικία τις ἐπὶ τῷ κηφισσῷ ἱδρυμένη πλησίον φανοτεῦσι, καὶ χαιρωνεῦσι καὶ
ἐλατείᾳ. φησὶ δὲ θεόπομπος τὸν τόπον τοῦτον, διέχειν τῆς μὲν χαιρωνείας, ὅσον σταδίων τετταράκοντα.
διορίζειν δὲ ἀμβρυσέας καὶ πανοπέας καὶ δαυλιέας. κεῖσθαι δ' ἐπὶ τῆς ἐμβολῆς τῆς βοιωτίας εἰς
φωκέας ἐν λόφῳ μετρίως ὑψηλῷ μεταξὺ τοῦ τε παρνασοῦ καὶ τοῦ ὄρους πεντασταδίου σχεδόν τι ἀπο-
λειπομένων αὐ-- ὁρίων. διαιρεῖν δὲ τὸν κηφισσὸν, στενὴν ἑκατέρωθεν διδόντα πάρο-

δόν. τὰς μὲν ἀρχὰς ἐκ λιλαίας ἔχοντα φωκικῆς πόλεως, καθάπερ, καὶ ὅμηρος φησίν.

» Οἵ τε λίλαιαν ἔχον πηγῆς ἔπι κηφισσοῖο

Εἰς δὲ τὴν κωπαΐδα λίμνην, ἐκδιδόντα. τὸ δὲ δαυλίον παρατείνειν ἔφη ἑξήκοντα σταδίων μέχρι τοῦ ὑφαντείου. ἐφ᾽ ᾧ κεῖται ὁ ὀρχομενός. καὶ ἡσίοδος δ᾽ ἐπὶ πλέον περὶ τοῦ ποταμοῦ λέγει, καὶ τῆς ῥύσεως, ὡς δι᾽ ὅλης ῥέοι τῆς φωκίδος, σκολιῶς καὶ δρακοντοειδῶς. ὃς παρὰ πανοπῆδα γλήχωνά τ᾽ ἐρυμνήν. καί τε δι᾽ ὀρχομενοῦ εἰλιγμένος εἶσι δράκων ὥς. τὰ δὲ στενὰ τὰ περὶ τὸν ποταμοὺς ἢ τὴν παραποταμίαν, λέγεται γ᾽ ἀμφοτέρως, περιμάχητα ὑπῆρξεν ἐν --- μίαν ἐχόντων ταύτην εἰσβολήν. ἔστι δὲ κηφισσὸς, ὅ τε φωκικὸς, καὶ ὁ ἀθήνησι, καὶ ὁ ἐν σαλαμῖνι, τέταρτος δὲ καὶ πέμπτος, ὁ ἐν σικυῶνι. καὶ ὁ ἐν σκύρῳ. ἕκτος δὲ, ὁ ἐν ἄργει. τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ λυρκίου. ἐν ἀπολλωνίᾳ δὲ τῇ πρὸς ἐπιδάμνῳ πηγή ἐστι κατὰ τὸ γυμνάσιον. ἣν καλοῦσι κηφισσόν. δαφνοῦς δὲ, νῦν μὲν κατέσκαπται. ἦν δέ ποτε τῆς φωκίδος πόλις ἁπτομένη τῆς εὐβοϊκῆς θαλάσσης. διαιροῦσα τοὺς ἐπικνημιδίους λοκρούς. τοὺς μὲν, ἐπὶ τῷ πρὸς βοιωτίαν. ἐκείνους δὲ εἰς φωκίδα τὴν ἀπὸ θαλάσσης καθήκουσαν. τεκμήριον δὲ τὸ ἐν αὐτῷ σχεδίειον, ὅ φασιν εἶναι τάφον σχεδίου. περὶ μὲν δὴ τῆς φωκίδος ἀπόχρη. ἐφεξῆς δ᾽ ἐστὶν ἡ λοκρίς. ὥστε περὶ ταύτης λεκτέον. διῄρηται δὲ δίχα. τὸ μὲν, γὰρ, αὐτῆς ἐστιν, οἱ πρὸς εὔβοιαν λοκροὶ, οἱ σχίζοντες ἐφ᾽ ἑκάτερα τοῦ δαφνοῦντος. ἐπεκαλοῦντο δ᾽ οἱ μὲν, ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως. οἱ δ᾽ ἐπικνημίδιες, ἀπὸ ὄρους τινὸς κνημῖδος. τὸ δὲ λοιπὸν, οἱ ἑσπέριοι εἰσὶ λοκροί. οἱ δ᾽ αὐτοὶ καὶ ὀζόλαι καλοῦνται. χωρίζει δ᾽ αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ὀπουντίων καὶ τῶν ἐπικνημιδίων, ὅ τε παρνασὸς, μεταξὺ ἱδρυμένος, καὶ ἡ τῶν δωριέων τετράπολις. ἀρκτέον δ᾽ ἀπὸ τῶν ὀπουντίων. ἐφεξῆς τοίνυν ταῖς ἅλαις εἰς ἃς κατέληξεν ἡ βοιωτικὴ παραλία ἡ πρὸς εὐβοίᾳ, τὸν ὀπούντιον κόλπον συμβαίνει κεῖσθαι. ὁ δ᾽ ὀποῦς ἐστὶ μητρόπολις καθάπερ, καὶ τὸ ἐπίγραμμα δηλοῖ, τὸ ἐν τῇ πρώτῃ τῶν πέντε στηλῶν, τῶν περὶ θερμοπύλας, ἐπιγεγραμμένον πρὸς τῷ πολυανδρίῳ.

» Τούς δέ ποτε φθιμένους ὑπὲρ ἑλλάδος ἀντία μήδων,

» Μητρόπολις λοκρῶν κεύθει. Ὀπουτία. ἀπέχει δὲ θαλάσσης περὶ πεντεκαίδεκα σταδίους. τοῦ δ᾽ ἐπινείου καὶ ἑξήκοντα. κῦνος δ᾽ ἐστὶ τὸ ἐπίνειον. ἄκρα τερματίζουσα τὸν ὀπούντιον κόλπον σταδίων ὄντα περὶ τετταράκοντα, μεταξὺ δὲ, ὀποῦντος καὶ κύνου, πεδίον εὔδαιμον. κεῖται δὲ κατὰ αἰδηψὸν τῆς εὐβοίας, ὅπου τὰ θερμὰ τοῦ ἡρακλέους. πορθμῷ διειργόμενος σταδίων ἑξήκοντα, καὶ ἑκατόν. ἐν δὲ τῷ κύνῳ δευκαλίωνα φασὶν οἰκῆσαι. καὶ τῆς πύρρας αὐτόθι δείκνυται σῆμα. τοῦ δὲ δευκαλίωνος ἀθήνησι. διέχει δὲ τῆς κνημῖδος ὁ κῦνος ὅσον πεντήκοντα σταδίους, καὶ ἡ ἀταλάντη δὲ, νῆσος, κατὰ ὀποῦντα ἵδρυται, ὁμώνυμος τῇ πρὸ τῆς ἀττικῆς. λέγεσθαι δ᾽ ὀπουντίους τινὰς, καὶ ἐν τῇ ἠλείᾳ φασίν. ὧν οὐκ ἄξιον μεμνῆσθαι. πλὴν ὅτι συγγένειαν αὐτῶν ἐξανανεοῦντες τοῖς ὀπουντίοις ὑπάρχουσαν. ὅτι δ᾽ ἐξ ὀποῦντος ἦν πάτροκλος, λέγει ὅμηρος. καὶ διότι φόνον ἀκούσιον πράξας, ἔφυγεν εἰς πηλέα. ὁ δὲ, πατὴρ μενοίτιος ἔμεινεν ἐν τῇ πατρίδι. ἐκεῖσε γὰρ ὁ ἀχιλλεὺς ὑποσχέσθαι τῷ μενοιτίῳ καταξειν τὸν πάτροκλον ἐκ τῆς στρατείας ἐπανελθόντα. οὐ μὴν ἐβασίλευέ γε ἐκεῖνος τῶν ὀπουντίων. ἀλλ᾽ αἴας ὁ λοκρός. πατρίδος ὢν ὥς φασι ναρύκου. αἰανὴν δ᾽ ὀνομάζουσι τὸν ἀναιρεθέντα ὑπὸ τοῦ πατρόκλου. ἀφ᾽ οὗ καὶ τέμενος αἰάνειον δείκνυται. καὶ κρήνη τις αἰανίς. ἑξῆς μετὰ τὸν κῦνον, ἀλόπη. καὶ ὁ δαφνοῦς ὃν ἔφαμεν κατεσκάφθαι. λιμὴν δ᾽ ἐστὶν αὐτόθι διέχων κύνου περὶ ἐννενήκοντα σταδίους. ἐλατείας δὲ, πεζεύοντι εἰς τὴν μεσόγαιαν ἑκατὸν εἴκοσι. ἤδη δ᾽ ἐστὶ ταῦτα τοῦ μαλιακοῦ κόλπου. μετὰ γὰρ τὸν ὀπούντιον, συνεχής ἐστιν οὗτος. μετὰ δὲ δαφνοῦντα κνημῖδες χωρίον ἐρυμνὸν, ὅσον σταδίους εἴκοσι πλεύσαντι. καθ᾽ ὃ καὶ τὸ κήναιον ἐκ τῆς εὐβοίας ἀντίκειται. ἄκρα βλέπουσα πρὸς ἑσπέραν καὶ τὸν μαλιέα κόλπον, πορθμῷ διειργομένη σχεδὸν εἰκοσασταδίῳ. ταῦτα δ᾽ ἤδη τῶν ἐπικνημιδίων ἐστὶ λοκρῶν. ἐνταῦθα, καὶ αἱ λιχάδες καλούμεναι τρεῖς νῆσοι πρόκεινται. ἀπὸ λίχα τοὔνομα ἔχουσαι. καὶ ἄλλαι δ᾽ εἰσὶν ἐν τῷ λεχθέντι παράπλῳ, ἃς ἑκόντες παραλείπομεν. μετὰ δὲ εἴκοσι σταδίους ἀπὸ κνημῖδος λιμὴν, ὑπὲρ οὗ κεῖται τὸ θρόνιον ἐν σταδίοις τοῖς ἴσοις κατὰ τὴν μεσόγαιαν. εἶθ᾽ ὁ βοάγριος ποταμὸς ἐκδίδωσι, ὁ παραρρέων τὸ θρόνιον. μάνην δ᾽ ἐπονομάζουσιν αὐτόν. ἔστι δὲ χειμάρρους. ὥστ᾽ ἀβρόχοις ἐμβαίνειν τοῖς ποσίν. ἄλλοτε δὲ, καὶ δίπλεθρον ἴσχειν πλάτος. μετὰ δὲ ταύτας, σκάρφη. σταδίοις ὑπερκειμένη τῆς θαλάσσης, δέκα, διέχουσα δὲ τοῦ θρονίου τριάκοντα, ἔπειτα νίκαια καὶ αἱ θερμοπύλαι. τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν μὲν ἄλλων οὐκ ἄξιον μεμνῆσθαι. ὧν δ᾽ ὅμηρος μέμνηται. καλλίαρος μὲν οὐκέτι οἰκεῖται. ἑξῆς δὲ βῆσα τὶ πεδίον. καλοῦσι δ᾽ οὕτως ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τῷ τόπῳ. δρυμώδης γάρ ἐστι. ταύτην μὲν οὖν τὴν βῆσαν ἐν τοῖς δυσὶ γραπτέον σ᾽. ἀπὸ γὰρ τοῦ δρυμώδους ὀνόμασται ὁμωνύμως. ὥσπερ καὶ νάπη ἐν τῷ μεθύμνης πεδίῳ. ἣν ἑλλάνικος ἀγνοῶν λάπην ὀνομάζει. τὸν δ᾽ ἐν τῇ ἀττικῇ δῆμον ἀφ᾽ οὗ βησαιεῖς οἱ δημόται λέγονται τῷ ἑνὶ σ γράφουσιν. ἡ δὲ σκάρφη κεῖται ἐφ᾽ ὕψους. διέχουσα σταδίους εἴκοσι. χώραν δ᾽ εὔκαρπον. καὶ εὔδενδρον ἔχει. ἤδη γὰρ, καὶ αὕτη ἀπὸ τοῦ δάσους ὠνόμασται. καλεῖται δὲ νῦν φαρύγαι. ἵδρυται δ᾽ αὐτόθι ἥρας φαρυγαίας ἱερὸν, ἀπὸ τῆς φαρύγας τῆς ἀργείας. καὶ δὴ καὶ ἀποίκοι φασὶν εἶναι ἀργείων. τῶν γε

μὲν ἑσπερίων Λοκρῶν Ὅμηρος οὐ μέμνηται· ἢ οὐ ῥητῶς γε· ἀλλὰ μόνον τῷ δοκεῖν ἀντιδιαστέλλεσθαι τούτοις ἐκείνους, περὶ ὧν εἰρήκαμεν Λοκρῶν· οἳ ναίουσι πέρην ἱερῆς Εὐβοίης, ὡς καὶ ἑτέρων ὄντων. πόλεις δ' ἔσχον, Ἄμφισσάν τε καὶ Ναύπακτον· ὧν ἡ Ναύπακτος συμμένει τοῦ Ἀντιρρίου πλησίον, ὀνόμασται δ' ἀπὸ τῆς ναυπηγίας τῆς ἐκεῖ γενομένης· εἴτε τῶν Ἡρακλειδῶν ἐκεῖ ναυπηγησαμένων τὸν στόλον, εἴθ' ὥς φησιν Ἔφορος Λοκρῶν ἔτι πρότερον παρασκευασάντων. ἔστι δὲ νῦν Αἰτωλῶν, Φιλίππου προσκρίναντος. αὐτοῦ δὲ, καὶ ἡ Χαλκίς. ἧς μέμνηται, καὶ ὁ ποιητὴς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ· ὑποκάτω Καλυδῶνος. αὐτοῦ δὲ, καὶ ὁ Ταφιασσὸς λόφος. ἐν ᾧ τὸ τοῦ Νέσσου μνῆμα καὶ τῶν ἄλλων κενταύρων. ὧν ἀπὸ τῆς σηπεδόνος φασὶ τὸ ὑπὸ τῇ ῥίζῃ τοῦ λόφου προχεόμενον, δυσῶδες, καὶ θρόμβους ἔχον ὕδωρ ῥεῖν. διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ὀζόλας καλεῖσθαι τὸ ἔθνος. καὶ ἡ Μολύκρεια δ' ἐστὶ κατὰ τὸ Ἀντίρριον. Αἰτωλικὸν πολίχνιον. ἡ δ' Ἄμφισσα, ἐπὶ τοῖς ἄκροις ἵδρυται τοῦ Κρισαίου πεδίου. κατέσκαψαν αὐτὴν Ἀμφικτύονες καθάπερ εἰρήκαμεν. ὁ δὲ παράπλους πᾶς ὁ Λοκρικός. μικρὸν ὑπερβάλλει τῶν διακοσίων σταδίων. Ἀλόπην δὲ, καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν τοῖς Ἐπικνημιδίοις ὀνομάζουσι καὶ ἐν τῇ Φθιώτιδι. οὗτοι μὲν οὖν ἄποικοι τῶν Ἐπικνημιδίων. οἱ δ' Ἐπιζεφύριοι, τούτων. τοῖς δὲ Λοκροῖς τοῖς μὲν Ἑσπερίοις. συνεχεῖς εἰσὶν Αἰτωλοί. τοῖς δ' Ἐπικνημιδίοις Αἰνιᾶνες συνεχεῖς οἱ ταύτην ἔχοντες, καὶ μέσοι Δωριεῖς. οὗτοι μὲν οὖν εἰσὶν οἱ τὴν Τετράπολιν οἰκήσαντες. ἥν φασιν εἶναι μητρόπολιν τῶν ἁπάντων Δωριέων. πόλεις δ' ἔσχον, Ἐρινεόν. Βοῖον. Πίνδον Κυτίνιον. ὑπέρκειται δ' ὁ Πίνδος τοῦ Ἐρινεοῦ. παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁμώνυμος ποταμὸς, ἐμβάλλων εἰς τὸν Κηφισσὸν οὐ πολὺ τῆς Λιλαίας ἄπωθεν. τινὲς δ' Ἀκύφαντα λέγουσι τὴν Πίνδον. τούτων ὁ βασιλεὺς Αἰγίμιος ἐκπεσὼν τῆς ἀρχῆς, κατήχθη πάλιν ὡς ἱστοροῦσιν ὑφ' Ἡρακλέους. ἀπεμνημόνευσεν οὖν αὐτῷ τὴν χάριν τελευτήσαντι περὶ τὴν Οἴτην. Ὕλλον γὰρ εἰσεποιήσατο τὸν πρεσβύτατον τῶν ἐκείνου παίδων. καὶ διεδέξατο ἐκεῖνος τὴν ἀρχὴν καὶ οἱ ἀπόγονοι. ἐντεῦθεν ὁρμηθεῖσι τοῖς Ἡρακλείδαις, ὑπῆρξεν ἡ εἰς Πελοπόννησον κάθοδος. τέως μὲν οὖν ἦσαν ἐν ἀξιώματι αἱ πόλεις, καίπερ οὖσαι μικραὶ καὶ λυπρόχωροι. ἔπειτ' ὀλιγωρήθησαν. ἐν δὲ τῷ Φωκικῷ πολέμῳ, καὶ τῇ Μακεδόνων ἐπιστρατείᾳ, καὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀθαμάνων, θαυμαστὸν εἰ καὶ ἴχνος αὐτῶν εἰς Ῥωμαίους ἦλθε. τὰ δ' αὐτὰ πεπόνθασι, καὶ οἱ Αἰνιᾶνες καὶ γὰρ τούτους ἐξέφθειραν Αἰτωλοὶ, καὶ Ἀθαμᾶνες. Αἰτωλοὶ μὲν μετὰ Ἀκαρνάνων πολεμοῦντες, καὶ μέγα δυνάμενοι. Ἀθαμᾶνες δ' ὕστατοι τῶν Ἠπειρωτῶν εἰς ἀξίωμα προαχθέντες, ἤδη τῶν ἄλλων ἀπειρηκότων. καὶ μετ' ἀμυώτου βασιλέως δύναμιν κατασκευασάμενοι. οὗτοι δὲ, τὴν Οἴτην διακατεῖχον. τὸ δ' ὄρος διατείνει ἀπὸ Θερμοπυλῶν, καὶ τῆς ἀνατολῆς μέχρι πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ τὴν ἑσπέραν. τρόπον δέ τινα καὶ πρὸς ὀρθὰς τέμνει τὴν ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ μέχρι Πίνδου, καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβάρων ὀρεινὴν τὸ ὄρος τοῦτο. τούτου δὴ τὸ μὲν πρὸς Θερμοπύλας νεῦον μέρος Οἴτη καλεῖται σταδίων διακοσίων τὸ μῆκος. τραχὺ, καὶ ὑψηλόν. ὑψηλότατον δ' ἐστὶ κατὰ Θερμοπύλας. κορυφοῦται γὰρ ἐνταῦθα, καὶ τελευτᾷ πρὸς ὀξεῖς, καὶ ἀποτόμους μέχρι θαλάσσης κρημνούς. ὀλίγην δ' ἀπολείπει πάροδον τοῖς ἀπὸ τῆς παραλίας ἐμβάλλουσιν εἰς τοὺς Λοκροὺς ἐκ τῆς Θετταλίας. τὴν μὲν οὖν πάροδον, Πύλας καλοῦσι, καὶ Στενὰ καὶ Θερμοπύλας. ἔστι γὰρ καὶ θερμὰ πλησίον ὕδατα τιμώμενα ὡς Ἡρακλέους ἱερά. τὸ δ' ὑπερκείμενον ὄρος Καλλίδρομον. τινὲς δὲ, καὶ τὸ λοιπὸν τὸ δι' Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας διῆκον μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου Καλλίδρομον προσαγορεύουσι. πρὸς δὲ ταῖς Θερμοπύλαις ἔστι φρούρια ἐντὸς τῶν στενῶν, Νίκαια μὲν ἐπὶ θάλασσαν Λοκρῶν. Τειχιοῦς δ' ἐστὶ, καὶ Ἡράκλεια ὑπὲρ αὐτῆς, ἡ Τραχὶν καλουμένη πρότερον. Λακεδαιμονίων κτίσμα. διέχει δὲ τῆς ἀρχαίας Τραχῖνος, περὶ ἓξ σταδίους ἡ Ἡράκλεια. ἑξῆς δ' ἐστὶν ἡ Ῥοδουντία, χωρίον ἐρυμνόν. ποιεῖ δὲ δυσείσβολα τὰ χωρία ταῦτα ἥ τε τραχύτης καὶ τὸ πλῆθος τῶν ὑδάτων φάραγγας ποιούντων ἃς διέξεισι. πρὸς γὰρ τῷ Σπερχειῷ τῷ παραρρέοντι τὴν Ἀντίκυραν, καὶ ὁ Δύρας ἐστίν. ὃν φασὶν ἐπιχειρῆσαι τὴν Ἡρακλέους σβέσαι πυράν. καὶ ἄλλος Μέλας διέχων Τραχῖνος εἰς πέντε σταδίους. πρὸς δὲ μεσημβρίαν τῆς Τραχῖνος φησὶν Ἡρόδοτος εἶναι βαθεῖαν διασφάγα. δι' ἧς Ἀσωπὸς ὁμώνυμος τοῖς εἰρημένοις Ἀσωποῖς, εἰς τὴν θάλασσαν ἐκπίπτει τὴν ἐντὸς Πυλῶν. παραλαβὼν, καὶ τὸν Φοίνικα ἐκ τῆς μεσημβρίας συμβάλλοντα αὐτῷ ὁμώνυμον, τῷ ἥρωϊ. οὗ καὶ τάφος δείκνυται. στάδιοι δ' εἰσὶν ἐπὶ Θερμοπύλας ἀπὸ Ἀσωποῦ πεντεκαίδεκα. τότε μὲν οὖν ἦν ἐνδοξότατα, τὰ χωρία ταῦτα, ἡνίκα τῶν κλείθρων ἐκυρίευε τῶν περὶ τὰ στενά. καὶ τοῖς ἔξω τῶν στενῶν πρὸς τοὺς ἐντὸς, ἦσαν ἀγῶνες πρωτείων. καθάπερ, καὶ πέδας ἐκάλει Φίλιππος τῆς Ἑλλάδος τὴν Χαλκίδα, καὶ τὴν Κόρινθον. πρὸς τὰς ἐκ τῆς Μακεδονίας, ἀφορμὰς βλέπων. ἐπιδέσμους δ' οἱ ὕστερον προσηγόρευον ταύτας τε, καὶ τὴν Δημητριάδα. καὶ γὰρ αὕτη παρόδων ἦν κυρία τῶν περὶ τὰ Τέμπη. τό, τε Πήλιον ἔχουσα καὶ τὴν Ὄσσαν. ὕστερον δὲ πάντων ὑπὸ μίαν ἐξουσίαν ὑπηγμένων, ἅπαντα τελευτᾷ πᾶσι καὶ ἀνέῳγε. περὶ δὲ τὰ στενὰ ταῦτα οἱ περὶ Λεωνίδαν μετὰ ὀλίγων τῶν ὁμόρων τοῖς τόποις, ἀντέσχον πρὸς τὰς τοσαύτας τῶν Περσῶν δυνάμεις. μέχρι περιελθόντες δι' ἀτραπῶν τὰ ὄρη, κατέκοψαν αὐτοὺς οἱ βάρβαροι. καὶ νῦν τὸ πολυάνδριον ἐκείνων ἐστί. καὶ στῆλαι, καὶ ἡ θρυλλουμένη ἐπιγραφὴ τῇ Λακεδαιμονίων στήλῃ. ἔχουσα οὕτως.

» Ὦ ξεῖν' ἀπάγγειλον Λακεδαιμονίοις ὅτι τῇδε

κείμεθα τοῖς κείνων πειθόμενοι νομίμοις. Ἔστι δὲ καὶ λιμὴν μέγας αὐτό-
θι, καὶ δήμητρος ἱερὸν, ἐν ᾧ κατὰ πᾶσαν πυλαίαν θυσίαν ἐτέλουν οἱ ἀμφικτύονες. ἐκ δὲ τοῦ λι-
μένος εἰς ἡράκλειαν τὴν τραχῖνα πεζῇ, στάδιοι τετταράκοντα. πλοῦς δ' ἐπὶ κύναιον ἑβδομήκοντα. ἔ-
ξω δὲ πυλῶν εὐθὺς ὁ σπερχιός. ἐκδίδωσιν. ἐπὶ δὲ πύλας ἀπὸ εὐρίπου, στάδιοι πεντακόσιοι τριά-
κοντα. καὶ ἡ μὲν λοκρὶς, τέλος ἔχει. τὰ δ' ἔξω θετταλῶν ἐστὶ τὰ πρὸς ἕω, καὶ τὸν μαλιακὸν κόλ-
πον. τὰ δὲ πρὸς δύσιν αἰτωλῶν, καὶ ἀκαρνάνων. ἀθαμᾶνες δὲ, καὶ αὐτοὶ ἐκλελοίπασι. μέγιστον
δὴ καὶ παλαιότατον τὸ τῶν θετταλῶν σύστημα. ὧν τὰ μὲν, ὅμηρος εἴρηκε. τὰ δ' ἄλλοι πλείους.
αἰτωλοὺς δ' ὅμηρος μὲν ἀεὶ ἐν ἑνὶ ὀνόματι λέγει. πόλεις οὐκ ἔθνη τάττων ὑπ' αὐτοῖς. πλὴν εἰς τοὺς κου-
ρῆτας. οὓς ἐν μέρει τακτέον αἰτωλικῶν. ἀπὸ θετταλῶν δ' ἀρκτέον. τὰ μὲν σφόδρα παλαιὰ
καὶ μυθώδη. καὶ οὐχ ὁμολογούμενα τὰ πολλὰ, ἐῶντες καθάπερ, καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ἐποιήσαμεν,
τὰ δὲ φαινόμενα ἡμῖν καίρια, λέγοντες. ἔστι δ' αὐτῆς πρὸς θαλάσσῃ μὲν, ἡ ἀπὸ θερμοπυλῶν μέχρι
τῆς ἐκβολῆς τοῦ πηνειοῦ, καὶ τῶν ἄκρων τοῦ πηλίου παραλία βλέπουσα πρὸς ἕω, καὶ πρὸς τὰ ἄ-
κρα τῆς εὐβοίας τὰ βόρεια. ἔχουσι δὲ τὰ μὲν πρὸς εὐβοίᾳ, καὶ θερμοπύλαις μαλιεῖς, καὶ οἱ φθιῶ-
ται ἀχαιοί. τὰ δὲ πρὸς τῷ πηλίῳ μάγνητες, αὕτη μὲν οὖν ἡ πλευρὰ τῆς θετταλίας, ἑῴα λεγέσθω
καὶ παραλία. ἑκατέρωθεν δ' ἀπὸ μὲν πηλίου καὶ πηνειοῦ πρὸς τὴν μεσόγαιαν, μακεδόνες παράκειν-
ται μέχρι παιονίας καὶ τῶν ἠπειρωτικῶν ἐθνῶν. ἀπὸ δὲ τῶν θερμοπυλῶν τὰ παράλληλα τοῖς μακε-
δόσιν ὄρη τὰ οἰταῖα καὶ αἰτωλικὰ, τοῖς δωριεῦσι καὶ τῷ παρνασσῷ συνάπτοντα. καλείσθω δὲ τὸ
μὲν πρὸς τοῖς μακεδόσι πλευρὸν, ἀρκτικόν. τὸ δ' ἕτερον, νότιον. λοιπὸν δ' ἐστὶ τὸ ἑσπέριον. ὃ περι-
κλείουσιν αἰτωλοὶ, καὶ ἀκαρνᾶνες. καὶ ἀμφίλοχοι. καὶ τῶν ἠπειρωτῶν ἀθαμᾶνες, καὶ μολοττοί. καὶ
ἡ τῶν αἰθίκων ποτὲ λεγομένη γῆ. καὶ ἁπλῶς ἡ περὶ πίνδον. πλὴν τοῦ πηλίου, καὶ τῆς ὄσσης. ταῦ-
τα δ' ἐξῆρται μὲν ἱκανῶς. οὐ μήν γε πολλὴν περιλαμβάνει κύκλῳ χώραν. ἀλλ' εἰς τὰ πεδία τε-
λευτᾷ. ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ μέσα τῆς θετταλίας, εὐδαιμονεστάτη χώρα. πλὴν ὅση ποταμόκλυστός ἐστιν.
ὁ γὰρ πηνειὸς διὰ μέσης ῥέων καὶ πολλοὺς δεχόμενος ποταμοὺς, ὑπερχεῖται πολλάκις. τὸ δὲ πα-
λαιὸν, καὶ ἐλιμνάζετο ὡς λόγος τὸ πεδίον, ἔκ τε τῶν ἄλλων μερῶν ὄρεσι περιειργόμενον, καὶ τῆς πα-
ραλίας μετεωρότερα τῶν πεδίων ἐχούσης τὰ χωρία. ὑπὸ δὲ σεισμῶν ῥήγματος γενομένου τὰ νῦν κα-
λούμενα τέμπη, καὶ τὴν ὄσσαν ἀποσχίζοντος ἀπὸ τοῦ ὀλύμπου, διεξέπεσε ταύτῃ πρὸς θάλασσαν ὁ πηνειὸς
καὶ ἀνέψυξε τὴν χώραν ταύτην. ὑπολείπεται δ' ὅμως ἥτε νεσωνὶς λίμνη μεγάλη, ἡ βοιβηΐς. ἐλάττων
ἐκείνης, καὶ πλησιεστέρα τῇ παραλίᾳ. τοιαύτη δ' οὖσα, εἰς τέτταρα μέρη διῄρητο. ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν,
φθιῶτις. τὸ δ' ἑστιαιῶτις. τὸ δὲ, θετταλιῶτις, τὸ δὲ πελασγιῶτις. ἔχει δ' ἡ μὲν φθιῶτις τὰ νότια,
τὰ παρὰ τὴν οἴτην. ἀπὸ τοῦ μελιακοῦ κόλπου, καὶ πυλαϊκοῦ, μέχρι τῆς δολοπίας καὶ τῆς πίν-
δου διατείνοντα. πλατυνόμενα δὲ μέχρι φαρσαλίου, καὶ τῶν πεδίων τῶν θετταλικῶν, ἡ δ' ἑστιαιῶ-
τις, τὰ ἑσπέρια καὶ τὰ μεταξὺ πίνδου, καὶ τῆς ἄνω μακεδονίας. τὰ δὲ λοιπὰ, οἵ τε ὑπὸ τῇ ἑστιαιώτιδι νε-
μόμενοι τὰ πεδία, καλούμενοι δὲ πελασγιῶται, συνάπτοντες ἤδη τοῖς κάτω μακεδόσι, καὶ οἱ ἐφεξῆς τὰ μέ-
χρι μαγνητικῆς παραλίας ἐκπληροῦντες χωρία, κἀνταῦθα δ' ἐνδόξων ὀνομάτων ἔσται ἀρίθμησις,
καὶ ἄλλως διὰ τὴν ὁμήρου ποίησιν. τῶν δὲ πόλεων ὀλίγαι σώζουσι, τὸ πάτριον ἀξίωμα. μάλιστα δὲ λάρισ-
σα. ὁ δὲ ποιητὴς εἰς δέκα μέρη, καὶ δυναστείας διελὼν τὴν σύμπασαν γῆν ἣν νῦν θετταλίαν προσαγο-
ρεύομεν, προσλαβών τινα, τῆς οἰταίας καὶ τῆς λοκρικῆς. ὡς δ' αὔτως, καὶ τῆς ὑπὸ μακεδόσι νῦν τεταγμένης
ὑπογράφει τι κοινὸν καὶ πάσῃ χώρᾳ συμβαῖνον, τὸ μεταβάλλεσθαι, καὶ τὰ ὅλα καὶ τὰ καθ' ἕκαστα
παρὰ τὰς τῶν ἐπικρατούντων δυνάμεις. πρώτους δὲ καταλέγει τοὺς ὑπ' ἀχιλλεῖ, τοὺς τὸν νότιον
πλευρὸν κατέχοντας. καὶ παρακειμένους τῇ τε οἴτῃ καὶ τοῖς ἐπικνημιδίοις λοκροῖς, ὅσοι τὸ πελασ-
(γικὸν ἄργος ἔναιον.

» οἵ τ' ἄλλον οἵ τ' ἀλώπην. οἵ τε τραχῖν' ἐνέμοντο.
» οἵ τ' εἶχον φθίην ἠδ' ἑλλάδα καλλιγύναικα.
» μυρμιδόνες δ' ἐκαλοῦντο καὶ ἕλληνες, καὶ ἀχαιοί,

Συζεύγνυσι δὲ τούτοις καὶ τοὺς ὑπὸ τῷ φοίνι-
κι. καὶ κοινὸν ἀμφοῖν ποιεῖ τὸν στόλον. ὁ μὲν οὖν ποιητὴς οὐδαμοῦ μέμνηται δολοπικῆς στρατείας,
κατὰ τὸν περὶ ἴλιον ἀγῶνα. οὐ δὲ γὰρ αὐτῶν τὸν ἡγεμόνα φοίνικα πεποίηκεν εἰς τοὺς κινδύνους ἐξιόν-
τα καθάπερ τὸν νέστορα. ἄλλοι δ' εἰρήκασι καθάπερ καὶ πίνδαρος μνησθεὶς τοῦ φοίνικος.

» ὃς δολόπων ἄγαγε θρασὺν ὅμιλον σφενδονᾶσαι.
» ἱπποδάμων δαναῶν βέλεσι πρόσφορον.

Τοῦτο δὴ καὶ παρὰ τῷ ποιητῇ κατὰ τὸ σιωπώμενον, ὡς εἰώθασι λέγειν οἱ γραμματικοὶ συνυπα-
κουστέον. γελοῖον γὰρ τὸν βασιλέα μετέχειν τῆς στρατείας.

» ναῖον δ' ἐσχατιὴν, φθίης δολόπεσσιν ἀνάσσων.

Τοὺς δ' ὑπηκόους μὴ παρεῖναι. οὐ δὲ γὰρ συστρατεύειν τῷ ἀχιλλεῖ δόξειεν. ἀλλὰ μόνον ὀλίγων ἐστὶν
ἐπιστάτης. καὶ ῥήτωρ ἕπεται. εἰ δ' ἄρα σύμβουλος, τὰ δ' ἔπη βούλεται, καὶ τοῦτο δηλοῦν.

» μύθων τε ῥητῆρ' ἔμμεναι πρηκτῆρά τε ἔργων. (τοιοῦτοι γὰρ τὸ,

» Ὑπὸ τῷ ἀχιλλεῖ λεχθέντων ἐν ἀντιλογίᾳ-- τό τε ἄργος τὸ πελασγικόν. καὶ πάλιν δέχονταί τινες θετταλονίκην, περὶ λάρισσαν ἱδρυμένην ποτέ. νῦν δ' οὐκέτ' οὖσαν. οἱ δὲ πόλιν. ἀλλὰ τὸ τῶν θετταλῶν πεδίον οὕτως ὀνομαστικῶς λεγόμενον. θεμένου τοὔνομα ἄβαντος. ὃς ἐξ ἄργους δεῦρ' ἀποικήσαντα, φθίαν τε. οἱ μὲν, τὴν αὐτὴν εἶναι τῇ ἑλλάδι καὶ ἀχαΐᾳ. ταύτας δ' εἶναι διατεμνομένης τῆς συμπάσης θετταλίας κατὰ θάτερον μέρος, τὸ νότιον οἱ δὲ, διαιροῦσιν. ἔοικε δ' ὁ ποιητὴς δύο, ποιεῖν, τήν τε φθίαν, καὶ τὴν ἑλλάδα, ὅταν οὕτω φῇ

» Οἵ τ' εἶχον φθίην ἠδ' ἑλλάδα καλλιγύναικα. ὡς δυοῖν οὐσῶν καὶ

» Ἔπειτ' ἀπάνευθε δι' ἑλλάδος εὐρυχόροιο

» Φθίην δ' ἐξικόμην. καὶ ἂν ἑλλάδα τε φθίην τε.

Ὁ μὲν οὖν ποιητὴς δύο ποιεῖ. πότερον δὲ πόλεις ἢ χώρας, οὐ δηλοῖ. οἱ δ' ὕστερον τὴν ἑλλάδα οἱ μὲν, εἰπόντες χώραν, διατετάσθαι φασὶ πρὸς θήβας τὰς φθιώτιδας, ἀπὸ τῆς πάλαι φαρσάλου. ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ καὶ τὸ θετίδειον ἐστὶ πλησίον τῶν φαρσάλων ἀμφοῖν. τῆς τε παλαιᾶς καὶ τῆς νέας. κἀκ τοῦ θετιδείου τεκμαιρόμενοι τῆς ὑπὸ τῷ ἀχιλλεῖ μέρος εἶναι καὶ τήνδε, τὴν χώραν. οἱ δ' εἰπόντες πόλιν, φαρσάλιοι μὲν δεικνύουσιν ἀπὸ ἑξήκοντα σταδίων τῆς ἑαυτῶν πόλεως κατεσκαμμένην πόλιν. ἣν πεπιστεύκασιν εἶναι τὴν ἑλλάδα. καὶ δύο κρήνας πλησίον. μεσσηίδα, καὶ ὑπέρειαν. μελιταιεῖς δ' ἄποθεν ἑαυτῶν ὅσον δέκα σταδίους, οἰκεῖσθαι τὴν ἑλλάδα πέραν τοῦ ἐνιπέως, ἡνίκα ἡ αὐτῶν πόλις πύρρα ὠνομάζετο. ἐκ δὲ, τῆς ἑλλάδος ἐν ταπεινῷ χωρίῳ κειμένης, εἰς τὴν ἑαυτῶν μετοικῆσαι τοὺς ἕλληνας, μαρτύριον δ' εἶναι τὸν ἐν τῇ ἀγορᾷ τῇ σφετέρᾳ τάφον τοῦ ἕλληνος τοῦ δευκαλίωνος υἱοῦ καὶ πύρρας. ἱστορεῖται γὰρ ὁ δευκαλίων τῆς φθιώτιδος ἄρξαι, καὶ ἁπλῶς τῆς θετταλίας. ὁ δ' ἐνιπεὺς ἀπὸ τῆς ὄθρυος παρὰ φάρσαλον ῥυεὶς, εἰς τὸν ἀπιδανὸν παραβάλλει. ὁ δ' εἰς τὸν πηνειόν. περὶ μὲν ἑλλήνων ταῦτα, φθίοι δὲ καλοῦνται. οἵ τε ὑπ' ἀχιλλεῖ, καὶ ὑπὸ πρωτεσιλάῳ, καὶ φιλοκτήτῃ. ὁ δὲ ποιητὴς τούτων μάρτυς. εἰπὼν γοῦν ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν ὑπ' ἀχιλλεῖ.

» Οἵ τ' εἶχον φθίην

Ἐν τῇ ἐπὶ ναυσὶ μάχῃ. τούτους μὲν ὑπομένοντας ἐν ταῖς ναυσὶ πεποίηκε μετὰ τοῦ ἀχιλλέως καὶ καθ' ἡσυχίαν ὄντας. τοὺς δ' ὑπὸ φιλοκτήτου μαχομένους. καὶ τοὺς ὑπὸ πρωτεσιλάου πρότερον. εἶτα ποδάρκους μενεπτολέμου. περὶ ὧν κοινῶς μὲν οὕτω φησίν.

» Ἔνθα δὲ βοιωτοὶ, καὶ ἰάονες ἑλκεχίτωνες

» Λοκροὶ καὶ φθίοι καὶ φαιδιμόεντες ἐπειοί. ἰδίως δὲ

» Πρὸ φθίων δὲ μέδοντε μενεπτόλεμός τε ποδάρκης.

Οἱ μὲν, πρὸ φθίων μεγαθύμων θωρηχθέντες ναῦφιν ἀμυνόμενοι ἐμάχοντο. τάχα δὲ, καὶ οἱ σὺν εὐρυπύλῳ, φθίοι ἐλέγοντο, ὅμοροι τούτοις ὄντες. νῦν μέντοι μαγνησίας νομίζουσι τῆς ὑπ' εὐρυπύλῳ τὰ περὶ ὄρμενον, καὶ τὴν ὑπὸ φιλοκτήτου πᾶσαν. τὴν δ' ὑπὸ τῷ ἀχιλλεῖ τῆς φθίας ἀπὸ δολοπίας καὶ τοῦ πεδίου, μέχρι τῆς μαγνητικῆς θαλάττης. μέχρι δὲ τῆς ὑπὸ πρωτεσιλάῳ πόλεως ἀντρῶνος ἣ νῦν πληθυντικῶς λέγεται. περὶ ἄλλου δὲ, καὶ ἀλόπης διαποροῦσι μὴ οὐ τούτους λέγει τοὺς τόπους οἱ νῦν ἐν τῷ φθιωτικῷ τέλει φέρονται. ἀλλὰ τοὺς ἐν λοκροῖς μέχρι δεῦρο ἐπὶ κρατοῦντος ἀχιλλέως, ὥσπερ, καὶ μέχρι τραχῖνος καὶ τῆς οἰταίας. ἔστι γὰρ καὶ ἄλος καὶ ἁλιοὺς ἐν τῇ παραλίᾳ τῶν λοκρῶν καθάπερ καὶ ἀλόπη. οἱ δὲ, τὸν ἁλιοῦντα ἀντὶ ἀλόπης τιθέασι, καὶ γράφουσιν οὕτως.

» Οἵ θ' ἄλον οἵ θ' ἁλιοῦντα, οἵ τε τρηχῖν' ἐνέμοντο.

Ὁ δὲ φθιωτικὸς ἄλος ὑπὸ τῷ πέρατι κεῖται τῆς ὄθρυος ὄρους πρὸς ἄρκτον, κειμένου τῇ φθιώτιδι. ὁμόρου δὲ τῷ τυμφρηστῷ τῷ ὄρει καὶ τοῖς δόλοψιν. ἐκεῖθεν δὲ παρατείνοντος εἰς τὰ πλησίον, τοῦ μαλιακοῦ κόλπου. ἀπέχει δ' ἴτωνος περὶ ἑξήκοντα σταδίους ὁ ἄλος ἢ ἅλος. λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως ᾤκισε δ' ὁ ἀθάμας τὴν ἄλον. ὑπέρκειται δὲ τοῦ κροκίου πεδίου ῥεῖ δὲ ποταμὸς ἄμφρυσος πρὸς τὸ τεῖχει. ὑπὸ δὲ τῷ κροκίῳ θῆβαι εἰσὶν, αἱ φθιώτιδες. καὶ ἡ χώρα δὲ, φθιῶτις καλεῖται. καὶ ἡ ἀχαϊκὴ συνάπτουσα τοῖς μαλιεῦσιν, ὥσπερ καὶ οἱ τῆς ὄθρυος πρόποδες. καθάπερ δὲ ἡ φυλάκη ὑπὸ πρωτεσιλάῳ τῆς φθιώτιδος, ἐστὶ τῆς προσχώρου τοῖς μαλιεῦσιν, οὕτω, καὶ ἡ ἄλος. διέχει δὲ θηβῶν περὶ ἑκατὸν σταδίους ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ φαρσάλου, καὶ φθιωτῶν. φίλιππος μέντοι φαρσαλίοις προσένειμεν ἀφελόμενος τῶν φθιωτῶν. οὕτω δὲ συμβαίνει τοὺς ὅρους καὶ τὰς συντάξεις τῶν τε ἐθνῶν καὶ τῶν τόπων ἀλλάττεσθαι ἀεὶ, καθάπερ εἴπομεν. οὕτω, καὶ σοφοκλῆς τὴν τραχινίαν φθιῶτιν εἴρηκεν. ἀρτεμίδωρος δὲ τὴν ἄλον ἐν τῇ παραλίᾳ τίθησιν ἔξω μὲν τοῦ μαλιακοῦ κόλπου κειμένην. φθιῶτιν δὲ, προϊὼν γὰρ ἐνθένδε ὡς ἐπὶ τὸν πηνειὸν μετὰ τὸν ἀντρῶνα τίθησι πτελεόν. εἶτα τὴν ἄλον ἀπὸ τοῦ πτελεοῦ διέχουσαν ἑκατὸν, καὶ δέκα σταδίους. περὶ δὲ τραχῖνος εἴρηται ὁποία τίς. καὶ ὁ ποιητὴς κατονομάζει. τοῦ δὲ σπερχειοῦ μεμνημένος πολλάκις ὡς ἐπιχωρίου ποταμοῦ τὰς πηγὰς ἔχοντος ἐκ τυμφρηστοῦ, ἐκδιδόντος δὲ πλησίον θερμοπύλου μεταξὺ αὐτοῦ καὶ λαμίας, δηλοῖ, ὅτι καὶ τὰ ἐντὸς πυλῶν ὅσα τοῦ μαλιακοῦ κόλπου, καὶ τὰ ἐκτὸς ὑπ' ἐκείνῳ ἦν. ἀπέχει δὲ, λαμίας ὁ-

σπερχειὸς περὶ τριάκοντα σταδίους, ὑπὲρ κειμένης πεδίου τινὸς καθήκοντος ἐπὶ τὸν μαλιακὸν κόλ-
πον. ὅτι δ' ὁ σπερχειὸς ἐπιχώριος, ἔκ τε τοῦ τρέφειν ἐκείνῳ τὴν κόμην φάσκειν, καὶ μενέσθιον ἕνα
τῶν λοχαγῶν αὐτοῦ, σπερχειοῦ λέγεσθαι παῖδα, καὶ τῆς ἀδελφῆς τῆς ἀχιλλέως. μυρμιδόνας
δ' εἰκὸς καλεῖσθαι πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ ἀχιλλεῖ καὶ τῷ πατρόκλῳ. οἳ συνηκολούθησαν ἐξ αἰ-
γίνης φεύγοντι τῷ πηλεῖ. ἀχαιοὶ δ' ἐκαλοῦντο οἱ φθιῶται πάντες. διαριθμοῦνται δὲ τὰς ὑπὸ
τῷ φθιωτικῷ τέλει τῷ ὑπ' ἀχιλλεῖ κατοικίας, μαλιέων ἀρξάμενοι πλείους μὲν, ἐν δ' αὐταῖς θή-
βας τὰς φθιώτιδας. ἐχῖνον λαμίαν. περὶ ἣν ὁ λαμιακὸς συνέστη πόλεμος μακεδόσι, καὶ ἀντιπά-
τρῳ πρὸς ἀθηναίους. ἐν ᾧ λεωσθένης ἔπεσε τῶν ἀθηναίων στρατηγὸς, ἀλεξάνδρου τοῦ βασιλέως ἑταῖ-
ρος. ἐρινεόν. πρὸς τούτοις κορώνειαν. ὁμώνυμον τῇ βοιωτικῇ. μελίτειαν. θαυμακούς. πρόερναν.
φάρσαλον. ἐρέτριαν ὁμώνυμον τῇ εὐβοϊκῇ. παραχελωΐτας. καὶ τούτους ὁμωνύμους τοῖς αἰτωλικοῖς. καὶ
γὰρ ἐνταῦθά ἐστιν ἀχελῶος ποταμὸς πλησίον λαμίας, παρ' ὃν οἰκοῦσιν οἱ παραχελωῖται, παρέτεινε δ' ἡ χώ-
ρα αὕτη πρὸς ἄρκτον μὲν, τῇ τῶν ἀσκληπιαδῶν. καὶ μάλιστα πρὸς ἑσπερίων, καὶ τῇ εὐρυπύλου καὶ πρωτεσι-
λάου ταῖς πρὸς ἕω κεκλιμέναις -- πρὸς νότον δὲ τῇ οἰταίᾳ εἰς τετταρακαίδεκα δήμους διῃ-
ρημένῃ. ἡρακλείᾳ τε καὶ δρυοπίδι. τετράπολιν γεγονυίᾳ ποτὲ καθάπερ καὶ τὴν δωρίδα. μητρό-
πολιν δὲ τῶν ἐν πελοποννήσῳ δρυόπων νομιζομένην. τῆς δ' οἰταίας, καὶ ὁ ἀκύφας ἐστὶ, καὶ πα-
ρασωπιὰς καὶ οἰνειάδαι. καὶ ἀντίκιρρα ὁμώνυμος τῇ ἐν λοκροῖς τοῖς ἑσπερίοις. λέγω δὲ τὰς δια-
τάξεις ταύτας οὐκ ἀεὶ μεμενηκυίας τὰς αὐτάς. ἀλλὰ ποικίλως μεταβεβλημένας. αἱ δ' ἐπισημό-
τατοι μάλιστα, ἄξιαι μνήμης εἰσί. τοὺς δὲ δόλοπας φράζει, καὶ ὁ ποιητὴς ἱκανῶς. ὅτι ἐπὶ ταῖς ἐσχα-
τιαῖς εἰσι τῆς φθίας. καὶ ὅτι ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι ἦσαν τῷ πηλεῖ, οὗπερ καὶ οἱ φθιῶται. ναῖον
γάρ φησιν ἐσχατιὴν φθίης. καὶ τὴν φοῖνιξ δολόπεσσιν ἀνάσσων δόντος τοῦ πηλέως. γειτνιᾷ δὲ τῇ πίν-
δῳ καὶ τοῖς περὶ αὐτὴν χωρίοις θετταλικοῖς οὖσι τοῖς πλησίοις. διὰ γὰρ τὴν ἐπιφάνειαν, καὶ τὴν
ἐπικράτειαν τῶν θετταλῶν, καὶ τῶν μακεδόνων, οἱ πλησιάζοντες αὐτοῖς μάλιστα τῶν ἠπειρωτῶν
οἱ μὲν, ἑκόντες οἱ δ' ἄκοντες, μέρη κατέστησαν θετταλῶν ἢ καὶ μακεδόνων. καθάπερ ἀθαμᾶνες, καὶ
αἴθικες. καὶ τάλαρες, θετταλῶν. ὀρέσται δὲ, καὶ πελαγόνες καὶ ἐλιμιῶται μακεδόνων. ἡ δὲ πίν-
δος ὄρος μέγα. πρὸς ἄρκτον μὲν τὴν μακεδονίαν, πρὸς ἑσπέραν δὲ περραιβοὺς μετανάστας ἀνθρώ-
πους ἔχουσα. πρὸς δὲ μεσημβρίαν δόλοπας. αὕτη δ' ἐστὶ τῆς θετταλίας. ἐπ' αὐτῇ δὲ τῇ πίνδῳ ᾤκουν
τάλαρες, μολοττικὸν φῦλον. τῶν περὶ τὸν τόμαρον ἀπόσπασμα. καὶ αἴθικες οὓς ἐξελαθῆναι φη-
σὶν ὑπὸ πειρίθου τοὺς κενταύρους ὁ ποιητής. ἐκλελοιπέναι δὲ νῦν ἱστοροῦνται. τὴν δ' ἔκλειψιν
διττῶς ἀκουστέον. ἢ γὰρ ἀφανισθέντων τῶν ἀνθρώπων, καὶ τῆς χώρας τελέως ἠρημωμένης, ἢ τοῦ ὀ-
νόματος τοῦ ἐθνικοῦ μηκέτι ὄντος, μηδὲ συστήματος διαμένοντος τοιούτου, ὅταν οὖν ἄσημον τελέως
ᾖ, τὸ λειπόμενον νυνὶ σύστημα, οὐκ ἄξιον μνήμης τίθεμεν, οὔτ' αὐτὸ, οὔτε τοὔνομα τὸ μεταληφθέν.
ὅταν δ' ἔχῃ τοῦ μεμνῆσθαι δικαίαν πρόφασιν, λέγειν ἀναγκαῖον τὴν μεταβολήν. λοιπὸν δ' εἰπεῖν
τῆς παραλίας τὴν τάξιν τῆς ὑπὸ τῷ ἀχιλλεῖ. ἀπὸ θερμοπυλῶν ἀρξαμένους, τὴν γὰρ λοκρικὴν
καὶ τὰς ἄλλας εἰρήκαμεν. αἱ τοίνυν θερμοπύλαι, τοῦ μὲν κηναίου διεστήκασιν, ἑβδομήκοντα στα-
δίων πορθμῷ. παραπλέοντι δ' ἔξω πυλῶν τοῦ σπερχειοῦ ὡς σταδίους δέκα ἔνθεν δ' εἰς φάλαραν, εἴ-
κοσι. φαλάρων δ' ἀπὸ θαλάσσης ὑπέρκειται πεντήκοντα στάδια ἡ τῶν δεκαπέντε πόλεων. εἶθ' ἑ-
ξῆς παραπλεύσαντι σταδίοις ἑκατὸν, ὁ ἐχῖνος ὑπέρκειται, τῆς δ' ἑξῆς παραλίας ἐν μεσογαίᾳ ἐστὶν
ἡ κρεμαστὴ λάρισσα εἴκοσι σταδίους αὐτῆς διέχουσα, ἡ δ' αὐτὴ μὲν πελασγία λεγομένη, καὶ λάρισ-
σα. εἶτα μυόννησος νησίδιον. εἶτ' ἄντρων. ἣν δ' ἡ αὐτὴ ὑπὸ πρωτεσιλάῳ καταλέγει δ' ὁ ποιητής,
ἐφ' ἑξῆς τοῖς ὑπ' ἀχιλλεῖ, τοὺς ὑπὸ πρωτεσιλάῳ. οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ καὶ ἐφ' ἑξῆς ὄντες τῇ ὑπὸ τῷ ἀ-
χιλλεῖ παραλίᾳ, μέχρι ἀντρῶνος, ἡ μὲν οὖν φυλάκη, ἐγγὺς θηβῶν ἐστι τῶν φθιωτίδων. αἵπερ εἰσὶ καὶ
αὐταὶ ὑπὸ τῷ πρωτεσιλάῳ. καὶ ἄλλος δὲ, καὶ λάρισσα ἡ κρεμαστὴ καὶ τὸ δημήτριον, ὑπ' ἐκείνῳ πᾶ-
σαι, πρὸς ἕω τῆς ὄθρυος, τὸ δὲ δημήτριον, δήμητρος εἴρηκε τέμενος. καὶ ἐκάλεσε πύρασον. ἦν δὲ πόλις εὐ-
λίμενος ἡ πύρασος ἐν δυσὶ σταδίοις. ἔχουσα δήμητρος ἄλσος, καὶ ἱερὸν ἅγιον. διέχουσα θηβῶν στα-
δίους εἴκοσι. ὑπέρκεινται δὲ πυράσου θῆβαι. θηβῶν δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ τὸ κρόκιον πεδίον πρὸς τῷ
καταλήγοντι τῆς ὄθρυος. δι' οὗ ὁ ἄμβρυσος ῥεῖ ποταμός. τούτου δ' ὑπέρκειται ὁ ἴτων, ὅπου τὸ τῆς
ἰτωνίας ἱερόν. ἀφ' οὗ, καὶ τὸ ἐν τῇ βοιωτίᾳ. καὶ ὁ κουάριος ποταμός. εἴρηται δὲ περὶ τούτου, ἐν τοῖς
περὶ τῆς ἄρνης βοιωτιακῆς. ταῦτα δ' ἐστὶ τῆς θετταλιώτιδος μιᾶς τῶν τεττάρων μερίδων τῆς ὅλης
θετταλίας. ἧς, καὶ ἐπ' εὐρυπύλῳ. καὶ ὁ φύλλος. ἔνθα ἀπόλλωνος τοῦ φυλλαίου ἱερόν. καὶ ἴχναι, ὅ-
που ἡ θέμις ἰχναία τιμᾶται. κατὰ δὲ τὸν ἄντρωνα ἔρυμα ὕφαλον ἐν τῷ πρὸς εὐβοίᾳ ἐστὶ πό-
ρῳ. καλούμενον ὄρος ἄντρωνος. εἶτα πτελεὸν, καὶ ὁ ἄλλος. εἶτα τὸ τῆς δήμητρος ἱερὸν καὶ ὁ πύρα-
σος κατεσκαμμένος. ὑπὲρ αὐτῶν δ' αἱ θῆβαι. εἶτα ἄκρα πύρρα. καὶ διονυσία πλησίον. ὧν τὸ μὲν,
πύρρα, τὸ δὲ δευκαλίων καλεῖται. ἐνταῦθα δὲ, καὶ ἡ φθιῶτις πως τελευτᾷ. ἑξῆς δὲ τοὺς ὑπὸ εὐ-
μήλῳ καταλέγει τὴν συνεχῆ παραλίαν. ἔπεισιν ἤδη μαγνήσας, καὶ τῆς πελασγιώτιδος γῆς φε-

ραὶ μὲν οὖν εἰσι πέραν τῶν πελασγικῶν πεδίων πρὸς τὴν μαγνησίαν, ἃ παρατείνει μέχρι πηλίου σταδίους ἑκατὸν ἑξήκοντα. ἐπίνειον δὲ, τῶν φερῶν, παγασαὶ, διέχον ἐνενήκοντα σταδίους αὐτῶν. ἰωλκοῦ δὲ, εἴκοσι. ἡ δ' ἰωλκὸς κατέσκαπται μὲν, ἐκ παλαιοῦ. ἐντεῦθεν δ' ἔστειλε τὸν ἰάσονα, καὶ τὴν ἀργὼ πελίας. ἀπὸ δὲ τῆς ναυπηγίας τῆς ἀργοῦς, καὶ παγασὰς λέγεσθαι μυθεύουσι τὸν τόπον. οἱ δὲ, πιθανώτερον ἡγοῦνται τοὔνομα τῷ τόπῳ πεπεῖσθαι μᾶλλον, ἀπὸ τῶν πηγῶν. αἳ πολλαί τε καὶ δαψιλεῖς ῥέουσι. πλησίον δ' ἀφέται, ὡς ἂν ἀφετήριόν τι τῶν ἀργοναυτῶν. τῆς δὲ δημητριάδος ἑπτὰ σταδίους ὑπέρκειται τῆς θαλάσσης ἰωλκός. ἔκτισε δὲ δημήτριος ὁ πολιορκητὴς ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν δημητριάδα. μεταξὺ νηλίας καὶ παγασῶν ἐπὶ θαλάσσῃ. τὰς πλησίον πολίχνας εἰς αὐτὴν συνοικίσας. νηλίαν τε καὶ παγασὰς καὶ ὀρμίνιον. ἔτι δὲ ῥιζοῦντα. σηπιάδα. ὀλίζωνα. βοίβην. ἰωλκόν. αἳ δὲ, νῦν εἰσι κῶμαι τῆς δημητριάδος. καὶ δὴ καὶ ναύσταθμον ἦν μᾶλλον καὶ βασίλειον μέχρι πολλοῦ τοῖς βασιλεῦσι τῶν μακεδόνων. ἐπεκράτει δὲ καὶ τῶν τεμπῶν, καὶ τῶν ὀρῶν ἀμφοῖν. τοῦ τε πηλίου, καὶ τῆς ὄσσης, νῦν δὲ συνέσταλται μὲν, τῶν δ' ἐν τῇ μαγνησίᾳ πασῶν ὅμως διαφέρει. ἡ δὲ βοιβηὶς λίμνη πλησιάζει μὲν ταῖς φεραῖς. συνάπτει δὲ, καὶ τοῖς ἀκρολήγοισι τοῦ πηλίου πέρασι, καὶ τῆς μαγνησίας. βοίβη δὲ χωρίον ἐπὶ τῇ λίμνῃ κείμενον. καθάπερ δὴ τὴν ἰωλκὸν αὐξηθεῖσαν ἐπὶ πλέον, κατέλυσαν αἱ στάσεις, καὶ αἱ τυραννίδες, οὕτω, καὶ τὰς φερὰς συνέστειλαν ἐξαρθείσας ποτὲ συγκαταλυθείσας τοῖς τυράννοις. πλησίον δὲ τῆς δημητριάδος ὁ ἄναυρος ῥεῖ. καλεῖται δὲ, συνεχὴς αἰγιαλὸς ἰωλκός. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν πυλαϊκὴν πανήγυριν συνετέλουν. ὁ δ' ἀρτεμίδωρος ἀπωτέρω τῆς δημητριάδος τίθησι τὸν παγασητικὸν κόλπον εἰς τοὺς ὑπὸ φιλοκτήτου τόπους. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ φησὶν εἶναι τὴν κικύνηθον νῆσον. καὶ πολίχνην ὁμώνυμον. ἑξῆς δ' ὑπὸ φιλοκτήτου πόλεις καταλέγονται. ἡ μὲν οὖν μεθώνη ἑτέρα ἐστὶ τῆς θρακίας μεθώνης, ἣν κατέσκαψε φίλιππος, ἐμνήσθημεν δὲ, καὶ πρότερον τῆς ἐν πελοποννήσῳ. πρόκεινται δὲ, τῶν μαγνήτων νῆσοι συχναὶ μὲν, αἱ δ' ἐν ὀνόματι σκίαθός τε καὶ πεπάρηθος. καὶ ἰκός. ἀλόννησός τε καὶ σκῦρος. ὁμωνύμους ἔχουσαι πόλεις. μάλιστα δ' ἐστὶν ἐν ὀνόματι σκῦρος διὰ τὴν λυκομήδους πρὸς ἀχιλλέα οἰκειότητα. καὶ τὴν νεοπτολέμου τοῦ ἀχιλλέως ἐνταῦθα γέννησίν τε καὶ ἐκτροφήν. ὕστερον δὲ φίλιππος αὐξηθεὶς, ὁρῶν ἀθηναίους ἐπικρατοῦντας τῆς θαλάσσης καὶ τῶν νήσων ἄρχοντας, καὶ τούτων, καὶ τῶν ἄλλων, ἐποίησε τὰς πλησίον ἑαυτῷ μάλιστα ἐνδόξους, πολεμῶν γὰρ περὶ τῆς ἡγεμονίας. ἐπιχείρει πρώτοις ἀεὶ τοῖς ἐγγύθεν, καὶ καθάπερ αὐτῆς τῆς μαγνήτιδος τὰ πολλὰ μέρη τὴν μακεδονίαν ἐποίησε τῆς θράκης, καὶ τῆς ἄλλης τῆς κύκλῳ γῆς οὕτω, καὶ τὰς πρὸ τῆς μαγνησίας νήσους ἀφῃρεῖτο. καὶ τὰς ὑπ' οὐδενὸς γνωριζομένας πρότερον, περιμαχήτους, καὶ γνωρίμους ἐποίει. τὴν δ' οὖν σκῦρον μάλιστα μὲν αἱ ἀρχαιολογίαι συνιστῶσιν. ἀλλὰ καὶ τὰ τοιαῦτα θρυλεῖσθαι ποιεῖ. οἷον αἱ τῶν αἰγῶν ἀρεταὶ τῶν σκυρίων. καὶ τὰ μέταλλα τῆς ποικίλης λίθου τῆς σκυρίας, καθάπερ τῆς καρυστίας, καὶ τῆς δευκαλίας. καὶ τῆς συναδικῆς ἱεροπολιτικῆς. μονολίθους γὰρ κίονας καὶ πλάκας ὁρᾶν ἐστὶν ἐν τῇ ῥώμῃ τῆς ποικίλης λιθείας. ὑφ' ἧς ἡ πόλις κοσμεῖται δημοσίᾳ τε καὶ ἰδίᾳ. πεποίηκέ τε τὰ λευκόλιθα, οὐ πολλοῦ ἄξια. ὁ δ' οὖν ποιητὴς μέχρι δεῦρο προελθὼν τῆς μαγνητικῆς παραλίας ἐπάνεισιν ἐπὶ τὴν ἄνω θετταλίαν. ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς δολοπίας, καὶ τῆς πίνδου.

» Οἳ δ' εἶχον τρίκην καὶ ἰθώμην κλωμακόεσσαν.

Ταῦτα τὰ χωρία ἔστι μὲν τῆς ἱστιαιώτιδος. ἐκαλεῖτο δὲ ὥς φασι πρότερον δωρίς. κατασχόντων δὲ τῶν περραιβῶν αὐτὴν, οἳ καὶ τῆς εὐβοίας τὴν ἱστιαιῶτιν κατεστρέψαντο, καὶ τοὺς ἀνθρώπους εἰς τὴν ἤπειρον ἀνέστασαν, διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐποικησάντων ἱσταίων τὴν χώραν, ἐπ' ἐκείνων οὕτως ἐκάλεσαν. ἔστι δ' ἡ μὲν τρίκκη ὅπου τὸ ἱερὸν τοῦ ἀσκληπιοῦ τὸ ἀρχαιότατον, καὶ ἐπιφανέστατον. ὅμορος τοῖς τε δόλοψι, καὶ τοῖς περὶ τὴν πίνδον τόποις. τὴν δ' ἰθώμην ὁμωνύμως τῇ μεσσηνιακῇ λεγομένην, οὔ φησι δεῖν οὕτως ἐκφέρειν. ἀλλὰ τὴν πρώτην συλλαβὴν ἀφαιρεῖν. οὕτω γὰρ καλεῖσθαι πρότερον. νῦν δ' ἰθώμη μετωνομάσθαι χωρίον ἐρυμνὸν καὶ τῷ ὄντι κλωμακῶδες. ἱδρυμένον μεταξὺ τεττάρων φρουρίων, ὥσπερ ἐν τετραπλεύρῳ κειμένων. τρίκκης τε καὶ μητροπόλεως, καὶ πελινναίου καὶ γόμφων. τῆς δὲ μητροπολιτῶν ἐστὶ χώρας ἡ ἰθώμη. ἡ δὲ μητρόπολις πρότερον μὲν ἐκ τριῶν συνῳκίσθη, πολιχνίων ἀσήμων, ὕστερον δὲ καὶ πλείους προσελήφθησαν ὧν νῦν καὶ ἡ ἰθώμη. καλλίμαχος μὲν οὖν φησιν ἐν τοῖς ἰάμβοις,

» Τὰς ἀφροδίτας ἡ θεὸς γὰρ οὐ μία,
» Τὴν καστνιήτιν ὑπερβαλλέσθαι πάσας τῷ φρονεῖν

ὅτι μόνη παραδέχεται τὴν τῶν ὑῶν θυσίαν, καὶ μὴν πολυΐστωρ εἴ τις ἄλλος. καὶ πάντα τὸν βίον ὡς αὐτὸς εἴρηκεν, ὁ ταῦτα μυθεῖσθαι βουλόμενος. οἱ δ' ὕστερον ἤλεγξαν οὐ μίαν ἀφροδίτην μόνον, ἀλλὰ καὶ πλείους ἀπὸ δεισιδαιμονίας τὸ ἔθος μᾶλλον. ὧν εἶναι καὶ τὴν ἐν τῇ μητροπόλει ταύτην ὡς μιᾶς τῶν συνοικισθεισῶν εἰς αὐτὴν πόλεων. παραδοῦναι τὸ ἔθος ὁμήρειον. ἔστι δὲ, καὶ φαρκαδὼν ἐν τῇ ἱστιαιώτιδι. καὶ ῥεῖ δι' αὐτῶν ὁ πηνειὸς, καὶ ὁ κεράλιος ὢν ὁ κεράλιος ῥυεὶς παρὰ τὸ τῆς ἰθωμίας ἀθηνᾶς ἱερὸν εἰς τὸν πηνειὸν ἐξίησιν. αὐ-

τος δ' ὁ πηνειὸς ἄρχεται μὲν ἐκ πίνδου καθάπερ εἴρηται. ἐν ἀριστερᾷ δ' ἀφεὶς τρίκκην τε, καὶ πελινναῖον καὶ φαρκαδόνα, φέρεται παρά τε ἄτραγα, καὶ λάρισαν. καὶ τοὺς ἐν τῇ θετταλιώτιδι δεξάμενος ποταμοὺς, πρόεισι διὰ τῶν τεμπῶν ἐπὶ τὰς ἐκβολάς. τὴν δ' οἰχαλίαν πόλιν εὐρύτου λεγομένην, ἔν τε τοῖς τόποις τούτοις ἱστοροῦσι, καὶ ἐν εὐβοίᾳ, καὶ ἐν ἀρκαδίᾳ. καὶ μετονομάζουσιν ἄλλως. ὃ καὶ εἴρηται ἐν τοῖς πελοποννησιακοῖς. περὶ δὲ τούτων ζητοῦσι. καὶ μάλιστα τίς ἦν ἡ ὑπὸ ἡρακλέους ἁλοῦσα. καὶ περὶ τίνος συνέγραψεν ὁ ποιήσας τὴν οἰχαλίας ἅλωσιν. ταῦτα μὲν δὴ τὰ χωρία τοῖς ἀσκληπιάδαις ὑπέταξεν. ἑξῆς δὲ λέγει τὴν ὑπ' εὐρυπύλῳ.

» οἱ δ' ἔχον ὁρμένιον, οἵ τε κρήνην ὑπέρειαν.
» οἵ τ' ἔχον ἀστέριον, τιτάνοιό τε λευκὰ κάρηνα.

Τὸ μὲν οὖν ὁρμένιον, νῦν ὁρμίνιον καλεῖται. ἔστι δ' ὑπὸ τῷ πηλίῳ κώμη κατὰ τὸν παγασητικὸν κόλπον τῶν συνῳκισμένων εἰς τὴν δημητριάδα πόλεων ὡς εἴρηται. ἀνάγκη δὲ, καὶ τὴν βοιβηίδα λίμνην εἶναι πλησίον, ἐπειδὴ καὶ ἡ βοίβη τῶν περιοικίδων ἦν τῆς δημητριάδος, καὶ αὐτὸ τὸ ὁρμένιον. τὸ μὲν οὖν ὁρμένιον ἀπέχει τῆς δημητριάδος πεζῇ σταδίους ἑπτὰ καὶ εἴκοσι. ὁ δὲ τῆς ἰωλκοῦ τόπος ἐν ὁδῷ κείμενος, τῆς μὲν δημητριάδος ἑπτὰ σταδίους διέστηκε, τοῦ δὲ ὁρμενίου τοὺς λοιποὺς εἴκοσι σταδίους, φησὶ δ' ὁ σκήψιος ἐκ τοῦ ὁρμενίου τὸν φοίνικα εἶναι. καὶ φεύγειν αὐτὸν ἐνθένδε παρὰ τοῦ πατρὸς ἀμύντορος ὁρμενίδαο, ἐς τὴν φθίαν ἐς πηλῆα ἄνακτα. ἐκτίσθαι γὰρ ὑπὸ ὁρμένου τὸ χωρίον τοῦτο, τοῦ κερκάφου τοῦ αἰόλου. παῖδας δὲ τοῦ ὁρμένου γενέσθαι, τόν τε ἀμύντορα, καὶ εὐαίμονα. ὧν τοῦ μὲν, εἶναι φοίνικα, τοῦ δ' εὐρύπυλον. φυλαχθῆναι δὲ τῷ εὐρυπύλῳ τὴν διαδοχὴν κοινὴν. ὡς ἂν, ἀπελθόντος τοῦ φοίνικος ἐκ τῆς οἰκίας. καὶ δεῖ γράφειν οὕτως.

» οἷον ὅτε πρῶτον λίπον ὁρμένιον πολύμηλον. ἀντὶ τοῦ
λίπον ἑλλάδα καλλιγύναικα. κράτης δὲ φωκέα ποιεῖ τὸν φοίνικα, τεκμαιρόμενος, ἐκ τοῦ κράνους τοῦ μέγητος, ᾧ ἐχρήσατο ὀδυσσεὺς κατὰ τὴν νυκτεγερσίαν. περὶ οὗ φασιν ὁ ποιητὴς ὅτι

» ἐξ ἐλεῶνος ἀμύντορος ὁρμενίδαο
» ἐξέλετ' αὐτόλυκος πυκινὸν δόμον ἀντιτορήσας.

Τόν τε γὰρ ἐλεῶνα ἐν τῷ παρνασῷ πολίχνιον εἶναι. τόν τε ὁρμενίδην ἀμύντορα οὐκ ἄλλον τινὰ λέγεσθαι, ἢ τὸν τοῦ φοίνικος πατέρα. καὶ τὸν αὐτόλυκον οἰκοῦντα ἐν τῷ παρνασῷ τοιχωρυχεῖν τὰ τῶν γειτόνων. ὅπερ κοινόν ἐστι τοιχωρύχου παντὸς, οὐ τὰ πόρρωθεν. ὁ δὲ σκήψιός φησι μήτε ἐλεῶνα μηδένα τόπον τοῦ παρνασοῦ δείκνυσθαι, ἀλλὰ νεῶνα. καὶ ταύτην οἰκισθεῖσαν μετὰ τὰ τρωϊκά, μήτ' ἐκ γειτόνων τὰς τοιχωρυχίας γίνεσθαι μόνον. καὶ ἄλλα δ' ἐστὶν ἃ λέγοι τις ἄν. ἀλλ' ὀκνῶ διατρίβειν ἐπὶ πλέον. ἄλλοι δὲ γράφουσι δι' ἐλεῶνος. ταναγρικὴ δ' ἐστὶν αὕτη. καὶ μᾶλλον ἐλέγχοι ἀτόπως ἂν τὸ λεγόμενον,

» φεῦγον ἔπειτ' ἀπάνευθε δι' ἑλλάδος
φθίην δ' ἐξικόμην. ἡ δ' ὑπέρεια κρήνη ἐστὶν ἐν μέσῃ τῇ φεραίων πόλει μεγαλαιούσῃ. τίτανος δ' ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ὠνομάσθη. λευκόγαιον γάρ ἐστι τὸ χωρίον ἄρνης πλησίον. καὶ τὸ ἀστέριον δ' οὐκ ἄπωθεν τούτων ἐστί. συνεχεῖς τῇ μεγαρίδι ταύτῃ λέγονται οἱ ὑπὸ τῷ πολυποίτῃ.

» οἱ δ' ἄργισσαν ἔχον καὶ γυρτώνην ἐνέμοντο.
» ὄρθην ἠλώνην τε πόλιν τ' ὀλοοσσόνα λευκήν.

Ταύτην τὴν χώραν πρότερον μὲν ᾤκουν περραιβοί. τὸ πρὸς τῇ θαλάσσῃ μέρος νεμόμενοι. καὶ τῷ πηνειῷ μέχρι τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ καὶ γυρτῶνος πόλεως περραιβίδος. εἶτα ταπεινώσαντες ἐκείνους εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν λαπίθαι κατέσχον αὐτὰ τὰ χωρία, ἰξίων, καὶ ὁ υἱὸς πειρίθους. ὃς καὶ τὸ πήλιον κατεκτήσατο, βιασάμενος τοὺς κατασχόντας κενταύρους ἄγριόν τι φῦλον. τούτους μὲν οὖν ἐκ τοῦ πηλίου ὦσε, καὶ αἰθίκεσι πέλασε. τοῖς δὲ λαπίθαις τὰ πεδία παρέδωκε. τινὰ δ' αὐτῶν, καὶ οἱ περραιβοὶ κατεῖχον τὰ πρὸς τῷ ὀλύμπῳ. ἔστι δ' ὅπου, καὶ ὅλοι ἀναμὶξ τοῖς λαπίθαις ᾤκουν. ἡ μὲν οὖν ἄργισσα ἡ νῦν ἄργουσα ἐπὶ τῷ πηνειῷ κεῖται. ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἄτραξ ἐν τεταράκοντα σταδίοις τῷ ποταμῷ πλησιάζουσα καὶ αὐτή. τὴν δ' ἀνὰ μέσον ποταμίαν εἶχον περραιβοί. ὄρθην δέ τινες τὴν ἀκρόπολιν τῶν φαλανναίων εἰρήκασι. ἡ δὲ φάλαννα περραιβικὴ πόλις πρὸς τῷ πηνειῷ πλησίον τῶν τεμπῶν. οἱ μὲν οὖν περραιβοὶ καταδυναστευθέντες ὑπὸ λαπιθῶν, εἰς τὴν ὀρεινὴν ἀπανέστησαν οἱ πλείους τὴν περὶ πίνδον, καὶ ἀθαμᾶνας καὶ δόλοπας. τὴν δὲ χώραν καὶ τοὺς ὑπολειφθέντας τῶν περραιβῶν, κατέσχον λαρισαῖοι. πλησίον μὲν οἰκοῦντες τοῦ πηνειοῦ. γειτνιῶντες δ' ἐκείνοις. νεμόμενοι δὲ τὰ εὐδαιμονέστατα μέρη τῶν πεδίων. πλὴν εἴ τι σφόδρα κοῖλον πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ νεσσωνίδι, εἰς ἣν ἐπικλύζων ὁ ποταμὸς ἀφῃρεῖτό τι τῆς ἀροσίμου τοὺς λαρισαίους. ἀλλ' ὕστερον παραχώμασιν ἐπηνώρθωσαν λαρισαῖοι. οὗτοι δὲ κατεῖχον τέως τὴν περραιβίαν, καὶ φόρους ἐπράττοντο. ἕως φίλιππος κατέστη κύριος τῶν τόπων. λάρισα δ' ἐστὶ καὶ ἐν τῇ ὄσσῃ χωρίον. καὶ ἡ κρεμαστὴ. ὑπό τινων δὲ πελασγία λεγομένη. καὶ ἐν κρήτῃ πόλις ἡ νῦν εἰς ἱεράπυτναν συνοικισθεῖσα. ἀφ' ἧς καὶ τὸ ὑποκεί-

μενον πεδίον νῦν λαρίσιον καλεῖται. καὶ ἐν πελοποννήσῳ, ἥ τε τῶν ἀργείων ἄκρα καὶ ὁ τὴν ἠλείαν ἀπὸ δύμης διορίζων λαρίσος ποταμός. θεόπομπος δὲ, καὶ πόλιν λέγει ἐν τῇ αὐτῇ μεθορίᾳ κειμένην λάρισσαν, καὶ ἐν τῇ ἀσίᾳ, ἥ τε φρικωνὶς ἡ περὶ τὴν κύμην. καὶ ἡ κατὰ ἀμαξιτὸν τῆς τρωάδος. καὶ ἡ ἐφεσία λάρισά ἐστι. καὶ ἐν σίνα τῆς μιτυλήνης ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων εἰσὶ λαρυσαῖαι πέτραι, κατὰ τὴν ἐπὶ μηθύμνης ὁδὸν, καὶ ἐν τῇ ἀττικῇ δ' ἐστὶ λάρισα, καὶ τῶν τράλλεων διέχουσα κώμη τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς πόλεως ἐπὶ καΰστρου πεδίον διὰ τῆς μεσογαίας ἰόντων κατὰ τὸ τῆς ἰσοδρόμης μητρὸς ἱερόν. ὁμοίαν τὴν θέσιν καὶ τὴν ἀρετὴν ἔχουσα τῇ κρεμαστῇ λαρίσῃ. καὶ γὰρ εὔυδρος καὶ ἀμπελόφυτος. ἴσως δὲ, καὶ ὁ λαρίσιος ζεὺς ἐκεῖθεν ἐπωνόμασται. καὶ ἐν τοῖς ἀριστεροῖς δὲ τοῦ πόντου κώμη τίς καλεῖται λάρισα, πλησίον τῶν ἄκρων τοῦ αἵμου. καὶ ὁ λοσσὼν δὲ λευκὴ προσαγορευθεῖσα ἀπὸ τοῦ λευκάργιλος εἶναι. καὶ ἡ ἠλώνη περραιβικαὶ πόλεις. καὶ γόννος. ἡ δ' ἠλώνη μετέβαλε τοὔνομα, λειμώνη μετονομασθεῖσα. κατέσκαπται δὲ νῦν. ἄμφω δ' ὑπὸ τῷ ὀλύμπῳ κεῖνται. οὐ πολὺ ἄποθεν τοῦ εὐρώτα ποταμοῦ. ὃν ὁ ποιητὴς τιταρήσιον καλεῖ. λέγει δὲ, καὶ περὶ τούτων, καὶ περὶ τῶν περραιβῶν ἐν τοῖς ἑξῆς ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ.

» Γουνεὺς δ' ἐκ κύφου ἦγε δύο καὶ εἴκοσι νῆας.
» Τῷ δ' ἐνιῆνες ἕποντο μενεπτόλεμοί τε περαιβοί.
» Οἳ περὶ δωδώνην δυσχείμερον οἰκί' ἔθεντο. ἕως τοῦ
» Ἀμφ' ἱμερτὸν τιταρήσιον ἔργ' ἐνέμοντο.

Λέγει μὲν οὖν τούτους τοὺς τόπους τῶν περραιβῶν ἀπὸ μέρους τῆς ἱστιώτιδος ἐπειληφότας. ἦσαν δὲ, καὶ ὑπὸ τῷ πολυποίτου ἐκ μέρους περραιβικαί. τοῖς μέντοι λαπίθαις προσέμιξε διὰ τὸ ἀναμὶξ οἰκεῖν. καὶ τὰ μὲν πεδία κατέχειν τοὺς λαπίθας, καὶ τὸ ἐνταῦθα περραιβικὸν, ὑπὸ τούτοις τετάχθαι ὡς ἐπὶ πλέον, τὰ δ' ὀρεινότερα χωρία πρὸς τῷ ὀλύμπῳ καὶ τοῖς τέμπεσι. τοὺς περραιβούς. καθάπερ τὸν κύφον, καὶ τὴν δωδώνην καὶ τὰ περὶ τὸν τιταρήσιον. ὃς ἐξ ὄρους τιτάρου συμφυοῦς τῷ ὀλύμπῳ ῥέων, εἰς τὰ πλησίον τῶν τεμπῶν χωρία τῆς περραιβίας, αὐτοῦ που τὰς συμβολὰς ποιεῖται πρὸς τὸν πηνειόν. τὸ μὲν οὖν τοῦ πηνειοῦ καθαρόν ἐστιν ὕδωρ. τὸ δὲ τοῦ τιταρησίου, λιπαρὸν ἔκ τινος ὕλης. ὥστ' οὐ συμμίσγεται.

» Ἀλλά τε μιν καθύπερθεν ἐπιῤῥέει ἠΰτ' ἔλαιον

Διὰ δὲ τὸ ἀναμὶξ οἰκεῖν σιμωνίδης περραιβούς. καὶ λαπίθας καλεῖ τοὺς πελασγιώτας ἅπαντας τοὺς τὰ ἑῷα κατέχοντας τὰ περὶ γυρτῶνα καὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ πηνειοῦ, καὶ ὄσσαν καὶ πήλιον, καὶ τὰ περὶ δημητριάδα, καὶ τὰ ἐν τῷ πεδίῳ, λάρισαν. κραννῶνα. σκοτοῦσαν. μόψιον. ἄτρακα. καὶ τὰ περὶ τὴν νεσωνίδα λίμνην καὶ βοιβηίδα. ὧν ὁ ποιητὴς ὀλίγα μέμνηται. διὰ τὸ μὴ οἰκισθῆναι πω τἄλλα ἢ φαύλως οἰκισθῆναι διὰ τοὺς κατακλυσμούς. ἄλλοτ' ἄλλους γιγνομένους. ἐπεὶ οὐδὲ τῆς νεσωνίδος μέμνηται λίμνης. ἀλλὰ τῆς βοιβηίδος μόνον πολὺ ἐλάττονος οὔσης. ταύτης δὲ μόνης μενούσης. ἐκείνης δὲ, ὡς εἰκὸς τοτὲ μὲν πληρουμένης ἀτάκτως. τοτὲ δ' ἐκλειπομένης. τῆς δὲ σκοτούσης ἐμνήσθημεν, καὶ ἐν τοῖς περὶ δωδώνης λόγοις, καὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν θετταλίᾳ, ὅτι περὶ τοῦτον ὑπῆρξε τὸν τόπον. ἔστι δ' ἐν τῇ σκοτουσσῃ χωρίον τι, κυνὸς κεφαλαὶ καλούμενον. περὶ ὃ ῥωμαῖοι μετ' αἰτωλῶν καὶ τίτος κοΐντος ἐνίκων μάχῃ μεγάλῃ φίλιππον τοῦ δημητρίου μακεδόνων βασιλέα. πέπονθε δέ τι τοιοῦτον καὶ ἡ μαγνῆτις. κατηριθμημένων γὰρ ἤδη πολλῶν αὐτῆς τόπων, οὐδένα τούτων ὀνόμακε μάγνητας ὅμηρος, ἀλλ' ἐκείνους μόνους οὓς τυφλῶς καὶ οὐ γνωρίμως διαγράφει;

» Οἳ περὶ πηνειὸν καὶ πήλιον εἰνοσίφυλλον Ναίεσκον

Ἀλλὰ μὴν περὶ τὸν πηνειὸν, καὶ τὸ πήλιον οἰκοῦσι καὶ οἱ τὴν γυρτῶνα ἔχοντες, οὓς ἤδη κατέλεξε. καὶ οἱ ὀρμένιοι καὶ ἄλλοι πλείους. καὶ ἔτι ἀπωτέρω τοῦ πηλίου. ὅμως μάγνητες ἦσαν ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν ὑπ' ἀμύλῳ κατάγε τοὺς ὕστερον ἀνθρώπους. ἐοίκασιν οὖν διὰ τὰς συνεχεῖς μεταναστάσεις καὶ ἐξαλλάξεις τῶν πολιτειῶν καὶ ἐπιμίξεις, συγχεῖν καὶ τὰ ὀνόματα καὶ τὰ ἔθνη. ὥστε τοῖς νῦν ἔσθ' ὅτε ἀπορίαν παρέχειν, καθάπερ τοῦτο πρῶτον μὲν ἐπὶ κραννῶνος, καὶ γυρτῶνος γίγνηται. τοὺς μὲν γὰρ γυρτωνίους φλεγύας πρότερον ἐκάλουν, ἀπὸ φλεγύου τοῦ ἰξίονος ἀδελφοῦ. τοὺς δὲ κραννωνίους, ἐφύρους ὥστε διαπορεῖν ὅταν φῇ ὁ ποιητὴς,

» Τὼ μὲν ἄρ' ἐκ θρήκης ἐφύρους μετὰ θωρήσσεσθον Ἠὲ μετὰ φλεγύας μεγαλήτορας,

Τίνας ποτὲ βούλεται λέγειν. ἔπειτα τοῦτο καὶ ἐπὶ τῶν περραιβῶν, καὶ τῶν ἀθαμάνων συνέβη. ὅμηρος μὲν γὰρ συνέζευξε αὐτοὺς ὡς πλησίον οἰκοῦντας ἀλλήλων, καὶ δὴ καὶ λέγεται ὑπὸ τῶν ὕστερον ἐπὶ χρόνον συχνὸν ἡ οἴκησις τῶν ἀθαμάνων ἐν τῷ δωτίῳ γενέσθαι πεδίῳ. τοῦτο δ' ἐστὶ πλησίον τῆς ἄρτι λεχθείσης περραιβίας καὶ τῆς ὄσσης, καὶ ἔτι τῆς βοιβηίδος λίμνης, ἐν μέσῃ μέν πως τῇ θετταλίᾳ. λόφοις δὲ ἰδίως περικλειόμενον. περὶ οὗ ἡσίοδος οὕτως εἴρηκεν.

» Ἤ οἵη διδύμους ἱεροὺς ναίουσα κολωνοὺς

» δωτίῳ ἐν πεδίῳ, πολυβότρυος ἀντ' ἀμύροιο.
» νίψατο βοιβιάδος λίμνης πόδα παρθένος ἀδμής.

Οἱ μὲν οὖν ἀθαμᾶνες οἱ πλείους, εἰς τὴν οἴτην ἐξηλάθησαν ὑπὸ λαπιθῶν. κἀνταῦθα δὲ ἐδυνάστευ-
σαν ἀφελόμενοι τῶν τε δωριέων τινὰ μέρη, καὶ τῶν μαλιέων, μέχρι ἡρακλείας καὶ ἐχίνου. τινὲς δ'
αὐτῶν ἔμειναν περὶ κύφον, περραιβικὸν ὄρος, ὁμώνυμον κατοικίαν ἔχον. οἱ δὲ περραιβοὶ τινὲς μὲν συ-
σταλέντες περὶ τὰ ἑσπέρια τοῦ ὀλύμπου μέρη, κατέμενον αὐτόθι, πρόσχωροι ὄντες μακεδόσι. τὸ δὲ
πολὺ μέρος, εἰς τὰ περὶ ἀθαμανίαν ὄρη, καὶ τὴν πίνδον ἐξέπεσε. νυνὶ δὲ μικρὸν, ἢ ἄρα αὐτῶν ἴχνος
σώζεται. τοὺς δ' οὖν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεχθέντας μάγνητας, ὑστάτους ἐν τῷ θετταλικῷ καταλόγῳ
νομιστέον τοὺς ἐντὸς τῶν τεμπῶν ἀπὸ τοῦ πηνειοῦ, καὶ τῆς ὄσσης ἕως πηλίου. μακεδόνων τοῖς πιερώ-
ταις ὁμόρους τοῖς ἔχουσι τὴν τοῦ πηνειοῦ περαίαν μέχρι θαλάττης. τὸ μὲν οὖν ὁμόλιον, ἢ τὴν ὁμόλην,
λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως, ἀποδοτέον αὐτοῖς. εἴρηται δ' ἐν τοῖς μακεδονικοῖς, ὅτι ἐστὶ πρὸς τῇ ὄσσῃ κα-
τὰ τὴν ἀρχὴν τῆς τοῦ πηνειοῦ διὰ τῶν τεμπῶν ἐκβολῆς. εἰ δὲ καὶ μέχρι τῆς παραλίας προϊτέον
τοῖς ἐγγυτάτω τοῦ ὁμολίου, λόγον ἔχει· ὥς τε τὴν ῥιζοῦντα προσνέμειν, καὶ ἐρυμνὰς ἐν τῇ ὑπὸ φι-
λοκτήτῃ παραλίᾳ κειμένας, καὶ τῇ ὑπὸ εὐμήλῳ. τοῦτο μὲν οὖν ἐν ἀσαφεῖ κείσθω, καὶ ἡ τάξις δὲ
τῶν ἐφεξῆς τόπων μέχρι πηνειοῦ, οὐ διαφανῶς λέγεται. ἀδόξων δ' ὄντων τῶν τόπων, οὐδ' ἡμῖν πε-
ρὶ πολλοῦ θετέον. ἡ μέντοι σηπιὰς ἀκτὴ καὶ τετραγῴδηται. καὶ μετὰ ταῦτα ἐξύμνηται διὰ τὸν ἐν-
ταῦθα ἀφανισμὸν τοῦ περσικοῦ στόλου. ἔστι δ' αὕτη μὲν ἀκτὴ πετρώδης. μεταξὺ δ' αὐτῆς καὶ κασθα-
ναίας κώμης ὑπὸ τῷ πηλίῳ κειμένης αἰγιαλός ἐστιν. ἐν ᾧ ὁ ξέρξου στόλος ναυλοχῶν, ἀπηλιώτου πολ-
λοῦ πνεύσαντος, ὁ μὲν, εὐθὺς αὐτοὺς πρὸς τὸ ξηρὸν ἐξώκειλε. καὶ διελύθη παραχρῆμα. ὁ δ' εἰς ὑπνοῦν-
τα τόπον τραχὺν περὶ πήλιον παρενεχθείς, ὁ δ' εἰς μελίβοιαν, ὁ δ' εἰς τὴν κασθαναίαν διεφθάρη. τρα-
χὺς δ' ἐστὶν ὁ παράπλους πᾶς ὁ τοῦ πηνειοῦ, ὅσον σταδίων ὀγδοήκοντα. τοσοῦτος δὲ καὶ τοιοῦτος καὶ ὁ
τῆς ὄσσης. μεταξὺ δὲ κόλπος πλειόνων, ἢ διακοσίων σταδίων. ἐν ᾧ ἡ μελίβοια. ὁ δὲ πᾶς ἀπὸ δημητριά-
δος ἐγκολπίζοντι μέχρι τὸν πηνειὸν, μείζων τῶν χιλίων. ἀπὸ δὲ εὐρίπου διχιλίων ὀκτακοσίων. ἱερώ-
νυμος δὲ τῆς πεδιάδος θετταλίας, καὶ μαγνήτιδος τὸν κύκλον, τρισχιλίων σταδίων ἀποφαίνεται.
ᾠκῆσθαι δ' ὑπὸ τῶν πελασγῶν. ἐξελαθῆναι δὲ τούτους εἰς αἰτωλίαν ὑπὸ λαπιθῶν. εἶναι δὲ τὸ
νῦν καλούμενον πελασγικὸν πεδίον ἐν λαρίσσῃ, καὶ γυρτώνῃ. καὶ φερραῖς καὶ μόψιον καὶ βοιβηΐς.
καὶ ὄσσα καὶ ὁμόλη, καὶ πήλιον, καὶ μαγνῆτις. μόψιον δ' ὠνόμασται οὐκ ἀπὸ μόψου τοῦ μάντεως τοῦ τει-
ρεσίου. ἀλλ' ἀπὸ τοῦ λαπίθου τοῦ συμπλεύσαντος τοῖς ἀργοναύταις. ἄλλος δ' ἐστὶ μόψος ἀφ' οὗ ἡ ἀττι-
κὴ μοψοπία. τὰ καθ' ἕκαστα μὲν ταῦτα περὶ θετταλίας. καθόλου δ' ὅτι πρότερον ἐκαλεῖ-
το πυῤῥαία ἀπὸ πύῤῥας τῆς δευκαλίωνος γυναικός. αἱμονία δὲ ἀπὸ αἵμονος. θετταλία
δὲ ἀπὸ θετταλοῦ τοῦ αἵμονος. ἔνιοι δὲ διελόντες δίχα. τὴν μὲν πρὸς νότον λαχεῖν
φασὶ δευκαλίωνι, καὶ καλέσαι πανδώραν ἀπὸ τῆς μητρός. τὴν δ' ἑτέραν
αἵμονι. ἀφ' οὗ αἱμονίαν λεχθῆναι. μετωνομάσθαι δὲ τὴν μὲν, ἑλλά-
δα ἀπὸ ἕλληνος τοῦ δευκαλίωνος. τὴν δὲ, θετταλίαν ἀπὸ τοῦ
υἱοῦ αἵμονος. τοὺς δὲ ἀπὸ ἐφύρας τῆς θεσπρωτίδος ἀ-
πογόνους ἀντίφου, καὶ φιλίππου τῶν ἐν θετ-
λίᾳ τοῦ ἡρακλέους ἐπελθόντων, ἀπὸ δὲ
θετταλοῦ τοῦ ἑαυτῶν προγόνου τὴν
χώραν ὀνομάσαι. καὶ νεσωνὶς
δὲ ὠνομάσθη ποτὲ ἀπὸ
νέσωνος τοῦ θετ-
ταλοῦ κα-
θάπερ,
καὶ
ἡ λίμνη.

## ὙΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ ΔΕΚΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

τὸ δέκατον, περιέχει τὰ περὶ αἰτωλίαν καὶ τὰς παρακειμένας νήσους. ἔτι δὲ κρήτην πᾶσαν, ᾗ καὶ μάλιστα ἐγχρονίζει. νόμιμά τε αὐτῆς διηγούμενος. καὶ τῶν κουρήτων πρός γε καὶ ἰδαίων δακτύλων τὴν ἐν αὐτῇ γένεσιν, καὶ τιμὴν, καὶ ὄργια ἐπεξιών. καὶ τὸ ἴδιον γένος στράβων ἀπὸ κρήτης λέγει. ἔτι δὲ καὶ τὰς περὶ κρήτην νήσους, περὶ τὸ βιβλίον πολλὰς οὔσας. ἐν αἷς εἰσὶ, καὶ αἱ σποράδες, καὶ τῶν κυκλάδων ἔνιαι.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΔΕΚΑΤΟΝ.

Ἐπεὶ δὲ ἡ εὔβοια παρὰ πᾶσαν παραλίαν ταύτην παραβέβληται, τὴν ἀπὸ σουνίου μέχρι θετταλίας πλὴν τῶν ἄκρων ἑκατέρωθεν, οἰκεῖον ἂν εἴη συνάψαι τοῖς εἰρημένοις τὰ περὶ τὴν νῆσον. εἶθ' οὕτω μεταβῆναι πρός τε τὰ αἰτωλικὰ, καὶ τὰ ἀκαρνανικὰ, ἅπερ λοιπά ἐστι τῶν τῆς εὐρώπης μερῶν. παραμήκης μὲν τοίνυν ἐστὶν ἡ νῆσος ἐπὶ χιλίους σχεδὸν τι καὶ διακοσίους σταδίους ἀπὸ κηναίου πρὸς γεραιστόν. τὸ δὲ πλάτος, ἀνώμαλον. κατὰ τὸ πλέον ὅσον πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίων. τὸ μὲν οὖν κήναιον ἐστὶ κατὰ θερμοπύλας, καὶ τὰ ἔξω θερμοπυλῶν ἐπ' ὀλίγον. γεραιστὸς δὲ καὶ πεταλία πρὸς σούνιον. γίνεται οὖν ἀντίπορθμος τῇ τε ἀττικῇ καὶ βοιωτίᾳ καὶ λοκρίδι καὶ τοῖς μαλιεῦσι. διὰ δὲ τὴν στενότητα καὶ τὸ λεχθὲν μῆκος ὑπὸ τῶν παλαιῶν μάκρις ὠνομάσθη. συνάπτει δὲ τῇ ἠπείρῳ κατὰ χαλκίδα μάλιστα. κυρτὴ προσανίσχουσα πρὸς τοὺς κατὰ τὴν αὐλίδα τόπους τῆς βοιωτίας, καὶ ποιοῦσα τὸν εὔριπον. περὶ οὗ διὰ πλειόνων εἰρήκαμεν. σχεδὸν δέ τι, καὶ περὶ τῶν ἀντιπόρθμων ἀλλήλοις τόπων κατά γε τὴν ἤπειρον καὶ κατὰ τὴν νῆσον ἐφ' ἑκάτερα τοῦ εὐρίπου τά τε ἐντὸς καὶ τὰ ἐκτός. εἰ δέ τι ἐλλέλειπται, νῦν προσδιασαφήσομεν. καὶ πρῶτον, ὅτι τῆς εὐβοίας τὰ κοῖλα λέγουσι τὰ μεταξὺ αὐλίδος καὶ τὸν περὶ γεραιστὸν τόπον. κολποῦται γὰρ ἡ παραλία. πλησιάζουσα δὲ τῇ χαλκίδι, κυρτοῦται πάλιν πρὸς τὴν ἤπειρον. οὐ μόνον δὲ μάκρις ἐκλήθη ἡ νῆσος, ἀλλὰ καὶ ἀβαντίς. εὔβοιαν γοῦν εἰπὼν ὁ ποιητὴς, τοὺς ἐπ' αὐτῆς εὐβοέας οὐδέποτε εἴρηκεν ἀλλ' ἄβαντας ἀεί.

» Οἳ δ' εὔβοιαν ἔχον μένεα πνείοντες ἄβαντες.

» Τῷ δ' ἅμ' ἄβαντες ἕποντο. φησὶ δ' ἀριστοτέλης ἐξ ἄβας τῆς φωκικῆς θρᾷκας ὁρμηθέντας ἐποικῆσαι τὴν νῆσον. καὶ ἐπονομάσαι ἄβαντας τοὺς ἔχοντας αὐτήν. οἱ δ' ἀπὸ ἥρωος φασί. καθάπερ καὶ εὔβοιαν ἀπὸ ἡρωΐνης. τάχα δ' ὥσπερ βοὸς αὐλὴ λέγεταί τι ἄντρον ἐν τῇ πρὸς αἰγαῖον τετραμμένῃ παραλίᾳ, ὅπου τὴν ἰὼ τεκεῖν φασιν ἔπαφον, καὶ ἡ νῆσος ἀπὸ τῆς αὐτῆς αἰτίας ἔσχε τοῦτο τοὔνομα. καὶ ὄχη δὲ ἐκαλεῖτο ἡ νῆσος. καὶ ἔστιν ὁμώνυμον αὐτῇ, τὸ μέγιστον τῶν ἐνταῦθα ὀρῶν. καὶ ἐλλοπία δ' ὠνομάσθη ἀπὸ ἔλλοπος τοῦ ἴωνος. οἱ δὲ, αἰκλου καὶ κόθου ἀδελφὸν φασὶν, ὃς καὶ τὴν ἐλλοπίαν κτίσαι λέγεται χωρίον ἐν τῇ ὠρείᾳ καλουμένῃ τῆς ἱστιαιώτιδος πρὸς τῷ τελεθρίῳ ὄρει, καὶ τὴν ἱστίαιαν προσκτίσασθαι καὶ τὴν περιάδα καὶ κήρινθον, καὶ αἰδηψὸν καὶ ὀροβίας, ἐν ᾧ μαντεῖον ἦν, ἀψευδέστατον. ἦν δὲ μαντεῖον καὶ τοῦ σελινουντίου ἀπόλλωνος. μετῴκησαν δὲ τὴν ἱστίαιαν οἱ ἐλλοπεῖς. καὶ ηὔξησαν τὴν πόλιν ἀναγκασθέντες ὑπὸ φιλιστείδου τοῦ τυράννου βιασαμένου μετὰ τὰ λευκτρικά. δημοσθένης δ' ὑπὸ φιλίππου κατασταθῆναι τύραννόν φησι, καὶ τῶν ὠρειτῶν τὸν φιλιστείδην. οὕτω γὰρ ὠνομάσθησαν ὕστερον οἱ ἱστιαιεῖς. καὶ ἡ πόλις ἀντὶ ἱστιαίας ὠρεός. ἔνιοι δ' ὑπ' ἀθηναίων ἀποικισθῆναι φασὶ τὴν ἱστίαιαν ἀπὸ τοῦ δήμου τῶν ἱστιαίων. ὡς καὶ ἀπὸ τοῦ ἐρετριέων τὴν ἐρέτριαν. θεόπομπος δέ φησι περικλέους χειρουμένου τὴν εὔβοιαν, τοὺς ἱστιαιεῖς καθ' ὁμολογίας εἰς μακεδονίαν μεταστῆναι. δισχιλίους δ' ἐξ ἀθηναίων ἐλθόντας τὸν ὠρεὸν οἰκῆσαι. δῆμον ὄντα πρότερον τῶν ἱστιαίων. κεῖται δ' ὑπὸ τῷ τελεθρίῳ ὄρει, ἐν τῷ δρυμῷ καλουμένῳ παρὰ τὸν κάλλαντα ποταμὸν, ἐπὶ πέτρας ὑψηλῆς. ὥστε τάχα καὶ διὰ τὸ τοὺς ἐλλοπιεῖς ὀρείους εἶναι τοὺς προενοικήσαντας, ἐτέθη τοῦτο τῇ πόλει. δοκεῖ δὲ καὶ ὁ ὠρίων ἐνταῦθα τραφεὶς οὕτως ὀνομασθῆναι. ἔνιοι δὲ τοὺς ὠρείτας πόλιν ἔχοντας ἰδίαν, φασὶ πολεμουμένους ὑπὸ τῶν ἐλλοπιέων, μετα-

βῶσαι καὶ συνοικήσαι τοῖς ἱστιαιεῦσι. μίαν δὲ γεννηθεῖσαν πόλιν, ἀμφοτέροις χρήσασθαι τοῖς ὀνόμασι. καθάπερ λακεδαίμων τε καὶ σπάρτη ἡ αὐτή. εἴρηται δ' ὅτι καὶ ἐν θετταλίᾳ ἱστιαιῶτις ἀπὸ τῶν ἀνασπασθέντων ἐνθένδε ὑπὸ περραιβῶν ὠνόμασται. ἐπεὶ δ' ἡ ἑλλοπία τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς ἱστιαίας, καὶ τοῦ ὠρεοῦ προσηγάγετο ἡμᾶς ποιήσασθαι, τὰ συνεχῆ λέγομεν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δ' ἐν τῷ ὠρεῷ τούτῳ, τό τε κήναιον πλησίον. καὶ ἐπ' αὐτῷ τὸ δῖον. καὶ ἀθῆναι αἱ διάδες, κτίσμα ἀθηναίων. ὑπερκείμενον τοῦ ἐπὶ κῦνον πορθμοῦ. ἐκ δὲ τοῦ δίου, κάναι τῆς αἰολίδος ἐπῳκίσθησαν. ταῦτα τε δὴ τὰ χωρία περὶ τὴν ἱστιαίαν ἐστί. καὶ ἔτι κήρινθος πολίδιον ἐπὶ τῇ θαλάττῃ. ἐγγὺς δὲ βούδωρος ποταμὸς ὁμώνυμος τῷ κατὰ τὴν σαλαμῖνα ὄρει τῷ πρὸς τῇ ἀττικῇ. κάρυστος δέ ἐστιν ὑπὸ τῷ ὄρει τῇ ὄχῃ. πλησίον δὲ τὰ στύρα, καὶ τὸ μαρμάριον. ἐν ᾧ τὸ λατόμιον τῶν καρυστίων κιόνων. ἱερὸν ἔχον ἀπόλλωνος μαρμαρίνου. ὅθεν διάπλους εἰς ἁλὰς τὰς ἀραφηνίδας. ἐν δὲ τῇ καρύστῳ, καὶ ἡ λίθος φύεται ἡ ξαινομένη καρυστίαν λίθον ἀφ' ἧς πιόνται χειρόμακτρα, καὶ ὑφαινομένη. ὥστε τὰ ὑφάσματα χειρόμακτρα γίνεσθαι. ῥυπωθέντα δ' εἰς φλόγα βάλλεσθαι καὶ ἀποκαθαίρεσθαι τῇ πλύσει τὸν λίνον παραπλησίως. ᾠκῆσθαι δὲ τὰ χωρία ταῦτα φασὶν ὑπὸ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ μαραθῶνα καὶ στειριαίων. κατεσκάφη δὲ τὰ στύρα ἐν τῷ μαλιακῷ ὑπὸ φαίδρου τοῦ ἀθηναίων στρατηγοῦ. τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν ἐρετριεῖς. κάρυστος δέ ἐστι καὶ ἐν τῇ λακωνικῇ τόπος τῆς αἰγύος πρὸς ἀρκαδίαν. ἀφ' οὗ καρύστιον οἶνον ἀλκμὰν εἴρηκε. γέραστος δ' ἐν μὲν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν οὐκ εἴρηται. μέμνηται δ' ὁ ποιητὴς ὅμως αὐτοῦ.

» Ἐς δὲ γέραστον ἐννύχιοι κατήγοντο.

Καὶ δηλοῖ διότι τοῖς διαίρουσιν ἐκ τῆς ἀσίας εἰς τὴν ἀττικὴν, ἐπικαιρίως κεῖται τῷ σουνίῳ πλησιάζον τὸ χωρίον. ἔχει δ' ἱερὸν ποσειδῶνος ἐπισημότατον τῶν ταύτῃ, καὶ κατοικίαν ἀξιόλογον. μετὰ δὲ τὴν γέραστον ἐρέτρια πόλις μεγίστη τῆς εὐβοίας μετὰ χαλκίδα. ἔπειθ' ἡ χαλκὶς μητρόπολις τῆς νήσου τρόπον τινὰ, ἐπ' αὐτῷ τῷ εὐρίπῳ ἱδρυμένη. ἀμφότεραι δὲ πρὸ τῶν τρωϊκῶν ὑπ' ἀθηναίων ἐκτίσθαι λέγονται. καὶ μετὰ τὰ τρωϊκὰ αἴκλος, καὶ κόθος ἐξ ἀθηνῶν ὁρμηθέντες, ὁ μὲν, τὴν ἐρέτριαν ᾤκισε. κόθος δὲ τὴν χαλκίδα. καὶ τῶν αἰολέων δέ τινες ἀπὸ τῆς πενθίλου στρατιᾶς κατέμειναν ἐν τῇ νήσῳ. τὸ δὲ παλαιὸν καὶ ἄραβες οἱ κάδμῳ συνδιαβάντες. αἱ δ' οὖν πόλεις αὗται διαφερόντως αὐξηθεῖσαι, καὶ ἀποικίας ἔστειλαν ἀξιολόγους εἰς μακεδονίαν. ἐρέτρια μὲν γὰρ συνῴκισε τὰς περὶ παλλήνην, καὶ τὸν ἄθω πόλεις. ἡ δὲ χαλκὶς τὰς ὑπὸ ὀλύνθῳ, ἃς φίλιππος διελυμήνατο. καὶ τῆς ἰταλίας δὲ καὶ σικελίας πολλὰ χωρία χαλκιδέων ἐστίν. ἐστάλησαν δὲ αἱ ἀποικίαι αὗται καθάπερ εἴρηκεν ἀριστοτέλης, ἡνίκα ἡ τῶν ἱπποβοτῶν καλουμένη ἐπεκράτει πολιτεία. προέστησαν γὰρ αὐτῆς ἀπὸ τιμημάτων, ἀριστοκρατικῶς ἄρχοντες. κατὰ δὲ τὴν ἀλεξάνδρου διάβασιν, καὶ τὸν περίβολον τῆς πόλεως ηὔξησαν. ἐντὸς τείχους λαβόντες τόν τε κάνηθον, καὶ τὸν εὔριπον. ἐπιστήσαντες τῇ γεφύρᾳ πύργους, καὶ τεῖχος καὶ πύλας. ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν χαλκιδέων πόλεως τὸ λήλαντον καλούμενον πεδίον. ἐν δὲ τούτῳ θερμῶν τε ὑδάτων εἰσὶν ἐκβολαὶ πρὸς θεραπείαν νόσων εὐφυεῖς. οἷς ἐχρήσατο καὶ σύλλας κορνήλιος ὁ τῶν ῥωμαίων ἡγεμών. καὶ μέταλλον δ' ὑπῆρχε θαυμαστὸν χαλκοῦ, καὶ σιδήρου κοινόν. ὅπερ οὐχ ἱστοροῦσιν ἀλλαχοῦ συμβαῖνον. νυνὶ μέντοι ἀμφότερα ἐκλέλοιπεν, ἔστι δὲ καὶ ἅπασα ἡ εὔβοια εὔσειστος. μάλιστα δ' ἡ περὶ τὸν πορθμόν. καὶ δεχομένη πνευμάτων ὑπὸ φορὰς, καθάπερ καὶ ἡ βοιωτία. καὶ ἄλλοι τόποι, περὶ ὧν ἐμνήσθημεν διὰ πλειόνων πρότερον ὑπὸ τοιοῦδε πάθους. καὶ ἡ ὁμώνυμος τῇ νήσῳ πόλις καταποθῆναι λέγεται. ἧς μέμνηται καὶ αἰσχύλος ἐν τῷ ποντίῳ γλαύκῳ.

» Εὐβοΐδα καμπτὴν ἀμφὶ κηναίου διὸς ἀκτὴν

» Κατ' αὐτὸν τύμβον ἀθλίου λίχα. Χαλκὶς δὲ ὁμώνυμος λέγεται καὶ ἐν αἰτωλίᾳ.

» Χαλκίδα τ' ἀγχίαλον. καλυδῶνα τε πετρήεσσαν. Καὶ ἐν τῇ νῦν ἠλείᾳ.

» Βὰν δὲ παρὰ κρουνοὺς καὶ χαλκίδα πετρήεσσαν.

Οἱ περὶ τηλέμαχον ἀπιόντες παρὰ νέστορος εἰς τὴν οἰκίαν. ἐρετρίας δ' οἱ μὲν, ἀπὸ μακίστου τῆς τριφυλίας ἀποικισθῆναι φασὶν ὑπ' ἐρετριέως. οἱ δ' ἀπὸ τῆς ἀθήνησιν ἐρετρίας, ἣ νῦν ἐστιν ἀγορά. ἔστι δὲ καὶ περὶ φάρσαλον ἐρέτρια. ἐν δὲ τῇ ἐρετρικῇ πόλει, ἦν ταμύναι ἱερὸν τοῦ ἀπόλλωνος ἀδμήτου δὲ ἵδρυμα λέγεται τὸ ἱερόν. παρ' ᾧ θητεῦσαι λέγουσι τὸν θεὸν αὐτὸν πλησίον τοῦ πορθμοῦ. μελανηῒς δ' ἐκαλεῖτο πρότερον ἡ ἐρέτρια. καὶ ἀρότρια. ταύτης δ' ἐστὶ κώμη ἡ ἀμάρυνθος. ἀφ' ἑπτὰ σταδίων τοῦ τείχους. τὴν μὲν οὖν ἀρχαίαν πόλιν κατέσκαψαν πέρσαι, σαγηνεύσαντες ὥς φησιν ἡρόδοτος τοὺς ἀνθρώπους τῷ πλήθει. περιχυθέντων τῶν βαρβάρων τῷ τείχει. καὶ δεικνύουσιν ἔτι τοὺς θεμελίους. καλοῦσι δὲ παλαιὰν ἐρέτριαν. ἡ δὲ νῦν ἔκτισται. τὴν δὲ δύναμιν τὴν ἐρετριέων ἣν ἔσχον ποτὲ, μαρτυρεῖ ἡ στήλη. ἣν ἀνέθεσαν ποτὲ ἐν τῷ ἱερῷ τῆς ἀμαρυνθίας ἀρτέμιδος. γέγραπται δ' ἐν αὐτῇ τρισχιλίοις μὲν ὁπλίταις, ἑξακοσίοις δ' ἱππεῦσιν. ἑξήκοντα δ' ἅρμασι ποιεῖν τὴν πομπὴν, ἐπῆρχον δὲ καὶ ἀνδρίων. καὶ τηνίων, καὶ κείων, καὶ ἄλλων νήσων. ἐποίκους δ' ἔσχον ἀπ' ἤλιδος. ἀφ' οὗ καὶ τῷ γράμματι τῷ ῥῶ πολλῷ χρησάμενοι οὐκ ἐπὶ τέλει μόνον τῶν γραμμάτων ἀλλὰ καὶ ἐν μέσῳ κεκωμῴδηνται. ἔστι δὲ καὶ ἡ οἰχαλία

κώμη τῆς ἐρετρικῆς. λείψανον τῆς ἀναιρεθείσης πόλεως ὑπὸ ἡρακλέους. ὁμώνυμος τῇ τραχινίᾳ, καὶ τῇ περὶ τείχην, καὶ τῇ φθιωτικῇ. ἣν ἀνδανίαν οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν. καὶ οἱ ἐν αἰτωλίᾳ περὶ τὸν εὐρυτάνας. νυνὶ μὲν οὖν ὁμολογουμένως ἡ χαλκὶς φέρεται τὰ πρωτεῖα. καὶ μητρόπολις αὕτη λέγεται τῶν εὐβοέων. δευτερεύει δ' ἡ ἐρέτρια. ἀλλὰ καὶ πρότερον αὗται, μέγα εἶχον ἀξίωμα, καὶ πρὸς πόλεμον καὶ πρὸς εἰρήνην. ὥστε καὶ φιλοσόφοις ἀνδράσι παρασχεῖν διαγωγὴν ἡδεῖαν, καὶ ἀθόρυβον. μαρτυρεῖ δ' ἥτε τῶν ἐρετρικῶν φιλοσόφων σχολὴ τῶν περὶ μενέδημον ἐν τῇ ἐρετρίᾳ γενομένη. καὶ ἔτι πρότερον ἡ ἀριστοτέλους ἐν τῇ χαλκίδι διατριβή, ὅς γε κατέλυσε τὸν βίον. τὸ μὲν οὖν πλέον ὡμολόγουν ἀλλήλαις αἱ πόλεις αὗται. περὶ δὲ ληλάντου διενεχθεῖσαι, οὐδ' οὕτως τελέως ἐπαύσαντο. ὥστε τῷ πολέμῳ κατὰ αὐθάδειαν δρᾶν ἕκαστα. ἀλλὰ συνέθεντο ἐφ' οἷς συστήσονται τὸν ἀγῶνα. δηλοῖ δὲ καὶ τοῦτο ἐν τῷ ἀμαρυνθίῳ στήλη τις. φράζουσα μὴ χρῆσθαι τηλεβόλοις. καὶ γὰρ δὴ καὶ τῶν πολεμικῶν ἐθῶν, καὶ τῶν ὁπλισμῶν, οὐδὲν οὔτ' ἔστιν, οὔτ' ἦν ἔθος. ἀλλ' οἱ μὲν, τηλεβόλοις χρῶνται καθάπερ οἱ τοξόται καὶ οἱ σφενδονῆται καὶ ἀκοντισταί. οἱ δ' ἀγχεμάχοις, καθάπερ οἱ ξίφει, καὶ δόρατι τῷ ὀρεκτῷ χρώμενοι. διττὴ γὰρ ἡ τῶν δοράτων χρῆσις. ἡ μὲν, ἐκ χειρός. ἡ δ' ὡς παλτοῖς. καθάπερ, καὶ ὁ κοντὸς ἀμφοτέρας τὰς χρείας ἀποδίδωσι. καὶ γὰρ συστάδην χρώμεθα, καὶ κοντοβολοῦντες. ὅπερ καὶ ἡ σάρισα δύναται καὶ ὁ ὑσσός, οἱ δ' εὐβοεῖς ἀγαθοὶ ὑπῆρξαν πρὸς μάχην τὴν σταδίαν. ἣ καὶ συστάδην λέγεται καὶ ἐκ χειρός. δόρασι δὲ χρῶνται τοῖς ὀρεκτοῖς, ὥς φησιν ὁ ποιητής.

» Αἰχμηταὶ μεμαῶτες ὀρεκτῇσι, μελίῃσι

» Θώρηκας ῥήξειν. Ἀλλοίων ἴσως ὄντων τῶν παλτῶν, οἵαν εἰκὸς εἶναι τὴν πηλιάδα μελίην, ὥς φησιν ὁ ποιητής, οἷος ἐπίσταται πῆλαι ἀχιλλεύς, καὶ ὁ εἰπών,

» Δουρὶ δ' ἀκοντίζω ὅσον οὐκ ἄλλος ὀϊστῷ.

Τῷ παλτῷ λέγει δόρατι. καὶ οἱ μονομαχοῦντες τοῖς παλτοῖς χρώμενοι δόρασιν εἰσάγονται πρότερον. εἶτα ἐπὶ τὰ ξίφη βαδίζοντες. ἀγχέμαχοι δέ εἰσιν οὐχ οἱ ξίφει χρώμενοι μόνον. ἀλλὰ καὶ δόρατι ἐκ χειρὸς ὥς φησιν.

» Οὖτησε ξυστῷ χαλκήρει. λῦσε δὲ γυῖα.

Τοὺς μὲν οὖν εὐβοέας τούτῳ τῷ τρόπῳ χρωμένους εἰσάγει. περὶ δὲ λοκρῶν. τἀναντία λέγει. ὡς

» Οὔ σφιν ἐκ σταδίης ὑσμίνης ἔργα μέμηλεν.

» Ἀλλ' ἄρα τόξοισι καὶ εὐστρόφῳ οἰὸς ἀώτῳ.

» Ἴλιον ἐς ἅμ' ἕποντο. Παραφέρεται δὲ χρησμὸς ἐκ δοθεὶς αἰγιεῦσιν.

» Ἵππον θεσσαλικόν, λακεδαιμονίαν δὲ γυναῖκα.

» Ἄνδρας θ' οἳ πίνουσιν ὕδωρ ἱερῆς ἀρεθούσης.

Τοὺς χαλκιδέας λέγων ὡς ἀρίστους. ἐκεῖ γὰρ ἡ ἀρέθουσα; εἰσὶ δὲ νῦν εὐβοῖται ποταμοὶ κηρεύς, καὶ νηλεύς. ὧν ἀφ' οὗ τὰ μὲν πίνοντα πρόβατα λευκὰ γίνεται. ἀφ' οὗ δὲ μέλανα. καὶ περὶ τὸν κρᾶθιν δὲ εἴρηται, τοιοῦτόν τι συμβαίνειν. τῶν δ' ἐκ τροίας ἐπανιόντων εὐβοέων τινές, εἰς ἰλλυριοὺς ἐκπεσόντες ἀναβάντες, οἴκαδε διὰ τῆς μακεδονίας περὶ ἔδεσσαν ἔμειναν. συμπολεμήσαντες τοῖς ὑποδεξαμένοις. καὶ ἔκτισαν πόλιν εὔβοιαν. ἦν δὲ καὶ ἐν σικελίᾳ εὔβοια, χαλκιδέων τῶν ἐκεῖ κτίσμα. ἣν γέλων ἐξανέστησε. καὶ ἐγένετο φρούριον συρακουσίων. καὶ ἐν κερκύρᾳ δὲ καὶ ἐν λήμνῳ τόπος ἦν εὔβοια. καὶ ἐν τῇ ἀργείᾳ λόφος τις. ἐπεὶ δὲ τοῖς θετταλικοῖς, καὶ ἱσταίοις, τὰ πρὸς ἑσπέραν αἰτωλοί, καὶ ἀκαρνᾶνές εἰσι, καὶ ἀθαμᾶνες, εἰ χρὴ καὶ τούτους ἕλληνας εἰπεῖν, λοιπὸν ἐξηγήσασθαι περὶ τούτων ἵν' ἔχωμεν τὴν περίοδον ἅπασαν τὴν τῆς ἑλλάδος. προσθεῖναι δὲ καὶ τὰς νήσους τὰς προσχώρους μάλιστα τῇ ἑλλάδι. καὶ οἰκουμένας ὑπὸ τῶν ἑλλήνων ὅσας μὴ περιωδεύκαμεν. αἰτωλοὶ μὲν τοίνυν καὶ ἀκαρνᾶνες, ὁμοροῦσιν ἀλλήλοις, μέσον ἔχοντες τὸν ἀχελῷον ποταμόν. ῥέοντα ἀπὸ τῶν ἄρκτων, καὶ τῆς πίνδου πρὸς νότον, διά τε ἀγραίων αἰτωλικοῦ ἔθνους, καὶ ἀμφιλόχων. ἀκαρνᾶνες μὲν πρὸς ἑσπέραν μέρος ἔχοντες τοῦ ποταμοῦ μέχρι τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου. τοῦ κατὰ ἀμφιλόχους. καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ ἀκτίου ἀπόλλωνος. αἰτωλοὶ δὲ τὸ πρὸς ἕω μέχρι τῶν ὀζόλων λοκρῶν, καὶ τοῦ παρνασοῦ καὶ τῶν οἰταίων. ὑπέρκεινται δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ, καὶ τοῖς προσβορείοις μέρεσι, τῶν μὲν ἀκαρνάνων, ἀμφίλοχοι. τούτων δέ, δόλοπες καὶ ἡ πίνδος. τῶν δ' αἰτωλῶν περραιβοί τε, καὶ ἀθαμᾶνες. καὶ αἰνιάνων τι μέρος τῶν τὴν οἴτην ἐχόντων. τὸ δὲ νότιον πλευρόν, τό, τε ἀκαρνανικὸν ὁμοίως, καὶ τὸ αἰτωλικὸν κλύζεται τῇ ποιούσῃ θαλάσσῃ τὸν κορινθιακὸν κόλπον. εἰς ὃν καὶ ὁ ἀχελῷος ποταμὸς ἐξίησιν, ὁρίζων τὴν τῶν αἰτωλῶν παραλίαν, καὶ τὴν ἀκαρνανικήν. ἐκαλεῖτο δὲ θόας ὁ ἀχελῷος πρότερον. ἔστι δὲ καὶ ὁ παρὰ δύμην ὁμώνυμος τούτῳ καθάπερ εἴρηται, καὶ ὁ περὶ λάμιαν. εἴρηται δὲ καὶ ὅτι ἀρχὴν τοῦ κορινθιακοῦ κόλπου τὸ στόμα τοῦδε τοῦ ποταμοῦ φασί. πόλεις δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς ἀκαρνᾶσιν, ἀνακτόριόν τε ἐπὶ χερρονήσου ἱδρυμένον ἀκτίου πλησίον. ἐμπορεῖον τῆς νῦν ἐκτισμένης ἐφ' ἡμῶν νικοπόλεως, καὶ στράτος. ἀνάπλουν ἔχουσα τῷ ἀχελῴῳ πλεόνων, ἢ διακοσίων σταδίων. καὶ ἡ οἰνειὰ δὲ καὶ αὕτη ἐπὶ τῷ ποταμῷ. ἡ μὲν παλαιὰ οὐ κατοικουμένη. ἴσον ἀπέχουσα τῆς θαλάττης, καὶ τοῦ στράτου. ἡ δὲ νῦν, ὅσον ἑβδομήκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς ἐκβολῆς διέχουσα. καὶ ἄλλαι

εἰσὶ παλαιρός τε καὶ ἀλυζία καὶ λευκὰς καὶ ἄργος τὸ ἀμφιλοχικὸν καὶ ἀμβρακία ὧν αἱ πλεῖσται περιοικίδες γεγόνασιν, ἢ καὶ πᾶσαι τῆς νικοπόλεως. κεῖται δ' ὁ στράτος κατὰ μέσην τὴν ἐξ ἀλυζίας ὁδὸν εἰς ἀνακτώριον. αἰτωλῶν δ' εἰσὶ καλυδών τε καὶ πλευρών. νῦν μὲν τεταπεινωμέναι. τὸ δὲ παλαιὸν πρόσχημα τῆς ἑλλάδος ἦν ταῦτα τὰ κτίσματα. καὶ δὴ καὶ διῃρῆσθαι συνέβαινε δίχα τὴν αἰτωλίαν. καὶ τὴν μὲν, ἀρχαίαν λέγεσθαι. τὴν δ' ἐπίκτητον. ἀρχαίαν μὲν τὴν ἀπὸ τοῦ ἀχελῴου μέχρι καλυδῶνος παραλίαν. ἐπὶ πολὺ καὶ τῆς μεσογαίας ἀνήκουσαν. εὔκαρπόν τε καὶ πεδιάδος. ἣ ἐστι καὶ στράτος, καὶ τὸ τραχίνιον ἀρίστην ἔχον γῆν. ἐπίκτητον δὲ, τὴν τοῖς λοκροῖς συνάπτουσαν. ὡς ἐπὶ ναύπακτόν τε καὶ εὐπάλιον. τραχυτέραν τε οὖσαν, καὶ λυπροτέραν μέχρι τῆς οἰταίας, καὶ τῆς ἀθαμάνων καὶ τῶν ἐφεξῆς ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἤδη περιισταμένων ὀρῶν τε καὶ ἐθνῶν. ἔχει δὲ καὶ ἡ αἰτωλία μέγιστον μὲν τὸν κόρακα συνάπτοντα τῇ οἴτῃ. τῶν δ' ἄλλων ἐν μέσῳ μὲν μᾶλλον, τὸν ἀράκυνθον. περὶ ὃν τὴν νεωτέραν πλευρῶνα συνῴκησαν. ἀφέντες τὴν παλαιὰν ἐγγὺς κειμένην καλυδῶνος οἱ οἰκήτορες, εὔκαρπον οὖσαν καὶ πεδιάδα. πορθοῦντος τὴν χώραν δημητρίου τοῦ ἐπικληθέντος αἰτωλικοῦ. ὑπὲρ δὲ τῆς μολυκρείας ταφίασσον καὶ χαλκίδα, ὄρη ἱκανῶς ὑψηλά. ἐφ' οἷς πολίχνια ἵδρυται. μακυνία τε καὶ χαλκὶς ὁμώνυμος τῷ ὄρει. ἣν καὶ ὑποχαλκίδα καλοῦσι. κούριον δὲ τῆς παλαιᾶς πλευρῶνος πλησίον. ἀφ' οὗ τοὺς πλευρωνίους κουρῆτας ὀνομασθῆναί τινες ὑπέλαβον. ὁ δ' εὔηνος ποταμὸς ἄρχεται μὲν ἐκ βωμιαίων τῶν ἐν ὀφιεῦσιν αἰτωλικοῦ ἔθνους καθάπερ καὶ οἱ εὐρυτᾶνες, καὶ ἀγραῖοι καὶ κουρῆτες καὶ ἄλλοι. ῥεῖ δ' οὐ διὰ τῆς κουρητικῆς κατ' ἀρχὰς ἥτις ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ πλευρωνίᾳ. ἀλλὰ διὰ τῆς πρὸς ἕω μᾶλλον παρὰ τὴν χαλκίδα καὶ καλυδῶνα. εἶτ' ἀνακάμψας ἐπὶ τὰ τῆς πλευρῶνος πεδία τῆς παλαιᾶς. καὶ παραλλάξας εἰς δύσιν, ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἐκβολὰς καὶ τὴν μεσημβρίαν. ἐκαλεῖτο δὲ λυκόρμας πρότερον. καὶ ὁ νέσσος ἐνταῦθα λέγεται πορθμεὺς ἀποδεδειγμένος ὑφ' ἡρακλέους ἀποθανεῖν. ἐπειδὴ πορθμεύων τὴν δηϊάνειραν ἐπεχείρει βιάζεσθαι, καὶ ὤλενον δὲ καὶ πυλήνην ὀνομάζει πόλεις ὁ ποιητὴς αἰτωλικάς. ὧν τὴν μὲν ὤλενον ὁμωνύμως τῇ ἀχαϊκῇ λεγομένην αἰολεῖς κατέσκαψαν. πλησίον οὖσαν τῆς νεωτέρας πλευρῶνος. τῆς δὲ χώρας ἠμφισβήτουν ἀκαρνᾶνες. τὴν δὲ πυλήνην μετενέγκαντες εἰς τὸν ἀνώτερον τόπον ἤλλαξαν αὐτῆς, καὶ τοὔνομα, πρόσχιον καλέσαντες. ἑλλάνικος δ' οὐδὲ τὴν περὶ ταύτας ἱστορίαν οἶδεν. ἀλλ' ὡς ἔτι καὶ αὐτῶν οὐσῶν ἐν τῇ ἀρχαίᾳ καταστάσει μέμνηται. τὰς δ' ὕστερον, καὶ τῆς τῶν ἡρακλειδῶν καθόδου κτισθείσας μακυνίαν, καὶ μολύκρειαν ἐν ταῖς ἀρχαίαις καταλέγει. πλείστην εὐχέρειαν ἐπιδεικνύμενος ἐν πάσῃ σχεδόν τι τῇ γραφῇ. καθόλου μὲν οὖν ταῦτα περὶ τῆς χώρας ἐστὶ τῆς τῶν ἀκαρνάνων, καὶ τῶν αἰτωλῶν. περὶ δὲ τῆς παραλίας, καὶ τῶν προκειμένων νήσων, ἔτι καὶ ταῦτα προσληπτέον. ἀπὸ γὰρ τοῦ στόματος ἀρξαμένοις, καὶ τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου, πρῶτόν ἐστιν ἀκαρνάνων χωρίον τὸ ἄκτιον. ὁμωνύμως δὲ λέγεται τό τε ἱερὸν τοῦ ἀκτίου ἀπόλλωνος, καὶ ἡ ἄκρα ἡ ποιοῦσα τὸ στόμα τοῦ κόλπου, ἔχουσα καὶ λιμένα ἐκτός. τοῦ δ' ἱεροῦ τετταράκοντα μὲν σταδίους ἀπέχει τὸ ἀνακτώριον ἐν τῷ κόλπῳ ἱδρυμένον. διακοσίους δὲ καὶ τετταράκοντα ἡ λευκάς. αὕτη δ' ἦν τὸ παλαιὸν μὲν χερρόνησος τῆς ἀκαρνάνων γῆς. καλεῖ δ' αὐτὴν ὁ ποιητὴς ἀκτὴν ἠπείροιο, τὴν περαίαν τῆς ἰθάκης, καὶ τῆς κεφαλληνίας ἤπειρον καλῶν. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ ἀκαρνανία. ὥστε ὅταν φῇ ἀκτὴν ἠπείροιο, τῆς ἀκαρνανίας ἀκτὴν δέχεσθαι δεῖ. τῆς δὲ λευκάδος ἦν καὶ ἡ νήρικος, ἥν φησιν ἑλεῖν ὁ λαέρτης.

» Ἢ μὲν νήρικον εἷλον ἐϋκτίμενον πτολίεθρον.
» Ἀκτὴν ἠπείροιο κεφαλλήνεσσιν ἀνάσσων.

Καὶ ὡς ἐν καταλόγῳ φησὶ

» Καὶ κροκύλειαν ἐνέμοντο, καὶ αἰγίλιπα τρηχεῖαν.

Κορίνθιοι δὲ πεμφθέντες ὑπὸ κυψέλου καὶ γόργου, ταύτην τε κατέσχον τὴν ἀκτὴν, καὶ μέχρι τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου προῆλθον. καὶ ἥ τε ἀμβρακία συνῳκίσθη καὶ τὸ ἀνακτώριον. καὶ τῆς χερρονήσου διορύξαντες τὸν ἰσθμὸν ἐποίησαν νῆσον τὴν λευκάδα, καὶ μετενέγκαντες τὴν νήρικον ἐπὶ τὸν τόπον, ὃς ἦν ποτὲ μὲν ἰσθμός. νῦν δὲ πορθμὸς γεφύρᾳ ζευκτός, μετωνόμασαν λευκάδα. ἐπώνυμον δοκῶ μοι τοῦ λευκάτα. πέτρα γάρ ἐστι λευκὴ τὴν χρόαν προκειμένη τῆς λευκάδος εἰς τὸ πέλαγος καὶ τὴν κεφαλληνίαν. ὥστ' ἐντεῦθεν τοὔνομα λαβεῖν. ἔχει δὲ τὸ τοῦ λευκάτα ἀπόλλωνος ἱερόν. καὶ τὸ ἅλμα τὸ τοὺς ἔρωτας παύειν πεπιστευμένον. οὗ δὴ λέγεται πρώτη σαπφὼ ὥς που φησὶν ὁ μένανδρος.

» Τὸν ὑπέρκομπον θηρῶσα φάων',
» Οἰστρῶντι πόθῳ ῥῖψαι πέτρας ἀπὸ τηλεφανοῦς.
» Ἀλλὰ κατ' εὐχὴν σὴν δέσποτ' ἄναξ.

ὁ μὲν οὖν μένανδρος πρώτην ἁλέσθαι λέγει τὴν σαπφώ. οἱ δ' ἔτι ἀρχαιολογικώτεροι, κέφαλόν φασιν ἐρασθέντα πτερέλα, τοῦ δηϊονέως. ἦν δὲ καὶ πάτριον τοῖς λευκαδίοις κατ' ἐνιαυτὸν ἐν τῇ θυσίᾳ τοῦ ἀπόλλωνος, ἀπὸ τῆς σκοπῆς ῥιπτεῖσθαί τινα τῶν ἐν αἰτίαις ὄντων, ἀποτροπῆς χάριν. ἐξαπτομένων ἐξ αὐτοῦ παντοδαπῶν πτερῶν, καὶ ὀρνέων ἀνακουφίζειν δυναμένων τῇ πτήσει τὸ ἅλμα. ὑποδέχεσθαι δὲ κάτω μικραῖς ἁλιάσι κύκλῳ περιεστῶτας πολλούς, καὶ περισώζειν εἰς δύναμιν τῶν ὅρων ἔξω τὸν καταληφθέντα. ὁ δὲ τὴν

ἀλκμαιωνίδα γράψας, ἰκαρίου τοῦ πηνελόπης πατρὸς, υἱοὺς γενέσθαι δύο. ἀλυζέα καὶ λευκάδιον δυναστεῦσαι δ' ἐν τῇ ἀκαρνανίᾳ τούτους μετὰ τοῦ πατρός. τούτων οὖν ἐπωνύμους τὰς πόλεις ἔφορος λέγεσθαι δοκεῖ. κεφαλλῆνας δὲ νῦν, τοὺς ἐκ τῆς νήσου τῆς κεφαλληνίας λέγουσιν. ὅμηρος δὲ πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ ὀδυσσεῖ. ὧν εἰσὶ καὶ οἱ ἀκαρνᾶνες εἰπὼν γάρ.

» Αὐτὰρ ὀδυσσεὺς ἦγε κεφαλλῆνας.
» Οἵ ῥ' ἰθάκην εἶχον καὶ νήριτον εἰνοσίφυλλον. Τὸ ἐν ταύτῃ ὄρος ἐπιφανές. ὡς καὶ
» Οἵ δ' ἐκ δουλιχίοιο ἐχινάων θ' ἱεράων. Καὶ αὐτοῦ τοῦ δουλιχίου τῶν ἐχινάδων ὄντος. καὶ
» Οἵ δ' ἄρα βουπράσιόν τε καὶ ἤλιδα. Καὶ
» Τοῦ βουπρασίου ἐν ἤλιδι, ὄντος.
» Οἵ δ' εὔβοιαν ἔχον καὶ χαλκίδα τ' εἰρέτριαν τε. Καὶ τούτων ἐν εὐβοίᾳ οὐσῶν.
» Ὡς τρῶες, καὶ λύκιοι, καὶ δάρδανοι. ὡς καὶ ἐκείνων τρώων ὄντων, πλὴν μετά γε νήριτον φησί,
» Καὶ κροκύλει' ἐνέμοντο, καὶ αἰγίλιπα τρηχεῖαν.
» Οἵ τε ζάκυνθον ἔχον. ἠδ' οἳ σάμον ἀμφ' ἐνέμοντο.
» Οἵ τ' ἤπειρον ἔχον, ἠδ' ἀντίπερα ἐνέμοντο.

Ἤπειρον μὲν οὖν τὰ ἀντίπερα τῶν νήσων βούλεται λέγειν ἅμα τῇ λευκάδι καὶ τὴν ἄλλην ἀκαρνανίαν συμπεριλαβεῖν βουλόμενος, περὶ ἧς καὶ οὕτω λέγει.

» Δώδεκ' ἐν ἠπείρῳ ἀγέλαι. τόσα πώεα μήλων.

Τάχα τῆς ἠπειρώτιδος τὸ παλαιὸν, μέχρι δεῦρο διατεινούσης. καὶ ὀνόματι κοινῷ ἠπείρου λεγομένης. σάμον δὲ τὴν νῦν κεφαλληνίαν. ὡς καὶ ὅταν φησί.

» Ἐν πορθμῷ τ' ἰθάκης. τε σάμοιό τε παιπαλοέσσης.

Τῷ γὰρ ἐπιθέτῳ τὴν ὁμωνυμίαν διέσταλται. ὡς οὐκ ἐπὶ τῆς πόλεως. ἀλλ' ἐπὶ τῆς νήσου τιθεὶς τοὔνομα τετραπόλεως γὰρ οὔσης τῆς νήσου μία τῶν τεττάρων ἐστὶ, ἡ καὶ σάμος καὶ σάμη καλουμένη καθ' ἑκάτερον τοὔνομα. ὁμωνυμοῦσα τῇ νήσῳ. ὅταν δ' εἴπῃ.

» Ὅσσοι γὰρ νήσοισιν ἐπικρατέουσιν ἄριστοι
» Δουλιχίῳ τε σάμῃ τε καὶ ὑλήεντι ζακύνθῳ.

Τῶν νήσων ἀριθμὸν ποιεῖσθαι δῆλός ἐστι. καὶ σάμην καλῶν τὴν νῆσον, ἣν πρότερον σάμον ἐκάλεσεν. ἀπολλόδωρος δὲ ποτὲ μὲν ἐν τῷ ἐπιθέτῳ λέγων διεστάλθαι τὴν ὁμωνυμίαν. εἰπόντα σάμοιό τε παιπαλοέσσης. ὡς τὴν νῆσον λέγοντα. ποτὲ δ' αὖ γράφεσθαι δεῖν δουλιχίῳ τε σάμῳ τε ἀλλὰ μὴ σάμῃ τε, δῆλός ἐστι τὴν μὲν πόλιν σάμην καὶ σάμον συνωνύμως ὑπολαμβάνων ἐκφέρεσθαι. τὴν δὲ νῆσον σάμον μόνον. ὅτι γὰρ σάμη λέγεται ἡ πόλις, δῆλον εἶναι ἔκ τε τοῦ διαριθμούμενον τοὺς ἐξ ἑκάστης πόλεως μνηστῆρας, φάναι.

» Ἐκ δὲ σάμης πίσυρές τε καὶ εἴκοσι φῶτες ἔασι.

Καὶ ἐκ τοῦ περὶ τῆς κτιμένης λόγου. τὴν μὲν, ἔπειτα σάμην δ' ἔδοσαν. ἔχει δὲ ταῦτα λόγον. οὐ γὰρ εὐκρινῶς ἀποδίδωσιν ὁ ποιητής, οὔτε περὶ τῆς κεφαλληνίας. οὔτε περὶ τῆς ἰθάκης, καὶ τῶν ἄλλων πλησίων τόπων. ὥστε καὶ οἱ ἐξηγούμενοι διαφέρονται καὶ οἱ ἱστοροῦντες. αὐτίκα γὰρ ἐπὶ τῆς ἰθάκης ὅταν φησί.

» Οἵ τ' ἰθάκην εἶχον καὶ νήριτον εἰνοσίφυλλον.

Ὅτι μὲν τὸ νήριτον ὄρος λέγει, τῷ ἐπιθέτῳ δηλοῖ. ἐν ἄλλοις δὲ καὶ ῥητῶς ὄρος. ναιετάω δ' ἰθάκην εὐδείελον ἐν δ' ὄρος αὐτῇ.

» Νήριτον εἰνοσίφυλλον ἀριπρεπές.

Ἰθάκην δ' εἴτε τὴν πόλιν εἴτε τὴν νῆσον λέγει, οὐ δῆλον γε ἐν τούτῳ τῷ ἔπει. οἵ ῥ' ἰθάκην εἶχον καὶ νήριτον, κυρίως μὲν γὰρ ἀκούων τις, τὴν πόλιν δέξαιτ' ἄν, ὡς καὶ ἀθήνας καὶ λυκαβηττὸν εἴ τις λέγοι καὶ ῥόδον καὶ ἀτάβυριν. καὶ ἔτι λακεδαίμονα καὶ ταΰγετον. ποιητικῶς δὲ τοὐναντίον. ἐν μέντοι τῷ ναιετάω δ' ἰθάκην εὐδείελον, ἐν δ' ὄρος αὐτῇ νήριτον. ἐν γὰρ τῇ νήσῳ οὐκ ἐν τῇ πόλει τὸ ὄρος. ἐπεὶ ὅταν τε οὕτω φησί.

» Ἡμεῖς ἐξ ἰθάκης ὑπονηΐου εἰλήλουθμεν.

Δῆλον εἴτε τὸ αὐτὸ τῷ νηρείῳ λέγειν τὸ νήϊον. εἴτε δ' ἕτερον, ἢ ὄρος ἢ χωρίον. ὁ μέντοι ἀντὶ νηρείτου γράφων νήρικον, ἢ ἀνάπαλιν, παραπαίει τελέως, τὸ μὲν, γὰρ εἰνοσίφυλλον καλεῖ ὁ ποιητής. τὸ δ' ἐϋκτίμενον πτολίεθρον. καὶ τὸ μὲν, ἐν ἰθάκῃ. τὸ δ' ἀκτὴν ἠπείροιο. καὶ τοῦτο δὲ δοκεῖ ὑπεναντιότητά τινα δηλοῦν.

» Αὐτὴ δὲ χθαμαλὴ πανυπερτάτη εἰν ἁλὶ κεῖται.

Χθαμαλὴ μὲν γὰρ ἡ ταπεινὴ, καὶ χαμηλή. πανυπερτάτη δὲ ἡ ὑψηλή. οἵαν διὰ πλειόνων σημαίνει κραναὴν καλῶν. καὶ τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ τοῦ λιμένος τρηχεῖαν ἀταρπὸν, χῶρον ἀν' ὑλήεντα. καὶ οὐ γάρ τις νήσων, εὐδείελος. οὐδ' εὐλίμων αἱ εἰ κεκλίαται. ἰθάκη δέ τοι, καὶ περὶ πασέων. ἔχει μὲν οὖν ἀπεμφάσεις τοιαύτας ἡ φράσις. ἐξηγοῦνται δὲ οὐ κακῶς. οὔτε γὰρ χθαμαλὴν δέχονται ταπεινὴν ἐνταῦθα, ἀλλὰ πρόσχωρον τῇ ἠπείρῳ ἐγγυτάτω οὖσαν αὐτῆς, οὔτε πανυπερτάτην ὑψηλοτάτην. ἀλλὰ πανυπερτάτην πρὸς ζόφον. οἷον ὑπὲρ πάσας πρὸς ἐσχάτην τετραμμένην πρὸς ἄρκτους.

[illegible] γὰρ βούλεται λέγειν τὸ πρὸς ζόφον· τὸ δ' ἐναντίον πρὸς νότον· αἱ δέ τ' ἄνευθε πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιον· τὸ γὰρ ἄνευθε, πόρρω καὶ χωρίς ἐστιν· ὡς τῶν μὲν ἄλλων πρὸς νότον κεκλιμένων, καὶ ἀποτέρω τῆς ἠπείρου, τῆς δ' Ἰθάκης ἐγγύθεν πρὸς ἄρκτον· ὅτι δ' οὕτω λέγει τὸ νότιον μέρος, καὶ ἐν τοῖσδε φανερόν·

» εἴτ' ἐπὶ δεξί' ἴωσι πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε.
» εἴτ' ἐπ' ἀριστερὰ τοί γε ποτὶ ζόφον ἠερόεντα. Καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν τοῖσδε.
» ὦ φίλοι· οὐ γάρ τ' ἴδμεν ὅπῃ ζόφος· οὐδ' ὅπῃ ἠώς.
» οὐδ' ὅπῃ ἠέλιος φαεσίμβροτος εἶσ' ὑπὸ γαῖαν. οὐδ' ὅπῃ ἀννεῖται.

Ἔστι μὲν γὰρ δέξασθαι τὰ τέσσαρα κλίματα τὴν ἠῶ, δεχομένους τὸ νότιον μέρος· ἔχει δέ τινα τοῦτ' ἔμφασιν· ἀλλὰ βέλτιον τὸ κατὰ τὴν πάροδον τοῦ ἡλίου νοεῖν ἀντιτιθέμενον τῷ ἀρκτικῷ μέρει· ἐξαλλαγὴν γάρ τινα τῶν οὐρανίων πολλὴν βούλεται σημαίνειν ὁ λόγος· οὐχ ἁπλῶς ἐπίκρυψιν τῶν κλιμάτων· δεῖ γὰρ κατὰ πάντα συναφῆ καιρὸν, ἄν θ' ἡμέρας, ἄν τε νύκτωρ συμβῇ, παρακολουθεῖν· τὰ δ' οὐράνια ἐξαλλάττει ἐπὶ πλεῖον, πρὸς μεσημβρίαν μᾶλλον, ἢ ἧττον παραχωρούντων ἡμῶν, ἢ εἰς τοὐναντίον· τοῦτο δὲ οὐ δύσεως καὶ ἀνατολῆς ἐγκατάληψιν ποιεῖ· καὶ γὰρ αἰθρίας οὔσης συμβαίνει· ἀλλὰ μεσημβρίας καὶ ἄρκτου· μάλιστα γὰρ ἀρκτικός ἐστιν ὁ πόλος· τούτου δὲ κινουμένου· καὶ ποτὲ μὲν κατὰ κορυφὴν ἡμῶν ἀνισταμένου, ποτὲ δ' ὑπὸ γῆς ὄντος, καὶ οἱ ἀρκτικοὶ συμμεταβάλλουσι· ποτὲ δὲ συνεκλείπουσι κατὰ τὰς τοιαύτας παραχωρήσεις· ὥστ' οὐκ ἂν εἰδείης ὅπου ἐστὶ τὸ ἀρκτικὸν κλίμα, οὐδ' εἰ ἀρχή ἐστιν· εἰ δὲ τοῦτο, οὐδὲ τοὐναντίον ἂν γνοίης· κύκλος δὲ τῆς Ἰθάκης ἐστὶν, ὡς ὀγδοήκοντα σταδίων. περὶ μὲν Ἰθάκης ταῦτα. τὴν δὲ Κεφαλληνίαν τετράπολιν οὖσαν, οὔτ' αὐτὴν εἴρηκε τῷ νῦν ὀνόματι, οὔτε τῶν πόλεων οὐδεμίαν, πλὴν μιᾶς ἔτι Σάμης ἔτι Σάμου· ἣ νῦν μὲν οὐκέτ' ἐστὶν, ἴχνη δ' αὐτῆς δείκνυται, κατὰ μέσον τὸν πρὸς Ἰθάκῃ πορθμόν· οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Σαμαῖοι καλοῦνται· αἱ δ' ἄλλαι καὶ νῦν εἰσὶν ἔτι μικραὶ πόλεις τρεῖς· Πρωννὸς· καὶ Κράνιοι· ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ ἄλλην προσέκτισε Γάϊος Ἀντώνιος, ὁ θεῖος Μάρκου Ἀντωνίου· ἡνίκα φυγὰς γενόμενος μετὰ τὴν ὑπατείαν ἣν ἦρξε Κικέρωνι τῷ ῥήτορι, ἐν τῇ Κεφαλληνίᾳ διέτριψε· καὶ τὴν ὅλην νῆσον ὑπήκοον ἔσχεν, ὡς ἴδιον κτῆμα· οὐκ ἔφθη μέντοι συνοικίσας, ἀλλὰ καθόδου τυχὼν, πρὸς ἄλλοις μείζοσιν ὢν, κατέλυσε τὸν βίον· οὐκ ὤκνησαν δέ τινες τὴν Κεφαλληνίαν, τὴν αὐτὴν τῷ Δουλιχίῳ φάναι· οἱ δὲ, τῇ Τάφῳ· καὶ Ταφίους τοὺς Κεφαλληνίους· τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Τηλεβόας· καὶ τὸν Ἀμφιτρύωνα δεῦρο στρατεῦσαι μετὰ Κεφάλου τοῦ Δηϊονέως· ἐξ Ἀθηνῶν φυγάδος παραληφθέντα· κατασχόντα δὲ τὴν νῆσον, παραδοῦναι τῷ Κεφάλῳ· καὶ ταύτην μὲν ἐπώνυμον ἐκείνου γενέσθαι· τὰς δὲ πόλεις, τῶν παίδων αὐτοῦ· ταῦτα δ' οὐχ Ὁμηρικά· οἱ μὲν γὰρ Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεῖ καὶ Λαέρτῃ· ἡ δὲ Τάφος ὑπὸ τῷ Μέντῃ.

» Μέντης Ἀγχιάλοιο δαΐφρονος εὔχομαι εἶναι. Υἱὸς, ἀτὰρ Ταφίοισι φιληρέτμοισιν ἀνάσσω.

Καλεῖται δὲ νῦν Ταφιοῦς ἡ Τάφος, οὐδ' Ἑλλάνικος Ὁμηρικὸς, Δουλίχιον τὴν Κεφαλληνίαν λέγων· τὸ μὲν γὰρ ὑπὸ Μέγητι εἴρηται, καὶ αἱ λοιπαὶ Ἐχινάδες· οἵ τε οἰκοῦντες Ἐπειοί τε, ἐξ Ἤλιδος ἀφιγμένοι· διόπερ καὶ τὸν Ὦτον τὸν Κυλλήνιον, Φυλείδεω ἕταρον μεγαθύμου, ἀρχὸν Ἐπειῶν καλεῖ.

» Αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλλῆνας μεγαθύμους.

Οὔτ' οὖν Δουλίχιον ἡ Κεφαλληνία καθ' Ὅμηρον, οὔτε τῆς Κεφαλληνίας τὸ Δουλίχιον, ὡς ὁ Ἄνδρων καλεῖ· τὸ μὲν γὰρ Ἐπειοὶ κατεῖχον· τὴν δὲ Κεφαλληνίαν ὅλην Κεφαλλῆνες· καὶ ὑπὸ Ὀδυσσεῖ· οἱ δ' ὑπὸ Μέγητι· οἱ δὲ Παλεῖς, Δουλίχιον ὑφ' Ὁμήρου λέγεται, ὡς γράφει Φερεκύδης· μάλιστα δ' ἐναντιοῦται Ὁμήρῳ, ὁ τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτὴν τῷ Δουλιχίῳ λέγων· εἴπερ τῶν μνηστήρων ἐκ μὲν Δουλιχίοιο δύο καὶ πεντήκοντα ἦσαν· ἐκ δὲ Σάμης πίσυρές τε καὶ εἴκοσι· οὐ γὰρ τοῦτ' ἂν εἴη λέγων, ἐξ ὅλης μὲν τόσους, ἐκ δὲ μιᾶς τῶν τεττάρων παρ' ἕνα τοὺς ἡμίσεις· εἰ δ' ἄρα τοῦτο δώσει τις, ζητήσομεν τίς ἂν εἴη ἡ Σάμη ὅ(ταν φησὶν οὕτω.

» Δουλίχιόν τε Σάμην τε, ἰδ' ὑλήεντα Ζάκυνθον.

Κεῖται δὲ ἡ Κεφαλληνία κατὰ Ἀκαρνανίαν, διέχουσα τοῦ Λευκάτα περὶ πεντήκοντα σταδίους· οἱ δὲ τετταράκοντά φασι· τοῦ δὲ Χελωνάτα περὶ ὀγδοήκοντα· αὐτὴ δ' ἐστὶν ὡς τριακοσίων τὴν περίμετρον· μακρὰ δ' ἀνήκουσα πρὸς Εὖρον, ὀρεινή· μέγιστον δ' ὄρος ἐν αὐτῇ Αἶνος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Διὸς Αἰνησίου ἱερόν· καθ' ὃ δὲ στενοτάτη ἐστὶν ἡ νῆσος, ταπεινὸν ἰσθμὸν ποιεῖ· ὥσθ' ὑπερκλύζεσθαι πολλάκις ἐκ θαλάττης εἰς θάλατταν· πλησίον δ' εἰσὶ τῶν στενῶν ἐν τῷ κόλπῳ, Κράνιοί τε καὶ Παλεῖς· μεταξὺ δὲ τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡ Ἀστερία νησίον· Ἀστερὶς δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεται· ἣν ὁ μὲν Σκήψιος μὴ μένειν τοιαύτην οἵαν φησὶν ὁ ποιητής· λιμένες δ' ἐνὶ ναύλοχοι αὐτῇ ἀμφίδυμοι· ὁ δὲ Ἀπολλόδωρος μένειν καὶ νῦν, καὶ πολίχνιον λέγει ἐν αὐτῇ Ἀλαλκομενὰς, τὸ ἐπ' αὐτῷ τῷ ἰσθμῷ κείμενον· καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς Σάμον, καὶ τὴν Θρᾳκίαν, ἣν νῦν Σαμοθρᾴκην καλοῦμεν· τὴν δ' Ἰωνικὴν εἶδε μὲν ὡς εἰκός· καὶ γὰρ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰδέναι φαίνεται· οὐκ ἂν διέστειλε δὲ τὴν ὁμωνυμίαν, περὶ τῆς Σαμοθρᾴκης λέγων, τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ· ὑψοῦ ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς Σάμου ὑληέσσης Θρηϊκίας· τοτὲ δὲ τῇ συζυγίᾳ τῶν πλησίον νήσων,

Ἔς Σάμον ἔς τ' Ἴμβρον καὶ Λῆμνον ἀμιχθαλόεσσαν. Καὶ πάλιν.

» Μεσσηγύς τε Σάμοιο, καὶ Ἴμβρου παιπαλοέσσης.

Ἣ δὲ μὲν οὖν αὐτὴν, οὐκ ὠνόμασε. δῆλον δ' ἐκαλεῖτο τῷ αὐτῷ ὀνόματι πρότερον· ἀλλὰ μελάμφυλλος· εἶτ' ἀνθεμίς· εἶτα παρθενία ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ παρθενίου, ὃς ἴμβρασος μετωνομάσθη. ἐπεὶ οὖν κατὰ τὰ τρωϊκὰ, σάμος μὲν, καὶ ἡ κεφαλληνία ἐκαλεῖτο, καὶ ἡ σαμοθρᾴκη, οὐ γὰρ ἂν ἑκάβην εἰσήγαγε λέγουσαν, ὅτι τοὺς παῖδας αὐτῆς πέρνας, ὃν ἐθέλοι σάμον· ἔς τ' ἴμβρον· ἡ ἰωνικὴ οὐκ ἀπωνόμαστο. δῆλον δ' ὅτι ἀπὸ τῶν προτέρων τινὸς τὴν ὁμωνυμίαν ἔσχεν, ἐξ ὧν κἀκεῖνο δῆλον. ὅτι παρὰ τὴν ἀρχαίαν ἱστορίαν λέγουσιν οἱ φήσαντες μετὰ τὴν ἰωνικὴν ἀποικίαν, καὶ τὴν τεμβρίωνος παρουσίαν, ἀποίκους ἐλθεῖν ἐκ σάμου. καὶ ὀνομάσαι σάμον τὴν σαμοθρᾴκην, ὡς οἱ σάμιοι τοῦτ' ἔπλασαν πρὸς δόξης χάριν. πιθανώτεροι δ' εἰσὶν οἱ ἀπὸ τοῦ σαμίους καλεῖσθαι τὰ ὕψη φήσαντες εὑρῆσθαι τοῦτο τοὔνομα τὴν νῆσον. ἐντεῦθεν γὰρ ἐφαίνετο πᾶσα μὲν ἴδη. φαίνετο δὲ πριάμοιο πόλις καὶ νῆες ἀχαιῶν. τινὲς δὲ σάμον καλεῖσθαι φασὶν, ἀπὸ σαΐων τῶν οἰκούντων θρᾳκῶν πρότερον. οἳ καὶ τὴν ἤπειρον εἶχον τὴν προσεχῆ. εἴτε οἱ αὐτοὶ τοῖς σαπαίοις ὄντες, ἢ τοῖς σιντοῖς, οὓς σίντιας καλεῖ ὁ ποιητὴς, εἴθ' ἕτεροι. μέμνηται δὲ τῶν σαΐων ἀρχίλοχος.

» ἀσπίδι μὲν σαΐων τις ἀγάλλεται ἣν παρὰ θάμνῳ.
» ἔντος ἀμώμητον. κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.

Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῶν ὑπὸ τῷ ὀδυσσεῖ τεταγμένων νήσων ἡ ζάκυνθος. μικρῷ πρὸς ἑσπέραν μᾶλλον τῆς κεφαλληνίας κεκλιμένη καὶ τῆς πελοποννήσου συνάπτων δ' αὐτὴν, πλείων ἐστὶν ὁ κύκλος τῆς ζακύνθου σταδίων ἑκατὸν ἑξήκοντα. διέχει δὲ καὶ τῆς κεφαλληνίας ὅσον ἑξήκοντα σταδίους, ὑλώδης μὲν, εὔκαρπος δὲ καὶ ἡ πόλις ἀξιόλογος ὁμώνυμος. ἐντεῦθεν εἰς ἑσπερίδας τῆς λιβύης, στάδιοι τρισχίλιοι τετρακόσιοι. καὶ ταύτης δὲ καὶ τῆς κεφαλληνίας πρὸς ἕω, τὰς ἐχινάδας ἱδρῦσθαι νήσους συμβέβηκεν. ὧν τό τε δουλίχιόν ἐστι. καλοῦσι δὲ νῦν δολίχαν. καὶ αἱ ὀξεῖαι καλούμεναι. ἃς ὁ ποιητὴς θοὰς εἶπε. καὶ ἡ μὲν δολίχα κεῖται κατὰ οἰνιάδας καὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ἀχελώου. διέχουσα ἀράξου τῆς τῶν ἠλείων ἄκρας σταδίους ἑκατόν. καὶ αἱ λοιπαὶ δ' ἐχινάδες πλείους εἰσί. πᾶσαι λυπραὶ καὶ τραχεῖαι. καὶ πρὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ ἀχελώου, πεντεκαίδεκα σταδίους ἀφεστῶσα ἡ ἀπωτάτη. ἡ δ' ἐγγυτάτω πέντε. πελαγίζουσαι πρότερον. ἀλλ' ἡ χοῦς, τὰς μὲν, ἐξηπείρωκεν αὐτῶν ἤδη. τὰς δὲ, μέλλει πολλὴ καταφερομένη. ἥπερ καὶ τὴν παραχελωῖτιν καλουμένην χώραν, ἣν ὁ ποταμὸς ἐπικλύζει. περιμάχητον δ' ἐποίει τὸ παλαιὸν τοὺς ὅρους συγχέουσα ἀεὶ, τοὺς ἀποδεικνυμένους τοῖς ἀκαρνᾶσι καὶ τοῖς αἰτωλοῖς. ἐκρίνοντο γὰρ τοῖς ὅπλοις, οὐκ ἔχοντες διαιτητάς. ἐνίκων δ' οἱ πλέον δυνάμενοι. ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ μῦθος ἐπλάσθη τις. ὡς ἡρακλέους καταπολεμήσαντος τὸν ἀχελῷον, καὶ ἐνεγκαμένου τῆς νίκης ἆθλον τὸν δηϊανείρας γάμον τῆς οἰνέως θυγατρὸς, ἣν πεποίηκε σοφοκλῆς, τοιαῦτα λέγουσαν.

» μνηστὴρ γὰρ ἦν μοι ποταμὸς ἀχελῷον λέγω.
» ὅς μ' ἐν τρισὶ μορφαῖσιν ἐξῄτει πατρὸς
» φοιτῶν ἐναργὴς ταῦρος ἄλλοτ' αἰόλος    δράκων ἑλικτὸς. ἄλλοτ' ἀνδρείῳ τύπῳ
βούκρανος.— —    Προστιθέασι δ' ἔνιοι καὶ τὸ τῆς ἀμαλθείας τοῦτ' εἶναι λέγοντες κέρας, ὃ ἀπέκλασεν ἡρακλῆς τοῦ ἀχελώου. καὶ ἔδωκεν οἰνεῖ τῶν γάμων ἕδνον. οἱ δ' εἰκάζοντες ἐξ αὐτῶν τἀληθὲς, ταύρῳ μὲν ἐοικότα λέγεσθαι τὸν ἀχελῷον, φασὶ καθάπερ καὶ τοὺς ἄλλους ποταμούς. ἀπό τε τῶν ἤχων, καὶ τῶν κατὰ τὰ ῥεῖθρα καμπῶν ἃς καλοῦσι κέρατα. δράκοντα δὲ διὰ τὸ μῆκος καὶ τὴν σκολιότητα. βούπρωρον δὲ διὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν, δι' ἣν καὶ ταυρωπόν. τὸν ἡρακλέα δὲ καὶ ἄλλως εὐεργετικὸν ὄντα, καὶ τῷ οἰνεῖ κηδεύσαντα, παραχώμασί τε καὶ διοχετείαις βιάσασθαι τὸν ποταμὸν πλημμελῶς ῥέοντα, καὶ πολλὴν τῆς παραχελωΐτιδος ἀνάψυξιν χαριζόμενον τῷ οἰνεῖ. καὶ τοῦτ' εἶναι τὸ τῆς ἀμαλθείας κέρας. τῶν μὲν οὖν ἐχινάδων, καὶ τῶν ὀξειῶν κατὰ τὰ τρωϊκὰ μέγητα ἄρχειν φησὶν ὅμηρος.

» ὃν τίκτε διῒ φίλος ἱππότα φυλεύς.
» ὅς ποτε δουλίχιον δ' ἀπενάσσατο πατρὶ χολωθείς.

Πατὴρ δ' ἦν αὐγέας ὁ τῆς ἠλείας, καὶ τῶν ἐπειῶν ἄρχων. ὥστ' ἐπειοὶ τὰς νήσους ταύτας ἔχοντες οἱ συνεξάραντες εἰς τὸ δουλίχιον τῷ φυλεῖ. αἱ δὲ τῶν ταφίων νῆσοι πρότερον δὲ τηλεβόων, ὧν ἦν καὶ ἡ τάφος, νῦν δὲ ταφιοῦς καλουμένη, χωρὶς ἦσαν τούτων, οὐ τοῖς διαστήμασιν. ἐγγὺς γὰρ κεῖνται. ἀλλὰ ὑφ' ἑτέροις ἡγεμόσι ταττόμενοι, ταφίοις καὶ τηλεβόαις. πρότερον μὲν οὖν ἀμφιτρύων ἐπιστρατεύσας αὐτοὺς μετὰ κεφάλου τοῦ δηϊονέως ἐξ ἀθηνῶν φυγάδος, ἐκείνῳ τὴν ἀρχὴν παρέδωκεν αὐτῶν. ὁ δὲ ποιητὴς ὑπὸ μέντῃ τετάχθαι φησί. λῃστὰς καλῶν αὐτοὺς, καθάπερ καὶ τοὺς τηλεβόας ἅπαντας φασί. τὰ μὲν περὶ τὰς νήσους τὰς πρὸ τῆς ἀκαρνανίας, ταῦτα. μεταξὺ δὲ λευκάδος, καὶ τοῦ ἀμβρακικοῦ κόλπου λιμνοθάλαττά ἐστι. μυρτούντιον λεγομένη. ἀπὸ δὲ λευκάδος ἑξῆς πάλαιρος, καὶ ἀλυζία τῆς ἀκαρνανίας ἐστὶ πόλις. ὧν ἡ ἀλυζία πεντεκαίδεκα ἀπὸ θαλάττης διέχει σταδίους. καθ' ἣν ἐστι λιμὴν ἡρακλέους ἱερὸς καὶ τέμενος. ἐξ οὗ τοὺς ἡρακλέους ἄθλους. ἔργα λυσίππου. μετήνεγκε δ' εἰς ῥώμην τῶν ἡγεμόνων τις, παρὰ τόπον κειμένους διὰ τὴν ἐρημίαν. εἶτα κρειθωτὴ, καὶ ἐχινάδες. καὶ πόλις ἀστακὸς. ὁμώνυμος τῇ περὶ νικομήδειαν καὶ τὸν ἀστακηνὸν κόλπον θηλυκῶς προσλεγομένη. καὶ ἡ κρειθωτὴ δ' ὁμώνυμος πολίχνῃ τῇ ἐν τῇ θρᾳκίᾳ

χεῤῥονήσῳ. πάντα δ' εὐλίμενα τὰ μεταξύ. εἶτ' οἰνιάδαι, καὶ ὁ ἀχελῶος. εἶτα λίμνη τῶν οἰνιαδῶν
μελίτη καλουμένη. μῆκος μὲν ἔχουσα τριάκοντα σταδίων. πλάτος δὲ εἴκοσι. καὶ ἄλλη κυνία δι-
πλασία ταύτης, καὶ μῆκος καὶ πλάτος. τρίτη δ' οὐρία πολλῷ τούτων μικροτέρα. ἡ μὲν οὖν κυ-
νία καὶ ἐκδίδωσιν εἰς τὴν θάλατταν. αἱ λοιπαὶ δ' ὑπέρκεινται ὅσον ἡμισταδίον. εἶθ' ὁ εὔηνος. εἰς ὃν ἀπὸ
τοῦ ἀκτίου, στάδιοι ἑξακόσιοι ἑβδομήκοντα. μετὰ δὲ τὸν εὔηνον, τὸ ὄρος ἡ χαλκίς. ἣν χαλκίαν εἴρηκεν
ἀρτεμίδωρος. εἶθ' ἡ πλευρὼν, εἶθ' ἡ λυκίρνα κώμη, ἧς ὑπέρκειται καλυδὼν ἐν τῇ μεσογαίᾳ σταδίους
τριάκοντα. περὶ δὲ, τὴν καλυδῶνα ἐστὶ τὸ τοῦ λαφραίου ἀπόλλωνος ἱερόν. εἶθ' ὁ ταφίασσος τὸ ὄρος. εἶ-
τα μακυνία πόλις. εἶτα μολύκρεια, καὶ πλησίον τὸ ἀντίῤῥιον, ὃ τῆς αἰτωλίας ὅριον καὶ τῆς λο-
κρίδος εἰς ὃ ἀπὸ τοῦ εὐήνου στάδιοι περὶ ἑκατὸν εἴκοσι. ἀρτεμίδωρος μὲν οὕτω περὶ τῆς, εἴτε χαλκίδος
εἴτε χαλκείας τοῦ ὄρους, μεταξὺ τοῦ ἀχελώου καὶ τῆς πλευρῶνος ἱδρύων αὐτήν. ἀπολλόδωρος δὲ
ὡς πρότερον εἴπομεν ὑπὲρ τῆς μολυκρείας καὶ τὴν χαλκίδα, καὶ τὸν ταφίασσον, καὶ τὴν καλυδῶνα,
μεταξὺ ἱδρύσθαι φησί. τῆς δὲ πλευρῶνος καὶ τῆς χαλκίδος, εἰ μὴ ἕτερον θετέον τὸ πρὸς πλευ-
ρῶνι ὄρος χαλκίαν καλούμενον. εἰ μὴ ἄρα ἑτέραν δὲ τὴν χαλκίδα τὴν πρὸς μολυκρείαν. ἔστι δέ τις,
καὶ πρὸς τῇ καλυδῶνι λίμνη μεγάλη καὶ εὔοψος. ἣν ἔχουσιν οἱ ἐν πάτραις ῥωμαῖοι. τῆς δὲ μεσο-
γαίας κατὰ μὲν τὴν ἀκαρνανίαν εὐρυτάνας τινάς φησιν ἀπολλόδωρος λέγεσθαι. ὧν ἀλκμαὶν
(μέμνηται.

» Οὐδ' εὐρυσιχέος καλυδωνέου δὲ ποιμήν.

Ἀλλὰ γερδίων ἀπ' ἄκρας, κατὰ δὲ τὴν αἰτωλίαν τὴν ὤλενος ὡς ἐν τῷ αἰτωλικῷ καταλόγῳ μέ-
μνηται ὅμηρος. ἴχνη δ' αὐτῆς λείπεται μόνον ἐγγὺς τῆς πλευρῶνος ὑπὸ τῷ ἀρακύνθῳ. ἦν δὲ, καὶ
λυσιμαχία πλησίον ἠφανισμένη καὶ αὐτὴ κειμένη πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ νῦν μὲν λυσιμαχίᾳ, πρότε-
ρον δ' ὕδρα. μεταξὺ πλευρῶνος, καὶ ἀρσινόης πόλεως. ἡ κώμη μὲν ἦν πρότερον καλουμένη κωνώπα
κτίσμα δ' ὑπῆρξεν ἀρσινόης τῆς πτολεμαίου τοῦ δευτέρου γυναικὸς, ἅμα καὶ ἀδελφῆς. εὐφυῶς ἐπι-
κειμένη πως τῇ τοῦ ἀχελώου διαβάσει. παραπλήσιον δέ τι, καὶ ἡ πυλήνη τῷ ὠλένῳ πέπονθεν. ὅταν
δὲ φῇ τὴν καλυδῶνα αἰπεινήν τε, καὶ πετρήεσσαν, ἀπὸ τῆς χώρας δεκτέον. εἴρηται γὰρ ὅτι τὴν χώ-
ραν δίχα διελόντες, τὴν μὲν ὀρεινὴν, καὶ ἐπίκτητον, τῇ καλυδῶνι προσένειμαν. τὴν πεδιάδα δὲ τῇ
πλευρῶνι, νυνὶ μὲν οὖν ἐκπεπόνηνται, καὶ ἀπηγόρευκεν ἐκ τῶν συνεχῶν πολέμων, ἥτ' ἀκαρνανία, καὶ
αἰτωλοὶ, καθάπερ, καὶ πολλὰ τῶν ἄλλων ἐθνῶν. πλεῖστον μέντοι χρόνον συνέμειναν αἰτωλοὶ μετὰ τῶν
ἀκαρνάνων πρός τε τοὺς μακεδόνας καὶ τοὺς ἄλλους ἕλληνας. ὕστατα δὲ καὶ πρὸς ῥωμαίους περὶ τῆς
αὐτονομίας ἀγωνιζόμενοι. ἐπεὶ δὲ καὶ ὅμηρος αὐτῶν ἐπὶ πολὺ μέμνηται, καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταί τε,
καὶ συγγραφεῖς, τὰ μὲν, εὐσήμως τε καὶ ὁμολογουμένως. τὰ δ' ἧττον γνωρίμως, καθάπερ τούτου
που, καὶ ἐν τοῖς ἤδη λεχθεῖσι περὶ αὐτῶν ἐπιδέδεικται. προσληπτέον, καὶ τῶν παλαιοτέρων τινὰ τῶν
ἀρχῆς ἐχόντων τάξιν, ἢ διαφερουμένων εὐθὺς ἐπὶ τῆς ἀκαρνανίας. ὅτι μὲν αὐτὴν ὁ λαέρτης καὶ οἱ
κεφαλλῆνες κατεκτήσαντο, εἴρηται ἡμῖν. τίνων δὲ κατεχόντων πρότερον, πολλοὶ μὲν εἰρήκασιν οὐκ
ὁμολογούμενα δὲ εἰπόντων, ἐπιφανῆ δὲ, ἀπολείπεταί τις ἡμῖν λόγος διαιτητικὸς περὶ αὐτῶν. φασὶ
γὰρ τοὺς ταφίους τε, καὶ τηλεβόας λεγομένους οἰκεῖν τὴν ἀκαρνανίαν πρότερον, καὶ τὸν ἡγεμόνα
αὐτῶν κέφαλον κατασταθέντα ὑπὸ ἀμφιτρύωνος κύριον τῶν περὶ τὴν τάφον νήσων, κυριεῦσαι,
καὶ ταύτης τῆς χώρας. ἐντεῦθεν δὲ, καὶ τὸ ἀπὸ τοῦ, λευκάτα, νομιζόμενον ἅλμα τούτῳ πρώτῳ προσμυ-
θεύουσιν ὡς προείρηται. ὁ δὲ ποιητὴς ὅτι μὲν ἦρχον οἱ τάφιοι τῶν ἀκαρνάνων πρὶν ἢ τοὺς κεφαλλῆνας
καὶ τὸν λαέρτην ἀπελθεῖν οὐ λέγει. ὅτι δ' ἦσαν φίλοι τῆς τοῖς ἰθακησίοις λέγει. ὥστ' ἢ οὐδ' ὅλως ἐπῆρ-
ξαν τῶν τόπων κατ' αὐτὸν, ἢ ἑκόντες παρεχώρησαν. ἢ καὶ σύνοικοι ἐγένοντο. φαίνονται δὲ, καὶ ἐκ λα-
κεδαίμονός τινος ἐποικῆσαι τὴν ἀκαρνανίαν, ἢ μεθ' ἰκαρίου τοῦ πηνελόπης πατρὸς, καὶ γὰρ ἐκεῖνον
καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς ζῶντας παραδίδωσιν ὁ ποιητὴς κατὰ τὴν ὀδύσσειαν

» Οἳ πατρὸς μὲν ἐς οἶκον ἀπεῤῥίγασι νέεσθαι
» Ἰκαρίου. ὥς κ' αὐτὸς ἐεδνώσαιτο θύγατρα καὶ περὶ τῶν ἀδελφῶν
» Ἤδη γάρ ῥα πατήρ τε κασίγνητοί τε κέλονται
» Εὐρυμάχῳ γήμασθαι.

Οὔτε ἐν λακεδαίμονι πιθανὸν αὐτοὺς οἰκεῖν, οὐ γὰρ ἂν ὁ τηλέμαχος παρὰ μενελάῳ κατήγετο, ἀ-
φιγμένος ἐκεῖσε, οὔτ' ἄλλην οἴκησιν παρειλήφαμεν αὐτῶν. φασὶ δὲ τυνδάρεων καὶ τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ ἴκαρον, ἐκπεσόντας ὑπὸ ἱπποκόωντος τῆς οἰκείας, ἐλθεῖν παρὰ θέστιον τὸν τῶν πλευρωνίων
ἄρχοντα. καὶ συγκατακτήσασθαι τὴν πέραιαν τοῦ ἀχελώου πολλὰ ἐπὶ μέρει. τὸν μὲν οὖν τυνδάρεων
ἐπανελθεῖν οἴκαδε γήμαντα λήδαν τὴν τοῦ θεστίου θυγατέρα. τὸν δ' ἴκαριον ἐπιμεῖναι τῆς ἀκαρνανίας
ἔχοντα μέρος. καὶ τεκνοποιήσασθαι τήν τε πηνελόπην ἐκ πολυκάστης τῆς λυγαίου θυγατρὸς καὶ τοὺς
ἀδελφοὺς αὐτῆς. ἡμεῖς μὲν οὖν ἀπεδείξαμεν ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν, καὶ τοὺς ἀκαρνᾶνας κατα-
ριθμουμένους. καὶ μετασχόντας τῆς ἐπὶ ἴλιον στρατείας, ἐν οἷς κατονομάζονται οἵ τε τὴν ἀκτὴν οἰ-
κοῦντες, καὶ ἔτι

» Οἵ τ' ἤπειρον ἔχον ἠδ' ἀντιπέραι' ἐνέμοντο.

Οὔτε δ' ἡ ἤπειρος ἀκαρνανία ὠνομάζετό πω, οὔθ' ἡ ἀκτὴ λευκάς. ἔφορος δ' οὔ φησι συστρατεῦσαι. ἀλκμαίωνα γὰρ τὸν ἀμφιαράεω συστρατεύσαντα μετὰ διομήδους, καὶ τῶν ἄλλων ἐπιγόνων. καὶ κατορθώσαντα τὸν πρὸς θηβαίους πόλεμον, συνελθεῖν διομήδει, καὶ τιμωρήσασθαι μετ' αὐτοῦ τοὺς οἰνέως ἐχθρούς, παραδόντα δ' ἐκείνοις τὴν αἰτωλίαν, αὐτὸν εἰς ἀκαρνανίαν παρελθεῖν. καὶ ταύτην καταστρέφεσθαι. ἀγαμέμνονα δ' ἐν τούτῳ τοῖς ἀργείοις ἐπιθέμενον, κρατῆσαι ῥᾳδίως τῶν πλείστων, τῶν τοῖς περὶ διομήδη συνακολουθησάντων. μικρὸν δ' ὕστερον ἐπιπεσούσης τῆς ἐπ' ἴλιον ἐξόδου, δείσαντα μὴ ἀπόντος αὐτοῦ κατὰ τὴν στρατείαν ἐπανελθόντες οἴκαδε οἱ περὶ τὸν διομήδη, καὶ γὰρ ἀκούεσθαι περὶ αὐτοῦ μεγάλην συνεστραμμένην δύναμιν, κατάσχοιεν τὴν μάλιστα προσήκουσαν αὐτοῖς ἀρχήν. τὸν μὲν γὰρ ἀδράστου. τὸν δὲ, τοῦ πατρὸς εἶναι κληρονόμον. ταῦτα δὴ διανοηθέντα, καλεῖν αὐτοὺς ἐπί τε τὴν τοῦ ἄργους ἀπόληψιν. καὶ τὴν κοινωνίαν τοῦ πολέμου. τὸν μὲν οὖν διομήδη πεισθέντα μετασχεῖν τῆς στρατείας, τὸν δὲ ἀλκμαίωνα ἀγανακτοῦντα μὴ φροντίσαι. διὰ δὲ τοῦτο μηδὲ κοινωνῆσαι τῆς στρατείας μόνους τοὺς ἀκαρνᾶνας τοῖς ἕλλησι. τούτοις δ' ὡς εἰκὸς τοῖς λόγοις ἐπακολουθήσαντες οἱ ἀκαρνᾶνες, σοφίσασθαι λέγονται ῥωμαίους, καὶ τὴν αὐτονομίαν παρ' αὐτῶν ἐξανύσασθαι. λέγοντες, ὡς οὐ μετάσχοιεν μόνοι τῆς ἐπὶ τοὺς προγόνους τοὺς ἐκείνων στρατείας. οὔτε γὰρ ἐν αἰτωλικῷ καταλόγῳ φράζοιντο, οὔτε ἰδία. οὐδὲ γὰρ ὅλως τοὔνομα τοῦτ' ἐμφέροιτο ἐν τοῖς ἔπεσιν. ὁ μὲν οὖν ἔφορος πρὸ τῶν τρωϊκῶν ἤδη τὴν ἀκαρνανίαν ὑπὸ τῷ ἀλκμαίωνι ποιήσας τό, τε ἄργος τὸ ἀμφιλοχικὸν, ἐκείνου κτίσμα ἀποφαίνει, καὶ τὴν ἀκαρνανίαν ὠνομάσθαι φησὶν ἀπὸ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ ἀκαρνᾶνος. ἀμφιλόχους δὲ ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ ἀμφιλόχου, ὥς τε ἐκπίπτει εἰς τὰ παρὰ τὴν ὁμηρικὴν ἱστορίαν λεγόμενα. θουκυδίδης δὲ τὸν ἀμφίλοχον, καὶ ἄλλοι ἀπὸ τῆς στρατείας τῆς τρωϊκῆς ἐπανιόντα, οὐκ ἀρεσκόμενον τοῖς ἐν ἄργει, ταύτην οἰκῆσαι φησὶ τὴν χώραν, οἱ μὲν κατὰ διαδοχὴν ἥκοντα τῆς τοῦ ἀδελφοῦ δυναστείας. οἱ δ' ἄλλως. καὶ ἰδίᾳ μὲν περὶ ἀκαρνάνων ταῦτα λέγοιτ' ἄν, κοινῇ δ' ὅσα καὶ τοῖς αἰτωλικοῖς ἐπιπλέκεται νῦν ἐροῦμεν. τὰ αἰτωλικὰ λέγοντες ἐφεξῆς ὅσα προσλαβεῖν τοῖς εἰρημένοις ἔγνωμεν. τοὺς δὲ κουρῆτας τῶν μὲν ἀκαρνᾶσι, τῶν δ' αἰτωλοῖς προσνεμόντων, καὶ τῶν μὲν ἐκ κρήτης τῶν δ' ἐξ εὐβοίας τὸ γένος εἶναι φασκόντων, ἐπειδὴ, καὶ ὅμηρος αὐτῶν μέμνηται, τὰ παρ' ἐκείνου πρῶτον ἐπισκεπτέον. οἴονται δ' αὐτὸν λέγειν, αἰτωλοὺς μᾶλλον ἢ ἀκαρνᾶνας, εἴπερ οἱ πορθαονίδαι ἦσαν ἄγριος ἠδὲ μέλας. τρίτατος δ' ἦν ἱππότα οἰνεύς.

» Ὤικεον δ' ἐν πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ καλυδῶνι.

Αὗται δ' εἰσὶν αἰτωλικαὶ πόλεις ἀμφότεραι. καὶ φέρονται ἐν τῷ αἰτωλικῷ καταλόγῳ. ὥστε ἐπεὶ τὴν πλευρῶνα οἰκοῦντες φαίνονται καὶ κατ' αὐτὸν οἱ κουρῆτες αἰτωλοὶ ἂν εἶεν. οἱ δ' ἀντιλέγοντες τῷ τρόπῳ τῆς φράσεως παράγονται. ὅταν φῇ.

» Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο, καὶ αἰτωλοὶ μενεχάρμαι
» Ἀμφὶ πόλιν καλυδῶνα—

Οὐδὲ γὰρ ἂν κυρίως εἰπεῖν οὕτως, ἐμάχοντο βοιωτοὶ καὶ θηβαῖοι πρὸς ἀλλήλους. οὐδ' ἀργεῖοι καὶ πελοποννήσιοι. ἐδείχθη δ' ἐν τοῖς ἔμπροσθεν, ὅτι ὁμηρικόν ἐστι τὸ ἔθος τοῦτο τῆς φράσεως. καὶ ἀπὸ τῶν ἄλλων ποιητῶν τετριμμένον. τοῦτο μὲν οὖν εὐαπολόγητον. ἐκεῖνοι δὲ λεγέτωσαν. πῶς ἂν μὴ ὁμοεθνεῖς ὄντας μηδ' αἰτωλοὺς τοὺς πλευρωνίους ἐν τοῖς αἰτωλοῖς κατέλεγεν. ἔφορος δὲ τοὺς αἰτωλοὺς εἰπὼν ἔθνος εἶναι μηδεπώποτε γεγενημένον ὑφ' ἑτέροις. ἀλλὰ πάντα τὸν μνημονευόμενον χρόνον μεμενηκὸς ἀπόρθητον. διά τε τὰς δυσχωρείας τῶν τόπων, καὶ διὰ τὴν περὶ τὸν πόλεμον ἄσκησιν. ἐξ ἀρχῆς μέν φησιν ἅπασαν τὴν χώραν κουρῆτας μετασχεῖν. ἀφικομένου δ' ἐξ ἤλιδος αἰτωλοῦ τοῦ ἐνδυμίωνος, καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐτῶν, τοὺς μὲν κουρῆτας, εἰς τὴν νῦν καλουμένην ἀκαρνανίαν ὑποχωρῆσαι, τοὺς δ' αἰτωλοὺς συγκατελθόντας ἐπειοῖς, τὰς ἀρχαιοτάτας κτίσαι τῶν ἐν αἰτωλίᾳ πόλεων δέκα. τῇ δ' ὕστερον γενεᾷ τὴν ἦλιν ὑπὸ ὀξύλου τοῦ αἵμονος συνοικισθῆναι. περαιωθέντος δ' ἐκ τῆς αἰτωλίας. παρατίθησι δὲ, καὶ τούτων μαρτύρια τὰ ἐπιγράμματα. τὸ μὲν, ἐν θέρμοις τῆς αἰτωλίας, ὅπου τὰς ἀρχαιρεσίας ποιεῖσθαι πάτριον αὐτοῖς ἐστιν ἐγκεχαραγμένον τῇ βάσει τῆς αἰτωλοῦ εἰκόνος.

» Χώρης οἰκιστῆρα παρ' ἀλφειοῦ ποτε δίναις
» Τρεφθέντα σταδίων γείτον' ὀλυμπιάδος.
» Ἐνδυμίωνος παῖδ' αἰτωλὸν, τὸν δ' ἀνέθηκαν
» Αἰτωλοὶ σφετέρας μνῆμ' ἀρετῆς ἐσορᾶν.

Τὸ δ' ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν ἠλείων ἐπὶ τῷ ὀξύλου ἀνδριάντι.

» Αἰτωλός ποτε τόνδε λιπὼν αὐτόχθονα δῆμον
» Κτήσατο κουρῆτιν γῆν δουρὶ πολλὰ καμών.
» Τῆς δ' αὐτῆς γενεᾶς δεκατόσπορος αἵμονος υἱὸς

» Ὄξυλος ἀρχαίαν ἔκτισε τήνδε πόλιν.

Τὴν μὲν οὖν συγγένειαν τὴν πρὸς ἀλλήλους, τῶν τε Ἠλείων, καὶ τῶν Αἰτωλῶν ὀρθῶς ἐπισημαίνεται διὰ τῶν ἐπιγραμμάτων, ἐξομολογουμένων ἀμφοῖν, οὐ τὴν συγγένειαν μόνον, ἀλλὰ καὶ τὸ ἀρχηγέτας ἀλλήλων εἶναι. δι' οὗ καλῶς ἐξελέγχει ψευδομένους τοὺς λέγοντας τῶν μὲν Αἰτωλῶν ἀποίκους εἶναι τοὺς Ἠλείους, μὴ μέντοι τῶν Ἠλείων τοὺς Αἰτωλούς. τὴν δ' ἀνομολογίαν τῆς γραφῆς, καὶ τῆς ἀποφάσεως, φαίνεται τὴν αὐτὴν ἐπιδεδειγμένος κἀνταῦθα, ἣν πρότερον ἐπὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Δελφοῖς παρεστήσαμεν. εἰπὼν γὰρ ἀπόρθητον ἐκ τοῦ μνημονευομένου χρόνου παντὸς τὴν Αἰτωλίαν. εἰπὼν δὲ, καὶ ἐξ ἀρχῆς τὴν χώραν ταύτην τοὺς Κουρῆτας κατασχεῖν, ὤφειλε μέντοι γε τοῖς εἰρημένοις, ἀκόλουθον τοῦτο φέρειν· ὅτι οἱ Κουρῆτες διέμειναν ἕως εἰς αὐτὸν κατέχοντες τὴν Αἰτωλίαν γῆν. οὕτω γὰρ ἔμελλεν ἀπόρθητός τε, καὶ ἐπ' ἄλλοις οὐδέποτε γεγονυῖα ὀρθῶς ἐλεχθήσεσθαι. ὁ δ' ἐκλαθόμενος τῆς ὑποσχέσεως, οὐ τοῦτ' ἐπιφέρει. ἀλλὰ τοὐναντίον. ὡς ἀφικομένου οὐκ ἐξ Ἤλιδος Αἰτωλοῦ, καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐτῶν, οἱ Κουρῆτες ἀπῆλθον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν. τί οὖν ἄλλο πορθήσεως ἴδιον, ἢ τῷ πολέμῳ κρατηθῆναι, καὶ τὴν χώραν ἐκλιπεῖν, τοῦτο δὲ τὸ ἐπίγραμμα μαρτυρεῖ τὸ παρὰ τοῖς Ἠλείοις. ὁ γὰρ Αἰτωλός φησι κτήσατο Κουρῆτιν γῆν πολλὰ καμών. ἴσως δέ τις ἂν φαίη λέγειν αὐτὸν ἀπόρθητον τὴν Αἰτωλίαν. ἀφ' οὗ τοὔνομα τοῦτ' ἔσχε μετὰ τὴν Αἰτωλοῦ παρουσίαν. ἀλλ' ἀφῄρηται, καὶ τοῦ νοήματος τὸν λόγον. φήσας ἐν τοῖς ἐφεξῆς, τὸ μὲν πλεῖστον τοῦ λαοῦ τοῦ διαμένοντος ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς, τοῦτο εἶναι τὸ τῶν Ἐπειῶν λέγων συμμιχθέντων δ' αὐτοῖς ὕστερον Αἰολέων, τῶν ἅμα Βοιωτοῖς ἐκ Θετταλίας ἀναστάντων, κοινῇ μετὰ τούτων τὴν χώραν κατασχεῖν. ἆρ' οὖν ἔστι χωρὶς πολέμου τὴν ἀλλοτρίαν ἐπελθόντας, συγκατανείμασθαι τοῖς ἔχουσι μηδὲν δεομένοις κοινωνίας τοιαύτης, ἢ τοῦτο μὲν οὐ πιστὸν, τὸ δὲ, κρατουμένοις τοῖς ὅπλοις ἐπίσης συμβῆναι πιστόν. τί οὖν ἄλλο πόρθησις, ἢ τὸ κρατεῖσθαι τοῖς ὅπλοις. καὶ Ἀπολλόδωρος δ' εἴρηκεν ἐκ τῆς Βοιωτίας ἀπελθόντας ὕαντας ἱστορεῖσθαι. καὶ ἐποίκους τοῖς Αἰτωλοῖς γενομένους. ὁ δ' ὥσπερ κατορθωκὼς ἐπιλέγει. ὅτι ταῦτα καὶ τὰ τοιαῦτα διακριβοῦν εἰώθαμεν, ὅταν ἢ τι τῶν πραγμάτων, παντελῶς ἀπορούμενον ἢ ψευδῆ δόξαν ἔχον, τοιοῦτος δ' ὢν Ἔφορος ἑτέρων ὅμως κρείττων ἐστί. καὶ αὐτὸς ὁ ἐσπουδασμένος οὕτως. ἐπαινέσας αὐτὸν Πολύβιος, καὶ φήσας περὶ τῶν Ἑλληνικῶν καλῶς μὲν Εὔδοξον, κάλλιστα δ' Ἔφορον ἐξηγεῖσθαι περὶ κτίσεων συγγενειῶν, μεταναστάσεων, ἀρχηγετῶν, ἡμεῖς δέ φησι τὰ νῦν ὄντα δηλώσομεν. καὶ περὶ θέσεως τόπων, καὶ διαστημάτων. τοῦτο γὰρ ἐστὶν οἰκειότατον χωρογραφίᾳ. ἀλλὰ μὴν σύ γε ὦ Πολύβιε ὁ τὰς τῶν ἄλλων δογματικὰς ἀποφάσεις περὶ τῶν διαστημάτων εἰσάγων, οὐκ ἐν τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος μόνον. ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς Ἑλληνικοῖς, καὶ διδοὺς εὐθύνας, τὰς μὲν, Ποσειδωνίῳ. τὰς δ' Ἀρτεμιδώρῳ. τὰς δ' ἄλλοις πλείοσι, καὶ ἡμῖν οὖν συγγνώμην ἔχειν, καὶ οὐ δυσχεραίνειν δεῖ, παρὰ τῶν τοιούτων μεταφέρουσι τὴν πολλὴν ἱστορίαν, ἐάν τι πταίωμεν, ἀλλ' ἀγαπᾶν, ἐὰν τὰ πλείω τῶν εἰρημένων ἑτέροις ἄμεινον λέγωμεν, ἢ τὰ παραλειφθέντα κατ' ἄγνοιαν προστιθῶμεν. περὶ δὲ Κουρήτων ἔτι, καὶ τὰ τοιαῦτα λέγεται. τὰ μὲν ἐγγυτέρω ὄντα τῆς περὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων ἱστορίας. τὰ δ' ἀποτέρω ἐξωτέρω μὲν τὰ τοιαῦτα δια προείρηται. ὅτι τὴν χώραν ἣ νῦν Αἰτωλία καλεῖται, Κουρῆτες ᾤκουν. ἐλθόντες δ' οἱ Αἰτωλοὶ μετὰ Αἰτωλοῦ, τούτους ἐξέβαλον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν. καὶ ἔτι τὰ τοιαῦτα. ὅτι τὴν Πλευρωνίαν ὑπὸ Κουρήτων οἰκουμένην, καὶ Κουρῆτιν προσαγορευομένην, Αἰολεῖς ἐπελθόντες ἀφείλοντο, τοὺς δὲ κατέχοντας ἐξέβαλον. Ἀρχέμαχος δ' ὁ Εὐβοεὺς φησὶ τοὺς Κουρῆτας ἐν Χαλκίδι συνοικῆσαι συνεχῶς δὲ περὶ τοῦ Ληλάντου πεδίου πολεμοῦντας, ἐπειδὴ οἱ πολέμιοι τῆς κόμης ἐδράττοντο τῆς ἔμπροσθεν, αὐτοὺς κατόπιν ὄπισθεν κομῶντας γενέσθαι. τὰ δ' ἔμπροσθεν κείρεσθαι. διὸ, καὶ Κουρῆτας ἀπὸ τῆς κουρᾶς κληθῆναι, μετοικῆσαι δ' εἰς τὴν Αἰτωλίαν, καὶ κατασχόντας τὰ περὶ Πλευρῶνα χωρία, τοὺς πέραν οἰκοῦντας τοῦ Ἀχελώου, διὰ τὸ ἀκούρους φυλάττειν τὰς κεφαλὰς, Ἀκαρνᾶνας καλέσαι. ἔνιοι δ' ἀπὸ ἥρωος τοὔνομα σχεῖν ἑκάτερον τὸ φῦλον. οἱ δ' ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Κουρίου τοὺς Κουρῆτας ὀνομασθῆναι, τοῦ ὑπερκειμένου τῆς Πλευρῶνος. εἶναι τε φῦλον τι Αἰτωλικὸν τοῦτο. ὡς Ὀφιεῖς, καὶ Ἀγραίους, καὶ Εὐρυτᾶνας, καὶ ἄλλα πλείω. ὡς δ' εἴρηται τῆς Αἰτωλίας δίχα διῃρημένης, τὰ μὲν περὶ Καλυδῶνα τὸν Οἰνέα ἔχειν φασί. τῆς δὲ Πλευρωνίας μέρος μέν τι, καὶ τοὺς Πορθαονίδας ἔχειν τοὺς περὶ τὸν Ἄγριον. οἳ πέρ ᾤκεον ἐν Πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι. ἐπικρατεῖν μέντοι Θέστιον τῆς Πλευρωνίας, τὸν πενθερὸν τοῦ Οἰνέως. Ἀλθαίας δὲ πατέρα. ἡγουμένων τῶν Κουρήτων. πολέμου δ' ἐμπεσόντος τοῖς Θεστιάδαις πρὸς Οἰνέα, καὶ Μελέαγρον, ὁ μὲν ποιητὴς ἀμφὶ συὸς κεφαλῇ, καὶ δέρματι, καὶ τὴν περὶ τοῦ κάπρου μυθολογίαν. ὡς δὲ τὸ εἰκὸς περὶ μέρους τῆς χώρας. οὕτω δὴ λέγεται.

» Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο, καὶ Αἰτωλοὶ μενεχάρμαι.

Ταῦτα μὲν τὰ ἐγγυτέρω. τὰ δ' ἀποτέρω τῆς ὑποθέσεως, ταῦτα ἄλλως δὲ διὰ τὴν ὁμωνυμίαν εἰς ταὐτὸν ὑπὸ τῶν ἱστορικῶν ἀγόμενα, ἅπερ Κουρητικὰ μὲν καὶ περὶ Κουρήτων λέγεται ὁμοίως ὥσπερ, καὶ τὰ περὶ τῶν τὴν Αἰτωλίαν καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν οἰκησάντων, ἐκείνων μὲν διαφέρειν. ἔοικε δὲ μᾶλλον τῷ περὶ σατύρων καὶ σειληνῶν καὶ βακχῶν καὶ τιτύρων λόγῳ. τοιούτους γάρ τινας δαίμονας ἢ προσπο-

λους θεῶν τοὺς κουρῆτας φασὶν οἱ δὲ παραδιδόντες τὰ κρητικὰ, καὶ τὰ φρύγια ἱερουργίαις τισὶν
ἐμπεπλεγμένοι, ταῖς μὲν, μυστικαῖς, ταῖς δ' ἄλλως, περί τε τὴν τοῦ διὸς παιδοτροφίαν τὴν ἐν
τῇ κρήτῃ, καὶ τοὺς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ὀργιασμοὺς ἐν τῇ φρυγίᾳ, καὶ τοῖς περὶ τὴν ἴδην τὴν τρωϊκὴν
τόποις τοσαύτη δ' ἐστὶν ἐν τοῖς λόγοις τούτοις ποικιλία, τῶν μὲν, τοὺς αὐτοὺς τοῖς κουρῆσι τοὺς κορύβαν-
τας καὶ καβείρους καὶ ἰδαίους δακτύλους, καὶ τελχῖνας ἀποφαινόντων. τῶν δὲ, συγγενεῖς ἀλλήλων
καὶ μικράς τινας αὐτῶν πρὸς ἀλλήλους διαφορὰς διαστελλόντων. ὡς δὲ, τύπῳ εἰπεῖν, καὶ κατὰ τὸ πλέον
ἅπαντας ἐνθουσιαστικούς τινας καὶ βακχικοὺς, καὶ ἐνοπλίῳ κινήσει, μετὰ θορύβου, καὶ ψόφου,
καὶ κυμβάλων, καὶ τυμπάνων, καὶ ὅπλων. ἔτι δ' αὐλοῦ, καὶ βοῆς ἐκπλήττοντας κατὰ τὰς ἱερουρ-
γίας ἐν σχήματι διακόνων τε. καὶ τὰ ἱερὰ τρόπον τινὰ κοινοποιεῖσθαι ταῦτά τε, καὶ τῶν σαμοθρακῶν.
καὶ τὰ ἐν λήμνῳ, καὶ ἄλλα πλείω. διὰ τὸ τοὺς προπόλους λέγεσθαι τοὺς αὐτούς. ἔστι μὲν οὖν θεο-
λογικὸς πᾶς ὁ τοιοῦτος τρόπος τῆς ἐπισκέψεως. καὶ οὐκ ἀλλότριος τῆς τοῦ φιλοσόφου θεωρίας. ἐ-
πειδὴ δὲ ὁμωνυμία τῶν κουρήτων, καὶ οἱ ἱστορικοὶ συνήγαγον εἰς ἓν τὰ ἀνόμοια, οὐδ' ἂν αὐτὸς ὀ-
κνήσαιμ' ἂν εἰπεῖν περὶ αὐτῶν ἐπὶ πλέον ἐν παραβάσει. προσθεὶς τὸν οἰκεῖον τῇ ἱστορίᾳ, φυσικὸν
λόγον, καί τοι τινὲς καὶ συνοικειοῦν βούλονται ταῦτ' ἐκείνοις. καὶ τυχὸν ἴσως ἔχονταί τινος πιθα-
νοῦ. θηλυστολοῦντας γὰρ ὡς αἱ κόραι, τοὔνομα σχεῖν τοῦτο, τοὺς περὶ τὴν αἰτωλίαν φασίν. εἶναι
γὰρ καί τινα τοιοῦτον ζῆλον ἐν τοῖς ἕλλησι. καὶ ἰάονας ἑλκεχίτωνας εἰρῆσθαι καὶ τοὺς περὶ λεω-
νίδαν κτενιζομένους, ὅτ' ἐξῄεσαν εἰς τὴν μάχην, καταφρονηθῆναι λέγουσιν ὑπὸ τῶν περσῶν. ἐν δὲ τῇ
μάχῃ θαυμασθῆναι. ἁπλῶς δ' ἡ περὶ τὰς κόμας φιλοτεχνία συνέστηκε περί τε θρέψιν. καὶ κουρὰν
τριχός. ἄμφω δὲ, καὶ κόραις καὶ κόροις ἐστὶν οἰκεῖα. ὥστε πλεοναχῶς τὸ ἐτυμολογεῖν τοὺς κουρῆτας ἐν εὐ-
πόρῳ κεῖται. εἰκὸς δὲ, καὶ τὴν ἐνόπλιον ὄρχησιν ὑπὸ τῶν ἠσκημένων οὕτω περὶ κόμην, καὶ στολὴν
πρῶτον εἰσαχθεῖσαν. ἐκείνων κουρήτων καλουμένων παρασχεῖν πρόφασιν. καὶ τοῖς στρατιωτικωτέροις ἑ-
τέρων τὸν βίον ἐνόπλιον ἔχουσιν. ὥσθ' ὁμωνύμως, καὶ αὐτοὺς κουρῆτας λεχθῆναι. τοὺς ἐν εὐβοίᾳ
λέγω, καὶ αἰτωλίᾳ, καὶ ἀκαρνανίᾳ, καὶ ὅμηρος δὲ τοὺς νέους στρατιώτας οὕτω προσηγόρευσε. καὶ
κρινάμενος κουρῆτας ἀριστῆας παναχαιῶν.

» δῶρα θοῆς παρὰ νηὸς ἐνεγκέμεν ὅσσ' ἀχιλῆϊ
» χθιζοὶ ὑπέστημεν. Καὶ πάλιν,
» δῶρα φέρον κουρῆτες ἀχαιοί.

Περὶ μὲν οὖν τῆς τῶν κουρήτων ἐτυμολογίας ταῦτα. ἡ δὲ, ἐνόπλιος ὄρχησις στρατιωτική, καὶ
πυρρίχη. δηλοῖ δὲ, καὶ ὁ πυρρίχος ὅν φησιν εὑρετὴν εἶναι τῆς τοιαύτης ἀσκήσεως τῶν νέων, καὶ τὰ στρατιω-
τικά. τὸ δ' εἰς ἓν συμφέρεσθαι, τὰ τοιαῦτα ὀνόματα, καὶ τὴν ἐνοῦσαν θεολογίαν ἐν τῇ περὶ αὐτῶν
ἱστορίᾳ, νῦν ἐπισκεπτέον. κοινὸν δὴ τοῦτο, καὶ τῶν ἑλλήνων, καὶ τῶν βαρβάρων ἐστὶ τὸ τὰς ἱεροποι-
ίας μετὰ ἀνέσεως ἑορταστικῆς ποιεῖσθαι. τὰς μὲν, σὺν ἐνθουσιασμῷ. τὰς δὲ χωρίς. καὶ τὰς μὲν, μετὰ
μουσικῆς. τὰς δὲ, μή. καὶ τὰς μὲν μυστικῶς. τὰς δὲ, ἐν φανερῷ. καὶ τοῦθ' ἡ φύσις οὕτως ὑπαγορεύει. ἥ τε ἄ-
νεσις τὸν νοῦν ἀπάγει ἀπὸ τῶν ἀνθρωπικῶν ἀσχολημάτων, τὸν δὲ ὄντως νοῦν τρέπει πρὸς τὸ θεῖον ὅ τε ἐνθουσιασ-
μὸς ἐπίπνευσίν τινα θείαν ἔχειν δοκεῖ, καὶ τῷ μαντικῷ γένει πλησιάζειν. ἥ τε κρύψις ἡ μυστικὴ τῶν ἱερῶν σε-
μνοποιεῖ τὸ θεῖον. μιμουμένη τὴν φύσιν αὐτοῦ ἐκφεύγουσαν ἡμῶν τὴν αἴσθησιν, ἥ τε μουσικὴ περί τε ὄρχησιν
οὖσα, καὶ ῥυθμὸν, καὶ μέλος, ἡδονῇ τε ἅμα, καὶ πολυτεχνίᾳ πρὸς τὸ θεῖον ἡμᾶς συνάπτει κατὰ τοιαύ-
την αἰτίαν. εὖ μὲν γὰρ εἴρηται, καὶ τοῦτο τοὺς ἀνθρώπους μάλιστα μιμεῖσθαι τοὺς θεοὺς ὅταν εὐ-
εργετῶσιν. ἄμεινον δ' ἂν λέγοι τις ὅταν εὐδαιμονῶσι, τοιοῦτον δὲ τὸ χαίρειν, καὶ τὸ ἑορτάζειν, καὶ τὸ
φιλοσοφεῖν, καὶ μουσικῆς ἅπτεσθαι. μὴ γὰρ εἴ τις ἔκπτωσις πρὸς τὸ χεῖρον γίνεται τῶν μουσικῶν εἰς ἡ-
δυπαθείας τρεπόντων τὰς τέχνας ἐν τοῖς συμποσίοις, καὶ θυμέλαις, καὶ σκηναῖς, καὶ ἄλλοις τοιού-
τοις, διαβαλλέσθω τὸ πρᾶγμα. ἀλλ' ἡ φύσις ἡ τῶν παιδευμάτων ἐξεταζέσθω τὴν ἀρχὴν ἐνθένδε ἔ-
χουσα. καὶ διὰ τοῦτο μουσικὴν ἐκάλεσεν ὁ πλάτων, καὶ ἔτι πρότερον. οἱ πυθαγόρειοι τὴν φιλοσοφίαν, καὶ
καθ' ἁρμονίαν τὸν κόσμον συνεστάναι φασὶ πᾶν, τὸ μουσικὸν θεῶν ἔργον ὑπολαμβάνοντες. οὕτω δὲ
καὶ τὴν τῶν ἐθῶν κατασκευὴν τῇ μουσικῇ προσνέμουσιν. ὡς πᾶν τὸ ἐπανορθωτικὸν τοῦ νοῦ τοῖς θε-
οῖς ἐγγὺς ὄν. οἱ μὲν οὖν ἕλληνες, οἱ πλεῖστοι τῷ διονύσῳ προσέθεσαν, καὶ τῷ ἀπόλλωνι καὶ τῇ ἑκάτῃ
καὶ μοῦσαι θεαὶ, καὶ ἀπόλλων μουσηγέτης, καὶ ἡ ποιητικὴ πᾶσα ὑμνητικὴ οὖσα. ὡσαύτως δὲ, καὶ
ταῖς μούσαις καὶ τῇ δήμητρι νὴ δία τὸ ὀργιαστικὸν πᾶν, καὶ τὸ βακχικὸν, καὶ τὸ χορικόν. καὶ τὸ
περὶ τὰς τελετὰς μυστικὸν, ἴακχόν τε καὶ τὸν διόνυσον καλοῦσι. καὶ τὸν ἀρχηγέτην τῶν μυστηρίων,
τῆς δήμητρος δαίμονα, δενδροφορεῖαι τε καὶ χορεῖαι, καὶ τελεταὶ κοιναὶ τῶν θεῶν εἰσὶ τούτων, αἱ δὲ,
μοῦσαι, καὶ ὁ ἀπόλλων, αἱ μὲν τῶν χορῶν προεστᾶσιν. οἱ δὲ, καὶ τούτων καὶ τῶν κατὰ μαντικήν. πρό-
σπολοι δὲ τῶν μουσῶν οἱ πεπαιδευμένοι, πάντες, καὶ ἰδίως οἱ μουσικοί. τοῦ δ' ἀπόλλωνος οὗτοί τε, καὶ ὁ
περὶ μαντικήν. δήμητρος δὲ οἵ τε μύσται, καὶ δᾳδοῦχοι καὶ ἱεροφάνται. διονύσου δὲ σειληνοί τε, καὶ
σάτυροι καὶ βάκχαι. λῆναι τε, καὶ θυῖαι, καὶ μιμαλλόνες, καὶ ναΐδες, καὶ νύμφαι καὶ τίτυροι προ-

συνεργούμεναι. ἐν δὲ τῇ κρήτῃ, καὶ ταῦτα καὶ τὰ τοῦ διὸς ἱερὰ, ἰδίως ἐπετελεῖτο μεθ' ὀργιασμοῦ. καὶ τοιούτων προπόλων, οἱ περὶ τὸν διόνυσον εἰσὶν οἱ σάτυροι. τούτους δ' ὠνόμαζον κουρῆτας νέους τινὰς, ἐνόπλιον κίνησιν μετ' ὀρχήσεως ἀποδιδόντας, προστησάμενοι μῦθον τὸν περὶ τῆς τοῦ διὸς γενέσεως. ἐν ᾧ τὸν μὲν κρόνον εἰσάγουσιν εἰθισμένον καταπίνειν τὰ τέκνα ἀπὸ τῆς γενέσεως εὐθὺς, τὴν δὲ ῥέαν πειρωμένην ὠδῖνα κρύπτεσθαι τὰς ὠδῖνας. καὶ τὸ γεννηθὲν βρέφος, ἐκποδὼν ποιεῖν. καὶ περισώζειν εἰς δύναμιν. πρὸς δὲ τοῦτο συνεργοὺς λαβεῖν τοὺς κουρῆτας. οἳ μετὰ τυμπάνων, καὶ τοιούτων ἄλλων ψόφων, καὶ ἐνοπλίου χορείας, καὶ θορύβου περιέποντες τὴν θεὸν, ἐκπλήξειν ἔμελλον τὸν κρόνον, καὶ λήσειν. ὑποσπάσαντες αὐτοῦ τὸν παῖδα. τῇ δ' αὐτῇ ἐπιμελείᾳ καὶ τρεφόμενον ὑπ' αὐτῶν παραδίδοσθαι. ὥσθ' οἱ κουρῆτες ἤτοι διὰ τὸ νέοι, καὶ κόροι ὄντες ὑπουργεῖν, ἢ διὰ τὸ κουροτροφεῖν τὸν δία. λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως, ταύτης ἠξιώθησαν τῆς προσηγορίας. οἱονεὶ σάτυροί τινες ὄντες περὶ τὸν δία. οἱ μὲν οὖν ἕλληνες τοιοῦτοι περὶ τοὺς ὀργισμούς. οἱ δὲ, βερέκυντες, φρυγῶν τι φῦλον, καὶ ἁπλῶς οἱ φρύγες, καὶ τῶν τρώων. οἱ περὶ τὴν ἴδην κατοικοῦντες, ῥέαν μὲν, καὶ αὐτοὶ τιμῶσι καὶ ὀργιάζουσι ταύτῃ, μητέρα καλοῦντες θεῶν, καὶ ἄγδιστιν, καὶ φρυγίαν, θεὸν μεγάλην. ἀπὸ δὲ τῶν τόπων ἰδαίαν, καὶ δινδυμήνην, καὶ σιπυλήνην, καὶ πεσσινουντίδα, καὶ κυβέλην. οἱ δ' ἕλληνες τοὺς προπόλους αὐτῆς ὁμωνύμως κουρῆτας λέγουσιν, οὐ μήν γε ἀπὸ τῆς αὐτῆς μυθοποιίας. ἀλλ' ἑτέρους ὡς ἂν ὑπουργούς τινας, τοῖς σατύροις ἀνάλογον. τοὺς δ' αὐτοὺς, καὶ κορύβαντας καλοῦσι. μάρτυρες δ' οἱ ποιηταὶ τῶν τοιούτων ὑπονοιῶν. ὅ, τε γὰρ πίνδαρος ἐν τῷ διθυράμβῳ οὗ ἡ ἀρχή.

Πρὶν μὲν εἷρπε σχοινοτονία τ' ἀοιδὰ διθυράμβων, Μνησθεὶς δὲ τῶν περὶ τὸν διόνυσον ὕμνων τῶν τε παλαιῶν, καὶ τῶν ὕστερον μεταβὰς ἀπὸ τούτων φησί.

» Σοὶ μὲν κατάρχει μᾶτερ μεγάλα  Ῥόμβοι κυμβάλων ἐν δὲ κεχλάδων

» Κρόταλ' αἰθομένα τε δαῒς ὑπὸ ξανθῇσι πεύκαις.

Τὴν κοινωνίαν τῶν περὶ τὸν διόνυσον ἀποδειχθέντων νομίμων παρὰ τοῖς ἕλλησι, καὶ τῶν παρὰ τοῖς φρυξὶ περὶ τὴν μητέρα τῶν θεῶν συνοικειῶν ἀλλήλοις. εὐριπίδης τε ἐν ταῖς βάκχαις τὰ παραπλήσια ποιεῖ τοῖς φρυγίοις ἅμα, καὶ τὰ λύδια συμφέρων κατὰ τὸ ὅμορον

Ἀλλ' ὦ λιποῦσαι τμῶλον. ἔρυμα λυδίας  Θίασος ἐμὸς γυναῖκες.

» Ἐμά θ' εὑρήματα καὶ πόλιν

» Ὦ μάκαρ ὅς τις εὐδαίμων  Βιοτὰν ἁγιστεύει

» Τά τ' ἐμὰ πρὸς μεγάλας.  Ὄργιων κυβέλας θεμιστεύων

» Ἀνὰ θύρσον τε τινάσσων,  Κισσῷ στεφανωθεὶς θεραπεύει

» Αἴτε βάκχαι  Βρόμιον παῖδα θεὸν θεοῦ  Διόνυσον κατάγουσαι

» Φρυγίων ἐξ ὀρέων.  Ἑλλάδος, εἰς εὐρυχώρους ἀγυιὰς,

Πάλιν δ' ἐν τοῖς ἑξῆς καὶ τὰ κρητικὰ συμπλέκει τούτοις.

» Ὦ θαλάμευμα κουρήτων  Ζάθεοί τε κρῆτες

» Διογενέτορες ἔναυλοι  Ἔνθα τρικόρυθες αἴθοις,

» Βυρσότονόν τε κύκλωμα τόδε,  Μοι κορύβαντες εὗρον.

» Ἀνὰ δὲ βακχείῳ συντόνῳ κέρασ'  Ἀνὰ δύο βοαῖ φρυγίων

» Αὐλῶν πνεύματι. ματρός τε ῥέας εἰς  Χέρα θῆκαν καλλίκτυπον εὐάσμα βακχᾶν.

» Παρὰ δὲ μαινόμενοι σάτυροι  Ματέρος ἐξανύσαντο ῥέας.

» Εἰς δὲ χορεύματα  Προσῆψαν τριετηρίδων

» Αἷς χαίρει διόνυσος.  Καὶ ἐν παλαμήδει φησὶν ὁ χορός.

» Οὐ σὺν διονύσῳ κομᾶν,  Ὃς ἀν' ἴδαν τέρπεται σὺν ματρὶ φίλᾳ  Τυμπάνων ἰακχαῖς. Καὶ σειληνὸν, καὶ μαρσύαν, καὶ ὄλυμπον συνάγοντες εἰς ἓν. καὶ εὑρετὰς αὐλῶν ἱστοροῦντες, πάλιν, καὶ οὕτως τὰ διονύσια, καὶ τὰ φρύγια εἰς ἓν συμφέρουσι. τήν τε ἴδην καὶ τὸν ὄλυμπον συγκεχυμένως πολλάκις ὡς τὸ αὐτὸ ὄρος κτυποῦσιν. εἰσὶ μὲν οὖν λόφοι τέτταρες ὄλυμποι καλούμενοι τῆς ἴδης κατὰ τὴν ἀντανδρίαν. ἔστι δὲ καὶ ὁ μυσὸς ὄλυμπος. ὅμορος μὲν οὐχ ὁ αὐτὸς δὲ τῇ ἴδῃ. ὁ δ' οὖν σοφοκλῆς ποιήσας τὸν μενέλαον ἐκ τῆς τροίας ἀπαίρειν σπεύδοντα ἐν τῇ πολυξένῃ. τὸν δ' ἀγαμέμνονα μικρὸν ὑπολειφθῆναι βουλόμενον τοῦ ἐξιλάσασθαι τὴν ἀθηνᾶν χάριν, εἰσάγει λέγοντα τὸν μενέλαον

» Σὺ δ' αὖθι μίμνων κατ' ἰδαίαν χθόνα.  Ποίμνας ὀλύμπου συναγαγὼν θυηπόλει

Τῷ δ' αὐλῷ, καὶ κτύπῳ κροτάλων τε καὶ κυμβάλων, καὶ τυμπάνων, καὶ ταῖς ἐπιβοήσεσι καὶ εὐασμοῖς καὶ ποδοκρουστίαις, οἰκεῖα ἐξεύροντο. καὶ τινα τῶν ὀνομάτων ὥστε τοὺς προπόλους, καὶ χορευτὰς, καὶ θεραπευτὰς τῶν ἱερῶν ἐκάλουν, καβείρους καὶ κορύβαντας, καὶ πᾶνας, καὶ σατύρους καὶ τιτύρους. καὶ τὸν θεὸν βάκχον καὶ τὴν ῥέαν κυβέλην, καὶ κυβήβην. καὶ δινδυμήνην, καὶ τοὺς τόπους αὐτούς. καὶ ὁ σαβάζιος δὲ τῶν φρυγιακῶν ἐστι. καὶ τρόπον τινὰ τῆς μητρὸς τὸ παιδίον παραδιδόμενος τοῖς διονύσου καὶ αὐτός. τούτοις δ' ἔοικε, καὶ παρὰ τοῖς θρᾳξὶ τά τε κοτύττια, καὶ τὰ μενδίδεια παρ' οἷς καὶ τὰ ὀρφικὰ τὴν καταρχὴν ἔσχε.

τῆς μὲν οὖν κότυος τῆς ἐν τοῖς ἠδωνοῖς αἰσχύλος μέμνηται. εἰπὼν, γὰρ, σεμνὰ κότυς ἐν τοῖς ἠδωνοῖς,
» ὄρεια δ᾽ ὄργαν᾽ ἔχοντα. τοὺς περὶ τὸν διόνυσον εὐθέως ἐπιφέρει. ὁ μὲν ἐν χερσὶ βόμβυκας ἔχων τορ
» νου κάματον δακτυλόδεικτον. γίμπλησι μέλος, μανίας ἐπαγωγὸν ὁμοκλάν. ὁ δὲ, χαλκοδέ
» οις κοτύλαις ὀτοβεῖ, καὶ πάλιν ψαλμὸς δ᾽ ἀλαλάζει. ταυρόφθογγοι δ᾽ ὑπομυκῶνταί ποθεν
» ἐξ ἀφανοῦς φοβεροὶ μίμοι τυμπάνου δ᾽ ἠχώ. ὥσθ᾽ ὑπογαίας βροντῆς φέρεται βαρυταρβής. ταῦ
τα γὰρ ἔοικε τοῖς φρυγίοις, καὶ οὐκ ἀπεικός γε. ὥσπερ οἱ αὐτοὶ οἱ φρύγες θρακῶν ἄποικοί εἰσιν, οὕτω
καὶ τὰ ἱερὰ ἐκεῖθεν μετενήνεκται, καὶ τὸν διόνυσον δὲ, καὶ τὸν ἠδωνὸν λυκοῦργον συνάπτοντες εἰς ἕν,
τῶν ἱερῶν τὴν ὁμοιοτροπίαν αἰνίττονται. ἀπὸ δὲ τοῦ μέλους, καὶ τοῦ ῥυθμοῦ. καὶ τῶν ὀργάνων, καὶ ἡ μουσι
κὴ πᾶσα θρακία, καὶ ἀσιᾶτις νενόμισται. δῆλον δ᾽ ἔκ τε τῶν τόπων, ἐν οἷς αἱ μοῦσαι τετίμηνται. πι
ερία γὰρ καὶ ὄλυμπος, καὶ πίμπλα, καὶ λίβηθρον τὸ παλαιὸν ἦν θράκια χωρία καὶ ὄρη. νῦν δὲ ἔχου
σι μακεδόνες. τόν τε ἑλικῶνα καθιέρωσαν ταῖς μούσαις θρᾶκες οἱ τὴν βοιωτίαν ἐποικήσαντες. οἵπερ
καὶ τὸ τῶν λιβηθριάδων νυμφῶν ἄντρον καθιέρωσαν. οἵ τ᾽ ἐπιμεληθέντες τῆς ἀρχαίας μουσικῆς, θρᾶκες
λέγονται. ὀρφεύς τε, καὶ μουσαῖος, καὶ θάμυρις. καὶ τῷ εὐμόλπῳ δὲ τοὔνομα ἐνθένδε. καὶ τῷ διονύσῳ
τὴν ἀσίαν ὅλην καθιερώσαντες μέχρι τῆς ἰνδικῆς, ἐκεῖθεν, καὶ τὴν πολλὴν μουσικὴν μεταφέρουσι.
καὶ ὁ μέν τις φησίν, κιθάραν ἀσιᾶτιν ῥάσσων. ὁ δὲ, τοὺς αὐλοὺς βερεκυντίους καλεῖ. καὶ φρυγίους
καὶ τῶν ὀργάνων ἔνια βαρβάρως ὠνόμασται. νάμβλα. καὶ σαμβύκη, ἢ καὶ βάρβιτος. καὶ μαγάδες. καὶ
ἄλλα πλείω. ἀθηναῖοι δ᾽ ὥσπερ περὶ τὰ ἄλλα φιλοξενοῦντες διατελοῦσιν, οὕτω καὶ περὶ τοὺς θεούς.
πολλὰ γὰρ τῶν ξενικῶν ἱερῶν παρεδέξαντο. ὥστε, καὶ ἐκωμῳδήθησαν. καὶ δὴ, καὶ τὰ θράκια, καὶ
τὰ φρύγια. τῶν μὲν γὰρ βενδιδείων πλάτων μέμνηται. τῶν δὲ φρυγίων δημοσθένης. διαβάλλων τὴν αἰσχίνου
μητέρα καὶ αὐτὸν, ὡς τελούσῃ τῇ μητρὶ συνόντα, καὶ συνθιασεύοντα. καὶ ἐπιφθεγγόμενον εὐοῖ, σα
βοῖ πολλάκις, καὶ ἄττης ὕης. ταῦτα γάρ ἐστι σαβάζια, καὶ μητρῷα. ἔτι δ᾽ ἄν τις, καὶ ταῦτα εὕροι τὰ
τῶν δαιμόνων τούτων, καὶ τῆς τῶν ὀνομάτων ποικιλίας. καὶ ὅτι οὐ πρόσπολοι θεῶν μόνον. ἀλλὰ καὶ
αὐτοὶ θεοὶ προσηγορεύθησαν. ἡσίοδος μὲν γὰρ ἑκαταίου, καὶ τῆς φορωνέως θυγατρὸς πέντε γενέσθαι θυγατέρας
φησίν. ἐξ ὧν ὄρειαι νύμφαι θεαὶ ἐγένοντο. καὶ γένος οὐτιδανῶν σατύρων, καὶ ἀμηχανοεργῶν. κουρῆτές
τε θεοὶ φιλοπαίγμονες ὀρχηστῆρες. ὁ δὲ, τὴν φορωνίδα γράψας, αὐλητὰς, καὶ φρύγας τοὺς κουρῆτας
λέγει. ἄλλοι δὲ γηγενεῖς, καὶ χαλκάσπιδας. ὁ δ᾽ οὐ τοὺς κουρῆτας λέγει. ἀλλὰ τοὺς κορύβαντας φρύ
γας. ἐκείνους δὲ κρῆτας. περιθέσθαι δ᾽ ὅπλα χαλκᾶ πρώτους ἐν εὐβοίᾳ. διὸ, καὶ χαλκιδέας αὐτοὺς
κληθῆναι. οἱ δ᾽ ὑπὸ τιτάνων ῥέᾳ δοθῆναι προπόλους ἐνόπλους τοὺς κορύβαντας ἐκ τῆς βακτρια
νῆς ἀφιγμένους, οἱ δ᾽ ἐκ κόλχων φασίν. ἐν δὲ τοῖς κρητικοῖς λόγοις οἱ κουρῆτες διὸς τροφεῖς λέγονται,
καὶ φύλακες, εἰς κρήτην ἐκ φρυγίας μεταπεμφθέντες ὑπὸ τῆς ῥέας. οἱ δὲ τελχίνων ἐν ῥόδῳ ἐννέα
ὄντων, ῥέᾳ συνακολουθήσαντας εἰς κρήτην, καὶ τὸν δία κουροτροφήσαντας, κουρῆτας ὀνομασθῆ-
ναι. κύρβαντα δὲ τούτων ἑταῖρον ἱεραπύτνης ὄντα κτίστην. παρὰ τοῖς ῥοδίοις παρασχεῖν πρόφασιν
τοῖς πρασίοις, ὥστε λέγειν ὡς εἶεν κορύβαντες δαίμονές τινες ἀθηνᾶς, καὶ ἡλίου παῖδες. εἶτα δὲ κρόνου
τινὲς τοὺς κορύβαντας. οἱ δὲ, τοῦ διὸς καὶ καλλιόπης φασὶ τοὺς αὐτοὺς τοῖς καβείροις ὄντας. ἀπελθεῖν
δὲ τούτους εἰς σαμοθρᾴκην καλουμένην πρότερον μελίτην. τὰς δὲ πράξεις αὐτῶν μυστικὰς εἶναι. ταῦτα
δ᾽ οὐκ ἀποδεξάμενος ὁ σκήψιος, ὁ τοὺς μύθους συναγαγὼν τούτους ὡς μηδενὸς ἐν σαμοθρᾴκῃ μυστικοῦ
λόγου περὶ καβείρων λεγομένου. παρατίθησιν ὁμοίως. καὶ στησιμβρότου τοῦ θασίου δόξαν. ὡς τὰ ἐν σα
μοθρᾴκῃ ἱερὰ τοῖς καβείροις ἐπετελεῖτο. καλεῖσθαι δέ φησιν αὐτοὺς ἐκεῖνος, ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ ἐν τῇ βε
ρεκυντίᾳ καβείρου. οἱ δ᾽ ἑκάτης προπόλους νομίζουσι τοὺς κουρῆτας τοὺς αὐτοὺς τοῖς κορύβασιν ὄν
τας. φησὶ δὲ πάλιν ὁ σκήψιος ἐν τῇ κρήτῃ τὰς τῆς ῥέας τιμὰς μὴ νομίζεσθαι. μηδ᾽ ἐπιχωριάζειν. ὑπε
ναντιούμενος τῷ τοῦ εὐριπίδου λόγῳ. ἀλλ᾽ ἐν τῇ φρυγίᾳ μόνον, καὶ τῇ τρωάδι. τοὺς δὲ λέγοντας μυθολογεῖν
μᾶλλον ἢ ἱστορεῖν. πρὸς τοῦτο δὲ, καὶ τὴν τῶν τόπων ὁμωνυμίαν συμπρᾶξαι τυχὸν ἴσως αὐτοῖς. ἴδη γὰρ
τὸ ὄρος τό τε τρωϊκὸν, καὶ τὸ κρητικόν. καὶ δίκτη τόπος ἐν τῇ σκηψίᾳ. καὶ ὄρος ἐν κρήτῃ. τῆς δὲ ἴδης λόφος πύ
τνα. ἀφ᾽ οὗ ἱεράπυτνα ἡ πόλις ἱπποκορώνα τε τῆς ἀδραμυττηνῆς. καὶ ἱπποκορώνιον ἐν κρήτῃ σαμώνι
όν τε τὸ ἑωθινὸν ἀκρωτήριον τῆς νήσου. καὶ πεδίον ἐν τῇ νεανδρίδι, καὶ τῇ ἀλεξανδρέων. ἀκουσίλαος δ᾽
ὁ ἀργεῖος ἐκ καβείρης καὶ ἡφαίστου κάμιλον λέγει. τοῦ δὲ, τρεῖς καβείρους, ὧν νύμφας καβειρίδας. φερεκύ
δης δ᾽ ἐξ ἀπόλλωνος καὶ ῥυτίας κύρβαντας ἐννέα οἰκῆσαι δ᾽ αὐτοὺς ἐν σαμοθρᾴκῃ. ἐκ δὲ καβείρης τῆς πρω
τέως, καὶ ἡφαίστου, καβείρους τρεῖς, καὶ νύμφας τρεῖς καβειρίδας. ἑκατέροις δ᾽ ἱερὰ γενέσθαι. μάλιστα μὲν οὖν
ἐν λήμνῳ, καὶ ἴμβρῳ τοὺς καβείρους τιμᾶσθαι συμβέβηκεν. ἀλλὰ καὶ ἐν τροίᾳ κατὰ πόλεις. τὰ δ᾽ ὀνόμα
τα αὐτῶν εἰσι μυστικά. ἡρόδοτος δὲ, καὶ ἐν μέμφει λέγει τῶν καβείρων ἱερὰ, καθάπερ καὶ τοῦ ἡφαίστου. δια
φθεῖραι δ᾽ αὐτὰ καμβύσην. ἔστι δ᾽ ἀοίκητα τὰ χωρία τῆς τῶν δαιμόνων τούτων τιμῆς. τό τε κορυβάντιον
τὸ ἐν τῇ ἀμαξιτίᾳ τῆς νῦν ἀλεξανδρέων χώρας ἐγγὺς τοῦ σμινθίου. καὶ ἡ κορύβισσα ἐν τῇ σκηψίᾳ περὶ
ποταμὸν εὐρύεντα, καὶ κώμην ὁμώνυμον. καὶ ἔτι χείμαρρον αἰθαλόεντα. πιθανὸν δέ φησιν ὁ σκήψιος κου
ρῆτας μὲν καὶ κορύβαντας εἶναι τοὺς αὐτούς. οἱ ἐπὶ τὰς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἁγιστείας πρὸς ἐνόπλιον ὄρχησιν

ἔνθεοι καὶ κόροι τυγχάνουσι παρειλημμένοι. καὶ κορύβαντες δὲ ἀπὸ τοῦ κορύπτοντας βαίνειν ὀρχηστικῶς. οὓς καὶ βητάρμονας λέγει ὁ ποιητής.

δεῦτε δ' ἄγε φαιήκων βητάρμονες ὅσσοι ἄριστοι.

Τῶν δὲ κορυβάντων ὀρχηστικῶν καὶ ἐνθουσιαστικῶν ὄντων. καὶ τοὺς μανικῶς κινουμένους, κορυβαντιᾶν φαμέν. δακτύλους δ' ἰδαίους φασί τινες κεκλῆσθαι, τοὺς πρώτους οἰκήτορας, τῆς κατὰ τὴν ἴδην ὑπωρείας. πόδας μὲν γὰρ λέγεσθαι τὰς ὑπωρείας, κορυφὰς δὲ, τὰς ἄκρας τῶν ὀρῶν. αἱ οὖν κατὰ μέρος ἐσχατιαὶ καὶ πᾶσαι τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἱεραὶ περὶ τὴν ἴδην. σοφοκλῆς δὲ οἴεται, πέντε τοὺς πρώτους ἄρσενας γενέσθαι. οἳ σίδηρόν τε ἐξεῦρον καὶ εἰργάσαντο πρῶτοι. καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων. πέντε δὲ, καὶ ἀδελφὰς τούτων. ἀπὸ δὲ τοῦ ἀριθμοῦ δακτύλους κληθῆναι. ἄλλοι δ' ἄλλως μυθεύουσιν, ἀπόροις ἄπορα συνάπτοντες. διαφόροις δὲ, καὶ τοῖς ὀνόμασι, καὶ τοῖς ἀριθμοῖς χρῶνται. ὧν σαλαμῖνον ὀνομάζουσί τινα, καὶ δαμναμενέα, καὶ ἡρακλέα, καὶ ἄκμονα. καὶ οἱ μὲν, ἐπιχωρίους τῆς ἴδης, οἱ δὲ, ἐποίκους. πάντες δὲ σίδηρον εἰργάσθαι ὑπὸ τούτων ἐν ἴδῃ πρῶτον φασί. πάντες δὲ, καὶ γόητας ὑπειλήφασι. καὶ περὶ τὴν μητέρα τῶν θεῶν. καὶ ἐν φρυγίᾳ ᾠκηκότας περὶ τὴν ἴδην. φρυγίαν τὴν τρωάδα καλοῦντες διὰ τὸ τοὺς φρύγας ἐπικρατῆσαι πλησιοχώρους ὄντας, τῆς τροίας ἐκπεπορθημένης. ὑπονοοῦσι δὲ τῶν ἰδαίων δακτύλων ἐκγόνους εἶναι τούς τε κουρῆτας καὶ τοὺς κορύβαντας. τοὺς γοῦν πρώτους γεννηθέντας ἐν κρήτῃ ἑκατὸν ἄνδρας ἰδαίους δακτύλους κληθῆναι. τούτων δ' ἀπογόνους φασὶ κουρῆτας ἐννέα γενέσθαι. τούτων δ' ἕκαστον δέκα παῖδας τεκνῶσαι τοὺς ἰδαίους καλουμένους δακτύλους. προήχθημεν δὲ διὰ πλειόνων εἰπεῖν περὶ τούτων καίπερ ἥκιστα φιλομυθοῦντες. ὅτι τοῦ θεολογικοῦ γένους ἐφάπτεται τὰ πράγματα ταῦτα. πᾶς δὲ ὁ περὶ τῶν θεῶν λόγος ἀρχαίας ἐξετάζει δόξας, καὶ μύθους, αἰνιττομένους τῶν παλαιῶν, ἃς εἶχον ἐννοίας φυσικῶς περὶ τῶν πραγμάτων, καὶ προστιθέντων ἀεὶ τοῖς λόγοις τὸν μῦθον. ἅπαντα μὲν οὖν τὰ αἰνίγματα λύειν ἐπ' ἀκριβὲς οὐ ῥᾴδιον, τοῦ δὲ πλήθους τῶν μυθευομένων ἐκτεθέντος εἰς τὸ μέσον, τῶν μὲν ὁμολογούντων ἀλλήλοις, τῶν δ' ἐναντιουμένων εὐπορώτερον ἂν τις δύναιτο ἐξ αὐτῶν εἰκάζειν τἀληθές. οἷον τὰς ὀρειβασίας τῶν περὶ τὸ θεῖον σπουδαζόντων καὶ αὐτῶν τῶν θεῶν. καὶ τοὺς ἐνθουσιασμοὺς, εἰκότως μυθεύουσι κατὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν, καθ' ἣν, καὶ οὐρανίους νομίζειν τοὺς θεοὺς καὶ προνοητικοὺς, τῶν τε ἄλλων, καὶ τῶν προσημασιῶν. τῇ μὲν οὖν ὀρειβασίᾳ τὸ μεταλλευτικὸν, καὶ τὸ θηρευτικὸν, ζητητικὸν, τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων ἐφάνη συγγενές. τῶν δ' ἐνθουσιασμῶν, καὶ θρησκείας, καὶ μαντικῆς τὸ ἀγυρτικὸν, καὶ γοητείας ἐγγύς. τοιοῦτον δὲ, καὶ τὸ φιλότεχνον μάλιστα τὸ περὶ τὰς διονυσιακὰς τέχνας, καὶ τὰς ὀρφικάς. ἀλλ' ἀπόχρη περὶ αὐτῶν.

ἐπεὶ δὲ πρῶτον περὶ τῆς πελοποννήσου, τῶν τε ἄλλων νήσων διήλθομεν, καὶ τῶν ἐν τῷ κορινθιακῷ κόλπῳ τῶν πρὸ αὐτοῦ, περὶ κρήτης ἐφεξῆς ῥητέον. καὶ γὰρ αὐτῆς τῆς πελοποννήσου ἐστί. καὶ εἴ τις τῶν πρὸς ἕω, νήσων τῶν περὶ κρήτην. ἐν δὲ ταύταις αἵ τε κυκλάδες εἰσὶ, καὶ αἱ σποράδες. αἱ μὲν, ἄξιαι μνήμης. αἱ δ' ἀσημότεραι, νυνὶ δὲ περὶ τῆς κρήτης λέγωμεν. εὔδοξος μὲν οὖν ἐν τῷ αἰγαίῳ φησὶν αὐτὴν ἱδρύσθαι. δεῖ δὲ μὴ οὕτως. ἀλλὰ κεῖσθαι μὲν, μεταξὺ τῆς κυρηναίας, καὶ τῆς ἑλλάδος τῆς ἀπὸ σουνίου μέχρι λακωνικῆς. ἐπὶ μῆκος ταύταις ταῖς χώραις παράλληλον ἀπὸ τῆς ἑσπερίας ἐπὶ τὴν ἕω. κλύζεσθαι δὲ ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων, τῷ αἰγαίῳ πελάγει. καὶ τῷ κρητικῷ ἀπὸ δὲ νότου τῷ λιβυκῷ τῷ συνάπτοντι πρὸς τὸ αἰγύπτιον πέλαγος. τῶν δὲ ἄκρων τὸ μὲν ἑσπέριον ἐστὶ τὸ περὶ φαλάρνα, πλάτος ἔχον διακοσίων σταδίων. καὶ εἰς δύο ἀκρωτήρια μεριζόμενον, ὧν τὸ μὲν νότιον καλεῖται κριοῦ μέτωπον. τὸ δ' ἀρκτικὸν κίμαρος. τὸ δὲ ἑῷον τὸ σαμώνιον ἐστίν. ὑπερπίπτον τοῦ σουνίου οὐ πολὺ πρὸς ἕω, μέγεθος δὲ σωσικράτης μὲν ὅν φησιν ἀκριβοῦν ἀπολλόδωρος, τὰ περὶ τὴν νῆσον ἀφορίζεται. μήκει μὲν πλειόνων ἢ δισχιλίων σταδίων, καὶ ἢ τριακοσίων. πλάτει δὲ οὐ κατὰ τὸ μέγεθος, ὥσθ' ὁ κύκλος γίνοιτ' ἂν κατὰ πλέον ἢ πεντακισχίλιοι στάδιοι. ἀρτεμίδωρος δὲ τετρακισχιλίους καὶ ἑκατόν φησιν. ἱερώνυμος δὲ μῆκος δισχιλίους φήσας, τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλον. πλειόνων ἂν εἴη λέγων τὸν κύκλον, ἢ ὅσον ἀρτεμίδωρος κατά τε τὸ τρίτον μέρος τοῦ μήκους. τὸ δὲ ἐνθένδε ἰσθμός ἐστιν ὡς ἑκατὸν σταδίων, ἔχων κατοικίαν πρὸς μὲν τῇ βορείῳ θαλάττῃ, ἀμφαπαλίαν. πρὸς δὲ τῇ νοτίῳ, φοίνικα τὸν λαμπέων. πλατυτάτη δὲ κατὰ μέσον ἐστί, πάλιν δ' ἐντεῦθεν εἰς τὸ νότιον τοῦ πρότερον συμπίπτουσιν ἰσθμὸν αἱ ἠιόνες, περὶ ἑξήκοντα σταδίους τὸν ἀπὸ μινώας τῆς λυκτίων εἰς ἱεράπιτναν, καὶ τὸ λιβυκὸν πέλαγος. ἐν κόλπῳ δ' ἐστὶν ἡ πόλις, εἶτα πρόεισιν εἰς ὀξὺ ἀκρωτήριον τὸ σαμώνιον ἐπὶ τὴν αἴγυπτον νεῦον, καὶ τὰς ῥοδίων νήσους. ἔστι δ' ὀρεινὴ, καὶ δασεῖα, ἡ νῆσος, ἔχει δ' αὐλῶνας εὐκάρπους, τῶν δ' ὀρῶν τὰ μὲν πρὸς δύσιν, καλεῖται λευκὰ, οὐ λειπόμενα τοῦ ταϋγέτου κατὰ ὕψος. ἐπὶ τὸ μῆκος δ' ἐκτεταμένα ὅσα τριακοσίων σταδίων. καὶ ποιοῦντα ῥάχιν, τελευτῶσάν πως ἐπὶ τὰ στενά. ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ κατὰ τὸ εὐρυχωρότατον τῆς νήσου τὸ ἰδαῖον ὄρος ὑψηλότατον τῶν ἐκεῖ περιφερὲς δ' ἐν κύκλῳ σταδίων ἑξήκοντα, περιοικεῖται δ' ὑπὸ τῶν ἀρίστων πόλεων. ἄλλα δ' ἐστὶ πάρισα τοῖς λευκοῖς τὰ μὲν, ἐπὶ νότον. τὰ δ' ἐπὶ τὴν ἕω λήγοντα. ἔστι δὲ ἀπὸ τῆς κυρηναίας ἐπὶ τὸ κριοῦ μέτωπον δυοῖν ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς. ἀπὸ δὲ κιμάρου εἰσὶ στάδιοι ἑπτακόσιοι. μεταξὺ δὲ κύθηρα ἀπὸ δὲ τοῦ σαμωνίου πρὸς αἴγυπτον τεττάρων ἡμερῶν, καὶ νυκτῶν πλοῦς.

οἱ δὲ, τριῶν φασι σταδίων δ' εἶναι, τούτων τινὲς πεντακισχιλίους εἰρήκασιν, οἱ δὲ καὶ ἐλαττόνων, ὅσον τὸ ἐντεῦθεν δ' ἀπὸ μὲν τῆς κυρηναίας μέχρι, κριοῦ μετώπου δισχιλίους φησίν. ἐνθένδ' εἰς πελοπόννησον ἐλάττους. ἄλλη δ' ἄλλων γλῶσσα μεμιγμένη φησὶν ὁ ποιητής. ἐν μὲν ἀχαιοί.

» ἐν δ' ἐτεόκρητες, μεγαλήτορες. ἐν δὲ κύδωνες δωριέες τε τριχάϊκες, δῖοί τε πελασγοί.

Τούτων φησὶ στάφυλος, τὸ μὲν πρὸς ἕω, δωριεῖς κατέχειν. τὸ δὲ δυσμικὸν κύδωνας. τὸ δὲ νότιον ἐτεοκρῆτας. ὧν εἶναι πολίχνιον πρᾶσον. ὅπου τὸ τοῦ δικταίου διὸς ἱερόν. τοὺς δ' ἄλλους ἰσχύοντας πλέον οἰκῆσαι τὰ πεδία. τοὺς μὲν οὖν ἐτεοκρῆτας, καὶ τοὺς κύδωνας αὐτόχθονας ὑπάρξαι εἰκός, τοὺς δὲ λοιποὺς ἐπήλυδας. οὓς ἐκ θετταλίας ἐλθεῖν, φησὶν ἄνδρων τῆς δωριάδος μὲν πρότερον. νῦν δὲ τῆς ἱστιαιώτιδος λεγομένης. ἐξ ἧς ὡρμῆσθαί φησιν οἱ περὶ τὸν παρνασσὸν οἰκήσαντες δωριεῖς. καὶ ἐκτίσαι τήν τε ἐρινεὸν καὶ βοιὸν καὶ κυτίνιον. ἀφ' οὗ, καὶ τριχάϊκες ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγονται. οὐ πάνυ δὲ τὸν τοῦ ἄνδρωνος λόγον ἀποδέχονται. τὴν μὲν τετράπολιν δωρίδα, τρίπολιν ἀποφαίνοντες. τὴν δὲ μητρόπολιν τῶν δωριέων ἄποικον, τῶν θετταλῶν. τριχάϊκας δὲ δέχονται, ἤτοι ἀπὸ τῆς τριλοφίας. ἢ ἀπὸ τοῦ τριχίους εἶναι τοὺς λόφους ἐφαμίλλους. πόλεις δ' εἰσὶν ἐν τῇ κρήτῃ πλείους μὲν, μέγισται δὲ, καὶ ἐπιφανέσταται τρεῖς, κνωσὸς, γόρτυνα, κυδωνία. διαφερόντως δὲ τὴν κνωσὸν, καὶ ὅμηρος ὑμνεῖ. μεγάλην, καλῶν, καὶ βασίλειον τοῦ μίνω. καὶ οἱ ὕστερον. καὶ δὴ καὶ διετέλεσε μέχρι πολλοῦ φερομένη τὰ πρῶτα. εἶτα ἐταπεινώθη, καὶ πολλὰ τῶν νομίμων ἀφῃρέθη. μετέστη δὲ τὸ ἀξίωμα εἴς τε γόρτυναν, καὶ λύκτον. ὕστερον δ' ἀπέλαβε πάλιν τὸ παλαιὸν σχῆμα τὸ τῆς μητροπόλεως. κεῖται δ' ἐν πεδίῳ κύκλον ἔχουσα ἡ κνωσὸς τὸν ἀρχαῖον τριάκοντα σταδίων μεταξὺ τῆς λυκτίας καὶ τῆς γορτυνίας σταδίους διακοσίους, τῆς δὲ λύκτου ἣν ὁ ποιητὴς λύκτον ὠνόμασεν, ἑκατὸν εἴκοσι, τῆς δὲ θαλάσσης κνωσὸς μὲν τῆς βορείας πέντε, καὶ γόρτυνα δὲ λιβυκῆς ἐνενήκοντα. λύκτος δὲ καὶ αὐτὴ τῆς λιβυκῆς ὀγδοήκοντα. ἔχει δ' ἐπίνειον τὸ ἡράκλειον, ἡ κνωσὸς μίνω δέ φασιν ἐπινείῳ χρήσασθαι τῷ ἀμνισῷ. ὅπου τῆς εἰλειθυίας ἱερόν. ἐκαλεῖτο δ' ἡ κνωσὸς κέρατος πρότερον ὁμώνυμος τῷ παραρρέοντι ποταμῷ. ἱστόρηται δ' ὁ μίνως νομοθέτης γενέσθαι σπουδαῖος. θαλαττοκρατῆσαί τε πρῶτος. τρίχα δὲ διελὼν τὴν νῆσον ἐν ἑκάστῳ μέρει κτίσαι πόλιν. τὴν μὲν κνωσὸν, ἐν τῷ κατ' ἀντικρὺ τῆς πελοποννήσου. καὶ αὐτὴ δ' ἐστὶ προσβόρειος. ὡς δ' εἴρηκεν ἔφορος, ζηλωτὴς ὁ μίνως ἀρχαίου τινὸς ῥαδαμάνθυος δικαιοτάτου ἀνδρὸς ὁμωνύμου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὃς πρῶτος τὴν νῆσον ἐξημερῶσαι δοκεῖ νομίμοις καὶ συνοικισμοῖς πόλεων, καὶ πολιτείας. σκηψάμενος παρὰ διὸς φέρειν ἕκαστα τῶν τιθεμένων δογμάτων εἰς μέσον. τοῦτον δὲ μιμούμενος, καὶ ὁ μίνως διὰ ἐννέα ἐτῶν ὡς ἔοικεν ἀναβαίνων ἐπὶ τὸ τοῦ διὸς ἄντρον. καὶ διατρίβων ἐνθάδε, ἀπῄει συντεταγμένα ἔχων παραγγέλματά τινα. ἃ ἔφασκεν εἶναι τοῦ διὸς προστάγματα. ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ τὸν ποιητὴν οὕτως εἰρηκέναι. ἐνθάδε μίνως

» ἐννέωρος βασίλευε διὸς μεγάλου ὀαριστής.

Τοιαῦτα δ' εἰπόντος οἱ ἀρχαῖοι περὶ αὐτοῦ πάλιν ἄλλους εἰρήκασι λόγους, ὑπεναντίους τούτοις ὡς τυραννικός τε γένοιτο καὶ βίαιος, καὶ δασμολόγος. τραγῳδοῦντες τὰ περὶ τὸν μινόταυρον, καὶ τὸν λαβύρινθον, καὶ τὰ θησεῖ συμβάντα, καὶ δαιδάλῳ. ταῦτα μὲν οὖν ὁποτέρως ἔχει, χαλεπὸν ἐστὶν ἀπεῖν. ἔστι δὲ, καὶ ἄλλος λόγος οὐχ ὁμολογούμενος, τῶν μὲν ξένον τῆς νήσου τὸν μίνωα λεγόντων. τῶν δ' ἐπιχώριον. ὁ μέντοι ποιητὴς τῷ δευτέρῳ δοκεῖ μᾶλλον συνηγορεῖν ἀποφάσει. ὅταν φῇ, ὅτι

» πρῶτον μίνωα τέκε κρήτῃ ἐπίουρον.

Περὶ δὲ τῆς κρήτης ὁμολογεῖται ὅτι κατὰ τοὺς παλαιοὺς χρόνους ἐτύγχανεν εὐνομουμένη. καὶ ζηλωτὰς ἑαυτῆς τοὺς ἀρίστους τῶν ἑλλήνων ἀπέφηνεν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις λακεδαιμονίους. καθάπερ πλάτων τε ἐν τοῖς νόμοις δηλοῖ, καὶ ἔφορος ἐν τῇ εὐρώπῃ τῆς πολιτείας ἀναγέγραφεν. ὕστερον δὲ πρὸς τὸ χεῖρον μετέβαλεν ἐπὶ πλεῖστον. μετὰ γὰρ τοὺς τυρρηνοὺς, οἳ μάλιστα ἐδήωσαν τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, οὗτοι εἰσὶν οἱ διαδεξάμενοι τὰ λῃστήρια. τούτους δ' ἐπόρθησαν ὕστερον οἱ κίλικες. κατέλυσαν δὲ πάντας ῥωμαῖοι τήν τε κρήτην ἐκπολεμήσαντες, καὶ τὰ πειρατικὰ τῶν κιλίκων φρούρια. νῦν δὲ κνωσὸς, καὶ ῥωμαίων ἀποικίαν ἔχει. περὶ μὲν οὖν κνωσοῦ ταῦτα, πόλεως οὐκ ἀλλοτρίας ἡμῖν. διὰ δὲ τἀνθρώπινα, καὶ τὰς ἐν τοῖς μεταβολὰς, καὶ συντυχίας, ἐκ λελειμμένων συμβολαίων, καὶ τῶν ὑπαρξάντων ἡμῖν πρὸς τὴν πόλιν, δορύλαος γὰρ ἦν, ἀνὴρ τακτικὸς τῶν μιθριδάτου τοῦ εὐεργέτου φίλων, οὗτος διὰ τὴν ἐν τοῖς πολεμικοῖς ἐμπειρίαν ξενολογεῖν ἀποδειχθεὶς, πολὺς ἦν ἔν τε τῇ ἑλλάδι καὶ τῇ θρᾴκῃ, πολὺς δὲ, καὶ τοῖς παρὰ τῆς κρήτης ἰοῦσιν. οὔπω τὴν νῆσον ῥωμαίων ἐχόντων. συχνοῦ δὲ ὄντος ἐν αὐτῇ τοῦ μισθοφορικοῦ στρατιωτικοῦ πλήθους. ἐξ οὗ, καὶ τὰ λῃστήρια πληροῦσθαι συνέβαινεν. ἐπιδημοῦντος δὲ τοῦ δορυλάου κατὰ τὴν τύχην, ἐνέστη πόλεμος τοῖς κνωσίοις, πρὸς τοὺς γορτυνίους, αἱρεθεὶς δὲ στρατηγὸς, καὶ κατορθώσας διὰ ταχέων, ἤρατο τιμὰς τὰς μεγίστας. καὶ ἐπειδὴ μικρὸν ὕστερον ἐξ ἐπιβουλῆς δολοφονηθέντα ἔγνω τὸν εὐεργέτην ὑπὸ τῶν φίλων, ἐν σινώπῃ, τὴν διαδοχὴν δὲ εἰς γυναῖκας, καὶ τὰ παιδία ἥκουσαν, ἀπογνοὺς τῶν ἐκεῖ, κατέμεινεν ἐν τῇ κνωσῷ. τεκνοποιεῖται δ' ἐκ μακέτιδος γυναικὸς στερόπης τοὔνομα, δύο μὲν υἱεῖς, λαγέταν, καὶ στρατάρχαν. ὧν τὸν στρατάρχαν ἐσχα-

τόγηρων,

τὸ γηρᾶν, καὶ ἡμεῖς ἤδη εἴδομεν. θυγατέρα δὲ μίαν. δυοῖν δὲ ὄντων υἱῶν τοῦ εὐεργέτου, διεδέξατο τὴν βασι-
λείαν μαθειδάτης, ὁ προσαγορευθεὶς εὐπάτωρ, ἕνδεκα ἔτη γεγονώς. τούτῳ σύντροφος ὑπῆρξεν ὁ τοῦ φι-
λεταίρου δορύλαος. ἦν δ᾽ ὁ φιλέταιρος ἀδελφὸς τοῦ τακτικοῦ δορυλάου. ἀνδρωθεὶς δὲ ὁ βασιλεὺς ἐπὶ το-
σοῦτο ἠρκεῖτο τῇ συντροφίᾳ τῇ πρὸς τὸν δορύλαον, ὥστ᾽ οὐκ ἐκεῖνον μόνον ἦγεν εἰς τιμὰς τὰς μεγίστας,
ἀλλὰ καὶ τῶν συγγενῶν ἐπεμελεῖτο. καὶ τοὺς ἐν κνωσσῷ μετεπέμπετο. ἦσαν δ᾽ οἱ περὶ λαγέταν. τοῦ μὲν πα-
τρὸς ἤδη τετελευτηκότος αὐτοὶ δ᾽ ἠνδρωμένοι. καὶ ἧκον ἀφέντες τὰ ἐν κνωσσῷ. τοῦ δὲ λαγέτου θυγάτηρ
ἦν ἡ μήτηρ τῆς ἐμῆς μητρός. εὐτυχοῦντος μὲν δὴ ἐκείνου, συνευτυχεῖν καὶ τούτοις συνέβαινε. καταλυθέν-
τος δὲ, ἐφωράθη γὰρ ἀφιστὰς τοῖς ῥωμαίοις τὴν βασιλείαν, ἐφ᾽ ᾧ αὐτὸς εἰς τὴν ἀρχὴν καταστήσεσθαι, συγ-
κατελύθη, καὶ τὰ τούτων καὶ ἐταπεινώθησαν. ὠλιγωρήθη δὲ καὶ τὰ περὶ τοὺς κνωσσίους συμβόλαια, καὶ αὐ-
τοὺς μυρίας μεταβολὰς δεξαμένους. ἀλλὰ γὰρ ὁ περὶ μὲν τῆς κνωσσοῦ λόγος τοιοῦτος. μετὰ δὲ ταύτην δευ-
τερεύσαι δοκεῖ κατὰ τὴν δύναμιν, ἡ τῶν γορτυνίων πόλις. συμπράττουσαί τε γὰρ ἀλλήλαις, ἅπαντας
ὑπηκόους εἶχον αὗται τοὺς ἄλλους. στασιάσασαί τε διέστησαν κατὰ τὴν νῆσον. προσθήκη δ᾽ ἦν ἡ κυδωνία μεγίστη
ὁποτέροις προσγένοιτο. κεῖται δ᾽ ἐν πεδίῳ καὶ ἡ τῶν γορτυνίων πόλις. τὸ παλαιὸν μὲν ἴσως τετειχισμένη,
καθάπερ καὶ ὅμηρος εἴρηκε. γόρτυνά τε τειχιόεσσαν. ὕστερον δ᾽ ἀποβαλοῦσα τὸ τεῖχος ἐκ θεμελίων, καὶ πάν-
τα τὸν χρόνον μείνασα ἀτείχιστος. καὶ γὰρ ὁ φιλοπάτωρ πτολεμαῖος ἀρξάμενος τειχίζειν, ὅσον ἐπὶ ὀγδοή-
κοντα σταδίους παρῆλθε μόνον. ἀξιόλογον δ᾽ οὖν ὑπεπλήρου ποτὲ κύκλον ἡ οἴκησις, ὅσον πεντήκοντα στα-
δίων. διέχει δὲ τῆς λιβυκῆς θαλάττης καὶ λεβήνος τοῦ ἐμπορείου αὐτῆς, ἐνενήκοντα. ἔχει δέ τι καὶ ἄλλο ἐπί-
νειον τὸ μέταλλον. διέχει δ᾽ αὐτῆς ἑκατὸν τριάκοντα. διαρρεῖ δ᾽ αὐτὴν ὅλην ὁ ληθαῖος ποταμός. ἐκ δὲ λε-
βήνος ἦν λευκοκόμας τε καὶ ὁ ἐραστὴς αὐτοῦ εὐξύνθετος. οὓς ἱστορεῖ θεόφραστος ἐν τῷ περὶ ἔρωτος λόγῳ. ἄθλων
ὧν ὁ λευκοκόμας τῷ εὐξυνθέτῳ προσέταξεν ἕνα φησὶν εἶναι τοῦτον, τὸν ἐν πραίσῳ κύνα ἀναγαγεῖν αὐτῷ.
ὅμοροι δ᾽ εἰσὶν αὐτοῖς οἱ πράσιοι. τῆς μὲν θαλάττης, ὁ γόρτυνος δὲ διέχοντες ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα μετα-
ξύ. εἴρηται δ᾽ ὅτι τῶν ἐτεοκρήτων ὑπῆρχεν ἡ πρᾶσος. καὶ ὅτι ἐνταῦθα τὸ τοῦ δικταίου διὸς ἱερόν. καὶ γὰρ ἡ
δίκτη πλησίον. οὐχ ὡς ἄρατος σχεδὸν ὄρεος ἰδαίου. καὶ γὰρ χιλίους ἡ δίκτη τῆς ἴδης ἀπέχει, πρὸς ἀνίσχον-
τα ἥλιον ἀπ᾽ αὐτῆς κειμένη. τοῦ δὲ σαμωνίου ἑκατόν. μεταξὺ δὲ τοῦ σαμωνίου καὶ τῆς χερρονήσου ἡ πρᾶ-
σος ἵδρυτο. ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἑξήκοντα σταδίοις διέχοντες, τῆς γορτύνης δὲ ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα.
κατέσκαψαν δ᾽ ἱεραπύτνιοι. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ τοῦ καλλιμάχου λέγειν φασὶν, ὡς ἡ βριτόμαρτυς φεύγουσα τὴν
μίνω βίαν, ἀπὸ τῆς δίκτης ἄλοιτο εἰς ἁλιέα δίκτυα. καὶ διὰ τοῦτο αὐτὴ μὲν δίκτυννα ὑπὸ τῶν κυδωνίων προ-
σαγορευθείη. δίκτη δὲ τὸ ὄρος. οὐδὲ γὰρ ὅλως ἐκ γειτόνων ἐστὶ τοῖς τόποις τούτοις ἡ κυδωνία. πρὸς δὲ τοῖς ἑ-
σπερίοις κεῖται τῆς νήσου πέρασι. τῆς μέντοι κυδωνίας ὄρος ἐστὶ τίτυρος. ἐν ᾧ ἱερόν ἐστιν, οὐ δικταῖον
ἀλλὰ δικτύνναιον. κυδωνία δ᾽ ἐπὶ θαλάττῃ μὲν ἵδρυται. βλέπουσα πρὸς τὴν λακωνικήν. διέχει δ᾽ ἑκατέ-
ρας τὸ ἴσον τῆς τε κνωσσοῦ καὶ τῆς γορτύνος. οἷον ὀκτακοσίους σταδίους. ἀπτέρας δὲ ὀγδοήκοντα. τῆς ταύ-
της δὲ θαλάττης τετταράκοντα. ἀπτέρας δ᾽ ἐπίνειόν ἐστι κίσαμος. πρὸς ἑσπέραν δ᾽ ὅμοροι τοῖς κυδω-
νιάταις πολυρρήνιοι. παρ᾽ οἷς ἐστὶ τὸ τῆς δικτύννης ἱερόν. ἀπέχουσι δὲ τῆς θαλάττης, ὡς τριάκοντα
σταδίους. φαλασάρνης δὲ ἑξήκοντα. κωμηδὸν δ᾽ ᾤκουν πρότερον. εἶτ᾽ ἀχαιοὶ καὶ λάκωνες συνῴκησαν. τει-
χίσαντες ἐρυμνὸν χωρίον βλέπον πρὸς μεσημβρίαν. τῶν δ᾽ ὑπὸ μίνω συνῳκισμένων τριῶν, τὴν λοι-
πήν. φαιστὸς δ᾽ ἦν αὐτὴ ἣν κατέσκαψαν γορτύνιοι, τῆς μὲν γόρτυνος διέχουσαν ἑξήκοντα. τῆς δὲ θαλάττης
εἴκοσι. τοῦ δὲ μετάλλου τοῦ ἐπινείου, τετταράκοντα, τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν οἱ κατασκάψαντες. γορτυνίων
δ᾽ ἐστὶ καὶ τὸ ῥύτιον σὺν τῇ φαιστῷ. φαιστόν τε ῥύτιόν τε. ἐκ δὲ τῆς φαιστοῦ τὸν τοὺς καθαρμοὺς ποιήσαντα διὰ
τῶν ἐπῶν, ἐπιμενίδην φασὶν εἶναι. καὶ ὁ λισσὴν δὲ τῆς φαιστίας. λύκτου δὲ ἧς ἐμνήσθημεν καὶ πρότερον, ἐπί-
νειόν ἐστιν ἡ λεγομένη χερρόνησος. ἐν ᾗ τὸ τῆς βριτομάρτεως ἱερόν. αἱ δὲ συγκαταλεχθεῖσαι πόλεις οὐκέτ᾽ εἰ-
σὶ, μίλητός τε καὶ λύκαστος. τὴν δὲ χώραν, τὴν μὲν, ἐνείμαντο λύκτιοι. τὴν δὲ κνώσσιοι. κατασκάψαν-
τες τὴν πόλιν. τοῦ δὲ ποιητοῦ. τὸ μὲν, ἑκατόμπολιν λέγοντος τὴν κρήτην. τὸ δὲ, ἐνενηκοντάπολιν, ἔφορος
μὲν ὕστερον ἐπικτισθῆναι τὰς δέκα φησὶ μετὰ τὰ τρωϊκὰ ὑπὸ τῶν ἀλθαιμένει τῷ ἀργείῳ συνακολουθησάν-
των, δωριέων. τὸν μὲν οὖν ὀδυσσέα λέγειν ἐνενηκοντάπολιν ὀνομάσαι. οὗτος μὲν οὖν πιθανός ἐστιν ὁ λόγος.
ἄλλοι δ᾽ ὑπὸ τῶν ἰδομενέως ἐχθρῶν κατασκαφῆναι φασὶ τὰς δέκα. ἀλλ᾽ οὔτε μὲν τὰ τρωϊκά φησιν ὁ ποιη-
τὴς ἑκατοντάπολιν ὑπάρξαι τὴν κρήτην. ἀλλὰ μᾶλλον κατ᾽ αὐτόν. ἐκ γὰρ τοῦ ἰδίου προσώπου λέγει. εἰ δ᾽
ἐκ τῶν τότε ὄντων τινὸς ἦν ὁ λόγος καθάπερ ἐν ὀδυσσείᾳ ἐνενηκοντάπολιν φάσκει, καλῶς ἔχει οὕτω
δέχεσθαι, ὅτι συγχωρήσαιμεν τοῦτό γε, καὶ ὁ ἑξῆς λόγος σῴζοιτ᾽ ἄν. οὔτε γὰρ κατὰ τὴν στρατείαν, οὔτε κα-
τὰ τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν τοῦ ἰδομενέως, ὡς εἰκός ἐστιν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ τὰς πόλεις ἠφανίσθαι
» ταύτας. ὁ γὰρ ποιητής φησι. Πάντας δ᾽ ἰδομενεὺς κρήτην εἰσήγαγ᾽ ἑταίρους,
» Οἳ φύγον ἐκ πολέμου. πόντος δέ οἱ οὔτιν᾽ ἀπηύρα. ὥς τε καὶ τούτου τοῦ πάθους ἐμέμνητ᾽ ἄν. οὐ γὰρ δή-
που ὀδυσσεὺς μὲν ἔγνω τὸν ἀφανισμὸν τῶν πόλεων ὁ μηδενὶ συμμίξας τῶν ἑλλήνων μήτε κατὰ τὴν πλά-
νην, μήθ᾽ ὕστερον. ὁ δὲ, καὶ συστρατεύσας τῷ ἰδομενεῖ, καὶ συνανασωθεὶς οὐκ ἔγνω τὰ συμβάντα οἴκοι, αὐτῷ κα-
τὰ τὴν στρατείαν, οὔτε κατὰ τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν. ἀλλὰ μὴν οὐδὲ τὴν μετὰ τὴν ἐπάνοδον. εἰ γὰρ μετὰ πάν-

των ἐσθῆτι τῶν ἑταίρων, ἰσχυρὸς ἐπανῆλθεν· ὡς τοῦ οὐκ ἔμελλον ἰσχύσειν οἱ ἐχθροὶ τοσοῦτον, ὅσον δίκῃ ἀφαιρεῖσθαι πόλεις αὐτοῖς. τῆς μὲν οὖν χώρας τῶν κρητῶν, τοιαύτη τίς ἡ παλαιολογία. τῆς δὲ πολιτείας ἧς ἔφορος ἀνέγραψε, τὰ κυριώτατα ἐπιδραμεῖν ἀποχρώντως ἂν ἔχοι. δοκεῖ δέ φησιν ὁ νομοθέτης μέγιστον ὑποθέσθαι ταῖς πόλεσιν ἀγαθόν, τὴν ἐλευθερίαν. μόνην γὰρ ταύτην ἴδια ποιεῖν τῶν κτησαμένων τὰ ἀγαθά. τὰ δ' ἐν δουλείᾳ τῶν ἀρχόντων, ἀλλ' οὐχὶ τῶν ἀρχομένων εἶναι. τοῖς δ' ἔχουσι ταύτην φυλακῆς δεῖν. τὴν μὲν οὖν ὁμόνοιαν διχοστασίας αἰρουμένης ἀπαντᾶν. ἣ γίνεται διὰ πλεονεξίαν, καὶ τρυφήν. σωφρόνως γὰρ καὶ λιτῶς ζῶσιν ἅπασιν, οὔτε φθόνον, οὔτε μῖσος, οὔθ' ὕβριν ἀπαντᾶν πρὸς τοὺς ὁμοίους. διόπερ τοὺς μὲν παῖδας εἰς τὰς ὀνομαζομένας ἀγέλας κελεῦσαι φοιτᾶν. τοὺς δὲ τελείους, ἐν τοῖς συσσιτίοις ἃ καλοῦσιν ἀνδρεῖα συσσιτεῖν. ὅπως τῶν ἴσων μετάσχοιεν τοῖς εὐπόροις οἱ πενέστεροι, δημοσίᾳ τρεφόμενοι. πρὸς δὲ τὸ μὴ δειλίαν ἀλλ' ἀνδρείαν κρατεῖν ἐκ παίδων, ὅπλοις, καὶ πόνοις συντρέφειν. ὥστε καταφρονεῖν καύματος, καὶ ψύχους, καὶ τραχείας ὁδοῦ, καὶ ἀνάντους, καὶ πληγῶν τῶν ἐν γυμνασίοις καὶ μάχαις ταῖς κατὰ σύνταγμα, ἀσκεῖν δὲ καὶ τοξικῇ, καὶ ἐνοπλίῳ ὀρχήσει ἣν καταδεῖξαι κουρῆτα πρῶτον. ὕστερον δὲ καὶ συντάξαντα τὴν κληθεῖσαν ὑπ' αὐτοῦ πυρρίχην. ὥστε μηδὲ τὴν παιδιὰν εἶναι ἄμοιρον τῶν πρὸς τὸν πόλεμον χρησίμων, ὡς δ' αὕτως καὶ τοῖς ῥυθμοῖς κρητικοῖς χρῆσθαι κατὰ τὰς ᾠδὰς συντονωτάτοις οὖσιν. οὓς θάλητα ἀνευρεῖν. ᾧ καὶ τοὺς παιᾶνας καὶ τὰς ἄλλας τὰς ἐπιχωρίους ᾠδὰς ἀνατιθέασι. καὶ πολλὰ τῶν νομίμων, καὶ ἐσθῆτι δέ, καὶ ὑποδέσει πολεμικῇ χρῆσθαι, καὶ τῶν δώρων τιμιώτατα αὐτοῖς εἶναι τὰ ὅπλα. λέγεσθαι ὑπό τινων ὡς λακωνικὰ εἴη τὰ πολλὰ τῶν νομιζομένων κρητικῶν. τὸ δ' ἀληθὲς εὑρῆσθαι μὲν ὑπ' ἐκείνου, ἠκριβωκέναι δὲ τοὺς σπαρτιάτας, τοὺς δὲ κρῆτας ὀλιγωρῆσαι κακωθεισῶν τῶν πόλεων. καὶ μάλιστα τῶν κνωσσίων τῶν πολεμικῶν. εἶναι δέ τινα τῶν νομίμων, παρὰ λυκτίοις καὶ γορτυνίοις, καὶ ἄλλοις τισὶ πολιχνίοις μᾶλλον ἢ παρ' ἐκείνοις. καὶ δὴ καὶ λυκτίων νόμιμα ποιεῖσθαι μαρτύρια, τοὺς τὰ λακωνικὰ πρεσβύτερα ἀποφαίνοντας. ἀποίκους γὰρ ὄντας φυλάττειν τὰ τῆς μητροπόλεως ἔθη, ἐπεὶ ἄλλως γε εὔηθες εἶναι τοὺς βέλτιον συνεστῶτας, καὶ πολιτευομένους τῶν χειρόνων ζηλωτὰς ἀποφαίνειν. οὐκ εὖ δὲ ταῦτα λέγεσθαι. οὔτε γὰρ ἐκ τῶν νῦν καθεστηκότων τὰ παλαιὰ τεκμηριοῦσθαι δεῖν, εἰς τἀναντία ἑκατέρων μεταπεπτωκότων. καὶ γὰρ ναυκρατεῖν πρότερον τοὺς κρῆτας. ὥστε καὶ παροιμιάζεσθαι πρὸς τοὺς προσποιουμένους μὴ εἰδέναι, ὁ κρὴς

» ἀγνοεῖ τὴν θάλατταν. νῦν δ' ἀποβεβληκέναι τὸ ναυτικόν. ὅτι ἄποικοί τινες ἐγένοντο τῶν πόλεων τῶν ἐν τῇ κρήτῃ σπαρτιατῶν, ἐν τοῖς ἐκείνων νομίμοις διαμένειν ἐπαναγκάζεσθαι. πολλὰς γοῦν τῶν ἀποικίδων μὴ φυλάττειν τὰ πάτρια. πολλὰς δὲ καὶ τῶν μὴ ἀποικίδων ἐν κρήτῃ τὰ αὐτὰ ἔχειν τοῖς ἀποίκοις ἔθη. τόν τε σπαρτιάτην νομοθέτην λυκοῦργον, πέντε γενεαῖς νεώτερον ἀλθαιμένους εἶναι τοῦ στείλαντος τὴν εἰς κρήτην ἀποικίαν. τὸν μὲν γὰρ ἱστορεῖσθαι κίσσου παῖδα τοῦ τὸ ἄργος κτίσαντος περὶ τὸν αὐτὸν χρόνον, ἡνίκα προκλῆς τὴν σπάρτην συνῴκιζε. λυκοῦργον δ' ὁμολογεῖσθαι παρὰ πάντων, ἕκτον ἀπὸ προκλέους γεγονέναι. τὰ δὲ μεμιμημένα μὴ εἶναι πρότερα τῶν παραδειγμάτων, μηδὲ τὰ νεώτερα τῶν πρεσβυτέρων. τήν τε ὄρχησιν τὴν παρὰ τοῖς λακεδαιμονίοις ἐπιχωριάζουσαν, καὶ τοὺς ῥυθμούς, καὶ παιᾶνας τοὺς κατὰ νόμον ᾀδομένους, καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν νομίμων κρητικὰ καλεῖσθαι παρ' αὐτοῖς, ὡς ἂν ἐκεῖθεν ὁρμώμενα. τῶν δ' ἀρχείων τὰ μὲν καὶ τὰς διοικήσεις ἔχειν τὰς αὐτὰς ἐπωνυμίας. ὥσπερ, καὶ τὴν τῶν γερόντων ἀρχήν, καὶ τὴν τῶν ἱππέων. πλὴν ὅτι τοὺς ἐν κρήτῃ ἱππέας, καὶ ἵππους κεκτῆσθαι συμβέβηκεν. ἐξ οὗ τεκμαίρονται πρεσβυτέραν εἶναι τὴν ἐν κρήτῃ ἱππέων τὴν ἀρχήν. σώζειν γὰρ τὴν ἐτυμότητα τῆς προσηγορίας. τοὺς δὲ μὴ ἱπποκρατεῖν. τοὺς ἐφόρους δὲ τὰ αὐτὰ τοῖς ἐν κρήτῃ κόσμοις διοικοῦντας ἑτέρως ὠνομάσθαι. τὰ δὲ συσσίτια ἀνδρεῖα, παρὰ μὲν τοῖς κρησὶν ἔτι, καὶ νῦν καλεῖσθαι, παρὰ δὲ τοῖς σπαρτιάταις μὴ διαμένειν καλούμενα πρότερον. παρ' ἀλκμᾶνι δὲ οὕτω κεῖσθαι

» φοίναις δέ, καὶ ἐν θιάσοισιν ἀνδρείων παρὰ δαιτυμόνεσσι

» Γρέπει παιᾶνα κατάρχειν ἀπὸ τῶν κρητῶν.

Ὡς καὶ παρ' αὐτοὺς ἀφίκοιτο λυκοῦργος, κατὰ τοιαύτην αἰτίαν. ἀδελφὸς ἦν πρεσβύτερος τοῦ λυκούργου πολυδέκτης. οὗτος τελευτῶν ἔγκυον κατέλιπε τὴν γυναῖκα. τέως μὲν οὖν ἐβασίλευεν ὁ λυκοῦργος ἀντὶ τοῦ ἀδελφοῦ. γενομένου δὲ παιδός, ἐπετρόπευεν ἐκεῖνον, εἰς ὃν ἡ ἀρχὴ καθήκουσα ἐτύγχανε. λοιδορούμενος δή τις αὐτῷ, σαφῶς εἶπεν εἰδέναι ὅτι βασιλεύσοι. λαβὼν δ' ὑπόνοιαν ἐκεῖνος ὡς ἐκ τούτου τοῦ λόγου διαβάλλοιτο ἐπιβουλὴ ἐξ αὐτοῦ τοῦ παιδός, δείσας μὴ ἐκ τύχης ἀποθανόντος αἰτίαν αὐτὸς ἔχοι παρὰ τῶν ἐχθρῶν, ἀπῆρεν εἰς κρήτην. ταύτην μὲν δὴ λέγεσθαι τῆς ἀποδημίας αἰτίαν. ἐλθόντα δὲ πλησιάσαι θάλητι μελοποιῷ ἀνδρὶ καὶ νομοθετικῷ. ἱστορήσαντα δὲ παρ' αὐτοῦ τὸν τρόπον, ὃν ῥαδάμανθύς τε πρότερον, καὶ ὕστερον μίνως, ὡς παρὰ τοῦ διὸς τοὺς νόμους ἐκφέροι εἰς τοὺς ἀνθρώπους. γενόμενον δέ, καὶ ἐν αἰγύπτῳ, καὶ καταμαθόντα καὶ τὰ ἐκεῖ νόμιμα. ἐντυχόντα δ' ὥς φασί τινες, καὶ ὁμήρῳ διατρίβοντι ἐν χίῳ, κατᾶραι πάλιν εἰς τὴν οἰκείαν. καταλαβεῖν δέ, καὶ τὸν τοῦ ἀδελφοῦ υἱὸν τοῦ πολυδέκτου χάριλλον βασιλεύοντα. εἶθ' ὁρμῆσαι διαθεῖναι τοὺς νόμους, φοιτῶντα ὡς τὸν θεὸν τὸν ἐν δελφοῖς, κἀκεῖθεν κομίζοντα τὰ προστάγματα, καθάπερ οἱ περὶ μίνω ἐκ τοῦ ἄντρου τοῦ διὸς παραπλήσια ἐκείνοις, τὰ πλείω τῶν κρητικῶν. τὰ κυριώτατα τῶν καθ' ἕκαστα τοιαῦτα εἴρηκε. γαμεῖν μὲν ἅμα πάντες ἀναγκάζονται παρ' αὐτοῖς. οἱ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἐκ τῆς τῶν παίδων,

ἀγέλας ἐκ κοινῆς· οὐκ εὐθὺς δ' ἄγονται παρ' ἑαυτοῖς τὰς γαμηθείσας παῖδας, ἀλλ' ἐπὰν ἤδη ἱκαναὶ ὦσι διοικεῖν τὰ περὶ τοὺς οἴκους. φερνὴ δ' ἐστίν, ἂν ἀδελφοὶ ὦσι, τὸ ἥμισυ τῆς τοῦ ἀδελφοῦ μερίδος. παῖδας δὲ γράμματά τε μανθάνειν, καὶ τὰς ἐκ τῶν νόμων ᾠδὰς καί τινα εἴδη τῆς μουσικῆς. τοὺς μὲν οὖν ἔτι νεωτέρους εἰς τὰ συσσίτια ἄγεσθαι τὰ ἀνδρεῖα. χαμαὶ δὲ καθημένους διαιτᾶσθαι μετ' ἀλλήλων ἐν φαύλοις τριβωνίοις, καὶ χειμῶνος καὶ θέρους τοῖς αὐτοῖς. διακονεῖν τε καὶ ἑαυτοῖς, καὶ τοῖς ἀνδράσι. συμβάλλουσι δ' εἰς μάχην καὶ οἱ ἐκ τοῦ αὐτοῦ συσσιτίου πρὸς ἀλλήλους, καὶ πρὸς ἕτερα συσσίτια. καθ' ἕκαστον δὲ ἀνδρεῖον ἐφέστηκε παιδονόμος. οἱ δὲ μείζους εἰς τὰς ἀγέλας ἄγονται. τὰς δ' ἀγέλας συνάγουσιν οἱ ἐπιφανέστατοι τῶν παίδων, καὶ δυνατώτατοι. ἕκαστος, ὅσους πλείστους οἷός τέ ἐστιν ἀθροίζων. ἑκάστης δὲ ἀγέλης ἄρχων ἐστὶν ὡς τὸ πολύ, ὁ πατὴρ τοῦ συναγαγόντος, κύριος ὢν ἐξάγειν ἐπὶ θήραν, καὶ δρόμους, τὸν δ' ἀπειθοῦντα κολάζειν. τρέφονται δὲ δημοσίᾳ. τακταῖς δέ τισιν ἡμέραις ἀγέλη πρὸς ἀγέλην συμβάλλει μετ' αὐλοῦ, καὶ λύρας εἰς μάχην ἐν ῥυθμῷ, ὥσπερ, καὶ ἐν τοῖς πολεμικοῖς εἰώθασιν. ἐκφέρουσι δὲ καὶ τὰς πληγὰς τὰς μὲν, διὰ χειρός. τὰς δέ, καὶ δι' ὅπλων σιδηρῶν. ἴδιον δ' αὐτοῖς τὸ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμον. οὐ γὰρ πειθοῖ κατεργάζονται τοὺς ἐρωμένους. ἀλλ' ἁρπαγῇ. προλέγει δὲ τοῖς φίλοις πρὸ τριῶν ἡμερῶν ἢ πλειόνων ὁ ἐραστής, ὅτι μέλλοι τὴν ἁρπαγὴν ποιεῖσθαι. τοῖς δ' ἀποκρύπτειν μὲν τὸν παῖδα, ἢ μὴ ἐᾶν πορεύεσθαι τὴν τεταγμένην ὁδὸν, τῶν αἰσχίστων ἐστίν, ὡς ἐξομολογουμένοις ὅτι ἀνάξιος, ὁ παῖς εἴη τοιούτου ἐραστοῦ τυγχάνειν. συνιόντες δ' ἂν μὲν τῶν ἴσων ἢ τῶν ὑπερεχόντων τις τῷ παιδὶ τιμῇ, καὶ τοῖς ἄλλοις ὁ ἁρπάζων, ἐπιδιώκοντες ἀνθήψαντο μόνον μετρίως, τὸ νόμιμον ἐκπληροῦντες. τἆλλα δ' ἐπιτρέπουσιν ἄγειν χαίροντες. ἂν δ' ἀνάξιος, ἀφαιροῦνται. πέρας δὲ τῆς ἐπιδιώξεώς ἐστιν ἕως ἂν ἀναχθῇ ὁ παῖς εἰς τὸ τοῦ ἁρπάσαντος ἀνδρεῖον. ἐράσμιον δὲ νομίζουσιν, οὐ τὸν κάλλει διαφέροντα, ἀλλὰ τὸν ἀνδρείᾳ, καὶ κοσμιότητι. καὶ δωρησάμενος ἀπάγει τὸν παῖδα τῆς χώρας εἰς ὃν βούλεται τόπον. ἐπακολουθοῦσι δὲ τῇ ἁρπαγῇ οἱ παραγενόμενοι. ἑστιαθέντες δὲ καὶ συνθηρεύσαντες δίμηνον, οὐ γὰρ ἔξεστι πλείω χρόνον κατέχειν τὸν παῖδα εἰς τὴν πόλιν καταβαίνουσιν. ἀφίεται δ' ὁ παῖς δῶρα λαβὼν, στολὴν πολεμικήν, καὶ βοῦν καὶ ποτήριον. ταῦτα μὲν τὰ κατὰ νόμον δῶρα. καὶ ἄλλα πλείω πολυτελῆ. ὥστε συνερανίζειν τοὺς φίλους διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀναλωμάτων. τὸν μὲν οὖν βοῦν θύει τῷ Διί, καὶ ἑστιᾷ τοὺς συγκαταβαίνοντας. εἶτ' ἀποφαίνεται περὶ τῆς πρὸς τὸν ἐραστὴν ὁμιλίας. εἴτ' ἀσμενίζων τετύχηκεν, εἴτε μή. τοῦ νόμου τοῦτ' ἐπιτρέψαντος, ἵν' εἴ τις αὐτῷ βία προσενήνεκται κατὰ τὴν ἁρπαγήν, ἐνταῦθα παρῇ τιμωρεῖν ἑαυτῷ, καὶ ἀπαλλάττεσθαι. τοῖς δὲ καλοῖς τὴν ἰδέαν, καὶ προγόνων ἐπιφανῶν, ἐραστῶν μὴ τυχεῖν, ὡς διὰ τὸν τρόπον τοῦτο παθοῦσιν. ἔχουσι δὲ τιμὰς οἱ παρασταθέντες. οὕτω γὰρ καλοῦσι τοὺς ἁρπαγέντας. ἔν τε γὰρ τοῖς δρόμοις, καὶ τοῖς χοροῖς ἔχουσι τὰς ἐντιμοτάτας χώρας. τῇ τε στολῇ κοσμεῖσθαι διαφερόντως ἐφίεται τῶν ἄλλων τῇ δοθείσῃ παρὰ τῶν ἐραστῶν. καὶ οὐ τότε μόνον. ἀλλὰ καὶ τέλειοι γενόμενοι διάσημον ἐσθῆτα φέρουσιν, ἀφ' ἧς γνωσθήσεται ἕκαστος κλεινὸς γενόμενος. τὸν μὲν γὰρ ἐρώμενον καλοῦσι κλεινόν. τὸν δ' ἐραστὴν φιλήτορα. ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμα. ἄρχοντας δὲ δέκα αἱροῦνται. περὶ δὲ τῶν μεγίστων, συμβούλοις χρῶνται τοῖς γέρουσι καλουμένοις. καθιστᾶσι δ' εἰς τοῦτο τὸ συνέδριον, οἱ τῆς τῶν κόσμων ἀρχῆς ἠξιωμένοι, καὶ τἆλλα δόκιμοι κρινόμενοι. ἀξίαν δ' ἀναγραφῆς τὴν τῶν Κρητῶν πολιτείαν ὑπέλαβον διά τε τὴν ἰδιότητα καὶ τὴν δόξαν. οὐ πολλὰ δὲ διαμένει τούτων τῶν νομίμων. ἀλλὰ τοῖς Ῥωμαίων διατάγμασι τὰ πλεῖστα διοικεῖται, καθάπερ, καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις ἐπαρχίαις συμβαίνει. περὶ δὲ τὴν Κρήτην εἰσὶ νῆσοι. Θήρα μὲν ἡ τῶν Κυρηναίων μητρόπολις, ἄποικος Λακεδαιμονίων. καὶ πλησίον ταύτης Ἀνάφη. ἐν ᾗ τὸ τοῦ Αἰγλήτου Ἀπόλλωνος ἱερόν. λέγει δὲ καὶ Καλλίμαχος τοτὲ μὲν οὕτως.

» Αἰγλήτην Ἀνάφην τε Λακωνίδι γείτονα Θήρᾳ
Τοτὲ δὲ τῆς Θήρας μνησθείς,
» Μήτηρ εὐίππου πατρίδος ἡμετέρης,

Ἔστι δὲ μακρὰ ἡ Θήρα διακοσίων οὖσα τὴν περίμετρον σταδίων. κειμένη δὲ κατὰ Δίαν νῆσον, τὴν πρὸς Ἡρακλείῳ τῷ Κνωσσίων. διέχει δὲ τῆς Κρήτης, εἰς ἑπτακοσίους σταδίους. πλησίον δ' αὐτῆς ἥ τε Ἀνάφη, καὶ Θηρασία. ταύτης δ' ἴσον ἑκάστη ἀπέχει νησίδιον Ἴος, ἐν ᾧ κηδευθῆναι φασί τινες τὸν ποιητὴν Ὅμηρον. ἀπὸ δὲ τῆς Ἴου πρὸς ἑσπέραν ἰόντι, Σίκινος, καὶ Λάγουσα, καὶ Φολέγανδρος, ἣν Ἄρατος σιδηρείην ὀνομάζει διὰ τὴν τραχύτητα. ἐγγὺς δὲ τούτων ἡ Κίμωλος. ὅθεν ἡ γῆ ἡ Κιμωλία. ἐνθένδε ἡ Σίφνος ἐν ὄψει ἐστίν. ἐφ' ᾗ λέγουσι Σίφνιον ἀστράγαλον διὰ τὴν εὐτέλειαν. ἔτι δ' ἐγγυτέρω καὶ τῆς Κιμώλου καὶ τῆς Κρήτης ἡ Μῆλος ἀξιολογωτέρα τούτων, διέχουσα τοῦ Ἑρμιονικοῦ ἀκρωτηρίου τοῦ Σκυλλαίου σταδίους ἑπτακοσίους. τοσούτους δὲ σχεδόν τι καὶ τοῦ Δικτυνναίου. Ἀθηναῖοι δέ ποτε πέμψαντες στρατείαν, ἡβηδὸν κατέσφαξαν τοὺς πλείστους. αὗται μὲν οὖν ἐν τῷ Κρητικῷ πελάγει. ἐν δὲ τῷ Αἰγαίῳ μᾶλλον, αὐτή τε ἡ Δῆλος, καὶ αἱ περὶ αὐτὴν Κυκλάδες. καὶ αἱ ταύταις προσκείμεναι Σποράδες. ὧν εἰσί, καὶ αἱ λεχθεῖσαι περὶ τὴν Κρήτην. ἡ μὲν οὖν Δῆλος ἐν πεδίῳ κειμένην ἔχει τὴν πόλιν, καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, καὶ τὸ Λητῷον. ὑπέρκειται δὲ τῆς πόλεως ὄρος ὑψηλὸν ὁ Κύνθος καὶ τραχύ. ποταμὸς δὲ διαρρεῖ τὴν νῆσον Ἰνωπός, οὐ μέγας, καὶ γὰρ ἡ νῆσος μικρά. τετίμηται δὲ ἐκ παλαιοῦ διὰ τοὺς θεοὺς ἀπὸ τῶν ἡρωικῶν χρόνων ἐξαρμένη. μυθεύεται γ' ἐνταῦθα ἡ Λητὼ τὰς ὠδῖνας ἀποθέσθαι τὴν τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Ἀρτέμιδος. ἦν γὰρ τὸ πάροιθεν, οὐ φορητά φησιν ὁ Πίνδαρος.

Κύμασί τε παντοδαπῶν ἀνέμων ῥιπαῖσιν
» Ἀλλὰ καὶ ὁ γόνος ὁπότ' ὀδύναισι θείαις ἀγχιτόκοις ἐπιβαίνειν,

» Δὴ τὸ τέταρτον ἔρχεται πρεμνῶν ἀπ' ὀρούσεν χθονίων.
» Αἳ δ' ἐπὶ κρανάῃ ὀρθὸν πέτρα ἀδαμαντοπέδιλοι κίονες.
» Ἔνθα τέκοις εὐδαίμον' ἐπόψατο γέννας. Ἔνδοξον δ' ἐποίησεν αὐτὴν, οὐ περιοικίδες νῆσοι καλού-
μεναι κυκλάδες. καὶ τὰ τιμὴν πέμπουσαι δημοσίᾳ, θεωρούς τε, καὶ θυσίας, καὶ χορὸς παρθένων. πανη-
γύρεις τε ἐν αὐτῇ συνάγουσαι μεγάλας. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν δώδεκα λέγεται προσηγόνευτο, καὶ πλείους
ἀρτεμίδωρος δ' οὖν ἐξαριθμεῖται περὶ τῆς ἑλένης εἰπών. ὅτι ἀπὸ θορίκου μέχρι σουνίου, παράκειται μάκρα
σταδίων ὅσον ἑξήκοντα τὸ μῆκος ἀπὸ ταύτης γάρ φησιν, αἱ καλούμεναι κυκλάδες εἰσίν. ὀνομάζει δὲ
κέω τὴν ἐγγυτάτω τῇ ἑλένῃ. καὶ μετὰ ταύτην κύθνον, καὶ σέριφον, καὶ μῆλον καὶ σίφνον, καὶ κίμωλον
καὶ πρεπέσινθον, καὶ ὠλίαρον. καὶ πρὸς ταύταις πάρον νάξον. σύρον μύκωνον. τῆνον. ἄνδρον. γύαρον.
τὰς μὲν οὖν ἄλλας τῶν δώδεκα νομίζω. τὴν δὲ πρεπέσινθον, καὶ ὠλύαρον, καὶ γύαρον, ἧττον. ὧν τῇ γυά-
ρῳ προσορμισθεὶς, ἔγνων κώμιον ὑπὸ ἁλιέων συνοικούμενον. ἀπαίροντες δὲ ἐδεξάμεθα πρεσβευτὴν
ἐνθένδε. ὡς καίσαρα προκεχειρισμένον τῶν ἁλιέων τινά. ἦν δ' ἐν κορίνθῳ καίσαρ βαδίζων ἐπὶ τὸν
θρίαμβον τὸν ἀκτιακὸν, συμπλέων δὴ ἔλεγε πρὸς τοὺς πυνθανομένους. ὅτι πρεσβεύοι περὶ κουφισμοῦ τοῦ
φόρου. τελεῖν γὰρ δραχμὰς ἑκατὸν πεντήκοντα. καὶ τὰς ἑκατὸν χαλεπῶς ἂν τελοῖεν, δηλοῖ δὲ τὰς ἀ-
πορίας αὐτῶν, καὶ ἄρατος ἐν τοῖς κατὰ λεπτὸν, ὦ λητοῖ.
» Συμμενέεις μὲν σιδηρείῃ φολεγάνδρῳ Δειλῇ ἢ γύαρον παρελεύσεαι αὐτίχ' ὁμοίην.
Τὴν μὲν οὖν δῆλον ἔνδοξον γενομένην οὕτως, ἔτι μᾶλλον ηὔξησε κατασκαφεῖσα ὑπὸ ῥωμαίων
κόρινθος. ἐκεῖσε γὰρ μετεχώρησαν οἱ ἔμποροι. καὶ τῆς ἀτελείας τοῦ ἱεροῦ προσκαλουμένης αὐτούς.
καὶ τῆς εὐκαιρίας τοῦ λιμένος. ἐν καλῷ γὰρ κεῖται τοῖς ἐκ τῆς ἰταλίας, καὶ τῆς ἑλλάδος εἰς τὴν
ἀσίαν πλέουσιν ἥ τε πανήγυρις ἐμπορικόν τι πρᾶγμά ἐστι, καὶ συνήθεις ἦσαν αὐτῇ, καὶ ῥωμαῖοι τῶν
ἄλλων μάλιστα. καὶ ὅτε συνειστήκει ἡ κόρινθος ἀθηναῖοί τε λαβόντες τὴν νῆσον, καὶ τῶν ἱερῶν ἅμα καὶ
τῶν ἐμπορείων ἐπεμελοῦντο ἱκανῶς. ἐπελθόντες δ' οἱ τοῦ μιθριδάτου στρατηγοὶ, καὶ ἀποστήσας τύραν-
νος αὐτὴν διελυμήναντο πάντα, καὶ παρέλαβον ἔρημον τὴν νῆσον πάλιν οἱ ῥωμαῖοι, ἀναχωρήσαν-
τος εἰς τὴν οἰκείαν τοῦ βασιλέως. καὶ διετέλεσε μέχρι νῦν ἐνδεῶς πράττουσα. ἔχουσι δ' αὐτὴν ἀθηναῖοι.
ῥήνεια δ' ἔρημον νησίδιόν ἐστιν ἐν τέτρασι τῆς δήλου σταδίοις, ὅπου τὰ μνήματα τοῖς δηλίοις ἐστίν. οὐ γὰρ ἔ-
ξεστιν ἐν αὐτῇ τῇ δήλῳ θάπτειν. οὐδὲ καίειν νεκρὸν οὐκ ἔξεστιν δὲ οὐδὲ κύνα ἐν δήλῳ τρέφειν. ὠνομάζετο δὲ, καὶ ὀρ-
τυγία πρότερον. κέως δὲ τετράπολις μὲν ὑπῆρξε. λείπονται δὲ δύο ἥ τε ἰουλὶς καὶ ἡ καρθαία. εἰς ἃς
συνεπολίσθησαν αἱ λοιπαί. ἡ μὲν ποιήεσσα εἰς τὴν καρθαίαν. ἡ δὲ κορησσία εἰς τὴν ἰουλίδα. ἐκ δὲ τῆς ἰουλί-
δος. ὅ, τε σιμωνίδης ἦν ὁ μελοποιὸς, καὶ βακχυλίδης ἀδελφιδοῦς ἐκείνου. καὶ μετὰ ταῦτα ἐρασίστρα-
τος ὁ ἰατρός. καὶ τῶν ἐκ τοῦ περιπάτου φιλοσόφων ἀρίστων, ὁ τοῦ βορυσθενίτου βίωνος ζηλωτής. παρὰ
τούτοις δὲ δοκεῖ τεθῆναί ποτε νόμος. οὗ μέμνηται καὶ μένανδρος.
» Καλὸν τὸ κείων νόμιμόν ἐστι φανία
» ὁ μὴ δυνάμενος ζῆν καλῶς, οὐ ζῇ κακῶς
Προσέταττε γὰρ ὡς ἔοικεν ὁ νόμος τοὺς ὑπὲρ ἑξήκοντα ἔτη γεγονότας κωνειάζεσθαι, καὶ τοῦ διαρ-
κεῖν τοῖς ἄλλοις τὴν τροφήν. καὶ πολιορκουμένους δέ ποτε ὑπ' ἀθηναίων, ψηφίσασθαι φασὶ τοὺς πρε-
σβυτάτους ἐξ αὐτῶν ἀποθανεῖν ὁρισθέντος πλήθους ἐτῶν. τοὺς δὲ παύσασθαι πολιορκοῦντας. κεῖ-
ται δ' ἐν ὄρει τῆς θαλάττης διέχουσα ἡ πόλις ὅσον πέντε καὶ εἴκοσι σταδίους ἐπίνειον δ' ἐστιν αὐτῆς τὸ
χωρίον ἐν ᾧ ἐστιν ἱδρυμένη ἡ κορησσία κατοικίαν οὐδὲ κώμης ἔχουσα. ἔστι δὲ καὶ πρὸς τῇ κορησσίᾳ
σμινθίου ἀπόλλωνος ἱερὸν, καὶ πρὸς τῇ ποιηέσσῃ. μεταξὺ δὲ τοῦ ἱεροῦ καὶ τῶν τῆς ποιηέσσης ἐ-
ρειπίων, τὸ τῆς νεδουσίας ἀθηνᾶς ἱερόν. ἱδρυσαμένου νέστορος κατὰ τὴν ἐκ τροίας ἐπάνο-
δον. ἔστι δὲ καὶ ἔλιξος ποταμὸς περὶ τὴν κορησσίαν. μετὰ δὲ ταύτην νάξος, καὶ ἄνδρος ἀξιόλογοι, καὶ πά-
ρος. ἐντεῦθεν ἦν ἀρχίλοχος ὁ ποιητής. ὑπὸ δὲ παρίων ἐκτίσθη θάσος. καὶ πάριον ἐν τῇ προποντίδι πό-
λις. ἐν ταύτῃ μὲν οὖν λέγεται ὁ βωμὸς θέας ἄξιος, σταδιαίας ἔχων τὰς πλευράς. ἐν δὲ τῇ πάρῳ ἡ
παρία λίθος λεγομένη. ἀρίστη πρὸς τὴν μαρμαρογλυφίαν. σῦρος δ' ἐστὶ μηκύνουσι τὴν πρώτην συλ-
λαβήν. ἐξ ἧς φερεκύδης ὁ βάβιος ἦν. νεώτερος δ' ἐστὶν ὁ ἀθηναῖος ἐκείνου. ταύτης δοκεῖ μεμνῆσθαι ὁ ποιη-
» Νῆσός τις συρίη κικλήσκεται ὀρτυγίης. (τὴς συρίην καλῶν.
Καθύπερθε, μύκωνος δ' ἐστὶν ὑφ' ᾗ μυθεύουσι κεῖσθαι τῶν γιγάντων τοὺς ὑστάτους ὑφ' ἡρακλέους κα-
ταλυθέντας. ἀφ' ὧν ἡ παροιμία πάνθ' ὑπὸ μίαν μύκωνον. ἐπὶ τῶν ὑπὸ μίαν γραφὴν ἀγόντων
τὰ διηρτημένα τῇ φύσει, καὶ τοὺς φαλακροὺς δέ τινες μυκωνίους καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τὸ πάθος τοῦτο ἐπι-
χωριάζειν τῇ νήσῳ. σέριφος δ' ἐστὶν ἐν ᾗ τὰ περὶ τὸν δίκτυν μεμύθευται. τὸν ἀνελκύσαντα τὴν λάρνα-
κα τοῖς δικτύοις. τὴν περιέχουσαν τὸν περσέα, καὶ τὴν μητέρα δανάην. καταποντωθέντας ὑπ' ἀκρι-
σίου τοῦ πατρὸς δανάης. ἐκτραφῆναι τε γὰρ ἐνταῦθα περσέα φασὶ, καὶ κομίσαντα τὴν τῆς γοργόνος κε-
φαλὴν, δείξαντα τοῖς σεριφίοις ἀπολιθῶσαι πάντας. τοῦτο δὲ πρᾶξαι τιμωροῦντα τῇ μητρὶ, ὅτι
αὐτὴν πολυδέκτης ὁ βασιλεὺς ἄκουσαν ἀγάγεσθαι προείλετο πρὸς γάμον. συμπραττόντων αὐτῷ ἐκεί-

νων. οὕτω δ' ἐστὶ πετρώδης ἡ νῆσος, ὥς τε ἀπὸ τῆς γοργόνος τοῦτο παθεῖν αὐτήν φασιν οἱ κωμῳδοῦντες. τῆνος δὲ πόλιν οὐ μεγάλην ἔχει. τὸ δ' ἱερὸν τοῦ ποσειδῶνος μέγα ἐν ἄλσει τῆς πόλεως ἔξω, θέας ἄξιον. ἐν ᾧ καὶ ἑστιατόρια πεποίηται μεγάλα. σημεῖον τοῦ συνέρχεσθαι πλῆθος ἱκανὸν τῶν συνθυόντων αὐτοῖς ἀστυγειτόνων τὰ ποσειδώνια. ἔστι δὲ καὶ ἀμοργὸς τῶν σποράδων ὅθεν ἦν σιμωνίδης ὁ τῶν ἰάμβων ποιητὴς, καὶ λέβινθος. καὶ λερία. καὶ τὸ δὲ φωκυλίδου.

» Λέριοι κακοί. οὐχ ὁ μὲν, ὃς δ' οὔ. πάντες, πλὴν πατροκλέους.
» Καὶ πατροκλέης λέριος.

Διεβέβληντο γὰρ ὡς κακοήθεις οἱ ἐνθένδε ἄνθρωποι. πλησίον δ' ἐστὶ καὶ ἡ πάτμος. καὶ κορασσίαι. πρὸς δύσιν κείμεναι τῇ ἰκαρίᾳ. αὕτη δὲ, σάμῳ. ἡ μὲν οὖν ἰκαρία ἔρημός ἐστι. νομὰς δ' ἔχει. καὶ χρῶνται αὐταῖς σάμιοι. τοιαύτη δ' οὖσα ἔνδοξος ὅμως ἐστί. καὶ ἀπ' αὐτῆς ἰκάριον καλεῖται τὸ προκείμενον πέλαγος. ἐν ᾧ καὶ σάμος αὐτή καὶ κῶς ἐστι. καὶ αἱ ἄρτι λεχθεῖσαι κορασσίαι, καὶ πάτμος, καὶ λέρος. ἔνδοξον δὲ, καὶ τὸ ἐν αὐτῇ ὄρος ὁ κέρκετις μᾶλλον τῆς ἀμπέλου. αὕτη δ' ὑπέρκειται τῆς σαμίων πόλεως. συνάπτει δὲ τῷ ἰκαρίῳ, τὸ καρπάθιον πέλαγος πρὸς νότον. τούτῳ δὲ τὸ αἰγύπτιον. πρὸς δὲ δύσιν, τό τε κρητικὸν, καὶ τὸ λιβυκόν. καὶ ἐν τῷ καρπαθίῳ δ' εἰσὶ πολλαὶ τῶν σποράδων μεταξὺ τῆς κῶ μάλιστα, καὶ ῥόδου, καὶ κρήτης. ὧν εἰσὶν ἀστυπάλαιά τε καὶ τῆλος καὶ χαλκία. καὶ ἃς ὅμηρος ὀνομάζει ἐν τῷ καταλόγῳ.

» Οἳ δ' ἄρα νίσυρόν τ' εἶχον. κράπαθόν τε κάσόν τε
» Καὶ κῶ εὐρυπύλοιο πόλιν νήσους τε καλύδνας.

Ἔξω γὰρ τῆς κῶ καὶ τῆς ῥόδου περὶ ὧν ἐροῦμεν ὕστερον τάς τε ἄλλας ἐν ταῖς σποράσι τίθεμεν, καὶ δὴ καὶ ἐνταῦθα μεμνήμεθα αὐτῶν. καὶ ὑπὲρ τῆς ἀσίας οὐ τῆς εὐρώπης ἐγγὺς οὐσῶν. ἐπειδὴ τῇ κρήτῃ καὶ ταῖς κυκλάσι, καὶ ταῖς σποράσιν συμπαραλαβεῖν ἐπείγετό πως ὁ λόγος. ἐν δὲ τῇ τῆς ἀσίας περιοδείᾳ, τὰς προσεχεῖς αὐτῇ τῶν ἀξιολόγων νήσων προσπεριοδεύσομεν. κύπρον, καὶ ῥόδον, καὶ κῶ, καὶ τὰς ἐν τῇ ἐφεξῆς παραλίᾳ κειμένας, σάμον, χίον, λέσβον, τένεδον. νῦν δὲ τὰς σποράδας, ὧν ἄξιον μνησθῆναι λοιπὸν ἔπειμεν. ἡ μὲν οὖν ἀστυπάλαια ἱκανῶς ἐστὶ πελαγία πόλιν ἔχουσα. ἡ δὲ τῆλος ἐκτέταται παρὰ τὴν κνιδίαν μακρὰ ὑψηλὴ, στενή. τὴν περίμετρον ὅσον ἑκατὸν καὶ τετταράκοντα σταδίων ἔχουσα ὕφορμον. ἡ δὲ χαλκία τῆς τήλου διέχει σταδίους ὀγδοήκοντα, καρπάθου δὲ τετρακοσίους. ἀστυπαλαίας δὲ, διπλασίους. ἔχει δὲ καὶ κατοικίαν ὁμώνυμον, καὶ ἱερὸν ἀπόλλωνος, καὶ λιμένα. νίσυρος δὲ πρὸς ἄρκτον μὲν ἐστὶ τήλου. διέχουσα αὐτῆς, ὅσον ἑξήκοντα σταδίους, ὅσους καὶ κῶ διέχει. στρογγύλη δὲ, καὶ ὑψηλὴ, καὶ πετρώδης τοῦ μυλίου λίθου εὐπορούσα. τοῖς γοῦν ἀστυγείτοσιν ἐγγύθεν ἐστὶν ἡ τῶν μύλων εὐπορία, ἔχει δὲ καὶ πόλιν ὁμώνυμον, καὶ λιμένα, καὶ θερμὰ, καὶ ποσειδῶνος ἱερόν. περίμετρος δὲ αὐτῆς ὀγδοήκοντα στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ νησίδια πρὸς αὐτῇ νισυρίων λεγόμενα. φασὶ δὲ τὴν νίσυρον ἀπόθραυσμα εἶναι τῆς κῶ. προστιθέντες καὶ μῦθον ὅτι ποσειδῶν διώκων ἕνα τῶν γιγάντων πολυβώτην, ἀποθραύσας τῇ τριαίνῃ θρύφος τῆς κῶ ἐπ' αὐτὸν βάλλοι. καὶ γένοιτο νῆσος τὸ βληθὲν ἡ νίσυρος, ὑποκείμενον ἔχουσα ἐν αὐτῇ τὸν γίγαντα. τινὲς δὲ αὐτὸν ὑποκεῖσθαι τῇ κῶ φασιν. ἡ δὲ κάρπαθος ἣν κράπαθον εἶπεν ὅμηρος ὑψηλή ἐστι. κύκλον ἔχουσα σταδίων διακοσίων. τετράπολις δ' ὑπῆρξε, καὶ ὄνομα εἶχεν ἀξιόλογον. ἀφ' οὗ καὶ τῷ πελάγει τοὔνομα ἐγένετο. μία δὲ τῶν πόλεων ἐκαλεῖτο νίσυρος. ὁμώνυμος τῇ τῶν νισυρίων νήσῳ, κεῖται δὲ τῆς λιβύης κατὰ λευκὴν ἀκτήν. ἡ τῆς μὲν ἀλεξανδρείας διέχει περὶ χιλίους σταδίους. τῆς δὲ καρπάθου περὶ τετρακισχιλίους ἡ κάσος δὲ ταύτης μὲν ἀπὸ ἑβδομήκοντα ἐστὶ σταδίων. τοῦ δὲ σαλμωνίου τοῦ ἄκρου τῆς κρήτης διακοσίων πεντήκοντα κύκλον δὲ ἔχει σταδίων ὀγδοήκοντα. ἔστι δ' ἐν αὐτῇ καὶ πόλις ὁμώνυμος, καὶ κασίων νῆσοι καλούμεναι πλείους περὶ αὐτήν. νήσους δὲ καλύδνας τὰς σποράδας λέγειν φασὶ τὸν ποιητήν. ὧν μίαν εἶναι καλύμναν εἰκὸς δ' ὡς ἐκ τῶν νισυρίων λέγεται, καὶ κασίων αἱ ἐγγὺς, καὶ ὑπήκοοι. οὕτως καὶ τὰς τῇ καλύμνῃ περικειμένας. ἴσως τότε λεγομένην καλύδνην. τινὲς δὲ δύο εἶναι καλύδνας φασί. λέρον. καὶ καλύμναν. ἅς περ, καὶ λέγειν τὸν ποιητήν. ὁ δὲ σκήψιος πληθυντικῶς ὀνομάσας τὴν νῆσον καλύμνας φησὶν ὡς ἀθήνας, καὶ θήβας. δεῖν δὲ ὑπερβατῶς δέξασθαι τὸ τοῦ ποιητοῦ. οὐ γὰρ νήσους

» καλύδνας λέγειν. Ἄλλοι δ' ἄρα νήσους νίσυρόν τ' εἶχον κράπαθόν
» τε Κάσον τε. καὶ κῶ εὐρυπύλοιο πόλιν, καλύδνας τε.

Ἅπαν μὲν οὖν τὸ νησιωτικὸν μέλι, ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἀστεῖον ἐστί, καὶ ἐνάμιλλον τῷ ἀττικῷ. τὸ δ' ἐν ταῖς δὲ ταῖς νήσοις, διαφερόντως μάλιστα δὲ τὸ καλύμνιον.

Τὸ ἑνδέκατον, ἄρχεται μετὰ τῆς ἀσίας. τοῦ δὲ τανάϊδος ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν μερῶν ἄνωθεν, ἀρχομένου διαιρεῖν τὴν εὐρώπην τῆς ἀσίας. περιέχει δὲ τὸ βιβλίον καὶ τὰ παρακείμενα ἔθνη ταῖς ἀρχαῖς τοῦ πρὸς τῇ ἀνατολῇ, καὶ μεσημβρίᾳ. ἡ καὶ ἀσία ἐστί. ἔστι δὲ τὰ δὲ ἔθνη βάρβαρα τῷ βιβλίῳ ἐγκείμενα ὅσα περιοικεῖ τὸ καυκάσιον ὄρος ἐν οἷς ἀμαζόνες τε καὶ μασσαγέται. σκύθαι, καὶ ἀλβανοί. καὶ ἴβηρες. βακτριανοί. καὶ ἄσπιοι. μῆδοι. πέρσαι. ἀρμενίαι δύο ἕως τῆς μεσοποταμίας. ἔχει δὲ καὶ τρωγλοδύτας, καὶ ἡνιόχους οὕτω λεγόμενα ἔθνη. καὶ σκηπτούχους. χαλδαίους. ἀστυείους πολυφάγους. ἀβιανούς. σιρακούς. ταπύρους. ἐπεμνήσθη δὲ ἰάσονος καὶ μηδείας, καὶ ὧν ἔκτισαν πόλεων. ἔτι δὲ ξέρξου, καὶ μιθριδάτου καὶ ἀλεξάνδρου τοῦ φιλίππου.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΕΝΔΕΚΑΤΟΝ.

Τῇ δ' εὐρώπῃ συνεχής ἐστιν ἡ ἀσία. κατὰ τὸν τάναϊν συνάπτουσα αὐτῇ. περὶ ταύτης οὖν ἐφεξῆς ῥητέον διελόντας φυσικοῖς τισιν ὅροις τοῦ σαφοῦς χάριν. ὅπερ οὖν ἐρατοσθένης ἐφ' ὅλης τῆς οἰκουμένης ἐποίησε, τοῦθ' ἡμῖν ἐπὶ τῆς ἀσίας ποιητέον. ὁ γὰρ ταῦρος μέσην πως διέζωκε ταύτην τὴν ἤπειρον, ἀπὸ τῆς ἑσπερίας ἐπὶ τὴν ἕω, τεταμένος. τὸ μὲν, αὐτῆς ἀπολείπων πρὸς βορρᾶν. τὸ δὲ, μεσημβρινόν. καλοῦσι δὲ αὐτὸν οἱ ἕλληνες, τὸ μὲν, ἐντὸς τοῦ ταύρου. τὸ δὲ ἐκτός. εἴρηται δὲ ταῦθ' ἡμῖν, καὶ πρότερον. ἀλλ' εἰρήσθω, καὶ νῦν ὑπομνήσεως χάριν. πλάτος μὲν οὖν ἔχει τὸ ὄρος πολλαχοῦ καὶ τρισχιλίων σταδίων. μῆκος δ' ὅσον ἀπὸ τῆς ἀσίας τεττάρων που μυριάδων, καὶ πεντακισχιλίων. ἀπὸ τῆς ῥοδίων περαίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς ἰνδικῆς καὶ σκυθίας πρὸς τὰς ἀνατολάς. διήρηται δ' εἰς μέρη πολλά, καὶ ὀνόματα περιγραφαῖς, καὶ μείζοσι, καὶ ἐλάττοσιν ἀφωρισμένα. ἐπεὶ δ' ἐν τῷ τοσούτῳ πλάτει τοῦ ὄρους ἀπολαμβάνεταί τινα ἔθνη, τὰ μὲν, ἀσημότερα, τὰ δὲ, καὶ παντελῶς γνώριμα. καθάπερ ἡ παρθυαία, καὶ μηδία, καὶ ἀρμενία καὶ καππαδοκῶν τινες. καὶ κίλικες, καὶ πισίδαι, τὰ μὲν πλεονάζοντα τοῖς προσβόρροις μέρεσιν, ἐνταῦθα τακτέον. τὰ δ' ἐν τοῖς νοτίοις, εἰς τὰ νότια, καὶ τὰ ἐν μέσῳ δὲ τῶν ὀρῶν κείμενα, διὰ τὰς τῶν ἀέρων ὁμοιότητας πρὸς βορρᾶν πως θετέον. ψυχροὶ γάρ εἰσιν. οἱ δὲ νότιοι, θερμοί. καὶ τῶν ποταμῶν δὲ αἱ ῥύσεις ἐνθένδε οὖσαι πᾶσαι σχεδόν τι εἰς τἀναντία. αἱ μὲν, εἰς τὰ βόρεια. αἱ δ' εἰς τὰ νότια μέρη. τά τε πρῶτα. καὶ ὕστερόν τινες ἐπιστρέφωσι πρὸς ἀνατολὰς ἢ δύσεις. ἔχουσί τι εὐφυὲς πρὸς τὸ τοῖς ὄρεσιν ὁρίοις χρῆσθαι κατὰ τὴν εἰς δύο μέρη διαίρεσιν τῆς ἀσίας. καθάπερ, καὶ ἡ θάλαττα ἡ ἐντὸς στηλῶν ἐπ' εὐθείας πως οὖσα ἡ πλείστη τοῖς ὄρεσι τούτοις ἐπιτηδεία γεγένηται πρὸς τὸ δύο ποιεῖν ἠπείρους, τήν τε εὐρώπην, καὶ τὴν λιβύην, ὅριον ἀμφοῖν οὖσα ἀξιόλογον. τοῖς δὲ μεταβαίνουσιν ἀπὸ τῆς εὐρώπης ἐπὶ τὴν ἀσίαν ἐν τῇ γεωγραφίᾳ, τὰ πρὸς βορρᾶν ἐστι πρῶτα τῆς εἰς δύο διαιρέσεως. ὥστε ἀπὸ τούτων ἀρκτέον. αὐτῶν δὲ τούτων πρῶτα ἐστι τὰ περὶ τὸν τάναϊν. ὃν περ τῆς ἀσίας, καὶ τῆς εὐρώπης ὅριον ὑπεθέμεθα. ἔστι δὲ ταῦτα τρόπον τινὰ χερρονησιάζοντα. περιέχεται γὰρ ἐκ μὲν τῆς ἑσπέρας τῷ ποταμῷ τῷ τανάϊδι, καὶ τῇ μαιώτιδι μέχρι τοῦ βοσπόρου, καὶ τῆς τοῦ εὐξείνου παραλίας τῆς τελευτώσης εἰς τὴν κολχίδα. ἐκ δὲ τῶν ἄρκτων τῷ ὠκεανῷ, μέχρι τοῦ στόματος τῆς κασπίας θαλάττης. ἕωθεν δὲ αὐτῇ ταύτῃ τῇ θαλάττῃ μέχρι τῶν μεθορίων τῆς τε ἀλβανίας, καὶ τῆς ἀρμενίας. καθ' ἃ ὁ κύρος, καὶ ὁ ἀράξης ἐκδίδωσι ποταμός. ῥέων ὁ μὲν, διὰ τῆς ἀρμενίας. κύρος δὲ διὰ τῆς ἰβηρίας καὶ τῆς ἀλβανίας. ἐκ νότου δὲ ἡ ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ κύρου μέχρι τῆς κολχίδος ὅσον τρισχιλίων οὖσα σταδίων ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν. δι' ἀλβανῶν, καὶ ἰβήρων. ὥστε ἰσθμοῦ λόγον ἔχειν. οἱ δ' ἐπὶ τοσοῦτον συναγαγόντες τὸν ἰσθμόν, ἐφ' ὅσον κλείταρχος ἐπίκλυστον φήσας ἐξ ἑκατέρου τοῦ πελάγους, οὐδ' ἂν λόγου ἀξιοῖντο. ποσειδώνιος δὲ χιλίων πεντακοσίων εἴρηκε. τὸν ἰσθμόν, ὅσον καὶ τὸν ἀπὸ πηλουσίου ἰσθμὸν ἐς τὴν ἐρυθράν. δοκῶ δέ φησι μὴ πολὺ διαφέρειν μηδὲ τὸν ἀπὸ τῆς μαιώτιδος εἰς τὸν ὠκεανόν. οὐκ οἶδα δὲ πῶς αὐτῆς περὶ

τῶν ἀδήλων αὐτῷ πιστεύσει, μηδ᾽ εἰκὸς ἔχοντι εἰπεῖν περὶ αὐτῶν, ὅταν περὶ τῶν φανερῶν οὕτω παραλόγως λέγῃ. καὶ ταῦτα φίλος πομπηΐῳ γεγονὼς, τῷ στρατεύσαντι ἐπὶ τοὺς ἴβηρας, καὶ ἀλβανοὺς, μέχρι τῆς ἐφ᾽ ἑκάτερα θαλάττης, τῆς τε κασπίας καὶ τῆς κολχικῆς. φασὶ γοῦν ἐν ῥόδῳ γενόμενον τὸν πομπήϊον, ἡνίκα ἐπὶ τὸν λῃστρικὸν πόλεμον ἐξῆλθεν, εὐθὺς δ᾽ ἔμελλε καὶ ἐπὶ μιθριδάτην ὁρμήσειν καὶ τὰ μέχρι τῆς κασπίας ἔθνη, παρατυχεῖν διαλεγομένῳ τῷ ποσειδωνίῳ. ἀπιόντα δ᾽ ἐρέσθαι εἴ τι προστάττει. τὸν δ᾽ εἰπεῖν.

Αἰὲν ἀριστεύειν καὶ ὑπείροχον ἔμμεναι ἄλλων.

Προστίθει δὲ τούτοις, ὅτι καὶ τὴν ἱστορίαν συνέγραψε τὴν περὶ αὐτόν. διὰ δὴ ταῦτα ἐχρῆν φροντίσαι τ᾽ ἀληθοῦς πλέον τι. δεύτερον δ᾽ ἂν εἴη μέρος, τὸ ὑπὲρ τῆς ὑρκανίας θαλάττης ἣν κασπίαν καλοῦμεν μέχρι τῶν κατ᾽ ἰνδοὺς σκυθῶν. τρίτον δὲ μέρος τὸ συνεχὲς τῷ λεχθέντι ἰσθμῷ, καὶ ἀεὶ τὰ ἑξῆς τούτῳ, καὶ ταῖς κασπίαις πύλαις τῶν ἐντὸς τοῦ ταύρου καὶ τῆς εὐρώπης ἐγγυτάτω. ταῦτα δ᾽ ἐστὶ μηδία καὶ ἀρμενία. καὶ καππαδοκία καὶ τὰ μεταξύ, τέταρτον δ᾽ ἡ ἐντὸς ἅλυος γῆ. καὶ τὰ ἐν αὐτῷ τῷ ταύρῳ, καὶ ἐκτὸς, ὅσα εἰς τὴν χερρόνησον ἐκπίπτει. ἣν ποιεῖ ὁ διείργων ἰσθμὸς τήν τε ποντικὴν, καὶ τὴν κιλικίαν θάλασσαν. τῶν δὲ ἄλλων τῶν ἔξω τοῦ ταύρου, τήν τε ἰνδικὴν τίθεμεν καὶ τὴν ἀριανὴν, μέχρι τῶν ἐθνῶν τῶν καθηκόντων πρός τε τὴν κατὰ πέρσας θάλατταν καὶ τὸν ἀράβιον κόλπον καὶ τὸν νεῖλον καὶ πρὸς τὸ αἰγύπτιον πέλαγος. καὶ τὸ ἰσσικόν. οὕτω δὲ διακειμένων, τὸ πρῶτον μέρος οἰκοῦσιν. ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν, καὶ τὸν ὠκεανὸν, σκυθῶν τινὲς νομάδες. καὶ ἁμαξικοί. ἐν δὲ νοτιωτέρῳ τούτων, σαρμάται. καὶ οὗτοι σκύθαι. ἄορσοι καὶ σιρακοὶ, μέχρι τῶν καυκασίων ὀρῶν ἐπὶ μεσημβρίαν τείνοντες. οἱ μὲν, νομάδες. οἱ δὲ, καὶ σκηνῖται καὶ γεωργοί. περὶ δὲ τὴν λίμνην μαιῶται. πρὸς δὲ τῇ θαλάττῃ τοῦ βοσπόρου τὰ κατὰ τὴν ἀσίαν ἐστί. καὶ ἡ σινδική. μετὰ δὲ ταύτην ἀχαιοὶ καὶ ζύγοι. καὶ ἡνίοχοι. κερκέται, τε καὶ μακροπώγωνες. ὑπέρκεινται δὲ τούτων, καὶ τὰ τῶν φθειροφάγων στενά. μετὰ δὲ τοὺς ἡνιόχους, ἡ κολχὶς ὑπὸ τοῖς καυκασίοις ὄρεσι κειμένη καὶ τοῖς μοσχικοῖς. ἐπεὶ δ᾽ ὅριον ὑπόκειται τῆς εὐρώπης καὶ τῆς ἀσίας ὁ τάναϊς ποταμὸς, ἐντεῦθεν ἀρξάμενοι τὰ καθέκαστα ὑπογράψομεν. φέρεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν μερῶν. οὐ μὴν ὡς ἂν, κατὰ διάμετρον ἀντίρρους τῷ νείλῳ καθάπερ νομίζουσιν οἱ πολλοί. ἀλλὰ ἑωθινώτερος ἐκείνου παραπλησίως ἐκείνῳ τὰς ἀρχὰς ἀδήλους ἔχων. ἀλλὰ τοῦ μὲν, πολὺ τὸ φανερόν. χώραν διεξιόντος πᾶσαν εὐεπίμικτον. καὶ μακροὺς ἀνάπλους ἔχοντος. τοῦ δὲ τανάϊδος τὰς μὲν ἐκβολὰς ἴσμεν. δύο δ᾽ εἰσὶν εἰς τὰ ἀρκτικώτατα μέρη τῆς μαιώτιδος. ἑξήκοντα σταδίους ἀλλήλων διέχουσαι. τὸ δ᾽ ὑπὲρ τῶν ἐκβολῶν, ὀλίγον τὸ γνώριμόν ἐστι. διὰ τὰ ψύχη καὶ τὰς ἀπορείας τῆς χώρας. ἃς οἱ μὲν αὐτόχθονες δύνανται φέρειν. σαρξὶ καὶ γάλακτι τρεφόμενοι νομαδικῶς. οἱ δ᾽ ἀλλοεθνεῖς οὐχ ὑπομένουσιν. ἄλλως δὲ οἱ νομάδες δυσεπίμικτοι τοῖς ἄλλοις ὄντες, καὶ πλήθει, καὶ βίᾳ διαφέροντες, ἀποκεκλείκασιν εἰ καί τι πορεύσιμον τῆς χώρας ἐστίν. ἢ εἴ τινας τετύχηκεν ἀνάπλους ἔχων ὁ ποταμός. ἀπὸ δὲ τῆς αἰτίας ταύτης οἱ μὲν, ὑπέλαβον τὰς πηγὰς ἔχειν αὐτὸν ἐν τοῖς καυκασίοις ὄρεσι. πολὺ δ᾽ ἐνεχθέντα ἐπὶ τὰς ἄρκτους, εἶτα ἀνακάμψαντα ἐκβάλλειν εἰς τὴν μαιῶτιν. τούτοις δὲ ὁμοδοξεῖ καὶ θεοφάνης ὁ μιτυληναῖος. οἱ δ᾽ ἀπὸ τῶν ἄνω μερῶν τοῦ ἴστρου φέρεσθαι, σημεῖον δὲ φέρουσιν οὐδὲν τῆς πόρρωθεν οὕτω ῥύσεως. καὶ ἀπ᾽ ἄλλων κλιμάτων. ὥσπερ οὐ δυνατὸν ὂν καὶ ἐγγύθεν καὶ ἀπὸ τῶν ἄρκτων. ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ, καὶ τῇ λίμνῃ, πόλις ὁμώνυμος ᾠκεῖτο τάναϊς. κτίσμα τῶν τὸν βόσπορον ἐχόντων ἑλλήνων. νεωστὶ μὲν οὖν ἐξεπόρθησεν αὐτὴν πολέμων ὁ βασιλεὺς ἀπειθοῦσαν. ἦν δ᾽ ἐμπορεῖον κοινὸν τῶν τε ἀσιανῶν καὶ τῶν εὐρωπαίων νομάδων. καὶ τῶν ἐκ βοσπόρου τὴν λίμνην πλεόντων. τῶν μὲν, ἀνδράποδα ἀγόντων καὶ δέρματα. καὶ εἴ τι ἄλλο τῶν νομαδικῶν. τῶν δ᾽ ἐσθῆτα καὶ οἶνον, καὶ τἄλλα ὅσα τῆς ἡμέρου διαίτης οἰκεῖα ἀντιφορτιζομένων. πρόκειται δ᾽ ἐν ἑκατὸν σταδίοις τοῦ ἐμπορείου νῆσος ἀλωπεκία, κατοικία μιγάδων ἀνθρώπων. ἔστι δὲ καὶ ἄλλα νησίδια πλησίον ἐν τῇ λίμνῃ. διέχει δὲ τοῦ στόματος τῆς μαιώτιδος εὐθυπλοοῦσι ἐπὶ τὰ βόρεια, δισχιλίους καὶ διακοσίους σταδίους ὁ τάναϊς. οὐ πολὺ δὲ πλείους εἰσὶ παραλεγομένῳ τὴν γῆν. ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τῷ παρὰ γῆν, πρῶτον μέν ἐστιν ἀπὸ τοῦ τανάϊδος προϊοῦσιν ἐν ὀκτακοσίοις σταδίοις, ὁ μέγας καλούμενος ῥομβίτης. ἐν ᾧ τὰ πλεῖστα ἁλιεύματα τῶν εἰς ταριχείας ἰχθύων. ἔπειτα ἐν ἄλλοις ὀκτακοσίοις ὁ ἐλάττων ῥομβίτης. ἄκρα ἔχουσα καὶ αὐτὴ ἁλιείας ἐλάττους. ἔχουσι δὲ οἱ μὲν πρότερον νησία ὁρμητήρια. οἱ δ᾽ ἐν τῷ μικρῷ ῥομβίτῃ αὐτοί εἰσιν οἱ μαιῶται ἐργαζόμενοι. οἰκοῦσι γὰρ ἐν τῷ παράπλῳ τούτῳ παντὶ οἱ μαιῶται. γεωργοὶ μὲν, οὐχ ἧττον δὲ τῶν νομάδων πολεμισταί. διῄρηνται δὲ εἰς ἔθνη πλείω. τὰ μὲν πλησίον τοῦ τανάϊδος, ἀγριώτερα. τὰ δὲ συνάπτοντα τῷ βοσπόρῳ χειροήθη μᾶλλον. ἀπὸ γὰρ τοῦ μικροῦ ῥομβίτου στάδιοι εἰσὶν ἑξακόσιοι ἐπὶ τυράμβην, καὶ τὸν ἀντικείτην ποταμόν. εἶθ᾽ ἑκατὸν καὶ εἴκοσι, ἐπὶ τὴν κώμην τὴν κιμβρικήν. ἥτις ἐστὶν ἀφετήριον τοῖς τὴν λίμνην πλέουσιν. ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τούτῳ, καὶ σκοπαί τινες λέγονται κλαζομενίων. τὸ δὲ κιμμερικὸν πόλις ἦν πρότερον ἐπὶ χερρονήσου ἱδρυμένη. τὸν ἰσθμὸν τάφρῳ καὶ χώματι κλείουσα. ἐκέκτηντο δ᾽ οἱ κιμμέριοι μεγάλην ποτὲ ἐν τῷ βοσπόρῳ δύναμιν. διόπερ καὶ κιμμερι-

κὸς βόσπορος ὠνομάσθη. οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ τὴν μεσόγαιαν οἰκοῦντες ἐν τοῖς δεξιοῖς μέρεσι τοῦ πόντου μέ-
χρι ἰωνίας ἐπιδραμόντες. τούτους μὲν οὖν ἐξήλασαν ἐκ τῶν τόπων σκύθαι. τοὺς δὲ σκύθας ἕλλη-
νες, οἱ παντικάπαιον καὶ τὰς ἄλλας οἰκήσαντες πόλεις τὰς ἐν βοσπόρῳ. εἶτ' ἐπὶ τὴν ἀχίλλειον κώ-
μην, εἴκοσι στάδια. ἐν ᾗ τὸ ἀχιλλέως ἱερόν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ στενώτατος πορθμὸς τοῦ στόματος τῆς μαιώ-
τιδος. ὅσον εἴκοσι σταδίων, ἢ καὶ πλειόνων. ἔχων ἐν τῇ περαίᾳ τὸ μυρμήκιον κώμην. πλησίον δ' ἐστὶ τοῦ ἡ-
ρακλείου, καὶ τὸ παρθένιον. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ σατύρου μνῆμα, ἐνενήκοντα στάδιοι. τοῦτο δ' ἐστὶν ἐπ' ἄ-
κρας τινὸς χωστόν. ἀνδρὸς τῶν ἐπιφανῶς δυναστευσάντων τοῦ βοσπόρου. πλησίον δὲ κώμη πατραεύς.
ἀφ' ἧς ἐπὶ κώμην κοροκονδάμην ἑκατὸν τριάκοντα. αὕτη δ' ἐστὶ τοῦ κιμμερικοῦ καλουμένου βοσπό-
ρου πέρας. καλεῖται δὲ οὗτος ὁ στενωπὸς, ἀπὸ τοῦ στόματος τῆς μαιώτιδος. ἀπὸ τῶν κατὰ τὸ ἀχίλλειον,
καὶ τὸ μυρμήκιον στενῶν. διατείνων μέχρι πρὸς τὴν κοροκονδάμην. καὶ τὸ ἀντικείμενον αὐτῇ κώμιον
τῆς παντικαπαίων γῆς ὄνομα ἄκρα, ἑβδομήκοντα σταδίων διειργομένων πορθμῷ. μέχρι γὰρ δεῦρο, καὶ
ὁ κρύσταλλος διατείνει. πηττομένης τῆς μαιώτιδος κατὰ τοὺς κρυμμοὺς ὥστε πεζεύεσθαι. ἅπας δ' ἐστὶν
εὐλίμενος ὁ στενωπὸς οὗτος. ὑπέρκειται δὲ τῆς κοροκονδάμης εὐμεγέθης λίμνη, ἣν καλοῦσιν ἀπ' αὐ-
τῆς κοροκονδαμῖτιν. ἐκδίδωσι δ' ἀπὸ δέκα σταδίων τῆς κώμης εἰς τὴν θάλατταν. ἐμβάλλει δὲ εἰς τὴν λί-
μνην ἀπόρρωξ τις τοῦ ἀντικείτου ποταμοῦ, καὶ ποιεῖ νῆσον περίκλυστόν τινα. ταύτῃ τε τῇ λίμνῃ καὶ
τῇ μαιώτιδι καὶ τῷ ποταμῷ. τινὲς δὲ καὶ τοῦτον τὸν ποταμὸν ὕπανιν προσαγορεύουσι, καθάπερ
καὶ τὸν πρὸς τῷ βορυσθένει. εἰσπλεύσαντι δὲ εἰς τὴν κοροκονδαμῖτιν, ἥ τε φαναγόρειά ἐστι πόλις ἀξιό-
λογος, καὶ κῆπος. καὶ ἑρμώνασσα. καὶ τὸ ἀπάτουρον τὸ τῆς ἀφροδίτης ἱερόν. ὧν ἡ φαναγόρεια, καὶ ὁ
κῆπος κατὰ τὴν λεχθεῖσαν νῆσον ἵδρυνται, εἰσπλέοντι ἐν ἀριστερᾷ. αἱ δὲ λοιπαὶ πόλεις ἐν δεξιᾷ πέ-
ραν ὑπάνιος, ἐν τῇ σινδικῇ. ἔστι δὲ καὶ γοργιππία. ἐν δὲ τῇ σινδικῇ τὸ βασίλειον τῶν σινδῶν πλησίον θα-
λάττης. καὶ ἀβοράκη. τοῖς δὲ τοῦ βοσπόρου δυνάσταις ὑπήκοοι ὄντες ἅπαντες βοσπορανοὶ καλοῦνται.
καὶ ἔστι τῶν μὲν εὐρωπαίων βοσπορανῶν μητρόπολις τὸ παντικάπαιον. τῶν δ' ἀσιανῶν τὸ φαναγόρου.
καλεῖται γὰρ καὶ οὕτως ἡ πόλις. καὶ δοκεῖ τῶν μὲν ἐκ τῆς μαιώτιδος καὶ τῆς ὑπερκειμένης βαρ-
βάρου κατακομιζομένων ἐμπορεῖον εἶναι τὰ φαναγόρεια. τῶν δ' ἐκ τῆς θαλάττης ἀναφερομένων ἐκεῖ-
σε τὸ παντικάπαιον. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ φαναγορείᾳ τῆς ἀφροδίτης ἱερὸν ἐπίσημον τῆς ἀπατούρου. ἐ-
τυμολογοῦσι δὲ τὸ ἐπίθετον τῆς θεοῦ μῦθόν τινα προστησάμενοι, ὡς ἐπιθεμένων ἐνταῦθα τῇ θεῷ τῶν
γιγάντων, ἐπικαλεσαμένη τὸν ἡρακλέα, κρύψαι ἐν κευθμῶνί τινι. εἶτα τῶν γιγάντων ἕκαστον δεχομένη
καθ' ἕνα, τῷ ἡρακλεῖ παραδιδοίη δολοφονεῖν ἐξ ἀπάτης. τῶν μαιωτῶν δ' εἰσὶν αὐτοί τε οἱ σινδοὶ, καὶ
δανδάριοι. καὶ τορεάται. καὶ ἄγροι καὶ ἀρρηχοί. ἔτι δὲ τάρπητες. ὀβιδιακηνοί. σιττακηνοί. δόσκοι.
ἄλλοι πλείους. τούτων δ' εἰσὶ καὶ οἱ ἀσπουργιτανοί. μεταξὺ φαναγορείας οἰκοῦντες καὶ γοργιππίας, ἐν
πεντακοσίοις σταδίοις. οἷς ἐπιθέμενος πολέμων ὁ βασιλεὺς ἐπὶ προσποιήσει φιλίας, οὐ λαθὼν,
ἀντεστρατηγήθη. καὶ ζωγρία ληφθεὶς ἀπέθανε. τῶν δὲ συμπάντων μαιωτῶν τῶν ἀσιανῶν, οἱ μὲν ὑ-
πήκουον τῶν τὸ ἐμπορεῖον ἐχόντων, τὸ ἐν τῷ ταναΐδι. οἱ δὲ, τῶν βοσπορανῶν. τότε δ' ἀφίσταντο ἄλλοτ'
ἄλλοι. πολλάκις δ' οἱ τῶν βοσπορανῶν ἡγεμόνες. καὶ τὰ μέχρι τοῦ ταναΐδος κατεῖχον. καὶ μάλιστα οἱ
ὕστατοι φαρνάκης καὶ ἀσάνδρος καὶ πολέμων. φαρνάκης δέ ποτε καὶ τὸν ὕπανιν τοῖς δανδαρίοις ἐ-
παγαγεῖν λέγεται διά τινος παλαιᾶς διώρυχος. ἀνακαθάρας αὐτὴν κατακλύσαι τὴν χώραν. μετὰ
δὲ τὴν σινδικὴν καὶ τὴν γοργιππίαν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ τῶν ἀχαιῶν καὶ ζυγῶν καὶ ἡνιόχων παραλία τὸ
πλέον ἀλίμενος καὶ ὀρεινή. τοῦ καυκάσου μέρος οὖσα. ζῶσι δὲ ἀπὸ τῶν κατὰ θάλατταν λῃστηρίων. ἀκά-
τια ἔχοντες λεπτὰ στενὰ καὶ κοῦφα. ὅσον ἀνθρώπους πέντε καὶ εἴκοσι δεχόμενα. σπάνιον δὲ τριάκον-
τα δέξασθαι τοὺς πάντας δυνάμενα. καλοῦσι δ' αὐτὰ οἱ ἕλληνες καμάρας. φασὶ δ' ἀπὸ τῆς ἰάσο-
νος στρατιᾶς, τοὺς μὲν φθιώτας ἀχαιοὺς τὴν ἐνθάδε ἀχαΐαν οἰκῆσαι. λάκωνας δὲ τὴν ἡνιοχίαν. ὧν ἦρ-
χον ῥέκας καὶ ἀμφίστρατος οἱ τῶν διοσκούρων ἡνίοχοι. καὶ τοὺς ἡνιόχους ἀπὸ τούτων εἰκὸς ὠνομάσθαι.
τῶν δ' οὖν καμαρῶν στόλους κατασκευαζόμενοι καὶ ἐπιπλέοντες. τοτὲ μὲν ταῖς ὁλκάσι. τοτὲ δὲ χώ-
ρᾳ τινὶ ἢ καὶ πόλει τινὶ θαλαττοκρατοῦσι. προσλαμβάνουσι δ' ἔσθ' ὅτε καὶ οἱ τὸν βόσπορον ἔχοντες, ὑφόρ-
μους. χορηγοῦντες καὶ ἀγορὰν καὶ διάθεσιν τῶν ἁρπαζομένων. ἐπανιόντες δὲ εἰς τὰ οἰκεῖα χωρία,
ναυλοχεῖν οὐκ ἔχοντες, ἀναθέμενοι τοῖς ὤμοις τὰς καμάρας, ἀναφέρουσιν ἐπὶ τοὺς δρυμούς.
ἐν οἷς περ καὶ οἰκοῦσι. λυπρὰν ἀροῦντες γῆν. καταφέρουσι δὲ πάλιν ὅταν ᾖ καιρὸς τοῦ πλεῖν.
τὸ δ' αὐτὸ ποιοῦσι, καὶ ἐν τῇ ἀλλοτρίᾳ. γνώριμα ἔχοντες ὑλώδη χωρία. ἐν οἷς ἀποκρύψαντες τὰς
καμάρας, αὐτοὶ πλανῶνται πεζοὶ νύκτωρ, καὶ μεθ' ἡμέραν ἀνδραποδισμοῦ χάριν. ὃ δ' ἂν
λάβωσιν ἐπίλυτρα ποιοῦνται ῥᾳδίως. μετὰ τοὺς ἀνάπλους μηνύοντες τοῖς ἀπολέσασιν. ἐν μὲν
οὖν δυναστευομένοις τόποις, ἔστι τις βοήθεια ἐκ τῶν ἡγεμόνων τοῖς ἀδικουμένοις. ἀντεπιτίθεν-
ται γὰρ πολλάκις. καὶ κατάγουσιν αὐτάνδρους τὰς καμάρας. ἡ δ' ὑπὸ ῥωμαίοις ἀβοηθη-
τοτέρα ἐστὶ, διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν πεμπομένων. τοιοῦτος μὲν ὁ τούτων βίος. δυναστεύονται
δὲ, καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν καλουμένων σκηπτούχων. καὶ αὐτοὶ δὲ οὗτοι ὑπὸ τυράννοις, ἢ βασι-

λεῦσιν εἰσίν. οἱ γοῦν ἡνίοχοι τέτταρας εἶχον βασιλέας, ἡνίκα μιθριδάτης ὁ εὐπάτωρ φεύγων
ἐκ τῆς προγονικῆς εἰς βόσπορον διῄει τὴν χώραν αὐτῶν. καὶ αὕτη μὲν ἦν πορεύσιμος αὐτῷ. τῆς
δὲ τῶν ζυγίων ἀπέγνω διά τε δυσχωρίας, καὶ ἀγριότητας. τῇ παραλίᾳ χαλεπῶς ᾔει τὰ πολ-
λὰ ἐμβαίνων ἐπὶ τὴν θάλατταν. ἕως ἐπὶ τὴν τῶν ἀχαιῶν ἧκε. καὶ προσλαβόντων τούτων, ἐξετέ-
λεσε τὴν ὁδὸν, τὴν ἐκ φάσιδος. οὐ πολὺ τῶν τετρακισχιλίων λείπουσαν σταδίων. εὐθὺς οὖν ἀπὸ τῆς
κορωνδάμης, πρὸς ἕω μὲν ὁ πλοῦς ἐστιν. ἐν δὲ σταδίοις ἑκατὸν ὀγδοήκοντα, ὁ σινδικός ἐστι λιμὴν, καὶ
πόλις, εἶτα ἐν τετρακοσίοις τὰ καλούμενα βάτα κώμη, καὶ λιμήν. καθ' ὃ μάλιστα ἀντικεῖσθαι δο-
κεῖ πρὸς νότον ἡ σινώπη ταύτῃ τῇ παραλίᾳ. καθάπερ ἡ κάραμβις εἴρηται τῷ κριοῦ μετώπῳ. ἀπὸ δὲ
τῶν βατῶν, ὁ μὲν ἀρτεμίδωρος τὴν κερκετῶν λέγει παραλίαν ὑφόρμους ἔχουσαν, καὶ κώμας, ὅ-
σον ἐπὶ σταδίους ὀκτακοσίους, καὶ πεντήκοντα. εἶτα τὴν τῶν ἀχαιῶν σταδίων πεντακοσίων. εἶτα τὴν
τῶν ἡνιόχων χιλίων, εἶτα τὸν πιτυοῦντα τὸν μέγαν, τριακοσίων ἑξήκοντα μέχρι διοσκουριάδος. οἱ
δὲ τὰ μιθριδατικὰ συγγράψαντες, οἷς μᾶλλον προσεκτέον, ἀχαιοὺς λέγουσι πρώτους. εἶτα ζυγούς. εἶτα
ἡνιόχους εἶτα κερκέτας. καὶ μόσχους. καὶ κόλχους καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων φθειροφάγους, καὶ σοάνας, καὶ
ἄλλα μικρὰ ἔθνη τὰ περὶ τὸν καύκασον. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἡ παραλία καθάπερ εἶπον ἐπὶ τὴν ἕω τεί-
νει. καὶ βλέπει πρὸς νότον. ἀπὸ δὲ τῶν βατῶν ἐπιστροφὴν λαμβάνει κατὰ μικρόν. εἶτ' ἀντιπρόσωπον γίνεται
τῇ δύσει. καὶ τελευτᾷ πρὸς τὸν πιτυοῦντα. καὶ τὴν διοσκουριάδα. ταῦτα γὰρ τὰ χωρία συνάπτει τῆς κολ-
χίδος τῇ λεχθείσῃ παραλίᾳ. μετὰ δὲ τὴν διοσκουριάδα ἡ λοιπὴ τῆς κολχίδος ἐστὶ παραλία. καὶ ἡ συ-
νεχὴς τραπεζοῦς. καμπὴν ἀξιόλογον ποιήσασα. εἶτα εἰς εὐθεῖαν ταθεῖσάν πως πλευρὰν τὴν τὰ δεξιὰ τοῦ
πόντου ποιοῦσαν, τὰ βλέποντα πρὸς ἄρκτον. ἅπασα δ' ἡ τῶν ἀχαιῶν καὶ τῶν ἄλλων παραλία μέχρι διο-
σκουριάδος, καὶ τῶν ἐπ' εὐθείας πρὸς νότον ἐν τῇ μεσογαίᾳ τόπων ὑποπέπτωκε τῷ καυκάσῳ. ἔστι δ' ὄρος τοῦτο
ὑπερκείμενον τοῦ πελάγους ἑκατέρου. τοῦ τε ποντικοῦ. καὶ τοῦ κασπίου. διατειχίζον τὸν ἰσθμὸν, τὸν
διείργοντα αὐτά. ἀφορίζει δὲ πρὸς νότον μὲν τήν τε ἀλβανίαν, καὶ τὴν ἰβηρίαν. πρὸς ἄρκτον δὲ, τὰ
τῶν σαρματῶν πεδία. εὔδενδρον δ' ἐστὶν ὕλῃ παντοδαπῇ. τῇ τε ἄλλῃ, καὶ τῇ ναυπηγησίμῳ, φησὶ δ'
ἐρατοσθένης ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων καλεῖσθαι κάσπιον τὸν καύκασον. ἴσως ἀπὸ τῶν κασπίων παρωνο-
μασθέντα. ἀγκῶνας δέ τινες αὐτοῦ προβάλλουσιν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν. οἳ τήν τε ἰβηρίαν. οἱ περι-
λαμβάνουσι μέσην, καὶ τοῖς ἀρμενίων ὄρεσι συνάπτουσι. καὶ τοῖς μοσχικοῖς καλουμένοις. ἔτι δὲ τῷ
σκοιδίσῳ, καὶ τῷ παρυάδρῃ. ταῦτα δ' ἐστὶ μέρη τοῦ ταύρου πάντα. τοῦ ποιοῦντος τὸ νότιον τῆς ἀρμενίας
πλευρόν. ἀπερρωγότα πως ἐκεῖθεν πρὸς ἄρκτον, καὶ προσανατείνοντα μέχρι τοῦ καυκάσου, καὶ τῆς τοῦ
εὐξείνου παραλίας. τῆς ἐπὶ θεμίσκυραν διατεινούσης ἀπὸ τῆς κολχίδος. ἡ δ' οὖν διοσκουριὰς ἐν
κόλπῳ τοιούτῳ κειμένη, καὶ τὸ ἑωθινώτατον σημεῖον ἐπέχουσα, τοῦ σύμπαντος πελάγους, μυχός
τε τοῦ εὐξείνου λέγεται, καὶ ἔσχατος πλοῦς. τὸ γὰρ παροιμιακῶς λεχθὲν, οὕτω δεῖ λέξασθαι. εἰς
φᾶσιν ἔνθα ναυσὶν ἔσχατος δρόμος. οὐχ ὡς τὸν ποταμὸν λέγοντος τοῦ ποιήσαντος τὸ ἰαμβεῖον. οὐδὲ
δὴ ὡς τὴν ὁμώνυμον αὐτῷ πόλιν κειμένην ἐπὶ τὸν ποταμόν. ἀλλ' ὡς τὴν κολχίδα ἀπὸ μέρους. ἐ-
πεὶ ἀπό γε τοῦ ποταμοῦ. καὶ τῆς πόλεως οὐκ ἐλάττων ἑξακοσίων σταδίων, λείπεται πλοῦς ἐπ' εὐθεί-
ας εἰς τὸν μυχόν. ἡ δ' αὐτὴ διοσκουριάς ἐστι, καὶ ἀρχὴ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ μεταξὺ τῆς κασπίας καὶ τοῦ
πόντου, καὶ ἐμπορεῖον τῶν ὑπερκειμένων, καὶ σύνεγγυς ἐθνῶν κοινόν. συνέρχεσθαι γοῦν εἰς αὐ-
τὴν ἑβδομήκοντα οἱ δὲ, καὶ τριακόσια ἔθνη φασίν. οἷς οὐδὲν τῶν ὄντων μέλει, πάντα δὲ ἑτερόγλωτ-
τα, διὰ τὸ σποράδην, καὶ ἀμίκτως οἰκεῖν. καὶ ὑπὸ αὐθαδίας, καὶ ἀγριότητος. σαρμάται δ' εἰσὶν
οἱ πλείους. πάντες δὲ καὶ καυκάσιοι. ταῦτα μὲν δὴ τὰ περὶ τὴν διοσκουριάδα. καὶ ἡ λοιπὴ δὲ κολ-
χὶς ἐπὶ τῇ θαλάττῃ, ἡ πλείων ἐστί. διαρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ φᾶσις μέγας ποταμὸς, ἐξ ἀρμενίας τὰς ἀρ-
χὰς ἔχων. δεχόμενος τόν τε γλαῦκον, καὶ τὸν ἵππον ἐκ τῶν πλησίων ὀρῶν ἐκπίπτοντας. ἀναπλεῖ-
ται δὲ μέχρι σαραπανῶν, ἐρύματος δυναμένου δέξασθαι, καὶ πόλεως συνοικισμόν. ὅθεν πεζεύου-
σιν ἐπὶ τὸν κῦρον ἡμέραις τέτταρσι διὰ ἁμαξιτοῦ. ἐπίκειται δὲ τῷ φάσιδι ὁμώνυμος πόλις, ἐμπο-
ρεῖον τῶν κόλχων. τῇ μὲν, προβεβλημένη τὸν ποταμόν. τῇ δὲ, λίμνην. τῇ δὲ θάλατταν, ἐντεῦθεν
δὲ πλοῦς εἰς ἀμισὸν, καὶ σινώπης, τριῶν ἡμερῶν ἢ δύο, διὰ τὸ τοὺς αἰγιαλοὺς μαλακοὺς εἶναι, καὶ
τὰς τῶν ποταμῶν ἐκβολάς. ἀγαθὴ δ' ἐστὶν ἡ χώρα, καὶ καρποῖς, πλὴν τοῦ μέλιτος. πικρίζει γὰρ
τὸ πλέον. καὶ τοῖς πρὸς ναυπηγίαν πᾶσι. πολλήν τε γὰρ καὶ φύει. καὶ ποταμοὺς κατακομίζει.
λινόν τε ποιεῖ πολύ. καὶ κάναβιν. καὶ κηρόν. καὶ πίτταν. ἡ δὲ λινουργία καὶ τεθρύλληται. καὶ γὰρ εἰς
τοὺς ἔξω τόπους ἐξεκόμιζον καί τινες βουλόμενοι συγγένειάν τινα τοῖς κόλχοις πρὸς τοὺς αἰγυ-
πτίους ἐμφανίζειν, ἀπὸ τούτων πιστοῦνται. ὑπέρκειται δὲ τῶν λεχθέντων ποταμῶν ἐν τῇ μο-
σχικῇ τὸ τῆς λευκοθέας ἱερόν. φρίξου ἵδρυμα, καὶ μαντεῖον ἐκείνου ὅπου κριὸς οὐ θύεται, πλού-
σιόν ποτε ὑπάρξαν. συλληθὲν δὲ ὑπὸ φαρνάκου καθ' ἡμᾶς. καὶ μικρὸν ὕστερον ὑπὸ μιθριδά-
του τοῦ περγαμηνοῦ. κακωθείσης γὰρ χώρας νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν. οὐδὲ τιμᾶσθαι θέλει φησὶν εὐριπί-
δης. τὸ μὲν γοῦν παλαιὸν ὅσην ἐπιφάνειαν ἔχων ἡ χώρα αὕτη, δηλοῦσιν οἱ μῦθοι, τὴν ἰάσονος στρατείαν

αἰνιττόμενοι, προελθόντος μέχρι, καὶ μηδίας· ἔτι δὲ πρότερον τὴν φρίξου. μετὰ δὲ ταῦτα διαδεξάμενοι βασιλεῖς εἰς σκηπτουχίας διῃρημένων ἔχοντες τὴν χώραν μέσως πως ἔπραττον. αὐξηθέντος δὲ ἐπὶ πολὺ μιθριδάτου τοῦ εὐπάτορος, εἰς ἐκεῖνον ἡ χώρα περιέστη. ἐπέμπετο δ᾽ ἀεί τις τῶν φίλων ὕπαρχος καὶ διοικητὴς τῆς χώρας. τούτων δὲ ἦν καὶ μοαφέρνης. ὁ τῆς μητρὸς ἡμῶν θεῖος πρὸς πατρός. ἦν δ᾽ ἐνθένδε ἡ πλείστη τῷ βασιλεῖ πρὸς τὰς ναυτικὰς δυνάμεις ὑπουργία. καταλυθέντος δὲ μιθριδάτου συγκατελύθη, καὶ ἡ ὑπ᾽ αὐτῷ πᾶσα, καὶ διενεμήθη πολλοῖς. ὕστατα δὲ πολέμων ἔσχε τὴν κολχίδα. κἀκείνου τελευτήσαντος, ἡ γυνὴ πυθοδωρὶς κρατεῖ βασιλεύουσα. καὶ κόλχων, καὶ τραπεζοῦντος, καὶ φαρνακίας. καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβάρων. περὶ ὧν ἐροῦμεν ἐν τοῖς ὕστερον. ἡ δ᾽ οὖν μοσχικὴ ἐν ᾗ τὸ ἱερόν, τριμερής ἐστι. τὸ μὲν, γὰρ ἔχουσιν αὐτῆς κόλχοι, τὸ δὲ ἴβηρες. τὸ δὲ ἀρμένιοι. ἔστι δὲ καὶ πολίχνιον ἐν τῇ ἰβηρίᾳ φρίξου πόλις. ἡ νῦν ἰδήεσσα, εὐερκὲς χωρίον. ἐν μεθορίοις τῆς κολχίδος περὶ τὴν διοσκουριάδα. ῥιοχάρος ποταμός. τῶν δὲ συνερχομένων ἐθνῶν εἰς τὴν διοσκουριάδα. καὶ οἱ φθειροφάγοι εἰσίν, ἀπὸ τοῦ ῥύπου, καὶ τοῦ πίνου λαβόντες τοὔνομα. πλησίον δὲ καὶ οἱ σόανες. οὐδὲν βελτίους τούτων τῷ πίνῳ, δυνάμει δὲ βελτίους. σχεδὸν δέ τοι, καὶ κράτιστοι κατὰ ἀλκὴν καὶ δύναμιν. δυναστεύουσι γοῦν τῶν κύκλῳ τὰ ἄκρα τοῦ καυκάσου κατέχοντες τὰ ὑπὲρ τῆς διοσκουριάδος, βασιλέα δ᾽ ἔχουσι, καὶ συνέδριον ἀνδρῶν τριακοσίων. συνάγουσι δ᾽ ὥς φασι στρατείαν, καὶ εἴκοσι μυριάδων. ἅπαν γάρ ἐστι τὸ πλῆθος μάχιμον, τὸ συντεταγμένον. παρὰ τούτοις δὲ λέγεται, καὶ χρυσὸν καταφέρειν τοὺς χειμάῤῥους. ὑποδέχεσθαι δ᾽ αὐτὸν τοὺς βαρβάρους φάτναις κατατετρημέναις, καὶ μαλωταῖς δοραῖς. ἀφ᾽ οὗ δὴ μεμυθεῦσθαι, καὶ τὸ χρυσόμαλλον δέρας. εἰ μὴ καὶ ἴβηρας ὁμωνύμως τοῖς ἑσπερίοις καλοῦσιν ἀπὸ τῶν ἑκατέρωθι χρυσείων, χρῶνται δ᾽ οἱ σόανες φαρμάκοις πρὸς τὰς ἀκίδας θαυμαστῶς. καὶ τοὺς ἀφαρμάκτοις τετρωμένους βέλεσι λυπεῖ κατὰ τὴν ὀσμήν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἔθνη τὰ πλησίον τὰ περὶ τὸν καύκασον, λυπρὰ καὶ μικρόχωρα. τὸ δὲ τῶν ἀλβανῶν ἔθνος, καὶ τὸ τῶν ἰβήρων, ἃ δὴ πληροῖ μάλιστα τὸν λεχθέντα ἰσθμόν, καυκάσια, καὶ αὐτὰ λέγοιτ᾽ ἄν. εὐδαίμονα δὲ χώραν ἔχει καὶ σφόδρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυναμένην, καὶ δὴ καὶ ἥ γε ἰβηρία, οἰκεῖται καλῶς τὸ πλέον πόλεσί τε καὶ ἐποικίοις. ὥς τε καὶ κεραμωτὰς εἶναι στέγας. καὶ ἀρχιτεκτονικὴν τὴν τῶν οἰκήσεων κατασκευήν. καὶ ἀγοράς. καὶ τἆλλα κοινά. τῆς δὲ χώρας τὰ μὲν κύκλῳ τοῖς καυκασίοις ὄρεσι περιέχεται. προπεπτώκασι γὰρ ὡς εἶπον ἀγκῶνες ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν εὔκαρποι. περιλαμβάνοντες τὴν σύμπασαν ἰβηρίαν. καὶ συνάπτοντες πρός τε τὴν ἀρμενίαν, καὶ τὴν κολχίδα. ἐν μέσῳ ἐστὶ πεδίον ποταμοῖς διάῤῥυτον. μεγίστῳ δὲ τῷ κύρῳ, ὃς τὴν ἀρχὴν ἔχων ἀπὸ τῆς ἀρμενίας, εἰσβαλὼν εὐθὺς εἰς τὸ πεδίον τὸ λεχθέν, παραλαβὼν, καὶ τὸν ἀῤῥαβῶνα κάτω τοῦ καυκάσου ῥέοντα. καὶ ἄλλα ὕδατα, διὰ στενῆς ποταμίας εἰς τὴν ἀλβανίαν ἐκπίπτει. μεταξὺ δὲ ταύτης τε καὶ τῆς ἀρμενίας, ἐνεχθεὶς πολὺς διὰ πεδίων εὐβοτουμένων σφόδρα, δεξάμενος, καὶ πλείους ποταμούς, ὧν ἐστιν ὅ, τε ἀλαζώνιος, καὶ ὁ σανδοβάνης, καὶ ὁ ῥοιτάκης, καὶ χάνης πλωτοὶ πάντες, εἰς τὴν κασπίαν ἐμβάλλουσι θάλατταν. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον κόρος. τὸ μὲν οὖν πεδίον τῶν ἰβήρων οἱ γεωργικώτατοι καὶ πρὸς εἰρήνην ἐν εὐκολίᾳ οἰκοῦσιν, ἀρμενιστί τε, καὶ μηδιστὶ ἐσκευασμένοι. τὴν δ᾽ ὀρεινὴν οἱ πλείους, καὶ μάχιμοι κατέχουσι σκυθῶν δίκην ζῶντες, καὶ σαρματῶν. ὧν περ καὶ ὅμοροι, καὶ συγγενεῖς εἰσί. ἅπτονται δ᾽ ὅμως, καὶ γεωργίας. πολλάς τε μυριάδας συνάγουσιν ἐξ ἑαυτῶν, καὶ ἐξ ἐκείνων, ἐπειδάν τι συμπίπτῃ θορυβῶδες. τέτταρες δ᾽ εἰσὶν εἰς τὴν χώραν εἰσβολαί. μία μὲν διὰ σαραπανῶν φρουρίου κολχικοῦ. καὶ τῶν κατ᾽ αὐτὸ στενῶν. δι᾽ ὧν δ᾽ ὁ φάσις γεφύραις ἑκατὸν, καὶ εἴκοσι περατὸς γινόμενος, διὰ τὴν σκολιότητα καταῤῥεῖ τραχὺς, καὶ βίαιος εἰς τὴν κολχίδα. πολλοῖς χειμάῤῥοις κατὰ τὰς ἐπομβρίας ἐκ χαραδρουμένων τῶν τόπων. γεννᾶται δ᾽ ἐκ τῶν ὑπερκειμένων ὀρῶν πολλαῖς συμπληρούμενος πηγαῖς. ἐν δὲ τοῖς πεδίοις, καὶ ἄλλους προσλαμβάνει ποταμούς. ὧν ἐστιν, ὅ, τε γλαῦκος, καὶ ὁ ἵππος. πληρωθεὶς δὲ, καὶ γινόμενος πλωτὸς ἐξίησιν εἰς τὸν πόντον. καὶ ἔχει πόλιν ὁμώνυμον ἐπ᾽ αὐτῇ, καὶ λίμνην πλησίον, ἡ μὲν οὖν ἐκ τῆς κολχίδος εἰς τὴν ἰβηρίαν εἰσβολὴ τοιαύτη. πέτραις, καὶ ἐρύμασι, καὶ ποταμοῖς χαραδρώδεσι διακεκλεισμένη. ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον νομάδων ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας, ἀνάβασις χαλεπή. καὶ μετὰ ταύτην ποταμία στενὴ παρὰ τοῦ ἀράγου ποταμοῦ τεττάρων ἡμερῶν ὁδὸν ἔχουσα ἐφ᾽ ἕνα. φρουρεῖ δὲ, τὸ πέρας τῆς ὁδοῦ τεῖχος δύσμαχον. ἀπὸ δὲ τῆς ἀλβανίας διὰ πέτρας, πρῶτον λατομητὴ εἴσοδος. εἶτα διὰ τέλματος, ὃ ποιεῖ ὁ ποταμὸς ἐκ τοῦ καυκάσου καταπίπτων. ἀπὸ δὲ τῆς ἀρμενίας τὰ ἐπὶ τῷ κύρῳ στενὰ, καὶ τὰ ἐπὶ τῷ ἀράγῳ. καὶ γὰρ πρὶν εἰς ἀλλήλους συμπεσεῖν ἔχουσιν ἐπικειμένας πόλεις ἐρυμνὰς ἐπὶ πέτραις. διεχούσας ἀλλήλων ὅσον ἑκκαίδεκα σταδίους. ἐπὶ μὲν τῷ κύρῳ, τὴν ἁρμοζικήν. ἐπὶ δὲ θατέρῳ σεύμαρα. ταύταις δ᾽ ἐχρήσατο ταῖς εἰσβολαῖς πρότερον πομπήιος. ἐκ τῶν ἀρμενίων ὁρμηθείς. καὶ μετὰ ταῦτα κανίδιος. τέτταρα, καὶ δέκα γένη τῶν ἀνθρώπων οἰκεῖ τὴν χώραν, ἓν μὲν, καὶ πρῶτον, ἐξ οὗ τοὺς βασιλέας καθιστᾶσι. κατ᾽ ἀγχιστείαν τε, καὶ ἡλικίαν τὸν πρεσβύτατον. ὁ δὲ δεύτερος δικαιοδοτεῖ, καὶ στρατηλατεῖ. δεύτερον δὲ τὸ τῶν ἱερέων. οἳ ἐπιμελοῦνται, καὶ τῶν πρὸς τοὺς ὁμόρους δικαίων. τρίτον, δὲ τὸ τῶν στρατευ-

μείων καὶ γεωργούντων, τέταρτον δὲ τὸ τῶν λαῶν· οἱ βασιλικοὶ δοῦλοι εἰσί· καὶ πάντα διακονοῦν-
ται τὰ πρὸς τὸν βίον. κοιναὶ δ' εἰσὶν αὐτῶν αἱ κτήσεις κατὰ συγγένειαν. ἄρχει δὲ καὶ ταμιεύει ἑκά-
στην ὁ πρεσβύτατος. τοιοῦτοι μὲν οἱ ἴβηρες, καὶ ἡ χώρα αὐτῶν. ἀλβανοὶ δὲ ποιμενικώτεροι, καὶ τοῦ
νομαδικοῦ γένους ἐγγυτέρω. πλὴν οὐκ ἀλλότριοι. ταύτῃ δὲ καὶ πολεμικοὶ μετρίως. οἰκοῦσι δὲ με-
ταξὺ τῶν ἰβήρων, καὶ τῆς κασπίας θαλάττης, πρὸς ἕω μὲν ἁπτόμενοι τῆς θαλάττης. πρὸς δύσιν δὲ ὁ-
μοροῦντες τοῖς ἴβηρσι. τῶν δὲ λοιπῶν πλευρῶν τὸ μὲν βόρειον, φρουρεῖται τοῖς καυκασίοις ὄρεσι.
ταῦτα γὰρ ὑπέρκειται τῶν πεδίων. καλεῖται δὲ πρὸς τῇ θαλάττῃ μάλιστα κεραύνια. τὸ δὲ νότιον
ποιεῖ ἡ ἀρμενία παρήκουσα. πολλὴ μὲν πεδιὰς, πολλὴ δὲ καὶ ὀρεινὴ καθάπερ οἱ καμβυσηνοί. καθ'
ἣν ἅμα, καὶ τοῖς ἴβηρσι καὶ τοῖς ἀλβανοῖς οἱ ἀρμένιοι συνάπτουσιν. ὁ δὲ κύρος ὁ διαρρέων τὴν ἀλβα-
νίαν, καὶ οἱ ἄλλοι ποταμοὶ οἱ πληροῦντες ἐκεῖνον, ταῖς μὲν τῆς γῆς ἀρεταῖς προσλαμβάνουσι. τὴν δὲ
θάλατταν ἀλλοτριοῦσιν. ἡ γὰρ χοῦς, προσπίπτουσα πολλὴ, πληροῖ τὸν πόρον. ὥστε καὶ τὰς ἐπικειμέ-
νας νησῖδας ἐξηπειροῦσθαι. καὶ τενάγη ποιεῖν ἀνώμαλα, καὶ δυσφύλακτα. τὴν δ' ἀνωμαλίαν ἐπι-
τείνουσιν αἱ ἐκ τῶν πλημμυρίδων ἀνακοπαί. καὶ δὴ καὶ εἰς στόματα δώδεκα φασὶ μεμερίσθαι τὰς ἐκ-
βολάς. τὰ μὲν τυφλά. τὰ δὲ, παντελῶς ἐπιγελῶντα. καὶ μηδὲ ὕφορμον ἀπολείποντα. ἐπὶ πλέας
γοῦν, ἢ ἑξήκοντα σταδίους ἀμφικλύστου τῆς ᾐόνος οὔσης τῇ θαλάττῃ, καὶ τοῖς ποταμοῖς, ἅπαν εἶναι
μέρος αὐτῆς ἀπροσπέλαστον. τὴν δὲ χοῦν καὶ μέχρι πεντακοσίων παρήκειν σταδίων. θινώδη ποιοῦσαν
τὸν αἰγιαλόν. πλησίον δὲ καὶ ὁ ἀράξης ἐμβάλλει. τραχὺς ἐκ τῆς ἀρμενίας ἐκπίπτων. ἣν δὲ ἐκεῖνος προω-
θεῖ χοῦν, πορευτὸν ποιῶν τὸ ῥεῖθρον, ταύτην ὁ κύρος ἀναπληροῖ. τάχα μὲν οὖν τῷ τοιούτῳ γένει τῶν
ἀνθρώπων, οὐδὲν δεῖ θαλάττης. οὐδὲ γὰρ τῇ γῇ χρῶνται κατ' ἀξίαν. πάντα μὲν γὰρ ἐκφέρουσι καρ-
πὸν, καὶ τὸν ἡμερώτατον. πᾶν δὲ φυτόν. καὶ γὰρ τὰ ἀειθαλῆ φέρει. τυγχάνει δ' ἐπιμελείας οὐδὲ μι-
κρᾶς. ἀλλὰ τἀγαθὰ ἄσπαρτα καὶ ἀνήροτα ἅπαντα φύεται. καθάπερ οἱ στρατηγήσαντες φασί. κυ-
κλώπειόν τινα διηγούμενοι βίον. πολλαχοῦ γοῦν σπαρεῖσαν, ἅπαξ δὶς ἐκφέρειν καρπὸν, ἢ καὶ τρὶς,
τὸν δὲ πρῶτον, καὶ πεντηκοντάχουν ἀνέαστον. καὶ ταῦτα οὐδὲ σιδήρῳ τμηθεῖσαν. ἀλλ' αὐτοξύλῳ ἀ-
ρότρῳ. ποτίζεται δὲ πᾶν τὸ πεδίον τοῦ βαβυλωνίου, καὶ τοῦ αἰγυπτίου μᾶλλον τοῖς ποταμοῖς, καὶ
τοῖς ἄλλοις ὕδασιν. ὥστ' ἀεὶ ποώδη φυλάττειν τὴν ὄψιν. διὰ δὲ τοῦτο καὶ εὔβοτόν ἐστι. πρόσεστι δὲ καὶ τὸ
εὐάερον ἐκεῖνο μᾶλλον, ἄσκαφοι δὲ ἄμπελοι μένουσι διατέλους, τεμνόμεναι διὰ πενταετηρίδος. νέαι
μὲν διετεῖς ἐκφέρουσιν ἤδη καρπὸν τέλειαι δ' ἀποδιδόασι τοσοῦτον, ὥστε ἀφιᾶσιν ἐν τοῖς κλήμασι πο-
λὺ μέρος. εὐθηνεῖ δ' ἐστὶ καὶ τὰ βοσκήματα παρ' αὐτοῖς. τά τε ἥμερα, καὶ τὰ ἄγρια. καὶ οἱ ἄνθρω-
ποι κάλλει, καὶ μεγέθει διαφέροντες. ἁπλοῖ δὲ καὶ οὐ καπηλικοί. οὐδὲ γὰρ νομίσματι τὰ πολλὰ
χρῶνται. οὐδὲ ἀριθμὸν ἴσασι μείζω τῶν ἑκατόν. ἀλλὰ φορτίοις τὰς ἀμοιβὰς ποιοῦνται. καὶ πρὸς
τἄλλα δὲ τὰ τοῦ βίου ῥαθύμως ἔχουσιν. ἄπειροι δ' εἰσὶ καὶ μέτρων τῶν ἐπ' ἀκριβὲς, καὶ σταθμῶν. καὶ
πολέμου δὲ καὶ πολιτείας καὶ γεωργίας ἀπρονοήτως ἔχουσιν. ὅμως δὲ καὶ πεζοὶ, καὶ ἀφ' ἵππων
ἀγωνίζονται. ψιλοί τε καὶ κατάφρακτοι καθάπερ ἀρμένιοι. στέλλουσι δὲ μείζω τῆς ἰβήρων στρατιᾶς.
ὁπλίζουσι γὰρ καὶ ἓξ μυριάδας ἀνδρῶν. ἱππέας δὲ δισμυρίους, καὶ δισχιλίους, ὅσοις πρὸς πομ-
πήϊον ἐκινδύνευσαν, καὶ τούτοις δὲ συμπολεμοῦσιν οἱ νομάδες πρὸς τοὺς ἔξωθεν, ὥσπερ τοῖς ἴβηρσι
κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἄλλως δ' ἐπιχειροῦσι τοῖς ἀνθρώποις πολλάκις, ὥστε καὶ γεωργεῖν κωλύ-
ουσιν. ἀκοντισταὶ δ' εἰσὶ καὶ τοξόται. θώρακας ἔχοντες καὶ θυρεοὺς, περίκρανα δὲ θήρεια παραπλη-
σίως τοῖς ἴβηρσιν. ἔστι δὲ τῆς ἀλβανῶν χώρας, καὶ ἡ κασπιανὴ τοῦ κασπίου ἔθνους ὁμώνυμος. οὗπερ
καὶ ἡ θάλαττα. ἀφανοῦς ὄντος νυνί. ἡ δ' ἐκ τῆς ἰβηρίας εἰς τὴν ἀλβανίαν εἰσβολὴ διὰ τῆς καμβυση-
νῆς ἀνύδρου τε καὶ τραχείας ἐπὶ τὸν ἀλαζώνιον ποταμόν. θηρευτικοὶ δὲ καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ κύνες
αὐτῶν εἰς ὑπερβολήν. οὐ τέχνῃ μᾶλλον, ἢ σπουδῇ τῇ περὶ τοῦτο. διαφέρουσι δὲ καὶ οἱ βασιλεῖς. νυνὶ
μὲν οὖν εἷς ἁπάντων ἄρχει. πρότερον δὲ καὶ καθ' ἑκάστην γλῶτταν ἰδίᾳ ἐβασιλεύοντο ἕκαστοι. γλῶτ-
ται δ' εἰσὶν ἓξ, καὶ εἴκοσι αὐτοῖς, διὰ τὸ μὴ εὐεπίμικτον πρὸς ἀλλήλους. φέρει δ' ἡ γῆ, καὶ τῶν ἑρ-
πετῶν ἔνια τῶν θανασίμων. καὶ σκορπίους, καὶ φαλάγγια. τῶν δὲ φαλαγγίων τὰ μὲν, ποιεῖ γελῶν-
τας ἀποθνήσκειν. τὰ δὲ, κλαίοντας πόθῳ τῶν οἰκείων. θεοὺς δὲ τιμῶσιν, ἥλιον, καὶ δία καὶ σελήνην.
διαφερόντως δὲ τὴν σελήνην, ἔστι δ' αὐτῆς τὸ ἱερὸν τῆς ἰβηρίας πλησίον. ἱερᾶται δ' ἀνὴρ ἐντιμό-
τατος μετά γε τὸν βασιλέα. προεστὼς τῆς ἱερᾶς χώρας. πολλῆς καὶ εὐάνδρου, καὶ αὐτῆς. καὶ τῶν
ἱεροδούλων ὧν ἐνθουσιῶσι πολλοὶ, καὶ προφητεύουσιν. ὃς δ' ἂν αὐτῶν ἐπὶ πλέον κατάσχετος γε-
νόμενος πλανᾶται κατὰ τὰς ὕλας μόνος, τοῦτον συλλαβὼν ὁ ἱερεὺς, ἁλύσει δήσας ἱερᾷ τρέ-
φει πολυτελῶς τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον. ἔπειτα προαχθεὶς εἰς τὴν θυσίαν τῆς θεοῦ, σὺν ἄλλοις ἱε-
ρείοις θύεται μυρισθείς. τῆς δὲ θυσίας ὁ τρόπος οὗτος. ἔχων τις ἱερὰν λόγχην ᾗπερ ἐστὶν νό-
μος ἀνθρωποθυτεῖν, παρελθὼν ἐκ τοῦ πλήθους, παίει διὰ τῆς πλευρᾶς εἰς τὴν καρδίαν.
οὐκ ἄπειρος τοιούτου. πεσόντος δὲ σημειοῦνται μαντεῖα τινὰ ἐκ τοῦ πτώματος. καὶ εἰς τὸ κοι-
νὸν ἀποφαίνουσι. κομισθέντος δὲ τοῦ σώματος εἰς τι χωρίον, ἐπιβαίνουσιν ἅπαντες καθαρσίῳ

χρώμενοι. ὑπερβαλλόντως δὲ καὶ τὸ γῆρας τιμῶσιν ἀλβανοί. καὶ τὸ τῶν ἄλλων καὶ τὸ τῶν
» γονέων μόνων. τεθνηκότων δὲ οὐχ ὅσιον φροντίζειν οὐδὲ μεμνῆσθαι. συγκατορύττουσι μέντοι τὰ
χρήματα αὐτοῖς. καὶ διὰ τοῦτο πένητες ζῶσιν οὐδὲν πατρῷον ἔχοντες. ταῦτα μὲν περὶ ἀλβα-
νῶν. λέγεται δ' ἰάσονα μετὰ ἀρμενίου τοῦ θετταλοῦ κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἤδη τοὺς κόλχους, ὁρμῆ-
σαι μέχρι τῆς κασπίας θαλάττης. καὶ τήν τε ἰβηρίαν καὶ τὴν ἀλβανίαν ἐπελθεῖν. καὶ πολλὰ
τῆς ἀρμενίας, καὶ τῆς μηδίας. ὡς μαρτυρεῖ τά τε ἰασόνεια, καὶ ἄλλα ὑπομνήματα. τὸν δὲ ἀρμέ-
νιον εἶναι ἐξ ἀρμενίου πόλεως τῶν περὶ τὴν βοιβηίδα λίμνην μεταξὺ φερῶν, καὶ λαρίσσης, τοὺς
σὺν αὐτῷ τε οἰκῆσαι. τήν τε ἀκιλισηνὴν, καὶ τὴν συσπιρῖτιν ἕως καλαχάνης, καὶ ἀδιαβηνῆς, καὶ
δὴ, καὶ τὴν ἀρμενίαν ἐπώνυμον καταλιπεῖν. ἐν δὲ τοῖς ὑπὲρ τῆς ἀλβανίας ὄρεσι, καὶ τὰς ἀμα-
ζόνας οἰκεῖν φασί. θεοφάνης μὲν οὖν ὁ συστρατεύσας τῷ πομπηΐῳ. καὶ γενόμενος ἐν τοῖς ἀλβανοῖς,
μεταξὺ τῶν ἀμαζόνων, καὶ τῶν ἀλβανῶν φησὶ γήλας οἰκεῖν, καὶ λήγας σκύθας. καὶ ῥεῖν ἐνταῦθα
τὸν μερμάδαλιν ποταμόν. τούτων τε καὶ τῶν ἀμαζόνων ἀνὰ μέσον. ἄλλοι δὲ ὧν καὶ ὁ σκήψιος μητρό-
δωρος, καὶ ὑψικράτης, οὐδὲ αὐτοὶ ἄπειροι τῶν τόπων γεγονότες γαργαρεῦσιν ὁμόρους, αὐτάς φα-
σὶν οἰκεῖν ἐν ταῖς ὑπωρείαις ταῖς πρὸς ἄρκτον τῶν καυκασίων ὀρῶν, ἃ καλεῖται κεραύνια. τὸν μὲν
ἄλλον χρόνον καθ' αὑτὰς αὐτουργούσας ἕκαστα. τά τε πρὸς ἄροτον, καὶ φυτουργίαν, καὶ τὰ πρὸς τὰς
νομὰς, καὶ μάλιστα τῶν ἵππων. τὰς δ' ἀλκιμωτάτας ἐφ' ἵππων κυνηγεσίαις πλεονάζειν, καὶ τὰ πο-
λέμια ἀσκεῖν. ἁπάσας δ' ἤδη κεκαῦσθαι τὸν δεξιὸν μαστὸν ἐκ νηπίων. ὥστε εὐπετῶς χρῆσθαι τῷ
βραχίονι πρὸς ἑκάστην χρείαν. ἐν δὲ τοῖς πρώτοις πρὸς ἀκοντισμόν. χρῆσθαι δὲ καὶ τόξῳ. καὶ σαγά-
ρει, καὶ πέλτῃ. δορὰς δὲ θηρίων ποιεῖσθαι, δορὺ κρανά τε, καὶ σκεπάσματα, καὶ διαζώματα. δύο δὲ
μῆνας ἐξαιρέτους ἔχειν τοῦ ἔαρος. καθ' οὓς ἀναβαίνουσιν εἰς τὸ πλησίον ὄρος τὸ διορίζον αὐτάς τε, καὶ
τοὺς γαργαρέας. ἀναβαίνουσι δὲ κἀκεῖνοι κατὰ ἔθος τι παλαιὸν, συνθύσοντές τε, καὶ συνεσόμε-
νοι ταῖς γυναιξὶ, τεκνοποιΐας χάριν. ἀφανῶς τε καὶ ἐν σκότει ὁ τυχὼν τῇ τυχούσῃ. ἐγκύμονας
δὲ ποιήσαντες ἀποπέμπουσιν, αἳ δ' ὅτι μὲν ἂν θῆλυ τέκωσι κατέχουσιν αὐταί. τὰ δ' ἄρρενα κομίζου-
σιν ἐκείνοις ἐκτρέφειν. ὠκείωται δ' ἕκαστος πρὸς ἕκαστον νομίζων υἱὸν διὰ τὴν ἄγνοιαν. ὁ δὲ μερμάδας
καταράττων ἀπὸ τῶν ὀρῶν διὰ τῆς τῶν ἀμαζόνων, καὶ τῆς σιρακηνῆς. καὶ ὅση μεταξὺ ἔρημος, εἰς τὴν
μαιῶτιν ἐκδίδωσι. τοὺς δὲ γαργαρέας συναναβῆναι μὲν ἐκ θεμισκύρας φασὶ ταῖς ἀμαζόσιν
εἰς τούσδε τοὺς τόπους. εἶτ' ἀποστάντας αὐτῶν, πολεμεῖν μετὰ θρακῶν, καὶ εὐβοέων τινῶν πλανηθέν-
των μέχρι δεῦρο πρὸς αὐτὰς, ὕστερον δὲ καταλυσαμένους τὸν πρὸς αὐτὰς πόλεμον ἤδη τοῖς λεχθεῖ-
σι ποιήσασθαι συμβάσεις. ὥστε τέκνων συγκοινωνεῖν μόνον, ζῆν δὲ καθ' αὑτοὺς ἑκατέρους. ἴδιον δέ τι
συμβέβηκε τῷ λόγῳ περὶ τῶν ἀμαζόνων. οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι τὸ μυθῶδες, καὶ τὸ ἱστορικὸν διωρισμένον
ἔχουσι. τὰ γὰρ παλαιὰ, καὶ ψευδῆ, καὶ τερατώδη, μῦθοι καλοῦνται. ἡ δ' ἱστορία βούλεται τἀλη-
» θὲς ἄν τε παλαιὸν ἄν τε νέον. καὶ τὸ τερατῶδες, ἢ οὐκ ἔχει, ἢ σπάνιον. περὶ δὲ τῶν ἀμαζόνων τὰ
αὐτὰ λέγεται, καὶ νῦν, καὶ πάλαι. τερατώδη τε ὄντα, καὶ πίστεως πόρρω. τίς γὰρ ἂν πιστεύσειεν,
ὡς γυναικῶν στρατὸς, ἢ πόλις, ἢ ἔθνος συσταίη ἄν ποτε χωρὶς ἀνδρῶν καὶ οὐ μόνον γε συσταίη, ἀλλὰ καὶ
ἐφόδους ποιήσαιτο, ἐπὶ τὴν ἀλλοτρίαν. καὶ κρατήσειεν οὐ τῶν ἐγγὺς μόνον, ὥστε, καὶ μέχρι τῆς νῦν
ἰωνίας προελθεῖν, ἀλλὰ καὶ διαπόντιον στεῖλαι στρατιὰν μέχρι τῆς ἀττικῆς. τοῦτο γὰρ ὅμοιον ὡς ἂν εἴ
τις λέγοι, τοὺς μὲν ἄνδρας γυναῖκας γινομένους τοὺς τότε. τὰς δὲ γυναῖκας ἄνδρας. ἀλλὰ μὴν
ταῦτά γε αὐτὰ καὶ νῦν λέγεται περὶ αὐτῶν. ἐπιτείνει δὲ τὴν ἰδιότητα, καὶ τὸ πιστεύεσθαι τὰ πα-
λαιὰ μᾶλλον, ἢ τὰ νῦν. κτίσεις γοῦν πόλεων, καὶ ἐπωνυμίαι λέγονται, καθάπερ ἐφέσου, καὶ σμύρ-
νης, καὶ κύμης, καὶ μυρίνης, καὶ πάφου καὶ ἄλλα ὑπομνήματα. τὴν δὲ θεμίσκυραν καὶ τὰ περὶ
τὸν θερμώδοντα πεδία, καὶ τὰ ὑπερκείμενα ὄρη, ἅπαντες ἀμαζόνων καλοῦσι. καὶ φασὶν ἐξελα-
θῆναι αὐτὰς ἐνθένδε. ὅπου δὲ νῦν εἰσιν, ὀλίγοι τε καὶ ἀναποδείκτως, καὶ ἀπίστως ἀποφαίνονται. κα-
θάπερ καὶ περὶ θαληστρίας. ἣν ἀλεξάνδρῳ συμμίξας φασὶν ἐν τῇ ὑρκανίᾳ, καὶ συγγενέσθαι τε-
κνοποιΐας χάριν δυναστεῦσαι τῶν ἀμαζόνων. οὐ γὰρ ὁμολογεῖται τοῦτο. ἀλλὰ τῶν συγγραφέων τοσού-
των ὄντων, οἱ μάλιστα τῆς ἀληθείας φροντίσαντες οὐκ εἰρήκασιν. οὐδ' οἱ πιστευόμενοι μάλιστα οὐδενὸς
μέμνηνται τούτων. οὐδ' εἰπόντες τὰ αὐτὰ εἰρήκασι. κλείταρχος φησὶ τὴν θαληστρίαν ἀπὸ κασπίων
πυλῶν, καὶ θερμώδοντος ὁρμηθεῖσαν ἐλθεῖν πρὸς ἀλέξανδρον. εἰσὶ δ' ἀπὸ κασπίων εἰς θερμώδον-
τα στάδιοι πλείους ἑξακισχιλίων. καὶ τὰ πρὸς τὸ ἔνδοξον θρυλληθέντα οὐδ' ὁμολογεῖται παρὰ
πάντων. οἱ δὲ πλάσαντες ἦσαν, οἱ κολακείας μᾶλλον, ἢ ἀληθείας φροντίζοντες. οἷον τῷ τὸν καύ-
κασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ ἰνδικὰ ὄρη, καὶ τὴν πλησιάζουσαν ἐκείνοις ἑῴαν θάλατταν. ἀπὸ τῶν ὑπερ-
κειμένων τῆς κολχίδος, καὶ τοῦ εὐξείνου ὀρῶν. ταῦτα γὰρ οἱ ἕλληνες, καὶ καύκασον ὠνόμαζον.
διέχοντα τῆς ἰνδικῆς πλείους, ἢ τρισμυρίους σταδίους. καὶ ἐνταῦθα ἐμυθεύσαντο τὰ περὶ προ-
μηθέως, καὶ τῶν δεσμῶν αὐτοῦ. ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἕω ἐγνώριζον οἱ τότε. ἡ δὲ ἐπὶ
ἰνδοὺς στρατεία διονύσου, καὶ ἡρακλέους, ὕστερογενῆ τὴν μυθοποιΐαν ἐμφαίνει. ἅ τε τοῦ ἡρακλέ-

ους, καὶ τὸν προμηθέα λύσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν ὕστερον. καὶ τὴν μὲν ἐνδοξότερα τὰ περὶ
Ἀλέξανδρον μέχρι τῶν ἰνδικῶν ὀρῶν καταστρέψασθαι τὴν ἀσίαν, ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ εὐξείνου,
καὶ τοῦ καυκάσου. ἀλλ' ἡ δόξα τοῦ ὄρους καὶ τοὔνομα, καὶ τὸ τοὺς περὶ ἰάσονα, δοκεῖ μακροτάτην στρα-
τείαν τελέσαι τὴν μέχρι τῶν πλησίον καυκάσου. καὶ τὸ τὸν προμηθέα παραδεδόσθαι δεδεμένον
ἐπὶ τοῖς ἐσχάτοις τῆς γῆς ἐν τῷ καυκάσῳ, χαριεῖσθαί τι τῷ βασιλεῖ ὑπέλαβον, τοὔνομα τοῦ ὄρους με-
τενηνοχότες, εἰς τὴν ἰνδικήν. τὰ μὲν οὖν ὑψηλότατα τοῦ ὄντως καυκάσου, τὰ νοτιώτατά ἐστι.
τὰ πρὸς ἀλβανίᾳ, καὶ ἰβηρίᾳ, καὶ κόλχοις. καὶ ἡνιόχοις. οἰκοῦσι δὲ οὓς εἶπον, τοὺς συνερχομένους
εἰς τὴν διοσκουριάδα. συνέρχονται δὲ τὸ πλεῖστον ἁλῶν χάριν. τούτων δ' οἱ μὲν, τὰς ἀκρωρείας κα-
τέχουσιν. οἱ δὲ, ἐν νάπαις αὐλίζονται. καὶ ζῶσιν ἀπὸ θηρείων σαρκῶν τὸ πλέον. καὶ καρπῶν ἀ-
γρίων, καὶ γάλακτος. αἱ δὲ κορυφαὶ, χειμῶνος μὲν ἄβατοι. θέρους δὲ προσβαίνουσιν. ὑποδούμενοι
κέντρῳ τὰ ὠμοβόϊνα δίκην τυμπάνων πλατέα διὰ τὰς χιόνας, καὶ τοὺς κρυστάλλους. καταβαίνου-
σι δ' ἐπὶ δορᾶς κείμενοι σὺν τοῖς φορτίοις, καὶ κατολισθαίνοντες. ὅπερ καὶ κατὰ τὴν ἀτροπατείαν
μηδίαν κατὰ τὸ μάσιον ὄρος τὸ ἐν ἀρμενίᾳ συμβαίνει. ἐνταῦθα δὲ καὶ τροχίσκοι ξύλινοι κεντρωτοὶ
τοῖς πέλμασιν ὑποτίθενται. τοῦ γοῦν καυκάσου τὰ μὲν ἄκρα, τοιαῦτα. καταβαίνοντι δ' εἰς τὰς
ὑπωρείας ἀρκτικώτερα μὲν ἐστι κλίματα. ἡμερώτερα δὲ, ἤδη γὰρ συνάπτει τοῖς πεδίοις τῶν σιρά-
κων. εἰσὶ δὲ καὶ τρωγλοδύται τινὲς ἐν φωλεοῖς οἰκοῦντες, διὰ τὰ ψύχη. παρ' οἷς ἤδη καὶ ἀλφίτων
ἐστὶν εὐπορία. μετὰ δὲ τοὺς τρωγλοδύτας, καὶ χαμαικοῖται καὶ πολυφάγοι τινὲς καλούμενοι. καὶ αἱ τῶν
εἰσαδίκων κῶμαι δυναμένων γεωργεῖν. διὰ τὸ μὴ παντελῶς ὑποπεπτωκέναι ταῖς ἄρκτοις. οἱ δ' ἐ-
φεξῆς ἤδη νομάδες, οἱ μεταξὺ μαιώτιδος, καὶ τῆς κασπίας, ναβιανοὶ καὶ πανξανοί. καὶ ἤδη τὰ τῶν
σιράκων, καὶ ἀόρσων φῦλα. δοκοῦσι δ' οἱ ἄορσοι, καὶ οἱ σίρακες φυγάδες εἶναι τῶν ἀνωτέρω. καὶ
προσάρκτιοι μᾶλλον ἄορσοι. ἀβέακος μὲν ὁ τῶν σιράκων βασιλεὺς, ἡνίκα φαρνάκης τὸν βόσπορον εἶχε,
δύο μυριάδας ἱππέων ἔστειλε. σπαδίνης δ' ὁ τῶν ἀόρσων, καὶ εἴκοσιν. οἱ δ' ἄνω ἄορσοι, καὶ πλείονας.
καὶ γὰρ ἐπεκράτουν πλείονος γῆς. καὶ σχεδόν τι τῆς κασπίων παραλίας τῆς πλείστης ἦρχον. ὥστε
καὶ ἐνεπορεύοντο καμήλοις τὸν ἰνδικὸν φόρτον, καὶ τὸν βαβυλώνιον. παρά τε ἀρμενίων, καὶ μήδων
διαδεχόμενοι. ἐχρυσοφόρουν δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν. οἱ μὲν οὖν ἄορσοι τὸν τάναϊν παροικοῦσιν. οἱ σίρακες
δὲ τὸν ἀχαρδέον. ὃς ἐκ τοῦ καυκάσου ῥέων, ἐκδίδωσιν εἰς τὴν μαιῶτιν. ἡ δὲ δευτέρα μερὶς ἄρχεται
μὲν ἀπὸ τῆς κασπίας θαλάττης, εἰς ἣν κατέπαυεν ἡ προτέρα καλεῖται δὲ αὐτὴ θάλαττα καὶ ὑρκανία.
δεῖ δὲ περὶ τῆς θαλάττης εἰπεῖν πρότερον ταύτης, καὶ τῶν προσοίκων ἐθνῶν. ἔστι δ' ὁ κόλπος ἀνέ-
χων ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ πρὸς μεσημβρίαν. κατ' ἀρχὰς μὲν ἱκανῶς στενός. ἐνδοτέρω δὲ πλατύνεται προϊ-
ὼν καὶ μάλιστα κατὰ τὸν μυχὸν, ἐπὶ σταδίους που, καὶ πεντακισχιλίους. ὁ δ' εἴσπλους μέχρι τοῦ μυχοῦ,
μικρῷ πλείων ἂν εἴη. συνάπτων πως, ἤδη τῇ ἀοικήτῳ. φησὶ δ' ἐρατοσθένης τὸν ὑπὸ τῶν ἑλλήνων γνώ-
ριμον περίπλουν τῆς θαλάττης ταύτης. τὸν μὲν παρὰ τοὺς ἀλβανοὺς, καὶ τοὺς καδουσίους, εἶναι
πεντακισχιλίων, καὶ τετρακοσίων. τὸν δὲ παρὰ τὴν ἀναριάκων καὶ μάρδων, καὶ ὑρκανῶν, μέχρι τοῦ στόμα-
τος τοῦ ὄξου ποταμοῦ, τετρακισχιλίων καὶ ὀκτακοσίων, ἔνθεν δ' ἐπὶ τοῦ ἰαξάρτου δισχιλίων τετρακο-
σίων. δεῖ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ μερίδι ταύτῃ, καὶ τοῖς ἐπὶ τοσοῦτον ἐκτετοπισμένοις ἁπλούστερον ἀκούειν.
καὶ μάλιστα περὶ τῶν διαστημάτων. εἰσπλέοντι δ' ἐν δεξιᾷ μὲν τοῖς εὐρωπαίοις, οἱ συνεχεῖς σκύθαι νέ-
μονται, καὶ σαρμάται. οἱ μεταξὺ τοῦ τανάϊδος, καὶ τῆς θαλάσσης ταύτης, νομάδες οἱ πλείους. περὶ
ὧν εἰρήκαμεν. ἐν ἀριστερᾷ δ' οἱ πρὸς ἕω σκύθαι νομάδες, καὶ οὗτοι μέχρι τῆς ἕω θαλάττης, καὶ τῆς ἰν-
δικῆς παρατείνοντες. ἅπαντας μὲν δὴ τοὺς προσβόρους, κοινῶς οἱ παλαιοὶ τῶν ἑλλήνων συγγρα-
φεῖς, σκύθας καὶ κελτοσκύθας ἐκάλουν. οἱ δ' ἔτι πρότερον διελόντες, τοὺς μὲν ὑπὲρ τοῦ εὐξείνου,
καὶ ἴστρου, καὶ ἀδρίου κατοικοῦντας, ὑπερβορέους ἔλεγον. καὶ σαυρομάτας, καὶ ἀριμασπούς. τοὺς
δὲ πέραν τῆς κασπίας θαλάττης, τοὺς μὲν, σάκας. τοὺς δὲ, μασαγέτας ἐκάλουν, οὐκ ἔχοντας ἀκρι-
βῶς λέγειν περὶ αὐτῶν οὐδέν, καίπερ πρὸς μασαγέτας τὸν κύρου πόλεμον ἱστοροῦντες. ἀλλ' οὔτε
περὶ τούτων οὐδεὶς ἠκρίβωτο πρὸς ἀλήθειαν, οὔτε τὰ παλαιὰ τῶν περσικῶν, οὔτε τῶν μηδικῶν,
ἢ συριακῶν ἐς πίστιν ἀφικνεῖτο μεγάλην διὰ τὴν τῶν συγγραφέων ἁπλότητα, καὶ τὴν φιλομυθίαν.
ὁρῶντες γὰρ τοὺς φανερῶς μυθογράφους εὐδοκιμοῦντας, ᾠήθησαν, καὶ αὐτοὶ παρέξεσθαι τὴν
γραφὴν ἡδεῖαν, ἐὰν ἐν ἱστορίας σχήματι λέγωσιν, ἃ μηδέ ποτε εἶδον μήτε ἤκουσαν. ἢ οὐ παρά γε εἰδό-
των σκοποῦντες. δι' αὐτὸ δὲ μόνον τοῦτο, ὅτι ἀκρόασιν ἡδεῖαν ἔχει, καὶ θαυμαστήν. ῥᾷον δ' ἄν τις ἡσιό-
δῳ, καὶ ὁμήρῳ πιστεύσειεν ἡρωολογοῦσι, καὶ τοῖς τραγικοῖς ποιηταῖς, ἢ κτησίᾳ τε καὶ ἡροδότῳ, καὶ ἑλλα-
νίκῳ, καὶ ἄλλοις τοιούτοις. οὐδὲ τοῖς περὶ ἀλεξάνδρου συγγράψασιν, οὐ ῥᾴδιον πιστεύειν τοῖς πολ-
λοῖς. καὶ γὰρ οὗτοι ῥᾳδιουργοῦσι διά τε τὴν δόξαν τοῦ ἀλεξάνδρου, καὶ διὰ τὸ τὴν στρατείαν πρὸς τὰς
ἐσχατιὰς γεγονέναι τῆς ἀσίας πόρρω ἀφ' ἡμῶν. τὸ δὲ πόρρω δυσέλεγκτον. ἡ δὲ τῶν ῥωμαίων ἐπικράτεια
καὶ ἡ τῶν παρθυαίων, πλεῖόν τι προσανακαλύπτει τῶν παραδεδομένων πρότερον. οἱ γὰρ περὶ ἐκεί-

του συγγράφοντες, καὶ τὰ χωρία καὶ τὰ ἔθνη ἐν οἷς αἱ πράξεις πιστότερον λέγουσιν, ἢ οἱ πρὸ αὐ-
τῶν, μᾶλλον γὰρ κατωπτεύκασι. τοὺς δ᾽ οὖν ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι τὸ κάσπιον πέλαγος παροικοῦν-
τας νομάδας, δάας οἱ νῦν προσαγορεύουσι. τοὺς ἐπονομαζομένους πάρνους. εἶτ᾽ ἔρημος πρόκει-
ται μεταξύ. καὶ ἐφεξῆς ἡ ὑρκανία. καθ᾽ ἣν ἤδη πελαγίζει μέχρι τοῦ συνάψαι τοῖς μηδικοῖς ὄρεσι,
καὶ τοῖς ἀρμενίων. τούτων δ᾽ ἐστὶ μηνοειδὲς τὸ σχῆμα κατὰ τὰς ὑπωρείας. αἳ τελευτῶσαι πρὸς θά-
λατταν, ποιοῦσι τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου. οἰκεῖ δὲ τὴν παρωρείαν ταύτην μέχρι τῶν ἄκρων ἀπὸ θαλάτ-
της ἀρξαμένοις, ἐπὶ μικρὸν μὲν τῶν ἀλβανῶν τι μέρος, καὶ τῶν ἀρμενίων. τὸ δὲ πλέον γῆλαι,
καὶ καδούσιοι. καὶ ἀμάρδοι καὶ κουΐτιοι, καὶ ἀναριάκαι. φασὶ δὲ παρρασίων τινὰς συνοικῆσαι
τοῖς ἀναριάκαις, οὓς καλεῖσθαι νῦν παρρασίους. αἰνειᾶνας δ᾽ ἐν τῇ οὐϊτίᾳ τειχίσαι πόλιν. ἣ νῦν αἰ-
νιανὰ καλεῖται, καὶ δείκνυται ὅπλα τε ἑλληνικὰ ἐνταῦθα. καὶ σκεύη χαλκᾶ. καὶ ταφαί. ἐνταῦθα
δὲ καὶ πόλιν ναβάρκην. ἐν ᾗ φησὶ δείκνυται μαντεῖον ἐγκοιμωμένων. καὶ ἄλλα τινὰ ἔθνη λῃστρικὰ
καὶ μάχιμα μᾶλλον, ἢ γεωργικά. ποιεῖ δὲ τοῦτο ἡ τραχύτης τῶν τόπων. τὸ μέντοι πλέον τῆς περὶ τὴν
ὀρεινὴν παραλίαν καδούσιοι νέμονται. σχεδὸν δ᾽ ἔτι ἐπὶ πεντακισχιλίους σταδίους ὥς φησι πατρο-
κλῆς. ὃς καὶ πάρισον ἡγεῖται τὸ πέλαγος τοῦτο, τῷ ποντικῷ. ταῦτα μὲν οὖν τὰ χωρία λυπρά. ἡ δ᾽
ὑρκανία σφόδρα εὐδαίμων καὶ πολλή, καὶ τὸ πλέον πεδιάς. πόλεσί τε ἀξιολόγοις διειλημμένη.
ὧν ἐστι ταλαβρόκη, καὶ σαμαριανή. καὶ κάρτα, καὶ τὸ βασίλειον τάπη. ὅ φασι μικρὸν ὑπὲρ τῆς θα-
λάττης ἱδρυμένον, διέχειν τῶν κασπίων πυλῶν σταδίους χιλίους τετρακοσίους. καὶ διὰ τὸ μὲν εἶδος
τῆς εὐδαιμονίας, σημεῖα ἡγοῦνται. ἡ μὲν γὰρ ἄμπελος, μετρητὴν οἴνου φέρει. ἡ δὲ συκῆ μεδίμνους ἑ-
» ξήκοντα. ὁ δὲ σῖτος ἐκ τοῦ ἐκπεσόντος καρποῦ τῆς καλάμης φύεται. ἐν δὲ τοῖς δένδρεσι σμηνουρ-
γεῖται. καὶ τῶν φύλλων ἀπορρεῖ μέλι. τοῦτο δὲ γίνεται καὶ τῆς μηδείας ἐν τῇ ματιανῇ, καὶ τῆς ἀρ-
μενίας ἐν τῇ σακασηνῇ, καὶ τῇ ἀραξηνῇ. τῆς μέντοι προσηκούσης ἐπιμελείας οὐκ ἔτυχεν, οὔτε
αὕτη, οὔτε ἡ ἐπώνυμος αὐτῇ θάλαττα. ἄπλους τε οὖσα καὶ ἀργός. νῆσοι τε εἰσίν, οἰκεῖσθαι δυνάμε-
ναι. ὡς δ᾽ εἰρήκασί τινες καὶ χρυσῖτιν ἔχουσαι γῆν. αἴτιον δ᾽ ὅτι καὶ οἱ ἡγεμόνες οἱ τ᾽ ἐξ ἀρχῆς ἐτύγ-
χανον βάρβαροι ὄντες οἱ τῶν ὑρκανῶν. μῆδοι τε καὶ πέρσαι. καὶ οἱ ὕστατοι παρθυαῖοι, χείρους ἐκεί-
νων ὄντες. καὶ ἡ γείτων ἅπασα χώρα λῃστῶν, καὶ νομάδων μεστή, καὶ ἐρημίας. μακεδόνες δ᾽ ὀλίγον
ὑπῆρξαν. καὶ ἐν πολέμοις ὄντες, καὶ τὰ πόρρω σκοπεῖν οὐ δυνάμενοι. φησὶ δ᾽ ἀριστόβουλος ὑλώδη
οὖσαν τὴν ὑρκανίαν, δρῦν ἔχειν. πεύκην δὲ καὶ ἐλάτην καὶ πίτυν μὴ φύειν. τὴν δ᾽ ἰνδικὴν πληθύειν τού-
τοις. τῆς δὲ ὑρκανίας ἐστὶ καὶ ἡ νησαία. τινὲς δὲ καὶ κατ᾽ αὐτὴν τιθέασι τὴν νησαίαν. διαιρεῖται δὲ καὶ πο-
ταμοῖς ἡ ὑρκανία τῷ τε ὤχῳ, καὶ τῷ ὄξῳ, μέχρι τῆς εἰς θάλατταν ἐκβολῆς, ὧν ὁ ὦχος διὰ τῆς νη-
σαίας ῥεῖ. ἔνιοι δὲ τὸν ὦχον εἰς τὸν ὄξον ἐμβάλλειν φασίν. ἀριστόβουλος δὲ καὶ μέγιστον ἀποφαίνει τὸν
ὄξον. τῶν ἑωραμένων ὑφ᾽ ἑαυτοῦ κατὰ τὴν ἀσίαν, πλὴν τῶν ἰνδικῶν. φησὶ δὲ καὶ εὔπλουν εἶναι,
καὶ οὗτος καὶ ἐρατοσθένης παρὰ πατροκλέους λαβών. καὶ πολλὰ τῶν ἰνδικῶν φορτία κατάγειν
εἰς τὴν ὑρκανίαν θάλατταν. ἐντεῦθεν δ᾽ εἰς τὴν ἀλβανίαν περαιοῦσθαι. καὶ διὰ τοῦ κύρου καὶ τῶν
ἑξῆς τόπων εἰς τὸν εὔξεινον καταφέρεσθαι. οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ τῶν παλαιῶν ὁ ὦχος ὀνομάζεται. ἀ-
πολλόδωρος μέντοι ὁ τὰ παρθικὰ γράψας, συνεχῶς αὐτὸν ὀνομάζει, ὡς ἐγγυτάτω τοῖς παρ-
θυαίοις ῥέοντα. προσεδοξάσθη δὲ καὶ περὶ τῆς θαλάττης πολλὰ ψευδῆ διὰ τὴν ἀλεξάνδρου φιλοτι-
μίαν. ἐπειδὴ γὰρ ὡμολόγητο, ὅτι ἐκ πάντων διείργει τὴν ἀσίαν ἀπὸ τῆς εὐρώπης, ὁ τάναϊς ποτα-
μός, τὸ δὲ μεταξὺ τῆς θαλάττης, καὶ τοῦ τανάϊδος πολὺ μέρος τῆς ἀσίας ὄν, οὐχ ὑπέπιπτε τοῖς μακε-
δόσι, στρατηγεῖν δ᾽ ἐγνώκεισο, ὥς τε τῇ φήμῃ γε κἀκείνων δόξαι τῶν μερῶν κρατεῖν τὸν ἀλέξανδρον,
εἰς ἓν οὖν συνῆγον τήν τε μαιῶτιν λίμνην τὴν δεχομένην τὸν τάναϊν, καὶ τὴν κασπίαν θάλατταν.
λίμνην καὶ ταύτην καλοῦντες, καὶ συντετρῆσθαι φάσκοντες πρὸς ἀλλήλας ἀμφοτέρας. ἑκα-
τέραν δὲ εἶναι μέρος τῆς ἑτέρας. πολύκλειτος δὲ καὶ πίστεις προσφέρεται περὶ τοῦ λίμνην εἶ-
ναι τὴν θάλατταν ταύτην. ὄφεις τε γὰρ ἐκτρέφειν, καὶ ὑπόγλυκυ εἶναι τὸ ὕδωρ. ὅτι δὲ καὶ οὐχ ἑ-
τέρα τῆς μαιώτιδος ἐστί. τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ τανάϊν εἰς αὐτὴν ἐμβάλλειν. ἐκ γὰρ τῶν αὐτῶν ὀ-
ρῶν τῶν ἰνδικῶν ἐξ ὧν ὅ τε ὦχος, καὶ ὁ ὄξος φέρεται καὶ ἄλλοι πλείους. καὶ ὁ ἰαξάρτης ἐκδίδωσί
τε ὁμοίως ἐκείνοις εἰς τὸ κάσπιον πέλαγος, πάντων ἀρκτικώτατος. τοῦτον οὖν ὠνόμασαν τάναϊν.
καὶ προσέθεσαν, καὶ τούτῳ πίστιν. ὥστ᾽ εἴη τάναϊς ὃν εἴρηκεν ὁ πολύκλειτος. τὴν γὰρ περαίαν τοῦ
ποταμοῦ τούτου φέρειν ἐλάτην,. καὶ ὀϊστοῖς ἐλατίνοις χρῆσθαι τοὺς ταύτῃ σκύθας. τοῦτο δὲ καὶ
τεκμήριον τοῦ τὴν χώραν τὴν πέραν τῆς εὐρώπης εἶναι μὴ τῆς ἀσίας. τὴν γὰρ ἀσίαν τὴν ἄνω,
καὶ τὴν πρὸς ἕω μὴ φύειν ἐλάτην. ἐρατοσθένης δέ φησι, καὶ ἐν τῇ ἰνδικῇ φύεσθαι ἐλάτην. καὶ
ἐντεῦθεν ναυπηγήσασθαι τὸν στόλον ἀλέξανδρον. πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τοιαῦτα συγκρούειν ἐ-
ρατοσθένης πειρᾶται. ἡμῖν δ᾽ ἀποχρώντως εἰρήσθω περὶ αὐτῶν. καὶ τοῦτο δ᾽ ἐκ τῶν κατὰ τὴν
ὑρκανίαν ἱστορουμένων παραδόξων ἐστὶν ὑπὸ εὐδόξου, καὶ ἄλλων. ὅτι πρόκεινταί τινες ἀκταὶ

τῆς θαλάττης ὕπαντροι. τούτων δὲ μεταξὺ, καὶ τῆς θαλάσσης ὑπόκειται ταπεινὸς αἰγιαλός. ἐκ δὲ τῶν
» ὕπερθεν κρημνῶν ποταμοὶ ῥέοντες τοσαύτην προσφέρονται βίαν, ὥς τε ταῖς ἀκταῖς συνάψαν-
τες ἐξακοντίζουσι τὸ ὕδωρ εἰς τὴν θάλατταν. ἄῤῥαντον φυλάττοντες τὸν αἰγιαλόν. ὥς τε καὶ στρατο-
πέδοις ὁδεύσιμον εἶναι, σκεπαζόμενον τῷ ῥεύματι. οἱ δ᾽ ἐπιχώριοι κατάγονται πολλάκις εὐωχίας
καὶ θυσίας χάριν εἰς τὸν τόπον. καὶ ποτὲ μὲν ὑπὸ τοῖς ἄντροις κατακλίνονται. ποτὲ δ᾽ ὑπὸ τῷ
ῥεύματι ἡλιαζόμενοι. ἄλλως δ᾽ ἄλλοι τέρπονται. παραφαινομένης ἅμα, καὶ τῆς θαλάττης ἑκατέ-
ρωθεν, καὶ τῆς ᾐόνος ποώδους, καὶ ἐνθηρᾶς οὔσης διὰ τὴν ἰκμάδα. ἀπὸ δὲ τῆς ὑρκανίας θαλάττης
προϊόντι ἐπὶ τὴν ἕω, δεξιὰ μέν ἐστι τὰ ὄρια μέχρι τῆς ἰνδικῆς θαλάττης παρατείνοντα. ἅπερ οἱ ἕλ-
ληνες ὀνομάζουσι ταῦρον. ἀρξάμενον ἀπὸ τῆς παμφυλίας, καὶ τῆς κιλικίας. καὶ μέχρι δεῦρο προϊ-
όντα ἀπὸ τῆς ἑσπέρας συνεχῆ, καὶ τυγχανόντων ἄλλων, καὶ ἄλλων ὀνομάτων. προσοικοῦσι δ᾽ αὐ-
τοῦ καὶ τὰ προσάρκτια μέρη, πρῶτοι μὲν οἱ γῆλαι, καὶ καδούσιοι, καὶ ἄμαρδοι καθάπερ εἴρηται.
καὶ τῶν ὑρκανίων τινές. ἔπειτα τὸ τῶν παρθυαίων ἔθνος. καὶ τὸ τῶν μαργιανῶν. καὶ τῶν ἀρίων, καὶ
ἡ ἔρημος, ἣν ἀπὸ τῆς ὑρκανίας ὁρίζει ὁ σάρνειος ποταμὸς, πρὸς ἕω βαδίζουσι, καὶ ἐπὶ τὸν ὦχον. κα-
λεῖται δὲ τὸ μέχρι δεῦρο ἀπὸ τῆς ἀρμενίας διατεῖνον, ἢ μικρὸν ἀπολεῖπον, παραχοάθρας. ἔστι δὲ ἀ-
πὸ τῆς ὑρκανίας θαλάττης εἰς τοὺς ἀρείους, περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους. εἶθ᾽ ἡ βακτριανή ἐστι, καὶ ἡ σογ-
διανή. τελευταῖοι δὲ σκύθαι νομάδες. τὰ δ᾽ ὄρη μακεδόνες μὲν ἅπαντα τὰ ἐφεξῆς ἀπὸ ἀρείων, καύ-
κασον ἐκάλεσαν. παρὰ δὲ τοῖς βαρβάροις, τά τε ἄκρα καὶ τοῦ παροπαμίσου τὰ προσβόρεια, καὶ
τὰ ἠμωδὰ. καὶ τὸ ἰμάονον. καὶ ἄλλα τοιαῦτα ὀνόματα ἑκάστοις μέρεσιν ἐπέκειτο. ἐν ἀριστερᾷ δὲ τού-
τοις. ἀντιπαράκειται σκυθικὰ ἔθνη, καὶ τὰ νομαδικὰ, ἅπασαν ἐκπληροῦντα τὴν βόρειον πλευ-
ρὰν, οἱ μὲν δὴ πλείους τῶν σκυθῶν ἀπὸ τῆς κασπίας θαλάττης ἀρξάμενοι, δάαι προσαγορεύονται.
τοὺς δὲ προσεῴους τούτων μᾶλλον μασσαγέτας, καὶ σάκας ὀνομάζουσι. τοὺς δ᾽ ἄλλους κοινῶς μὲν
σκύθας ὀνομάζουσιν. ἰδίᾳ δ᾽ ὡς ἑκάστους. ἅπαντες δ᾽ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ νομάδες. μάλιστα δὲ γνώριμοι γε-
γόνασι τῶν νομάδων οἱ τοὺς ἕλληνας ἀφελόμενοι τὴν βακτριανὴν, ἄσιοι καὶ πασιανοὶ καὶ τόχαροι.
καὶ σακάραυλοι. καὶ ὁρμηθέντες ἀπὸ τῆς περαίας τοῦ ἰαξάρτου τῆς κατὰ σάκας καὶ σογδια-
νοὺς, ἣν κατεῖχον σάκαι. καὶ τῶν δαῶν, οἱ μὲν, προσαγορεύονται ἄπαρνοι. οἱ δὲ, ξάνθιοι. οἱ δὲ, πίσ-
συροι. οἱ μὲν οὖν ἄπαρνοι πλησιαίτατοι τῇ ὑρκανίᾳ παράκεινται, καὶ τῇ κατ᾽ αὐτὴν θαλάττῃ. οἱ δὲ
λοιποὶ διατείνουσι καὶ μέχρι τῆς ἀντιπαρηκούσης τῇ ἀσίᾳ. μεταξὺ δ᾽ αὐτῶν, καὶ τῆς ὑρκανίας, καὶ
τῆς παρθυαίας, μέχρι ἀρίων, ἔρημος κεῖται πολλὴ, καὶ ἄνυδρος. ἣν, διεξιόντες μακραῖς ὁδοῖς, κα-
τέτρεχον τήν τε ὑρκανίαν, καὶ τὴν νισαίαν καὶ τὰ τῶν παρθυαίων πεδία. οἱ δὲ, συνέθεντο φόρους.
φόρος δ᾽ ἦν τὸ ἐπιτρέπειν τακτοῖς τισι χρόνοις τὴν χώραν κατατρέχειν καὶ φέρεσθαι λείαν. ἐπι-
πολαζόντων δ᾽ αὐτῶν παρὰ τὰ συγκείμενα, ἐπολέμουν. καὶ πάλιν διαλύσεις, καὶ ἀνεπολεμήσεις
ὑπῆρχον. τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ τῶν ἄλλων νομάδων βίος, ἀεὶ τοῖς πλησίον ἐπιτιθεμένων. τοτὲ δ᾽ αὖ διαλ-
λαττομένων. σάκαι μέντοι παραπλησίας ἐφόδους ἐποιήσαντο τοῖς κιμμερίοις, καὶ τρήρεσι τὰς
μὲν, μακροτέρας, τὰς δὲ, καὶ ἐγγύθεν. καὶ γὰρ τὴν βακτριανὴν κατέσχον. καὶ τῆς ἀρμενίας κα-
τεκτήσαντο τὴν ἀρίστην γῆν, ἣν καὶ ἐπώνυμον ἑαυτῶν κατέλιπον τὴν σακασηνὴν, καὶ μέχρι καππα-
δοκῶν. καὶ μάλιστα τῶν πρὸς εὐξείνῳ. οὓς ποντικοὺς νῦν καλοῦσι, προῆλθον. ἐπιθέμενοι δ᾽ αὐτοῖς πα-
νηγυρίζουσιν ἀπὸ τῶν λαφύρων οἱ τό τε ταύτῃ τῶν περσῶν στρατηγοὶ νύκτωρ ἄρδην αὐτοὺς ἠφά-
νισαν. ἐν δὲ τῷ πεδίῳ πέτραν τινὰ προσχώματι πληρώσαντες εἰς βουνοειδὲς σχῆμα ἐπέθηκαν τεῖ-
χος. καὶ τὸ τῆς ἀναΐτιδος. καὶ τὸ τῶν συμβώμων θεῶν ἱερὸν ἱδρύσαντο ὠμανοῦ, καὶ ἀναδάτου
περσικῶν δαιμόνων. ἀπέδειξάν τε πανήγυριν κατ᾽ ἔτος ἱεράν, τὰ σάκα. ἣν μέχρι νῦν ἐπιτελοῦ-
σιν οἱ τὰ ζῆλα ἔχοντες. οὕτω γὰρ καλοῦσι τὸν τόπον, ἔστι δὲ ἱεροδούλων πόλισμα τὸ πλέον. πομ-
πήϊος δὲ προσθεὶς χώραν ἀξιόλογον. καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ συνοικήσας εἰς τὸ τεῖχος, μίαν τῶν πόλεων
ἀπέφηνεν, ὧν διέταξε μετὰ τὴν μιθριδάτου κατάλυσιν. οἱ μὲν, οὕτω λέγουσι περὶ τῶν σακῶν.
οἱ δ᾽ ὅτι κῦρος ἐπιστρατεύσας τοῖς σάκαις, ἡττηθεὶς τῇ μάχῃ, φεύγει. στρατοπεδευσάμενος δὲ ἐν ᾧ
χωρίῳ τὰς παρασκευὰς ἀπολελοίπει, πάσης ἀφθονίας ἁπάσης, καὶ μάλιστα οἴνου, διαναπαύ-
σας μικρὸν τὴν στρατιὰν ἤλαυνεν, ἀφ᾽ ἑσπέρας, ὡς φεύγων. πλήρεις ἀφεὶς τὰς σκηνάς. προελ-
θὼν δ᾽ ὅσον ἐδόκει συμφέρειν, ἱδρύθη. ἐπιόντες δ᾽ ἐκεῖνοι καὶ καταλαβόντες ἔρημον ἀνδρῶν τὸ
στρατόπεδον, τῶν δὴ πρὸς ἀπόλαυσιν μεστῶν ἀνέδην ἐνεπίμπλαντο. ὁ δ᾽ ὑποστρέψας ἐξοίνους
κατέλαβε, καὶ παραπλῆγας. ὥστ᾽ οἱ μὲν, ἐν κάρῳ κείμενοι, καὶ ὕπνῳ, κατεκόπτοντο. οἱ δ᾽ ὀρ-
χούμενοι, καὶ βακχεύοντες, γυμνοὶ περιέπιπτον τοῖς τῶν πολεμίων ὅπλοις. ὀλίγου δ᾽ ἀπώ-
λοντο ἅπαντες. ὁ δὲ, θεῖον νομίσας τὸ εὐτύχημα, τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀνιερώσας τῇ πατρίῳ θεῷ
προσαγορεύσας σάκαια. ὅπου δ᾽ ἂν ᾖ, τῆς θεοῦ ταύτης ἱερὸν, ἐνταῦθα νομίζεται, καὶ ἡ τῶν
σακαίων ἑορτὴ βακχία τις μεθ᾽ ἡμέραν, καὶ νύκτωρ διεσκευασμένων σκυθιστί. πινόντων ἅμα,
καὶ πληκτιζομένων πρὸς ἀλλήλους, ἅμα τε, καὶ τὰς συμπινούσας γυναῖκας. μασσαγέται δ᾽ ἐ-

δηλῶσαι τὴν σφετέραν ἀρετὴν ἐν τῷ πρὸς κῦρον πολέμῳ. περὶ ὧν θρυλλοῦσι πολλοί. καὶ δεῖ πιστεύεσθαι παρ' ἐκείνων. λέγεται δὲ, καὶ τοιαῦτα περὶ τῶν μασαγετῶν. ὅτι οἰκοῦσιν οἱ μὲν, ὄρη. τινὲς δ' αὐτῶν πεδία. οἱ δὲ, ἕλη ἃ ποιοῦσιν οἱ ποταμοί. οἱ δὲ, τὰς ἐν τοῖς ἕλεσι νήσους. μάλιστα δέ φασι τὸν ἀράξην ποταμὸν κατακλύζειν τὴν χώραν πανταχῆ σχιζόμενον. ἐκπίπτοντα δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις στόμασιν εἰς τὴν ἄλλην τὴν πρὸς ἄρκτοις θάλατταν. ἐνὶ δὲ μόνῳ πρὸς τὸν κόλπον τὸν ὑρκάνιον. θεὸν δὲ ἥλιον μόνον ἡγοῦνται. τούτῳ δὲ ἱπποθυτοῦσι. γαμεῖ δ' ἕκαστος μίαν. χρῶνται καὶ ταῖς ἀλλήλων, οὐκ ἀφανῶς. ὁ δὲ μιγνύμενος τῇ ἀλλοτρίᾳ, τὴν φαρέτραν ἐξαρτήσας ἐκ τῆς ἁμάξης φανερῶς μίγνυται. θάνατος δὲ νομίζεται παρ' αὐτοῖς ἄριστος, ὅταν γηράσαντες κατακοπῶσι μετὰ προβατείων κρεῶν, καὶ ἀναμὶξ βρωθῶσι. τοὺς δὲ νόσῳ θανόντας ῥίπτουσιν ὡς ἀσεβεῖς, καὶ ἀξίους ὑπὸ θηρίων βεβρῶσθαι. ἀγαθοὶ δὲ ἱππόται, καὶ πεζοί. τόξοις δὲ χρῶνται, καὶ μαχαίραις, καὶ θώραξι. καὶ σαγάρεσι χαλκαῖς. ζώνας δὲ αὐτοῖς εἰσὶ χρυσᾶς, καὶ διαδήματα ἐν ταῖς μάχαις. οἵ τε ἵπποι χρυσοχάλινοι, μασχαλιστῆρες δὲ χρυσοῖ. καὶ ἄργυρος δ' οὐ γίνεται παρ' αὐτοῖς, σίδηρος δ' ὀλίγος. χαλκὸς δὲ, καὶ χρυσὸς ἄφθονος. οἱ μὲν οὖν ἐν ταῖς νήσοις οὐκ ἔχοντες σπόριμα, ῥιζοφαγοῦσι, καὶ ἀγρίοις χρῶνται καρποῖς. ἀμπέχονται δὲ τοὺς τῶν δένδρων φλοιούς. οὐδὲ γὰρ βοσκήματα ἔχουσι. πίνουσι δὲ τὸν ἐκ τῶν δένδρων καρπὸν ἐκθλίβοντες. οἱ δ' ἐν τοῖς ἕλεσιν ἰχθυοφαγοῦσιν. ἀμπέχονται δὲ, τὰ τῶν φωκῶν δέρματα τῶν ἐκ θαλάττης ἀναδοχουσῶν. οἱ δ' ὄρειοι τοῖς ἀγρίοις τρέφονται, καὶ αὐτοὶ καρποῖς. ἔχουσι δὲ, καὶ πρόβατα ὀλίγα. ὥστ' οὐδὲ κατακόπτουσι φειδόμενοι τῶν ἐρίων χάριν καὶ τοῦ γάλακτος. τὴν δ' ἐσθῆτα ποικίλλουσιν ἐπιχρίστοις φαρμάκοις. δυσεξίτηλον ἔχουσι τὸ ἄνθος. οἱ δὲ πεδινοὶ καίπερ ἔχοντες χώραν, οὐ γεωργοῦσιν. ἀλλ' ἀπὸ προβάτων, καὶ ἰχθύων ζῶσι νομαδικῶς, καὶ σκυθικῶς. ἔστι γάρ τις καὶ κοινὴ δίαιτα πάντων τῶν τοιούτων. ἣν πολλάκις λέγω, καὶ ταφαὶ δ' εἰσὶ παραπλήσιαι, καὶ ἤθη, καὶ ὁ σύμπας βίος αὐθέκαστος μὲν, σκαιὸς δὲ, καὶ ἄγριος καὶ πολεμικός. πρὸς δὲ τὰ συμβόλαια ἁπλοῦς, καὶ ἀκάπηλος. τοῦ δὲ τῶν μασαγετῶν, καὶ τῶν σακῶν ἔθνους, καὶ οἱ ἀττάσιοι, καὶ οἱ χωρασμιοι εἰς οὓς ἀπὸ τῶν βακτριανῶν, καὶ τῶν σογδιανῶν, ἔφυγε σπιταμένης εἷς ἐκ τῶν ἀποδράντων περσῶν τὸν ἀλέξανδρον. καθάπερ, καὶ βῆσσος, καὶ ὕστερον δὲ ἀρσάκης τὸν καλλίνικον σέλευκον φεύγων εἰς τοὺς ἀπασιάκας ἐχώρησε. φησὶ δ' ἐρατοσθένης τοὺς ἀραχώτους, καὶ μασαγέτας τοῖς βακτρίοις παρακεῖσθαι πρὸς ὦξον. καὶ σάκας μὲν, καὶ σογδιανούς, τοῖς ὅλοις ἐδάφεσιν ἀντικεῖσθαι τῇ ἰνδικῇ. βακτρία δ' ἐπ' ὀλίγον. τὸ γὰρ πλεῖον τῷ παροπανισῷ παρακεῖσθαι. διείργειν δὲ σάκας μὲν, καὶ σογδιανοὺς τὸν ἰαξάρτην. καὶ σογδιανοὺς δὲ, βακτριανὴν τὸν ὦξον, μεταξὺ δὲ ὑρκανῶν, καὶ ἀρίων, ταπύρους οἰκεῖν. κύκλῳ δὲ περὶ τὴν θάλατταν μετὰ τοὺς ὑρκανούς, ἀμάρδους τε, καὶ ἀναριάκας. καὶ καδουσίους καὶ ἀλβανούς. καὶ κασπίους, καὶ οὐιτίους. τάχα δὲ, καὶ ἑτέρους μέχρι σκυθῶν. ἐπὶ θάτερα δὲ μέρη τῶν ὑρκανῶν δέρβικας. τοὺς δὲ καδουσίους συμψαύειν μήδων, καὶ ματιανῶν ὑπὸ τὸν παραχόαθραν. τὰ δὲ διαστήματα οὕτω λέγει. ἐπὶ μὲν τοῦ κασπίου ἐπὶ τὸν κῦρον, ὡς χιλίους ὀκτακοσίους σταδίους. ἔνθεν δ' ἐπὶ κασπίας πύλας πεντακισχιλίους ἑξακοσίους, εἶτα εἰς ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν ἀρίοις ἑξακισχιλίους τετρακοσίους εἶτ' εἰς βάκτραν τὴν πόλιν ἣ καὶ ζαριάσπα καλεῖται, τρισχιλίους ὀκτακοσίους ἑβδομήκοντα. λέγει δὲ, καὶ οὕτω τὰ διαστήματα, ἀπὸ κασπίων πυλῶν εἰς ἰνδούς, εἰς μὲν ἑκατόμπυλον, χιλίους ἐννακοσίους ἑξήκοντα φασίν. εἰς δ' ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν ἀρίοις, τετρακισχιλίους πεντακοσίους τριάκοντα. εἶτ' εἰς προφθασίαν τὴν ἐν δράγγῃ, χιλίους ἑξακοσίους. οἱ δὲ πεντακοσίους. εἶτ' εἰς ἀραχωτοὺς τὴν πόλιν τετρακισχιλίους ἑκατὸν εἴκοσιν. εἶτ' εἰς ὀρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ βάκτρων τρίοδον, δισχιλίους. εἶτ' εἰς τὰ ὅρια τῆς ἰνδικῆς χιλίους. ὁμοῦ μύριοι πεντακισχίλιοι πεντακόσιοι. ἐπ' εὐθείας δὲ τῷ διαστήματι τούτῳ τὸ συνεχὲς δεῖ νοεῖν τὸ ἀπὸ τοῦ ἰνδοῦ μέχρι τῆς ἑῴας θαλάττης μῆκος, τῆς ἰνδικῆς. ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς σάκας. ἡ δὲ παρθυαία, πολλὴ μὲν οὐκ ἔστι. συνετέλει γοῦν μετὰ τῶν ὑρκανῶν τὰ περσικά. καὶ μετὰ ταῦτα τῶν μακεδόνων κρατούντων ἐπὶ χρόνον πολύν. πρὸς δὲ τῇ σμικρότητι δασεῖα καὶ ὀρεινή ἐστι, καὶ ἄπορος. ὥστε διὰ τοῦτο δρόμῳ διεξίασι, τὸν ἑαυτῶν οἱ βασιλεῖς ὄχλον. οὐ δυναμένης τρέφειν τῆς χώρας οὐδ' ἐπὶ μικρόν. ἀλλὰ νῦν ηὔξηται. μέρη δ' ἐστὶ τῆς παρθυηνῆς, ἥ τε κωμισηνή. καὶ ἡ χωρηνή. σχεδὸν δ' ἔτι, καὶ τὰ μέχρι πυλῶν κασπίων, καὶ ῥαγῶν καὶ ταπύρων. ὄντα τῆς μηδείας πρότερον. ἔστι δ' ἀπάμεια, καὶ ἡράκλεια πόλεις περὶ τὰς ῥάγας. εἰσὶ δ' ἀπὸ κασπίων πυλῶν εἰς μὲν ῥάγας στάδιοι πεντακόσιοι ὥς φησιν ἀπολλόδωρος. εἰς δ' ἑκατόμπυλον τὸ τῶν παρθυαίων βασίλειον, χίλιοι διακόσιοι ἑξήκοντα. τοὔνομα δὲ ταῖς ῥάγαις ἀπὸ τῶν γενομένων σεισμῶν γενέσθαι φασίν, ὑφ' ὧν πόλεις τε συχναὶ καὶ κῶμαι δισχίλιαι ὥς φησι ποσειδώνιος ἐξέπτησαν. τοὺς δὲ ταπύρους οἰκεῖν φασι δερβίκων τε, καὶ ὑρκανῶν. ἱστοροῦσι δὲ περὶ τῶν ταπύρων ὅτι αὐτοῖς εἴη νόμιμον, τὰς γυναῖκας τὰς γαμετὰς ἐκδιδόναι ἑτέροις ἀνδράσιν ἐπειδὰν ἐξ αὐτῶν ἀνέλωνται δύο ἢ τρία τέκνα. καθάπερ, καὶ κάτων ὀρτησίῳ δεηθέντι ἐξέδωκε τὴν μαρκίαν ἐφ' ἡμῶν. κατὰ παλαιὸν ῥωμαίων ἔθος. νεωστὶ δ' ἐν τῶν δὲ τῶν ἔξω τοῦ ταύρου διὰ τὸ πρὸς ἀλλήλους εἶναι τοὺς τῆς συρίας, καὶ τῆς μηδίας βασιλέας τοὺς

ἔχοντας

ἔχοντας ταῦτα. πρῶτον μὲν τὴν βακτριανὴν ἀπέστησαν οἱ πεπιστευμένοι. καὶ τὴν ἐγγὺς αὐτῆς πᾶσαν, οἱ περὶ εὐθύδημον. ἔπειτ' ἀρσάκης ἀνὴρ σκύθης τῶν δαῶν τινὰς ἔχων τοὺς πάρνους καλουμένους νομάδας, παροικοῦντας τὸν ὦχον, ἐπῆλθεν ἐπὶ τὴν παρθυαίαν. καὶ ἐκράτησεν αὐτῆς. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἀσθενὴς ἦν διαπολεμῶν πρὸς τοὺς ἀφαιρεθέντας τὴν χώραν. καὶ αὐτὸς, καὶ οἱ διαδεξάμενοι ἐκεῖνον. ἔπειθ' οὕτως ἴσχυσαν ἀφαιρούμενοι τὴν πλησίον ἀεὶ διὰ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις κατορθώσεις, ὥστε τελευτῶντες, ἁπάσης τῆς ἐντὸς εὐφράτου κύριοι κατέστησαν, ἀφείλοντο δὲ, καὶ τῆς βακτριανῆς μέρος βιασάμενοι τοὺς σκύθας. καὶ ἔτι πρότερον τοὺς περὶ εὐκρατίδαν. καὶ νῦν ἐπάρχουσι τοσαύτης γῆς, καὶ τοσούτων ἐθνῶν ὥστε ἀντίπαλοι τῶν ῥωμαίων τρόπον τινὰ γεγόνασι, κατὰ μέγεθος τῆς ἀρχῆς. αἴτιος δ' ὁ βίος αὐτῶν, καὶ τὰ ἔθη, τὰ ἔχοντα πολὺ μὲν τὸ βάρβαρον, καὶ τὸ σκυθικόν. πλέον μέντοι τὸ χρήσιμον πρὸς τὴν ἡγεμονίαν, καὶ τὴν ἐν τοῖς πολέμοις κατόρθωσιν. φασὶ δὲ τοὺς πάρνους δάας μετανάστας εἶναι ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς μαιώτιδος δαῶν. οὓς ξανδίους ἢ παρίους καλοῦσιν. οὐ πάνυ δ' ὡμολόγηται δάας εἶναί τινας τῶν ὑπὲρ τῆς μαιώτιδος σκυθῶν. ἀπὸ τούτων δ' οὖν ἕλκειν φασὶ τὸ γένος τὸν ἀρσάκην. οἱ δὲ, βακτριανὸν λέγουσιν αὐτόν. φεύγοντα δὲ τὴν αὔξησιν τῶν περὶ διόδοτον, ἀποστῆσαι τὴν παρθυαίαν. εἰρηκότες δὲ πολλὰ περὶ τῶν παρθικῶν νομίμων ἐν τῇ ἕκτῃ τῶν ἱστορικῶν ὑπομνημάτων βίβλῳ, δευτέρᾳ δὲ, τῶν μετὰ πολύβιον, παραλείψομεν ἐνταῦθα, μὴ ταυτολογεῖν δόξωμεν. τοσοῦτον εἰπόντες μόνον. ὅτι τῶν παρθυαίων συνέδριόν φησι ποσειδώνιος εἶναι διττόν. τὸ μὲν, συγγενῶν. τὸ δὲ, συγγενῶν, καὶ μάγων. ἐξ ὧν ἀμφοῖν τοὺς βασιλεῖς καθίστασθαι.

ἡ δ' ἀρία, καὶ ἡ μαργιανὴ, ἀκράτιστα χωρία ἐστὶ ταύτῃ, τῇ μὲν, ὑπὸ τῶν ὀρῶν ἐγκλειόμενα, τῇ δ' ἐν πεδίοις τὰς οἰκήσεις ἔχοντα. τὰ μὲν οὖν ὄρη νέμονται σκηνῖταί τινες. τὰ δὲ πεδία ποταμοῖς διαρρεῖται. ποτίζουσι δ' αὐτὰ τὰ μὲν, τῷ ἀρίῳ. τὰ δὲ μάργῳ. ὁμορεῖ δ' ἡ ἀρία τῇ βακτριανῇ, καὶ τὴν ὑποστᾶσαν ὄρει τῷ ἔχοντι τὴν βακτριανήν. διέχει δὲ τὴν ὑρκανίαν περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους. συντελὴς δ' ἦν αὐτῇ καὶ ἡ δραγγιανὴ μέχρι καρμανίας. τὸ μὲν πλέον τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα. ἔχουσα μέντοι τινὰ τῶν μερῶν, καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς πλησιάζοντα τοῖς κατὰ τὴν ἀρίαν. καὶ ἡ ἀραχωσία δ' οὐ πολὺ ἄπωθέν ἐστι. καὶ αὕτη τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα. καὶ μέχρι τοῦ ἰνδοῦ ποταμοῦ τεταμένη μέρος οὖσα τῆς ἀριανῆς. μῆκος δὲ τῆς ἀρίας ὅσον δισχίλιοι στάδιοι. πλάτος δὲ τριακόσιοι τοῦ πεδίου. πόλεις δὲ ἀρτακάηνα. καὶ ἀλεξάνδρεια, καὶ ἀχαΐα. ἐπώνυμοι τῶν κτισάντων. εὐοινεῖ δὲ σφόδρα ἡ γῆ. καὶ γὰρ εἰς τριγονίαν παραμένει ἐν ἀπιττώτοις ἄγγεσι. παραπλησία δ' ἐστὶ, καὶ ἡ μαργιανή. ἐρημίαις δὲ περιέχεται τὸ πεδίον. θαυμάσας δὲ τὴν εὐφυΐαν ὁ σωτὴρ ἀντίοχος. τεῖχος περιέβαλε κύκλον ἔχον χιλίων, καὶ πεντακοσίων σταδίων. πόλιν δὲ ἔκτισεν ἀντιόχειαν. εὐάμπελος δὲ, καὶ αὕτη ἡ γῆ. φασὶ δὲ τὸν πυθμένα εὑρίσκεσθαι πολλάκις δυεῖν ἀνδράσι περιληπτόν. τὸν δὲ βότρυν δίπηχυν. τῆς δὲ βακτρίας μέρη μέν τινα τῇ ἀρίᾳ παραβέβληται πρὸς ἄρκτον. τὰ πολλὰ δ' ὑπέρκειται πρὸς ἕω. πολλὴ δ' ἐστὶ, καὶ πάμφορος. πλὴν ἐλαίου. τοσοῦτον δ' ἴσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες ἕλληνες αὐτὴν διὰ τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας, ὥστε τῆς τε ἀριανῆς ἐπεκράτουν, καὶ τῶν ἰνδῶν. ὥς φασιν ἀπολλώνιος ὁ ἀτραμμυτηνός. καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο, ἢ ἀλέξανδρος. καὶ μάλιστα μένανδρος. εἴγε καὶ τὸν ὕπανιν διέβη πρὸς ἕω. καὶ μέχρι τοῦ ἰσάμου προῆλθε. τὰ μὲν γὰρ αὐτός, τὰ δὲ δημήτριος ὁ εὐθυδήμου υἱὸς τοῦ βακτρίων βασιλέως. οὐ μόνον δὲ τὴν παταληνὴν κατέσχον, ἀλλὰ καὶ τῆς ἄλλης παραλίας τήν τε τεσσαριόστου καλουμένην, καὶ τὴν σιγέρτιδος βασιλείαν. καθόλου δέ φησιν ἐκεῖνος τῆς συμπάσης ἀριανῆς. πρόσχημα εἶναι τὴν βακτριανήν. καὶ δὴ καὶ μέχρι σηρῶν, καὶ φαυνῶν ἐξέτεινον τὴν ἀρχήν. πόλεις δ' εἶχον τά τε βάκτρα, ἥνπερ, καὶ ζαριάσπαν καλοῦσιν. ἣν διαρρεῖ ὁμώνυμος ποταμὸς ἐμβάλλων εἰς τὸν ὦξον. καὶ δάραψαν. καὶ ἄλλας πλείους. τούτων δ' ἦν καὶ ἡ εὐκρατιδία τοῦ ἄρξαντος ἐπώνυμος. οἱ δὲ κατασχόντες αὐτὴν ἕλληνες, καὶ εἰς σατραπείας διῃρήκασιν. ὧν τήν τε ἀσπιώνου, καὶ τὴν τουριούαν ἀφῄρηντο εὐκρατίδην οἱ παρθυαῖοι. ἔσχον δὲ, καὶ τὴν σογδιανὴν ὑπερκειμένην πρὸς ἕω τῆς βακτριανῆς. μεταξὺ τοῦ τε ὤξου ποταμοῦ. ὃς ὁρίζει τήν τε τῶν βακτρίων, καὶ τὴν τῶν σογδίων. καὶ τοῦ ἰαξάρτου. οὗτος δὲ καὶ τοὺς σογδίους ὁρίζει, καὶ τοὺς νομάδας. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν οὐ πολὺ διέφερον τοῖς βίοις καὶ τοῖς ἤθεσι τῶν νομάδων οἵ τε σογδιανοί, καὶ οἱ βακτριανοί. μικρὸν δ' ὅμως ἡμερώτερα ἦν τὰ τῶν βακτριανῶν. ἀλλὰ καὶ περὶ τούτων οὐ τὰ βέλτιστα λέγουσιν οἱ περὶ ὀνησίκριτον. τοὺς γὰρ ἀπειρηκότας διὰ νόσον, ἢ γῆρας ζῶντας παραβάλλεσθαι τρεφομένοις κυσὶν, ἐπίτηδες πρὸς τοῦτο, οὓς ἐνταφιαστὰς καλοῦσι τῇ πατρῴᾳ γλώττῃ. καὶ ὁρᾶσθαι τὰ μὲν ἔξω τείχους τῆς μητροπόλεως τῶν βάκτρων καθαρά. τῶν δ' ἐντὸς τὸ πλέον ἀστέων πλῆρες ἀνθρωπίνων. καταλῦσαι δὲ τὸν νόμον ἀλέξανδρον. τοιαῦτα δέ πως καὶ τὰ περὶ τοὺς κασπίους ἱστοροῦσι. τοὺς γὰρ γονέας ἐπειδὰν ἑβδομήκοντα ἔτη γεγονότες τυγχάνωσιν, ἐγκλεισθέντας λιμοκτονεῖν. τοῦτο μὲν οὖν ἀνεκτότερον. καὶ τῷ οἰκείῳ νόμῳ παραπλήσιον. καίπερ ὂν σκυθικόν. πολὺ μέντοι σκυθικώτερον τὸ τῶν βακτριανῶν. καὶ δὴ διαπορεῖν ἦν, εἰ ἀλέξανδρος τοιαῦτα κατελάμβανε ἐνταῦθα, τί χρὴ

ποιεῖν τὰ ἔθη τῶν πρώτων Περσῶν, καὶ τῶν ἔτι πρότερον ἡγεμόνων, ὅπερ εἰκὸς ἦν παρ' αὐτοῦ νε-
νομίσθαι. φασὶ δ' οὖν ὀκτὼ πόλεις τὸν Ἀλέξανδρον ἔν τε τῇ Βακτριανῇ καὶ τῇ Σογδιανῇ κτίσαι. τι-
νὰς δὲ κατασκάψαι. ὧν Καριάτας μὲν τῆς Βακτριανῆς, ἐν ᾗ Καλλισθένης συνελήφθη, καὶ παρεδόθη
φυλακῇ. Μαράκανδα δὲ τῆς Σογδιανῆς, καὶ τὰ Κῦρα, ἔσχατον ὄν, Κύρου κτίσμα ἐπὶ τῷ Ἰαξάρτῃ ποτα-
μῷ κείμενον, ὅπερ ἦν ὅριον τῆς Περσῶν ἀρχῆς. κατασκάψαι δὲ τὸ κτίσμα τοῦτο καί περ ὄντα φι-
λόκυρον, διὰ τὰς πυκνὰς ἀποστάσεις. ἑλεῖν δὲ καὶ πέτρας ἐρυμνὰς σφόδρα ἐκ προδοσίας. τήν τε
ἐν τῇ Βακτριανῇ τὴν Σισιμίθρου. ἐν ᾗ εἶχεν Ὀξυάρτης τὴν θυγατέρα Ῥωξάνην, καὶ τὴν ἐν τῇ Σογδιανῇ
καὶ τὴν τοῦ Ὄξου. οἱ δ' Ἀριαμάζου φασί. τὴν μὲν οὖν Σισιμίθρου πεντεκαίδεκα σταδίων ἱστοροῦσι τὸ ὕψος,
ὀγδοήκοντα δὲ τὸν κύκλον. ἄνω δ' ἐπίπεδον καὶ εὔγαιον. ὅσον πεντακοσίους ἄνδρας τρέφειν δυνα-
μένην. ἐν ᾗ, καὶ ξενίας τυχεῖν πολυτελοῦς. καὶ γάμους ἀγαγεῖν Ῥωξάνης τῆς Ὀξυάρτου θυγατρὸς,
τὸν Ἀλέξανδρον. τὴν δὲ τῆς Σογδιανῆς διπλασίαν τὸ ὕψος φασί. περὶ τούτους δὲ τοὺς τόπους καὶ τὸ
τῶν Βραγχιδῶν ἄστυ ἀνελεῖν. οὓς Ξέρξης μὲν ἱδρύσαι αὐτόθι. συναπάραντας αὐτῷ ἑκόντας ἐκ τῆς
οἰκείας, διὰ τὸ παραδοῦναι τὰ χρήματα τοῦ θεοῦ τὰ ἐν Διδύμοις, καὶ τοὺς θησαυρούς. ἐκεῖνον δ' ἀνε-
λεῖν μυσαττόμενον τὴν ἱεροσυλίαν καὶ τὴν προδοσίαν. τὸν δὲ διὰ τῆς Σογδιανῆς ῥέοντα ποταμὸν, καὶ
Πολυτίμητον Ἀριστόβουλον, τῶν Μακεδόνων θεμένων καθάπερ, καὶ ἄλλα πολλὰ, τὰ μὲν καινὰ ἔθεσαν
τὰ δὲ παρονόμασαν ἄρδοντα δὲ τὴν χώραν, ἐκπίπτειν εἰς ἔρημον, καὶ ἀμμώδη γῆν. καταπίνεσθαί
τε εἰς τὴν ἄμμον, ὡς καὶ τὸν Ἄρειον τὸν δι' Ἀρείων ῥέοντα. τοῦ δὲ Ὤχου ποταμοῦ πλησίον ὀρύττοντας, εὑ-
ρεῖν ἐλαίου πηγὴν λέγουσιν. εἰκὸς δὲ ὥσπερ νιτρώδη τινὰ, καὶ στύφοντα ὑγρὰ, καὶ ἀσφαλτώδη, καὶ
θειώδη διαρρεῖν τὴν γῆν, οὕτω καὶ λιπαρὰ εὑρίσκεσθαι. τὸ δὲ σπάνιον ποιεῖ τὴν παραδοξίαν. ῥεῖν
δὲ Ὦχον, οἱ μὲν, διὰ τῆς Βακτριανῆς φασίν. οἱ δὲ παρ' αὐτήν. καὶ οἱ μὲν, ἕτερον τοῦ Ὄξου μέχρι τῶν
ἐκβολῶν, νοτιώτερον ἐκείνου. ἀμφοτέρων δ' ἐν τῇ Ὑρκανίᾳ τὰς εἰς τὴν θάλατταν ὑπάρχειν ἐκρύσεις. οἱ
δὲ, κατ' ἀρχὰς μὲν, ἕτερον. συμβάλλειν δ' εἰς ἓν τὸ τοῦ Ὄξου ῥεῖθρον. πολλαχοῦ, καὶ ἓξ καὶ ἑπτὰ στα-
δίων ἔχοντα τὸ πλάτος, ὁ μέντοι, Ἰαξάρτης ἀπ' ἀρχῆς μέχρι τέλους ἕτερός ἐστι τοῦ Ὄξου. καὶ εἰς μὲν
τὴν αὐτὴν τελευτῶν θάλατταν. αἱ δ' ἐκβολαὶ διέχουσιν ἀλλήλων ὥς φησι Πατροκλῆς, παρασάγγας
ὡς ὀγδοήκοντα. τὸν δὲ παρασάγγην τὸν Περσικὸν, οἱ μὲν ἑξήκοντα σταδίων φασίν. οἱ δὲ, τριακοσίων τετ-
ταράκοντα. ἀναπλεόντων δ' ἡμῶν τὸν Νεῖλον. ἄλλοτ' ἄλλοις μέτροις χρώμενοι τὰς σχοίνους, ὠνόμαζον
ἀπὸ πόλεως εἰς πόλιν. ὥστε τὸν αὐτὸν τῶν σχοίνων ἀριθμὸν, ἀλλαχοῦ μὲν μείζω παρέχειν πλοῦν ἀλ-
λαχοῦ δὲ βραχύτερον. οὕτως ἐξ ἀρχῆς παραδεδομένον, καὶ φυλαττόμενον μέχρι τοῦ νῦν. μέχρι μὲν,
δὴ τῆς Σογδιανῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ἰόντι ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας, γνώριμα ὑπῆρξε τὰ ἔθνη, καὶ τοῖς Πέρ-
σαις πρότερον τὰ ἔξω τοῦ Ταύρου. καὶ τοῖς Μακεδόσι μετὰ ταῦτα, καὶ τοῖς Παρθυαίοις. τὰ δ' ἐπέ-
κεινα ἐπ' εὐθείας, ὅτι μὲν Σκυθικά ἐστιν ἐκ τῆς ὁμοειδίας εἰκάζεται. στρατεῖαι δ' οὐ γεγόνασιν ἐπ' αὐ-
τοὺς ἡμῖν γνώριμοι. καθάπερ οὐδὲ περὶ τοὺς βορειοτάτους τῶν νομάδων. ἐφ' οὓς ἐπεχείρησε μὲν ὁ Ἀ-
λέξανδρος ἄγειν στρατείαν, ὅτε τὸν Βῆσσον μετῄει καὶ τὸν Σπιταμένην. ζωγρίᾳ δ' ἀναχθέντος τοῦ Βήσ-
σου, τοῦ δὲ Σπιταμένους ὑπὸ τῶν βαρβάρων διαφθαρέντος. ἐπαύσατο τῆς ἐπιχειρήσεως. οὐχ ὁμο-
λογοῦσι δ' ὅτι περιέπλευσάν τινες ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ὑρκανίαν. ὅτι δὲ δυνατὸν, Πατροκλῆς
εἴρηκε. λέγεται δὲ διότι τοῦ Ταύρου, τὸ τελευταῖον ὃ καλοῦσιν, Ἴμαιον, τῇ Ἰνδικῇ θαλάττῃ ξυνάπτον.
ὂν οὔτε προὔχει πρὸς ἕω τῆς Ἰνδικῆς μᾶλλον. οὔτ' εἰσέχει. παριόντι δ' εἰς τὸ βόρειον πλευρὸν, ἀεί τι
τοῦ μήκους ὑφαιρεῖ τοῦ πλάτους ἡ θάλαττα. ὥστ' ἀποφαίνειν μείουρον πρὸς ἕω τὴν νῦν ὑπογραφομέ-
νην μερίδα τῆς Ἀσίας. ἣν ὁ Ταῦρος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸν ὠκεανὸν τὸν πληροῦντα τὸ Κάσπιον πέλαγος. μῆ-
κος δ' ἐστὶ ταύτης τῆς μερίδος τὸ μέγιστον ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης ἐπὶ τὸν ὠκεανὸν τὸν κατὰ τὸ Ἴμαιον, τρισμυ-
ρίων που σταδίων παρὰ τὴν ὀρεινὴν τοῦ Ταύρου τῆς πορείας οὔσης. πλάτος δ' ἔλαττον. τῶν μυρίων εἴρηται γὰρ
ὅτι περὶ τετρακισμυρίους ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς ἑῴας θαλάττης τῆς κατὰ Ἰνδούς.
ἐπὶ δ' Ἰσσὸν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων ἄκρων τῶν κατὰ Στήλας. ἄλλοι τρισμύριοι. ἔστι δὲ ὁ μυχὸς τοῦ Ἰσσικοῦ
κόλπου μικρὸν ἢ οὐδὲν Ἀμισοῦ ἑωθινώτερος. τὸ δὲ ἀπὸ Ἀμισοῦ ἐπὶ τὴν Ὑρκανίαν γῆν, περὶ μυρίους
ἐστὶ σταδίους. παράλληλον ὂν τῷ ἀπὸ τοῦ Ἰσσικοῦ λεχθέντι ἐπὶ τοὺς Ἰνδούς, λείπεται δὴ τὸ λεχθὲν
μῆκος ἐπὶ τὴν ἕω τῆς περιοδευομένης νῦν μερίδος, οἱ τρισμύριοι στάδιοι. πάλιν δὲ τοῦ πλάτους τῆς
μεγίστης οἰκουμένης ὄντος περὶ τρισμυρίους σταδίους χλαμυδοειδοῦς οὔσης, τὸ διάστημα τοῦτ' ἐγγὺς ἂν
εἴη τοῦ μεσημβρινοῦ τοῦ διὰ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης γραφομένου καὶ τῆς Περσικῆς, εἴπερ ἐστὶ τὸ μῆ-
κος τῆς οἰκουμένης ἑπτὰ μυριάδες. εἰ οὖν ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας ἐπὶ τὴν Ἀρτεμίταν τὴν ἐν τῇ Βαβυλω-
νίᾳ στάδιοί εἰσιν ὀκτακισχίλιοι καθάπερ εἴρηκεν Ἀπολλόδωρος ἐκ τῆς Ἀρτεμισίας, ἐκεῖθεν δ' ἐπὶ τὸ
στόμα τῆς κατὰ Πέρσας θαλάττης ἄλλο τοσοῦτον ἐστί. καὶ πάλιν τοσοῦτον ἢ μικρὸν ἀπολείπων εἰς τὰ
ἀνταίροντα τοῖς ἄκροις τῆς Αἰθιοπίας. λοιπὸν ἂν εἴη τοῦ πλάτους τῆς οἰκουμένης τοῦ λεχθέντος ἀπὸ
τοῦ μυχοῦ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης ἐπὶ τοῦ στόματος αὐτῆς ὅσον εἰρήκαμεν. μειούρου δ' ὄντος τοῦ τμή-
ματος τούτου τῆς γῆς ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη γίνοιτ' ἂν τὸ σχῆμα προσόμοιον μαγειρικῇ κοπίδι. τοῦ μὲν

ὄρους ὑπὲρ αὐτῆς ὄντος, καὶ νουμηνίου κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς κνήμης. τῆς δ' ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ ὀρ-
καν(ί)ου παραλίας ἐπὶ τὰ μακρόν κατὰ θάτερον πλευρὸν, εἰς περιφορὰν, καὶ μείουρον γραμμὴν ἀ-
πολήγουσης. ἐπὶ μνηστέον δέ, καὶ τῶν παραδόξων ἐνίων ἃ θρυλλοῦσι περὶ τῶν τελέως βαρβάρων, οἷον τῶν
περὶ τὸν καύκασον καὶ τὴν ἄλλην ὀρεινήν. τοῖς μὲν γὰρ νόμιμον εἶναι φασὶ δὲ τοῦ εὐριπίδου.

» Τὸν φῦντα θρηνεῖν εἰς ὅσα ἔρχεται κακά.
» Τὸν δ' αὖ θανόντα καὶ πόνων πεπαυμένον,
» Χαίροντας εὐφημοῦντας ἐκπέμπειν δόμων.

Ἑτέροις δὲ μηδένα ἀποκτείνειν τῶν ἐξαμαρτόντων τὰ μέγιστα. ἀλλ' ἐξορίζειν μόνον μετὰ τέκνων
ὑπεναντίως τοῖς δέρβιξι, καὶ γὰρ ἐπὶ μικροῖς οὗτοι σφάττουσι. σέβονται δὲ γῆν οἱ δέρβικες. θύ-
ουσι δ' οὐδὲν θῆλυ οὐδὲ ἐσθίουσι. τοὺς δὲ ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη γεγονότας σφάττουσι. ἀναλίσκουσι δὲ
τὰς σάρκας οἱ ἄγχιστα γένους, τὰς δὲ γραίας ἀπάγχουσιν. εἶτα θάπτουσι τοὺς δὲ ἐντὸς ἑβδομήκοντα
ἐτῶν ἀποθανόντας οὐκ ἐσθίουσιν, ἀλλὰ θάπτουσι. σίγυννοι δὲ τἆλλα μὲν περσίζουσιν. ἱππαρίοις δὲ χρῶν-
ται, μικροῖς δασέσιν. ἃ ὑπὸ ἱππότην μὲν ὀχεῖν οὐ δύνανται. τέθριππα δὲ ζευγνύουσιν. ἡνιοχοῦσι δὲ,
» γυναῖκες, ἐκ παίδων ἠσκημέναι. ἡ δ' ἄριστα ἡνιοχοῦσα, συνοικεῖ ᾧ βούλεται. τινὰς δ' ἐπιτηδεύειν
φασὶν, ὅπως ὡς μακροκεφαλώτατοι φανοῦνται, καὶ προπεπτωκότες τοῖς μετώποις, ὥστε ὑπερκύπτειν
» τῶν γενείων. ταπύρων δ' ἐστὶ καὶ τὸ τοὺς μὲν ἄνδρας μελανειμονεῖν, καὶ μακροκομεῖν, τὰς δὲ γυναῖκας
λευχειμονεῖν, καὶ βραχυκομεῖν, οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ δερβίκων, καὶ ὑρκανῶν. καὶ ὁ ἀνδρειότατός τις κριθεὶς
γαμεῖ ἣν βούλεται. κάσπιοι δὲ τοὺς ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη λιμοκτονήσαντες, εἰς τὴν ἐρημίαν ἐκτι-
θέασιν. ἄποθεν δὲ σκοπεύοντες, ἐὰν μὲν ὑπ' ὀρνίθων κατασπωμένους ἀπὸ τῆς κλίνης ἴδωσιν, εὐδαιμονί-
ζουσι, ἐὰν δὲ ὑπὸ θηρίων ἢ κυνῶν, ἧττον. ἐὰν δ' ὑπὸ μηδενὸς, κακοδαιμονίζουσι. ἐπεὶ δὲ τὰ βόρεια μέρη τῆς
ἀσίας ποιεῖ ὁ ταῦρος ἅ δὴ καὶ ἐντὸς τοῦ ταύρου καλοῦσιν; εἰπεῖν προειλόμεθα πρῶτον περὶ τούτου. ταῦτα δ'
ἐστὶ καὶ τὰ ἐν τοῖς ὄρεσιν αὐτοῖς ἢ ὅλα. ἢ τὰ πλεῖστα. ὅσα μὲν τῶν κασπίων πυλῶν ἑωθινώτερα ἐστὶν ἁπλού-
στεραι ἔχει τὴν περιήγησιν διὰ τὴν ἀγριότητα. οὐ πολὺ τε ἂν, διαφέροι τοῦδε, ἢ τοῦδε, τοῦ κλίματος
συγκαταλεχθέντα τὰ δ' ἑσπέρια πάντα δίδωσιν εὐπορίαν τοῦ λέγειν περὶ αὐτῶν ὥστ' ἔδει προάγειν
ἐπὶ τὰ παρακείμενα ταῖς κασπίαις πύλαις. παράκειται δὲ ἡ μηδία πρὸς δύσιν χώρα πολλά. καὶ
δυναστεύσασά ποτε, καὶ ἐν μέσῳ τῷ ταύρῳ κειμένη, πολυσχιδεῖ κατὰ ταῦτα ὑπάρχοντι τὰ μέρη.
καὶ αὐλῶνας ἐμπεριλαμβάνοντι μεγάλους, καθάπερ, καὶ τῇ ἀρμενίᾳ τοῦτο συμβέβηκε. τὸ γὰρ ὄρος
τοῦτο ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς καρίας καὶ λυκίας. ἀλλ' ἐνταῦθα μὲν οὔτε πλάτος οὔτε ὕψος ἀξιόλο-
γον δείκνυσιν. ἐξαίρεται δὲ πολὺ, πρῶτον κατὰ τὰς χελιδονέας. αὗται δ' εἰσὶ νῆσοι κατὰ τὴν ἀρχὴν
τῆς παμφύλων παραλίας. ἐπὶ δὲ τὰς ἀνατολὰς ἐκτεινόμενος, αὐλῶνας μακροὺς ἀπολαμβάνει,
τοὺς τῶν κιλίκων. εἶτα τῇ μὲν, τὸ ἀμανὸν ἀπ' αὐτοῦ σχίζεται. τῇ δὲ, ὁ ἀντίταυρος, ἐν ᾧ τὰ κόμανα ἵ-
δρυται τὰ ἐν τοῖς ἄνω λεγομένοις καππάδοξιν. οὗτος μὲν οὖν ἐν τῇ καταονίᾳ τελευτᾷ. τὸ δὲ ἀμανὸν
ὄρος μέχρι τοῦ εὐφράτου καὶ τῆς μελιτηνῆς πρόεισι, καθ' ἣν ἡ κομμαγηνὴ τῇ καππαδοκίᾳ παράκειται.
ἐκδέχεται δὲ, τὰ πέραν τοῦ εὐφράτου ὄρη, συνεχῆ μὲν τοῖς προειρημένοις, πλὴν ὅσον διακόπτει ῥέων
διὰ μέσων ὁ ποταμός. πολλὴν δ' ἐπίδοσιν λαμβάνει εἰς τὸ ὕψος, καὶ τὸ πλάτος καὶ τὸ πολυσχιδές. τὸ
δ' οὖν νοτιώτατον μάλιστα ἐστὶν ὁ ταῦρος ὁρίζων τὴν ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς μεσοποταμίας. ἐντεῦθεν δὲ ἀμ-
φότεροι ῥέουσιν οἱ τὴν μεσοποταμίαν ἐγκυκλούμενοι ποταμοὶ, καὶ συνάπτοντες. ἀλλήλοις ἐγγὺς κα-
τὰ τὴν βαβυλωνίαν, εἶτα ἐκδιδόντες εἰς τὴν κατὰ πέρσας θάλατταν, ὅ τε εὐφράτης, καὶ ὁ τίγρις, ἐστὶ
δὲ μείζων ὁ εὐφράτης, καὶ πλείω διέξεισι χώραν, σκολιῷ τῷ ῥείθρῳ τὰς πηγὰς ἔχων ἐν τῷ προσβο-
ρείῳ μέρει τοῦ ταύρου. ῥέων δ' ἐπὶ δύσιν διὰ τῆς ἀρμενίας, τῆς μεγάλης καλουμένης, μέχρι τῆς μικρᾶς
ἐν δεξιᾷ ἔχων ταύτην. ἐν ἀριστερᾷ δὲ, τὴν ἀκιλισηνήν. εἶτα ἐπιστρέφει πρὸς νότον συνάπτει δὲ κατὰ τὴν ἐπι-
στροφὴν τοῖς καππαδοκῶν ὁρίοις. δεξιᾷ δὲ ταῦτα ἀφεὶς, καὶ τὰ τῶν κομμαγηνῶν. ἀριστερᾷ δὲ τὴν ἀ-
κιλισηνὴν, καὶ σωφηνὴν τῆς μεγάλης ἀρμενίας πρόεισιν ἐπὶ τὴν συρίαν. καὶ λαμβάνει πάλιν ἄλ-
λην ἐπιστροφὴν εἰς τὴν βαβυλωνίαν, καὶ τὸν περσικὸν κόλπον. ὁ δὲ τίγρις ἐκ τοῦ αὐτοῦ ὄρους ἐνεχθεὶς
ἐπὶ τὴν σελεύκειαν, συνάπτει τῷ εὐφράτῃ πλησίον, καὶ ποιεῖ τὴν μεσοποταμίαν πρὸς αὐτόν. εἶτ' ἐκ-
δίδωσι καὶ αὐτὸς εἰς τὸν αὐτὸν κόλπον. διέχουσι δὲ ἀλλήλων, αἱ πηγαὶ τοῦ τε εὐφράτου, καὶ τοῦ τίγρι-
δος, περὶ δισχιλίους καὶ πεντακοσίους σταδίους, ἀπὸ δ' οὖν τοῦ ταύρου πρὸς ἄρκτον. ἀποχίσεις πολλαὶ
γεγόνασι. μία μὲν ἡ τοῦ καλουμένου ἀντιταύρου. καὶ γὰρ ἐνταῦθα οὕτως ὠνομάζετο, ὁ τὴν σωφηνὴν
ἀπολαμβάνων ἐν αὐλῶνι μεταξὺ κείμενον αὐτοῦ τε, καὶ τοῦ ταύρου, πέραν δὲ τοῦ εὐφράτου κατὰ τὴν
μικρὰν ἀρμενίαν ἐφεξῆς τῷ ἀντιταύρῳ πρὸς ἄρκτον ἐπεκτείνεται μέγα ὄρος, καὶ πολυσχιδές. καλοῦσι
δὲ τὸ μὲν, αὐτοῦ πολυάρρην. τὸ δὲ μοσχικὰ ὄρη τὸ δ' ἄλλοις ὀνόμασι. ταῦτα δ' ἀπολαμβάνει τὴν ἀρ-
μενίαν ὅλην μέχρις ἰβήρων καὶ ἀλβανῶν. εἶτ' ἀλλ' ἐπανίσταται πρὸς ἕω τὴν ὑπερκειμένην τῆς κα-
σπίας θαλάττης μέχρι μηδίας, τῆς τε ἀτροπατίου τὰ ὑπερκείμενα τῆς κασπίας θαλάττης μέχρι
μηδίας. τῆς τε ἀτροπατίου καὶ τῆς μεγάλης, καλοῦσι δὲ καὶ ταῦτα τὰ μέρη πάντα τῶν ὀρῶν

παραχοάθραι. καὶ τὰ μέχρι τῶν κασπίων πυλῶν, καὶ ἐπέκεινα ἔτι πρὸς τὰς ἀνατολὰς τὰ συνά-
πτοντα τῇ ἀρίᾳ. τὰ μὲν δὴ πρόσβορα ὄρη οὕτω καλοῦσι. τὰ δὲ νότια τὰ πέραν τοῦ εὐφράτου τῆς
καππαδοκίας, καὶ τῆς κομμαγηνῆς πρὸς ἕω τείνοντα, κατ' ἀρχὰς μὲν αὐτὸ τοῦτο καλεῖται ταῦρος
διορίζων τὴν σωφηνὴν, καὶ τὴν ἄλλην ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς μεσοποταμίας. τινὲς δὲ γορδυαῖα ὄρη κα-
λοῦσιν. ἐν δὲ τούτοις ἐστὶ, καὶ τὸ μάσιον, τὸ ὑπερκείμενον τῆς νισίβιος ὄρος. καὶ τῶν τιγρανοκέρτων.
ἔπειτα ἐξαίρεται πλέον, καὶ καλεῖται νιφάτης. ἐνταῦθα δέ που, καὶ τοῦ τίγριδος. πηγαὶ κατὰ
τὸ νότιον τῆς ὀρεινῆς πλευρόν. εἶτ' ἀπὸ τοῦ νιφάτου μᾶλλον ἔτι, καὶ μᾶλλον ἡ ῥάχις ἐκτεινομένη, τὸ
ζάγριον ὄρος ποιεῖ τὸ διορίζον τὴν μηδίαν καὶ τὴν βαβυλωνίαν. μετὰ δὲ τὸ ζάγριον ἐκδέχεται ὑπὲρ
μὲν τῆς βαβυλωνίας, ἥ τε τῶν ἐλυμαίων ὀρεινὴ καὶ ἡ τῶν παραιτακηνῶν. ὑπὲρ δὲ, τῆς μηδίας ἡ τῶν
κοσσαίων. ἐν μέσῳ δ' ἐστὶν ἡ μηδία, καὶ ἡ ἀρμενία. πολλὰ μὲν ὄρη περιλαμβάνουσα. πολλὰ δὲ ὀροπέδια.
ὡσαύτως δὲ πεδία, καὶ αὐλῶνας μεγάλους. συχνὰ δὲ, καὶ ἔθνη τὰ περιοικοῦντα, μικρὰ ὀρεινὰ, καὶ
λῃστρικὰ τὰ πλείω. οὕτω μὲν τοίνυν τίθεμεν ἐντὸς τοῦ ταύρου τήν τε μηδίαν, ἧς εἰσὶ καὶ αἱ κάσπιοι
πύλαι, καὶ τὴν ἀρμενίαν. καθ' ἡμᾶς μὲν τοίνυν προσάρκτια ἂν εἴη τὰ ἔθνη ταῦτα ἐπειδὴ καὶ ἐντὸς τοῦ
ταύρου. ἐρατοσθένης δὲ πεποιημένος τὴν διαίρεσιν εἰς τὰ νότια μέρη κατὰ τὰ προσάρκτια, καὶ τὰς
ὑπ' αὐτοῦ λεγομένας σφραγίδας, τὰς μὲν βορείους καλῶν. τὰς δὲ νοτίους, ὅριον ἀποφαίνει τῶν κλι-
μάτων ἀμφοῖν τὰς κασπίους πύλας. εἰκότως οὖν τὰ νοτιώτερα πρὸς ἕω τείνοντα τῶν κασπίων πυ-
λῶν, νότια. ἂν ἀποφαίνοι ὧν ἐστὶ, καὶ ἡ μηδία, καὶ ἡ ἀρμενία, τὰ δὲ βορειότερα πρόσβορα. κατ' ἄλλην
καὶ ἄλλην διάταξιν τούτου συμβαίνοντος. τάχα δὲ οὐκ ἐπέβαλε τούτῳ. διότι ἔξω τοῦ ταύρου πρὸς
νότον οὐδέν ἐστιν οὔτε τῆς ἀρμενίας μέρος οὔτε τῆς μηδίας. ἡ δὲ μηδία δίχα διῄρηται. καλοῦσι δὲ τὴν
μὲν, μεγάλην. ἧς μητρόπολις τὰ ἐκβάτανα, μεγάλη πόλις. καὶ τὸ βασίλειον ἔχουσα τῆς μήδων ἀρ-
χῆς. διατελοῦσι δὲ, καὶ νῦν οἱ παρθυαῖοι τούτῳ χρώμενοι βασιλείῳ. καὶ θερίζουσί γε ἐνταῦθα οἱ βασι-
λεῖς. ψυχρὰ γὰρ ἡ μηδία, τὸ δὲ, χειμάδιον ἐστὶν αὐτοῖς, ἐν σελευκείᾳ τῇ ἐπὶ τῷ τίγρηδι πλησίον βα-
βυλῶνος, ἡ δ' ἑτέρα μερίς ἐστιν ἡ ἀτροπάτιος μηδία. τοὔνομα δ' ἔσχεν ἀπὸ τοῦ ἀτροπάτου ἡγεμόνος ὃς ἐ-
κώλυσεν ὑπὸ τοῖς μακεδόσι γενέσθαι, καὶ ταύτην μέρος οὖσαν τῆς μεγάλης μηδίας. καὶ δὴ, καὶ
βασιλεὺς ἀναγορευθεὶς ἰδίᾳ συνέταξε κατ' αὐτὴν τὴν χώραν ταύτην, καὶ ἡ διαδοχὴ σώζεται μέχρι
νῦν ἐξ ἐκείνου πρός τε τοὺς ἀρμενίων βασιλέας ποιησαμένων ἐπιγαμίας τῶν ὕστερον μὲν σύρων καὶ μετὰ ταῦ-
τα παρθυαίων. κεῖται δὲ ἡ χώρα τῇ μὲν ἀρμενίᾳ καὶ τῇ ματιανῇ πρὸς ἕω. τῇ δὲ μεγάλῃ μηδίᾳ, πρὸς δύσιν.
πρὸς δ' ἄρκτον ἀμφοτέραις. τοῖς δὲ περὶ τὸν μυχὸν τῆς ὑρκανίας θαλάττης, καὶ τῇ ματιανῇ, ἀπὸ νότου παρά-
κειται. ἔστι δ' οὐ μικρὰ κατὰ τὴν δύναμιν ὥς φησιν ἀπολλωνίδης. ἥ γε, καὶ κατὰ μυρίους ἱππέας δύ-
ναται παρέχεσθαι. πεζῶν δὲ τέτταρας μυριάδας λίμνην δ' ἔχει τὴν σπαῦτα. ἐν ᾗ ἅλες ἐπαν-
θοῦντες πήττονται. εἰσὶ δὲ κνησμώδεις, καὶ ἐπαλγεῖς. ἔλαιον δὲ τοῦ πάθους ἄκος. ὕδωρ δὲ γλυκὺ τοῖς
» καπυρωθεῖσιν ἱματίοις, εἴ τις κατ' ἄγνοιαν βάψειεν εἰς αὐτὴν πλύσεως χάριν. ἔχουσι δ' ἰσχυροὺς γείτονας
τοὺς ἀρμενίους καὶ τοὺς παρθυαίους, ὑφ' ὧν περικόπτονται πολλάκις. ἀντέχουσι δ' ὅμως καὶ ἀπολαμ-
βάνουσι τὰ ἀφαιρεθέντα. καθάπερ τὴν συμβάκην ἀπέλαβον παρὰ τῶν ἀρμενίων ὑπὸ ῥωμαίοις
γεγονότων, καὶ αὐτοὶ προσεληλύθασι τῇ φιλίᾳ τῇ πρὸς καίσαρα. θεραπεύουσι δ' ἅμα, καὶ τοὺς παρ-
θυαίους. βασίλειον δ' αὐτοῖς θερινὸν μὲν ἐν πεδίῳ ἱδρυμένον γάζα. καὶ ἐν φρουρίῳ ἐρυμνῷ οὐέρα. ὃ
περ ἀντώνιος ἐπολιόρκησε κατὰ τὴν ἐπὶ παρθυαίους στρατείαν. διέχει δὲ τοῦτο τοῦ ἀράξου ποταμοῦ
τοῦ ὁρίζοντος τήν τε ἀρμενίαν καὶ τὴν ἀτροπατηνὴν, σταδίους δισχιλίους, καὶ τετρακοσίους, ὥς φη-
σιν ἀδέλφιος ὁ τοῦ ἀντωνίου φίλος. συγγράψας τὴν ἐπὶ παρθυαίους στρατείαν αὐτοῦ. ἐν ᾗ πα-
ρῆν, καὶ αὐτὸς. ἡγεμονίαν ἔχων. ἔστι δὲ, τῆς χώρας ταύτης τὰ μὲν ἄλλ' εὐδαίμονα χωρία. ἡ δὲ προσάρ-
κτιος ὀρεινὴ, καὶ τραχεῖα, καὶ ψυχρὰ, καδουσίων κατοικία τῶν ὀρεινῶν, καὶ ἀμάρδων, καὶ ταπύ-
ρων. καὶ κυρτίων. καὶ ἄλλων τοιούτων. οἱ μετανάσται εἰσὶ, καὶ λῃστρικοί. καὶ γὰρ ὁ ζάγρος, καὶ ὁ νι-
φάτης κατεσπαρμένα ἔχουσι τὰ ἔθνη ταῦτα, καὶ οἱ ἐν τῇ περσίδι κύρτιοι, καὶ ἀμάρδοι. καὶ γὰρ οὕ-
τω λέγονται οἱ ἄμαρδοι. καὶ οἱ ἐν τῇ ἀρμενίᾳ μέχρι νῦν ὁμωνύμως προσαγορευόμενοι, τῆς αὐτῆς εἰ-
σιν ἰδέας. οἱ δ' οὖν καδούσιοι πλήθει τῷ πεζῷ μικρὸν ἀπολείπονται τῶν ἀριανῶν. ἀκοντισταὶ δ'
εἰσὶν ἄριστοι. ἐν δὲ τοῖς τραχέσιν ἀνθ' ἱππέων πεζοὶ διαμάχονται. ἀντωνίῳ δὲ χαλεπὴν τὴν στρατείαν ἐ-
ποίησεν οὐχ ἡ τῆς χώρας φύσις, ἀλλ' ὁ τῶν ὁδῶν ἡγεμὼν ὁ τῶν ἀρμενίων βασιλεὺς. ἀρταουάσδης.
ὃν ἐκεῖνος ἐπιβουλεύοντα αὐτῷ, σύμβουλον ἐποιεῖτο καὶ κύριον τῆς περὶ τοῦ πολέμου γνώμης. ἐ-
τιμωρήσατο μὲν οὖν αὐτόν. ἀλλ' ὀψὲ ἡνίκα πολλῶν αἴτιος κακῶν κατέστη ῥωμαίοις. καὶ αὐτὸς καὶ
ἐκεῖνος ὅς τις τὴν ἀπὸ τοῦ ζεύγματος ὁδὸν, τοῦ κατὰ τὸν εὐφράτην. μέχρι τοῦ ἅψασθαι τῆς ἀτροπα-
τηνῆς, ὀκτακισχιλίων σταδίων ἐποίησε πλέον ἢ διπλασίαν τῆς εὐθείας διὰ ὀρῶν, καὶ ἀνοδιῶν, καὶ
κυκλοπορείας. ἡ δὲ μεγάλη μηδία, τὸ μὲν παλαιὸν τῆς ἀσίας ἡγήσατο πάσης καταλύσασα τὴν
τῶν σύρων ἀρχήν. ὕστερον δ' ὑπὸ κύρου, καὶ περσῶν ἀφαιρεθεῖσα τὴν τοσαύτην ἐξουσίαν ἀστυάγου,
διεφύλαττεν ὅμως πολὺ τοῦ πατρίου ἀξιώματος. καὶ ἦν τὰ ἐκβάτανα χειμάδιον τοῖς πέρσαις

ὁμοίως δὲ, καὶ τοῖς ἐκείνους καταλύσασι μακεδόσι, τοῖς τὴν συρίαν ἔχουσι. καὶ νῦν ἔτι τοῖς παρθυ/
αίων βασιλεῦσι τὴν αὐτὴν παρέχεται χρείαν τε, καὶ ἀσφάλειαν. ὁρίζεται δ' ἀπὸ μὲν τῆς ἕω τῇ τε
παρθυαίων, καὶ τοῖς κοσσαίων ὄρεσι λῃστρικῶν ἀνθρώπων. οἱ τοξότας μυρίους καὶ τρισχιλίους πα/
ρέσχοντό ποτε ἐλυμαίοις συμμαχοῦντες ἐπὶ σουσίους, καὶ βαβυλωνίους. νέαρχος δέ φησι τεττά/
ρων ὄντων λῃστρικῶν ἐθνῶν. ὧν μάρδοι μὲν πέρσαις προσεχεῖς ἦσαν. οὔξιοι δὲ, καὶ ἐλυμαῖοι τούτοις
τε, καὶ σουσίοις. κοσσαῖοι δὲ μήδοις πάντας μὲν φόρους πράττεσθαι τοὺς βασιλέας. κοσσαίους δὲ, καὶ
δῶρα λαμβάνειν, ἡνίκα ὁ βασιλεὺς θερίσας ἐν ἐκβατάνοις εἰς τὴν βαβυλωνίαν καταβαίνοι. καταλῦ/
σαι δ' αὐτῶν τὴν πολλὴν τόλμαν ἀλέξανδρον ἐπιθέμενον χειμῶνος. τούτοις δὴ ἀφορίζεται πρὸς
ἕω, καὶ ἔτι τοῖς παραιτακηνοῖς οἳ συνάπτουσι πέρσαις, ὀρεινοὶ, καὶ αὐτοὶ, καὶ λῃστρικοί. ἀπὸ δὲ τῶν
ἄρκτων τοῖς ὑποικοῦσι τῆς ὑρκανίας θαλάττης καδουσίοις, καὶ τοῖς ἄλλοις οὓς ἀρτι διήλθομεν.
πρὸς νότον δὲ τῇ ἀπολλωνιάτιδι ἣν σιτακηνὴν ἐκάλουν οἱ παλαιοί. καὶ τῷ ζάγρῳ καθ' ἡμᾶς σαβα/
τικὴ κεῖται τῆς μηδίας οὖσα. οἱ δὲ, τῆς ἐλυμαΐας φασί. πρὸς δύσιν δὲ τοῖς ἀζαβίοις, καὶ τῶν ἀρ/
μενίων τισίν. εἰσὶ δὲ καὶ ἑλληνίδες πόλεις κτίσματα τῶν μακεδόνων ἐν τῇ μηδίᾳ. ὧν λαοδίκειά τε, καὶ
ἀπάμεια, καὶ ἡ πρὸς ῥάγαις. καὶ αὐτὴ ῥάγεια, τὸ τοῦ νικάτορος κτίσμα. ὃ ἐκεῖνος μὲν εὔρωπον ὠνόμα/
σε. πάρθοι δὲ ἀρσακίαν νοτιωτέραν οὖσαν τῶν κασπίων πυλῶν πεντακοσίοις που σταδίοις ὥς φησιν ἀ/
πολλόδωρος ἀδραμυττηνός. ἡ πολλὴ μὲν ὑψηλή ἐστι, καὶ ψυχρά. τοιαῦτα δὲ, καὶ τὰ ὑπερκείμενα τῶν
ἐκβατάνων ὄρη, καὶ τὰ περὶ τὰς ῥάγας. καὶ τὰς κασπίους πύλας. καὶ καθόλου τὰ προσάρκτια
μέρη τὰ ἐντεῦθεν, μέχρι πρὸς τὴν ματιανὴν, καὶ τὴν ἀρμενίαν. ἡ δ' ὑπὸ ταῖς κασπίοις πύλαις ἐν τα/
πεινοῖς ἐδάφεσι, καὶ κοίλοις, οὖσα εὐδαίμων σφόδρα ἐστί, καὶ πάμφορος πλὴν ἐλαίας. εἰ δὲ, καὶ φύε/
ταί που, ἄλιπής τέ ἐστι, καὶ ξηρά. ἱππόβοτος δὲ, καὶ αὐτή ἐστι διαφερόντως, καὶ ἡ ἀρμενία. κα/
λεῖται δέ τις, καὶ λειμὼν ἱππόβοτος. ὃν, καὶ διεξίασιν οἱ ἐκ τῆς περσίδος, καὶ βαβυλῶνος εἰς κασπίους
πύλας ὁδεύοντες. ἐν ᾧ πέντε μυριάδας ἵππων θηλειῶν νέμεσθαι φασὶν ἐπὶ τῶν περσῶν. εἶναι δὲ τὰς
ἀγέλας ταύτης βασιλικάς. τοὺς δὲ νισαίους ἵππους οἷς ἐχρῶντο οἱ βασιλεῖς ἀρίστοις οὖσι καὶ μεγίστοις
οἱ μὲν, ἐνθένδε λέγουσι τὸ γένος. οἱ δ' ἐξ ἀρμενίας. ἰδιόμορφοι δ' εἰσὶν ὥσπερ, καὶ οἱ παρθικοὶ λεγό/
μενοι νῦν παρὰ τοὺς ἑλλαδικούς, καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παρ' ἡμῖν. καὶ τὴν βοτάνην δὲ, τὴν μάλιστα
τρέφουσαν τοὺς ἵππους ἀπὸ τοῦ πλεονάζειν ἐνταῦθα ἰδίως μηδικὴν καλοῦμεν. φέρει δὲ, καὶ σίλφιον
ἡ χώρα. ἀφ' οὗ ὁ μηδικὸς καλούμενος ὀπὸς, πολὺ λειπόμενος τοῦ κυρηναϊκοῦ. ἔστι δ' ὅτε, καὶ διαφέρων
ἐκείνου εἴτε παρὰ τὰς τῶν τόπων διαφορὰς, εἴτε τοῦ φυτοῦ κατ' εἶδος, ἐξαλλάττοντος. εἴτε καὶ παρὰ
τοὺς ὀπίζοντας, καὶ σκευάζοντας, ὥστε συμμένειν πρὸς τὴν ἀπόθεσιν, καὶ τὴν χρείαν. τοιαύτη μέν
τις ἡ χώρα. τὸ δὲ μέγεθος παραπλήσιόν πως ἐστὶν εἰς πλάτος, καὶ μῆκος. δοκεῖ δὲ μέγιστον εἶναι πλάτος τῆς
μηδίας, τὸ ἀπὸ τῆς τοῦ ζάγρου ὑπερθέσεως ἣπερ καλεῖται μηδικὴ πύλη εἰς κασπίας πύλας διὰ τῆς
σιγριανῆς σταδίων τετρακισχιλίων ἑκατόν. τῷ δὲ μεγέθει καὶ δυνάμει τῆς χώρας ὁμολογεῖ, καὶ ἡ περὶ
τῶν φόρων ἱστορία. τῆς γὰρ καππαδοκίας παρεχούσης τοῖς πέρσαις κατ' ἐνιαυτὸν πρὸς τῷ ἀργυρικῷ τέλει
ἵππους χιλίους καὶ πεντακοσίους. ἡμιόνους δὲ δισχιλίους, προβάτων δὲ πέντε μυριάδας, διπλάσια σχε/
δόν τι τούτων ἐτέλουν οἱ μῆδοι. ἔθη δὲ τὰ πολλὰ μὲν τούτοις τε, καὶ τοῖς ἀρμενίοις, διὰ τὸ καὶ τὴν
χώραν παραπλησίαν. τοὺς μέντοι μήδους ἀρχηγέτας εἶναι φασὶ, καὶ τούτοις. καὶ ἔτι πρότερον
πέρσαις τοῖς ἔχουσιν αὐτούς. καὶ διαδεξαμένοις τὴν τῆς ἀσίας ἐξουσίαν. ἡ γὰρ νῦν λεγομένη περσι/
κὴ στολή. καὶ ὁ τῆς τοξικῆς, καὶ ἱππικῆς ζῆλος. καὶ ἡ περὶ τοὺς βασιλέας θεραπεία, καὶ κόσμος
καὶ σεβασμὸς θεοπρεπὴς παρὰ τῶν ἀρχομένων εἰς τοὺς πέρσας παρὰ τῶν μήδων ἀφῖκται. καὶ ὅτι
τοῦτ' ἀληθὲς ἐκ τῆς ἐσθῆτος μάλιστα δῆλον. τιάρα γάρ τις, καὶ κίταρις, καὶ πῖλος. καὶ χειριδωτοὶ χι/
τῶνες, καὶ ἀναξυρίδες. ἐν μὲν τοῖς ψυχροῖς τόποις, καὶ προσβόρροις, ἐπιτήδειά ἐστι φορήματα. οἷοί
εἰσιν οἱ μηδικοί. ἐν δὲ τοῖς νοτίοις ἥκιστα. οἱ δὲ πέρσαι τὴν πλείστην οἴκησιν ἐπὶ τῇ ἐρυθρᾷ θαλάττῃ κέκτην/
ται. μεσημβρινώτεροι, καὶ βαβυλωνίων ὄντες, καὶ σουσίων. μετὰ δὲ τὴν κατάλυσιν τὴν τῶν μήδων. προ/
σεκτήσαντό τινα, καὶ τῶν προσαπτομένων μηδίᾳ ἀλλ' οὕτως ἐφάνη σεμνὰ, καὶ τοῦ βασιλικοῦ προσχήμα/
τος οἰκεῖα τὰ ἔθη τοῖς νικήσασι, καὶ τὰ τῶν νικηθέντων ὥστ' ἀντὶ γυμνητῶν, καὶ ψιλῶν, θηλυστολεῖν
ὑπέμειναν καὶ κατηρεφεῖς εἶναι τοῖς σκεπάσμασι. τινὲς δὲ μήδειαν καταδεῖξαι τὴν ἐσθῆτα ταύτην
φασὶ δυναστεύσασαν τοῖς τόποις καθάπερ ἰάσονα. καὶ ἐπικρυπτομένην τὴν ὄψιν, ὅτε ἀντὶ τοῦ βασιλέως
ἐξίοι. τοῦ μὲν ἰάσονος ὑπομνήματα εἶναι τὰ ἰασόνια ἡρῷα. τιμώμενα σφόδρα ὑπὸ τῶν βαρβά/
ρων. ἔστι δὲ καὶ ὄρος μέγα ὑπὲρ τῶν κασπίων πυλῶν ἐν ἀριστερᾷ καλούμενον ἰασόνιον. τῆς δὲ μηδείας,
τὴν ἐσθῆτα, καὶ τοὔνομα τῆς χώρας. λέγεται δὲ, καὶ μῆδος υἱὸς αὐτῆς, διαδέξασθαι τὴν ἀρχήν; καὶ
τὴν χώραν ἐπώνυμον αὐτοῦ καταλιπεῖν. ὁμολογεῖ δὲ τούτοις, καὶ τὰ κατὰ τὴν ἀρμενίαν ἰασόνια. καὶ
τὸ τῆς χώρας ὄνομα, καὶ ἄλλα πλείω. περὶ ὧν ἐροῦμεν. κοινὸν δὲ μηδικὸν τὸ, βασιλέα αἱρεῖσθαι τὸν
ἀνδρειότατον. ἀλλ' οὐ πᾶσιν ἀλλὰ τοῖς ὀρείοις. μᾶλλον δὲ τὸ τοῖς βασιλεῦσι πολλὰς εἶναι γυναῖκας. τοῖς
δ' ὀρείοις. τῶν μήδων, καὶ πᾶσιν ἔθος πέντε. ἐλάττους δὲ τῶν ἑπτὰ οὐκ ἔξεστιν. ὡς δ' αὔτως τὰς γυναῖκας

φασὶν ἐν καλῷ τίθεσθαι. ὅτι πλείοσι νέμειν ἄνδρας· τῶν πέντε δὲ ἐλάττους, συμφορὰν ἡγεῖσθαι. τῆς
δ' ἄλλης μηδίας εὐδαιμονούσης τελέως, λυπρά ἐστιν ἡ προσάρκτιος ὀρεινή. σιτοῦνται οὖν ἀπὸ ἀκρο-
δρύων. ἔκ τε μήλων ξηρῶν κοπέντων, ποιοῦνται μάζας. ἀπὸ δ' ἀμυγδάλων φρυχθέντων ἄρτους. ἐκ δὲ
ῥιζῶν τινῶν, οἶνον ἐκθλίβουσι. κρέασι δὲ χρῶνται θηρείοις ἥμερα δὲ, οὐ τρέφουσι θρέμματα. ταῦ-
τα καὶ περὶ μήδων φαμέν. περὶ δὲ τῶν μηδικῶν κοινῇ τῆς συμπάσης μηδίας. ἐπειδὴ ταῦτα τοῖς
περσικοῖς γεγένηται διὰ τὴν τῶν περσῶν ἤδη κράτειαν, ἐν τῷ περὶ ἐκείνων λόγῳ θήσομεν. τῆς δ' ἀρ-
μενίας τὰ μὲν νότια προβέβληνται τὸν ταῦρον. διείργοντα αὐτὴν ἀφ' ὅλης τῆς μεταξὺ εὐφράτου
καὶ τοῦ τίγριδος. ἣν μεσοποταμίαν καλοῦσι. τὰ δὲ ἑωθινὰ τῇ μηδίᾳ συνάπτει τῇ μεγάλῃ, καὶ τῇ ἀ-
τροπατηνῇ. προσάρκτια δέ ἐστι τὰ ὑπερκείμενα τῆς κασπίας θαλάττης ὄρη τὰ τοῦ παραχοάθρα. καὶ
ἀλβανοί. καὶ ἴβηρες, καὶ ὁ καύκασος ἐγκυκλούμενος τὰ ἔθνη ταῦτα, καὶ συνάπτων τοῖς ἀρμενίοις
συνάπτων δὲ, καὶ τοῖς μοσχικοῖς ὄρεσι, καὶ κολχικοῖς μέχρι τῶν καλουμένων τιβαρηνῶν. ἀπὸ δὲ τῆς
ἑσπέρας ταῦτά ἐστι τὰ ἔθνη. καὶ ὁ παρυάδρης, καὶ ὁ κυδίσης μέχρι τῆς μικρᾶς ἀρμενίας, καὶ τοῦ
τοῦ εὐφράτου ποταμοῦ. ὃ διείργει, τὴν ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς καππαδοκίας, καὶ τῆς κομμαγηνῆς. ὁ
γὰρ εὐφράτης ἀπὸ τῆς βορείου πλευρᾶς τοῦ ταύρου τὰς ἀρχὰς ἔχων, τὸ μὲν πρῶτον ῥεῖ πρὸς δύ-
σιν διὰ τῆς ἀρμενίας. εἶτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον καὶ διακόπτει τὸν ταῦρον, μεταξὺ τῶν ἀρμενίων τε,
καὶ καππαδοκῶν καὶ κομμαγηνῶν. ἐκπεσὼν, δ' ἔξω, καὶ γενόμενος κατὰ τὴν συρίαν. ἐπιστρέφει
πρὸς χειμερινὰς ἀνατολὰς μέχρι βαβυλῶνος. καὶ ποιεῖ τὴν μεσοποταμίαν πρὸς τὸν τίγριν. ἀμφότεροι
δὲ τελευτῶσιν εἰς τὸν περσικὸν κόλπον. τὰ μὲν δὴ κύκλῳ ταῦτα. ὀρεινὰ σχεδόν τι πάντα καὶ τραχέα.
πλὴν τῶν πρὸς τὴν μηδίαν κεκλιμένων ὀλίγων. πάλιν δὲ τοῦ λεχθέντος ταύρου τὴν ἀρχὴν λαμβάνοντος
ἀπὸ τῆς περαίας τῆς κομμαγηνῶν καὶ τῶν μελιτινῶν, ἣν ὁ εὐφράτης ποιεῖ, μάσιον μέν ἐστι τὸ ὑπερ-
κείμενον ὄρος τῶν ἐν τῇ μεσοποταμίᾳ μυγδόνων ἐκ νότου, ἐν οἷς ἡ νίσιβίς ἐστιν. ἐκ δὲ τῶν προσάρκτων
μερῶν σωφηνὴ κεῖται. μεταξὺ τοῦ τε μασίου, καὶ τοῦ ἀντιταύρου. οὗτος δὲ ἀπὸ τοῦ εὐφράτου, καὶ
τοῦ ταύρου τὴν ἀρχὴν λαβὼν, τελευτᾷ πρὸς τὰ ἕω τῆς ἀρμενίας. ἀπολαμβάνων μέσην τὴν σωφη-
νήν. ἐκ θατέρου δὲ μέρους ἔχων τὴν ἀκιλισηνὴν, μεταξὺ ἱδρυμένην τοῦ ταύρου τε, καὶ τοῦ εὐφράτου
μεσοποταμίας. πρὶν ἢ κάμπτειν αὐτὴν ἐπὶ νότον. βασίλειον δὲ τῆς σωφηνῆς καρκαθιόκερτα. τοῦ δὲ μα-
σίου ὑπέρκειται πολὺ πρὸς ἕω κατὰ τὴν γοργοδυληνὴν ὁ νιφάτης. εἶθ' ὁ ἄβος. ἀφ' οὗ καὶ ὁ εὐφράτης
ῥεῖ καὶ ὁ ἀράξης, ὁ μὲν πρὸς δύσιν ὁ δὲ πρὸς ἀνατολάς. εἶθ' ὁ νίβαρος μέχρι τῆς μηδείας παρατείνει. ὁ
μὲν οὖν εὐφράτης εἴρηται ὃν τρόπον ῥεῖ. ὁ δὲ ἀράξης πρὸς τὰς ἀνατολὰς ἐνεχθεὶς μέχρι τῆς ἀτροπα-
τηνῆς, κάμπτει πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτους. καὶ παραρρεῖ τὴν ἄζαραν πρῶτον. εἶτ' ἀρτάξατα πόλεις
ἀρμενίων. ἔπειτα διὰ τοῦ ἀραξηνοῦ πεδίου, πρὸς τὸ κάσπιον ἐκδίδωσι πέλαγος, ἐν αὐτῇ δὲ τῇ ἀρμε-
νίᾳ πολλὰ μὲν ὄρη. πολλὰ δὲ ὀροπέδια. ἐν οἷς οὐδ' ἄμπελος φύεται ῥᾳδίως. πολλοὶ δ' αὐλῶνες. οἱ μὲν
μέσως οἱ δὲ, καὶ σφόδρα εὐδαίμονες καθάπερ τὸ ἀραξηνὸν πεδίον. δι' οὗ ὁ ἀράξης ποταμὸς ῥέων εἰς τὰ
ἄκρα τῆς ἀλβανίας, εἰς τὴν κασπίαν ἐμπίπτει θάλασσαν. καὶ μετὰ ταῦτα ἡ σακασηνὴ, καὶ αὐτὴ τῇ
ἀλβανίᾳ πρόσχωρος καὶ τῷ κύρῳ ποταμῷ. εἶθ' ἡ γωγαρηνή. πᾶσα γὰρ ἡ χώρα, αὕτη καρποῖς τε, καὶ
τοῖς ἡμέροις δένδροις, καὶ τοῖς ἀειθαλέσι πληθύει. φέρει δὲ, καὶ ἐλαίας. ἔστι δὲ, καὶ ἡ φαυηνὴ τῆς ἀρμενίας ἐ-
παρχία. καὶ ἡ κωμισηνή. καὶ ὀρχιστηνὴ πλείστην ἱππείαν παρέχουσα. ἡ δὲ χορζηνὴ, καὶ καμβισηνὴ προσβο-
ρώταταί εἰσι, καὶ νιφόβολοι μάλιστα, συνάπτουσαι τοῖς καυκασίοις ὄρεσι, καὶ τῇ ἰβηρίᾳ. καὶ τῇ κολχί-
δι. ὅπου φασὶ κατὰ τὰς ὑπερβολὰς τῶν ὀρῶν, πολλάκις, καὶ συνοδίας ὅλας τῶν ὀρῶν ἐν τῇ χιόνι κα-
ταπίνεσθαι. νιφετῶν γινομένων ἤδη πλείον. ἔχειν δὲ, καὶ βακτηρίας πρὸς τοὺς τοιούτους, κινδύνους πα-
ρεξαίροντας εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, ἀναπνοῆς τε χάριν, καὶ τοῦ διαμηνύειν τοῖς ἐπιοῦσιν, ὥς τε βοηθείας
τυγχάνειν, ἀνορύττεσθαι, καὶ σώζεσθαι. ἐν δὲ τῇ χιόνι βώλους πήγνυσθαι φασὶ κοίλας. περιεχούσας
χρηστὸν ὕδωρ ὡς ἐν χιτῶνι, καὶ τὰ ζῶα δὲ, ἐν αὐτῇ γεννᾶσθαι. καλεῖ δὲ σκώληκας ἀπολλωνίδης. θεοφάνης
δὲ θριπάς. καὶ τούτοις ἀπολαμβάνεσθαι χρηστὸν ὕδωρ. περιχυθέντων δὲ τῶν χιτώνων πίνεσθαι. τὴν
δὲ γένεσιν τῶν ζώων τοιαύτην εἰκάζουσιν οἵαν τὴν τῶν κωνώπων ἐκ τῆς ἐν τοῖς μετάλλοις φλογὸς, καὶ
τοῦ πετάλου. ἱστοροῦσι δὲ τὴν ἀρμενίαν μικρὰν πρότερον οὖσαν αὐξηθῆναι διὰ τῶν περὶ ἀρταξίαν, καὶ
ζαριάδρην. οἳ πρότερον μὲν ἦσαν ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατηγοί. βασιλεύσαντες δ' ὕστερον μετὰ τὴν ἐκείνου
ἧτταν. ὁ μὲν, τῆς σωφηνῆς καὶ τῆς ἀμισηνῆς καὶ ὀδομαντίδος, καὶ ἄλλων τινῶν. ὁ δὲ, τῆς περὶ ἀρτάξατα, συνηύ-
ξησαν, ἐκ τῶν περικειμένων ἐθνῶν ἀποτεμόμενοι μέρη. ἐκ μήδων μὲν τήν τε κασπιανήν. καὶ φαυνῖτιν καὶ βα-
σοροπέδαν. ἰβήρων δὲ τήν τε παρώρειαν τοῦ παριάδρου καὶ τὴν χορζηνὴν καὶ γωγαρηνήν, πέραν οὖσαν τοῦ κύρου.
χαλύβων δὲ, καὶ μοσυνοίκων, καρηνῖτιν, καὶ ξερξηνήν. ἃ τῇ μικρᾷ ἀρμενίᾳ ἐστὶν ὅμορα. ἢ καὶ μέρη αὐτῆς
ἐστί. καὶ καταόνων δὲ ἀκιλισηνὴν, καὶ τὴν περὶ τὸν ἀντίταυρον. σύρων δὲ ταμωνῖτιν. ὥς τε πάντας ὁ-
μογλώττους εἶναι. πόλεις δ' εἰσὶν ἀρμενίας, ἀρτάξατά γε ἣν, καὶ ἀρταξιάσατα καλοῦσιν. ἀννίβα κτί-
σαντος ἀρταξίᾳ τῷ βασιλεῖ. καὶ ἄρξαντος ἀμφοτέρων. ἐπὶ τῷ ἀράξῃ. ἡ μὲν ἀρξάτα πρὸς τοῖς ὅροις
τῆς ἀτροπατίας. ἡ δὲ ἀρτάξατα, πρὸς τῷ ἀραξηνῷ πεδίῳ. συνῳκισμένη καλῶς, καὶ βασίλειον οὖσα

τῆς χώρας. κεῖται δ' ἐπὶ χερρονησίζοντος ἀγκῶνος τὸ τεῖχος κύκλῳ προβεβλημένον τὸν ποταμὸν, πλὴν τοῦ ἰσθμοῦ. τὸν ἰσθμὸν δ' ἔχει τάφρῳ καὶ χάρακι κεκλεισμένον. οὐ πολὺ δ' ἄποθεν ἐστὶ τῆς πόλεως ἐπὶ τὰ τιγράνου καὶ ἀρταβάσδου γαζοφυλάκια φρούρια ὀρεινά. βάβυρσά τε, καὶ ὀλάνη. ἦν δὲ, καὶ ἄλλα ἐπὶ τῷ εὐφράτῃ. ἀρταγήρας δὲ ἀπέστησε μὲν ἄδωρ ὁ φρούραρχος. ἐξεῖλον δ' οἱ καίσαρος στρατηγοὶ πολιορκήσαντες πολὺν χρόνον. καὶ τὰ τείχη περιεῖλον. ποταμοὶ δὲ πλείους μέν εἰσιν ἐν τῇ χώρᾳ. γνωριμώτατοι δὲ, φᾶσις μὲν καὶ λύκος. εἰς τὴν ποντικὴν, ἐκπίπτοντες θάλατταν. ἐρατοσθένης δ' ἀντὶ τοῦ λύκου τίθησι θερμώδοντα οὐκ εὖ. εἰς τὴν κασπίαν δὲ κῦρος, καὶ ἀράξης. εἰς δὲ τὴν ἐρυθρὰν, ὅ, τε εὐφράτης, καὶ ὁ τίγρις. εἰσὶ δὲ, καὶ λίμναι κατὰ τὴν ἀρμενίαν μεγάλαι. μία μὲν ἡ μαντιανὴ. κυανέα ἑρμηνευθεῖσα μεγίστη, ὥς φησι μετὰ τὴν μαιῶτιν ἁλμυροῦ ὕδατος. διήκουσα μέχρι τῆς ἀτροπατίας. ἔχουσα καὶ ἁλοπήγια. ἡ δὲ ἀρσηνὴ, ἣν καὶ θωπῖτιν καλοῦσιν. ἔστι δὲ νιτρῖτις. τὰς δ' ἐσθῆτας ῥύπτει, καὶ διαξαίνει. διὰ δὲ τοῦτο καὶ ἄποτόν ἐστι τὸ ὕδωρ. φέρεται δὲ δι' αὐτῆς ὁ τίγρις, ἀπὸ τῆς κατὰ τὸν νιφάτην ὀρεινῆς ὁρμηθείς. ἄμικτον φυλάττων διὰ τὴν ὀξύτητα. ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα μήδων τίγριν καλούντων τὸ τόξευμα. καὶ οὗτος μὲν ἔχει πολυειδεῖς ἰχθῦς. οἱ δὲ λιμναῖοι ἑνὸς εἴδους εἰσὶ. κατὰ δὲ τὸν μυχὸν τῆς λίμνης εἰς βάραθρον ἐμπεσὼν ὁ ποταμὸς, καὶ πολὺν τόπον ἐνεχθεὶς ὑπὸ γῆς ἀνατέλλει κατὰ τὴν χαλωνῖτιν. ἐκεῖθεν δ' ἤδη πρὸς τὴν ὦπιν. καὶ τὸ τῆς σεμιράμιδος διατείχισμα. ἐκεῖνός τε καταφέρεται, τοὺς γορδυαίους ἐν δεξιᾷ ἀφεὶς, καὶ τὴν μεσοποταμίαν ὅλην, καὶ εὐφράτης τοὐναντίον ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν αὐτὴν χώραν. πλησιάσαντες δὲ ἀλλήλοις καὶ ποιήσαντες, τὴν μεσοποταμίαν, ὁ μὲν διὰ σελευκείας φέρεται πρὸς τὸν περσικὸν κόλπον. ὁ δὲ, διὰ βαβυλῶνος καθάπερ εἴρηταί που καὶ ἐν τοῖς πρὸς ἐρατοσθένη καὶ ἵππαρχον λόγοις. μέταλλα δ' ἐν μὲν τῇ ὑσπιράτιδι ἐστὶ χρυσοῦ κατὰ τὰ κάμβαλα. ἐφ' ἃ μένωνα ἔπεμψεν ἀλέξανδρος μετὰ στρατιωτῶν. ἀνήχθη δ' ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων. καὶ ἄλλα δ' ἐστὶ μέταλλα. καὶ δὴ τῆς ὁ σάνδυκος καλούμενος. ἣν δὴ καὶ ἀρμένιον καλοῦσι χρῶμα ὅμοιον κάλχῃ, οὕτω δ' ἐστὶν ἱππόβοτος σφόδρα ἡ χώρα. καὶ οὐχ ἧττον τῆς μηδίας. ὥστε οἱ νησαῖοι ἵπποι καὶ ἐνταῦθα γίνονται. οἷς περ οἱ περσῶν βασιλεῖς ἐχρῶντο. καὶ ὁ σατράπης τῆς ἀρμενίας τῷ πέρσῃ κατ' ἔτος δισμυρίους πώλους τοῖς μιθρακινοῖς ἔπεμπεν. ἀρταουάσδης δ' ἀντωνίῳ χωρὶς τῆς ἄλλης ἱππείας αὐτὴν τὴν κατάφρακτον ἑξακισχιλίαν ἵππον ἐκτάξας ἐπέδειξεν ἡνίκα εἰς τὴν μηδίαν ἐνέβαλε σὺν αὐτῷ. ταύτης δὲ τῆς ἱππείας, οὐ μῆδοι μόνοι, καὶ ἀρμένιοι ζηλωταὶ γεγόνασιν, ἀλλὰ καὶ ἀλβανοί. καὶ γὰρ ἐκεῖνοι καταφράκτοις χρῶνται. τοῦ δὲ πλούτου, καὶ τῆς χώρας τῆς δυνάμεως, σημεῖον οὐ σμικρόν. ὅτι πομπηΐου τιγράνῃ τῷ πατρὶ τῷ ἀρταουάσδου, τάλαντα ἐπιγράψαντος ἑξακισχίλια ἀργυρίου, διένειμεν αὐτίκα ταῖς δυνάμεσι τῶν ῥωμαίων. στρατιώτῃ μὲν κατ' ἄνδρα πεντήκοντα δραχμὰς καὶ ἑκατόν. ἑκατοντάρχῃ δὲ χιλίας. ἱππάρχῳ δὲ, καὶ χιλιάρχῳ τάλαντον. μέγεθος δὲ τῆς χώρας θεοφάνης ἀποδίδωσιν. εὖρος μὲν σχοίνων ἑκατόν. μῆκος δὲ διπλάσιον τιθείς. τὴν σχοῖνον τετταράκοντα σταδίων πρὸς ὑπερβολὴν δ' εἴρηκεν. ἐγγυτέρω δ' ἐστὶ τῆς ἀληθείας. μῆκος μὲν θέσθαι τὸ ὑπ' ἐκείνου λεχθὲν, εὖρος δὲ τὸ ἥμισυ ἢ μικρῷ πλεῖον. ἡ μὲν δὴ φύσις τῆς ἀρμενίας, καὶ δύναμις τοιαύτη. ἀρχαιολογία δέ τις ἐστὶ περὶ τοῦ ἔθνους τοιαύτη. ἀρμενος ἐξ ἀρμενίου πόλεως θετταλικῆς. ἣ κεῖται μεταξὺ φερῶν καὶ λαρίσσης ἐπὶ τῇ βοίβῃ καθάπερ εἴρηται συνεστράτευσεν ἰάσονι εἰς τὴν ἀρμενίαν. τούτου φασὶν ἐπώνυμον τὴν ἀρμενίαν οἱ περὶ κύρσιλον τὸν φαρσάλιον, καὶ μήδιον τὸν λαρισαῖον. ἄνδρες συνεστρατευκότες ἀλεξάνδρῳ. τῶν δὲ μετὰ τοῦ ἀρμένου, τοὺς μὲν τὴν ἀκιλισηνὴν οἰκῆσαι τὴν ὑπὸ τῆς σωφηνῆς πρότερον οὖσαν, τοὺς δὲ ἐν τῇ συσπιρίτιδι. ἕως τῆς καλαχηνῆς, καὶ τῆς ἀδιαβηνῆς ἔξω τῶν ἀρμενιακῶν ὀρῶν. καὶ τὴν ἐσθῆτα δὲ τὴν ἀρμενιακὴν, θετταλικὴν φασίν. οἷον τοὺς βαθεῖς χιτῶνας οὓς καλοῦσιν αἰτωλικοὺς ἐν ταῖς τραγῳδίαις. καὶ ζωννύουσι περὶ τὰ στήθη, καὶ ἐφαπτίδας ὡς καὶ τῶν τραγῳδῶν μιμησαμένων τοὺς θετταλούς. ἔδει μὲν γὰρ αὐτοῖς ἐπιθέτου κόσμου τοιούτου τινός. οἱ δὲ θετταλοὶ μάλιστα βαθυστολοῦντες ὡς εἰκὸς, διὰ τὸ πάντων εἶναι ἑλλήνων βορειοτάτους καὶ ψυχροτάτους νέμεσθαι τόπους, ἐπιτηδειοτάτην παρέχοντο μίμησιν. τὴν τῶν ὑποκριτῶν δὲ διασκευὴν ἐν τοῖς ἀναπλάσμασι, καὶ τὸν τῆς ἱππικῆς ζῆλον φασὶν εἶναι θετταλικόν. καὶ τούτοις ὁμοίως καὶ μήδοις. τὴν δὲ ἰάσονος στρατείαν, καὶ τὰ ἰασόνια μαρτυρεῖ. ὧν τινα οἱ δυνάσται κατέσκαψαν παραπλησίως ὥσπερ τὸν ἐν ἀβδήροις νεὼν τοῦ ἰάσονος παρμενίων. τὸν δὲ ἀράξην κληθῆναι νομίζουσι κατὰ τὴν ὁμοιότητα τὴν πρὸς τὸν πηνειὸν ὑπὸ τῶν περὶ τὸν ἀρμενον, ὁμωνύμως ἐκείνῳ. καλεῖσθαι γὰρ ἀράξην κἀκεῖνον, διὰ τὸ ἀπορρῆξαι τὴν ὄσσαν ἀπὸ τοῦ ὀλύμπου, ῥήξαντα τὰ τέμπη. καὶ τοῦτον ἐν ἀρμενίᾳ ἀπὸ τῶν ὀρῶν καταβάντα. πλατύνεσθαι φασὶ τὸ παλαιὸν καὶ πελαγίζειν ἐν τοῖς ὑποκειμένοις πεδίοις οὐκ ἔχοντα διέξοδον. ἰάσονα δὲ μιμησάμενον τὰ τέμπη, ποιῆσαι τὴν διασφάγα, δι' ἧς καταράττει νυνὶ τὸ ὕδωρ εἰς τὴν κασπίαν θάλατταν. ἐκ δὲ τούτου γυμνωθῆναι τὸ ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ συμβαίνει ῥέων ἐπὶ τὸν καταρράκτην ὁ ποταμός. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος περὶ τοῦ ἀράξου ποταμοῦ λεγόμενος ἔχει τι πιθανόν. ὁ δὲ ἡροδότειος, οὐ πάνυ. φησὶ γὰρ ἐκ ματιανῶν αὐτὸν ῥέοντα, εἰς τετταράκοντα ποταμοὺς σχίζεσθαι. μερίζειν δὲ σκύθας καὶ βακτριανούς. καὶ καλλισθένης δὲ ἠκολούθησεν αὐτῷ λέ-

γονται δὲ καὶ τῶν αἰνιανῶν τινες, οἱ μὲν, τὴν οὐϊτίαν οἰκῆσαι. οἱ δ' ὑπὲρ δὲ τῶν ἀρμενίων ὑπὲρ τὸν ἄβον,
καὶ τὸν ἴμβαρον. μέρη δ' ἐστὶ τοῦ ταύρου ταῦτα. ὧν ὁ ἄβος ἐγγύς ἐστι τῆς ὁδοῦ τῆς, εἰς ἐκβάτανα φερούσης
παρὰ τὸν τῆς βάρειδος νεών. φασὶ δὲ καὶ θρακῶν τινὰς τοὺς προσαγορευομένους σαραπάρας οἷον κεφα
λοτόμους, οἰκῆσαι ὑπὲρ τῆς ἀρμενίας, πλησίον γουρανίων καὶ μήδων θηριώδεις ἀνθρώπους καὶ ἀπει
θεῖς. ὀρείνους περισκελιστάς τε καὶ ἀποκεφαλιστάς. τοῦτο γὰρ δηλοῦσιν οἱ σαραπάραι. εἴρηται δὲ καὶ
τὰ περὶ τῆς μηδείας ἐν τοῖς μηδικοῖς. ὥστ' ἐκ τούτων πάντων εἰκάζουσι καὶ τοὺς μήδους καὶ ἀρμενίους,
συγγενεῖς πως τοῖς θετταλοῖς εἶναι, τοῖς ἀπὸ ἰάσονος καὶ μηδείας. ὁ μὲν δὴ παλαιὸς λόγος οὗτος ὁ δὲ τούτου
νεώτερος καὶ κατὰ πέρσας εἰς τὸ ἐφεξῆς μέχρι εἰς ἡμᾶς ὡς ἐν κεφαλαίῳ πρέποι ἂν μέχρι τοσούτου λε
χθεὶς, ὅτι κατεῖχον τὴν ἀρμενίαν πέρσαι καὶ μακεδόνες μετὰ ταῦτα οἱ τὴν συρίαν ἔχοντες καὶ τὴν μηδίαν.
τελευταῖος δ' ὑπῆρξεν ὀρόντης ἀπόγονος ὑδάρνου τῶν ἑπτὰ περσῶν ἑνός. εἶθ' ὑπὸ τῶν ἀντιόχου τοῦ με
γάλου στρατηγῶν, τοῦ πρὸς ῥωμαίους πολεμήσαντος διῃρέθη δίχα, ἀρταξίου τε καὶ ζαδριάδριος. καὶ
ἦρχον οὗτοι τοῦ βασιλέως ἐπιτρέψαντος. ἡττηθέντος δ' ἐκείνου προσθέμενοι ῥωμαίοις καθ' αὑτοὺς ἐτάτ
τοντο βασιλεῖς προσαγορευθέντες. τοῦ μὲν οὖν ἀρταξίου τιγράνης ἦν ἀπόγονος. καὶ εἶχε τὴν ἰδίως λεγο
μένην ἀρμενίαν. αὕτη δ' ἦν προσεχής, τῇ τε μηδίᾳ καὶ ἀλβανοῖς καὶ ἴβηρσι μέχρι κολχίδος καὶ τῆς ἐπὶ
τῷ εὐξείνῳ καππαδοκίας. τοῦ δὲ ζαδριάδριος ὁ σοφηνὸς ἀρτάνης ἔχων τὰ νότια μέρη, καὶ τούτων τὰ
πρὸς δύσιν μᾶλλον. κατελύθη δ' οὗτος ὑπὸ τιγράνου, καὶ πάντων κατέστη κύριος ἐκεῖνος, τύχαις δ'
ἐχρήσατο ποικίλαις. κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ ὡμήρευσε παρὰ πάρθοις, ἔπειτα δι' ἐκείνων ἔτυχε καθόδου,
λαβόντων μισθὸν ἑβδομήκοντα αὐλῶνας τῆς ἀρμενίας. αὐξηθεὶς δὲ καὶ ταῦτα ἀπέλαβε τὰ χω
ρία, καὶ τὴν ἐκείνων ἐπόρθησε. τήν τε περὶ νίνον, καὶ τὴν περὶ ἄρβηλα ὑπηκόους δ' ἔσχε καὶ τὸν ἀτροπατηνὸν,
καὶ τὸν γορδιαῖον. μεθ' ὧν καὶ τὴν λοιπὴν μεσοποταμίαν. ἔτι δὲ καὶ τὴν συρίαν αὐτὴν καὶ φοινίκην διε
βὰς τὸν εὐφράτην, ἀνὰ κράτος εἷλεν, ἐπὶ τοσοῦτον δ' ἐξαρθεὶς, καὶ πόλιν ἔκτισε πλησίον τῆς ἰβηρίας
μεταξὺ ταύτης τε καὶ τοῦ κατὰ τὸν εὐφράτην ζεύγματος, ἣν ὠνόμασε τιγρανόκερτα. ἐκ δώδεκα ἐρη
μωθεισῶν ὑπ' αὐτοῦ πόλεων ἑλληνίδων ἀνθρώπους συναγαγών. ἔφθη δ' ἐπελθὼν λεύκολλος ὁ τῷ μιθρι
δάτῃ πολεμήσας καὶ τοὺς μὲν οἰκήτορας εἰς τὴν οἰκείαν ἑκάστου ἀπέλυσε. τὸ δὲ κτίσμα ἡμιτελὲς ἔτι
ὂν, κατέσπασε προσβαλὼν καὶ μικρὰν κώμην κατέλιπεν ἐξήλασε δὲ καὶ τῆς συρίας αὐτὸν καὶ τῆς
φοινίκης. διαδεξάμενος δ' ἀρταουάσδης ἐκεῖνον, τέως μὲν εὐτύχει φίλος ὢν ῥωμαίοις. ἀντώνιον δὲ
προδιδοὺς παρθυαίοις ἐν τῷ πρὸς αὐτοὺς πολέμῳ δίκας τίσαι. ἀναχθεὶς γ' εἰς ἀλεξάνδρειαν ὑπ' αὐ
τοῦ δέσμιος πομπευθεὶς διὰ τῆς πόλεως, τέως μὲν ἐφρουρεῖτο ἔπειτ' ἀνῃρέθη, συνάψαντος τοῦ ἀκτιακοῦ
πολέμου μετ' ἐκεῖνον δὲ πλείους ἐβασίλευσαν ὑπὸ καίσαρι καὶ ῥωμαίοις ὄντες. καὶ νῦν ἔτι συνέχε
ται τὸν αὐτὸν τρόπον. ἅπαντα μὲν οὖν τὰ τῶν περσῶν ἱερὰ καὶ μῆδοι καὶ ἀρμένιοι τετιμή
κασι. τὰ δὲ τῆς ταναΐδος, διαφερόντως ἀρμένιοι. ἔν τε ἄλλοις ἱδρυσάμενοι τόποις καὶ δὴ
καὶ ἐν τῇ ἀκιλισηνῇ ἀνατιθέασι δ' ἐνταῦθα δούλους καὶ δούλας καὶ τοῦτο μὲν οὐ
θαυμαστόν. ἀλλὰ καὶ θυγατέρας οἱ ἐπιφανέστατοι τοῦ ἔθνους ἀνιεροῦ
σι παρθένους αἷς νόμος ἐστὶ, καταπορνευθείσαις πολὺν χρόνον πα
ρὰ τῇ θεῷ, μετὰ ταῦτα δίδοσθαι πρὸς γάμον. οὐκ ἀπαξιοῦν
τος τῇ τοιαύτῃ συνοικεῖν οὐδενός. τοιοῦτον δέ τι καὶ ἡ
ρόδοτος λέγει τὸ περὶ τὰς λυδάς. πορνεύειν γὰρ
ἁπάσας οὕτω φιλοφρόνως χρῶνται τοῖς
ἐρασταῖς, ὥς τε καὶ ξενίαν παρέ-
χουσι, καὶ δῶρα ἀντιδιδόασι
πλείω πολλάκις, ἢ λαμ
βάνουσιν. ἅτ' ἐξ
εὐπόρων οἴ
κων
ἐπιχορηγού
μεναι. δέχονται δὲ
αὐτοὺς τυχόντας τῶν ξέ
νων. ἀλλὰ μάλιστα
τοὺς ἀπὸ ἴσου ἀ
ξιώματος.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ ΔΩΔΕΚΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

Τὸ δωδέκατον περιέχει τὰ ὑπόλοιπα τῆς ποντικῆς χώρας· καὶ ἐφεξῆς, καππαδοκίαν· γαλατίαν, βιθυνίαν, μυσίαν· φρυγίαν· μαιονίαν· καὶ πρὸ τούτων σινώπην πόλιν ποντικὴν, καὶ ἡράκλειαν καὶ ἀμάσειαν· ἔτι ἰσαυρίαν· λυκίαν παμφυλίαν κιλικίαν· μετὰ τῶν παρακειμένων νήσων, καὶ ὀρῶν, καὶ ποταμῶν.

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΔΩΔΕΚΑΤΟΝ.

Καὶ ἡ καππαδοκία δ' ἐστὶ πολυμερής τε, καὶ συχνὰς δεδεγμένη τὰς μεταβολάς. οἱ δ' οὖν ὁμόγλωττοι μάλιστά εἰσιν οἱ ἀφοριζόμενοι. πρὸς νότον μὲν τῷ κιλικίῳ λεγομένῳ ταύρῳ. πρὸς ἕω δὲ τῇ ἀρμενίᾳ, καὶ τῇ κολχίδι, καὶ τοῖς μεταξὺ ἑτερογλώττοις ἔθνεσι. πρὸς ἄρκτον δὲ τῷ εὐξείνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ ἅλυος. πρὸς δύσιν δὲ τῷ τε τῶν παφλαγόνων ἔθνει, καὶ γαλατῶν τῶν τὴν φρυγίαν ἐπικησάντων. μέχρι λυκαόνων, καὶ κιλίκων. τῶν τὴν τραχεῖαν κιλικίαν νεμομένων. καὶ αὐτῶν δὲ τῶν ὁμογλώττων οἱ παλαιοὶ τοὺς καταόνας καθ' αὑτοὺς ἔταττον. ἀντιδιαιροῦντες τοῖς καππάδοξιν ὡς ἑτεροέθνεσι, καὶ ἐν τῇ διαριθμήσει τῶν ἐθνῶν μετὰ τὴν καππαδοκίαν ἐτίθεσαν τὴν καταονίαν. εἶτα τὸν εὐφράτην καὶ τὰ πέραν ἔθνη. ὥστε, καὶ τὴν μελιτηνὴν ὑπὸ τῇ καταονίᾳ τάττειν. ἣ μεταξὺ κεῖται ταύτης τε, καὶ τοῦ εὐφράτου. συνάπτουσα τῇ κομμαγηνῇ. μέρος τε τῆς καππαδοκίας ἐστὶ δέκατον. κατὰ τὴν εἰς δέκα στρατηγίας διαίρεσιν τῆς χώρας. οὕτω γὰρ δὴ οἱ καθ' ἡμᾶς βασιλεῖς οἱ πρὸ ἀρχελάου, διατεταγμένην εἶχον τὴν ἡγεμονίαν τῆς καππαδοκίας. δέκατον δ' ἐστὶ μέρος καὶ ἡ καταονία. καθ' ἡμᾶς δ' εἶχε στρατηγὸν ἑκατέρα ἴδιον. οὔτε δ' ἐκ τῆς διαλέκτου διαφορᾶς τινος ἐν τούτοις πρὸς τοὺς ἄλλους καππάδοκας ἐμφαινομένης, οὔτε ἐκ τῆς τῶν ἄλλων ἐθῶν θαυμαστὸν πῶς ἠφάνισται τελέως τὰ σημεῖα τῆς ἀλλοεθνίας. ἦσαν δ' οὖν διωρισμένοι, προσεκτήσατο δ' αὐτοὺς ἀριαράθης ὁ πρῶτος προσαγορευθεὶς καππαδόκων βασιλεύς. ἔστι δ' ὡς πρὸ χερρονήσου μεγάλης ἰσθμὸς οὗτος. σφιγγόμενος θαλάτταις δυσὶ τῇ τε τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς τραχείας κιλικίας, καὶ τῇ τοῦ εὐξείνου μεταξὺ σινώπης τε καὶ τῆς τῶν τιβαρηνῶν παραλίας. ἐντὸς δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λέγομεν χερρόνησον τὴν πρὸς ἑσπέρειον τοῖς καππάδοξιν ἅπασαν ἣν ἡρόδοτος μὲν ἐντὸς ἅλυος καλεῖ. αὕτη γάρ ἐστιν ἧς ἦρξεν ἁπάσης κροῖσος. λέγει δ' αὐτὸν ἐκεῖνος τύραννον ἐθνέων τῶν ἐντὸς ἅλυος ποταμοῦ. οἱ δὲ νῦν τὴν ἐντὸς τοῦ ταύρου καλοῦσιν ἀσίαν. ὁμωνύμως τῇ ὅλῃ ἠπείρῳ ταύτην ἀσίαν προσαγορεύοντες. περιέχεται δ' ἐν αὐτῇ πρῶτον μὲν ἔθνη τὰ ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς παφλαγόνες τε, καὶ φρύγες. καὶ λυκάονες. ἔπειτα βιθυνοὶ καὶ μυσοὶ καὶ ἡ ἐπίκτητος. ἔτι δὲ τρῶας, καὶ ἑλλησποντία. μετὰ δὲ τούτους ἐπὶ θαλάττῃ, μὲν ἑλλήνων οἵ τε αἰολεῖς καὶ ἴωνες τῶν δ' ἄλλων καρές τε καὶ λύκιοι. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ λυδοί. περὶ μὲν οὖν τῶν ἄλλων ὕστερον. τὴν δὲ καππαδοκίαν εἰς δύο σατραπείας μερισθεῖσαν ὑπὸ τῶν περσῶν, παραλαβόντες μακεδόνες, περιεῖδον. τὰ μὲν ἑκόντες, τὰ δ' ἄκοντες, εἰς βασιλείας ἀντὶ σατραπειῶν περιστᾶσαν. ὧν τὴν μὲν ἰδίως καππαδοκίαν ὠνόμασαν. καὶ πρὸς τῷ ταύρῳ καὶ νὴ δία μεγάλην καππαδοκίαν τὴν δὲ πόντον. οἱ δὲ τὴν πρὸς τῷ πόντῳ καππαδοκίαν. τῆς δὲ μεγάλης καππαδοκίας νῦν μὲν οὐκ ἴσμεν πρώτην διάταξιν. τελευτήσαντος γὰρ ἀρχελάου τοῦ βασιλεύσαντος ἔγνω καῖσάρ τε καὶ ἡ σύγκλητος ἐπαρχίαν εἶναι ῥωμαίων αὐτήν, ἐπ' ἐκείνου δὲ, καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ βασιλέων εἰς δέκα στρατηγίας διῃρημένης τῆς χώρας, πέντε μὲν ἐξητάζοντο αἱ πρὸς τῷ ταύρῳ μελιτηνὴ καὶ καταονία καὶ κιλικία. τυανῖτις τε καὶ ἰσαυρῖτις. πέντε δὲ λοιπαί. λαουιανσηνή. σαργαυσηνή. χαμανηνή. ῥιμηνική. προσεγένετο δ' ὕστερον παρὰ ῥωμαίων ἐκ τῆς κιλικίας τῆς πρὸ ἀρχελάου, καὶ ἑνδεκάτη στρατηγία ἡ περὶ καστάβαλά τε καὶ κύβιστρα μέχρι τῆς ἀντιπάτρου δέρβης. τοῦ λῃστοῦ. τῷ δ' ἀρχελάῳ καὶ ἡ τραχεῖα περὶ ἐλαιοῦσαν κιλικία, καὶ πᾶσα ἡ τὰ πειρατήρια συστησαμένη. ἔστι δ' ἡ μὲν μελιτηνή, παραπλησία τῇ κομμαγηνῇ. πᾶσα γάρ ἐστι τοῖς ἡμέροις δένδροις κατάφυτος. μόνη τῆς ἄλλης καππαδοκίας. ὥστε καὶ ἔλαιον φέρειν. καὶ τὸν μοναρίτην οἶνον

τοῖς ἑλληνικοῖς ἐνάμιλλον. αὕτη κεῖται δὲ τῇ σωφηνῇ μέσον ἔχουσα τὸν εὐφράτην ποταμόν. καὶ αὐ-
τῇ ἡ κομμαγηνὴ ὅμορος οὖσα. ἔστι δὲ φρούριον ἀξιόλογον τῶν καππαδοκῶν ἐν τῇ περαίᾳ, τόμισα.
τοῦτο δ' ἐπράθη μὲν τῷ σωφηνῷ ταλάντων ἑκατόν. ὕστερον δὲ ἐδωρήσατο λεύκουλλος τῷ καππαδόκι
συστρατεύσαντι ἀριστεῖον, τὸν κατὰ πρὸς τὸν μιθριδάτην πόλεμον. ἡ δὲ καταονία πλατὺ, καὶ κοῖλον ἐστὶ
πεδίον πάμφορον. πλὴν τῶν ἀειθαλῶν. περίκειται δ' ὄρη ἄλλα τε καὶ ὁ ἀμανὸς ἐκ τοῦ πρὸς νότον μέ-
ρους. ἀπόσπασμα ὂν τοῦ κιλικίου ταύρου. καὶ ὁ ἀντίταυρος εἰς τἀναντία ἀπερρωγώς. ὁ μὲν γὰρ ἀμα-
νὸς ἐπὶ τὴν κιλικίαν, καὶ τὴν συριακὴν ἐκτείνεται θάλατταν πρὸς τὴν ἑσπέραν ἀπὸ τῆς καταονίας,
καὶ τὸν νότον. τῇ δὲ τοιαύτῃ διαστάσει περικλείει τὸν ἰσσικὸν κόλπον ἅπαντα. καὶ τὰ μεταξὺ τῶν κι-
λίκων πεδία πρὸς τὸν ταῦρον. ὁ δ' ἀντίταυρος ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐγκέκλιται. καὶ μικρὸν ἐπιλαμ-
βάνει τῶν ἀνατολῶν. εἶτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν τελευτᾷ. ἐν δὲ τῷ ἀντιταύρῳ τούτῳ, βαθεῖς, καὶ στενοί εἰσιν
αὐλῶνες. ἐν οἷς ἵδρυται τὰ κόμμανα. καὶ τὸ τῆς ἐνυοῦς ἱερόν. ὃ ἐκεῖνοι κόμανα ὀνομάζουσι. πόλις δ' ἐ-
στιν ἀξιόλογος. πλεῖστον μέντοι τῶν θεοφορήτων πλῆθος, καὶ τὸ τῶν ἱεροδούλων ἐν αὐτῇ. καταόνες
δ' εἰσιν οἱ ἐνοικοῦντες. ἄλλως μὲν ὑπὸ τῷ βασιλεῖ τεταγμένοι. τοῦ δὲ ἱερέως ὑπακούοντες. ὁ πλέον
δὲ τοῦ θ' ἱεροῦ κύριος ἐστὶ, καὶ τῶν ἱεροδούλων. οἳ κατὰ τὴν ἡμετέραν ἐπιδημίαν πλείους ἦσαν τῶν
ἑξακισχιλίων ἄνδρες ὁμοῦ, γυναιξί. πρόσκειται δὲ τῷ ἱερῷ, καὶ χώρα πολλή. καρποῦται δ' ὁ
ἱερεὺς τὴν πρόσοδον. καὶ ἔστιν οὗτος δεύτερος κατὰ τιμὴν τῇ καππαδοκίᾳ μετὰ τὸν βασιλέα. ὡς δ' ἐ-
πίτοπολὺ τοῦ αὐτοῦ γένους ἦσαν οἱ ἱερεῖς τοῖς βασιλεῦσι. τὰ δὲ ἱερὰ ταῦτα δοκεῖ ὀρέστης μετὰ τῆς
ἀδελφῆς ἰφιγενείας κομίσαι δεῦρο ἀπὸ τῆς ταυρικῆς σκυθίας, τὰ τῆς ταυροπόλου ἀρτέμιδος.
ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν πένθιμον κόμην ἀποθέσθαι. ἀφ' ἧς καὶ τοὔνομα τῇ πόλει. διὰ μὲν οὖν τῆς πό-
λεως ταύτης ὁ σάρος ῥεῖ ποταμός. καὶ διὰ τῶν συναγκείων τοῦ ταύρου διεκπεραιοῦται πρὸς τὰ τῶν
κιλίκων πεδία, καὶ τὸ ὑποκείμενον πέλαγος. διὰ δὲ τῆς καταονίας ὁ πύραμις πλωτὸς ἐκ μέσου
τοῦ πεδίου τὰς πηγὰς ἔχων. ἔστι δὲ βόθρος ἀξιόλογος, δι' οὗ καθαρὸν ἐστὶ τὸ ὕδωρ. ὑποφερόμενον
κρυπτῶς μέχρι πολλοῦ διαστήματος ὑπὸ γῆς. εἶτ' ἀνατέλλον εἰς τὴν ἐπιφάνειαν. τῷ δὲ καθιέντι ἀ-
κόντιον ἄνωθεν εἰς τὸν βόθρον, ἡ βία τοῦ ὕδατος ἀντιπράττει τοσοῦτον, ὥστε μόλις βαπτίζεσθαι. ἀ-
πλωτῷ δὲ βάθει, καὶ πλάτει πολὺς ἐκχεθεὶς, ἐπειδὰν συνάψῃ τῷ ταύρῳ, παράδοξον λαμβάνει
τὴν συναγωγήν. παράδοξος δὲ καὶ ἡ διακοπὴ τοῦ ὄρους ἐστὶ δι' ἧς ἄγεται τὸ ῥεῖθρον. καθάπερ γὰρ ἐν
ταῖς ῥῆγμα λαβούσαις πέτραις, καὶ σχισθείσαις δίχα, τὰς κατὰ τὴν ἑτέραν ἐξοχὰς ὁμολόγους εἶ-
ναι συμβαίνει ταῖς κατὰ τὴν ἑτέραν εἰσοχαῖς οὕτως, ὥστε κἂν συναρμοσθῆναι δύνασθαι, οὕτως εἶδο-
μεν, καὶ τὰς ὑποκειμένας τοῦ ποταμοῦ πέτρας ἑκατέρωθεν σχεδόν τι μέχρι τῶν ἀκρωρειῶν ἀνα-
τεινούσας ἐν διαστάσει δυοῖν, ἢ τριῶν πλέθρων. ἀντικείμενα ἐχούσας τὰ κοῖλα ταῖς ἐξοχαῖς. τὸ δὲ
ἔδαφος τὸ μεταξὺ πᾶν πέτρινον. βαθύ τι, καὶ στενὸν τελέως ἔχον διὰ μέσου ῥῆγμα. ὥστε καὶ κύνα,
καὶ λαγὼ διάλλεσθαι. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ῥεῖθρον τοῦ ποταμοῦ ἄχρι χείλους πλῆρες. ὀχετοῦ πλάτει προ-
σεοικός. διὰ δὲ τὴν σκολιότητα, καὶ τὴν ἐκ τοσούτου συναγωγήν, καὶ τὸ διὰ τῆς φάραγγος βάθος,
εὐθὺς τοῖς πόρρωθεν προσιοῦσιν ὁ ψόφος, βροντῇ προσπίπτει παραπλήσιος. διεκβαίνων δὲ τὰ ὄρη το-
σαύτην καταφέρει χοῦν ἐπὶ τὴν θάλατταν, τὴν μὲν, ἐκ τῆς καταονίας, τὴν δὲ, ἐκ τῶν κιλίκων πεδίων,
ὥστε ἐπ' αὐτῷ καὶ χρησμὸς ἐκπεπτωκὼς φέρεται τοιοῦτος.

» Ἔσεται ἐσσομένοις ὅτε πύραμος εὐρυοδίνης, Ἠιόνα προχέων ἱερὴν ἐς κύπρον ἵκηται.

Παραπλήσιον γάρ τι κἀκεῖ συμβαίνει, καὶ ἐν αἰγύπτῳ τοῦ νείλου ἀεὶ προσεξηπειροῦντος τὴν θάλατ-
ταν τῇ προχώσει. καθὸ, καὶ ἡρόδοτος μὲν δῶρον τοῦ ποταμοῦ τὴν αἴγυπτον εἶπεν. ὁ ποιητὴς δὲ τὴν
φάρον πελαγίαν ὑπάρξαι πρότερον οὔπω, νυνὶ πρόσγειον οὖσαν τῇ αἰγύπτῳ. τρίτη δ' ἐστὶν ἱερω-
σύνη διὸς δακίη οὐ λειπομένη ταύτης. ἀξιόλογος δ' ὅμως. ἐν ταύτῃ δ' ἐστὶ λάκκος ἁλμυροῦ ὕδατος
ἀξιολόγου λίμνης ἔχων περίμετρον ὀφρύσι κλειόμενος ὑψηλαῖς τε, καὶ ὀρθαῖς. ὥστ' ἔχειν κατά-
βασιν κλιμακώδη. τὸ δ' ὕδωρ, οὔτ' αὔξεσθαι φασίν, οὔτ' ἀπόρρυσιν ἔχειν οὐδαμοῦ φανεράν. πόλιν δ'
οὔτε τὸ τῶν καταόνων ἔχει πεδίον, οὔθ' ἡ μελιτηνή. φρούρια δ' ἐρυμνὰ ἐπὶ τῶν ὀρῶν. τά τε ἀζάμορα,
καὶ τὸ δασταρκόν. ὃ περιρρεῖται τῷ καρμάλα ποταμῷ. ἔχει δὲ καὶ ἱερὸν τὸ τοῦ καταόνος ἀπόλλω-
νος. καθ' ὅλην τιμώμενον τὴν καππαδοκίαν. ποιησαμένων ἀφιδρύματα ἀπ' αὐτοῦ. οὐ δὲ αἱ ἄλλαι στρα-
τηγίαι πόλεις ἔχουσι πλὴν δυοῖν. τῶν δὲ λοιπῶν στρατηγιῶν ἐν μὲν τῇ σαργαραυσήνῃ πολίχνιον ἐ-
στὶν ἥρπα. καὶ ποταμὸς κάρμαλος. ὃς καὶ αὐτὸς εἰς τὴν κιλικίαν ἐκδίδωσιν. ἐν τε ταῖς ἄλλαις. ὅ τε
ἄργος ἔρυμα ὑψηλὸν πρὸς τῷ ταύρῳ. καὶ τὰ νῶρα ὃ νῦν καλεῖται νηροασσός. ἐν ᾧ εὐμένης πολιορκού-
μενος ἀντέσχε πολὺν χρόνον. καθ' ἡμᾶς δὲ σισίνου ὑπῆρξε θησαυροφυλάκιον τοῦ ἐπιθεμένου τῇ καππαδο-
κῶν ἀρχῇ. τούτου δ' ἦν καὶ τὰ κάδηνα βασίλειον. καὶ πόλεως κατασκευὴν ἔχον. ἔστι δ' ἐπὶ τῶν ὅρων τῆς λυ-
καονικῶν. τά τε σάβδερα κωμόπολις λέγεται ὑπάρξαι ποτέ. καὶ αὕτη μεσόπολις τῆς χώρας. ἐν δὲ τῇ μορι-
μηνῇ τὸ ἱερὸν τοῦ οὐενάσιος διός. ἱεροδούλων κατοικίαν ἔχον τρισχιλίων, σχεδόν τι καὶ χώραν ἱερὰν εὔκαρ-
πον, παρέχουσαν πρόσοδον ἐνιαύσιον ταλάντων πεντεκαίδεκα τῷ ἱερεῖ. καὶ οὗτος ἐστὶ διὰ βίου. καὶ

θάπερ, καὶ ὁ ἐν ῥωμαίοις. καὶ δεύτερα δὲ κατὰ τιμὴν μετ' ἐκεῖνον. δύο δὲ ἔχουσι μόνον στρατηγίαι πό-
λεις. ἡ μὲν τυανῖτις τὰ τύανα. ὑποπεπτωκυῖα τῷ ταύρῳ τῷ κατὰ τὰς κιλικίας πύλας. καθ' ἃς
εὐπετέσταται, καὶ κοινόταται πᾶσιν εἰσὶν αἱ εἰς τὴν κιλικίαν, καὶ τὴν συρίαν ὑπερβολαί. καλεῖται
δὲ εὐσέβεια ἡ πρὸς τῷ ταύρῳ. ἀγαθὴ δὲ καὶ πεδιὰς ἡ πλείστη. τὰ δὲ τύανα ἐπίκειται χώματι σεμι-
ραμίδος τετειχισμένῳ καλῶς. οὐ πολὺ δ' ἄποθεν ταύτης ἐστὶ τά τε κάσταβαλα, καὶ τὰ κύβιστρα. ἔ-
τι μᾶλλον τῷ ὄρει πλησιάζοντα πολίσματα. ὧν ἐν τοῖς κασταβάλοις ἐστὶ τὸ τῆς περασίας ἀρτέμι-
δος ἱερόν. ὅπου φασὶ τὰς ἱερείας γυμνοῖς τοῖς ποσὶ δι' ἀνθρακιᾶς βαδίζειν ἀπαθεῖς. κἀνταῦθα δέ
τινες τὴν αὐτὴν θρυλλοῦσιν ἱστορίαν περὶ τοῦ ὀρέστου, καὶ τῆς ταυροπόλου. περασίαν κεκλῆσθαι φά-
σκοντες, διὰ τὸ πέραθεν κομισθῆναι. ἐν μὲν δὴ τῇ τυανίτιδι στρατηγίᾳ τῶν λεχθεισῶν δέκα, ἔστι πόλι-
σμα τὰ τύανα. τὰς δ' ἤδη κτήτους οὐ συναριθμῶ ταύταις κάσταβαλα. καὶ τὰ κύβιστρα. καὶ τὰ
ἐν τῇ τραχείᾳ κιλικίᾳ. ἐν ᾗ τὴν ἐλαιοῦσσαν νησίον εὔκαρπον συνέκτισεν ἀρχέλαος ἀξιολόγως. καὶ τὸ
πλέον ἐνταῦθα διέτριβεν. ἐν δὲ τῇ κιλικίᾳ καλουμένῃ τὰ μάζακα ἡ μητρόπολις τοῦ ἔθνους. καλεῖ-
ται δ' εὐσέβεια, καὶ αὕτη ἐπίκλησιν ἡ πρὸς τῷ ἀργαίῳ. κεῖται γὰρ ὑπὸ τῷ ἀργαίῳ ὄρει πάντων
ὑψηλοτάτῳ, καὶ ἀνέκλειπτον χιόνι τὴν ἀκρώρειαν ἔχοντι. ἀφ' ἧς φασὶν οἱ ἀναβαίνοντες οὗτοι δ' εἰ-
σὶν ὀλίγοι, κατοπτεύεσθαι ταῖς αἰθρίαις ἄμφω τὰ πελάγη. τό τε ποντικὸν, καὶ τὸ ἰσσικόν, τὰ μὲν
οὖν ἄλλα ἀφυῆ πρὸς συνοικισμὸν ἔχει πόλεως. ἄνυδρός τε γάρ ἐστι, καὶ ἀνώχυρος. διά τε τὴν ὀλιγω-
ρίαν τῶν ἡγεμόνων. καὶ ἀτείχιστος. τάχα δὲ καὶ ἐπίτηδες, ἵνα μὴ ὡς ἐρύματι πεποιθότες τῷ τείχει,
σφόδρα πιστεύοιεν πεδίον οἰκοῦντες, λόφους ὑπερδεξίους ἔχον, καὶ ἐμβελεῖς. καὶ τὰ κύκλῳ δὲ χω-
ρία ἔχει τελέως ἄφορα, καὶ ἀγεώργητα. καίπερ ὄντα πεδινά. ἀλλ' ἔστιν ἀμμώδη, καὶ ὑπόπετρα. μι-
κρὸν δ' ἔτι προϊοῦσι, καὶ πυρίληπτα πεδία. καὶ μεστὰ βόθρων πυρὸς ἐπὶ σταδίους πολλούς. ὥστε πόρ-
ρωθεν ἡ κομιδὴ τῶν ἐπιτηδείων. καὶ τὸ δοκοῦν δὲ πλεονέκτημα παρακείμενον ἔχει κίνδυνον. ἀξύλου
γὰρ οὔσης σχεδόν τι τῆς συμπάσης καππαδοκίας, ὁ ἀργαῖος ἔχει περικείμενον δρυμόν. ὥστε ἐγγύ-
θεν ὁ ξυλισμὸς πάρεστιν. ἀλλ' οἱ ὑποκείμενοι τῷ δρυμῷ τόποι, καὶ αὐτοὶ πολλαχοῦ πυρὰ ἔχουσιν. ἅμα
δὲ καὶ ὕφυδροί εἰσι ψυχρῷ ὕδατι. οὔτε τοῦ πυρὸς, οὔτε τοῦ ὕδατος εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἐκκύπτοντος.
ὥστε καὶ ποάζειν τὴν πλείστην. ἔστι δ' ὅπου, καὶ ἑλῶδές ἐστι τὸ ἔδαφος. καὶ νύκτωρ ἐξάπτονται φλό-
γα ἀπ' αὐτοῦ. οἱ μὲν οὖν ἔμπειροι φυλαττόμενοι τὸν ξυλισμὸν ποιοῦνται. τοῖς δὲ πολλοῖς κίνδυνός ἐστι.
καὶ μάλιστα τοῖς κτήνεσιν, ἐμπίπτουσιν εἰς ἀδήλους βόθρους τοῦ πυρός. ἔστι δὲ καὶ ποταμὸς ἐν τῷ πε-
δίῳ τῷ πρὸ τῆς πόλεως μέλας καλούμενος, ὅσον τετταράκοντα σταδίους διέχων τῆς πόλεως, ἐν τα-
πεινοτέρῳ τῆς πόλεως χώρῳ τὰς πηγὰς ἔχων. ταύτῃ μὲν οὖν ἄχρηστος αὐτοῖς ἐστίν. οὐχ ὑπερδέξιον
ἔχων τὸ ῥεῦμα. εἰς ἕλη δὲ καὶ λίμνας διαχεόμενος, κἀκεῖ τὸν ἀέρα τοῦ θέρους τὸν περὶ τὴν πόλιν.
καὶ τὸ λατομεῖον δὲ ποιεῖ δύσχρηστον, καίπερ εὔχρηστον ὄν. πλαταμῶνες γάρ εἰσιν. ἀφ' ὧν τὴν λιθίαν ἔ-
χειν ἄφθονον συμβαίνει τοῖς μαζακηνοῖς πρὸς τὰς οἰκοδομίας. καλυπτόμεναι δ' ὑπὸ τῶν ὑδάτων
αἱ πλάκες, ἀντιπράττουσι, καὶ ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ ἕλη πανταχοῦ πυρίληπτα. ἀριαράθης δ' ὁ βασι-
λεὺς τοῦ μέλανος κατά τινα στενὰ ἔχοντος τὴν εἰς τὸν εὐφράτην διέξοδον, ἐμφράξας ταῦτα, λίμνην
πελαγίαν ἀπέδειξε τὸ πλησίον πεδίον. ἐνταῦθα δὲ νησίδας τινὰς, ὡς τὰς κυκλάδας ἀπολαμβανόμε-
νος, διατριβὰς ἐν αὐταῖς ἐποιεῖτο μειρακιώδεις. ἐκραγὲν δ' ἀθρόως τὸ ἔμφραγμα, ἐξέκλυσε πάλιν
τὸ ὕδωρ. πληρωθεὶς δ' ὁ εὐφράτης, τῆς τε τῶν καππαδοκῶν πολλὴν παρέσυρε, καὶ κατοικίας,
καὶ φυτείας ἠφάνισε πολλάς. τῆς τε τῶν γαλατῶν τῶν τὴν φρυγίαν ἐχόντων οὐκ ὀλίγην ἐλυμήνα-
το. ἀντὶ δὲ τῆς βλάβης ἐπράξαντο ζημίαν αὐτὸν τάλαντα τριακόσια. ῥωμαίοις ἐπιτρέψαντες τὴν κρί-
σιν. τὸ δ' αὐτὸ συνέβη, καὶ περὶ ἥρπα. καὶ γὰρ ἐκεῖ τὸ τοῦ καρμάλα ῥεῦμα ἐνέφραξεν. εἶτ' ἐκραγέν-
τος τοῦ στόματος. καὶ τῶν κιλίκων τινὰ χωρία τὰ περὶ τὸν μαλλὸν διαφθείραντος, τοῦ ὕδατος, δίκας
ἔτισαν τοῖς ἀδικηθεῖσιν. ἀφυὲς δ' οὖν κατὰ πολλὰ τὸ τῶν μαζακηνῶν χωρίον, ὅ πρὸς κατοικίαν μά-
λιστα οἱ βασιλεῖς ἑλέσθαι δοκοῦσιν, ὅτι τῆς χώρας ἁπάσης τόπος ἦν μεσαίτατος οὗτος τῶν ξύλα ἐ-
χόντων ἅμα, καὶ λίθον πρὸς τὰς οἰκοδομίας. καὶ χόρτον. οὗ πλεῖστον ἐδέοντο κτηνοτροφοῦντες. τρό-
πον γάρ τινα στρατόπεδον ἦν αὐτοῖς ἡ πόλις. τὴν δ' ἄλλην ἀσφάλειαν τὴν αὐτῶν τε καὶ σωμάτων,
ἐκ τῶν ἐρυμάτων εἶχον τῶν ἐν τοῖς φρουρίοις. ἃ, πολλὰ ὑπάρχει. τὰ μὲν, βασιλικά. τὰ δὲ, τῶν φίλων.
ἀφέστηκε δὲ τὰ μάζακα τοῦ μὲν πόντου περὶ ὀκτακοσίους σταδίους πρὸς νότον. τοῦ δ' εὐφράτου, μικρὸν
ἐλάττους, ἢ διπλασίους. τῶν κιλίκων δὲ πυλῶν ὁδὸν ἡμερῶν ἕξ. καὶ τοῦ κυρίνου τὸ στρατόπεδον διὰ τυά-
νων. κατὰ μέσην δὲ τὴν ὁδὸν κεῖται τὰ τύανα. διέχει δὲ κυβίστρων τριακοσίους σταδίους. χρῶνται δ' οἱ
μαζακηνοὶ τοῖς χαρώνδα νόμοις, αἱρούμενοι καὶ νομῳδὸν, ὅς ἐστιν αὐτοῖς ἐξηγητὴς τῶν νόμων, κα-
θάπερ οἱ παρὰ ῥωμαίοις νομικοί. διέθηκε δὲ φαύλως αὐτοὺς τιγράνης ὁ ἀρμένιος ἡνίκα τὴν
καππαδοκίαν κατέδραμεν. ἅπαντας γὰρ ἀναστάτους ἐποίησεν εἰς μεσοποταμίαν, καὶ τὰ τι-
γρανόκερτα ἐκ τούτων συνῴκισε τὸ πλέον. ὕστερον δ' ἐπανῆλθον οἱ δυνάμενοι μετὰ τὴν τῶν τιγρα-
νοκέρτων ἅλωσιν. μέγεθος δὲ τῆς χώρας κατὰ πλάτος μὲν, τὸ ἀπὸ τοῦ πόντου πρὸς τὸν ταῦρον, ὅσον

χίλιοι, καὶ ὀκτακόσιοι στάδιοι. μῆκος δὲ ἀπὸ τῆς λυκαονίας, καὶ φρυγίας, μέχρι εὐφράτου πρὸς τὴν
ἕω, καὶ τὴν ἀρμενίαν, περὶ τρισχιλίους. ἀγαθὴ δὲ καὶ καρποῖς. μάλιστα δὲ σίτῳ, καὶ βοσκήμασι
παντοδαποῖς. νοτιωτέρα δὲ οὖσα τοῦ πόντου, ψυχροτέρα ἐστίν. ἡ δὲ γαβαδανία καίπερ πεδιὰς οὖ-
σα, καὶ νοτιωτάτη πασῶν, ἀπὸ πέπτωκε γὰρ τῷ ταύρῳ, καὶ μόλις τῶν καρπίμων τι φέρει δέν-
δρων. αἰγίβοτος δ' ἐστὶ καὶ αὕτη, καὶ ἡ πολλὴ τῆς ἄλλης. καὶ μάλιστα ἡ περὶ γαρσαυίραν, καὶ λυκαο-
νίαν, καὶ μοριμηνήν. ἐν δὲ τῇ καππαδοκίᾳ γίνεται καὶ ἡ λεγομένη σινωπικὴ μίλτος, ἀρίστη τῶν πα-
σῶν. ἐνάμιλλος δ' ἐστὶν αὐτῇ, καὶ ἡ ἰβηρική. ὠνομάσθη δὲ σινώπη, καὶ διότι κατάγειν ἐκεῖσε εἰώθασιν
οἱ ἔμποροι, πρὶν ἢ τὸ τῶν ἐφεσίων ἐμπορεῖον μέχρι τῶν ἐνθάδε ἀνθρώπων διΐχθαι. λέγεται δὲ καὶ κρυ-
στάλλου πλάκας. καὶ ὀνυχίτου λίθου, πλησίον τῆς τῶν γαλατῶν, ἀπὸ τῶν ἀρχελάου μεταλλευόν-
των εὑρέσθαι. ἦν δέ τις τόπος καὶ λίθου λευκοῦ. τῷ ἐλέφαντι κατὰ τὴν χρόαν ἐμφεροῦς. ὥσπερ ἀ-
κόνας τινὰς οὐ μεγάλας ἐκφέρων, ἐξ ὧν τὰ λαβία τοῖς μαχαιρίοις κατεσκεύαζον. ἄλλως δὲ τὰς διὰ-
φανεῖς βώλους μεγάλους ἐκδιδοὺς, ὥστε καὶ ἔξω κομίζεσθαι. ὅριον δ' ἐστὶ τοῦ πόντου, καὶ τῆς καπ-
παδοκίας ὀρεινή τις παράλληλος τῷ ταύρῳ. τὴν ἀρχὴν ἔχουσα ἀπὸ τῶν ἑσπερίων ἄκρων τῆς καμ-
μανηνῆς. ἐφ' ἧς ἵδρυται φρούριον ἀπότομον δασμένων μέχρι τῶν ἑωθινῶν τῆς λαουιανσηνῆς. στρατηγίαι
δ' εἰσὶ τῆς καππαδοκίας ἥτε καμμανηνὴ, καὶ ἡ λαουιανσηνή. συνέβη δὲ ἡνίκα πρῶτοι ῥωμαῖοι τὰ κα-
τὰ τὴν ἀσίαν διῴκουν νικήσαντες ἀντίοχον, φιλίας καὶ συμμαχίας ἐποιοῦντο πρός τε τὰ ἔθνη,
καὶ τοὺς βασιλέας, τοῖς μὲν ἄλλοις βασιλεῦσιν, αὐτοῖς καθ' ἑαυτοὺς δεδῆναι τὴν τιμὴν ταύτην. τῷ
δὲ καππαδόκει, καὶ αὐτῷ τε τῷ ἔθνει κοινῇ. ἐκλιπόντος δὴ τοῦ βασιλικοῦ γένους, οἱ μὲν ῥωμαῖοι συνε-
χώρουν αὐτοῖς αὐτονομεῖσθαι κατὰ τὴν συγκειμένην φιλίαν τε καὶ συμμαχίαν πρὸς τὸ ἔθνος. οἱ δὲ
πρεσβευσάμενοι τὴν μὲν ἐλευθερίαν παρῃτοῦντο. οὐ γὰρ δύνασθαι φέρειν αὐτὴν ἔφασαν. βασι-
λέα δ' ἠξίουν αὐτοῖς ἀποδειχθῆναι. οἱ δὲ, θαυμάσαντες εἴ τινες οὕτως εἶεν ἀπειρηκότες πρὸς τὴν ἐλευ-
θερίαν, ἐπέτρεψαν αὐτοῖς ἐξ ἑαυτῶν ἑλέσθαι κατὰ χειροτονίαν ὃν ἂν βούλοιντο. καὶ εἵλοντο ἀριο-
βαρζάνην. εἰς τριγένειαν δὲ προελθόντος τοῦ γένους ἐξέλιπε. κατεστάθη δ' ὁ ἀρχέλαος οὐδὲν προ-
σήκων αὐτοῖς. ἀντωνίου καταστήσαντος ταῦτα καὶ περὶ τῆς μεγάλης καππαδοκίας μέχρι τούτου.
περὶ δὲ τῆς τραχείας κιλικίας τῆς προστεθείσης αὐτῇ, βέλτιόν ἐστιν ἐν τῷ περὶ τῆς ὅλης κιλικίας
λόγῳ διελθεῖν. τοῦ δὲ πόντου κατέστη μὲν μιθριδάτης ὁ εὐπάτωρ βασιλεὺς, εἶχε δὲ τὴν ἀφοριζο-
μένην τῷ ἅλυϊ μέχρι τιβαρηνῶν, καὶ ἀρμενίων. καὶ τῆς ἐντὸς ἅλυος τὰ μέχρι ἀμάστρεως. καί τινων
τῆς παφλαγονίας μερῶν. προσεκτήσατο δ' οὗτος, καὶ τὴν μέχρι ἡρακλείας παραλίαν, ἐπὶ τὰ
δυσμικὰ μέρη τῆς ἡρακλείδου τοῦ πλατωνικοῦ πατρίδος. ἐπὶ δὲ τἀναντία, μέχρι κολχίδος, καὶ
τῆς μικρᾶς ἀρμενίας. ἃ δὴ καὶ προσέθηκε τῷ πόντῳ. καὶ δὴ καὶ πομπήϊος καταλύσας ἐκεῖνον,
ἐν τούτοις τοῖς ὅροις οὖσαν τὴν χώραν ταύτην παρέλαβε. τὰ μὲν πρὸς ἀρμενίαν, καὶ τὰ περὶ τὴν
κολχίδα τοῖς συναγωνισαμένοις δυνάσταις κατένειμε. τὰ δὲ λοιπὰ εἰς ἕνδεκα πολιτείας διεῖλε. καὶ
τῇ βιθυνίᾳ προσέθηκεν. ὥστ' ἐξ ἀμφοῖν ἐπαρχίαν γενέσθαι μίαν μεταξὺ τῶν μεσογαίων τινὰς βα-
σιλεύεσθαι παρέδωκε τοῖς ἀπὸ πυλαιμένους, καθάπερ καὶ τοὺς γαλάτας τοῖς ἀπὸ γένους τετράρ-
χαις. ὕστερον δ' οἱ τῶν ῥωμαίων ἡγεμόνες, ἄλλους καὶ ἄλλους ἐποιήσαντο μερισμούς. βασιλέας τε
καὶ δυνάστας καθιστάντες. καὶ πόλεις. καὶ τὰς μὲν, ἐλευθεροῦντες. τὰς δὲ, ἐγχειρίζοντες τοῖς δυνά-
σταις. τὰς δ' ὑπὸ τῷ δήμῳ τῶν ῥωμαίων ἐῶντες. ἡμῖν δ' ἐπιοῦσι τὰ καθ' ἕκαστα, ὡς νῦν ἔχει λεγέ-
σθω. μικρὰ καὶ τῶν προτέρων ἐφαπτομένοις, ὅπου τοῦτο χρήσιμον. ἀρξώμεθα δὲ ἀπὸ τῆς ἡρακλείας
ἥπερ δυσμικωτάτη ἐστὶ τούτων τῶν τόπων. εἰς δὲ τὸν εὔξεινον πόντον εἰσπλέουσιν ἐκ τῆς προποντί-
δος, ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὰ προσεχῆ τῷ βυζαντίῳ κεῖται, θρᾳκῶν δ' ἐστὶ, καλεῖται δὲ τὰ ἀριστερὰ τοῦ πόν-
του θρᾳκικά. ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ προσεχῆ, καλχηδόνια. βιθυνῶν δ' ἐστὶ τὰ πρῶτα. εἶτα μαριανδυνῶν. τι-
νὲς δὲ καὶ καυκώνων φασίν. εἶτα παφλαγόνων μέχρι ἅλυος. εἶτα καππαδόκων τῶν πρὸς τῷ πόντῳ.
καὶ τῶν ἑξῆς μέχρι κολχίδος. πάντα δὲ ταῦτα καλεῖται τὰ δεξιὰ τοῦ εὐξείνου πόντου. ταύτης δὲ
τῆς παραλίας ὑπῆρξεν εὐπάτωρ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς κολχίδος μέχρι ἡρακλείας. τὰ δ' ἐπέκεινα τὰ
μέχρι τοῦ στόματος, καὶ τῆς χαλκηδόνος τῷ βιθυνῶν βασιλεῖ συνέμενε, καταλυθέντων δὲ τῶν βασι-
λέων, ἐφύλαξαν οἱ ῥωμαῖοι τοὺς αὐτοὺς ὅρους. ὥστε τὴν ἡράκλειαν προσκεῖσθαι τῷ πόντῳ, τὰ δ' ἐπέ-
κεινα βιθυνοῖς προσχωρεῖν. οἱ μὲν οὖν βιθυνοὶ, διότι πρότερον μυσοὶ ὄντες, μετωνομάσθησαν οὕτως ἀπὸ τῶν
θρᾳκῶν τῶν ἐποικησάντων βιθυνῶν τε καὶ θυνῶν. ὁμολογεῖται παρὰ τῶν πλείστων. καὶ σημεῖα τίθενται. τοῦ
μὲν τῶν βιθυνῶν ἔθνους τὰ μέχρι νῦν ἐν τῇ θρᾴκῃ λέγεσθαί τινας βιθυνοὺς, τοῦ δὲ τῶν θυνῶν, τὴν θυνιάδα ἀκτὴν
τὴν πρὸς ἀπολλωνίᾳ, καὶ σαλμυδησσῷ. καὶ οἱ βέβρυκες δὲ οἱ τούτων προεποικήσαντες τὴν μυσίαν, θρᾷκες ἦσαν,
ὡς εἰκάζω ἐγώ. εἴρηται δ' ὅτι καὶ αὐτοὶ οἱ μυσοὶ θρᾳκῶν ἄποικοί εἰσι τῶν νῦν λεγομένων μυσῶν. ταῦτα
μὲν οὕτω λέγεται. τοὺς δὲ μαριανδυνοὺς, καὶ τοὺς καύκωνας οὐχ ὁμοίως ἅπαντες λέγουσι. τὴν
γὰρ δὴ ἡράκλειαν ἐν τοῖς μαριανδυνοῖς ἱδρῦσθαι φασί. μιλησίων κτίσμα. τίνες δὲ καὶ πόθεν οὐδὲν
εἴρηται. οὐ δὲ διάλεκτος. οὐδὲ διαφορὰ ἐθνικὴ περὶ τοὺς ἀνθρώπους φαίνεται. παραπλήσιοι δ' εἰσὶ

τοῖς βιθυνοῖς. ἔοικεν οὖν καὶ τοῦτο θράκιον ὑπάρξαι τὸ φῦλον. θεόπομπος δὲ μαριανδυνόν φησι μέρος τῆς παφλαγονίας, ἄρξαντα ὑπὸ πολλῶν δυναστευομένης, ἐπελθόντα τὴν τῶν βεβρύκων κατασχεῖν. ἣν δ' ἐξέλιπεν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ καταλιπεῖν. εἴρηται δὲ καὶ τοῦτο. ὅτι πρῶτοι τὴν ἡράκλειαν κτίσαντες μιλήσιοι τοὺς μαριανδυνοὺς εἱλωτεύειν ἠνάγκασαν, τοὺς προκατέχοντας τὸν τόπον, ὥστε καὶ πιπράσκεσθαι ὑπ' αὐτῶν. μὴ εἰς τὴν ὑπερορίαν δέ. συμβῆναι γὰρ ἐπὶ τούτοις, καθάπερ κρησὶ μὲν ἐθήτευεν ἡ μνῴα καλουμένη σύνοδος. θετταλοῖς δὲ οἱ πενέσται. τοὺς δὲ καύκωνας οὓς ἱστοροῦσι τὴν ἐφεξῆς οἰκῆσαι παραλίαν τοῖς μαριανδυνοῖς μέχρι τοῦ παρθενίου ποταμοῦ πόλιν ἔχοντας τὸ τίειον, οἱ μὲν, σκύθας φασίν. οἱ δὲ, τῶν μακεδόνων τινάς. οἱ δὲ, τῶν πελασγῶν. εἴρηται δέ που, καὶ περὶ τούτων πρότερον. καλλισθένης δὲ καὶ ἔγραφε τὰ ἔπη ταῦτα εἰς τὸν διάκοσμον. μετὰ τὸ

» Κρῶμνάν τ' αἰγιαλόν τε καὶ ὑψηλοὺς ἐρυθίνους τιθεὶς,

» Καύκωνας αὖτ' ἦγε πολυκλέος υἱὸς ἀμύμων.

» Οἳ περὶ παρθένιον ποταμὸν κλυτὰ δώματ' ἔναιον.

Παρήκειν γὰρ ἀφ' ἡρακλείας, καὶ μαριανδυνῶν μέχρι λευκοσύρων. οὓς καὶ ἡμεῖς καππάδοκας προσαγορεύομεν. τὸ δὲ τῶν καυκώνων γένος τὸ περὶ τὸ τίειον μέχρι παρθενίου, καὶ τὸ τῶν ἐνετῶν τὸ συνεχὲς μετὰ τὸν παρθένιον τῶν ἐχόντων τὸ κύτωρον. καὶ νῦν δ' ἔτι καυκωνίτας εἶναί τινας περὶ τὸν παρθένιον, ἡ μὲν οὖν ἡράκλεια πόλις ἐστὶν εὐλίμενος, καὶ ἄλλως ἀξιόλογος. ἥ γε καὶ ἀποικίας ἔστελλεν. ἐκείνης γὰρ ἥ τε χερρόνησος ἄποικος. καὶ ἡ κάλλατις. ἦν τε αὐτόνομος, εἶτα ἐτυραννήθη χρόνους τινάς. εἶτ' ἠλευθέρωσεν ἑαυτὴν πάλιν. ὕστερον δ' ἐβασιλεύθη γενομένη ὑπὸ τοῖς ῥωμαίοις. ἐδέξατο δ' ἀποικίαν ῥωμαίων ἐπὶ μέρει τῆς πόλεως, καὶ τῆς χώρας. λαβὼν δὲ παρ' ἀντωνίου τὸ μέρος τοῦτο τῆς πόλεως ἀδιατόριξ. ὁ δὲ, μενεκλίου τετράρχου γαλατῶν υἱὸς, ὃ κατεῖχον οἱ ῥωμαῖοι ἡρακλεῶται μικρὸν πρὸ τῶν ἀκτιακῶν, ἐπέθετο νύκτωρ τοῖς ῥωμαίοις. καὶ ἀπέσφαξεν αὐτοὺς, ἐπιτρέψαντος ὡς ἔφασκεν ἐκείνου ἀντωνίου. θριαμβευθεὶς δὲ μετὰ τὴν ἐν ἀκτίῳ νίκην, ἐσφάγη μεθ' υἱοῦ. ἡ δὲ πόλις ἐστὶ τῆς ποντικῆς ἐπαρχίας τῆς συντεταγμένης τῇ βιθυνίᾳ. μεταξὺ δὲ καλχηδόνος, καὶ ἡρακλείας ῥέουσι ποταμοὶ πλείους. ὧν εἰσιν ὅ, τε ψίλλις καὶ ὁ κάλπας. καὶ σαγγάριος. οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς κατὰ σαγγίαν κώμην. ἀφ' ἑκατὸν καὶ πεντήκοντά που σταδίων, οὗτος πεσινοῦντος. διέξεισι δὲ τῆς ἐπικτήτου φρυγίας τὴν πλείω. μέρος δέ τι, καὶ τῆς βιθυνίας. ὥστε καὶ τῆς νικομηδείας ἀφεστάναι μικρὸν πλείους, ἢ τριακοσίους σταδίους. καθ' οὓς συμβάλλει ποταμὸς αὐτῷ γάλλος. ἐκ μόδρων τὰς ἀρχὰς ἔχων, τῆς ἐφ' ἑλλησπόντῳ φρυγίας. αὕτη δ' ἐστὶν, ἡ αὐτὴ τῇ ἐπικτήτῳ. καὶ εἶχον αὐτὴν οἱ βιθυνοὶ πρότερον. αὐξηθεὶς δὲ καὶ γενόμενος πλωτὸς καίπερ πάλαι ἄπλωτος ὢν, τὴν βιθυνίαν ὁρίζει πρὸς ταῖς ἐκβολαῖς, πρόκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης, καὶ ἡ θυνία νῆσος. ἐν δὲ τῇ ἡρακλεώτιδι γίνεται τὸ ἀκόνιτον. διέχει δὲ ἡ πόλις αὕτη τοῦ ἱεροῦ τοῦ χαλκηδονίου σταδίους χιλίους που, καὶ πεντακοσίους. τοῦ δὲ σαγγαρίου πεντακοσίους. τὸ δὲ τίειον ἐστὶ πολίχνιον οὐδὲν ἔχον μνήμης ἄξιον, πλὴν ὅτι φιλέταιρος ἐντεῦθεν ὁ ἀρχηγέτης τοῦ τῶν ἀτταλικῶν βασιλέων γένους. εἶθ' ὁ παρθένιος ποταμὸς διὰ χωρίων ἀνθηρῶν φερόμενος. καὶ διὰ τοῦτο τοῦ ὀνόματος τούτου τετυχηκώς. ἐν αὐτῇ τῇ παφλαγονίᾳ τὰς πηγὰς ἔχων. ἔπειτα ἡ παφλαγονία, καὶ οἱ ἐνετοί. ζητοῦσι δὲ τίνας λέγει τοὺς ἐνετοὺς ὁ ποιητής. ὅταν φῇ.

» Παφλαγόνων δ' ἡγεῖτο πυλαιμένεος λάσιον κῆρ

» Ἐξ ἐνετῶν, ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτεράων.

Οὐ γὰρ δείκνυσθαί φασι νῦν ἐνετοὺς ἐν τῇ παφλαγονίᾳ. οἱ δὲ, κώμην ἐν τῷ αἰγιαλῷ φασὶ, δέκα σχοίνους ἀπὸ ἀμάστρεως διέχουσαν. ζηνόδοτος δὲ ἐξ ἐνετῆς γράφει. καί φησι δηλοῦσθαι τὴν νῦν ἀμισόν. ἄλλοι δὲ φῦλόν τι τοῖς καππάδοξιν ὅμορον στρατεῦσαι μετὰ κιμμερίων. εἶτ' ἐκπεσεῖν εἰς τὸν ἀδρίαν. τὸ δὲ, μάλισθ' ὁμολογούμενον ἐστὶν, ὅτι ἀξιολογώτατον ἦν τῶν παφλαγόνων φῦλον οἱ ἐνετοί, ἐξ οὗ ὁ πυλαιμένης ἦν, καὶ δὴ καὶ συνεστράτευσαν αὐτῷ οὗτοι πλεῖστοι. ἀποβαλόντες δὲ τὸν ἡγεμόνα διέβησαν εἰς τὴν θράκην μετὰ τὴν τροίας ἅλωσιν. πλανώμενοι δ' εἰς τὴν ἐνετικὴν ἀφίκοντο. τινὲς δὲ καὶ ἀντήνορα, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, κοινωνῆσαι τοῦ στόλου τούτου φασί. καὶ ἱδρυθῆναι κατὰ τὸν μυχὸν τοῦ ἀδρίου, καθάπερ ἐμνήσθημεν ἐν ἰταλικοῖς. τοὺς μὲν οὖν ἐνετοὺς διὰ τοῦτ' ἐκλιπεῖν εἰκὸς, καὶ μὴ δείκνυσθαι ἐν τῇ παφλαγονίᾳ. τοὺς δὲ παφλαγόνας πρὸς ἕω μὲν ὁρίζει ὁ ἅλυς ποταμὸς ῥέων ἀπὸ μεσημβρίας, μεταξὺ σύρων τε, καὶ παφλαγόνων, καὶ ἐξίεισι κατὰ τὸν ἡρόδοτον εἰς τὸν εὔξεινον καλούμενον πόντον. σύρους λέγοντα τοὺς καππάδοκας. καὶ γὰρ ἔτι καὶ νῦν λευκόσυροι καλοῦνται, σύρων καὶ τῶν ἔξω τοῦ ταύρου λεγομένων. κατὰ δὲ τὴν πρὸς τοὺς ἐντὸς τοῦ ταύρου σύγκρισιν. ἐκείνων ἐπικεκαυμένων τὴν χρόαν. τούτοις δὲ μὴ τοιαύτην τὴν ἐπωνυμίαν γενέσθαι συνέβη. καὶ πίνδαρός φησιν, ὅτι αἱ ἀμαζόνες, σύριον εὐρυαίχμαν δίεπον στρατόν. τὴν ἐν τῇ θεμισκύρᾳ κατοικίαν οὕτω δηλῶν. ἡ δὲ θεμίσκυρα ἐστὶν ἡ τῶν ἀμισηνῶν. αὕτη δὲ λευκοσύρων τῶν μετὰ τὸν ἅλυν. πρὸς ἕω μὲν τοίνυν ὁ ἅλυς ὅριον τῶν παφλαγόνων. πρὸς νότον δὲ φρύγες,

καὶ οἱ ἐποικήσαντες γαλάται. πρὸς δύσιν δὲ βιθυνοί, καὶ μαριανδυνοί. τὸ γὰρ τῶν καυκώνων γένος
διέφθαρται τελέως πάντοθεν. πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ εὔξεινός ἐστι. τῆς δὲ χώρας ταύτης διῃρημένης εἴς τε
τὴν μεσόγαιαν, καὶ τὴν ἐπὶ θαλάττῃ διατείνουσαν ἀπὸ τοῦ ἅλυος μέχρι βιθυνίας. ἑκατέραν, τὴν μὲν
παραλίαν ἕως τῆς ἡρακλείας, εἶχεν ὁ εὐπάτωρ. τῆς δὲ μεσογαίας, τὴν μὲν ἐγγυτάτω ἔσχεν. ἧς τινα,
καὶ πέραν τοῦ ἅλυος διέτεινε. καὶ μέχρι δεῦρο τοῖς ῥωμαίοις ἡ ποντικὴ ἐπαρχία ἀφώρισται. τὰ λοι-
πὰ δ᾽ ἦν ὑπὸ δυνάσταις, καὶ μετὰ τὴν μιθριδάτου κατάλυσιν. περὶ μὲν δὴ τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ πα-
φλαγόνων, ὅσοι μὴ ὕστερον τῷ μιθριδάτῃ. νῦν δὲ πρόκειται τὴν ὑπ᾽ ἐκείνῳ χώραν κλη-
θεῖσαν δὲ ποντικὴν διελθεῖν. μετὰ δὴ τὸν παρθένιον ποταμόν ἐστιν ἄμαστρις. ὁμώνυμος τῆς συνῳκικυίας
πόλεως. ἵδρυται δ᾽ ὑπὲρ χερρονήσου λιμένας ἐχούσης τοῦ ἰσθμοῦ ἑκατέρωθεν, ἦν δ᾽ ἡ ἄμαστρις, γυνὴ
μὲν διονυσίου τοῦ ἡρακλείας τυράννου, θυγάτηρ δὲ ὀξυάθρου τοῦ δαρείου ἀδελφοῦ τοῦ κατὰ ἀλέξαν-
δρον. ἐκείνη μὲν οὖν ἐκ τεττάρων κατοικιῶν συνῴκισε τὴν πόλιν. ἔκ τε σησάμου, καὶ κυτώρου, καὶ κρω-
μνης. ὧν καὶ ὅμηρος μέμνηται ἐν τῷ παφλαγονικῷ διακόσμῳ. τετάρτης δὲ τῆς τηΐου. ἀλλ᾽ αὕτη μὲν
ταχὺ ἀπέστη τῆς κοινωνίας. αἱ δὲ ἄλλαι συνέμειναν. ὧν ἡ σήσαμος ἀκρόπολις τῆς ἀμάστρεως λέγεται.
τὸ δὲ κύτωρον ἐμπορεῖον ἦν ποτε σινωπέων. ὠνόμασται δ᾽ ἀπὸ κυτώρου τοῦ φρίξου παιδός, ὡς ἔφορός φη-
σι. πλείστη δὲ καὶ ἀρίστη πύξος φύεται κατὰ τὴν ἀμαστριανήν. καὶ μάλιστα περὶ τὸ κύτωρον. ὁ δὲ αἰ-
γιαλός ἐστι μὲν ἠϊὼν μακρά, πλειόνων, ἢ ἑκατὸν σταδίων. ἔχει δὲ καὶ κώμην ὁμώνυμον, ἧς μέμνηται ὁ
ποιητὴς ὅταν φῇ,

» Κρῶμνάν τ᾽ αἰγιαλόν τε, καὶ ὑψηλοὺς ἐρυθίνους.

Γράφουσι δέ τινες κρῶμναν κωβίαλόν τε. ἐρυθίνους δὲ λέγεσθαί φασι τοὺς νῦν ἐρυθείνους ἀπὸ τῆς
χρόας. δύο δ᾽ εἰσὶ σκόπελοι. μετὰ δὲ αἰγιαλὸν κάραμβις ἄκρα μεγάλη πρὸς τὰς ἄρκτους ἀνατεταμέ-
νη, καὶ τὴν σκυθικὴν δὲ χερρόνησον. ἐμνήσθημεν δ᾽ αὐτῆς πολλάκις, καὶ τοῦ ἀντικειμένου αὐτῇ κριοῦ
μετώπου. διθάλαττον ποιοῦντες τὸν εὔξεινον πόντον. μετὰ δὲ κάραμβιν, κίνωλις, καὶ ἀντικίνωλις. καὶ
» ἀβώνου τεῖχος, πολίχνιον. καὶ ἀρμένη. ἐφ᾽ ἣ παροιμιάζονται, ὅς τις ἔργον οὐδὲν εἶχεν, ἀρμένην ἐ-
τείχισεν. ἔστι δὲ κώμη τῶν σινωπέων ἔχουσα λιμένα. εἶτ᾽ αὐτὴ σινώπη σταδίους πεντήκοντα τῆς ἀρμένης
διέχουσα. ἀξιολογωτάτη τῶν ταύτῃ πόλεων, ἔκτισαν μὲν οὖν αὐτὴν μιλήσιοι. κατασκευασαμένη δὲ
ναυτικὸν ὑπῆρχε τῆς ἐντὸς κυανέων θαλάττης. καὶ ἔξω δὲ πολλῶν ἀγώνων μετεῖχε τοῖς ἕλλησιν. αὐτονο-
μηθεῖσα δὲ πολὺν χρόνον, οὐ διὰ τέλους ἐφύλαξε τὴν ἐλευθερίαν. ἀλλ᾽ ἐκ πολιορκίας ἑάλω. καὶ
ἐδούλευσε φαρνάκῃ πρῶτον. ἔπειτα τοῖς διαδεξαμένοις ἐκεῖνον μέχρι τοῦ εὐπάτορος, καὶ τῶν κατα-
λυσάντων ῥωμαίων ἐκεῖνον. ὁ δ᾽ εὐπάτωρ, καὶ ἐγεννήθη ἐκεῖ, καὶ ἐτράφη. διαφερόντως δὲ ἐτίμησεν
αὐτήν, μητρόπολίν τε τῆς βασιλείας ὑπέλαβεν. ἔστι δὲ καὶ φυσικῇ προνοίᾳ κατεσκευασμένη καλῶς.
ἵδρυται γὰρ ἐπὶ αὐχένι χερρονήσου τινός. ἑκατέρωθεν δὲ τοῦ ἰσθμοῦ, λιμένες καὶ ναύσταθμοι, καὶ
πηλαμύδια θαυμαστά. περὶ ὧν εἰρήκαμεν, ὅτι δευτέραν θήραν οἱ σινωπεῖς ἔχουσι. τρίτην δ᾽ οἱ βυζάν-
τιοι. καὶ κύκλῳ δ᾽ ἡ χερρόνησος προβέβληται. ῥαχιώδεις ἀκτὰς ἔχουσα, καὶ κοιλάδας τινὰς ὡσανεὶ
βόθρους πετρίνους οὓς καλοῦσι χοινικίδας. πληροῦνται δὲ οὗτοι μετεωρισθείσης τῆς θαλάττης.
ὡς καὶ διὰ τοῦτο οὐκ εὐπρόσιτον τὸ χωρίον. καὶ διὰ πᾶσαν τὴν τῆς πέτρας ἐπιφάνειαν, ἐχινώδη, καὶ
ἀνεπίβατον εἶναι γυμνῷ ποδί. ἄνωθεν μέντοι καὶ ὑπὲρ τῆς πόλεως εὔγαιόν ἐστι τὸ ἔδαφος. καὶ ἀ-
γροκηπίοις κεκόσμηται πυκνοῖς. πολὺ δὲ μᾶλλον τὰ προάστεια. αὐτὴ δ᾽ ἡ πόλις τετείχισται καλῶς,
καὶ γυμνασίῳ δὲ καὶ ἀγορᾷ, καὶ στοαῖς κεκόσμηται λαμπρῶς. τοιαύτη δὲ οὖσα, δὶς ὅμως ἑάλω.
πρότερον μὲν τοῦ φαρνάκου παρὰ δόξαν αἰφνιδίως ἐπιπεσόντος. ὕστερον δὲ ὑπὸ λευκούλλου, καὶ
τοῦ ἐγκαθημένου τυράννου. καὶ ἐντὸς ἅμα καὶ ἐκτὸς πολιορκούμενοι. ὁ γὰρ ἐγκατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ
βασιλέως φρούραρχος βακχίδης, ὑπονοῶν ἀεί τινα προδοσίαν ἐκ τῶν ἔνδοθεν, καὶ πολλὰς αἰκίας
καὶ σφαγὰς ποιῶν, ἀπαγορεῦσαι τοὺς ἀνθρώπους ἐποίησε πρὸς ἄμφω. μήτ᾽ ἀμύνασθαι δυναμένους γεν-
ναίως, μήτε προσθέσθαι κατὰ συμβάσεις. ἑάλωσαν οὖν. καὶ τὸν μὲν ἄλλον κόσμον τῆς πόλεως διεφύ-
λαξεν ὁ λεύκουλλος. τὴν δὲ τοῦ βιλλάρου σφαῖραν ἦρε. καὶ τὸν αὐτόλυκον, σθένιδος ἔργον. ὃν ἐκεῖνοι οἰ-
κιστὴν ἐνόμιζον. καὶ ἐτίμων ὡς θεόν. ἦν δὲ καὶ μαντεῖον αὐτοῦ. δοκεῖ δὲ τῶν ἰάσονι συμπλευσάντων εἶναι
καὶ κατασχεῖν τοῦτον τὸν τόπον. εἶθ᾽ ὕστερον μιλήσιοι τὴν εὐφυΐαν ἰδόντες, καὶ τὴν ἀσθένειαν τῶν ἐνοι-
κούντων, ἐξιδιάσαντο, καὶ ἐποίκους ἔστειλαν. νυνὶ δὲ καὶ ῥωμαίων ἀποικίαν δέδεκται. καὶ μέρος τῆς πό-
λεως, καὶ τῆς χώρας ἐκείνων ἐστί. διέχει δὲ τοῦ μὲν ἱεροῦ τρισχιλίους, καὶ πεντακοσίους. ἀφ᾽ ἡρακλεί-
ας δὲ δισχιλίους. καράμβεως δέ, ἑπτακοσίους σταδίους. ἄνδρας δὲ ἐξήνεγκεν ἀγαθούς. τῶν μὲν φι-
λοσόφων, διογένη τὸν κυνικόν. καὶ τιμόθεον τὸν πατρίωνα. τῶν δὲ ποιητῶν, δίφιλον τὸν κωμικόν,
τῶν δὲ συγγραφέων, βάτωνα τὸν πραγματευθέντα τὰ περσικά. ἐντεῦθεν δ᾽ ἐφεξῆς ἡ τοῦ ἅλυος ἐκ-
βολὴ ποταμοῦ, ὠνόμασται δ᾽ ἀπὸ τῶν ἁλῶν ἃς παραρρεῖ. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν τῇ μεγάλῃ καππαδο-
κίᾳ τῆς ποντικῆς πλησίον, κατὰ τὴν καμβυσηνήν. ἐνεχθεὶς δ᾽ ἐπὶ δύσιν πολύς, εἶτ᾽ ἐπιστρέψας πρὸς
ἄρκτους, διά τε γαλατῶν, καὶ παφλαγόνων, ὁρίζει τούτους τε καὶ τοὺς λευκοσύρους. ἔχει δὲ καὶ ἡ σινω-

τις καὶ ἡ μέχρι Βιθυνίας πᾶσα ὀρεινὴ ὑπερκειμένη τῆς λεχθείσης παραλίας, ναυπηγήσιμον ὕλην ἀγαθὴν καὶ κατακόμιστον. ἡ δὲ Σινωπῖτις καὶ σφένδαμνον φύει, καὶ ὀρεοκάρυον. ἐξ ὧν τὰς τραπέζας τέμνουσιν. ἅπασα δὲ καὶ ἐλαιόφυτός ἐστιν, ἡ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης γεωργουμένη. μετὰ δὲ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἅλυος, ἡ Γαζηλωνῖτίς ἐστι μέχρι τῆς Σαραμηνῆς, εὐδαίμων χώρα, καὶ πεδιὰς πᾶσα, καὶ πάμφορος. ἔχει δὲ καὶ προβατείαν ἀπὸ διφθέρου καὶ μαλακῆς ἐρέας. ἧς καθ' ὅλην τὴν Καππαδοκίαν, καὶ τὸν Πόντον σφόδρα πολλὴ σπάνις ἐστί. γίνονται δὲ καὶ ζόρκες. ὧν ἀλλαχοῦ σπάνις ἐστί, ταύτης δὲ τῆς χώρας, τὴν μὲν ἔχουσιν Ἀμισηνοί. τὴν δ' ἔδωκε Δηιοτάρῳ Πομπήιος, καθάπερ καὶ τὰ περὶ τὴν Φαρνακίαν, καὶ τὴν Τραπεζουσίαν, μέχρι Κολχίδος, καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας. καὶ τούτων ἀπέδειξεν αὐτὸν βασιλέα, ἔχοντα καὶ τὴν πατρῴαν τετραρχίαν τῶν Γαλατῶν τοὺς Τολιστοβωγίους. ἀποθανόντος δ' ἐκείνου, πολλαὶ διαδοχαὶ τῶν ἐκείνου γεγόνασι. μετὰ δὲ τὴν Γαζηλῶνα, ἡ Σαραμηνή. καὶ Ἀμισὸς πόλις ἀξιόλογος. διέχουσα τῆς Σινώπης περὶ ἑνακοσίους σταδίους. φησὶ δ' αὐτὴν Θεόπομπος πρώτους Μιλησίους κτίσαι. καὶ Καππαδόκων ἄρχοντας. τρίτον δ' ὑπ' Ἀθηνοκλέους, καὶ Ἀθηναίων ἐποικισθεῖσαν, Πειραιᾶ μετονομασθῆναι. καὶ ταύτην δὲ κατέσχον οἱ βασιλεῖς. ὁ δ' Εὐπάτωρ ἐκόσμησεν ἱεροῖς, καὶ προσέκτισε μέρος. Λεύκολλος δὲ καὶ ταύτην ἐπολιόρκησεν. εἶθ' ὕστερον Φαρνάκης ἐκ Βοσπόρου διαβάς, ἐλευθερωθεῖσαν δ' ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ, παρέδωκεν Ἀντώνιος βασιλεῦσιν. εἶθ' ὁ τύραννος Στράτων κακῶς αὐτὴν διέθηκεν. εἶτ' ἐλευθερώθη πάλιν μετὰ τὰ Ἀκτιακὰ ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Σεβαστοῦ, καὶ νῦν εὖ συνέστηκεν. ἔχει δὲ τήν τε ἄλλην χώραν καλήν, καὶ τὴν Θεμίσκυραν τὸ τῶν Ἀμαζόνων οἰκητήριον. καὶ τὴν Σιδηνήν. ἔστι δ' ἡ Θεμίσκυρα πεδίον, τῇ μὲν ὑπὸ πελάγους κλυζόμενον ὅσον ἑξήκοντα σταδίους τῆς πόλεως διέχον. τῇ δ' ὑπὸ τῆς ὀρεινῆς εὐδένδρου καὶ διαρρύτου ποταμοῖς. αὐτόθεν τὰς πηγὰς ἐχούσαις. ἐκ μὲν οὖν τούτων πληρούμενος ἁπάντων εἷς ποταμὸς διέξεισι τὸ πεδίον, Θερμώδων καλούμενος. ἄλλος δὲ τούτῳ πάρισος. ῥέων ἐκ τῆς καλουμένης Φαναροίας, τὸ αὐτὸ διέξεισι πεδίον. καλεῖται δὲ Ἶρις. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν αὐτῷ τῷ Πόντῳ. ῥυεὶς δὲ διὰ πόλεως μέσης Κομάνων Ποντικῶν, καὶ διὰ τῆς Δαξιμωνίτιδος εὐδαίμονος πεδίου πρὸς δύσιν. εἶτ' εὐθὺ στρέφει πρὸς τὰς ἄρκτους παρ' αὐτὰ τὰ Γαζίουρα παλαιὸν βασίλειον. νῦν δ' ἔρημον. εἶτα ἀνακάμπτει πρὸς ἕω. παραλαβὼν τόν τε Σκύλακα, καὶ ἄλλους ποταμούς. καὶ παρ' αὐτὸ τῆς Ἀμασείας ἐνεχθεὶς τεῖχος τῆς ἡμετέρας πατρίδος πόλεως ἐρυμνοτάτης, εἰς τὴν Φαναροίαν πρόεισιν. ἐνταῦθα δὲ συμβαλὼν ὁ Λύκος αὐτῷ, τὰς ἀρχὰς ἐξ Ἀρμενίας ἔχων, γίνεται καὶ αὐτὸς Ἶρις. εἶθ' ἡ Θεμίσκυρα ὑποδέχεται τὸ ῥεῦμα, καὶ τὸ Ποντικὸν πέλαγος. διὰ δὲ τοῦτ' εὔδροσόν ἐστι, καὶ ποάζον ἀεὶ τὸ πεδίον τοῦτο, τῷ τρέφειν τε ἀγέλας βοῶν τε ὁμοίως, καὶ ἵππων δυνάμενον. σπόρον δὲ πλεῖστον δέχεται τὸν ἐκ τῆς ἐλύμου, καὶ κέγχρου. μᾶλλον δὲ ἀνέκλειπτον. αὐχμοῦ γὰρ κρείττων ἐστὶν ἡ εὐυδρία παντός. ὥστ' οὐδὲ λιμὸς καθικνεῖται τῶν ἀνθρώπων τούτων. οὐδ' ἅπαξ, τοσαύτην ὀπώραν ἐκδίδωσιν ἡ παρώρειος τὴν αὐτοφυῆ, καὶ ἀγρίαν σταφυλῆς τε καὶ ὄχνης, καὶ μήλου καὶ τῶν καρυωδῶν. ὥστε κατὰ πᾶσαν τοῦ ἔτους ὥραν ἀφθόνως εὐπορεῖν τοὺς ἐξιόντας ἐπὶ τὴν ὕλην. ποτὲ μὲν ἔτι κρεμαμένων τῶν καρπῶν ἐν τοῖς δένδρεσι. ποτὲ δ' ἐν τῇ πεπτωκυίᾳ φυλλάδι, καὶ ὑπ' αὐτῇ κειμένων. βαθείᾳ καὶ πολλῇ κεχυμένῃ. συχναὶ δὲ καὶ θῆραι παντοίων ἀγρευμάτων διὰ τὴν εὐπορίαν τῆς τροφῆς. μετὰ δὲ τὴν Θεμίσκυραν ἔστιν ἡ Σιδηνὴ πεδίον εὔδαιμον οὐχ ὁμοίως. καὶ κατάρρυτον. ἔχον χωρία ἐρυμνὰ εὐθὺ τῇ παραλίᾳ. τὴν δὲ Σιδήνην ἀφ' ἧς ὠνομάσθη Σιδηνὴ καὶ Χάβακα, καὶ Φαυίδα. μέχρι μὲν δὴ δεῦρο, ἡ Ἀμισηνή. ἄνδρες δὲ γεγόνασιν ἄξιοι μνήμης κατὰ παιδείαν ἐνταῦθα. μαθηματικοὶ μὲν, Δημήτριος ὁ τοῦ Ῥαθηνοῦ. καὶ Διονυσόδωρος. ὁμώνυμος τῷ Ἰκονιεῖ γεωμέτρῃ. γραμματικὸς δὲ Τυραννίων. οὗ ἡμεῖς ἠκροασάμεθα. μετὰ δὲ τὴν Σιδηνὴν ἡ Φαρνακία ἐστὶν ἐρυμνὸν πόλισμα. καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Τραπεζοῦς πόλις Ἑλληνίς. εἰς ἣν ἀπὸ τῆς Ἀμισοῦ, περὶ δισχιλίους καὶ διακοσίους σταδίους ἐστὶν ὁ πλοῦς. εἶτ' ἐνθένδε εἰς Φᾶσιν χιλίων που, καὶ πεντακοσίων, ὡς οἱ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ μέχρι Φάσιδος περὶ ὀκτακισχιλίους σταδίους εἰσὶν, ἢ μικρῷ πλείους, ἢ ἐλάττους. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἀπὸ Ἀμισοῦ πλέουσιν, ἡ Ἡράκλειος ἄκρα πρῶτόν ἐστιν. εἶτα ἄλλη ἄκρα Ἰασόνιον. καὶ ὁ Γενήτης. εἶτα Κύτωρος πολίχνη. ἐξ ἧς συνῳκίσθη ἡ Φαρνακία. εἶτα Ἰσχόπολις κατερριμμένη. εἶτα κόλπος ἐν ᾧ Κεράσους τε καὶ Ἑρμώνασσα κατοικίαι μέτριαι. εἶτα τῆς Ἑρμωνάσσης πλησίον ἡ Τραπεζοῦς. εἶθ' ἡ Κολχίς. ἐνταῦθα δέ που ἐστὶ καὶ Ζυγόπολίς τις λεγομένη. περὶ μὲν τῆς Κολχίδος εἴρηται, καὶ τῆς ὑπερκειμένης παραλίας. τῆς δὲ Τραπεζοῦντος ὑπέρκειται, καὶ τῆς Φαρνακίας, Τιβαρηνοί τε καὶ Χαλδαῖοι καὶ Σάννοι. οὓς πρότερον ἐκάλουν Μάκρωνας. καὶ ἡ μικρὰ Ἀρμενία. καὶ οἱ Ἀππαῖται δέ πως πλησιάζουσι τοῖς χωρίοις τούτοις οἱ πρότερον Κερκῖται. διήκει δὲ διὰ τούτων ὅ τε Σκυδίσης ὄρος τραχύτατον συνάπτον τοῖς Μοσχικοῖς ὄρεσι τοῖς ὑπὲρ τῆς Κολχίδος. οὗ τὰ ἄκρα κατέχουσιν οἱ Ἑπτακωμῆται, καὶ ὁ Παρυάδρης. ὁ μέχρι τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας ἀπὸ τῶν κατὰ Σιδήνην καὶ Θεμίσκυραν τόπων διατείνων, καὶ ποιῶν τὸ ἑωθινὸν τοῦ Πόντου πλευρόν. εἰσὶ δ' ἅπαντες μὲν οἱ ὄρειοι τούτων ἄγριοι τελέως. ὑπερβέβληνται δὲ τοὺς ἄλλους οἱ Ἑπτακωμῆται. τινὲς δὲ καὶ ἐπὶ δένδρεσιν, ἢ πυργίοις οἰκοῦσι. διὸ καὶ Μοσυνοίκους ἐκάλουν οἱ παλαιοὶ, τῶν πύργων μοσυνῶν λεγο-

μένων· ζῶσι δ' ἀπὸ θηρείων σαρκῶν καὶ τῶν ἀκροδρύων. ἐπιτίθενται δὲ καὶ τοῖς ὁδοιποροῦσι, καταπηδήσαντες ἀπὸ τῶν ἰκρίων. οἱ δὲ ἑπτὰ κωμῆται, τρεῖς πομπηΐου σπείρας κατέκοψαν, διεξιούσας τὴν ὀρεινήν· κεράσαντες κρατῆρας ἐν ταῖς ὁδοῖς τοῦ μαινομένου μέλιτος ὃ φέρουσιν οἱ ἀκρέμονες τῶν δένδρων· ποιοῦσι γὰρ καὶ παρακόψασιν ἐπιθέμενοι, ῥᾳδίως διεχειρίσαντο τοὺς ἀνθρώπους. ἐκαλοῦντο δὲ τούτων τινὲς τῶν βαρβάρων καὶ βύζηρες. οἱ δὲ νῦν χαλδαῖοι, χάλυβες τὸ παλαιὸν ὠνομάζοντο· καθ' οὓς μάλιστα ἡ φαρνακία ἵδρυται. κατὰ θάλατταν μὲν ἔχουσα εὐφυΐαν τὴν ἐκ τῆς πηλαμυδίας. πρώτιστα γὰρ ἁλίσκεται ἐνταῦθα τὸ ὄψον τοῦτο ἐνταῦθα. ἐκ δὲ τῆς γῆς, τὰ μέταλλα. νῦν μὲν σιδήρου. πρότερον δὲ καὶ ἀργύρου. ὅλως δὲ κατὰ τοὺς τόπους τούτους ἡ παραλία στενὴ τελέως ἐστίν. ὑπέρκειται γὰρ εὐθὺς τὰ ὄρη μετάλλων πλήρη, καὶ δρυμῶν. γεωργεῖται δ' οὐ πολλά. λείπεται δὴ τοῖς μὲν μεταλλευταῖς ἐκ τῶν μετάλλων ὁ βίος. τοῖς δὲ θαλαττουργοῖς ἐκ τῆς ἁλιείας. καὶ μάλιστα τῶν πηλαμύδων, καὶ τῶν δελφίνων. ἐπακολουθοῦντες γὰρ ταῖς ἀγέλαις τῶν ἰχθύων, κορδύλης τε καὶ θύννης, καὶ αὐτῆς τῆς πηλαμύδος, πιαίνονταί τε καὶ εὐάλωτοι γίνονται διὰ τὸ πλησιάζειν τῇ γῇ προαλέστερον δελεαζόμενοι. οὓς μόνοι οὗτοι κατακόπτουσι τοὺς δελφῖνας. καὶ τῷ στέατι πολλῷ χρῶνται πρὸς ἅπαντα. τούτους οὖν οἶμαι λέγειν τὸν ποιητὴν ἁλιζώνους. ἐν τῷ μετὰ τοὺς παφλαγόνας καταλόγῳ.

» Αὐτὰρ ἁλιζόνων ἐπίστροφος, καὶ ὄδιος ἦρχον

» Τηλόθεν ἐξ ἀλύβης. ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.

Ἤτοι τῆς γραφῆς μετατεθείσης ἀπὸ τοῦ τηλόθεν ἐκ χαλύβης. ἢ τῶν ἀνθρώπων πρότερον ἀλύβων λεγομένων ἀντὶ χαλύβων. οὐ γὰρ νῦν δυνατὸν γενέσθαι ἐκ χαλύβων χαλδαίους λεχθῆναι, πρότερον δ' οὐκ ἐνῆν ἀντὶ ἀλύβων χάλυβας. καὶ ταῦτα τῶν ὀνομάτων μεταπτώσεις πολλὰς δεχομένων. καὶ μάλιστα ἐν τοῖς βαρβάροις. σίντιες γὰρ ἐκαλοῦντο τινὲς τῶν θρακῶν. εἶτα σίντοι. εἶτα σαῖοι. παρ' οἷς φησὶν ἀρχίλοχος τὴν ἀσπίδα ῥίψαι.

» Ἀσπίδα μὲν σαΐων τὴν περὶ θάμμοις

» Ἔντος ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.

Οἱ δ' αὐτοὶ οὗτοι σαπαῖοι νῦν ὀνομάζονται. πάντες γὰρ οὗτοι περὶ ἄβδηρα τὴν οἴκησιν εἶχον. καὶ τὰς περὶ λῆμνον νήσους. ὁμοίως δὲ καὶ βρίγοι, καὶ βρίγες, καὶ φρύγες οἱ αὐτοί. καὶ μυσοὶ καὶ μέδονες, καὶ μαίονες, καὶ μῄονες. οὐ χρεία δὲ πλεονάζειν. ὑπονοεῖ δὲ καὶ ὁ σκήψιος τὴν τοῦ ὀνόματος μετάπτωσιν ἐξ ἀλύβων εἰς χάλυβας. τὰ δ' ἑξῆς καὶ τὰ συνῳδὰ οὐ νοῶν, καὶ μάλιστα ἐκ τίνος ἁλιζώνους τοὺς χάλυβας, ἀποδοκιμάζει τὴν δόξαν. ἡμεῖς δ' ἀντιπαραθέντες τῇ ἡμετέρᾳ τὴν ἐκείνου, καὶ τὰς τῶν ἄλλων ὑπολήψεις σκοπῶμεν. οἱ μὲν, μεταγράφουσιν ἀλιζώνων. οἱ δ' ἀμαζόνων ποιοῦντες. τὸ δ' ἐξ ἀλύβης ἐξ ἀλόπης. ἐξ ἀόλης. τοὺς δὲ σκύθας ἁλιζῶνας φάσκοντες ὑπὲρ τὸν βορυσθένη. καὶ καλλιπίδας καὶ ἄλλα ὀνόματα. ἅπερ ἑλλάνικός τε, καὶ ἡρόδοτος, καὶ εὔδοξος κατεφλυάρησαν ἡμῶν. τὰς δ' ἀμαζόνας, μεταξὺ μυσίας, καὶ καρίας καὶ λυδίας καθάπερ ἔφορος νομίζει πλησίον κύμης τῆς πατρίδος αὐτοῦ. καὶ τοῦτο μὲν ἔχεται τινὸς λόγου τυχὸν ἴσως. εἴη γὰρ ἂν λέγων τὴν ὑπὸ τῶν αἰολέων, καὶ ἰώνων οἰκισθεῖσαν ὕστερον, πρότερον δ' ὑπὸ ἀμαζόνων. καὶ ἐπωνύμους πόλεις τινὰς εἶναι φασὶ, καὶ γὰρ ἔφεσον καὶ σμύρνην, καὶ κύμην, καὶ μύριναν. ἡ δὲ ἀλύβη, ὡς τινὲς ἀλόβη, ἢ ἀλόπη, πῶς ἂν ἐν τοῖς τόποις τούτοις ἐξητάζετο. πῶς δὲ τηλόθεν. πῶς δ' ἡ τοῦ ἀργύρου γενέθλη. ταῦτα μὲν ἀπολύεται τῇ μεταταύτα γραφῇ. γράφει γὰρ οὕτως.

» Αὐτὰρ ἀμαζόνων ὄδιος, καὶ ἐπίστροφος ἦρχον.

» Ἐλθόντες ἐξ ἀλόπης.— ὅθ' ἀμαζονίδων γένος ἐστί.

ταῦτα δ' ἀπολυσάμενος εἰς ἄλλο ἐμπέπτωκε πλάσμα. οὐδαμοῦ γὰρ ἐνθάδε εὑρίσκεται ἀλόπη. καὶ ἡ μεταγραφὴ δὲ παρὰ τὴν τῶν ἀντιγράφων τῶν ἀρχαίων πίστιν, καινοτομουμένη. ἐπιτοσοῦτον σχεδιασμῷ ἔοικεν. ὁ δὲ σκήψιος οὐ δὲ τὴν τούτου δόξαν ἔοικεν ἀποδεξάμενος, οὔτε τῶν περὶ τὴν παλλήνην τοὺς ἁλιζώνους ὑπολαβόντων. ὧν ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς μακεδονικοῖς. ὁμοίως δ' ἀπορεῖ, καὶ πῶς ἐκ τῶν περὶ τὸν βορυσθένην νομάδων, ἀφῖχθαι συμμαχίαν τοῖς τρωσί, τις νομίσειεν. ἐπαινεῖ δὲ μάλιστα τὴν ἑκαταίου τοῦ μιλησίου. καὶ μενεκράτους τοῦ ἐλαΐτου, τῶν ξενοκράτους γνωρίμων ἀνδρῶν δόξαν. καὶ τὴν παλαιφάτου. ὧν ὁ μὲν, ἐν γῆς περιόδῳ φησίν. ἐπὶ δ' ἀλαζίᾳ πόλει ποταμὸς ὁ ῥῦμος ῥέων διὰ μυγδονίης πεδίου ἀπὸ δύσιος ἐκ τῆς λίμνης τῆς δασκυλίτιδος ἐς ῥύνδακον ἐσβάλλει. ἔρημον δὲ εἶναι νῦν τὴν ἀλαζίαν λέγει. κώμας δὲ πολλὰς τῶν ἀμαζόνων οἰκεῖσθαι. δι' ὧν ὁ δρύασης ῥεῖ. ἐν δὲ ταύταις τὸν ἀπόλλωνα τιμᾶσθαι διαφερόντως. καὶ μάλιστα κατὰ τὴν ἐφορείαν τῶν κυζικηνῶν. ὁ δὲ μενεκράτης ἐν τῇ ἑλλησποντιακῇ περιόδῳ, ὑπερκεῖσθαι λέγει τῶν ὑπὲρ τὴν μυρλείαν τόπων, ὀρεινὴν συνεχῆ, ἣν κατῴκει τὸ τῶν ἁλιζόνων ἔθνος. δεῖ δέ φησι γράφειν ἐν τοῖς λλ. τὸν δὲ ποιητὴν ἐν τῷ ἑνὶ γράφειν διὰ τὸ μέτρον. ὁ δὲ παλαίφατος φησὶν ἐξ ἀμαζόνων τῶν ἐν τῇ ἀλόπῃ οἰκούντων, νῦν δ' ἐν ζελείᾳ τὸν ὄδιον, καὶ τὸν ἐπίστροφον στρατεῦσαι. τί οὖν ἄξιον ἐπαινεῖν τὰς τούτων δόξας; χωρὶς γὰρ τοῦ τὴν ἀρχαίαν γραφὴν, καὶ τούτους κινεῖν, οὔτε τὰ ἀργύρεια δεικνύουσιν, ὅπου τῆς μυρλεάτιδος, λίμνη ἐστίν,

οὔτε πῶς

οὔτε πῶς οἱ ἐνθένδε ἀφιγμένοι εἰς ἴλιον τηλόθεν ἦσαν. εἰ καὶ δοθείη ἀλόπην τινὰ γεγονέναι, ἢ ἀλα-
ζίαν. πολὺ γὰρ δὴ ταῦτα ἐγγυτέρω ἐστὶ τῇ τρωάδι, ἢ τὰ περὶ ἔφεσον. ἀλλ' ὅμως τοὺς περὶ πύγελ-
λα λέγοντας τοὺς ἀμαζόνας μεταξὺ ἐφέσου, καὶ μαγνησίας, καὶ πριήνης, φλυαρεῖν φησιν ὁ δημή-
τριος. τὸ γὰρ τηλόθεν οὐκ ἐφαρμόττειν τῷ τόπῳ. ὅπως οὖν, μᾶλλον οὐκ ἐφαρμόττει τῷ περὶ τὴν
μυσίαν, καὶ τευθρανίαν, νὴ δία ἀλλά φασι δεῖν ἔνια, καὶ ἀκύρως προστιθέμενα δέχεσθαι, ὡς καὶ τῆλ' ἐξ
ἀσκανίης, καὶ ἀρναῖος δὲ ὄνομ' ἔσκε, τὸ γὰρ θέτο πότνια μήτηρ. καὶ εἵλετο δὲ κληῗδ' εὐκαμπέα χειρὶ
παχείῃ πηνελόπη. δεδέχθω δὴ καὶ τοῦτο. ἀλλ' ἐκεῖνα οὐ δοτέα. οἷς προσέχων ὁ δημήτριος, οὐδὲ τοῖς ὑ-
πολαβοῦσι δεῖν ἀκούειν τηλόθεν ἐκ χαλύβης πιθανῶς ἀντείρηκε. συγχωρήσας γὰρ, ὅτι εἰ καὶ μὴ ἔστι νῦν
ἐν τοῖς χάλυψι τὰ ἀργύρεια, ὑπάρξαι γε ἐνεδέχετο, ἐκεῖνο οὐ συγχωρεῖ. ὅτι καὶ ἔνδοξα ἦν καὶ ἄξια μνή-
μης καθάπερ τὰ σιδήρεια. τί δὲ κωλύει φαίη τις ἂν ἢ καὶ ἔνδοξα εἶναι καθάπερ καὶ τὰ σιδήρεια. ἢ σι-
δήρου μὲν εὐπορία τόπον ἐπιφανῆ δύναται ποιεῖν, ἀργύρου δ' οὔ. τί. εἰ μὴ κατὰ τοὺς ἥρωας, ἀλλὰ καθ'
ὅμηρον εἰς δόξαν ἀφῖκτο τὰ ἀργύρια. ἆρα μέμψαι τις ταὐτὴν ἀπόφασιν τοῦ ποιητοῦ. πῶς οὖν εἰς τὸν
ποιητὴν ἡ δόξα ἀφίκετο. πῶς δ' ἡ τοῦ ἐν τῇ μέσῃ χαλκοῦ τῇ ἰταλιώτιδι. πῶς δ' ἡ τοῦ θηβαϊκοῦ πλού-
του τοῦ κατ' αἴγυπτον. καίτοι διπλάσιον σχεδόν τι διέχοντα τῶν αἰγυπτίων θηβῶν, ἢ τῶν χαλδαίων. ἀλλ' οὐδ'
οἷς συνηγορεῖ. τούτοις ὁμολογεῖ τὰ γὰρ περὶ τὴν σκῆψιν νομοθετῶν τὴν ἑαυτοῦ πατρίδα, πλησίον τῆς σκή-
ψεως, καὶ τοῦ αἰσήπου, ἐνέαν κώμην καὶ ἀργυρίαν λέγει, καὶ ἀλαζονίαν. ταῦτα μὲν οὖν εἰ καὶ ἔστι πρὸς
ταῖς πηγαῖς ἂν εἴη τοῦ αἰσήπου. ὁ δὲ ἑκαταῖος λέγει ἐπέκεινα τῶν ἐκβολῶν αὐτοῦ. ὅτε παλαίφατος
πρότερον μὲν ἀλόπην οἰκεῖν φήσας, νῦν δὲ ζέλειαν, οὐδὲν ὅμοιον λέγει τούτοις. εἰ δ' ἄρα ὁ μενεκρά-
της, καὶ οὐδ' οὗτος τὴν ἀλόπην, ἢ ἀλόβην, ἢ ὅπως ποτὲ βούλονται γράφειν φράζει ἥτις ἐστίν. οὐδ'
αὐτὸς ὁ δημήτριος πρὸς ἀπολλόδωρον δὴ περὶ τῶν αὐτῶν ἐν τῷ τρωϊκῷ διακόσμῳ διαλεγόμενος, πολ-
λὰ μὲν εἴρηται πρότερον. καὶ νῦν δὲ λεκτέον. οὐ γὰρ οἴεται δεῖν δέχεσθαι τοὺς ἀλιζώνας ἐκτὸς τοῦ ἅ-
λυος. μηδεμίαν γὰρ συμμαχίαν ἀφῖχθαι τοῖς τρωσὶν ἐκ τῆς περαίας τοῦ ἅλυος. πρῶτον τοίνυν ἀπαι-
τήσομεν αὐτὸν τίνες εἰσὶν οἱ ἐντὸς τοῦ ἅλυος οἱ ἀλυζῶνες. καὶ τηλόθεν ἐξ ἀλύβης ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ
γενέθλη. οὐ γὰρ ἕξει λέγειν ἔπειτα τὴν αἰτίαν, δι' ἣν οὐ συγχωρεῖ καὶ ἐκ τῆς περαίας ἀφῖχθαί τινα
συμμαχίαν. καὶ γὰρ εἰ τὰς ἄλλας ἐντὸς εἶναι τοῦ ποταμοῦ πάσας συμβαίνει πλὴν τῶν θρακῶν,
μίαν γε ταύτην οὐδὲν ἐκώλυε πέραθεν ἀφῖχθαι ἐκ τῆς ἐπέκεινα τῶν λευκοσύρων. ἢ πολεμήσαντας μὲν
ἦν δυνατὸν διαβαίνειν ἐκ τῶν τόπων, τούτων καὶ τῶν ἐπέκεινα. καθάπερ τὰς ἀμαζόνας, καὶ τρῆρας, καὶ κιμμερίους
φασί. συμμαχήσαντας δ' ἀδύνατον. αἱ μὲν οὖν ἀμαζόνες οὐ συνεμάχουν. διὰ τὸ τὸν πρίαμον πολεμῆσαι
» πρὸς αὐτὰς συμμαχοῦντα τοῖς τρωσίν. Οἵ ῥά τότ' ἦλθον ἀμαζόνες ἀντιάνειραι φησὶν ὁ πρίαμος.
» Καὶ γὰρ ἐγὼν ἐπίκουρος ἐὼν, μετὰ τοῖσιν ἐλέγμην. Οὐθ' ὁμοροῦντες αὐταῖς, οὐδ' οὕτως ἄπωθεν
ὄντες. ὥς τε χαλεπὴν εἶναι τὴν ἐκεῖθεν μετάπεμψιν. οὐδ' ἐχθρᾶς ὑποκειμένης, οὐδὲν ἐκωλύοντο οἶ-
μαι συμμαχεῖν. ἀλλ' οὐδὲ δόξαν ἔχει τοιαύτην τῶν παλαιῶν εἰπεῖν, ὡς συμφωνούντων ἁπάντων. μη-
δεμίαν ἐκ τῆς περαίας τοῦ ἅλυος κοινωνῆσαι τοῦ τρωϊκοῦ πολέμου. πρὸς τοὐναντίον δὲ μᾶλλον εὕροι τις
ἂν μαρτυρίας. μαιάνδριος γοῦν ἐκ τῶν λευκοσύρων φησὶ τοὺς ἐνετοὺς ὁρμηθέντας συμμαχῆσαι τοῖς
τρωσίν. ἐκεῖθεν δὲ μετὰ τῶν θρακῶν ἀπᾶραι. καὶ οἰκῆσαι περὶ τὸν τοῦ ἀδρίου μυχόν. τοὺς δὲ μὴ μετασχόν-
τας τῆς στρατείας ἐνετοὺς, καππαδόκας γενέσθαι. συνηγορεῖν δ' ἂν δόξειε τῷ λόγῳ τούτῳ διότι πᾶ-
σα ἡ πλησίον τοῦ ἅλυος καππαδοκία ὅση παρατείνει τῇ παφλαγονίᾳ, τοῖς δυσὶ χρῆται διαλέκτοις.
καὶ τοῖς ὀνόμασι πλεονάζει τοῖς παφλαγονικοῖς. βάγας καὶ βιάσας, καὶ αἰνιάτης, καὶ ῥατώτης, καὶ
ζαρ, δώκης καὶ τίβηρος. καὶ γάσυς καὶ ὁ λόγασυς καὶ μάνης. ταῦτα γὰρ ἔν τε τῇ βαμωνίτιδι καὶ τῇ πι-
μολίτιδι, καὶ τῇ ζαγιλουίτιδι. καὶ γαζακηνῇ. καὶ ἄλλαις πλείσταις χώραις ἐπιπολάζει τὰ ὀνόματα.
αὐτὸς δὲ ὁ ἀπολλόδωρος παρατίθησι τὸ τοῦ ζηνοδότου. ὅτι γράφει ἐξ ἐνετῆς,
» Ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτεράων. Ταύτην δέ φησιν ἑκαταῖον τὸν μιλήσιον δέχε-
σθαι τὴν ἀμισόν. ἡ δ' ἀμισὸς εἴρηται διότι τῶν λευκοσύρων ἐστὶ καὶ ἐκτὸς τοῦ ἅλυος. εἴρηται δ' αὐτῷ
που καὶ διότι ὁ ποιητὴς ἱστορίαν εἶχε τῶν παφλαγόνων τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ, παρὰ τῶν πεζῇ διελθόντων
τὴν χώραν. τὴν παραλίαν δ' ἠγνόει καθάπερ καὶ τὴν ἄλλην τὴν ποντικήν. ὠνόμαζε γὰρ ἂν αὐτήν. τοὐ-
ναντίον δ' ἐστὶν ἀναστρέψαντα εἰπεῖν ἐκ τῆς περιοδείας ὁρμηθέντα τῆς ἀποδοθείσης νυνί. ὡς τὴν μὲν πα-
ραλίαν πᾶσαν ἐπελήλυθε. καὶ οὐδὲν τῶν ὄντων τότε ἄξιον μνήμης παραλέλοιπεν. εἰ δ' ἡράκλειαν καὶ
ἄμαστριν, καὶ σινώπην οὐ λέγει, τὰς μήπω συνῳκισμένας, οὐδὲν θαυμαστόν. τῆς δὲ μεσογαίας οὐδὲν ἄτο-
πον εἰ μὴ εἴρηκε. καὶ τὸ μὴ ὀνομάζειν δὲ πολλὰ τῶν γνωρίμων, οὐκ ἀγνοίας ἐστὶ σημεῖον. ὅπερ καὶ ἐν τοῖς ἔμ-
προσθεν ἐπεσημηνάμεθα. ἀγνοεῖν γὰρ αὐτὸν πολλὰ τῶν ἐνδόξων ἔφη περὶ τὸν πόντον. οἷον ποταμοὺς
καὶ ἔθνη. ὀνομάσαι γοῦν ἄν. τοῦτο δ' ἐπὶ μὲν τινων σφόδρα σημειωδῶν δοίη τις ἄν. οἷον σκύθας, καὶ μαιῶτιν καὶ
ἴστρον. οὐ γὰρ διὰ σημείων μὲν τοὺς νομάδας εἴρηκε γαλακτοφάγους. ἀβίους τε καὶ δικαιοτάτους ἀνθρώπους.
καὶ ἔτι ἀγαυοὺς ἱππημολγούς, σκύθας δὲ οὐκ ἂν εἶπεν ἢ σαυρομάτας, ἢ σαρμάτας. εἰ δὴ οὕτως ὠνομά-
ζοντο ὑπὸ τῶν ἑλλήνων. οὐδ' ἂν θρᾳκῶν τε, καὶ μυσῶν μνησθεὶς τῶν πρὸς τῷ ἴστρῳ, αὐτὸν τὸν παρε-

σημεῖα. μέντοι τῶν ποταμῶν ὄντα. καὶ ἄλλως ἐπιφόρως ἔχων πρὸς τὸ τοῖς ποταμοῖς ἀφορίζεσθαι τοὺς τόπους. οὐδ' αὖ κιμμερίους λέγων παρῆκε τὸν βόσπορον ἢ τὴν μαιῶτιν. τὸ δὲ τῶν μὴ οὕτω σημείων ἢ μὴ τότε ἢ μὴ πρὸς τὴν ὑπόθεσιν, τί ἄν τις μέμφοιτο. οἷον τὸν τάναϊν δι' οὐδὲν ἄλλο γε ἀφοριζόμενον, ἢ διότι τῆς ἀσίας, καὶ τῆς εὐρώπης ὅριον ἐστίν. ἀλλ' οὔτε τὴν ἀσίαν οὔτε τὴν εὐρώπην ὠνόμαζόν πω οἱ τότε. οὐδὲ διῄρητο οὕτως εἰς τρεῖς ἠπείρους ἡ οἰκουμένη. ὠνόμασε γὰρ ἂν που διὰ τὸ λίαν σημειῶδες, ὡς καὶ τὴν λιβύην, καὶ τὸν λίβα τὸν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων τῆς λιβύης πνέοντα. τῶν δ' ἠπείρων μή πω διωρισμένων, μηδὲ τοῦ τανάϊδος ἔδει καὶ τῆς μνήμης αὐτοῦ. πολλὰ δὲ, καὶ ἀξιομνημόνευτα μὲν, οὐχ ὑπέπιπτε δέ. πολὺ γοῦν δὴ καὶ τὸ ἐπελευστικὸν εἶδος ἔν τε τοῖς λόγοις, καὶ ἐν ταῖς πράξεσίν ἐστιν. ἐκ πάντων δὲ τῶν τοιούτων, δῆλον ἐστὶν ὅτι μοχθηρῷ σημείῳ χρῆται πᾶς ὁ ἐκ τοῦ μὴ λέγεσθαί τι ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ, τὸ ἀγνοεῖσθαι ἐκεῖνο ὑπ' αὐτοῦ τεκμαιρόμενος. καὶ δεῖ διὰ πλειόνων παραδειγμάτων ἐξελέγχειν αὐτὸ μοχθηρὸν ὄν. πολλῷ γὰρ αὐτῷ κέχρηνται πολλοί. ἀνακρουστέον οὖν αὐτοὺς προφέροντας τὰ τοιαῦτα. εἰ καὶ ταυτολογήσομεν τὸν λόγον. οἷον ἐπὶ τῶν ποταμῶν εἴ τις λέγοι τὸ μὴ ὀνομάζεσθαι, ἀσυνεσίας εὐήθη φήσομεν τὸν λόγον. ὅπου γε οὐδὲ μέλητα τὸν παρὰ τὴν σμύρναν ῥέοντα ὀνομάζει ποταμόν. τὴν ὑπὸ τῶν πλείστων λεγομένην αὐτοῦ πατρίδα, ὕρμον ποταμὸν καὶ ὕλλον, ὀνομάζοντα. οὐδὲ πακτωλὸν τὸν εἰς ταὐτὸ τούτοις ῥέεθρον ἐμβάλλοντα. τὴν δ' ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ τμώλου ἔχοντα οὐ μέμνηται, ἀλλ' αὐτὴν σμύρναν λέγει. οὐδὲ τὰς ἄλλας τῶν ἰώνων πόλεις, καὶ τῶν αἰολέων τὰς πλείστας. μίλητον λέγω, καὶ σάμον, καὶ λέσβον, καὶ τένεδον. οὐδὲ λεθαῖον τὸν παρὰ μαγνησίαν ῥέοντα. οὐδὲ δὴ μαρσύαν. τοὺς εἰς τὸν μαίανδρον ἐκδιδόντας ἐκεῖνον ὀνομά-

» Ῥῆσόν θ' ἑπτάπορόν τε κάρησόν τε ῥόδιόν τε (ζων. καὶ πρὸς τούτοις

Καὶ τοὺς ἄλλους ὧν οἱ πλείους οὐκ εἰσὶ μείζους πολλάς τε χώρας ὀνομάζων καὶ πόλεις τοτὲ μὲν, καὶ τοὺς ποταμοὺς, καὶ ὄρη συγκαταλέγει. τοτὲ δ' οὔ, τοὺς γοῦν κατὰ τὴν αἰτωλίαν, καὶ τὴν ἀττικὴν οὐ λέγει. οὐδ' ἄλλους πλείους. ἐπεὶ καὶ τῶν πόρρω μεμνημένος τῶν ἐγγὺς σφόδρα οὐ μέμνηται. οὐ δήπου ἀγνοῶν αὐτοὺς, γνωρίμους τοῖς ἄλλοις ὄντας. οὐδὲ δὴ τοὺς ἐγγὺς ἐπίσης. ὧν τοὺς μὲν ὀνομάζει, τοὺς δ' οὔ. οἷον λυκίους μὲν καὶ σολύμους. μιλύας δ' οὔ. οὐδὲ παμφύλους οὐδὲ πισίδας. καὶ παφλαγόνας μὲν καὶ φρύγας καὶ μυσούς. μαριανδυνοὺς δ' οὔ. οὐδὲ θυνοὺς οὐδὲ βιθυνούς, οὐδὲ βέβρυκας. ἀμαζόνων τε μέμνηται λευκοσύρων οὐ. οὐδὲ σύρων οὐδὲ καππαδόκων οὐδὲ λυκαόνων. φοίνικας καὶ αἰγυπτίους καὶ αἰθίοπας θρυλλῶν. καὶ ἀλήϊον μὲν πεδίον λέγει καὶ ἀρίμους. τὸ δὲ ἔθνος ἐν ᾧ ταῦτα σιωπᾷ. ὁ μὲν δὴ τοιοῦτος ἔλεγχος ψευδής ἐστιν. ὁ δ' ἀληθὴς ὅταν δεικνύηται ψεῦδος λεγόμενόν τι. ἀλλ' οὐδὲ ἐν τῷ τοιούτῳ κατορθῶν ἐδείχθη. ὅτε γε ἐθάρρησε πλάσματα λέγειν, τοὺς ἀγαυοὺς ἱππημολγοὺς γαλακτοφάγους. τοσαῦτα, καὶ πρὸς ἀπολλόδωρον. ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἑξῆς περιήγησιν. ὑπὲρ μὲν δὴ τῶν περὶ φαρνακίαν, καὶ τραπεζοῦντα τόπων οἱ τιβαρηνοί, καὶ χαλδαῖοι μέχρι τῆς μικρᾶς ἀρμενίας εἰσίν. αὕτη δ' ἐστὶν εὐδαίμων ἱκανῶς χώρα. δυνάσται δ' αὐτὴν κατεῖχον ἀεὶ καθάπερ τὴν σωφηνήν. τοτὲ μὲν φίλοι τοῖς ἄλλοις ἀρμενίοις ὄντες, τοτὲ δ' ἰδιοπραγοῦντες. ὑπηκόους δ' εἶχον, καὶ τοὺς χαλδαίους καὶ τοὺς τιβαρηνούς. ὥστε μέχρι τραπεζοῦντος καὶ φαρνακίας διατείνειν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν. αὐξηθεὶς δὲ μιθριδάτης ὁ εὐπάτωρ, καὶ τῆς κολχίδος κατέστη κύριος καὶ τούτων ἁπάντων. ἀντιπάτρου τοῦ σίσιδος παραχωρήσαντος αὐτῷ. ἐπεμελήθη δὲ οὕτω τῶν τόπων τούτων, ὥστε τοὺς τε, καὶ ἑβδομήκοντα φρούρια ἐν αὐτοῖς κατασκευάσασθαι. οἷς τὴν πλείστην γάζαν ἐνεχείρισε. τούτοις δ' ἦν ἀξιολογώτατα ταῦτα. ὕδαρα. καὶ βασγοιδαρίζα. καὶ σινορία. ἐπιπεφυκὸς τοῖς ὁρίοις τῆς μεγάλης ἀρμενίας χωρίον. διόπερ θεοφάνης συνωρίαν παρωνόμασεν. ἡ γὰρ τοῦ παρυάδρου πᾶσα ὀρεινὴ τοιαύτας ἐπιτηδειότητας ἔχει πολλάς. εὔυδρός τε οὖσα καὶ ὑλώδης, καὶ ἀποτόμοις φάραγξι, καὶ κρημνοῖς διειλημμένη πολλαχόθεν. ἐτετείχιστο γοῦν ἐνταῦθα τὰ πλεῖστα τῶν γαζοφυλακίων. καὶ δὴ καὶ τὸ τελευταῖον εἰς ταύτας κατέφυγε τὰς ἐσχατιὰς τῆς ποντικῆς βασιλείας ὁ μιθριδάτης ἐπιόντος πομπηίου. καὶ τῆς ἀκιλισηνῆς κατὰ δάσειρα, εὔυδρον ὄρος καταλαβόμενος. πλησίον δ' ἦν καὶ ὁ εὐφράτης ὁ διορίζων τὴν ἀκιλισηνὴν ἀπὸ τῆς μικρᾶς ἀρμενίας. διέτριψέ τε τέως ἕως πολιορκούμενος, ἠναγκάσθη φυγεῖν διὰ τῶν ὀρῶν εἰς κολχίδα κἀκεῖθεν εἰς βόσπορον. πομπήιος δὲ περὶ τὸν τόπον τοῦτον πόλιν ἔκτισεν ἐν τῇ αὐτῇ μικρᾷ ἀρμενίᾳ νικόπολιν, ἣ καὶ νῦν συμμένει, καὶ οἰκεῖται καλῶς. τὴν μὲν οὖν μικρὰν ἀρμενίαν ἄλλοι τ' ἄλλων ἐχόντων ὡς ἐβούλοντο ῥωμαῖοι. τὸ τελευταῖον εἶχεν ὁ ἀρχέλαος. τοὺς δὲ τιβαρηνούς, καὶ χαλδαίους μέχρι κολχίδος καὶ φαρνακίας, καὶ τραπεζοῦντος, ἔχει πυθοδωρίς. γυνὴ σώφρων καὶ δυνατὴ προΐστασθαι πραγμάτων. ἔστι δὲ θυγάτηρ πυθοδώρου τοῦ τραλλιανοῦ. γυνὴ δ' ἐγένετο πολέμωνος. καὶ συνεβασίλευσεν ἐκείνῳ χρόνον τινά. εἶτα διεδέξατο τὴν ἀρχὴν τελευτήσαντος ἐν τοῖς ἀσπουργιανοῖς καλουμένοις τῶν περὶ τὴν σινδικὴν βαρβάρων. δυεῖν δ' ἐκ τοῦ πολέμωνος ὄντων υἱῶν καὶ θυγατρός, ἡ μὲν ἐδόθη κότυϊ τῷ σαπαίῳ. δολοφονηθέντος δ' ἐχήρευσε, παῖδας ἔχουσα ἐξ αὐτοῦ, δυναστεύει δ' ὁ πρεσβύτατος αὐτῶν. τῶν δὲ τῆς πυθοδωρίδος υἱῶν ὁ μὲν ἰδιώτης συνδιοικεῖ τὴν μητρὶ τὴν ἀρχήν. ὁ δὲ νεωστὶ καθίσταται τῆς μεγάλης ἀρμενίας βασιλεύς. αὐτὴ δὲ συνῴκησεν ἀρχελάῳ, καὶ συνέμεινεν ἐκείνῳ μέχρι τέλους. νῦν δὲ χηρεύει. τά τε λεχθέντα ἔχουσα χωρία, καὶ ἄλλα ἐκείνων χαριέστερα. περὶ ὧν ἐφεξῆς ἐροῦμεν. τῇ γὰρ φαρνακίᾳ συνεχής ἐστιν ἡ σιδηνή, καὶ ἡ θε

μίσκυρα. τούτων δ' ἡ φαναρῖα ὑπέρκειται μέρος ἔχουσα τοῦ πόντου τὸ κράτιστον. καὶ γὰρ ἐλαιόφυ-
τός ἐστι καὶ εὔοινος. καὶ τὰς ἄλλας ἔχει πάσας ἀρετάς. ἐκ μὲν τῶν ἑώων μερῶν προβεβλημένη τὸ πα-
ρυάδρην. παράλληλον αὐτῇ κατὰ μῆκος. ἐκ δὲ τῶν πρὸς δύσιν τὸν λίθρον, καὶ τὸν ὄφλιμον. ἔστι δ'
αὐλὼν, καὶ μῆκος ἔχων ἀξιόλογον καὶ πλάτος. διαῤῥεῖ δ' αὐτὴν ἐκ μὲν τῆς ἀρμενίας ὁ λύκος. ἐκ δὲ
τῶν περὶ ἀμάσειαν στενῶν ὁ ἴρις. συμβάλλουσι δ' ἀμφότεροι κατὰ μέσον που τὸν αὐλῶνα. ἐπὶ τῇ συμ-
βολῇ δ' ἵδρυται πόλις. ἣν ὁ μὲν πρῶτος ὑποβεβλημένος εὐπατορίαν ἀφ' αὑτοῦ προσηγόρευσε. πομ-
πήϊος δ' ἡμιτελῆ καταλαβὼν, προσθεὶς χώραν, καὶ οἰκήτορας, μαγνόπολιν προσεῖπεν. αὕτη μὲν οὖν
ἐν μέσῳ κεῖται τῷ πεδίῳ. πρὸς αὐτῇ δὲ τῇ παρωρείᾳ τοῦ παρυάδρου, κάβειρα ἵδρυται, σταδίοις ἑ-
κατὸν, καὶ πεντήκοντά που, νοτιωτέρα αὐτῆς οὖσα. ἐν δὲ τοῖς καβείροις τὰ βασίλεια μιθριδάτου κα-
τεσκεύαστο. καὶ ὁ ὑδραλέτης. καὶ τὰ ζωγρία, καὶ αἱ πλησίον θῆραι. καὶ τὰ μέταλλα. ἐνταῦθα δὲ καὶ
τὸ καινὸν χωρίον προσαγορευθὲν. ἐρυμνὴ καὶ ἀπότομος πέτρα. διέχουσα τῶν καβείρων ἔλαττον, ἢ διακο-
σίους σταδίους. ἔχει δ' ἐπὶ τῇ κορυφῇ πηγὴν ἀναβάλλουσαν πολὺ ὕδωρ. πρός τε τῇ ῥίζῃ ποταμὸν,
καὶ φάραγγα βαθεῖαν. τὸ δ' ὕψος ἐξαίσιον τῆς πέτρας ἐστὶ τοῦ αὐχένος. ὥστ' ἀπολιόρκητός ἐστι. τετεί-
χισται δὲ θαυμαστῶς, πλὴν ὅσον οἱ ῥωμαῖοι κατέσπασαν. οὕτω δ' ἐστὶν ἅπασα ἡ κύκλῳ κατάδρυμος
καὶ ὀρεινὴ, καὶ ἄνυδρος, ὥστ' ἐντὸς ἑκατὸν, καὶ εἴκοσι σταδίων, μὴ εἶναι δυνατὸν στρατοπεδεύσασθαι. ἐν-
ταῦθα μὲν ἦν τῷ μιθριδάτῃ τὰ τιμιώτατα τῶν κειμηλίων. ἃ νῦν ἐν τῷ καπιτωλίῳ κεῖται πομ-
πηΐου ἀναθέντος. ταύτην δὴ τὴν χώραν ἔχει πᾶσαν ἡ πυθοδωρὶς προσεχῆ οὖσαν τῇ βαρβαρῷ τῇ ὑπ'
αὐτῆς κατεχομένῃ. καὶ τὴν ζηλῖτιν, καὶ τὴν μεγαλοπολῖτιν. τὰ δὲ κάβειρα πομπηΐου σκευάσαντος εἰς
πόλιν, καὶ καλέσαντος διόπολιν, ἐκείνη προσκατεσκεύασε. καὶ σεβαστὴν μετωνόμασε. βασιλείῳ τε τῇ πό-
λει χρῆται. ἔχει δὲ καὶ τὸ ἱερὸν μηνὸς, φαρνάκου καλούμενον. τὴν ἀμερίαν κωμόπολιν. πολλοὺς ἱε-
ροδούλους ἔχουσαν, καὶ χώραν ἱεράν. ἣν ὁ ἱερώμενος ἀεὶ καρποῦται. ἐτίμησαν δ' οἱ βασιλεῖς τὸ ἱερὸν
τοῦτο οὕτως εἰς ὑπερβολὴν, ὡς τὸν βασιλικὸν καλούμενον ὅρκον τοῦτον, ἀποφῆναι. τύχην βασιλέως
καὶ μῆνα φαρνάκου. ἔστι δὲ καὶ τοῦτο τῆς σελήνης τὸ ἱερὸν, καθάπερ τὸ ἐν ἀλβανοῖς, καὶ τὸ ἐν φρυ-
γίᾳ. τό τε τοῦ μηνὸς ἐν τῷ ὁμωνύμῳ τόπῳ, καὶ τὸ τοῦ ἀσκαίου τὸ πρὸς τῇ ἀντιοχείᾳ τῇ πρὸς πισιδίαν.
καὶ τὸ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν ἀντιοχέων. ὑπὲρ δὲ τῆς φαναροίας ἐστὶ τὰ κόμανα τὰ ἐν τῷ πόντῳ. ὁμώ-
νυμα τοῖς ἐν τῇ μεγάλῃ καππαδοκίᾳ. καὶ τῇ αὐτῇ θεῷ καθιερωμένα ἀφιδρυθέντα ἐκεῖθεν. σχεδὸν
δέ τι καὶ τῇ ἀγωγῇ παραπλησίᾳ κεχρημένα τῶν τε ἱερουργιῶν, καὶ τῶν θεοφοριῶν, καὶ τῆς περὶ τοὺς
ἱερέας τιμῆς. καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν πρὸ τοῦ βασιλέων. ἡνίκα δὶς τοῦ ἔτους κατὰ τὰς ἐξόδους λεγομένας
τῆς θεοῦ, διάδημα ἐτύγχανε φορῶν ὁ ἱερεύς. καὶ ἦν δεύτερος κατὰ τιμὴν μετὰ τὸν βασιλέα. ἐμνή-
σθημεν δὲ πρότερον δορυλάου τε τοῦ τακτικοῦ. ὃς ἦν πρόπαππος τῆς μητρὸς ἡμῶν. καὶ ἄλλου δορυ-
λάου ὃς ἦν ἐκείνου ἀδελφιδοῦς, υἱὸς δὲ φιλεταίρου. καὶ διότι ἐκεῖνος τῶν ἄλλων τιμῶν παρὰ τοῦ εὐ-
πάτορος τῶν μεγίστων τυχὼν. καὶ δὴ καὶ τῆς ἐν κομάνοις ἱερωσύνης, ἐφωράθη τὴν βασιλείαν ἀφιστὰς ῥω-
μαίοις. καταλυθέντος δ' ἐκείνου συνδιεβλήθη, καὶ τὸ γένος. ὀψὲ δὲ μοαφέρνης ὁ θεῖος τῆς μητρὸς
ἡμῶν εἰς ἐπιφάνειαν ἦλθεν ἤδη πρὸς καταλύσει τῆς βασιλείας. καὶ πάλιν τῷ βασιλεῖ συνητύχη-
σαν, καὶ αὐτὸς καὶ οἱ ἐκείνου φίλοι. πλὴν εἴτινες ἔφθησαν προαποστάντες αὐτοῦ. καθάπερ ὁ πάπ-
πος ὁ ἡμῶν ὁ πρὸς πατρὸς αὐτῆς. ὃς ἰδὼν τὰ τοῦ βασιλέως κακῶς φερόμενα ἐν τῷ πρὸς λεύκολλον
πολέμῳ. καὶ ἅμα ἠλλοτριωμένος αὐτοῦ δι' ὀργὴν, ὅτι ἀνεψιὸν αὐτοῦ τίβιον καὶ υἱὸν ἐκείνου θεόφιλον
ἐτύγχανεν ἀπεκτονὼς νεωστὶ, ὥρμησε τιμωρεῖν ἐκείνοις τε καὶ ἑαυτῷ καὶ λαβὼν παρὰ τοῦ λευκούλ-
λου πίστεις, ἀφίστησιν αὐτῷ πεντεκαίδεκα φρούρια. καὶ ἐπαγγελίαι μὲν ἐγένοντο ἀντὶ τούτων με-
γάλαι. ἐπελθὼν δὲ πομπήϊος ὁ διαδεξάμενος τὸν πόλεμον, πάντας τοὺς ἐκείνῳ τι χαρισαμένους ἐχθροὺς
ὑπέλαβε. διὰ τὴν γενομένην αὐτῷ πρὸς ἐκεῖνον ἀπέχθειαν. διαπολεμήσας δὲ καὶ ἐπανελθὼν οἴκαδε
ἐξενίκησεν. ὥστε τὰς τιμὰς ἃς ὑπέσχετο ὁ λεύκολλος τῶν ποντικῶν τισὶ, μὴ κυρῶσαι τὴν σύγκλητον.
ἄδικον γὰρ εἶναι κατορθώσαντος ἑτέρου τὸν πόλεμον τὰ βραβεῖα ἐπ' ἄλλῳ γενέσθαι. καὶ τὴν τῶν ἀ-
ριστείων διανομήν. ἐπὶ μὲν οὖν τῶν βασιλειῶν οὕτω τὰ κόμανα διῳκεῖτο, ὡς εἴρηται. παραλαβὼν δὲ
πομπήϊος τὴν ἐξουσίαν, ἀρχέλαον ἐπέστησεν ἱερέα. καὶ προσώρισεν αὐτῷ χώραν δίσχοινον κύκλῳ. τοῦτο
δ' ἐστὶν ἑξήκοντα στάδιοι πρὸς τῇ ἱερᾷ. προστάξας τοῖς ἐνοικοῦσι πειθαρχεῖν αὐτῷ. τούτων μὲν οὖν ἡ-
γεμὼν ἦν. καὶ τῶν τὴν πόλιν οἰκούντων ἱεροδούλων κύριος πλὴν τοῦ πιπράσκειν. ἦσαν δὲ οὐκ ἐλάτ-
τους οὐδ' ἐνταῦθα τῶν ἑξακισχιλίων. ἦν δ' οὗτος ἀρχέλαος υἱὸς μὲν τοῦ ὑπὸ σύλλα, καὶ τῆς συγκλήτου
τιμηθέντος. φίλος δὲ γαβινίου τῶν ὑπατικῶν τινος. ἐκείνου δὲ πεμφθέντος εἰς συρίαν, ἧκε καὶ αὐτὸς
ἐπ' ἐλπίδι τοῦ κοινωνήσειν αὐτῷ παρασκευαζομένῳ πρὸς τὸν παρθικὸν πόλεμον. οὐκ ἐπιτρεπούσης δὲ
τῆς συγκλήτου, ταύτην ἀφεὶς τὴν ἐλπίδα, ἄλλην εὕρετο μείζω. ἐτύγχανε γὰρ πτολεμαῖος ὁ τῆς κλεοπά-
τρας πατὴρ ὑπὸ τῶν αἰγυπτίων ἐκβεβλημένος. θυγάτηρ δ' αὐτοῦ κατεῖχε τὴν βασιλείαν. ἀδελφὴ πρεσβυτέρα
τῆς κλεοπάτρας. ταύτῃ ζητουμένου ἀνδρὸς βασιλικοῦ γένους, ἐνεχείρισεν ἑαυτὸν τοῖς συμπράττουσι. προσποιη-
σάμενος μιθριδάτου τοῦ εὐπάτορος υἱὸς εἶναι. καὶ παραδεχθεὶς ἐβασίλευσεν ἓξ μῆνας. τοῦτον μὲν οὖν ὁ γαβίνιος

ἀνεῖλεν ἐν παρατάξει. κατὰ τοῦτον τὸν πτολεμαῖον. υἱὸς δ' αὐτοῦ τὴν ἱερωσύνην παρέλαβεν. εἶθ' ὕστερον λυκο-
μήδης. ᾧ καὶ τετράσχοινος ἄλλη προσετέθη. καταλυθέντος δὲ καὶ τούτου, νῦν ἔχει δυτεύτος υἱὸς ἀδιατό-
ριγος. ὃς δοκεῖ ταύτης τυγχάνειν τῆς τιμῆς παρὰ καίσαρος τοῦ σεβαστοῦ δι' ἀρετήν. ὁ μὲν γὰρ καίσαρ, θρι-
αμβεύσας τὸν ἀδιατόριγα, μετὰ παίδων, καὶ γυναικὸς ἔγνω ἀναιρεῖν μετὰ τοῦ πρεσβυτάτου τῶν παί-
δων. ἦν δὲ πρεσβύτατος οὗτος. τοῦ δὲ δευτέρου τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ φήσαντος εἶναι πρεσβύτα-
τον πρὸς τοὺς ἀπάγοντας στρατιώτας. ἔρις ἦν ἀμφοτέροις πολὺν χρόνον. ἕως οἱ γονεῖς ἔπεισαν τὸν
δυτεύτον παραχωρῆσαι τῷ νεωτέρῳ τῆς νίκης. αὐτὸν γὰρ ἐν ἡλικίᾳ μᾶλλον ὄντα, ἐπιτηδειότερον
κηδεμόνα τῇ μητρὶ ἔσεσθαι, καὶ τῷ λειπομένῳ ἀδελφῷ. οὕτω δὲ τὸν μὲν, συναποθανεῖν τῷ πατρί.
τοῦτον δὲ σωθῆναι, καὶ τυχεῖν τῆς τιμῆς ταύτης. αἰσθόμενος γὰρ ὡς ἔοικε καίσαρ ἤδη τῶν ἀνθρώ-
πων ἀνῃρημένων, ἠχθέσθη. καὶ τούς τε σωζομένους εὐεργεσίας, καὶ ἐπιμελείας ἀξίους ὑπέλαβε. δοὺς
αὐτοῖς ταύτην τὴν τιμήν. τὰ μὲν οὖν κόμανα εὐανδρεῖ, καὶ ἔστιν ἐμπορεῖον τοῖς ἀπὸ τῆς ἀρμενίας
ἀξιόλογον. συνέρχονται δὲ κατὰ τὰς ἐξόδους τῆς θεοῦ πανταχόθεν. ἔκ τε τῶν πόλεων καὶ τῆς
χώρας. ἄνδρες ὁμοῦ ταῖς γυναιξὶν, ἐπὶ τὴν ἑορτήν. καὶ ἄλλοι δὲ κατ' εὐχὴν ἀεί τινες ἐπιδημοῦσι. θυ-
σίας ἐπιτελοῦντες τῇ θεῷ, καὶ εἰσὶν ἁβροδίαιτοι, οἱ ἐνοικοῦντες. καὶ οἰνόφυτα τὰ κτήματα αὐτῶν
ἐστὶ τὰ πάντα, καὶ πλῆθος γυναικῶν τῶν ἐργαζομένων ἀπὸ τοῦ σώματος. ὧν αἱ πλείους εἰσὶν ἱεραί. τρό-
πον γὰρ δή τινα μικρὰ κόρινθός ἐστιν ἡ πόλις. καὶ γὰρ ἐκεῖ διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἑταιρῶν αἳ τῆς ἀφρο-
δίτης ἦσαν ἱεραὶ, πολὺς ἦν ὁ ἐπιδημῶν καὶ ἐνεορτάζων τῷ τόπῳ. οἱ δ' ἐμπορικοὶ, καὶ στρατιωτικοὶ,
τελέως ἐξανήλισκον. ὥστ' ἐπ' αὐτῶν, καὶ παροιμίαν ἐκπεσεῖν τοιαύτην. οὐ παντὸς ἀνδρὸς εἰς κό-
ρινθον ἔσθ' ὁ πλοῦς. τὰ μὲν δὴ κόμανα τοιαῦτα. τὴν δὲ κύκλῳ πᾶσαν ἔχει πυθοδωρίς. ἧς ἥ τε φαναροία
ἐστὶ, καὶ ἡ ζηλῖτις καὶ ἡ μεγαλωπολῖτις περὶ μὲν φαναρίας εἴρηται. ἡ δὲ ζηλῖτις ἔχει πόλιν ζῆλα. ἐπὶ χώματι
σεμιράμιδος τετειχισμένην, ἔχουσαν τὸ ἱερὸν τῆς ἀναΐτιδος. ἣν περ καὶ οἱ ἀρμένιοι σέβονται. αἱ
μὲν οὖν ἱεροποιίαι. μετὰ μείζονος ἁγιστείας ἐνταῦθα συντελοῦνται. καὶ τοὺς ὅρκους περὶ τῶν
μεγίστων, ἐνταῦθα πολιτικοὶ πάντες ποιοῦνται. τὸ δὲ πλῆθος τῶν ἱεροδούλων, καὶ αἱ τῶν ἱερέων
τιμαὶ παρὰ μὲν τοῖς βασιλεῦσι τὸν αὐτὸν εἶχον τύπον ὅνπερ προείπομεν. νυνὶ δὲ ἐπὶ τῇ πυ-
θοδωρίδι πάντ' ἐστίν. ἐκάκωσαν δὲ πολλοὶ καὶ ἐμείωσαν τό τε πλῆθος τῶν ἱεροδούλων, καὶ τὴν ἄλλην
εὐπορίαν. ἐμειώθη δὲ, καὶ ἡ παρακειμένη χώρα μερισθεῖσα εἰς πλείους δυναστείας. ἡ λεγομένη ζηλῖ-
τις. ἣ ἔχει πόλιν ζῆλα ἐπὶ χώματι. τὸ παλαιὸν μὲν γὰρ οἱ βασιλεῖς, οὐχ ὡς πόλιν. ἀλλ' ὡς ἱερὸν
διῴκουν. τῶν περσικῶν θεῶν τὰ ζῆλα. καὶ ἦν ὁ ἱερεὺς κύριος τῶν πάντων. ᾠκεῖτο δ' ὑπὸ τοῦ
πλήθους τῶν ἱεροδούλων καὶ τοῦ ἱερέως ὄντος ἐν περιουσίᾳ μεγάλῃ, καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν οὐκ ὀλί-
γοις. χώρα τε ὑπέκειτο ἱερὰ, καὶ ἡ τοῦ ἱερέως. πομπήιος δὲ πολλὰς ἐπαρχίας προσώρισε τῷ τό-
πῳ. καὶ πόλιν ὠνόμασε, καὶ ταύτην καὶ τὴν μεγαλόπολιν. συνθεὶς ταύτην τε εἰς ἓν τήν τε καλου-
μένην κολουπηνὴν. καὶ τὴν καμισηνήν. ὁμόρους οὔσας τῇ τε μικρᾷ ἀρμενίᾳ, καὶ τῇ λαυιανσηνῇ.
ἐχούσας ὀρυκτοὺς ἅλας, καὶ ἔρυμα ἀρχαῖον τὰ κάμισα. νῦν κατεσπασμένον. οἱ δὲ, μετὰ ταῦ-
τα ἡγεμόνες τῶν ῥωμαίων, τῶν δυεῖν πολιτευμάτων, τούτων, τὰ μὲν, τοῖς κομάνων ἱερεῦσι προσ-
ένειμαν. τὰ δὲ, τῷ ζήλων ἱερεῖ. τὰ δὲ, τεπόριγι δυνάστῃ τινὶ τοῦ τετραρχικοῦ γένους τῶν γαλατῶν
ἀνδρί. τελευτήσαντος δ' ἐκείνου, ταύτην μὲν τὴν μερίδα οὐ πολλὴν οὖσαν, ὑπὸ ῥωμαίους εἶναι
συμβαίνει καλουμένην ἐπαρχίαν. καὶ ἔστι σύστημα καθ' αὑτὸ τὸ πολίχνιον. συνῳκισάντων τὰ κάρανα
ἀφ' οὗ καὶ χώρα καρανῖτις λέγεται. τὰ δὲ λοιπὰ ἔχει πυθοδωρὶς, καὶ ὁ δυτεύτος. λείπεται δὲ τοῦ
πόντου μεταξὺ ταύτης τε τῆς χώρας καὶ τῆς ἀμισηνῶν, καὶ σινωπέων, πρός τε τὴν καππαδοκίαν
συντείνοντα καὶ γαλάτας, καὶ παφλαγόνας. μετὰ μὲν οὖν τὴν ἀμισηνῶν μέχρι τοῦ ἅλυος, ἡ
φαζημωνῖτίς ἐστιν. ἣν πομπήιος μεγαλόπολιν ὠνόμασε, κατὰ φαζημῶνα κώμην ἀποδείξας τὴν κα-
τοικίαν. καὶ προσαγορεύσας νεάπολιν. ταύτης δὲ, τῆς χώρας τὸ μὲν προσάρκτιον πλευρὸν, ἡ γαζηλωτὸς
συγκλείει, καὶ ἡ τῶν ἀμισηνῶν. τὸ δὲ ἑσπέριον ὁ ἅλυς. τὸ δ' ἑῷον ἡ φαναροία. τὸ δὲ λοιπὸν ἡ ἡμετέρα
χώρα ἡ τῶν ἀμασέων. πολὺ πασῶν πλείστη, καὶ ἀρίστη. τὸ μὲν οὖν πρὸς τῇ φαναροίᾳ μέρος τῆς φαζημω-
νίτιδος, λίμνη κατέχει πελαγία τὸ μέγεθος, ἡ στιφάνη καλουμένη πολύοψος, καὶ κύκλῳ νομὰς ἔχου-
σα παντοδαπάς. ἐπίκειται δ' αὐτῇ φρούριον ἐρυμνόν. ἔρημον νῦν, ἡ κίζαρι, καὶ πλησίον βασί-
λειον κατεσκευασμένον. ἡ δὲ λοιπὴ ψιλὴ τὸ πλέον, καὶ σιτοφόρος. ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν ἀμα-
σέων τὰ θερμὰ ὕδατα τῶν φαζημονιτῶν ὑγιεινὰ σφόδρα, καὶ τὸ σαγύλιον ἐπὶ ὄρους ὀρθίου,
καὶ ὑψηλοῦ. πρὸς ὀξεῖαν ἀνατείνοντος ἄκραν, ἔρυμα ἱδρυμένον ἔχον, καὶ ὑδρεῖον δαψιλὲς ὃ νῦν
ὠλιγώρηται. τοῖς δὲ, βασιλεῦσιν ἦν χρήσιμον εἰς πολλά. ἐνταῦθα δὲ ἑάλω, καὶ διεφθάρη ὑπὸ
τῶν φαρνάκου τοῦ βασιλέως παίδων ἀρσάκης βασιλεύων, καὶ νεωτερίζων. ἐπιτρέψαντος οὐ-
δενὸς τῶν ἡγεμόνων. ἑάλω δὲ οὐ βίᾳ τοῦ ἐρύματος ληφθέντος ὑπὸ πολέμωνος, καὶ λυκομή-
δους βασιλέων ἀμφοῖν. ἀλλὰ λιμῷ. ἀνέφυγε γὰρ εἰς τὸ ὄρος παρασκευῆς χωρίς. εἰργόμενος τῶν
πεδίων. εὗρε δὲ καὶ τὰ ὑδρεῖα ἐμπεφραγμένα πέτραις ἠλιβάτοις. οὕτω γὰρ διετέτακτο πομ-

πιος. κατασπᾶν κελεύσας τὰ φρούρια, καὶ μὴ ἐᾶν χρήσιμα τοῖς ἀναφεύγουσιν εἰς αὐτὰ βουλο-
μένοις λῃστηρίων χάριν. ἐκεῖνος μὲν οὖν οὕτω διέταξε τὴν φαζημωνῖτιν. οἱ δ' ὕστερον βασιλεῦσι,
καὶ ταύτην ἔνειμαν. ἡ δ' ἡμετέρα πόλις κεῖται μὲν ἐν φάραγγι βαθείᾳ, καὶ μεγάλῃ. δι' ἧς ὁ ἶρις
φέρεται ποταμός. κατεσκεύασται δὲ θαυμαστῶς προνοίᾳ τε καὶ φύσει πόλεως. ἅμα τε καὶ φρουρίου
παρέχεσθαι χρείαν δυναμένη. πέτρα γάρ ὑψηλὴ, καὶ περίκρημνος. κατερρωγυῖα εὐθὺ τὸν ποτα-
μόν. τῇ μὲν, ἔχουσα τὸ τεῖχος ἐπὶ τῷ χείλει τοῦ ποταμοῦ. καθ' ὃ ἡ πόλις συνῴκισται. τῇ δ' ἀναφέρχων
ἑκατέρωθεν ἐπὶ τὰς κορυφάς. δύο δ' εἰσὶ συμφυεῖς ἀλλήλαις πεπυργωμέναι παγκάλως. ἐν δὲ τῷ
περιβόλῳ τούτῳ βασίλειά τ' ἐστὶ καὶ βασιλέων μνήματα. αἱ κορυφαὶ δ' ἔχουσιν αὐχένα παντάπασι
στενόν. πέντε ἢ ἓξ σταδίων ἑκατέρωθεν τὸ ὕψος, ἀπὸ τῆς ποταμίας ἀναβαίνοντι, καὶ τῶν προαστείων.
ἀπὸ δὲ τοῦ αὐχένος ἐπὶ τὰς κορυφὰς ἄλλη σταδιαία λείπεται πρόσβασις ὀξεῖα. καὶ πάσης βίας
κρείττων. ἔχει δὲ καὶ ὑδρεῖα ἐντὸς ἀναφαίρετα, συρίγγων τετμημένων δυεῖν. τῆς μὲν, ἐπὶ τὸν πο-
ταμόν. τῆς δ' ἐπὶ τὸν αὐχένα. ἐπέζευκται δὲ γέφυρα τῷ ποταμῷ. μία μὲν ἀπὸ τῆς πόλεως ἐπὶ
τὸ προάστιον. ἄλλη δ' ἀπὸ τοῦ προαστίου πρὸς τὴν ἔξω χώραν. κατὰ γὰρ τὴν γέφυραν ταύτην ἀπο-
λήγει τὸ ὄρος τὸ τῆς πέτρας ὑπερκείμενον. αὐλὼν δ' ἐστὶν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ διήκων. οὐ πλατὺς τὸ
πρῶτον τελέως. ἔπειτα πλατύνεται. καὶ ποιεῖ τὸ χιλιόκωμον καλούμενον πεδίον. εἶθ' ἡ διακοπη-
νὴ. καὶ ἡ πιμωλισηνὴ χώρα εὐδαίμων πᾶσα μέχρι τοῦ ἅλυος. ταῦτα μὲν τὰ ἀρκτικὰ μέρη τῆς
τῶν ἀμασέων χώρας. μῆκος ὅσον πεντακοσίων σταδίων. ἔπειθ' ἑξῆς ἡ λοιπὴ πολὺ ταύτης ἐπὶ μη-
κεστέρα μέχρι τοῦ βαβανόμου, καὶ τῆς ξιμηνῆς. ἥπερ καὶ αὐτὴ καθήκει μέχρι πρὸς τὸν ἅλυν. τοῦτο
μὲν δὴ τὸ μῆκος. πλάτος δὲ τὸ ἀπὸ τῶν ἄρκτων πρὸς νότον. ἐπί τε τὴν ζηλίτην, καὶ τὴν μεγάλην
καππαδοκίαν μέχρι τῶν τρόκμων. εἰσὶ δ' ἐν τῇ ξιμηνῇ ἅλαι ὀρυκτῶν ἁλῶν. ἀφ' ὧν εἰκάζουσι τὸν
εἰρῆσθαι ἅλυν τὸν ποταμόν. ἔστι δὲ καὶ ἐρύματα κατεσκαμμένα πλείω ἐν τῇ ἡμετέρᾳ χώρᾳ. καὶ
ἔρημος γῆ πολλὴ διὰ τὸν μιθριδατικὸν πόλεμον. ἔστι μέντοι πᾶσα εὔδενδρος ἡ δ' ἱππόβατος, καὶ
τοῖς ἄλλοις θρέμμασι πρόσφορος. ἅπασα δ' οἰκήσιμος καλῶς. ἐδόθη δὲ, καὶ ἡ ἀμάσεια βασιλεῦσι.
νῦν δ' ἐπαρχία ἐστί. λοιπὴ δ' ἐστὶν ἡ ἐκτὸς ἅλυος χώρα τῆς ποντικῆς ἐπαρχίας, ἡ περὶ τὸν ὀλγάσ-
συν συναφὴς τῇ σινωπίδι. ἔστι δ' ὁ ὀλγάσσυς ὄρος σφόδρα ὑψηλὸν, καὶ δύσβατον. καὶ ἱερὰ τοῦ ὄ-
ρους τούτου πανταχοῦ καθιδρυμένα ἔχουσιν οἱ παφλαγόνες. περιοικεῖται δ' ἱκανῶς χώρα ἀγα-
θὴ ἥτε βλαηνὴ, καὶ ἡ δομανῖτις. δι' ἧς ἀμνίας ῥεῖ ποταμός. ἐνταῦθα μιθριδάτης ὁ εὐπάτωρ τὰς
νικομήδους τοῦ βιθυνοῦ δυνάμεις ἄρδην ἠφάνισεν. οὐ δ' αὐτὸς παρατυχὼν. ἀλλὰ διὰ τῶν στρατη-
γῶν, καὶ ὁ μὲν, φεύγων μετ' ὀλίγων εἰς τὴν οἰκείαν ἐσώθη. κἀκεῖθεν εἰς ἰταλίαν ἔπλευσεν. ὁ δ' ἠκο-
λούθησε. καὶ τήν τε βιθυνίαν εἷλεν ἐξ ἐφόδου. καὶ τὴν ἀσίαν κατέσχε μέχρι καρίας, καὶ λυκίας.
κἀνταῦθα δ' ἀπεδείχθη πόλις ἡ πομπηϊούπολις. ἐν δὲ τῇ πόλει ταύτῃ τὸ σανδαρακούργιον οὐ πολὺ
ἄποθεν πιμωλισῶν. φρουρίου βασιλικοῦ κατεσκαμμένου. ἀφ' οὗ ἡ χώρα ἡ ἑκατέρωθεν τοῦ ποτα-
μοῦ καλεῖται πιμωλισηνή. τὸ δὲ σανδαρακούργιον ὄρος κοῖλόν ἐστιν. ἐκ τῆς μεταλλείας ὑπεληλυ-
θότων αὐτὸ τῶν ἐργαζομένων διώρυξι μεγάλαις. εἰργάζοντο δὲ δημοσιῶναι ἀεὶ, μεταλλευταῖς χρώμε-
νοι τοῖς ἀπὸ κακουργίας ἀγοραζομένοις ἀνδραπόδοις. πρὸς γὰρ τῷ ἐπιπόνῳ τοῦ ἔργου, καὶ θανάσι-
μον, καὶ δύσοιστον εἶναι τὸν ἀέρα φασὶ. τὸν ἐν τοῖς μετάλλοις διὰ τὴν βαρύτητα τῆς τῶν βώλων ὀδ-
μῆς. ὥστε ὠκύμορα εἶναι τὰ σώματα. καὶ δὴ καὶ ἐκλιπέσθαι συμβαίνει πολλάκις τὴν μεταλλείαν
διὰ τὸ ἀλυσιτελές. πλειόνων μὲν, ἢ διακοσίων ὄντων τῶν ἐργαζομένων. συνεχῶς δὲ νόσοις, καὶ φθο-
ραῖς δαπανωμένων. τοσαῦτα καὶ περὶ τοῦ πόντου εἰρήσθω. μετὰ δὲ τὴν πομπηϊούπολιν ἡ λοιπὴ τῆς
παφλαγονίας ἐστὶ τῆς μεσογαίας μέχρι βιθυνίας ἰοῦσι πρὸς δύσιν. ταύτης δὲ καίπερ ὀλίγης
οὔσης, μικρὸν μὲν πρὸ ἡμῶν ἦρχον πλείους. νῦν δ' ἔχουσι ῥωμαῖοι, τοῦ γένους τῶν βασιλέων ἐκλι-
πόντος. ὀνομάζουσι δ' οὖν τὴν ὅμορον τῇ βιθυνίᾳ τιμωνῖτιν. καὶ τήν γε ζατόρηγος, καὶ μαρμολί-
του τε καὶ σανισηνὴν, καὶ ποταμίαν. ἦν δέ τις καὶ κινιστηνή. ἐν ᾗ τὰ κιμίατα φρούριον ἐρυμνὸν
ὑποκείμενον τῆς τοῦ ὀλγάσσυος ὀρεινῆς. ᾧ χρησάμενος ὁρμητηρίῳ μιθριδάτης ὁ κτίστης προσα-
γορευθεὶς κατέστη τοῦ πόντου κύριος. καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ τὴν διαδοχὴν ἐφύλαξαν μέχρι τοῦ εὐπάτορος.
ὕστατος δὲ τῆς παφλαγονίας ἦρξε δηϊόταρος καστόρους υἱὸς ὁ προσαγορευθεὶς φιλάδελφος. τὸ μορ-
ζέως βασίλειον ἔχων τὰ γάγγρα. πολισμάτιον ἅμα καὶ φρούριον. εὔδοξος δ' ὀρυκτοὺς ἰχθῦς ἐν τῇ πα-
φλαγονίᾳ λέγων ἐν ξηροῖς τόποις, οὐ διορίζει τὸν τόπον. ἐν ὑγροῖς δὲ περὶ τὴν ἀσκανίαν λίμνην φησὶ
τὴν ὑπὸ κίῳ. λέγων οὐδὲν σαφές. ἐπεὶ δὲ καὶ τὴν ὅμορον τῷ πόντῳ παφλαγονίαν ἐκτιθέμεθα, τοῖς δὲ
παφλαγόσιν ὁμοροῦσιν οἱ βιθυνοὶ πρὸς δύσιν, πειρασόμεθα, καὶ τὰ τούτων ἐπελθεῖν. ἔπειτα λαβόντες
ἀρχὴν ἄλλην ἔκ τε τούτων, καὶ τῶν παφλαγόνων, τὰ ἑξῆς τούτων τὰ πρὸς νότον μέχρι τοῦ ταύρου, συνυ-
φανοῦμεν τὰ παράλληλα τῷ πόντῳ καὶ τῇ καππαδοκίᾳ. τοιαύτην γάρ τινα ὑπογράφει τάξιν, καὶ μερι-
σμὸν ἡ τῶν τόπων φύσις. τὴν δὲ βιθυνίαν ἀπὸ μὲν τῆς ἀνατολῆς ὁρίζουσι παφλαγόνες τε, καὶ μαριαν-

θυνοὶ καὶ τῶν ἐπικτήτων τινές. ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ἡ ποντικὴ θάλαττα ἡ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ σαγ-
γαρίου. μέχρι τοῦ στόματος τοῦ κατὰ βυζάντιον καὶ καλχηδόνα. ἀπὸ δὲ δύσεως ἡ προποντίς. πρὸς νό-
τον δ' ἥτε μυσία, καὶ ἐπίκτητος καλουμένη φρυγία. ἡ δ' αὐτὴ καὶ ἑλλησποντιακὴ φρυγία καλουμέ-
νη. ταύτης δ' ἐπὶ μὲν τῷ στόματι τοῦ πόντου, χαλκηδὼν ἵδρυται μεγαρέων κτίσμα, καὶ κώμη χρυ-
σόπολις. καὶ τὸ ἱερὸν τὸ χαλκηδόνιον. ἔχει δ' ἡ χώρα μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης κρήνην ἀ-
ζαριτίαν, τρέφουσαν κροκοδείλους μικρούς. ἔπειτ' ἐκδέχεται τὴν καλχηδονίων ἠϊὼν. ὁ ἀστακηνὸς
καλούμενος κόλπος μέρος ὢν τῆς προποντίδος. ἐν ᾧ ἡ νικομήδεια ἔκτισται. ἐπώνυμος ἑνὸς τῶν βιθυ-
νῶν βασιλέων τοῦ κτίσαντος αὐτήν. πολλοὶ δ' ὁμωνύμως ὠνομάσθησαν καθάπερ πτολεμαῖοι διὰ
τὴν τοῦ πρώτου δόξαν, ἦν δ' ἐν αὐτῷ τῷ κόλπῳ, καὶ ἀστακὸς μεγαρέων κτίσμα, καὶ ἀθηναίων. καὶ μετὰ
ταῦτα δοιδαλσοῦ. ἀφ' ἧς καὶ ὁ κόλπος ὠνομάσθη. κατεσκάφη δ' ὑπὸ λυσιμάχου. τοὺς δ' οἰκήτο-
ρας μετήγαγεν εἰς νικομήδειαν ὁ κτίσας αὐτήν. τῷ δ' ἀστακηνῷ κόλπος ἄλλος συνεχής ἐστιν. εἰσέ-
χων μάλιστα πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον. ἐν ᾧ προῦσά ἐστιν ἡ κῖος πρότερον ὠνομασθεῖσα. κατέσκαψε δὲ
τὴν κῖον ὁ φίλιππος ὁ δημητρίου μὲν υἱός. περσέως δὲ πατήρ. ἔδωκε δὲ προυσίᾳ τῷ ζήλα. συγκα-
τασκάψαντι, καὶ ταύτην, καὶ μύρλειαν ἀστυγείτονα πόλιν. πλησίον δὲ, καὶ προύσης οὖσαν. ἀναλα-
βὼν δ' ἐκεῖνος ἐκ τῶν ἐρειπίων αὐτὰς, ἐπωνόμασεν ἀφ' ἑαυτοῦ μὲν προυσιάδα πόλιν τὴν κῖον. τὴν
δὲ μύρλειαν ἀπάμειαν ἀπὸ τῆς γυναικός. οὗτος δ' ἐστὶν ὁ προυσίας ὁ καὶ ἀννίβαν δεξάμενος. ἀναχω-
ρήσαντα δεῦρο μετὰ τὴν ἀντιόχου ἧτταν, καὶ τῆς ἐφ' ἑλλησπόντῳ φρυγίας ἀναστὰς κατὰ συμβά-
σεις τοῖς ἀτταλικοῖς. ἣν οἱ μὲν πρότερον ἐκάλουν μικρὰν φρυγίαν. ἐκεῖνοι δ' ἐπίκτητον ὠνόμασαν.
ὑπέρκειται δὲ τῆς προυσιάδος ὄρος ὃ καλοῦσιν ἀργανθώνιον. ἐνταῦθα δὲ μυθεύουσι τὸν ὕλαν ἕνα τῶν
ἡρακλέους ἑταίρων συμπλεύσαντα ἐπὶ τῆς ἀργοῦς αὐτῷ. ἐξιόντα δὲ ἐφ' ὑδρείαν ὑπὸ νυμφῶν ἀρ-
παγῆναι κῖον δὲ, καὶ τοῦτον ἡρακλέους ἑταῖρον ἐπανελθόντα ἐκ κόλχων αὐτόθι καταμεῖναι. καὶ
κτίσαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον αὐτοῦ. καὶ νῦν δ' ἔτι καὶ ἑορτή τις ἄγεται παρὰ τοῖς προυσιεῦσι καὶ
ὀρειβασία θιασευόντων, καὶ καλούντων ὕλαν, ὡς ἂν κατὰ ζήτησιν τὴν ἐκείνου πεποιημένων τὴν ἐπὶ
τὰς ὕλας ἔξοδον. πολιτευσάμενοι δὲ πρὸς ῥωμαίους οἱ προυσιεῖς εὐνοικῶς ἐλευθερίας ἔτυ-
χον. οἱ δ' ἀπαμεῖς ἀποικίαν ἐδέξαντο ῥωμαίων. προῦσα δὲ ἐπὶ τῷ ὀλύμπῳ ἵδρυται τῷ μυ-
σίῳ πόλις εὐνομουμένη. τοῖς τε φρυξὶν ὅμορος, καὶ τοῖς μυσοῖς. κτίσμα προυσίου τοῦ πρὸς κροῖσον
πολεμήσαντος. διορίσαι δὲ τοὺς ὅρους χαλεπὸν τούς τε βιθυνῶν, καὶ μυσῶν, καὶ φρυγῶν. καὶ ἔτι
δολιόνων τῶν περὶ κύζικον, καὶ μυγδόνων, καὶ τρώων, καὶ διότι μὲν δεῖ εἶναι ἕκαστον τῶν φῦλον
χωρὶς, ὁμολογεῖται, καὶ ἐπί τε τῶν φρυγῶν, καὶ τῶν μυσῶν. καὶ παροιμιάζονται χωρὶς τὰ μυ-
σῶν καὶ τὰ φρυγῶν ὁρίσματα, διορίσασθαι χαλεπόν. αἴτιον δὲ τὸ τοὺς ἐπήλυδας στρατιώτας, καὶ
βαρβάρους ὄντας. μὴ βεβαίως κατέχειν τὴν κρατηθεῖσαν. ἀλλὰ πλανήτας εἶναι τὸ πλέον. ἐκ-
βάλλοντας, καὶ ἐκβαλλομένους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ταῦτα θρᾴκιά τις εἰκάζοι ἂν διὰ τὸ τὴν
περαίαν νέμεσθαι τούτους. καὶ διὰ τὸ μὴ πολὺ ἐξαλλάττειν ἀλλήλων ἑκατέρους, ὅμως δ' ἐφ' ὅσον
εἰκάζειν οἷόν τε τῆς μὲν βιθυνίας μέσην ἄν τις θείη, καὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ αἰσήπου, τὴν μυσίαν ἁπτο-
μένην τῆς θαλάττης. καὶ διήκουσαν μέχρι τοῦ ὀλύμπου. σχεδὸν δὲ παντὸς κύκλῳ δὲ, τὴν ἐπίκτητον κει-
μένην ἐν τῇ μεσογαίᾳ. θαλάττης οὐδαμοῦ ἁπτομένην, διατείνουσαν δὲ μέχρι τῶν ἑῴων μερῶν
τῆς ἀσκανίας λίμνης τε, καὶ χώρας ὁμωνύμως γὰρ τῇ λίμνῃ καὶ ἡ χώρα ἐλέγετο. καὶ ἦν αὐτῆς
τὸ μὲν φρύγιον τὸ δὲ μύσιον. ἀπωτέρω δὲ τῆς τροίας τὸ φρύγιον. καὶ δὴ, καὶ οὕτως δεκτέον τὸ παρὰ
τῷ ποιητῇ. ὅταν φῇ.

» Φόρκυς δ' αὖ φρύγας ἦγε, καὶ ἀσκάνιος θεοειδής.
» Τῆλ' ἐξ ἀσκανίας τῆς φρυγιακῆς.

Ὡς οὔσης ἐγγυτέρω ἄλλης ἀσκανίας τῆς μυσιακῆς πρὸς τῇ νῦν νικαίᾳ. ἧς μέμνηται ὅταν φῇ.

» Γάλμυν ἀσκάνιόν τε μόρυν θ' υἱὸν ἱπποτίωνος.
» Μυσῶν ἀγχεμάχων ἡγήτορα
» Οἵ ῥ' ἐξ ἀσκανίης ἐριβώλακος ἦλθον ἀμοιβοί.

Οὐ θαυμαστὸν δ' εἰ τῶν φρυγῶν εἰπών τινας ἡγεμόνας ἀσκάνιον καὶ ἐξ ἀσκανίας ἥκοντα. πολλὴ γάρ ἡ
ὁμωνυμία παρ' αὐτῷ. καὶ ἡ ἀπὸ τῶν ποταμῶν, καὶ λιμνῶν, καὶ χωρίων ἐπίκλησις, καὶ τὸν αἴση-
πον δὲ, τῶν μυσῶν ὅριον παραδίδωσιν αὐτὸς ὁ ποιητής. τὴν γὰρ ἐπὶ τοῦ ἰλίου παρωρείαν τῆς τρῳάδος
καταλέξας τὴν ὑπ' αἰνείᾳ ἣν δαρδανίαν ἐκάλεσε, τίθησιν ἐφεξῆς πρὸς ἄρκτον, καὶ εἰς τὴν λυκίαν
τὴν ὑπὸ πανδάρῳ, ἐν ᾗ ἡ ζέλεια. καὶ φησίν.

» Οἳ δὲ ζέλειαν ἔναιον ὑπαὶ πόδα νείατον ἴδης.
» Ἀφνειοὶ πίνοντες ὕδωρ μέλαν αἰσήποιο τρῶες.

Τῇ δὲ ζελείᾳ ὑποπέπτωκε πρὸς θαλάττῃ. ἐπὶ δὲ τὸ τοῦ αἰσήπου τὸ τῆς ἀδραστείας πεδίον, καὶ

τρεία, καὶ ἡ πιτύα. καὶ καθόλου ἡ νῦν κυζικηνὴ ἡ πρὸς πριάπῳ. ἣν ἐφεξῆς καταλέγει. εἶτα ἀνακάμ-
πτει πάλιν ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη, καὶ τὰ ἐπέκεινα. ὥς γε ἐμφαίνει τὴν μέχρι αἰσήπου. πέρας ἡγού-
μενος τῆς τρῳάδος τὸ ἀρκτικὸν, καὶ ἑῷον. ἀλλὰ μὴν μετά γε τὴν τρῳάδα ἡ μυσία ἐστὶ, καὶ ὁ ὄλυμπος.
μὲν οὖν παλαιὰ ἡ μνήμη τοιαύτην τινὰ ὑπαγορεύει τὴν τῶν ἐθνῶν θέσιν. αἱ δὲ νῦν μεταβολαὶ τὰ
πολλὰ ἐξήλλαξαν. ἄλλων τ' ἄλλων ἐπικρατούντων. καὶ τὰ μὲν, συγχεόντων. τὰ δὲ, διασπώντων.
καὶ γὰρ φρύγες ἐπεκράτησαν, καὶ μυσοὶ μετὰ τὴν τροίας ἅλωσιν. εἶθ' ὕστερον λυδοὶ, καὶ μετ' ἐκείνους
αἰολεῖς, καὶ ἴωνες. ἔπειτα πέρσαι, καὶ μακεδόνες. τελευταῖοι δὲ ῥωμαῖοι. ἐφ' ὧν ἤδη καὶ τὰς δια-
λέκτους, καὶ τὰ ὀνόματα ἀποβεβλήκασιν οἱ πλεῖστοι. γεγονότος ἑτέρου τινὸς μερισμοῦ τῆς χώρας.
οὐ μᾶλλον φροντίσαι δεῖ τὰ νῦν οἴεται λέγοντας, τῇ δὲ ἀρχαιολογίᾳ μετρίως προσέχοντας. ἔστι
δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς βιθυνίας, τό, τε βιθύνιόν ἐστιν ὑπερκείμενον τοῦ τιείου, καὶ ἔχων τὴν περὶ σα-
λῶνα χώραν ἀρίστην βουβοσίοις, ὅθεν ἐστὶν ὁ σαλωνίτης τυρός. καὶ νίκαια ἡ μητρόπολις τῆς βι-
θυνίας, ἐπὶ τῇ ἀσκανίᾳ λίμνῃ. περίκειται δὲ κύκλῳ πεδίον μέγα, καὶ σφόδρα εὔδαιμον. οὐ πά-
νυ γε ὑγιεινὸν τοῦ θέρους. κτίσμα ἀντιγόνου μὲν πρῶτον τοῦ φιλίππου. ὃς αὐτὴν ἀντιγονίαν προ-
σεῖπε. εἶτα λυσιμάχου. ὃς αὐτὴν ἀπὸ τῆς γυναικὸς ὠνόμασε νίκαιαν. ἦν δ' αὕτη θυγάτηρ ἀντι-
πάτρου. ἔστι δὲ τῆς πόλεως ἑκκαιδεκαστάδιος ὁ περίβολος ἐν τετραγώνῳ σχήματι. ἔστι δὲ τετράπυλος
ἐν πεδίῳ κείμενος. ἐρρυμοτομημένος πρὸς ὀρθὰς γωνίας. ὥστ' ἀφ' ἑνὸς λίθου κατὰ μέσον ἱδρυμένος
τὸ γυμνάσιον, τὰς τέτταρας ὁρᾶσθαι πύλας, μικρὸν δ' ὑπὲρ τῆς ἀσκανίας λίμνης ὀτροία πολί-
χνη, πρὸς τοῖς ὅροις τῆς βιθυνίας ἤδη πρὸς ἕω. εἰκάζουσι δ' ἀπὸ ὀτρέως ὀτροίας καλεῖσθαι πρό-
τερον. ὅτι δ' ἦν κατοικία μυσῶν ἡ βιθυνία, πρῶτον μαρτυρήσει σκύλαξ ὁ καρυανδεὺς, φή-
σας περιοικεῖν τὴν ἀσκανίαν λίμνην, φρύγας καὶ μυσούς. ἔπειτα διονύσιος ὁ τὰς κτίσεις συγ-
γράψας. ὅτι κατὰ χαλκηδόνα, καὶ βυζάντιον τὰ στενὰ, ἃ νῦν θράκιος βόσπορος καλεῖται, πρότε-
ρόν φησι μύσιον βόσπορον προσαγορεύεσθαι. εἴποι δ' ἄν τις καὶ τοὺς θρᾶκας εἶναι τοὺς μυσοὺς
μαρτύριον θείη. ὅτι εὐφορίων μυσίο παρ' ὕδασιν ἀσκανίοιο λέγων. καὶ ὁ αἰτωλὸς ἀλέξανδρος.

» Οἳ καὶ ἐπ' ἀσκανίων δώματ' ἔχουσι ῥοῶν
» Λίμνης ἀσκανίης ἐπὶ χείλεσιν.
» Ἔνθα δολίων υἱὸς σιληνοῦ νάσσατο, Καὶ μελίης.

Τὸ αὐτὸ ἐκμαρτυροῦσιν. οὐδαμοῦ τῆς ἀσκανίας λίμνης εὑρισκομένης ἀλλ' ἐνταῦθα μόνον.
ἄνδρες δ' ἀξιόλογοι κατὰ παιδείαν γεγόνασιν ἐν τῇ βιθυνίᾳ. ξενοκράτης τε ὁ φιλόσοφος. καὶ διο-
νύσιος ὁ διαλεκτικός. καὶ ἵππαρχος. καὶ θεοδόσιος. καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ μαθηματικοί. κλεοφάνης
τε ῥήτωρ ὁ μυρλεανός. ἀσκληπιάδης τε προυσιεὺς ἰατρός. πρὸς νότον δ' εἰσὶ τοῖς βιθυνοῖς, οἱ περὶ
τὸν ὄλυμπον μυσοί. οὓς ὀλυμπηνοὺς καλοῦσί τινες. οἱ δ' ἑλλησποντίους. καὶ ἡ ἐφ' ἑλλησπόντῳ φρυ-
γία. τοῖς δὲ παφλαγόσι γαλάται. ἀμφοτέρων τε τούτων ἔτι πρὸς νότον, ἡ μεγάλη φρυγία, καὶ λυ-
καονία, μέχρι τοῦ ταύρου τοῦ κιλικίου, καὶ πισιδικοῦ. ἐπεὶ δὲ τὰ τῇ παφλαγονίᾳ συνεχῆ παρά-
κειται τῷ πόντῳ, καὶ τῇ καππαδοκίᾳ, καὶ τοῖς ἤδη περιωδευμένοις ἔθνεσιν, οἰκεῖον ἂν εἴη τὰ τούτοις
γειτονοῦντα μέρη περιοδεῦσαι πρῶτον. ἔπειτα τοὺς ἑξῆς τόπους παραδεῖξαι. πρὸς νότον τοίνυν
εἰσὶ τοῖς παφλαγόσι γαλάται. τούτων δ' ἐστὶν ἔθνη τρία. δύο μὲν τῶν ἡγεμόνων ἐπώνυμα τρόγινοι,
καὶ τολιστοβώγιοι. τὸ τρίτον δ' ἀπὸ τοῦ ἐν κελτικῇ ἔθνους τεκτοσάγες, κατέσχον δὲ τὴν χώραν ταύ-
την οἱ γαλάται πλανηθέντες πολὺν χρόνον. καὶ καταδραμόντες τὴν ὑπὸ τοῖς ἀτταλικοῖς βασιλεῦ-
σι χώραν, καὶ τοῖς βιθυνοῖς ἕως παρ' ἑκόντων ἔλαβον τὴν νῦν βιθυνίαν. καὶ γαλλογραικίαν λεγο-
μένην. ἀρχηγὸς δὲ μάλιστα δοκεῖ τῆς περαιώσεως τῆς εἰς τὴν ἀσίαν γενέσθαι λεοννόριος. τριῶν
δὲ ὄντων ἐθνῶν ὁμογλώττων, καὶ κατ' ἄλλο οὐδὲν ἐξηλλαγμένων, ἕκαστα διελόντες εἰς τέτταρας
μερίδας, τετραρχίαν ἑκάστην ἐκάλεσαν. τετράρχην ἔχουσαν ἴδιον. καὶ δικαστὴν ἕνα, καὶ στρα-
τοφύλακα ἕνα. ὑπὸ τῷ τετράρχῃ τεταγμένους. ὑποστρατοφύλακας δὲ δύο. ἡ δὲ τῶν δώδε-
κα τετραρχῶν βουλὴ, ἄνδρες ἦσαν τριακόσιοι. συνήγοντο δὲ εἰς τὸν καλούμενον δρυναίμετον. τὰ
μὲν οὖν φονικὰ, ἡ βουλὴ ἔκρινε. τὰ δὲ ἄλλα οἱ τετράρχαι, καὶ οἱ δικασταί. πάλαι μὲν οὖν ἦν
τοιαύτη τις ἡ διάταξις. καθ' ἡμᾶς δὲ εἰς τρεῖς. εἶτ' εἰς δύο ἡγεμόνας. εἶτα εἰς ἕνα ἧκεν ἡ δυναστεία,
εἰς δηιόταρον. εἶτα ἐκεῖνον διεδέξατο ἀμύντας. νῦν δ' ἔχουσι ῥωμαῖοι, καὶ ταύτην, καὶ τὴν ὑπὸ
τῷ ἀμύντᾳ γενομένην ἐπαρχίαν. ἔχουσι δὲ οἱ μὲν τρόγινοι τὰ πρὸς τῷ πόντῳ, καὶ τῇ καππαδο-
κίᾳ. ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ κράτιστα ὧν νέμονται γαλάται. φρούρια δ' αὐτοῖς τετείχισται τρία. ταούιον
ἐμπορεῖον τῶν ταύτῃ. ὅπου ὁ τοῦ διὸς κολοσσὸς χαλκοῦς. καὶ τέμενος ἄσυλον. καὶ μιθριδάτιον ὃ ἔ-
δωκε πομπήιος βογοδιατόρῳ, τῆς ποντικῆς βασιλείας ἀφορίσας. τρίτον δέ πως δανάλα. ὅπου τὸν
σύλλογον ἐποιήσαντο πομπήιός τε καὶ λεύκουλος. ὁ μὲν, ἥκων ἐπὶ τὴν τοῦ πολέμου διαδοχήν. ὁ δὲ, πα-
ραδιδοὺς τὴν ἐξουσίαν, καὶ ἀπαίρων ἐπὶ τὸν θρίαμβον. τρόγινοι μὲν δὴ ταῦτ' ἔχουσι τὰ μέρη. τεκτό-

σάγγας δὲ τὰ πρὸς τῇ μεγάλῃ φρυγίᾳ, τῇ κατὰ τὴν πεσινοῦντα καὶ ὀρκαόρκους. τούτων δ' ἦν φρού-
ριον ἄγκυρα. ὁμώνυμος τῇ πρὸς λυδίαν περὶ βλαῦρον πολίχνῃ φρυγιακῇ. τολιστοβώγιοι δ' ὅμοροι βι-
θυνοῖς εἰσὶ, καὶ τῇ ἐπικτήτῳ καλουμένῃ φρυγίᾳ. φρούρια δ' αὐτῶν ἐστὶ τό τε βλούκιον, καὶ τὸ πήιον.
ὧν τὸ μὲν, ἦν βασίλειον δηιοτάρου. τὸ δὲ γαζοφυλάκιον. πεσινοῦς δ' ἐστὶν ἐμπορεῖον τῶν ταύτῃ μέγι-
στον ἱερὸν ἔχον τῆς μητρὸς τῶν θεῶν, σεβασμοῦ μεγάλου τυγχάνον. καλοῦσι δ' αὐτὴν ἀγιδίστιν. οἱ δ'
ἱερεῖς τὸ παλαιὸν μὲν δυνάσται τινὲς ἦσαν, ἱερωσύνην καρπούμενοι μεγάλην. νυνὶ δὲ τούτων μὲν αἱ
τιμαὶ πολὺ μεμείωνται. τὸ δ' ἐμπορεῖον συμμένει. κατεσκεύασται δ' ὑπὸ τῶν ἀτταλικῶν βασιλέων
ἱεροπρεπῶς τὸ τέμενος, ναῷ τε καὶ στοαῖς λευκολίθοις. ἐπιφανὲς δ' ἐποίησαν ῥωμαῖοι τὸ ἱερὸν, ἀφί-
δρυμα ἐνθένδε τῆς θεοῦ μεταπεμψάμενοι κατὰ τοὺς τῆς σιβύλλης χρησμούς. καθάπερ καὶ τοῦ ἀσκλη-
πιοῦ τοῦ ἐν ἐπιδαύρῳ. ἔστι δὲ καὶ ὄρος ὑπερκείμενον τῆς πόλεως, τὸ δίνδυμον. ἀφ' οὗ ἡ δινδυμηνή. κα-
θάπερ ἀπὸ τῶν κυβέλων ἡ κυβέλη. πλησίον δὲ καὶ ὁ σαγγάριος ποταμὸς ποιεῖται τὴν ῥύσιν. ἐπὶ δὲ
τούτῳ τὰ παλαιὰ τῶν φρυγῶν οἰκητήρια μίδου. καὶ ἔτι πρότερον γορδίου, καὶ ἄλλων τινῶν. οὐδ' ἴ-
χνη σώζοντα πόλεων. ἀλλὰ κῶμαι. μικρῷ μείζους τῶν ἄλλων. οἷον ἐστὶ τὸ γόρδιον καὶ γορβεοῦς τὸ τοῦ
κάστορος βασίλειον τοῦ σαωκονδαρίου. ἐν ᾧ γαμβρὸν ὄντα τοῦτον ἀπέσφαξε δηιόταρος, καὶ τὴν θυγα-
τέρα τὴν ἑαυτοῦ. τὸ δὲ φρούριον ἀνέσπασε. καὶ διελυμήνατο τὸ πλεῖστον τῆς κατοικίας. μετὰ δὲ τὴν
γαλατίαν πρὸς νότον ἥ τε λίμνη ἐστὶν ἡ τάττα, παρακειμένη τῇ μεγάλῃ καππαδοκίᾳ τῇ κατὰ τοὺς μο-
ριμηνούς. μέρος δ' οὖσα τῆς μεγάλης φρυγίας. καὶ ἡ συνεχὴς ταύτῃ μέχρι τοῦ ταύρου. ἧς τὴν πλεί-
στην ἀμύντας εἶχεν. ἡ μὲν οὖν τάττα, ἁλοπήγιόν ἐστιν αὐτοφυές. οὕτω δὲ περιπήττεται ῥαδίως τὸ ὕδωρ
παντὶ τῷ βαπτισθέντι εἰς αὐτὸ, ὥστε στεφάνους ἁλῶν ἀνέλκουσιν, ἐπειδὰν καθῶσι κύκλον σχοίνιον.
τά τε ὄρνεα ἁλίσκεται τὰ προσαψάμενα τῷ πτερώματι τοῦ ὕδατος παραχρῆμα πίπτοντα διὰ τὴν
περίπηξιν τῶν ἁλῶν. ἥ τε δὴ τάττα ἐστὶ, καὶ τὰ περὶ ὀρκαόρκους. καὶ πιτνισὸν. καὶ τὰ τῶν λυκαόνων
ὀροπέδια. ψυχρὰ καὶ ψιλὰ καὶ ὀναγρόβοτα. ὑδάτων τε σπάνις πολλή. ὅπου δὲ καὶ εὑρεῖν δυνατὸν
βαθύτατα φρέατα τῶν πάντων καθάπερ ἐν σοάτροις. ὅπου καὶ πιπράσκεται τὸ ὕδωρ. ἔστι δὲ κωμό-
πολις γαρσαβόρων πλησίον. ὅμως δὲ καίπερ ἄνυδρος οὖσα ἡ χώρα, πρόβατα ἐκτρέφει θαυμαστῶς.
τραχείας δὲ ἐρέας. καί τινες ἐξ αὐτῶν τούτων μέγιστον πλοῦτον ἐκτήσαντο. ἀμύντας δ' ὑπὲρ τρια-
κοσίας ἔσχε ποίμνας ἐν τοῖς τόποις τούτοις. εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι. κώραλις μὲν ἡ μείζων. ἡ δ' ἐλάττων
τρωγίτις. ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ ἰκόνιον ἐστί. πολίχνιον εὖ συνῳκισμένον. καὶ χώραν εὐτυχεστέραν ἔχον
τῆς λεχθείσης ὀναγροβότου. τοῦτο δ' εἶχε πολέμων. πλησιάζει δ' ἤδη τούτοις τοῖς τόποις ὁ ταῦρος ὁ
τὴν καππαδοκίαν ὁρίζων, καὶ τὴν λυκαονίαν, πρὸς τοὺς ὑπερκειμένους κίλικας τοὺς τραχειώτας.
λυκαόνων τε καὶ καππαδόκων ὅριον ἐστὶ τὸ μεταξὺ κοροπασσοῦ κώμης λυκαόνων, καὶ γαρσαθύρων πο-
λιχνίου καππαδόκων. ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ διάστημα τῶν φρουρίων τούτων, ἑκατὸν εἴκοσί που στάδιοι. τῆς δὲ
λυκαονίας ἐστὶ, καὶ ἡ ἰσαυρικὴ πρὸς αὐτῷ τῷ ταύρῳ. εἶτα ἰσαυρία κώμας δύο ἔχουσα ὁμωνύ-
μους. τὴν μὲν παλαιὰν καλουμένην εὐερκῆ. ὑπήκοοι δ' ἦσαν ταύταις, καὶ ἄλλαι κῶμαι συχναί. λῃ-
στῶν δ' ἅπασαι κατοικίαι. παρέσχον δὲ καὶ ῥωμαίοις πράγματα. καὶ τῷ ἰσαυρικῷ προσαγορευθέν-
τι πουβλίῳ σερβιλίῳ. ὃν ἡμεῖς εἴδομεν. ὃς καὶ ταῦτα ὑπέταξε ῥωμαίοις. καὶ τὰ πολλὰ τῶν πειρα-
τῶν ἐρύματα ἐξεῖλε τὰ ἐπὶ τῇ θαλάττῃ. τῆς δ' ἰσαυρικῆς ἐστιν ἐν πλευραῖς ἡ δέρβη μάλιστα τῇ καπ-
παδοκίᾳ ἐπιπεφυκὸς τὸ τοῦ ἀντιπάτρου τυραννεῖον τοῦ δερβήτου. τοῦ δ' ἦν καὶ τὰ λάρανδα. ἐφ' ἡ-
μῶν δὲ καὶ τὰ ἴσαυρα. καὶ τὴν δέρβην ἀμύντας εἶχεν, ἐπιθέμενος τῷ δερβήτῃ. καὶ ἀνελὼν αὐ-
τόν. τὰ δ' ἴσαυρα παρὰ τῶν ῥωμαίων ἑλών. καὶ δὴ βασίλειαν ἑαυτῷ κατεσκεύαζεν ἐνταῦθα. τὴν πα-
λαιὰν ἰσαυρίαν ἀνασκέψας. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ χωρίῳ καινὸν τεῖχος οἰκοδομῶν. οὐκ ἔφθη συντελέσας.
ἀλλὰ διέφθειραν αὐτὸν οἱ κίλικες. ἐμβάλλοντα εἰς τοὺς ὁμοναδεῖς. καὶ ἐξ ἐνέδρας ληφθέντα. τὴν
γὰρ ἀντιόχειαν ἔχων τὴν πρὸς τῇ πισίδι, μέχρι ἀπολλωνιάδος τῆς πρὸς ἀπαμείᾳ τῇ κιβωτῷ καὶ τῆς
παρωρείου τινὰ, καὶ τὴν λυκαονίαν, ἐπειρᾶτο τοὺς ἐκ τοῦ ταύρου κατατρέχοντας κίλικας καὶ πι-
σίδας τὴν χώραν ταύτην φρυγῶν οὖσαν, καὶ κιλίκων ἐξαιρεῖν. καὶ πολλὰ χωρία ἐξεῖλεν ἀπόρθητα
πρότερον ὄντα. ὧν καὶ κρήμνα. τὸ δὲ σανδάλιον οὐδ' ἐνεχείρησε βίᾳ προσάγεσθαι. μεταξὺ κείμενον
τῆς τε κρήμνης, καὶ σαγαλασσοῦ. τὴν μὲν οὖν κρήμναν ἄποικοι ῥωμαίων ἔχουσιν. ἡ γαλασσὸς δ' ἐστὶν ὑ-
πὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι τῶν ῥωμαίων, ὑφ' ᾧ καὶ ἡ ἀμύντου βασιλεία πᾶσα. διέχει δ' ἀπαμείας ἡμέρας
ὁδόν. κατάβασιν ἔχουσα σχεδόν τι καὶ τριάκοντα σταδίων, ἀπὸ τοῦ ἐρύματος. καλοῦσι δ' αὐτὴν καὶ σελ-
γησσόν. ταύτην δὲ τὴν πόλιν καὶ ἀλέξανδρος εἷλεν. ὁ δ' οὖν ἀμύντας, τὴν μὲν κρήμναν εἷλεν. εἰς δὲ τοὺς
ὁμοναδέας παρελθὼν οἳ ἐνομίζοντο ἀληπτότατοι, καὶ καταστὰς ἤδη κύριος τῶν πλείστων χωρίων, ἀ-
νελὼν καὶ τὸν τύραννον αὐτῶν, ἐξ ἀπάτης ἐλήφθη διὰ τῆς τοῦ τυράννου γυναικός. καὶ τοῦτον μὲν ἐκεῖ-
νοι διέφθειραν. ἐκείνους δὲ κυρίνιος ἐξεπόρθησε λιμῷ. καὶ τετρακισχιλίους ἄνδρας ἐζώγρησε. καὶ συ-
νῴκισεν εἰς τὰς ἐγγὺς πόλεις. τὴν δὲ χώραν ἀπέλιπεν ἔρημον τῶν ἐν ἀκμῇ. ἔστι δὲ καὶ ἐφ' ὑψηλοῖς τοῦ

ταύρου μέρεσι κρημνοῖς ἀποτόμοις σφόδρα, καὶ τὸ πλέον ἀβάτοις, ἐν μέσῳ κοῖλον, καὶ εὔγαιον πεδίον εἰς αὐλῶνας πλείους διῃρημένον. τοῦτο δὲ γεωργοῦντες, ᾤκουν ἐν ταῖς ὑπερκειμέναις ὀφρύσιν, ἢ ἐν σπηλαίοις. τὰ πολλὰ δ' ἔνοπλοι ἦσαν, καὶ κατέτρεχον τὴν ἀλλοτρίαν, ἔχοντες ὄρη τειχίζοντα τὴν χώραν αὐτῶν. συναφεῖς δ' εἰσὶ τούτοις οἵ τε ἄλλοι πισίδαι καὶ οἱ σελγεῖς. οἵπερ εἰσὶν ἀξιολογώτατοι τῶν πισιδῶν. τὸ μὲν οὖν πλέον αὐτῶν μέρος, τὰς ἀκρωρείας τοῦ ταύρου κατέχει. τινὲς δὲ καὶ ὑπὲρ σίδης, καὶ ἀσπένδου, παμφυλικῶν πόλεων κατέχουσι γεώλοφα χωρία. ἐλαιόφυτα πάντα. τὰ δ' ὑπὲρ τούτων πάντα ὀρεινὰ ἤδη. κατεννεῖς, ὅμοροι σελγεῦσι καὶ ὁ μαναδεῦσι. σαγαλασσεῖς δ' ἤδη τὰ ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ μιλιάδι. φησὶ δ' ἀρτεμίδωρος τῶν πισιδικῶν πόλεις εἶναι, σέλγην. σαγαλασσόν. πετνηλισσόν, ἀδαδάτην. βειάδα. κρῆμναν. πιτυασσὸν, ἀμβλάδα. ἀνάβουρα. σίνδα. ἀαρασσὸν, ταρβασσόν. τερμεσσόν. τούτων δ' οἱ μὲν, εἰσὶ τελέως ὀρεινοί. οἱ δὲ, καὶ μέχρι τῶν ὑπωρειῶν καθήκοντες ἐφ' ἑκάτερα, ἐπί τε τὴν παμφυλίαν, καὶ τὴν μιλυάδα καθήκοντες φρυξὶ καὶ λυδοῖς καὶ καρσὶν, ὅμοροι πᾶσιν εἰρηνικοῖς ἔθνεσι καίπερ προσβόροις οὖσιν. οἱ δὲ πάμφυλοι πολὺ τοῦ κιλικίου φύλου μετέχοντες, οὐ τελέως ἀφεῖνται τῶν λῃστρικῶν ἔργων. οὐδὲ τοὺς ὁμόρους ἐῶσι καθ' ἡσυχίαν ζῆν, καίπερ τὰ νότια μέρη τῆς ὑπωρείας τοῦ ταύρου κατέχοντες. εἰσὶ δὲ τοῖς φρυξὶν ὅμοροι, καὶ τῇ καρίᾳ. τάβα, καὶ σίνδα καὶ ἀμβλάδα. ὅθεν καὶ ὁ ἀμβλαδεὺς οἶνος ἐκφέρεται, πρὸς διαίτας ἰατρικὰς ἐπιτήδειος. τῶν δ' οὖν ὀρεινῶν, ὡς εἰπεῖν πισιδῶν, οἱ μὲν ἄλλοι κατὰ τυραννίδας μεμερισμένοι καθάπερ οἱ κίλικες λῃστρικῶς ἤσκηνται. φασὶ δ' αὐτοῖς τῶν λελέγων συγκαταμιχθῆναί τινας τὸ παλαιὸν πλανήτας ἀνθρώπους. καὶ συμβιῶσαι διὰ τὴν ὁμοιοτροπίαν αὐτόθι. σέλγη δὲ καὶ ἐξ ἀρχῆς μὲν ἐκτίσθη ὑπὸ λακεδαιμονίων ἐκτίσθη πόλις. καὶ ἔτι πρότερον ὑπὸ κάλχαντος. ὕστερον δὲ καθ' αὑτὴν ἔμεινεν αὐξηθεῖσα ἐκ τοῦ πολιτεύεσθαι νομίμως. ὥς ποτε καὶ δισμυρίανδρος εἶναι. θαυμαστὴ δ' ἐστὶν ἡ φύσις τῶν τόπων. ἐν γὰρ ταῖς ἀκρωρείαις τοῦ ταύρου χώρα μυριάδας τρέφειν δυναμένη, σφόδρα εὔκαρπός ἐστιν. ὥς τε καὶ ἐλαιόφυτα εἶναι πολλὰ χωρία, καὶ εὐάμπελα. νομάς τε ἀφθόνους ἀνεῖσθαι παντοδαποῖς βοσκήμασι. κύκλῳ δ' ὑπέρκεινται δρυμοὶ ποικίλης ὕλης. πλεῖστος δ' ὁ στύραξ φύεται παρ' αὐτοῖς. δένδρον οὐ μέγα ὀρθηλόν. ἀφ' οὗ καὶ τὰ στυράκινα ἀκοντίσματα ἐοικότα τοῖς κραναίνοις. ἐγγίνεται δ' ἐν τοῖς στελέχεσι ξυλοφάγον τι σκώληκος εἶδος. ὃ μέχρι τῆς ἐπιφανείας διαφαγὸν τὸ ξύλον, τὸ μὲν πρῶτον πιτύροις, ἢ πρίσμασιν ἐοικός τι ψῆγμα προχεῖ. καὶ σωρὸς συνίσταται πρὸς τῇ ῥίζῃ. μετὰ δὲ ταῦτα ἀπολείβεταί τις ὑγρασία δεχομένη πῆξιν ῥᾳδίαν παραπλησίαν τῷ κόμμι. ταύτης δὲ τὸ μὲν ἐπὶ τὸ ψῆγμα πρὸς τῇ ῥίζῃ καταμιχθὲν, ἀναμίγνυται τούτῳ τε καὶ τῇ γῇ. πλὴν ὅσον τὸ μὲν ἐπιπολὺ συστὰν διαμένει καθαρόν. τὸ δ' ἐν τῇ ἐπιφανείᾳ τοῦ στελέχους καθ' ἣν ῥεῖ, πήττεται. καὶ τοῦτο καθαρόν. ποιοῦσι δὲ καὶ ἐκ τοῦ μὴ καθαροῦ, μίγμα ξυλομιγές τι καὶ γεωμιγές. εὐωδέστερον τοῦ καθαροῦ. τῇ δ' ἄλλῃ δυνάμει λειπόμενον. λανθάνει δὲ τοὺς πολλοὺς, ᾧ πλείστῳ χρῶνται θυμιάματι οἱ δεισιδαίμονες. ἐπαινεῖται καὶ ἡ σελγικὴ ἶρις, καὶ τὸ ἀπ' αὐτῆς ἄλειμμα. ἔχει δ' ὀλίγας προσβάσεις περὶ τὴν πόλιν, καὶ τὴν χώραν τὴν σελγαίων ὀρεινήν. κρημνῶν καὶ χαράδρων οὖσαν πλήρη. ἃς ποιοῦσιν ἄλλοι τε ποταμοὶ, καὶ ὁ εὐρυμέδων. καὶ ὁ κέστρος ἀπὸ τῶν σελγικῶν ὀρῶν εἰς τὴν παμφυλίαν ἐκπίπτοντες θάλατταν. γέφυραι δ' ἐπίκεινται ταῖς ὁδοῖς διὰ τὴν δρυμνότητα. οὔτε πρότερον, οὔθ' ὕστερον, οὐδ' ἅπαξ οἱ σελγεῖς ἐπ' ἄλλοις ἐγένοντο. ἀλλὰ τὴν μὲν ἄλλην χώραν ἀδεῶς ἐκαρποῦντο. ὑπὲρ δὲ τῆς κάτω τῆς τε ἐν τῇ παμφυλίᾳ καὶ τῆς ἐντὸς τοῦ ταύρου, διεμάχοντο πρὸς τοὺς βασιλέας ἀεί, πρὸς δὲ τοὺς ῥωμαίους ἐπὶ τακτοῖς τισὶ κατεῖχον τὴν χώραν. πρὸς ἀλέξανδρον δὲ πρεσβευσάμενοι δέχεσθαι τὰ προστάγματα εἶπον κατὰ φιλίαν. νῦν δ' ὑπήκοοι τελέως γεγόνασι. καὶ εἰσὶν ἐν τῇ ὑπὸ ἀμύντᾳ τεταγμένοι πρότερον. τοῖς δὲ βιθυνοῖς ὁμοροῦσι πρὸς νότον, ὡς ἔφην, οἱ περὶ τὸν ὄλυμπον τὸν μύσιον προσαγορευόμενοι μυσοί τε καὶ φρύγες. ἑκάτερον δὲ τὸ ἔθνος διττόν ἐστι. φρυγία τε γὰρ ἡ μὲν, καλεῖται μεγάλη. ἧς ὁ μίδας ἐβασίλευσε. καὶ ἧς μέρος οἱ γαλάται κατέσχον. ἡ δὲ, μικρὰ ἡ ἐφ' ἑλλησπόντῳ. καὶ ἡ περὶ τὸν ὄλυμπον. ἡ καὶ ἐπίκτητος λεγομένη. μυσία τε ὁμοίως. ἥ τε ὀλυμπηνὴ συνεχὴς οὖσα τῇ βιθυνίᾳ, καὶ τῇ ἐπικτήτῳ. ἣν ἔφη ἀρτεμίδωρος ἀπὸ τῶν πέραν ἴστρου μυσῶν ἀπῳκίσθαι. καὶ ἡ περὶ τὸν κάϊκον, καὶ τὴν περγαμηνὴν μέχρι τευθρανίας, καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ. οὕτω δ' ἐνήλλακται ταῦτα ἐν ἄλλοις, ὡς πολλάκις λέγομεν, ὥς τε καὶ τὴν περὶ τὸν σίπυλον, φρυγίαν οἱ παλαιοὶ καλοῦσιν, ἄδηλον εἴτε τῆς μεγάλης εἴτε τῆς μικρᾶς μέρος οὖσαν. ἡ καὶ τὸν τάνταλον φρύγα καὶ τὸν πέλοπα, καὶ τὴν νιόβην. ὁποτέρως δ' ἂν ἔχοι, ἥγε ἐπάλλαξις φανερά. ἡ γὰρ περγαμηνὴ καὶ ἡ ἐλαΐτις καθ' ἣν ὁ κάϊκος ἐκπίπτει, καὶ ἡ μεταξὺ τούτων τευθρανία, ἐν ᾗ τεύθρας καὶ ἡ τοῦ τηλέφου ἐκτροφὴ, ἀναμέσον ἐστὶ τοῦ τε ἑλλησπόντου, καὶ τῆς περὶ σίπυλον, καὶ μαγνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ χώραν. ὥσθ' ὅπερ ἔφην ἔργον διορίσαι χωρὶς τὰ μυσῶν, καὶ φρυγῶν ὁρίσματα. καὶ οἱ λυδοὶ καὶ οἱ μαίονες. οὓς ὅμηρος καλεῖ μῄονας ἐν συγχύσει πώς εἰσι, καὶ πρὸς τούτους καὶ πρὸς ἀλλήλους. ὅτι οἱ μὲν, τοὺς αὐτούς. οἱ δ' ἑτέρους φασί. πρὸς δὲ τούτοις, ὅτι τοὺς μυσοὺς, οἱ μὲν, θρᾷκας. οἱ δὲ, λυδοὺς, εἰρήκασι δὲ κατ'

αἰτίαν παλαιὰν ἱστοροῦντες. ἣν Ξάνθος ὁ Λυδὸς γράφει. καὶ Μενεκράτης ὁ Ἐλαΐτης. ἐτυμολογοῦντες, καὶ τὸ ὄνομα τὸ τῶν Μυσῶν. ὅτι τὴν ὀξύην οὕτως ὀνομάζουσιν οἱ Λυδοί. πολλὴ δ' ἡ ὀξύη κατὰ τὸν Ὄλυμπον. ὅπου ἐκτεθῆναι φασὶ τοὺς δεκατευθέντας. ἐκείνων δὲ ἀπογόνους εἶναι τοὺς ὕστερον Μυσούς. ἀπὸ τῆς ὀξύης οὕτω προσαγορευθέντας. μαρτυρεῖν δὲ καὶ τὴν διάλεκτον. μιξολύδιον γάρ πως ἐστὶ καὶ μιξοφρύγιον. τέως μὲν γὰρ οἰκεῖν αὐτοὺς περὶ τὸν Ὄλυμπον. τῶν δὲ Φρυγῶν ἐκ τῆς Θρᾴκης περαιωθέντων, ἑλόντων τε τὸν τῆς Τροίας ἄρχοντα, καὶ τῆς πλησίον γῆς. ἐκείνους μὲν ἐνταῦθα οἰκῆσαι. τοὺς δὲ Μυσοὺς περὶ τὰς τοῦ Καΐκου πηγὰς πλησίον Λυδῶν. συνεργεῖ δὲ πρὸς τὰς τοιαύτας μυθοποιΐας. ἥ τε σύγχυσις τῶν ἐνταῦθα ἐθνῶν. καὶ ἡ εὐδαιμονία τῆς χώρας τῆς ἐντὸς Ἅλυος. μάλιστα δὲ τῆς παραλίας δι' ἣν ἐπιθέτου ἐγένοντο αὐτῇ πολλαχόθεν, καὶ διαπαντὸς ἐκ τῆς περαίας. ἢ καὶ ἐπ' ἀλλήλους ἰόντων τῶν ἐγγύς. μάλιστα μὲν οὖν κατὰ τὰ Τρωϊκά. καὶ μετὰ ταῦτα γενέσθαι τὰς ἐφόδους καὶ τὰς μεταναστάσεις συνέβη. τῶν τε βαρβάρων ἅμα, καὶ τῶν Ἑλλήνων. ὁρμῇ τινι χρησαμένων πρὸς τὴν τῆς ἀλλοτρίας κατάκτησιν. ἀλλὰ καὶ πρὸ τῶν Τρωϊκῶν ἦν ταῦτα. τό τε γὰρ Πελασγῶν ἦν φῦλον, καὶ τῶν Καυκώνων καὶ Λελέγων. εἴρηται δ' ὅτι πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης ἐτύγχανε τὸ παλαιὸν πλανώμενα, ἅπερ ποιεῖ τοῖς Τρωσὶ συμμαχοῦντα ὁ ποιητής. οὐκ ἐκ τῆς περαίας. τά τε περὶ τῶν Φρυγῶν, καὶ τῶν Μυσῶν λεγόμενα, πρεσβύτερα τῶν Τρωϊκῶν ἐστιν. οἱ δὲ διττοὶ Λύκιοι τοῦ αὐτοῦ γένους ὑπόνοιαν παρέχουσιν. ἢ τῶν Τρωϊκῶν, ἢ τῶν πρὸς Καρίαν τοὺς ἑτέρους ἀποικησάντων. τάχα δὲ καὶ ἐπὶ τῶν Κιλίκων τὸ αὐτὸ συνέβη. διττοὶ γὰρ καὶ οὗτοι. οὐ μὴν ἔχομέν γε τοιαύτην λαβεῖν μαρτυρίαν. ὅτι καὶ πρὸ τῶν Τρωϊκῶν ἦσαν ἤδη οἱ νῦν Κίλικες. ὅ τε Τήλεφος ἐκ τῆς Ἀρκαδίας ἀφῖχθαι νομίζοιτ' ἂν μετὰ τῆς μητρός. γάμῳ δὲ τῷ ταύτης ἐξοικειωσάμενος τὸν ὑποδεξάμενον αὐτὸν Τεύθραντα. ἐνομίσθη τε ἐκείνου. καὶ παρέλαβε τὴν Μυσῶν ἀρχήν. καὶ οἱ Κᾶρες δὲ νησιῶται πρότερον ὄντες καὶ Λέλεγες ὥς φασιν, ἠπειρῶται γεγόνασι. προσλαβόντων Κρητῶν. οἳ καὶ τὴν Μίλητον ἔκτισαν. ἐκ τῆς Κρήτης λαβόντες Σαρπηδόνα κτίστην καὶ τοὺς Τερμίλας κατῴκησαν ἐν τῇ νῦν Λυκίᾳ. τούτους δ' ἀγαγεῖν ἀποίκους ἐκ Κρήτης Σαρπηδόνα. Μίνω καὶ Ῥαδαμάνθυος ἀδελφὸν ὄντα. καὶ ὀνομάσαι Τερμίλας τοὺς νῦν Μινύας, ὥς φησιν Ἡρόδοτος. ἔτι δὲ πρότερον Σολύμους, ἐπανελθόντα δὲ τὸν Πανδίονος Λύκωνα, ἀφ' ἑαυτοῦ προσαγορεῦσαι τοὺς αὐτοὺς Λυκίους. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος ἀποφαίνει τοὺς αὐτοὺς Σολύμους τε καὶ Λυκίους. ὁ δὲ ποιητὴς χωρίζει. Βελλεροφόντης γοῦν ὡρμημένος ἐκ τῆς Λυκίας,

» Σολύμοισι μαχέσατο κυδαλίμοισι.  
» Γείσανδρόν τε ὡσαύτως υἱὸν αὐτοῦ,  
» Ἄρης ὥς φησι μαρνάμενον Σολύμοισι κατέκτανε.

Καὶ τὸν Σαρπηδόνα δὲ ἐπιχώριόν τινα λέγει. ἀλλὰ τό γε ἆθλον προκεῖσθαι κοινὸν τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας ἧς λέγω τοῖς ἰσχύουσιν ἐκ πολλῶν βεβαιοῦται. καὶ μετὰ τὰ Τρωϊκὰ ὅπου, καὶ Ἀμαζόνες κατεθάρρησαν αὐτοῖς. ἐφ' ἃς ὅτε Πρίαμος στρατεῦσαι λέγεται, καὶ ὁ Βελλεροφόντης. πόλεις τε πάλαι. καὶ ὁμολογοῦνται ἐπώνυμοι αὐτῶν. ἐν δὲ τῷ Ἰλιακῷ πεδίῳ κολώνη τίς ἐστιν. ἣν οἱ ἄνδρες Βατίειαν κικλήσκουσιν.

» Ἀθάνατοι δέ τε σῆμα πολυσκάρθμοιο Μυρίνης.

Ἣν ἱστοροῦσι μίαν εἶναι τῶν Ἀμαζόνων. ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τεκμαιρόμενοι. εὐσκάρθμους γὰρ ἵππους λέγεσθαι διὰ τὸ τάχος, κἀκείνην οὖν πολύσκαρθμον, διὰ τὸ ἀπὸ τῆς ἡνιοχείας τάχος, καὶ ἡ Μύρινα οὖν ἐπώνυμος ταύτης λέγεται. καὶ αἱ ἐγγὺς δὲ νῆσοι ταὔτ' ἔπαθον διὰ τὴν ἀρετήν, ὧν Ῥόδος καὶ Κῶς. ὅτι πρὸ τῶν Τρωϊκῶν ἤδη ὑφ' Ἑλλήνων ᾠκοῦντο. καὶ ὑφ' Ὁμήρου σαφῶς ἐκμαρτυρεῖται. μετὰ δὲ τὰ Τρωϊκὰ αἵ τε τῶν Ἑλλήνων ἀποικίαι, καὶ αἱ Τρηρῶν, καὶ αἱ Κιμμερίων ἔφοδοι, καὶ Λυδῶν. καὶ μετὰ ταῦτα Περσῶν, καὶ Μακεδόνων, τὸ τελευταῖον Γαλατῶν, ἐτάραξαν πάντα, καὶ συνέχεαν. γέγονε δὲ ἡ ἀσάφεια, οὐ διὰ τὰς μεταβολὰς μόνον. ἀλλὰ καὶ διὰ τὰς τῶν συγγραφέων ἀνομολογίας. περὶ τῶν αὐτῶν οὐ τὰ αὐτὰ λεγόντων. τοὺς μὲν Τρῶας καλούντων Φρύγας καθάπερ οἱ Τραγικοί. τοὺς δὲ Λυκίους Κᾶρας. καὶ ἄλλους οὕτως. οἱ δὲ Τρῶες οὕτως ἐκ μικρῶν αὐξηθέντες, ὥς τε καὶ βασιλέας βασιλέων εἶναι παρέσχον. καὶ τῷ ποιητῇ λόγον τίνα χρὴ καλεῖν Τροίαν, καὶ τοῖς ἐξηγουμένοις ἐκεῖνον. λέγει γὰρ καὶ κοινῶς ἅπαντας Τρῶας τοὺς συμπολεμήσαντας αὐτοῖς. ὥσπερ καὶ Δαναοὺς. καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐναντίους. ἀλλ' οὐ δήπου Τροίαν ἐροῦμεν νὴ Δία, καὶ τὴν Παφλαγονίαν. οὐδὲ τὴν Καρίαν, ἢ τὴν ὅμορον αὐτῇ Λυκίαν. λέγω δ' ὅταν οὕτω φῇ.

» Τρῶες μὲν κλαγγῇ ἐνοπῇ τ' ἦσαν. Ἐκ δὲ τῶν ἐναντίων.  
» Οἱ δ' ἄρ' ἦσαν σιγῇ μένεα πνείοντες Ἀχαιοί.

Καὶ ἄλλως δὲ λέγει πολλαχῶς. ὅμως δὲ καίπερ τοιούτων ὄντων, πειρατέον διαιτῆσαι ἕκαστα εἰς δύναμιν. ὅτι δ' αὖ διαφῦτοι τῆς παλαιᾶς ἱστορίας, τοῦτο μὲν ἐατέον. οὐ γὰρ ἐνταῦθα τὸ τῆς γεωγραφίας ἔργον. τὰ δὲ νῦν ὄντα λεκτέον. Ἔστι τοίνυν ὄρη δύο. ὑπερκείμενα τῆς Προποντίδος ὅ τε Ὄλυμπος ὁ Μύσιος καὶ ἡ Ἴδη. τῷ μὲν οὖν Ὀλύμπῳ τὰ τῶν Βιθυνῶν ὑποπέπτωκε. τῆς δὲ Ἴδης μεταξὺ καὶ τῆς θαλάττης

ἡ φρυγία κεῖται. συνάπτουσα τῷ ὄρει. περὶ μὲν οὖν ταύτης ἐροῦμεν ὕστερον. καὶ τῶν συνεχῶν αὐτῇ πρὸς νότον. νῦν δὲ περὶ τῶν ὀλυμπηνῶν καὶ τῶν ἐφεξῆς μέχρι τοῦ ταύρου παραλλήλων τοῖς προειρημένοις λέγωμεν. ἔστι τοίνυν ὁ ὄλυμπος κύκλῳ μὲν εὖ συνοικούμενος. ἐν δὲ τοῖς ὕψεσι δρυμοὺς ἐξαισίους ἔχων. καὶ λῃστήρια δυναμένους ἐκτρέφειν. τόπους εὐερκεῖς. ἐν οἷς καὶ τύραννοι συνίστανται πολλάκις. οἱ δυνάμενοι συμμεῖναι πλεῖω χρόνον. καθάπερ κλέων ὁ καθ᾽ ἡμᾶς τῶν λῃστηρίων ἡγεμών. οὗτος δ᾽ ἦν μὲν ἐκ γόρδου κώμης. ἣν ὕστερον αὐξήσας ἐποίησε πόλιν. καὶ προσηγόρευσεν ἰουλιόπολιν. λῃστηρίῳ δ᾽ ἐχρῆτο καὶ ὁρμητηρίῳ κατ᾽ ἀρχὰς, τῷ καρτερωτάτῳ τῶν χωρίων ὄνομα καλλυδίῳ. ὑπῆρξε δ᾽ ἀντωνίῳ μὲν χρήσιμος. ἐπελθὼν ἐπὶ τοὺς ἀργυρολογοῦντας λαβιήνῳ. καθ᾽ ὃν χρόνον ἐκεῖνος τὴν ἀσίαν κατεῖχε. καὶ κωλύσας τὰς παρασκευάς. ἐν δὲ τοῖς ἀκτιακοῖς ἀποστὰς ἀντωνίου, τοῖς καίσαρος προσέθετο στρατηγοῖς. καὶ ἐτιμήθη πλέον, ἢ κατ᾽ ἀξίαν. προσλαβὼν τοῖς παρ᾽ ἀντωνίου δοθεῖσι. καὶ τὰ παρὰ τοῦ καίσαρος. ὥστ᾽ ἀντὶ λῃστοῦ δυνάστου περιέθετο σχῆμα. ἱερεὺς μὲν ὢν τοῦ ἀβρεττηνοῦ διὸς μυσίου θεοῦ. μέρος δ᾽ ἔχων ὑπήκοον τῆς μορηνῆς. μυσία δέ ἐστι καὶ αὕτη καθάπερ ἡ βρεττηνή. λαβὼν δὲ ὕστατα καὶ τὴν ἐν τῷ πόντῳ τῶν κομάνων ἱερωσύνην, εἰς ἣν κατελθὼν, ἐντὸς μηνιαίου χρόνου κατέστρεψε τὸν βίον. νόσος δ᾽ ἐξήγαγεν αὐτὸν ὀξεῖα. εἴτ᾽ ἄλλως ἐπιπεσοῦσα ἐκ τῆς ἄδην πλησμονῆς, εἴθ᾽ ὡς ἔφασαν οἱ περὶ τὸ ἱερὸν κατὰ μῆνιν τῆς θεοῦ. ἐν γὰρ τῷ περιβόλῳ τοῦ τεμένους, ἡ οἴκησίς ἐστιν, ἥ τε τοῦ ἱερέως, καὶ τῆς ἱερείας. τὸ δὲ τέμενος χωρὶς τῆς ἄλλης ἁγιστείας, διαφανέστατα τῆς τῶν ὑείων κρεῶν βρώσεως καθαρεύει. ὅπου γε καὶ ἡ ὅλη πόλις οὐδ᾽ εἰσάγεται εἰς αὐτὴν ὗς. ὁ δ᾽ ἐν τοῖς πρώτοις τὸ λῃστρικὸν ἦθος ἐπεδείξατο εὐθὺς κατὰ τὴν πρώτην εἴσοδον, τῇ παραβάσει τούτου τοῦ ἔθους. ὥσπερ οὐχ ἱερεὺς εἰσεληλυθώς. ἀλλὰ διαφθορεὺς τῶν ἱερῶν. ὁ μὲν δὴ ὄλυμπος τοιόσδε. περιοικεῖται δὲ πρὸς ἄρκτον μὲν ὑπὸ τῶν βιθυνῶν, καὶ μυγδόνων. καὶ δολιόνων τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι μυσοὶ καὶ ἐπίκτητοι. δολίονας μὲν οὖν μάλιστα καλοῦσι τοὺς περὶ κύζικον ἀπὸ αἰσήπου ἕως ῥυνδάκου, καὶ τῆς δασκυλίτιδος λίμνης. μυγδόνας δὲ τοὺς ἐφεξῆς τούτοις. μέχρι τῆς μυρλιανῶν χώρας. ὑπέρκεινται δὲ τῆς δασκυλίτιδος ἄλλαι δύο λίμναι μεγάλαι. ἥ τε ἀπολλωνιάτις, ἥ τε μιλητοπολίτις. πρὸς μὲν οὖν τῇ δασκυλίτιδι δασκύλιον πόλις. πρὸς δὲ τῇ μιλητοπολίτιδι μιλητόπολις. πρὸς δὲ τῇ τρίτῃ ἀπολλωνία ἐπὶ ῥυνδακῷ λεγομένη. τὰ πλεῖστα δὲ τούτων ἐστὶ κυζικηνῶν νυνί. ἔστι δὲ νῆσος ἐν τῇ προποντίδι ἡ κύζικος συναπτομένη γεφύραις δυσὶ πρὸς τὴν ἤπειρον. ἀρετῇ μὲν κρατίστη. μέγεθος δὲ ὅσον πεντακοσίων σταδίων τὴν περίμετρον. ἔχει δὲ ὁμώνυμον πόλιν πρὸς αὐταῖς ταῖς γεφύραις. καὶ λιμένας δύο κλειστούς. καὶ νεωσοίκους πλείους τῶν διακοσίων. τῆς δὲ πόλεως τὸ μὲν, ἐστὶν ἐν ἐπιπέδῳ. τὸ δὲ, πρὸς ὄρει. καλεῖται δ᾽ ἄρκτων ὄρος. ὑπέρκειται δ᾽ ἄλλο δίνδυμον μονοφυὲς ἱερόν. ἔχον τῆς δινδυμήνης μητρὸς τῶν θεῶν, ἵδρυμα τῶν ἀργοναυτῶν. ἔστι δ᾽ ἐνάμιλλος ταῖς πρώταις τῶν κατὰ τὴν ἀσίαν ἡ πόλις. μεγέθει τε καὶ κάλλει, καὶ εὐνομίᾳ πρός τε εἰρήνην καὶ πόλεμον, ἔοικέ τε παραπλησίῳ τύπῳ κοσμεῖσθαι, ὥσπερ ἡ τῶν ῥοδίων. καὶ μασσαλιωτῶν, καὶ καρχηδονίων τῶν πάλαι. τὰ μὲν οὖν πολλὰ ἐῶ. τρεῖς δ᾽ ἀρχιτέκτονας τοὺς ἐπιμελουμένους οἰκοδομημάτων τε δημοσίων, καὶ ὀργάνων. τρεῖς δὲ καὶ θησαυροὺς κέκτηται, τὸν μὲν, ὅπλων. τὸν δ᾽ ὀργάνων. τὸν δὲ, σίτου. ποιεῖ δὲ τὸν σῖτον ἄσηπτον ἡ χαλκιδικὴ μιγνυμένη. ἐπεδείξαντο δὲ τὴν ἐκ τῆς παρασκευῆς ταύτης ὠφέλειαν ἐν τῷ μιθριδατικῷ πολέμῳ. ἐπελθόντος γὰρ αὐτοῖς ἀδοκήτως τοῦ βασιλέως πεντεκαίδεκα μυριάσι, καὶ ἵππῳ πολλῇ, καὶ καταλαβόντος τὸ ἀντικείμενον ὄρος ὃ καλοῦσιν ἀδρασείας, καὶ τὸ προάστειον, ἔπειτα καὶ διάραντος εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς πόλεως αὐχένα, καὶ προσμαχομένου πεζῇ τε, καὶ κατὰ θάλατταν τετρακοσίαις ναυσὶν ἀντέσχον πρὸς ἅπαντα οἱ κυζικηνοί. ὥς τε καὶ ἐγγὺς ἦλθον τοῦ ζώγρια λαβεῖν τὸν βασιλέα ἐν τῇ διώρυγι ἀντιδιορύττοντας. ἀλλ᾽ ἔφθη φυλαξάμενος, καὶ ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ἔξω τοῦ ὀρύγματος. ὀψὲ δὲ ἴσχυσεν εἰς πέμψαι τινὰς νύκτωρ ἐπικούρους ὁ τῶν ῥωμαίων στρατηγὸς λεύκουλλος. ὤνησε δὲ καὶ λιμὸς τῷ τοσούτῳ πλήθει τῆς στρατείας ἐπιπεσών. ὃν οὐ προείδετο ὁ βασιλεὺς, ὥστ᾽ ἀπῆλθε πολλοὺς ἀποβαλών, ῥωμαῖοι δ᾽ ἐτίμησαν τὴν πόλιν. καὶ ἔστιν ἐλευθέρα μέχρι νῦν καὶ χώραν ἔχει πολλήν. τὴν μὲν, ἐκ παλαιοῦ. τὴν δὲ, τῶν ῥωμαίων προσθέντων. καὶ γὰρ τῆς τρωάδος ἔχουσι τὰ πέραν τοῦ αἰσήπου. τὰ περὶ τὴν ζέλειαν. καὶ τὸ τῆς ἀδρασείας πεδίον. καὶ τῆς δασκυλίτιδος λίμνης, τὰ μὲν, ἔχουσιν ἐκεῖνοι. τὰ δὲ, βυζάντιοι. πρὸς δὲ τῇ δολιονίδι, καὶ τῇ μυγδονίδι νέμονται πολλὴν, μέχρι τῆς μιλητοπολίτιδος λίμνης, καὶ τῆς ἀπολλωνίτιδος αὐτῆς. διὰ τῶν χωρίων, καὶ ὁ ῥυνδακὸς ῥεῖ ποταμός. τὰς ἀρχὰς ἔχων ἐκ τῆς ἀζανίτιδος. προσλαβὼν δὲ καὶ ἐκ τῆς ἀβρεττηνῆς μυσίας ἄλλους τε καὶ μέκεστον ἀπὸ ἀγκύρας τῆς ἀβασίτιδος ἐκδίδωσιν εἰς τὴν προποντίδα κατὰ βέσβικον νῆσον. ἐν ταύτῃ δὴ τῇ νήσῳ τῶν κυζικηνῶν ὄρος ἐστὶν εὔδενδρον ἀρτάκη. καὶ νησίον ὁμώνυμον πρόκειται τούτου. καὶ πλησίον ἀκρωτήριον μέλανος καλούμενον ἐν παράπλῳ τοῖς εἰς πρίαπον κομιζομένοις ἐκ τῆς κυζίκου. τῆς δ᾽ ἐπικτήτου φρυγίας ἀζανοί τέ εἰσι, καὶ νακόλεια. καὶ κοτυάειον. καὶ μιδάειον. καὶ δορύλαιον πόλεις. καὶ κάδοι. τοὺς δὲ κάδους ἔνιοι τῆς μυσίας φασίν. ἡ δὲ μυσία κατὰ τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς ὀλυμπηνῆς ἐπὶ τὴν περγαμηνὴν καθήκει, καὶ τὸ καΐκου λεγό-

μενον πεδίον. ὥστε μεταξὺ κεῖσθαι τῆς τε Ἴδης, καὶ τῆς κατακεκαυμένης. ἣν οἱ μὲν, μυσίαν οἱ δὲ, μῃο-
νίαν φασίν. ὑπὲρ δὲ τῆς ἐπικτήτου πρὸς νότον ἐστὶν ἡ μεγάλη φρυγία. λιποῦσα ἐν ἀριστερᾷ τὴν πεσ-
σινοῦντα, καὶ τὰ περὶ ὀρκαορυκοὺς καὶ λυκαονίαν. ἐν δεξιᾷ δὲ μαίονας, καὶ λυδοὺς καὶ κάρας.
ἐν ᾗ ἐστὶν ἥτε παρώρειος λεγομένη φρυγία. καὶ ἡ πρὸς πισιδίαν. καὶ τὰ περὶ ἀμόριον καὶ εὐμενίαν, καὶ
σύναδα. εἶτα ἀπάμεια ἡ κιβωτὸς λεγομένη, καὶ λαοδίκεια. αἵπερ εἰσὶ μέγισται τῶν κατὰ τὴν φρυ-
γίαν πόλεων. περίκειται δὲ ταύταις πολίσματα καὶ ἀφροδισιάς. κολοσσαί. θεμισώνιον. σαναός. μη-
τρόπολις ἀπολλωνιάς. ἔτι δὲ ἀπωτέρω τούτων πέλται. τάβεαι. εὐκαρπία. λυσιάς. ἡ μὲν οὖν παρω-
ρεία, ὀρεινήν τινα ἔχει ῥάχιν. ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς ἐκτεινομένην ἐπὶ δύσιν. ταύτῃ δ' ἑκατέρωθεν ὑποπέ-
πτωκέ τι πεδίον μέγα. καὶ πόλις πλησίον αὐτῆς. πρὸς ἄρκτον μὲν φιλομήλιον. ἐκ θατέρου δὲ μέρους
ἀντιόχεια ἡ πρὸς πισιδίᾳ καλουμένη. ἡ μὲν, ἐν πεδίῳ κειμένη. ἡ δ' ἐπὶ λόφου. ἔχουσα ἀποικίαν ῥωμαί-
ων. ταύτην δ' ᾤκισαν μάγνητες οἱ πρὸς μαιάνδρῳ. ῥωμαῖοι δ' ἠλευθέρωσαν τῶν βασιλέων, ἡνίκα τὴν
ἄλλην ἀσίαν εὐμένει παρέδοσαν τὴν ἐντὸς τοῦ ταύρου. ἦν δὲ ἐνταῦθα, καὶ ἱερωσύνη τις μηνὸς ἀρκαίου.
πλῆθος ἔχουσα ἱεροδούλων, καὶ χωρίων ἱερῶν. κατελύθη δὲ μετὰ τὴν ἀμύντου τελευτὴν ὑπὸ τῶν
πεμφθέντων ἐπὶ τὴν ἐκείνου κληρονομίαν. σύναδα δ' ἐστὶν οὐ μεγάλη πόλις. πρόκειται δ' αὐτῇ ἐλαιό-
φυτον πεδίον ὅσον ἑξήκοντα σταδίων. ἐπέκεινα δ' ἐστὶ δοκιμία κώμη. καὶ λατόμιον τοῦ συναδικοῦ λί-
θου, οὕτω μὲν ῥωμαῖοι καλοῦσιν. οἱ δ' ἐπιχώριοι δοκιμίτην. καὶ δοκιμαῖον. κατ' ἀρχὰς μὲν μικρὰς βώ-
λους ἐκδιδόντος τοῦ μετάλλου. διὰ δὲ τὴν νυνὶ πολυτέλειαν τῶν ῥωμαίων, κίονες ἐξαιροῦνται μο-
νόλιθοι μεγάλοι. πλησιάζοντες τῷ ἀλαβαστρίτῃ λίθῳ κατὰ τὴν ποικιλίαν. ὥστε καίπερ πολλῆς οὔ-
σης τῆς ἐπὶ θάλατταν ἀγωγῆς τῶν τηλικούτων φορτίων, ὅμως καὶ κίονες καὶ πλάκες εἰς ῥώμην κο-
μίζονται θαυμασταὶ κατὰ τὸ μέγεθος καὶ κάλλος. ἀπάμεια δ' ἐστὶν ἐμπορεῖον μέγα τῆς ἰδίως λεγομέ-
νης ἀσίας. δευτερεῦον μετὰ τὴν ἔφεσον. αὕτη γὰρ καὶ τῶν ἀπὸ τῆς ἰταλίας, καὶ τῆς ἑλλάδος ὑπο-
δοχεῖον κοινόν ἐστιν. ἵδρυται δὲ ἡ ἀπάμεια ἐπὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ μαρσύου ποταμοῦ. καὶ ῥεῖ διὰ μέσης τῆς
πόλεως ὁ ποταμὸς, τὰς ἀρχὰς ἀπὸ τῆς πόλεως ἔχων. κατενεχθεὶς δ' ἐπὶ τὸ προάστειον σφοδρῷ, καὶ κα-
ταφερεῖ τῷ ῥεύματι, συμβάλλει πρὸς τὸν μαίανδρον. προσειληφότα, καὶ ἄλλον ποταμὸν ὀργᾶν.
δι' ὁμαλοῦ φερόμενον πρᾶον, καὶ μαλακόν. ἐντεῦθεν δ' ἤδη μέγας γενόμενος μαίανδρος τέως μὲν διὰ
τῆς φρυγίας φέρεται. ἔπειτα διορίζει τὴν καρίαν, καὶ τὴν λυδίαν, κατὰ τὸ μαιάνδρου καλού-
μενον πεδίον. σκολιὸς ὢν εἰς ὑπερβολήν. ὥστε ἐξ ἐκείνου τὰς σκολιότητας ἁπάσας μαιάνδρους
καλεῖσθαι. τελευτῶν δὲ κατὰ καρίαν αὐτὴν, διαιρεῖ τὴν ὑπὸ τῶν ἰώνων νῦν κατεχομένην. καὶ μετα-
ξὺ μιλήτου, καὶ πριήνης, ποιεῖται τὰς ἐκβολάς. ἄρχεται δὲ ἀπὸ κελαινῶν λόφου τινός. ἐν ᾧ πόλις
ἦν ὁμώνυμος τῷ λόφῳ. ἐντεῦθεν δ' ἀναστήσας τοὺς ἀνθρώπους ὁ σωτὴρ ἀντίοχος εἰς τὴν νῦν ἀπά-
μειαν τῆς μητρὸς ἐπώνυμον τὴν πόλιν ἐπέδειξεν ἀπάμας. ἡ θυγάτηρ μὲν ἦν ἀρταβάζου. δεχομένη
δ' ἐτύγχανε πρὸς γάμον σελεύκῳ τῷ νικάτορι. ἐνταῦθα δὴ μυθεύεται τὰ περὶ τὸν ὄλυμπον, καὶ τὸν
μαρσύαν. καὶ τὴν ἔριν ἣν ἤρισεν ὁ μαρσύας πρὸς ἀπόλλωνα. ὑπέρκειται δὲ καὶ λίμνη φύουσα κάλα-
μον, τὸν εἰς τὰς γλώττας τῶν αὐλῶν ἐπιτήδειον. ἐξ ἧς ὑπολείβεσθαι φασὶ τὰς πηγὰς ἀμφοτέρας.
τήν τε τοῦ μαρσύου, καὶ τὴν τοῦ μαιάνδρου. ἡ δὲ λαοδίκεια μικρὰ πρότερον οὖσα, αὔξησιν ἔλαβεν ἐφ'
ἡμῶν, καὶ τῶν ἡμετέρων πατέρων. καίτοι κακωθεῖσα ἐκ πολιορκίας ἐπὶ μιθριδάτου τοῦ εὐπάτο-
ρος. ἀλλ' ἡ τῆς χώρας ἀρετή. καὶ τῶν πολιτῶν τινὲς εὐτυχήσαντες, μεγάλην ἐποίησαν αὐτήν. ἱέρων
μὲν πρότερον ὡς πλειόνων, ἢ δισχιλίων ταλάντων κληρονομίαν κατέλιπε τῷ δήμῳ, πολλοῖς ἀνα-
θήμασιν ἐκόσμησε τὴν πόλιν. ζήνων δὲ ὁ ῥήτωρ ὕστερον, καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ πολέμων. ὃς καὶ βασιλείας ἠξιώ-
θη διὰ τὰς ἀνδραγαθίας ὑπὸ ἀντωνίου μὲν, πρότερον ὑπὸ καίσαρος δὲ τοῦ σεβαστοῦ μετὰ ταῦτα. φέ-
ρει δ' ὁ περὶ τὴν λαοδίκειαν τόπος προβάτων ἀρετάς. οὐκ εἰς μαλακότητας μόνον τῶν ἐρίων, ᾗ καὶ τῶν
μιλησίων διαφέρει. ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν κοραξὴν χρόαν. ὥστε καὶ προσοδεύονται λαμπρῶς ἀπ' αὐτῶν,
ὥσπερ καὶ οἱ κολοσσηνοὶ ἀπὸ τοῦ ὁμωνύμου χρώματος πλησίον οἰκοῦντες. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ κάπρος, καὶ
ὁ λύκος συμβάλλει τῷ μαιάνδρῳ ποταμῷ. ποταμὸς εὐμεγέθης. ἀφ' οὗ καὶ ἡ πρὸς τῷ λύκῳ λαοδίκεια
λέγεται. ὑπέρκειται δὲ τῆς πόλεως ὄρος κάδμος. ἐξ οὗ καὶ ὁ λύκος ῥεῖ. καὶ ἄλλος ὁμώνυμος τῷ ὄρει. τὸ πλέον
δ' οὗτος ὑπὸ γῆς ῥυεὶς, εἶτ' ἀνακύψας, συνέπεσεν εἰς ταυτὸ τοῖς ἄλλοις ποταμοῖς. ἐμφαίνων ἅμα τὸ πολύτρη-
τον τῆς χώρας, καὶ τὸ εὔσειστον. εἰ γάρ τι ἄλλο, καὶ ἡ λαοδίκεια εὔσειστος, καὶ τῆς πλησιοχώρου. κάρουρα δὲ ὅριον ἐστὶ
τῆς φρυγίας καὶ τῆς καρίας κατάρουρα. κώμη δ' ἐστὶν αὕτη πανδοχεῖα ἔχουσα καὶ ζεστῶν ὑδάτων ἐκβο-
λάς. τὰς μὲν, ἐν τῷ ποταμῷ μαιάνδρῳ. τὰς δ' ὑπὲρ τοῦ χείλους. καὶ δή ποτέ φασι πορνοβοσκὸν αὐ-
λισθέντα ἐν τοῖς πανδοχείοις σὺν πολλῷ πλήθει γυναικῶν. νύκτωρ γενομένου σεισμοῦ, συναφανισθῆ-
ναι πάσας. σχεδὸν δέ τοι εὔσειστός ἐστι καὶ πᾶσα ἡ περὶ τὸν μαίανδρον χώρα. καὶ ὑπόνομος πυρί τε καὶ
ὕδατι μέχρι τῆς μεσογαίας. διατέταται γὰρ ἀπὸ τῶν πεδίων ἀρξαμένη πᾶσα ἡ τοιαύτη κατασκευὴ
τῆς χώρας εἰς τὰ χαρώνεια. τό τε ἐν ἱερᾷ πόλει. καὶ τὰ ἐν χαράκοις τῆς νυσαΐδος, καὶ τὸ περὶ μαγνη-

σθαι καὶ μυοῦνται. εὔθρυπτός τε γάρ ἐστιν ἡ γῆ καὶ ψαθυρὰ πλήρης τε ἁλμυρίδων. καὶ εὐεκπύρωτός ἐστι. τάχα δὲ καὶ ὁ μαίανδρος διὰ τοῦτο σκολιὸς, ὅτι πολλὰς μεταπτώσεις λαμβάνει τὸ ῥεῖθρον. καὶ πολλὴν χοῦν καταφέρων ἄλλοτ᾽ ἄλλῳ μέρει τῶν αἰγιαλῶν προστίθησι. τὸ δὲ πρὸς τὸ πέλαγος βιασάμενος ἐξωθεῖ. καὶ δὴ καὶ τὴν πριήνην πρότερον ἐπὶ θαλάττῃ οὖσαν, μεσόγαιαν πεποίηκε τετταράκοντα σταδίων, προσχώματι. καὶ ἡ κατακεκαυμένη δὲ ἡ ὑπὸ λυδῶν καὶ μυσῶν κατέχεται, διὰ τοιαῦτά τινα τῆς προσηγορίας τετύχηκε ταύτης. ἔτι φιλαδέλφεια ἡ πρὸς αὐτῇ πόλις, οὐδὲ τοὺς τοίχους ἔχει πιστούς. ἀλλὰ καθημέραν τρόπον τινὰ σαλεύονται καὶ διΐστανται. διατελοῦσι δὲ προσέχοντες τοῖς πάθεσι τῆς γῆς καὶ ἀρχιτεκτονοῦντες πρὸς αὐτήν. καὶ τῶν ἄλλων δὲ πόλεων. ἀπάμεια μὲν καὶ πρὸ τῆς μιθριδάτου στρατείας ἐσείσθη πολλάκις. καὶ ἔδωκεν ἐπελθὼν ὁ βασιλεὺς ἑκατὸν τάλαντα εἰς ἐπανόρθωσιν. ὁρῶν ἀνατετραμμένην τὴν πόλιν. λέγεται δὲ καὶ ἐπ᾽ ἀλεξάνδρου παραπλήσια συμβῆναι. διόπερ εἰκός ἐστι καὶ τὸν ποσειδῶνα τιμᾶσθαι παρ᾽ αὐτοῖς. καίπερ μεσογαίοις οὖσι. καὶ ἀπὸ κελαινοῦ τοῦ ποσειδῶνος. ἐκ κελαινοῦ μιᾶς τῶν δαναΐδων γενομένου κεκλῆσθαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον, ἢ διὰ τῶν λίθων καὶ τὴν ἀπὸ τῶν ἐκπυρώσεων μελανίαν. καὶ τὰ περὶ σίπυλον δὲ καὶ τὴν ἀναστροφὴν αὐτοῦ, μῦθον οὐ δεῖ τίθεσθαι. καὶ γὰρ νῦν τὴν μαγνησίαν τὴν ὑπ᾽ αὐτῷ κατέβαλον σεισμοί. ἡνίκα καὶ σάρδεις καὶ τῶν ἄλλων τὰς ἐπιφανεστάτας κατὰ πολλὰ μέρη διελυμήνατο. ἐπηνώρθωσε δ᾽ ὁ ἡγεμὼν χρήματα ἐπιδούς, καθάπερ καὶ πρότερον ἐπὶ τῆς γενομένης συμφορᾶς τραλλιανοῖς, ἡνίκα τὸ γυμνάσιον καὶ ἄλλα μέρη συνέπεσεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ τούτοις καὶ λαοδικεῦσιν. ἀκούειν δ᾽ ἐστὶ καὶ τῶν παλαιῶν συγγραφέων. οἷά φησιν ὁ τὰ λύδια συγγράψας ξάνθος διηγούμενος. οἷαι μεταβολαὶ κατέσχον πολλάκις τὴν χώραν ταύτην. ὧν ἐμνήσθημέν που καὶ ἐν τοῖς πρόσθεν. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ τὸν τυφῶνα πάθη ἐνταῦθα μυθεύουσι καὶ τοὺς ἀρίμους. καὶ τὴν κατακεκαυμένην ταύτην εἶναί φασιν. οὐκ ὀκνοῦσι δὲ καὶ τὰ μεταξὺ μαιάνδρου καὶ λυδῶν ἅπαντ᾽ ὑπονοεῖν ταῦτα. καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν λιμνῶν καὶ ποταμῶν, καὶ τοὺς πολλαχοῦ κευθμῶνας τῆς γῆς. ἡ δὲ μεταξὺ λαοδικείας καὶ ἀπαμείας λίμνη, καὶ βορβορώδη καὶ ὑπόνομον τὴν ἀποφορὰν ἔχει πελαγία οὖσα. φασὶ δὲ καὶ δίκας εἶναι τῷ μαιάνδρῳ μεταφέροντι τὰς χώρας ὅταν περικρουσθῶσιν οἱ ἀγκῶνες. ἁλόντες δὲ τὰς ζημίας ἐκ τῶν πορθμικῶν διαλύεσθαι τελῶν, μεταξὺ δὲ τῆς λαοδικείας καὶ τῶν καρούρων, ἱερόν ἐστι μηνὸς κάρου καλούμενον. τιμώμενον ἀξιολόγως. συνέστηκε δὲ καθ᾽ ἡμᾶς διδασκαλεῖον ἡροφιλείων ἰατρῶν μέγα ὑπὸ ζεύξιδος. καὶ μετὰ ταῦτα ἀλεξάνδρου τοῦ φιλαλήθους. καθάπερ ἐπὶ τῶν πατέρων τῶν ἡμετέρων ἐν σμύρνῃ, τὸ τῶν ἐρασιστρατίων ὑπὸ ἱκεσίου. νῦν δ᾽ οὐχ ὁμοίως τι συμβαίνει. λέγεται δέ τινα φῦλα φρύγια οὐδαμοῦ δεικνύμενα ὥσπερ οἱ βερέκυντες. καὶ ἀλκμὰν λέγει.

» Φρύγιον ηὔλησε μέλος τὸ κερβήσιον.

Καὶ βοθυνός τις λέγεται κερβήσιος ἔχων ὀλεθρίους ἀποφοράς. ἀλλ᾽ οὗτός γε δείκνυται. οἱ δ᾽ ἄνθρωποι οὐκέθ᾽ οὕτω λέγονται. αἰσχύλος δὲ συγχεῖ ἐν τῇ νιόβῃ. φησὶ γὰρ, ἐκείνη μνησθήσεσθαι τῶν περὶ τάνταλον.

» Οἷς ἐν ἰδαίῳ πάγῳ διὸς πατρῴου βωμός ἐστι. Καὶ πάλιν

» Σίπυλον ἰδαίαν ἀνὰ χθόνα.

Καὶ ὁ τάνταλος λέγει.

» Σπείρω δ᾽ ἄρουραν δώδεχ᾽ ἡμερῶν ὁδόν.

» Βερέκυντα χῶρον. ἔνθ᾽ ἀδραστείας ἕδος.

» Ἴδης τε μυκηθμοῖσι, καὶ βρυχήμασιν βρέμουσι μήλων.

» Γαῖ᾽ δ᾽ ὀρέχθει πέδον.

ΤΕΛΟΣ ΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ ΤΩΝ ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ.

## ὙΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ͂ ΤΡΙΣΚΑΙΔΕΚΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

Τὸ τρισκαιδέκατον περὶ τῆς ἀσίας· τὴν ἀπὸ τῆς προποντίδος καί ποθεν ἀπὸ τῆς κυζίκου ἀρχομένην· καὶ ἐφεξῆς τὴν ταύτῃ παραλίαν πᾶσαν· καὶ ἅτινες νῆσοι ὑπάρχουσιν. ἐγχρονίζει δὲ μάλιστα τῇ τροίᾳ εἰ καὶ ἔρημος, διὰ τὸ ἐπίσημον αὐτῆς, καὶ πολυθρύλητον ἐκ τοῦ πολέμου.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩ͂Ν ΒΙΒΛΙΟΝ ΤΡΙΣΚΑΙΔΕΚΑΤΟΝ.

Μέχρι μὲν δεῦρο, ἀφωρίσθω τὰ περὶ τῆς φρυγίας. ἐπανιόντες δὲ πάλιν ἐπὶ τὴν προποντίδα, καὶ τὴν ἐφεξῆς τῷ αἰσήπῳ παραλίαν, τὴν αὐτὴν τῆς περιοδείας τάξιν ἀποδώσομεν. ἔστι δὲ τρῳὰς πρώτη τῆς παραλίας ταύτης. ἧς τὸ πολυθρύλητον. καὶ τὸ ἐν ἐρειπίοις, καὶ ἐν ἐρημίᾳ λειπομένοις, ὅμως πολυλογίαν οὐ τὴν τυχοῦσαν παρέχει τῇ γραφῇ. πρὸς τοῦτο δὲ συγγνώμης δεῖ καὶ παρακλήσεως. ὅπως τὴν αἰτίαν τοῦ μήκους μὴ ἡμῖν μᾶλλον ἀνατιθῶσιν οἱ ἐντυγχάνοντες, ἢ τοῖς σφόδρα ποθοῦσι τὴν τῶν ἐνδόξων, καὶ παλαιῶν γνῶσιν. προσλαμβάνει δὲ τῷ μήκει καὶ τὸ πλῆθος τῶν ἐποικησάντων τὴν χώραν ἑλλήνων τε καὶ βαρβάρων. καὶ οἱ συγγραφεῖς οὐ τὰ αὐτὰ γράφοντες περὶ τῶν αὐτῶν. οὐδὲ σαφῶς πάντα. ὧν ἐν τοῖς πρώτοις ἐστὶν ὅμηρος. εἰκάζειν περὶ τῶν πλείστων παρέχων. δεῖ δὲ καὶ τὰ τούτου διαιτᾶν, καὶ τὰ τῶν ἄλλων. ὑπογράψαντας πρότερον ἐν κεφαλαίῳ τὴν τῶν τόπων φύσιν. ἀπὸ δὲ τῆς κυζικηνῆς καὶ τῶν περὶ αἴσηπον τόπων, καὶ γραικὸν μέχρι ἀβύδου, καὶ σηστοῦ τὴν τῆς προποντίδος παραλίαν εἶναι συμβαίνει. ἀπὸ δὲ ἀβύδου μέχρι λεκτοῦ, τὰ περὶ ἴλιον, καὶ τένεδον καὶ ἀλεξάνδρειαν τὴν τρῳάδα, πάντων δὴ τούτων ὑπέρκειται ἡ ἴδη τὸ ὄρος. μέχρι λεκτοῦ καθήκουσα. ἀπὸ δὲ λεκτοῦ μέχρι καΐκου ποταμοῦ καὶ τῶν κανῶν λεγομένων, ἐστὶ τὰ περὶ ἄσσον, καὶ ἀδραμύττιον, καὶ ἀταρνέα καὶ πιτάνην. καὶ τὸν ἐλαϊτικὸν κόλπον. οἷς πᾶσιν ἀντιπαρήκει ἡ τῶν λεσβίων νῆσος. εἶθ' ἑξῆς τὰ περὶ κύμην. μέχρις ἕρμου καὶ φωκαίας. ἥπερ ἀρχὴ μὲν τῆς ἰωνίας ἐστί. πέρας δὲ τῆς αἰολίδος. τοιούτων δὲ τῶν τόπων ὄντων, ὁ μὲν ποιητὴς, ἀπὸ τῶν περὶ αἴσηπον τόπων, καὶ τῶν περὶ τὴν νῦν κυζικηνὴν χώραν, ὑπαγορεύει μάλιστα τοὺς τρῶας ἄρξαι, μέχρι τοῦ καΐκου ποταμοῦ διῃρημένους κατὰ δυναστείας εἰς ὀκτὼ μερίδας, ἢ καὶ ἐννέα. τὸ δὲ τῶν ἄλλων ἐπικούρων πλῆθος, ἐν τοῖς συμμάχοις διαριθμεῖται. οἱ δ' ὕστερον τοὺς ὅρους αὐτοὺς λέγουσι. καὶ τοῖς ὀνόμασι χρῶνται διηλλαγμένως, διαιρέσεις νέμοντες πλείους. μάλιστα δὲ αἱ τῶν ἑλλήνων ἀποικίαι παρέχουσι λόγον. ἧττον μὲν ἡ ἰωνική. πλεῖον γὰρ διέστηκε τῆς τρῳάδος. ἡ δὲ τῶν αἰολέων παντάπασι. καθ' ὅλην γὰρ ἐσκεδάσθη ἀπὸ τῆς κυζικηνῆς μέχρι τοῦ καΐκου. καὶ ἐπέλαβεν ἔτι πλέον τὴν μεταξὺ τοῦ καΐκου καὶ τοῦ ἕρμου ποταμοῦ. τέτρασι γὰρ δὴ γενεαῖς πρεσβυτέραν φασὶ τὴν αἰολικὴν ἀποικίαν τῆς ἰωνικῆς. διατριβὰς δὲ λαβεῖν καὶ χρόνους μακροτέρους, ὀρέστην μὲν γὰρ ἄρξαι τοῦ στόλου. τούτου δ' ἐν ἀρκαδίᾳ τελευτήσαντος τὸν βίον, διαδέξασθαι τὸν υἱὸν αὐτοῦ πένθιλον, καὶ προελθεῖν μέχρι θρᾴκης. ἑξήκοντα ἔτεσι τῶν τρωικῶν ὕστερον, ὑπ' αὐτὴν τὴν τῶν ἡρακλειδῶν εἰς πελοπόννησον κάθοδον. εἶτ' ἀρχέλαον υἱὸν ἐκείνου περαιῶσαι τὸν αἰολικὸν στόλον, εἰς τὴν νῦν κυζικηνὴν τὴν περὶ τὸ δασκύλιον. γρᾶν δὲ τὸν υἱὸν τούτου τὸν νεώτατον προελθόντα μέχρι τοῦ γρανίκου ποταμοῦ, καὶ παρεσκευασμένον ἄμεινον περαιῶσαι τὸ πλέον τῆς στρατιᾶς εἰς λέσβον καὶ κατασχεῖν αὐτήν. κλεύην δὲ τὸν δώρου, καὶ μαλαὸν, καὶ αὐτοὺς ἀπογόνους ὄντας ἀγαμέμνονος, συναγαγεῖν μὲν τὴν στρατιὰν κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον καθ' ὃν καὶ πένθιλος. ἀλλὰ τὸν μὲν τοῦ πενθίλου στόλον φθῆναι περαιωθέντα ἐκ τῆς θρᾴκης εἰς τὴν ἀσίαν. τούτους δὲ περὶ τὴν λοκρίδα, καὶ τὸ φρείκιον ὄρος διατρῖψαι πολὺν χρόνον. ὕστερον δὲ διαβάντας κτίσαι τὴν κύμην, τὴν φρικωνίδα κληθεῖσαν ἀπὸ τοῦ λοκρικοῦ ὄρους. τῶν αἰολέων τοίνυν καθ' ὅλην σκεδασθέντων τὴν χώραν, ἣν ἔφαμεν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεσθαι τρωικήν, οἱ δ' ὕστερον οἱ μὲν, πᾶσαν αἰολίδα προσαγορεύουσιν. οἱ δὲ, μέρος, καὶ

Τροίαν, οἱ μὲν, ὅλην· οἱ δὲ, μέρος αὐτῆς, οὐδ' οἱ ὅλως ἀλλήλοις ὁμολογοῦντες, εὐθὺς γὰρ ἐπὶ τῶν κατὰ τὴν προποντίδα τόπων, ὁ μὲν ὅμηρος ἀπὸ τοῦ αἰσήπου τὴν ἀρχὴν ποιεῖται τῆς τρῳάδος. εὔδοξος δὲ, ἀπὸ πριάπου, καὶ ἀρτάκης· τοῦ ἐν τῇ κυζικηνῶν νήσῳ χωρίου ἀντικειμένου τῷ πριάπῳ· συστέλλων ἐπ' ἔλαττον τοὺς ὅρους. δαμάστης δ' ἔτι μᾶλλον συστέλλει ἀπὸ παρίου. καὶ γὰρ οὗτος μὲν ἕως λεκτοῦ προάγει. ἄλλοι δ' ἄλλως. χάρων δ' ὁ λαμψακηνὸς, τριακοσίους ἄλλους ἀφαιρεῖ σταδίους ἀπὸ πρακτίου ἀρχόμενος· τοσοῦτοι γάρ εἰσιν ἀπὸ παρίου εἰς πράκτιον· ἕως μέντοι ἀδραμυττίου πρόεισι. σκύλαξ δὲ ὁ καρυανδεὺς ἀπὸ ἀβύδου ἄρχεται. ὁμοίως δὲ τὴν αἰολίδα, ἔφορος μὲν λέγει ἀπὸ ἀβύδου μέχρι κύμης. ἄλλοι δ' ἄλλως. τοπογραφεῖ δὲ μάλιστα τὴν ὄντως λεγομένην τροίαν ἡ τῆς ἴδης θέσις. ὄρους ὑψηλοῦ. βλέποντος πρὸς δύσιν, καὶ τὴν ταύτῃ θάλατταν. μικρὰ δ' ἐπιστρέφοντος, καὶ πρὸς ἄρκτον. καὶ τὴν ταύτῃ παραλίαν. ἔστι δὲ αὕτη μὲν τῆς προποντίδος ἀπὸ τῶν περὶ ἄβυδον στενῶν ἐπὶ τὸν αἴσηπον, καὶ τὴν κυζικηνήν. ἡ δ' ἑσπερία θάλαττα. ὅ, τε ἑλλήσποντος ἔξω, ἐν ᾧ καὶ τὸ αἰγαῖον πέλαγος, πολλοὺς δ' ἔχουσα πρόποδας ἤδη καὶ σκολοπενδρώδης οὖσα τὸ σχῆμα, ἐσχάτοις ἀφορίζεται τούτοις· τῷ τε περὶ τὴν ζέλειαν ἀκρωτηρίῳ, καὶ τῷ καλουμένῳ λεκτῷ. τῷ μὲν, τελευτῶντι εἰς τὴν μεσόγαιαν μικρὸν ὑπὲρ τῆς κυζικηνῆς. καὶ δὴ καὶ ἔστι νῦν ἡ ζέλεια τῶν κυζικηνῶν. τὸ δὲ λεκτὸν εἰς τὸ πέλαγος καθήκει τὸ αἰγαῖον. ἐν παράπλῳ κείμενον τοῖς ἐκ τενέδου πλέουσιν εἰς λέσβον.

» Ἴδην δ' ἵκοντο πολυπίδακα μητέρα θηρῶν.

» Λεκτὸν ὅτι πρῶτον λιπέτην ἅλα ὕπνος καὶ

» Ἥρα τοῖς ἰοῦσιν, οἰκείως, τοῦ ποιητοῦ φράζοντος τὸ λεκτόν. καὶ γὰρ ὅτι τῆς ἴδης ἐστὶ τὸ λεκτόν. καὶ διότι πρώτη ἀπόβασις ἐκ θαλάττης αὕτη τοῖς ἐπὶ τὴν ἴδην ἀνιοῦσιν. εἴρηκεν ὀρθῶς, καὶ τὸ πολυπίδακον. εὐυδρότατον γὰρ κατὰ ταῦτα μάλιστα τὸ ὄρος. δηλοῖ δὲ τὸ πλῆθος τῶν ποταμῶν ὅσοι ἀπ' ἰδαίων ὀρέων ἅλαδε προρέουσι. ῥῆσος ἑπτάπορός τε καὶ οἱ ἑξῆς, οὓς ἐκεῖνος εἴρηκε. καὶ ἡμῖν νυνὶ πάρεστιν ὁρᾶν. τοὺς δὴ πρόποδας τοὺς ἐσχάτους ἐφ' ἑκάτερα οὕτω τὸ λεκτὸν καὶ τὴν ζέλειαν οἰκείως τούτων καὶ τὴν ἀκρώρειαν, ἀφορίζει γάργαρον ἀκρότατον. καὶ γὰρ νῦν γάργαρον ἐν τοῖς ἄνω μέρεσι τῆς ἴδης δείκνυται τόπος, ἐν ᾧ τὰ νῦν γάργαρα πόλις αἰολική. ἐντὸς μὲν γὰρ τῆς ζελείας, καὶ τοῦ λεκτοῦ, πρῶτα ἐστὶν ἀπὸ τῆς προποντίδος ἀρξαμένοις μέχρι τῶν κατ' ἄβυδον στενῶν. εἶτ' ἔξω τῆς προποντίδος τὰ μέχρι λεκτοῦ, κάμψαντι δὲ τὸ λεκτὸν, ἀναχεῖται κόλπος μέγας. ὃν ἤδη ποιεῖ πρὸς τὴν ἤπειρον ἀποχωροῦσα ἀπὸ τοῦ λεκτοῦ. καὶ αἱ κάναι τὸ ἐκ θατέρου μέρους ἀντικείμενον ἀκρωτήριον τῷ λεκτῷ, καλοῦσι δ' οἱ μὲν, ἰδαῖον κόλπον. οἱ δ' ἀδραμυττηνόν. ἐν τούτῳ δὲ αἱ τῶν αἰολέων πόλεις μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ ἕρμου, καθάπερ εἰρήκαμεν. εἴρηται δὲ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν, ὅτι τοῖς ἐκ βυζαντίου πλέουσι πρὸς νότον, ἐπ' εὐθείας ἐστὶν ὁ πλοῦς, πρῶτον ἐπὶ σηστὸν, καὶ ἄβυδον διὰ μέσης τῆς προποντίδος. ἔπειτα τῆς παραλίας τῆς ἀσίας μέχρι καρίας. ταύτην δὴ φυλάττοντας χρὴ τὴν ὑπόθεσιν ἀκούειν τῶν ἑξῆς, κἂν λέγωμεν κόλπους τινὰς ἐν αὐτῇ τῇ παραλίᾳ, τάς τε ἄκρας δεῖ νοεῖν τὰς ποιούσας αὐτοὺς ἐπὶ τῆς αὐτῆς γραμμῆς κειμένας ὥσπερ τινὸς μεσημβρινῆς. ἐκ δὴ τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων, εἰκάζουσιν οἱ φροντίσαντες περὶ τούτου πλέον τι, πᾶσαν τὴν παραλίαν ταύτην ὑπὸ τοῖς τρωσὶ γεγονέναι. διῃρημένην μὲν εἰς δυναστείας ἐννέα. ὑπὸ δὲ τῷ πριάμῳ τεταγμένην κατὰ τὸν ἰλιακὸν πόλεμον. καὶ λεγομένην τροίαν. δῆλον δ' ἐκ τῶν κατὰ μέρος. οἱ γὰρ περὶ τὸν ἀχιλλέα τειχήρεις ὁρῶντες τοὺς ἰλιέας κατ' ἀρχὰς, ἔξω ποιεῖσθαι τὸν πόλεμον ἐπεχείρησαν. καὶ περιιόντες ἀφαιρεῖσθαι τὰ κύκλῳ.

Δώδεκα δὴ σὺν νηυσὶ πόλεις ἀλάπαξ' ἀνθρώπων.

Πεζὸς δ' ἕνδεκά φημι κατὰ τροίην ἐρίβωλον.

Τροίαν γὰρ λέγει τὴν πεπορθημένην ἤπειρον. πεπόρθηται δὲ ἐν ἄλλοις τόποις καὶ τὰ ἀντικείμενα τῇ λέσβῳ. τὰ περὶ θήβην, καὶ λυρνησσὸν, καὶ πήδασον τὴν τῶν λελέγων, καὶ ἔτι ἡ τοῦ εὐρυπύλου τοῦ τηλέφου παιδός.

» Ἀλλ' οἷον τὸν τηλεφίδην κατενήρατο χαλκῷ

» Ὁ νεοπτόλεμος ἥρω εὐρύπυλον. Ταῦτα δὴ πεπορθηκέναι λέγει. καὶ αὐτὴν τὴν λέσβον

» Ὅτε λέσβον ἐϋκτιμένην ἕλεν αὐτὸς, Καὶ

» Πέρσε δὲ καὶ λυρνησσὸν καὶ πήδασον. Καὶ

» Λυρνησσὸν διαπορθήσας καὶ τείχεα θήβης. Ἐκ μὲν λυρνησσοῦ ἡ βρισηὶς ἑάλω.

» Τὴν ἐκ λυρνησσοῦ ἐξείλετο. Ἧς ἐν τῇ ἁλώσει τὸν μύνητα καὶ τὸν ἐπίστροφον πεσεῖν φησὶν, ὡς ἡ βρισηὶς θρηνοῦσα τὸν πάτροκλον δηλοῖ.

» Οὐδὲ μὲν οὐδέ μ' ἔασκες ὅτ' ἄνδρ' ἐμὸν ὠκὺς ἀχιλλεὺς

» Ἔκτεινε. πέρσε δὲ πόλιν θείοιο μύνητος, κλαίειν.

Ἐμφαίνει γὰρ τὴν λυρνησσὸν λέγων πόλιν θείοιο μύνητος ὡς ἂν δυναστευομένην ὑπ' αὐτοῦ. καὶ ἐνταῦθα πεσεῖν αὐτὸν μαχόμενον. ἐκ δὲ τῆς θήβης ἡ χρυσηὶς ἐλήφθη.

» Ὠιχόμεθ' ἐς θήβην ἱερὴν πόλιν ἠετίωνος.

Ἐκ δὲ τῶν ἀχθέντων ἐκεῖθεν φησὶν εἶναι τὴν χρυσηίδα. οὐκ οἴονται δεῖν ἐξ ἀθάας ἀκούειν, οἱ μὲν

» ἐν Τροίῃ. Αὐτὰρ ἐγὼ Θήβηθεν, ἢ Θήβηθεν.
» Ἀνδρομάχη θυγάτηρ μεγαλήτορος Ἠετίωνος. Ἠετίων ὃς ἔναιεν ὑπὸ Πλάκῳ ὑληέσσῃ.
» Θήβῃ ὑποπλακίῃ, Κιλίκεσσ' ἄνδρεσσιν ἀνάσσων.

Δευτέρα οὖν αὕτη δυναστεία Τρωϊκὴ μετὰ τὴν ὑπὸ Μύνητι. οἰκείως δὲ τούτοις, καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Ἀνδρομάχης λεχθὲν οὕτως.

» Ἕκτορ ἐγὼ δύστηνος ἰῇ, ἄρα γεινόμεθα αἴσῃ
» Ἀμφότεροι. σὺ μὲν ἐν Τροίῃ Πριάμου ἐνὶ οἴκῳ.
» Αὐτὰρ ἐγὼ Θήβῃσιν. Ἀλλὰ καθ' ὑπερβατὸν,
» Ἀμφότεροι ἐκ Τροίης. σὺ μὲν Πριάμου ἐν οἴκῳ.
» Αὐτὰρ ἐγὼ Θήβῃσι. Τρίτη δ' ἐστὶν ἡ τῶν Λελέγων. καὶ αὕτη Τρωϊκή.
» Ἄλτεω. ὃς Λελέγεσσι φιλοπτολέμοισιν ἀνάσσει.

Οὗ τῇ θυγατρὶ συνελθὼν Πρίαμος γεννᾷ τὸν Λυκάονα. καὶ Πολύδωρον. καὶ μὴν οἵ γε ὑπὸ τῷ Ἕκτορι ἐν τῷ καταλόγῳ ταττόμενοι, λέγονται Τρῶες.

» Τρωσὶ μὲν ἡγεμόνευε μέγας κορυθαίολος Ἕκτωρ. Εἶθ' ὑπὸ τῷ Αἰνείᾳ.
» Δαρδανίων αὖτ' ἦρχεν ἐῢς παῖς Ἀγχίσαο. Καὶ οὗτοι Τρῶες. φησὶ γοῦν.
» Αἰνεία Τρώων βουληφόρε.

Εἶθ' ὑπὸ Πανδάρῳ Λύκιοι. οὓς καὶ αὐτοὺς καλεῖ Τρῶας.

» Οἳ δὲ Ζέλειαν ἔναιον ὑπαὶ πόδα νείατον Ἴδης.
» Ἀφνειοὶ, πίνοντες ὕδωρ μέλαν Αἰσήποιο Τρῶες
» Τῶν αὖτ' ἦρχε Λυκάονος ἀγλαὸς υἱὸς Πάνδαρος.

Ἕκτη δ' αὕτη δυναστεία. καὶ μὴν οἵ γε μεταξὺ τοῦ Αἰσήπου, καὶ Ἀβύδου Τρῶες. ὑπὸ μὲν γὰρ τῷ Ἀσίῳ ἐστὶ τὰ περὶ Ἄβυδον.

» Οἳ δ' ἄρα Περκώτην καὶ Πράκτιον ἀμφενέμοντο.
» Καὶ Σηστὸν καὶ Ἄβυδον ἔχον, καὶ δῖαν Ἀρίσβην,
» Τῶν αὖθ' Ὑρτακίδης ἦρχ' Ἄσιος. Ἀλλ' ἐν Ἀβύδῳ μὲν υἱὸς τοῦ Πριάμου διέτριβεν, ἵππους νέμων πατρῴας δηλονότι.
» Ἀλλ' υἱὸν Πριάμοιο, νόθον βάλε Δημοκόωντα.
» Ὅς οἱ Ἀβυδόθεν ἦλθε παρ' ἵππων ὠκειάων.
» Ἐν δὲ Περκώτῃ υἱὸς Ἱκετάονος ἐβουνόμει Οὐκ ἀλλοτρίας οὐδ' οὗτος βοῦς.
» Πρῶτον δ' Ἱκεταονίδην ἐνένιπεν ἴφθιμον Μελάνιππον.
» Ὃ δ' ὄφρα μὲν εἰλίποδας βοῦς βόσκεν Περκώτῃ.

Ὥστε καὶ αὕτη ἂν εἴη Τρωὰς καὶ ἡ ἐφεξῆς ἕως Ἀδραστείας. ἦρχον γὰρ αὐτῆς υἷε δύο Μέροπος Περκωσίου. πάντες μὲν δὴ Τρῶες οἱ ἀπὸ Ἀβύδου μέχρι Ἀδραστείας. δίχα μέντοι διῃρημένοι. οἱ μὲν, ὑπὸ τῷ Ἀσίῳ. οἱ δ' ὑπὸ τοῖς Μεροπίδαις. καθά περ καὶ ἡ τῶν Κιλίκων διττή. ἡ μὲν, Θηβαϊκὴ, ἡ δὲ, Λυρνησσίς. ἐν αὐτῇ δ' ἂν λεχθείη ἡ ὑπὸ Εὐρυπύλου ἐφεξῆς οὖσα τῇ Λυρνησσίδι. ὅτι δὲ τούτων ἁπάντων ἦρχεν ὁ Πρίαμος, οἱ τοῦ Ἀχιλλέως λόγοι πρὸς τὸν Πρίαμον σαφῶς ἐμφανίζουσι.

» Καὶ σὲ γέρον τὸ πρὶν μὲν ἀκούομεν ὄλβιον εἶναι.
» Ὅσσον Λέσβος ἄνω μάκαρος ἕδος ἐντὸς ἐέργει.
» Καὶ Φρυγίη καθύπερθε καὶ Ἑλλήσποντος ἀπείρων.

Τότε μὲν οὖν τοιαῦτα ὑπῆρχεν. ὕστερον δὲ ἠκολούθησαν μεταβολαὶ παντοῖαι. τὰ μὲν γὰρ περὶ Κύζικον. Φρύγες ἐπῴκησαν ἕως Πρακτίου. τὰ δὲ περὶ Ἄβυδον Θρᾷκες. ἔτι δὲ πρότερον τούτων ἀμφοῖν. Βέβρυκες καὶ Δρύοπες. τὰ δ' ἑξῆς Τρῆρες. καὶ οὗτοι Θρᾷκες. τὸ δὲ Θήβης πεδίον Λυδοὶ οἱ τότε Μῄονες. καὶ Μυσῶν οἱ περιγενόμενοι τῶν ὑπὸ Τηλέφῳ πρότερον καὶ Τεύθραντι. οὕτω δὴ τοῦ ποιητοῦ τὴν Αἰολίδα καὶ τὴν Τροίαν εἰς ἓν συντιθέντος. καὶ τῶν Αἰολέων τὴν ἀπὸ τοῦ Ἕρμου πᾶσαν μέχρι τῆς κατὰ Κύζικον παραλίας κατασχόντων καὶ πόλεις κτισάντων, οὐδ' ἂν ἡμεῖς ἀτόπως περιοδεύσαιμεν. εἰς ταὐτὸ συντιθέντες τήν τε Αἰολίδα νῦν ἰδίως λεγομένην. τὴν ἀπὸ τοῦ Ἕρμου μέχρι Λεκτοῦ. καὶ τὴν ἐφεξῆς μέχρι τοῦ Αἰσήπου. ἐν γὰρ τοῖς καθ' ἕκαστα διακρινοῦμεν πάλιν παρατιθέντες ἅμα τοῖς νῦν οὖσι τὰ ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ καὶ τῶν ἄλλων λεγόμενα. ἔστιν οὖν μετὰ τὴν τῶν Κυζικηνῶν πόλιν καὶ τὸν Αἴσηπον, ἀρχὴ τῆς Τρῳάδος καθ' Ὅμηρον. λέγει δ' ἐκεῖνος μὲν οὕτω περὶ αὐτῆς.

» Οἳ δὲ Ζέλειαν ἔναιον ὑπαὶ πόδα νείατον Ἴδης.
» Ἀφνειοὶ πίνοντες ὕδωρ μέλαν Αἰσήποιο Τρῶες,
» Τῶν αὖτ' ἦρχε Λυκάονος ἀγλαὸς υἱὸς Πάνδαρος. Τούτους δὲ ἐκάλει καὶ Λυκίους. Ἀφνειοὺς δὲ ἀπὸ τῆς Ἀφνίτιδος νομίζουσι λίμνης. καὶ γὰρ οὕτω καλεῖται ἡ Δασκυλῖτις. ἡ μὲν δὴ Ζέλεια ἐν τῇ παρωρείᾳ τῇ ὑστάτῃ τῆς Ἴδης ἐστίν. ἀπέχουσα Κυζίκου μὲν σταδίους ἑνενήκοντα καὶ ἑκατὸν τῆς δ' ἐγγυτάτω θαλάττης

τῷ θαλάττης καθ' ἣν ἐκδίδωσιν αἴσηπος, ὅσον ὀγδοήκοντα. ἐπὶ μείζει δὲ συνεχῶς τὰ κατὰ τὴν παραλίαν τὴν μετὰ τὸν αἴσηπον.

» Οἳ δ' ἀδράστειαν τ' εἶχον καὶ δῆμον ἀπαισοῦ. Καὶ πίτυαν ἔχον, καὶ τηρείης ὄρος αἰπύ.
» Τῶν ἦρχ' ἄδρηστός τε καὶ ἄμφιος λινοθώρηξ.
» Υἷε δύω μέροπος περκωσίου.

Ταῦτα δὲ τὰ χωρία τῇ ζελείᾳ μὲν ὑποπέπτωκε. ἔχουσι δὲ κυζικηνοί τε καὶ πριαπηνοὶ μέχρι καὶ τῆς παραλίας. περὶ μὲν οὖν τὴν ζέλειαν, ὁ τάρσιός ἐστι ποταμός. εἴκοσιν ἔχων διαβάσεις τῇ αὐτῇ ὁδῷ. καθάπερ ὁ ἑπτάπορος ὅν φησιν ὁ ποιητής. ὁ δ' ἐκ νικομηδείας εἰς νίκαιαν τέτταρας καὶ εἴκοσι. πολλοὺς δὲ καὶ ὁ ἐκ φολόης εἰς τὴν ἠλείαν, σκάρθων, πέντε καὶ εἴκοσι. πολλοὺς δὲ καὶ ὁ ἐκ κοσκινίων εἰς ἀλάβανδα. πέντε δὲ καὶ ἑβδομήκοντα ὁ ἐκ τυάνων εἰς σόλους διὰ τοῦ ταύρου. ὑπὲρ δὲ τῆς ἐκβολῆς τοῦ αἰσήπου σχεδόν τι σταδίοις, κολωνός ἐστιν. ἐφ' ᾧ τάφος δείκνυται μέμνονος τοῦ τιθωνοῦ. πλησίον δ' ἐστὶ καὶ ἡ μέμνονος κώμη. τοῦ δὲ αἰσήπου καὶ τοῦ πριάπου μεταξὺ ὁ γρανικὸς ῥεῖ. τὰ πολλὰ δι' ἀδραστείας πεδίου. ἐφ' ᾧ ἀλέξανδρος τοὺς δαρείου σατράπας, ἀνὰ κράτος ἐνίκησε συμβαλών. καὶ πᾶσαν τὴν ἐντὸς τοῦ ταύρου καὶ τοῦ εὐφράτου παρέλαβεν. ἐπὶ δὲ γρανικῷ πόλις ἦν σιδήνη. χώραν ἔχουσα πολλὴν ὁμώνυμον. κατέσπασται δὲ νῦν. ἐν δὲ τῇ μεθορίᾳ τῆς κυζικηνῆς καὶ τῆς πριαπηνῆς, ἐστὶ τὰ ἁρπάγεια τόπος. ἐξ οὗ τὸν γανυμήδην μυθεύουσιν, ἡρπάχθαι. ἄλλοι δὲ περὶ δαρδάνιον ἄκραν. πλησίον δαρδάνου. πρίαπος δ' ἐστὶ πόλις ἐπὶ θαλάττῃ καὶ λιμήν. κτίσμα δ' οἱ μὲν, μιλησίων φασίν, οἵπερ καὶ ἄβυδον καὶ προκόννησον συνῴκισαν κατὰ τὸν αὐτὸν καιρόν. οἱ δὲ, κυζικηνῶν. ἐπώνυμος δ' ἐστὶ τοῦ πριάπου τοῦ τιμωμένου παρ' αὐτοῖς. εἴτ' ἐξ ὀρνεῶν τῶν περὶ κόρινθον μετενηνεγμένου τοῦ ἱεροῦ. εἴτε τῷ λέγεσθαι διονύσου καὶ νύμφης. τὸν θεὸν ὁρμησάντων ἐπὶ τὸ τιμᾶν αὐτὸν τῶν ἀνθρώπων. ἐπειδὴ σφόδρα εὐάμπελός ἐστιν ἡ χώρα καὶ αὕτη. καὶ ἡ ἐφεξῆς ὅμορος. ἥ τε τῶν παριανῶν, καὶ ἡ τῶν λαμψακηνῶν. ὁ γοῦν ξέρξης τῷ θεμιστοκλεῖ εἰς οἶνον, ἔδωκε τὴν λάμψακον. ἀπεδείχθη δὲ θεὸς οὗτος ὑπὸ τῶν νεωτέρων. οὐδὲ γὰρ ἡσίοδος οἶδε πρίαπον. ἀλλ' ἔοικε τοῖς ἀττικοῖς ὀρθάνῃ καὶ κονισάλῳ, καὶ τύχωνι, καὶ τοῖς τοιούτοις. ἐκαλεῖτο δ' ἡ χώρα αὕτη ἀδράστεια. καὶ ἀδραστείας πεδίον κατὰ ἔθος τι οὕτω λεγόντων τὸ αὐτὸ χωρίον διττῶς, ὡς καὶ θήβην, καὶ θήβης πεδίον, καὶ μυγδόνιον πεδίον. φησὶ δὲ καὶ καλλισθένης. ἀπὸ ἀδράστου βασιλέως, ὃς πρῶτος νεμέσεως ἱερὸν ἱδρύσατο, καλεῖσθαι ἀδράστειαν. ἡ μὲν οὖν πόλις μεταξὺ πριάπου καὶ παρίου. ἔχουσα ὑποκείμενον πεδίον ὁμώνυμον. ἐν ᾧ καὶ μαντεῖον ἦν ἀπόλλωνος ἀκταίου καὶ ἀρτέμιδος κατὰ τὴν πυκάτην. εἰς δὲ πάριον μετηνέχθη πᾶσα ἡ κατασκευὴ καὶ λιθεία. κατασπασθέντος τοῦ ἱεροῦ. καὶ ᾠκοδομήθη ἐν τῷ παρίῳ βωμός, ἑρμοκρέοντος ἔργον. πολλῆς μνήμης ἄξιον κατὰ τὸ μέγεθος καὶ κάλλος. τὸ δὲ μαντεῖον ἐξελείφθη καθάπερ καὶ τὸ ἐν ζελείᾳ. ἐνταῦθα μὲν οὖν οὐδὲν ἱερὸν ἀδραστείας δείκνυται. οὐδὲ δὴ νεμέσεως. περὶ δὲ κύζικον ἐστὶν ἀδραστείας ἱερόν. ἀντίμαχος δ' οὕτω φησίν.

» Ἔστι δέ τις νέμεσις μεγάλη θεός. ἣ τάδε πάντα.
» Πρὸς μακάρων ἔλαχε. βωμὸν δέ οἱ εἵσατο πρῶτος
» Ἄδρηστος. ποταμοῖο παρὰ ῥόον αἰσήποιο.
» Ἔνθα τετίμηταί τε καὶ ἀδρήστεια καλεῖται.

Ἔστι δὲ καὶ τὸ πάριον πόλις ἐπὶ θαλάττῃ. λιμένα ἔχουσα μείζω τῆς πριάπου καὶ ηὐξημένη γε ἐκ ταύτης. θεραπεύοντες γὰρ οἱ παριανοὶ τοὺς ἀτταλικούς, ὑφ' οἷς ἐτέτακτο ἡ πριαπηνή, πολλὴν αὐτῆς ἀπετέμοντο ἐπιτρεπόντων ἐκείνων. ἐνταῦθα μυθεύουσι τοὺς ὀφιογενεῖς συγγένειάν τινα ἔχειν πρὸς τοὺς ὄφεις. φασὶ δ' αὐτῶν τοὺς ἄρρενας τοῖς ἐχιοδήκτοις ἄκος εἶναι. συνεχῶς ἐφαπτομένους ὥσπερ τοὺς ἐπῳδούς πρῶτον μὲν τὸ πελίωμα εἰς ἑαυτοὺς μεταφέροντας. εἶτα καὶ τὴν φλεγμονὴν παύοντας καὶ τὸν πόνον. μυθεύουσι δὲ τὸν ἀρχηγέτην τοῦ γένους, ἥρωά τινα μεταβαλεῖν ἐξ ὄφεως. τάχα δὲ τῶν ψύλλων τις ἦν τῶν λιβυκῶν. εἰς δὲ τὸ γένος διέτεινεν ἡ δύναμις μέχρι ποσοῦ. κτίσμα δ' ἐστὶ τὸ πάριον μιλησίων καὶ ἐρυθραίων καὶ παρίων. πίτυα δ' ἐστὶν ἐν πιτυοῦντι τῆς παριανῆς. ὑπερκείμενον ἔχουσα πιτυῶδες ὄρος. μεταξὺ δὲ κεῖται πριάπου καὶ παρίου. κατὰ λῖνον χωρίον ἐπὶ θαλάττῃ ὅπου οἱ λινούσιοι κοχλίαι ἄριστοι τῶν πάντων ἁλίσκονται. ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τῷ ἀπὸ παρίου εἰς πρίαπον ἥ τε παλαιὰ προκόννησός ἐστι, καὶ ἡ νῦν προκόννησος. πόλιν ἔχουσα καὶ μέταλλον μέγα λευκοῦ λίθου σφόδρα ἐπαινούμενον. τὰ γοῦν κάλλιστα τῶν ταύτῃ πόλεων ἔργα. ἐν δὲ τούτοις, πρῶτα τὰ ἐν κυζίκῳ, ταύτης ἐστὶ τῆς λίθου. ἐντεῦθεν ἐστὶν ἀριστέας ὁ ποιητὴς τῶν ἀριμασπίων καλουμένων ἐπῶν. ἀνὴρ γόης εἴ τις ἄλλος. τὸ δὲ τῆς τηρείης ὄρος, οἱ μὲν, τὰ ἐν πειρωσσῷ ὄρη φασίν. ἃ ἔχουσιν οἱ κυζικηνοὶ τῇ ζελείᾳ προσεχῆ. ἐν οἷς βασιλικὴ θήρα κατεσκεύαστο τοῖς λυδοῖς, καὶ πέρσαις ὕστερον. οἱ δ' ἀπὸ τετταράκοντα τῆς λαμψάκου σταδίων δεικνύουσι λόφον. ἐφ' ᾧ μητρὸς θεῶν ἱερόν ἐστιν ἅγιον τηρείης ἐπικαλούμενον. καὶ ἡ λάμψακος δ' ἐπὶ θαλάττῃ πόλις ἐστὶν εὐλίμενος καὶ ἀξιόλογος. συμμένουσα καλῶς ὥσπερ καὶ ἡ ἄβυδος. διέχει δ' αὐτῆς ὅσον ἑβδομήκοντα, καὶ ἑκατὸν σταδίους. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον πιτυοῦσα καθάπερ καὶ τὴν χίον φασίν. ἐν δὲ τῇ περαίᾳ τῆς χερρονήσου πολίχνιον ἐστὶ καλλίπολις. κεῖται δ' ἐπ' ἀκτῆς. ἐκκειμένης πολὺ

πρὸς τὴν ἀσίαν κατὰ τὴν λαμψακηνῶν πόλιν. ὥστε τὸ δίαρμα μὴ πλέον εἶναι τετταράκοντα σταδίων. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ λαμψάκου, καὶ παρίου παισὸς ἦν πόλις, καὶ ποταμός. κατέσπασται δὴ πόλις. οἱ δὲ παισηνοὶ μετῴκησαν εἰς λάμψακον, μιλησίων ὄντες ἄποικοι καὶ αὐτοὶ καθάπερ, καὶ οἱ λαμψακηνοί. ὁ δὲ ποιητὴς εἴρηκεν ἀμφοτέρως. καὶ προσθεὶς τὴν πρώτην συλλαβήν. καὶ δή μοι ἀπαισοῦ. καὶ ἀφελών.

» ὅς ῥ' ἐνὶ παισῷ ναῖεν πολυκτήμων.

Καὶ ὁ ποταμὸς νῦν οὕτω καλεῖται. μιλησίων δ' εἰσὶ, καὶ αἱ κολωναὶ, αἱ ὑπὲρ λαμψάκου ἐν τῇ μεσογαίᾳ τῆς λαμψακηνῆς. ἄλλαι δ' εἰσὶν ἐπὶ τῇ ἐκτὸς ἑλλησποντίᾳ θαλάττῃ ἰλίου διέχουσαι σταδίους τετταράκοντα πρὸς τοῖς ἑκατόν. ἐξ ὧν τὸν κύκνον φασίν. ἀναξιμένης δὲ, καὶ ἐν τῇ ἐρυθραίᾳ φησὶ λέγεσθαι κολωνὰς, καὶ ἐν τῇ φωκίδι, καὶ ἐν θετταλίᾳ, ἐν δὲ τῇ παριανῇ ἐστιν ἡ ἰλικολώνη. ἐν δὲ τῇ λαμψακηνῇ τόπος εὐάμπελος γεργίθιον. ἦν δὲ, καὶ πόλις γέργηθα. ἐκ τῶν ἐν τῇ κυμαίᾳ γεργίθων. ἦν γὰρ κἀκεῖ πόλις πληθυντικῶς καὶ θηλυκῶς λεγομένη αἱ γέργιθες. ὅθεν περ ὁ γεργίθιος ἦν κεφάλων. καὶ νῦν ἔτι δείκνυται τόπος ἐν τῇ κυμαίᾳ γεργίθιον πρὸς λαρίσσῃ. ἐκ παρίου μὲν οὖν ὁ γλωσσογράφος κληθεὶς ἦν νεοπτόλεμος, μνήμης ἄξιος. ἐκ λαμψάκου δὲ χάρων τε ὁ συγγραφεὺς, καὶ ἀδείμαντος, καὶ ἀναξιμένης ὁ ῥήτωρ. καὶ μητρόδωρος ὁ τοῦ ἐπικούρου ἑταῖρος. καὶ αὐτὸς δ' ἐπίκουρος τρόπον τινὰ λαμψακηνὸς ὑπῆρξε. διατρίψας ἐν λαμψάκῳ. καὶ φίλοις χρησάμενος τοῖς ἀρίστοις τοῖς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, τοῖς περὶ ἰδομενέα, καὶ λεοντέα. ἐντεῦθεν δὲ μετήνεγκεν ἀγρίππας τὸν πεπτωκότα λέοντα λυσίππου ἔργον. ἀνέθηκε δὲ ἐν τῷ ἄλσει τῷ μεταξὺ τῆς λίμνης, καὶ τοῦ εὐρίπου. μετὰ δὲ, λάμψακον ἐστὶν ἄβυδος, καὶ τὰ μεταξὺ χωρία. περὶ ὧν οὕτως εἴρηκε συλλαβὼν ὁ ποιητὴς καὶ τὴν λαμψακηνὴν, καὶ τῆς παριανῆς τινά. οὔπω γὰρ ἦσαν αὗται αἱ πόλεις κατὰ τὰ τρωϊκά.

» Οἳ δ' ἄρα περκώτην, καὶ πράκτιον ἀμφενέμοντο.
» Καὶ σηστὸν, καὶ ἄβυδον ἔχον, καὶ δῖαν ἀρίσβην
» Τῶν αὖθ' ὑρτακίδης ἦρχ' ἄσιος   φησίν.
» ὃν ἀρίσβηθεν φέρον ἵπποι.
» Αἴθωνες μεγάλοι ποταμοῦ ἀπὸ σελλήεντος.

Οὕτω δ' εἰπὼν ἔοικε τὸ βασίλειον ἀποφαίνειν τοῦ ἀσίου τὴν ἀρίσβην. ὅθεν ἧκεν αὐτόν φησίν.

» Ὃν ἀρίσβηθεν φέρον ἵπποι ποταμοῦ ἀπὸ σελλήεντος.

Οὕτω δ' ἀφανῆ τὰ χωρία ταῦτά ἐστιν, ὥστε οὐδ' ὁμολογοῦσι περὶ αὐτῶν οἱ ἱστοροῦντες. πλὴν ὅτι περὶ ἄβυδόν ἐστι, καὶ λάμψακον καὶ πάριον, καὶ ὅτι ἡ πάλαι περκώτη μετωνομάσθη ὁ τόπος. τῶν δὲ ποταμῶν τὸν μὲν σελλήεντα φησὶν ὁ ποιητὴς πρὸς τῇ ἀρίσβῃ ῥεῖν. εἴπερ ὁ ἄσιος ἀρίσβηθεν ἧκε, καὶ ποταμοῦ ἀπὸ σελλήεντος, ὁ δὲ πράκτιος, ποταμὸς μέν ἐστι. πόλις δ' οὐχ εὑρίσκεται ὥς τινες οἰόμεσαν. ῥεῖ δὲ, καὶ οὗτος μεταξὺ ἀβύδου, καὶ λαμψάκου. τὸ οὖν καὶ πράκτιον ἀμφενέμοντο. οὕτω δεκτέον ὡς περὶ ποταμοῦ καθάπερ κἀκεῖνα.

» Οἵ τ' ἄρα παρ ποταμὸν κηφισσὸν δῖον ἔναιον   Καὶ
» Ἀμφί τε παρθένιον ποταμὸν κλυτὰ ἔργ' ἐνέμοντο.

Ἦν δὲ καὶ ἐν λέσβῳ πόλις ἀρίσβα ἧς τὴν χώραν ἔχουσι μηθυμναῖοι. ἔστι δὲ καὶ ποταμὸς ἀρίσβος ἐν θρᾴκῃ ὡς εἴρηται. καὶ τούτου πλησίον οἱ κεβρήνιοι θρᾷκες, πολλαὶ δ' ὁμωνυμίαι θραξὶ, καὶ τρωσίν. οἷον σκαιοὶ θρᾷκές τινες. καὶ σκαιὸς ποταμός. καὶ σκαιὸν τεῖχος. καὶ ἐν τροίᾳ σκαιαὶ πύλαι. ξάνθιοι θρᾷκες. ξάνθος ποταμὸς ἐν τροίᾳ. ἀρίσβος, ὃς ἐμβάλλων εἰς τὸν ἕβρον, ἀρίσβη ἐν τροίᾳ. ῥῆσος ποταμὸς ἐν τροίᾳ ῥῆσος δὲ, καὶ ὁ βασιλεὺς τῶν θρᾳκῶν. ἔστι δὲ καὶ τῷ ἀσίῳ ὁμώνυμος ἕτερος παρὰ τῷ ποιητῇ ἄσιος

» ὃς μήτρως ἦν ἕκτορος ἱπποδάμοιο.
» Αὐτοκασίγνητος ἑκάβης. υἱὸς δὲ δύμαντος
» ὃς φρυγίην ναίεσκε ῥοῆς ἐπὶ σαγγαρίοιο.

Ἄβυδος δὲ μιλησίων ἐστὶ κτίσμα. ἐπιτρέψαντος γύγου τοῦ λυδῶν βασιλέως. ἦν γὰρ ὑπ' ἐκείνῳ τὰ χωρία, καὶ ἡ τρῳὰς ἅπασα. ὀνομάζεται δὲ, καὶ ἀκρωτήριόν τι πρὸς δαρδάνῳ γύγας. ἐπίκειται δὲ τῷ στόματι τῆς προποντίδος, καὶ τοῦ ἑλλησπόντου. διέχει δὲ τὸ ἴσον λαμψάκου καὶ ἰλίου, σταδίους περὶ ἑβδομήκοντα καὶ ἑκατὸν, ἐνταῦθα δ' ἐστὶ τὸ ἑπταστάδιον ὅπερ ἔζευξε ξέρξης. τὸ διορίζον τὴν εὐρώπην, καὶ τὴν ἀσίαν. καλεῖται δ' ἡ ἄκρα εὐρώπης, χερρόνησος διὰ τὸ σχῆμα ἡ ποιοῦσα τὰ στενὰ τὰ κατὰ τὸ ζεῦγμα. ἀντίκειται δὲ τὸ ζεῦγμα τῇ ἀβύδῳ. σηστὸς δὲ ἀρίστη τῶν ἐν χερρονήσῳ πόλεων. διὰ δὲ τὴν γειτοσύνην ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι, καὶ αὕτη ἐτέτακτο. οὔπω ταῖς ἠπείροις διοριζόντων τῶν τότε, καὶ ἡγεμονίας. ἡ μὲν οὖν ἄβυδος καὶ ἡ σηστὸς διέχουσιν ἀλλήλων τριάκοντά που σταδίους ἐκ λιμένος εἰς λιμένα τὸ δὲ ζεῦγμα ἐστὶ μικρὸν ἀπὸ τῶν πόλεων παραλλάξαντι. ἐξ ἀβύδου μὲν ὡς ἐπὶ τὴν προποντίδα. ἐκ δὲ σηστοῦ εἰς τοὐναντίον. ὀνομάζεται δὲ πρὸς τῇ σηστῷ τόπος ἀποβάθρα, καθὸ ἐζεύχθη ἡ σχεδία. ἔστι δὲ ἡ σηστὸς ἐνδοτέρω κατὰ τὴν προποντίδα. ὑπερδέξιος τοῦ ῥοῦ τοῦ ἐξ αὐτῆς. διὸ, καὶ εὐπετέστερον ἐκ τῆς σηστοῦ διαίρουσι πα-

παραλλαξάμενοι μικρὸν ἐπὶ τὸν τῆς Ἡροῦς πύργον, κἀκεῖθεν ἀφιέντα τὰ πλοῖα συμπράττοντος τοῦ ῥοῦ πρὸς τὴν περαίωσιν. τοῖς δ᾽ ἐξ Ἀβύδου περαιουμένοις, παραλεκτέον ἐστὶν εἰς τἀναντία ὀκτώ που σταδίους ἐπὶ πύργον τινὰ κατ᾽ ἀντικρὺ τῆς Σηστοῦ, ἔπειτα διαίρειν πλάγιον, καὶ μὴ τελέως ἔχουσιν ἐναντίον τὸν ῥοῦν. ᾤκουν δὲ τὴν Ἄβυδον μετὰ Τρῶας καὶ Θρᾷκες. εἶτα Μιλήσιοι. τῶν δὲ πόλεων ἐμπρησθεισῶν ὑπὸ Δαρείου τοῦ Ξέρξου πατρὸς τῶν κατὰ τὴν Προποντίδα, ἐκοινώνησε καὶ ἡ Ἄβυδος τῆς αὐτῆς συμφορᾶς. ἐνέπρησε δὲ πυθόμενος μετὰ τὴν ἀπὸ τῶν Σκυθῶν ἐπάνοδον, τοὺς νομάδας παρασκευάζεσθαι διαβαίνειν ἐπ᾽ αὐτόν, κατὰ τιμωρίαν ὧν ἔπαθον. δεδιὼς μὴ αἱ πόλεις πορθμεῖα παράσχοιεν τῇ στρατιᾷ. συνέβη δὲ πρὸς ταῖς ἄλλαις μεταβολαῖς καὶ τῷ χρόνῳ, καὶ τοῦτο αἴτιον τῆς συγχύσεως τῶν τόπων. περὶ δὲ Σηστοῦ καὶ τῆς ὅλης Χερρονήσου προείπομεν ἐν τοῖς περὶ τῆς Θρᾴκης τόποις. φησὶ δὲ τὴν Σηστὸν Θεόπομπος, βραχεῖαν μὲν εὐερκῆ δέ, καὶ σκέλει διπλέθρῳ συνάπτειν πρὸς τὸν λιμένα. καὶ διὰ ταῦτ᾽ οὖν, καὶ διὰ ῥοῦν κυρίαν εἶναι τῶν παρόδων. ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Ἀβυδηνῶν χώρας ἐν τῇ Τρῳάδι τὰ Ἄστυρα, ἃ νῦν μὲν Ἀβυδηνῶν ἐστι κατεσκαμμένη πόλις. πρότερον δὲ ἦν καθ᾽ αὑτό, χρυσεῖα ἔχοντα. ἃ νῦν σπάνιά ἐστιν ἐξαναλωμένα. καθάπερ τὰ ἐν τῷ Τμώλῳ τὰ περὶ τὸν Πακτωλόν. ἀπὸ Ἀβύδου δὲ περὶ Αἴσηπον, περὶ ἑπτακοσίους φασὶ σταδίους. εὐθυπλοΐᾳ δ᾽ ἐλάττους. ἔξω δὲ Ἀβύδου τὰ περὶ τὸ Ἴλιόν ἐστι. τά τε ἄλλα παράλια ἕως Λεκτοῦ, καὶ τὰ ἐν τῷ Τρωϊκῷ πεδίῳ, καὶ τὰ παρόρεια τῆς Ἴδης τὰ ὑπὸ τῷ Αἰνείᾳ. διττῶς δὲ ταῦτ᾽ ὀνομάζει ὁ ποιητής. ποτὲ μὲν οὕτω λέγων.

» Δαρδανίων αὖτ᾽ ἦρχεν ἐῢς πάϊς Ἀγχίσαο.

Δαρδανίους καλῶν. ποτὲ δὲ Δαρδάνους.

» Τρῶες, καὶ Λύκιοι, καὶ Δάρδανοι ἀγχιμαχηταί.

Εἰκὸς δ᾽ ἐνταῦθα ἱδρῦσθαι τὸ παλαιὸν τὴν λεγομένην ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Δαρδανίαν.

» Δάρδανον αὖ πρῶτον τέκετο νεφεληγερέτα Ζεύς.

» Κτίσσε δὲ Δαρδανίην. νῦν μὲν γὰρ οὐδ᾽ ἴχνος πόλεως σώζεται αὐτόθι. εἰκάζει δὲ Πλάτων μετὰ τοὺς κατακλυσμοὺς τρία πολιτείας εἴδη συνίστασθαι. πρῶτον μὲν τὸ ἐπὶ ταῖς ἀκρωρείαις ἁπλοῦν τε, καὶ ἄγριον. δεδιότων τὰ ὕδατα ἐπιπολάζοντα ἀκμὴν ἐν τοῖς πεδίοις. δεύτερον δέ, τὸ ἐν ταῖς ὑπωρείαις, θαρρούντων ἤδη κατὰ μικρόν. ἅτε δὴ καὶ τῶν πεδίων ἀρχομένων ἀναψύχεσθαι. τρίτον δὲ τὸ ἐν τοῖς πεδίοις. λέγοι δ᾽ ἄν τις, καὶ τέταρτον, καὶ πέμπτον ἴσως, καὶ πλείω. ὕστατον δέ, τὸ ἐν τῇ παραλίᾳ, καὶ ἐν ταῖς νήσοις. λελυμένου παντὸς τοῦ τοιούτου φόβου. τὸ γὰρ μᾶλλον καὶ ἧττον θαρρεῖν, πλησιάζειν τῇ θαλάττῃ, πλείους ἂν ὑπογράφοι διαφορὰς πολιτειῶν καὶ ἠθῶν, καὶ ἅπερ τῶν ἀγαθῶν τε καὶ τῶν ἀνδρείων, ἔτι πως ἐπὶ τὸ ἥμερον τῶν δευτέρων ὑποβεβηκότων. ἔστι δέ τις διαφορά, καὶ παρὰ τούτου, τῶν ἀγροίκων, καὶ μεσαγροίκων, καὶ πολιτικῶν. ἀφ᾽ ὧν ἤδη, καὶ ἐπὶ τὸ ἀστεῖον καὶ ἄριστον ἦθος ἐτελεύτησεν ἡ τῶν ὀνομάτων κατ᾽ ὀλίγον μετάληψις. καὶ κατὰ τὴν τῶν ἠθῶν ἐπὶ τὸ κρεῖττον μετάστασιν, παρὰ τὰς τῶν τόπων καὶ τῶν βίων μεταβολάς. ταύτας δὴ τὰς διαφορὰς ὑπογράφειν φησὶ τὸν ποιητὴν ὁ Πλάτων. τῆς μὲν πρώτης πολιτείας παράδειγμα τιθέντα τὸν τῶν Κυκλώπων βίον. αὐτοφυεῖς νεμομένων καρπούς, καὶ τὰς ἀκρωρείας κατεχόντων ἐν σπηλαίοις τισίν. ἀλλὰ τά γ᾽ ἄσπαρτα, καὶ ἀνήροτα πάντα φύονται φησὶ τούτοις

» Τοῖσι δ᾽ οὔκ ἀγοραὶ βουληφόροι, οὔτε θέμιστες

» Ἀλλ᾽ οἵ γ᾽ ὑψηλῶν ὀρέων ναίουσι κάρηνα.

Ἐν σπέσσι γλαφυροῖσι θεμιστεύει δὲ ἕκαστος παίδων ἠδ᾽ ἀλόχων. τοῦ δὲ δευτέρου ἐκ τοῦ Δαρδανίου

» Κτίσσε δὲ Δαρδανίην. ἐπεὶ οὔπω Ἴλιος ἱρὴ

» Ἐν πεδίῳ πεπόλιστο, πόλις μερόπων ἀνθρώπων.

» Ἀλλ᾽ ἔθ᾽ ὑπωρείας ᾤκεον πολυπιδάκου Ἴδης.

Τοῦ δὲ τρίτου, ἐπὶ τοῦ Ἴλου τὸν ἐν τοῖς πεδίοις. ἐκεῖνον γὰρ παραδιδόασι τοῦ Ἰλίου κτίστην. ἀφ᾽ οὗ καὶ τὴν ἐπωνυμίαν λαβεῖν, τὴν πόλιν. εἰκὸς δέ, καὶ διὰ τοῦτο ἐν μέσῳ τῷ πεδίῳ τεθάφθαι αὐτόν, ὅτι πρῶτος ἐθάρρησεν ἐν τοῖς πεδίοις θέσθαι τὴν κατοικίαν.

» Οἱ δὲ παρ᾽ Ἴλου σῆμα παλαιοῦ Δαρδανίδαο

» Μέσσον κὰπ πεδίον παρ᾽ ἐρινεὸν ἐσσεύοντο.

Οὐδ᾽ οὗτος δὲ τελέως ἐθάρρησεν. οὐ γὰρ ἐνταῦθα ἵδρυσε τὴν πόλιν, ὅπου νῦν ἐστιν. ἀλλὰ σχεδόν τι τριάκοντα σταδίοις ἀνωτέρω πρὸς ἕω, καὶ πρὸς τὴν Ἴδην, καὶ τὴν Δαρδανίαν κατὰ τὴν νῦν καλουμένην Ἰλιέων κώμην. οἱ δὲ νῦν Ἰλιεῖς φιλοδοξοῦντες, καὶ θέλοντες εἶναι ταύτην τὴν παλαιάν, παρεσχήκασι λόγον τοῖς ἐκ τῆς Ὁμήρου ποιήσεως τεκμαιρομένοις. οὐ γὰρ ἔοικεν αὕτη εἶναι, ἡ καθ᾽ Ὅμηρον. καὶ ἄλλοι δὲ ἱστοροῦσι πλείους μεταβεβληκέναι τόπους τὴν πόλιν. ὕστατα δ᾽ ἐνταῦθα συμμεῖναι κατὰ Κροῖσον μάλιστα. τὰς δὴ τοιαύτας μεταβάσεις εἰς τὰ κάτω μέρη τὰς τότε συμβαινούσας ὑπολαμβάνω, καὶ βίων, καὶ πολιτειῶν ὑπογράφειν διαφοράς. ἀλλὰ περὶ

ται μὲν, καὶ ἄλλοτε ἐπισκεπτέον. τὴν δὲ τῶν ἰλιέων πόλιν τὴν νῦν, τέως μὲν κώμην εἶναι φασί. τὸ ἱερὸν ἔχουσαν τῆς ἀθηνᾶς μικρὸν καὶ εὐτελές. ἀλέξανδρον δὲ ἀναβάντα μετὰ τὴν ἐπὶ τῷ γρανίκῳ νίκην, ἀναθήμασί τε κοσμῆσαι τὸ ἱερὸν, καὶ προσαγορεῦσαι πόλιν, καὶ οἰκοδομίαις ἀναλαβεῖν προστάξαι τοῖς ἐπιμεληταῖς. ἐλευθέραν τε κρῖναι, καὶ ἄφορον. ὕστερον δὲ μετὰ τὴν κατάλυσιν τῶν περσῶν ἐπιστολὴν ἐπιπέμψαι φιλάνθρωπον. ὑπισχνούμενον πόλιν τε ποιῆσαι μεγάλην, καὶ ἱερὸν ἐπισημότατον. καὶ ἀγῶνα ἀποδείξειν ἱερόν. μετὰ δὲ τὴν ἐκείνου τελευτὴν λυσίμαχος μάλιστα τῆς πόλεως ἐπεμελήθη. καὶ νεὼν κατεσκεύασε. καὶ τεῖχος περιεβάλετο ὅσον τετταράκοντα σταδίων. συνῴκισέ τε εἰς αὐτὴν τὰς κύκλῳ πόλεις ἀρχαίας ἤδη κεκακωμένας. ὅτε καὶ ἀλεξανδρείας ἤδη ἐπεμελήθη. συνῳκισμένης μὲν ἤδη ὑπ' ἀντιγόνου, καὶ καλουμένης ἀντιγονίας. μεταβαλούσης δὲ τοὔνομα. ἔδοξε γὰρ εὐσεβὲς εἶναι τοὺς ἀλέξανδρον διαδεξαμένους, ἐκείνου πρότερον κτίζειν ἐπωνύμους πόλεις εἶθ' ἑαυτῶν. καὶ δὴ καὶ συνέμεινε. καὶ αὔξησιν ἔλαβε. νῦν δὲ καὶ ῥωμαίων ἀποικίαν δέδεκται. καὶ ἔστι τῶν ἐλλογίμων πόλεων. καὶ τὸ ἴλιον δ' ὃ νῦν ἐστι, κωμόπολίς τις ἦν, ὅτε πρῶτον ῥωμαῖοι τῆς ἀσίας ἐπέβησαν. καὶ ἐξέβαλον ἀντίοχον τὸν μέγαν ἐκ τῆς ἐντὸς τοῦ ταύρου. φησὶ γοῦν δημήτριος ὁ σκήψιος μειράκιον ἐπιδημήσας εἰς τὴν πόλιν κατ' ἐκείνους τοὺς καιρούς. οὕτως ὠλιγωρημένην ἰδεῖν τὴν κατοικίαν, ὥστε μὴ δὲ κεραμωτὰς ἔχειν τὰς στέγας. ἡγησιάναξ δὲ τοὺς γαλάτας περαιωθέντας ἐκ τῆς εὐρώπης, ἀναβῆναι μὲν εἰς τὴν πόλιν δεομένους ἐρύματος. παραχρῆμα δ' ἐκλιπεῖν διὰ τὸ ἀτείχιστον. ὕστερον δ' ἐπανόρθωσιν ἔσχε πολλήν. εἶτ' ἐκάκωσαν αὐτὴν πάλιν οἱ μετὰ φιμβρίου ῥωμαῖοι. λαβόντες ἐκ πολιορκίας, ἐν τῷ μιθριδατικῷ πολέμῳ. συνεπέμφθη δὲ ὁ φιμβρίας ὑπάτῳ οὐαλερίῳ φλάκκῳ ταμίας, προχειρισθέντι ἐπὶ τὸν μιθριδάτην. καταστασιάσας δὲ καὶ ἀνελὼν τὸν ὕπατον ἐν βιθυνίᾳ, αὐτὸς κατεστάθη κύριος τῆς στρατιᾶς. καὶ προσελθὼν εἰς ἴλιον, οὐ δεχομένων αὐτὸν τῶν ἰλιέων, ὡς λῃστὴν, βίαν τε προσφέρει, καὶ ἐν δεκαταίους αἱρεῖ. καυχωμένου δ' ὅτι ἣν ἀγαμέμνων δεκάτῳ ἔτει μόλις εἷλε τὸν χιλιόναυν στόλον ἔχων, καὶ τὴν σύμπασαν ἑλλάδα στρατεύουσαν, ταύτην αὐτὸς ἐν δεκάτῃ ἡμέρᾳ χειρώσαιτο, εἶπέ τις τῶν ἰλιέων. οὐ γὰρ ἦν ἕκτωρ ὁ ὑπερμαχῶν τῆς πόλεως. τοῦτον μὲν οὖν ἐπελθὼν σύλλας κατέλυσε, καὶ τὸν μιθριδάτην, κατὰ συμβάσεις εἰς τὴν οἰκείαν ἀπέπεμψε. τοὺς δ' ἰλιέας παρεμυθήσατο πολλοῖς ἐπανορθώμασι. καθ' ἡμᾶς μέντοι καῖσαρ ὁ θεὸς πολὺ πλέον αὐτῶν προὐνόησε, ζηλώσας ἅμα καὶ ἀλέξανδρον, ἐκεῖνος γὰρ κατὰ συγγενείας ἀνανέωσιν, ὥρμησε προνοεῖν αὐτῶν, ἅμα καὶ φιλόμηρος ὤν. φέρεται γοῦν τις διόρθωσις τῆς ὁμήρου ποιήσεως. ἡ ἐκ τοῦ νάρθηκος λεγομένη τοῦ ἀλεξάνδρου. μετὰ τῶν περὶ καλλισθένην καὶ ἀνάξαρχον. ἐπελθόντος καὶ σημειωσαμένου τινά. ἔπειτα καταθέντος εἰς νάρθηκα. ὃν εὗρεν ἐν τῇ περσικῇ γάζῃ πολυτελῶς κατεσκευασμένον, κατά τε δὴ τὸν τοῦ ποιητοῦ ζῆλον. καὶ κατὰ τὴν συγγένειαν τὴν ἀπὸ τῶν αἰακιδῶν τῶν ἐν μολοττοῖς βασιλευσάντων. παρ' οἷς καὶ τὴν ἀνδρομάχην ἱστοροῦσι βασιλεῦσαι τὴν ἕκτορος γενομένην γυναῖκα. ἐφιλοφρονεῖτο τε πρὸς τοὺς ἰλιέας συγγενείας γνωριμώτατα ἔχων τεκμήρια, ἐπερρώσθη πρὸς τὴν εὐεργεσίαν νεανικῶς. γνωριμώτερα δὲ πρῶτον μὲν ὅτι ῥωμαῖοις. οἱ δὲ ῥωμαῖοι τὸν τ' αἰνείαν ἀρχηγέτην ἡγοῦνται. ἔπειτα τε ἰούλιος ἀπὸ ἰούλου τινὸς τῶν προγόνων. ἐκεῖνος δ' ἀπὸ ἰούλου, τὴν προσωνυμίαν ἔσχε ταύτην τῶν ἀπογόνων εἷς ὢν τῶν ἀπὸ αἰνείου. χώραν τε δὴ προσένειμεν αὐτοῖς. καὶ τὴν ἐλευθερίαν καὶ τὴν ἀλειτουργησίαν αὐτοῖς συνεφύλαξε. καὶ μέχρι νῦν συμβαίνουσιν ἐν τούτοις. ὅτι δ' οὐκ ἐνταῦθα ἵδρυτο τὸ παλαιὸν ἴλιον καθ' ὅμηρον σκοποῦσιν, ἐκ τῶν τοιῶνδε τεκμαίρονται. πρότερον δὲ ὑπογραπτέον τοὺς τόπους ἀπὸ τῆς παραλίας ἀρξαμένους ἀφ' ἧς περ ἐλίπομεν. ἔστι τοίνυν μετ' ἄβυδον ἥ τε δαρδανὶς ἄκρα, ἧς μικρῷ πρόσθεν ἐμνήσθημεν. καὶ ἡ πόλις ἡ δάρδανος. διέχουσα τῆς ἀβύδου ἑβδομήκοντα σταδίους. μεταξύ τε ὁ ῥόδιος ἐκπίπτει ποταμός. καθ' ὃ ἐν τῇ χερρονήσῳ τὸ κυνὸς σῆμά ἐστιν, ὅ φασιν ἑκάβης εἶναι τάφον. οἱ δὲ, τὸν ῥόδιον εἰς τὸν αἴσηπον ἐμβάλλειν φασίν. εἷς δ' ἐστὶ τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων καὶ οὗτος.

» Ῥῆσος δ' ἑπτάπορός τε κάρησός τε ῥόδιός τε.

Ἡ δὲ δάρδανος. κτίσμα ἀρχαῖον. οὕτω δ' εὐκαταφρόνητον, ὥστε πολλάκις οἱ βασιλεῖς οἱ μὲν, μετῴκιζον τὴν εἰς ἄβυδον. οἱ δὲ, ἀνῴκιζον πάλιν εἰς τὸ ἀρχαῖον κτίσμα. ἐνταῦθα δὲ συνῆλθον σύλλας τε κορνήλιος ὁ τῶν ῥωμαίων ἡγεμὼν, καὶ μιθριδάτης ὁ κληθεὶς εὐπάτωρ. καὶ συνέβησαν πρὸς ἀλλήλους ἐπὶ καταλύσει τοῦ πολέμου. πλησίον δ' ἐστὶ τὸ ὀφρύνιον. ἐφ' ᾧ τὸ τοῦ ἕκτορος ἄλσος ἐν περιφανεῖ τόπῳ. καὶ ἐφεξῆς λίμνη πτελεώς. εἶτα ῥήτιον πόλις ἐπὶ λόφῳ κειμένη, καὶ τῷ ῥητίῳ συνεχὴς ἠϊὼν ἀλιγενὴς αἰάντειον. ἐφ' ᾗ μνῆμα καὶ ἱερὸν αἴαντος. καὶ ἀνδριάς, ὃν ἄραντος ἀντωνίου κομισθέντα εἰς αἴγυπτον, ἀπέδωκε τοῖς ῥητιεῦσι πάλιν. καθάπερ καὶ ἄλλοις ὁ σεβαστὸς καῖσαρ. τὰ γὰρ κάλλιστα ἀναθήματα ἐκ τῶν ἐπιφανεστάτων ἱερῶν, ὁ μὲν, ἦρε τῇ αἰγυπτίᾳ χαριζόμενος. ὁ δὲ, τοῖς θεοῖς ἀπέδωκε. μετὰ δὲ τὸ ῥήτιον ἐστὶ τὸ σίγειον, κατεσπασμένη πόλις. καὶ τὸ ναύσταθμον. καὶ ὁ ἀχαιῶν λιμὴν, καὶ τὸ ἀχαϊκὸν στρατόπεδον, καὶ ἡ στομαλίμνη καλουμένη. καὶ αἱ τοῦ σκαμάνδρου ἐκβολαί. συμπεσόντες γὰρ ὅ τε σιμόεις καὶ ὁ σκάμανδρος ἐν τῷ πεδίῳ, πολλὴν καταφέροντες ἰλὺν, προσχοῦσι τὴν παραλίαν,

καὶ τυφλὸν στόμα τι καὶ λιμνοθάλαττα, καὶ ἕλη ποιοῦσι. κατὰ δὲ τὴν αἰγιαλὸν ἄκρα ἐστὶν ἐν τῇ χερρονήσῳ τὸ πρωτεσιλάειον. καὶ ἡ ἐλοῦσα, περὶ ὧν εἰρήκαμεν ἐν τοῖς θρακικοῖς. ἔστι δὲ τὸ μῆκος τῆς παραλίας ταύτης, ἀπὸ τοῦ ῥοιτίου μέχρι σιγείου, καὶ τοῦ ἀχιλλέως μνήματος εὐθυπλοούντων ἑξήκοντα σταδίων. ὑποπέπτωκε δὲ τῷ ἰλίῳ πᾶσα. τῷ μὲν νῦν κατὰ τὸν ἀχαιῶν λιμένα, ὅσον δώδεκα σταδίους διέχουσα. τῷ δὲ προτέρῳ τριάκοντα ἄλλοις σταδίοις. ἀνωτέρω πρὸς τὸ κατὰ τὴν ἴδην μέρος. τοῦ μὲν οὖν ἀχιλλέως, καὶ ἱερόν ἐστι, καὶ μνῆμα πρὸς τῷ σιγείῳ. πατρόκλου δὲ καὶ ἀντιλόχου μνήματα, καὶ ἐναγίζουσιν οἱ ἰλιεῖς πᾶσι καὶ τούτοις, καὶ τῷ αἴαντι. ἡρακλέα δ' οὐ τιμῶσιν, αἰτιώμενοι τὴν ὑπ' αὐτοῦ πόρθησιν. ἀλλ' ἐκεῖνος μὲν φαίη τις ἂν οὕτως ἐπόρθησεν, ὥστ' ἀπολιπεῖν τοῖς ὕστερον ἐκπορθήσουσι κεκακωμένην μέν, πόλιν δ'. διὸ καὶ οὕτως εἴρηκεν ὁ ποιητής.

» ἰλίου ἐξαλάπαξε πόλιν, χήρωσε δ' ἀγυιάς.

Ἡ γὰρ χηρεία λειπανδρία τίς ἐστιν, οὐκ ἀφανισμὸς τέλειος. οὗτοι δ' ἠφάνισαν τελέως, οὓς ἐναγίζειν ἀξιοῦσι καὶ τιμᾶν ὡς θεούς, εἰ μὴ τοῦτ' αἰτιάσαιντο. διότι οὗτοι μὲν δίκαιον πόλεμον ἐξήνεγκαν. ἐκεῖνος δὲ ἄδικον ἕνεχ' ἵππων λαομέδοντος. πρὸς δὲ τοῦτο πάλιν ἀντιτίθεται μῦθος. οὐ γὰρ ἕνεκα ἵππων. ἀλλὰ μισθοῦ ὑπὲρ τῆς ἡσιόνης καὶ τοῦ κήτους. ἀλλ' ἐάσωμεν ταῦτα. εἰς γὰρ μύθων ἀνασκευὰς ἐκπίπτει. τάχα δὲ λανθάνουσί τινες ἡμᾶς αἰτίαι πιθανώτεραι. δι' ἃς τοῖς ἰλιεῦσιν ἐπῆλθε, τοὺς μὲν τιμᾶν τοὺς δὲ μή. ἔοικε δὲ ὁ ποιητὴς μικρὰν ἀποφαίνειν τὴν πόλιν ἐν τῷ περὶ ἡρακλέους λόγῳ. εἴπερ

» ἓξ οἴης σὺν νηυσὶ καὶ ἀνδράσι παυροτέροισιν
» ἰλίου ἐξαλάπαξε πόλιν.

Καὶ φαίνεται ὁ πρίαμος τῷ τοιούτῳ λόγῳ μέγας ἐκ μικροῦ γεγονώς. καὶ βασιλεὺς βασιλέων, ὡς ἔφαμεν. μικρὸν δὲ προελθοῦσιν ἀπὸ τῆς παραλίας ταύτης, ἔστι τὸ ἀχαίιον, ἤδη τῆς τενεδίων περαίας ὑπάρχον. τοιούτων δὲ τῶν ἤδη τῇ θαλάττῃ τόπων ὄντων, ὑπέρκειται τούτων τὸ τρωϊκὸν πεδίον μέχρι τῆς ἴδης ἀνῆκον ἤδη πολλοὺς σταδίους, κατὰ τὸ πρὸς ἕω μέρος τούτου δ' ἡ μὲν παρώρειός ἐστι στενή. τῇ μὲν ἤδη τὴν μεσημβρίαν τεταμένη μέχρι τῶν κατὰ σκῆψιν τόπων. τῇ δ' ἤδη τὰς ἄρκτους μέχρι τῶν κατὰ ζέλειαν λυκίων. ταύτην δ' ὁ ποιητὴς ὑπ' αἰνείᾳ τάττει καὶ τοῖς ἀντηνορίδαις. καλεῖ δὲ δαρδανίαν. ὑπὸ δὲ ταύτῃ κεβρηνία πεδιὰς ἡ πλείστη. παράλληλός πως τῇ δαρδανίᾳ.

» Ἦν δὲ καὶ πόλις ποτὲ κεβρήνη.

Ὑπονοεῖ δ' ὁ δημήτριος μέχρι δεῦρο διατείνειν τὴν περὶ τὸ ἴλιον χώραν τὴν ὑπὸ τῷ ἕκτορι ἀνήκουσαν, ἀπὸ τοῦ ναυστάθμου μέχρι κεβρηνίας. τάφον τε γὰρ ἀλεξάνδρου δείκνυσθαί φησιν αὐτόθι. καὶ οἰνώνης. ἣν ἱστοροῦσι γυναῖκα γεγονέναι τοῦ ἀλεξάνδρου πρὶν ἑλένην ἁρπάσαι, λέγειν τε τὸν ποιητήν,

» κεβριόνην νόθον υἱὸν ἀγακλῆος πριάμοιο.

Ὃν εἰκὸς εἶναι ἐπώνυμον τῆς χώρας, ἢ καὶ πόλεως. ὅπερ πιθανώτερον. τὴν δὲ κεβρηνίαν διήκειν μέχρι τῆς σκηψίας. ὅριον δ' εἶναι τὸν σκάμανδρον μέσον αὐτῶν ῥέοντα. ἔχθραν δ' ἀεὶ καὶ πόλεμον εἶναι τοῖς τε κεβρηνοῖς καὶ τοῖς σκηψίοις, ἕως ἀντίγονος αὐτοὺς συνῴκισεν εἰς τὴν τότε μὲν ἀντιγονίαν, νῦν δὲ ἀλεξάνδρειαν. τοὺς μὲν οὖν κεβρηνίας συμμεῖναι τοῖς ἄλλοις ἐν τῇ ἀλεξανδρείᾳ. τοὺς δὲ σκηψίους ἐπανελθεῖν εἰς τὴν οἰκείαν ἐπιτρέψαντος λυσιμάχου. ἀπὸ δὲ τῆς κατὰ τοὺς τόπους ἰδαίας ὀρεινῆς, δύο φησὶν ἀγκῶνας ἐκτείνεσθαι πρὸς θάλατταν. τὸν μὲν, εὐθὺ ῥοιτίου. τὸν δὲ, σιγείου. ποιοῦντας ἐξ ἀμφοῖν γραμμὴν ἡμικυκλιώδη. τελευτᾶν δ' ἐν τῷ πεδίῳ. τοσοῦτον ἀπέχοντας τῆς θαλάττης ὅσον τὸ νῦν ἴλιον. τοῦτο μὲν δὴ μεταξὺ τῆς τελευτῆς τῶν λεχθέντων ἀγκώνων εἶναι. τὸ δὲ παλαιὸν κτίσμα μεταξὺ τῆς ἀρχῆς. μεταλαμβάνεσθαι δ' ἐντὸς τότε σιμοείσιον πεδίον δι' οὗ ὁ σιμόεις φέρεται. καὶ τὸ σκαμάνδριον δι' οὗ σκάμανδρος ῥεῖ. τοῦτο δὲ καὶ ἰδίως τρωϊκὸν λέγεται. καὶ τοὺς πλείστους ἀγῶνας ὁ ποιητὴς ἐνταῦθα ἀποδίδωσι. πλατύτερον γάρ ἐστι. καὶ τοὺς ὀνομαζομένους τόπους ἐνταῦθα δεικνυμένους ὁρῶμεν. τὸν ἐρινεόν. τὸν τοῦ αἰσυήτου τάφον. τὴν βατίειαν. τὸ τοῦ ἴλου σῆμα. οἱ δὲ ποταμοὶ ὅ τε σκάμανδρος καὶ ὁ σιμόεις. ὁ μὲν, τῷ σιγείῳ πλησιάσας. ὁ δὲ, τῷ ῥοιτίῳ, μικρὸν ἔμπροσθεν τοῦ νῦν ἰλίου συμβάλλουσιν. εἶτ' ἐπὶ τὸ σίγειον ἐκδιδόασι. καὶ ποιοῦσι τὴν στομαλίμνην καλουμένην. διείργει δ' ἑκάτερον τῶν λεχθέντων πεδίων ἀπὸ θατέρου μέγας τις αὐχὴν τῶν εἰρημένων ἀγκώνων, ἐπ' εὐθείας ἀπὸ τοῦ νῦν ἰλίου τὴν ἀρχὴν ἔχων συμφυὴς αὐτῷ. γινόμενος δ' ἕως τῆς κεβρηνίας. καὶ ἀποτελῶν τὸ ὖ γράμμα πρὸς τοὺς ἑκατέρωθεν ἀγκῶνας. ὑπὲρ δὲ τούτου, μικρὸν ἡ τῶν ἰλιέων κώμη ἐστίν. ἐν ᾗ νομίζεται τὸ παλαιὸν ἴλιον ἱδρῦσθαι πρότερον. τριάκοντα σταδίους διέχον ἀπὸ τῆς νῦν πόλεως. ὑπὲρ δὲ τῆς ἰλιέων κώμης, δέκα σταδίους ἐστὶν ἡ καλὴ κολώνη. λόφος τις, παρ' ὃν ὁ σιμόεις ῥεῖ πεντασταδίου ἔχων. γίνεται οὖν εὔλογον, πρῶτον μὲν τὸ ἐπὶ τοῦ ἄρεος.

» ὦρτο δ' ἄρης ἑτέρωθεν ἐρεμνῇ λαίλαπι ἶσος.
» ὀξὺ κατ' ἀκροτάτης πόλιος τρώεσσι κελεύων.
» ἄλλοτε παρὰ σιμόεντι θέων ἐπὶ καλλικολώνῃ. Τῆς γὰρ μάχης ἐπὶ τῷ σκαμανδρίῳ πεδίῳ συντελουμένης, πιθανῶς ἂν ὁ ἄρης ἄλλοτε μὲν τὴν ἐγκέλευσιν ἀπὸ τῆς ἀκροπόλεως ποιοῖτο. ἄλλοτε δ' ἐκ τῶν πλησίον

τόπων τῶν τε Σιμόεντος, καὶ τῆς Καλλικολώνης, μέχρι ὃ εἰκὸς καὶ τὴν μάχην παρατετάσθαι. τετταράκοντα δὲ
σταδίους διεχούσης τῆς Καλλικολώνης ἀπὸ τοῦ νῦν Ἰλίου, τί χρήσιμον ἦν τοσοῦτον μεταλαμβάνεσθαι
τοὺς τόπους ἐφ' ὅσον ἡ διάταξις οὐ διέτεινε. τό τε πρὸς Θύμβρης διέλαχον Λύκιοι. οἰκειότερόν ἐστι τῷ
παλαιῷ κτίσματι. πλησίον γάρ ἐστι τὸ πεδίον ἡ Θύμβρα. καὶ ὁ δι' αὐτοῦ ῥέων ποταμὸς Θύμβριος. ἐμ-
βάλλων εἰς τὸν Σκάμανδρον, κατὰ τὸ Θυμβραίου Ἀπόλλωνος ἱερόν. τοῦ δὲ νῦν Ἰλίου, καὶ πεντήκοντα
σταδίους διέχει, ὅ τε Ἐρινεὸς τραχύς τις τόπος, καὶ ἐρινεώδης, τῷ μὲν ἀρχαίῳ κτίσματι ὑποπέπτωκεν.
» Λαὸν δὲ στῆσον παρ' ἐρινεὸν, ἔνθα μάλιστα (ὥς τε τὸ
» Ἀμβατός ἐστι πόλις. καὶ ἐπίδρομον ἔπλετο τεῖχος,

Οἰκείως ἂν λέγοιτο Ἀνδρομάχη. τῆς δὲ νῦν πόλεως πάμπολυ ἀφέστηκε. καὶ ὁ φηγὸς δὲ μικρὸν κα-
τωτέρω ἐστὶ τοῦ Ἐρινεοῦ. ἐφ' οὗ φασὶν ὁ Ἀχιλλεύς Ὄφρα δ' ἐγὼ μετ' Ἀχαιοῖσι πολέμιζον
» Οὐκ ἐθέλεσκε μάχην ἀπὸ τείχεος ὀρνύμεν Ἕκτωρ
» Ἀλλ' ὅσον ἐς Σκαιάς τε πύλας, καὶ φηγὸν ἵκανε.

Καὶ μὴν τό γε ναύσταθμον τὸ νῦν ἔτι λεγόμενον, πλησίον οὕτως ἐστὶ τῆς νῦν πόλεως ὥς τε θαυμά-
ζειν εἰκότως ἄν τινα, τῶν μὲν, τῆς ἀπονοίας. τῶν δὲ τοὐναντίον τῆς ἀψυχίας, ἀπονοίας μὲν εἰ τοσοῦτον
χρόνον ἀτείχιστον αὐτὸ εἶχον πλησίον οὔσης τῆς πόλεως, καὶ τοσούτου πλήθους τοῦ τ' ἐν αὐτῇ καὶ τοῦ
ἐπικουρικοῦ. νεωστὶ γὰρ γεγονέναι φασὶ τὸ τεῖχος. ἢ οὐδ' ἐγένετο. ὁ δὲ πλάσας ποιητὴς ἠφάνισεν ὡς
Ἀριστοτέλης φησίν. ἀψυχίας δὲ, εἰ γενομένου τοῦ τείχους, ἐτειχομάχουν. ὡς εἰσέπεσον εἰς αὐτὸ τὸ ναύ-
σταθμον καὶ προσεμάχοντο ταῖς ναυσὶν, ἀτείχιστον δὲ ἔχοντες, οὐκ ἐθάρρουν προσιόντες πολιορκεῖν. μι-
κροῦ τοῦ διαστήματος ὄντος. ἔστι γὰρ τὸ ναύσταθμον πρὸς Σιγείῳ. πλησίον δὲ, καὶ ὁ Σκάμανδρος ἐκδί-
δωσι, διέχων τοῦ Ἰλίου σταδίους εἴκοσιν. εἰ δὲ φήσει τις τὸν νῦν λεγόμενον Ἀχαιῶν λιμένα εἶναι τὸ ναύ-
σταθμον ἐγγυτέρω τινὰ λέξει τόπον ὅσον δώδεκα σταδίους διεστῶτα τῆς πόλεως ἐπὶ θαλάττῃ πεδίον νῦν
προστιθείς. διότι τοῦτο πᾶν πρόχωμα τῶν ποταμῶν ἐστι, τὸ πρὸ τῆς πόλεως ἐπὶ θαλάττῃ πεδίον. ὥς
τε εἰ δώδεκα σταδίων ἐστὶ νῦν τὸ μεταξὺ τότε, καὶ τῷ ἡμίσει ἔλαττον ὑπῆρχε. καὶ ἡ διήγησις δ' ἡ πρὸς
τὸν Εὔμαιον ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως διασκευασθεῖσα, μέγα ἐμφαίνει τὸ διάστημα μέχρι τῆς πόλεως ἀπὸ τοῦ
ναυστάθμου. ὡς ὅς θ' ὑπὸ Τροίῃ λόχον ἤγομεν. φησὶ γὰρ ὑποβάς. λίην γὰρ νεῶν ἑκὰς ἤλθομεν.
ἐπί τε τὴν κατασκοπὴν πέμπονται γνωσόμενοι. πότερον μενοῦσι παρὰ νηυσὶν ἀπόπροθεν πολὺ
» ἀπεσπασμένοι τοῦ οἰκείου τείχους. Ἦε πόλιν δὲ ἂψ ἀναχωρήσουσι, Καὶ ὁ Πολυδάμας.
» Ἀμφὶ μάλα φράζεσθε φίλοι κέλομαι γὰρ ἔγωγε.
» Ἄστυ δὲ νῦν ἰέναι ἑκὰς δ' ἀπὸ τείχεος εἰμέν. παρατίθησι δ' ὁ Δημήτριος, καὶ τὴν Ἀλεξανδρίνην
Ἑστιαίαν μάρτυρα. τὴν συγγράψασαν περὶ τῆς Ὁμήρου Ἰλιάδος. πυνθανομένην εἰ περὶ τὴν νῦν πόλιν
ὁ πόλεμος συνέστη, καὶ τὸ Τρωϊκὸν πεδίον τὸ μεταξὺ τῆς πόλεως, καὶ τῆς θαλάττης ὁ ποιητὴς φράζει.
τὸ μὲν γὰρ πρὸ τῆς νῦν πόλεως ὁρώμενον πρόχωμα εἶναι τῶν ποταμῶν, ὕστερον γεγονός. Ὅ τε
» Ὃς Τρώων σκοπὸς ἷζε ποδωκείῃσι πεποιθώς. (Πολίτης
» Τύμβῳ ἐπ' ἀκροτάτῳ Αἰσυήταο γέροντος.

Μάταιος ἦν, καὶ γὰρ εἰ ἐπ' ἀκροτάτῳ, ὅμως πολὺ ἂν μείζονος ὕψους τῆς ἀκροπόλεως ἐσκόπευεν,
ἐξ ἴσου σχεδόν τι διαστήματος. μὴ δεόμενος μηδὲν τῆς ποδωκείας τὸν ἀσφαλοῦς χάριν. ὁ γὰρ πέντε διέχει στα-
δίους ὁ νῦν δεικνύμενος τοῦ Αἰσυήτου τάφος κατὰ τὴν εἰς Ἀλεξάνδρειαν ὁδόν. οὐδ' ἡ τοῦ Ἕκτορος δὲ περι-
δρομὴ ἡ περὶ τὴν πόλιν ἔχει τι εὔλογον. οὐ γάρ ἐστι περίδρομος ἡ νῦν διὰ τὴν συνεχῆ ῥάχιν. ἡ δὲ πα-
λαιὰ ἔχει περιδρομήν. οὐδὲν δ' ἴχνος σώζεται τῆς ἀρχαίας πόλεως. εἰκότως. ὅ τε γοῦν ἐκπεπορθημένων
τῶν κύκλῳ πόλεων οὐ τελέως δὲ κατεσπασμένων. ταύτης δ' ἐκ βάθρων ἀνεστραμμένης, οἱ λί-
θοι πάντες εἰς τὴν ἐκείνων ἀνάληψιν μετηνέχθησαν. Ἀρχεάνακτα γοῦν φασὶ τὸν Μιτυληναῖον
ἐκ τῶν ἐκεῖθεν λίθων τὸ Σίγειον ἐκτειχίσαι. τοῦτο δὲ κατέσχον μὲν Ἀθηναῖοι. Φρύνωνα τὸν Ὀλυμπιονί-
κην πέμψαντες Λεσβίων ἐπιδικαζομένων σχεδόν τι τῆς πάσης Τρῳάδος. ὧν δὴ, καὶ κτίσματά εἰσιν αἱ
πλεῖσται τῶν κατοικιῶν, αἱ μὲν συμμένουσαι καὶ νῦν αἱ δ' ἠφανισμέναι, Πιττακὸς δ' ὁ Μιτυληναῖος
εἷς τῶν ἑπτὰ σοφῶν λεγομένων πλεύσας ἐπὶ τὸν Φρύνωνα στρατηγὸν, διεπολέμει τέως, διατιθεὶς,
καὶ πάσχων κακῶς. ὅ, τε καὶ Ἀλκαῖός φησιν ὁ ποιητὴς ἐν τινι ἀγῶνι κακῶς φερόμενον ἑαυτὸν τὰ
ὅπλα ῥίψαντα φυγεῖν. λέγει δὲ πρός τινα κήρυκα κελεύσας ἀγγεῖλαι τοῖς ἐν οἴκῳ Ἀλκαῖος σῶος ἄ-
ροι ἔνθα δ' οὐκ αὐτὸν τὸν ἀληκτήριν ἐς γλαυκώπιν ἱερὸν ὃν ἐκρέμασαν Ἀττικοὶ ὕστερον. δ' ἐκ μονομα-
χίας προκαλεσαμένου τοῦ Φρύνωνος, ἁλιευτικὴν ἀναλαβὼν σκευὴν συνέδραμε. καὶ τῷ μὲν ἀμ-
φιβλήστρῳ περιέβαλε. τῇ τριαίνῃ δὲ, καὶ τῷ ξιφιδίῳ. ἔπειρε, καὶ ἀνεῖλε μένοντος δ' ἔτι τοῦ πολέμου,
Περίανδρος διαιτητὴς αἱρεθεὶς ὑπὸ ἀμφοῖν, ἔλυσε τὸν πόλεμον. ψεύδεσθαι δὲ, ψεύσασθαί φησιν ὁ Δη-
μήτριος, ἱστοροῦντα ἐκ τῶν λίθων τῶν ἐξ Ἰλίου, περὶ ἀνδρῶν περιτειχίσαι τὸ Ἀχίλλειον τοῖς Ἀ-
θηναίοις βοηθοῦντα τοῖς περὶ Πιττακόν. ἐπετειχίσθη μὲν γὰρ ὑπὸ τῶν Μιτυληναίων
τὸν τόπον περὶ τῷ Σιγείῳ, οὐ μὴν ἐκ λίθων τοιούτων οὐδ' ὑπὸ τοῦ Περιάνδρου πῶς γὰρ ἂν

αἱρεθῆναι διαιτητὴν τὸν περιάνδρον. ἀχίλλειον δ' ἐστὶν ὁ τόπος ἐν ᾧ τὸ ἀχιλλέως μνῆμα, κατοικία μικρά. κατέσκαπται δὲ καὶ τὸ σίγειον ὑπὸ τῶν ἰλιέων ἀπειθούντων. ὑπ' ἐκείνοις γὰρ ἦν ὕστερον ἡ παραλία πᾶσα ἡ μέχρι δαρδάνου. καὶ νῦν ὑπ' ἐκείνοις ἐστί. τὸ δὲ παλαιὸν ὑπὸ τοῖς αἰολεῦσιν ἦν τὰ πλεῖστα. ὥστε ἔφορος οὐκ ὀκνεῖ, πᾶσαν τὴν ἀπὸ ἀβύδου μέχρι κύμης καλεῖν αἰολίδα. θουκυδίδης δέ φησιν ἀφαιρεθῆναι τὴν τροίαν ὑπὸ ἀθηναίων τοὺς μιτυληναίους ἐν τῷ πελοποννησιακῷ πολέμῳ τῷ πάχητι. λέγουσι δ' οἱ νῦν ἰλιεῖς καὶ τοῦτο. ὡς οὐδὲ τελέως συνέβαινεν ἠφανίσθαι τὴν πόλιν κατὰ τὴν ἅλωσιν ὑπὸ τῶν ἀχαιῶν. οὐδ' ἐξελείφθη οὐδέποτε. αἱ γοῦν λοκρίδες παρθένοι, μικρὸν ὕστερον ἀρξάμεναι ἐπέμποντο κατ' ἔτος. καὶ ταῦτα δ' οὐχ ὁμηρικά. οὔτε γὰρ τῆς κασσάνδρας φθορὰν οἶδεν ὅμηρος. ἀλλ' ὅτι μὲν παρθένος ἦν ὑπ' ἐκεῖνον τὸν χρόνον λέγει.

» Πέφνε γὰρ ὀθρυονῆα καβησόθεν ἔνδον ἐόντα.
» Ὃς ῥα νέον πολέμοιο μετὰ κλέος εἰληλούθει.
» Ἤτεε γὰρ πριάμοιο θυγατρῶν εἶδος ἀρίστην
» Κασσάνδρην ἀνάεδνον.

Βίας δὲ οὐδὲ μέμνηται. οὐδ' ὅτι ἡ φθορὰ τοῦ αἴαντος ἡ ἐν τῇ ναυαγίᾳ κατὰ μῆνιν ἀθηνᾶς συνέβη, ἢ κατὰ τοιαύτην αἰτίαν. ἀλλ' ἀπεχθανόμενον μὲν τῇ ἀθηνᾷ κατὰ τὸ κοινὸν εἴρηκεν. ἁπάντων γὰρ εἰς τὸ ἱερὸν ἀσεβησάντων. ἅπασιν ἐμήνιεν. ἀπολέσθαι δὲ ὑπὸ ποσειδῶνος μεγαλορρημονήσαντα. τὰς δὲ λοκρίδας πεμφθῆναι περσῶν ἤδη κρατούντων συνέβη. οὕτω μὲν δὴ λέγουσιν οἱ ἰλιεῖς. ὅμηρος δὲ ῥητῶς τὸν ἀφανισμὸν τῆς πόλεως εἴρηκεν.

» Ἔσσεται ἦμαρ ὅταν ποτ' ὀλώλῃ ἴλιος ἱρή.
» Ἦ γὰρ καὶ πριάμοιο πόλιν διεπέρσαμεν αἰπὴν
» Εἴπερ βουλῇ καὶ μύθοισι. Πέρθετο δὲ
» Πριάμοιο πόλις δεκάτῳ ἐνιαυτῷ.

Καὶ τὰ τοιαῦτα δὲ τοῦ αὐτοῦ τίθενται τεκμήρια. οἷον ὅτι τῆς ἀθηνᾶς τὸ ξόανον νῦν μὲν ἑστηκὸς ὁρᾶται. ὅμηρος δὲ καθήμενον ἐμφαίνει. πέπλον γὰρ κελεύει θεῖναι ἀθηναίης ἐπὶ γούνασιν. ὡς καὶ μήποτε γούνασιν οἷσιν ἐφέζεσθαι φίλον υἱόν, βέλτιον γὰρ οὕτως, ἢ ὥς τινες δέχονται ἀντὶ τοῦ παρὰ τοῖς γόνασι θεῖναι. παρατιθέντες τὸ,

» Ἡ δ' ἧσται ἐπ' ἐσχάρῃ ἐν πυρὸς αὐγῇ. ἀντὶ τοῦ παρ' ἐσχάρῃ. τίς γὰρ ἂν νοηθείη πέπλου ἀνάθεσις παρὰ τοῖς γόνασι. καὶ οἱ τὴν προσῳδίαν δὲ διαστρέφοντες. γουνᾶσιν, ὥσθ' ἱκέσιας ὁποτέρως ἂν δέξωνται, ἀπεραντολογοῦσιν. εἴθ' ἱκετεύοντές τε φρένας. πολλὰ δὲ τῶν ἀρχαίων τῆς ἀθηνᾶς ξοάνων καθήμενα δείκνυται, καθάπερ ἐν φωκαίᾳ. μασσαλίᾳ. ῥώμῃ. χίῳ. ἄλλαις πλείοσιν. ὁμολογοῦσι δὲ καὶ οἱ νεώτεροι τὸν ἀφανισμὸν τῆς πόλεως. ὧν ἐστὶ καὶ λυκοῦργος ὁ ῥήτωρ. μνησθεὶς γὰρ τῆς ἰλιέων πόλεως φησί. τίς οὐκ ἀκήκοεν, ὡς ἅπαξ ὑπὸ τῶν ἑλλήνων κατεσκάφη ἀοίκητον οὖσαν, εἰκάζουσι δὲ τοὺς ὕστερον ἀνακτίσαι διανοουμένους οἰωνίσασθαι τὸν τόπον ἐκεῖνον. εἴτε διὰ τὰς συμφορὰς, εἴτε καὶ καταρασαμένου τοῦ ἀγαμέμνονος κατὰ παλαιὸν ἔθος. καθάπερ καὶ ὁ κροῖσος ἐξελὼν τὴν σιδήνην εἰς ἣν ὁ τύραννος κατέφυγε, γλαυκίας ἀρὰς ἔθετο κατὰ τῶν τειχούντων πάλιν τὸν τόπον. ἐκείνου μὲν οὖν ἀποστῆναι τοῦ χωρίου. ἕτερον δὲ τειχίσαι. πρότερον μὲν οὖν ἄστυ παλιεῖς οἱ τὸ ῥοίτειον κατέχοντες συνῴκισαν πρὸς τῷ σιμόεντι πόλιον. ὃ νῦν καλεῖται πόλισμα. οὐκ ἐν εὐδρεπεῖ τόπῳ. διὸ καὶ τεθραύσθη ταχέως. ἐπὶ δὲ τῶν λυδῶν ἡ νῦν ἐκτίσθη κατοικία, καὶ τὸ ἱερόν. οὐ μὴν πόλις γε ἦν. ἀλλὰ πολλοῖς χρόνοις ὕστερον, καὶ κατ' ὀλίγον, ὡς εἴρηται τὴν αὔξησιν ἔσχεν. ἑλλάνικος δὲ χαριζόμενος τοῖς ἰλιεῦσιν οἷος ἐκείνου μῦθος συνηγορεῖ. τὸ τὴν αὐτὴν εἶναι πόλιν τὴν νῦν τῇ τότε. τὴν δὲ χώραν ἀφανισθείσης τῆς πόλεως, οἵ τε σίγειον καὶ τὸ ῥοίτειον ἔχοντες διενείμαντο, καὶ τῶν ἄλλων, ὡς ἕκαστοι τῶν πλησιοχώρων ἀπέδοσαν ἀνοικισθείσης. πολυπίδακον δὲ τὴν ἴδην ἰδίως οἴονται λέγεσθαι. διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐξ αὐτῆς ῥεόντων ποταμῶν. καθ' ἃ μάλιστα ἡ δαρδανικὴ ὑποπέπτωκεν αὐτῇ. καὶ μέχρι σκήψεως. καὶ τὰ περὶ ἴλιον. ἔμπειρος δ' ὢν τῶν τόπων, ὡς ἂν ἐπιχώριος ἀνὴρ ὁ δημήτριος, τότε μὲν οὕτως λέγει περὶ αὐτῶν. ἔστι γὰρ λόφος τις τῆς ἴδης κότυλος. ὑπέρκειται δ' οὗτος ἑκατόν που καὶ εἴκοσι σταδίοις σκήψεως. ἐξ οὗ ὅ τε σκάμανδρος ῥεῖ, καὶ ὁ γρανικὸς, καὶ αἴσηπος. οἱ μὲν, πρὸς ἄρκτον, καὶ τὴν προποντίδα ἐκ πλειόνων πηγῶν συλλειβόμενοι. ὁ δὲ σκάμανδρος ἐπὶ δύσιν ἐκ μιᾶς πηγῆς. πᾶσαι δ' ἀλλήλαις πλησιάζουσιν ἐν εἴκοσι σταδίων περιεχόμεναι διαστήματι. πλεῖστον δ' ἀφέστηκεν ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τὸ τοῦ αἰσήπου τέλος, σχεδόν τι καὶ πεντακοσίους σταδίους. παρέχει δὲ λόγον, ὥς φησιν ὁ ποιητής.

» Κρουνὼ δ' ἵκανον καλλιρρόω ἔνθα δὲ πηγαὶ
» Δοιαὶ ἀναΐσσουσι σκαμάνδρου δινήεντος.
» Ἡ μὲν, γάρ θ' ὕδατι λιαρῷ ῥέει. ὃ ἐστὶ θερμῷ. ἐπιφέρει δὲ, Ἀμφὶ δὲ καπνὸς γίνεται ἐξ αὐτῆς ὡσεὶ πυρός.
» Ἡ δ' ἑτέρη θέρει προρέει. εἰκυῖα χαλάζῃ. Ἢ χιόνι ψυχρῷ. οὔτε γὰρ θερμὰ νῦν ἐν τῷ τόπῳ εὑρίσκεται. οὐδ' ἡ τοῦ σκαμάνδρου πηγὴ ἐνταῦθα. ἀλλ' ἐν τῷ ὄρει. καὶ μία. ἀλλ' οὐ δύο. τὰ μὲν οὖν θερμὰ ἐκλελεῖφθαι εἰκὸς, τὸ δὲ ψυχρὸν κατὰ διάδοσιν ὑπεκρέον ἐκ τοῦ σκαμάνδρου κατὰ τοῦτο ἀνατέλλειν τὸ χωρίον ἢ καὶ διὰ τὸ πλησίον εἶναι τοῦ σκαμάνδρου. καὶ τοῦτο τὸ ὕδωρ λέγεσθαι τοῦ σκαμάνδρου πηγήν. οὕτω γὰρ λέγονται πλείους πηγαὶ τοῦ αὐτοῦ ποταμοῦ. συμπίπτει δ' εἰς αὐτὸν ὁ ἄνδριος ἀπὸ τῆς καρησηνῆς. ὀρει-

τῆς τινος πολλαῖς κώμαις συνῳκουμένης καὶ γεωργουμένης καλῶς παρακειμένης τῇ δαρδανι-
κῇ μέχρι τῶν περὶ ζέλειαν, καὶ πιτύειαν τόπων ὠνομάσθαι δὲ τὴν χώραν φασὶν ἀπὸ τοῦ καρησοῦ ποταμοῦ
» ὃν ὠνόμασεν ὁ ποιητής. Ῥῆσός θ' ἑπτάπορός τε κάρησός τε ῥόδιός τε. Τὴν δὲ πόλιν κατεσπάσθαι
τὴν ὁμώνυμον τῷ ποταμῷ. πάλιν δ' οὗτός φησιν ὁ μὲν ῥῆσος ποταμὸς νῦν καλεῖται ῥοείτης. εἰ
μὴ ἄρα ὁ εἰς τὸν γρανικὸν ἐμβάλλων ῥῆσός ἐστιν. ἑπτάπορος δὲ, ὃν, καὶ πολύπορον λέγουσιν, ἑπτάκις
διαβαινόμενος ἐκ τῶν περὶ τὴν καλὴν πεύκην χωρίων, ἐπὶ μελαινὰς κώμην ἰοῦσι, καὶ τὸ ἀσκληπιεῖ-
ον ἵδρυμα λυσιμάχου. περὶ δὲ τῆς καλῆς πεύκης, ἄτταλος ὁ πρῶτος βασιλεύσας. οὕτως γράφει. τὴν
μὲν περίμετρον εἶναί φησι ποδῶν τεττάρων καὶ εἴκοσι. τὸ δὲ ὕψος ἀπὸ μὲν ῥίζης ἐπὶ ἑξήκοντα,
καὶ ἑπτὰ πόδας. εἶτ' εἰς τρία σχιζομένην ἴσον ἀλλήλων διέχοντα. εἶτα πάλιν συναγομένην εἰς
μίαν κορυφήν. ἀποτελοῦσαν τό τε πᾶν ὕψος δυοῖν πλέθρων, καὶ πεντεκαίδεκα πηχῶν, ἀδραμυττίου
διέχει πρὸς ἄρκτον ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα σταδίους. κάρησος δ' ἀπὸ μαλοῦντος ῥεῖ τόπου τινός. κει-
μένου μεταξὺ παλαισκήψεως καὶ ἀχαιοῦ τῆς τενεδίων περαίας. ἐμβάλλει δὲ εἰς τὸν αἴσηπον.
ῥόδιος δὲ ἀπὸ κλεανδρίας καὶ γόρδου, ἃ διέχει τῆς καλῆς πεύκης ἑξήκοντα σταδίους. ἐμβάλλει δ'
εἰς τὸν αἴνιον. τοῦ δ' αὐλῶνος τοῦ περὶ τὸν αἴσηπον ἐν ἀριστερᾷ τῆς ῥύσεως αὐτοῦ, πρῶτόν ἐστι πολί-
χνα τειχήρης χωρίον. εἶθ' ἡ πάλαι σκῆψις εἶτ' ἀλαζόνιον, τοῦτ' ἤδη πεπλασμένον πρὸς τὴν τῶν
ἀλαζόνων ὑπόθεσιν. περὶ ὧν εἰρήκαμεν. εἶτα κάρησος ἔρημος. καὶ ἡ καρησηνή. καὶ ὁμώνυμος πο-
ταμός. ποιῶν καὶ αὐτὸς αὐλῶνα ἀξιόλογον ἐλάττω δὲ τοῦ περὶ τὸν αἴσηπον. τὰ δ' ἑξῆς ἤδη τὰ τῆς
ζελείας ἐστὶ πεδία. καὶ ὀροπέδια καλῶς γεωργούμενα. ἐν δεξιᾷ δὲ τοῦ αἰσήπου μεταξὺ πολίχνας
τε καὶ πάλαι σκήψεως ἡ νέα κώμη, καὶ ἀργύρια, καὶ τοῦτο πάλιν πλάσματα τὰ ἀργύρια πρὸς τὴν
αὐτὴν ὑπόθεσιν. ὅπως σωθείη τό, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη. ἡ οὖν ἀλύβη που ἢ ἀλόπη. ἢ ὅπως
βούλονται παρονομάζειν. ἐχρῆν γὰρ καὶ τοῦτο πλάσαι παρατριψαμένους τὸ μέτωπον, καὶ μὴ
χωλὸν ἐᾶν, καὶ εὔθυμον πρὸς ἔλεγχον ἅπαξ ἤδη ἀποτετολμηκότας. ταῦτα μὲν οὖν ἔνστασιν ἔχει τοι-
αύτην. τἆλλα δὲ ἀπολαμβάνομεν. ἢ τά γε πλεῖστα δεῖν προσέχειν ὡς ἀνδρὶ ἐμπείρῳ καὶ ἐν-
τοπίῳ. φροντίσαντί τε περὶ τούτων τοσοῦτον, ὥστε τριάκοντα βίβλους συγγράψαι στίχων ἐξή-
γησιν. μικρῷ πλειόνων ἑξήκοντα τοῦ καταλόγου τῶν τρώων. φησὶ γοῦν τὴν πάλαι σκῆψιν τῆς
μὲν αἰνέας διέχειν πεντήκοντα σταδίους. τοῦ δὲ ποταμοῦ τοῦ αἰσήπου τριάκοντα. τῆς δὲ πάλαι
σκήψεως ταύτης διατετεῖναι τὴν ὁμωνυμίαν, καὶ εἰς ἄλλους πλείους τόπους. ἐπάνιμεν δὲ, ἐπὶ τὴν
παραλίαν ὅθεν παρεκλίναμεν. ἔστι δ' ἡ μετὰ τὴν σιγιάδα ἄκραν, καὶ τὸ ἀχίλλειον ἡ τενεδίων πε-
ραία τὸ ἀχαιὸν, καὶ αὐτὴ ἡ τένεδος. οὐ πλείους τῶν τετταράκοντα σταδίων διέχουσα τῆς ἠπείρου. ἔ-
χει δὲ τὴν περίμετρον ὅσον ὀγδοήκοντα σταδίων. καὶ πόλιν αἰολίδα, καὶ λιμένας, δύο, καὶ ἱερὸν τοῦ
σμινθέως ἀπόλλωνος. καθάπερ καὶ ὁ ποιητὴς μαρτυρεῖ.

» Τενέδοιό τε ἶφι ἀνάσσεις.

Σμινθεῦ. περίκειται δ' αὐτῇ νησία πλείω, καὶ δὴ καὶ δύο ἃ καλοῦσι καλύδνας, κειμένας κατὰ
τὸν ἐπὶ λεκτὸν πλοῦν, καὶ αὐτὴν δὲ τὴν τένεδον καλύδναν τινὲς εἶπον. ἄλλοι δὲ λευκόφρυν. εἰσὶ καὶ
ἕτερα νησία περὶ αὐτήν. μυθεύουσι δ' ἐν αὐτῇ τὰ περὶ τὸν τέννην. ἀφ' οὗ, καὶ τοὔνομα τῇ νήσῳ. καὶ τὰ
περὶ τὸν κύκνον. θρᾷκα τὸ γένος. πατέρα δ' ὥς τινες τοῦ τέννου βασιλέα δὲ κολωνῶν, ἦν δὲ τῷ ἀχαιῷ συνε-
χὴς ἥ τε λάρισα, καὶ κολωναὶ τῆς τενεδίας οὖσαι πρότερον καὶ ἡ νῦν χρύσα ἐφ' ὕψους τινὸς πετρώδους
ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἱδρυμένη. καὶ ἡ ἁμαξιτὸς ἡ τῷ λεκτῷ ὑποκειμένη συνεχής. νῦν δ' ἡ ἀλεξάν-
δρεια συνεχής ἐστι τῷ ἀχαιῷ. τὰ δὲ πολίσματα ἐκεῖνα συνῳκισμένα τυγχάνει καθάπερ καὶ ἄλλα πλείω
τῶν φρουρίων εἰς τὴν ἀλεξάνδρειαν ὧν κεβρήνη, καὶ νεανδρία ἐστὶ, καὶ τὴν χώραν ἔχουσιν ἐκεῖνοι. ὁ δὲ τό-
πος ἐν ᾧ νῦν κεῖται ἡ ἀλεξάνδρεια σιγία ἐκαλεῖτο. ἐν δὲ τῇ χρύσῃ ταύτῃ, καὶ τὸ τοῦ σμινθέως ἀπόλ-
λωνός ἐστιν ἱερόν. καὶ τὸ σύμβολον τὸ τὴν ἐτυμότητα τοῦ ὀνόματος σῶζον, ὁ μῦς ὑπόκειται τῷ πο-
δὶ τοῦ ξοάνου. σκόπα δ' ἐστὶν ἔργα, τοῦ παρίου. συνοικειοῦσι δὲ, καὶ τὴν ἱστορίαν εἰς τὸν μῦθον, τού-
τῳ τῷ τρόπῳ τὴν περὶ τῶν μυῶν. τοῖς γὰρ ἐκ τῆς κρήτης ἀφιγμένοις τεύκροις οὓς πρῶτος παρέ-
δωκε καλλῖνος ὁ τῆς ἐλεγείας ποιητής, ἠκολούθησαν δὲ πολλοὶ, χρησμὸς ἦν αὐτόθι ποιήσασθαι τὴν
μονὴν ὅπου ἂν οἱ γηγενεῖς αὐτοῖς ἐπιθῶνται. συμβῆναι δὲ τοῦτ' αὐτοῖς φασὶ περὶ ἁμαξιτὸν, νύκτωρ
γὰρ πολὺ πλῆθος τῶν ἀρουραίων μυῶν ἐξανθῆσαν. διαφαγεῖν ὅσα σκύτινα τῶν τε ὅπλων καὶ τῶν
χρηστηρίων. τοὺς δὲ αὐτόθι μεῖναι. τούτους δὲ, καὶ τὴν ἴδην ἀπὸ τῆς ἐν κρήτῃ κατονομάσαι. ἡρακλείδης δ'
ὁ ποντικὸς πληθύοντάς φησι τοὺς μύας περὶ τὸ ἱερὸν νομισθῆναί τε ἱερούς. καὶ τὸ ξόανον οὕτω κα-
τασκευασθῆναι βεβηκὸς ἐπὶ τῷ μυΐ. ἄλλοι δ' ἐκ τῆς ἀττικῆς ἀφῖχθαί τινα τεῦκρόν φασιν ἐκ δήμου
τρώων. ὃς νῦν ξυπετέων λέγεται. τεύκρους δὲ μηδένας ἐλθεῖν ἐκ τῆς κρήτης. τῆς δὲ πρὸς τοὺς
ἀττικοὺς ἐπιπλοκῆς τῶν τρώων τιθέασι σημεῖον καὶ τὸ παρ' ἀμφοτέροις ἐριχθόνιόν τινα γενέ-
σθαι τῶν ἀρχηγετῶν. λέγουσι μὲν οὖν οὕτως οἱ νεώτεροι. τοῖς δ' ὁμήρου μᾶλλον ἔπεσι συμφωνεῖ-
τὰ ἐν τῷ θήβης πεδίῳ, καὶ τῇ αὐτόθι χρύσῃ ἱδρυμένῃ ποτὲ δεικνύμενα ἴχνη. περὶ ὧν αὐτίκα ἐ-

ρουμεν. πολλαχοῦ δ' ἐστὶ τὸ τοῦ σμινθέως ὄνομα. καὶ γὰρ περὶ αὐτὴν τὴν ἁμαξιτὸν χωρὶς τοῦ κατὰ τὸ ἱερὸν σμιν-
θίου, δύο τόποι καλοῦνται σμίνθια. καὶ ἄλλοι δ' ἐν τῇ πλησίον λαρισσαίᾳ. καὶ ἐν τῇ παριανῇ δ' ἐστὶ
χωρίον τὰ σμίνθια καλούμενα. καὶ ἐν ῥόδῳ, καὶ ἐν λίνδῳ. καὶ ἄλλοθι δὲ πολλαχοῦ. καλοῦσι δὲ νῦν
τὸ ἱερὸν σμίνθιον. χωρὶς δὲ καὶ τὸ ἀλήσιον πεδίον οὐ μέγα ἐν τοῖς τοῦ λέκτου. καὶ τὸ τραγασαῖον ἁλοπή-
γιον αὐτόματον τοῖς ἐτησίαις πηγνύμενον πρὸς ἁμαξιτῷ. ἐπὶ δὲ τῷ λέκτῳ βωμὸς τῶν δώδεκα θεῶν
δείκνυται. καλοῦσι δ' ἀγαμέμνονος ἵδρυμα. ἐν ἐπόψει δὲ τῷ ἰλίῳ ἐστὶ τὰ χωρία ταῦτα, ὡς ἐν διακοσίοις
σταδίοις, ἢ μικρῷ πλείοσιν. ὡς δ' αὔτως καὶ τὰ περὶ ἄβυδον ἑκατέρου μέρους. μικρὸν δ' ὅμως ἐγγυ-
τέρω ἡ ἄβυδος. κάμψαντι δὲ τὸ λέκτον, ἐλλογιμώταται πόλεις τῶν αἰολέων, καὶ ὁ ἀδραμυττηνὸς κόλ-
πος ἐκδέχεται. ἐν ᾧ τοὺς πλείους τῶν λελέγων κατοικίζων ὁ ποιητὴς φαίνεται. καὶ τοὺς κίλικας δι-
ττοὺς ὄντας. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ τῶν μιτυληναίων ἐστὶν αἰγιαλός. κώμας τινὰς ἔχων τῶν κατὰ τὴν ἤπει-
ρον τῶν μιτυληναίων. τὸν δὲ αὐτὸν κόλπον, καὶ ἰδαῖον λέγουσιν. ἡ γὰρ ἀπὸ τοῦ λέκτου ῥάχις ἀνατεί-
νουσα πρὸς τὴν ἴδην, ὑπέρκειται τῶν πρώτων τοῦ κόλπου μερῶν. ἐν οἷς πρῶτον τοὺς λέλεγας ὁ ποιη-
τὴς ἱδρυμένους πεποίηκεν. εἴρηται δὲ περὶ αὐτῶν καὶ πρότερον. καὶ νῦν δὲ προσληπτέον, ὅτι πήδα-
σόν τινα λέγει πόλιν αὐτῶν ὑπὸ ἄλτῃ τεταγμένων.

» Ἄλτεω. ὃς λελέγεσσι φιλοπτολέμοισιν ἀνάσσει.
» Πήδασον αἰπήεσσαν ἔχων ἐπὶ σατνιόεντι.

Καὶ νῦν ὁ τόπος δείκνυται τῆς πόλεως ἔρημος. γράφουσι δέ τινες οὐκ εὖ ὑπὸ σατνιόεντι, ὡς ὑπὸ
ὄρει σατνιόεντι κειμένης τῆς πόλεως. οὐδὲν δ' ἐστὶν ὄρος ἐνταῦθα σατνιόεις προσαγορευόμενον. ἀλλὰ πο-
ταμὸς ἐφ' ᾧ ἵδρυται ἡ πόλις. νῦν δ' ἐστὶν ἐρήμη. ὀνομάζει δὲ τὸν ποταμὸν ὁ ποιητής.

» Σάτνιον γὰρ οὔτασε, δουρὶ ἐνοπίδην.
» Ὃν ἄρα νύμφη τέκε νηῒς ἀμύμων
» Ἤνοπι βουκολέοντι παρ' ὄχθαις σατνιόεντος. Καὶ πάλιν.
» Ναῖε δὲ σατνιόεντος ἐϋρρείταο παρ' ὄχθαις.
» Πήδασον αἰπεινήν. Σατνιόεντα δ' ὕστερον εἶπον. οἱ δὲ, σαφνιόεντα. ἔστι δὲ χείμαρρος

μέγας. ἄξιον δὲ μνήμης πεποίηκεν ὀνομάζων ὁ ποιητὴς αὐτόν. οὗτοι δ' οἱ τόποι συνεχεῖς εἰσι τῇ δαρδα-
νίᾳ καὶ τῇ σκηψίᾳ. ὥσπερ ἄλλη τις δαρδανία. ταπεινοτέρα δέ. ἀσσίων δ' ἐστὶ νῦν καὶ γαργαρέων ἕως τῆς
κατὰ λέσβον θαλάττης. περιεχόμενα τῇ τε ἀντανδρίᾳ καὶ τῇ κεβρηνίων καὶ νεανδριέων καὶ ἀμαξι-
τέων. τῆς μὲν γὰρ ἀμαξιτοῦ, νεανδριεῖς ὑπέρκεινται. καὶ αὐτοὶ ὄντες λέκτου. ἐντὸς μεσογαιότεροί τε καὶ
πλησιέτεροι τῷ ἰλίῳ. διέχουσι γὰρ ἑκατὸν καὶ τριάκοντα σταδίους. τούτων δὲ καθύπερθε κεβρήνιοι.
τούτων δὲ δαρδάνιοι, μέχρι παλαισκήψεως καὶ αὐτῆς τῆς σκήψεως. τὴν δὲ ἄντανδρον ἀλκαῖος μὲν
καλεῖ λελέγων πόλιν. πρῶτα μὲν καὶ ἄντανδρος λελέγων πόλις. ὁ δὲ σκήψιος ἐν ταῖς παρακειμέναις τί-
θησιν. ὥστ' ἐκπίπτοι ἂν εἰς τὴν τῶν κιλίκων. οὗτοι γάρ εἰσι συνεχεῖς τοῖς λέλεξι μᾶλλον. πῶς; τὸ νότιον
πλευρὸν τῆς ἴδης ἀφορίζοντες. ταπεινοὶ δ' ὅμως καὶ οὗτοι καὶ οἱ τῇ παραλίᾳ συνάπτοντες μᾶλλον
τῇ κατὰ ἀδραμύττιον. μετὰ γὰρ τὸ λέκτον τὸ πολυμήδιόν ἐστι χωρίον ἐν τετταράκοντα σταδίοις. εἶτα ἐν
ὀγδοήκοντα. ἄλσος μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάσσης. εἶτ' ἐν ἑκατὸν καὶ τετταράκοντα γάργαρα. κεῖται δὲ
τὰ γάργαρα ἐπ' ἄκρας ποιούσης τὸν ἰδίως ἀδραμυττηνὸν καλούμενον κόλπον. λέγεται γὰρ καὶ πᾶσα
ἡ ἀπὸ λέκτου μέχρι κανῶν παραλία τῷ αὐτῷ τούτῳ ὀνόματι, ἐν ᾧ καὶ ὁ ἐλεατικὸς περιλαμβάνεται.
ἰδίως μέντοι φασὶ τοῦτον ἀδραμυττηνὸν τὸν κλειόμενον ὑπὸ ταύτης τε τῆς ἄκρας, ἐφ' ἧ τὰ γάργαρα
καὶ τῆς πυρρᾶς ἄκρας προσαγορευομένης. ἐφ' ἧ καὶ ἀφροδίσιον ἵδρυται. πλάτος δὲ τοῦ στόματός ἐστιν
ἀπὸ τῆς ἄκρας ἐπὶ τὴν ἄκραν. διάρμα ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων. ἐντὸς δὲ ἥ τε ἄντανδρός ἐστιν ὑπερ-
κείμενον ἔχουσα ὄρος. ὃ καλοῦσιν ἀλεξάνδρειαν. ὅπου τὰς θεὰς κριθῆναι φασὶν ὑπὸ τοῦ πάριδος. καὶ
ὁ ἀσπανεὺς τὸ ὑλοτόμιον τῆς ἰδαίας ὕλης. ἐνταῦθα γὰρ διατίθενται κατάγοντες τοῖς δεομένοις. εἶ-
τα ἄστυρα κώμη, καὶ ἄλσος τῆς ἀστυρηνῆς ἀρτέμιδος ἅγιον. πλησίον δ' εὐθὺς τὸ ἀδραμύττιον. ἀθηναίων
ἄποικος πόλις. ἔχουσα καὶ λιμένα καὶ ναύσταθμον. ἔξω δὲ τοῦ κόλπου καὶ τῆς πυρρᾶς ἄκρας, ἥ τε κισθή-
νη ἐστὶ πόλις ἔρημος ἔχουσα λιμένα ὑπὲρ αὐτῆς ἐν τῇ μεσογαίᾳ. τό τε τοῦ χαλκοῦ μέταλλον. καὶ περ-
περίνα καὶ τράριον. καὶ ἄλλαι τοιαῦται κατοικίαι. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ τῇ ἐφεξῆς, αἱ τῶν μιτυληναίων
κῶμαι. κορυφαντίς τε καὶ ἡράκλεια. καὶ μετὰ ταῦτα ἄττεα. εἶτ' ἀταρνεὺς, καὶ πιτάνη, καὶ αἱ τοῦ
καΐκου ἐκβολαί. ταῦτα δ' ἤδη τοῦ ἐλαϊτῶν κόλπου. καὶ ἔστιν ἐν τῇ περαίᾳ ἡ μηλέα. καὶ ὁ λοιπὸς μέ-
χρι κανῶν κόλπος. λέγομεν δὲ ἀναλαβόντες περὶ τῶν καθέκαστα πάλιν, εἴ τι παραλέλειπται μνήμης
ἄξιον. καὶ πρῶτον περὶ τῆς σκήψεως. ἔστι δ' ἡ μὲν πάλαι σκῆψις ἐπάνω κεβρῆνος κατὰ τὸ μετεωρό-
τατον τῆς ἴδης ἐγγὺς πολίχνης. ἐκαλεῖτο δὲ τότε σκῆψις εἴτ' ἄλλως εἴτ' ἀπὸ τοῦ περίσκεπτον εἶναι τὸν
τόπον. εἰ δεῖ τὰ παρὰ τοῖς βαρβάροις ἐν τῷ τότε ὀνόματα ταῖς ἑλληνικαῖς ἐτυμολογεῖσθαι φω-
ναῖς. ὕστερον δὲ κατωτέρω σταδίοις ἑξήκοντα εἰς τὴν νῦν σκῆψιν μετῳκίσθησαν ὑπὸ σκαμανδρίου τε τοῦ
ἕκτορος. καὶ ἀσκανίου τοῦ αἰνείου παιδός. καὶ δύο γένη ταῦτα βασιλεῦσαι πολὺν χρόνον ἐν τῇ σκή-

ἀεὶ λέγεται. μετὰ ταῦτα δ' εἰς ὀλιγαρχίαν μετέστησαν. εἶτα μιλήσιοι συνεπολιτεύθησαν αὐτοῖς, καὶ δημοκρατικῶς ᾤκουν. οἱ δ' ἀπὸ τοῦ γένους οὐδὲν ἧττον ἐκαλοῦντο βασιλεῖς, ἔχοντές τινας τιμάς. εἶτ' εἰς τὴν ἀλεξάνδρειαν συνεπόλισε τοὺς σκηψίους ἀντίγονος. εἶτ' ἀπέλυσε λυσίμαχος. καὶ ἐπανῆλθον εἰς τὴν οἰκείαν. οἴεται δ' ὁ σκήψιος καὶ βασίλειον τοῦ αἰνείου γεγονέναι τὴν σκῆψιν, μέσην οὖσαν τῆς ὑπὸ τῷ αἰνείᾳ, καὶ λυρνησσοῦ. εἰς ἣν φυγεῖν εἴρηται διωκόμενος ὑπὸ τοῦ ἀχιλλέως. φησὶ γοῦν ἀχιλλεύς.

» Ἦ οὐ μέμνῃ ὅτε πέρ σε βοῶν ἄπο μοῦνον ἐόντα
» Σεῦα κατ' ἰδαίων ὀρέων ταχέεσσι πόδεσσι.
» Κεῖθεν δ' ἐς λυρνησσὸν ὑπέκφυγες.
» Αὐτὰρ ἐγὼ τὴν πέρσα μεθορμηθείς.
» Οὐχ ὁμολογεῖ τῷ περὶ τῶν ἀρχηγετῶν τῆς σκήψεως λόγῳ τῷ λεχθέντι νῦν τὰ περὶ τοῦ αἰνείου θρυλούμενα. περιγενέσθαι γὰρ δὴ τοῦτόν φασιν ἐκ τοῦ πολέμου διὰ τὴν πρὸς πρίαμον δυσμένειαν.
» Αἰεὶ γὰρ πριάμῳ ἐπεμήνιε δίῳ.
» Οὕνεκ' ἄρ' ἐσθλὸν ἐόντα μετ' ἀνδράσιν οὔτι τίεσκε.

Τοὺς δὲ συνάρχοντας ἀντηνορίδας καὶ αὐτὸν τὸν ἀντήνορα διὰ τὴν μενελάου παρ' αὐτῷ ξενίαν. σοφοκλῆς γοῦν ἐν τῇ ἁλώσει τοῦ ἰλίου, παρδαλέαν φησὶ πρὸ τῆς θύρας τοῦ ἀντήνορος προτεθῆναι σύμβολον τοῦ ἀπόρθητον ἐαθῆναι τὴν οἰκίαν. τὸν μὲν οὖν ἀντήνορα, καὶ τοὺς παῖδας μετὰ τῶν περιγενομένων ἐνετῶν εἰς τὴν θρᾴκην περισωθῆναι, κἀκεῖθεν διαπεσεῖν εἰς τὴν λεγομένην κατὰ τὸν ἀδρίαν ἐνετικήν. τὸν δὲ αἰνείαν μετ' ἀγχίσου τοῦ πατρὸς καὶ τοῦ παιδὸς ἀσκανίου λαὸν ἀθροίσαντα πλεῦσαι. καὶ οἱ μὲν, οἰκῆσαι περὶ τὸν μακεδονικὸν ὄλυμπόν φασιν. οἱ δὲ, περὶ μαντίνειαν τῆς ἀρκαδίας, κτίσαι καπύας ἀπὸ κάπυος θέμενον τοὔνομα τῷ πολίσματι. οἱ δ' εἰς αἴγεσταν κατᾶραι τῆς σικελίας σὺν ἐλύμῳ τρωΐ. καὶ ἔρυκα καὶ λιλύβαιον κατασχεῖν. καὶ ποταμοὺς περὶ αἴγεσταν προσαγορεῦσαι, σκάμανδρον, καὶ σιμόεντα. ἐνθένδε δ' εἰς τὴν λατίνην ἐλθόντα μεῖναι κατά τι λόγιον τὸ κελεῦον μένειν ὅπου ἂν τὴν τράπεζαν καταφάγοι. συμβῆναι δὲ τοῖς λατίνοις περὶ τὸ λαουίνιον τοῦτο, ἄρτου μεγάλου τεθέντος ἀντὶ τραπέζης κατὰ ἀπειρίαν, καὶ ἅμα ἀναλωθέντος τοῖς ἐπ' αὐτῷ κρέασιν. ὅμηρος μέντοι συνηγορεῖν οὐδὲ τούτοις ἔοικεν. οὐ δὲ τοῖς περὶ τῶν ἀρχηγετῶν τῆς σκήψεως λεχθεῖσιν. ἐμφαίνει γὰρ μεμενηκότα τὸν αἰνείαν ἐν τῇ τροίᾳ. καὶ διαδεδεγμένον τὴν ἀρχήν, καὶ παραδεδωκότα παισὶ παίδων τὴν διαδοχὴν αὐτῆς. ἠφανισμένου τοῦ τῶν πριαμιδῶν γένους.

» Ἤδη γὰρ πριάμου γενεὴν ἤχθηρε κρονίων.
» Νῦν δὲ δὴ αἰνείαο βίη τρώεσσιν ἀνάξει.
» Καὶ παίδων παῖδες τοί κεν μετόπισθε γένωνται.

Οὕτω δ' οὐδ' ἡ τοῦ σκαμανδρίου διαδοχὴ σώζοιτ' ἄν. πολὺ δὲ μᾶλλον τοῖς ἑτέροις διαφωνεῖ τοῖς μέχρι καὶ ἰταλίας αὐτοῦ τὴν πλάνην λέγουσι. καὶ αὐτόθι ποιοῦσι τὴν καταστροφὴν τοῦ βίου. τινὲς δὲ γράφουσιν αἰνείαο γένος πάντεσσιν ἀνάξει. καὶ παῖδες παίδων τοὺς ῥωμαίους λέγοντες. ἐκ δὲ τῆς σκήψεως οἵ τε σωκρατικοὶ γεγόνασιν, ἔραστος καὶ κορίσκος. καὶ ὁ τοῦ κορίσκου υἱὸς νηλεὺς ἀνὴρ καὶ ἀριστοτέλους ἠκροαμένος καὶ θεοφράστου. διαδεδεγμένος δὲ τὴν βιβλιοθήκην τοῦ θεοφράστου ἐν ᾗ ἦν καὶ ἡ τοῦ ἀριστοτέλους, ὁ γὰρ ἀριστοτέλης τὴν ἑαυτοῦ θεοφράστῳ παρέδωκεν. ᾧπερ καὶ τὴν σχολὴν ἀπέλιπε. πρῶτος ὧν ἴσμεν συναγαγὼν βιβλία. καὶ διδάξας τοὺς ἐν αἰγύπτῳ βασιλέας βιβλιοθήκης σύνταξιν. θεόφραστος δὲ νηλεῖ παρέδωκεν. ὁ δ' εἰς σκῆψιν κομίσας τοῖς μετ' αὐτὸν παρέδωκεν ἰδιώταις ἀνθρώποις. οἳ κατάκλειστα εἶχον τὰ βιβλία. οὐδ' ἐπιμελῶς κείμενα. ἐπειδὴ δὲ ᾔσθοντο τὴν σπουδὴν τῶν ἀτταλικῶν βασιλέων ὑφ' οἷς ἦν ἡ πόλις ζητούντων βιβλία εἰς τὴν κατασκευὴν τῆς ἐν περγάμῳ βιβλιοθήκης, κατὰ γῆς ἔκρυψαν ἐν διώρυγί τινι. ὑπὸ δὲ νοτίας καὶ σητῶν κακωθέντα, ὀψέ ποτε ἀπέδοντο οἱ ἀπὸ τοῦ γένους. ἀπελλικῶντι τῷ τηΐῳ πολλῶν ἀργυρίων, τά τε ἀριστοτέλους καὶ τὰ τε θεοφράστου βιβλία. ἦν δὲ ὁ ἀπελλικῶν φιλόβιβλος μᾶλλον ἢ φιλόσοφος. διὸ καὶ ζητῶν ἐπανόρθωσιν τῶν διαβρωμάτων, εἰς ἀντίγραφα καινὰ μετήνεγκε τὴν γραφὴν ἀναπληρῶν οὐκ εὖ. καὶ ἐξέδωκεν ἁμαρτάδων πλήρη τὰ βιβλία. συνέβη δὲ τοῖς ἐκ τῶν περιπάτων. τοῖς μὲν πάλαι τοῖς μετὰ θεόφραστον ὅλως οὐκ ἔχουσι τὰ βιβλία πλὴν ὀλίγων καὶ μάλιστα τῶν ἐξωτερικῶν. μηδὲν ἔχειν φιλοσοφεῖν πραγματικῶς. ἀλλὰ θέσεις ληκυθίζειν. τοῖς δ' ὕστερον ἀφ' οὗ τὰ βιβλία ταῦτα προῆλθεν. ἄμεινον μὲν ἐκείνων φιλοσοφεῖν, καὶ ἀριστοτελίζειν. ἀναγκάζεσθαι μέντοι τὰ πολλὰ εἰκότως λέγειν. διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἁμαρτιῶν. πολὺ δὲ εἰς τοῦτο καὶ ἡ ῥώμη προσελάβετο. εὐθὺς γὰρ μετὰ τὴν ἀπελλικῶντος τελευτὴν, σύλλας εἷλε τὴν ἀπελλικῶντος βιβλιοθήκην ὁ τὰς ἀθήνας ἑλών. δεῦρο δὲ κομισθεῖσαν, τυραννίων τε ὁ γραμματικὸς διεχειρίσατο φιλαριστοτέλης ὤν. θεραπεύσας τὸν ἐπὶ τῆς βιβλιοθήκης, καὶ βιβλιοπῶλαί τινες γραφεῦσι φαύλοις χρώμενοι καὶ οὐκ ἀντιβάλλοντες. ὅπερ καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων συμβαίνει τῶν εἰς πρᾶσιν γραφομένων βιβλίων καὶ ἐνθάδε καὶ ἐν ἀλεξανδρείᾳ. περὶ μὲν οὖν τούτων ἀπόχρη. ἐκ δὲ τῆς σκήψεως καὶ ὁ δημήτριός ἐστιν. οὗ μεμνήμεθα πολλάκις. ὁ τὸν τρωικὸν διάκοσμον ἐξηγησάμενος γραμματικός. κατὰ

τὸν αὐτὸν χρόνον γεγονὼς Κράτητι καὶ Ἀριστάρχῳ. καὶ μετὰ τοῦτον Μητρόδωρος ἀνὴρ ἐκ τοῦ φιλοσόφου μεταβεβληκὼς ἐπὶ τὸν πολιτικὸν βίον, καὶ ῥητορεύων τὸ πλέον ἐν τοῖς συγγράμμασιν. ἐχρήσατο δὲ φράσεώς τινι χαρακτῆρι καινῷ, καὶ κατεπλήξατο πολλούς. διὰ δὲ τὴν δόξαν ἐν Χαλκηδόνι γάμου λαμπροῦ πένης ὢν ἔτυχε. καὶ ἐχρημάτιζε Καλχηδόνιος. Μιθριδάτην δὲ θεραπεύσας τὸν Εὐπάτορα, συναπῆρεν εἰς τὸν Πόντον μετὰ τῆς γυναικὸς καὶ ἐτιμήθη διαφερόντως. ταχθεὶς ἐπὶ τῆς δικαιοδοσίας ἀφ᾽ ἧς οὐκ ἦν τῷ κριθέντι βουλὴ τῆς δίκης ἐπὶ τὸν βασιλέα. οὐ μέντοι διευτύχησεν. ἀλλ᾽ ἐμπεσὼν εἰς ἔχθραν ἀδικωτέρων ἀνθρώπων, ἀπέστη τοῦ βασιλέως κατὰ τὴν πρὸς Τιγράνην τὸν Ἀρμένιον πρεσβείαν. ὁ δ᾽ ἄκοντα ἀνέπεμψεν αὐτὸν τῷ Εὐπάτορι φεύγοντι ἤδη τὴν προγονικὴν βασιλείαν, κατὰ δὲ τὴν ὁδὸν κατέστρεψε τὸν βίον. εἴθ᾽ ὑπὸ τοῦ βασιλέως εἴθ᾽ ὑπὸ νόσου. λέγεται γὰρ ἀμφότερα. περὶ μὲν τῶν Σκηψίων ταῦτα. μετὰ δὲ Σκῆψιν Ἄνδειρα καὶ Πιονίαι. καὶ ἡ Γαργαρίς. ἔστι δὲ λίθος περὶ τὰ Ἄνδειρα ὃς καιόμενος σίδηρος γίνεται. εἶτα μετὰ γῆς τινος καμινευθεὶς ἀποστάζει ψευδάργυρον. ἣ προσλαβοῦσα χαλκὸν τὸ καλούμενον γίνεται κρᾶμα, ὅ τινες ὀρείχαλκον καλοῦσι. γίνεται δὲ ψευδάργυρος καὶ περὶ τὸν Τμῶλον. ταῦτα δ᾽ ἐστὶ τὰ χωρία ἃ οἱ Λέλεγες κατεῖχον. ὡσαύτως καὶ τὰ περὶ Ἄσσον. ἔστι δὲ ἡ Ἄσσος ἐρυμνή, καὶ εὐτειχὴς ἀπὸ θαλάσσης καὶ τοῦ λιμένος. ὀρθίαν καὶ μακρὰν ἀνάβασιν ἔχουσα. ὥστ᾽ ἐπ᾽ αὐτῆς οἰκείως εἰρῆσθαι δοκεῖ τὸ τοῦ Στρατονίκου τοῦ κιθαριστοῦ.

Ἄσσον ἴθ᾽ ὥς κεν θᾶσσον ὀλέθρου πείραθ᾽ ἵκηαι.

ὁ δὲ λιμὴν χώματι κατεσκεύασται μεγάλῳ. ἐντεῦθεν ἦν Κλεάνθης ὁ Στωικὸς φιλόσοφος, ὁ διαδεξάμενος τὴν Ζήνωνος τοῦ Κιτιέως σχολήν. καταλιπὼν δὲ Χρυσίππῳ τῷ Σολεῖ. ἐνταῦθα δὲ καὶ Ἀριστοτέλης διέτριψε διὰ τὴν πρὸς Ἑρμείαν τὸν τύραννον κηδείαν. ἦν δὲ Ἑρμείας εὐνοῦχος, τραπεζίτου τινὸς οἰκέτης, γενόμενος δ᾽ Ἀθήνησιν ἠκροάσατο καὶ Πλάτωνος καὶ Ἀριστοτέλους. ἐπανελθὼν δὲ τῷ δεσπότῃ συνετυράννησε. πρῶτον μὲν ἐπιθεμένῳ τοῖς περὶ Ἀταρνέα καὶ Ἄσσον χωρίοις. ἔπειτα διεδέξατο ἐκεῖνον. καὶ μετεπέμψατο τόν τε Ἀριστοτέλην καὶ Ξενοκράτην καὶ ἐπεμελήθη αὐτῶν. τῷ δ᾽ Ἀριστοτέλει καὶ θυγατέρα ἀδελφοῦ συνῴκισε. Μέμνων δ᾽ ὁ Ῥόδιος ὑπηρετῶν τότε τοῖς Πέρσαις καὶ στρατηγῶν, προσποιησάμενος φιλίαν καλεῖ πρὸς ἑαυτὸν ξενίας τε ὀνόματι καὶ πραγμάτων προσποιητῶν χάριν. συλλαβὼν δ᾽ ἀνέπεμψεν ὡς τὸν βασιλέα. κἀκεῖ κρεμασθεὶς ἀπώλετο. οἱ φιλόσοφοι δ᾽ ἐσώθησαν φεύγοντες τὰ χωρία ἃ οἱ Πέρσαι κατέσχον. φησὶ δὲ Μυρσίλος Μηθυμναίων κτίσμα εἶναι τὴν Ἄσσον. Ἑλλάνικος δὲ καὶ Αἰολίδα φησίν. ὥστε καὶ τὰ Γάργαρα καὶ ἡ Λαμπωνία Αἰολέων. Ἄσσου γάρ ἐστι κτίσμα τὰ Γάργαρα οὐκ εὖ συνοικούμενα. ἐποίκους γὰρ οἱ βασιλεῖς εἰσήγαγον ἐκ Μιλήτου πόλεως ἐρημώσαντες ἐκείνην. ὥστε ἡμιβαρβάρους γενέσθαι φησὶ Δημήτριος αὐτοὺς ὁ Σκήψιος ἀντὶ Αἰολέων. καθ᾽ Ὅμηρον μέντοι ταῦτα πάντα ἦν Λελέγων. οὓς τινὲς μὲν Κᾶρας ἀποφαίνουσιν. Ὅμηρος δὲ χωρίζει. πρὸς μὲν ἁλὸς Κᾶρες καὶ Παίονες ἀγκυλότοξοι. καὶ Λέλεγες καὶ Καύκωνες. ἕτεροι μὲν τοίνυν τῶν Καρῶν ὑπῆρξαν. ᾤκουν δὲ μεταξὺ τῶν ὑπὸ τῷ Αἰνείᾳ καὶ τῶν καλουμένων ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Κιλίκων. ἐκπορθηθέντες δὲ ὑπὸ τοῦ Ἀχιλλέως, μετέστησαν εἰς τὴν Καρίαν. καὶ κατέσχον τὰ περὶ τὴν νῦν Ἁλικαρνασσὸν χωρία. ἡ μὲν τοίνυν ἐκλειφθεῖσα ὑπ᾽ αὐτῶν πόλις, οὐκέτ᾽ ἔστιν. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῶν Ἁλικαρνασσέων τὰ Πήδασα ὑπ᾽ αὐτῶν ὀνομασθέντα ἦν πόλις, καὶ ἡ νῦν χώρα Πηδασὶς λέγεται. φασὶ δ᾽ ἐν αὐτῇ καὶ ὀκτὼ πόλεις ᾠκίσθαι ὑπὸ τῶν Λελέγων πρότερον εὐανδρησάντων. ὥστε καὶ τῆς Καρίας κατασχεῖν τῆς μέχρι Μύνδου καὶ Βαργυλίων καὶ τῆς Πισιδίας ἀποτεμέσθαι πολλήν. ὕστερον δ᾽ ἅμα τοῖς Καρσὶ στρατευόμενοι κατεμερίσθησαν εἰς ὅλην τὴν Ἑλλάδα. καὶ ἠφανίσθη τὸ γένος. τῶν δ᾽ ὀκτὼ πόλεων τὰς ἓξ Μαύσωλος εἰς μίαν τὴν Ἁλικαρνασσὸν συνήγαγεν, ὡς Καλλισθένης ἱστορεῖ. Συάγγελα δὲ καὶ Μύνδον διεφύλαξε. τοῖς δὲ Πηδασεῦσι τούτοις φησὶν Ἡρόδοτος. ὅτε μέλλοι τι ἀνεπιτήδειον ἔσεσθαι καὶ τοῖς περιοίκοις, τὴν ἱέρειαν τῆς Ἀθηνᾶς πώγωνα ἴσχειν, τρὶς δὲ συμβῆναι τοῦτ᾽ αὐτοῖς. Πήδασον δὲ καὶ ἐν τῇ νῦν Στρατονικέων πολίχνιον ἔστιν. ἐν ὅλῃ δὲ Καρίᾳ καὶ ἐν Μιλήτῳ Λελέγων τάφοι. καὶ ἐρύματα, καὶ ἴχνη κατοικιῶν δείκνυται. μετὰ δὲ τὴν Λελεγίδα τὴν ἑξῆς παραλίαν ᾤκουν Κίλικες καθ᾽ Ὅμηρον, ἣν δὴ νῦν ἔχουσιν Ἀδραμυττηνοί τε καὶ Ἀταρνεῖται καὶ Πιταναῖοι μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Καΐκου. διῄρηντο δ᾽ εἰς δύο δυναστείας οἱ Κίλικες καθάπερ εἴπομεν. τήν τε ὑπὸ τῷ Ἠετίωνι καὶ τὴν ὑπὸ τῷ Μύνητι. τοῦ μὲν οὖν Ἠετίωνος λέγει

» ᾠχόμεθ᾽ ἐς Θήβην ἱερὴν πόλιν Ἠετίωνος. (πόλιν Θήβην

τούτου, καὶ τὴν Χρύσην τὸ ἱερὸν τοῦ Σμινθέως Ἀπόλλωνος ἐμφαίνει. ἐπειδὴ ἡ Χρυσηῒς ἐκ τῆς Θήβης

» ᾠχόμεθα γάρ φησιν ἐς Θήβην. (ἑάλω.

» τὴν δὲ διεπράθομέν τε, καὶ ἤγομεν ἐνθάδε πάντα.

καὶ τὰ μὲν εὖ δάσαντο μετὰ σφίσιν,

» ἐκ δ᾽ ἕλον Ἀτρεΐδῃ Χρυσηΐδα καλλιπάρῃον. τοῦ δὲ Μύνητος τὴν Λυρνησσόν.

» ἐπειδὴ Λυρνησσὸν διαπορθήσας καὶ τείχεα Θήβης.

τόν τε Μύνητα, καὶ τὸν Ἐπίστροφον ἀνελεῖν Ἀχιλλέα. ὥστε ὅταν φῇ ἡ Βρισηΐς

» ἢ δὲ μ᾽ ἔασκες ὅτ᾽ ἄνδρ᾽ ἐμὸν ὠκὺς Ἀχιλλεὺς

» Ἔκτεινε. πέρσε δὲ πόλιν Ἠετίωνος,

Οὐ τὴν Θήβην λέγοι ἄν. αὕτη γὰρ ἠετίωνος. ἀλλὰ τὴν λυρνησσόν. ἀμφότεραι δ᾽ ἦσαν ἐν τῷ κληθέν/
τι μετὰ ταῦτα θήβης πεδίῳ. ὃ διὰ τὴν ἀρετὴν περιμάχητον γενέσθαι φασὶ μυσοῖς μὲν καὶ λυδοῖς τοῖς
πρότερον. τοῖς δ᾽ ἕλλησιν ὕστερον τοῖς ἐποικήσασιν ἐκ τῆς αἰολίδος, καὶ τῆς λέσβου. ἔχουσι δὲ νῦν ἀδρα/
μυττηνοί τὸ πλέον. ἐνταῦθα γὰρ καὶ ἡ θήβη, καὶ ἡ λυρνησσὸς ἐρυμνὸν χωρίον. ἔρημοι δ᾽ ἀμφότεραι. διέ/
χουσι δὲ ἀδραμυττείου σταδίους ἡ μὲν, ἑξήκοντα. ἡ δὲ, ὀγδοήκοντα. καὶ ἡ ἑτέρα θἀτέρα. ἐν δὲ τῇ ἀδραμυτ/
τηνῇ ἐστὶ καὶ ἡ χρύσα, καὶ ἡ κίλλα. πλησίον οὖν τῆς θήβης ἐστὶ νῦν. κίλλα τις τόπος λέγεται ἐν ᾧ κιλ/
λαίου ἀπόλλωνός ἐστιν ἱερόν. παραρρεῖ δ᾽ αὐτῷ ἐξ ἴδης φερόμενος ὁ κίλλαιος ποταμός. ταῦτα δ᾽ ἐστὶ κα/
τὰ τὴν ἀντανδρίαν. καὶ τὸ ἐν λέσβῳ δὲ κίλλαιον ἀπὸ ταύτης τῆς κίλλης ὠνόμασται. ἔστι δὲ καὶ κίλλαιον
ὄρος μεταξὺ γαργάρων, καὶ ἀντάνδρου. φησὶ δὲ δάης ὁ κολωνεὺς ἐν κολωναῖς, ἱδρυθῆναι πρῶτον ὑπὸ
τῶν ἐκ τῆς ἑλλάδος πλευσάντων αἰολέων, τὸ τοῦ κιλλαίου ἀπόλλωνος ἱερόν. καὶ ἐν χρύσῃ δὲ λέγουσι κίλ/
λαιον ἀπόλλωνα ἱδρύσθαι. ἄδηλον εἴτε τὸν αὐτὸν τῷ σμινθεῖ εἴθ᾽ ἕτερον. ἡ δὲ χρύσα ἐπὶ θαλάττῃ πολί/
χνιον ἦν ἔχον λιμένα. πλησίον δὲ ὑπέρκειται ἡ θήβη. ἐνταῦθα δὲ ἦν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ σμινθέως ἀπόλ/
λωνος, καὶ ἡ χρυσηΐς. ἠρήμωται δὲ τὸ χωρίον τελέως. εἰς δὲ τὴν νῦν χρύσαν τὴν κατὰ ἀμαξιτὸν μεθί/
δρυται τὸ ἱερὸν τῶν κιλίκων. τῶν μὲν, εἰς τὴν παμφυλίαν ἐκπεσόντων. τῶν δὲ εἰς τὸν ἀμαξιτόν. οἱ δ᾽
ἀπειρότεροι τῶν παλαιῶν ἱστοριῶν, ἐνταῦθα τὸν χρύσην καὶ τὴν χρυσηΐδα γεγονέναι φασί. καὶ τὸν ὅ/
μηρον τούτου τοῦ τόπου μεμνῆσθαι. ἀλλ᾽ οὔτε λιμήν ἐστιν ἐνταῦθα, ἐκεῖνος δὲ φησίν.

» Οἱ δ᾽ ὅτε δὴ λιμένος πολυβενθέος ἐντὸς ἵκοντο,

Οὔτ᾽ ἐπὶ θαλάττῃ τὸ ἱερόν ἐστιν. ἐκεῖνος δ᾽ ἐπὶ θαλάττῃ ποιεῖ τὸ ἱερόν.

» Ἐκ δὲ χρυσηῒς νηὸς βῆ ποντοπόροιο.

» Τὴν μὲν, ἔπειτ᾽ ἐπὶ βωμὸν ἄγων πολύμητις ὀδυσσεύς.

» Πατρὶ φίλῳ ἐν χερσὶ τίθει. Οὐ δὲ θήβης πλησίον. ἐκεῖνος δὲ πλησίον. ἐκεῖθεν γοῦν ἁλοῦ/
σαν λέγει τὴν χρυσηΐδα. ἀλλ᾽ οὐδὲ κίλλα τόπος. οὐδεὶς τῇ ἀλεξανδρέων χώρᾳ δείκνυται. οὐδὲ κιλλαίου
ἀπόλλωνος ἱερόν. ὁ δὲ ποιητὴς συζευγνύει ταῦτα.

» Ὃς χρύσην ἀμφιβέβηκας κίλλαν τε ζαθέην.

Ἐν δὲ τῷ θήβης πεδίῳ, δείκνυται πλησίον. ὅτε πλοῦς ἀπὸ μὲν τῆς κιλικίου χρύσης ἐπὶ τὸν ναύ-
σταθμον, ἑξήκοντά που σταδίων ἐστὶν ἡμερήσιός πως, ὅσον φαίνεται πλεύσας ὁ ὀδυσσεύς. ἐκβὰς γὰρ εὐθὺς
παρίστησι τὴν θυσίαν τῷ θεῷ. καὶ τῆς ἑσπέρας ἐπιλαβούσης μένει αὐτόθι. πρωῒ δὲ ἀποπλεῖ. ἀπὸ ἀ/
μαξιτοῦ. τὸ δὲ τριπλάσιον δὲ μόλις τοῦ λεχθέντος διαστήματός ἐστιν ὥστε παρῆν τῷ ὀδυσσεῖ αὐθημερὸν ἀναπλεῖν
μετὰ τὸ ναύσταθμον τελέσαντι τὴν θυσίαν. ἔστι δὲ καὶ κίλλου μνῆμα πρὸς τὸ ἱερὸν τοῦ κιλλαίου ἀπόλλωνος χῶμα μέ/
γα. ἡνίοχον δὲ τοῦτον πέλοπός φασιν ἡγησάμενον τῶν τόπων. ἀφ᾽ οὗ ἴσως ἡ κιλικία. ἢ ἔμπαλιν, τὰ δ᾽ οὖν
περὶ τοὺς τεύκρους καὶ τοὺς μύας ἀφ᾽ ὧν ὁ σμινθεὺς, ἐπειδὴ σμίνθιοι οἱ μύες δεῦρο μετενεκτέον, παραμυθητέον
δὲ τὴν ἀπὸ μικρῶν ἐπίκλησιν τοιούτοις τισί, καὶ γὰρ ἀπὸ τῶν κωνώπων οὓς οἱ οἰταῖοι κόρνοπας λέγουσι, κορνοπίωνα τι/
μᾶσθαι παρ᾽ ἐκείνοις ἡρακλέα ἀπαλλαγῆς ἀκρίδων χάριν. ἰποκτόνον δὲ παρ᾽ ἐρυθραίοις τοῖς τὸν μελίαντα
οἰκοῦσιν. ὅ τε φθαρτικὸς τῶν ἀμπελοφάγων ἰπῶν, καὶ δὴ παρ᾽ ἐκείνοις μόνοις τῶν ἐρυθραίων τὸ θηρίον τοῦτο μὴ
γενέσθαι. ῥόδιοι δὲ ἐρυθιβίου ἀπόλλωνος ἔχουσιν ἐν τῇ χώρᾳ ἱερόν. τὴν ἐρυσίβην καλοῦντες ἐρυθίβην.
παρ᾽ αἰολεῦσι δὲ τοῖς ἐν ἀσίᾳ μήν τις καλεῖται πορνοπίων. οὕτω τοὺς πορνόπας καλούντων βοιωτῶν.
καὶ θυσία συντελεῖται πορνοπίῳ ἀπόλλωνι. μυσία μὲν οὖν ἐστιν ἡ περὶ τὸ ἀδραμύττιον. ἦν δέ ποτε ὑπὸ
λυδοῖς. καὶ νῦν πύλαι λύδιαι καλοῦνται ἐν ἀδραμυττίῳ. λυδῶν, ὥς φασι τὴν πόλιν ἐκτικότων. μυ-
σίαν δὲ ἄστυρα τὴν πλησίον κώμην φασίν. ἦν δὲ πολίχνη ποτέ. ἐν ᾗ τὸ τῆς ἀστυρηνῆς ἀρτέμιδος ἱερόν, ἐν
ἄλσει. προσταζόμενον μετ᾽ ἁγιστείας ὑπ᾽ ἀντανδρίων. ἢ μᾶλλον γειτνιᾷ. διέχει δὲ τῆς παλαιᾶς χρύσης
εἴκοσι σταδίους. καὶ αὐτῆς ἐν ἄλσει τὸ ἱερὸν ἐχούσης. αὐτοῦ δὲ καὶ ὁ ἀχίλλειος χάραξ. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ
ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων ἐστὶν ἡ θήβη. ἔρημος. ἥν φησιν ὁ ποιητὴς ὑπὸ πλάκῳ ὑληέσσῃ. οὔτε δὲ πλακὸς
ἢ πλὰξ ἐκεῖ τι λέγεται, οὔθ᾽ ὕλη ὑπέρκειται. καίτοι πρὸς τῇ ἴδῃ. ἀστύρων δ᾽ ἡ θήβη διέχει εἰς ἑβδομή/
κοντα σταδίους. ἀνδείρων δὲ ἑξήκοντα. πάντα δὲ ταῦτά ἐστι τὰ ὀνόματα τόπων ἐρήμων, ἢ φαύλως οἰ/
κουμένων, ἢ ποταμῶν χειμάρρων. τεθρύλληται δὲ διὰ τὰς παλαιὰς ἱστορίας. πόλεις δ᾽ εἰσὶν ἀξιόλο/
γοι ἄσσος τε καὶ ἀδραμύττιον. ἠτύχησε δὲ τὸ ἀδραμύττιον ἐν τῷ μιθριδατικῷ πολέμῳ. τὴν γὰρ βου-
λὴν ἀπέσφαξε τῶν πολιτῶν διόδωρος στρατηγὸς χαριζόμενος τῷ βασιλεῖ, προσποιούμενος δ᾽ ἅμα τῶν
τε ἐξ ἀκαδημίας φιλοσόφων εἶναι, καὶ δίκας λέγειν καὶ σοφιστεύειν τὰ ῥητορικά. καὶ δὴ καὶ συ/
ναπῆρεν εἰς τὸν πόντον τῷ βασιλεῖ. καταλυθέντος δὲ τοῦ βασιλέως ἔτισε δίκας τοῖς ἀδικηθεῖσιν. ἐγκλη/
μάτων γὰρ ἐπενεχθέντων ἅμα πολλῶν, ἀπεκαρτέρησεν αἰσχρῶς. οὐ φέρων τὴν δυσφημίαν ἐν τῇ ἡμε/
τέρᾳ πόλει. ἀνὴρ δὲ ἀδραμυττηνὸς ῥήτωρ ἐπιφανὴς γεγένηται ξενοκλῆς. τοῦ μὲν ἀσιανοῦ χαρακτῆρος.
ἀγωνιστὴς εἴ τις ἄλλος. καὶ εἰρηκὼς ὑπὲρ τῆς ἀσίας ἐπὶ τῆς συγκλήτου. καθ᾽ ὃν καιρὸν αἰτίαν εἶχε μι/
θριδατισμοῦ. πρὸς δὲ τοῖς ἀστύροις λίμνη καλεῖται σάπρα σαπραθρώδης εἰς ῥαχιώδη τῆς θαλάττης αἰ/

γιαλὸν τὸ ἔρυμα ἔχουσα. ὑπὸ δὲ τοῖς ἀστύροις ἱερόν ἐστι μητρὸς θεῶν ἀστυρηνῆς ἅγιον. καὶ ἄντρον ὑπόνομον μέχρι παλαιᾶς. ἔστι δ' ἡ παλαιὰ κατοικία τις οὕτω καλουμένη, διέχουσα τῶν ἀστύρων ἑκατὸν, καὶ τριάκοντα σταδίους. ἔδειξε δὲ τὴν ὑπονομὴν χείμαρρος ἐμπεσὼν εἰς τὸ στόμα, καὶ ἀνευρεθεὶς τῇ ὑστεραίᾳ κατὰ ἄστυρα ὑπὸ τοῦ ποιμένος κατὰ τύχην ἐπὶ θυσίαν ἥκοντος. ἀταρνεὺς δ' ἐστὶ τὸ τοῦ ἑρμείου τυραννεῖον. εἶτα πιτάνη πόλις αἰολική, δύο ἔχουσα λιμένας. καὶ ὁ παραρρέων αὐτὴν ποταμὸς εὔηνος, ἐξ οὗ τὸ ὕδωρ ὑδραγωγεῖται τοῖς ἀδραμυττηνοῖς. ἐκ δὲ τῆς πιτάνης ἐστὶν ἀρκεσίλαος ὁ ἐκ τῆς ἀκαδημίας, ζήνωνος τοῦ κιτιέως συσχολαστὴς παρὰ πολέμωνι. καλεῖται δὲ καὶ ἐν τῇ πιτάνῃ τις τόπος ἐν τῇ θαλάττῃ ἀταρνεὺς ὑπὸ τῇ πιτάνῃ, κατὰ τὴν καλουμένην νῆσον ἔχουσαν. φασὶ δ' ἐν τῇ πιτάνῃ τὰς πλίνθους ἐπιπολάζειν ἐν τοῖς ὕδασι, καθάπερ καὶ ἐν τῇ τυρρηνίᾳ νήσοις πέπονθε. κουφότερον γὰρ ἡ γῆ τοῦ ἰσόγκου ὕδατος ἐστὶν ὥστ' ἐποχεῖσθαι. ἐν ἰβηρίᾳ δέ φησιν ἰδεῖν ποσειδώνιος ἔκ τινος γῆς ἀργιλώδους, ᾗ τὰ ἀργυρώματα ἐκμάττεται, πλίνθους πηγνυμένας καὶ ἐπιπλεούσας. μετὰ δὲ τὴν πιτάνην ὁ κάικος εἰς τὸν ἐλαΐτικον καλούμενον κόλπον ἐν τριάκοντα σταδίοις ἐκδίδωσιν. ἐν δὲ τῷ πέραν τοῦ καΐκου δώδεκα διέχουσα τοῦ ποταμοῦ σταδίους, ἐλαία πόλις αἰολικὴ καὶ αὕτη περγαμηνῶν ἐπίνειον ἑκατὸν, καὶ εἴκοσι σταδίους διέχουσα τοῦ περγάμου. εἶτ' ἐν ἑκατὸν σταδίοις ἡ κάνη. τὸ ἀνταῖρον ἀκρωτήριον ἐν τῷ λεκτῷ. καὶ ποιοῦν τὸν ἀδραμυττηνὸν κόλπον. οὗ μέρος καὶ ὁ ἐλαϊτικός ἐστι. κάναι δὲ πολίχνιον λοκρῶν τῶν ἐκ κύνου. κατὰ τὰ ἄκρα τῆς λέσβου τὰ νοτιώτατα. κείμενον ἐν τῇ καναίᾳ. αὕτη δὲ μέχρι τῶν ἀργινουσῶν διήκει καὶ τῆς ὑπερκειμένης ἄκρας. ἣν αἶγα τινὲς ὀνομάζουσιν ὁμωνύμως τῷ ζώῳ. δεῖ δὲ μακρῶς τὴν δευτέραν συλλαβὴν ἐκφέρειν αἶγαν. ὡς ἀκτᾶν καὶ ἀρχᾶν. οὕτω γὰρ καὶ τὸ ὄρος ὅλον ὠνομάζετο. ὃ νῦν κάνην καὶ κάνας λέγουσι. κύκλῳ δὲ περὶ τὸ ὄρος πρὸς νότον μὲν καὶ δύσεως ἡ θάλασσα. πρὸς ἕω δὲ τὸ καΐκου πεδίον ὑπόκειται. πρὸς ἄρκτον δὲ ἡ ἐλαΐτις. αὐτὸ δὲ καθ' αὑτὸ ἱκανῶς συνέσταλται. προσνεύει δὲ καὶ καθ' αὑτὸ τὸ αἰγαῖον πέλαγος, ὅθεν αὐτῷ καὶ τοὔνομα. ὕστερον δὲ αὐτὸ τὸ ἀκρωτήριον αἶγα κεκλῆσθαι, ὡς σαπφώ. τὸ δὲ λοιπὸν κάνη καὶ κάναι. μεταξὺ δὲ ἐλαίας τε καὶ πιτάνης. καὶ ἀταρνέως δὲ καὶ περγάμου, τευθρανία ἐστί. διέχουσα μιᾶς ἑκάστης αὐτῶν ὑπὲρ ἑβδομήκοντα σταδίους ἐντὸς τοῦ καΐκου. καὶ ὁ τεύθρας κιλίκων, καὶ μυσῶν ἱστόρηται βασιλεύς. εὐριπίδης δ' ὑπὸ ἀλαίου φησὶ τοῦ τῆς αὔγης πατρὸς, εἰς λάρνακα τὴν αὔγην καταπεθεῖσαν ἅμα τῷ παιδὶ τηλέφῳ καταποντωθῆναι. φωραθέντος τῆς ἐξ ἡρακλέους φθορᾶς. ἀθηνᾶς δὲ προνοίᾳ τὴν λάρνακα περαιωθεῖσαν, ἐκπεσεῖν εἰς τὸ στόμα τοῦ καΐκου. τὸν δὲ τεύθραντα ἀναλαβόντα τὰ σώματα, τῇ μὲν, ὡς γαμετῇ χρήσασθαι. τῷ δ' ὡς ἑαυτοῦ παιδί. τοῦτο μὲν οὖν μῦθος. ἄλλην δέ τινα δεῖ γεγονέναι συντυχίαν, δι' ἣν τοῦ ἀρκάδος θυγάτηρ τῷ μυσῶν βασιλεῖ συνῆλθε, καὶ ὁ ἐξ αὐτῆς διεδέξατο τὴν ἐκείνου βασιλείαν. πεπίστευται δ' οὖν ὅτι καὶ ὁ τεύθρας καὶ ὁ τήλεφος ἐβασίλευσαν τῆς χώρας τῆς περὶ τὴν τευθρανίαν καὶ τὸν κάικον. ὁ δὲ ποιητὴς ἐπὶ τοσοῦτον μέμνηται μόνον τῆς ἱστορίας ταύτης.

" Ἀλλ' οἷον τὸν τηλεφίδην κατενήρατο χαλκῷ.

Ἥρω εὐρύπυλον. πολλοὶ δ' ἀμφ' αὐτὸν ἑταῖροι κήτειοι κτείνοντο γυναίων εἵνεκα δώρων. αἴνιγμά τι τιθεὶς ἡμῖν μᾶλλον, ἢ λέγων τι σαφές. οὔτε γὰρ τοὺς κητείους ἴσμεν οὕς τινας δέξασθαι δεῖ, οὔτε τὸ γυναίων εἵνεκα δώρων. ἀλλὰ καὶ οἱ γραμματικοὶ μυθάρια παραβάλλοντες, εὑρεσιλογοῦσι μᾶλλον, ἢ λύουσι τὰ ζητούμενα. ἐάσθω δὲ ταῦτα. ἐκεῖνο δ' ὅπερ ἐστὶ δοκεῖ μᾶλλον ἐν φανερῷ λαβόντες λέγωμεν. ὅτι ἐν τοῖς περὶ τὸν κάικον τόποις φαίνεται βεβασιλευκὼς καθ' ὅμηρον ὁ εὐρύπυλος. ὥστ' ἴσως καὶ τῶν κιλίκων μέρος τι ἦν ὑπ' αὐτῷ. καὶ οὐ δύο δυναστεῖαι μόνον. ἀλλὰ καὶ τρεῖς ὑπῆρξαν ἐν ἑαυτοῖς. τῷ δὲ λόγῳ τούτῳ συνηγορεῖ τὸ ἐν τῇ ἐλαΐτιδι χειμαρρῶδες ποτάμιον δείκνυσθαι κήτιον. ἐμπίπτει δ' οὗτος εἰς ἄλλον ὅμοιον. εἶτ' ἄλλον. καταστρέφουσι δ' εἰς τὸν κάικον. ὁ δὲ κάικος οὐκ ἀπὸ τῆς ἴδης ῥεῖ καθάπερ εἴρηκε βακχυλίδης. οὐδ' ὡς εὐριπίδης τὸν μαρσύαν φησὶ τὰς διωνομασμένας ναίειν κελαινὰς ἐσχάτοις ἴδης τόποις. πολὺ γὰρ τῆς ἴδης ἄπωθεν αἱ κελαιναί. πολὺ δὲ καὶ αἱ τοῦ καΐκου πηγαί. δείκνυνται γὰρ ἐν πεδίῳ. τῆμνον δ' ἐστὶν ὄρος. ὃ διορίζει τοῦτό τε καὶ τὸ καλούμενον ἄπιας πεδίον. ὃ ὑπέρκειται ἐν τῇ μεσογαίᾳ τοῦ θήβης πεδίου. ῥεῖ δ' ἐκ τοῦ τήμνου ποταμὸς μύσιος. ἐμβάλλων εἰς τὸν κάικον ὑπὸ τὰς πηγὰς αὐτοῦ. ἀφ' οὗ δέχονταί τινες εἰπεῖν αἰσχύλον κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ ἐν μυρμιδόσι προλόγου.

Ἰὼ κάικε μύσιαί τ' ἐπιρροαί.

Ἐγγὺς δὲ τῶν πηγῶν κώμη γέργηθά ἐστιν. εἰς ἣν μετῴκησεν ἄτταλος τοὺς ἐν τῇ τρωάδι τὸ χωρίον ἐξελών. ἐπεὶ δὲ τῇ παραλίᾳ τῇ ἀπὸ λεκτοῦ μέχρι κανῶν, αὕτη παρατέταται λέσβος ἡ νῆσος. λόγου ἀξία πλείστου. περίκειται δὲ αὐτῇ καὶ νησία. τὰ μὲν, ἔξωθεν. τὰ δὲ καὶ ἐν τῷ μεταξὺ αὐτῆς τε καὶ τῆς ἠπείρου. καιρὸς ἤδη περὶ τούτων εἰπεῖν. καὶ γὰρ ταῦτα ἐστὶν αἰολικά. σχεδὸν δέ τι καὶ μητρόπολις ἡ λέσβος ὑπάρχει τῶν αἰολικῶν πόλεων. ἀρκτέον δ' ἀφ' ὧνπερ καὶ τὴν παραλίαν ἐπήλθομεν τὴν κατ' αὐτήν. ἀπὸ λεκτοῦ τοίνυν ἐπὶ ἄσσον πλέουσιν ἀρχὴ τῆς λεσβίας ἐστὶ κατὰ σίγριον τὸ πρὸς ἄρκτον αὐτῆς ἄκρον. ἐνταῦθα δέ που καὶ μήθυμνα πόλις λεσβίων ἐστὶν ἀπὸ ἑξήκοντα σταδίων τῆς ἐκ πολυμηδίου πρὸς τὴν ἄσσον παραλίας. οὔσης δὲ τῆς περιμέτρου σταδίων χιλίων ἑκατὸν ἣν ἡ σύμπασα ἐκπληροῖ

νῆσος, τὰ καθ᾽ ἕκαστα οὕτως ἔχει ἀπὸ μηθύμνης εἰς μαλίαν τὸ νοτιώτατον ἄκρον ἐν δεξιᾷ ἔχουσι τὴν παραλίαν νῆσον. καθ᾽ ὃ αἱ κάναι μάλιστα ἀντίκεινται τῇ νήσῳ καὶ συναπαρτίζουσι, στάδιοι εἰσὶ τριακόσιοι τετταράκοντα. ἐντεῦθεν δ᾽ ἐπὶ σίγριον ὅπερ ἐστὶ τῆς νήσου τὸ μῆκος, πεντακόσιοι ἑξήκοντα, εἶτ᾽ ἐπὶ τὴν μηθυμναίαν διακόσιοι δέκα. μιτυλήνη δὲ κεῖται μεταξὺ μηθύμνης καὶ τῆς μαλίας ἡ μεγίστη πόλις. διέχουσα τῆς μαλίας ἑβδομήκοντα σταδίων. τῶν δὲ κανῶν ἑκατὸν εἴκοσι. ὅσων καὶ τῶν ἀργινουσῶν. αἱ τρεῖς μέν εἰσι μεγάλαι νῆσοι. πλησιάζουσαι δὲ τῇ ἠπείρῳ. παρακείμεναι δὲ ταῖς κάναις. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ μιτυλήνης καὶ τῆς μηθύμνης κατὰ κώμην τῆς μηθυμναίας καλουμένην αἴγειρον, στενωτάτη ἐστὶν ἡ νῆσος. ὑπέρβασιν ἔχουσα εἰς τὸν πυῤῥαῖον εὔριπον σταδίων εἴκοσι. ἵδρυται δ᾽ ἡ πύῤῥα ἐν τῷ ἑσπερίῳ πλευρῷ τῆς λέσβου διέχουσα τῆς μαλίας ἑκατόν. ἔχει δ᾽ ἡ μιτυλήνη λιμένας δύο. ὧν ὁ νότιος κλειστὸς τριήρεσι. καὶ ἐν ναυσὶ πεντήκοντα. ὁ δὲ βόρειος μέγας καὶ βαθύς. χώματι σκεπαζόμενος. πρόκειται δ᾽ ἀμφοῖν νησίον μέρος τῆς πόλεως. ἔχον αὐτόθι συνοικούμενον. κατεσκεύασται δὲ τοῖς πᾶσι καλῶς. ἄνδρας δὲ ἔσχεν ἐνδόξους τὸ παλαιὸν μὲν πιττακὸν ἕνα τῶν ἑπτὰ σοφῶν. καὶ τὸν ποιητὴν ἀλκαῖον. καὶ τὸν ἀδελφὸν ἀντιμενίδαν. ὅν φησιν ἀλκαῖος βαβυλωνίοις συμμαχοῦντα, τελέσαι μέγαν ἆθλον καὶ ἐκ πόνων αὐτοὺς ῥύσασθαι. κτείναντα ἄνδρα μαχαίταν ὥς φησι βασιλήων παλαιστὰν. ἀπολιπόντα μόνον ἀίαν τ᾽ ἀχέων ἀπὸ πέμπων. συνήκμασε δὲ τούτοις καὶ ἡ σαπφὼ θαυμαστόν τι χρῆμα. οὐ γὰρ ἴσμεν ἐν τῷ τοσούτῳ χρόνῳ τῷ μνημονευομένῳ φανεῖσάν τινα γυναῖκα ἐνάμιλλον, οὐδὲ κατὰ μικρὸν, ἐκείνῃ, ποιήσεως χάριν. ἐτυραννήθη δὲ ἡ πόλις κατὰ τοὺς χρόνους τούτους ὑπὸ πλειόνων. διὰ τὰς διχοστασίας. καὶ τὰ διχοστασιαστικὰ ποιήματα τοῦ ἀλκαίου, περὶ τούτων ἐστίν. ἐν δὲ τοῖς τυράννοις καὶ ὁ πιττακὸς ἐγένετο. ἀλκαῖος μὲν οὖν ὁμοίως ἐλοιδορεῖτο. καὶ τούτῳ καὶ τοῖς ἄλλοις. μυρσίλῳ καὶ μελαγχύρῳ καὶ τοῖς κλεανακτίδαις καὶ ἄλλοις τισίν. οὐδ᾽ αὐτὸς καθαρεύων τῶν τοιούτων νεωτερισμῶν. πιττακὸς δ᾽ εἰς μὲν τὴν τῶν δυναστειῶν κατάλυσιν, ἐχρήσατο τῇ μοναρχίᾳ καὶ αὐτός. καταλύσας δὲ ἀπέδωκε τὴν αὐτονομίαν τῇ πόλει. ὕστερον δ᾽ ἐγένετο χρόνοις πολλοῖς διοφάνης ὁ ῥήτωρ. καθ᾽ ἡμᾶς δὲ ποτάμων καὶ λεσβοκλῆς. καὶ κριναγόρας. καὶ ὁ συγγραφεὺς θεοφάνης. οὗτος δὲ καὶ πολιτικὸς ἀνὴρ ὑπῆρξε. καὶ πομπηΐῳ τῷ μάγνῳ κατέστη φίλος μάλιστα διὰ τὴν ἀρετὴν αὐτήν. καὶ πάσας συγκατώρθωσεν αὐτῷ τὰς πράξεις. ἀφ᾽ ὧν τήν τε πατρίδα ἐκόσμησε. τὰ μὲν, δι᾽ ἐκείνου. τὰ δὲ δι᾽ ἑαυτοῦ. καὶ ἑαυτὸν πάντων ἑλλήνων ἐπιφανέστατον ἀνέδειξεν. υἱόν τε ἀπέλιπε μάρκον πομπήϊον. ὃν τῆς ἀσίας ἐπίτροπον κατέστησέ ποτε καῖσαρ ὁ σεβαστός. καὶ νῦν ἐν τοῖς πρώτοις ἐξετάζεται τῶν τιβερίου φίλων. ἀθηναῖοι δ᾽ ἐκινδύνευσαν μὲν ἀνήκεστον ψόγον περιπεσεῖν. ψηφισάμενοι μιτυληναίους ἡβηδὸν ἀποσφαγῆναι. μετέγνωσαν δὲ, καὶ ἔφθη μιᾷ θᾶττον ἡμέρᾳ τὸ ψήφισμα ἀφιγμένον ἐπὶ τοὺς στρατηγούς, πρὶν ἢ πρᾶξαι τὸ προσταχθέν. ἡ δὲ πύῤῥα κατέσκαπται. τὸ δὲ προάστειον οἰκεῖται καὶ ἔχει λιμένα, ὅθεν εἰς μιτυλήνην ὑπέρβασις σταδίων ὀγδοήκοντα. εἶτ᾽ ἔρεσσος ἐστὶ μετὰ τὴν πύῤῥαν. ἵδρυται δ᾽ ἐπὶ λόφου. καθήκει τε ἐπὶ θάλατταν. εἶτ᾽ ἐπὶ τὸ σίγριον. ἐντεῦθεν στάδιοι δεκαοκτώ. ἐξ ἐρεσσοῦ δ᾽ ἦσαν θεόφραστός τε καὶ οἱ ἐκ τῶν περιπάτων φιλόσοφοι ἀριστοτέλους γνώριμοι. τύρταμος δ᾽ ἐκαλεῖτο πρότερον ὁ θεόφραστος. μετωνόμασε δ᾽ αὐτὸν ὁ ἀριστοτέλης θεόφραστον, ἅμα μὲν φεύγων τὴν τοῦ προτέρου ὀνόματος κακοφωνίαν. ἅμα δὲ τὸν τῆς φράσεως αὐτοῦ ζῆλον ἐπισημαινόμενος. ἅπαντας μὲν γὰρ λογίους ἐποίησε τοὺς μαθητὰς ἀριστοτέλης. λογιώτατον δὲ θεόφραστον. ἄντισσα δ᾽ ἐφεξῆς ἐστὶ τῷ σιγρίῳ πόλις. ἔχουσα λιμένα. ἔπειτα μήθυμνα. ἐντεῦθεν δ᾽ ἦν ἀρίων ὁ ἐπὶ τῷ δελφῖνι μυθευόμενος ὑπὸ τῶν περὶ ἡρόδοτον εἰς ταίναρον σωθῆναι καταποντωθεὶς ὑπὸ τῶν λῃστῶν, οὗτος μὲν οὖν κιθαρῳδός. καὶ τέρπανδρον δὲ τῆς αὐτῆς μουσικῆς τεχνίτην γεγονέναι φασί. καὶ τῆς αὐτῆς νήσου τὸν πρῶτον ἀντὶ τῆς τετραχόρδου λύρας, ἑπταχόρδῳ χρησάμενον. καθάπερ καὶ ἐν τοῖς ἀναφερομένοις ἔπεσιν εἰς αὐτὸν λέγεται.

» Σοὶ δ᾽ ἡμεῖς τετράγηρυν ἀποστέρξαντες ἀοιδήν.
» Ἑπτατόνῳ φόρμιγγι νέους κελαδήσομεν ὕμνους.

Καὶ ἑλλάνικος δὲ λέσβιος συγγραφεὺς καὶ καλλίας τὴν σαπφὼ καὶ τὸν ἀλκαῖον ἐξηγησάμενος. κατὰ δὲ τὸν πορθμὸν τὸν μεταξὺ τῆς ἀσίας καὶ τῆς λέσβου, νησία ἐστὶ περὶ εἴκοσιν. ὡς δὲ δημοσθένης φησὶ τετταράκοντα. καλοῦνται δ᾽ ἑκατόννησοι συνθέτως ὡς πελοπόννησος, κατὰ ἔθος τι τοῦ νῦ γράμματος πλεονάζοντος ἐν τοῖς τοιούτοις. ὡς μυόννησος, καὶ προκόννησος λέγεται καὶ ἀλόννησος. ὥστε ἑκατόννησοι εἰσίν. οἷον ἀπολλόννησοι. ἕκατος γὰρ ὁ ἀπόλλων. παρὰ πᾶσαν γὰρ τὴν παραλίαν ταύτην ὁ ἀπόλλων ἐκτετίμηται μέχρι τενέδου. σμινθεὺς, ἢ κιλλαῖος καλούμενος. ἢ γρυνεὺς ἤ τινα ἄλλην ἐπωνυμίαν ἔχων. πλησίον δὲ τούτων ἐστὶ καὶ ἡ πορδοσελήνη. πόλιν ὁμώνυμον ἔχουσα ἐν ἑαυτῇ καὶ πρὸ τῆς πόλεως ταύτης, ἄλλη νῆσος μείζων αὐτῆς πόλις ὁμώνυμος ἔρημος. ἱερὸν ἔχουσα ἀπόλλωνος. τὰς δὲ δυσφημίας τῶν ὀνομάτων φυγόντες τινὲς, ἐνταῦθα μὲν ποροσελήνην δεῖν λέγειν φασί. τὸ δ᾽ ἀσπόρδηνον τὸ περὶ πέργαμον, τραχὺ καὶ λυπρὸν ὄν, ἀσπόρηνον, καὶ τὸ ἱερὸν τὸ ἐνταῦθα τῆς μητρὸς τῶν θεῶν, ἀσπορηνῆς. τί οὖν φήσομεν τὴν πόρδαλιν καὶ τὸν σαπέρδην καὶ τὸν περδίκκαν. καὶ τὸ σιμωνίδου. συμπορδαίκοισιν ἐκπεσόντες ἱμάσειν.

ἀντὶ τοῦ διαβρόχοις. καὶ ἐν τῇ ἀρχαίᾳ κωμῳδίᾳ. Γόρακον τὸ χωρίον λιμνάζον.

Διέχει δ' ἡ Λέσβος τὸ ἴσον ἀπὸ τῆς Τενέδου καὶ Λήμνου καὶ Χίου, σχεδόν τι τῶν πεντακοσίων ἐνδοτέρω σταδίων. τοιαύτης δὲ τῆς πρὸς τοὺς Τρῶας οἰκειότητος ὑπαρχούσης, τοῖς τε Λέλεξι καὶ τοῖς Κίλιξι ζητοῦσιν αἰτίαν, δι' ἣν οὐ συγκαταλέγονται καὶ οὗτοι ἐν τῷ καταλόγῳ. εἰκὸς δὲ διὰ τὴν τῶν ἡγεμόνων διαφορὰν, καὶ τὴν τῶν πόλεων ἐκπόρθησιν ὀλίγους ὑπολειφθέντας τοὺς Κίλικας, ὑπὸ τῷ Ἕκτορι τάττεσθαι. ὅ, τε γὰρ Ἠετίων καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ, λέγονται πρὸ τοῦ καταλόγου διαφθαρῆναι.

Ἤτοι μὲν πατέρ' ἐμὸν ἀπέκτανε, δῖος Ἀχιλλεύς.
» Ἐκ δὲ πόλιν πέρσε Κιλίκων Θήβην ὑψίπυλον.
» Οἱ δέ μοι ἑπτὰ κασίγνητοι ἔσαν ἐν μεγάροισιν. Οἱ μὲν, πάντες ἰῷ κίον ἤματι ἄϊδος εἴσω.
» Πάντας γὰρ κατέπεφνε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς.

Ὣς δ' αὔτως καὶ οἱ ὑπὸ Μύνητι. τούς τε ἡγεμόνας ἀπεβεβλήκασι καὶ τὴν πόλιν.
» Κὰδ δὲ Μύνητ' ἔβαλε καὶ Ἐπίστροφον. πέρσε δὲ πόλιν
» Θείοιο Μύνητος. Τοὺς δὲ Λέλεγας τοῖς μὲν ἀγῶσι παρόντας ποιεῖ. ὅταν δὲ οὕτω λέγῃ,
» Πρὸς μὲν ἁλὸς Κᾶρες καὶ Παίονες ἀγκυλότοξοι
» Καὶ Λέλεγες καὶ Καύκωνες. Καὶ πάλιν. Σάτνιον οὔτασε δουρὶ Οἰνοπίδην.
» Ὃν ἄρα νύμφη τέκε νηῒς ἀμύμων.
» Οἴνοπι βουκολέοντι παρ' ὄχθας Σατνιόεντος. Οὐ γὰρ οὕτως ἐξελελοίπεσαν τελέως, ὥστε μὴ καὶ καθ' αὑτοὺς ἔχειν τι σύστημα. ἅτε τοῦ βασιλέως αὐτῶν ἔτι περιόντος,
» Ἄλτεω ὃς Λελέγεσσι φιλοπτολέμοισιν ἀνάσσει.

Καὶ τῆς πόλεως οὐ τελέως ἠφανισμένης. ἐπιφέρει γὰρ
» Πήδασον αἰπήεσσαν ἔχων ἐπὶ Σατνιόεντι. Ἐν μέντοι τῷ καταλόγῳ παραλέλοιπεν αὐτούς. οὐχ ἱκανὸν ἡγούμενος τὸ σύστημα, ὥστ' ἐν καταλόγῳ τάττεσθαι, ἢ καὶ ὑπὸ τῷ Ἕκτορι καὶ τούτους συγκαταλέγων οὕτως ὄντας οἰκείους. ὁ γὰρ Λυκάων φησὶν ἀδελφὸς ὢν Ἕκτορος,
» Μινυνθάδιον δέ με γείνατο μήτηρ
» Λαοθόη, θυγάτηρ Ἄλτεω γέροντος.
» Ἄλτεω ὃς Λελέγεσσι φιλοπτολέμοισιν ἀνάσσει.

Ταῦτα μὲν οὖν τοιαύτην τινὰ ἔχει τὴν εἰκοτολογίαν. εἰκοτολογεῖν δ' ἐστί. καὶ εἰ ἄλλως τὸ ἀκριβὲς ζητεῖ κατὰ τὸν [illegible] ὅρον, μέχρι τίνος οἱ Κίλικες διέτεινον καὶ οἱ Πελασγοί. καὶ ἔτι οἱ μεταξὺ τούτων Κήτειοι λεγόμενοι. οἱ ὑπὸ τῷ Εὐρυπύλῳ. περὶ μὲν οὖν τῶν Κιλίκων, καὶ τῶν ὑπὸ Εὐρύπυλον, τὰ ἐνόντα εἴρηται. καὶ διότι τὰ περὶ τὸν Κάϊκον μάλιστα περατοῦνται. τοὺς δὲ Πελασγοὺς εὔλογον τούτοις ἐφεξῆς τιθέναι. ἔκ τε τῶν ὑφ' Ὁμήρου λεγομένων, καὶ ἐκ τῆς ἄλλης ἱστορίας. ὁ μὲν γὰρ οὕτω φησίν.
» Ἱππόθοος δ' ἄγε φῦλα Πελασγῶν ἐγχεσιμώρων.
» Τῶν οἳ Λάρισσαν ἐριβώλακα ναιετάασκον.
» Τῶν ἦρχ' Ἱππόθοός τε Πύλαιός τ' ὄζος Ἄρηος. Υἷε δύο Λήθοιο Πελασγοῦ Τευταμίδαο.

Ἐξ ὧν πλῆθός τε ἐμφαίνει ἀξιόλογον, τὸ τῶν Πελασγῶν. οὐ γὰρ φῦλον. ἀλλὰ φῦλα ἔφη. καὶ τὴν οἴκησιν ἐν Λαρίσσῃ φράζει. πολλαὶ μὲν οὖν αἱ Λάρισσαι. δεῖ δὲ τῶν ἐγγύς τινα δέξασθαι. μάλιστα δ' ἂν τὴν περὶ Κύμην ὑπολάβοι τις ὀρθῶς. τριῶν γὰρ οὐσῶν, ἡ μὲν καθ' Ἀμαξιτὸν, ἐν ὄψει τελέως ἐστὶ τῷ Ἰλίῳ. καὶ ἐγγὺς σφόδρα ἐν διακοσίοις που σταδίοις. ὥστ' οὐκ ἂν λέγοιτο πιθανῶς ὁ Ἱππόθοος πεσεῖν ἐν τῷ ὑπὲρ Πατρόκλου ἀγῶνι τῆλ' ἀπὸ Λαρίσσης ταύτης γε. ἀλλὰ μᾶλλον τῆς περὶ Κύμην, χίλιοι γάρ που στάδιοι μεταξύ. τρίτη δὲ Λάρισσα κώμη τῆς Ἐφεσίας ἐν τῷ Καϋστρίῳ πεδίῳ. ἥν φασι πόλιν ὑπάρξαι πρότερον ἔχουσαν, καὶ τὸ ἱερὸν Ἀπόλλωνος Λαρισηνοῦ. πλησιάζουσαν τῷ Τμώλῳ μᾶλλον ἢ τῇ Ἐφέσῳ. ταύτης γὰρ ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα διέχει σταδίους. ὥστε ὑπὸ τοῖς Μήοσιν ἄν τις τάττοι ταύτην. Ἐφέσιοι δ' αὐξηθέντες ὕστερον, πολλὴν τῆς τῶν Μηόνων οὓς νῦν Λυδοὺς φαμὲν ἀπετέμοντο, ὥστ' οὐδ' αὕτη ἂν ἡ τῶν Πελασγῶν Λάρισσα εἴη. ἀλλ' ἐκείνη μᾶλλον. καὶ γὰρ τῆς μὲν ἐν τῇ Καϋστριανῇ Λαρίσσης, οὐδὲν ἔχομεν τεκμήριον ἰσχυρὸν, ὡς ἦν ἤδη τότε. οὐδὲ γὰρ τῆς Ἐφέσου. τῆς δὲ περὶ τὴν Κύμην μαρτύριόν ἐστι πᾶσα ἡ Αἰολικὴ ἱστορία. μικρὸν ὕστερον τῶν Τρωϊκῶν γενομένη. φασὶ γὰρ τοὺς ἐν τῷ Φρικίῳ τοῦ ὑπὲρ Θερμοπυλῶν Λοκρικοῦ ὄρους ὁρμηθέντας, κατᾶραι μὲν εἰς τὸν τόπον ὅπου νῦν ἡ Κύμη ἐστί. καταλαβόντας δὲ τοὺς Πελασγοὺς κεκακωμένους ὑπὸ τοῦ Τρωϊκοῦ πολέμου, κατέχοντας δ' ὅμως ἔτι τὴν Λάρισσαν. διέχουσαν τῆς Κύμης ὅσον ἑβδομήκοντα σταδίους, ἐπιτειχίσαι αὐτοῖς τὸ νῦν ἔτι λεγόμενον Νέον τεῖχος ἀπὸ τριάκοντα σταδίων τῆς Λαρίσσης. ἑλόντας δὲ κτίσαι τὴν Κύμην, καὶ τοὺς περιγενομένους ἀνθρώπους ἐκεῖσε ἀνοικίσαι. ἀπὸ δὲ τοῦ Λοκρικοῦ ὄρους τήν τε Κύμην Φρικωνίδα καλοῦσι. ὁμοίως δὲ καὶ τὴν Λάρισσαν. ἔρημος δ' ἐστὶ νῦν. ὅτι δ' οἱ Πελασγοὶ μέγα ἦν ἔθνος, καὶ ἐκ τῆς ἄλλης ἱστορίας οὕτως ἐκμαρτυρεῖσθαί φασι. Μενεκράτης γοῦν ὁ Ἐλαΐτης ἐν τοῖς περὶ κτίσεων, φησὶ τὴν παραλίαν τὴν νῦν Ἰωνικὴν πᾶσαν, ἀπὸ Μυκάλης ἀρξαμένην, ὑπὸ Πελασγῶν οἰκεῖσθαι πρότερον, καὶ τὰς πλησίον νήσους. λέ-

σβιοι δ' ὑπὸ πυλαίῳ τετάχθαι λέγουσι σφᾶς, τῷ ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένῳ· τῷ τῶν πελασγῶν ἄρ-
χοντι. ἀφ' οὗ καὶ τὸ παρ' αὐτοῖς ὄρος ἔτι πύλαιον καλεῖσθαι. καὶ χῖοι δὲ οἰκιστὰς ἑαυτῶν πελασγοὺς φα-
σι, τοὺς ἐκ τῆς θετταλίας. πολύανδρον δὲ καὶ ταχὺ τὸ ἔθνος πρὸς ἐπαναστάσεις. ηὐξήθη τε ἐπὶ πο-
λύ. καὶ ἀθρόαν ἔλαβε τὴν ἔκλειψιν. καὶ μάλιστα κατὰ τὴν τῶν αἰολέων, καὶ τῶν ἰώνων περαίωσιν εἰς τὴν
ἀσίαν. ἴδιον δέ τι τοῖς λαρισαίοις συνέβη. τοῖς τε καϋστριανοῖς καὶ τοῖς φρικωνεῦσι. καὶ τρίτοις τοῖς
ἐν θετταλίᾳ. ἅπαντες γὰρ ποταμόχωστον τὴν χώραν ἔχον. οἱ μὲν, ὑπὸ τοῦ καΰστρου. οἱ δ' ὑπὸ τοῦ ἕρ-
μου. οἱ δ' ὑπὸ τοῦ πηνειοῦ. ἐν δὲ τῇ φρικωνίδι λαρίσσῃ, τετιμῆσθαι λέγεται πίασος. ὅν φασιν ἄρχον-
τα πελασγῶν, ἐρασθῆναι τῆς θυγατρὸς λαρίσσης. βιασάμενον δ' αὐτὴν, τίσαι τῆς ὕβρεως δίκην. ἐγκύ-
ψαντα γὰρ εἰς πίθον οἴνου καταμαθοῦσαν, τῶν σκελῶν λαβομένην ἐξᾶραι καὶ καθεῖναι αὐτὸν εἰς τὸν
πίθον. τὰ μὲν οὖν ἀρχαῖα τοιαῦτα. ταῖς δὲ νῦν αἰολικαῖς πόλεσιν, ἔτι καὶ τὰς αἰγὰς προσληπτέον,
καὶ τὴν τῆμνον ὅθεν ἦν ἑρμαγόρας ὁ τὰς ῥητορικὰς τέχνας συγγράψας. ἵδρυνται δὲ πόλεις αὗται
κατὰ τὴν ὀρεινὴν τὴν ὑπερκειμένην τῆς τε κυμαίας καὶ τῆς φωκαέων καὶ σμυρναίων γῆς, παρ' ἣν ὁ
ἕρμος ῥεῖ. οὐκ ἄπωθεν δὲ τούτων τῶν πόλεων. οὐδ' ἡ μαγνησία ἐστὶν ἡ ὑπὸ σιπύλῳ, ἐλευθέρα πόλις ὑπὸ
ῥωμαίων κεκριμένη. καὶ ταύτην δ' ἐκάκωσαν οἱ νεωστὶ γενόμενοι σεισμοί. εἰς δὲ τἀναντία τὰ ἐπὶ τὸν
καΐκον νεύοντα, ἀπὸ λαρίσσης μὲν διαβαίνοντι τὸν ἕρμον, εἰς κύμην, ἑβδομήκοντα στάδιοι. ἐντεῦθεν δ' εἰς μύ-
ριναν τετταράκοντα στάδιοι. τὸ δ' ἴσον ἐντεῦθεν εἰς γρύνιον. κἀκεῖθεν εἰς ἐλαίαν. ὡς δ' ἀρτεμίδωρος ἀ-
πὸ τῆς ἴδης εἰσὶν ἄδαι. εἶτ' ἄκρα τετταράκοντα σταδίους, ἣν καλοῦσιν ὕδραν ἣ ποιοῦσα τὸν κόλπον τὸν
ἐλαϊκόν. πρὸς τὴν ἀπεναντίαν ἄκραν ἁρματοῦντα. τοῦ μὲν οὖν στόματος τὸ πλάτος περὶ ὀγδοήκοντα
σταδίους ἐστὶν ἐγκολπίζοντι μύρινα. ἐν ἑξήκοντα σταδίοις αἰολὶς πόλις ἔχουσα λιμένα. εἶτ' ἀχαιῶν λι-
μήν. ὅπου οἱ βωμοὶ τῶν δώδεκα θεῶν, εἶτα πολίχνιον μυριναίων. γρύνιον. καὶ ἱερὸν ἀπόλλωνος. καὶ
μαντεῖον ἀρχαῖον, καὶ νεὼς πολυτελὴς λίθου λευκοῦ. στάδιοι δ' ἐπ' αὐτὴν τετταράκοντα. εἶθ' ἑβδομή-
κοντα εἰς ἐλαίαν. λιμένα ἔχουσαν καὶ ναύσταθμον τῶν ἀτταλικῶν βασιλέων. μενεσθέως κτίσμα, καὶ τῶν
σὺν αὐτῷ ἀθηναίων. τῶν συστρατευσάντων ἐπὶ ἴλιον. τὰ δ' ἑξῆς εἴρηται τὰ περὶ πιτάνην, καὶ ἀταρνέα
καὶ τἄλλα τὰ τοιαῦτα. μεγίστη δέ ἐστι τῶν αἰολικῶν καὶ ἀρίστη κύμη. καὶ σχεδὸν μητρόπολις αὕτη τε καὶ
ἡ λέσβος τῶν ἄλλων πόλεων περὶ τριάκοντά που τὸν ἀριθμόν. ὧν ἐκλελοίπασιν οὐκ ὀλίγαι. σκώ-
πτεται δ' εἰς ἀναισθησίαν ἡ κύμη κατὰ τοιαύτην τινὰ, ὥς φασιν ἔνιοι δόξαν. ὅτι τριακοσίοις ἔτεσιν
ὕστερον τῆς κτίσεως ἀπέδοντο τοῦ λιμένος τὰ τέλη. πρότερον δ' οὐκ ἐκαρποῦτο τὴν πρόσοδον ταύτην
ὁ δῆμος. κατέσχεν οὖν δόξα ὡς ὀψὲ ᾐσθημένων ὅτι ἐπὶ θαλάττῃ πόλιν οἰκοῖεν. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος λόγος
ὅτι δανεισάμενοι χρήματα δημόσια, τὰς στοὰς ὑπέθεντο. εἶτ' οὐκ ἀποδόντες κατὰ τὴν ὡρισμένην ἡμέραν
εἴργοντο τῶν περιπάτων. ὅτε μέντοι ὄμβρος εἴη κατ' αἰδῶ τινα κηρύττοιεν οἱ δανεισταὶ, κελεύοντες ὑπὸ
τὰς στοὰς ὑπέρχεσθαι. τοῦ δὴ κήρυκος οὕτω φθεγγομένου ὑπὸ τὰς στοὰς ὑπέλθετε, ἐκπεσεῖν λόγον, ὡς
κυμαίων οὐκ αἰσθανομένων ὡς ἐν τοῖς ὄμβροις ὑπὸ τὰς στοὰς ὑπελθετέον, ἂν μὴ σημαίνῃ τις αὐτοῖς διὰ
κηρύγματος. ἀνὴρ δ' ἄξιος μνήμης ἐκ τῆς δε τῆς πόλεως ἀναντιλέκτως ἐστὶν ἔφορος τῶν ἰσοκράτους γνω-
ρίμων τοῦ ῥήτορος. ὁ τὴν ἱστορίαν συγγράψας. καὶ τὰ περὶ τῶν εὑρημάτων. καὶ ἔτι πρότερος τούτου
ἡσίοδος ὁ ποιητής. αὐτὸς γὰρ εἴρηκεν ὅτι ὁ πατὴρ αὐτοῦ δῖος μετῴκησεν εἰς βοιωτοὺς κύμην αἰολίδα (προλιπών.

» Νάσσατο δ' ἄγχ' ἑλικῶνος ὀϊζυρῇ ἐνὶ κώμῃ

» Ἄσκρῃ χεῖμα κακῇ. θέρει ἀργαλέῃ. οὐδέ ποτ' ἐσθλῇ.

Ὅμηρος δ' οὐχ ὁμολογουμένως. πολλοὶ γὰρ ἀμφισβητοῦσιν αὐτοῦ. τὸ δ' ὄνομα αὐτὸ ἀμαζόνος τῇ
πόλει τεθεῖσθαι. καθάπερ καὶ τῇ μυρίνῃ ἀπὸ τῆς ἐν τῷ τρωϊκῷ πεδίῳ κειμένης ὑπὸ τῇ βατιείᾳ.

» Τὴν, ἤτοι ἄνδρες βατίειαν κικλήσκουσιν.

» Ἀθάνατοι δέ τε σῆμα πολυσκάρθμοιο μυρίνης.

Σκώπτεται δὲ καὶ ὁ ἔφορος διότι τῆς πατρίδος οὐκ ἔχων ἔργα φράζειν ἐν τῇ διαριθμήσει τῶν ἄλλων
πράξεων, οὐ μὴν οὐδ' ἂν ἀμνημόνευτον αὐτὴν εἶναι θέλων οὕτως ἐπιφωνεῖ. κατὰ δὲ τὸν αὐτὸν καιρὸν
κυμαῖοι τὰς ἡσυχίας ἦγον. ἐπεὶ δὲ διεληλύθαμεν τὴν τρωικὴν ἅμα καὶ τὴν αἰολικὴν παραλίαν, ἐφε-
ξῆς ἂν εἴη τὴν μεσόγαιαν ἐπιδραμεῖν μέχρι τοῦ ταύρου. φυλάττοντας τὴν αὐτὴν τῆς ἐφόδου τάξιν.
ἔχει δέ τινα ἡγεμονίαν πρὸς τόπους τούτους. τὸ πέργαμον ἐπιφανὴς πόλις. καὶ πολὺν συνευτυχή-
σασα χρόνον τοῖς ἀτταλικοῖς βασιλεῦσι. καὶ δὴ καὶ ἐντεῦθεν ἀρκτέον τῆς ἑξῆς περιοδείας. καὶ πρῶ-
τον περὶ τῶν βασιλέων ὁπόθεν ὡρμήθησαν, καὶ εἰς ἃ κατέστρεψαν, ἐν βραχέσι δηλωτέον. ἦν μὲν δὴ τὸ
πέργαμον λυσιμάχου γαζοφυλάκιον τοῦ ἀγαθοκλέους ἑνὸς τῶν ἀλεξάνδρου διαδόχων. αὐτὴν τὴν ἄ-
κραν τοῦ ὄρους συνοικημένην ἔχον. ἔστι δὲ στροβιλοειδὲς τὸ ὄρος εἰς ὀξεῖαν κορυφὴν ἀπολῆγον. ἐπεπίστευ-
το δὲ τὴν φυλακὴν τοῦ ὀρύγματος τούτου καὶ τῶν χρημάτων, ἦν δὲ τάλαντα ἐννακισχίλια, φιλέται-
ρος ἀνὴρ τιανὸς θλιβίας ἐκ παιδός. συνέβη γὰρ ἔν τινι ταφῇ θέας οὔσης, καὶ πολλῶν παρόντων,
ἀποληφθεῖσαν ἐν τῷ ὄχλῳ τὴν κομίζουσαν τροφὸν τὸν φιλέταιρον ἔτι νήπιον, συνθλιβῆναι μέχρι το-
σοῦ δὲ, ὥστε πηρωθῆναι τὸν παῖδα. ἦν μὲν δὴ εὐνοῦχος. τραφεὶς δὲ καλῶς, ἐφάνη τῆς πίστεως ταύτης ἄ-
ξιος. πῶς

ξιος. τέως μὲν οὖν εὔνους διέμεινεν ἐν τῷ λυσιμάχῳ. διενεχθεὶς δὲ πρὸς ἀρσινόην τὴν γυναῖκα αὐτοῦ διαβάλλουσαν αὐτὸν, ἀπέστησε τὸ χωρίον, καὶ πρὸς τοὺς καιροὺς ἐπολιτεύετο. ὁρῶν ἐπιτηδείους πρὸς νεωτερισμόν. ὅ τε γὰρ λυσίμαχος κακοῖς οἰκείοις περιπεσὼν, ἠναγκάσθη τὸν υἱὸν ἀνελεῖν ἀγαθοκλέα, σέλευκός τε ἐπανελθὼν ὁ νικάτωρ. ἐκεῖνόν τε κατέλυσε. καὶ αὐτὸς κατελύθη δολοφονηθεὶς ὑπὸ πτολεμαίου τοῦ κεραυνοῦ. τοιούτων δὲ θορύβων ὄντων, διεγένετο μένων ἐπὶ τοῦ ἐρύματος ὁ εὐνοῦχος. καὶ πολιτευόμενος δι' ὑποσχέσεων καὶ τῆς ἄλλης θεραπείας ἀεὶ, πρὸς τὸν ἰσχύοντα. καὶ ἐγγὺς παρόντα. διετέλεσε γοῦν ἔτη εἴκοσι κύριος ὢν τοῦ φρουρίου, καὶ τῶν χρημάτων. ἦσαν δὲ αὐτῷ δύο ἀδελφοί. πρεσβύτερος μὲν εὐμένης. νεώτερος δὲ ἄτταλος. ἐκ μὲν οὖν τοῦ εὐμένους ἐγένετο τῷ πατρὶ ὁμώνυμος εὐμένης. ὅσπερ καὶ διεδέξατο τὸ πέργαμον. καὶ ἦν ἤδη δυνάστης τῶν κύκλῳ χωρίων. ὥστε καὶ περὶ σάρδεις ἐνίκησε συμβαλὼν ἀντίοχον τὸν σελεύκου. δύο δὲ καὶ εἴκοσιν ἄρξας ἔτη, τελευτᾷ τὸν βίον. ἐκ δὲ ἀττάλου καὶ ἀντιοχίδος τῆς ἀχαιοῦ γεγονὼς ἄτταλος διεδέξατο τὴν ἀρχήν. καὶ ἀνηγορεύθη βασιλεὺς οὗτος πρῶτος. νικήσας γαλάτας μάχῃ μεγάλῃ. οὗτος δὲ καὶ ῥωμαίοις κατέστη φίλος. καὶ συνεπολέμησε πρὸς φίλιππον μετὰ τοῦ ῥοδίων ναυτικοῦ. γηραιὸς δὲ ἐτελεύτα βασιλεύσας ἔτη τρία καὶ τετταράκοντα. κατέλιπε δὲ τέτταρας υἱοὺς ἐξ ἀπολλωνίδος κυζικηνῆς γυναικός. εὐμένη. ἄτταλον. φιλέταιρον. ἀθήναιον. οἱ μὲν οὖν νεώτεροι διετέλεσαν ἰδιῶται. τῶν δ' ἄλλων ὁ πρεσβύτερος εὐμένης ἐβασίλευσε. συνεπολέμησε δὲ καὶ οὗτος ῥωμαίοις πρός τε ἀντίοχον τὸν μέγαν. καὶ πρὸς περσέα. καὶ ἔλαβεν ἀπὸ τῶν ῥωμαίων ἅπασαν τὴν ὑπ' ἀντιόχῳ τὴν ἐντὸς τοῦ ταύρου. πρότερον δ' ἦν τὰ περὶ πέργαμον οὐ πολλὰ χωρία μέχρι τῆς θαλάττης τῆς κατὰ τὸν ἐλαΐτην κόλπον καὶ τὸν ἀδραμυττηνόν. κατεσκεύασε δ' οὗτος τὴν πόλιν. καὶ τὸ νικηφόριον. ἄλσος κατεφύτευσε, καὶ ἀναθήματα, καὶ βιβλιοθήκας. καὶ τὴν ἐπὶ τοσόνδε κατοικίαν τοῦ περγάμου τὴν νῦν οὖσαν ἐκεῖνος προσεφιλοκάλησε. βασιλεύσας ἔτη τετταράκοντα καὶ ἐννέα, ἀπέλιπε τῷ υἱῷ τὴν ἀρχὴν ἀττάλῳ. γεγονότι ἐκ στρατονίκης τῆς ἀριαράθου θυγατρὸς τοῦ καππαδόκων βασιλέως. ἐπίτροπον δὲ κατέστησε καὶ τοῦ παιδὸς νέου τελέως ὄντος. καὶ τῆς ἀρχῆς τὸν ἀδελφὸν ἄτταλον. ἓν δὲ καὶ εἴκοσιν ἔτη βασιλεύσας, γέρων οὗτος τελευτᾷ κατορθώσας πολλά. καὶ γὰρ δημήτριον τὸν σελεύκου συγκατεπολέμησεν ἀλεξάνδρῳ τῷ ἀντιόχου. καὶ συνεμάχησε ῥωμαίοις ἐπὶ τὸν ψευδοφίλιππον. ἐχειρώσατο δὲ καὶ διήγυλιν τὸν ἐκείνων βασιλέα στρατεύσας εἰς τὴν θρᾴκην. ἀνεῖλε δὲ καὶ προυσίαν, ἐπισυστήσας αὐτῷ νικομήδην τὸν υἱὸν, κατέλιπε δὲ καὶ τὴν ἀρχὴν τῷ ἐπιτροπευομένῳ ἀττάλῳ. βασιλεύσας δὲ οὗτος ἔτη πέντε καὶ κληθεὶς φιλομήτωρ, ἐτελεύτα νόσῳ τὸν βίον. κατέλιπε δὲ κληρονόμους ῥωμαίους. οἱ δ' ἐπαρχίαν ἀπέδειξαν τὴν χώραν. ἀσίαν προσαγορεύσαντες ὁμώνυμον τῇ ἠπείρῳ. παραρρεῖ δ' ὁ κάϊκος. καὶ τὸ πέργαμον διὰ τοῦ καΐκου πεδίου προσαγορευομένου, σφόδρα εὐδαίμονα γῆν διεξιών. σχεδὸν δέ τι καὶ τὴν ἀρίστην τῆς μυσίας. ἄνδρες δ' ἐγένοντο ἐλλόγιμοι καθ' ἡμᾶς περγαμηνοὶ, μιθριδάτης τε καὶ μηνοδότου υἱός. καὶ ἀδοβογίωνος. ὃς τοῦ τετραρχικοῦ τῶν γαλατῶν γένους ἦν. καὶ ὃν παλλακεῦσαι τῷ βασιλεῖ μιθριδάτῃ φασίν. ὅθεν καὶ τοὔνομα τῷ παιδὶ θέσθαι, προσποιησαμένους τοὺς ἐπιτηδείους ἐκ τοῦ βασιλέως αὐτὸν γεγονέναι. οὗτος οὖν καίσαρι τῷ θεῷ γενόμενος φίλος, εἰς τοσόνδε προῆλθε τιμῆς, ὥστε καὶ τετράρχης ἀπεδείχθη τοῦ μητρῴου γένους. καὶ βασιλεὺς ἄλλων τε καὶ τοῦ βοσπόρου. κατελύθη δ' ὑπὸ ἀσάνδρου τοῦ καὶ φαρνάκην ἀνελόντος τὸν βασιλέα καὶ κατασχόντα τὸν βόσπορον. οὗτός τε δὴ ὀνόματος ἠξίωται μεγάλου. καὶ ἀπολλόδωρος ὁ ῥήτωρ, ὁ τὰς τέχνας συγγράψας. καὶ τὴν ἀπολλοδώρειον αἵρεσιν παραγαγὼν ἥτις ποτ' ἐστί. πολλὰ γὰρ ἐπεκράτει. μείζονα δὲ ἡ καθ' ἡμᾶς ἔχοντα τὴν κρίσιν. ὧν ἐστι καὶ ἡ ἀπολλοδώρειος αἵρεσις καὶ ἡ θεοδώρειος. μάλιστα δὲ ἐξῆρε τὸν ἀπολλόδωρον ἡ τοῦ καίσαρος φιλία τοῦ σεβαστοῦ. διδάσκαλον τῶν λόγων γενόμενον. μαθητὴν δ' ἔσχεν ἀξιόλογον διονύσιον τὸν ἐπικληθέντα ἀττικόν. πολίτην αὐτοῦ. καὶ γὰρ σοφιστὴς ἦν ἱκανὸς καὶ συγγραφεὺς, καὶ λογογράφος. προϊόντι δ' ἀπὸ τοῦ πεδίου, καὶ τῆς πόλεως ἐπὶ μὲν τὰ πρὸς ἕω μέρη, πόλις ἐστὶν ἀπολλωνία. μετεώροις ἐπικειμένη τόποις. ἐπὶ δὲ τὸν νότον ὀρεινὴ ῥάχις ἐστὶν ἣν ὑπερβᾶσι, καὶ βαδίζουσιν ἐπὶ σάρδεων, πόλις ἐστὶν ἐν ἀριστερᾷ θυάτειρα. κατοικία μακεδόνων. ἣν μυσῶν ἐσχάτην τινὲς φασίν. ἐν δεξιᾷ δ' ἀπολλωνίς. διέχουσα περγάμου τριακοσίους σταδίους. τοὺς δὲ ἴσους καὶ τῶν σάρδεων, ἐπώνυμος δ' ἐστὶ τῆς κυζικηνῆς ἀπολλωνίδος. εἶτ' ἐκδέχεται τὸ ἕρμου πεδίον καὶ σάρδεις. τὰ δὲ προσάρκτια τῷ περγάμῳ τὰ πλεῖστα ὑπὸ μυσῶν ἔχεται τὰ ἐν δεξιᾷ τῶν ἀβλιτῶν λεγομένων. οἷς συνάπτει ἡ ἐπίκτητος μέχρι βιθυνίας. αἱ δὲ σάρδεις πόλις ἐστὶ μεγάλη. νεωτέρα μὲν τῶν τρωϊκῶν, ἀρχαία δ' ὅμως. ἄκραν εὐερκῆ ἔχουσα βασίλειον δ' ὑπῆρξε τῶν λυδῶν. οὓς ὁ ποιητὴς καλεῖ μήονας. οἱ δ' ὕστερον μαίονας. οἱ μὲν, τοὺς αὐτοὺς τοῖς λυδοῖς. οἱ δ' ἑτέρους ἀποφαίνοντες. τοὺς δὲ αὐτοὺς ἄμεινόν ἐστι λέγειν. ὑπέρκειται δὲ τῶν σάρδεων ὁ τμῶλος εὔδαιμον ὄρος. ἐν τῇ ἀκρωρείᾳ σκοπὴν ἔχον ἐξέδραν λευκοῦ λίθου περσῶν ἔργον. ἀφ' οὗ κατοπτεύεται τὰ κύκλῳ πεδία. καὶ μάλιστα τὸ καϋστριανόν. περιοικοῦσι δὲ λυδοί, καὶ μυσοί, καὶ μακεδόνες. ῥεῖ δ' ὁ πακτωλὸς ἀπὸ τοῦ τμώλου. καταφέρων τὸ παλαιὸν χρυσοῦ ψῆγμα

πολύ· ἀφ᾽ οὗ τὸν Κροίσου λεγόμενον πλοῦτον, καὶ τῶν προγόνων αὐτοῦ διονομασθῆναι φασί· νῦν δ᾽ ἐκλέλοιπε τὸ ψῆγμα. καταφέρεται δ᾽ ὁ Πακτωλὸς εἰς τὸν Ἕρμον· εἰς ὃν καὶ ὁ Ὕλλος ἐμβάλλει· Φρύγιος νυνὶ καλούμενος. συμπεσόντες δ᾽ οἱ τρεῖς καὶ ἄλλοι ἀσημότεροι σὺν αὐτοῖς, εἰς τὴν κατὰ Φωκαίαν ἐκδιδόασι θάλατταν, ὥς Ἡρόδοτος φησίν. ἄρχεται δὲ καὶ Μυσίας ὁ Ἕρμος, ἐξ ὄρους ἱεροῦ τῆς Δινδυμήνης. καὶ διὰ τῆς Κατακεκαυμένης εἰς τὴν Σαρδιανὴν φέρεται κατὰ συνεχῆ πεδία, ὥς εἴρηται μέχρι τῆς θαλάττης. ὑπόκειται δὲ τῇ πόλει τό τε Σαρδιανὸν πεδίον καὶ τὸ τοῦ Κύρου καὶ τὸ τοῦ Ἕρμου. καὶ τὸ Καϋστριανόν. συνεχῆ τε ὄντα, καὶ πάντων ἄριστα πεδίων, ἐν δὲ σταδίοις τετταράκοντα ἀπὸ τῆς πόλεως ἐστίν. ἡ Γυγαία μὲν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένη. Κολόη δ᾽ ὕστερον μετονομασθεῖσα. ὅπου τὸ ἱερὸν τῆς Κολοήνης Ἀρτέμιδος. μεγάλην ἁγιστείαν ἔχον. φασὶ δ᾽ ἐνταῦθα χορεύειν πιθήκους κατὰ τὰς ἑορτάς. οὐκ οἶδ᾽ ὅπως ποτὲ παραδοξολογοῦντες μᾶλλον, ἢ ἀληθεύοντες. κειμένων δ᾽ οὕτω πως τῶν ἐπῶν παρ᾽ Ὁμήρῳ,

» Μήοσιν αὖ Μέσθλης τε καὶ Ἄντιφος ἡγησάσθην.
» Υἷε Παλαιμένεος, τὼ, Γυγαίη τέκε λίμνη.
» Οἳ καὶ Μήονας ἦγον ὑπὸ Τμώλῳ γεγαῶτας.     Προσγράφουσί τινες τούτῳ τέταρτον ἔπος.
» Τμώλῳ ὑπὸ νιφόεντι Ὕδης ἐν πίονι δήμῳ.

Οὐδεμία δ᾽ εὑρίσκεται Ὕδη ἐν τοῖς Λυδοῖς. οἱ δὲ, καὶ τὸν Τύχιον ἐνθένδε ποιοῦσιν. ὅν φησιν ὁ ποιητής.

» Σκυτοτόμων ὄχ᾽ ἄριστος Ὕδῃ ἔνι.

Προστιθέασι δὲ καὶ διότι καὶ δρυμώδης ὁ τόπος καὶ κεραυνοβόλος. καὶ ὅτι ἐνταῦθα οἱ Ἄριμοι. καὶ οὕτως γὰρ ἐν Ἀρίμοις, ὅθι φασὶ Τυφωέος ἔμμεναι εὐνάς. ἐπιφέρουσι

» Χώρῳ ἐν ἰδρυόεντι Ὕδης ἐν πίονι δήμῳ.

Ἄλλοι δ᾽ ἐν Κιλικίᾳ. τινὲς δ᾽ ἐν Συρίᾳ πλάττουσι τὸν μῦθον τοῦτον. οἱ δ᾽ ἐν Πιθηκούσαις. οἳ καὶ τοὺς πιθήκους φασὶ παρὰ τοῖς Τυρρηνοῖς ἀρίμους καλεῖσθαι. οἱ δὲ, τὰς Σάρδεις Ὕδην ὀνομάζουσιν. οἱ δὲ, τὴν ἀκρόπολιν αὐτῆς, πιθανώτατος δ᾽ ὁ Σκήψιος ἡγεῖται, τοὺς ἐν τῇ Κατακεκαυμένῃ τῆς Μυσίας τοὺς Ἀρίμους τιθέντας. Πίνδαρος δὲ συνοικειοῖ τοῖς ἐν τῇ Κιλικίᾳ τὰ ἐν Πιθηκούσαις. ἅπερ ἐστὶ πρὸ τῆς Κυμαίας, καὶ τὰ ἐν Σικελίᾳ. καὶ γὰρ τῇ Αἴτνῃ φασὶν ὑποκεῖσθαι τὸν Τυφῶνα.

» Τόν ποτε Κιλίκιον θρέψε πολυώνυμον ἄντρον.
» Νῦν γε μὰν καὶ ταὶ ὑπὲρ Κύμας ἁλιορκέες ὄχθαι
» Ἥ Σικελία δ᾽ αὐτοῦ πιέζει στέρνα λαχνάεντα.     Καὶ πάλιν
» Κείνῳ μὲν Αἴτνα δεσμὸς ὑπερφίαλος ἀμφίκειται.     καὶ πάλιν.
» Ἀλλ᾽ οἶος ἄπλατον κεράιζε θεῶν Τυφῶνα
» Πεντηκοντοκέφαλον ἀνάγκᾳ Ζεὺς πατὴρ
» Ἐν Ἀρίμοις ποτέ.     Οἱ δὲ, τοὺς Σύρους Ἀρίμους δέχονται. οὓς νῦν Ἀραμαίους λέγουσι. τοὺς δὲ Κίλικας τοὺς ἐν τῇ Τροίᾳ μεταναστάντας εἰς Συρίαν ἀνῳκισμένους, ἀποτεμέσθαι παρὰ τῶν Σύρων τὴν νῦν λεγομένην Κιλικίαν. Καλλισθένης δ᾽ ἐγγὺς τοῦ Καλυκάδνου, καὶ τῆς Σαρπηδόνος ἄκρας παρ᾽ αὐτὸ τὸ Κωρύκιον ἄντρον εἶναι τοὺς Ἀρίμους. ἀφ᾽ ὧν τὰ ἐγγὺς ὄρη λέγεσθαι Ἄριμα. περίκειται δὲ τῇ λίμνῃ Κολόῃ τὰ μνήματα τῶν βασιλέων. πρὸς δὲ ταῖς Σάρδεσιν ἐστὶ τὸ τοῦ Ἀλυάττου ἐπὶ κρηπῖδος ὑψηλῆς χῶμα μέγα. ἐργασθὲν ὥς φησιν Ἡρόδοτος ὑπὸ τοῦ πλήθους τῆς πόλεως. οὗ τὸ πλεῖστον ἔργον αἱ παιδίσκαι συνετέλεσαν. λέγει δ᾽ ἐκεῖνος, καὶ πορνεύεσθαι πάσας. τινὲς, δὲ καὶ πόρνης μνῆμα λέγουσι τὸν τάφον. χειροποίητον δὲ τὴν λίμνην ἔνιοι ἱστοροῦσι τὴν Κολόην πρὸς τὰς ἐκδοχὰς τῶν πλημμυρίδων αἳ συμβαίνουσι τῶν ποταμῶν πληρουμένων. ὑπαίπα δὲ πόλις ἐστὶ καταβαίνουσιν ἀπὸ τοῦ Τμώλου πρὸς τὸ τοῦ Καΰστρου πεδίον. φησὶ δὲ Καλλισθένης ἁλῶναι τὰς Σάρδεις ὑπὸ Κιμμερίων πρῶτον. εἶθ᾽ ὑπὸ Τρηρῶν. καὶ Λυκίων. ὅπερ καὶ Καλλῖνον δηλοῦν τὸν τῆς ἐλεγείας ποιητήν. ὕστατα δὲ τὴν ἐπὶ Κύρου καὶ Κροίσου γενέσθαι ἅλωσιν. λέγοντος δὲ τοῦ Καλλίνου τὴν ἔφοδον τῶν Κιμμερίων ἐπὶ τοὺς Ἠσιονῆας γεγονέναι καθ᾽ ἣν αἱ Σάρδεις ἑάλωσαν, εἰκάζουσιν οἱ περὶ τὸν Σκήψιον Ἰαστὶ λέγεσθαι Ἠσιονεῖς τοὺς Ἀσιονεῖς. τάχα γὰρ ἡ Μηονία φησὶν, Ἀσία ἐλέγετο. καθ᾽ ὃ καὶ Ὅμηρος ἔλεγεν.

» Ἀσίῳ ἐν λειμῶνι Καϋστρίου ἀμφὶ ῥέεθρα.

Ἀναληφθεῖσα δ᾽ ἀξιολόγως ὕστερον διὰ τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας ἡ πόλις καὶ οὐδεμιᾶς λειπομένη τῶν ἀστυγειτόνων νεωστὶ ὑπὸ σεισμῶν ἀπέβαλε πολλὴν τῆς κατοικίας. ἡ δὲ τοῦ Τιβερίου πρόνοια τοῦ καθ᾽ ἡμᾶς ἡγεμόνος, καὶ ταύτην καὶ τῶν ἄλλων συχνὰς ἀνέλαβε ταῖς εὐεργεσίαις. ὅσαι περὶ τὸν αὐτὸν καιρὸν ἐκοινώνησαν τοῦ αὐτοῦ πάθους. ἄνδρες δ᾽ ἀξιόλογοι γεγόνασι τοῦ αὐτοῦ γένους. Διόδωροι δύο οἱ ῥήτορες. ὧν ὁ πρεσβύτερος ἐκαλεῖτο Ζωνᾶς. ἀνὴρ πολλοὺς ἀγῶνας ἠγωνισμένος ὑπὲρ τῆς Ἀσίας. κατὰ δὲ τὴν Μιθριδάτου τοῦ βασιλέως ἔφοδον αἰτίαν ἐσχηκὼς, ὡς ἀφιστὰς τὰς παρ᾽ αὐτοῦ πόλεις, ἀπελύσατο τὰς διαβολὰς ἀπολογησάμενος. τοῦ δὲ νεωτέρου φίλου ἡμῖν γενομένου, καὶ ἱστορικὰ συγγράμματά ἐστι, καὶ μέλη. καὶ ἄλλα ποιήματα τὴν ἀρχαίαν γραφὴν ἐμφαίνοντα ἱκανῶς. Ξάνθος δ᾽ ὁ παλαιὸς

συγγραφεὺς λυδὸς μὲν λέγεται. εἰ δὲ ἐκ σάρδεων οὐκ ἴσμεν. μετὰ δὲ λυδούς εἰσιν οἱ μυσοί. καὶ πόλις
φιλαδέλφεια σεισμῶν πλήρης. οὐ γὰρ διαλείπουσιν οἱ τοῖχοι διϊστάμενοι, καὶ ἄλλοτ' ἄλλο μέρος τῆς
πόλεως κακοπαθοῦν. οἰκοῦσιν οὖν ὀλίγοι τὴν πόλιν διὰ τοῦτο. οἱ δὲ πολλοὶ καταβιοῦσιν ἐν τῇ χώρᾳ γεωρ-
γοῦντες. ἔχοντες εὐδαίμονα γῆν. ἀλλὰ καὶ τῶν ὀλίγων θαυμάζειν ἔστιν, ὅτι οὕτω φιλοχωροῦσιν ἐπι-
σφαλεῖς τὰς οἰκήσεις ἔχοντες. ἔτι δ' ἄν τις μᾶλλον θαυμάσειε τῶν κτισάντων αὐτήν. μετὰ δὲ ταῦτ' ἔ-
στιν ἡ κατακεκαυμένη λεγομένη χώρα. μῆκος μὲν καὶ πεντακοσίων σταδίων. πλάτος δὲ τετρακοσίων. εἴ-
τε μυσίαν χρὴ καλεῖν, εἴτε μηονίαν. λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως. ἅπασα ἄδενδρος πλὴν ἀμπέλου τῆς
τὸν κατακεκαυμενίτην φερούσης οἶνον. οὐδενὸς τῶν ἐλλογίμων ἀρετῇ λειπόμενον. ἔστι δὲ ἡ ἐπιφά-
νεια τεφρώδης τῶν πεδίων. ἡ δ' ὀρεινὴ καὶ πετρώδης μέλαινα. ὡς ἂν ἐξ ἐπικαύσεως. εἰκάζουσι μὲν οὖν
τινὲς ἐκ κεραυνοβολιῶν καὶ πρηστήρων συμβῆναι τοῦτο. καὶ οὐκ ὀκνοῦσι τὰ περὶ τὸν τυφῶνα ἐνταῦ-
θα μυθολογεῖν. ξάνθος δὲ καὶ ἀριμοῦν τινα λέγει τῶν τόπων τούτων βασιλέα. οὐκ εὔλογον δὲ ὑπὸ
τοιούτων παθῶν τὴν τοσαύτην χώραν ἐμπρησθῆναι ἀθρόως. ἀλλὰ μᾶλλον ὑπὸ γηγενοῦς πυρός. ἐκ-
λιπεῖν δὲ νῦν τὰς πηγάς. δείκνυνται δὲ καὶ βόθροι τρεῖς οὓς φύσας καλοῦσιν. ὅσον τετταράκοντα ἀλ-
λήλων διεστῶτας σταδίους. ὑπέρκεινται δὲ λόφοι τραχεῖς. οὓς εἰκὸς ἐκ τῶν ἀναφυσηθέντων σεσωρεῦ-
σθαι μύδρων. τὸ δ' εὐάμπελον τὴν τοιαύτην ὑπάρχειν γῆν λάβοι τις ἄν, καὶ ἐκ τῆς καταναίας τῆς χω-
σθείσης τῇ σποδῷ, καὶ νῦν ἀφθονούσης οἶνον διαψιλῆ καὶ καλόν. ἀστειζόμενοι δέ τινες, εἰκότως πυριγε-
νῆ τὸν διόνυσον λέγεσθαί φασιν. ἐκ τῶν τοιούτων χωρίων τεκμαιρόμενοι. τὰ δ' ἑξῆς ἐπὶ τὰ νότια μέ-
ρη τοῖς τόποις τούτοις, ἐμπλοκὴν ἔχει μέχρι πρὸς τὸν ταῦρον. ὥστε καὶ τὰ φρύγια καὶ τὰ λύδια, καὶ
τὰ καρικὰ καὶ ἔτι τὸ τῶν μυσῶν, δυσδιάκριτα εἶναι παραπίπτοντα εἰς ἄλληλα. εἰς δὲ τὴν σύγχυσιν
ταύτην οὐ μικρὰ συλλαμβάνει τὸ τοὺς ῥωμαίους μὴ κατὰ φῦλα διελεῖν αὐτούς, ἀλλὰ ἕτερον τρόπον
διατάξαι τὰς διοικήσεις, ἐν αἷς τὰς ἀγοραίους ποιοῦνται καὶ τὰς δικαιοδοσίας. ὁ μέν γε τμῶλος ἱ-
κανῶς συνῆπται, καὶ περιγραφὴν ἔχει μετρίαν, ἐν αὐτοῖς ἀφοριζόμενος τοῖς λυδίοις μέρεσιν. ἡ δὲ με-
σωγὶς εἰς τὸ ἀντικείμενον μέρος διατείνει μέχρι μυκάλης, ἀπὸ κελαινῶν ἀρξάμενοι, ὥς φησι θεόπομ-
πος. ὥστε τὰ μὲν, αὐτοῦ φρύγες κατέχουσι τὰ πρὸς ταῖς κελαιναῖς, καὶ τῇ ἀπαμείᾳ. τὰ δὲ, μυσοὶ
καὶ λυδοί. τὰ δὲ, κᾶρες καὶ ἴωνες. οὕτω δὲ καὶ οἱ ποταμοί, καὶ μάλιστα ὁ μαίανδρος. τὰ μὲν, διο-
ρίζοντες τῶν ἐθνῶν. δι' ὧν δὲ μέσοι φερόμενοι. δυσληπτον ποιοῦσι τἀκριβές. καὶ περὶ τῶν πεδίων δὲ
τῶν ἐφ' ἑκάτερα τῆς τε ὀρεινῆς καὶ τῆς ποταμίας ὁ αὐτὸς λόγος. οὐδ' ἡμῖν ἴσως ἐπὶ τοσοῦτον φρον-
τιστέον. ὡς ἄρα κενῇ χωρομετροῦσιν. ἀλλὰ τοσοῦτον μόνον ὑπογραπτέον, ὅσον καὶ οἱ πρὸ ἡμῶν παρα-
δεδώκασι. τῷ δὲ καϋστριανῷ πεδίῳ μεταξὺ πίπτοντι τῆς τε μεσογειότητος, καὶ τοῦ τμώλου, συνε-
χές ἐστι πρὸς ἕω, τὸ κιλβιανὸν πεδίον, πολύ τε καὶ συνοικούμενον εὖ. καὶ χώραν ἔχει σπουδαίαν. εἶ-
τα τὸ ὑρκάνιον πεδίον. περσῶν ἐπονομασάντων, καὶ ἐποίκους ἀγαγόντων ἐκεῖθεν. ὁμοίως δὲ καὶ τὸ κύ-
ρου πεδίον ὃ πέρσαι κατωνόμασαν. εἶτα τὸ πελτηνὸν πεδίον, ἤδη φρύγιον. καὶ τὸ κιλλάνιον. καὶ τὸ τα-
βηνόν. ἔχον τὰς πολίχνας μιξοφρυγίους. ἐχούσας τι καὶ πισιδικόν, ἀφ' ὧν αὐτὰ κατωνομάσθη. ὑ-
περβάλλουσι δὲ τὴν μεσωγίδα τὴν μεταξὺ καρῶν τε, καὶ τῆς νυσαΐδος. ἥ ἐστι χώρα κατὰ τοῦ μαιάν-
δρου πέραν μέχρι τῆς κιβυράτιδος, καὶ τῆς καβαλίδος. πόλεις δ' εἰσὶ πρὸς μὲν τῇ μεσωγίᾳ κατὰ ἀν-
τικρὺ λαοδικείας, ἱεράπολις. ὅπου τὰ θερμὰ ὕδατα, καὶ τὸ πλουτώνιον. ἄμφω παραδοξολογίαν
τινὰ ἔχοντα. τὸ μὲν γὰρ ὕδωρ εἰς πῶρον οὕτω ῥᾳδίως μεταβάλλει πηττόμενον, ὥστ' ὀχετοὺς ἐπάγον-
τες, φραγμοὺς ἀπεργάζονται μονολίθους. τὸ δὲ πλουτώνιον ὑπ' ὀφρύϊ μικρᾷ τῆς ὑπερκειμένης
ὀρεινῆς, στόμιόν ἐστι σύμμετρον. ὅσον ἄνθρωπον δέξασθαι δυνάμενον. βεβάθυνται δ' ἐπὶ πολύ. πρόκει-
ται δὲ τούτου δρυφάκτωμα, τετράγωνον. ὅσον ἡμιπλέθρου τὴν περίμετρον. τοῦτο δὲ πλῆρές ἐστιν
ὁμιχλώδους παχείας ἀχλύος. ὥστε μόλις τοὔδαφος καθορᾶν. τοῖς μὲν οὖν κύκλῳ πλησιάζουσι
πρὸς τὸν δρύφακτον, ἄλυπός ἐστιν ὁ ἀήρ. καθαρεύων ἐκείνης τῆς ἀχλύος ἐν ταῖς νηνεμίαις. συμμένει
γὰρ ἐντὸς τοῦ περιβόλου. τῷ δ' εἴσω παριόντι ζώῳ θάνατος παραχρῆμα ἀπαντᾷ. ταῦροι γοῦν εἰσα-
χθέντες, πίπτουσι καὶ ἐξέλκονται νεκροί. ἡμεῖς δὲ στρουθία ἐπέμψαμεν, καὶ ἔπεσεν εὐθὺς ἐκπνεύσαν-
τα. οἱ δ' ἀπόκοποι γάλλοι παρίασιν ἀπαθεῖς. ὥστε καὶ μέχρι τοῦ στομίου πλησιάζειν, καὶ ἐγκύπτειν, καὶ
καταδύνειν μέχρι ποσοῦ συνέχοντας, ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ τὸ πνεῦμα. ἑωρῶμεν γὰρ ἐκ τῆς ὄψεως ὡς ἂν πνι-
γώδους τινὸς πάθους ἔμφασιν. εἴτε πάντων οὕτω πεπηρωμένων τοῦτο, εἴτε μόνον τῶν περὶ τὸ ἱε-
ρόν. καὶ εἴτε θείᾳ προνοίᾳ καθάπερ ἐπὶ τῶν ἐνθουσιασμῶν εἰκός, εἴτε ἀντιδότοις τισὶ δυνάμεσι τού-
του συμβαίνοντος. τὸ δὲ τῆς ἀπολιθώσεως, καὶ ἐπὶ τῶν ἐν λαοδικείᾳ ποταμῶν φασὶ συμβαίνειν.
καίπερ ὄντων ποτίμων. ἔστι δὲ καὶ πρὸς βαφὴν ἐρίων θαυμαστῶς σύμμετρον τὸ κατὰ τὴν ἱεράπολιν
ὕδωρ. ὥστε τὰ ἐκ τῶν ῥιζῶν βαπτόμενα ἐνάμιλλα εἶναι τοῖς ἐκ τῆς κόκκου καὶ τοῖς ἁλουργέσιν.
οὕτω δ' ἐστὶν ἄφθονον τὸ πλῆθος τοῦ ὕδατος, ὥστε ἡ πόλις μεστὴ τῶν αὐτομάτων βαλανείων ἐστί. μετὰ
δὲ τὴν ἱεράπολιν τὰ πέραν τοῦ μαιάνδρου. τὰ μὲν περὶ λαοδίκειαν, καὶ ἀφροδισιάδα καὶ τὰ μέχρι

καρούρων, εἴρηται. τὰ δ' ἑξῆς ἐστὶ πρὸς δύσιν, ἡ τῶν ἀντιοχέων πόλις τῶν ἐπὶ μαιάνδρῳ τῆς καρίας ἤδη. τὰ δὲ πρὸς νότον ἡ κίβυρά ἐστιν ἡ μεγάλη. καὶ ἡ σίνδη. καὶ ἡ καβαλὶς. μέχρι τοῦ ταύρου καὶ τῆς λυκίας. ἡ μὲν οὖν ἀντιόχεια μετρία πόλις ἐστίν. ἐπ' αὐτῷ κειμένη τῷ μαιάνδρῳ κατὰ τὸ πρὸς τῇ φρυγίᾳ μέρος. ἐπίζευκται δὲ γέφυρα. χώραν δ' ἔχει πολλὴν ἐφ' ἑκάτερα τοῦ ποταμοῦ πᾶσαν εὐδαίμονα. πλείστην δὲ φέρει τὴν καλουμένην ἀντιοχικὴν ἰσχάδα. τὴν δὲ αὐτὴν καὶ τρίφυλλον ὀνομάζουσιν. εὔσειστος δὲ καὶ οὗτος ἐστὶν ὁ τόπος. σοφιστὴς δὲ παρὰ τούτοις ἔνδοξος γεγένηται διοτρεφής. οὗ διήκουσεν ὑβρέας ὁ καθ' ἡμᾶς γενόμενος μέγιστος ῥήτωρ. σολύμους δ' εἶναί φασι τοὺς καβαλεῖς. τῆς γοῦν τερμησσέων ἄκρας ὁ ὑπερκείμενος λόφος καλεῖται σόλυμος. καὶ αὐτοὶ δὲ οἱ τελμισεῖς σόλυμοι καλοῦνται. πλησίον δ' ἐστὶ καὶ ὁ τοῦ βελλεροφόντου χάραξ. καὶ ὁ πεισάνδρου τάφος τοῦ υἱοῦ, πεσόντος ἐν τῇ πρὸς σολύμους μάχῃ. ταῦτα δ' ἑκάστοις ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένοις ὁμολογεῖται. περὶ μὲν γὰρ τοῦ βελλεροφόντου φησὶν οὕτω.

» Δεύτερον δ' ἐν σολύμοισι μαχέσατο κυδαλίμοισι.

Περὶ δὲ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ.

» Πείσανδρον δὲ υἱὸν ἄρης ἆτος πολέμοιο
» Μαρνάμενον σολύμοισι κατέκτανεν.

Ἡ δὲ τερμησσός ἐστι πισιδικὴ πόλις. ἡ μάλιστα καὶ ἔγγιστα ὑπερκειμένη τῆς κιβύρας. λέγονται δὲ ἀπόγονοι λυδῶν οἱ κιβυρᾶται τῶν κατασχόντων τὴν καβαλίδα. ὕστερον δὲ πισιδῶν τῶν ὁμόρων οἰκισάντων καὶ μετακτισάντων εἰς ἕτερον τόπον εὐερκέστατον ἐν κύκλῳ σταδίων περὶ ἑκατόν, ηὐξήθη δὲ διὰ τὴν εὐνομίαν. καὶ αἱ κῶμαι παρεξέτειναν ἀπὸ πισιδίας, καὶ τῆς ὁμόρου μιλυάδος ἕως λυκίας, καὶ τῆς ῥοδίων περαίας. προσγενομένων δὲ τριῶν πόλεων ὁμόρων, βουβῶνος. βαλβούρων. οἰνοάνδου, τετράπολις τὸ σύστημα ἐκλήθη. μίαν ἑκάστης ψῆφον ἐχούσης. δύο δὲ τῆς κιβύρας. ἔστελλε γὰρ αὕτη πεζῶν μὲν τρεῖς μυριάδας. ἱππέας δὲ δισχιλίους. ἐτυραννεῖτο δ' ἀεὶ σωφρόνως δ' ὅμως. ἐπὶ μοαγέτου δ' ἡ τυραννὶς τέλος ἔσχε. καταλύσαντος εἰς τὴν μουρήνα. καὶ λυκίοις προσνείμαντος τὴν βάλβουραν, καὶ τὴν βούβωνα. οὐδὲν δ' ἧττον ἐν ταῖς μεγίσταις ἐξετάζεται διοικήσεσι τῆς ἀσίας ἡ κιβυρατική. τέτταρσι δὲ γλώτταις ἐχρῶντο οἱ κιβυρᾶται. τῇ πισιδικῇ. τῇ σολύμων. τῇ ἑλληνίδι. τῇ λυδῶν. ταύτης δὲ οὐδ' ἴχνος ἐστὶν ἐν λυδίᾳ. ἴδιον δ' ἐστὶν ἐν κιβύρᾳ τὸ τὸν σίδηρον τορεύεσθαι ῥᾳδίως. μιλύα δ' ἐστὶν ἡ ἀπὸ τῶν κατὰ τερμησσὸν στενῶν, καὶ τῆς εἰς τὸ ἐντὸς τοῦ ταύρου ὑπερβάσεως δι' αὐτῶν ἐπὶ ἴσινδα παρατείνουσα ὀρεινὴ μέχρι σαγαλασσοῦ, καὶ τῆς ἀπαμέων χώρας. λοιπὸν δ' ἐστὶν ἐπελθεῖν τε ἰώνων, καὶ καρῶν. καὶ τῆς ἔξω τοῦ ταύρου παραλίας.

ΤΕΛΟΣ ΤΟΥ ΤΡΙΣΚΑΙΔΕΚΑΤΟΥ.

Τὸ τεσσαρεσκαιδέκατον περὶ τὰς κυκλάδας νήσους καὶ τὴν ἀντιπέραν χώραν· οἷον ἡ παμφυλία. ἰσαυρία. κιλικία. λυκία. πισιδία. ἕως κιλικίας, τῆς συρίας, καὶ τῆς ἀσίας τῆς ἰδίως λεγομένης ἰωνίας.

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΤΕΣΣΑΡΕΣΚΑΙΔΕΚΑΤΟΝ.

Λοιπὸν δ' ἐστὶν εἰπεῖν περὶ ἰώνων καὶ καρῶν, καὶ τῆς ἔξω τοῦ ταύρου παραλίας. ἣν ἔχουσι λύκιοί τε καὶ παμφύλιοι, καὶ κίλικες. οὕτω γὰρ ἂν ἔχοι τέλος ἡ πᾶσα τῆς χερρονήσου περιήγησις. ἧς ἰσθμὸν ἔφαμεν τὴν ὑπέρβασιν τὴν ἐκ τῆς ποντικῆς θαλάττης ἐπὶ τὴν ἰσσικήν. ἔστι δὲ τῆς ἰωνίας ὁ μὲν περίπλους ὁ παρὰ γῆν, σταδίων που τετρακοσίων τεσσαράκοντα. διὰ τοὺς κόλπους, καὶ διὰ τὸ χερρονησίζειν ἐπὶ πλεῖον τὴν χώραν. τὸ δ' ἐπ' εὐθείας μῆκος οὐ πολύ. αὐτὸ γοῦν τὸ ἐξ ἐφέσου μέχρι σμύρνης, ὁδὸς μέν ἐστιν ἐπ' εὐθείας τριακόσιοι εἴκοσι στάδιοι. εἰς γὰρ μητρόπολιν εἰκοσιτέτταρες, καὶ εἴκοσι στάδιοι. οἱ λοιποὶ δὲ εἰς σμύρναν. περίπλους δὲ μικρὸν ἀπολείπων τῶν διχιλίων, καὶ διακοσίων. ἔστι δὴ γοῦν ἀπὸ τοῦ ποσειδίου τοῦ μιλησίων, καὶ τῶν καρικῶν ὅρων, μέχρι φωκαίας καὶ τοῦ ἕρμου, τὸ πέρας τῆς ἰωνικῆς παραλίας. ταύτης δὲ φησὶ φερεκύδης μίλητον μὲν, καὶ μυοῦντα καὶ τὰ περὶ μυκάλην καὶ ἔφεσον, κάρας ἔχειν πρότερον. τὴν δ' ἑξῆς παραλίαν μέχρι φωκαίας, καὶ χίου, καὶ σάμου ἧς ἀγκαῖος ἦρχε. λέλεγας. ἐκβληθῆναι δ' ἀμφοτέρους ὑπὸ τῶν ἰώνων, καὶ εἰς τὰ λοιπὰ μέρη τῆς καρίας ἐκπεσεῖν. ἄρξαι δέ φησιν ἄνδροκλον τῆς τῶν ἰώνων ἀποικίας, ὕστερον τῆς αἰολικῆς, υἱὸν γνήσιον κόδρου τοῦ βασιλέως ἀθηνῶν γενέσθαι. τοῦτον δ' ἐφέσου κτίστην. διόπερ τὸ βασίλειον τῶν ἰώνων ἐκεῖ συστῆναι φασί. καὶ ἔτι νῦν οἱ ἐκ τοῦ γένους ὀνομάζονται βασιλεῖς, ἔχοντές τινας τιμάς. προεδρίαν τε ἐν ἀγῶσι. καὶ πορφύραν ἐπίσημον τοῦ βασιλικοῦ γένους. σκίπωνα ἀντὶ σκήπτρου. καὶ τὰ ἱερὰ τῆς ἐλευσινίας δήμητρος. καὶ μίλητον δ' ἔκτισε νηλεὺς ἐκ πύλου τὸ γένος ὤν. οἵ τε μεσσήνιοι, καὶ οἱ πύλιοι συγγένειάν τινα προσποιοῦνται. καθ' ἣν, καὶ μεσσήνιον τὸν νέστορα οἱ νεώτεροι φασὶ ποιηταί. καὶ τοῖς περὶ μέλανθον τὸν κόδρου πατέρα πολλοὺς, καὶ τῶν πυλίων συνεξᾶραί φασιν εἰς τὰς ἀθήνας. τοῦτον δὴ πάντα τὸν λαὸν μετὰ τῶν ἰώνων κοινῇ στεῖλαι τὴν ἀποικίαν. τοῦ δὲ νηλέως ἐπὶ τῷ ποσειδίῳ βωμὸς ἵδρυμα δείκνυται. κύδρηλος δὲ νόθος υἱὸς κόδρου μυοῦντα κτίζει. ἀνδρόκλος δὲ λέβεδον. καταλαβόμενος τόπον τινὰ αὐτήν. κολοφῶνα δ' ἀνδραίμων πύλιος ὥς φησι καὶ μίμνερμος ἐν ναννοῖ. πριήνην δ' αἴπυτος ὁ νηλέως. εἶθ' ὕστερον φιλώτας ἐκ θηβῶν λαὸν ἀγαγών. τέω δὲ ἀθάμας μὲν πρότερον. διὸ ἀθαμαντίδα καλεῖ αὐτὴν ἀνακρέων. κατὰ δὲ τὴν ἰωνικὴν ἀποικίαν. ναῦκλος υἱὸς κόδρου νόθος, καὶ μετὰ τοῦτον ποίκης, καὶ δάμασθος ἀθηναῖοι. καὶ γὰρ ἦν ἐκ βοιωτῶν. ἐρυθρὰς δὲ, καὶ κνῶπος, καὶ οὗτος υἱὸς κόδρου νόθος. φώκαιαν δ' οἱ μετὰ φιλογένους ἀθηναῖοι. κλαζομενὰς δὲ, πάραλος. χίον δὲ ἔγερτιος. σύμμικτον ἐπαγόμενος πλῆθος. σάμον δὲ τεμβρίων. εἶθ' ὕστερον προκλῆς. αὗται μὲν δώδεκα ἰωνικαὶ πόλεις. προσελήφθη δὲ ὕστερον καὶ σμύρνα, εἰς τὸ ἰωνικὸν ἐναγαγόντων ἐφεσίων. ἦσαν γὰρ αὐτοῖς σύνοικοι τὸ παλαιὸν ἡνίκα, καὶ σμύρνα ἐκαλεῖτο ἡ ἔφεσος. καὶ καλλῖνός που οὕτως ὠνόμασεν αὐτήν. σμυρναίους τοὺς ἐφεσίους καλῶν ἐν τῷ πρὸς δία, λόγῳ. Σμυρναίους δ' ἐλέησον. καὶ πάλιν μνῆσαι δ' εἴκοτέ τοι μηρία καλὰ βοῶν. Σμύρνα δ' ἦν ἀμαζὼν ἡ κατασχοῦσα τὴν ἔφεσον. ἀφ' ἧς τοὔνομα καὶ τοῖς ἀνθρώποις καὶ τῇ πόλει. ὡς καὶ ἀπὸ σισύρβης σισυρβῖταί τινες τῶν ἐφεσίων ἐλέγοντο. καὶ τόπος δέ τις τῆς ἐφέσου σμύρνα ἐκαλεῖτο. ὡς δηλοῖ ἱππῶναξ. σμύρνῃ δ' ὄπισθεν τῆς πόλιος ἐν σμύρνῃ μεταξὺ τρηχέης τε καὶ λεπρῆς ἀκτῆς. ἐκαλεῖτο γὰρ λεπρὴ μὲν ἀκτὴ ὁ πριὼν ὑπερκείμενος τῆς νῦν πόλεως ἔχων μέρος τοῦ τείχους αὐτῆς. τὰ γοῦν ὄπισθεν τοῦ πριῶνος κτήματα ἔτι νυνὶ λέγεται ἐν τῇ ὀπισθολεπρίᾳ. τραχεῖα δ' ἐκαλεῖτο ἡ ὑπὲρ τὸν κορησσὸν παρώρειος. ἡ δὲ πόλις ἦν τὸ παλαιὸν περὶ τὸ ἀθήναιον τὸ νῦν ἔξω τῆς πόλεως ὄν, κατὰ τὴν καλουμένην ὑπέλαιον, ὥστε ἡ σμύρνα ἦν κατὰ τὸ νῦν γυμνάσιον. ὄπισθεν μὲν τῆς νῦν πόλεως. μεταξὺ δὲ τρηχείης τε καὶ λεπρῆς ἀκτῆς. ἀπελθόντες δὲ παρὰ τῶν ἐφεσίων οἱ σμυρναῖοι, στρατεύουσιν

ἐπὶ τὸν τόπον ἐν ᾧ νῦν ἐστιν ἡ σμύρνα. λελέγων κατεχόντων. ἐκβαλόντες δ' αὐτοὺς, ἔκτισαν τὴν παλαιὰν σμύρναν διέχουσαν τῆς νῦν, περὶ εἴκοσι σταδίους. ὕστερον δὲ ὑπὸ αἰολέων ἐκπεσόντες ἔφυγον εἰς κολοφῶνα. καὶ μετὰ τῶν ἐνθένδε ἐπιόντες, τὴν σφετέραν ἀπέλαβον. καθάπερ καὶ μίμνερμος ἐν τῇ ναννοῖ φράζει. μνησθεὶς τῆς σμύρνης, ὅτι περιμάχητος ἀεί.

» Αἰπύ τε πύλον νηλήιον ἄστυ λιπόντες.
» Ἱμερτὴν ἀσίην νηυσὶν ἀφικόμεθα.
» Ἐς δ' ἀρὰ τὴν κολοφῶνα βίην ὑπέροπλον ἔχοντες.
» Ἑζόμεθ' ἀργαλέης ὕβριος ἡγεμόνες.
» Κεῖθεν διαστήεντος ἀπορνύμενοι ποταμοῖο
» Θεῶν βουλῇ σμύρναν εἵλομεν αἰολίδα.

Ταῦτα μὲν περὶ τούτων. ἐφοδευτέον δὲ πάλιν τὰ καθέκαστα, τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῶν ἡγεμονικωτέρων τόπων ποιησαμένους, ἀφ' ὧνπερ καὶ πρῶτον αἱ κτίσεις ἐγένοντο. λέγω δὲ τῶν περὶ μίλητον καὶ ἔφεσον. αὗται γὰρ ἄρισται πόλεις καὶ ἐνδοξόταται. μετὰ δὲ τὸ ποσείδιον τὸ μιλήσιον. ἑξῆς ἐστι τὸ μαντεῖον τοῦ διδυμέως ἀπόλλωνος τὸ ἐν βραγχίδαις. ἀναβαίνοντι ὅσον ὀκτωκαίδεκα σταδίους. ἐνεπρήσθη δ' ὑπὸ ξέρξου καθάπερ καὶ τὰ ἄλλα ἱερὰ πλὴν τοῦ ἐν ἐφέσῳ. οἱ δὲ βραγχίδαι τοὺς θησαυροὺς τοῦ θεοῦ παραδόντες τῷ πέρσῃ φεύγοντι, συναπῆραν τοῦ μὴ τῖσαι δίκας τῆς ἱεροσυλίας, καὶ τῆς προδοσίας. ὕστερον δ' οἱ μιλήσιοι μέγιστον νεὼν τῶν πάντων κατεσκεύασαν. διέμεινε δὲ χωρὶς ὀροφῆς διὰ τὸ μέγεθος. κώμης γοῦν κατοικίαν ὁ τοῦ σηκοῦ περίβολος δέδεκται. καὶ ἄλσος ἐντός τε καὶ ἐκτὸς πολυτελές. ἄλλοι δὲ σηκοὶ τὸ μαντεῖον καὶ τὰ ἱερὰ συνέχουσιν. ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται καὶ τὰ περὶ τὸν βράγχον, καὶ τὸν ἔρωτα τοῦ ἀπόλλωνος. κεκόσμηται δ' ἀναθήμασι τῶν ἀρχαίων ἐθνῶν πολυτελέστατα. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὴν πόλιν οὐ πολλή ὁδός ἐστιν ἡ πλοῦς. φησὶ δ' ἔφορος τὸ πρῶτον κτίσμα εἶναι κρητικῶν ἐκ θαλάττης τετειχισμένον. ὅπου νῦν ἡ παλαιὰ μίλητος ἐστὶ σαρπηδόνος ἐκ μιλήτου τῆς κρητικῆς ἀγαγόντος οἰκήτορας, καὶ θεμένου τοὔνομα τῇ πόλει. τῆς ἐκεῖ πόλεως ἐπώνυμον. κατεχόντων πρότερον τὸν τόπον λελέγων. τοὺς δὲ περὶ νηλέα ὕστερον τὴν νῦν τειχίσαι πόλιν. ἔχει δὲ τέτταρας λιμένας ἡ νῦν. ὧν ἕνα καὶ στόλῳ ἱκανόν. πολλὰ δὲ τῆς πόλεως ἔργα ταῦτα. μέγιστον δὲ τὸ πλῆθος τῶν ἀποικιῶν. ὅ, τε γὰρ εὔξεινος πόντος ὑπὸ τούτων συνῴκισται πᾶς. καὶ ἡ προποντὶς. καὶ ἄλλοι πλείους τόποι. ἀναξιμένης γοῦν ὁ λαμψακηνὸς οὕτω φησίν. ὅτι καὶ ἴκαρον τὴν νῆσον καὶ λέρον μιλήσιοι συνῴκισαν. καὶ περὶ ἑλλήσποντον ἐν μὲν τῇ χερρονήσῳ λίμνας. ἐν δὲ τῇ ἀσίᾳ ἄβυδον. ἀρίσβαν. παισόν. ἐν δὲ τῇ κυζικηνῶν νήσῳ ἀρτάκην. κύζικον. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς τρῳάδος σκῆψιν. ἡμεῖς δ' ἐν τοῖς καθέκαστα λέγομεν, καὶ τὰς ἄλλας τὰς ὑπὸ τούτου παραλελειμμένας. οὔλιον δ' ἀπόλλωνα καλοῦσί τινα καὶ μιλήσιοι, καὶ δήλιοι. οἷον ὑγιαστικὸν καὶ παιωνικόν. τὸ γὰρ οὔλειν ὑγιαίνειν. ἀφ' οὗ καὶ τὸ οὐλὴ, καὶ οὖλέ τε μέγα χαῖρε. ἰατικὸς γὰρ ὁ ἀπόλλων. καὶ ἡ ἄρτεμις ἀπὸ τοῦ ἀρτεμέας ποιεῖν. καὶ ὁ ἥλιος δὲ καὶ ἡ σελήνη συνοικειοῦνται τούτοις. ὅτι τῆς περὶ τὸν ἀέρα εὐκρασίας αἴτιοι. καὶ τὰ λοιμικὰ δὲ πάθη, καὶ τοὺς αὐτομάτους θανάτους τούτοις ἀνάπτουσι τοῖς θεοῖς. ἄνδρες δ' ἄξιοι μνήμης ἐγένοντο ἐν τῇ μιλήτῳ, Θαλῆς τε εἷς τῶν ἑπτὰ σοφῶν ὁ πρῶτος φυσιολογίας ἄρξας ἐν τοῖς ἕλλησι, καὶ μαθηματικῆς. καὶ ὁ τούτου μαθητὴς ἀναξίμανδρος. καὶ ὁ τούτου πάλιν ἀναξιμένης. ἔτι δ' ἑκαταῖος ὁ τὴν ἱστορίαν συντάξας. καθ' ἡμᾶς δὲ αἰσχίνης ὁ ῥήτωρ. ὃς ἐν φυγῇ διετέλεσε. παρρησιασάμενος πέρα τοῦ μετρίου πρὸς πομπήιον μάγνον. ἠτύχησε δὴ πόλις ἀποκλείσασα ἀλέξανδρον καὶ βίᾳ ληφθεῖσα. καθάπερ καὶ ἁλικαρνασός. ἔτι δὲ πρότερον ὑπὸ περσῶν. καὶ φησί γε καλλισθένης ὑπ' ἀθηναίων χιλίαις δραχμαῖς ζημιωθῆναι φρύνιχον. τὸν τραγικόν. διότι δρᾶμα πεποίηκε μιλήτου ἅλωσιν ὑπὸ δαρείου. πρόκειται δ' ἡ λάδη νῆσος πλησίον. καὶ περὶ τὰς τραγαίας νησία ὑφόρμους ἔχοντα λῃσταῖς. ἑξῆς δ' ἐστὶν ὁ λατμικὸς κόλπος. ἐν ᾧ ἡράκλεια ἡ ὑπὸ λάτμῳ λεγομένη πολίχνιον. ὕφορμον ἔχον. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον λάτμος ὁμωνύμως τῷ ὑπερκειμένῳ ὄρει. ὅπερ ἑκαταῖος μὲν ἐμφαίνει τὸ αὐτὸ εἶναι νομίζων τῷ ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ φθειρῶν ὄρει λεγομένῳ. ὑπὲρ γὰρ τῆς λάτμου φησὶ τὸ φθειρῶν ὄρος κεῖσθαι. τινὲς δὲ τὸ γρίον φασὶν, ὡς ἂν παράλληλον τῷ λάτμῳ. ἀνῆκον ἀπὸ τῆς μιλησίας. πρὸς ἕω, διὰ τῆς καρίας μέχρι εὐρώμου, καὶ χαλκητόρων. ὑπέρκειται δὲ ταύτης ἐν ὕψει. μικρὸν δ' ἄποθεν διαβάντι πρὸς τῷ λάτμῳ ποταμίσκον, δείκνυται τάφος ἐνδυμίωνος ἔν τινι σπηλαίῳ. εἶτα ἀφ' ἡρακλείας ἐπὶ πύρραν πολίχνην πλοῦς ἑκατόν που σταδίων. μικρὸν δὲ πλέον τὸ ἀπὸ μιλήτου εἰς ἡράκλειαν ἐγκολπίζοντι. εὐθυπλοΐα δ' εἰς πύρραν ἀπὸ μιλήτου τριάκοντα. τοιαύτην ἔχει μακροπορείαν ὁ παρὰ γῆν πλοῦς. ἀνάγκη δ' ὑπὸ τῶν ἐνδόξων τόπων ὑπομένειν τὸ περισκελὲς τῆς τοιαύτης γεωγραφίας. ἐκ δὲ πύρρας ἐπὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ μαιάνδρου πεντήκοντα. τεναγώδης δ' ὁ τόπος καὶ ἑλώδης. ἀναπλεύσαντι δ' ὑπηρετικοῖς σκάφεσι τριάκοντα σταδίους, πόλις μυοῦς μία τῶν ἰάδων τῶν δώδεκα. ἣ νῦν δ' ὀλιγανδρίαν μιλησίοις συμπεπόλισται. ταύτην ὄψον λέγεται θεμιστοκλεῖ δοῦναι ξέρξης. ἄρτον δὲ μαγνησίαν. οἶνον δὲ λάμψακον. ἔνθεν ἐν σταδίοις τέσσαρσι κώμη καρικὴ θυμβρία. παρ' ἣν ἄορνον ἐστὶ σπήλαιον ἱερόν. χαρώνιον λεγόμενον. ὀλεθρίους

ἔχει προφοράς. ὑπόκειται δὲ μαγνησία ἡ πρὸς μαιάνδρῳ. μαγνήτων ἀποικία τῶν ἐν θετταλίᾳ,
καὶ κρητῶν. περὶ ἧς αὐτίκα ἐροῦμεν. μετὰ δὲ τὰς ἐκβολὰς τοῦ μαιάνδρου. ὁ κατὰ πριήνην
ἐστὶν αἰγιαλός. ὑπὲρ αὐτοῦ δ' ἡ πριήνη, καὶ μυκάλη τὸ ὄρος. εὔθηρον καὶ εὔδενδρον. ἐπίκειται δὲ,
τῇ σαμίᾳ. καὶ ποιεῖ πρὸς αὐτὴν ἐπέκεινα τῆς τρωγιλίου καλουμένης ἄκρας. ὅσον ἑπταστάδιον
πορθμόν. λέγεται δ' ὑπό τινων ἡ πριήνη κάδμη. ἐπειδὴ φιλώτας ὁ ἐπικτίσας αὐτὴν βοιώτιος
ὑπῆρχεν. ἐκ πριήνης δ' ἦν βίας εἷς τῶν ἑπτὰ σοφῶν. περὶ οὗ φασιν οὕτως ἱππῶναξ. καὶ δικά-
σασθαι ἐκβίαντος τοῦ πριηνέως κρέσσον. τῆς δὲ τρωγιλίου πρόκειται νησίον ὁμώνυμον. ἐντεῦ-
θεν δὲ τῷ ἐγγυτάτω δίαρμά ἐστιν ἐπὶ σούνιον σταδίων χιλίων ἑξακοσίων. κατ' ἀρχὰς μὲν σάμον,
ἐν δεξιᾷ ἔχοντι, καὶ ἰκαρίαν, καὶ κορσίας. τὰς δὲ μελανθίους, σκοπέλους ἐξ εὐωνύμων. τὸ λοιπὸν
δὲ διὰ μέσων τῶν κυκλάδων νήσων, καὶ αὐτὴ δ' ἡ τρωγίλιος ἄκρα, πρόπους τὶς τῆς μυκάλης ἐστί.
τῇ μυκάλῃ δ' ὄρος ἄλλο πρόσκειται τῆς ἐφεσίας πακτύης. καὶ ἡ μεσσωγὶς δὲ εἰς αὐτὴν καταστρέ-
φει. ἀπὸ δὲ τῆς τρωγιλίου στάδιοι τετταράκοντα εἰς τὴν σάμον. βλέπει δὲ πρὸς νότον, καὶ αὐτὴ καὶ
ὁ λιμὴν ἔχων ναύσταθμον. ἔστι δ' αὐτῆς ἐν ἐπιπέδῳ τὸ πλεῖον ὑπὸ τῆς θαλάττης κλυζόμενον. μέ-
ρος δέ τι, καὶ εἰς τὸ ὄρος ἀνήκει τὸ ὑπερκείμενον. ἐν δεξιᾷ μὲν οὖν προσπλέουσι πρὸς τὴν πό-
λιν ἐστὶ τὸ ποσείδιον. ἄκρα ἡ ποιοῦσα πρὸς τὴν μυκάλην τὸν ἑπταστάδιον πορθμόν. ἔχει δὲ νεὼν ποσει-
δῶνος. πρόκειται δ' αὐτοῦ νησίδιον ἡ ναρθηκίς. ἐπ' ἀριστερᾷ δὲ τὸ προάστειον τὸ πρὸς τῷ ἡραίῳ, καὶ
ὁ ἴμβρασος ποταμός. καὶ τὸ ἡραῖον ἀρχαῖον ἱερόν. καὶ νεὼς μέγας. ὃς νῦν πινακοθήκη ἐστί. χωρὶς
δὲ τοῦ πλήθους τῶν ἐνταῦθα κειμένων πινάκων. ἄλλαι πινακοθῆκαι, καὶ ναΐσκοι τινές εἰσι. πλή-
ρεις τῶν ἀρχαίων τεχνῶν. τό τε ὕπαιθρον. ὁμοίως μεστόν ἐστι τῶν ἀρίστων ἀνδριάντων. ὧν τρία μύρω-
νος ἔργα κολοσσικά. ἱδρυμένα ἐπὶ μιᾶς βάσεως. ἃ ἦρε μὲν ἀντώνιος. ἀνέθηκε δὲ πάλιν ὁ σεβα-
στὸς καῖσαρ εἰς τὴν αὐτὴν βάσιν. τὰ δύο τὴν ἀθηνᾶν, καὶ τὸν ἡρακλέα. τὸν δὲ δία εἰς τὸ καπετώλιον
μετήνεγκε. κατασκευάσας αὐτῷ ναΐσκον. περίπλους δ' ἐστὶ τῆς σαμίων νήσου σταδίων ἑξακοσίων.
ἐκαλεῖτο δὲ παρθενίας πρότερον οἰκούντων καρῶν. εἶτα ἀνθεμοῦς. εἶτα μελάμφυλος. εἶτα σά-
μος. εἴτ' ἀπό τινος ἐπιχωρίου ἥρωος. εἴτ' ἐξ ἰθάκης καὶ κεφαλληνίας ἀποικήσαντος. καλεῖται μὲν
οὖν, καὶ ἄκρα τὶς ἄμπελος βλέπουσά πως πρὸς τὸ τῆς ἰκαρίας δρέπανον. ἀλλὰ καὶ τὸ ὄρος ἅ-
παν ὃ ποιεῖ τὴν ὅλην νῆσον ὀρεινὴν ὁμωνύμως λέγεται. ἔστι δ' οὐκ εὔοινος καίπερ εὐοινουσῶν τῶν
κύκλῳ νήσων. καὶ τῆς ἠπείρου σχεδόν τι τῆς προσεχοῦς πάσης, τὸν ἄριστον ἐκφερουσῶν οἴνους. οἷον
χίου, καὶ λέσβου καὶ κῶ. καὶ μὴν καὶ ὁ ἐφέσιος, καὶ μητροπολίτης ἀγαθοί. ὅ τε μεσωγὶς, καὶ ὁ τμῶ-
λος, καὶ ἡ κατακεκαυμένη, καὶ κνίδος, καὶ σμύρνα. καὶ ἄλλοι ἀσημότεροι τόποι διαφόρως χρηστοὶ
νοῦσιν ἢ πρὸς ἀπόλαυσιν ἢ πρὸς διαίτας ἰατρικάς. περὶ μὲν οἴνους οὐ πάνυ εὐτυχεῖ σάμος. τὰ δ'
ἄλλα εὐδαίμων ὡς δῆλον ἔκ τε τοῦ περιμάχητον γενέσθαι. καὶ ἐκ τοῦ τοὺς ἐπαινοῦντας, μὴ ὀκνεῖν ἐφαρ-
μόττειν αὐτῇ τὴν λέγουσαν παροιμίαν. ὅτι φέρει καὶ ὀρνίθων γάλα. καθάπερ που, καὶ μένανδρος ἔφη.
αἴτιον δὲ, καὶ τὸ τῶν τυραννίδων αἴτιον αὐτῇ κατέστη. καὶ τῆς πρὸς ἀθηναίους ἔχθρας. αἱ μὲν οὖν τυραν-
νίδες ἤκμασαν κατὰ πολυκράτη μάλιστα, καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ συλοσῶντα. ἦν δ' ὁ μὲν, καὶ τύχῃ, καὶ
δυνάμει, λαμπρὸς ὥστε καὶ θαλαττοκρατῆσαι. τῆς δ' εὐτυχίας αὐτοῦ σημεῖον τιθέασιν. ὅτι ῥίψαντος εἰς
τὴν θάλατταν ἐπίτηδες τὸν δακτύλιον λίθου, καὶ γλύμματος πολυτελοῦς, ἀνήνεγκε μικρὸν ὕστερον
τῶν ἁλιέων τὶς, τὸν καταπιόντα ἰχθὺν αὐτόν. ἀνατμηθέντος δ' εὑρέθη ὁ δακτύλιος. πυθόμενον δὲ τοῦτο
τὸν αἰγυπτίων βασιλέα φασὶ μαντικῶς πως ἀποφθέγξασθαι ὡς ἐν βραχεῖ καταστρέψει τὸν βίον εἰς οὐκ εὐτυ-
χὲς τέλος. ὁ τοσοῦτον ἐξηρμένος ταῖς εὐπραγίαις, καὶ δὴ καὶ συμβῆναι τοῦτο, κρατηθέντα ἐξ ἀπά-
της ὑπὸ τοῦ σατράπου, τῶν περσῶν κρεμασθῆναι. τούτῳ συνεβίωσεν ἀνακρέων ὁ μελοποιός. καὶ δὴ καὶ
πᾶσα ἡ ποίησις πλήρης ἐστὶ τῆς περὶ αὐτοῦ μνήμης. ἐπὶ τούτου δὲ, καὶ πυθαγόραν ἱστοροῦσι φυόμενον ἰ-
δόντα τὴν τυραννίδα. ἐκλιπεῖν τὴν πόλιν καὶ ἀπελθεῖν εἰς αἴγυπτον, καὶ βαβυλῶνα φιλομαθίας χά-
ριν. ἐπανιόντα δ' ἐκεῖθεν, ὁρῶντα ἔτι συμμένουσαν τὴν τυραννίδα, πλεύσαντα εἰς ἰταλίαν, ἐκεῖ
διατελέσαι τὸν βίον. περὶ πολυκράτους μὲν ταῦτα. συλοσῶν δὲ ἀπελείφθη μὲν ἰδιώτης ὑπὸ τοῦ
ἀδελφοῦ. δαρείῳ δὲ τῷ ὑστάσπεως χαρισάμενος ἐσθῆτα ἧς ἐπεθύμησεν ἐκεῖνος φοροῦντα ἰδὼν, οὔπω δ'
ἐβασίλευε τότε, βασιλεύσαντος, ἀντέλαβε δῶρον τὴν τυραννίδα. πικρῶς δ' ἦρξεν. ὥστε καὶ ἐλει-
πάνδρησεν ἡ πόλις κἀκεῖθεν ἐκπεσεῖν συνέβη τὴν παροιμίαν. ἕκητι συλοσῶντος εὐρυχωρίη. ἀθη-
ναῖοι δὲ, πρότερον μὲν πέμψαντες στρατηγὸν περικλέα, καὶ σὺν αὐτῷ σοφοκλέα τὸν ποιητὴν, πο-
λιορκίᾳ κακῶς διέθηκαν ἀπειθοῦντας τοὺς σαμίους. ὕστερον δὲ, καὶ κληρούχους ἔπεμψαν δισχιλί-
ους ἐξ ἑαυτῶν. ὧν ἦν καὶ νεοκλῆς ὁ ἐπικούρου τοῦ φιλοσόφου πατὴρ. γραμματοδιδάσκαλος, ὥς
φασι. καὶ τραφῆναι φασὶν ἐνθάδε, καὶ ἐν τέῳ, καὶ ἐφηβεῦσαι ἀθήνησι. γενέσθαι δ' αὐτῷ συνέφη-
βον μένανδρον τὸν κωμικόν. σάμιος δ' ἦν, καὶ κρεώφυλος. ὅν φασι δεξάμενον ξενίᾳ ποτὲ ὅμηρον, λαβεῖν
δῶρον τὴν ἐπιγραφὴν τοῦ ποιήματος, ὃ καλοῦσιν οἰχαλίας ἅλωσιν. καλλίμαχος δὲ τοὐναντίον ἐμφαίνει δι' ἐπι-
γράμματός τινος. ὡς ἐκείνου μὲν ποιήσαντος, λεγομένου δ' ὁμήρου διὰ τὴν λεγομένην ξενίαν τῷ σαμίου.

» Γόνος εἰμὶ, δόμῳ ποτὲ θεῖον ὅμηρον δεξαμένου.
» Κλαίω δ' εὔρυτον ὅς σ' ἔπαθεν καὶ ξανθὴν ἰόλειαν.
» Ὁμήρου δὲ καλεῦμαι γράμμα.
» Κρεωφύλῳ, ζεῦ φίλε τοῦτο μέγα.

Τινὲς δὲ διδάσκαλον ὁμήρου τοῦτον φασίν. οἱ δ' οὐ τοῦτον. ἀλλ' ἀριστέαν τὸν προκοννήσιον. παράκειται δὲ
τῇ σάμῳ νῆσος ἡ ἰκαρία ἀφ' ἧς τὸ ἰκάριον πέλαγος. αὕτη δ' ἐπώνυμος ἐστὶν ἰκάρου παιδὸς τοῦ δαιδάλου.
ὅν φασι τῷ πατρὶ κοινωνήσαντα τῆς φυγῆς. ἡνίκα ἀμφότεροι πτερωθέντες ἐκ κρήτης πεσεῖν ἐνθάδε,
μὴ κρατήσαντα τοῦ δρόμου. μετεωρισθέντι γὰρ πρὸς τὸν ἥλιον ἐπὶ πλέον, περιρρυῆναι τὰ πτερὰ τα-
κέντος τοῦ κηροῦ. τριακοσίων δ' ἐστὶ τὴν περίμετρον σταδίων ἡ νῆσος ἅπασα. καὶ ἀλίμενος. πλὴν ὑφόρ-
μων. ὧν ὁ κάλλιστος ἰστοὶ λέγονται. ἄκρα δ' ἐστὶν ἀνατείνουσα πρὸς ζέφυρον. ἔστι δὲ καὶ ἀρτέμιδος ἱε-
ρὸν καλούμενον ταυροπόλιον ἐν τῇ νήσῳ. καὶ πολισμάτιον οἰνόη. καὶ ἄλλο δράκανον. ὁμώνυμον τῇ ἄ-
κρᾳ ἐφ' ᾗ ἵδρυται. πρόσορμον ἔχον. ἡ δὲ ἄκρα διέχει τῆς σαμίων ἄκρας τῆς κανθαρίου καλουμένης, ὀγ-
δοήκοντα σταδίους. ὅπερ ἐστὶν ἐλάχιστον δίαρμα τὸ μεταξύ. νυνὶ μέντοι λιπανδροῦσαν σάμιοι νέμον-
ται τὰ πολλὰ βοσκημάτων χάριν. μετὰ δὲ τὸν σάμιον πορθμὸν τὸν πρὸς μυκάλῃ πλέουσιν εἰς ἔφεσον.
ἐν δεξιᾷ δ' ἐστὶν ἡ ἐφεσίων παραλία. μέρος δέ τι ἔχουσιν αὐτῆς καὶ οἱ σάμιοι. πρῶτον δ' ἐστὶν ἐν τῇ παρα-
λίᾳ τὸ πανιώνιον, τρισὶ σταδίοις ὑπερκείμενον τῆς θαλάσσης. ὅπου τὰ πανιώνια κοινὴ πανήγυρις τῶν
ἰώνων. συντελεῖται τῷ ἑλικωνίῳ ποσειδῶνι καὶ θυσία. ἱερῶνται δὲ πριηνεῖς. εἴρηται περὶ αὐτῶν
ἐν τοῖς πελοποννησιακοῖς εἶτα νεάπολις. ὃ πρότερον μὲν ἦν ἐφεσίων. νῦν δὲ σαμίων διαλλαξαμένων
πρὸς τὸ μαραθήσιον τὸ ἐγγυτέρω πρὸς τὸ ἀπώτερον. εἶτα πύγελα πολίχνιον. ἱερὸν ἔχον ἀρτέμιδος μου-
νυχίας. ἵδρυμα ἀγαμέμνονος. οἰκούμενον ὑπὸ μέρους τῶν ἐκείνου λαῶν. πυγαλίας γάρ τινας, καὶ
γενέσθαι, καὶ κληθῆναι. κάμνοντας δ' ὑπὸ τοῦ πάθους καταμεῖναι, καὶ τυχεῖν οἰκείου τοῦδε τοῦ ὀνό-
ματος τὸν τόπον. εἶτα λιμὴν πάνορμος καλούμενος. ἔχων ἱερὸν τῆς ἐφεσίας ἀρτέμιδος. εἶθ' ἡ πόλις.
ἐν δὲ τῇ αὐτῇ παραλίᾳ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐστὶ καὶ ἡ ὀρτυγία. διαπρεπὲς ἄλσος παντοδα-
πῆς ὕλης. κυπαρίττου δὲ τῆς πλείστης. διαῤῥεῖ δὲ ὁ κέγχριος ποταμός. οὗ φασι νίψασθαι τὴν λητὼ με-
τὰ τὰς ὠδῖνας. ἐνταῦθα γὰρ μυθεύουσι την λοχείαν καὶ τὴν τροφὸν τὴν ὀρτυγίαν. καὶ τὸ ἄδυτον ἐν
ᾧ ἡ λοχεία. καὶ τὴν πλησίον ἐλαίαν. ᾗ πρῶτον ἐπαναπαύσασθαί φασι τὴν θεὸν ἀπολυθεῖσαν τῶν ὠ-
δίνων. ὑπέρκειται δὲ τοῦ ἄλσους ὄρος ὁ σολμισσός. ὅπου στάντας φασὶ τοὺς κουρῆτας, τῷ ψόφῳ τὴν ἥ-
ραν τῶν ὅπλων ἐκπλῆξαι. ζηλοτύπως ἐφεδρεύουσαν. καὶ λαθεῖν συμπράξαντας τὴν λοχείαν τῇ λη-
τοῖ. ὄντων δ' ἐν τοῦ τόπῳ πλειόνων ναῶν. τῶν μὲν, ἀρχαίων. τῶν δ' ὕστερον γενομένων, ἐν μὲν τοῖς ἀρ-
χαίοις ἀρχαῖα ἐστὶ ξόανα. ἐν δὲ τοῖς ὕστερον σκολιὰ ἔργα. ἡ μὲν λητὼ σκῆπτρον ἔχουσα. ἡ δ' ὀρτυγία πα-
ρέστηκεν. ἑκατέρᾳ τῇ χειρὶ παιδίον ἔχουσα. πανήγυρις δ' ἐνταῦθα συντελεῖται κατ' ἔτος. ἔθει δέ τινι
οἱ νέοι φιλοκαλοῦσι, μάλιστα περὶ τὰς ἐνταῦθα εὐωχίας λαμπρυνόμενοι. τότε δὲ καὶ τῶν κουρήτων
ἀρχεῖον συνάγει συμπόσια. καὶ τινὰς μυστικὰς θυσίας ἐπιτελεῖ. τὴν δὲ πόλιν ᾤκουν μὲν κᾶρές τε καὶ
λέλεγες. ἐκβαλὼν δ' ὁ ἀνδρόκλος τοὺς πλείστους ᾤκισεν ἐκ τῶν συνελθόντων αὐτῷ περὶ τὸ ἀθήναιον
καὶ τὴν ὑπέλαιον, προσνείμας λαβὼν καὶ τῆς περὶ τὸν κορησσὸν παρωρείας. μέχρι μὲν δὴ τῶν κατὰ κροῖ-
σον, οὕτως ᾠκεῖτο, ὕστερον δ' ἀπὸ τῆς παρωρείου καταβάντες. περὶ τὸ νῦν ἱερὸν ᾤκησαν μέχρι ἀλεξάν-
δρου. λυσίμαχος δὲ τὴν νῦν πόλιν τειχίσας. ἀηδῶς τῶν ἀνθρώπων μεθισταμένων, τηρήσας καταῤῥάκτην
ὄμβρον, συνήργησε καὶ αὐτός. καὶ τοὺς ῥινούχους ἐνέφραξεν. ὥστε κατακλύσαι τὴν πόλιν. οἱ δὲ, μετῴ-
κησαν ἄσμενοι. ἐκάλεσε δ' ἀρσινόην ἀπὸ τῆς γυναικὸς τὴν πόλιν. ἐπεκράτησε μέντοι τὸ ἀρχαῖον ὄνομα.
ἦν δὲ γερουσία καταγραφομένη. τούτοις δὲ συνῆσαν οἱ ἐπίκλητοι καλούμενοι. καὶ διῴκουν πάντα.
τὸν δὲ νεὼν τῆς ἀρτέμιδος, πρῶτος μὲν χερσίφρων ἠρχιτεκτόνησεν. εἶτ' ἄλλος ἐποίησε μείζω. ὡς δὲ τοῦτον
ἡρόστρατός τις ἐνέπρησεν, ἄλλον ἀμείνω κατεσκεύασαν. συνενέγκαντες τὸν τῶν γυναικῶν κόσμον. καὶ
τὰς ἰδίας οὐσίας. διαθέμενοι δὲ καὶ τοὺς προτέρους κίονας. τούτων δὲ μαρτυρία ἐστὶ τὰ γενηθέντα
τότε ψηφίσματα. ἅπερ ἀγνοοῦντα φησὶν ὁ ἀρτεμίδωρος τὸν ταυρομενίτην τίμαιον, καὶ ἄλλως βά-
σκανον ὄντα, καὶ συκοφάντην. διὸ καὶ ἐπιτίμαιον κληθῆναι λέγει. ὡς ἐκ τῶν περσικῶν παρακατα-
θηκῶν, ἐποιήσαντο τοῦ ἱεροῦ τὴν ἐπισκευήν. οὔτε δὲ ὑπάρξαι παρακαταθήκας τότε, εἴτε ὑπῆρξαι,
συνεμπρησθῆναι τῷ ναῷ. μετὰ δὲ τὴν ἔμπρησιν τῆς ὀροφῆς ἠφανισμένης, ἐν ὑπαίθρῳ τῷ σηκῷ, τίνα ἂν
ἐθελῆσαι παρακαταθήκην κειμένην ἔχειν. ἀλέξανδρον δὲ τοῖς ἐφεσίοις ὑποσχέσθαι τὰ γεγονότα,
καὶ τὰ μέλλοντα ἀναλώματα. ἐφ' ᾧ τε τὴν ἐπιγραφὴν αὐτὸν ἔχειν. τοὺς δὲ μὴ ἐθελῆσαι. πολὺ μᾶλλον
οὐκ ἂν, ἐθελήσαντας. ἐξ ἱεροσυλίας καὶ ἀποστερήσεως φιλοδοξεῖν. ἐπαινεῖ τε τὸν εἰπόντα τῶν ἐφε-
σίων πρὸς τὸν βασιλέα. ὡς οὐ πρέπει θεῷ θεοῖς ἀναθήματα κατασκευάζειν. μετὰ δὲ τὴν τοῦ νεῶ συν-
τέλειαν ὅν φησιν εἶναι χειρομόκρατους ἔργον. τοῦ δ' αὐτοῦ καὶ τὴν ἀλεξανδρείας κτίσιν, τὸν αὐτὸν ὑ-
ποσχέσθαι ἀλεξάνδρῳ τὸν ἄθω διασκευάσειν αὐτῷ. ὡσανεὶ ἐκ πρόχου τινός. εἰς φιάλην καταχέον-
τα σπονδὴν, ποιήσαντα πόλεις δύο. τὴν μὲν, ἐκ δεξιῶν τοῦ ὄρους. τὴν δ' ἐν ἀριστερᾷ. ἀπὸ δὲ τῆς ἑτέρας

εἰς τὴν ἑτέραν ῥέοντα ποταμόν. μετὰ δ' οὖν τὸν νεὼν, τὸ τῶν ἄλλων ἀναθημάτων πλῆθος εὑρέσθαι τῇ ἐκτιμήσει τῶν δημιουργῶν. τὸν δὲ δὴ βωμὸν εἶναι τῶν πραξιτέλους ἔργων, ἅπαντα σχεδόν τι πλήρη. ἡμῖν δὲ ἐδείκνυτο καὶ τῶν θράσωνός τινα, οὗπερ καὶ τὸ ἑκατήσιόν ἐστι καὶ ἡ κηρίνη πηνελοπία, καὶ ἡ πρεσβύτις ἡ εὐρύκλεια, ἱερέας δ' εὐνούχους εἶχον. οὓς ἐκάλουν μεγαλοβύζους. καὶ ἀλλαχόθεν μετιόντες ἀεί τινας ἀξίους τῆς τοιαύτης προστασίας. καὶ ἦγον ἐν τιμῇ μεγάλῃ. συνιερᾶσθαι δὲ τούτοις ἐχρῆν παρθένους. νυνὶ δὲ τὰ μὲν, φυλάττεται τῶν νομίμων. τὰ δ' ἧττον. ἄσυλον δὲ μένει τὸ ἱερὸν καὶ νῦν καὶ πρότερον. τῆς δ' ἀσυλίας τοὺς ὅρους ἀλλαγῆναι συνέβη πολλάκις. ἀλεξάνδρου μὲν ἐπὶ στάδιον ἐκτείναντος. μιθριδάτου δὲ τόξευμα ἀφέντος ἀπὸ τῆς γωνίας τοῦ κεράμου. καὶ δόξαντος ὑπερβαλέσθαι μικρὰ τὸ στάδιον. ἀντωνίου δὲ διπλασιάσαντος τοῦτο καὶ συμπεριλαβόντος τῇ ἀσυλίᾳ μέρος τι τῆς πόλεως. ἐφάνη δὲ τοῦτο βλαβερὸν καὶ ἐπὶ τοῖς κακούργοις ποιοῦν τὴν πόλιν. ὥστ' ἠκύρωσεν ὁ σεβαστὸς καῖσαρ. ἔχει δ' ἡ πόλις καὶ νεώρια καὶ λιμένα. βραχύστομον δ' ἐποίησαν οἱ ἀρχιτέκτονες, συνεξαπατηθέντες τῷ κελεύσαντι βασιλεῖ. οὗτος δ' ἦν ἄτταλος ὁ φιλάδελφος. οἰηθεὶς γὰρ οὗτος βαθὺν τὸν εἴσπλουν ὁλκάσι μεγάλαις ἔσεσθαι. καὶ αὐτὸν τὸν λιμένα τεναγώδη ὄντα πρότερον διὰ τὰς ἐκ τοῦ καΰστρου προχώσεις, ἐὰν παραβληθῇ χῶμα τῷ στόματι. πλατεῖ τελέως ὄντι, ἐκέλευσε γενέσθαι τὸ χῶμα. συνέβη δὲ τοὐναντίον. ἐντὸς γὰρ ἡ χοῦς εἰργομένη, τεναγίζειν μᾶλλον ἐποίησε τὸν λιμένα σύμπαντα μέχρι τοῦ στόματος. πρότερον δ' ἱκανῶς αἱ πλημμυρίδες καὶ ἡ παλίρροια τοῦ πελάγους, ἀφῄρει τὴν χοῦν, καὶ ἀνέσπα πρὸς τὸ ἐκτός. ὁ μὲν οὖν λιμὴν τοιοῦτος. ἡ δὲ πόλις τῇ πρὸς τὰ ἄλλα εὐκαιρίᾳ τῶν τόπων, αὔξεται καθ' ἑκάστην ἡμέραν. ἐμπόριον οὖσα μέγιστον τῶν κατὰ τὴν ἀσίαν τὴν ἐντὸς τοῦ ταύρου. ἄνδρες δ' ἀξιόλογοι γεγόνασιν ἐν αὐτῇ. τῶν μὲν παλαιῶν ἡράκλειτός τε ὁ σκοτεινὸς καλούμενος. καὶ ἑρμόδωρος.
» περὶ οὗ ὁ αὐτὸς οὗτός φησιν. Ἄξιον ἐφεσίοις ἡβηδὸν ἀπάγξασθαι, οἵτινες ἑρμόδωρον ἄνδρα ἑωυ-
» τῶν ὀνήιστον ἐξέβαλον. φάντες ἡμέων μηδεὶς ὀνήιστος ἔστω. Εἰ δὲ μὴ, ἄλλη τε καὶ μετ' ἄλλων. δοκεῖ δ' οὗτος ὁ ἀνὴρ νόμους τινὰς ῥωμαίοις συγγράψαι. καὶ ἱππῶναξ δ' ἐστὶν ὁ ποιητὴς ἐξ ἐφέσου. καὶ παρράσιος ὁ ζωγράφος καὶ ἀπελλῆς. τῶν δὲ νεωτέρων, ἀλέξανδρος ῥήτωρ ὁ λύχνος προσαγορευθείς. ὃς καὶ ἐπολιτεύσατο. καὶ συνέγραψεν ἱστορίαν. καὶ ἔπη κατέλιπεν. ἐν οἷς τά τε οὐράνια διατίθεται. καὶ τὰς ἠπείρους γεωγραφεῖ. καθ' ἑκάστην ἐκδοὺς ποιήματα. μετὰ δὲ τὴν ἐκβολὴν τοῦ καΰστρου λίμνη ἐστὶν ἐκ τοῦ πελάγους ἀναχεομένη. καλεῖται δὲ σελινουσία. καὶ ἐφεξῆς ἄλλη σύρρους αὐτῇ μεγάλας ἔχουσαι προσόδους. ὡς οἱ βασιλεῖς μὲν ἱερὰς οὔσας, ἀφείλοντο τὴν θεόν. ῥωμαῖοι δ' ἀπέδοσαν. πάλιν δ' οἱ δημοσιῶναι βιασάμενοι εἰς ἑαυτοὺς τὰ τέλη. πρεσβεύσας δὲ ὁ ἀρτεμίδωρος ὥς φησι τάς τε λίμνας ἀπέλαβε τῇ θεῷ. καὶ τὴν ἡρακλεῶτιν ἀφισταμένην ἐξενίκησε κριθεὶς ἐν ῥώμῃ. ἀντὶ δὲ τούτων εἰκόνα χρυσῆν ἀνέστησεν ἡ πόλις ἐν τῷ ἱερῷ. τῆς δὲ λίμνης ἐν τῷ κοιλοτάτῳ βασιλέως ἐστὶν ἱερόν. φασὶ δ' ἀγαμέμνονος ἵδρυμα. εἶτα τὸ γαλλήσιον ὄρος. καὶ ἡ κολοφὼν πόλις ἰωνική. καὶ τὸ πρὸ αὐτῆς ἄλσος τοῦ κλαρίου ἀπόλλωνος. ἐν ᾧ καὶ μαντεῖον ἦν ποτε παλαιόν. λέγεται δὲ κάλχας ὁ μάντις μετ' ἀμφιλόχου τοῦ ἀμφιαράου κατὰ τὴν ἐκ τροίας ἐπάνοδον πεζῇ δεῦρο ἀφικέσθαι. περιτυχὼν δ' ἑαυτοῦ κρείττονι μάντει κατὰ τὴν κλάρον μόψῳ τῷ μαντοῦς τῆς τειρεσίου θυγατρὸς διὰ λύπην ἀποθανεῖν. ἡσίοδος μὲν οὖν οὕτω πως διασκευάζει τὸν μῦθον. προτεῖναι γάρ τι τοιοῦτο τῷ μόψῳ τὸν κάλχαντα.

» Θαῦμά μ' ἔχει κατὰ θυμὸν ἐρινεὸς ὅσσους ὀλίνθους
» Οὗτος ἔχει μικρός περ ἐών, εἴποις ἂν ἀριθμόν.
» Τὸν δ' ἀποκρίνασθαι, μύριοί εἰσιν ἀριθμόν.
» Ἀτὰρ μέτρον γε μέδιμνος. εἷς δὲ περισσεύει.
» Ὣς φάτο. καί σφιν ἀριθμὸς ἐτήτυμος εἴδετο μέτρου.
» Τὸν, ἐπελθέμεν οὐκ ἂν δύναιο.
» Καὶ τότε δὴ κάλχανθ' ὕπνος θανάτοιο κάλυψε.

φερεκύδης δέ φησιν ὗν προβαλεῖν ἔγκυον τὸν κάλχαντα. καὶ ἐρωτῆσαι πόσους ἔχει χοίρους. τὸν δὲ, εἰπεῖν ὅτι τρεῖς. ὧν ἕνα θῆλυν. ἀληθεύσαντος δ' ἀποθανεῖν ὑπὸ λύπης. οἱ δὲ τὸν μὲν κάλχαντα προβαλεῖν τὴν ὗν φασι. τὸν δὲ, ἐρινεόν. καὶ τὸν μὲν, εἰπεῖν τἀληθές. τὸν δὲ μή. ἀποθανεῖν δὲ ὑπὸ λύπης καὶ κατά τι λόγιον. λέγει δ' αὐτὸ σοφοκλῆς ἐν ἑλένης ἀπαιτήσει, ὡς εἱμαρμένον εἴη ἀποθανεῖν. ὅταν κρείττονι ἑαυτοῦ μάντει περιτύχῃ. οὗτος δὲ καὶ εἰς κιλικίαν μεταφέρει τὴν ἔριν καὶ τὸν θάνατον τοῦ κάλχαντος. τὰ μὲν παλαιὰ τοιαῦτα. ἐκτήσαντο δέ ποτε καὶ ναυτικὴν ἀξιόλογον δύναμιν κολοφώνιοι καὶ ἱππικήν. ἐν ᾗ τοσοῦτον διέφερον τῶν ἄλλων, ὥσθ' ὅπου ποτὲ ἐν τοῖς δυσκαταλύτοις πολέμοις τὸ ἱππικὸν τῶν κολοφωνίων ἐπικουρήσειε, λύεσθαι τὸν πόλεμον. ἀφ' οὗ καὶ τὴν παροιμίαν ἐκδοθῆναι τὴν λέγουσαν, τὸν κολοφῶνα ἐπέθηκεν. ὅταν τέλος ἐπιτεθῇ βέβαιον τῷ πράγματι. ἄνδρες δ' ἐγένοντο κολοφώνιοι τῶν μνημονευομένων, μίμνερμος αὐλητὴς ἅμα καὶ ποιητὴς ἐλεγεῖος. καὶ ξενοφάνης. ὁ φυσικός. ὁ τοὺς σίλλους ποιήσας διὰ ποιημάτων. λέγει δὲ πίνδαρος, καὶ πολύμναστόν τινα τῶν περὶ τὴν μουσικὴν ἐλλογίμων. φθέγμα μὲν πάν-

γμοιον ἔγνωμεν πολυμνάστου κολοφωνίου ἀνδρός. καὶ ὅμηρον δέ τινες ἐντεῦθεν φασίν. εὐθυπλοία μὲν γὰρ
ἑβδομήκοντα στάδιοι εἰσὶν ἐξ ἐφέσου· ἐγκολπίζοντι δὲ ἑκατὸν καὶ εἴκοσι. μετὰ δὲ κολοφῶνα ὄρος κοράκιον. καὶ
νησίον ἱερὸν ἀρτέμιδος. εἰς ὃ διανηχομένας τίκτειν τὰς ἐλάφους πεπιστεύκασιν. εἶτα λέβεδος διέχουσα
κολοφῶνος ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίους. ἐνταῦθα τῶν περὶ τὸν διόνυσον τεχνιτῶν, ἡ σύνοδος καὶ κατοικία τῶν ἐν
ἰωνίᾳ μέχρι ἑλλησπόντου. ἐν ᾗ πανήγυρίς τε καὶ ἀγῶνες κατ' ἔτος συντελοῦνται τῷ διονύσῳ. ἐν τέῳ δὲ
ᾤκουν πρότερον τῇ ἐφεξῆς πόλει τῶν ἰώνων. ἐμπεσούσης δὲ στάσεως εἰς ἔφεσον κατέφυγον. ἀττάλου δ' εἰς
μυόννησον αὐτοὺς κατασήσαντος μεταξὺ τέω καὶ λεβέδου, πρεσβεύονται τήϊοι δεόμενοι ῥωμαίων μὴ πε
ριϊδεῖν ἐπιτειχιζομένην σφίσι τὴν μυόννησον. οἱ δέ, μετέστησαν εἰς λέβεδον, δεξαμένων τῶν λεβεδίων ἀ
σμένως διὰ τὴν κατέχουσαν αὐτοὺς ὀλιγανδρίαν. καὶ τέως δὲ λεβέδου διέχει ἑκατὸν εἴκοσι στάδια. μεταξὺ
δὲ νῆσος ἀσπὶς οἱ δὲ ἀρκόννησον καλοῦσιν. καὶ ἡ μυόννησος δὲ ἐφ' ὕψους χερρονησιάζοντος κατοικεῖται. καὶ ἡ τέ
ως δὲ ἐπὶ χερρονήσῳ ἵδρυται, λιμένα ἔχουσα. ἐνθένδ' ἐστὶν ἀνακρέων ὁ μελοποιός. ἐφ' οὗ τήϊοι τὴν
πόλιν ἐκλιπόντες. εἰς ἄβδηρα ἀπῴκησαν θρακίαν πόλιν. οὐ φέροντες τὴν τῶν περσῶν ὕβριν. ἀφ' οὗ καὶ
» τοῦτ' εἴρηται. ἄβδηρα καλή, τηΐων ἀποικία. πάλιν δ' ἐπανῆλθόν τινες αὐτῶν χρόνῳ ὕστερον. εἴρηται
δὲ καὶ περὶ ἀπελλίωνος ὅτι τήϊος ἦν κἀκεῖνος. γέγονε δὲ καὶ συγγραφεὺς ἑκαταῖος ἐκ τῆς αὐτῆς πό-
λεως. ἔστι καὶ ἄλλος λιμὴν ὁ πρόσβορος. ἀπὸ τριάκοντα σταδίων τῆς πόλεως. γερραιΐδαι. εἶτα χαλκι-
δεῖς. ὁ τῆς χερρονήσου ἰσθμὸς τῆς τηΐων καὶ ἐρυθραίων. ἐντὸς μὲν οὖν τοῦ ἰσθμοῦ οἰκοῦσιν οὗτοι. ἐπ' αὐ
τῷ δὲ τῷ ἰσθμῷ τήϊοι καὶ κλαζομένιοι. τὸ μὲν γὰρ νότιον τοῦ ἰσθμοῦ πλευρὸν ἔχουσι τήϊοι, τοὺς χαλκι
δέας. τὸ δὲ πρόσβορον κλαζομένιοι. καὶ τὸ συνάπτουσι τῇ ἐρυθραίᾳ. κεῖται δ' ὑπόκρημνος ὁ τόπος ἐπὶ
τῇ ἀρχῇ τοῦ ἰσθμοῦ. ἐντὸς μὲν ἀπολαμβάνων τὴν ἐρυθραίαν. ἐκτὸς δὲ τὴν τῶν κλαζομενίων. ὑπέρκειται
δὲ τῶν κλαζομενίων χαλκιδέων ἄλσος καθιερωμένον ἀλεξάνδρῳ τῷ φιλίππου. καὶ ἀγὼν ἀπὸ τοῦ κοι
νοῦ τῶν ἰώνων ἀλεξάνδρεια καταγγέλλεται, συντελούμενος ἐνταῦθα. ἡ δ' ὑπέρβασις τοῦ ἰσθμοῦ, τὸ
ἀπὸ ἀλεξανδρείου καὶ τῶν χαλκιδέων μέχρι τοῦ ὑποκρήμνου πεντήκοντά εἰσι στάδιοι. ὁ δὲ περίπλους
πλείους ἢ χίλιοι. κατὰ μέσον δέ που τὸν περίπλουν αἱ ἐρυθραί. πόλις ἰωνική, λιμένα ἔχουσα καὶ νησίδας
προκειμένας τέτταρας ἵππους καλουμένας. πρὶν δ' ἐλθεῖν ἐπὶ τὰς ἐρυθράς, πρῶτον μὲν ἔραι πο
λίχνιον ἐστὶ τηΐων. εἶτα κώρυκος ὄρος ὑψηλόν. καὶ λιμὴν ὑπ' αὐτῷ κασύστης. καὶ ἄλλος ἐρυθρᾶς λιμὴν κα
λούμενος. καὶ ἐφεξῆς πλείους. ἕτεροι φασὶ δὲ τὸν παράπλουν τοῦ κωρύκου πάντα λῃστήρια ὑπάρξαι
τῶν κωρυκαίων καλουμένων. εὑραμένων τρόπον καινὸν τῆς ἐπιβουλῆς τῶν πλοϊζομένων. κατεσπαρ-
μένους γὰρ ἐν τοῖς λιμέσι, τοῖς καθορμιζομένοις ἐμπόροις προσφοιτᾶν. καὶ ὠτακουστεῖν τί φέροιεν.
καὶ ποῦ πλέοιεν. εἶτα συνελθόντας ἀναχθεῖσι τοῖς ἀνθρώποις ἐπιτίθεσθαι καὶ καθαρπάζειν. ἀφ' οὗ
δὴ πάντα τὸν πολυπράγμονα, καὶ κατακούειν ἐπιχειροῦντα τῶν λάθρα καὶ ἐν ἀπορρήτῳ διαλεγο
» μένων, κωρυκαῖον καλοῦμεν καὶ ἐν παροιμίᾳ φαμέν. τοῦ δ' ἄρ' ὁ κωρυκαῖος ἠκροάζετο. ὅταν δοκῇ τις
πράττειν δι' ἀπορρήτων ἢ λαλεῖν. μὴ λανθάνῃ δὲ διὰ τοὺς κατασκοποῦντας καὶ φιλοπευστοῦντας τὰ
μὴ προσήκοντα. μετὰ δὲ κώρυκον ἁλόννησος νησίον. εἶτα τὸ ἄργεννον, ἄκρα τῆς ἐρυθραίας, πλησιάζουσα
μάλιστα τῷ χίων ποσειδίῳ ποιοῦντι πορθμὸν ὅσον ἑξήκοντα σταδίων. μεταξὺ δὲ τῶν ἐρυθρῶν καὶ τοῦ ὑπο
κρήμνου, μίμας ἐστὶν ὄρος ὑψηλόν. εὔθηρον. πολύδενδρον. εἶτα κώμη κυβελλία. καὶ ἄκρα μέλαινα κα
» λουμένη. μύλων ἔχουσα λατόμιον. ἐκ δ' ἐρυθρῶν σίβυλλά ἐστιν ἔνθους, καὶ μαντικὴ γυνὴ τῶν ἀρχαίων
τις. κατ' ἀλέξανδρον δὲ ἄλλη ἦν τὸν αὐτὸν τρόπον μαντικὴ καλουμένη ἀθηναῒς ἐκ τῆς αὐτῆς πόλεως.
καὶ καθ' ἡμᾶς ἡρακλείδης ἡρόφιλος ἰατρὸς, συσχολαστὴς ἀπολλωνίου τοῦ μυός. ἡ δὲ χίος τὸν μὲν περίπλουν
ἐστὶ σταδίων ἐννακοσίων παρὰ γῆν φερομένῳ. πόλιν δ' ἔχει εὐλίμενον καὶ ναύσταθμον ναυσὶν ὀγδοήκον-
τα. ἐν δὲ τῷ περίπλῳ δεξιὰν τὴν νῆσον ἔχοντι ἀπὸ τῆς πόλεως, πρῶτον μὲν ἐστὶ τὸ ποσείδιον. εἶτα φά
ναι λιμὴν βαθὺς καὶ νεὼς ἀπόλλωνος. καὶ ἄλσος φοινίκων. εἶτα νότιον. ὕφορμος, αἰγιαλός. ὅθεν εἰς τὴν
πόλιν ἑξήκοντα σταδίων ἰσθμός. περίπλους δὲ τριακοσίων ἑξήκοντα ὃν ἐπήλθομεν. εἶτα μέλαινα ἄ-
κρα. καθ' ἣν τὰ ψύρα νῆσος ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων τῆς ἄκρας ὑψηλή. πόλιν ὁμώνυμον ἔχουσα. κύ
κλος δὲ τῆς νήσου τετταράκοντα στάδιοι. εἶθ' ἡ ἀριουσία χώρα, τραχεῖα καὶ ἀλίμενος σταδίων ὅσον τριακ
κοσίων. οἶνον ἄριστον φέρουσα τῶν ἑλληνικῶν. εἶτα τὸ πελιναῖον ὄρος ὑψηλότατον τῶν ἐν τῇ νήσῳ. ἔχει
δ' ἡ νῆσος καὶ λατόμιον μαρμάρου λίθου. ἄνδρες δὲ χῖοι γεγόνασιν ἐλλόγιμοι. ἴων τε ὁ τραγικός. καὶ
θεόπομπος ὁ συγγραφεύς. καὶ θεόκριτος ὁ σοφιστής. οὗτοι δὲ καὶ ἀντεπολιτεύσαντο ἀλλήλοις. ἀμφι-
σβητοῦσι δὲ καὶ ὁμήρου χῖοι μαρτύριον μέγα τοὺς ὁμηρίδας καλουμένους. ἀπὸ δὲ τοῦ ἐκείνου γένους προ
χειριζόμενοι. ὧν καὶ πίνδαρος μέμνηται. ὅθεν περ καὶ ὁμηρίδαι ῥαπτῶν ἐπέων τὰ πόλλ' ἀοιδοί. ἐκέ
κτηντο δὲ καὶ ναυτικόν ποτε χῖοι. αὐθήπτοντο δὲ τῆς κατὰ θάλατταν ἀρχῆς, καὶ ἐλευθερίας. ἐκ χίου
δ' ἐς λέσβον νότῳ τετρακόσιοί που στάδιοι. ἐκ δὲ τοῦ ὑποκρήμνου χυτεῖον ἐστὶ τόπος. ὡ πρότερον ἵδρυν
το κλαζομεναί. εἶθ' ἡ νῦν πόλις νησία ἔχουσα προκείμενα ὀκτὼ γεωργούμενα. κλαζομένιος δ' ἦν ἀνὴρ ἐπι
φανὴς ἀναξαγόρας ὁ φυσικός. ἀναξιμένους ὁ μιλητὴς τοῦ μιλησίου. διήκουσε δὲ τούτου ἀρχέλαος ὁ φυ

σικὸς. καὶ εὐριπίδης ὁ ποιητής. εἶθ' ἱερὸν ἀπόλλωνος καὶ θερμὰ ὕδατα, καὶ ὁ σμυρναίων κόλπος. καὶ ἡ
πόλις. ἑξῆς δὲ ἄλλος κόλπος ἐν ᾧ ἡ παλαιὰ σμύρνα. ἀπὸ εἴκοσι σταδίων τῆς νῦν. λυδῶν δὲ κατασπασάν-
των τὴν σμύρναν. περὶ τετρακόσια ἔτη διετέλεσεν οἰκουμένη κωμηδόν. εἶτα ἀνήγειρεν αὐτὴν ἀντίγονος.
καὶ μετὰ ταῦτα λυσίμαχος. καὶ νῦν ἐστι καλλίστη πασῶν. μέρος μέν τι ἔχουσα ἐπ' ὄρει τετειχισμέ-
νον. τὸ δὲ πλέον ἐν πεδίῳ πρὸς τῷ λιμένι. καὶ πρὸς τῷ μητρῴῳ, καὶ πρὸς τῷ γυμνασίῳ. ἔστι δ' ἡ ῥυμοτο-
μία διάφορος. ἐπ' εὐθειῶν εἰς δύναμιν. καὶ αἱ ὁδοὶ λιθόστρωτοι. στοαί τε μεγάλαι τετράγωνοι. ἐπίπεδοί
τε, καὶ ὑπερῷοι. ἔστι δὲ καὶ βιβλιοθήκη. καὶ τὸ ὁμήρειον. στοὰ τετράγωνος ἔχουσα νεὼν ὁμήρου καὶ ξόα-
νον. ἀντιποιοῦνται γὰρ καὶ οὗτοι διαφερόντως τοῦ ποιητοῦ. καὶ δὴ καὶ νόμισμά τι χαλκοῦν παρ'
αὐτοῖς ὁμήρειον λέγεται. ῥεῖ δὲ πλησίον τοῦ τείχους ὁ μέλης ποταμός. ἔστι δὲ πρὸς τῇ ἄλλῃ κατασκευῇ
τῆς πόλεως καὶ λιμὴν κλειστός. ἓν δ' ἐλάττωμα τῶν ἀρχιτεκτόνων οὐ μικρόν. ὅτι τὰς ὁδοὺς στρωννύν-
τες, ὑπορρύσεις οὐκ ἔδωκαν αὐταῖς. ἀλλ' ἐπιπολάζει τὰ σκύβαλα. καὶ μάλιστα ἐν τοῖς ὄμβροις ἐ-
παφιεμένων τῶν παρασκευῶν. ἐνταῦθα δολοβέλλας τρεβώνιον ἐκπολιορκήσας, ἀνεῖλεν ἕνα τῶν δολο-
φονησάντων καίσαρα τὸν θεόν. καὶ τῆς πόλεως παρέλυσε πολλὰ μέρη. μετὰ δὲ σμύρναν αἱ λεῦκαι πο-
λίχνιον. ὃ ἀπέστησεν ἀριστόνικος μετὰ τὴν ἀττάλου τοῦ φιλομήτορος τελευτήν. δοκῶν τοῦ γένους εἶναι τοῦ
τῶν βασιλέων. καὶ διανοούμενος εἰς ἑαυτὸν ποιεῖσθαι τὴν ἀρχήν. ἐντεῦθεν μὲν οὖν ἐξέπεσεν ἡττηθεὶς ναυ-
μαχίᾳ περὶ τὴν κυμαίαν ὑπὸ ἐφεσίων. εἰς δὲ τὴν μεσόγαιαν ἰὼν, ἤθροισε διὰ ταχέων πλῆθος ἀπόρων
καὶ δούλων ἀνθρώπων ἐπ' ἐλευθερίᾳ κατακεκλημένων. οὓς ἡλιοπολίτας ἐκάλεσε. πρῶτον μὲν οὖν
παρεισέπεσεν εἰς θυάτειρα. εἶτ' ἀπολλωνιάδα ἔσχεν. εἶτ' ἄλλων ἐφίετο φρουρίων. οὐ πολὺν δὲ διεγένετο
χρόνον. ἀλλ' εὐθὺς αἵ τε πόλεις ἔπεμψαν πλῆθος. καὶ νικομήδης ὁ βιθυνὸς ἐπεκούρησε. καὶ οἱ τῶν καππαδό-
κων βασιλεῖς. ἔπειτα πρέσβεις ῥωμαίων πέντε ἧκον. καὶ μετὰ ταῦτα στρατιὰ καὶ ὕπατος πόπλιος κρά-
σος, καὶ μετὰ ταῦτα μάρκος περπέρνας. ὃς καὶ κατέλυσε τὸν πόλεμον, ζωγρίᾳ λαβὼν τὸν ἀριστόνικον, καὶ ἀ-
ναπέμψας εἰς ῥώμην, ἐκεῖνος μὲν οὖν ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ κατέστρεψε τὸν βίον, περπέρναν δὲ νόσος διέ-
φθειρε. κράσσος δὲ περὶ λεύκας ἐπιθεμένων τινῶν ἔπεσεν εἰς μάχην. μάνιος δὲ ἀκύλλιος ἐπελθὼν ὕπα-
τος μετὰ δέκα πρεσβευτῶν, διέταξε τὴν ἐπαρχίαν εἰς τὸ νῦν ἔτι συμμένον τῆς πολιτείας σχῆμα. με-
τὰ δὲ λεύκας φώκαια ἐν κόλπῳ. περὶ δὲ ταύτης εἰρήκαμεν ἐν τῷ περὶ μασσαλίας λόγῳ. εἶθ' οἱ ὅροι τῶν
ἰώνων καὶ τῶν αἰολέων. εἴρηται δὲ καὶ περὶ τούτων. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς ἰωνικῆς παραλίας, λοιπά
ἐστι τὰ περὶ τὴν ὁδὸν τὴν ἐξ ἐφέσου. μέχρι ἀντιοχείας καὶ τοῦ μαιάνδρου. ἔστι δὲ καὶ τὰ χωρία ταῦ-
τα λυδοῖς καὶ καρσὶν ἐπίμικτα καὶ τοῖς ἕλλησι. πρώτη δ' ἐστὶν ἐξ ἐφέσου μαγνησία πόλις αἰολίς. λε-
γομένη δὲ ἐπὶ μαιάνδρῳ. πλησίον γὰρ αὐτοῦ ἵδρυται. πολὺ δὲ πλησιαίτερον ὁ ληθαῖος ἐμβάλλων
εἰς τὸν μαίανδρον. τὴν δ' ἀρχὴν ἔχων ἀπὸ πακτύου τοῦ τῶν ἐφεσίων ὄρους. ἕτερος δ' ἐστὶ ληθαῖος ὁ ἐν γορ-
τύνῃ. καὶ ὁ περὶ τρίκκην. ἐφ' ᾧ ὁ ἀσκληπιὸς γεννηθῆναι λέγεται. καὶ ἔτι ἐν τοῖς ἑσπερίταις λίβυ-
σι. κεῖται δ' ἐν πεδίῳ. πρὸς ὄρει καλουμένῳ θώρακι ἡ πόλις. ἐφ' ᾧ σταυρωθῆναι φασὶ δαφίταν τὸν γραμ-
ματικόν. λοιδορήσαντα τοὺς βασιλέας διὰ στίχου.

» Πορφύρεοι μώλωπες ἀπορρινήματα γάζης
 Λυσιμάχου, λυδῶν ἄρχετε καὶ φρυγίης.

Καὶ λόγιον δ' ἐκπεσεῖν αὐτῷ λέγεται. φυλάττεσθαι τὸν θώρακα. δοκοῦσι δ' εἶναι μάγνητες. δελ-
φῶν ἀπόγονοι τῶν ἐποικησάντων τὰ δίδυμα ὄρη ἐν θετταλίᾳ. περὶ ὧν φησιν ἡσίοδος.

» Ἢ οἵη διδύμους ἱεροὺς ναίουσα κολωνούς.
» Δωτίῳ ἐν πεδίῳ πολυβότρυος ἄντα μύροιο.
» Νίψατο βοιβιάδος λίμνης πόδα παρθένος ἀδμής.

Ἐνταῦθα δ' ἦν καὶ τὸ τῆς δινδυμήνης ἱερὸν μητρὸς θεῶν. ἱεράσθαι δ' αὐτοῦ τὴν θεμιστοκλέους γυ-
ναῖκα. οἱ δὲ, θυγατέρα παραδιδόασι. νῦν δ' οὐκ ἔστι τὸ ἱερόν. διὰ τὸ τὴν πόλιν εἰς ἄλλον μετῳκίσθαι τόπον.
ἐν δὲ τῇ νῦν πόλει τὸ τῆς λευκοφρυήνης ἱερόν ἐστιν ἀρτέμιδος. ὃ τῷ μὲν μεγέθει τοῦ ναοῦ καὶ τῷ πλήθει τῶν
ἀναθημάτων, λείπεται τοῦ ἐν ἐφέσῳ. τῇ δ' εὐρυθμίᾳ καὶ τῇ τέχνῃ τῇ περὶ τὴν κατασκευὴν τοῦ σηκοῦ
πολὺ διαφέρει. καὶ τῷ μεγέθει ὑπερφέρει πάντας τοὺς ἐν ἀσίᾳ πλὴν δυεῖν. τοῦ ἐν ἐφέσῳ καὶ τοῦ ἐν δι-
δύμοις. καὶ τὸ παλαιὸν δὲ συνέβη τοῖς μάγνησιν ὑπὸ τρηρῶν ἄρδην ἀναιρεθῆναι. κιμμερικοῦ ἔθνους
εὐτυχήσαντος πολὺν χρόνον. τῷ δ' ἑξῆς ἔτει μιλησίους κατασχεῖν τὸν τόπον. καλλῖνος μὲν οὖν ὡς εὐτυ-
χούντων ἔτι τῶν μαγνήτων μέμνηται, καὶ κατορθούντων ἐν τῷ πρὸς ἐφεσίους πολέμῳ. ἀρχίλοχος
δὲ ἤδη φαίνεται γνωρίζων τὴν γενομένην αὐτοῖς συμφορὰν κλαίειν θάσσον οὐ τὰ μαγνήτων κακά. ἐξ οὗ
καὶ τὸ νεώτερον εἶναι καλλίνου τεκμαίρεσθαι πάρεστιν. ἄλλης δέ τινος ἐφόδου τῶν κιμμερίων μέμνη-
ται πρεσβυτέρας ὁ καλλῖνος ἐπὰν φῇ. » Νῦν δ' ἐπὶ κιμμερίων στρατὸς ἔρχεται ὀμβριμοεργῶν.
Ἐν ᾗ τὴν σάρδεων ἅλωσιν δηλοῖ. ἄνδρες δ' ἐγένοντο γνώριμοι μάγνητες. ἡγησίας τε ὁ ῥήτωρ ὃς ἦρ-
ξε μάλιστα τοῦ ἀσιανοῦ λεγομένου, ζήλου. παραφθείρας τὸ καθεστηκὸς ἔθος τὸ ἀττικόν. καὶ σίμος ὁ με-
λοποιὸς καὶ αὐτὸς παραφθείρας τὴν τῶν προτέρων μελοποιῶν ἀγωγὴν, καὶ τὴν σιμῳδίαν εἰσαγαγών.

καθάπερ ἔτι μᾶλλον λυσιῳδοὶ καὶ μαγῳδοί. καὶ κλεόμαχος ὁ πύκτης, ὁ εἰς ἔρωτα ἐμπεσὼν κιναίδου τινὸς, καὶ παιδίσκης ὑπὸ κιναίδῳ τρεφομένης, ἀπεμιμήσατο τὴν ἀγωγὴν τῶν παρὰ τοῖς κιναίδοις διαλέκτων. καὶ τῆς ἠθοποιΐας. ἦρξε δὲ σωτάδης μὲν πρῶτος τοῦ κιναιδολογεῖν. ἔπειτα ἀλέξανδρος ὁ αἰτωλός. ἀλλ' οὗτοι μὲν ἐν ψιλῷ λόγῳ. μετὰ μέλους δὲ λύσις. καὶ ἔτι πρότερος τούτου ὁ σίμος. ἀναξήνορα δὲ τὸν κιθαρῳδὸν, ἐξῆρε μὲν καὶ τὰ θέατρα. ἀλλ' ἔτι μάλιστα ἀντώνιος. ὅν γε καὶ τεττάρων πόλεων ἀπέδειξε φορολόγον. στρατιώτας αὐτῷ συστήσας. καὶ ἡ πατρὶς δ' ἱκανῶς αὐτὸν ηὔξησε. πορφύραν ἐνδύσασα ἱερωμένην τοῦ σωσιπόλιδος διός. καθάπερ καὶ ἡ γραπτὴ εἰκὼν ἐμφανίζει ἡ ἐν τῇ ἀγορᾷ. ἔστι δὲ καὶ

» χαλκῆ εἰκὼν ἐν τῷ θεάτρῳ. ἐπιγραφὴν ἔχουσα. Ἤτοι μὲν τόδε καλὸν ἀκουέμεν ἐστὶν ἀοιδοῦ.
» Τοίου δ' οἷος ὅδ' ἐστὶ, θεοῖς ἐναλίγκιος αὐδῆ.

Οὐ στοχασάμενος δὲ ὁ ἐπιγράψας, τὸ τελευταῖον γράμμα τοῦ δευτέρου ἔπους παρέλιπε. τοῦ πλάτους τῆς βάσεως μὴ συνεξαρκοῦντος. ὥστε τῆς πόλεως ἀμαθίαν καταγινώσκειν παρέχει διὰ τὴν ἀμφιβολίαν τὴν παρὰ τὴν γραφήν. εἴτε τὴν ὀνομαστικὴν δέχοιτο, πτῶσιν τῆς ἐσχάτης προσηγορίας, εἴτε τὴν δοτικήν. πολλοὶ γὰρ τοῦ ι γράφουσι τὰς δοτικάς. καὶ ἐκβάλλουσί γε τὸ ἔθος, φυσικὴν αἰτίαν οὐκ ἔχον. μετὰ δὲ μαγνησίαν ἡ ἐπὶ τράλλεις ἐστὶν ὁδός. ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὴν μεσογίδα ἔχουσιν. ἐν αὐτῇ δὲ τῇ ὁδῷ καὶ ἐν δεξιᾷ, τὸ μαιάνδρου πεδίον, λυδῶν ἅμα καὶ καρῶν νεμομένων καὶ ἰώνων. μιλησίων τε καὶ μυησίων. ἔτι δὲ αἰολέων τῶν ἐν μαγνησίᾳ. ὁ δ' αὐτὸς τρόπος καὶ τῆς ὑποθεσίας καὶ μέχρι νύσης καὶ ἀντιοχείας. ἵδρυται δ' ἡ μὲν τῶν τραλλιανῶν πόλις ἐπὶ τραπεζίου τινὸς ἄκραν ἔχοντος ἐρυμνήν. καὶ τὰ κύκλῳ δ' ἱκανῶς εὐερκῆ. συνοικεῖται δὲ καλῶς. εἴ τις ἄλλη τῶν κατὰ τὴν ἀσίαν ὑπὸ εὐπόρων ἀνθρώπων. καὶ ἀεί τινες ἐξ αὐτῶν εἰσὶν οἱ πρωτεύοντες κατὰ τὴν ἐπαρχίαν. οὓς ἀσιάρχας καλοῦσιν. ὧν πυθόδωρός τε ἦν ἀνὴρ νισαεὺς τὸ ἐξ ἀρχῆς ἐκεῖσε μεταβεβηκὼς διὰ τὴν ἐπιφάνειαν. καὶ ἐν τῇ πρὸς πομπήϊον φιλίᾳ διαπρέπων μετ' ὀλίγων. περιεβέβλητο δὲ καὶ οὐσίαν βασιλικὴν πλειόνων ἢ δισχιλίων ταλάντων. ἣν ὑπὸ καίσαρος παραθεῖσαν διὰ τὴν πρὸς πομπήϊον φιλίαν ἐξωνησάμενος. οὐχ ἧττον τοῖς παισὶ κατέλιπε. τούτου δ' ἐστὶ θυγάτηρ πυθοδωρὶς, ἡ νῦν βασιλεύουσα ἐν τῷ πόντῳ. περὶ ἧς εἰρήκαμεν. οὗτος δὴ καθ' ἡμᾶς ἤκμασε. καὶ μηνόδωρος ἀνὴρ λόγιος. καὶ ἄλλως σεμνὸς καὶ βαρύς. ἔχων τὴν ἱερωσύνην τοῦ διὸς τοῦ λαρισαίου. κατεστασιάσθη δ' ὑπὸ τῶν δομετίου τοῦ αἰνοβάρβου φίλων. καὶ ἀνεῖλεν αὐτὸν ἐκεῖνος. ὡς ἀφιστάντα τὸ ναυτικόν. πιστεύσας τοῖς ἐνδειξαμένοις. ἐγένοντο δὲ καὶ ῥήτορες ἐπιφανεῖς. διονυσοκλῆς τε. καὶ μετὰ τοῦτον δάμασος ὁ σκόμβρος. κτίσμα δέ φασιν εἶναι τὰς τράλλεις ἀργείων καί τινων θρακῶν. ἀφ' ὧν τοὔνομα. τυραννηθῆναι δ' ὀλίγον συνέπεσε χρόνον τὴν πόλιν ὑπὸ τῶν κρατίππου παίδων. κατὰ τὰ μιθριδατικά. νίσα δ' ἵδρυται πρὸς τῇ μεσωγίδι τὸ πλέον τῷ ὄρει προσανακεκλιμένη. ἔστι δ' ὥσπερ δίπολις. διαιρεῖ γὰρ αὐτὴν χαράδρα τις ποιοῦσα φάραγγα. ἧς τὸ μὲν, γέφυραν ἐπικειμένην ἔχει, συνάπτουσαν τὰς δύο πόλεις. τὸ δ' ἀμφιθεάτρῳ κεκόσμηται. κρυπτὴν ἔχον τὴν ὑπόρρυσιν τῶν χαραδρωδῶν ὑδάτων. τῷ δὲ θεάτρῳ δύο ἄκραι. ὧν τῇ μὲν, ὑπόκειται τὸ γυμνάσιον τῶν νέων. τῇ δ' ἀγορᾷ καὶ τὸ γεροντικόν. πρὸς δὲ νότον ὑποπέπτωκε τῇ πόλει τὸ πεδίον καθάπερ, καὶ ταῖς τράλλεσιν. ἐν δὲ τῇ ὁδῷ τῇ μεταξὺ τῶν τράλλεων καὶ τῆς νίσης, κώμη τῶν νισαέων ἐστὶν οὐκ ἄπωθεν τῆς πόλεως ἀχάρακα. ἐν ᾗ τὸ πλουτώνιον ἔχον, καὶ ἄλσος πολυτελὲς, καὶ νεὼν πλούτωνός τε, καὶ ἥρας. καὶ τὸ χαρώνιον ἄντρον ὑπερκείμενον τοῦ ἄλσους θαυμαστόν. λέγουσι γὰρ δὴ καὶ τοὺς νοσώδεις καὶ προσέχοντας ταῖς τῶν θεῶν τούτων θεραπείαις, φοιτᾶν ἐκεῖσε, καὶ διαιτᾶσθαι ἐν τῇ κώμῃ πλησίον τοῦ ἄντρου παρὰ γὰρ τοῖς ἐμπείροις τῶν ἱερέων. οἳ ἐγκοιμῶνταί τε ὑπὲρ αὐτῶν, καὶ διατάττουσιν ἐκ τῶν ὀνείρων τὰς θεραπείας. οὗτοι δ' εἰσὶ καὶ οἱ ἐγκαλοῦντες τὴν τῶν θεῶν ἰατρείαν. ἄγουσι δὲ, πολλάκις εἰς τὸ ἄντρον. καὶ ἱδρύουσι μένοντες καθ' ἡσυχίαν ἐκεῖ καθάπερ ἐν φωλεῷ σιτίων χωρὶς ἐπὶ πλείους ἡμέρας. ἔστι δ' ὅτε, καὶ ἰδίοις ἐνυπνίοις οἱ νοσηλευόμενοι προσέχουσι. μυσταγωγοῖς δ' ὅμως, καὶ συμβούλοις ἐκείνοις χρῶνται ὡς ἂν ἱερεῦσι. τοῖς δ' ἄλλοις ἄδυτός ἐστιν ὁ τόπος, καὶ ὀλέθριος. πανήγυρις δ' ἐν τοῖς ἀχαράκοις συντελεῖται κατ' ἔτος. καὶ τότε μάλιστα ὁρᾶν ἔστι, καὶ ἀκούειν περὶ τῶν τοιούτων τοὺς πανηγυρίζοντας. τότε δὲ, καὶ περὶ μεσημβρίαν, ὑπολαβόντες ταῦρον οἱ ἐκ τοῦ γυμνασίου νέοι, καὶ ἔφηβοι, γυμνοὶ ἀπαληλειμμένοι, μετὰ σπουδῆς ἀνακομίζουσιν εἰς τὸ ἄντρον. ἀφεθεὶς δὲ, μικρὸν προελθὼν πίπτει, καὶ ἔκπνους γίνεται, ἀπὸ δὲ τριάκοντα σταδίων τῆς νίσης ὑπερβᾶσι τμῶλον τὸ ὄρος τὴν μεσωγίδα ἐπὶ τὰ πρὸς τὸν νότον μέρη, καλεῖται τόπος λειμών. εἰς ὃν ἐξοδεύουσι πανηγυρίζοντες νισαεῖς τε καὶ οἱ κύκλῳ πάντες. οὐ πόρρω δὲ, τούτου στόμιον ἐστὶν ἱερὸν τῶν τοιούτων θεῶν ὅ φασι καθήκειν μέχρι τῶν ἀχαράκων. τοῦτον δὲ τὸν λειμῶνα, ὀνομάζειν τὸν ποιητήν φασιν, ὅταν φῇ ἀσίῳ ἐν λειμῶνι. δεικνύντες καϋστρίου, καὶ ἀσίου τινὸς ἡρῷον καὶ τὸν καΰστρον πλησίον ἀπορρέοντα. ἱστοροῦσι δὲ τρεῖς ἀδελφοὺς. ἄθυμβρόν τε, καὶ ἀθύμβραδον. καὶ ὕδρηλον ἐλθόντας ἐκ λακεδαίμονος, τὰς ἐπωνύμους ἑαυτῶν κτίσαι πόλεις. λειπανδρῆσαι δ' ὕστερον. ἐξ ἐκείνων δὲ συνοικισθῆναι τὴν νίσαν καὶ νῦν ἄθυμβρον ἀρχηγέτην νομίζουσι νισαεῖς.

περίκειται δὲ, ἀξιόλογοι κατοικίαι πέραν τοῦ μαιάνδρου, κοσκινία, καὶ ὀρθωσία, αὐτὸς δὲ βιοῦλα. μάσταυρα. ἀχάρακα. καὶ ὑπὲρ τῆς πόλεως ἐν τῷ ὄρει τὰ ἀρόμακτα. συστέλλοντες τὸ ρῶ γράμμα. ὅθεν ἄριστος μεσωγίτης οἶνος ὁ ἀρομεύς. ἄνδρες δὲ γεγόνασιν ἔνδοξοι νυσαεῖς. ἀπολλώνιός τε ὁ στωικὸς φιλόσοφος τῶν παναιτίου γνωρίμων ἄριστος, καὶ μενεκράτης ἀριστάρχου μαθητής. καὶ ἀριστόδημος, ἐκείνου υἱός. οὗ διηκούσαμεν ἡμεῖς ἐσχατογήρω νέοι παντελῶς ἐν τῇ νύσῃ, καὶ σώστρατος ὁ ἀδελφὸς τοῦ ἀριστοδήμου, καὶ ἄλλος ἀριστόδημος ἀνεψιὸς αὐτοῦ. ὁ παιδεύσας μάγνον τὸν πομπήιον, ἀξιόλογοι γεγόνασι γραμματικοί. ὁ δ' ἡμέτερος καὶ ἐρητόρευε, καὶ ἐν τῇ ῥόδῳ καὶ ἐν τῇ πατρίδι δύο σχολὰς συνεῖχε. πρωῒ μὲν τὴν ῥητορικήν. δείλης δὲ τὴν γραμματικὴν σχολήν. ἐν δὲ τῇ ῥώμῃ τῶν μάγνου παίδων ἐπιστατῶν ἤρκει τῇ γραμματικῇ σχολῇ. τὰ δὲ πέραν ἤδη τοῦ μαιάνδρου, τὰ λειπόμενα τῆς περιοδείας, πάντα ἐστὶ καρικά. οὐκέτι τοῖς λυδοῖς ἐπιμεμιγμένων ἐνταῦθα τῶν καρῶν. ἀλλ' ἤδη καθ' αὑτοὺς ὄντων. πλὴν εἴ τι μιλήσιοι, καὶ μυούσιοι τῆς παραλίας ἀποτέμνονται. ἀρχὴ μὲν οὖν τῆς παραλίας ἐστὶν ἡ τῶν ῥοδίων περαία πρὸς θαλάττης. τέλος δὲ τὸ ποσείδιον τῶν μιλησίων. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ, τὰ ἄκρα τοῦ ταύρου μέχρι μαιάνδρου. λέγουσι γὰρ ἀρχὴν εἶναι τοῦ ταύρου τὰ ὑπερκείμενα ὄρη τῶν χελιδονίων καλουμένων νήσων. αἳ πρὸ ἐν μεθορίῳ τῆς παμφυλίας, καὶ τῆς λυκίας πρόκεινται. ἐντεῦθεν γὰρ ἐξαίρεται πρὸς ὕψος ὁ ταῦρος. τὸ δ' ἀληθὲς, καὶ τὴν λυκίαν ἅπασαν ὀρεινὴ ῥάχις τοῦ ταύρου, διείργει πρὸς τὰ ἐκτὸς, καὶ τὸ νότιον μέρος. ἀπὸ τῶν κιβυρατικῶν μέχρι τῆς περαίας τῶν ῥοδίων. κἀνταῦθα δ' ἐστὶ συνεχὴς ὀρεινή. πολὺ μέντοι ταπεινοτέρα. καὶ οὐκ ἔτι τοῦ ταύρου νομίζεται. οὐδὲ τὰ μὲν, ἐκτὸς αὐτοῦ τὰ δ' ἐντὸς, διὰ τὸ σποράδας εἶναι τὰς ἐξοχάς. καὶ τὰς εἰσοχάς. ἐπίσης τε πλάτος, καὶ μῆκος τῆς χώρας ἁπάσης καὶ μηδὲν ἔχειν ὅμοιον διατειχίσματι. ἔστι δ' ἅπας μὲν ὁ περίπλους κατακολπίζοντι σταδίων τετρακισχιλίων ἐνακοσίων. αὐτὸς δὲ ὁ τῆς περαίας τῶν ῥοδίων ἐγγὺς χιλίων καὶ πεντακοσίων. ἀρχὴ δὲ τὰ δαίδαλα τῆς ῥοδίας χωρίον. πέρας δὲ τὸ καλούμενον ὄρος φοίνιξ. καὶ τοῦτο τῆς ῥοδίας. πρόκειται δὲ ἐλεοῦσα νῆσος διέχουσα τῆς ῥόδου σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι. μεταξὺ δὲ πρῶτον μὲν ἀπὸ δαιδάλων πλέουσιν ἐπ' εὐθείας, τῇ ἐκ κιλικίας, καὶ παμφυλίας, καὶ λυκίας, παραλία, κόλπος ἐστὶν εὐλίμενος γλαῦκος καλούμενος. εἶτα τὸ ἀρτεμίσιον ἄκρα, καὶ ἱερόν. εἶτα τὸ λητῷον ἄλσος ὑπὲρ αὐτοῦ δὲ, καὶ τῆς θαλάττης ἐν ἑξήκοντα σταδίοις κάλυμνα πόλις. εἶτα καῦνος, καὶ ποταμὸς πλησίον κάλβις βαθὺς, ἔχων εἰσαγωγήν. καὶ μεταξὺ πίσιλις. ἔχει δ' ἡ πόλις νεώρια, καὶ λιμένα κλειστόν. ὑπέρκειται δὲ τῆς πόλεως ἐν ὕψει φρούριον, ἴμβρος. τῆς δὲ χώρας εὐδαίμονος οὔσης, ἡ πόλις τοῦ θέρους ὁμολογεῖται παρὰ πάντων εἶναι δυσάερος, καὶ τοῦ μετοπώρου. διά τε καύματα, καὶ τὴν ἀφθονίαν τῶν ὡραίων. καὶ δὴ καὶ τὰ τοιαῦτα διηγήματα θρυλλεῖται. ὅτι στρατόνικος, ὁ κιθαριστὴς ἰδὼν ἐπιμελῶς χλωροὺς τοὺς καυνίους. τοῦτ' εἶναι ἔφη τὸ τοῦ ποιητοῦ.

» Οἵη περ φύλλων γενεὴ, τοιήδε, καὶ ἀνδρῶν.

Μεμφομένων δὲ, ὡς σκώπτοιτο, αὐτῶν ἡ πόλις ὡς νοσερὰ, ἐγὼ ἔφη, μή ποτε θαρρήσαιμι ἂν λέγειν νοσερὰν ὅπου, καὶ οἱ νεκροὶ περιπατοῦσιν. ἀπέστησαν δέ ποτε καύνιοι τῶν ῥοδίων. κριθέντες δ' ἐπὶ τῶν ῥωμαίων ἀπελήφθησαν πάλιν. καὶ ἔστι λόγος μόλωνος κατὰ καυνίων. φασὶ δ' αὐτοὺς ὁμογλώττους μὲν εἶναι τοῖς καρσίν. ἀφῖχθαι δὲ κρῆτας καὶ χρῆσθαι νόμοις ἰδίοις. ἑξῆς δὲ φύσκος πολίχνιον λιμένα ἔχουσα. καὶ ἄλσος λητῷον. εἶτα λώρυμα παραλία τραχεῖα, καὶ ὄρος ὑψηλότατον τῶν ταύτῃ. ἐπ' ἄκρῳ δὲ φρούριον ὁμώνυμον τῷ ὄρει φοῖνιξ. πρόκειται δ' ἡ ἐλεοῦσα νῆσος ἐν τέτρασι σταδίοις κύκλον ἔχουσα ὅσον ὀκτωστάδιον. ἡ δὲ τῶν ῥοδίων πόλις κεῖται μὲν ἐπὶ τοῦ ἑωθινοῦ ἀκρωτηρίου. λιμέσι δὲ, καὶ ὁδοῖς, καὶ τείχεσι, καὶ ἄλλῃ κατασκευῇ τοσοῦτον διαφέρει τῶν ἄλλων. ὥστ' οὐκ ἔχομεν εἰπεῖν ἑτέραν. ἀλλ' οὐδὲ πάρισον μήτιγε κρείττω ταύτης τῆς πόλεως. θαυμαστὴ δὲ, καὶ ἡ εὐνομία, καὶ ἡ ἐπιμέλεια πρός τε τὴν ἄλλην πολιτείαν, καὶ τὰ ναυτικά. ἀφ' ἧς ἐθαλασσοκράτησε πολὺν χρόνον. καὶ τὰ λῃστήρια καθεῖλε. καὶ ῥωμαίοις ἐγένετο φίλη. καὶ τῶν βασιλέων τοῖς φιλορωμαίοις τε, καὶ φιλέλλησιν. ἀφ' ὧν αὐτόνομός τε διετέλεσε, καὶ πολλοῖς ἀναθήμασιν ἐκοσμήθη. ἃ κεῖται τὰ μὲν πλεῖστα ἐν τῷ διονυσίῳ. καὶ τῷ γυμνασίῳ. ἄλλα δ' ἐν ἄλλοις τόποις. ἄριστα δὲ ὅ τε τοῦ ἡλίου κολοσσός. ὅν φησιν ὁ ποιήσας τὸ ἰαμβεῖον,

» Ὅ τι ἑπτάκις δέκα χάλκεος ἐποίει πηχέων ὁ λίνδιος.

Κεῖται δὲ νῦν ὑπὸ σεισμοῦ πεσών. περικλασθεὶς ἀπὸ τῶν γονάτων. οὐκ ἀνέστησαν δ' αὐτὸν κατά τι λόγιον. τοῦ δὲ τῶν ἀναθημάτων τὸ κράτιστον. καὶ τῶν γοῦν ἑπτὰ θεαμάτων ὁμολογεῖται. καὶ αἱ τοῦ πρωτογένους γραφαί. ὅ τε ἰάλυσος, καὶ ὁ σάτυρος παρεστὼς στύλῳ. ἐπὶ δὲ τῷ στύλῳ πέρδιξ ἐφειστήκει. πρὸς ὃν οὕτως ἐκεχήνεσαν ὡς ἔοικεν οἱ ἄνθρωποι, νεωστὶ ἀνακειμένου τοῦ πίνακος, ὥστ' ἐκεῖνον ἐθαύμαζον. ὁ δὲ σάτυρος παρεωρᾶτο. καίτοι σφόδρα κατωρθωμένος. ἐξέπληττον δ' ἔτι μᾶλλον οἱ περδικοτρόφοι κομίζοντες τοὺς τιθασοὺς, καὶ τιθέντες καταντικρύ. ἐφθέγγοντο γὰρ πρὸς τὴν γραφὴν οἱ πέρδικες, καὶ

ὠχλαγώγουν. ὁρῶν δὲ ὁ πρωτογένης τὸ ἔργον πάρεργον γεγονὸς, ἐδεήθη τῶν τοῦ τεμένους προεστώτων ἐ-
πιτρέψαι παρελθόντα ἐξαλεῖψαι τὸν ὄρνιν. καὶ ἐποίησε. δημοκηδεῖς δ' εἰσὶν οἱ ῥόδιοι. καίπερ οὐ δημο
κρατούμενοι. συνέχειν δ' ὅμως βουλόμενοι τὸ τῶν πενήτων πλῆθος. σιταρχεῖται δὲ δὴ ὁ δῆμος. καὶ
οἱ εὔποροι τοὺς ἐνδεεῖς ὑπολαμβάνουσιν ἔθει τινὶ πατρίῳ. λειτουργίαι τέ τινές εἰσιν ὀψωνιαζόμεναι.
ὥσθ' ἅμα τόν τε πένητα ἔχειν τὴν διατροφὴν, καὶ τὴν πόλιν τῶν χρειῶν μὴ καθυστερεῖν. καὶ μάλιστα πρὸς
τὰς ναυστολίας. τῶν δὲ ναυστάθμων τινὰ καὶ κρυπτὰ ἦν, καὶ ἀπόρρητα τοῖς πολλοῖς. τῷ δὲ κατοπτεύσαν-
τι ἢ παρελθόντι εἴσω, θάνατος ὥριστο ἡ ζημία. καὶ ταῦτα δ' ὥσπερ ἐν μασσαλίᾳ καὶ κυζίκῳ τὰ περὶ
τοὺς ἀρχιτέκτονας καὶ τὰς ὀργανοποιίας καὶ θησαυροὺς ὅπλων τε καὶ τῶν ἄλλων. ἐσπούδασται
διαφερόντως. καὶ ἔστι γε τῶν παρ' ἄλλοις μᾶλλον. δωριεῖς δ' εἰσὶν ὥσπερ καὶ ἁλικαρνασεῖς καὶ κνίδιοι
καὶ κῷοι. οἱ γὰρ δωριεῖς οἱ τὰ μέγαρα κτίσαντες μετὰ τὴν κόδρου τελευτήν. οἱ μὲν, ἔμειναν αὐτόθι. οἱ
δὲ, σὺν ἀλθαιμένει τῷ ἀργείῳ τῆς εἰς κρήτην ἀποικίας ἐκοινώνησαν. οἱ δ' εἰς τὴν ῥόδον καὶ τὰς λεχθείσας
ἀρτίως πόλεις ἐμερίσθησαν. ταῦτα δὲ νεώτερα τῶν ὑφ' ὁμήρου λεγομένων ἐστί. κνίδος μὲν δὴ καὶ ἁλι-
καρνασὸς οὐδ' ἦν πω. ῥόδος δ' ἦν καὶ κῶς. ἀλλ' ᾠκεῖτο ὑφ' ἡρακλειδῶν. τληπόλεμος μὲν οὖν ἀνδρωθεὶς,

» Αὐτίκα πατρὸς ἑοῖο φίλον μήτρωα κατέκτα,
» Ἤδη γηράσκοντα λικύμνιον.
» Αἶψα δὲ νῆας ἔπηξε. πολὺν δ' ὅγε λαὸν ἀγείρας. Βῆ φεύγων. Εἶτα φησὶν
» Εἰς ῥόδον ἷξεν ἀλώμενος.
» Τριχθὰ δὲ ᾤκηθεν καταφυλαδόν.

Καὶ τὰς πόλεις ὀνομάζει τὰς τότε. λίνδον. ἰήλυσόν τε καὶ ἀργινόεντα κάμειρον. τῆς ῥοδίων πό-
λεως οὔπω συνῳκισμένης. οὐδαμοῦ δὴ ἐνταῦθα δωριέας ὀνομάζει. ἀλλ' ἢ ἄρα αἰολέας ἐμφαίνει καὶ
βοιωτοὺς, εἴπερ ἐκεῖ ἡ κατοικία τοῦ ἡρακλέους καὶ τοῦ λικυμνίου. εἰ δ' ὥσπερ καὶ ἄλλοι φασὶν ἐξ ἄργους
καὶ τίρυνθος ἀπῆρεν ὁ τληπόλεμος, οὐδ' οὕτω δωρικὴ γίνεται ἡ ἐκεῖθεν ἀποικία. πρὸ γὰρ τῆς ἡρακλει-
δῶν καθόδου γεγένηται καί,

» Τῶν κώων δὲ φείδιππός τε καὶ ἄντιφος ἡγησάσθην.
» Θεσσαλοῦ υἷε δύω ἡρακλείδαο ἄνακτος. Καὶ οὗτοι τὸ αἰολικὸν μᾶλλον ἢ τὸ δωρικὸν γέ-

νος ἐμφαίνοντες. ἐκαλεῖτο δ' ἡ ῥόδος πρότερον ὀφιοῦσσα καὶ σταδία. εἶτα τελχινίς. ἀπὸ τῶν οἰκησάν-
των τελχίνων τὴν νῆσον. οὓς οἱ μὲν, βασκάνους φασὶ καὶ γόητας, θείῳ καταρραίνοντας τὸ τῆς στυγὸς ὕ-
δωρ, ζώων τε καὶ φυτῶν ὀλέθρου χάριν. οἱ δὲ, τέχναις διαφέροντας, τοὐναντίον ὑπὸ τῶν ἀντιτέ-
χνων βασκανθῆναι. καὶ τῆς δυσφημίας τυχεῖν ταύτης. ἐλθεῖν δ' ἐκ κρήτης εἰς κύπρον πρῶτον. εἶτ' εἰς
» ῥόδον. πρώτους δ' ἐργάσασθαι σίδηρόν τε καὶ χαλκόν. καὶ δὴ καὶ τὴν ἅρπην τῷ κρόνῳ δημιουργῆσαι.
εἴρηται μὲν οὖν καὶ πρότερον περὶ αὐτῶν. ἀλλὰ ποιεῖ τὸ πολύμυθον ἀναλαμβάνειν πάλιν. ἀναπλη-
ροῦντας εἴ τι παρελίπομεν, μετὰ δὲ τοὺς τελχῖνας, οἱ ἡλιάδαι μυθεύονται κατασχεῖν τὴν νῆσον, ὧν ἑ-
νὸς κερκάφου καὶ κυδίππης γενέσθαι παῖδας, τοὺς τὰς πόλεις κτίσαντας ἐπωνύμους αὐτῶν. λίνδον.
ἰήλυσόν τε καὶ ἀργινόεντα κάμειρον, ἔνιοι δὲ τὸν τληπόλεμον κτίσαι φασί. θέσθαι δὲ τὰ ὀνόματα, ὁ-
μωνύμως τῶν δαναοῦ θυγατέρων τισίν. ἡ δὲ νῦν πόλις ἐκτίσθη κατὰ τὰ πελοποννησιακὰ ὑπὸ τοῦ
αὐτοῦ ἀρχιτέκτονος ὥς φασιν ὑφ' οὗ καὶ ὁ πειραιεύς. οὐ συμμένει δ' ὁ πειραιεὺς κακωθεὶς ὑπό τε λακεδαι-
μονίων πρότερον τῶν τὰ σκέλη καθελόντων. καὶ ὑπὸ σύλλα τοῦ ῥωμαίων ἡγεμόνος. ἱστοροῦσι δὲ
καὶ ταῦτα περὶ τῶν ῥοδίων. ὅτι οὐ μόνον ἀφ' οὗ χρόνου συνῴκισαν τὴν νῦν πόλιν ηὐτύχουν κατὰ θά-
λατταν, ἀλλὰ καὶ πρὸ τῆς ὀλυμπιακῆς θέσεως συχνοῖς ἔτεσιν ἔπλεον πόρρω τῆς οἰκείας ἐπὶ σωτηρίᾳ
τῶν ἀνθρώπων. ἀφ' οὗ καὶ μέχρι ἰβηρίας ἔπλευσαν. κἀκεῖ μὲν τὴν ῥόδον ἔκτισαν. ἣν ὕστερον μασσαλι-
ῶται κατέσχον. ἐν δὲ τοῖς ὀπικοῖς τὴν παρθενόπην. ἐν δὲ δαυνίοις μετὰ κῴων ἐλπίας. τινὲς δὲ μετὰ
τὴν ἐκ τροίας ἔφοδον τὰς γυμνησίας νήσους ὑπ' αὐτῶν κτισθῆναι λέγουσιν. ὧν τὴν μείζω φησὶ τίμαιος
μεγίστην εἶναι μετὰ τὰς ἑπτά. σαρδώ. σικελίαν, κύπρον. κρήτην. εὔβοιαν. κύρνον. λέσβον. οὐκ ἀληθῆ
λέγων. πολὺ γὰρ ἄλλαι μείζους. φασὶ δὲ τοὺς γυμνήτας ὑπὸ φοινίκων βαλεαρίδας λέγεσθαι. διό-
τι τὰς γυμνασίας βαλεαρίδας λεχθῆναι. ἔνιοι δὲ τῶν ῥοδίων καὶ περὶ σύβαριν ᾤκησαν κατὰ τὴν χωνίαν. ἔ-
οικε δὲ καὶ ὁ ποιητὴς μαρτυρεῖν. τὴν ἐκ παλαιοῦ παροῦσαν τοῖς ῥοδίοις εὐδαιμονίαν. εὐθὺς ἀπὸ τῆς πρώτης
» Τριχθὰ δὲ ᾤκηθεν καταφυλαδὸν ἠδ' ἐφίληθεν, (κτίσεως τῶν τριῶν πόλεων.
» Ἐκ διός. ὅστε θεοῖσι καὶ ἀνθρώποισιν ἀνάσσει. Καί σφι θεσπέσιον πλοῦτον κατέχευε κρονίων.

Οἱ δ' εἰς μῦθον ἀνήγαγον τὸ ἔπος. καὶ χρυσὸν ὑσθῆναί φασιν ἐν τῇ νήσῳ κατὰ τὴν ἀθηνᾶς γένεσιν ἐκ
τῆς κεφαλῆς τοῦ διὸς ὡς εἴρηκε πίνδαρος. ἡ δὲ νῆσος κύκλον ἔχει σταδίων ἐνακοσίων εἴκοσιν. ἔστι δὲ πρώτη
μὲν λίνδος ἀπὸ τῆς πόλεως πλέουσιν ἐν δεξιᾷ ἔχουσι τὴν νῆσον. πόλις ἐπὶ ὄρους ἱδρυμένη πολὺ πρὸς
μεσημβρίαν ἀνατείνουσα. καὶ πρὸς ἀλεξάνδρειαν μάλιστα. ἱερὸν δ' ἐστὶν ἀθηνᾶς λινδίας αὐτόθι ἐπι-
φανές. τῶν δαναΐδων ἵδρυμα. πρότερον μὲν οὖν καθ' αὑτοὺς ἐπολιτεύοντο οἱ λίνδιοι. καθάπερ καὶ

καμειρεῖς καὶ ἰαλύσιοι. μετὰ ταῦτα δὲ συνῆλθον ἅπαντες εἰς τὴν ῥόδον. ἐντεῦθεν δ' ἐστὶν εἷς τῶν ἑπτὰ σο-
φῶν, κλεόβουλος. μετὰ δὲ λίνδον ἰξία χωρίον καὶ μνασύριον. εἶθ' ὁ ἀτάβυρις, ὄρος τῶν ἐνταῦθα ὑψη-
λότατον. ἐν ᾧ ἱερὸν διὸς ἀταβυρίου. εἶτα κάμειρος. εἶτ' ἰάλυσος κώμη. καὶ ὑπὲρ αὐτὴν ἀκρόπολις
ἐστὶν ὀχύρωμα καλουμένη. εἶθ' ἡ τῶν ῥοδίων πόλις ἐν ὀγδοήκοντά που σταδίοις. μεταξὺ δ' ἐστὶ τὸ θοαίνιον. ἀ-
κτή τις. ἧς μάλιστα πρόκεινται αἱ σποράδες αἱ ἐπὶ τὴν χαλκίαν, ὧν ἐμνήσθημεν πρότερον. ἄνδρες δ' ἐ-
γένοντο μνήμης ἄξιοι πολλοί, στρατηλάται καὶ ἀθληταί. ὧν εἰσὶ καὶ παναιτίου τοῦ φιλοσόφου πρόγο-
νοι. τῶν δὲ πολιτικῶν καὶ τῶν περὶ λόγους καὶ φιλοσοφίας, ὅ τε παναίτιος αὐτός. καὶ στρατοκλῆς. καὶ
ἀνδρόνικος ὁ ἐκ τῶν περιπάτων. καὶ λεωνίδας ὁ στωικός. ἔτι δὲ πρότερον πραξιφάνης καὶ καὶ εὔδημος.
ἱερώνυμος. ποσειδώνιος δ' ἐπολιτεύσατο μὲν ἐν ῥόδῳ καὶ ἐσοφίστευσεν. ἦν δ' ἀπαμεὺς ἐκ τῆς συρί-
ας καθάπερ καὶ ἀπολλώνιος ὁ μαλακὸς καὶ μόλων. ἦσαν γὰρ ἀλαβανδεῖς μὲν μενεκλέους μαθηταὶ τοῦ
ῥήτορος. ἐπεδήμησε δὲ πρότερον ἀπολλώνιος. ὀψὲ δ' ἧκεν ὁ μόλων. καὶ ἔφη πρὸς αὐτὸν ἐκεῖνος. ὀψὲ μο-
λών. ἀντὶ τοῦ ἐλθών. καὶ πείσανδρος δ' ὁ τὴν ἡράκλειαν γράψας ποιητὴς ῥόδιος καὶ σιμμίας ὁ γραμ-
ματικός. καὶ ἀριστοκλῆς ὁ καθ' ἡμᾶς. διονύσιος δὲ ὁ θρᾷξ καὶ ἀπολλώνιος ὁ τοὺς ἀργοναύτας ποιήσας, ἀλε-
ξανδρεῖς μὲν, ἐκαλοῦντο δὲ ῥόδιοι. περὶ μὲν ῥόδου ἀποχρώντως εἴρηται. πάλιν δὲ τῆς καρικῆς παρα-
λίας τῆς μετὰ τὴν ῥόδον, ἀπὸ ἐλεοῦντος καὶ τῶν λωρίμων, καμπτήρ τις ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐστί. καὶ λοι-
πὸν ἐπ' εὐθείας ὁ πλοῦς μέχρι τῆς προποντίδος. ὡς ἂν μεσημβρινήν τινα ποιῶν γραμμήν. ὅσον πεντα-
κισχιλίων σταδίων ἢ μικρὸν ἀπολείπουσαν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ἡ λοιπὴ τῆς καρίας. καὶ ἴωνες καὶ αἰολεῖς.
καὶ τροία καὶ τὰ περὶ κύζικον καὶ βυζάντιον. μετὰ δ' οὖν τὰ λώριμα τὸ κυνὸς σῆμά ἐστι. καὶ σύμη νῆσος.
εἶτα κνίδος. δύο λιμένας ἔχουσα. ὧν τὸν ἕτερον κλειστὸν τριηρικὸν καὶ ναύσταθμον ναυσὶν εἴκοσι. πρό-
κειται δ' ἡ νῆσος ἑπτασταδιός πως τὴν περίμετρον. ὑψηλὴ θεατροειδὴς συναπτομένη χώμασι πρὸς τὴν
ἤπειρον. καὶ ποιοῦσα δίπολιν τρόπον τινὰ τὴν κνίδον. πολὺ γὰρ μέρος αὐτῆς οἰκεῖ τὴν νῆσον. σκε-
πάζουσαν ἀμφοτέρους τοὺς λιμένας. κατ' αὐτὴν δ' ἐστὶν ἡ νίσυρος πελαγία. ἄνδρες δ' ἀξιόλογοι κνίδιοι.
πρῶτον μὲν εὔδοξος ὁ μαθηματικὸς τῶν πλάτωνος ἑταίρων. εἶτ' ἀγαθαρχίδης ὁ ἐκ τῶν περιπάτων.
ἀνὴρ συγγραφεύς. καθ' ἡμᾶς δὲ θεόπομπος ὁ καίσαρος τοῦ θεοῦ φίλος. τῶν μεγάλα δυναμένων. καὶ υἱὸς
ἀρτεμίδωρος. ἐντεῦθεν δὲ καὶ κτησίας ὁ ἰατρεύσας μὲν ἀρταξέρξην. συγγράψας δὲ τὰ ἀσυριακὰ καὶ
τὰ περσικά. εἶτα μετὰ κνίδον κέραμος καὶ βάργασα πολίχνια ὑπὲρ θαλάττης. εἶθ' ἁλικαρνασός. τὸ βα-
σίλειον τῶν τῆς καρίας δυναστῶν. ζεφύρα καλουμένη πρότερον. ἐνταῦθα δ' ἐστὶν, ὅ τε τοῦ μαυσώλου
τάφος τῶν ἑπτὰ θεαμάτων ἔργον. ὅπερ ἀρτεμισία τῷ ἀνδρὶ κατεσκεύασε. καὶ ἡ σαλμακὶς κρήνη. διαβε-
βλημένη οὐκ οἶδ' ὁπόθεν, ὡς μαλακίζουσα τοὺς πιόντας ἀπ' αὐτῆς. ἔοικε δ' ἡ τρυφὴ τῶν ἀνθρώπων αἰ-
τιᾶσθαι τοὺς ἀέρας ἢ τὰ ὕδατα. τρυφῆς δ' αἴτια οὐ ταῦτα. ἀλλὰ πλοῦτος καὶ ἡ περὶ τὰς διαίτας
ἀκολασία. ἔχει δ' ἀκρόπολιν ἡ ἁλικαρνασός. πρόκειται δ' αὐτῆς ἡ ἀρκόννησος. οἰκισταὶ δ' αὐτῆς ἐγένοντο
ἄλλοι τε καὶ ἄνθης μετὰ τροιζηνίων. ἄνδρες δὲ ἐγένοντο ἐξ αὐτῆς ἡρόδοτός τε ὁ συγγραφεύς. ὃν ὕστερον
θούριον ἐκάλεσαν διὰ τὸ κοινωνῆσαι τῆς εἰς θουρίους ἀποικίας. καὶ ἡράκλειτος ὁ ποιητὴς ὁ καλλιμάχου
ἑταῖρος. καὶ καθ' ἡμᾶς διονύσιος ὁ συγγραφεύς. ἔπταισε δὲ καὶ αὕτη ἡ πόλις, βίᾳ ληφθεῖσα ὑπὸ ἀλε-
ξάνδρου. ἑκατόμνου γὰρ τοῦ καρῶν βασιλέως, ἦσαν υἱοὶ τρεῖς. μαύσωλος. καὶ ἱδριεύς. καὶ πιξώδαρος.
καὶ θυγατέρες δύο. ὧν ἡ πρεσβυτέρα ἀρτεμισία συνῴκησε τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν ἀδελφῶν. μαυσώ-
λῳ ὁ δὲ δεύτερος ἱδριεὺς ἄδᾳ τῇ ἑτέρᾳ ἀδελφῇ. ἐβασίλευσε δὲ μαύσωλος. τελευτῶν δ' ἄτεκνος τὴν
ἀρχὴν κατέλιπε τῇ γυναικί. ὑφ' ἧς αὐτῷ κατεσκευάσθη ὁ λεχθεὶς τάφος. φθίσει δ' ἀποθανούσης διὰ
πένθος τοῦ ἀνδρὸς, ἱδριεὺς ἦρξε. καὶ τοῦτον ἡ γυνὴ ἄδα διεδέξατο νόσῳ τελευτήσαντα. ἐξέβαλε δὲ ταύ-
την πιξώδαρος ὁ λοιπὸς τῶν ἑκατόμνου παίδων. περσίσας δὲ μεταπέμπεται σατράπην ἐπὶ κοινωνίᾳ
τῆς ἀρχῆς. ἀπελθόντος δ' ἐκ τοῦ ζῆν καὶ τούτου, κατεῖχεν ὁ σατράπης τὴν ἁλικαρνασόν. ἐπελθόντος
δὲ ἀλεξάνδρου πολιορκίαν ὑπέμεινεν. ἔχων ἀδὰν γυναῖκα. ἥτις θυγάτηρ ἦν τοῦ πιξωδάρου ἐξ ἀφνηΐδος
καππαδοκίσσης γυναικός. ἡ δὲ τοῦ ἑκατόμνου θυγάτηρ ἄδα, ἣν ὁ πιξώδαρος ἐξέβαλεν. ἱκετεύει τὸν
ἀλέξανδρον καὶ πείθει κατάγειν αὐτὴν εἰς τὴν ἀφαιρεθεῖσαν βασιλείαν. ὑποσχομένη ἐπὶ τὰ ἀφεστῶ-
τα συμπράξειν αὐτῷ. τοὺς γὰρ ἔχοντας οἰκείους ὑπάρχειν αὐτῇ. παρεδίδου δὲ καὶ τὰ ἄλινδα, ἐν οἷς διέ-
τριβεν. ἐπαινέσας δὲ καὶ βασίλισσαν ἀναδείξας ἁλούσης τῆς πόλεως πλὴν τῆς ἄκρας, διττὴ δ' ἦν ἐ-
κείνῃ, πολιορκεῖν ἔδωκεν. ἑάλω δὲ ὀλίγῳ δ' ὕστερον καὶ ἡ ἄκρα πρὸς ὀργὴν ἤδη, καὶ ἀπέχθειαν τῆς πολιορκίας
γενομένης. ἑξῆς δ' ἐστὶν ἄκρα. τερμέριον μυνδίων. καθ' ἣν ἀντίκειται τῆς κώας ἄκρα κανδαρεία. διέχου-
σα τῆς ἠπείρου σταδίους τετταράκοντα. ἔστι δὲ καὶ χωρίον τέρμερον ὑπὲρ τῆς κώας. ἡ δὲ τῶν κώων πόλις
ἐκαλεῖτο τὸ παλαιὸν ἀστυπάλαια. καὶ ᾠκεῖτο ἐν ἄλλῳ τόπῳ ὁμοίως ἐπὶ θαλάττῃ. ἔπειτα διὰ στάσιν μετῴ-
κησαν εἰς τὴν νῦν πόλιν περὶ τὸ σκανδάλιον. καὶ μετωνόμασαν αὐτὴν κῶν ὁμοίως τῇ νήσῳ. ἡ μὲν οὖν πόλις
οὐ μεγάλη. κάλλιστα δὲ πασῶν συνῳκισμένη. καὶ ἰδέσθαι τοῖς καταπλέουσιν ἡδίστη. τῆς δὲ νήσου τὸ
μέγεθος, ὅσον πεντακοσίων σταδίων, καὶ πεντήκοντα. εὔκαρπος δὲ πᾶσα. οἴνῳ δὲ καὶ ἀρίστη καθά-

περὶ χίος, καὶ λέσβος. ἔχει δὲ πρὸς νότον μὲν ἄκραν τὸν λακητῆρα. ἀφ' οὗ ἑξήκοντα εἰς νίσυρον. πρὸς δὲ τῷ
λακητηρίῳ χωρίῳ, ἁλίσαρνα. ἀπὸ δύσεως δὲ τὸ δρέκανον, καὶ κώμην καλουμένην σόμαλίμνης. τοῦτο
μὲν οὖν ὅσον διακοσίους ἀπέχει τῆς πόλεως σταδίους. ὁ δὲ λακητὴρ προσλαμβάνει πέντε, καὶ τριά
κοντα τῷ μήκει τοῦ πλοῦ. ἐν δὲ τῷ προαστείῳ τὸ ἀσκληπιεῖον ἐστί. σφόδρα ἔνδοξον, καὶ πολλῶν
ἀναθημάτων μεστὸν ἱερὸν ἐν οἷς ἐστι καὶ ὁ ἀπελλοῦ ἀντίγονος. ἦν δὲ, καὶ ἡ ἀναδυομένη ἡ ἀφροδίτη. ἣ
νῦν ἀνάκειται τῷ θεῷ καίσαρι ἐν ῥώμῃ. τοῦ σεβαστοῦ ἀναθέντος τῷ πατρὶ τὴν ἀρχηγέτιν τοῦ γένους
αὐτοῦ. φασὶ δὲ τοῖς κώοις ἀντὶ τῆς γραφῆς ἑκατὸν ταλάντων ἄφεσιν γενέσθαι τοῦ προσταχθέντος φό
ρου. φασὶ δ' ἱπποκράτην μάλιστα ἐκ τῶν ἀνακειμένων θεραπειῶν ἐνταῦθα γυμνάσασθαι τὰ περὶ
τὰς διαίτας. οὗτος τέ δή ἐστι τῶν ἐνδόξων κῷος ἀνήρ. καὶ σῖμος ὁ ἰατρός. φιλίτας τε ποιητὴς ἅμα,
καὶ κριτικὸς, καὶ καθ' ἡμᾶς νικίας. ὁ καὶ τυραννήσας κώων. καὶ ἀρίστων ὁ ἀκροασάμενος τοῦ πε
ριπατητικοῦ καὶ κληρονομήσας. ἐκεῖνον ἦν τὸ καὶ θεόμνηστος ὁ ψάλτης ἐν ὀνόματι, ὅς τις, καὶ ἀντε
πολιτεύσατο τῷ νικίᾳ, ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ τῆς ἠπείρου κατὰ τὴν μυνδίαν, ἀστυπαλία ἐστὶν ἄκρα καὶ
ζεφύριον. εἶτ' εὐθὺς ἡ μύνδος λιμένα ἔχουσα. καὶ μετὰ ταύτην βαργυλία, καὶ αὕτη πόλις. ἐν
δὲ τῷ μεταξὺ καρυανδὰ λίμνη καὶ νῆσος, ὁμώνυμος ταύτῃ. ἣν ᾤκουν καρυανδεῖς. ἐντεῦθεν δ' ἦν
καὶ σκύλαξ ὁ παλαιὸς συγγραφεύς, πλησίον δ' ἐστὶ τῶν βαργυλίων τὸ τῆς ἀρτέμιδος ἱερὸν τῆς
κινδυάδος. ὅ περιπιστεύκασι περιύεσθαι. ἦν δέ ποτε, καὶ χωρίον μινδύη. ἐκ δὲ τῶν βαργυλίων ἀνὴρ
ἐλλόγιμος ἦν ὁ ἐπικούρειος πρώταρχος. ὁ δημητρίου καθηγησάμενος. τοῦ λάκωνος προσαγο-
ρευθέντος. εἶτ' ἰασὸς ἐπὶ νήσῳ κεῖται προκειμένη τῇ ἠπείρῳ. ἔχει δὲ, λιμένα. καὶ τὸ πλεῖστον
τοῦ βίου τοῖς ἐνθάδε τῆς θαλάττης. εὐοψεῖ γὰρ, χώραν τ' ἔχει παράλυπρον. καὶ δὴ καὶ διηγήματα τοι
αὖτα πλάττουσιν εἰς αὐτήν. κιθαρῳδοῦ γὰρ ἐπιδεικνυμένου, τέως μὲν, ἀκροᾶσθαι, πάντας. ὡς
δ' ὁ κώδων ὁ κατὰ τὴν ὀψοπωλίαν ἐψόφησε, καταλιπόντας, ἀπελθεῖν ἐπὶ τὸ ὄψον. πλὴν ἑνὸς δυσ
κώφου, τὸν οὖν κιθαρῳδὸν προσιόντα εἰπεῖν ὅτι. ὦ ἄνθρωπε. πολλήν σοι χάριν οἶδα τῆς πρὸς ἐμὲ
τιμῆς καὶ φιλομουσίας. οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι ἅμα τῷ κώδωνος ἀκοῦσαι ἀπιόντες οἴχονται. ὁ δὲ, τί λέ
γεις ἔφη. ἤδη γὰρ ὁ κώδων ἐψόφηκεν; εἰπόντος δὲ, ναὶ εὖ σοι εἴη ἔφη. καὶ ἀναστὰς ἀπῆλθε, καὶ αὐτὸς,
ἐντεῦθεν δ' ἦν ὁ διαλεκτικὸς θεόδωρος, ὁ κρόνος προσαγορευθείς. κατ' ἀρχὰς μὲν ψευδῶς. ἀπολ
λώνιος γὰρ ἐκαλεῖτο ὁ κρόνος, ἐπιστατήσας ἐκείνου. μετήνεγκαν δ' ἐπ' αὐτὸν διὰ τὴν ἀδοξίαν τοῦ κατ'
ἀλήθειαν κρόνου. μετὰ δ' ἰασὸν τὸ τῶν μιλησίων πολίδιόν ἐστιν. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ, καὶ τρεῖς εἰσὶ πό
λεις ἀξιόλογοι. μύλασα. στρατονίκεια. ἀλάβανδα. αἱ δὲ ἄλλαι περιπόλιοι τούτων, ἢ τῶν παραλίων
ὧν εἰσιν ἀμυζών. ἡράκλεια. εὔρωμος. χαλκήτωρ. τούτων μὲν οὖν ἐλάττων λόγος. τὰ δὲ μύλασα ἵδρυ
ται ἐν πεδίῳ σφόδρα εὐδαίμονι. ὑπέρκειται δὲ κατὰ κορυφὴν ὄρος αὐτοῦ λατόμιον λευκοῦ λίθου κάλ
λιστον ἔχον. τοῦτο μὲν ὄφελος ἐστὶν οὐ μικρὸν τὴν λιθίαν πρὸς τὰς οἰκοδομίας ἄφθονον, καὶ ἐγγύθεν
ἔχον, καὶ μάλιστα πρὸς τὰς τῶν ἱερῶν, καὶ τῶν ἄλλων τῶν δημοσίων ἔργων κατασκευάς. καὶ γάρ τοι
στοαῖς, τε, καὶ ναοῖς εἴ τις ἄλλη κεκόσμηται παγκάλως. θαυμάζειν δ' ἐστὶ τῶν ὑποβαλόντων οὕτως ἀ
λόγως τὸ κτίσμα ὀρθίῳ, καὶ ὑπερδεξίῳ κρημνῷ, καὶ δὴ καὶ τῶν ἡγεμόνων τις εἰπεῖν λέγεται θαυμά
σας τὸ πρᾶγμα. ταύτην γὰρ ἔφη τὴν πόλιν ὁ κτίσας, εἰ μὴ ἐφοβεῖτο, ἀλλ' οὐδ' ᾐσχύνετο. ἔχουσι δ' οἱ
μυλασεῖς ἱερὰ δύο. τοῦ διὸς, τοῦ τε ὀσογῶ καλουμένου, καὶ λαβρανδηνοῦ. τὸ μὲν ἐν τῇ πόλει. τὰ δὲ λά
βραυνδα κώμη ἐστὶν ἐν τῷ ὄρει κατὰ τὴν ὑπέρθεσιν τὴν ἐξ ἀλαβάνδων εἰς τὰ μύλασα ἄπωθεν τῆς
πόλεως. ἐνταῦθα διός ἐστιν νεὼς ἀρχαῖος καὶ ξόανον διὸς στρατίου. τιμᾶται δ' ὑπὸ τῶν κύκλῳ. καὶ
ὑπὸ τῶν μυλασέων ὁδός τε ἔστρωται σχεδόν τι ὁδὸς, καὶ ἑξήκοντα σταδίων μέχρι τῆς πόλεως ἱερὰ
καλουμένη. δι' ἧς πομποστολεῖται τὰ ἱερά. ἱερῶνται δ' οἱ ἐπιφανέστατοι τῶν πολιτῶν ἀεὶ διὰ βίου.
ταῦτα μὲν οὖν διὰ τῆς πόλεως. τρίτον δ' ἐστὶν ἱερὸν τοῦ καρίου διὸς κοινὸν ἁπάντων. καρῶν, οὗ μέ
τεστι, καὶ λυδοῖς. καὶ μυσοῖς ὡς ἀδελφοῖς. ἱστορεῖται δ' ἡ κώμη ὑπάρξαι τὸ παλαιόν. πατρὶς δὲ, καὶ βα
σίλειον ἦν τῶν καρῶν τῶν περὶ τὸν ἑκατόμνω. πλησιάζει δὲ μάλιστα τῇ κατὰ φύσκον θαλάττῃ ἡ πό
λις, καὶ τοῦτ' ἐστὶν αὐτοῖς ἐπίνειον. ἀξιολόγους ἔσχεν ἄνδρας καθ' ἡμᾶς τὰ μύλασα. ῥήτορας τε ἅμα
καὶ δημαγωγοὺς τῆς πόλεως. εὐθύδημόν τε, καὶ ὑβρέαν, ὁ μὲν οὖν εὐθύδημος. οὐσίαν ἐκ προγόνων πα
ραλαβὼν μεγάλην, καὶ δόξαν, προσθεὶς, καὶ τὴν δεινότητα, οὐκ ἐν τῇ πατρίδι μόνον μέγας ἦν ἀλ
λὰ καὶ ἐν τῇ ἀσίᾳ τῆς πρώτης ἠξιοῦτο τιμῆς. ὑβρέα δ' ὁ πατὴρ ὡς αὐτὸς διηγεῖτο ἐν τῇ σχολῇ, καὶ πα
ρὰ τῶν πολιτῶν ὡμολόγητο, ἡμίονον κατέλιπε ξυλοφοροῦντα. καὶ ἡμιονηγόν. διοικούμενος δ' ὑ
πὸ τούτων ὀλίγον χρόνον διοξένους τοῦ ἀντιοχέος ἀκροασάμενος ἐπανῆλθε. καὶ τῷ ἀγορανομίῳ
παρέδωκεν ἑαυτόν. ἐνταῦθα δὲ κυλινδηθεὶς, καὶ χρηματισάμενος, μικρὰ, ὥρμησεν ἐπὶ τὸ πολιτεύε
σθαι, καὶ τοῖς ἀγοραίοις συνακολουθεῖν. ταχὺ δὲ αὔξησιν ἔσχε, καὶ ἐθαυμάσθη ἔτι μὲν εὐθύδημου ζῶντος
ἀλλὰ τελευτήσαντος μάλιστα κύριος γενόμενος τῆς πόλεως. ζῶν δ' ἐπεκράτει πολὺ ἐκεῖνος δυνα-
τὸς ὢν ἅμα, καὶ χρήσιμος τῇ πόλει. ὥστ' εἰ καί τι τυραννικὸν προσῆν, τοῦτ' ἀπελύετο τῷ παρακολουθεῖν

τὸ χρήσιμον

τὸ χρήσιμον. ἐπαινοῦσι γοῦν τοῦ ὑβρέου. ὅπερ δημηγορῶν ἤδη τελευτῆς ἔπεν. Εὐθύδημε, κακὸν
εἶ τῆς πόλεως ἀναγκαῖον. οὔτε γὰρ μετὰ σοῦ δυνάμεθα ζῆν οὔτ' ἄνευ σοῦ. αὐξηθεὶς οὖν ἤδη πολὺ, καὶ
δόξας καὶ πολίτης ἀγαθὸς εἶναι καὶ ῥήτωρ, ἔπταισεν ἐν τῇ πρὸς ἀλβινοῦν αὐτὴ πολιτείᾳ. οἱ μὲν
γὰρ ἄλλοι μεθ' ὅπλων ἐπιόντι, καὶ παρθικῆς συμμαχίας, ἤδη τῶν παρθυαίων τὴν ἀσίαν ἐχόντων,
εἶξαν ἅτε ἄοπλοι, καὶ εἰρηνικοί. ζήνων δ' ὁ λαοδικεὺς, καὶ ὑβρέας οὐκ εἶξαν ἀμφότεροι ῥήτορες.
ἀλλὰ ἀπέστησαν τὰς ἑαυτῶν πόλεις. ὁ δ' ὑβρέας, καὶ προσπαρώξυνε φωνῇ τινι μειρακίῳ ὑβριστῇ
καὶ ἀνοίας πλήρους. ἐκείνου γὰρ εἰπόντος

» Ἑαυτὸν παρθικὸν αὐτοκράτορα. Οὐκοῦν ἔφη κἀγὼ λέγω ἐμαυτὸν καρικὸν αὐτοκρά-
τορα. ἐκ τούτου δὲ ἤδη τὴν πόλιν ὥρμησε. τάγματα ἔχων ἤδη συντεταγμένα ῥωμαίων, τῶν ἐν τῇ
ἀσίᾳ. αὐτὸν μὲν οὖν οὐ κατέλαβε. παραχωρήσαντα εἰς ῥόδον. τὴν δ' οἰκίαν αὐτοῦ ἐλυμήνατο πολυτε-
λεῖς ἔχουσαν κατασκευάς. καὶ διήρπασεν. ὡς δ' αὔτως καὶ τὴν πόλιν ὅλην ἐκάκωσεν. ἐκλιπόντος δ'
ἐκείνου τὴν ἀσίαν, ἐπανῆλθε καὶ ἀνέλαβεν ἑαυτόν τε, καὶ τὴν πόλιν. περὶ μὲν οὖν μυλάσων ταῦ-
τα. στρατονίκεια δ' ἐστὶ κατοικία μακεδόνων. ἐκοσμήθη δὲ, καὶ αὐτὴ κατασκευαῖς πολυτελέσιν ὑπὸ
τῶν βασιλέων. ἔστι δ' ἐν τῇ χώρᾳ τῶν στρατονικέων δύο ἱερά. ἐν μὲν λαγίνοις, τὸ τῆς ἑκάτης ἐπιφανέστα-
τον πανηγύρεις μεγάλας συνάγον κατ' ἐνιαυτόν. ἐγγὺς δὲ τῆς πόλεως τὸ τοῦ χρυσαορέως διὸς κοινὸν
ἁπάντων καρῶν. εἰς ὃ συνίασι θύσοντές τε, καὶ βουλευσόμενοι περὶ τῶν κοινῶν. καλεῖται δὲ τὸ σύστη-
μα αὐτῶν χρυσαορέων, συνεστηκὸς ἐκ κωμῶν. οἱ δὲ πλείστας παρεχόμενοι κώμας προέχουσι τῇ ψή-
φῳ καθάπερ κεραμιῆται. καὶ στρατονικεῖς δὲ τοῦ συστήματος μετέχουσιν, οὐκ ὄντες τοῦ καρικοῦ γέ-
νους. ἀλλ' ὅτι κώμας ἔχουσι τοῦ χρυσαορικοῦ συστήματος. κἀνταῦθα δ' ἀνὴρ ἀξιόλογος γεγένηται ῥή-
τωρ. μένιππος κατὰ τοὺς πατέρας ἡμῶν. κατόκας ἐπικαλούμενος. ὃν μάλιστα ἐπαινεῖ τῶν κατὰ
τὴν ἀσίαν ῥητόρων ὢν, ἠκροάσατο κικέρων ὥς φησιν ἔν τινι γραφῇ αὐτοῦ. συγκρίνων ξενοκλεῖ καὶ τοῖς
κατ' ἐκεῖνον ἀκμάζουσιν. ἔστι δὲ, καὶ ἄλλη στρατονίκεια ἡ πρὸς τῷ ταύρῳ καλουμένη. πολίχνιον προ-
σκείμενον τῷ ὄρει. ἀλάβανδα δὲ, καὶ αὐτὴ μὲν ὑπόκειται λόφοις δυσὶ συγκεκλισμένοις οὕτως,
ὥστ' ὄψιν κατασχέσθαι κανθηλίου κατεστρωμένου. καὶ δὴ καὶ ὁ μαλακὸς ἀπολλώνιος σκώπτων τὴν
πόλιν εἴς τε ταῦτα, καὶ εἰς τὸ τῶν σκορπίων πλῆθος, ἔφη αὐτὴν εἶναι σκορπίων κανθηλίων κατεστρωμ-
μένων. μεστὴ δ' ἐστὶ, καὶ αὕτη, καὶ ἡ τῶν μυλασέων πόλις τῶν θηρίων τούτων. καὶ ἡ μεταξὺ πᾶσα ὀρει-
νή. τρυφητῶν δ' ἐστὶν ἀνθρώπων, καὶ καπυριστῶν ἔχουσα ψαλτρίας πολλάς. ἄνδρες δ' ἐγένοντο λόγου
ἄξιοι δύο ῥήτορες ἀδελφοὶ ἀλαβανδεῖς. μενεκλῆς τε, οὗ ἐμνήσθημεν μικρὸν ἐπάνω, καὶ ἱεροκλῆς
οἱ μετοικήσαντες εἰς τὴν ῥόδον, ὅ τε ἀπολλώνιος, καὶ ὁ μόλων. πολλῶν δὲ λόγων εἰρημένων περὶ καρῶν
ὁ μάλιστ' ὁμολογούμενος ἐστὶν οὗτος. ὅτι οἱ κᾶρες ὑπὸ μίνω ἐτάττοντο τότε λέλεγες καλούμενοι
καὶ τὰς νήσους ᾤκουν. εἶτ' ἠπειρῶται γενόμενοι, πολλὴν τῆς παραλίας, καὶ τῆς μεσογαίας κα-
τέσχον. τοὺς προκατέχοντας ἀφελόμενοι. καὶ οὗτοι δ' ἦσαν οἱ πλείους λέλεγες, καὶ πελασγοί. πά-
λιν δὲ τούτους ἀφείλοντο μέρος οἱ ἕλληνες. ἴωνές τε καὶ οἱ δωριεῖς. τοῦ δὲ περὶ τὰ στρατιωτικὰ ζήλου
τά τε ὄχανα ποιοῦνται τεκμήρια, καὶ τὰ ἐπίσημα, καὶ τοὺς λόφους. ἅπαντα μὲν γὰρ λέγεται κα-
ρικά. ἀνακρέων μέν γέ φησιν. Διαδῦτε καρικὸν εὐεργέος ὀχάνου χεῖρα τιθέμεναι. ὁ δ' ἀλκαῖος
λόφον τε σείων καρικόν. τοῦ ποιητοῦ δ' εἰρηκότος οὑτωσί.

» Μάσθλης αὖ καρῶν ἡγήσατο βαρβαροφώνων

Οὐκ ἔχει λόγον πῶς τοσαῦτα εἰδὼς ἔθνη βάρβαρα. μόνους εἴρηκε βαρβαροφώνους τοὺς κᾶρας
βαρβάρους δ' οὐδένας. οὔτ' οὖν θουκυδίδης ὀρθῶς. οὐδὲ γὰρ λέγεσθαί φησι βαρβάρους διὰ τὸ μηδὲ ἕλ-
ληνάς πω ἀντίπαλον εἰς ἓν ὄνομα ἀποκεκρίσθαι. τό τε γὰρ μή πω ἕλληνας ψεῦδος ὁ ποιητὴς ἀπελέγ-
» χει. Ἀνδρὸς τοῦ κλέος εὐρὺ καθ' ἑλλάδα, καὶ μέσον ἄργος. καὶ πάλιν Εἴτ' ἐθέλεις τραφθῆναι ἀν' ἑλλάδα, καὶ
μέσον ἄργος. μὴ λεγομένων τε βαρβάρων, πῶς ἔμελλεν εὖ λεχθήσεσθαι τὸ βαρβαροφώνων. οὔτε δὴ
οὗτος εὖ οὔτ' ἀπολλόδωρος ὁ γραμματικὸς, ὅτι τῷ κοινῷ ὀνόματι ἰδίως, καὶ λοιδόρως ἐχρῶντο οἱ
ἕλληνες κατὰ τῶν καρῶν, καὶ μάλιστα οἱ ἴωνες μισοῦντες αὐτοὺς διὰ τὴν ἔχθραν, καὶ τὰς συνεχεῖς
στρατείας, ἐχρῆν γὰρ οὕτω βαρβάρους ὀνομάζειν. ἡμεῖς δὲ ζητοῦμεν διά τι βαρβαροφώνους καλεῖ.
βαρβάρους δ' οὐδ' ἅπαξ. ὅτι φησὶ τὸ πληθυντικὸν εἰς τὸ μέτρον οὐκ ἐμπίπτει, διὰ τοῦτ' οὐκ εἴρηκε βαρβά-
ρους, ἀλλ' αὕτη μὲν ἡ πτῶσις οὐκ ἐμπίπτει. ἡ δ' ὀρθὴ οὐ διαφέρει τῆς. Δάρδανοι Τρῶες καὶ λύκιοι,
καὶ δάρδανοι. τοιοῦτον δὲ, καὶ τὸ, οἷοι τρώιοι ἵπποι. οὐδέ γε ὅτι τραχυτάτη ἡ γλῶττα τῶν καρῶν. οὐ γὰρ
ἐστιν. ἀλλὰ, καὶ πλεῖστα ἑλληνικὰ ὀνόματα ἔχει καταμεμιγμένα ὥς φησι φίλιππος ὁ τὰ καρικὰ γρά-
ψας. οἶμαι δὲ τὸ βάρβαρον κατ' ἀρχὰς ἐκπεφωνῆσθαι οὕτως κατ' ὀνοματοποιΐαν, ἐπὶ τῶν δυσεκφόρως,
καὶ σκληρῶς, καὶ τραχέως λαλούντων, ὡς τὸ βατταρίζειν, καὶ τραυλίζειν καὶ ψελλίζειν. εὐφυέ-
στατοι γὰρ ἐσμὲν τὰς φωνὰς ταῖς ὁμοίαις φωναῖς κατονομάζειν διὰ τὸ ὁμογενὲς ἤδη, καὶ πλεονά-
ζουσι μὲν ἐνταῦθα αἱ ὀνοματοποιΐαι. οἷον τὸ κελαρύζειν. καὶ κλαγγὴ δὲ, καὶ ψόφος καὶ βοὴ καὶ κρότος. ὧν
τὰ πλεῖστα. ἤδη, καὶ κυρίως ἐκφέρεται. πάντων δὴ τῶν παχυστομούντων οὕτω βαρβάρων λεγο-

μένων ἐφαίνη τὰ τῶν ἀλλοεθνῶν στόματα τοιαῦτα. λέγω δὲ τὰ τῶν μὴ ἑλλήνων. ἐκείνους οὖν ἰδίως ἐκάλεσαν
βαρβάρους. ἐν ἀρχαῖς μὲν κατὰ τὸ λοίδορον, ὡς ἂν παχυστόμους, ἢ τραχυστόμους. εἶτα κατεχρησά-
μεθα, ὡς ἐθνικῷ κοινῷ ὀνόματι ἀντιδιαιροῦντες πρὸς τοὺς ἕλληνας. καὶ γὰρ δὴ ἡ πολλὴ συνήθεια, καὶ
ἐπιπλοκὴ τῶν βαρβάρων, οὐκέτι ἐφαίνετο. κατὰ παχυστομίαν, καὶ ἀφυΐαν τινὰ τῶν φωνητηρίων
ὀργάνων τοῦτο συμβαῖνον. ἀλλὰ κατὰ τὰς τῶν διαλέκτων ἰδιότητας. ἄλλη δέ τις ἐν τῇ ἡμετέρᾳ διαλέ
κτῳ ἀνεφάνη κακοστομία, καὶ οἷον βαρβαροστομία. εἴ τις ἑλληνίζων μὴ κατορθοίη. ἀλλ᾽ οὕτω λέγοι τὰ
ὀνόματα, ὡς οἱ βάρβαροι οἱ εἰσαγόμενοι εἰς τὸν ἑλληνισμὸν, οὐκ ἰσχύοντες ἀρτιστομεῖν. ὡς οὐδ᾽ ἡμεῖς ἐν
ταῖς τῶν ἐκείνων διαλέκτοις. τοῦτο δὲ μάλιστα συνέβη τοῖς καρσί. τῶν γὰρ ἄλλων οὐκ ἐπιπλεκομέ-
νων πως σφόδρα τοῖς ἕλλησιν οὐδ᾽ ἐπιχειρούντων ἑλληνικῶς ζῆν, ἢ μανθάνειν τὴν ἡμετέραν διάλε-
κτον. πλὴν εἴ τινες σπάνιοι, καὶ κατὰ τύχην ἐπεμίχθησαν, καὶ κατ᾽ ἄνδρα ὀλίγοι τῶν ἑλλήνων τισίν.
οὗτοι δὲ καθ᾽ ὅλην ἐπλανήθησαν τὴν ἑλλάδα μισθοῦ στρατεύοντες. ἤδη οὖν τὸ βαρβαρόφωνον ἐπ᾽ ἐ-
κείνων πυκνὸν ἦν. ἀπὸ τῆς εἰς τὴν ἑλλάδα αὐτῶν στρατείας. καὶ μετὰ ταῦτα ἐπεπόλασε πολὺ μᾶλλον.
ἀφ᾽ οὗ τάς τε νήσους μετὰ τῶν ἑλλήνων ᾤκησαν. κἀκεῖθεν εἰς τὴν ἀσίαν ἐκπεσόντες, οὐδ᾽ ἐνταῦθα χω-
ρὶς ἑλλήνων οἰκεῖν ἠδύναντο. ἐπιδιαβάντων τῶν ἰώνων, καὶ τῶν δωριέων. ἀπὸ δὲ τῆς αὐτῆς αἰτίας,
καὶ τὸ βαρβαρίζειν λέγεται. καὶ γὰρ τοῦτο ἐπὶ τῶν κακῶς ἑλληνιζόντων εἰώθαμεν λέγειν. οὐκ ἐπὶ
τῶν καριστὶ λαλούντων. οὕτως οὖν, καὶ τὸ βαρβαροφωνεῖν, καὶ τοὺς βαρβαροφώνους δεκτέον τοὺς κα-
κῶς ἑλληνίζοντας. ἀπὸ δὲ τοῦ καρίζειν, καὶ τὸ βαρβαρίζειν μετήνεγκαν εἰς τὰς περὶ ἑλληνισμοῦ τέ-
χνας. καὶ τὸ σολοικίζειν, εἴτ᾽ ἀπὸ σόλων εἴτ᾽ ἄλλως τοῦ ὀνόματος τούτου πεπλασμένου. φησὶ δὲ ἀρτεμί-
δωρος ἀπὸ φύσκου τῆς ῥοδίων περαίας ἰοῦσιν εἰς ἔφεσον, μέχρι μὲν λαγίνων ὀκτακοσίους εἶναι, καὶ
πεντήκοντα σταδίους. ἐντεῦθεν δ᾽ εἰς ἀλάβανδα πεντήκοντα ἄλλους καὶ διακοσίους. εἰς δὲ τράλλεις ἑκα-
τὸν ἑξήκοντα. ἀλλ᾽ ἡ εἰς τράλλεις ἐστὶ διαβάντι τὸν μαίανδρον κατὰ μέσην που τὴν ὁδόν. ὅπου τῆς κα-
ρίας οἱ ὅροι. γίνονται δ᾽ οἱ πάντες ἀπὸ φύσκου ἐπὶ τὸν μαίανδρον κατὰ τὴν εἰς ἔφεσον ὁδὸν, χίλιοι ἑ-
κατὸν ὀγδοήκοντα. πάλιν ἀπὸ τῆς ἰωνίας ἐφεξῆς μῆκος ἐπιόντι κατὰ τὴν αὐτὴν ὁδὸν, ἀπὸ μὲν τοῦ πο-
ταμοῦ εἰς τράλλεις ὀγδοήκοντα. εἶτ᾽ εἰς μαγνησίαν ἑκατὸν τετταράκοντα. εἰς ἔφεσον δ᾽ ἑκατὸν εἴκοσιν.
εἰς δὲ σμύρναν τριακόσιοι εἴκοσιν. εἰς δὲ φωκαίαν, καὶ τοὺς ὅρους τῆς ἰωνίας ἐλάττους τῶν διακοσίων.
ὥστε τὸ ἐπ᾽ εὐθείας μῆκος τῆς ἰωνίας εἴη ἂν κατὰ ταυτὸ, ἢ μικρῷ πλέον τῶν ὀκτακοσίων. ἐπεὶ δὲ κοι-
νή τις ὁδὸς τέτριπται ἅπασι τοῖς ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς ὁδοιποροῦσιν ἐξ ἐφέσου, καὶ ταύτην μὲν ἔπει-
σιν. ἐπὶ μὲν τὰ κάρουρα τῆς καρίας ὅριον πρὸς τὴν φρυγίαν διὰ μαγνησίας, καὶ τράλλεων. νύσης,
ἀντιοχείας, ὁδὸς ἑπτακοσίων τετταράκοντα σταδίων. ἐντεῦθεν δὲ ἡ φρυγία διὰ λαοδικείας, καὶ ἀπα-
μείας καὶ μητροπόλεως, καὶ χελιδονίων. ἐπὶ μὲν τὴν ἀρχὴν τῆς παρωρείου τοὺς ὅλμους, στάδιοι περὶ
ἐννακοσίους, καὶ εἴκοσιν ἐκ τῶν καρούρων. ἐπὶ δὲ τὸ πρὸς τῇ λυκαονίᾳ πέρας τῆς παρωρείου τὸ τυρια-
ῖον διὰ φιλομηλίου, μικρῷ πλείους τῶν πεντακοσίων. εἶθ᾽ ἡ λυκαονία μέχρι κορωπασσοῦ διὰ λαο-
δικείας τῆς κατακεκαυμένης, ὀκτακόσιοι τετταράκοντα. ἐκ δὲ κορωπασσοῦ τῆς λυκαονίας. εἰς γάρ-
σαουρα πολίχνιον τῆς καππαδοκείας ἐπὶ τῶν ὅρων αὐτῆς ἱδρυμένον, ἑκατὸν εἴκοσιν. ἐντεῦθεν δ᾽ εἰς
μάζακα τὴν μητρόπολιν τῶν καππαδοκῶν διὰ σοαύδου, καὶ σαδακόρων ἑξακόσιοι ὀγδοήκοντα. ἐντεῦ-
θεν δ᾽ ἐπὶ τὸν εὐφράτην μέχρι τομισοῦ χωρίου τῆς σοφηνῆς διὰ ἠρφῶν πολίχνης, χίλιοι τετρακό-
σιοι τετταράκοντα. τὰ δ᾽ ἐπ᾽ εὐθείας τούτοις μέχρι τῆς ἰνδικῆς, τὰ αὐτὰ κεῖται καὶ παρὰ τῷ ἀρ-
τεμιδώρῳ, ἅπερ καὶ παρὰ τῷ ἐρατοσθένει. λέγει δὲ καὶ πολύβιος περὶ τῶν ἐκεῖ. μάλιστα δεῖν πι-
στεύειν ἐκείνῳ. ἄρχεται δὲ ἀπὸ σαμοσάτων τῆς κομμαγηνῆς. ἣ πρὸς τῇ διαβάσει, καὶ τῷ ζεύγματι κεῖ-
ται. εἰς δὲ σαμόσατα ἀπὸ τῶν ὅρων τῆς καππαδοκίας τῶν περὶ τόμισαν ὑπερθέντι τὸν ταῦ-
ρον, σταδίους εἴρηκε τετρακοσίους, καὶ πεντήκοντα. μετὰ δὲ τὴν ῥοδίων περαίαν ἧς ὅριον τὰ δαίδα-
λα, ἐφεξῆς πλέουσι πρὸς ἀνίσχοντα τὸν ἥλιον, ἡ λυκία κεῖται μέχρι παμφυλίας. εἶθ᾽ ἡ παμφυλία
μέχρι κιλίκων τῶν τραχέων. εἶθ᾽ ἡ τούτων μέχρι τῶν ἄλλων κιλίκων τῶν περὶ τὸν ἰσσικὸν κόλπον. ταῦ-
τα δ᾽ ἐστὶ μέρη μὲν τῆς χερρονήσου ἧς τὸν ἰσθμὸν ἔφαμεν τὴν ἀπὸ ἰσσοῦ ὁδὸν μέχρι ἀμισοῦ, ἢ σινώπης
ὥς τινες. ἡ ἐκτὸς δὲ τοῦ ταύρου ἐν στενῇ παραλίᾳ τῇ ἀπὸ λυκίας μέχρι τῶν περὶ σόλους τόπων τῇ νῦν
πομπηϊουπόλει. ἔπειτα ἤδη εἰς πεδία ἀναπέπταται ἡ κατὰ τὸν ἰσσικὸν κόλπον παραλία ἀπὸ σόλων,
καὶ ταρσοῦ ἀρξαμένη. ταύτην οὖν ἐπελθοῦσιν, ὁ πᾶς περὶ τῆς χερρονήσου λόγος ἔσται περιωδευ-
μένος. εἶτα μεταβησόμεθα ἐπὶ τἄλλα μέρη τῆς ἀσίας τὰ ἐκτὸς τοῦ ταύρου. τελευταῖα δ᾽ ἐκθήσο-
μεν τὰ περὶ τὴν λιβύην. μετὰ τοίνυν δαίδαλα τὰ τῶν ῥοδίων, ὄρος ἐστὶ τῆς λυκίας ὁμώνυμον αὐ-
τοῖς δαίδαλα. ἀφ᾽ οὗ λαμβάνει τὴν ἀρχὴν ὁ παράπλους ἅπας ὁ λυκιακός. σταδίων μὲν οὖν χιλίων
ἑπτακοσίων εἴκοσι. τραχὺς δὲ καὶ χαλεπός. ἀλλ᾽ εὐλίμενος σφόδρα. καὶ ὑπὸ ἀνθρώπων συνοικούμενος
σωφρόνων. ἐπεὶ ἥ γε τῆς χώρας φύσις, παραπλησία, καὶ τοῖς παμφύλοις ἐστὶ καὶ τοῖς τραχυώταις κίλι-
ξιν. ἀλλ᾽ ἐκεῖνοι μὲν ὁρμητηρίοις ἐχρήσαντο τοῖς τόποις πρὸς τὰ λῃστήρια. αὐτοὶ πειρατεύοντες. ἢ τοῖς
πειραταῖς λαφυροπώλια, καὶ ναύσταθμα παρέχοντες. ἐν σίδῃ γοῦν πόλει τῆς παμφυλίας τὰ ναυπή-

για συνίσατο τοῖς κίλιξιν. ὑπὸ κύριοί τε ἐπώλουν ἐκεῖ τοὺς ἁλόντας ἐλευθέρους ὁμολογοῦντες. λύκιοι δ' οὕτω πολιτικῶς, καὶ σωφρόνως ζῶντες διετέλεσαν, ὥστ' ἐκείνων διὰ τὰς εὐτυχίας θαλασσοκρατησάντων μέχρι τῆς ἰταλίας, ὅμως ὑπ' οὐδενὸς ἐξήρθησαν αἰσχροῦ κέρδους. ἀλλ' ἔμειναν ἐν τῇ πατρίῳ διοικήσει τοῦ λυκιακοῦ συστήματος. εἰσὶ δὲ τρεῖς καὶ εἴκοσι πόλεις αἱ τῆς ψήφου μετέχουσαι. συνέρχονται δὲ ἐξ ἑκάστης πόλεως εἰς κοινὸν συνέδριον, ἣν ἂν δοκιμάσωσι πόλιν ἑλόμενοι. τῶν δὲ πόλεων αἱ μέγισται μὲν τριῶν ψήφων ἐστὶν ἑκάστη κυρία. αἱ δὲ μέσαι δυοῖν. αἱ δ' ἄλλαι μιᾶς. ἀνάλογον δὲ καὶ τὰς εἰσφορὰς εἰσφέρουσι. καὶ τὰς ἄλλας λειτουργίας. ἓξ δὲ τὰς μεγίστας ἔφη ὁ ἀρτεμίδωρος. ξάνθον. πάταρα. πίναρα. ὄλυμπον. μύρα. τλῶν. κατὰ τὴν ὑπέρθεσιν τὴν εἰς κίβυραν κειμένην. ἐν δὲ τῷ συνεδρίῳ πρῶτον μὲν λυκιάρχης αἱρεῖται. εἶτ' ἄλλαι ἀρχαὶ αἱ τοῦ συστήματος. δικαστήριά τε ἀποδείκνυται κοινῇ. καὶ περὶ πολέμου δὲ καὶ εἰρήνης καὶ συμμαχίας ἐβουλεύοντο πρότερον. νῦν δ' οὐκ εἰκός. ἀλλ' ἐπὶ τοῖς ῥωμαίοις ταῦτ' ἀνάγκη κεῖσθαι, πλὴν εἰ ἐκείνων ἐπιτρεψάντων. ἢ ὑπὲρ αὐτῶν εἴη χρήσιμον. ὁμοίως δὲ καὶ δικασταί, καὶ ἄρχοντες ἀνάλογον ταῖς ψήφοις ἐξ ἑκάστης προχειρίζονται πόλεως. οὕτω δ' εὐνομουμένοις αὐτοῖς, συνέβη παρὰ ῥωμαίοις ἐλευθέροις διατελέσαι. τὰ πάτρια νεμομένοις. τοὺς δὲ λῃστὰς ἐπιδεῖν ἄρδην ἠφανισμένους. πρότερον μὲν ὑπὸ σερουιλίου τοῦ ἰσαυρικοῦ. καθ' ὃν χρόνον καὶ τὰ ἴσαυρα ἐκεῖνος καθεῖλεν. ὕστερον δὲ πομπηίου τοῦ μάγνου. πλειόνων χιλίων, καὶ τριακοσίων σκαφῶν ἐμπρήσαντος. τὰς δὲ κατοικίας ἐκκόψαντος. τῶν δὲ περιγενομένων ἀνθρώπων ἐν ταῖς μάχαις. τοὺς μὲν, καταγαγόντος εἰς σόλους ἣν ἐκεῖνος πομπηιοῦ πόλιν ὠνόμασε. τοὺς δ' εἰς δύμην λειπανδρήσασαν. ἣν νυνὶ ῥωμαίων ἀποικία νέμεται. οἱ ποιηταὶ δὲ μάλιστα οἱ τραγικοὶ συγχέοντες τὰ ἔθνη, καθάπερ τοὺς τρῶας, καὶ τοὺς μυσούς, καὶ τοὺς λυδούς, φρύγας προσαγορεύουσιν, οὕτω καὶ τοὺς λυκίους κᾶρας. μετὰ δ' οὖν τὰ δαίδαλα τὸ τῶν λυκίων ὄρος. οὗ πλησίον ἐστὶ τελμισσὸς πολίχνη λυκίων. καὶ τελμισσὶς ἄκρα, λιμένα ἔχουσα. ἔλαβε δὲ τὸ χωρίον τοῦτο παρὰ ῥωμαίων εὐμένης ἐν τῷ ἀντιοχικῷ πολέμῳ. καταλυθείσης δὲ τῆς βασιλείας ἀπέλαβον πάλιν οἱ λύκιοι. εἶθ' ἑξῆς ὁ ἀντίκραγος. ὄρθιον ὄρος. ἐφ' ᾧ καρμυλησσὸς χωρίον. ἐν φαραγγίῳ κείμενον. καὶ μετὰ τοῦτον ὁ κράγος. ἔχων ἄκρας ὀκτώ. καὶ πόλιν ὁμώνυμον. περὶ ταῦτα μυθεύεται τὰ ὄρη τὰ περὶ τῆς χιμαίρας. ἔστι δ' οὐκ ἄποθεν καὶ ἡ χίμαιρα φάραγξ τις ἀπὸ τοῦ αἰγιαλοῦ ἀνατείνουσα. ὑπόκειται δὲ τῷ κράγῳ πίναρα ἐν μεσογαίᾳ τῶν μεγίστων οὖσα πόλεων ἐν τῇ λυκίᾳ. ἐνταῦθα δὲ πάνδαρος τιμᾶται. τυχὸν ἴσως ὁμώνυμος τῷ τρωικῷ. ὡς καὶ πανδαρέου κούρη χλωρηῒς ἀηδών. καὶ γὰρ τοῦτον ἐκ λυκίας φασίν. εἶθ' ὁ ξάνθος ποταμὸς ὃν σίρβην ἐκάλουν οἱ πρότερον. ἀναπλεύσαντι δ' ὑπηρετικοῖς δέκα σταδίοις, τὸ λητῷον ἐστίν. ὑπὲρ δὲ τοῦ ἱεροῦ προελθόντι ἑξήκοντα. ἡ πόλις ἡ τῶν ξανθίων ἐστί, μεγίστη τῶν ἐν λυκίᾳ. μετὰ δὲ τὸν ξάνθον πάταρα. καὶ αὕτη μεγάλη πόλις. λιμένα ἔχουσα, καὶ ἱερὰ πολλά. κτίσμα πατάρου. πτολεμαῖος δ' ὁ φιλάδελφος ἐπισκευάσας, ἀρσινόην ἐκάλεσε τὴν ἐν λυκίᾳ. ἐπεκράτησε δὲ τὸ ἐξ ἀρχῆς ὄνομα. εἶτα μύρα, ἐν εἴκοσι σταδίοις ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐπὶ μετεώρου λόφου. εἶθ' ἡ ἐκβολὴ τοῦ λιμύρου ποταμοῦ. καὶ ἀνιόντι πεζῇ σταδίους εἴκοσι τὰ λίμυρα πολίχνη. μεταξὺ δ' ἐν τῷ λεχθέντι παράπλῳ νησία πολλά, καὶ λιμένες. ὧν καὶ μεγίστη νῆσος καὶ πόλις ὁμώνυμος ἡ κισθήνη. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ φελλὸς καὶ ἀντίφελλος, καὶ ἡ χίμαιρα ἧς ἐμνήσθημεν ἐπάνω. εἶθ' ἱερὰ ἄκρα. καὶ αἱ χελιδόνιαι τρεῖς νῆσοι τραχεῖαι πάρισοι τὸ μέγεθος. ὅσον πέντε σταδίους ἀλλήλων διέχουσαι. τῆς δὲ γῆς ἀφεστᾶσιν ἑξαστάδιον. μία δ' αὐτῶν καὶ πρόσορμον ἔχει. ἐντεῦθεν νομίζουσιν οἱ πολλοὶ τὴν ἀρχὴν λαμβάνειν τὸν ταῦρον. διά τε τὴν ἄκραν ὑψηλὴν οὖσαν, καὶ καθήκουσαν ἀπὸ τῶν πισιδικῶν ὀρῶν τῶν ὑπερκειμένων τῆς παμφυλίας. καὶ διὰ τὰς προκειμένας νήσους ἐχούσας ἐπιφανές τι σημεῖον ἐν τῇ θαλάττῃ κρασπέδου δίκην. τὸ δ' ἀληθὲς ἀπὸ τῆς ῥοδίων περαίας ἐπὶ τὰ πρὸς πισιδίαν μέρη συνεχής ἐστιν ἡ ὀρεινή. καλεῖται δὲ καὶ αὕτη ταῦρος. δοκοῦσι δὲ καὶ αἱ χελιδόνιαι κατὰ κάνωβόν πως πίπτειν. τὸ δὲ δίαρμα λέγεται τετρακισχιλίων σταδίων. ἀπὸ δὲ τῆς ἱερᾶς ἄκρας ἐπὶ τὴν ὀλβίαν, λείπονται στάδιοι τριακόσιοι ἑξήκοντα ἑπτά. ἐν τούτοις δ' ἐστὶν ἥ τε κράμβουσα καὶ ὁ ὄλυμπος. πόλις μεγάλη, καὶ ὄρος ὁμώνυμον. ὃ καὶ φοινικοῦς καλεῖται. εἶτα κώρυκος αἰγιαλός. εἶτα φασηλίς. τρεῖς ἔχουσα λιμένας πόλις ἀξιόλογος καὶ λίμνη. ὑπέρκειται δ' αὐτῆς τὰ σόλυμα ὄρος. καὶ τελμισσὸς πισιδικὴ πόλις. ἐπικειμένη τοῖς στενοῖς, δι' ὧν ὑπέρβασις ἐστὶν εἰς τὴν μιλυάδα. καὶ ὁ ἀλέξανδρος δὲ διὰ τοῦτο ἐξεῖλεν αὐτήν, ἀνοῖξαι βουλόμενος τὰ στενά. περὶ φασηλίδα δ' ἐστὶ κατὰ θάλατταν στενά, δι' ὧν ἀλέξανδρος παρήγαγε τὴν στρατείαν. ἔστι δ' ὄρος κλῖμαξ καλούμενον. ἐπίκειται δὲ τῷ παμφυλίῳ πελάγει. στενὴν ἀπολεῖπον πάροδον ἐπὶ τῷ αἰγιαλῷ. ταῖς μὲν νηνεμίαις γυμνουμένην. ὥστε εἶναι βάσιμον τοῖς ὁδεύουσι. πλημμύροντος δὲ τοῦ πελάγους ὑπὸ τῶν κυμάτων καλυπτομένην ἐπὶ πολύ. ἡ μὲν οὖν διὰ τοῦ ὄρους ὑπέρβασις, περίοδον ἔχει καὶ προσάντης ἐστί. τῷ δ' αἰγιαλῷ χρῶνται κατὰ τὰς εὐδίας. ὁ δὲ ἀλέξανδρος εἰς χειμέριον ἐμπεσὼν καιρὸν, καὶ τὸ πλέον ἐπιτρέπων τῇ τύχῃ, πρὶν ἀνεῖναι τὸ κῦμα ὥρμησε. καὶ ὅλην τὴν ἡμέραν ἐν ὕδασι γενέσθαι τὴν πορείαν συνέβη, μέχρι ὀμφαλοῦ βαπτιζομένων. ἔστι μὲν οὖν καὶ αὕτη ἡ πόλις λυκιακή. ἐπὶ τῶν ὅρων ἱδρυμένη τῶν πρὸς παμφυλίαν. τοῦ δὲ κοινοῦ τῶν λυκίων οὐ μετέχει. καθ' αὑτὴν δὲ συν-

ἑστηκώς· ὁ μὲν οὖν ποιητὴς ἑτέρους τῶν λυκίων ποιεῖ τοὺς σολύμους. ὑπὸ γὰρ τοῦ λυκίων βασιλέως πεμ-
» φθεὶς ὁ βελλεροφόντης ἐπὶ δεύτερον ἄεθλον, Σολύμοισι μαχέσατο κυδαλίμοισι.
οἱ δὲ τοὺς λυκίους πρότερον σολύμους καλεῖσθαι φάσκοντες, ὕστερον δὲ τερμίλας, ἀπὸ τῶν ἐκ κρή-
της συγκατελθόντων τῷ σαρπηδόνι φασί. μετὰ δὲ ταῦτα λυκίους ἀπὸ λύκου τοῦ πανδίονος, ὃν ἐκ-
πεσόντα τῆς οἰκίας ἐδέξατο σαρπηδὼν ἐπὶ μέρει τῆς ἀρχῆς, οὐχ ὁμολογούμενα λέγουσιν ὁμήρῳ.
βελτίους δ' οἱ φάσκοντες λέγεσθαι σολύμους ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ, τοὺς νῦν μιλύας προσαγορευομένους.
περὶ ὧν εἰρήκαμεν. μετὰ φασηλίδα δ' ἐστὶν ἡ ὀλβία τῆς παμφυλίας ἀρχή. μέγα ἔρυμα. καὶ μετὰ
ταύτην ὁ καταράκτης λεγόμενος ἀφ' ὑψηλῆς πέτρας καταράττων ποταμὸς πολύς, καὶ χειμαῤ-
ῥώδης ὥστε πόῤῥωθεν ἀκούεσθαι τὸν ψόφον. εἶτα πόλις ἀτταλία. ἐπώνυμος τοῦ κτίσαντος φιλαδέλ-
φου, καὶ οἰκίσαντος εἰς κώρυκον πολίχνιον ἄλλην κατοικίαν, ὅμορον, καὶ μικρὸν περίβολον περι-
θέντος. φασὶ δ' ἐν τῷ μεταξὺ φασήλιδος, καὶ ἀτταλίας, δείκνυσθαι θήβην τε καὶ λυρνησσόν. ἐκ πε-
σόντων ἐκ τοῦ θήβης πεδίου, τῶν τρωϊκῶν κιλίκων εἰς τὴν παμφυλίαν ἐκ μέρους ὡς εἴρηκε καλλι-
σθένης. εἶθ' ὁ κέστρος ποταμὸς ὃν ἀναπλεύσαντι σταδίους ἑξήκοντα, πέργη πόλις. καὶ πλησίον ἐπὶ
μετεώρου τόπου, τὸ τῆς περγαίας ἀρτέμιδος ἱερόν. ἐν ᾧ πανήγυρις κατ' ἔτος συντελεῖται. εἶτ' ἐ-
πὶ τῆς θαλάττης ὅσον τετταράκοντα σταδίοις, πόλις ἐστὶν ὑψηλή. ὡς τοῖς ἐκ πέργης ἔποπτος. εἶτα λί-
μνη εὐμεγέθης καπρία. καὶ μετὰ ταῦτα ὁ εὐρυμέδων ποταμός. ὃν ἀναπλεύσαντι ἑξήκοντα σταδίους
ἄσπενδος πόλις εὐανδροῦσα ἱκανῶς, ἀργείων κτίσμα. ὑπέρκειται δὲ ταύτης πετνηλισσός. εἶτ' ἄλ-
λος ποταμός καὶ νησία προκείμενα πολλά. εἶτα σίδη, κυμαίων ἄποικος. ἔχει δ' ἀθηνᾶς ἱερόν. πλησίον
δ' ἐστὶ καὶ ἡ κιβυρατῶν παραλία τῶν μικρῶν εἶθ' ὁ μέλας ποταμὸς, καὶ ὕφορμος. εἶτα πτολεμαΐς πό-
λις. καὶ μετὰ ταῦθ' οἱ ὅροι τῆς παμφυλίας, καὶ τὸ κορακήσιον ἀρχὴ, τῆς τραχείας κιλικίας. ὁ δὲ,
παράπλους ἅπας ὁ παμφύλιος στάδιοι εἰσὶν ἑξακόσιοι τετταράκοντα. φησὶ δὲ ἡρόδοτος τοὺς τῶν μετὰ
ἀρχιλόχου καὶ κάλχαντος εἶναι λαῶν. μιγάδων τινῶν ἐκ τροίας συνακολουθησάντων. τοὺς μὲν
δὴ πολλοὺς ἐνθάδε καταμεῖναι. τινὰς δὲ σκεδασθῆναι πολλαχοῦ τῆς γῆς. καλλῖνος δὲ τὸν μὲν κάλχαν-
τα ἐν κλάρῳ τελευτῆσαι τὸν βίον φησὶ, τοὺς δὲ λαοὺς μετὰ μόψου τὸν ταῦρον ὑπερθέντας, τοὺς δ' ἐν
κιλικίᾳ μερισθῆναι, καὶ συρίᾳ μέχρι, καὶ φοινίκης. τῆς δὲ κιλικίας τῆς ἔξω τοῦ ταύρου, ἡ μὲν, λέ-
γεται τραχεῖα. ἡ δὲ πεδιάς, τραχεῖα μὲν ἧς ἡ παραλία στενή ἐστι. καὶ οὐδὲν, ἢ σπανίως ἔχει τι χωρίον
ἐπίπεδον. καὶ ἔτι ἧς ὑπέρκειται ὁ ταῦρος οἰκούμενος κακῶς μέχρι, καὶ τῶν προσβόρρων πλευρῶν
τῶν περὶ ἴσαυρα, καὶ τοὺς ὁμοναδέας μέχρι τῆς πισιδίας. καλεῖται δ' ἡ αὐτὴ τραχειῶτις. καὶ οἱ
ἐνοικοῦντες τραχειῶται. πεδιὰς δὲ ἡ ἀπὸ σόλων, καὶ ταρσοῦ μέχρι ἰσσοῦ. καὶ ἔτι ὧν ὑπέρκεινται κα-
τὰ τὸ πρόσβορρον τοῦ ταύρου πλευρὸν καππάδοκας. αὕτη γὰρ ἡ χώρα τὸ πλέον πεδίων εὐπορεῖ.
καὶ χώρας ἀγαθῆς. ἐπεὶ δὲ τούτων τὰ μέν ἐστιν ἐντὸς τοῦ ταύρου. τὰ δ' ἐκτὸς, περὶ μὲν τῶν ἐντὸς
εἴρηται. περὶ δὲ τῶν ἐκτὸς λέγωμεν ἀπὸ τῶν τραχειωτῶν ἀρξάμενοι. πρῶτον τοίνυν ἐστὶ τῶν κιλίκων
φρούριον τὸ κορακήσιον. ἱδρυμένον ἐπὶ πέτρας ἀπορρῶγος, ᾧ ἐχρήσατο διόδοτος ὁ τρύφων προσαγο-
ρευθεὶς ὁρμητηρίῳ. καθ' ὃν καιρὸν ἀπέστησε τὴν συρίαν τῶν βασιλέων. καὶ διεπολέμει πρὸς ἐκείνους. το-
τὲ μὲν, κατορθῶν. τοτὲ δὲ πταίων. τοῦτον μὲν οὖν ἀντίοχος ὁ δημητρίου κατακλείσας εἴς τι χωρίον. ἠ-
νάγκασε διαχρήσασθαι τὸ σῶμα. τοῖς δὲ κίλιξιν ἀρχὴ τοῦ τὰ πειρατικὰ συνίστασθαι, τρύφων αἴτιος
κατέστη, καὶ ἡ τῶν βασιλέων οὐδένεια, τῶν τότε ἐκ διαδοχῆς ἐπιστατούντων τῆς συρίας ἅμα καὶ τῆς κι-
λικίας. τῷ γὰρ ἐκείνου νεωτερισμῷ συνενεωτέριζον, καὶ ἄλλοι. διχοστατοῦντές τε ἀδελφοὶ πρὸς ἀλ-
λήλους, ὑποχείριον ἐποίουν τὴν χώραν τοῖς ἐπιτιθεμένοις. ἡ δὲ τῶν ἀνδραπόδων ἐξαγωγὴ, πρου-
καλεῖτο μάλιστα εἰς τὰς κακουργίας ἐπικερδεστάτη γενομένη. καὶ γὰρ ἡλίσκοντο ῥᾳδίως, καὶ τὸ ἐμπόριον
οὐκ ἄπωθεν παντελῶς ἦν μέγα, καὶ πολυχρήματον ἡ δῆλος δυναμένη μυριάδας ἀνδραπόδων αὐθημερὸν
» καὶ δέξασθαι καὶ ἀποπέμψαι. ὥστε, καὶ παροιμίαν γενέσθαι διὰ ταῦτα. ἔμπορε κατάπλευσον. ἐξελοῦ, πάν-
τα πέπραται. αἴτιον δ' ὅτι πλούσιοι γενόμενοι ῥωμαῖοι μετὰ τὴν καρχηδόνος καὶ κορίνθου κατασκαφὴν
οἰκετείαις ἐχρῶντο πολλαῖς. ὁρῶντες δὲ τὴν εὐπέτειαν οἱ λησταὶ ταύτην ἐξήνθησαν ἀθρόως αὐτοί. καὶ λῃζό-
μενοι καὶ σωματεμποροῦντες. συνήργουν δ' εἰς ταῦτα, καὶ οἱ τῆς κύπρου, καὶ οἱ τῆς αἰγύπτου βασιλεῖς ἐχθροὶ
τοῖς σύροις ὄντες. οὐδ' οἱ σύριοι δὲ φίλοι ἦσαν αὐτοῖς. ὥστ' οὐδ' ἐβοήθουν. ἅμα δὲ, καὶ οἱ λησταὶ προσποιού-
μενοι σωματεμπορεῖν, ἄλυτον τὴν κακουργίαν εἶχον. ἀλλ' οὐδὲ ῥωμαῖοι πω τοσοῦτον ἐφρόντιζον τῶν ἔξω τοῦ
ταύρου. ἀλλ' ἔπεμψαν μὲν καὶ σκιπίωνα τὸν αἰμιλιανόν. ἐπισκεψόμενον τὰ ἔθνη καὶ τὰς πόλεις, καὶ πάλιν
ἄλλους τινάς, ἔγνωσαν δὲ κακίᾳ τῶν ἀρχόντων συμβαῖνον τοῦτο εἰς τὴν κατά γε διαδοχὴν τὴν ἀπὸ σελεύκου τοῦ
νικάτορος. αὐτοὶ κεκυρωκότες ᾐδοῦντο ἀφαιρεῖσθαι, τοῦτο δὲ συμβάν. τῆς μὲν χώρας ἐποίησε κυρίους. πα-
ρθυαίους οἱ τὰ πέραν τοῦ εὐφράτου κατέσχοντο. τελευταῖον δὲ, καὶ ἀρμενίους. οἳ καὶ τὴν ἐκτὸς τοῦ ταύρου
προσέλαβον. μέχρι, καὶ φοινίκης. καὶ τοὺς βασιλέας κατέλυσαν εἰς δύναμιν. καὶ τὸ γένος αὐτῶν σύμ-
παν τὴν δὲ θάλατταν τοῖς κίλιξι παρέδωκαν. εἶτ' αὐξηθέντας ἠναγκάσθησαν καταλύειν ῥωμαῖοι πολέ-
μῳ καὶ μετὰ στρατιᾶς. οὓς αὐξομένους οὐκ ἐκώλυσαν. ὀλιγωρίαν μὲν οὖν αὐτῶν χαλεπὸν καταγνῶναι πρὸς

ἐγγυτέροις δὲ ὄντες τοῖς ἐγγυτέρω, καὶ κατὰ χεῖρα μᾶλλον, οὐχ οἷοί τε ἦσαν τὰ ἀπωτέρω σκοπεῖν. ταῦτα
μὲν οὖν ἔδοξεν ἡμῖν ἐν παρεκβάσει διὰ βραχέων εἰπεῖν. μετὰ δὲ τὸ κορακήσιον ἀρσινόη πόλις. εἶθ' ἁμα-
ξία ἐπὶ βουνοῦ κατοικία τις ὕφορμον ἔχουσα. ὅπου κατάγεται ἡ ναυπηγήσιμος ὕλη. κέδρος δ' ἐστὶν
ἡ πλείστη. καὶ δοκεῖ ταῦτα τὰ μέρη πλεονεκτεῖν τῇ τοιαύτῃ ξυλείᾳ. καὶ διὰ τοῦτ' ἀντώνιος τὰ χωρία
ταῦτα τῇ κλεοπάτρᾳ προσένειμεν, ἐπιτήδεια ὄντα πρὸς τὰς τῶν στόλων κατασκευάς. εἶτα λαέρ-
της φρούριον ἐπὶ λόφου μαστοειδοῦς. ἔφορμον ἔχον. εἶτα σελινοῦς ποταμός. εἶτα κράγος πέτρα περί-
κρημνος πρὸς θαλάττῃ. εἶτα χαραδροῦς ἔρυμα. καὶ αὐτὸ ὕφορμον ἔχον. ὑπέρκειται δ' ὄρος ἀνδρί-
κλος. καὶ παράπλους τραχύς. πλατανιὸς καλούμενος. εἶτ' ἀνεμούριον ἄκρα. καθ' ἣν ἡ ἤπειρος ἐγγυ-
τάτω τῆς κυπρίας ἐστὶν ἐπὶ κρομμύου ἄκραν, ἐν διάρματι σταδίων τριακοσίων πεντήκοντα. εἰς μὲν
οὖν τὸ ἀνεμούριον ἀπὸ τῶν ὅρων τῆς παμφυλίας, ὁ κιλίκιος παράπλους σταδίων ἐστὶν ὀκτακοσίων
εἴκοσι. λοιπὸς δ' ἐστὶ μέχρι σόλων ὅσον πεντακοσίων παράπλους σταδίων. τούτου δ' ἐστὶν νάγιδος πόλις πρώ-
τη μετὰ τὸ ἀνεμούριον. εἶτ' ἀρσινόη πρόσορμον ἔχουσα. εἶτα τόπος μελανία, καὶ κελένδερις πόλις λι-
μένα ἔχουσα. τινὲς δὲ ταύτην ἀρχὴν τίθενται τῆς κιλικίας. οὐ τὸ κορακήσιον. ὧν ἐστὶ καὶ ὁ ἀρτεμίδω-
ρος. καί φησιν. ἀπὸ μὲν τοῦ πηλουσιακοῦ στόματος εἶναι τρισχιλίους ἐνακοσίους σταδίους εἰς ὀρθωσίαν.
ἐπὶ δὲ τὸν ὀρόντην ποταμὸν χίλια ἑκατὸν τριάκοντα. ἐπὶ δὲ τὰς πύλας ἑξῆς πεντακόσια εἰκοσιπέν-
τε. ἐπὶ δὲ τοὺς ὅρους τῶν κιλίκων χίλια διακόσια ἑξήκοντα. εἶθ' ὅλμος ὅπου πρότερον ᾤκουν οἱ νῦν σε-
λευκεῖς. κτισθείσης δ' ἐπὶ τῷ καλυκάδνῳ τῆς σελευκείας, ἐκεῖ μετῳκίσθησαν. εὐθὺς γάρ ἐστιν ἡ τοῦ κα-
λυκάδνου ἐκβολή, κάμψαντι ἠϊόνα ποιοῦσαν ἄκραν, ἣ καλεῖται σαρπηδών. πλησίον ἐστὶ τοῦ καλυκάδ-
νου, καὶ τὸ ζεφύριον, καὶ αὐτὴ ἄκρα. ἔχει δὲ ὁ ποταμὸς ἀνάπλουν εἰς τὴν σελεύκειαν πόλιν εὖ συνοικου-
μένην. καὶ πολὺ ἀφεστῶσαν τοῦ κιλικίου, καὶ παμφυλίου τρόπου. ἐνταῦθα ἐγένοντο καθ' ἡμᾶς ἄνδρες
ἀξιόλογοι τῶν ἐκ τοῦ περιπάτου φιλοσόφων. ἀθήναιός τε καὶ ξέναρχος. ὧν ὁ μὲν ἀθήναιος, καὶ ἐπολι-
τεύσατο, καὶ ἐδημαγώγησε χρόνον τινὰ ἐν τῇ πατρίδι. εἶτ' ἐμπεσὼν εἰς τὴν μουρήνα φιλίαν, ἐκείνῳ συ-
νεάλω φεύγων. φωραθείσης τῆς κατὰ καίσαρος τοῦ σεβαστοῦ ἐπιβουλῆς. ἀναίτιος δὲ φανεὶς ἀφείθη ὑπὸ
καίσαρος. ὡς δ' ἐπανιόντα εἰς ῥώμην ἠσπάζοντο, καὶ ἐπυνθάνοντο οἱ πρῶτοι ἐντυγχάνοντες, τὸ τοῦ εὐρι-
Ἥκω, νεκρῶν κευθμῶνα καὶ σκότου πύλας λιπών. (πίδου ἔφη.

Ὀλίγον δ' ἐπιβιοὺς χρόνον, ἐν συμπτώσει τῆς οἰκίας ἐν ᾗ ᾤκει κατὰ νύκτα διεφθάρη νυκτὸς γενομένης. ξέ-
ναρχος δὲ οὗ ἠκροασάμεθα ἡμεῖς ἐν οἴκῳ μὲν οὐ πολὺ διέτριβεν, ἐν ἀλεξανδρείᾳ δὲ καὶ ἀθήνησι. καὶ τὸ τε-
λευταῖον ἐν ῥώμῃ τὸν παιδευτικὸν βίον ἑλόμενος. χρησάμενος δὲ καὶ τῇ ἀρίου φιλίᾳ, καὶ μετὰ ταῦτα
τῇ τοῦ καίσαρος τοῦ σεβαστοῦ, διετέλεσε μέχρι γήρως ἐν τιμῇ ἀγόμενος. μικρὸν δὲ πρὸ τῆς τελευτῆς πη-
ρωθεὶς τὴν ὄψιν, κατέστρεψε, νόσῳ τὸν βίον. μετὰ δὲ τὸν καλύκαδνον ἡ ποικίλη λεγομένη πέτρα. κλίμα-
κα ἔχουσα λατομητὴν ἐπὶ σελεύκειαν ἄγουσα. εἶτ' ἀνεμούριον ἄκρα. ὁμώνυμος τῇ προτέρᾳ. καὶ κράμ-
βουσα νῆσος, καὶ κώρυκος ἄκρα. ὑπὲρ ἧς ἐν εἴκοσι σταδίοις ἐστὶ τὸ κωρύκιον ἄντρον. ἐν ᾧ ἡ ἀρίστη κρόκος φύε-
ται. ἔστι δὲ κοιλὰς μεγάλη. κυκλοτερὴς ἔχουσα περικειμένην ὀφρὺν πετρώδη. πανταχόθεν ἱκανῶς ὑ-
ψηλήν. καταβαίνοντι δ' εἰς αὐτὴν ἀνώμαλόν ἐστιν ἔδαφος. καὶ τὸ πολὺ πετρῶδες. μεστὸν δὲ τῆς θαμνώδους
ὕλης ἀειθαλοῦς τε καὶ ἡμέρου. παρέσπαρται δὲ καὶ τὰ ἐδάφη τὰ φέροντα τὸν κρόκον. ἔστι δὲ καὶ ἄν-
τρον αὐτόθι ἔχον πηγὴν μεγάλην. ποταμὸν ἐξιεῖσαν καθαρόν τε, καὶ διαφανοῦς ὕδατος, εὐθὺς κατα-
πίπτοντα ὑπὸ γῆν ἐνεχθεὶς δ' ἀφανὴς ἐξίησιν εἰς τὴν θάλατταν. καλοῦσι δὲ πικρὸν ὕδωρ. εἶθ' ἡ ἐλεοῦσα νῆσος
μετὰ κώρυκον. προσκειμένη τῇ ἠπείρῳ. ἣν συνῴκισεν ἀρχέλαος καὶ κατεσκευάσατο βασίλειον. λαβὼν
τὴν τραχειῶτιν κιλικίαν ὅλην πλὴν σελευκείας. καθ' ὃν τρόπον, καὶ ὁ ἀμύντας πρότερον εἶχε. καὶ ἔτι
πρότερον κλεοπάτρα. εὐφυοῦς γὰρ ὄντος τοῦ τόπου πρὸς τὰ λῃστήρια, καὶ κατὰ γῆν, καὶ κατὰ θάλατ-
ταν. κατὰ γῆν μὲν διὰ τὸ μέγεθος τῶν ὀρῶν καὶ τῶν ὑπερκειμένων ἐθνῶν, πεδία καὶ γεώργια ἐχόντων
μεγάλα, καὶ εὐκατατρόχαστα, κατὰ θάλατταν δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν τῆς τε ναυπηγησίμου ὕλης, καὶ τῶν
λιμένων, καὶ ἐρυμάτων καὶ ὑποδυτηρίων, ἐδόκει πρὸς ἅπαν τὸ τοιοῦτο βασιλεύεσθαι μᾶλλον τοὺς τό-
πους, ἢ ὑπὸ τοῖς ῥωμαίοις ἡγεμόσιν εἶναι τοῖς ἐπὶ τὰς κρίσεις πεμπομένοις. οἳ μήτ' ἀεὶ παρεῖναι ἔ-
μελλον. μήτε μεθ' ὅπλων. οὕτω μὲν ἀρχέλαος ἔλαβε πρὸς τῇ καππαδοκίᾳ τὴν τραχεῖαν κιλικίαν.
εἰσὶ δ' ὅροι ταύτης μεταξὺ σόλων τε, καὶ ἐλεούσης ὁ λάμος ποταμός. καὶ κώμη ὁμώνυμος. κατὰ
δὲ τὰς ἀκρωρείας τοῦ ταύρου, τὸ ζηνικέτου πειρατήριον ἐστὶν ὁ ὄλυμπος. ὄρος τε καὶ φρούριον ὁμώ-
νυμον. ἀφ' οὗ κατοπτεύεται πᾶσα λυκία, καὶ παμφυλία καὶ πισιδία. ἁλόντος δὲ τοῦ ὄρους ὑπὸ τοῦ ἰσαυρικοῦ
ἐνέπρησεν ἑαυτὸν πανοίκιον. τούτου δ' ἦν καὶ ὁ κώρυκος. καὶ ἡ φασηλίς. καὶ πολλὰ τῶν παμφύλων χωρία.
πάντα δ' εἷλεν ὁ ἰσαυρικός. μετὰ δὲ λάμον σόλοι πόλις ἀξιόλογος τῆς ἄλλης κιλικίας. ἀρχὴ τῆς περὶ τὸν ἰσ-
σόν. ἀχαιῶν καὶ ῥοδίων κτίσμα τῶν ἐκ λίνδου. εἰς ταύτην λειπανδρήσασαν, πομπήϊος μάγνος κατῴκισε
τοὺς περιγενομένους τοὺς πειρατῶν. οὓς μάλιστα ἔγνω σωτηρίας, καὶ προνοίας τινὸς ἀξίους. καὶ μετωνόμασε πομ-
πηϊούπολιν. γεγόνασι δ' ἄνδρες ἐνθάδε τῶν ὀνομαστῶν. χρύσιππός τε ὁ στωϊκὸς φιλόσοφος. πατρὸς ὢν ταρ-
σέως ἐκεῖθεν μετοικήσαντος καὶ φιλήμων ὁ κωμικὸς ποιητής. καὶ ἄρατος ὁ τὰ φαινόμενα συγγράψας.

ἐν ἔπεσιν. εἶτα ζεφύριον ὁμώνυμον τῷ πρὸς καλύδνῳ. εἶτ' ἀγχιάλη μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης. κτίσμα σαρδαναπάλου, φησὶν ἀριστόβουλος. ἐνταῦθα δ' εἶναι μνῆμα τοῦ σαρδαναπάλου, καὶ τύπον λίθινον. συμβάλλοντα τοὺς τῆς δεξιᾶς χειρὸς δακτύλους. ὡς ἂν ἀποκροτοῦντα. ἐνίοι δὲ καὶ ἐπιγραφὴν εἶναι ἀσσυρίοις γράμμασι τοιάνδε. σαρδανάπαλος ὁ ἀνακυνδαράξου παῖς, ἀγχιάλην, καὶ ταρσὸν ἔδει μὲν ἡμέρῃ μιῇ. σὺ δ' ὦ ξένε ἔσθιε πῖνε παῖζε

» Εὖ εἰδὼς ὅτι θνητὸς ἔφυς τὸν θυμὸν ἄεξε    Τερπόμενος θαλίῃσι. θανόντι τοι οὔτις ὄνησις
» Καὶ γὰρ ἐγὼ σποδός εἰμι, νίνου μεγάλης βασιλεύσας.
» Ταῦτ' ἔχω ὅσσ' ἔφαγον καὶ ἀφ' ὕβρισα καὶ μετ' ἔρωτος
» Τέρπν' ἔπαθον τὰ δὲ πολλὰ καὶ ὄλβια κεῖνα λέλειπται
» Ἥδε σοφὴ βιότοιο παραίνεσις ἀνθρώποισιν

Ὡς τ' ἄλλα τὰ ἀνθρώπινα οὐκ ὄντα τούτου ἄξια τοῦ ἀποκροτήματος. μέμνηται δέ, καὶ χοιρίλος τούτων. καὶ δὴ καὶ περιφέρεται τὰ ἔπη ταυτί

» Ταῦτ' ἔχω ὅσσ' ἔφαγον καὶ ἐφ' ὕβρισα. καὶ μετ' ἔρωτος
» Τέρπν' ἔπαθον. τὰ δὲ πολλὰ καὶ ὄλβια κεῖνα λέλειπται.

Ὑπέρκειται δὲ τὰ κύινδα τῆς ἀγχιάλου ἔρυμα. ᾧ ἐχρήσαντό ποτε οἱ μακεδόνες γαζοφυλακείῳ. ἦρε δὲ τὰ χρήματα εὐμενὴς ἀποστὰς ἀντιγόνου. ἔτι δ' ὑπεράνω τούτων τε καὶ τῶν σόλων, ὀρεινή ἐστιν. ἐν ᾗ ὄλβος πόλις. διὸς ἱερὸν ἔχουσα. αἴαντος ἵδρυμα τοῦ τεύκρου. καὶ ὁ ἱερεὺς δυνάστης ἐγένετο τῆς τραχειώτιδος. εἶτ' ἐπέθεντο τῇ χώρᾳ τύραννοι πολλοί. καὶ συνέστη τὰ λῃστήρια. μετὰ δὲ τὴν τούτων κατάλυσιν, ἐφ' ἡμῶν ἤδη τὴν τοῦ τεύκρου δυναστείαν ταύτην ἐκάλουν. τὴν δ' αὐτὴν, καὶ ἱερωσύνην. καὶ οἱ πλεῖστοί γε τῶν ἱερασαμένων. ὠνομάζοντο τεῦκροι ἢ αἴαντες. εἰσιοῦσα δὲ ἄβα κατ' ἐπιγαμίαν εἰς τὸν οἶκον τοῦτον ἡ ζηνοφάνους θυγάτηρ ἑνὸς τῶν τυράννων, αὐτὴ κατέσχε τὴν ἀρχήν. προλαβόντος τοῦ πατρὸς ἐν ἐπιτρόπου σχήματι. ὕστερον δὲ, καὶ ἀντώνιος, καὶ κλεοπάτρα κατεχαρίσαντο ἐκείνῃ, θεραπείαις ἐκλιπαρηθέντες. ἔπειθ' ἡ μὲν, κατελύθη. τοῖς δ' ἀπὸ τοῦ γένους διέμεινεν ἡ ἀρχή. μετὰ δὲ τὴν ἀγχιάλην αἱ τοῦ κύδνου ἐκβολαὶ κατὰ τὸ ῥῆγμα καλούμενον. ἔστι δὲ λιμνάζων τόπος, ἔχων, καὶ παλαιὰ νεώρια. εἰς ὃν ἐμπίπτει ὁ κύδνος διαρρέων μέσην τὴν ταρσὸν τὰς ἀρχὰς ἔχων ἀπὸ τοῦ ὑπερκειμένου τῆς πόλεως ταύρου. καὶ ἔστιν ἐπίνειον ἡ λίμνη τῆς ταρσοῦ. μέχρι μὲν δὴ δεῦρο ἡ παραλία πᾶσα ἀπὸ τῆς ῥοδίων περαίας ἀρξαμένη πρὸς ἰσημερινὰς ἀνατολὰς, ἀπὸ τῶν ὁμωνύμων ἐκτείνεται δύσεων. εἶτ' ἐπὶ τὴν χειμερινὴν ἀνατολὴν ἐπιστρέφει μέχρι ἰσσοῦ. κἀντεῦθεν ἤδη καμπὴν λαμβάνει πρὸς νότον μέχρι φοινίκης. τὸ δὲ λοιπὸν πρὸς δύσιν μέχρι στηλῶν τελευτᾷ. τὸ μὲν οὖν ἀληθὲς ὁ ἰσθμὸς τῆς περιωδευμένης χερρονήσου. οὗτός ἐστιν ὁ ἀπὸ ταρσοῦ καὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ κύδνου μέχρι ἀμισοῦ, τὸ γὰρ ἐλάχιστον ἐξ ἀμισοῦ διάστημα ἐπὶ τοὺς κιλίκων ὅρους, τοῦτ' ἔστιν. ἐντεῦθεν δ' ἑκατὸν εἴκοσιν εἰσὶν εἰς ταρσὸν στάδιοι. κἀκεῖθεν οὐ πλείους ἐπί τε τὴν ἐκβολὴν τοῦ κύδνου καὶ μὴν ἐπί γε ἰσσὸν, καὶ τὴν κατ' αὐτὴν θάλατταν, οὔτ' ἄλλη ὁδὸς συντομωτέρα ἐστὶν ἐξ ἀμισοῦ τῆς διὰ ταρσοῦ, οὔτ' ἐκ ταρσοῦ ἐπὶ ἰσσὸν ἐγγυτέρω ἐστὶν ἢ ἐπὶ κύδνον. ὥστε δῆλον ὅτι ταῖς μὲν ἀληθείαις, οὗτος ἂν εἴη ὁ ἰσθμὸς, λέγεται δ' ὅμως ὁ μέχρι τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου περικρυπτόντων διὰ τὸ σημειῶδες. διὰ δὲ τοῦτ' αὐτὸ, καὶ τὴν ἐκ τῆς ῥοδίας γραμμὴν, ἣν μέχρι τοῦ κύδνου κατήγομεν. τὴν αὐτὴν ἀποφαινόμενοι τῇ μέχρι ἰσσοῦ. οὐδὲν παρὰ τοῦτο ποιούμενοι. καὶ τὸν ταῦρον φαμὲν διήκειν μέχρι ἐπ' εὐθείας τῇ δὲ τῇ γραμμῇ μέχρι τῆς ἰνδικῆς, ἡ δὲ ταρσὸς, κεῖται μὲν ἐν πεδίῳ. κτίσμα δ' ἐστὶ τῶν μετὰ τριπτολέμου πλανηθέντων ἀργείων κατὰ ζήτησιν ἰοῦς. διαρρεῖ δ' αὐτὴν μέσην ὁ κύδνος παρ' αὐτὸ τὸ γυμνάσιον τῶν νέων. ἅτε δὴ τῆς πηγῆς οὐ πολὺ ἄποθεν οὔσης, καὶ τοῦ ῥείθρου διὰ φάραγγος βαθείας ἰόντος. εἶτ' εὐθὺς εἰς τὴν πόλιν ἐκπίπτοντος ψυχρόν τε, καὶ ταχὺ τὸ ῥεῦμά ἐστιν. ὅθεν καὶ τοῖς παχυνουσι ῥοιζομένοις, καὶ κτήνεσι καὶ ἀνθρώποις ἐπικουρεῖ. τοσαύτη δὲ τοῖς ἐνθάδε ἀνθρώποις σπουδὴ πρός τε φιλοσοφίαν, καὶ τὴν ἄλλην ἐγκύκλιον ἅπασαν παιδείαν γέγονεν, ὥσθ' ὑπερβέβληνται, καὶ ἀθήνας, καὶ ἀλεξάνδρειαν, καὶ εἴ τινα ἄλλον τόπον δυνατὸν εἰπεῖν, ἐν ᾧ σχολαὶ καὶ διατριβαὶ τῶν φιλοσόφων τῶν λόγων γεγόνασι. διαφέρει δὲ τοσοῦτον, ὅτι ἐνταῦθα μὲν οἱ φιλομαθοῦντες, ἐπιχώριοι πάντες εἰσί. ξένοι δ' οὐκ ἐπιδημοῦσιν ῥᾳδίως. οὐδ' αὐτοὶ οὗτοι μένουσι αὐτόθι. ἀλλὰ καὶ τελειοῦνται ἐκδημήσαντες, καὶ τελειωθέντες, ξενιτεύουσιν ἡδέως. κατέρχονται δ' ὀλίγοι. ταῖς δ' ἄλλαις πόλεσιν ἃς ἀρτίως εἶπον πλὴν ἀλεξανδρείας συμβαίνει τἀναντία. φοιτῶσι γὰρ εἰς αὐτὰς πολλοὶ, καὶ διατρίβουσιν αὐτόθι ἄσμενοι. τῶν δ' ἐπιχωρίων οὐ πολλοὺς οὔτ' ἂν ἔξω φοιτῶντας ἴδοις κατὰ φιλομάθειαν οὔτ' αὐτόθι, περὶ τοῦτο σπουδάζοντας. ἀλεξανδρεῦσι δ' ἀμφότερα συμβαίνει. δέχονται γὰρ πολλοὺς τῶν ξένων καὶ ἐκπέμπουσι τῶν ἰδίων οὐκ ὀλίγους. καὶ εἰσὶ σχολαὶ παρ' αὐτοῖς παντοδαπαί. τῶν ἄλλων περὶ λόγων τεχνῶν. καὶ τ' ἄλλα τ' εὐανδρεῖ, καὶ πλεῖστον δύναται. τὸν τῆς μητροπόλεως ἐπέχουσα λόγον. ἄνδρες δ' ἐξ αὐτῆς γεγόνασι τῶν μὲν στωικῶν ἀντίπατρός τε καὶ ἀρχέδημος, καὶ νέστωρ. ἔτι δ' ἀθηνόδωροι δύο ὧν ὁ μὲν, κορδυλίων καλούμενος, συνεβίωσε μάρκῳ κάτωνι. καὶ τελευτᾷ παρ' ἐκείνῳ. ὁ δὲ, τοῦ σάνδωνος ὁ κ

καὶ καναΐτην φασὶν ἀπὸ κώμης τινὸς, καίσαρος καθηγήσατο. καὶ τιμῆς ἔτυχε μεγάλης. κατιών τε
εἰς τὴν πατρίδα ἤδη γηραιὸς, κατέλυσε τὴν καθεστῶσαν πολιτείαν. κακῶς φερομένην ὑπό τε
ἄλλων, καὶ βοηθοῦ κακοῦ μὲν ποιητοῦ. κακοῦ δὲ πολίτου. δημοκοπίαις ἰσχύοντος τὸ πλεῖον. ἐπῆρε
δ' αὐτὸν, καὶ ἀντώνιος κατ' ἀρχὰς ἀποδεξάμενος τὸ γραφὲν εἰς τὴν ἐν φιλίπποις νίκην ἔπος, καὶ ἔτι
μᾶλλον ἡ εὐχέρεια ἡ ἐπιπολάζουσα παρὰ τοῖς ταρσεῦσιν ὥστ' ἀπαύστως σχεδιάζειν. παραχρῆμα πρὸς τὴν
διδομένην ὑπόθεσιν, καὶ δὴ καὶ γυμνασιαρχίαν ὑπισχνούμενος ταρσεῦσι τοῦτον ἀντὶ γυμνασιάρχου
κατέστησε. καὶ τὰ ἀναλώματα ἐπίστευσεν αὐτῷ. ἐφωράθη δὲ νοσφισάμενος τά τε ἄλλα καὶ τοὔ-
λαιον ἐλεγχόμενος δ' ὑπὸ τῶν κατηγόρων ἐπὶ τοῦ ἀντωνίου, παρῃτεῖτο τὴν ὀργὴν σὺν ἄλλοις,
καὶ ταῦτα λέγων. ὅτι ὥσπερ ὅμηρος ἐξύμνησεν ἀχιλλέα, καὶ ἀγαμέμνονα, καὶ ὀδυσσέα, οὕτως ἐγὼ
σε. οὐ δίκαιος οὖν εἰμι εἰς τοιαύτας ἄγεσθαι διαβολὰς ἐπὶ σοῦ. παραλαβὼν οὖν ὁ κατήγορος τὸν
λόγον. ἀλλ' ὅμηρος μὲν ἔφη, ἔλαιον μὲν ἀγαμέμνονος οὐκ ἔκλεψεν, ἀλλ' οὐδὲ ἀχιλλέως, σὺ δὲ, ὥστε
δώσεις δίκην. διακρουσάμενος δ' οὖν θεραπείαις τισὶ τὴν ὀργὴν, οὐδὲν ἧττον διετέλεσεν ἄγων, καὶ φέ-
ρων τὴν πόλιν μέχρι τῆς καταστροφῆς τοῦ ἀντωνίου. τοιαύτην δὲ, πόλιν καταλαβὼν ὁ ἀθηνόδω-
ρος, τέως μὲν ἐπεχείρει λόγῳ μετάγειν κἀκεῖνον, καὶ τοὺς συστασιώτας. ὡς δ' οὐκ ἀπείχοντο ὕβρεως
οὐδεμιᾶς, ἐχρήσατο τῇ δοθείσῃ ὑπὸ τοῦ καίσαρος ἐξουσίᾳ. καὶ ἐξέβαλεν αὐτοὺς καταγνοὺς φυγήν.
οἱ δὲ πρῶτον μὲν κατετειχογράφησαν αὐτοῦ τοιαῦτα· ἔργα νέων. βουλαὶ δὲ μέσων. πορδαὶ δὲ γε-
ρόντων. ἐπεὶ δ' ἐκεῖνος ἐν παιδιᾶς μέρει δεξάμενος, ἐκέλευσε παρεπιγράψαι. βρονταὶ δὲ γερόν-
των. καταφρονήσας δ' ἐπὶ τοῦ ἐπιεικοῦς, εὔλυτον τὸ κοιλίδιον ἔχων, προσέρανε πολὺ τῇ θύρᾳ καὶ
τῷ τοίχῳ, νύκτωρ παριὼν τὴν οἰκίαν. ὁ δὲ, τῆς στάσεως κατηγορῶν ἐν ἐκκλησίᾳ τὴν νόσον τῆς πό-
λεως ἔφη, καὶ τὴν καχεξίαν, πολλαχόθεν σκοπεῖν ἔξεστι, καὶ δὴ καὶ ἐκ τῶν διαχωρημάτων. οὗτοι μὲν
στωικοὶ ἄνδρες, ἀκαδημαϊκὸς δὲ νέστωρ ὁ καθ' ἡμᾶς, ὁ μαρκέλλου καθηγησάμενος, τοῦ ὀκταουΐας
παιδὸς τῆς καίσαρος ἀδελφῆς. καὶ οὗτος δὲ προέστη τῆς πολιτείας διαδεξάμενος τὸν ἀθηνόδωρον.
καὶ διετέλεσε τιμώμενος παρά τε τοῖς ἡγεμόσι, καὶ ἐν τῇ πόλει. τῶν δ' ἄλλων φιλοσόφων.
οὓς ἔσχεν ἀγνοίην, καὶ τοὔνομα μνησθείημεν. πλουτιάδης δὲ, ἐγένετο, καὶ διογένης. τῶν περιπο-
λιζόντων, καὶ σχολὰς διατιθεμένων εὐφυῶς. ὁ δὲ διογένης, καὶ ποιήματα ὥσπερ ἀπεφοίβαζε τε
θείσης ὑποθέσεως τραγικὰ ὡς ἐπὶ τὸ πολύ. γραμματικοὶ δὲ, ὧν καὶ συγγράμματά ἐστιν, ἀρτε-
μίδωρός τε, καὶ διόδωρος. ποιητὴς δὲ τραγῳδίας ἄριστος τῶν τῆς πλειάδος καταριθμουμένων.
διονυσίδης μάλιστα δ' ἡ ῥώμη δύναται διδάσκειν τὸ πλῆθος τῶν ἐκ τῆς δὲ τῆς πόλεως φιλολόγων.
ταρσέων γὰρ καὶ ἀλεξανδρέων ἐστὶ μεστή. τοιαύτη μὲν ἡ ταρσός. μετὰ δὲ τὸν κύδνον ὁ πύραμος ἐκ
τῆς καταονίας ῥέων. οὗ περ, καὶ πρότερον ἐμνήσθημεν. φησὶ δ' ἀρτεμίδωρος ἐντεῦθεν εἰς σόλους
εὐθυπλοΐα σταδίους εἶναι πεντακοσίους. πλησίον δὲ, καὶ μαλλὸς ἐφ' ὕψους κειμένη. κτίσμα ἀμφι-
λόχου. καὶ μόψου τοῦ ἀπόλλωνος, καὶ μαντοῦς. περὶ ὧν πολλὰ μυθολογεῖται καὶ δὴ καὶ ἡμεῖς ἐμνή-
σθημεν αὐτῶν ἐν τοῖς περὶ κάλχαντος λόγοις. καὶ τῆς ἔριδος ἣν ἤρισαν περὶ τῆς μαντικῆς ὅ, τε
κάλχας, καὶ ὁ μόψος. ταύτην γὰρ τὴν ἔριν μεταφέρουσιν ἔνιοι καθάπερ. καὶ σοφοκλῆς εἰς τὴν
κιλικίαν. καλέσας αὐτὴν ἐκεῖνος παμφυλίαν τραγικῶς. καθάπερ, καὶ τὴν κιλικίαν καρίαν. καὶ
τὴν τροίαν καὶ λυκίαν, καὶ φρυγίαν. καὶ τὸν θάνατον δὲ τοῦ κάλχαντος ἐνταῦθα παραδιδόασιν ἄλλοι τε
καὶ σοφοκλῆς. οὐ μόνον δὲ τὴν περὶ τῆς μαντικῆς ἔριν μεμυθεύκασιν, ἀλλὰ καὶ τῆς ἀρχῆς. τὸν γὰρ
μόψον φασὶ, καὶ τὸν ἀμφίλοχον ἐκ τροίας ἐλθόντας κτίσαι μαλλόν. εἶτ' ἀμφίλοχον εἰς ἄργος ἐλθεῖν.
δυσαρεστήσαντα δὲ τοῖς ἐκεῖ πάλιν ἀναστρέψαι δεῦρο. ἀποκλειόμενον δὲ τῆς κοινωνίας συμβαλεῖν
εἰς μονομαχίαν πρὸς τὸν μόψον. πεσόντας δ' ἀμφοτέρους ταφῆναι μὴ ἐν ἐπόψει ἀλλήλοις. καὶ νῦν
οἱ τάφοι δείκνυνται περὶ μάργαρσα τοῦ πυράμου πλησίον. ἐντεῦθεν δ' ἦν κράτης ὁ γραμματικὸς
οὗ φασι γενέσθαι μαθητὴν παναίτιον. ὑπέρκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης ἀλήϊον πεδίον. δι'
οὗ φιλώτας διήγαγεν ἀλεξάνδρῳ τὴν ἵππον. ἐκείνου τὴν φάλαγγα ἀγαγόντος ἐκ τῶν σόλων διὰ τῆς
παραλίας καὶ τῆς μαλλώτιδος ἐπί τε ἰσσὸν καὶ τὰς δαρείου δυνάμεις. φασὶ δὲ, καὶ ἐναγίσαι τῷ
ἀμφιλόχῳ τὸν ἀλέξανδρον, διὰ τὴν ἐξ ἄργους συγγένειαν. ἡσίοδος δ' ἐν σόλοις ὑπὸ ἀπόλλωνος ἀναι-
ρεθῆναι τὸν ἀμφίλοχον φησίν. οἱ δὲ περὶ τὸ ἀλήϊον πεδίον. οἱ δ' ἐν συρίᾳ ἀπὸ τοῦ ἀληΐου ἀπιόντα
διὰ τὴν ἔριν. μετὰ δὲ μαλλὸν αἰγαῖα πολίχνιον ὕφορμον ἔχον. εἶτ' ἀμανίδες πύλαι ὕφορμον
ἔχουσαι. εἰς ἃς τελευτᾷ τὸ ἀμανὸν ὄρος ἀπὸ τοῦ ταύρου καθῆκον. ὃ τῆς κιλικίας ὑπέρκειται
κατὰ τὸ πρὸς ἕω μέρος. οἱ μὲν ὑπὸ πλειόνων δυναστευόμενον τυράννων ἐχόντων ἐρύματα.
καθ' ἡμᾶς δὲ κατέστη κύριος ἀνὴρ πάντων ἀξιόλογος. καὶ βασιλεὺς ὑπὸ ῥωμαίων ὠνομάσθη διὰ
τὰς ἀνδραγαθίας ταρκονδίμοντος. καὶ τὴν διαδοχὴν τοῖς μετ' αὐτὸν παρέδωκε. μετὰ δὲ αἰγαίας
ἰσσὸς. πολίχνιον ὕφορμον ἔχον. καὶ ποταμὸς πίναρος, ἐνταῦθα ὁ ἀγὼν συνέπεσεν ἀλεξάνδρῳ, καὶ
δαρείῳ, καὶ ὁ κόλπος εἴρηται ἰσσικός. ἐν αὐτῷ δὲ πόλις ῥωσὸς. καὶ μυρίανδρος ἑτέρα πόλις. καὶ ἀλε

ξάνδρεια. καὶ νικόπολις. καὶ μόψου ἑστία. καὶ πύλαι λεγόμεναι ὅριον κιλίκων τε καὶ σύρων. ἔστι δὲ τῇ κιλικίᾳ ἐστὶ, καὶ τὸ τῆς σαρπηδονίας ἀρτέμιδος ἱερὸν καὶ μαντεῖον. τοὺς δὲ χρησμοὺς ἔνθεοι προθεσπίζουσι. μετὰ δὲ τὴν κιλικίαν πρώτη πόλις ἐστὶ τῶν σύρων σελεύκεια ἡ ἐν πιερίᾳ. καὶ πλησίον ὀρόντης ἐκδίδωσι ποταμός. ἔστι δ᾽ ἀπὸ σελευκείας εἰς σόλους ἐπ᾽ εὐθείας πλοῦς ὀλίγον ἀπολείπων τῶν χιλίων σταδίων. τῶν δ᾽ ἐν τροίᾳ κιλίκων ὧν ὅμηρος μέμνηται πολὺ διεστώτων ἀπὸ τῶν ἔξω τοῦ ταύρου κιλίκων, οἱ μὲν ἀποφαίνουσιν ἀρχηγέτας τοὺς ἐν τῇ τροίᾳ τούτων. καὶ δεικνύουσί τινας τόπους κἀνταῦθα ὥσπερ ἐν τῇ παμφυλίᾳ θήβην, καὶ λυρνησσόν. οἱ δ᾽ ἔμπαλιν καὶ ἀλήϊόν τι πεδίον κἀκεῖ δεικνύουσι. περιωδευμένων δὲ καὶ τῶν ἔξω τοῦ ταύρου μερῶν τῆς προειρημένης χερρονήσου, προσθετέον ἐστὶ, καὶ ταῦτα. ὁ γὰρ ἀπολλόδωρος ἐν τοῖς περὶ νεῶν ἔτι, καὶ τοιαῦτα λέγει. τοὺς γὰρ ἐκ τῆς ἀσίας ἐπικούρους τῶν τρώων, ἅπαντας καταριθμεῖσθαι φησὶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. τῆς χερρονήσου κατ᾽ οἴκους ὄντας. ἧς ὁ στενώτατος ἰσθμός ἐστι ὁ μεταξὺ τοῦ κατὰ σινώπην μυχοῦ καὶ ἰσσοῦ. αἱ δ᾽ ἐκτὸς πλευραί φησι τριγωνοειδοῦς οὔσης, εἰσὶ μὲν ἄνισοι. παρήκουσι δὲ ἡ μὲν, ἀπὸ κιλικίας ἐπὶ χελιδονίας. ἡ δ᾽ ἐνθένδε ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ εὐξείνου. ἡ δ᾽ ἐπὶ σινώπην πάλιν ἐνθένδε. τὸ μὲν οὖν μόνους τοὺς ἐν τῇ χερρονήσῳ διὰ τῶν αὐτῶν, ἐλέγχοιτ᾽ ἂν ψεῦδος ὂν δι᾽ ὧν ἐλέγξαμεν πρότερον μὴ μόνον τοὺς ἐντὸς ἅλυος. οἱ γὰρ περὶ φαρνακίαν τόποι ἐν οἷς τοὺς ἀλιζώνους ἔφαμεν ὥσπερ ἔξω τοῦ ἅλυος εἰσὶν, οὕτω καὶ ἔξω τοῦ ἰσθμοῦ. εἴπερ καὶ τῶν στενῶν τῶν μεταξὺ σινώπης, καὶ ἰσσοῦ. καὶ οὐ τούτων γε μόνον. ἀλλὰ καὶ τῶν κατ᾽ ἀλήθειαν στενῶν τῶν μεταξὺ ἀμισοῦ τε, καὶ ἰσσοῦ. οὐ δὲ γὰρ ἐκεῖνος ὀρθῶς ἀφώρισται τὸν ἰσθμόν. καὶ τὰ κατ᾽ αὐτὸν στενὰ ἐκεῖνα ἀντὶ τούτων θείς. πάντων δ᾽ εὐηθέστατον τὸ τὴν χερρόνησον τριγωνοειδῆ φήσαντα. τρεῖς ἀποφαίνεσθαι τὰς ἔξω πλευράς. ὁ γὰρ τὰς ἔξω λέγων πλευρὰς, ἔοικεν ὑπεξαιρουμένῳ τὴν κατὰ τὰ στενὰ, ὡς καὶ ταύτην οὖσαν πλευράν. οὐκ ἔξω δὲ οὐδ᾽ ἐπὶ θαλάττῃ. εἰ μὲν τοίνυν τὰ στενὰ ταῦτα οὕτως ἦν συνηγμένα. ὥστε μικρὸν ἀπολείπειν τοῦ συνάπτειν ἐπ᾽ ἀλλήλαις τήν τε ἐπὶ ἰσσὸν, καὶ τὴν ἐπὶ σινώπην ἀποφαίνουσαν πλευρὰν, συνεχώρει ἂν τριγωνοειδῆ λέγεσθαι τὴν χερρόνησον. νῦν δέ γε τρισχιλίους σταδίους ἀπολειπόντων μεταξὺ τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ λεγομένων στενῶν, ἀμαθία τὸ λέγειν τριγωνοειδὲς τὸ τοιοῦτον τετράπλευρον. οὐδὲ χωρογραφικόν. ὁ δὲ, καὶ χωρογραφίαν ἐξέδωκεν ἐν κωμικῷ μέτρῳ γῆς περίοδον ἐπιγράψας. μένει δ᾽ ἡ αὐτὴ ἀμαθία κἂν εἰς τοὐλάχιστον καταγάγῃ διάστημά τις τὸν ἰσθμόν. ὅσον εἰρήκασιν οἱ πλεῖστον ψευσάμενοι τὸ ἥμισυ τοῦ παντός. ὅσον εἴρηκε, καὶ ἀρτεμίδωρος χιλίους, καὶ πεντακοσίους σταδίους. οὐδὲ γὰρ τοῦτο συναγωγὴν ποιεῖ τριγωνοειδοῦς σχήματος. ἀλλ᾽ οὐδὲ τὰς πλευρὰς ὀρθῶς διῄρηται τὰς ἔξω. τὴν ἀπὸ ἰσσοῦ μέχρι χελιδονίων εἰπών. λοιπὴ γάρ ἐστιν ὅλη ἐπ᾽ εὐθείας ἡ λυκιακὴ παραλία ταύτῃ. καὶ ἡ τῶν ῥοδίων περαία μέχρι φύσκου. ἐντεῦθεν δὲ καμπὴν λαβοῦσα ἡ ἤπειρος, ἄρχεται τὴν δευτέραν, καὶ δυσμικὴν πλευρὰν, μέχρι προποντίδος, καὶ βυζαντίου. φήσαντος δὲ τοῦ ἐφόρου διότι τὴν χερρόνησον κατοικεῖ ταύτην ἑκκαίδεκα γένη, τρία μὲν ἑλληνικὰ, τὰ δὲ λοιπὰ βάρβαρα χωρὶς τῶν μιγάδων, ἐπὶ θαλάττῃ μὲν κίλικες καὶ λύκιοι, καὶ πάμφυλοι καὶ βιθυνοὶ καὶ παφλαγόνες. καὶ μαριανδυνοὶ καὶ τρῶες καὶ κᾶρες. πισίδαι δὲ καὶ μυσοὶ καὶ χάλυβες καὶ φρύγες, καὶ μιλύαι ἐν τῇ μεσογαίᾳ. διαιρῶν ταῦτα ὁ ἀπολλόδωρος ἑπτακαιδέκατον φησὶν εἶναι τὸ τῶν γαλατῶν. ὃ νεώτερον ἐστὶ τοῦ ἐφόρου. τῶν δ᾽ εἰρημένων, τὰ μὲν ἑλληνικὰ μήπω, καὶ τὰ ἰωϊκὰ κατῳκίσθαι. τὰ δὲ βάρβαρα πολλὴν ἔχει σύγχυσιν διὰ τὸν χρόνον. καταλέγεσθαι δ᾽ ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ τούς τε τρῶας, καὶ τοὺς νῦν ὀνομαζομένους παφλαγόνας, καὶ μυσῶν καὶ καρῶν, καὶ φρυγῶν καὶ κιλίκων, μῄονας ἀντὶ λυδῶν, καὶ ἄλλους ἀγνῶτας. οἷον ἁλιζῶνας καὶ καύκωνας. ἐκτὸς δὲ τοῦ καταλόγου κητείους τε καὶ σολύμους, καὶ κίλικας τοὺς ἐκ θήβης πεδίου καὶ λέλεγας. παμφύλους δὲ καὶ βιθυνοὺς, καὶ μαριανδυνοὺς. καὶ πισίδας, καὶ χάλυβας, καὶ μιλύας, καὶ καππάδοκας μὴ δ᾽ ὠνομάσθαι. τοὺς μὲν, διὰ τὸ μηδέπω τοὺς τόπους κατῳκηκέναι τούτους. τοὺς δὲ, διὰ τὸ ἑτέροις γένεσι περιέχεσθαι. ὡς ἰδριεῖς μὲν καὶ τερμίλας καρσί. δολίονες δὲ καὶ βέβρυκες φρυξί. φαίνεται δ᾽ οὔτε τοῦ ἐφόρου τὴν ἀπόφασιν διαιτῶν ἱκανῶς. τά τε τοῦ ποιητοῦ ταράττων, καὶ καταψευδόμενος. ἔφορον τε γὰρ τοῦτο πρῶτον ἀπαιτεῖν ἐχρῆν. τί δὴ τοὺς χάλυβας τίθησιν ἐντὸς τῆς χερρονήσου. τοσοῦτον ἀφεστῶτας, καὶ σινώπης καὶ ἀμισοῦ πρὸς ἕω. οἱ γὰρ λέγοντες τὸν ἰσθμὸν τῆς χερρονήσου ταύτης, τὴν ἀπὸ ἰσσοῦ γραμμὴν ἐπὶ τὸν εὔξεινον, ὡς ἂν μεσημβρινήν τινα τιθέασι ταύτην, οἱ μὲν, εἶναι νομίζουσι τὴν ἐπὶ σινώπην. οἱ δὲ, τὴν ἐπ᾽ ἀμισοῦ. ἐπὶ δὲ τὴν χαλυβικὴν οὐδείς. λοξὴ γάρ ἐστι τελέως. ὁ γὰρ δὴ διὰ χαλύβων μεσημβρινὸς, διὰ τῆς μικρᾶς ἀρμενίας γράφοιτ᾽ ἂν, καὶ τοῦ εὐφράτου. τὴν καππαδοκίαν ὅλην ἐντὸς ἀπολαμβάνων, καὶ τὴν κομμαγηνήν. καὶ τὸν ἀμανὸν, καὶ τὸν ἰσσικὸν κόλπον. εἰ δ᾽ οὖν καὶ τὴν λοξὴν γραμμὴν ὁρίζειν τὸν ἰσθμὸν συγχωρήσαιμεν, τὰ πλεῖστά γε τούτων, καὶ μάλιστα ἡ καππαδοκία ἐντὸς ἀπολαμβάνοιτ᾽ ἂν, καὶ ὁ νῦν ἰδίως λεγόμενος πόντος τῆς καππαδοκίας μέρος ὢν τὸ πρὸς τῷ εὐξείνῳ. ὥστ᾽ εἰ τοὺς χάλυβας τῆς χερρονήσου θετέον μέρη, πολὺ μᾶλλον τοὺς καταόνας, καὶ καππάδοκας ἀμφοτέρους, καὶ λυκάονας δὲ οὓς καὶ αὐτὸς

τοὺς παρῆκε. διατί δ' ἐν τοῖς μεσογαίοις ἔταξε τοὺς χάλυβας, οὓς ὁ ποιητὴς ἀλιζόνας ἐκάλεσεν ὡς πρὸ καὶ ἡμεῖς ἀπεδείξαμεν. ἄμεινον δὲ ἦν διελεῖν. καὶ τοὺς μὲν, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ φάναι. τοὺς δὲ, ἐν τῇ μεσογαίᾳ. ὅπερ καὶ ἐπὶ τῆς καππαδοκίας ποιητέον, καὶ τῆς κιλικίας. ὁ δὲ, τὴν μὲν, οὐδ' ὠνόμασε. τοὺς κίλικας δὲ τοὺς ἐπὶ θαλάττῃ μόνον εἴρηκεν. οἱ οὖν ἐπ' ἀντιπάτρῳ τῷ δερβήτῃ, καὶ οἱ ὁμοναδεῖς, καὶ ἄλλοι πλείους οἱ συνάπτοντες τοῖς πισίδαις οἱ οὐκ ἴσασι θάλατταν ἀνδρες. οὐδ' ἐθάλεσι μεμιγμένον εἶδαρ ἔδουσι, τίν' ἂν λάβωσι τάξιν. ἀλλ' οὐδὲ λυδοὺς οὐδὲ μήονας εἴρηκεν, εἴτε δύο, εἴθ' οἱ αὐτοί εἰσι. καὶ εἴτε καθ' ἑαυτοὺς εἴτ' ἐν ἑτέρῳ γένει περιεχομένους. οὕτω γὰρ ἐπίσημον ἔθνος οὐκ ἀποκρύψαι δυνατόν. οὔτε μὴ λέγων περὶ αὐτοῦ μηδὲν, οὐκ ἂν, δόξειε παραλιπεῖν τι τῶν καιριωτάτων. τίνες δ' εἰσὶν οἱ μιγάδες. οὐ γὰρ ἂν ἔχοιμεν εἰπεῖν παρὰ τοὺς λεχθέντας τόπους. ἢ ὀνομάσθαι ὑπ' αὐτοῦ, ἢ παραλελεῖφθαι ἄλλους οὓς ἀποδώσομεν τοῖς μιγάσιν. οὐδέ γε αὐτῶν τινας τούτων, ὧν ἢ εἶπεν, ἢ παρέλιπε. καὶ γὰρ εἰ κατεμέχθησαν, ἀλλ' ἡ ἐπικράτεια πεποίηκεν, ἢ ἕλληνας, ἢ βαρβάρους. τρίτον δὲ γένος οὐδὲν ἴσμεν τὸ μικτόν. πῶς δὲ τρία γένη τῶν ἑλλήνων ἐστὶ τὰ τὴν χερρόννησον οἰκοῦντα. εἰ γὰρ ὅτι τὸ παλαιὸν οἱ αὐτοὶ ἦσαν ἴωνες, καὶ ἀθηναῖοι, λεγέσθωσαν καὶ οἱ δωριεῖς, καὶ οἱ αἰολεῖς οἱ αὐτοί. ὥστε δύο ἔθνη γένοιτ' ἄν. εἰ δὲ διαιρετέον κατὰ τὰ ὕστερα ἔθνη καθάπερ, καὶ τὰς διαλέκτους, τέτταρα ἂν εἴη, καὶ τὰ ἔθνη καθάπερ, καὶ αἱ διάλεκτοι. οἰκοῦσι δὲ τὴν χερρόννησον ταύτην, καὶ μάλιστα κατὰ τὸν τοῦ ἐφόρου διορισμὸν. οὐκ ἴωνες μόνον ἀλλὰ καὶ ἀθηναῖοι καθάπερ ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα δεδήλωται. τοιαῦτα μὲν δὴ πρὸς τὸν ἔφορον διαπορεῖν ἄξιον. ἀπολλόδωρος δὲ τούτων μὲν ἐφρόντισεν οὐδὲν, τοῖς δ' ἑκκαίδεκα ἔθνεσι, προστίθησιν ἑπτακαιδέκατον τὸ τῶν γαλατῶν. ἄλλως μὲν χρήσιμον λεχθῆναι. πρὸς δὲ τὴν δίαιταν τῶν ὑπὸ τοῦ ἐφόρου λεγομένων, ἢ παραλειπομένων, οὐ δέον. εἴρηκε δὲ τὴν αἰτίαν αὐτός. ὅτι ταῦτα πάντα νεώτερα τῆς ἐκείνου ἡλικίας. μεταβὰς δ' ἐπὶ τὸν ποιητὴν, τοῦτο μὲν ὀρθῶς λέγει. διότι πολλὴ σύγχυσις γεγένηται τῶν βαρβάρων ἐθνῶν ἀπὸ τῶν τρωϊκῶν ἐς τὰ νῦν διὰ τὰς μεταπτώσεις. καὶ γὰρ προσγέγονέ τινα, καὶ ἐκλέλοιπε. καὶ διέσπασται, καὶ συνῆκται εἰς ἕν. οὐ δεόντως δὲ τὴν αἰτίαν διττὴν ἀποφαίνει. δι' ἣν οὐ μέμνηταί τινων ὁ ποιητής. ἢ τῷ μή πω τότ' οἰκεῖσθαι ὑπὸ τοῦ ἔθνους τούτου, ἢ τῷ ἐν ἑτέρῳ γένει περιέχεσθαι. τὴν γὰρ καππαδοκίαν οὐκ εἴρηκεν. οὐδὲ τὴν καταονίαν. ὡς δ' αὔτως τὴν λυκαονίαν δι' οὐδέτερον τούτων. οὐ γὰρ ἔχομεν τοιαύτην ἱστορίαν ἐπ' αὐτῶν οὐδεμίαν. γελοῖόν τε τὸ τοὺς καππάδοκας, καὶ λυκάονας, διατί μὲν ὅμηρος παρέλιπε φροντίσαι, καὶ ἀπολογήσασθαι. διατί δ' ἔφορος παρῆλθε, παρελθεῖν καὶ αὐτόν. καὶ ταῦτα παραθέμενον πρὸς αὐτὸ τοῦτο τὴν ἀπόφασιν τοῦ ἀνδρὸς πρὸς τὸ ἐξετάσαι, καὶ διαιτῆσαι. καὶ διότι μὲν μήονας ἀντὶ λυδῶν ὅμηρος εἶπε διδάξαι. ὅτι δ' οὔτε λυδοὺς, οὔτε μήονας εἴρηκεν ἔφορος μὴ ἐπισημήνασθαι. φήσας δὲ ἀγνώτων τινῶν μεμνῆσθαι τὸν ποιητὴν, καύκωνας μὲν ὀρθῶς λέγει, καὶ σολύμους καὶ κητείους, καὶ λέλεγας καὶ κίλικας τοὺς ἐκ θήβης πεδίου. τοὺς δ' ἀλιζῶνας αὐτὸς πλάττει. μᾶλλον δ' οἱ πρῶτοι τοὺς ἀλιζῶνας ἀγνοήσαντες τίνες εἰσί. καὶ μεταγράφοντες πλεοναχῶς. καὶ πλάττοντες τὴν τοῦ ἀργύρου γενέθλην. καὶ ἄλλα πολλὰ μέταλλα ἐκλελυμένα ἅπαντα. πρὸς ταύτην δὲ τὴν φιλοτιμίαν κἀκεῖνα συνήγαγον τὰς ἱστορίας ἃς ὁ σκήψιος τίθησι παρὰ καλλισθένους λαβὼν, καὶ ἄλλων τινῶν. οὐ καθαρευόντων τῆς περὶ τῶν ἀλιζόνων ψευδοδοξίας. ὡς μὲν ταντάλου πλοῦτος, καὶ τῶν πελοπιδῶν, ἀπὸ τῶν περὶ φρυγίαν, καὶ σίπυλον μετάλλων ἐγένετο. ὁ δὲ κάδμου περὶ θρᾴκην, καὶ τὸ παγγαῖον ὄρος. ὁ δὲ πριάμου ἐκ τῶν ἀστυρείοις περὶ ἄβυδον χρυσείων, ὧν καὶ νῦν ἔτι μικρὰ λείπεται. πολλὴ δ' ἡ ἐκβολὴ, καὶ τὰ ὀρύγματα σημεῖα τῆς πάλαι μεταλλείας. ὁ δὲ μίδου ἐκ τῶν περὶ τὸ βέρμιον ὄρος. ὁ δὲ γύγου, καὶ ἀλυάττου, καὶ κροίσου ἀπὸ τῶν ἐν λυδίᾳ τῶν μεταξὺ ἀταρνέως τε καὶ περγάμου, πολίχνη ἐρήμη. ἐκμεμεταλλευμένα ἔχουσα τὰ χωρία. ἔτι καὶ ταῦτα μέμψαιτο ἄν τις τοῦ ἀπολλοδώρου. ὅτι τῶν νεωτέρων καινοτομούντων πολλὰ παρὰ τὰς ὁμηρικὰς ἀποφάσεις. εἰωθὼς ταῦτ' ἐλέγχειν ἐπὶ πλέον. ἐνταῦθα οὐκ ὠλιγώρηκε μόνον. ἀλλὰ καὶ τἀναντία εἰς ἓν συνάγει τὰ μὴ ὡσαύτως λεγόμενα. ὁ μὲν γὰρ ξάνθος ὁ λυδὸς, μετὰ τὰ τρωϊκά φησιν ἐλθεῖν τοὺς φρύγας ἐκ τῆς εὐρώπης. καὶ τῶν ἀριστερῶν τοῦ πόντου. ἀγαγεῖν δ' αὐτοὺς σκαμάνδριον ἐκ βερεκυντῶν, καὶ ἀσκανίας. ἐπιλέγει δὲ τούτοις ὁ ἀπολλόδωρος, ὅτι τῆς ἀσκανίας ταύτης μνημονεύει καὶ ὅμηρος. ἧς ὁ ξάνθος.

» Φόρκυς δὲ φρύγας ἦγε, καὶ ἀσκάνιος θεοειδὴς, Τῆλ' ἐξ ἀσκανίης.

Ἀλλ' εἰ οὕτως ἔχει, ἡ μετανάστασις ὕστερον ἂν εἴη τῶν τρωϊκῶν γεγονυῖα. ἐν δὲ τοῖς τρωϊκοῖς τὸ λεγόμενον ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ ἐπικουρικὸν, ἧκεν ἐκ τῆς περαίας ἐκ τῶν βερεκυντῶν, καὶ τῆς ἀσκανίας. τίνες οὖν φρύγες ἦσαν.

» Οἵ ῥα τότ' ἐστρατόωντο παρ' ὄχθας σαγγαρίοιο.

» Ὅτε πρίαμος ἐπίκουρος ἐὼν, μετὰ τοῖσιν ἐλέγμην.

φησί. πῶς δὲ ἐκ μὲν βερεκυντῶν μετεπέμπετο φρύγας ὁ πρίαμος. πρὸς οὓς οὐδὲν ἦν αὐτῷ συμβόλαιον. τοὺς δ' ὁμόρους, καὶ οἷς αὐτὸς πρότερον ἐπικούρησε παρέλιπεν. οὕτω δὲ περὶ τῶν φρυγῶν εἰπὼν, ἐν-

ἐπιφέρει, καὶ τὰ περὶ τῶν Μυσῶν· οὐχ ὁμολογούμενα τούτοις. λέγει δὲ γάρ φησι, καὶ τῆς Μυσίας κώ-
μην Ἀσκανίαν περὶ λίμνην ὁμώνυμον· ἐξ ἧς καὶ τὸν Ἀσκάνιον ποταμὸν ῥεῖν· οὗ μνημονεύει, καὶ Εὐφο-
ρίων· Μυσοῖς παρ' ὕδασιν Ἀσκανίοιο, καὶ ὁ Αἰτωλὸς Ἀλέξανδρος.

» Εἰ καὶ ἐπ' Ἀσκανίῳ δώματ' ἔχουσι ῥόῳ.

» Λίμνης Ἀσκανίης ἐπὶ χείλεσιν. Ἔνθα Δολίων υἱὸς Σιληνοῦ νάσσατο καὶ Μελίης.

Καλοῦσι δέ φησι Δολιονίδα καὶ Μυσίαν, τὴν περὶ Κύζικον ἰόντι εἰς Μιλητούπολιν, εἰ οὖν οὕτως ἔχει
ταῦτα καὶ ἐκμαρτυρεῖται ἀπὸ τῶν δεικνυμένων νῦν καὶ ἀπὸ τῶν ποιητῶν, τί ἐκώλυε τὸν Ὅμηρον
ταύτης μεμνῆσθαι τῆς Ἀσκανίας. ἀλλὰ μὴν τοῖς ἀπὸ Ξάνθου λεγομένοις. εἴρηται δὲ καὶ πρότερον
περὶ τούτων ἐν τῷ περὶ Μυσῶν καὶ Φρυγῶν λόγῳ. ὡς δ' ἐχέτω πέρας. λοιπὸν δὲ τὴν πρὸς νότον πα-
ρακειμένην τῇ χερρονήσῳ ταύτῃ περιοδεῦσαι νῆσον τὴν Κύπρον. εἴρηται δ' ὅτι ἡ περιεχομένη θάλαττα,
ἀπὸ τῆς Αἰγύπτου καὶ Φοινίκης καὶ Συρίας καὶ τῆς λοιπῆς παραλίας μέχρι τῆς Ῥοδίων, σύνθετός
πώς ἐστιν ἔκ τε τοῦ Αἰγυπτίου πελάγους καὶ τοῦ Παμφυλίου καὶ τοῦ κατὰ τὸν Ἰσσικὸν κόλπον. ἐν δὲ ταύτῃ
ἐστὶν ἡ Κύπρος νῆσος τὰ μὲν προσάρκτια μέρη, συνάπτοντα ἔχουσα τῇ Τραχείᾳ Κιλικίᾳ· καθὰ δὴ καὶ
προσεχεστάτη τῇ ἠπείρῳ ἐστί. τὰ δὲ ἑῷα τῷ Ἰσσικῷ κόλπῳ. τὰ δ' ἑσπέρια τῷ Παμφυλίῳ κλυζόμενα
πελάγει. τὰ δὲ νότια τῷ Αἰγυπτίῳ. τοῦτο μὲν σύρρουν ἐστὶν ἀπὸ τῆς ἑσπέρας, τῷ Λιβυκῷ καὶ Καρπαθίῳ
πελάγει· ἀπὸ δὲ τῶν νοτίων καὶ τῶν ἑῴων μερῶν, ἥ τε Αἴγυπτός ἐστι καὶ ἡ ἐφεξῆς παραλία μέχρι Σελευ-
κείας τε καὶ Ἰσσοῦ. πρὸς ἄρκτον δ' ἥ τε Κύπρος καὶ τὸ Παμφύλιον πέλαγος. τοῦτο δὲ ἀπὸ μὲν τῶν ἄρ-
κτων περιέχεται τοῖς τε ἄκροις τῆς Τραχείας Κιλικίας καὶ τῆς Παμφυλίας καὶ Λυκίας μέχρι τῆς
Ῥοδίας. ἀπὸ δὲ τῆς δύσεως, τῇ Ῥοδίων νήσῳ. ἀπὸ δὲ ἀνατολῆς τῇ Κύπρῳ τῇ κατὰ Πάφον καὶ τὸν Ἀκάμαντα.
ἀπὸ δὲ τῆς μεσημβρίας σύρρουν ἐστὶ τῷ Αἰγυπτίῳ πελάγει. ἔστι δ' ὁ μὲν κύκλος τῆς Κύπρου σταδίων τρι-
σχιλίων καὶ τετρακοσίων εἴκοσι κατακολπίζοντι. μῆκος δὲ ἀπὸ τῶν Κλειδῶν ἐπὶ τὸν Ἀκάμαντα πεζῇ,
σταδίων χιλίων τετρακοσίων ὁδεύοντι ἀπὸ ἀνατολῆς ἐπὶ δύσιν. εἰσὶ δὲ αἱ μὲν Κλεῖδες νησία δύο προκεί-
μενα τῇ Κύπρῳ κατὰ τὰ ἑωθινὰ μέρη τῆς νήσου τὰ διέχοντα τοῦ Πυράμου σταδίους ἑπτακοσίους. ὁ δ' Ἀ-
κάμας ἐστὶν ἄκρα δύο μαστοὺς ἔχουσα καὶ ὕλην πολλήν. κείμενος μὲν ἐπὶ τῶν ἑσπερίων τῆς νήσου μερῶν·
ἀνατείνων δὲ πρὸς ἄρκτους. ἐγγυτάτω μὲν πρὸς Σελινοῦντα τῆς Τραχείας Κιλικίας ἐν διάρματι στα-
δίων χιλίων. πρὸς Σίδην δὲ τῆς Παμφυλίας χιλίων καὶ ἑξακοσίων. πρὸς δὲ Χελιδονέας χιλίων ἐννα-
κοσίων. ἔστι δὲ ἑτερόμηκες τὸ ὅλον τῆς νήσου σχῆμα. καί που καὶ ἰσθμοὺς ποιεῖ κατὰ τὰς τὸ πλάτος διο-
ριζούσας πλευράς. ἔχει δὲ καὶ τὰ καθέκαστα ὡς ἐν βραχίστοις εἰπεῖν. οὕτως ἀρξαμένοις ἀπὸ τοῦ προσε-
χεστάτου σημείου τῇ ἠπείρῳ. ἔφαμεν δέ που κατὰ τὸ Ἀνεμούριον ἄκραν τῆς Τραχείας Κιλικίας ἀντι-
κεῖσθαι τὸ τῶν Κυπρίων ἀκρωτήριον τὴν Κρομμύου ἄκραν ἐν τριακοσίοις καὶ πεντήκοντα σταδίοις. ἐν-
τεῦθεν δ' ἤδη δεξιὰν τὴν νῆσον ἔχουσιν. ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν ἤπειρον, πρὸς ἄρκτον ὁ πλοῦς ἐστι καὶ πρὸς ἕω
καὶ πρὸς τὰς Κλεῖδας εὐθύπλοια σταδίων ἑπτακοσίων. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ Λάπαθός τε ἐστὶ πόλις ὕφορ-
μον ἔχουσα καὶ νεώρια Λακώνων κτίσματα. καὶ Πραξάνδρου καθ' ἣν ἡ Νάγιδος. εἶτ' Ἀφροδίσιον καθ' ὃ στε-
νὴ ἡ νῆσος. εἰς γὰρ Σαλαμῖνα ὑπέρβασις σταδίων ἑβδομήκοντα. εἶθ' Ἀχαιῶν ἀκτή. ὅπου Τεῦκρος προσωρ-
μίσθη πρῶτον Σαλαμῖνα κτίσας τὴν ἐν Κύπρῳ. ἐκβληθεὶς ὥς φασιν ὑπὸ τοῦ πατρὸς Τελαμῶνος.
εἶτα Καρπασία πόλις. λιμένα ἔχουσα. κεῖται δὲ κατὰ τὴν ἄκραν τὴν Σαρπηδόνα. ἐκ δὲ τῆς Καρπασί-
ας, ὑπέρβασίς ἐστιν ἰσθμοῦ τριάκοντα σταδίων πρὸς τὰς νήσους τὰς Καρπασίας καὶ τὸ νότιον πέλα-
γος. εἶτ' ἄκρα καὶ ὄρος. ἡ δ' ἀκρώρεια καλεῖται Ὄλυμπος. ἔχουσα Ἀφροδίτης Ἀκραίας ναόν. ἄδυτον γυναι-
ξὶ καὶ ἀόρατον. πρόκεινται δὲ πλησίον αἱ Κλεῖδες. καὶ ἄλλαι δὲ πλείους. εἶθ' αἱ Καρπασίαι νῆσοι. καὶ με-
τὰ ταύτας ἡ Σαλαμίς. ὅθεν ἦν Ἀρίστος ὁ συγγραφεύς. εἶτ' Ἀρσινόη πόλις καὶ λιμήν. εἶτ' ἄλλος λιμὴν
Λεύκολλα. εἶτ' ἄκρα Πηδάλιον. ἧς ὑπέρκειται λόφος τραχύς, ὑψηλός, τραπεζοειδής, ἱερὸς Ἀφροδί-
της. εἰς ὃν ἀπὸ Κλειδῶν, στάδιοι ἑξακόσιοι ὀγδοήκοντα. εἶτα κολπώδης, καὶ τραχὺς παράπλους ὁ πλείων
εἰς Κίτιον. ἔχει δὲ λιμένα κλειστόν. ἐντεῦθεν ἐστὶ Ζήνων τε ὁ τῆς Στωϊκῆς αἱρέσεως ἀρχηγέτης. καὶ Ἀπολ-
λώνιος ἰατρός. ἐντεῦθεν εἰς Βηρυτὸν στάδιοι χίλιοι πεντακόσιοι. εἶτ' Ἀμαθοῦς πόλις, καὶ μεταξὺ πολίχνη
Παλαιὰ καλουμένη. καὶ ὄρος μαστοειδὲς Ὄλυμπος. εἶτα Κουριὰς χερρονησώδης. εἰς ἣν ἀπὸ Θρόνων στάδια
ἑπτακόσιοι. εἶτα πόλις Κούριον. ὅρμον ἔχουσα. Ἀργείων κτίσμα. ἤδη οὖν πάρεστι σκοπεῖν τὴν ῥᾳθυ-
μίαν τοῦ ποιήσαντος τὸ ἐλεγεῖον τοῦτο. οὗ ἡ ἀρχή.

» Ἱραὶ τῷ Φοίβῳ πολλὸν διὰ κῦμα θέουσαι.

» Ἤλθομεν αἱ ταχιναὶ τόξα φυγεῖν ἔλαφοι.

Εἴθ' ὁ Δηλός ἐστιν. εἴθ' ὅστις οὖν. φασὶ μὲν γὰρ ὁρμηθῆναι τὰς ἐλάφους Κωρυκίης ἀπὸ δειράδος. ἐκ δὲ
Κιλίσσης ἠϊόνος εἰς ἀκτὰς διανήξασθαι Κουριάδας. καὶ ἐπιφθέγγεται διότι μυρίον ἀνδράσι θαῦμα
νοεῖν πάρεστι πῶς ἀνόδευτον χεῦμα δι' εἰρινὸν ἐδράμομεν ζεφύρων. ἀπὸ γὰρ Κωρύκου περίπλους μέν ἐστιν
εἰς Κουριάδα ἀκτήν. οὔτε ζεφύρῳ δὲ οὔτε δεξιὰν ἔχουσι τὴν νῆσον. οὔτ' ἐν ἀριστερᾷ. δίαρμα δ' οὐδέν. ἀρ-

χὴ δ' οὖν τῆς δυσμικοῦ περίπλου τὸ κούριον, τῆς βλέποντος πρὸς ῥόδον. καὶ εὐθὺς ἔστιν ἄκρα. ἀφ' ἧς
ῥίπτουσι τοὺς ἀψαμένους τοῦ βωμοῦ τοῦ ἀπόλλωνος. εἶτα τρῆτα, καὶ βοόσουρα, καὶ παλαιὰ πάφος.
ὅσον ἐν δέκα σταδίοις ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἱδρυμένη. ὕφορμον ἔχουσα, καὶ ἱερὸν ἀρχαῖον τῆς παφίας
ἀφροδίτης. εἶτ' ἄκρα ζεφυρία πρόσορμον ἔχουσα. καὶ ἄλλη ἀρσινόη ὁμοίως πρόσορμον ἔχουσα, καὶ ἱε-
ρὸν καὶ ἄλσος. μικρὸν δ' ἀπὸ τῆς θαλάττης, καὶ ἡ ἱεροκηπίς. εἶθ' ἡ πάφος κτίσμα ἀγαπήνορος. καὶ λι-
μένα ἔχουσα, καὶ ἱερὰ εὖ κατεσκευασμένα. διέχει δὲ πεζῇ σταδίους ἑξήκοντα τῆς παλαι πάφου.
καὶ πανηγυρίζουσι διὰ τῆς ὁδοῦ ταύτης κατ' ἔτος ἐπὶ τὴν παλαι πάφον, ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξὶ καὶ
ἐκ τῶν ἄλλων πόλεων συνιόντες. φασὶ δ' εἰς ἀλεξάνδρειαν ἐκ πάφου τινὲς εἶναι σταδίους τρισχιλί-
ους ἑξακοσίους. εἶθ' ὁ ἀκάμας ἐστὶ μετὰ πάφον. εἶτα πρὸς ἕω μετὰ τὸν ἀκάμαντα πλοῦς εἰς ἀρσινόην
πόλιν, καὶ τὸ τοῦ διὸς ἄλσος. εἶτα σόλους πόλις. λιμένα ἔχουσα καὶ ποταμόν. καὶ ἱερὸν ἀφροδίτης,
καὶ ἴσιδος. κτίσμα δ' ἐστὶ φαλήρου, καὶ ἀκάμαντος ἀθηναίων. οἱ δ' ἐνοικοῦντες σόλιοι καλοῦνται. ἐντεῦ-
θεν ἦν στασάνωρ τῶν ἀλεξάνδρου ἑταίρων. ἀνὴρ ἡγεμονίας ἠξιωμένος. ὑπέρκειται δ' ἐν μεσογαίᾳ λι-
μηνία πόλις. εἶθ' ἡ κρομμύου ἄκρα. τί δὲ δεῖ τῶν ποιητῶν θαυμάζειν, καὶ μάλιστα τῶν τοιούτων. οἷς ἡ πᾶ-
σα περὶ τὴν φράσιν ἐστὶ σπουδή. τὰ τοῦ δαμάστου συγκρίνουσιν. ὅστις τῆς νήσου τὸ μῆκος ἀπὸ τῶν ἄρ-
κτων πρὸς μεσημβρίαν ἀποδίδωσιν. ἀπὸ ἱεροκηπίας ὥς φησιν ἐπὶ κλειδας. οὐδὲ ὁ ἐρατοσθένης εὖ.
αἰτιώμενος γὰρ τοῦτον οὐκ ἀπ' ἄρκτων φησὶν εἶναι τὴν ἱεροκηπίαν. ἀλλ' ἀπὸ νότου. οὐδὲ γὰρ ἀπὸ νό-
του. ἀλλ' ἀπὸ δύσεως. εἴπερ ἐν τῇ δυσμικῇ πλευρᾷ κεῖται. ἐν ᾗ, καὶ ἡ πάφος, καὶ ὁ ἀκάμας. διάκει-
ται μὲν οὕτως ἡ πάφος τῇ θέσει. κατ' ἀρετὴν δ' οὐδεμιᾶς τῶν νήσων λείπεται. καὶ γὰρ εὔοινός ἐστι,
καὶ εὐέλαιος. σίτῳ τε αὐτάρκει χρῆται. μέταλλά τε χαλκοῦ ἐστιν ἄφθονα τὰ ἐν ταμασῷ. ἐν οἷς τὸ
χαλκανθὲς γίνεται. καὶ ὁ ἰὸς τοῦ χαλκοῦ, πρὸς τὰς ἰατρικὰς δυνάμεις χρήσιμα. φησὶ δ' ἐρατοσθέ-
νης τὸ παλαιὸν ὑλομανούντων τῶν πεδίων. ὥστε κατέχεσθαι δρυμοῖς, καὶ μὴ γεωργεῖσθαι, μικρὰ
μὲν ἐπωφελεῖν πρὸς τοῦτο τὰ μέταλλα δενδροτομούντων πρὸς τὴν καῦσιν τοῦ χαλκοῦ, καὶ τοῦ ἀρ-
γύρου. προσγενέσθαι δὲ καὶ τὴν ναυπηγίαν τῶν στόλων, ἤδη πλεομένης ἀδεῶς τῆς θαλάττης, καὶ με-
τὰ δυνάμεων. ὡς δ' οὐκ ἐξενίκων ἐπιτρέψαι τοῖς βουλομένοις, καὶ δυναμένοις ἐκκόπτειν, καὶ ἔχειν
ἰδιόκτητον, καὶ ἀτελῆ τὴν διακαθαρθεῖσαν γῆν. πρότερον μὲν οὖν κατὰ πόλεις ἐτυραννοῦντο οἱ κύ-
πριοι. ἀφ' οὗ δ' οἱ πτολεμαϊκοὶ βασιλεῖς κύριοι τῆς αἰγύπτου κατέστησαν, εἰς ἐκείνους, καὶ ἡ κύπρος πε-
ριέστη. συμπραττόντων πολλάκις, καὶ τῶν ῥωμαίων. ἐπεὶ δ' ὁ τελευταῖος ἄρξας πτολεμαῖος ἀδελ-
φὸς τοῦ κλεοπάτρας πατρὸς τῆς καθ' ἡμᾶς βασιλίσσης. ἔδοξε πλημμελής τε εἶναι, καὶ ἀχάριστος εἰς
τοὺς εὐεργέτας, ἐκεῖνος μὲν κατελύθη. ῥωμαῖοι δὲ κατέσχον τὴν νῆσον. καὶ γέγονε στρατηγικὴ ἐ-
παρχία καθ' αὑτήν. μάλιστα δ' αἴτιος τοῦ ὀλέθρου κατέστη τῷ βασιλεῖ, πόπλιος κλαύδιος πούλχερ. ἐμ-
πεσὼν γὰρ εἰς τὰ λῃστήρια τῶν κιλίκων ἀκμαζόντων τότε, λύτρον αἰτούμενος ἐπέστειλε τῷ βασιλεῖ.
δεόμενος πέμψαι, καὶ ῥύσασθαι αὐτόν. ὁ δ' ἔπεμψε μὲν μικρὸν δὲ τελέως. ὥστε καὶ τοὺς λῃστὰς αἰ-
δεσθῆναι λαβεῖν. ἀλλὰ ἀναπέμψαι πάλιν. τὸν δ' ἄνευ λύτρων ἀπολῦσαι. σωθεὶς δ' ἐκεῖνος ἀ-
πεμνημόνευσεν ἀμφοτέροις τὴν χάριν. καὶ γενόμενος δήμαρχος ἴσχυσε τοσοῦτον, ὥστε
ἐπέμφθη μάρκος κάτων ἀφαιρησόμενος τὴν ἀρχὴν τῆς κύπρου τὸν κατέχοντα.
ἐκεῖνος μὲν οὖν ἔφθη διαχειρισάμενος αὑτόν. κάτων δὲ ἐπελθὼν παρέλα-
βε τὴν κύπρον. καὶ τὴν βασιλικὴν οὐσίαν διέθετο. καὶ τὰ χρήματα
εἰς τὸ δημόσιον ταμιεῖον τῶν ῥωμαίων ἐκόμισεν. ἐξ ἐκείνου δ'
ἐγένετο ἐπαρχία ἡ νῆσος καθάπερ, καὶ νῦν ἐστι στρατη-
γική. ὀλίγον δὲ χρόνον τὸν μεταξὺ, ἀντώνιος κλεο-
πάτρᾳ, καὶ τῇ ἀδελφῇ αὐτῆς ἀρσινόῃ πα-
ρέδωκε. καταλυθέντος δὲ ἐκεί-
νου, συγκατελύθησαν,
καὶ αἱ διατά-
ξεις αὐτοῦ
πᾶσαι.

## ὙΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ͂ ΠΕΝΤΕΚΑΙΔΕΚΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

Τὸ πεντεκαιδέκατον βιβλίον, περὶ ἰνδίαν καὶ περσίδα.

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩ͂Ν ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΕΝΤΕΚΑΙΔΕΚΑΤΟΝ.

Α` περιλειπόμενα τῆς ἀσίας ἐστὶ, τὰ ἐκτὸς τοῦ ταύρου. πλὴν κιλι-
κίας καὶ παμφυλίας καὶ λυκίας. τὰ δ' ἀπὸ τῆς ἰνδικῆς μέχρι
νείλου, μεταξὺ τοῦ ταύρου καὶ τῆς ἔξω θαλάττης τῆς νοτίου κείμενα.
μετὰ δὲ τὴν ἀσίαν ἡ λιβύη ἐστί. περὶ ἧς ἐροῦμεν ὕστερον. νῦν δ' ἀπὸ τῆς
ἰνδικῆς ἀρκτέον. πρώτη γὰρ ἔκκειται πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς με-
γίστη. δεῖ δ' εὐγνωμόνως ἀκούειν περὶ αὐτῆς. καὶ γὰρ ἀπωτάτω ἐστί·
καὶ οὐ πολλοὶ τῶν ἡμετέρων κατώπτευσαν αὐτήν. οἱ δὲ καὶ ἰδόντες, μέρη
τινὰ εἶδον. τὰ δὲ πλείω λέγουσιν ἐξ ἀκοῆς. καὶ ἃ εἶδον δὲ, ἐν παρόδῳ
στρατιωτικῇ καὶ δρόμῳ κατέμαθον. διόπερ οὐδὲ τὰ αὐτὰ περὶ τῶν
αὐτῶν ἐξαγγέλλουσι. καὶ ταῦτα συγγράψαντες ὡς ἂν πεφροντι-
σμένως ἐξητασμένα. τινὲς δ' αὐτῶν καὶ συστρατεύσαντες ἀλλήλοις καὶ
συνεπιδημήσαντες καθάπερ οἱ ἀλεξάνδρῳ συγκαταστρεψάμενοι τὴν ἀσίαν. ἀλλ' ἕκαστος ἑκάστῳ τἀναν-
τία λέγει πολλάκις. ὅπου δὲ περὶ τῶν ὁραθέντων, οὕτω διαφέρονται, τί δεῖ νομίζειν περὶ τῶν ἐξ
ἀκοῆς. καὶ μὴν οὐδ' οἱ πολλοὶ πολλοῖς χρόνοις ὕστερον συγγράψαντές τι περὶ τούτων. οὐδ' οἱ νῦν πλέοντες
ἐκεῖσε ἀποφαίνονταί τι ἀκριβές. ἀπολλόδωρος γοῦν ὁ τὰ παρθικὰ ποιήσας, μεμνημένος καὶ τὴν βακ-
τριανὴν ἀποστησάντων ἑλλήνων παρὰ τῶν συριακῶν βασιλέων τῶν ἀπὸ σελεύκου τοῦ νικάτορος, φησὶ μὲν
αὐτοὺς αὐξηθέντας, ἐπιθέσθαι, καὶ τῇ ἰνδικῇ. οὐδὲν δὲ προσανακαλύπτει τῶν πρότερον ἐγνωσμέ-
νων. ἀλλὰ καὶ ἐναντιολογεῖ πλείω τῆς ἰνδικῆς ἐκείνους, ἢ μακεδόνας καταστρέψασθαι λέγων. εὐκρα-
τίδαν γοῦν πόλεις χιλίας ὑφ' ἑαυτῷ ἔχειν. ἐκεῖνοι δὲ αὐτὰ τὰ μεταξὺ ἔθνη τοῦ τε ὑδάσπου καὶ τοῦ
ὑπάνιος τὸν ἀριθμὸν ἐννέα. πόλεις τε ἔχειν πεντακισχιλίας. ὧν μηδεμίαν εἶναι κῶ τῆς μερόπιδος ἐ-
λάττω. ταύτην δὲ πᾶσαν τὴν χώραν καταστρεψάμενον ἀλέξανδρον. παραδοῦναι πώρῳ. καὶ οἱ νῦν δὲ
πλέοντες ἐξ αἰγύπτου ἐμπορικοὶ, τῷ νείλῳ καὶ τῷ ἀραβίῳ κόλπῳ μέχρι τῆς ἰνδικῆς, σπάνιοι μὲν, καὶ
περιπεπλεύκασι μέχρι τοῦ γάγγου. καὶ οὗτοι δ' ἰδιῶται. καὶ οὐδὲν πρὸς ἱστορίαν χρήσιμοι τῶν τόπων. κἀκεῖθεν
δὲ ἀφ' ἑνὸς τόπου καὶ παρ' ἑνὸς βασιλέως πανδίονος καὶ ἄλλου πώρου, ἧκεν ὡς καίσαρα τὸν σεβαστὸν
δῶρα καὶ πρεσβεῖα, καὶ ὁ κατακαύσας ἑαυτὸν ἀθήνησι σοφιστὴς ἰνδός. καθάπερ καὶ ὁ κάλανος ἀλε-
ξάνδρῳ τὴν τοιαύτην θέαν ἐπιδειξάμενος, εἰ τοίνυν ταῦτ' ἀφείς τις τὴν πρὸ τῆς ἀλεξάνδρου στρατείας
ἐπιβλέπει μνήμην, πολὺ ἂν εὕροι τούτων τυφλότερα. ἀλέξανδρον μὲν οὖν πιστεύειν τοῖς τοιούτοις
εἰκὸς, τετυφωμένον ταῖς τοσαύταις εὐτυχίαις. φησὶ δὲ νέαρχος φιλονεικῆσαι αὐτὸν, διὰ τῆς γεδρω-
σίας ἀγαγεῖν τὴν στρατείαν. πεπυσμένον διότι καὶ σεμίραμις ἐστράτευσεν ἐπὶ ἰνδοὺς καὶ κῦρος. ἀλλ'
ἡ μὲν, ἀνέστρεψε φεύγουσα μετὰ εἴκοσιν ἀνθρώπων. ἐκεῖνος δὲ μεθ' ἑπτά. ὡς σεμνὸν τὸ ἐκείνων τοσαῦτα
παθόντων αὐτὸν καὶ στρατόπεδον σῶσαι μετὰ νίκης διὰ τῶν αὐτῶν ἐθνῶν τε καὶ τόπων. ἐκεῖνος μὲν
δὴ ἐπίστευσεν. ἡμῖν δὲ τίς ἂν δικαία γένοιτο πίστις περὶ τῶν ἰνδικῶν ἐκ τῆς τοιαύτης στρατείας τοῦ κύρου, ἢ τῆς
σεμιράμιδος. συναποφαίνεται δέ πως καὶ μεγασθένης τῷ λόγῳ τούτῳ κελεύων ἀπιστεῖν ταῖς ἀρ-
χαίαις περὶ ἰνδῶν ἱστορίαις. οὔτε γὰρ παρ' ἰνδῶν ἔξω σταλῆναί ποτε στρατιὰν, οὔτ' ἐπελθεῖν ἔξωθεν καὶ
κρατῆσαι. πλὴν τῆς μεθ' ἡρακλέους καὶ διονύσου. καὶ τῆς νῦν μετὰ μακεδόνων. καίτοι σέσωστριν μὲν τὸν
αἰγύπτιον καὶ τεάρκωνα τὸν αἰθίοπα ἕως εὐρώπης προελθεῖν. ναβοκοδρόσορον δὲ τὸν παρὰ χαλδαίοις
εὐδοκιμήσαντα, ἡρακλέους μᾶλλον καὶ ἕως στηλῶν ἐλάσαι. μέχρι μὲν δὴ δεῦρο καὶ τεάρκωνα ἀφικέ-
σθαι. ἐκεῖνον δὲ καὶ ἐκ τῆς ἰβηρίας εἰς τὴν θρᾴκην καὶ τὸν πόντον ἀγαγεῖν τὴν στρατιάν. ἰδάνθυρσον δὲ
τὸν σκύθην ἐπιδραμεῖν τῆς ἀσίας μέχρι αἰγύπτου. τῆς δὲ ἰνδικῆς μηδένα τούτων ἅψασθαι. καὶ σεμί-
ραμιν δ' ἀποθανεῖν πρὸ τῆς ἐπιχειρήσεως. πέρσας δὲ μισθοφόρους μὲν ἐκ τῆς ἰνδικῆς μεταπέμψασθαι
ὑδράκας. ἐκεῖ δὲ μὴ στρατεῦσαι. ἀλλ' ἐγγὺς ἐλθεῖν μόνον, ἡνίκα κῦρος ἤλαυνεν ἐπὶ μασσαγέτας. καὶ

τὰ περὶ ἡρακλέους δὲ καὶ διονύσου, μεγασθένης μὲν μετ' ὀλίγων πιστὰ ἡγεῖται. τῶν δ' ἄλλων οἱ πλείους ὧν ἐστὶ καὶ ἐρατοσθένης ἄπιστα καὶ μυθώδη. καθάπερ καὶ τὰ παρὰ τοῖς ἕλλησιν. ὁ μὲν γὰρ ἐν ταῖς βάκχαις ταῖς εὐριπίδου διόνυσος. τοιαῦτα νεανιεύεται.

» Λιπὼν δὲ λυδῶν τὰς πολυχρύσους γύας, φρυγῶν τε περσῶν θ' ἡλιοβλήτους πλάκας,
» βάκτρα τε, τείχη, τήν τε δύσχειμον χθόνα μήδων. ἐπελθὼν ἀραβίαν, εὐδαίμονα.
» Ἀσίαν τε πᾶσαν. παρὰ σοφοκλεῖ δέ τίς ἐστι τὴν νῦσαν καθυμνῶν. ὡς τὸ διονύσῳ καθιερωμένον ὄρος.
ὅθεν κατεῖδον τὴν βεβακχιωμένην βροτοῖσι κλεινὴν νῦσαν.
» Ἣν ὁ βούκερως ἴακχος αὑτῷ μαῖαν ἡδίστην νέμει, ὅπου τίς ὄρνις οὐχὶ κλαγγάνει.
Καὶ τὰ ἑξῆς. καὶ μηροτραφὴς δὲ λέγεται. καὶ ὁ ποιητὴς περὶ λυκούργου τοῦ ἠδωνοῦ φησιν οὕτως.
» Ὅς ποτε μαινομένοιο διονύσιος ὁ τιθήνας.
» Σεῦε κατ' ἠγάθεον νυσήϊον,

Τοιαῦτα μὲν τὰ περὶ διονύσου. περὶ δὲ ἡρακλέους. οἱ μὲν, ἐπὶ τἀναντία μόνον μέχρι τῶν ἑσπερίων περάτων ἱστοροῦσιν. οἱ δ' ἐφ' ἑκάτερα. ἐκ δὲ τῶν τοιούτων. νυσαίους δή τινας ἔθνος προσωνόμασαν. καὶ πόλιν παρ' αὐτοῖς νῦσαν. διονύσου κτίσμα. καὶ ὄρος τὸ ὑπὲρ τῆς πόλεως μηρόν. αἰτιασάμενοι καὶ τὸν αὐτόθι κισσὸν καὶ ἄμπελον. οὐδὲ ταύτην τελεσίκαρπον. ἀπορρεῖ γὰρ ὁ βότρυς πρὶν περκάσαι διὰ τοὺς ὄμβρους τοὺς ἄδην. διονύσου δ' ἀπογόνους τοὺς ὀξυδράκας, ἀπὸ τῆς ἀμπέλου τῆς παρ' αὐτοῖς καὶ τῶν πολυτελῶν ἐξόδων βακχικῶς. τάς τε ἐκ στρατείας ποιουμένων τῶν βασιλέων. καὶ τὰς ἄλλας ἐξόδους μετὰ τυμπανισμοῦ, καὶ εὐανθοῦς στολῆς, ὅπερ ἐπιπολάζει καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις ἰνδοῖς. ἄορνον δέ τινα πέτραν. ἧς τὰς ῥίζας ὁ ἰνδὸς ὑπορρεῖ πλησίον τῶν πηγῶν, ἀλεξάνδρου κατὰ μίαν προσβολὴν ἑλόντα. σεμνύνοντες ἔφασαν τὸν ἡρακλέα, τρὶς μὲν προσβαλεῖν τῇ πέτρᾳ ταύτῃ. τρὶς δ' ἀποκρουσθῆναι. τῶν δὲ κοινωνησάντων αὐτῷ τῆς στρατείας ἀπογόνους εἶναι τοὺς σίβας. σύμβολα τοῦ γένους σώζοντας. τό τε δορὰς ἀμπέχεσθαι καθάπερ τὸν ἡρακλέα. καὶ τὸ σκυταληφορεῖν, καὶ ἐπικεκαῦσθαι βουσὶ καὶ ἡμιόνοις ῥόπαλον. βεβαιοῦνται δὲ τὸν μῦθον τοῦτον, καὶ ἐκ τῶν περὶ τὸν καύκασον, καὶ τὸν προμηθέα. καὶ γὰρ ταῦτα μετενηνόχασιν ἐκ τοῦ πόντου δεῦρο. ἀπὸ μικρᾶς προφάσεως. ἰδόντες σπήλαιον ἐν τοῖς παροπαμισάδαις ἱερόν. τοῦτ' ἐνεδείξαντο προμηθέως δεσμωτήριον. καὶ δεῦρο ἀφιγμένον τὸν ἡρακλέα ἐπὶ τὴν ἐλευθέρωσιν τοῦ προμηθέως. καὶ τοῦτον εἶναι τὸν καύκασον. ὃν ἔλλωβοι προμηθέως δεσμωτήριον ἀπέφηναν. ὅτι δ' ἐστὶ πλάσματα ταῦτα τῶν κολακευόντων ἀλέξανδρον, πρῶτον μὲν ἐκ τοῦ μὴ ὁμολογεῖν ἀλλήλοις τοὺς συγγραφέας, δῆλον. ἀλλὰ τοὺς μὲν, λέγειν. τοὺς δὲ, μὴ δ' ὅλως μεμνῆσθαι. οὐ γὰρ εἰκὸς τὰ ἔνδοξα οὕτω, καὶ τύφου πλήρη μὴ πεπύσθαι. ἢ πεπύσθαι μὲν, μὴ ἄξια δὲ μνήμης ὑπολαβεῖν. καὶ ταῦτα τοὺς πιστοτάτους αὐτῶν. ἔπειτα ἐκ τοῦ μὴ δὲ τοὺς μεταξὺ, δι' ὧν ἐχρῆν τὴν εἰς ἰνδοὺς ἄφιξιν γενέσθαι. τοὺς περὶ τὸν διόνυσον, καὶ τὸν ἡρακλέα. μηδὲν ἔχειν τεκμήριον δεικνύναι τῆς ἐκείνων ὁδοῦ διὰ τῆς σφετέρας γῆς. καὶ ἡ τοῦ ἡρακλέους δὲ στολὴ ἡ τοιαύτη, πολὺ νεωτέρα τῆς τρωϊκῆς μνήμης ἐστὶ, πλάσμα τῶν τὴν ἡράκλειαν ποιησάντων. εἴτε πείσανδρος ἦν εἴτ' ἄλλος τις. τὰ δ' ἀρχαῖα ξόανα οὐχ οὕτω διεσκεύασται. ὡς ἐν τοῖς τοιούτοις οὖν ἀποδέχεσθαι δεῖ πᾶν τὸ ἐγγυτάτω πίστεως. ἐποιησάμεθα δ' ἡμεῖς, καὶ ἐν τοῖς πρώτοις λόγοις τοῖς περὶ γεωγραφίαν δίαιταν. ἣν δυνατὸν ἦν περὶ τούτων. καὶ νῦν ἐκείνοις γε ἐξ ἑτοίμου χρησόμεθα, καὶ ἕτερα προσθήσομεν ὅσον ἂν δεῖν δόξοι πρὸς τὴν σαφήνειαν. μάλιστα ἐκ τῆς διαίτης ἐδόκει τῆς τότε πιστότατα εἶναι τὰ ὑπὸ τοῦ ἐρατοσθένους ἐν τῷ τρίτῳ τῶν γεωγραφικῶν ἐκτεθέντα κεφαλαιωδῶς, περὶ τῆς τότε νομιζομένης ἰνδικῆς ἡνίκα ἀλέξανδρος ἐπῆλθε. καὶ ἦν ὁ ἰνδὸς ὅριον. ταύτης τε καὶ τῆς ἀριανῆς. ἣν ἐφεξῆς πρὸς τῇ ἑσπέρᾳ κειμένην πέρσαι κατεῖχον. ὕστερον γὰρ δὴ καὶ τῆς ἀριανῆς πολλὴν ἔσχον οἱ ἰνδοὶ λαβόντες παρὰ τῶν μακεδόνων. ἔστι δὲ τοιαῦτα ἃ λέγει ὁ ἐρατοσθένης. τὴν ἰνδικὴν περιώρικεν. ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων τοῦ ταύρου τὰ ἔσχατα. ἀπὸ δὲ τῆς ἀριανῆς μέχρι τῆς ἑῴας θαλάττης. ἅπερ οἱ ἐπιχώριοι κατὰ μέρος παροπαμισόν τε καὶ ἠμωδὸν καὶ ἴμαον. καὶ ἄλλα ὀνομάζουσι. μακεδόνες δὲ καύκασον. ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ὁ ἰνδὸς ποταμός. τὸ δὲ νότιον καὶ τὸ πρὸς ἕω πλευρὸν, πολὺ μείζω τῶν ἑτέρων ὄντα, προπέπτωκεν εἰς τὸ ἀτλαντικὸν πέλαγος. καὶ γίνεται ῥομβοειδὲς τὸ τῆς χώρας σχῆμα τῶν μειζόνων πλευρῶν ἑκατέρας πλεονεκτούσης παρὰ τὸ ἀπεναντίον πλευρὸν. καὶ τρισχιλίοις σταδίοις. ὅσον ἐστὶ τὸ κοινὸν ἄκρον τῆς τε ἑωθινῆς παραλίας, καὶ τῆς μεσημβρινῆς. ἐξ ἴσου προπεπτωκὸς ἐφ' ἑκάτερον παρὰ τὴν ἄλλην ἠϊόνα. τῆς μὲν οὖν ἑσπερίου πλευρᾶς, ἀπὸ τῶν καυκασίων ὀρῶν ἐπὶ τὴν νότιον θάλατταν, στάδιοι μάλιστα λέγονται μύριοι τρισχίλιοι παρὰ τὸν ἰνδὸν ποταμὸν μέχρι τῶν ἐκβολῶν αὐτοῦ. ὥστ' ἀπεναντίον ἡ ἑωθινὴ προσλαβοῦσα τοὺς τῆς ἄκρας τρισχιλίους, ἔσται μυρίων, καὶ ἑξακισχιλίων σταδίων. τοῦτο μὲν οὖν πλάτος τῆς χώρας τό τ' ἐλάχιστον καὶ τὸ μέγιστον. μῆκος δὲ τὸ ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω. τούτου δὲ τὸ μὲν μέχρι παλιβόθρων, ἔχοι τις ἂν βεβαιοτέρως εἰπεῖν. καταμεμέτρηται γὰρ σχοινίοις. καὶ ἔστιν ὁδὸς βασιλικὴ σταδίων δισμυρίων. τὰ δ' ἐπέκεινα στοχασμῷ λαμβάνεται διὰ τῶν ἀνάπλων τῶν ἐκ θαλάττης. διὰ τοῦ γάγγου ποταμοῦ μέχρι παλιβόθρων. εἴη δ' ἄν τι σταδίων ἑξακισχιλίων, ἔσται τὸ πᾶν δὲ ᾗ βραχύτατον μυρίων ἑξακισχιλίων, ὡς

ἔκ τε τῆς ἀναγραφῆς τὸν σταθμὸν τῆς πεπιστευμένης μάλιστα λαβεῖν ἐρατοσθένης φησί. καὶ ὁ μεγασθένης τού-
τῳ συναποφαίνεται. πατροκλῆς δὲ χιλίοις ἔλαττόν φησι. τούτῳ δὴ πάλιν τῷ διαστήματι προστεθὲν
τὸ τῆς ἄκρας διάστημα, τὸ προπίπτον ἐπὶ πλέον πρὸς τὰς ἀνατολάς, οἱ τρισχίλιοι στάδιοι ποιήσουσι
τὸ μέγιστον μῆκος. ἔστι δὲ τοῦτο τὸ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ἰνδοῦ ποταμοῦ παρὰ τὴν ἑξῆς ἠϊόνα. μέχρι τῆς
λεχθείσης ἄκρας, καὶ τῶν ἀνατολικῶν αὐτῆς τερμόνων. οἰκοῦσι δ' ἐνταῦθα οἱ κωνιακοὶ καλούμενοι. ἐκ
δὲ τούτων πάρεστιν ὁρᾶν ὅσον διαφέρουσιν αἱ τῶν ἄλλων ἀποφάσεις. κτησίου μὲν οὐκ ἐλάττω τῆς ἄλ-
λης ἀσίας τὴν ἰνδικὴν λέγοντος. ὀνησικρίτου δὲ τρίτον μέρος τῆς οἰκουμένης. νεάρχου δὲ μηνῶν ὁδὸν
τεττάρων τὴν δι' αὐτοῦ τοῦ πεδίου. μεγασθένους δὲ καὶ δηϊμάχου μετριασάντων. μᾶλλον ὑπὲρ γὰρ δισ-
μυρίους τιθέασι σταδίους, τὸ ἀπὸ τῆς νοτίου θαλάττης ἐπὶ τὸν καύκασον. δηΐμαχος δ' ὑπὲρ τοὺς τρισ-
μυρίους κατ' ἐνίους τόπους. πρὸς οὓς ἐν τοῖς πρώτοις λόγοις εἴρηται. νῦν δὲ τοσοῦτον εἰπεῖν ἱκανόν. ὅ-
τι καὶ ταῦτα συνηγορεῖ τοῖς αἰτουμένοις συγγνώμην. ἐάν τι περὶ τῶν ἰνδικῶν λέγοντες, μὴ διϊσχυρίζον-
ται. ἅπασα δ' ἐστὶ κατάῤῥυτος ποταμοῖς ἡ ἰνδική. τοῖς μὲν, εἰς δύο τοὺς μεγίστους συῤῥηγνυμένοις, τόν
τε ἰνδὸν καὶ τὸν γάγγην. τοῖς δὲ, κατ' ἴδια στόματα ἐκδιδοῦσιν εἰς τὴν θάλατταν. ἅπαντα ἀπὸ τοῦ καυ-
κάσου τὴν ἀρχὴν ἔχουσι. καὶ φέρονται μὲν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν τὸ πρῶτον. εἶθ' οἱ μὲν, μένουσιν ἐπὶ τῆς
αὐτῆς φορᾶς. καὶ μάλιστα οἱ εἰς τὸν ἰνδὸν συμβάλλοντες. οἱ δ' ἐπιστρέφονται πρὸς ἕω. καθάπερ καὶ ὁ
γάγγης ποταμός. οὗτος μὲν οὖν καταβὰς ὁ γάγγης ἐκ τῆς ὀρεινῆς, ἐπειδὰν ἅψηται τῶν πεδίων, ἐπι-
στρέψας πρὸς ἕω καὶ ῥυεὶς παρὰ τὰ παλίβοθρα μεγίστην πόλιν, πρόεισιν ἐπὶ τὴν ταύτης θάλατταν.
καὶ μίαν ἐκβολὴν ποιεῖται. μέγιστος ὢν τῶν κατὰ τὴν ἰνδικὴν ποταμῶν. ὁ δὲ ἰνδὸς δυσὶ στόμασιν εἰς
τὴν μεσημβρινὴν ἐκπίπτει θάλατταν. ἐμπεριλαμβάνων τὴν παταληνὴν καλουμένην χώραν. παρα-
πλησίαν τῷ κατ' αἴγυπτον δέλτα. ἐκ δὲ τῆς ἀναθυμιάσεως τῶν τοσούτων ποταμῶν, καὶ ἐκ τῶν ἐτη-
σίων ὡς ἐρατοσθένης φησὶ, βρέχεται τοῖς θερινοῖς ὄμβροις ἡ ἰνδική. καὶ λιμνάζει τὰ πεδία. ἐν μὲν οὖν
τούτοις τοῖς ὄμβροις λίνον σπείρεται καὶ κέγχροι. πρὸς τούτοις σήσαμον. ὄρυζα. βόσμορον. τοῖς χειμερι-
νοῖς, δὲ καιροῖς πυροί. κριθαί. ὄσπρια. καὶ ἄλλοι καρποὶ ἐδώδιμοι, ὧν ἡμεῖς ἄπειροι. σχεδὸν δέ τι τοῖς ἐν αἰθιο-
πίᾳ καὶ κατ' αἴγυπτον. τὰ αὐτὰ φύεται καὶ ἐν τῇ ἰνδικῇ καὶ τῶν ἐν τοῖς ποταμοῖς πλὴν ἵππου πο-
ταμίου. τὰ ἄλλα φέρουσι καὶ οἱ ἰνδοί. ὀνησίκριτος δὲ καὶ τοὺς ἵππους γίνεσθαί φησι. τῶν δ' ἀνθρώπων
οἱ μὲν μεσημβρινοὶ τοῖς αἰθίοψιν εἰσὶν ὅμοιοι κατὰ τὴν χροιάν. κατὰ δὲ τὴν ὄψιν καὶ τὴν τρίχωσιν τοῖς
ἄλλοις. οὐδὲ γὰρ οὐλοτριχοῦσι διὰ τὴν ὑγρότητα τοῦ ἀέρος. ὡς δὲ βόρειοι τοῖς αἰγυπτίοις. τὴν δὲ τα-
προβάνην πελαγίαν εἶναί φασι νῆσον. ἀπέχουσαν τῶν νοτιωτάτων τῆς ἰνδικῆς τῶν κατὰ τοὺς κωνια-
κοὺς πρὸς μεσημβρίαν ἡμερῶν ἑπτὰ πλοῦν. μῆκος μὲν ὡς ὀκτακισχιλίων σταδίων ἐπὶ τὴν αἰθιοπίαν.
ἔχειν δὲ καὶ ἐλέφαντας. τοιαῦται μὲν αἱ τοῦ ἐρατοσθένους ἀποφάσεις. προστεθεῖσαι δὲ καὶ αἱ τῶν
ἄλλων εἴ τί που προσακριβοῦσιν, ἰδιοποιήσουσι τὴν γραφήν. οἷον περὶ τῆς ταπροβάνης. ὀνησίκριτός φησι
μέγεθος μὲν εἶναι πεντακισχιλίων σταδίων. οὐ διορίσας μῆκος οὐδὲ πλάτος. διέχειν δὲ τῆς ἠπείρου
πλοῦν ἡμερῶν εἴκοσι. ἀλλὰ κακοπλοεῖν τὰς ναῦς. φαύλως μὲν ἱστιοπεποιημένας. κατεσκευασμένας
δὲ ἀμφοτέρωθεν ἐγκοιλίων μητρῶν χωρίς. εἶναι δὲ καὶ ἄλλας νήσους αὐτῆς μεταξὺ, καὶ τῆς ἰνδι-
κῆς. νοτιωτάτην δ' ἐκείνην. κήτη δ' ἀμφίβια περὶ αὐτὴν γίνεσθαι. τὰ μὲν, βουσί. τὰ δ' ἵπποις. τὰ δ'
ἄλλοις χερσαίοις ἐοικότα. νέαρχος δὲ περὶ τῆς ἐκ τῶν ποταμῶν ἐπιχώσεως παραδείγματα φέρει τὰ
τοιαῦτα. ὅτι καὶ τὸ ἕρμου καὶ καΰστρου πεδίον καὶ μαιάνδρου, καὶ καΐκου, παραπλησίως εἴρηται
διὰ τὴν ἐπιφερομένην τοῖς πεδίοις χοῦν, αὔξειν αὐτά. μᾶλλον δὲ γεννᾶν ἐκ τῶν ὀρῶν καταφερομένην
ὅσην εὔγεως, καὶ μαλακή, καταφέρειν δὲ τοὺς ποταμούς, ὥστε τούτων ὡσανεὶ γεννήματα ὑπάρχειν τὰ
πεδία. καὶ εὖ λέγεσθαι. ὅτι τούτων ἐστὶ τὰ πεδία. τοῦτο δὲ καὶ ταὐτόν ἐστι τῷ ὑπὸ τοῦ ἡροδότου λεχθέν-
τι ἐπὶ τοῦ νείλου, καὶ τῆς ἐπ' αὐτῷ γῆς ὅτι ἐκείνου δῶρον ἐστί. διὰ τοῦτο δ' ὀρθῶς, καὶ ὁμώνυμον τῇ αἰ-
γύπτῳ φησὶ λεχθῆναι τὸν νεῖλον ὁ νέαρχος. ἀριστόβουλος δὲ μόνα, καὶ ὕεσθαι καὶ νίφεσθαι τὰ ὄρη, καὶ
τὰς ὑπωρείας φησί. τὰ πεδία δὲ καὶ ὄμβρων ὁμοίως ἀπηλλάχθαι, καὶ νιφετῶν, ἐπικλύζεσθαι δὲ μό-
νον κατὰ τὰς ἀναβάσεις τῶν ποταμῶν. νίφεσθαι μὲν οὖν τὰ ὄρη κατὰ χειμῶνα. τοῦ δὲ ἔαρος ἀρχο-
μένου καὶ τοὺς ὄμβρους ἐνάρχεσθαι. καὶ ἀεὶ καὶ μᾶλλον λαμβάνειν ἐπίδοσιν. τοῖς δὲ τῆς ἀσίας καὶ ἀ-
διαλείπτως νύκτωρ καὶ μεθ' ἡμέραν ἐκχεῖσθαι καὶ λάβρους ἕως ἐπιτολῆς ἀρκτούρου. ἔκ τε δὴ τῶν
χιόνων καὶ τῶν ὑετῶν πληρουμένους ποτίζειν τὰ πεδία. κατανοηθῆναι δὲ ταῦτα καὶ ὑφ' ἑαυτοῦ καὶ
ὑπὸ τῶν ἄλλων φησίν. ὡρμηκότων μὲν εἰς τὴν ἰνδικὴν ἀπὸ παροπαμισαδῶν. μετὰ δὲ δυσμὰς πλειά-
δων καὶ διατριψάντων κατὰ τὴν ὀρεινήν. ἔν τε τῇ ὑπασίων καὶ τῇ κανοῦ γῇ τὸν χειμῶνα. τοῦ δ' ἔ-
αρος ἀρχομένου καταβεβηκότων εἰς τὰ πεδία. καὶ πόλιν τάξιλα εὐμεγέθη ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ ὑδάσ-
πην καὶ τὴν πώρου χώραν, τοῦ μὲν οὖν χειμῶνος ὕδωρ οὐκ ἰδεῖν. ἀλλὰ χιόνας μόνον. ἐν δὲ τοῖς τα-
ξίλοις πρῶτον ὑσθῆναι. καὶ ἐπειδὴ καταβᾶσιν ἐπὶ τὸν ὑδάσπην καὶ νικήσασι τὸν πῶρον. ὁδὸς ἦν πρὸς
ἕω ἐπὶ τὸν ὕπανιν κἀκεῖθεν ἐπὶ τὸν ὑδάσπην πάλιν, ὕεσθαι συνεχῶς. καὶ μάλιστα τοῖς ἐτησίαις.
ἐπιτείλαντος δὲ τοῦ ἀρκτούρου, γενέσθαι παῦλαν, διατρίψαντας δὲ περὶ τὴν ναυπηγίαν ἐπὶ τῷ ὑδάσ-

σαν καὶ πλεῖν ἀρξαμένους πρὸ δύσεως πλειάδος· οὐ πολλαῖς ἡμέραις καὶ τὸ φθινόπωρον πᾶν καὶ τὸν χειμῶνα καὶ τὸ ἐπιὸν ἔαρ καὶ τὸ θέρος ἐν τῷ κατάπλῳ πραγματευθέντας, ἐλθεῖν εἰς τὴν παταληνὴν περὶ κυνὸς ἐπιτολήν· δέκα μὲν δὴ τὸν κατάπλουν γίνεσθαι μῆνας· οὐδαμοῦ δ' ὑετῶν αἰσθέσθαι· οὐδ' ὅτι ἐπήκμασαν οἱ ἐτησίαι· τῶν δὲ ποταμῶν πληρουμένων τὰ πεδία κλύζεσθαι· τὴν δὲ θάλατταν ἄπλουν εἶναι τῶν ἀνέμων ἀντιπνεόντων· ἀπογαίας δὲ μηδεμιᾶς πνοῆς ἐκδεξαμένης. ταῦτα μὲν οὖν αὐτοί, καὶ ὁ νέαρχος λέγει· περὶ δὲ τῶν θερινῶν ὄμβρων οὐχ ὁμολογεῖ· ἀλλά φησιν οἴεσθαι τὰ πεδία θέρους· χειμῶνος δ' ἄνομβρα εἶναι. λέγουσι δ' ἀμφότεροι καὶ τὰς ἀναβάσεις τῶν ποταμῶν· ὁ μέν γε νέαρχος τοῦ ἀκεσίνου πλησίον στρατεύοντάς φησιν ἀναγκασθῆναι μεταλαβεῖν τόπον ἄλλον ὑπερδέξιον κατὰ τὴν ἀνάβασιν· γενέσθαι δὲ τοῦτο κατὰ θερινὰς τροπάς· ὁ δ' ἀριστόβουλος καὶ μέτρα τῆς ἀναβάσεως ἐκτίθησι τετταράκοντα πήχεις· ὧν τοὺς μὲν εἴκοσιν ὑπὲρ τὸ προϋπάρχον βάθος πληροῦν μέχρι χείλους τὸ ῥεῖθρον· τοῖς δ' εἴκοσιν ὑπερχεῖσθαι εἰς τὰ πεδία· ὁμολογοῦσι δὲ καὶ διότι συμβαίνει νησίζειν τὰς πόλεις ἐπάνω χωμάτων ἱδρυμένας, καθάπερ καὶ ἐν αἰγύπτῳ καὶ αἰθιοπίᾳ· μετὰ δὲ ἀρκτοῦρον παύεσθαι τὴν πλημμύραν ἀποβαίνοντος τοῦ ὕδατος· ἔτι δ' ἡμίψυκτον σπείρεσθαι τὴν γῆν, ἀπὸ τοῦ τυχόντος ὀρυκτοῦ χαραχθεῖσαν· καὶ ὅμως φύεσθαι τὸν καρπὸν τέλειον καὶ καλόν· τὴν δ' ὄρυζαν φησὶν ὁ ἀριστόβουλος ἑστάναι ἐν ὕδατι κλειστῷ· πρασιὰς δ' εἶναι τὰς ἐχούσας αὐτήν· ὕψος δὲ τοῦ φυτοῦ τετράπηχυ· πολύσταχύ τε καὶ πολύκαρπον· θερίζεσθαι δὲ περὶ δύσιν πλειάδος· καὶ πτίζεσθαι ὡς τὰς ζειάς· φύεσθαι δὲ καὶ ἐν τῇ βακτριανῇ καὶ βαβυλωνίᾳ καὶ σουσίδι· καὶ ἡ κάτω δὲ συρία φύει. μέγιλλος δὲ τὴν ὄρυζαν σπείρεσθαι μὲν πρὸ τῶν ὄμβρων φησίν· ἀρδείας δὲ καὶ φυτείας δεῖσθαι ἀπὸ τῶν κλειστῶν ποτιζομένων ὑδάτων· περὶ δὲ τοῦ βωσμόρου ὁ ὀνησίκριτος φησὶν ὅτι σῖτός ἐστι μικρότερος τοῦ πυροῦ· γεννᾶται δ' ἐν ταῖς μεσοποταμίαις· φρύγεται δ' ἐπὰν ἀλοηθῇ· προομνυώτων μὴ ἀποίσειν ἄπυρον ἐκ τῆς ἅλω, τοῦ μὴ ἐξάγεσθαι σπέρμα· τὴν δ' ὁμοιότητα τῆς χώρας ταύτης πρός τε τὴν αἰγυπτίαν καὶ τὴν αἰθιοπίαν· καὶ πάλιν τὴν ἐναντιότητα, παραθεὶς ὁ ἀριστόβουλος· διότι τῷ νείλῳ μὲν ἐκ τῶν νοτίων ὄμβρων ἐστὶν ἡ πλήρωσις· τοῖς ἰνδικοῖς ποταμοῖς δὲ ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν, ζητεῖ πῶς οἱ μεταξὺ τόποι οὐ καταμβροῦνται, οὔτε γὰρ ἡ θηβαῒς μέχρι συήνης καὶ τῶν ἐγγὺς μερόης, οὔτε τῆς ἰνδικῆς τὰ ἀπὸ τῆς παταληνῆς, μέχρι τοῦ ὑδάσπου· τὴν δ' ὑπὲρ ταῦτα τὰ μέρη χώραν ἐν ᾗ καὶ ὄμβροι καὶ νιφετοὶ παραπλησίως ἔφη γεωργεῖσθαι τῇ ἄλλῃ τῇ ἔξω τῆς ἰνδικῆς χώρᾳ· ποτίζεσθαι γ' ἐκ τῶν ὄμβρων καὶ τῶν χιόνων. εἰκὸς δ' οἷς εἴρηκεν οὗτος καὶ εὔσειστον εἶναι τὴν γῆν χαυνουμένην ὑπὸ τῆς πολλῆς ὑγρασίας καὶ ἐκρήγματα λαμβάνουσαν· ὥστε καὶ ῥεῖθρα ποταμῶν ἀλλάττεσθαι, πεμφθεὶς γοῦν ἐπί τινα χρείαν ἰδεῖν φησιν ἐρημωθεῖσαν χώραν πλειόνων, ἢ χιλίων πόλεων σὺν κώμαις· ἐκλιπόντος τοῦ ἰνδοῦ τὸ οἰκεῖον ῥεῖθρον· ἐκτραπομένου δ' εἰς τὸ ἕτερον ἐν ἀριστερᾷ κοιλότερον πολὺ καὶ οἷον καταρράξαντος ὡς τὴν ἀπολειφθεῖσαν ἐν δεξιᾷ χώραν μηκέτι ποτίζεσθαι ταῖς ὑπερχύσεσι μετεωροτέραν οὖσαν οὐ τοῦ ῥείθρου τοῦ καινοῦ μόνον· ἀλλὰ καὶ τῶν ὑπερχύσεων· ταῖς δὲ τῶν ποταμῶν πληρώσεσι· καὶ τὸ τοὺς ἀπογαίους μὴ πνεῖν, ὁμολογεῖ καὶ τὸ λεχθὲν ὑπὸ τοῦ ὀνησικρίτου· τεναγώδη γάρ φησιν εἶναι τὴν παραλίαν· καὶ μάλιστα κατὰ τὰ στόματα τῶν ποταμῶν· διά τε τὴν χοῦν καὶ τὰς πλημμυρίδας καὶ τὴν τῶν πελαγίων ἀνέμων ἐπικράτειαν. μεγασθένης δὲ τὴν εὐδαιμονίαν τῆς ἰνδικῆς ἐπισημαίνεται· τῷ δίκαρπον εἶναι καὶ δίφορον· καθάπερ καὶ ἐρατοσθένης ἔφη· τὸν μὲν, εἰπὼν σπόρον χειμερινόν· τὸν δὲ, θερινόν· καὶ ὄμβρον ὁμοίως· οὐδὲν γὰρ ἔτος εὑρίσκεσθαι φησὶ πρὸς ἀμφοτέρους καιροὺς ἄνομβρον· ὥστε εὐετηρίαν ἐκ τούτου συμβαίνειν ἀφόρου μηδέποτε τῆς γῆς οὔσης· τούς τε ξυλίνους καρποὺς γεννᾶσθαι πολλούς· καὶ τὰς ῥίζας τῶν φυτῶν καὶ μάλιστα τῶν μεγάλων καλάμων· γλυκείας καὶ φύσει καὶ ἑψήσει χλιαινομένου τοῦ ὕδατος, τοῖς ἡλίοις· τοῦ τ' ἐκπίπτοντος ἐκ διὸς καὶ τοῦ ποταμίου. τρόπον δή τινα λέγειν βούλεται· διότι ἡ παρὰ τοῖς ἄλλοις λεγομένη πέψις καὶ καρπῶν καὶ χυμῶν, παρ' ἐκείνοις ἕψησίς ἐστι καὶ κατεργάζεται τοσοῦτον εἰς εὐστομίαν ὅσον καὶ ἡ διὰ πυρός· διὸ καὶ τοὺς κλάδους τῶν δένδρων φησὶν εὐκαμπεῖς εἶναι ἐξ ὧν οἱ τροχοί· ἐκ δὲ τῆς αὐτῆς αἰτίας, ἐν οἷς καὶ ἐπανθεῖν ἔριον· ἐκ τούτου δὲ νέαρχος φησὶ τὰς εὐκρίους ὑφαίνεσθαι σινδόνας· τοὺς δὲ μακεδόνας ἀντὶ κναφάλλων, αὐτοῖς χρῆσθαι· καὶ τοῖς σάγμασι σάγην· τοιαῦτα δὲ καὶ τὰ σηρικά· ἔκ τινων φλοιῶν ξαινομένης βύσσου· εἴρηκε δὲ καὶ περὶ τῶν καλάμων ὅτι ποιοῦσι μέλι μελισσῶν μὴ οὐσῶν· οὐ γὰρ δένδρον εἶναι καρποφόρον· ἐκ δὲ τοῦ καρποῦ μεθύειν· πολλὰ γὰρ καὶ δένδρα παράδοξα ἡ ἰνδικὴ τρέφει· ὧν ἐστι καὶ τὸ κάτω νεύοντας ἔχειν τοὺς κλάδους, τὰ δὲ φύλλα ἀσπίδος οὐκ ἐλάττω· ὀνησίκριτος ἢ καὶ περιεργότερον τὰ ἐν τῇ μουσικανοῦ διεξιών, ἅ φησι νοτιώτατα εἶναι τῆς ἰνδικῆς, διηγεῖται μεγάλα δένδρα εἶναί τινα· ὧν τοὺς κλάδους αὐξηθέντας ἐπὶ δώδεκα πήχεις, ἔπειτα τὴν λοιπὴν αὔξησιν κατωφερῆ λαμβάνειν, ὡς ἂν κατακαμπτομένους ἕως ἂν ἅψωνται τῆς γῆς· ἔπειτα κατὰ γῆς διαδοθέντας ῥιζοῦσθαι ὁμοίως ταῖς καταπῆξιν· εἶτ' ἀναδοθέντας στελεχοῦσθαι· ἐξ οὗ πάλιν ὁμοίως τῇ αὐξήσει κατακαμφθέντα, ἄλλην καταπῆξιν ποιεῖν· εἶτ' ἄλλην· καὶ οὕτως ἐφεξῆς· ὥστ' ἀφ' ἑνὸς δένδρου σκιάδιον γίνεσθαι μακρόν· πολυστύλῳ σκηνῇ ὅμοιον· λέγει δὲ καὶ μεγέθη δένδρων ὥς τε πέντε ἀνθρώποις δυσπερίληπτα

εἰν τὰ στελέχη. κατὰ δὲ τὴν ἀκεσίνην καὶ τὴν συμβολὴν τὴν πρὸς ὑάρωτιν, καὶ ἀριστόβουλος εἴρηκε
περὶ τῶν κατακαμπτομένους ἐχόντων τοὺς κλάδους. καὶ περὶ τοῦ μεγέθους. ὥσθ' ὑφ' ἑνὶ δένδρῳ μεσημ-
βρίζειν σκιαζομένους ἱππέας πεντήκοντα. οὗτος δὲ τετρακοσίους. λέγει δὲ ὁ ἀριστόβουλος καὶ ἄλλο δέν-
δρον. οὐ μεγάλους λοβοὺς λεπίσματα καρποὺς ἔχον ὡς ὁ κύαμος. δέκα δακτύλους τὸ μῆκος πλήρεις μέ-
λιτος. τοὺς δὲ φαγόντας οὐ ῥᾳδίως σώζεσθαι. ἅπαντας δ' ὑπερβέβληνται περὶ τοῦ μεγέθους τῶν δέν-
δρων, οἱ φήσαντες ἑωρᾶσθαι πέραν τοῦ ὑαρώτιδος δένδρον. ποιοῦν σκιὰν ταῖς μεσημβρίαις, πεντασταδίον.
καὶ τῶν ἐριοφόρων δένδρων φησὶν οὗτος τὸ ἄνθος ἔχειν πυρῆνα. ἐξαιρεθέντος δὲ τούτου, ξαίνεσθαι τὸ
λοιπὸν ὁμοίως ταῖς ἐρέαις. ἐν δὲ τῇ μουσικανοῦ, καὶ σῖτον αὐτοφυῆ λέγει πυρῷ παραπλήσιον καὶ ἄμ-
πελον. ὥστ' οἰνοφορεῖν τῶν ἄλλων, ἄοινον λεγόντων τὴν ἰνδικήν. ὥστε μὴ δ' αὐλὸν εἶναι κατὰ τὸν ἀνά-
χαρσιν. μήτ' ἄλλο τῶν μουσικῶν ὀργάνων μηδέν. πλὴν κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ κροτάλων ἃ τοὺς
θαυματοποιοὺς κεκτῆσθαι. καὶ πολυφάρμακον δέ, καὶ πολύρριζον, τῶν τε σωτηρίων, καὶ τῶν ἐναντίων,
ὥσπερ καὶ πολυχρώματον, καὶ οὗτος εἴρηκε, καὶ ἄλλοι γε. προστίθησι δ' οὗτος ὅτι, καὶ νόμος εἴη τὸν
ἀνευρόντα τι τῶν ὀλεθρίων, ἐὰν μὴ προσανεύρῃ, καὶ τὸ ἄκος αὐτοῦ θανατοῦσθαι. ἀνευρόντα δὲ τιμῆς
τυγχάνειν παρὰ τοῖς βασιλεῦσιν. ἔχειν, καὶ κιννάμωμον καὶ νάρδον. καὶ ἄλλα ἀρώματα τὴν νότιον
γῆν τὴν ἰνδικὴν ὁμοίως, ὥσπερ τὴν ἀραβίαν, καὶ τὴν αἰθιοπίαν. ἔχουσάν τι ἐμφερὲς ἐκείνοις κατὰ
τοὺς ἡλίους. διαφέρει δὲ τῷ πλεονασμῷ τῶν ὑδάτων. ὥστ' ἔνικμον τὸν ἀέρα εἶναι, καὶ τροφιμώ-
τερον παρὰ τοῦτο καὶ γόνιμον μᾶλλον. ὡς δ' αὔτως, καὶ τὴν γῆν. καὶ τὸ ὕδωρ ἤδη, καὶ μείζω τά τε
χερσαῖα τῶν ζῴων. καὶ τὰ καθ' ὕδατος, τὰ ἐν ἰνδοῖς τῶν παρ' ἄλλοις εὑρίσκεσθαι. καὶ τὸν νεῖλον δὲ εἶναι
γόνιμον μᾶλλον ἑτέρων, καὶ μεγαλοφυῆ, καὶ γενναῖα καὶ τἄλλα καὶ τὰ ἀμφίβια. τάς τε γυναῖκας ἔσθ'
ὅτε καὶ τετράδυμα τίκτειν τὰς αἰγυπτίας. ἀριστοτέλης δέ, καὶ ἑπτὰ δίδυμα ἱστορεῖ τετοκέναι.
καὶ αὐτὸς πολύγονον καλῶν τὸν νεῖλον, καὶ τρόφιμον, διὰ τὴν ἐκ τῶν ἡλίων μετρίαν ἕψησιν αὐτὸ κατα-
λιπόντων τὸ τρόφιμον τὸ δὲ περιττὸν ἐκθυμιώντων. ἀπὸ δὲ τῆς αὐτῆς αἰτίας καὶ τοῦτο συμβαίνειν,
εἰκός. ὅπερ φησὶν οὗτος. ὅτι τῷ ἡμίσει πυρὶ ἕψεται τὸ τοῦ νείλου ὕδωρ ἢ τὰ ἄλλα. ὅσῳ δέ γε φησὶ
τὸ μὲν τοῦ νείλου ὕδωρ δι' εὐθείας ἔπεισι πολλὴν χώραν, καὶ στενήν. καὶ μεταβάλλει πολλὰ κλίματα
καὶ πολλοὺς ἀέρας. τὰ δ' ἰνδικὰ ῥεύματα, ἐς πεδία ἀναχεῖται μείζω καὶ πλατύτερα. ἐνδιατρίβον-
τα πολὺν χρόνον τοῖς αὐτοῖς κλίμασι. τόσῳ δὲ ἐκεῖνα τούτου τροφιμώτερα. διό τι καὶ τὰ κήτη μεί-
ζω τε, καὶ πλείω. καὶ ἐκ τῶν νεφῶν δὲ ἑφθὸν ἤδη χεῖσθαι τὸ ὕδωρ. τοῦτο δ' οἱ μὲν περὶ ἀριστόβουλον,
οὐκ ἄν, συγχωροῖεν οἱ φάσκοντες μὴ ὕεσθαι τὰ πεδία. ὀνησικρίτῳ δὲ δοκεῖ, τόδε τὸ ὕδωρ αἴτιον εἶναι
τῶν ἐν τοῖς ζῴοις ἰδιωμάτων. καὶ φέρει σημεῖον τὸ καὶ τὰς χρόας τῶν πινόντων βοσκημάτων ξενικῶν,
ἀλλάττεσθαι πρὸς τὸ ἐπιχώριον. τοῦτο μὲν οὖν εὖ. οὐκέτι δὲ καὶ τοῦ μέλανας εἶναι καὶ οὐλότριχας
τοὺς αἰθίοπας, ἐν ψιλοῖς τοῖς ὕδασι τὴν αἰτίαν τιθέναι. μέμφεσθαι δὲ τὸν θεοδέκτην εἰς αὐτὸν τὸν ἥ-
» λιον ἀναφέροντα τὸ αἴτιον ὡς φησὶν οὗτος. οἷς ἀγχιτέρμων ἥλιος διφρηλατῶν. σκοτεινὸν ἄνθος ἐξέ-
χρωσε λιγνύος εἰς σώματ' ἀνδρῶν. καὶ συνέστρεψε κόμας μορφαῖς ἀναυξήτοισι συντήξας πυρός. ἔ-
χοι δ' ἄν τινα λόγον. φησὶ γὰρ μὴ τοῖς ἐγγυτέρω τοῖς αἰθίοψιν εἶναι τὸν ἥλιον, ἢ τοῖς ἄλλοις. ἀλλὰ μᾶλ-
λον κατὰ κάθετον εἶναι. καὶ διὰ τοῦτο ἐπικαίεσθαι πλέον. ὥστ' οὐκ εὖ λέγεσθαι ἀγχιτέρμονα αὐ-
τοῖς τὸν ἥλιον. ἴσον πάντων διέχοντα. μήτε τὸ θάλπος εἶναι τοῦ τοιούτου πάθους αἴτιον. μηδὲ γὰρ τοῖς
ἐν γαστρὶ ὧν οὐχ ἅπτεται ἥλιος. βελτίους δὲ οἱ τὸν ἥλιον αἰτιώμενοι, καὶ τὴν ἑαυτοῦ ἐπίκαυσιν, κατ' ἔ-
κλειψιν σφοδρὰν τῆς ἐπιπολῆς ἰκμάδος. καθ' ὃ καὶ τοὺς ἰνδοὺς μὴ οὐλοτριχεῖν φαμέν. μηδ' οὕτω
πεπεισμένως ἐπικεκαῦσθαι τὴν χρόαν. ὅτι ὑγροῦ κοινωνοῦσιν ἀέρος. ἐν δὲ τῇ γαστρὶ ἤδη κατὰ σπερ-
ματικὴν διάθεσιν τοιαῦτα γίνεται οἷα τὰ γεννῶντα. καὶ γὰρ πάθη συγγενικὰ οὕτω λέγεται. καὶ ἄλ-
λαι ὁμοιότητες. καὶ τὸ πάντων δ' ἴσον ἀπέχειν τὸν ἥλιον, πρὸς αἴσθησιν λέγεται. οὐ πρὸς λόγον. καὶ
πρὸς αἴσθησιν οὐχ οὕτως ἔτυχεν. ἀλλ' ὡς φαμὲν σημείου λόγον ἔχειν τὴν γῆν πρὸς τὴν τοῦ ἡλίου σφαῖ-
ραν. ἐπεὶ πρός γε τὴν τοιαύτην αἴσθησιν καθ' ἣν θάλπους ἀντιλαμβανόμεθα, ἐκεῖθεν μὲν μᾶλλον. πόρρω-
θεν δὲ ἧττον οὐκ ἴσον. οὕτω δ' ἀγχιτέρμων ὁ ἥλιος λέγεται τοῖς αἰθίοψιν, οὐχ ὡς ὀνησίκριτος δέδε-
κται. καὶ τοῦτο δὲ τῶν ὁμολογουμένων ἐστί. καὶ τῶν σωζόντων τὴν πρὸς τὴν αἴγυπτον ὁμοιότητα, καὶ
τὴν αἰθιοπίαν. ὅτι τῶν πεδίων ὅσα μὴ ἐπίκλυσα, ἄκαρπά ἐστι διὰ τὴν ἀνυδρίαν. νέαρχος δὲ τὸ ζητού-
μενον πρότερον ἐπὶ τοῦ νείλου. πόθεν ἡ πλήρωσις αὐτοῦ, διδάσκειν ἔφη τοὺς ἰνδικοὺς ποταμούς, ὅτι
ἐκ τῶν θερινῶν ὄμβρων συμβαίνει. ἀλέξανδρον δ' ἐν μὲν τῷ ὑδάσπῃ κροκοδείλους ἰδόντα. ἐν δὲ τῷ ἀ-
κεσίνῃ κυάμους αἰγυπτίους. εὑρηκέναι δόξαι τὰς τοῦ νείλου πηγάς, καὶ παρασκευάζεσθαι στόλον εἰς τὴν
αἴγυπτον, ὡς τῷ ποταμῷ τούτῳ μέχρις ἐκεῖσε πλευσόμενον. μικρὸν δ' ὕστερον γνῶναι διότι οὐ δύ-
ναται ὃ ἤλπισε. μέσον γὰρ μεγάλοι ποταμοί, καὶ δεινὰ ῥεῖθρα. ὠκεανὸς μὲν πρῶτον εἰς ὃν ἐκδιδόασιν
οἱ ἰνδικοὶ πάντες ποταμοί. ἔπειτα ἡ ἀριανή, καὶ ὁ περσικὸς κόλπος. καὶ ὁ ἀράβιος. καὶ αὐτὴ ἡ ἀ-
ραβία. καὶ ἡ τρωγλοδυτική. τὰ μὲν οὖν περὶ τῶν ἀνέμων, καὶ τῶν ὄμβρων, τοιαῦτα λέγεται, καὶ
τῆς πληρώσεως τῶν ποταμῶν, καὶ τῆς ἐπικλύσεως τῶν πεδίων. δεῖ δὲ καὶ τὰ καθ' ἕκαστα περὶ τούτων

ποταμῶν

ποταμῶν εἰπεῖν, ὅσα πρὸς τὴν γεωγραφίαν χρήσιμα. καὶ ὅσων ἱστορίαν παρειλήφαμεν ἄλλως τε γὰρ οἱ ποταμοὶ φυσικοί τινες ὅροι, καὶ μεγεθῶν, καὶ σχημάτων τῆς χώρας ὄντες, ἐπιτηδειότητα πολλὴν παρέχουσι πρὸς ὅλην τὴν νῦν ὑπόθεσιν. ὁ δὲ νεῖλος, καὶ οἱ κατὰ τὴν ἰνδικὴν, πλεονέκτημά τι ἔχουσι παρὰ τοὺς ἄλλους, διὰ τὸ τὴν χώραν ἀοίκητον εἶναι χωρὶς αὐτῶν. πλωτὴν ἅμα, καὶ γεωργήσιμον οὖσαν, καὶ μήτε ἐφοδεύεσθαι δυναμένην ἄλλως, μήτ' οἰκεῖσθαι τὸ παράπαν. τοὺς μὲν οὖν εἰς τὸν ἰνδὸν καταφερομένους, ἱστοροῦμεν τοὺς ἀξίους μνήμης, καὶ τὰς χώρας δι' ὧν ἡ φορά. τῶν δ' ἄλλων ἐστὶν ἄγνοια πλείων ἢ γνῶσις. ἀλέξανδρος γὰρ ὁ μάλιστα ταῦτ' ἀνακαλύψας, κατ' ἀρχὰς μὲν ἡνίκα οἱ δαρεῖον δολοφονήσαντες, ὥρμησαν ἐπὶ τὴν τῆς βακτριανῆς ἀπόστασιν, ἔγνω προυργιαίτερον ὂν διώκειν, καὶ καταλύειν ἐκείνους. ἧκε μὲν οὖν τῆς ἰνδικῆς πλησίον δι' ἀρριανῶν. ἀφεὶς δ' αὐτὴν ἐν δεξιᾷ, ὑπερέβη τὸν παραπαμισὸν εἰς τὰ προσάρκτια μέρη, καὶ τὴν βακτριανὴν. καταστρεψάμενος δὲ τἀκεῖ πάντα ὅσα ἦν ὑπὸ πέρσαις, καὶ ἔτι πλείω, τότ' ἤδη, καὶ τῆς ἰνδικῆς ὠρέχθη. λεγόντων μὲν περὶ αὐτῆς πολλῶν. οὐ σαφῶς δέ. ἀνέστρεψε δ' οὖν ὑπερβὰς τὰ αὐτὰ ὄρη. κατ' ἄλλας ὁδοὺς ἐπιτομωτέρας. ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν ἰνδικήν. εἶτ' ἐπέστρεψεν εὐθὺς ἐπ' αὐτὴν, καὶ τοὺς ὅρους τοὺς ἑσπερίους αὐτῆς, καὶ τὸν κώφην ποταμὸν, καὶ τὸν χοάσπην. ὃς εἰς τὸν κώφην ἐμβάλλει ποταμὸν, καὶ κατὰ πληγέριον πόλιν ῥυεὶς παρὰ γωρυδάλην πόλιν, καὶ διεξιὼν τήν τε βανδοβηνὴν, καὶ τὴν γανδαρῖτιν, ἐπυνθάνετο δ' οἰκήσιμον εἶναι μάλιστα, καὶ εὔκαρπον τὴν ὀρεινὴν, καὶ προσάρκτιον. τὴν δὲ νότιον, τὴν μὲν ἄνυδρον, τὴν δὲ ποταμόκλυστον. καὶ τελέως ἔκπυρον, θηρίοις τε μᾶλλον ἢ ἀνθρώποις σύμμετρον. ὥρμησε μὲν οὖν τὴν ἐπαινουμένην κατακτᾶσθαι πρότερον. ἅμα καὶ τοὺς ποταμοὺς εὐπερατωτέρους νομίζων τῶν πηγῶν πλησίον. οὓς ἀναγκαῖον ἦν διαβαίνειν, ἐπικαρσίους ὄντας, καὶ τέμνοντας ἣν ἐπῄει γῆν, καὶ ἅμα δὲ, καὶ ἤκουσεν εἰς ἓν πλείους συνιόντας ῥεῖν. καὶ τοῦτ' ἀεὶ, καὶ μᾶλλον συμβαίνοι ὅσῳ πλέον εἰς τὸ πρόσθεν προΐοιεν. ὥστ' εἶναι δυσπερατωτέραν, καὶ ταῦτα ἐν πλοίων ἀπορίᾳ. δεδιὼς οὖν τοῦτο, διέβη τὸν κώφην. καὶ κατεστρέφετο τὴν ὀρεινὴν ὅση ἐτέτραπτο πρὸς ἕω. ἦν δὲ μετὰ τὸν κώφην ὁ ἰνδὸς, εἶθ' ὁ ὑδάσπης. εἶθ' ὁ ἀκεσίνης καὶ ὁ ὑαρώτις. ὕστατος δ' ὁ ὕπανις. περαιτέρω γὰρ προελθεῖν ἐκωλύθη. τοῦτο μὲν μαντείοις τισὶ προσέχων. τοῦτο δ' ὑπὸ τῆς στρατιᾶς ἀπηγορευκυίας ἤδη πρὸς τοὺς πόνους, ἀναγκασθείς. μάλιστα δ' ἐκ τῶν ὑδάτων ἔκαμνον συνεχῶς ὑόμενοι. ταῦτ' οὖν ἐγένετο γνώριμα ἡμῖν τῶν ἑωθινῶν τῆς ἰνδικῆς μερῶν, ὅσα ἐντὸς τοῦ ὑπάνιος. καὶ εἴ τινα προσιστόρησαν οἱ μετ' ἐκεῖνον περαιτέρω τοῦ ὑπάνιος προελθόντες μέχρι τοῦ γάγγου, καὶ παλιβόθρων. μετὰ μὲν οὖν τὸν κώφην ὁ ἰνδὸς ῥεῖ. τὰ δὲ μεταξὺ τούτων τοῖν δυεῖν ποταμοῖν ἔχουσιν ἀστακηνοί τε, καὶ μασιανοὶ καὶ νυσαῖοι, καὶ ὑπάσιοι. εἶθ' ἡ ἀσσακανοῦ. ὅπου μασόγα πόλις τὸ βασίλειον τῆς χώρας. ἤδη δὲ πρὸς τῷ ἰνδῷ πάλιν ἄλλη πόλις πευκολαῖτις. πρὸς ᾗ ζεῦγμα γενηθὲν ἐπεραίωσε τὴν στρατιάν. μεταξὺ δὲ τοῦ ἰνδοῦ, καὶ τοῦ ὑδάσπου, τάξιλά ἐστι πόλις μεγάλη καὶ εὐνομωτάτη. καὶ ἡ περικειμένη χώρα συχνὴ, καὶ σφόδρα εὐδαίμων. ἤδη συνάπτουσα, καὶ τοῖς πεδίοις. ἐδέξαντό τε δὴ φιλανθρώπως τὸν ἀλέξανδρον οἱ ἄνθρωποι. καὶ ὁ βασιλεὺς αὐτῶν ταξίλης. ἔτυχόν τε πλειόνων ἢ αὐτοὶ παρέσχον. ὥστε φθονεῖν τοὺς μακεδόνας, καὶ λέγειν ὡς οὐκ εἶχεν ὡς ἔοικεν ἀλέξανδρος οἷς εὐεργετήσει, πρὶν ἢ διέβη τὸν ἰνδόν. φασὶ δέ τινες εἶναι τὴν χώραν ταύτην αἰγύπτου μείζονα. ὑπὲρ δὲ ταύτης ἐν τοῖς ὄρεσιν ἡ τοῦ ἀβισάρου χώρα. παρ' ᾧ δύο δράκοντας ἀπήγγελλον οἱ παρ' αὐτοῦ πρέσβεις τρέφεσθαι. τὸν μὲν ὀγδοήκοντα πηχῶν, τὸν δὲ τετταράκοντα πρὸς τοῖς ἑκατόν. ὡς εἴρηκεν ὀνησίκριτος. ὃν οὐκ ἀλεξάνδρου ἢ τῶν παραδόξων ἀρχικυβερνήτην προσείποι τις ἄν, πάντες μὲν γὰρ οἱ περὶ ἀλέξανδρον, τὸ θαυμαστὸν ἀντὶ τἀληθοῦς ἀποδέχονται μᾶλλον. ὑπερβάλλεσθαι δὲ δοκεῖ τοὺς τοσούτους ἐκεῖνος τῇ τερατολογίᾳ. λέγει δ' οὖν τινα, καὶ πιθανὰ καὶ μνήμης ἄξια ὥστε, καὶ ἀπιστοῦντα μὴ παρελθεῖν αὐτά. περὶ δ' οὖν τῶν δρακόντων, καὶ ἄλλοι λέγουσιν ὅτι ἐν τοῖς ἠμωδοῖς ὄρεσι θηρεύουσι, καὶ τρέφουσιν ἐν σπηλαίοις. μεταξὺ δὲ τοῦ ὑδάσπου, καὶ τοῦ ἀκεσίνου, ἥ τε τοῦ πώρου ἐστὶ πολλὴ, καὶ ἀγαθὴ, σχεδόν τι, καὶ τριακοσίων πόλεων. καὶ ἡ πρὸς τοῖς ἠμωδοῖς ὄρεσιν ὕλη. ἐξ ἧς ἀλέξανδρος κατήγαγε τῷ ὑδάσπῃ κόψας ἐλάτην τε πολλὴν, καὶ πεύκην, καὶ κέδρον. καὶ ἄλλα παντοῖα στελέχη ναυπηγήσιμα. ἐξ ὧν στόλον κατεσκευάσατο ἐπὶ τῷ ὑδάσπῃ. πρὸς ταῖς ἐκτισμέναις ὑπ' αὐτοῦ πόλεσιν ἐφ' ἑκάτερα τοῦ ποταμοῦ. ὅπου τὸν πῶρον ἐνίκα διαβάς. ὧν τὴν μὲν, βουκεφαλίαν ὠνόμασεν ἀπὸ τοῦ πεσόντος ἵππου κατὰ τὴν μάχην τὴν πρὸς τὸν πῶρον. ἐκαλεῖτο δὲ βουκεφάλας ἀπὸ τοῦ πλάτους τοῦ μετώπου. πολεμιστὴς δ' ἦν ἀγαθός. καὶ ἀεὶ τούτῳ ἐκέχρητο κατὰ τοὺς ἀγῶνας. τὴν δὲ νίκαιαν ἀπὸ τῆς νίκης ἐκάλεσεν. ἐν δὲ τῇ λεχθείσῃ ὕλῃ, καὶ τὸ τῶν κερκοπιθήκων διηγοῦνται πλῆθος. ὑπερβάλλον, καὶ τὸ μέγεθος ὁμοίως. ὥστε τοὺς μακεδόνας ποτὲ ἰδόντας ἔν τισιν ἀκρολοφίαις ψιλαῖς ἑστῶτας ἐν τάξει κατὰ μέτωπον πολλούς. καὶ γὰρ ἀνθρωπονούστατον εἶναι τὸ ζῷον, οὐχ ἧττον τῶν ἐλεφάντων στρατοπέδου λαβεῖν φαντασίαν. καὶ ὁρμῆσαι μὲν ἐπ' αὐτοὺς ὡς πολεμίους. μαθόντας δὲ παρὰ ταξίλου συνόντος τότε τῷ βασιλεῖ τὴν ἀλήθειαν παύσασθαι. ἡ δὲ θήρα τοῦ ζώου διττή. μιμητικὸν γὰρ καὶ ἐπὶ τὰ δένδρα ἀναφευκτικόν. οἱ οὖν θηρεύοντες ἐπὰν ἴδωσιν ἐπὶ δένδρων ἱδρυμένον, ἐν ὄψει θέντες τρυβλίον ὕδωρ ἔχον τοὺς ἑαυτῶν ὀφθαλμοὺς ἀ-

λείφουσιν δὲ αὐτοῦ. εἶτ' αὖτις τοῦ ὕδατος, ἐξ οὗ συβλίον θέντες, ἀπίασι καὶ λοχῶσι πόρρωθεν. ἐπὰν δὲ κα-
ταπιόντες τὸ θεῖον ἐγχρίσηται τοῦ ἰξοῦ. καταμύσαντος δ' ἀποληφθῇ τὰ βλέφαρα, ἐπιόντες ζωγροῦ-
σιν. εἷς μὲν τρόπος οὗτος. ἄλλος δὲ, ὑποδυσάμενοι θυλάκους, ὡς ἀναξυρίδας ἐπίασιν. ἄλλους καταλείπον-
τες δασεῖς. τὰ ἐντὸς κεχρισμένους ἰξῷ. ἐνδύντας δὲ εἰς αὐτοὺς ῥᾳδίως αἱροῦσι. καὶ τὴν καθαίαν δέ τι-
νες τὴν σωπείθους τῶν νομαρχῶν τινὸς κατὰ τήνδε τὴν μεσοποταμίαν τιθέασιν. ἄλλοι δὲ καὶ τοῦ ἀκε-
σίνου πέραν, καὶ τοῦ ὑαρώτιδος ὅμορον τῇ τοῦ πώρου. ὃς ἦν ἀνεψιὸς τοῦ ὑπ' ἀλεξάνδρου ἁλόντος,
καλοῦσι δὲ γανδαρίδα τὴν ὑπὸ τούτῳ χώραν. ἐν δὲ τῇ καθαίᾳ καινότατόν τι ἱστορεῖται τὸ περὶ τοῦ κάλ-
λους. ὅτι τιμᾶται διαφερόντως, ὡς ἵππων καὶ κυνῶν. βασιλέα τε γοῦν τὸν κάλλιστον, αἱρεῖσθαί φησιν
ὀνησίκριτος. γινόμενόν τε παιδίον μετὰ δίμηνον κρίνεσθαι δημοσίᾳ, πότερον ἔχει τὴν ἔννομον ἀρχὴν,
καὶ τοῦ ζῆν ἀξίαν ἢ οὔ. κριθέντος δ' ὑπὸ τοῦ ἀποδειχθέντος ἄρχοντος ζῆν, ἢ θανατοῦσθαι. βάπτεσθαί τε
πολλοῖς ἀνθεινοτάτοις χρώμασι τοὺς πώγωνας αὐτοῦ. τούτου χάριν καλλωπιζομένους. τοῦτο δὲ καὶ ἄλλως
ποιεῖν ἐπιμελῶς πολλοὺς τῶν ἰνδῶν. καὶ γὰρ δὴ φέρειν τὴν χώραν χρόας θαυμαστὰς, καὶ θριξὶ καὶ ἐσθῆσι.
τοὺς δ' ἀνθρώπους τὰ ἄλλα μὲν εὐτελεῖς εἶναι. φιλοκόσμους δέ. ἴδιον δὲ τῶν καθαίων, καὶ τοῦτο ἱστορεῖται. τὸ
αἱρεῖσθαι νυμφίον, καὶ νύμφην ἀλλήλους. καὶ τὸ συγκατακαίεσθαι τεθνεῶσι τοῖς ἀνδράσι τὰς γυναῖ-
κας κατὰ τοιαύτην αἰτίαν. ὅτι ἐρῶσαί ποτε τῶν νέων ἀφίσταιντο τῶν ἀνδρῶν. ἢ φαρμακεύοιεν αὐτούς.
νόμον οὖν θέσθαι τοῦτον, ὡς παυσομένης τῆς φαρμακείας. οὐ πιθανῶς μὲν ὁ νόμος. οὐδ' ἡ αἰτία λέγε-
ται. φασὶ δ' ἐν τῇ σωπείθους χώρᾳ ὀρυκτῶν ἁλῶν ὄρος εἶναι. ἀρκεῖν δυνάμενον ὅλῃ τῇ ἰνδικῇ. καὶ χρυ-
σεῖα δὲ καὶ ἀργύρεια οὐ πολὺ ἄπωθεν ἐν ἄλλοις ὄρεσιν ἱστορεῖται καλά, ὡς ἐδήλωσε γόργος ὁ μεταλλευ-
τής. οἱ δ' ἰνδοὶ μεταλλείας καὶ χωνείας ἀπείρως ἔχοντες, οὐδ' ὧν εὐποροῦσιν ἴσασιν. ἀλλ' ἁπλούστερον με-
ταχειρίζονται τὸ πρᾶγμα. ἐν δὲ τῇ σωπείθους καὶ τὰς τῶν κυνῶν ἀρετὰς διηγοῦνται θαυμαστάς. λα-
βεῖν γοῦν τὸν ἀλέξανδρον παρὰ τοῦ σωπείθους, κύνας πεντήκοντα καὶ ἑκατόν. διὰ πείρας δὲ χάριν
λέοντι προσαφεῖναι δύο. κρατουμένων δ' αὐτῶν δύο ἄλλους ἐπαφεῖναι. τότε δ' ἤδη καθεστώτων εἰς ἀν-
τίπαλα, τὸν μὲν σωπείθη κελεῦσαι τῶν κυνῶν ἕνα ἀποσπᾶν τοῦ σκέλους τινὰ λαβόμενον. ἐὰν δὲ μὴ
ὑπακούῃ ἀποτεμεῖν. τὸν ἀλέξανδρον δὲ κατ' ἀρχὰς μὲν ἀποτεμεῖν οὐ συγχωρεῖν, φειδόμενον τοῦ κυνός. εἰπόν-
τος δ' ὅτι τέτταρας ἀντιδώσω σοι, συγχωρῆσαι. καὶ τὸν κύνα περιϊδεῖν ἀποτμηθέντα τὸ σκέλος βρα-
δείᾳ τομῇ, πρὶν ἀνεῖναι τὸ δῆγμα. ἡ μὲν οὖν μέχρι τοῦ ὑδάσπου ὁδὸς τὸ πλέον ἦν ἐπὶ μεσημβρίαν. ἡ δ'
ἐνθένδε πρὸς ἕω μᾶλλον μέχρι τοῦ ὑπάνιος. ἅπασα δὲ τῆς ὑπωρείας μᾶλλον, ἢ τῶν πεδίων ἐχομένη.
οὐ δ' οὖν ἀλέξανδρος ἀπὸ τοῦ ὑπάνιος ἀναστρέψας ἐπὶ τὸν ὑδάσπην, καὶ τὸν ναύσταθμον συνεκρότει
τὸν στόλον. εἶτ' ἔπλει τῷ ὑδάσπῃ. πάντες δ' οἱ λεχθέντες ποταμοὶ συμβάλλουσιν εἰς ἕνα τὸν ἰνδόν. ὕστα-
τος δὲ ὕπανις. πεντεκαίδεκα δὲ τοὺς σύμπαντας φασὶ συρρεῖν τούς γε ἀξιολόγους. πληρωθεὶς δ' ἐκ πάν-
των ὥστε καὶ ἐφ' ἑκατὸν σταδίους, ὡς οἱ μὴ μετριάζοντες φασὶν εὐρύνεσθαι κατά τινας τόπους. ὥσθ'
οἱ μετριώτεροι πεντήκοντα τὸ πλεῖστον. ἐλάχιστον δὲ ἑπτὰ, καὶ πολλὰ ἔθνη καὶ πόλεις εἰσὶ περίξ. ἔπει-
τα δυσὶ στόμασιν εἰς τὴν νοτίαν ἐκδίδωσι θάλατταν. καὶ τὴν παταληνὴν προσαγορευομένην ποιεῖ νῆ-
σον. ταύτην δ' ἔσχε τὴν διάνοιαν ἀλέξανδρος, ἀφεὶς τὰ πρὸς ἕω μέρη. πρῶτον μὲν διὰ τὸ κωλυθῆναι
διαβῆναι τὸν ὕπανιν. ἔπειτα καὶ ψευδῆ καταμαθὼν τῇ πείρᾳ τὸν προκατέχοντα λόγον, ὡς ἐκπύ-
ρα εἴη, καὶ θηρίοις μᾶλλον οἰκήσιμα τὰ ἐν τοῖς πεδίοις, ἢ ἀνθρωπείῳ γένει. διόπερ ὥρμησεν ἐπὶ ταῦ-
τα ἀφεὶς ἐκεῖνα. ὥστε καὶ ἐγνώσθη ταῦτα ἀντ' ἐκείνων ἐπὶ πλέον. ἡ μὲν οὖν μεταξὺ τοῦ ὑπάνιος, καὶ
τοῦ ὑδάσπου, λέγεται ἐννέα ἔχειν ἔθνη. πόλεις δὲ εἰς πεντακισχιλίας. οὐκ ἐλάττους κῶ τῆς μεροπίδος. δο-
κεῖ δὲ πρὸς ὑπερβολὴν εἰρῆσθαι τὸ πλῆθος. ἡ δὲ μεταξὺ τοῦ ἰνδοῦ καὶ τοῦ ὑδάσπου, εἴρηται σχεδόν-
τι ὑφ' ὧν οἰκεῖται τῶν ἀξίων μνήμης. κάτω δ' ἑξῆς εἰσὶν οἵ τι σίβαι λεγόμενοι περὶ ὧν καὶ πρότερον ἐ-
μνήσθημεν. καὶ μαλλοὶ, καὶ ὀξυδράκαι. μεγάλα ἔθνη. καὶ μαλλοὶ μὲν παρ' οἷς ἀποθανεῖν ἐκινδύνευσεν ἀ-
λέξανδρος, τρωθεὶς ἐν ἁλώσει πολίχνης τινός. ὀξυδράκαι δὲ οὓς τοῦ διονύσου συγγενεῖς ἔφαμεν μεμυ-
θεῦσθαι. πρὸς αὐτῇ δ' ἤδη τῇ παταληνῇ, τήν τε τοῦ μουσικανοῦ λέγουσι. καὶ τὴν σάβου τὰ σινδονα-
λίαν. καὶ ἔτι τὴν πορτικανοῦ. καὶ ἄλλων ὧν ἐκράτησεν ἁπάντων ἀλέξανδρος, τὴν τοῦ ἰνδοῦ παρου-
κοῦντα ποταμίαν. ὑστάτης δὲ τῆς τὴν παταληνήν. ἣν ὁ ἰνδὸς ποιεῖ. σχισθεὶς εἰς δύο προχοάς. ἀριστόβουλος
μὲν οὖν εἰς χιλίους σταδίους διέχειν ἀλλήλων φησὶν αὐτάς. νέαρχος δ' ὀκτακοσίους προστίθησιν. ὀνησί-
κριτος δὲ τὴν πλευρὰν ἑκάστην τῆς ἀπολαμβανομένης νήσου. τριγώνου τὸ σχῆμα δισχιλίων. τοῦ δὲ ποταμοῦ
τὸ πλάτος καθ' ὃ σχίζεται εἰς τὰ στόματα, ὅσον διακοσίων. καλεῖ δὲ τὴν νῆσον δέλτα. καὶ φησὶν ἴσην εἶ-
ναι τοῦ κατ' αἴγυπτον δέλτα. οὐκ ἀληθὲς τοῦτο λέγων. τὸ γὰρ κατ' αἴγυπτον δέλτα, χιλίων καὶ τρια-
κοσίων σταδίων ἔχειν λέγεται τὴν βάσιν. τὰς δὲ πλευρὰς ἑκατέραν ἐλάττω τῆς βάσεως. ἐν δὲ τῇ πατ-
ταληνῇ, πόλις ἐστὶν ἀξιόλογος τὰ πάτταλα. ἀφ' ἧς καὶ ἡ νῆσος καλεῖται. φησὶ δ' ὀνησίκριτος τὴν πλεί-
στην παραλίαν τὴν ταύτῃ, πολὺ τὸ τεναγῶδες ἔχειν. καὶ μάλιστα κατὰ τὰ στόματα τῶν ποταμῶν. διά τε τὴν
χοῦν, καὶ τὰς πλημμυρίδας, καὶ τὸ μὴ πνεῖν ἀπογαίας. ἀλλ' ὑπὸ τῶν πελαγίων ἀνέμων, κατέχεσθαι τοὺς τό-
πους τὸ πλέον. λέγει δὲ καὶ περὶ τῆς μουσικανοῦ χώρας ἐγκωμιάζων αὐτήν. ὧν τινα καὶ ἄλλοις ἰνδοῖς κοινὰ ἱστό-

ῥεῖται. ὥστε μακρόβιον. ὥστε καὶ τριάκοντα ἤδη τοῖς ἐκ αὐτῶν προσλαμβάνει. καὶ γὰρ τοὺς σῆρας ἔτι τούτων μακροβιωτέρους τινὰς φασί. καὶ τὸ λιτόβιον. καὶ τὸ ὑγιεινόν. καὶ γὰρ τῆς χώρας ἀφθονίαν ἁπάντων ἐχούσης. ἴδιον δὲ τὸ, συσσίτιά τινα λακωνικὰ αὐτοῖς εἶναι δημοσίᾳ σιτουμένων. ὄψα δ' ἐκ θήρας ἐχόντων, καὶ τῷ χρυσῷ μὴ χρῆσθαι μήτ' ἀργύρῳ μετάλλων ὄντων, καὶ τοῖς δούλοις τοῖς ἐν ἀκμῇ χρῆσθαι νέοις. ὡς κρῆτες μὲν τοῖς ἀφαμιώταις. λάκωνες δὲ τοῖς εἵλωσι. μὴ ἀκριβοῦντες δὲ τὰς ἐπιστήμας πλὴν ἰατρικῆς. ἐπὶ τινῶν γὰρ κακουργίαν εἶναι τὴν ἐπὶ πλεῖον ἄσκησιν. οἷον ἐπὶ τοῖς πολεμικοῖς καὶ τῶν ὁμοίων. δίκην δὲ μὴ εἶναι πλὴν φόνου καὶ ὕβρεως. οὐκ ἐπ' αὐτῷ γὰρ τὸ μὴ παθεῖν ταῦτα. τὰ δ' ἐν τοῖς συμβολαίοις ἐπ' αὐτῷ ἑκάστῳ. ὥστε ἀνέχεσθαι δεῖ ἐάν τις παραβῇ τὴν πίστιν. ἀλλὰ καὶ προσέχειν ὅτῳ πιστευτέον καὶ μὴ δικῶν πληροῦν τὴν πόλιν. ταῦτα μὲν οἱ μετ' ἀλεξάνδρου στρατεύσαντες λέγουσιν. ἐκδέδοταί δέ τις, καὶ κρατεροῦ πρὸς τὴν μητέρα ἀριστοπάτραν, ἐπιστολή. πολλά τε ἄλλα παράδοξα φράζουσα, καὶ οὐχ ὁμολογοῦσα οὐδενί. καὶ δὴ καὶ τὸ μέχρι τοῦ γάγγου προελθεῖν τὸν ἀλέξανδρον. αὐτός τέ φησιν ἰδεῖν τὸν ποταμόν, καὶ κήτη τὰ ἐπ' αὐτῷ. καὶ μεγέθους, καὶ πλάτους καὶ βάθους πόρρω πίστεως μᾶλλον ἢ ἐγγύς. ὅτι μὲν γὰρ μέγιστος τῶν μνημονευομένων κατὰ τὰς τρεῖς ἠπείρους, καὶ μετ' αὐτὸν ὁ ἰνδός. τρίτος δὲ καὶ τέταρτος ὁ ἴστρος, καὶ ὁ νεῖλος, ἱκανῶς συμφωνεῖται. τὰ καθ' ἕκαστα δ' ἄλλοι ἄλλως περὶ αὐτοῦ λέγουσιν. οἱ μὲν τριάκοντα σταδίων τοὐλάχιστον πλάτος. οἱ δὲ καὶ τριῶν. μεγασθένης δὲ ὅταν ᾖ μέτριος καὶ εἰς ἑκατὸν εὐρύνεσθαι. βάθος δὲ εἴκοσι ὀργυιῶν τοὐλάχιστον. ἐπὶ δὲ τῇ συμβολῇ τούτου τε καὶ τοῦ ἄλλου ποταμοῦ τὰ παλίβοθρα ἱδρῦσθαι. σταδίων ὀγδοήκοντα τὸ μῆκος. πλάτος δὲ πεντεκαίδεκα. ἐν παραλληλογράμμῳ σχήματι ξύλινον περίβολον ἔχουσα κατατετρημένον. ὥστε διὰ τῶν ὀπῶν τοξεύειν. προκεῖσθαι δὲ καὶ τάφρον φυλακῆς τε χάριν καὶ ὑποδοχῆς τῶν ἐκ τῆς πόλεως ἀπορροιῶν. τὸ δ' ἔθνος ἐν ᾧ ἡ πόλις αὕτη καλεῖσθαι πρασίους, διαφορώτατον τῶν πάντων. τὸν δὲ βασιλεύοντα ἐπώνυμον δεῖ τῆς πόλεως εἶναι παλίβοθρον καλούμενον, πρὸς τῷ ἰδίῳ τῷ ἐκ γενετῆς ὀνόματι. καθάπερ τὸν σανδρόκοττον. πρὸς ὃν ἧκεν ὁ μεγασθένης πεμφθείς. τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ παρὰ τοῖς παρθυαίοις. ἀρσάκαι γὰρ καλοῦνται πάντες. ἰδίᾳ δὲ ὁ μὲν, ὀρώδης. ὁ δὲ φραάτης. ὁ δ' ἄλλο τι. ἀρίστη δ' ὁμολογεῖται πᾶσα ἡ τοῦ ὑπάνιος πέραν. οὐκ ἀκριβοῦνται δέ. ἀλλὰ διὰ τὴν ἄγνοιαν καὶ τὸν ἐκτοπισμόν, λέγεται πάντ' ἤδη τὸ μεῖζον ἢ τὸ τερατωδέστερον. οἷα τὰ τῶν χρυσωρύχων μυρμήκων. καὶ ἄλλων θηρίων, καὶ ἀνθρώπων ἰδιομόρφων. καὶ δυνάμεσί τισιν ἐξηλλαγμένων, ὡς τοὺς σῆρας μακροβίους φασὶ πέρα, καὶ διακοσίων ἐτῶν παρατείνοντας. λέγουσι δὲ καὶ ἀριστοκρατικήν τινα σύνταξιν πολιτείας αὐτόθι ἐκ πεντακισχιλίων βουλευμάτων συνεστῶσαν. ὧν ἕκαστον παρέχεσθαι τῷ κοινῷ ἐλέφαντα. καὶ τίγρεις δ' ἐν τοῖς πρασίοις φησὶν ὁ μεγασθένης. γίνεσθαι μεγίστους. σχεδὸν δέ τι καὶ διπλασίους λεόντων. δυνατοὺς δὲ ὥστε τῶν ἡμέρων τινὰ ἀγόμενον ὑπὸ τεττάρων, τῷ ὀπισθίῳ σκέλει δραξάμενον ἡμιόνου, βιάσασθαι καὶ ἑλκύσαι πρὸς αὑτόν. κερκοπιθήκους δέ, μείζους τῶν μεγίστων κυνῶν, λευκούς. πλὴν τοῦ προσώπου. τοῦτο δ' εἶναι μέλαν. παρ' ἄλλοις δ' ἀνάπαλιν. τὰς δὲ κέρκους μείζους δυεῖν πηχῶν. ἡμερωτάτους δέ, καὶ οὐ κακοήθεις περὶ ἐπιθέσεις, καὶ κλοπάς. λίθους δ' ὀρύττεσθαι λιβανόχρους. γλυκυτέρους σύκων ἢ μέλιτος. ἀλλαχοῦ δὲ διπήχεις ὄφεις ὑμενοπτέρους, ὥσπερ αἱ νυκτερίδες, καὶ τούτους δὲ νύκτωρ πέτεσθαι. σταλαγμοὺς ἀφιέντας οὔρων. τοὺς δὲ ἱδρώτων διασήποντας τὸν χρῶτα τοῦ μὴ φυλαξαμένου. καὶ σκορπίους εἶναι πτηνούς, ὑπερβάλλοντας μεγέθει. φύεσθαι δὲ, καὶ ἔβενον. εἶναι δὲ καὶ κύνας ἀλκίμους, οὐ πρότερον μεθιέντας τὸ δηχθέν, πρὶν εἰς τοὺς ῥώθωνας ὕδωρ καταχυθῆναι. ἐνίους δ' ὑπὸ προθυμίας ἐν τῷ δήγματι διαστρέφεσθαι τοὺς ὀφθαλμούς. τοῖς δὲ καὶ ἐκπίπτειν. κατασχεθῆναι δὲ, καὶ λέοντα ὑπὸ κυνός, καὶ ταῦρον. τὸν δὲ ταῦρον καὶ ἀποθανεῖν κρατούμενον τοῦ ῥύγχους πρότερον, ἢ ἀφεθῆναι. ἐν δὲ τῇ ὀρεινῇ σιλλαν ποταμὸν εἶναι. ᾧ μηδὲν ἐπιπλεῖ. δημόκριτον μὲν οὖν ἀπιστεῖν ἅτε πολλὴν τῆς ἀσίας πεπλανημένον. καὶ ἀριστοτέλης δὲ ἀπιστεῖ. καίπερ καὶ ἀέρων ὄντων λεπτῶν οἷς οὐδὲν ἐποχεῖται πτηνόν. ἔτι δὲ τῶν ἀναφερομένων ἀτμῶν ἐπισπαστικοί τινες εἰσὶ πρὸς ἑαυτούς. καὶ οἷον ῥοφητικοὶ τοῦ ὑπερπετοῦς. ὡς τὸ ἤλεκτρον τοῦ ἀχύρου. καὶ ἡ σιδηρῖτις τοῦ σιδήρου. τάχα δὲ καὶ καθ' ὕδατος τοιαῦταί τινες ἂν εἶεν δυνάμεις. ταῦτα μὲν οὖν φυσιολογίας ἔχεταί τινος, καὶ τῆς περὶ τῶν ὀχουμένων πραγματείας. ὥστε ἐν ἐκείνοις ἐπισκεπτέον. νυνὶ δέ τι καὶ προσληπτέον ταῦτα. καὶ ὅσα ἄλλα τῆς γεωγραφίας ἐγγυτέρω. φησὶ δὴ τὸ τῶν ἰνδῶν πλῆθος εἰς ἑπτὰ μέρη διῃρῆσθαι, καὶ πρώτους μὲν τοὺς φιλοσόφους εἶναι κατὰ τιμήν. ἐλαχίστους δὲ κατ' ἀριθμόν. χρῆσθαι δ' αὐτοῖς, ἰδίᾳ μὲν ἑκάστῳ τοὺς θύοντας ἢ τοὺς ἐναγίζοντας. κοινῇ δὲ τοὺς βασιλέας κατὰ τὴν μεγάλην λεγομένην σύνοδον. καθ' ἣν τοῦ νέου ἔτους ἅπαντες οἱ φιλόσοφοι τῷ βασιλεῖ συνελθόντες ἐπὶ θύρας. ὅτι ἂν ἕκαστος αὐτῶν συντάξῃ τῶν χρησίμων ἢ τηρήσῃ πρὸς εὐετηρίαν καρπῶν τε καὶ τῶν ζῴων καὶ πολιτείας, προσφέρει τοῦτο εἰς τὸ μέσον. ὃς δ' ἂν τρὶς ἐψευσμένος ἁλῷ, νόμος ἐστὶ σιγᾶν διὰ βίου. τὸν δὲ κατορθώσαντα ἄφορον καὶ ἀτελῆ κρίνουσι. δεύτερον δὲ μέρος εἶναι τὸ τῶν γεωργῶν. οἳ πλεῖστοί τέ εἰσι, καὶ ἐπιεικέστατοι. ἀστρατείᾳ καὶ ἀδείᾳ τοῦ ἐργάζεσθαι, πόλει μὴ προσιόντες μηδ' ἄλλῃ χρείᾳ μηδ' ὀχλήσει κοινῇ. πολλάκις γοῦν ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ, καὶ τόπῳ τοῖς μὲν, παρατετάχθαι συμβαίνει, καὶ διακινδυνεύειν πρὸς τοὺς πολεμίους. οἱ δ' ἀροῦσιν ἢ σκάπτουσιν ἀκινδύνως. προμάχους ἔχοντες ἐκείνους. ἔστι δ' ἡ χώρα βασιλικὴ πᾶσα. μισθοῦ δ' αὐτὴν ἐπὶ τετάρταις ἐργάζονται.

τὸ τῶν καρπῶν, σῖτον, τὸ τῶν ποιμένων καὶ θηρευτῶν. οἷς μόνοις ἔξεστι θηρεύειν, καὶ θρεμματοτροφεῖν. ὤνια δὲ
παρέχειν, καὶ μισθοῦ ζεύγη. ἀντὶ δὲ τοῦ τὴν γῆν ἐλευθεροῦν θηρίων, καὶ τῶν σπερμολόγων ὀρνέων, μετροῦνται
παρὰ τοῦ βασιλέως, σῖτον, πλανῆται καὶ σκηνίτην νεμόμενοι βίον. ἵππον δὲ καὶ ἐλέφαντα τρέφειν οὐκ ἔξε-
στιν ἰδιώτῃ. βασιλικὸν δ' ἑκάτερον νενόμισται τὸ κτῆμα. καὶ εἰσὶν αὐτῶν ἐπιμεληταί. θήρα δὲ τῶν θηρίων
τούτων τοιάδε. χωρίον ψιλὸν ὅσον τεττάρων, ἢ πέντε σταδίων, τάφρῳ περιχαράξαντες βαθείᾳ, γεφυροῦ-
σι τὴν εἴσοδον στενωτάτῃ γεφύρᾳ. εἶτ' εἰσελαύνουσι θηλείας τὰς ἡμερωτάτας τρεῖς, ἢ τέτταρας. αὐτοὶ δ' ἐν
καλυβίοις κρυπτοῖς ὑποκάθηνται λοχῶντες. ἡμέρας μὲν οὖν οὐ προσίασιν οἱ ἄγριοι. νύκτωρ δ' ἐφ' ἕνα ποιοῦν-
ται τὴν εἴσοδον. εἰσιόντων δὲ κλείουσι τὴν εἴσοδον λάθρα. εἶτα τῶν ἡμέρων ἀθλητῶν τοὺς ἀλκιμωτάτους εἰ-
σάγοντες, διαμάχονται πρὸς αὐτούς. ἅμα καὶ λιμῷ καταπονοῦντες. ἤδη δὲ καμνόντων οἱ εὐθαρσέστατοι τῶν
ἡνιόχων λάθρα καταβαίνοντες ὑποδύουσιν ἕκαστος τῇ γαστρὶ τοῦ οἰκείου ὀχήματος. ὁρμώμενος δ' ἐνθένδε ὑ-
ποδύεται τῷ ἀγρίῳ. καὶ συμποδίζει δεσμῷ. γινομένου δὲ τούτου κελεύουσι τοῖς τιθασοῖς, τύπτειν τοὺς συμπο-
δισθέντας ἕως ἂν πέσωσιν εἰς τὴν γῆν. πεσόντων δ' ὠμοβοΐνοις ἱμᾶσι προσλαμβάνονται τοὺς αὐχένας αὐτῶν
πρὸς τοὺς τῶν τιθασῶν. ἵνα δὲ μὴ σειόμενοι τοὺς ἀναβαίνειν ἐπ' αὐτοῖς ἐπιχειροῦντας ἀποσείοιντο, τοῖς
τραχήλοις αὐτῶν ἐμβάλλονται κύκλῳ τομάς. καὶ κατ' αὐτὰς τοὺς ἱμάντας περιτιθέασιν. ὥσθ' ὑπ' ἀλγη-
δόνων εἴκειν τοῖς δεσμοῖς, καὶ ἡσυχάζειν. τῶν δ' ἁλόντων ἀπολέξαντες τοὺς πρεσβυτέρους, ἢ νεωτέρους τῆς
χρείας, τοὺς λοιποὺς ἀπάγουσιν εἰς τοὺς σταθμούς. δήσαντες δὲ τοὺς μὲν πόδας πρὸς ἀλλήλους. τοὺς δὲ αὐ-
χένας πρὸς κίονα εὖ πεπηγότα, δαμάζουσι λιμῷ. ἔπειτα χλόῃ καλάμου, καὶ πόας ἀναλαμβάνουσι. μετὰ
δὲ ταῦτα πειθαρχεῖν διδάσκουσι. τοὺς μὲν, διὰ λόγου. τοὺς δὲ, μελισμῷ τινι, καὶ τυμπανισμῷ κηλοῦν-
τες. σπάνιοι δ' οἱ δυστιθάσευτοι. φύσει γὰρ διάκεινται πράως καὶ ἡμέρως. ὥστ' ἐγγὺς εἶναι λογικῷ ζώῳ. οἱ δὲ
καὶ ἐξαίμους τοὺς ἡνιόχους ἐν τοῖς ἀγῶσι πεσόντας ἀνελόμενοι σώζουσιν ἐκ τῆς μάχης. τοὺς δὲ, ὑποδύν-
τας μεταξὺ τῶν προσθίων ποδῶν. ὑπερμαχόμενοι διέσωσαν. τῶν δὲ χορτοφόρων, καὶ διδασκάλων εἴ τινα
παρὰ θυμὸν ἀπέκτειναν, οὕτως ἐπιποθοῦσιν, ὥσθ' ὑπ' ἀνίας ἀπέχεσθαι τροφῆς. ἔστι δ' ὅτε καὶ ἀποκαρτε-
ρεῖν. βιβάζονται δὲ καὶ τίκτουσιν, ὡς ἵπποι τοῦ ἔαρος μάλιστα. καιρὸς δ' ἐστὶ τῷ μὲν, ἄρρενι ἐπειδὰν οἴστρῳ κα-
τέχηται, καὶ ἀγριαίνῃ. τότε δὴ καὶ λίπους τι διὰ τῆς ἀναπνοῆς ἀνίησιν ἣν ἔχει παρὰ τοὺς κροτάφους. ταῖς δὲ
θηλείαις ὅταν ὁ αὐτὸς πόρος οὗτος ἀνεῳγὼς τυγχάνῃ. κύουσι δὲ τοὺς μὲν πλείστους ὀκτωκαίδεκα μῆνας.
ἐλαχίστους δ' ἑκκαίδεκα. τρέφει δ' ἡ μήτηρ ἓξ ἔτη. ζῶσι δ' ὅσον μακροβιώτατοι ἄνθρωποι οἱ πολλοί. τινὲς δὲ
καὶ ἐπὶ διακόσια διατείνουσιν ἔτη. πολύνοσοι δὲ καὶ δυσίατοι. ἄκος δὲ πρὸς ὀφθαλμίαν μὲν βόειον γάλα
προσκλυζόμενον. τοῖς πλείστοις δὲ τῶν νοσημάτων ὁ μέλας οἶνος πινόμενος. τραύμασι δὲ ποτὸν μὲν βού-
τυρον. ἐξάγει γὰρ τὰ σιδήρεα. τὰ δ' ἕλκη σαρξὶν ὑείαις πυριῶσιν. ὀνησίκριτος δὲ καὶ ἕως τριακοσίων ἐτῶν
ζῆν φησί. σπανίως δὲ καὶ ἕως πεντακοσίων. κρατίστους δ' εἶναι περὶ τὰ διακόσια ἔτη. κύισκεσθαι δὲ δεκαετίαν.
μείζους δὲ τῶν λιβυκῶν καὶ ἐρρωμενεστέρους ἐκεῖνός τε εἴρηκε, καὶ ἄλλοι. ταῖς γοῦν προβοσκίσιν ἐπάλξεις,
καθαιρεῖν καὶ δένδρα ἀνασπᾶν πρόρριζα. διανισταμένους εἰς τοὺς ὀπισθίους πόδας. νέαρχος δὲ καὶ ποδάγρας
ἐν ταῖς θήραις τίθεσθαι κατά τινας συνδρόμους φησί. συνελαύνεσθαι δ' ὑπὸ τῶν τιθασῶν τοὺς ἀγρίους
εἰς ταύτας, κρειττόνων ὄντων, καὶ ἡνιοχουμένων. οὕτως δ' εὐτιθασεύτους εἶναι, ὥστε καὶ λιθάζειν ἐπὶ σκοπὸν
μανθάνειν. καὶ ὅπλοις χρῆσθαι. νεῖν τε κάλλιστα. μέγιστόν τε νομίζεσθαι κτῆμα ἐλεφάντων ἅρμα. ἄγεσθαι δ'
ὑπὸ ζυγὸν, καὶ καμήλους. γυναῖκα δ' εὐδοκιμεῖν εἰ λάβοι παρὰ ἐραστοῦ δῶρον ἐλέφαντα. οὗτος ὁ λόγος
οὐχ ὁμολογεῖ τῷ φήσαντι. μόνων βασιλέων κτῆμα εἶναι ἵππον, καὶ ἐλέφαντα. τῶν δὲ μυρμήκων τῶν χρυσω-
ρύχων δέρματα ἰδεῖν φησιν οὗτος παρδαλέαις ὅμοια. μεγασθένης δὲ περὶ τῶν μυρμήκων οὕτω φησίν. ὅτι ἐν
δέρδαις ἔθνει μεγάλῳ τῶν προσεῴων, καὶ ὀρεινῶν ἰνδῶν, ὀροπέδιον εἴη τρισχιλίων πως τὸν κύκλον σταδίων.
ὑποκειμένων δὲ τούτων χρυσωρυχείων, οἱ μεταλλεύοντες εἶεν μύρμηκες. θηρίων ἀλωπέκων οὐκ ἐλάττω. τά-
χος ὑπερφυὲς ἔχοντες, καὶ ζῶντες ἀπὸ θήρας. ὀρύττουσι δὲ τὴν γῆν χειμῶνος. σωρεύουσί τε πρὸς τοῖς στομίοις
καθάπερ οἱ ἀσφάλακες. ψῆγμα δ' ἐστὶ χρυσοῦ μικρᾶς ἑψήσεως δεόμενον. τοῖς δ' ὑποζυγίοις μετίασιν οἱ
πλησιόχωροι λάθρα. φανερῶς γὰρ διαμάχονται, καὶ διώκουσι, φεύγοντας. καταλαβόντες δὲ, δια-
χρῶνται, καὶ αὐτοὺς καὶ τὰ ὑποζύγια. πρὸς δὲ τὸ λαθεῖν κρέα θήρεια προτιθέασι κατὰ μέρη. περισπα-
σθέντων δ' ἀναιροῦνται τὸ ψῆγμα. καὶ τῷ τυχόντι τῶν ἐμπόρων ἀργὸν διατίθενται χωνεύειν οὐκ εἰδότες.
ἐπεὶ δ' ἐν τῷ περὶ τῶν θηρευτῶν λόγῳ, καὶ περὶ τῶν θηρίων ἐμνήσθημεν. ὧν τε μεγασθένης εἶπε, καὶ ἄλλοι,
προσθετέον καὶ ταῦτα. ὁ μὲν γὰρ νέαρχος τὸ τῶν ἑρπετῶν θαυμάζει πλῆθος, καὶ τὴν κακίαν. ἀναφεύγειν γὰρ
ἐκ τῶν πεδίων εἰς τὰς κατοικίας τὰς διαλανθανούσας ἐν ταῖς ἐπικλύσεσι. καὶ πληροῦν τοὺς οἴκους. διὰ δὴ τοῦ-
το καὶ ὑψηλὰς ποιεῖσθαι τὰς κλίνας. ἔστι δ' ὅτε καὶ ἐξοικίζεσθαι πλεοναζόντων. εἰ δὲ μὴ τὸ πολὺ τοῦ πλήθους ὑπὸ
τῶν ὑδάτων διεφθείρετο, κἂν, ἐρημωθῆναι τὴν χώραν. καὶ τὴν μικρότητα δ' αὐτῶν εἶναι χαλεπὴν, καὶ τὴν
ὑπερβολὴν, τοῦ μεγέθους. τὴν μὲν, διὰ τὸ δυσφύλακτον. τὴν δὲ, δι' ἰσχύν. ὅπου καὶ ἑκκαιδεκαπήχεις ἐχίδ-
νας ὁρᾶσθαι. ἐπῳδοὺς δὲ περιφοιτᾶν πεπιστευμένους ἰᾶσθαι. καὶ εἶναι σχεδόν τι μόνην ταύτην ἰατρικήν.
μὴ δὲ γὰρ νόσους εἶναι πολλὰς διὰ τὴν λιτότητα τῆς διαίτης, καὶ τὴν ἀοινίαν. εἰ δὲ γίνοιντο ἰᾶσθαι τοὺς σο-
φιστάς. ἀριστόβουλος δὲ τῶν θρυλλουμένων μεγεθῶν οὐδὲν ἰδεῖν φησιν. ἐχίδναν δὲ μόνον ἐννέα πηχῶν, καὶ

σπιθαμῆς· καὶ ἡμεῖς δ' ἐν αἰγύπτῳ κομισθεῖσαν ἐκεῖθεν τοιαύτην πως εἴδομεν. ἔχειν δὲ πολλοὺς φησὶ
πολὺ ἐλάττους καὶ ἀσπίδας· σκορπίους δὲ μεγάλους. οὐδὲν δὲ τούτων οὕτως ὀχλεῖν ὡς τὰ μικρὰ ὀ-
φείδια. οὐ μείζω σπιθαμιαίων. εὑρίσκεσθαι γὰρ ἐν σκηναῖς. ἐν σκεύεσιν. ἐν θριγκοῖς ἐγκεκρυμμένα. τοὺς δὲ
πληγέντας αἱμορροεῖν ἐκ παντὸς πόρου μετὰ ἐπωδυνίας· ἔπειτα ἀποθνήσκειν εἰ μὴ βοηθήσει τις
εὐθὺς τὴν δὲ βοήθειαν ῥᾳδίαν εἶναι διὰ τὴν ἀρετὴν τῶν ἰνδικῶν ῥιζῶν, καὶ φαρμάκων. κροκοδεί-
λους τε οὔτε πολλοὺς οὔτε βλαπτικοὺς ἀνθρώπων ἐν τῷ ἰνδῷ φησιν εὑρίσκεσθαι. καὶ τὰ ἄλλα δὲ ζῷα
τὰ πλεῖστα τὰ αὐτὰ ἅπερ ἐν τῷ νείλῳ γεννᾶσθαι πλὴν ἵππου ποταμίου ὀνησίκριτος δὲ φησι, καὶ
τοῦτον γεννᾶσθαι. τῶν δ' ἐκ θαλάττης φησὶν ἀριστόβουλος εἰς μὲν τὸν νεῖλον ἀνατρέχειν μηδὲν, ἔξω θρίσ-
σης καὶ κεστρέως, καὶ δελφῖνος διὰ τοὺς κροκοδείλους ἐν δὲ τῷ ἰνδῷ πλῆθος. τῶν δὲ καρίδων τὰς μὲν
μικρὰς μέχρι ὄρους ἀναθεῖν. τὰς δὲ μεγάλας μέχρι τῶν ἐμβολῶν τοῦ τε ἰνδοῦ, καὶ τοῦ ἀκεσίνου. περὶ
μὲν οὖν τῶν θηρίων τοσαῦτα λέγεται. ἐπανιόντες δ' ἤδη τὸν μεγασθένη, λέγωμεν τὰ ἑξῆς ὧν ἀ-
πελίπομεν, μετὰ γὰρ τοὺς θηρευτὰς καὶ τοὺς ποιμένας, τέταρτον φησὶν εἶναι μέρος τοὺς ἐργαζο-
μένους τὰς τέχνας καὶ τοὺς καπηλικούς. καὶ οἷς ἀπὸ τοῦ σώματος ἡ ἐργασία. ὧν οἱ μὲν, φόρον τελοῦσι
καὶ λειτουργίας παρέχονται τακτάς. τοῖς δ' ὁπλοποιοῖς καὶ ναυπηγοῖς μισθοὶ, καὶ τροφαὶ πα-
ρὰ βασιλέως ἔκκεινται. μόνοι γὰρ ἐργάζονται. παρέχει δὲ τὰ ὅπλα τοῖς στρατιώταις ὁ στρατοφύ-
λαξ. τὰς δὲ ναῦς μισθοῦ τοῖς πλέουσιν, ὁ ναύαρχος, καὶ τοῖς ἐμπόροις. πέμπτον ἐστὶ τὸ τῶν πολεμι-
στῶν. οἷς τὸν ἄλλον χρόνον ἐν σχολῇ, καὶ πότοις ὁ βίος ἐστὶν ἐκ τοῦ βασιλικοῦ διαιτωμένοις. ὥστε τὰς ἐ-
ξόδους ὅταν ᾖ χρεία ταχέως ποιεῖσθαι πλὴν τῶν σωμάτων μηδὲν ἄλλο κομίζοντας παρ' ἑαυτῶν.
ἕκτοι δ' εἰσὶν οἱ ἔφοροι. τούτοις δ' ἐποπτεύειν δίδοται τὰ πραττόμενα. καὶ ἀναγγέλλειν λάθρα τῷ βασι-
λεῖ συνεργοὺς ποιουμένους τὰς ἑταίρας. τοῖς μὲν ἐν τῇ πόλει, τὰς ἐν τῇ πόλει. τοῖς δὲ ἐν στρατο-
πέδῳ τὰς αὐτόθι. καθίστανται δ' οἱ ἄριστοι, καὶ πιστότατοι. ἕβδομοι δ' οἱ σύμβουλοι καὶ σύνεδροι τοῦ
βασιλέως. ἐξ ὧν τὰ ἀρχεῖα, καὶ δικαστήρια, καὶ ἡ διοίκησις τῶν ὅλων. οὐκ ἔστι δ' οὔτε γαμεῖν ἐξ ἄλλου
γένους. οὔτ' ἐπιτήδευμα οὔτ' ἐργασίαν μεταλαμβάνειν ἄλλην ἐξ ἄλλης. οὐδὲ πλείους μεταχειρίζε-
σθαι τὸν αὐτόν. πλὴν εἰ τῶν φιλοσόφων τις εἴη. ἐᾶσθαι γὰρ τοῦτον δι' ἀρετήν. τῶν δ' ἀρχόντων οἱ μέν
εἰσιν ἀγορανόμοι. οἱ δ' ἀστυνόμοι. οἱ δ' ἐπὶ τῶν στρατιωτῶν. ὧν οἱ μὲν, ποταμοὺς ἐξεργάζονται, καὶ ἀνα-
μετροῦσι τὴν γῆν ὡς ἐν αἰγύπτῳ. καὶ τὰς κλειστὰς διώρυγας ἀφ' ὧν εἰς τὰς ὀχετείας ταμιεύεται
τὸ ὕδωρ, ἐπισκοποῦσιν. ὅπως ἐξ ἴσης πᾶσιν ἡ τῶν ὑδάτων παρείη χρῆσις. οἱ δ' αὐτοὶ, καὶ τῶν θηρευτῶν
ἐπιμελοῦνται, καὶ τιμῆς καὶ κολάσεως εἰσὶ κύριοι τοῖς ἐπαξίοις. καὶ φορολογοῦσι δὲ, καὶ τὰς τέχνας
τὰς περὶ τὴν γῆν ἐπιβλέπουσιν. ὑλοτόμων. τεκτόνων, χαλκέων. μεταλλευτῶν. ὁδοποιοῦσι δὲ, καὶ
κατὰ δέκα στάδια στήλην τιθέασι, τὰς ἐκτροπὰς, καὶ τὰ διαστήματα δηλούσας. οἱ δ' ἀστυνόμοι εἰς ἓξ
πεντάδας διῄρηνται. καὶ οἱ μὲν, τὰ δημιουργικὰ σκοποῦσιν. οἱ δὲ ξενοδοχοῦσιν, καὶ γὰρ καταγωγὰς
νέμουσι καὶ τοῖς βίοις παρακολουθοῦσι, παρέδρους δόντες. καὶ προπέμπουσιν ἢ αὐτοὺς ἢ τὰ χρή-
ματα τῶν ἀποθανόντων. νοσούντων τε ἐπιμελοῦνται. καὶ ἀποθανόντας θάπτουσι. τρίτοι δ' εἰσὶν,
οἱ τὰς γενέσεις καὶ θανάτους ἐξετάζουσι πότε, καὶ πῶς. τῶν τε φόρων χάριν. καὶ ὅπως μὴ ἀφανεῖς
ὦσιν αἱ κρείττους καὶ χείρους γοναὶ, καὶ θάνατοι. τέταρτοι οἱ περὶ τὰς καπηλείας, καὶ μεταβολάς.
οἷς μέτρων μέλει, καὶ τῶν ὡραίων ὅπως ἀπὸ συσσήμου πωλοῖτο. οὐκ ἔστι δὲ πλείω τὸν αὐτὸν μεταβάλ-
λεσθαι. πλὴν εἰ διττοὺς ἀποτελοίη φόρους. πέμπτοι δ' οἱ προεστῶτες τῶν δημιουργουμένων, καὶ πω-
λοῦντες, καὶ ἀγοράζοντες ταῦτα ἀπὸ συσσήμου, χωρὶς μὲν τὰ καινὰ χωρὶς δὲ τὰ παλαιά. τῷ μι-
γνῦντι δὲ ζημία. ἕκτοι δὲ, καὶ ὕστατοι οἱ τὰς δεκάτας ἐκλέγοντες τῶν πωλουμένων. θάνατος δὲ τῷ κλέ-
ψαντι τὸ τέλος. ἰδίᾳ μὲν ἕκαστοι ταῦτα. κοινῇ δ' ἐπιμελοῦνται τῶν τε ἰδίων, καὶ τῶν πολιτικῶν, καὶ τῆς
τῶν δημοσίων ἐπισκευῆς. τιμῶν τε, καὶ ἀγορᾶς, καὶ λιμένων, καὶ ἱερῶν. μετὰ δὲ τοὺς ἀστυνόμους τρίτη
ἐστὶ συναρχία ἡ περὶ τὰ στρατιωτικά. καὶ αὕτη ταῖς πεντάσιν ἑξαχῆ διωρισμένη. ὧν τὴν μὲν, μετὰ τοῦ
ναυάρχου τάττουσι. τὴν δὲ μετὰ τοῦ ἐπὶ τῶν βοϊκῶν ζευγῶν. δι' ὧν ὄργανα κομίζεται, καὶ τροφὴ αὐτοῖς
τε, καὶ κτήνεσι, καὶ τὰ ἄλλα τὰ χρήσιμα τῆς στρατείας. οὗτοι δὲ, καὶ τοὺς διακόνους παρέχουσι τυμπανιστὰς κω-
δωνοφόρους. ἔτι δὲ καὶ ἱπποκόμους. καὶ μηχανοποιοὺς καὶ τοὺς τούτων ὑπηρέτας ἐκπέμπουσί τε πρὸς κώδωνας
τοὺς χορτολόγους, τιμῇ, καὶ κολάσει τὸ τάχος κατασκευαζόμενοι, καὶ τὴν ἀσφάλειαν. τρίτοι δ' εἰσὶν οἱ τῶν
πεζῶν ἐπιμελούμενοι. τέταρτοι δ' οἱ τῶν ἵππων. πέμπτοι δ' ἁρμάτων. ἕκτοι δὲ ἐλεφάντων. βασιλικοί
τε σταθμοὶ καὶ ἵπποις, καὶ θηρίοις, βασιλικὸν δὲ καὶ ὁπλοφυλάκιον. παραδίδωσι γὰρ ὁ στρατιώτης
τήν τε σκευὴν εἰς τὸ ὁπλοφυλάκιον, καὶ τὸν ἵππον εἰς τὸν ἱππῶνα. καὶ τὸ θηρίον ὁμοίως. χρῶνται,
δ' ἀχαλινώτοις. τὰ δ' ἅρματα ἐν ταῖς ὁδοῖς βόες ἕλκουσιν οἱ δὲ ἵπποι ἀπὸ φορβειᾶς ἄγονται τοῦ μὴ
παρεμπίπρασθαι τὰ σκέλη. μηδὲ τὸ πρόθυμον αὐτῶν τὸ ὑπὸ τοῖς ἅρμασιν ἀμβλύνεσθαι. δύο δ' εἰ-
σὶν ἐπὶ τῷ ἅρματι ἀναβάται πρὸς ἡνιόχῳ. ὁ δὲ τοῦ ἐλέφαντος ἡνίοχος τέταρτος. τρεῖς δ' οἱ ἀπ' αὐτοῦ
τοξεύοντες. εὐτελεῖς δὲ κατὰ τὴν δίαιταν οἱ ἰνδοὶ πάντες μᾶλλον δ' ἐν ταῖς στρατείαις. οὐδ' ὄχλῳ περιτ-
τῷ χαίρουσι. διόπερ εὐκοσμοῦσι. πλείστη δ' ἐγκράτεια περὶ τὰς κλοπάς. γενομένους γοῦν ἐν τῷ σανδροκό-

κόττου στρατοπέδῳ φησὶ μεγασθένης, τετταράκοντα μυριάδων πλήθους ἱδρυμένου, μηδεμίαν ἡμέραν
ἰδεῖν ἀνενεγμένα κλέμματα, πλειόνων ἢ διακοσίων δραχμῶν ἄξια. ἀγράφοις καὶ ταῦτα νόμοις χρω
μένοις. οὐδὲ γὰρ γράμματα εἰδέναι αὐτούς. ἀλλ' ἀπὸ μνήμης ἕκαστα διοικεῖσθαι. εὐπράττειν δ' ὅμως
διὰ τὴν ἁπλότητα, καὶ τὴν εὐτέλειαν. οἶνόν τε γὰρ οὐ πίνειν. ἀλλ' ἐν θυσίαις μόνον. πίνειν δ' ἀπ' ὀρύζης
ἀντὶ κριθίνων συντιθέντας. καὶ σιτία δὲ τὸ πλέον ὄρυζαν εἶναι ῥοφητήν. καὶ ἐν τοῖς νόμοις δὲ καὶ ἐν
τοῖς συμβολαίοις τὴν ἁπλότητα ἐλέγχεσθαι ἐκ τοῦ μὴ πολυδίκους εἶναι, οὔτε γὰρ ὑποθήκης, οὔτε πα
ρακαταθήκης εἶναι δίκας. οὐδὲ μαρτύρων. οὐδὲ σφραγίδων αὐτοῖς δεῖν. ἀλλὰ πιστεύειν παραβαλλο
μένους. καὶ τὰ οἴκοι δὲ τὸ πλέον ἀφρουρεῖν. ταῦτα μὲν δὴ σωφρονικά. τἆλλ' οὐδ' ἄν τις ἀποδέξαιτο τὸ
μόνους διαιτᾶσθαι ἀεί. καὶ τὸ μὴ μίαν εἶναι πᾶσιν ὥραν κοινὴν δείπνου τε καὶ ἀρίστου. ἀλλ' ὅπως ἑκάστῳ
φίλον. πρὸς γὰρ τὸν κοινωνικὸν, καὶ τὸν πολιτικὸν βίον, ἐκείνως κρεῖττον. γυμνάσιον δὲ μάλιστα τρίψιν
δοκιμάζουσι καὶ ἄλλως. καὶ διὰ σκυταλίδων ἐβενίνων λείων ἐξομαλίζονται τὰ σώματα. λιταὶ δὲ
καὶ αἱ ταφαί. καὶ μικρὰ χώματα. ὑπεναντίως δὲ τῇ ἄλλῃ λιτότητι κοσμοῦνται. χρυσοφοροῦσι γὰρ,
καὶ διαλίθῳ κόσμῳ χρῶνται. σινδόνας τε φοροῦσιν εὐανθεῖς. καὶ σκιάδια αὐτοῖς ἕπεται. τὸ γὰρ κάλλος
τιμῶντες ἀσκοῦσιν ὅσα καλλωπίζει τὴν ὄψιν. ἀλήθειάν τε ὁμοίως καὶ ἀρετὴν ἀποδέχονται. διόπερ οὐ
δὲ τῇ ἡλικίᾳ τῶν γερόντων προνομίαν διδόασιν, ἂν μὴ καὶ τῷ φρονεῖν πλεονεκτῶσι. πολλὰς δὲ γαμοῦ
σιν ὠνητὰς παρὰ τῶν γονέων. λαμβάνουσί τε ἀντιδιδόντες ζεῦγος βοῶν. ὧν τὰς μὲν, εὐπειθείας χάριν.
τὰς δ' ἄλλας ἡδονῆς καὶ πολυτεκνίας. εἰ δὲ μὴ σωφρονεῖν ἀναγκάσαιεν, πορνεύειν ἔξεστι. θύει δὲ οὐδεὶς
ἐστεφανωμένος, οὐδὲ θυμιᾷ οὐδὲ σπένδει. οὐδὲ σφάττουσι τὸ ἱερεῖον. ἀλλὰ πνίγουσιν. ἵνα μὴ λελωβη
μένον, ἀλλ' ὁλόκληρον διδῶται τῷ θεῷ. ψευδομαρτυρίας δ' ὁ ἁλοὺς ἀκρωτηριάζεται. ὅ τε πηρώσας,
οὐ τὰ αὐτὰ μόνον ἀντιπάσχει. ἀλλὰ καὶ χειροκοπεῖται. ἐὰν δὲ καὶ τεχνίτου χεῖρα, ἢ ὀφθαλμὸν ἀφέ
ληται, θανατοῦται. δούλοις δὲ οὗτος μέν φησι μηδένα ἰνδῶν χρῆσθαι. ὀνησίκριτος δὲ τῶν ἐν τῇ μουσι
κανοῦ τοῦτ' ἴδιον ἀποφαίνει. καὶ ὡς κατόρθωμά γε. καθάπερ καὶ ἄλλα πολλὰ λέγει τῆς χώρας ταύτης
κατορθώματα, ὡς εὐνομωτάτης. τῷ βασιλεῖ δ' ἡ μὲν τοῦ σώματος θεραπεία, διὰ γυναικῶν ἐστὶν ὠνητῶν.
καὶ αὐτῶν παρὰ τῶν πατέρων. ἔξω δὲ τῶν θυρῶν οἱ σωματοφύλακες καὶ τὸ λοιπὸν στρατιωτικόν. με
θύοντα δὲ κτείνασα γυνὴ βασιλέα, γέρας ἔχει συνεῖναι τῷ ἐκεῖνον διαδεξαμένῳ. διαδέχονται δ' οἱ παῖ
δες, οὐδ' ὑπνοῖ μεθημέρας ὁ βασιλεύς. καὶ νύκτωρ δὲ καθ' ὥραν ἀναγκάζεται τὴν κοίτην ἀλλάττειν διὰ
τὰς ἐπιβουλάς. τῶν γε μὴν κατὰ πόλεμον ἐξόδων, μία μέν ἐστιν ἡ ἐπὶ τὰς κρίσεις. ἐν αἷς διημερεύει δια
κούων οὐδὲν ἧττον, κἂν ὥρα γίνηται τῆς τοῦ σώματος θεραπείας. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ διὰ τῶν σκυταλίδων
τρίψις. ἅμα τε καὶ διακούει καὶ τρίβεται τεττάρων περιστάντων τριβέων. ἑτέρα δ' ἐστὶν ἡ ἐπὶ τὰς θυ
σίας ἔξοδος. τρίτη δ' ἐπὶ θήραν βακχικῆς γυναικῶν περικεχυμένων. ἔξωθεν δὲ τῶν δορυφόρων. παρα
σχοίνισται δ' ἡ ὁδός. τῷ δὲ παρελθόντι ἐντὸς μέχρι γυναικῶν θάνατος. προηγοῦνται δὲ τυμπανισταὶ, καὶ
κωδωνοφόροι. κυνηγετεῖ δ' ἐν μὲν τοῖς περιφράγμασιν ἀπὸ βήματος τοξεύων. παρεστᾶσι δ' ἔνοπλοι δύο,
ἢ τρεῖς γυναῖκες. ἐν δὲ ταῖς ἀφράκτοις θήραις ἀπ' ἐλέφαντος, αἱ δὲ γυναῖκες αἱ μὲν, ἐφ' ἁρμάτων. αἱ
δ' ἐφ' ἵππων. αἱ δὲ, καὶ ἐπ' ἐλεφάντων, ὡς καὶ συστρατεύουσιν. ἠσκημέναι παντὶ ὅπλῳ. ἔχει μὲν οὖν καὶ
ταῦτα πολλὴν ἀήθειαν πρὸς τὰ παρ' ἡμῖν. ἔτι μέντοι τὰ τοιάδε μᾶλλον. φησὶ γὰρ τοὺς τὸν καύκασον οἰ
κοῦντας ἐν τῷ φανερῷ γυναιξὶ μίσγεσθαι καὶ σαρκοφαγεῖν τὰ τῶν συγγενῶν σώματα. πετροκυλιστὰς δ' εἶ
ναι πιθήκους. οἳ λίθους κατακυλίουσι κρημνοβατοῦντες ἐπὶ τοὺς διώκοντας. τά τε παρ' ἡμῖν ἥμερα ζῶα,
τὰ πλεῖστα παρ' ἐκείνοις ἄγρια εἶναι. ἵππους τε λέγει μονοκέρωτας ἐλαφοκράνους. καλάμους δὲ μῆκος μὲν
τριάκοντα ὀργυιῶν τοὺς ὀρθίους. τοὺς δὲ χαμαικλινεῖς πεντήκοντα. πάχος δὲ ὥστε τὴν διάμετρον τοῖς μὲν,
εἶναι τρίπηχυ. τοῖς δὲ, διπλάσιαν. ὑπερεκπίπτων δ' ἐπὶ τὸ μυθῶδες, πενταπιθάμους ἀνθρώπους λέ
γει καὶ τριπιθάμους, ὧν τινὰς ἀμύκτηρας ἀναπνοὰς ἔχοντας μόνον ὑπὲρ τοῦ στόματος, πρὸς δὲ τοὺς τριπιθά
μους πόλεμον εἶναι ταῖς γεράνοις. ὃν καὶ ὅμηρον δηλοῦν. καὶ τοῖς πέρδιξιν. οὓς χηνομεγέθεις εἶναι.
τούτους δ' ἐκλέγειν αὐτῶν τὰ ᾠὰ, καὶ φθείρειν. ἐκεῖ γὰρ ᾠοτοκεῖν τὰς γεράνους. διόπερ μηδαμοῦ μηδ' ᾠὰ
εὑρίσκεσθαι γεράνων. μήτ' οὖν νεόττια. πλειστάκις δ' ἐκπίπτειν γέρανον χαλκῆν ἔχουσαν ἀκίδα ἀπὸ τῶν
ἐκεῖθεν πληγμάτων. ὅμοια δὲ καὶ τὰ περὶ τῶν ἐνωτοκοίτων, καὶ τῶν ἀγρίων ἀνθρώπων, καὶ ἄλλων τερα
τωδῶν. τοὺς μὲν οὖν ἀγρίους μὴ κομισθῆναι παρὰ σανδρόκοττον. ἀποκαρτερεῖν γάρ. ἔχειν δὲ τὰς μὲν
πτέρνας πρόσθεν. τοὺς δὲ ταρσοὺς ὄπισθεν, καὶ τοὺς δακτύλους. ἀστόμους δέ τινας ἀχθῆναι ἀνθρώπους ἡμέ
ρους. οἰκεῖν δὲ περὶ τὰς πηγὰς τοῦ γάγγου. τρέφεσθαι δ' ἀτμοῖς ὀπτῶν κρεῶν. καὶ καρπῶν, καὶ ἀνθέων ὀσμαῖς.
ἀντὶ τῶν στομάτων ἔχοντας ἀναπνοάς. χαλεπαίνειν δὲ τοῖς δυσώδεσι. καὶ διὰ τοῦτο περιγίνεσθαι μό
λις. καὶ μάλιστα ἐν στρατοπέδῳ, περὶ δὲ τῶν ἄλλων διηγεῖσθαι τοὺς φιλοσόφους ὠκύποδάς τε ἱστοροῦν
τας. ἵππων μᾶλλον ἀπιόντας. ἐνωτοκοίτας δὲ ποδήρη τὰ ὦτα ἔχοντας, ὡς ἐγκαθεύδειν. ἰσχυροὺς δ'
ὥστ' ἀνασπᾶν δένδρα. καὶ ῥηγνύειν νευράς. μονομμάτους δὲ ἄλλους. ὦτα μὲν ἔχοντας κυνός. ἐν
μέσῳ δὲ τῷ μετώπῳ τὸν ὀφθαλμόν. ὀρθοχαίτας. λασίους τὰ στήθη. τοὺς δὲ, ἀμύκτηρας εἶναι παμφάγους.
ὠμοφάγους ὀλιγοχρονίους. πρὸ γήρως θνήσκοντας. τοῦ δὲ στόματος τὸ ἄνω προχειλότερον εἶναι

πολύ. περὶ δὲ τῶν χιλιετῶν ὑπερβορέων, τὰ αὐτὰ λέγειν σιμωνίδῃ καὶ πινδάρῳ, καὶ ἄλλοις μυθολόγοις. μῦθος δὲ, καὶ τὸ ὑπὸ τιμαγένους λεχθέν· ὡς ὅτι χαλκὸς ὕοιτο σταλαγμοῖς χαλκοῖς, καὶ σύροιτο. ἐγγυτέρω δὲ πίστεως φησὶν ὁ μεγασθένης ὅτι οἱ ποταμοὶ καταφέροιεν ψῆγμα χρυσοῦ, καὶ ἀπ' αὐτοῦ φόρος ἀπάγοιτο τῷ βασιλεῖ. τοῦτο γὰρ καὶ ἐν ἰβηρίᾳ συμβαίνει. περὶ δὲ τῶν φιλοσόφων λέγων, τοὺς μὲν ὀρεινοὺς αὐτῶν φησιν ὑμνητὰς εἶναι τοῦ διονύσου. δεικνύντας τεκμήρια τὴν ἀγρίαν ἄμπελον παρὰ μόνοις αὐτοῖς φυομένην, καὶ κιττὸν, καὶ δάφνην, καὶ μυρρίνην, καὶ πύξον, καὶ ἄλλα τῶν ἀειθαλῶν. ὧν μηδὲν εἶναι πέραν τοῦ εὐφράτου πλὴν ἐν παραδείσοις σπάνια, καὶ μετὰ πολλῆς ἐπιμελείας σωζόμενα. διονυσιακὸν δὲ, καὶ τὸ σινδονοφορεῖν, καὶ τὸ μιτροῦσθαι, καὶ μυροῦσθαι, καὶ βάπτεσθαι ἄνθινα, καὶ τοὺς βασιλέας κωδωνοφορεῖσθαι, καὶ τυμπανίζεσθαι κατὰ τὰς ἐξόδους. τοὺς δὲ πεδιασίους τὸν ἡρακλέα τιμᾶν. ταῦτα μὲν οὖν μυθώδη, καὶ ὑπὸ πολλῶν ἐλεγχόμενα, καὶ μάλιστα, τὰ περὶ τῆς ἀμπέλου, καὶ τοῦ οἴνου. πέραν γὰρ τοῦ εὐφράτου, καὶ τῆς ἀρμενίας ἐστὶ πολλή. καὶ ἡ μεσοποταμία ὅλη, καὶ ἡ μηδία ἐξῆς μέχρι, καὶ περσίδος καὶ καρμανίας. τούτων δὲ τῶν ἐθνῶν ἑκάστου, πολὺ μέρος εὐάμπελον, καὶ εὔοινον λέγεται. ἄλλην δὲ διαίρεσιν ποιεῖται περὶ τῶν φιλοσόφων δύο γένη φάσκων. ὧν τοὺς μὲν, βραχμᾶνας καλεῖ. τοὺς δὲ γερμᾶνας. τοὺς μὲν οὖν βραχμᾶνας εὐδοκιμεῖν. μᾶλλον γὰρ καὶ ὁμολογεῖν ἐν τοῖς δόγμασιν. ἤδη δ' εὐθὺς, καὶ κυομένους ἔχειν ἐπιμελητὰς λογίους ἄνδρας. οὓς προσιόντας λόγῳ μὲν ἐπᾴδειν δοκεῖν καὶ τὴν μητέρα, καὶ τὸ κυόμενον εἰς εὐτεκνίαν. τὸ δ' ἀληθὲς σωφρονικάς τινας παραινέσεις, καὶ ὑποθήκας διδόναι. τὰς δ' ἥδιστα ἀκροωμένας μᾶλλον εὐτέκνους εἶναι νομίζεσθαι. μετὰ δὲ τὴν γένεσιν ἄλλους, καὶ ἄλλους διαδέχεσθαι τὴν ἐπιμέλειαν. ἀεὶ τῆς μείζονος ἡλικίας χαριεστέρων τυγχανούσης διδασκάλων. διατρίβειν δὲ τοὺς φιλοσόφους ἐν ἄλσει πρὸ τῆς πόλεως. ὑπὸ περιβόλῳ συμμέτρῳ λιτῶς ζῶντας ἐν στιβάσι καὶ δοραῖς. ἀπεχομένους ἐμψύχων, καὶ ἀφροδισίων. ἀκροωμένους λόγων σπουδαίων, μεταδιδόντας, καὶ τοῖς ἐθέλουσι. τὸν δ' ἀκροώμενον οὔτε λαλῆσαι θέμις οὔτε χρέμψασθαι. ἀλλ' οὐδὲ πτύσαι ἢ ἐκβάλλεσθαι τῆς συνουσίας, τὴν ἡμέραν ἐκείνην ὡς ἀκολασταίνοντα. ἔτη δ' ἑπτὰ, καὶ τριάκοντα οὕτω ζήσαντα ἀναχωρεῖν εἰς τὴν ἑαυτοῦ κτῆσιν ἕκαστον. καὶ ζῆν ἀδεῶς, καὶ ἀνειμένως μᾶλλον. σινδονοφοροῦντα, καὶ χρυσοφοροῦντα μετρίως ἐν ταῖς χερσὶ, καὶ τοῖς ὠσί. προσφερόμενον σάρκας. μὴ τῶν πρὸς τὴν χρείαν συνεργῶν ζῴων, δριμέων, καὶ ἀρτυτῶν ἀπεχόμενον. γαμεῖν δ' ὅτι πλείστας εἰς πολυτεκνίαν. ἐκ πολλῶν γὰρ καὶ τὰ σπουδαῖα πλείω γίνεσθαι. ἀδουλοῦσι, τε τὴν ἐκ τέκνων ἣν μὴ ἔχουσι δούλους ὑπηρεσίαν. ἐγγυτάτω οὖσαν πλείω δεῖν παρασκευάζεσθαι. ταῖς δὲ γυναιξὶ ταῖς γαμεταῖς μὴ συμφιλοσοφεῖν τοὺς βραχμᾶνας, εἰ μὲν μοχθηραὶ γένοιντο ἵνα μή τι τῶν ἀβεβήλων ἐκφέροιεν εἰς τοὺς βεβήλους. εἰ δὲ σπουδαῖαι, » μὴ καταλείποιεν αὐτούς. οὐδένα γὰρ ἡδονῆς, καὶ πόνου καταφρονοῦντα. ὡς δ' αὕτως ζωῆς, καὶ θανάτου ἐθέλειν ὑφ' ἑτέρῳ εἶναι. τοιοῦτον δ' εἶναι τὸν σπουδαῖον, καὶ τὴν σπουδαίαν. πλείστους δ' αὐτοῖς εἶναι λόγους περὶ θανάτου, νομίζειν μὲν γὰρ δὴ τὸν μὲν ἐνθάδε βίον ὡς ἂν ἀκμὴν κυομένων εἶναι. τὸν δὲ θάνατον γένεσιν εἰς τὸν ὄντως βίον. καὶ τὸν εὐδαίμονα τοῖς φιλοσοφήσασι. διὸ τῇ ἀσκήσει πλείστῃ χρῆσθαι πρὸς τὸ ἑτοιμοθάνατον. ἀγαθὸν δὲ ἢ κακὸν μηδὲν εἶναι τῶν συμβαινόντων ἀνθρώποις. οὐ γὰρ ἂν τοῖς αὐτοῖς τοὺς μὲν ἄχθεσθαι. τοὺς δὲ χαίρειν ἐνυπνιώδεις ὑπολήψεις ἔχοντας. καὶ τοὺς αὐτοὺς τοῖς αὐτοῖς, τοτὲ μὲν ἄχθεσθαι. τοτὲ δ' αὖ χαίρειν μεταβαλλομένους. τὰ δὲ περὶ φύσιν τὰ μὲν, εὐήθειαν, ἐμφαίνειν φησὶν ἐν ἔργοις, γὰρ αὐτοὺς κρείττους ἢ λόγοις εἶναι διὰ μύθων τὰ πολλὰ πιστουμένους, περὶ πολλῶν δὲ τοῖς ἕλλησιν ὁμοδοξεῖν. ὅτι γὰρ γενητὸς ὁ κόσμος, καὶ φθαρτὸς λέγειν κἀκείνους. καὶ ὅτι σφαιροειδής. ὅ τε διοικῶν αὐτὸν, καὶ ποιῶν θεὸς δι' ὅλου διαπεφοίτηκεν αὐτοῦ. ἀρχαὶ δὲ τῶν μὲν συμπάντων ἕτεραι. τῆς δὲ κοσμοποιίας τὸ ὕδωρ. πρὸς δὲ τοῖς τέτταρσι στοιχείοις πέμπτη τίς ἐστι φύσις ἐξ ἧς ὁ οὐρανὸς, καὶ τὰ ἄστρα. γῆ δ' ἐν μέσῳ ἵδρυται τοῦ παντὸς, καὶ περὶ σπέρματος δὲ, καὶ ψυχῆς ὅμοια λέγεται, καὶ ἄλλα πλείω. παραπλέκουσι δὲ καὶ μύθους ὥσπερ καὶ πλάτων περί τε ἀφθαρσίας ψυχῆς καὶ τῶν καθ' ᾅδου κρίσεων, καὶ ἄλλα τοιαῦτα. περὶ μὲν τῶν βραχμάνων ταῦτα λέγει. τοὺς δὲ γερμᾶνας, τοὺς μὲν ἐντιμοτάτους ὑλοβίους φησὶν ὀνομάζεσθαι. ζῶντας ἐν ταῖς ὕλαις, ἀπὸ φύλλων, καὶ καρπῶν ἀγρίων. ἐσθῆτος δὲ φλοιῶν δενδρείων, ἀφροδισίων, χωρὶς καὶ οἴνου. τοῖς δὲ βασιλεῦσι συνεῖναι δι' ἀγγέλων πυνθανομένοις περὶ τῶν αἰτίων. καὶ δι' ἐκείνων θεραπεύουσι, καὶ λιτανεύουσι τὸ θεῖον. μετὰ δὲ τοὺς ὑλοβίους, δευτερεύειν κατὰ τιμὴν τοὺς ἰατρικοὺς, καὶ ὡς περὶ τὸν ἄνθρωπον φιλοσόφους λιτοὺς μὲν, μὴ ἀγραύλους δέ. ὀρύζῃ καὶ ἀλφίτοις τρεφομένους ἃ παρέχειν αὐτοῖς πάντα τὸν αἰτηθέντα, καὶ ὑποδεξάμενον ξενίᾳ. δύνασθαι δὲ καὶ πολυγόνους, ποιεῖν, καὶ ἀρρενογόνους καὶ θηλυγόνους διὰ φαρμακευτικῆς. τὴν δὲ ἰατρείαν διὰ σιτίων τὸ πλέον. οὐ διὰ φαρμάκων ἐπιτελεῖσθαι. τῶν φαρμάκων δὲ μάλιστα εὐδοκιμεῖν τὰ ἐπίχριστα, καὶ τὰ καταπλάσματα. τἆλλα δὲ κακοηθείας πολὺ μετέχειν. ἀσκεῖν δὲ καὶ τούτους κἀκείνους καρτερίαν. τήν τε ἐν πόνοις καὶ τὴν ἐν ταῖς ὑπομοναῖς. ὥστ' ἐφ' ἑνὸς σχήματος ἀκίνητον διατελέσαι τὴν ἡμέραν ὅλην. ἄλλους δ' εἶναι τοὺς μὲν, μαντικοὺς, καὶ ἐπῳδοὺς. καὶ τῶν περὶ τοὺς κατοιχομένους λόγων, καὶ νομίμων ἐμπείρους. ἐπαιτοῦντας καὶ κατὰ κώμας, καὶ πόλεις. τοὺς δὲ χαριεστέρους μὲν τούτων καὶ ἀστειοτέρους. οὐδ' αὐτοὺς δ' ἀπεχομένους τῶν καθ'

ἄδην θρυλλουμένων. ὅσα δοκεῖ πρὸς εὐσέβειαν καὶ ὁσιότητα. συμφιλοσοφεῖν δ' ἐνίοις καὶ γυναῖκας, ἀπεχομέ
νας καὶ αὐτὰς ἀφροδισίων. ἀριστόβουλος δὲ τῶν ἐν ταξίλοις σοφιστῶν, ἰδεῖν δύο φησὶ βραχμᾶνας ἀμφο
τέρους. τὸν μὲν πρεσβύτερον ἐξυρημένον. τὸν δὲ νεώτερον κομήτην, ἀμφοτέροις δ' ἀκολουθεῖν μαθητάς.
τὸν μὲν οὖν ἄλλον χρόνον κατ' ἀγορὰν διατρίβειν. τιμωμένους ἀντὶ συμβούλων ἐξουσίαν ἔχοντας ὅ,
τι βούλονται τῶν ὠνίων, φέρεσθαι δωρεάν. ὅτῳ δ' ἂν προσίωσι, καταχεῖν αὐτῶν τοῦ σησαμίνου λίπους.
ὥστε καὶ κατὰ τῶν ὀμμάτων ῥεῖν. τοῦ τε μέλιτος πολλοῦ προκειμένου καὶ τοῦ σησάμου μάζας ποιουμένους,
τρέφεσθαι δωρεάν. παρερχομένους δὲ καὶ πρὸς τὴν ἀλεξάνδρου τράπεζαν παραστάντας δειπνεῖν, καὶ καρ
τερίαν διδάσκειν. παραχωροῦντας εἰς τόπον πλησίον. ὅπου τὸν μὲν πρεσβύτερον, πεσόντα ὕπτιον
ἀνέχεσθαι τῶν ἡλίων καὶ τῶν ὄμβρων, ἤδη γὰρ ὕειν ἀρχομένου τοῦ ἔαρος. τὸν δ' ἑστάναι μονοσκελῆ ξύλον
ἐπηρμένον ἀμφοτέραις ταῖς χερσὶν, ὅσον τρίπηχυ. κάμνοντος δὲ τοῦ σκέλους, ἐπὶ θάτερον μεταφέρειν
τὴν βάσιν. καὶ διατελεῖν οὕτως τὴν ἡμέραν ὅλην. φανῆναι δ' ἐγκρατέστερον μακρῷ τὸν νεώτερον. συνακο
λουθήσαντα γὰρ μικρὰ τῷ βασιλεῖ, ταχὺ ἀναστρέψαι πάλιν ἐπ' οἴκου. μετιόντων τε αὐτὸν, κελεῦσαι
ἥκειν εἴ του βούλεται τυγχάνειν. τὸν δὲ, συναπᾶραι μέχρι τέλους. καὶ μεταμφιάσασθαι καὶ μεταθέ-
σθαι τὴν δίαιταν, συνόντα τῷ βασιλεῖ. ἐπιτιμώμενον δ' ὑπό τινων λέγειν ὡς ἐκπληρώσειε τὰ τετta
ράκοντα ἔτη τῆς ἀσκήσεως ἃ ὑπέσχετο. ἀλέξανδρον δὲ τοῖς παισὶν αὐτοῦ δοῦναι δωρεάν. τῶν δ' ἐν ταξί
λοις νομίμων καινὰ καὶ ἄηθη λέγει, τό τε τοὺς μὴ δυναμένους ἐκδιδόναι τὰς παῖδας ὑπὸ πενίας
προάγειν εἰς ἀγορὰν ἐν ἀκμῇ τῆς ὥρας, κόχλῳ τε καὶ τυμπάνοις. οἷς περ καὶ τὸ πολεμικὸν σημαί-
νουσιν ὄχλου προσκληθέντος. τῷ δὲ προσελθόντι, τὰ ὀπίσθια πρῶτον ἀνασύρεσθαι μέχρι τῶν ὤμων.
εἶτα τὰ πρόσθια. ἀρέσασαν δὲ καὶ συμπεισθεῖσαν ἐφ' οἷς ἂν δοκῇ συνοικεῖν. καὶ τὸ γυψὶν ῥίπτεσθαι τὸν
τελευτηκότα. τὸ δὲ πλείους ἔχειν γυναῖκας, κοινὸν καὶ ἄλλων. παρά τισι δ' ἀκούειν φησὶ, καὶ συγκα
τακαιομένας τὰς γυναῖκας τοῖς ἀνδράσιν ἀσμένας. τὰς δὲ μὴ ὑπομενούσας ἀδοξεῖν. εἴρηται δὲ καὶ
ἄλλοις ταῦτα. ὀνησίκριτος δέ φησιν αὐτὸς πεμφθῆναι διαλεξόμενος τοῖς σοφισταῖς. ἀκούειν γὰρ τὸν
ἀλέξανδρον, ὡς γυμνοὶ διατελοῖεν καὶ καρτερίας ἐπιμελοῖντο οἱ ἄνθρωποι. ἐν τιμῇ τε ἄγοιντο πλεί
στῃ. παρ' ἄλλους δὲ μὴ βαδίζοιεν κληθέντες. ἀλλὰ κελεύοιεν αὐτοὺς φοιτᾶν παρ' αὐτούς. εἴ τι μετέχειν
ἐθέλοιεν τῶν πραττομένων, ἢ λεγομένων ὑπ' αὐτῶν. τοιούτων δὴ ὄντων. ἐπειδὴ οὔτε αὐτῷ πρέπειν ἐ-
δόκει παρ' ἐκείνους φοιτᾶν, οὔτε ἐκείνους βιάζεσθαι παρὰ τὰ πάτρια ποιεῖν τι ἄκοντας, αὐτὸς ἔφη-
σε πεμφθῆναι. καταλαβεῖν δὲ ἄνδρας πεντεκαίδεκα ἀπὸ σταδίων εἴκοσι τῆς πόλεως. ἄλλον ἐν ἄλλῳ σχή
ματι ἑστῶτα, ἢ καθήμενον, ἢ κείμενον γυμνὸν ἀκίνητον ἕως ἑσπέρας. εἶτ' ἀπερχόμενον εἰς τὴν πόλιν.
χαλεπώτατον δ' εἶναι τὸ τὸν ἥλιον ὑπομεῖναι οὕτω θερμὸν, ὥστε τῶν ἄλλων μηδένα ὑπομένειν.
γυμνοῖς ἐπιβῆναι τοῖς ποσὶ τῆς γῆς ῥᾳδίως κατὰ μεσημβρίαν. διαλεχθῆναι δ' ἑνὶ τούτων καλάνῳ.
ὃν καὶ συνακολουθῆσαι τῷ βασιλεῖ μέχρι περσίδος. καὶ ἀποθανεῖν τῷ πατρίῳ νόμῳ τεθέντα ἐπὶ
πυρκαιάν. τότε δ' ἐπὶ λίθων τυχεῖν κείμενον. προσιὼν οὖν καὶ προσαγορεύσας, εἰπεῖν ἔφη διότι πεμ
φθείη παρὰ τοῦ βασιλέως ἀκροασόμενος τῆς σοφίας αὐτῶν, καὶ ἀπαγγελῶν πρὸς αὐτόν. εἰ οὖν μη-
δεὶς εἴη φθόνος, ἕτοιμος εἴη μετασχεῖν τῆς ἀκροάσεως. ἰδόντα δ' ἐκεῖνον χλαμύδα καὶ καυσίαν φοροῦν-
τα, καὶ κρηπῖδα, καταγελάσαντα τὸ παλαιὸν φάναι, πάντ' ἦν ἀλφίτων καὶ ἀλεύρων πλήρη, καθ-
άπερ νῦν κόνεως. καὶ κρῆναι δ' ἔρρεον. αἱ μὲν ὕδατος. γάλακτος δ' ἄλλαι. καὶ ὁμοίως αἱ μὲν, μέλι-
τος. αἱ δ' οἴνου. τινὲς δ' ἐλαίου. ὑπὸ πλησμονῆς δ' οἱ ἄνθρωποι, καὶ τρυφῆς εἰς ὕβριν ἐξέπεσον.
» Ζεὺς δὲ μισήσας τὴν κατάστασιν, ἠφάνισε πάντα. καὶ διὰ πόνου τὸν βίον ἀπέδειξε. σωφροσύνης δὲ καὶ
» τῆς ἄλλης ἀρετῆς παρελθούσης εἰς τὸ μέσον, πάλιν εὐπορία τῶν ἀγαθῶν ὑπῆρξεν. ἐγγὺς δ' εἶναι κόρου νυ-
» νὶ, καὶ ὕβρεως τὸ πρᾶγμα. κινδυνεύειν τε ἀφανισμὸν τῶν ὄντων γενέσθαι. ταῦτα εἰπόντα, κελεύειν εἰ
» βούλοιτο ἀκροάσασθαι καταθέμενον τὴν σκευὴν γυμνὸν ἐπὶ τῶν αὐτῶν λίθων κείμενον, μετέχειν
τῶν λόγων. ἀπορουμένου δ' αὐτοῦ μάνδανιν ὥσπερ ἦν πρεσβύτατος καὶ σοφώτατος αὐτῶν, τῷ μὲν,
ἐπιπλῆξαι, ὡς ὑβριστῇ. καὶ ταῦτα ὕβρεως κατηγορήσαντα. αὐτὸν δὲ προσκαλέσασθαι, καὶ εἰπεῖν.
ὡς τὸν μὲν βασιλέα ἐπαινοίη. διότι ἀρχὴν τοσαύτην διοικῶν, ἐπιθυμοίη σοφίας. μόνον γὰρ ἴδοι αὐ-
τὸν ἐν ὅπλοις φιλοσοφοῦντα. ὠφελιμώτατον δ' εἴη τῶν ἁπάντων. εἰ οἱ τοιοῦτοι φρονοῖεν οἷς πάρεστι
δύναμις τοὺς μὲν, ἑκόντας πείθειν σωφρονεῖν. τοὺς δ' ἄκοντας ἀναγκάζειν. αὐτῷ συγγνώμη εἰ διὰ
ἑρμηνέων τριῶν διαλεγόμενος πλὴν φωνῆς, μηδὲν πλέον συνιέντων, ἢ οἱ πολλοὶ, μηδὲν ἰσχύσει τῆς
ὠφελείας ἐπίδειξιν ποιήσασθαι. ὅμοιον γὰρ ὡς ἂν εἰ διὰ βορβόρου καθαρὸν ἀξιοῖ τις ὕδωρ ῥεῖν. τὰ
γοῦν λεχθέντα εἰς τοῦτ' ἔφη συντείνειν, ὡς εἴη λόγος ἄριστος, ὃς ἡδονὴν, καὶ λύπην ψυχῆς ἀφαιρήσεται.
καὶ ὅτι λύπη καὶ πόνος διαφέρει. τὸ μὲν, γὰρ πολέμιον. τὸ δὲ, φίλον αὐτοῖς. τὰ δὲ σώματα ἀσκοῦσι
πρὸς πόνον. ἵν' αἱ γνῶμαι ῥωννύοιντο. ἀφ' ὧν καὶ στάσεις παύοιεν. καὶ σύμβουλοι πᾶσιν ἀγαθῶν πα-
ρεῖεν, καὶ κοινῇ, καὶ ἰδίᾳ. καὶ δὴ καὶ ταξίλῃ νῦν συμβουλεῦσαι ἐνδέχεσθαι τὸν ἀλέξανδρον. κρείττω
μὲν γὰρ αὐτοῦ δεξάμενον εὖ πείσεσθαι. χείρω δὲ εὖ διαθήσειν. ταῦτ' εἰπόντα ἐξετάζεσθαι. εἰ καὶ ἐν
τοῖς ἕλλησι λόγοι τοιοῦτοι λέγοιντο. εἰπόντος δ' ὅτι καὶ πυθαγόρας τοιαῦτα λέγοι. κελεύει τε ἐμψύχων

ἀπέχεσθαι, καὶ σωκράτης καὶ διογένης οὗ καὶ αὐτὸς ἀκροάσαιτο, ἀποκρίνασθαι, ὅτι τἆλλα μὲν νομί-
ζει φρονίμως αὐτοῖς δοκεῖν. ἐν δ᾽ ἁμαρτάνειν νόμον πρὸ τῆς φύσεως τιθεμένους. οὐ γὰρ αἰσχύνεσθαι
γυμνοὺς ὥσπερ αὐτὸν διάγειν ἀπὸ λιτῶν ζῶντας. καὶ γὰρ οἰκίαν ἀρίστην εἶναι ἥτις ἂν ἐπισκευῆς ἐ-
λαχίστης δέηται. ἔφη δ᾽ αὐτοὺς καὶ τῶν περὶ φύσιν πολλὰ ἐξετάσαι. καὶ προσημασίας ὄμβρων. αὐ-
χμῶν. νόσων. ἀπιόντας δ᾽ εἰς τὴν πόλιν κατὰ τὰς ἀγορὰς σκεδάννυσθαι. ὅτῳ δ᾽ ἂν κομίζοντι σῦκα, ἢ
βότρυς περιτύχωσι, λαμβάνειν δωρεὰν παρέχοντος. εἰ δ᾽ ἔλαιον εἴη καταχεῖσθαι αὐτῶν, καὶ ἀλείφε-
σθαι. ἅπασαν δὲ πλουσίαν οἰκίαν ἀνεῖσθαι αὐτοῖς μέχρι γυναικωνίτιδος. εἰσιόντας δὲ δείπνου κοινω-
νεῖν, καὶ λόγων. αἴσχιστον δ᾽ αὐτοῖς νομίζεσθαι νόσον σωματικήν. τὸν δ᾽ ὑπονοήσαντα καθ᾽ αὑτοῦ τοῦτο,
ἐξάγειν ἑαυτὸν διὰ πυρὸς νήσαντα πυράν. ὑπαλειψάμενον δὲ καὶ καθίσαντα ἐπὶ τὴν πυράν. ὑφά-
ψαι κελεύειν. ἀκίνητον δὲ καίεσθαι. νέαρχος δὲ περὶ τῶν σοφιστῶν οὕτω λέγει. τοὺς μὲν βραχμᾶνας
πολιτεύεσθαι, καὶ παρακολουθεῖν τοῖς βασιλεῦσι συμβούλους. τοὺς δ᾽ ἄλλους σκοπεῖν τὰ περὶ τὴν φύ-
σιν. τούτων δ᾽ εἶναι καὶ κάλανον. συμφιλοσοφεῖν δ᾽ αὐτοῖς καὶ γυναῖκας. τὰς δὲ διαίτας ἁπάντων
σκληράς. περὶ δὲ τῶν κατὰ τοὺς ἄλλους νομίμων, τοιαῦτα ἀποφαίνεται. τοὺς μὲν νόμους ἀγράφους
εἶναι. τοὺς μὲν, κοινούς. τοὺς δ᾽ ἰδίους ἀήθειαν ἔχοντας πρὸς τοὺς τῶν ἄλλων. οἷον τὸ τὰς παρθένους
ἆθλον παρά τισι κεῖσθαι τῷ πυγμὴν νικήσαντι. ὥστ᾽ ἀπροίκους συνεῖναι. παρ᾽ ἄλλοις δὲ κατὰ συγγέ-
νειαν κοινῇ τοὺς καρποὺς ἐργαζομένους, ἐπὰν συγκομίσωσιν, αἴρεσθαι φορτίον ἕκαστον εἰς διατροφὴν
τοῦ ἔτους. τὸν δ᾽ ἄλλον ἐμπιπράναι τοῦ ἔχειν εἰσαῦθις ἐργάσεσθαι, καὶ μὴ ἀργὸν εἶναι. ὁπλισμὸν δ᾽ εἶ-
ναι τόξον καὶ οἰστοὺς τριπήχεις, ἢ σαύνιον. καὶ πέλτην καὶ μάχαιραν πλατεῖαν τριπήχη. ἀντὶ δὲ
χαλινῶν φιμοῖς χρῆσθαι, κημῶν μικρῶν διαφέρουσιν. ἥλοις δὲ τὰ χείλη διαπεπάρθαι. τὴν δὲ φιλο-
τεχνίαν τῶν ἰνδῶν ἐμφανίζων, σπόγγους φησὶν ἰδόντας παρὰ τοῖς μακεδόσι, μιμήσασθαι τρίχας,
καὶ ῥαφίδια λεπτά. καὶ ἀρπεδόνας διαῤῥάψαντας εἰς ἔρια. καὶ μετὰ τὸ πιλῆσαι, τὰ μὲν, ἐξελκύσαν-
τας. τὰ δὲ, βάψαντας χροιαῖς. στλεγγιδοποιούς τε, καὶ ληκυθοποιούς, ταχὺ γενέσθαι πολλούς. ἐπιστο-
λὰς δὲ γράφειν ἐν σινδόσι λίαν κεκροτημέναις. τῶν δ᾽ ἄλλων γράμμασιν αὐτοὺς μὴ χρῆσθαι φαμένων.
χαλκῷ δὲ χρῆσθαι χυτῷ. τῷ δ᾽ ἐλατῷ μή. τὴν δ᾽ αἰτίαν οὐκ εἶπε. καίτοι τὴν ἀτοπίαν εἰπὼν τὴν παρα-
κολουθοῦσαν. ὅτι θραύεται κεράμου δίκην τὰ σκεύη πεσόντα. τῶν δὲ περὶ τῆς ἰνδικῆς λεγομένων,
καὶ τοῦτ᾽ ἐστίν. ὅτι ἀντὶ τοῦ προσκυνεῖν προσεύχεσθαι τοῖς βασιλεῦσι. καὶ πᾶσι τοῖς ἐν ἐξουσίᾳ, καὶ ὑ-
περοχῇ νόμος. φέρει δὲ καὶ λιθίαν ἡ χώρα πολυτελῆ. κρυστάλλων καὶ ἀνθράκων παντοίων. καθάπερ
τῶν μαργαριτῶν. τῆς δ᾽ ἀνομολογίας τῶν συγγραφέων ἔστω παράδειγμα, καὶ ὁ περὶ τοῦ καλάνου λό-
γος. ὅτι μὲν συνῆλθεν ἀλεξάνδρῳ, καὶ ἀπέθανεν ἑκὼν παρ᾽ αὐτῷ διὰ πυρὸς ὁμολογοῦσι. τὸν δὲ τρόπον
οὐ τὸν αὐτόν φησιν. οὐ δὲ κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἀλλ᾽ οἱ μὲν, οὕτως εἰρήκασι. συνακολουθῆσαι γὰρ αὐτὸν
ὡς ἐγκωμιαστὴν τοῦ βασιλέως ἔξω τῶν τῆς ἰνδικῆς ὅρων. παρὰ τὸ κοινὸν ἔθος τῶν ἐκεῖ φιλοσόφων. ἐκείνους
γὰρ συνεῖναι τοῖς αὐτόθι βασιλεῦσιν. ὑφηγουμένους τὰ περὶ τοὺς θεούς. ὡς τοὺς μάγους τοῖς πέρσαις. ἐν πασαρ-
γάδαις δὲ νοσήσαντα. τότε πρῶτον αὐτοῦ νόσου γενομένης, ἐξαγαγεῖν ἑαυτόν. ἄγοντα ἔτος ἑβδομηκοστόν, καὶ
τρίτον, μὴ προσέχοντα ταῖς τοῦ βασιλέως δεήσεσι. γενομένης δὲ πυρᾶς καὶ τεθείσης ἐπ᾽ αὐτῆς χρυσῆς
κλίνης. κατακλιθέντα εἰς αὐτὴν, ἐγκαλυψάμενον ἐμπρησθῆναι. οἱ δὲ, ξύλινον οἶκον γενέσθαι. φυλλά-
δος δ᾽ ἐμπλησθείσης. καὶ ἐπὶ τῆς στέγης πυρᾶς γενομένης, ἐγκλεισθέντα ὥσπερ ἐκέλευσε μετὰ τὴν πομ-
πὴν μεθ᾽ ἧς ἧκε, ῥίψαντα ἑαυτὸν, ὡς ἂν δοκὸν συνεμπρησθῆναι τῷ οἴκῳ. μεγασθένης δ᾽ ἐν, μὲν τοῖς φιλο-
σόφοις οὐκ εἶναι δόγμα φησὶν ἑαυτοὺς ἐξάγειν. τοὺς δὲ ποιοῦντας τοῦτο νεανικοὺς κρίνεσθαι. τοὺς μὲν
σκληροὺς τῇ φύσει φερομένους ἐπὶ πληγὴν ἢ κρημνόν. τοὺς δ᾽ ἀπόνους ἐπὶ βυθόν. τοὺς δὲ πολυπόνους
ἀπαγχομένους. τοὺς δὲ πυρώδεις εἰς πῦρ ὠθουμένους. οἷος ἦν καὶ ὁ κάλανος ἀκόλαστος ἄνθρωπος. καὶ ταῖς
ἀλεξάνδρου τραπέζαις δεδουλωμένος. τοῦτον μὲν οὖν ψέγεσθαι. τὸν δὲ μάνδανιν ἐπαινεῖσθαι. ὃς τῶν τοῦ
ἀλεξάνδρου ἀγγέλων καλούντων πρὸς τὸν διὸς υἱὸν, πειθομένῳ τε δῶρα ἔσεσθαι ὑπισχνουμένων ἀπειθοῦντι
δὲ κόλασιν, μήτε ἐκεῖνον φαίη διὸς υἱὸν, ὅς γε ἄρχει μηδὲ πολλοστοῦ μέρους τῆς γῆς μήτ᾽ αὐτῷ δεῖν τῶν παρ᾽ ἐ-
κείνου δωρεῶν ὧν οὐδεὶς κόρος, μήτε δὲ ἀπειλῆς εἶναι φόβον. ᾧ ζῶντι μὲν ἀρκοῦσα εἴη τροφὸς ἡ ἰνδική.
ἀποθανόντι δ᾽ ἀπαλλάξαιτο τῆς σαρκὸς ἀπὸ γήρως τετρυχωμένης. μεταστὰς εἰς βελτίω καὶ καθαρώτερον
βίον. ὥστ᾽ ἐπαινέσαι τὸν ἀλέξανδρον καὶ συγχωρῆσαι. λέγεται δὲ καὶ ταῦτα παρὰ τῶν συγγραφέων.
ὅτι σέβονται μὲν τὸν ὄμβριον δία οἱ ἰνδοὶ καὶ τὸν γάγγην ποταμὸν καὶ τοὺς ἐγχωρίους δαίμονας. ὅταν
δὲ βασιλεὺς λούῃ τὴν τρίχα μεγάλην ἑορτὴν ἄγουσι. καὶ μεγάλα δῶρα πέμπουσι. τὸν ἑαυτοῦ πλοῦτον
ἕκαστος ἐπιδεικνύμενος κατὰ ἅμιλλαν. τῶν τε μυρμήκων τινάς. καὶ πτερωτοὺς λέγουσι τῶν χρυσωρύχων.
ψήγματά τε χρυσοῦ καταφέρειν τοὺς ποταμοὺς καθάπερ τοὺς ἰβηρικούς, ἐν δὲ ταῖς κατὰ τὰς ἑορτὰς
πομπαῖς, πολλοὶ μὲν ἐλέφαντες πέμπονται χρυσῷ κεκοσμημένοι καὶ ἀργύρῳ. πολλὰ δὲ τέθριππα καὶ
βοϊκὰ ζεύγη. εἶθ᾽ ἡ στρατιὰ κεκοσμημένη καὶ χρυσώματα δὲ τῶν μεγάλων καὶ λεβήτων κρατήρων ὀργυ-
ιαίων καὶ τοῦ ἰνδικοῦ χαλκοῦ. καὶ τράπεζαι δὲ, καὶ θρόνοι καὶ ἐκπώματα. καὶ λουτῆρες. λιθοκόλλητα
τὰ πλεῖστα. σμαράγδοις καὶ βηρύλλοις καὶ ἄνθραξιν ἰνδικοῖς. καὶ ἐσθὴς δὲ ποικίλη χρυσόπαστος. καὶ

ασι καὶ παρδάλεις· καὶ λέοντες τιθασοὶ καὶ τῶν ποικίλων ὀρνέων· καὶ εὐφθόγγων πλῆ-
θος. ὁ δὲ χλείταρχος φησὶν ἁμάξας τετρακύκλους· δένδρα κομιζούσας τῶν μεγαλοφύλλων ἐξ ὧν ἀ-
πήρτηται. γένη τε τιθασευομένων ὀρνέων· ὧν εὐφωνότατον μὲν εἴρηκε τὸν ὠρίωνα. λαμπρότατον δὲ
κατὰ τὴν ὄψιν καὶ πλείστην ἔχοντα ποικιλίαν, τὸν καλούμενον κατρέα. τὴν γὰρ ἰδέαν ταῷ, μάλιστα ἐγγί-
ζειν. τὴν δὲ λοιπὴν εἰκονογραφίαν παρ' ἐκείνου ληπτέον. φιλοσόφοις τε τοῖς βραχμᾶσιν ἀντιδιαιροῦνται
πράμνας ἐριστικούς τινας καὶ ἐλεγκτικούς. τοὺς δὲ βραχμᾶνας φυσιολογίαν καὶ ἀστρονομίαν ἀσκεῖν.
γελωμένους ὑπ' ἐκείνων ὡς ἀλαζόνας καὶ ἀνοήτους. τούτων δὲ τοὺς μὲν, ὀρεινοὺς καλεῖσθαι. τοὺς δὲ, γυ-
μνήτας. τοὺς δὲ, πολιτικοὺς καὶ προσχωρίους. καὶ τοὺς μὲν ὀρεινοὺς δοραῖς ἐλάφων χρῆσθαι, πήρας δ'
ἔχειν ῥιζῶν καὶ φαρμάκων μεστάς. προσποιουμένους ἰατρικὴν μετὰ γοητείας καὶ ἐπῳδῶν. καὶ περιάπτων.
τοὺς δὲ γυμνήτας κατὰ τοὔνομα γυμνοὺς διαζῆν ὑπαιθρίους τὸ πλέον. καρτερίαν ἀσκοῦντας ἣν ἔφα-
μεν πρότερον μέχρι ἑπτὰ καὶ τριάκοντα. καὶ γυναῖκας δὲ συνεῖναι μὴ μιγνυμένας αὐτοῖς. τούτους δὲ
θαυμάζεσθαι διαφερόντως. τοὺς δὲ πολιτικοὺς σινδονίτας κατὰ πόλιν ζῆν ἢ καὶ κατ' ἀγρούς. ἐνημμένους
νεβρίδας ἢ δορκάδων νεβράς. ὡς δ' εἰπεῖν ἰνδοὺς ἐσθῆτι λευκῇ χρῆσθαι καὶ σινδόσι λευκαῖς καὶ καρπάσοις,
ὑπεναντίως τοῖς εἰποῦσιν εὐανθέστατα αὐτοὺς ἀμπέχεσθαι φορήματα. κομᾶν δὲ καὶ πωγωνοτροφεῖν
πάντας ἀναπλεκομένους δὲ μιτροῦσθαι τὰς κόμας. ἀρτεμίδωρος δὲ τὸν γάγγην φησὶν ἐκ τῶν ἠμω-
δῶν ὀρῶν καταφερόμενον πρὸς νότον. ἐπειδὰν κατὰ τὴν γάγγην γένηται πόλιν, ἐπιστρέφειν πρὸς ἕω
μέχρι παλιβόθρων, καὶ τὴν εἰς θάλατταν ἐκβολῆς. τῶν δὲ συρρεόντων εἰς αὐτὸν, οἰδάνην τινὰ καλεῖν.
τρέφειν δὲ καὶ κροκοδείλους, καὶ δελφῖνας. λέγει δὲ καὶ ἄλλα τινά. συγκεχυμένως δὲ καὶ ἀργῶς. ὥστ'
οὐ φροντιστέον. προσθείη δ' ἄν τις τούτοις, καὶ τὰ παρὰ τοῦ δαμασκηνοῦ νικολάου. φησὶ γὰρ οὗτος ἐν
ἀντιοχείᾳ τῇ ἐπὶ δάφνῃ, παρατυχεῖν τοῖς ἰνδῶν πρέσβεσιν· ἀφιγμένοις παρὰ καίσαρα τὸν σεβαστόν.
οὓς ἐκ μὲν τῆς ἐπιστολῆς πλείους δηλοῦσθαι. σωθῆναι δὲ τρεῖς μόνους, οὓς ἰδεῖν φησί. τοὺς δ' ἄλλους ὑ-
πὸ μήκους τῶν ὁδῶν διαφθαρῆναι τὸ πλέον. τὴν δ' ἐπιστολὴν ἑλληνικὴν ἐν διφθέρᾳ γεγραμμένην,
δηλοῦσαν. ὅτι πῶρος εἴη ὁ γράψας. ἑξακοσίων δὲ ἄρχων βασιλέων, ὅμως περὶ πολλοῦ ποιοῖτο φί-
λος εἶναι καίσαρι. καὶ ἕτοιμος εἴη δίοδόν τε παρέχειν ὅπῃ βούλεται. καὶ συμπράττειν ὅσα καλῶς ἔ-
χει. ταῦτα μὲν ἔφη λέγειν τὴν ἐπιστολήν. τὰ δὲ κομισθέντα δῶρα προσενέγκαι ὀκτὼ οἰκέτας γυ-
μνούς, ἐν περιζώμασιν. εἶναι δὲ τὰ δῶρα τόν τε ἑρμᾶν. ἀπὸ τῶν ὤμων ἀφῃρημένον ἐκ νηπίου τοὺς βρα-
χίονας, ὃν καὶ ἡμεῖς εἴδομεν. καὶ ἐχίδνας μεγάλας. καὶ ὄφιν πηχῶν δέκα. καὶ χελώνην ποταμίαν
τρίπηχυν. πέρδικα δὲ μείζω γυπός. συνῆν δὲ, ὥς φασι καὶ ὁ ἀθήνησι κατακαύσας ἑαυτόν. ποιεῖν δὲ
τοῦτο τοὺς μὲν ἐπὶ κακοπραγίᾳ ζητοῦντας ἀπαλλαγὴν τῶν παρόντων. τοὺς δ' ἐπ' εὐπραγίᾳ καθάπερ
τοῦτον. ἅπαντα γὰρ κατὰ γνώμην πράξαντα μέχρι νῦν, ἀπιέναι δεῖν. μή τι τῶν ἀβουλήτων χρονίζον-
τι συμπέσῃ. καὶ δὴ καὶ γελῶντα ἅλλεσθαι γυμνὸν ἐπαληλιμμένον ἐν περιζώματι ἐπὶ τὴν πυράν,
ἐπιγεγράφθαι δὲ τῷ τάφῳ. ζαρμανοχήγας ἰνδὸς ἀπὸ βαργόσης κατὰ τὰ πάτρια ἰνδῶν ἔθη ἑαυ-
τὸν ἀπαθανατίσας κεῖται. μετὰ δὲ τὴν ἰνδικήν ἐστιν ἡ ἀριανὴ μερὶς πρώτη τῆς ὑπὸ πέρσαις, τοῖς με-
τὰ τὸν ἰνδὸν ποταμόν. καὶ τῶν ἄνω σατραπειῶν. τῶν ἐκτὸς τοῦ ταύρου. τὰ μὲν νότια καὶ τὰ ἀρκτικὰ
μέρη, τῇ αὐτῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς αὐτοῖς ὄρεσιν ἀφοριζομένη, ὥσπερ καὶ ἡ ἰνδική. καὶ τῷ αὐτῷ ποτα-
μῷ τῷ ἰνδῷ. μέσον ἔχουσα αὐτὸν, ἑαυτῆς τε καὶ ἰνδικῆς. ἐντεῦθεν δὲ πρὸς τὴν ἑσπέραν ἐκτεινομένη,
μέχρι τῆς ἀπὸ κασπίων πυλῶν εἰς καρμανίαν γραφομένης γραμμῆς. ὥστε εἶναι τετράπλευρον τὸ
σχῆμα. τὸ μὲν οὖν νότιον πλευρὸν, ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν ἄρχεται τοῦ ἰνδοῦ, καὶ τῆς παταληνῆς. τελευ-
τᾷ δὲ πρὸς καρμανίαν. καὶ τοῦ περσικοῦ κόλπου τὸ στόμα ἄκραν ἔχον ἐκκειμένην ἱκανῶς νότον. εἶτα εἰς
τὸν κόλπον λαμβάνει καμπὴν ὡς ἐπὶ τὴν περσίδα. οἰκοῦσι δὲ ἄρβιες πρῶτον. ὁμώνυμοι ποταμῷ ἄρ-
βει. ὁρίζοντι αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἑξῆς ὠρειτῶν, ὅσον χιλίων σταδίων ἔχοντες παραλίαν, ὥς φησι νέαρ-
χος. ἰνδῶν δ' ἐστὶ μερὶς, καὶ αὕτη. εἶτ' ὠρεῖται ἔθνος αὐτόνομον. τούτων δ' ὁ παράπλους χιλίων ὀκτα-
κοσίων. ὁ δὲ τῶν ἑξῆς ἰχθυοφάγων, ἑπτακισχίλιοι τετρακόσιοι. ὁ δὲ τῶν καρμανίων, τρισχίλιοι ἑπτακόσιοι.
μέχρι περσίδος. ὥσθ' οἱ σύμπαντες μύριοι δισχίλιοι ἐνακόσιοι. ἀλιτενὴς δ' ἐστὶν ἡ τῶν ἰχθυοφάγων καὶ ἄ-
δενδρος ἡ πλείστη. φοινίκων καὶ ἀκάνθης τινὸς καὶ μυρίκης. καὶ ὑδάτων δὲ καὶ τροφῆς ἡμέρου σπα-
νίς. τοῖς δ' ἰχθύσι χρῶνται, καὶ αὐτοὶ, καὶ θρέμματα. καὶ τοῖς ὀμβρίοις ὕδασι καὶ ὀρυκτοῖς. καὶ τὰ
κρέα δὲ τῶν θρεμμάτων ἰχθύων προσβάλλει. οἰκήσεις δὲ ποιοῦνται τοῖς ὀστέοις τῶν κητῶν χρώμενοι.
καὶ κόγχοις ὀστρέων τὸ πλέον, δοκοῖς μὲν ταῖς πλευραῖς καὶ ὑπερείσμασι. θυρώμασι δὲ ταῖς σιαγό-
σιν. οἱ σπόνδυλοι δ' αὐτοῖς εἰσὶν ὅλμοι. ἐν οἷς πτίσσουσι τοὺς ἰχθύας ἐν ἡλίῳ κατοπτήσαντες. εἶτ' ἀρτο-
ποιοῦνται σίτου μικρὰ καταμίξαντες. καὶ γὰρ μύλοι αὐτοῖς εἰσὶ σιδήρου μὴ ὄντος. καὶ τοῦτο μὲν ἧτ-
τον θαυμαστόν. καὶ γὰρ ἄλλοθεν ἐνέγκασθαι δυνατόν. ἀλλὰ πῶς ἐπικόπτουσιν ἀποτριβέντα. λίθοις
μέντοι φασίν. οἷς καὶ τὰ βέλη καὶ τὰ ἀκοντίσματα πεπυρακτωμένα ὀξύνουσι. τοὺς δ' ἰχθύας, τοὺς
μὲν, ἐν κλιβάνοις κατοπτῶσι. τοὺς δὲ πλείστους ὠμοφαγοῦσι. περιβάλλονται δὲ καὶ δικτύοις φλοιοῦ
φοινικίνου. ὑπέρκειται δὲ τούτων ἡ γεδρωσία. τῆς μὲν ἰνδικῆς ἧττον ἔμπειρος. τῆς δ' ἄλλης ἀσίας μᾶλ-

λον. καὶ τοῖς καρποῖς καὶ τοῖς ὕδασιν ἐνδεής, πλὴν θέρους, οὐ πολὺ ἀμείνων τῆς τῶν ἰχθυοφάγων. ἀ-
ρωματοφόρος δὲ νάρδου μάλιστα, καὶ σμύρνης. ὥς τε τὴν ἀλεξάνδρου στρατιὰν ὁδεύουσαν, ἀντὶ ὀρόφου
καὶ στρωμάτων τούτοις χρῆσθαι εὐωδιαζομένην ἅμα καὶ ὑγιεινότερον τὸν ἀέρα ἐχούσην διὰ τοῦτο. γε-
νέσθαι δ' αὐτοῖς θέρους τὴν ἐκ τῆς ἰνδικῆς ἄφοδον ἐπίτηδες συνέβη. τότε γὰρ ὄμβρους ἔχειν τὴν γε-
δρωσίαν. καὶ τοὺς ποταμοὺς πληροῦσθαι, καὶ τὰ ὑδρεία. χειμῶνος δ' ἐπιλείπειν. ἐπιπίπτειν δὲ τοὺς ὄμ-
βρους ἐν τοῖς ἄνω μέρεσι τῆς προσαρκτίοις, καὶ ἐγγὺς τῶν ὀρῶν. πληρουμένων δὲ τῶν ποταμῶν, καὶ
τὰ πεδία τὰ πλησιάζοντα τῇ θαλάττῃ ποτίζεσθαι. καὶ ὑδρείων εὐπορεῖν. προέπεμψε δ' εἰς τὴν ἔρη-
μον μεταλλευτὰς τῶν ὑδρείων ὁ βασιλεύς. καὶ τοὺς ναύσταθμα αὐτῷ, καὶ τῷ στόλῳ κατασκευάσοντας.
τειχῆ γὰρ διελὼν τὰς δυνάμεις, τῇ μέν, αὐτὸς ὥρμησε διὰ τῆς γεδρωσίας. ἀφιστάμενος τῆς θαλάτ-
της τὸ πλεῖστον πεντακοσίους σταδίους. ἵν' ἅμα καὶ τῷ ναυτικῷ τὴν παραλίαν ἐπιτηδείαν παρασκευά-
ζῃ. πολλάκις δὲ καὶ συνάπτων τῇ θαλάττῃ. καίπερ ἀπόρους καὶ τραχείας ἐχούσης τὰς ἀκτάς, τὴν δέ,
προέπεμψε μετὰ κρατεροῦ διὰ τῆς μεσογαίας. ἅμα χειρούμενόν τε τὴν ἀριανήν, καὶ προϊόντα ἐπὶ
τοὺς τόπους αὐτούς, ἐφ' οὓς ἀλέξανδρος τὴν πορείαν εἶχε. τὸ δὲ ναυτικόν, νεάρχῳ καὶ ὀνησικρίτῳ τῷ ἀρ-
χικυβερνήτῃ παραδούς, ἐκέλευσεν οἰκείας στάσεως ἐπιλαμβανομένους, ἐπακολουθεῖν, καὶ ἀντιπα-
ραπλεῖν αὐτοῦ τῇ πορείᾳ. καὶ δὴ καί φησιν ὁ νέαρχος ἤδη τοῦ βασιλέως τελοῦντος τὴν ὁδόν, αὐτὸς με-
τοπώρου κατὰ πλειάδος ἐπιτολὴν ἑσπερίαν ἄρξασθαι τοῦ πλοῦ. μή πω μὲν τῶν πνευμάτων οἰκείων
ὄντων. τῶν δὲ βαρβάρων ἐπιχειρούντων αὐτοῖς, καὶ ἐξελαυνόντων. καταθαῤῥῆσαι γὰρ ἀπελθόντος
τοῦ βασιλέως, καὶ ἐλευθεριάσαι. κρατερὸς δ' ἀπὸ τοῦ ὑδάσπου ἀρξάμενος διὰ ἀραχωτῶν ᾔει καὶ δραγ-
γῶν εἰς καρμανίαν. πολλὰ δ' ἐταλαιπώρει ὁ ἀλέξανδρος καθ' ὅλην τὴν ὁδὸν διὰ λυπρᾶς ἰών. πόῤῥω-
θεν δ' ὅμως ἐπεχορηγεῖτο μικρά, καὶ σπάνια. ὥς τε λιμώττειν τὸ στράτευμα. καὶ τὰ ὑποζύγια ἐπέ-
λιπε. καὶ τὰ σκεύη κατελείπετο ἐν ταῖς ὁδοῖς, καὶ τοῖς στρατοπέδοις. ἀπὸ δὲ τῶν φοινίκων ἦν ἡ σωτη-
ρία. τοῦ τε καρποῦ, καὶ τοῦ ἐγκεφάλου. φασὶ δὲ φιλονεικῆσαι τὸν ἀλέξανδρον καίπερ εἰδότα τὰς ἀ-
πορίας, πρὸς τὴν κατέχουσαν δόξαν. ὡς σεμίραμις μὲν ἐξ ἰνδῶν φεύγουσα σωθείη, μετὰ ἀνδρῶν ὡς
εἴκοσι. κῦρος δὲ ἑπτά. εἰ δύναιτο αὐτὸς τοσοῦτον στράτευμα διασῶσαι διὰ τῆς αὐτῆς χώρας. νικῶν καὶ
ταῦτα. πρὸς δὲ τῇ ἀπορίᾳ χαλεπὸν ἦν καὶ τὸ καῦμα, καὶ τὸ βάθος τῆς ψάμμου. καὶ ἡ θερμότης. ἔ-
στι δ' ὅπου καὶ θῖνες ὑψηλοί. ὥς τε πρὸς τὸ δυσχερῶς ἀναφέρειν τὰ σκέλη καθάπερ ἐκ βυθοῦ, καὶ ἀ-
ναβάσεις εἶναι καὶ καταβάσεις. ἀνάγκη δ' ἦν καὶ σταθμοὺς ποιεῖσθαι μακροὺς διὰ τὰ ὑδρεῖα. διακοσίων
καὶ τετρακοσίων σταδίων. ἔστι δ' ὅτε καὶ ἑξακοσίων νυκτοποροῦντας τὸ πλέον. πόῤῥω δὲ τῶν ὑδρείων ἐ-
στρατοπεδεύοντο ἐν τριάκοντα σταδίοις πολλάκις. τοῦ μὴ ἐμφορεῖσθαι κατὰ τὸ δίψος. πολλοὶ γὰρ ἐμπί-
πτοντες σὺν ὅπλοις, ἔπινον ὡς ἂν ὑποβρύχιοι. φυσώμενοι δ' ἐπέπλεον ἐκπεπνευκότες. καὶ τὰ ὑδρεῖα
βραχέα ὄντα διέφθειραν. οἱ δ' ἐν τῷ ἡλίῳ κατὰ μέσην ὁδὸν ἀπηγορευκότες ἔκειντο ὑπὸ δίψους. ἔπει-
τα τρομώδεις μετὰ παλμοῦ ποδῶν, καὶ χειρῶν, ἔθνησκον παραπλησίως. ὡς ἂν ὑπὸ ῥίγους καὶ φρί-
κης ἐχόμενοι. συνέβαινε δέ τισι, καὶ ἐκτραπομένοις τὴν ὁδὸν καταδαρθεῖν κρατουμένοις ὑπὸ ὕπνου καὶ
κόπου. ὑστερήσαντες δ' οἱ μέν, ἀπώλοντο πλάνῃ τῶν ὁδῶν καὶ ὑπὸ ἀπορίας ἁπάντων. καὶ καύματος.
οἱ δ' ἐσώθησαν πολλὰ ταλαιπωρηθέντες. πολλὰ δὲ κατέκλυσε καὶ τῶν σωμάτων, καὶ τῶν χρηστηρίων
ἐπιπεσὼν χειμάῤῥους νύκτωρ. καὶ τῆς βασιλικῆς δὲ κατασκευῆς ἐξηλείφθη πολλή. καὶ τῶν καθοδη-
γούντων τε κατ' ἄγνοιαν, πολὺ εἰς τὴν μεσόγαιαν ἐκτραπομένων. ὥς τε μηκέτι ὁρᾶν τὴν θάλατταν. ὁ συνεὶς
ὁ βασιλεὺς ἐξ αὐτῆς ὥρμησε ζητήσων τὴν ἠιόνα. καὶ ἐπειδὴ εὗρε, καὶ ὀρύξας εἶδεν ὕδωρ πότιμον με-
τεπέμπετο τὸ στρατόπεδον. καὶ λοιπὸν μέχρι ἡμερῶν ἑπτὰ πλησίον ᾔει τῆς ἠιόνος εὐπορῶν ὑδρείας.
ἔπειτ' αὖθις εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀνεχώρησεν. ἦν δέ τι ὅμοιον τῇ δάφνῃ φυτόν. οὗ τὸ γευσάμενον τῶν ὑπο-
ζυγίων ἀπέθνησκε μετὰ ἐπιληψίας καὶ ἀφροῦ. ἄκανθα δὲ τοὺς καρποὺς ἐπὶ τῆς γῆς ἐστρωμένη καθά-
περ οἱ σίκυοι, πλήρης ἦν ὀποῦ. τούτου δὲ ῥανίδες εἰς ὀφθαλμὸν ἐμπεσοῦσαι, πᾶν ἀπετύφλου ζῷον. οἵ τε
ὠμοὶ φοίνικες ἔπνιγον πολλούς. ἦν δὲ κίνδυνος καὶ ἀπὸ τῶν ὄφεων. ἐν γὰρ τοῖς θισὶν ἐπεφύκει βοτάνη.
ταύτην δ' ὑποδεδυκότες ἐλάνθανον. τοὺς δὲ πληγέντας ἀπέκτεινον. ἐν δὲ τοῖς ὠρείταις τὰ τοξεύμα-
τα χρίεσθαι θανασίμοις φαρμάκοις ἔφασαν, ξύλινα ὄντα καὶ πεπυρακτωμένα. τρωθέντα δὲ πτολε-
μαῖον κινδυνεύειν. ἐν ὕπνῳ δὲ παραστάντα τινὰ τῷ ἀλεξάνδρῳ δεῖξαι ῥίζαν αὐτόπρεμνον, ἣν κελεῦ-
σαι τρίβοντα ἐπιτιθέναι τῷ τρωθέντι. ἐκ δὲ τοῦ ὕπνου γενόμενον μεμνημένον τῆς ὄψεως εὑρεῖν ζητοῦν-
τα τὴν ῥίζαν πολλὴν πεφυκυῖαν. καὶ χρήσασθαι καὶ αὐτὸν καὶ τοὺς ἄλλους. ἰδόντας δὲ τοὺς βαρβά-
ρους εὑρημένον τὸ ἀλέξημα, ὑπηκόους γενέσθαι τῷ βασιλεῖ. εἰκὸς δέ τινα μηνῦσαι τῶν εἰδότων. τὸ δὲ μυ-
θῶδες προσετίθει κολακείας χάριν. ἐλθὼν δ' εἰς τὸ βασίλειον τῶν γεδρωσίων ἑξηκοσταῖος ἀπὸ ὤρων,
διαναπαύσας τὰ πλήθη μικρόν, ἀπῆρεν εἰς τὴν καρμανίαν. τὸ μὲν δὴ νότιον τῆς ἀριανῆς πλευ-
ρὸν τοιαύτην τινὰ ἔχει τὴν τῆς παραλίας διάθεσιν. καὶ τῆς ὑποκειμένης πλησίον γῆς τῆς τῶν
γεδρωσίων, καὶ ὠρειτῶν. πολλὴ δ' ἐστὶ καὶ εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀνέχουσα, καὶ ἡ γεδρωσία μέχρι τοῦ
συνάψαι δράγγαις τε καὶ ἀραχωτοῖς, καὶ παροπαμισάδαις. περὶ ὧν ἐρατοσθένης οὕτως εἴ-

ρηκεν. οὐ γὰρ ἔχω μέν τι λέγειν βέλτιον περὶ αὐτῆς. ὁρίζεσθαι μὲν γάρ φησι τὴν ἀριανὴν,
ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἕω τῷ ἰνδῷ. πρὸς νότον δὲ τῇ μεγάλῃ θαλάττῃ, πρὸς ἄρκτον δὲ τῷ παροπα-
μισῷ, καὶ τοῖς ἑξῆς ὄρεσι μέχρι κασπίων πυλῶν, τὰ δὲ πρὸς ἑσπέραν τοῖς αὐτοῖς ὅροις, οἷς ἡ μὲν
παρθυηνὴ πρὸς μηδίαν. ἡ δὲ καρμανία πρὸς τὴν παραιτακηνὴν, καὶ περσίδα διώρισθαι. πλάτος
δὲ τῆς χώρας, τὸ τοῦ ἰνδοῦ μῆκος. τὸ ἀπὸ τοῦ παροπαμισοῦ μέχρι τῶν ἐκβολῶν, μύριοι καὶ δισχίλιοι στά-
διοι. οἱ δὲ, τρισχιλίους φασί. μῆκος δὲ ἀπὸ κασπίων πυλῶν, ὡς ἐν τοῖς ἀσιατικοῖς σταθμοῖς ἀναγέγραπται
διττόν. μέχρι μὲν ἀλεξανδρείας τῆς ἐν ἀρίοις ἀπὸ κασπίων πυλῶν διὰ τῆς παρθυαίας, μία καὶ ἡ αὐτὴ
ὁδός ἐστιν. εἶθ᾽ ἡ μὲν ἐπ᾽ εὐθείας διὰ τῆς βακτριανῆς καὶ τῆς ὑπερβάσεως τοῦ ὄρους εἰς ὀρτόσπανα. διὰ τὴν ἐκ βάκτρων
τριόδον. ἥτις ἐστὶν ἐν τοῖς παροπαμισάδαις. ἡ δ᾽ ἐκτρέπεται μικρὸν ἀπὸ τῆς ἀρίας πρὸς νότον εἰς προ-
φθασίαν τῆς δραγγιανῆς. εἶτα πάλιν ἡ λοιπὴ μέχρι τῶν ὅρων τῆς ἰνδικῆς καὶ τοῦ ἰνδοῦ. ὥστε μακρο-
τέρα ἐστὶν αὕτη ἡ διὰ τῶν δράγγων καὶ ἀραχωτῶν σταδίων μυρίων πεντακισχιλίων τριακοσίων ἡ πᾶσα.
εἰ δέ τις ἀφέλοι τοὺς χιλίους τριακοσίους, ἔχοι ἂν τὸ λοιπὸν τὸ ἐπ᾽ εὐθείας μῆκος τῆς χώρας, μυρίων καὶ
τετρακισχιλίων. οὐ πολὺ γὰρ ἔλαττον τῆς παραλίας. καίπερ αὐξῶσί τινες αὐτὴν πρὸς τοῖς μυρίοις
τὴν καρμανίαν, ἑξακισχιλίους τιθέντες. ἢ γὰρ ἂν σὺν τοῖς κόλποις φανοῦνται τιθέντες, ἢ σὺν τῇ ἐν-
τὸς ἢ τοῦ περσικοῦ κόλπου παραλίᾳ τῇ καρμανικῇ. ἐπεκτείνεται δὲ τοὔνομα τῆς ἀριανῆς μέχρι μέρους
τινὸς καὶ περσῶν καὶ μήδων. καὶ ἔτι τῶν πρὸς ἄρκτον βακτρίων καὶ σογδιανῶν. εἰσὶ γάρ πως καὶ ὁμόγλωττοι
παρὰ μικρόν. ἡ δὲ τάξις τῶν ἐθνῶν τοιαύτη. παρὰ μὲν τὸν ἰνδὸν οἱ παροπαμισάδαι. ὧν ὑπέρκειται
ὁ παροπαμισὸς ὄρος. εἶτ᾽ ἀραχωτοὶ πρὸς νότον. εἶτ᾽ ἐφεξῆς πρὸς νότον γεδρωσηνοὶ σὺν τοῖς ἄλλοις τοῖς
τὴν παραλίαν ἔχουσιν. ἅπασι δὲ παρὰ τὰ πλάτη τῶν χωρίων παράκειται ὁ ἰνδός. τούτων δ᾽ ἐκ μέρους
τῶν παρὰ τὸν ἰνδὸν ἔχουσί τινα ἰνδοί. πρότερον ὄντα περσῶν. ἃ ἀφείλετο μὲν ὁ ἀλέξανδρος τῶν ἀρια-
νῶν, καὶ κατοικίας ἰδίας συνεστήσατο. ἔδωκε δὲ σέλευκος ὁ νικάτωρ σανδροκόττῳ. συνθέμενος ἐπι-
γαμίαν. καὶ ἀντιλαβὼν ἐλέφαντας πεντακοσίους. τοῖς παροπαμισάδαις δὲ παράκεινται πρὸς τὴν
ἑσπέραν ἄριοι. τοῖς δὲ ἀραχωτοῖς δράγγαι καὶ τοῖς γεδρωσίοις. οἱ δ᾽ ἄριοι τοῖς δράγγαις ἅμα καὶ πρὸς
ἄρκτον παράκεινται καὶ πρὸς ἑσπέραν, ἐγκυκλούμενοι μικρά πως. οἱ δὲ βακτριανοὶ, τῇ τε ἀρίᾳ πρὸς
ἀριστερὸν παράκεινται καὶ τοῖς παροπαμισάδαις. δι᾽ ὧν περ ἀλέξανδρος ὑπερέβαλε τὸν καύκασον.
ἐλαύνων ἐπὶ τὴν βάκτρων. πρὸς ἑσπέραν δὲ ἐφεξῆς εἰσὶ τοῖς ἀρίοις παρθυαῖοι. καὶ τὰ περὶ τὰς
κασπίους πύλας. πρὸς νότον δὲ τούτοις ἡ ἔρημος τῆς καρμανίας. εἶθ᾽ ἡ λοιπὴ καρμανία καὶ γεδρωσία.
γνοίη δ᾽ ἄν τις τὰ περὶ τὴν λεχθεῖσαν ὀρεινὴν ἔτι μᾶλλον. προσιστορήσας τὴν ὁδὸν, ᾗ ἐχρήσατο διώκων
τοὺς περὶ βησσὸν. ὡς ἐπὶ βάκτρων ἀλέξανδρος ἐκ τῆς παρθυηνῆς. εἰς γὰρ τὴν ἀριανὴν ἧκεν. εἶτ᾽ εἰς
δράγγας ὅπου φιλώτας ἀνεῖλε τὸν παρμενίωνος υἱόν. φωράσας ἐπιβουλήν. ἔπεμψε δὲ καὶ εἰς ἐκ-
βάτανα τοὺς καὶ τὸν πατέρα αὐτοῦ ἀνελοῦντας ὡς κοινωνὸν τῆς ἐπιβουλῆς. φασὶ δ᾽ αὐτοὺς ἐπὶ δρο-
μάδων καμήλων ὁδὸν ἡμερῶν τριάκοντα ἢ καὶ τετταράκοντα, ἑνδεκαταίους διανύσαι, καὶ τελευτῆσαι
τὴν πρᾶξιν. οἱ δὲ δράγγαι περσίζοντες τἆλλα κατὰ τὸν βίον, οἴνου σπανίζουσι. γίνεται δὲ παρ᾽ αὐτοῖς
καττίτερος. εἶτ᾽ εἰς δραγγῶν ἔτι τε τοὺς εὐεργέτας ἧκεν. οὓς ὁ κῦρος οὕτως ὠνόμασε καὶ τοὺς ἀραχω-
τούς. εἶτα διὰ τῶν παροπαμισάδων ὑπὸ πλειάδος δύσιν. ἔστι δ᾽ ὀρεινὴ καὶ κεχιονοβόλητο τότε. ὥσ-
τε χαλεπῶς ὡδεύετο. πυκναὶ μέν τοι κῶμαι δεχόμεναι, πάντων εὔποροι πλὴν ἐλαίου. παρεμυθοῦντο
τὰς δυσκολίας. εἶχον τε ἐν ἀριστερᾷ τὰς ἀκρωρείας. ἔστι δὲ τὰ μεσημβρινὰ μὲν τοῦ ὄρους τοῦ παροπα-
μισοῦ, ἰνδικά τε καὶ ἀριανά. τὰ δὲ προσάρκτια, τὰ μὲν πρὸς ἑσπέραν, βάκτρια τοῖς βακτρίοις βαρβά-
ρων. διαχειμάσας δ᾽ αὐτόθι, ὑπερδέξιον ἔχων τὴν ἰνδικὴν, καὶ πόλιν κτίσας, ὑπερῆκεν εἰς τὴν βακ-
τριανὴν διὰ ψιλῶν ὁδῶν. πλὴν τερμίνθου θαμνώδους ὀλίγης. ἀπορούμενος καὶ τροφῆς. ὥστε ταῖς
τῶν κτηνῶν σαρξὶ χρῆσθαι. καὶ ταύταις ὠμαῖς διὰ τὴν ἀξυλίαν, πρὸς δὲ τὴν ὠμοσιτίαν, πεπτικὸν
ἦν αὐτοῖς τὸ σίλφιον πολὺ πεφυκός. πεντεκαιδεκαταῖος δὲ ἀπὸ τῆς κτισθείσης πόλεως καὶ τῶν χειμα-
δίων, ἧκεν εἰς ἄδραψα πόλιν τῆς βακτριανῆς. περὶ ταῦτα δέ που τὰ μέρη τῆς ὁμόρου τῇ ἰνδικῇ, καὶ
τὴν χοαρηνὴν εἶναι συμβαίνει. ἔστι δὲ τῶν ὑπὸ τοῖς παρθυαίοις αὕτη προσεχεστάτη ἰνδικῇ. διέχει δὲ
τῆς ἀριανῆς δι᾽ ἀραχωτῶν καὶ τῆς λεχθείσης ὀρεινῆς, σταδίους μυρίους ἐννακισχιλίους. ταύτην δὲ τὴν χώ-
ραν διεξιὼν κρατερὸς καταστρεφόμενος ἅμα τοὺς ἀπειθοῦντας, ᾔει συμμῖξαι τὴν ταχίστην σπεύδων
τῷ βασιλεῖ. καὶ δὴ περὶ τοὺς αὐτοὺς χρόνους σχεδόν τι συνέδραμον εἰς τὴν καρμανίαν αἱ πεζαὶ δυνά-
μεις ἀμφότεραι. καὶ μικρὸν ὕστερον οἱ περὶ νέαρχον εἰσέπλεον εἰς τὸν περσικὸν κόλπον. πολλὰ ταλαι-
πωρήσαντες διὰ τὴν ἄλην καὶ τὴν ταλαιπωρείαν καὶ τὰ μεγέθη τῶν κητῶν. εἰκὸς μὲν οὖν πρὸς ὑπερ-
βολὴν ἠδολεσχηκέναι πολλὰ τοὺς πλεύσαντας. ὅμως δ᾽ οὖν εἰρήκασι παραδηλοῦντες ἅμα καὶ τὸ πα-
ρασὰν αὐτοῖς πάθος. διότι προσδοκία μᾶλλον ἢ κίνδυνος ὑπῆρχε τοῖς ἀληθέσι. τὸ δὲ μάλιστα ταράττον,
φυσητήρων μεγέθει ῥοῦ ἀπεργαζομένων μέγαν ἀθρόον καὶ ἀχλὺν ἐκ τῶν ἀναφυσημάτων. ὥστε τὰ πρὸ
ποδῶν μέρη μὴ ὁρᾶσθαι. ἐπειδ᾽ οἱ καθηγεμόνες τοῦ πλοῦ, δεδιότων ταῦτα τῶν ἀνθρώπων, τὴν δ᾽ αἰτίαν
οὐχ ὁρώντων, ἐμήνυσαν ὅτι θηρία εἴη. τάχα δ᾽ ἀπαλλάττοιτο σάλπιγγος ἀκούσαντα καὶ κρότου. ἐκ

τούτου νέαρχος ταῖς ναυσὶν ἐπῆγε μὲν τὸ ῥόθιον καθάπερ ἐκώλυον. καὶ ἅμα ταῖς σάλπιγξιν ἐφόβει.
τὰ δὲ θηρία ἔδυνεν. εἶτ' ἀνεφαίνετο κατὰ πρύμναν. ὥστε ναυμαχίας ἀγωνίαν παρέχειν. ἀλλ' ἀφί-
στατο. λέγουσι μὲν οὖν καὶ οἱ νῦν πλέοντες εἰς ἰνδοὺς μεγέθη θηρίων καὶ ἐπιφανείας. ἀλλ' οὔτε ἀ-
θρόων, οὔτ' ἐπιφερομένων, πολλάκις. ἀλλ' ἀποσοβηθέντα τῇ κραυγῇ καὶ τῇ σάλπιγγι ἀπαλλάττεσθαι.
φασὶ δ' αὐτὰ μὲν μὴ πλησιάζειν τῇ γῇ, τὰ δ' ὀστᾶ διαλυθέντων. ψιλωθέντα, ἐκκυμαίνεσθαι ῥᾳδίως. καὶ
χορηγεῖν τὴν λεχθεῖσαν ὕλην τοῖς ἰχθυοφάγοις περὶ τὰς καλυβοποιΐας. μέγεθος δὲ τῶν κητῶν φησιν
ὁ νέαρχος τριῶν καὶ εἴκοσιν ὀργυιῶν. πιστευθέντα δὲ ἱκανῶς ὑπὸ τῶν ἐν τῷ στόλῳ φησὶν ὁ νέαρχος. ἐξε-
λέγξαι ψεῦδος ὄν. ὡς εἴη τις ἐν τῷ πόρῳ νῆσος, ἣ ἀφανίζει τοὺς προσορμισθέντας. κέρκουρον γάρ τινα
πλέοντα, ἐπειδὴ κατὰ τὴν νῆσον ταύτην ἐγεγόνει, μηκέτι ὁραθῆναι. πεμφθέντας δέ τινας ἐπὶ τὴν
ζήτησιν, ἐκβῆναι μὲν μὴ θαρρεῖν εἰς τὴν νῆσον ἐκπλέοντας, ἀνακαλεῖν δὲ κραυγῇ τοὺς ἀνθρώπους. μηδε-
νὸς δ' ὑπακούοντος ἐπανελθεῖν. ἁπάντων δ' αἰτιωμένων τὴν νῆσον, αὐτὸς ἔφη πλεῦσαι. καὶ προ-
σορμισθεὶς ἐκβῆναι μέρους τῶν συμπλευσάντων. καὶ περιελθεῖν τὴν νῆσον. ὡς δ' οὐδὲν εὕρισκον ἴχνος
τῶν ζητουμένων, ἀπογνόντα ἐπανελθεῖν. καὶ διδάξαι τοὺς ἀνθρώπους ὡς ἡ μὲν νῆσος ψευδῆ τὴν αἰτίαν
ἔχοι. καὶ γὰρ αὐτῷ καὶ τοῖς συνεκβᾶσιν ὁ αὐτὸς ὑπάρξαι ἂν φθόρος. ἄλλος δέ τις τρόπος τῷ κερκού-
ρῳ τοῦ ἀφανισμοῦ συμβαίη, μυρίων ὄντων δυνατῶν. ἡ δὲ καρμανία τελευταία μέν ἐστι τῆς ἀπὸ τοῦ ἰνδοῦ ἐκ-
βολῆς. τὸ μέντοι πρῶτον αὐτῆς ἄκρον ἔκκειται πρὸς νότον εἰς τὴν μεγάλην θάλατταν. ποιήσας δὲ τὸ στό-
μα τοῦ περσικοῦ κόλπου πρὸς τὴν ἀπὸ τῆς εὐδαίμονος ἀραβίας ἄκραν ἐν ἀπόψει οὖσαν κάμπτεται πρὸς
τὸν περσικὸν κόλπον ἕως ἂν συνάψῃ τῇ περσίδι. πολλὴ δὲ καὶ τῇ μεσογαίᾳ ἐστὶν ἐκτεινομένη μεταξὺ
τῆς γεδρωσίας καὶ τῆς περσίδος. παραλλάττουσα πλέον τῆς γεδρωσίας πρὸς ἄρκτον. δηλοῖ δ' ἡ εὐ-
καρπία. καὶ γὰρ πάμφορος καὶ μεγαλόδενδρος πλὴν ἐλαίας. καὶ ποταμοῖς κατάρρυτος. ἡ δὲ γεδρω-
σία διαφέρει μικρὸν τῆς τῶν ἰχθυοφάγων. ὥστ' ἀκαρπία κατέχει πολλάκις. διὸ φυλάττουσι τὸν ἐνιαύ-
σιον καρπὸν εἰς ἔτη πλείω ταμιευόμενοι. ὀνησίκριτος δὲ λέγει ποταμὸν ἐν τῇ καρμανίᾳ καταφέροντα
ψήγματα χρυσοῦ. καὶ ὀρυκτοῦ δὲ εἶναι μέταλλον, καὶ ἀργύρου καὶ χαλκοῦ καὶ μίλτου. ὄρη τε εἶναι
δύο. τὸ μὲν, ἀρσενικοῦ. τὸ δὲ, ἁλός. ἔχει δέ τινα καὶ ἔρημον συνάπτουσαν ἤδη τῇ παρθυαίᾳ καὶ τῇ πα-
ταλινῇ. γεώργια δ' ἔχει παραπλήσια τοῖς περσικοῖς. τά τε ἄλλα καὶ ἄμπελον. ταύτης δ' ἡ καρμανία
λεγομένη παρ' ἡμῖν, καὶ δίπηχυν ἔχει πολλάκις τὸν βότρυν. πυκνόραγά τε ὄντα καὶ μεγαλόραγα. ἣν
εἰκὸς ἐκεῖ εὐθρεστέραν εἶναι. χρῶνται δ' ὄνοις οἱ πολλοὶ καὶ πρὸς πόλεμον σπάνει τῶν ἵππων. ὄνον τε
θύουσι τῷ ἄρει. ὃν πέρσαι σέβονται θεῶν μόνον. καί εἰσι πολεμισταί. γαμεῖ δ' οὐδεὶς πρὶν ἂν πολεμίου
κεφαλὴν ἀποτεμὼν, ἀνενέγκοι ἐπὶ τὸν βασιλέα. ὁ δὲ, τὸ κρανίον μὲν ἐπὶ τῶν βασιλείων ἀνατίθησι. τὴν
δὲ γλῶσσαν λεπτοτομήσας καταμίξας ἀλεύρῳ, γευσάμενος, αὐτῷ δίδωσι τῷ ἀνενέγκαντι καὶ τοῖς
οἰκείοις κατασιτήσασθαι. ἐνδοξότατος δ' ἐστὶν ᾧ πλεῖσται κεφαλαὶ ἀνηνέχθησαν. νέαρχος δὲ τὰ πλεῖστα
ἔθη καὶ τὴν διάλεκτον τῶν καρμανιτῶν, περσικά τε καὶ μηδικὰ εἴρηκε. τὸ δὲ στόμα τοῦ περσικοῦ κόλπου,
μεῖζον διάρματος ἡμερησίου. μετὰ δὲ καρμανίαν, ἡ περσίς ἐστι. πολλὴ μὲν ἐν τῇ παραλίᾳ τοῦ ἀπ' αὐτῆς
ὀνομαζομένου περσικοῦ κόλπου. πολλὴ δὲ μείζων ἐν τῇ μεσογαίᾳ καὶ μάλιστα ἐπὶ μῆκος τὸ ἀπὸ τοῦ
νότου καὶ τῆς καρμανίας, ἐπὶ τὰς ἄρκτους καὶ τὰ περὶ μηδίαν ἔθνη. τριττὴ δ' ἐστὶ καὶ τῇ φύσει καὶ
τῇ τῶν ἀέρων κράσει. ἡ μὲν γὰρ παραλία καυματηρά τε καὶ ἀμμώδης. καὶ σπανιστὴ καρπῶν ἐστί. πλὴν
φοινίκων. ὅσον ἐν τετρακισχιλίοις καὶ τετρακοσίοις ἢ τριακοσίοις ἐξεταζομένη σταδίοις. καταστρέφουσα
εἰς ποταμὸν μέγιστον τὸν ταύτῃ καλούμενον ὀροάτιν. ἡ δ' ὑπὲρ ταύτης ἐστὶ πάμφορος καὶ πεδινή. καὶ
θρεμμάτων ἀρίστη τροφός. ποταμοῖς τε καὶ λίμναις πληθύει. τρίτη δ' ἐστὶν ἡ πρὸς βορρᾶν χειμέριος καὶ
ὀρεινή. πρὸς δὲ ταῖς ἐσχάταις εἰσὶν οἱ καμηλοβοσκοί. μῆκος μὲν οὖν ἐστι κατ' ἐρατοσθένη τὸ ἐπὶ τὰς ἄρκτους
καὶ τὰς κασπίους πύλας, περὶ ὀκτακισχιλίων. κατά τινας προπιπτούσας ἄκρας. λοιπὴ δ' ἐστὶν ἐπὶ
κασπίους πύλας οὐ πλείους ἢ τῶν δισχιλίων. πλάτος δὲ τὸ ἐν τῇ μεσογαίᾳ ἀπὸ σούσων εἰς περσέπολιν
στάδιοι τετρακισχίλιοι διακόσιοι. καὶ ἐντεῦθεν ἐπὶ τοὺς καρμανίας ὅρους, ἄλλοι χίλιοι ἑξακόσιοι. φῦλα τε
οἰκεῖ τὴν χώραν, οἵ τε πατεισχορεῖς λεγόμενοι. καὶ οἱ ἀχαιμενίδαι. καὶ μάγοι. οὗτοι μὲν οὖν σεμνοῦ τινος
εἰσὶ βίου ζηλωταί. κύρτιοι δὲ καὶ μαρδοὶ λῃστρικοί. ἄλλοι δὲ γεωργικοί. σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ σουσὶς μέρος γε-
γένηται τῆς περσίδος. μεταξὺ αὐτῆς κειμένη καὶ τῆς βαβυλωνίας. ἔχουσα πόλιν ἀξιολογωτάτην
τὰ σοῦσα. οἱ γὰρ πέρσαι κρατήσαντες μήδων καὶ ὁ κῦρος ὁρῶντες τὴν μὲν οἰκείαν γῆν ἐπ' ἐσχάτοις που
τεταγμένην, τὴν δὲ σουσίδα ἐνδοτέρω καὶ πλησιεστέραν τῇ βαβυλωνίᾳ ἐν τοῖς ἄλλοις ἔθνεσιν, ἐνταῦθα
ἔθετο τὸ τῆς ἡγεμονίας βασίλειον. ἅμα καὶ τὸ ὅμορον τῆς χώρας ἀποδεξάμενοι, καὶ τὸ ἀξίωμα τῆς
πόλεως. καὶ κρεῖττον τὸ μηδέποτε καθ' ἑαυτὴν τὴν σουσίδα πραγμάτων μεγάλων ἐπίβουλον γεγονέναι.
ἀλλ' ἀεὶ ὑφ' ἑτέροις ὑπάρξαι. καὶ ἐν μέρει τέτακται συστήματος μείζονος πλὴν εἰ ἄρα τὸ παλαιὸν τὸ
κατὰ τοὺς ἥρωας. λέγεται γὰρ δὴ καὶ κτίσμα τιθωνοῦ τοῦ μέμνονος πατρός. κύκλον ἔχουσα ἑκατὸν
καὶ εἴκοσι σταδίων. παραμήκης τῷ σχήματι. ἡ δ' ἀκρόπολις ἐκαλεῖτο μεμνόνειον. λέγονται δὲ καὶ κίσσιοι
οἱ σούσιοι. φησὶ δὲ καὶ αἰσχύλος τὴν μητέρα μέμνονος κισσίαν. ταφῆναι δὴ λέγεται μέμνων περὶ παλ-

τον τῆς σουσίας παρὰ σαβαῖ ποταμόν. ὡς εἴρηκε σιμωνίδης ἐν μέμνονι διθυράμβῳ τῶν δηλιακῶν. τὸ δὲ τεῖχος ᾠκοδόμητο τῆς πόλεως, καὶ ἱερὰ καὶ βασίλεια παραπλησίως, ὥσπερ τὰ τῶν βαβυλωνίων ἐξ ὀπτῆς πλίνθου καὶ ἀσφάλτου. καθάπερ εἰρήκασί τινες. πολύκλειτός τε διακοσίων φησὶ τὸν κύκλον, καὶ ἀτείχιστον. κοσμήσαντες δὲ τὰ ἐν σούσοις βασίλεια μάλιστα τῶν ἄλλων, οὐδὲν ἧττον, καὶ τὰ ἐν περσαιπόλει, καὶ τὰ ἐν πασαργάδαις ἐξετίμησαν. καὶ ἥγε γάζα, καὶ οἱ θησαυροὶ, καὶ τὰ μνήματα, ἐνταῦθα ἦν τοῖς πέρσαις, ὡς ἐν τόποις ἐρυμνοτέροις, καὶ ἅμα προγονικοῖς. ἦν δὲ καὶ ἄλλα βασίλεια τὰ ἐν γάβαις. ἐν τοῖς ἀνωτέρω που μέρεσι τῆς περσίδος. καὶ τὰ ἐν τῇ παραλίᾳ τὰ κατὰ τὴν ὄκην λεγομένην. ταῦτα μὲν τὰ κατὰ τὴν τῶν περσῶν ἀρχήν. οἱ δ' ὕστερον ἄλλοις, καὶ ἄλλοις ἐχρήσαντο, ὡς εἰκὸς εὐτελεστέροις τισίν. ἅτε καὶ τῆς περσίδος ἠλαττωμένης ὑπὸ τῶν μακεδόνων. καὶ ἔτι μᾶλλον ὑπὸ τῶν παρθυαίων. καὶ γὰρ εἰ βασιλεύονται μέχρι νῦν, ἴδιον βασιλέα ἔχοντες οἱ πέρσαι, τῇ γε δυνάμει πλεῖστον ἀπολείπονται. καὶ τῷ παρθυαίων προσέχουσι βασιλεῖ. τὰ μὲν σοῦσα ἐν μεσογαίοις κεῖται ἐπὶ τῷ χοάσπῃ ποταμῷ περαιτέρω κατὰ τὸ ζεῦγμα. ἡ δὲ χώρα μέχρι τῆς θαλάττης καθήκει. καὶ ἔστιν αὐτῆς ἡ παραλία, μέχρι τῶν ἐκβολῶν σχεδόν τι τοῦ τίγριος. ἀπὸ τῶν ὅρων τῆς περσικῆς παραλίας, σταδίων, ὡς τρισχιλίων. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς χώρας ὁ χοάσπης εἰς τὴν αὐτὴν τελευτῶν παραλίαν, ἀπὸ τῶν οὐξίων τὰς ἀρχὰς ἔχων. παρεμπίπτει γάρ τις ὀρεινὴ τραχεῖα, καὶ ἀπότομος μεταξὺ τῶν σουσίων, καὶ τῆς περσίδος. στενὰ ἔχουσα δυσπάροδα, καὶ ἀνθρώπους λῃστάς. οἳ μισθοὺς ἐπράττοντο καὶ αὐτοὺς τοὺς βασιλέας. κατὰ τὴν ἐκ σούσων εἰς πέρσας εἰσβολήν. φησὶ δὲ πολύκλειτος εἰς λίμνην τινὰ συμβάλλειν τόν τε χοάσπην καὶ τὸν εὔλαιον καὶ ἔτι τὸν τίγριν. εἶτ' ἐκεῖθεν ἐς τὴν θάλατταν ἐκδιδόναι. πρὸς δὲ τῇ λίμνῃ, καὶ ἐμπορεῖον εἶναι. τῶν ποταμῶν μὲν οὐ δεχομένων τὰ ἐκ τῆς θαλάττης. οὐδὲ καταπεμπόντων διὰ τοὺς καταῤῥάκτας ἐπίτηδες γινομένους. πεζῇ δ' ἐμπορευομένων. ὀκτακοσίους γὰρ εἶναι σταδίους εἰς σοῦσα λέγουσιν ἄλλοι. ἄλλοι δέ φασι τοὺς διὰ σούσων ποταμοὺς εἰς ἓν ῥεῦμα τὸ τοῦ τίγριος συμπίπτειν, καὶ τὰς μεταξὺ διώρυχας τοῦ εὐφράτου. διὰ δὲ τοῦτο κατὰ τὰς ἐκβολὰς ὀνομάζεσθαι πασίτιγριν. νέαρχος δὲ τὸν παράπλουν τῆς σουσίδος τεναγώδη φήσας, πέρας αὐτοῦ λέγει τὸν εὐφράτην ποταμόν. πρὸς δὲ τῷ στόματι κώμην οἰκεῖσθαι τὴν ὑποδεχομένην τὰ ἐκ τῆς ἀραβίας φορτία. συνάπτειν γὰρ ἐφεξῆς τὴν τῶν ἀράβων παραλίαν. τῷ στόματι τοῦ εὐφράτου, καὶ τοῦ πασιτίγριος. τὸ δὲ μεταξὺ πᾶν ἐπέχειν λίμνην, τὴν ὑποδεχομένην τὸν τίγριν. ἀναπλεύσαντι δὲ τῷ πασιτίγρει σταδίους πεντήκοντα, καὶ ἑκατὸν, τὴν σχεδίαν εἶναι τὴν ἄγουσαν ἐπὶ σοῦσα ἐκ τῆς περσίδος. ἀπέχουσαν σούσων σταδίους ἑξήκοντα. τὸν δὲ πασίτιγριν ἀπὸ τοῦ ὀροάτιδος διέχειν περὶ δισχιλίους σταδίους. διὰ δὲ τῆς λίμνης ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ τίγριος τὸν ἀνάπλουν εἶναι σταδίων ἑξακοσίων. πλησίον δὲ τοῦ στόματος κώμην οἰκεῖσθαι τὴν σουσιανήν. διέχουσαν τῶν σούσων σταδίους πεντακοσίους. ἀπὸ δὲ τοῦ εὐφράτου μέχρι βαβυλῶνος τὸν ἀνάπλουν εἶναι διὰ τῆς οἰκουμένης καλῶς σταδίων πλειόνων, ἢ τρισχιλίων. ὀνησίκριτος δὲ πάντας φησὶν ἐκβάλλειν εἰς τὴν λίμνην. τόν τε εὐφράτην καὶ τὸν τίγριν. ἐκπεσόντα δὲ πάλιν τὸν εὐφράτην ἐκ τῆς λίμνης ἰδίῳ στόματι πρὸς τὴν θάλατταν συνάπτειν. ἔστι δὲ καὶ ἄλλα πλείω στενά. διεκβαίνοντι τὰ ἐν τοῖς οὐξίοις κατ' αὐτὴν τὴν περσίδα. ἃ καὶ αὐτὰ βίᾳ διῆλθεν ἀλέξανδρος. κατά τε τὰς περσικὰς πύλας. καὶ κατ' ἄλλους τόπους διεξιὼν τὴν χώραν. καὶ κατοπτεῦσαι σπεύδων τὰ κυριώτατα μέρη, καὶ τὰ γαζοφυλάκια. ἃ τοσούτοις χρόνοις ἐξεπλήρωτο οἷς ἐδασμολόγησαν πέρσαι τὴν ἀσίαν. ποταμοὺς δὲ διέβη πλείους τοὺς διαῤῥέοντας τὴν χώραν. καὶ καταφερομένους εἰς τὸν περσικὸν κόλπον. μετὰ γὰρ τὸν χοάσπην ὁ κοπράτας ἐστί. καὶ ὁ πασιτίγρης. ὃς ἐκ τῆς οὐξίας, καὶ αὐτὸς ῥεῖ. ἔστι δὲ καὶ κῦρος ποταμὸς, διὰ τῆς κοίλης καλουμένης περσίδος ῥέων περὶ πασαργάδας. οὗ μετέλαβε τὸ ὄνομα ὁ βασιλεὺς, ἀντὶ ἀγραδάτου μετονομασθεὶς κῦρος. πρὸς αὐτῇ δὲ περσαιπόλει, τὸν ἀράξην διέβη. ἦν δὲ ἡ περσαίπολις ἔχουσα βασίλεια ἐκπρεπῆ, καὶ μάλιστα τῇ πολυτελείᾳ τῶν κειμένων. ῥεῖ δ' ὁ ἀράξης ἐκ τῶν παραιτάκων. συμβάλλει δ' εἰς αὐτὸν ὁ μῆδος. ἐκ μηδείας ὁρμηθείς. φέρονται δὲ δι' αὐλῶνος παμφόρου συνάπτοντος τῇ καρμανίᾳ, καὶ τοῖς ἑωθινοῖς μέρεσι τῆς χώρας. καθάπερ καὶ αὐτὴ ἡ περσαίπολις. ἐνέπρησε δὲ ὁ ἀλέξανδρος τὰ ἐν περσαιπόλει βασίλεια, τιμωρῶν τοῖς ἕλλησιν. ὅτι κἀκείνων ἱερὰ, καὶ πόλεις οἱ πέρσαι πυρὶ, καὶ σιδήρῳ διεπόρθησαν. εἶτ' εἰς πασαργάδας ἧκε. καὶ τοῦτο δ' ἦν βασίλειον ἀρχαῖον. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸν κύρου τάφον εἶδεν ἐν παραδείσῳ πύργον οὐ μέγαν. τῷ δάσει τῶν δένδρων ἐναποκεκρυμμένον. κάτω μὲν στερεόν. ἄνω δὲ στέγην ἔχοντα καὶ σηκόν. στενὴν τελέως ἔχοντα τὴν εἴσοδον. δι' ἧς παρελθεῖν εἴσω φησὶν ἀριστόβουλος κελεύσαντος τοῦ βασιλέως. καὶ κοσμῆσαι τὸν τάφον ἰδεῖν δὲ κλίνην τε χρυσῆν, καὶ τράπεζαν σὺν ἐκπώμασι, καὶ πύελον χρυσῆν. καὶ ἐσθῆτα πολλήν. κόσμον τε λιθοκόλλητον. κατὰ μὲν οὖν τὴν πρώτην ἐπιδημίαν ταῦτ' ἰδεῖν. ὕστερον δὲ συληθῆναι. καὶ τὰ μὲν ἄλλα ἐκκομισθῆναι. τὴν δὲ κλίνην θραυσθῆναι μόνον. καὶ τὴν πύελον μεταθέντων. τὸν νεκρόν δ' οὐ δῆλον γενέσθαι. διότι προνομευτῶν ἔργον ἦν. οὐχὶ τοῦ σατράπου. καταλιπόντων ἃ μὴ δυνατὰ ἦν ῥᾳδίως ἐκκομίσαι. συμβῆναι δὲ ταῦτα καίπερ φυλακῆς περικειμένης μάγων σίτισιν λαμβανόντων καθ' ἡμέραν πρόβατον. διὰ μηνὸς δ' ἵππον. ἀλλ' ὁ ἐκτοπισμὸς τῆς ἀλεξάνδρου στρατιᾶς εἰς βάκτρα, καὶ

ἐνδοὺς, πολλά τε ἄλλα νεωτερισθῆναι παρεσκεύασε. καὶ δὴ καὶ τοῦθ' ἐν τῶν νεωτερισθέντων ὑπῆρξεν.
» οὕτω μὲν οὖν ἀριστόβουλος εἴρηκε. καὶ τὸ ἐπίγραμμα δὲ ἀπομνημονεύει τοῦτο. ὦ ἄνθρωπε. ἐγὼ κῦρός
» εἰμι ὁ τὴν ἀρχὴν τοῖς πέρσαις κτησάμενος, καὶ τῆς ἀσίας βασιλεύς. μὴ οὖν φθονήσῃς μοι τοῦ μνήμα
» τος. ὀνησίκριτος δὲ τὸν μὲν πύργον δεκάστεγον εἴρηκε. καὶ ἐν μὲν τῇ ἀνωτάτω στέγῃ κεῖσθαι τὸν κῦρον.
» ἐπίγραμμα δ' εἶναι ἑλληνικὸν περσικοῖς κεχαραγμένον γράμμασιν. ἐνθάδ' ἐγὼ κεῖμαι κῦρος βα/
» σιλεὺς βασιλήων. καὶ ἄλλο περσίζον πρὸς τὸν αὐτὸν νοῦν. μέμνηται δ' ὀνησίκριτος, καὶ τὸ ἐπὶ τῷ δα/
ρείου τάφῳ γράμμα τόδε. φίλος ἦν τοῖς φίλοις. ἱππεὺς καὶ τοξότης ἄριστος γενόμην. κυνηγῶν ἐκρά/
τουν. πάντα ποιεῖν ἠδυνάμην. ἄριστος δ' ὁ σαλαμίνιος πολὺ μέν ἐστι νεώτερος τούτων. λέγει δὲ δίστε/
γον τὸν πύργον, καὶ μέγαν. ἐν δὲ τῇ περσῶν διαδοχῇ ἱδρύσθαι. φυλάττεσθαι δὲ τὸν τάφον. ἐπίγραμ-
μα δὲ τὸ λεχθὲν ἑλληνικόν. καὶ ἄλλο περσικὸν πρὸς τὸν αὐτὸν νοῦν. τοὺς δὲ πασαργάδας ἐτίμησε κύ
ρος. ὅτι τὴν ὑστάτην μάχην ἐνίκησεν ἀστυάγην ἐνταῦθα τὸν μῆδον. καὶ τὴν ἀρχὴν τῆς ἀσίας μετήνεγκεν
εἰς ἑαυτόν. καὶ πόλιν ἔκτισε. καὶ βασίλειον κατεσκεύασε τῆς νίκης μνημεῖον. πάντα δὲ τὰ ἐν τῇ περ/
σίδι χρήματα ἐξεσκευάσατο εἰς τὰ σοῦσα. καὶ αὐτὰ θησαυρῶν, καὶ κατασκευῆς μεστά. οὐ δὲ ταῦθ' ἡγεῖ/
το τὸ βασίλειον. ἀλλὰ τὴν βαβυλῶνα. καὶ διενοεῖτο ταύτην προσκατασκευάζειν. κἀνταῦθα δ' ἔκειντο
θησαυροί. χωρὶς δὲ τῶν ἐν βαβυλῶνι, καὶ τῶν ἐν τῷ στρατοπέδῳ τῶν περὶ ταῦτα μὴ ληφθέντων, αὐ/
τὰ τὰ ἐν σούσοις, καὶ τὰ ἐν περσίδι τέτταρας μυριάδας ταλάντων ἐξετασθῆναι. τινὲς δὲ καὶ πέν
τε λέγουσιν. ἄλλοι δὲ πάντα πάντοθεν συναχθῆναι παραδεδώκασιν εἰς ἐκβάτανα ὀκτωκαίδεκα μυ/
ριάδας ταλάντων. τὰ δὲ δαρείῳ φυγόντι ἐκ τῆς μηδίας συνεκκομισθέντα τάλαντα ὀκτακισχίλια,
διήρπασαν οἱ δολοφονήσαντες αὐτόν. τὴν γοῦν βαβυλῶνα προέκρινεν ὁ ἀλέξανδρος. ὁρῶν καὶ τῷ με/
γέθει πολὺ ὑπερβάλλουσαν καὶ τοῖς ἄλλοις. εὐδαίμων δ' οὖσα ἡ σουσὶς, ἔκπυρον τὸν ἀέρα ἔχει, καυ-
ματηρόν. καὶ μάλιστα τὸν περὶ τὴν πόλιν ὥς φησιν ἐκεῖνος. τὰς γοῦν σαύρας, καὶ τοὺς ὄφεις θέρους ἀ/
κμάζοντος τοῦ ἡλίου κατὰ μεσημβρίαν, μὴ φθάνειν διαβῆναι τὰς ὁδοὺς τὰς ἐν τῇ πόλει. ἀλλ' ἐν μέ-
σαις περιφλέγεσθαι. ὅπερ τῆς περσίδος μηδαμοῦ συμβαίνει καίπερ νοτιωτέρας οὔσης. λουτρὰ
δὲ ψυχρὰ προτεθέντα, ἐκθερμαίνεσθαι παραχρῆμα. τὰς δὲ κριθὰς διασπαρείσας εἰς τὸν ἥλιον, ἀλή-
θεσθαι. καθάπερ ἐν τοῖς ἰπνοῖς τὰς κέγχρους. διὸ καὶ ταῖς στέγαις ἐπὶ δύο πήχεις τὴν γῆν ἐπιτίθε
σθαι. ὑπὸ δὲ τοῦ βάρους ἀναγκάζεσθαι στενοὺς μέν. μακροὺς δὲ ποιεῖσθαι τοὺς οἴκους. ἀπορουμένους μα
κρῶν μὲν δοκῶν. δεομένους δὲ μεγάλων οἴκων διὰ τὸ πνῖγος. ἴδιον δέ τι πάσχειν τὴν φοινικίνην δοκόν. στε/
ρεὰν γὰρ οὖσαν παλαιουμένην οὐκ εἰς τὸ κάτω τὴν ἔνδοσιν λαμβάνειν. ἀλλ' εἰς τὸ ἄνω μέρος κυρτοῦ-
σθαι τῷ βάρει. καὶ βέλτιον ἀνέχειν τὴν ὀροφήν. αἴτιον δὲ τῶν καυμάτων λέγεται τὸ ὑπερκεῖσθαι
πρὸς ἄρκτον ὄρη ὑψηλὰ τὰ προεκδεχόμενα ἅπαντας τοὺς βορείους ἀνέμους. ὑπερπετεῖς δὲ πνέον/
τες ἀπὸ τῶν ἀκρωτηρίων μετέωροι, τῶν τε πεδίων οὐ προσάπτονται. ἀλλὰ παρελαύνουσιν εἰς τὰ νοτιώ/
τερα τῆς σουσίδος. αὕτη δὲ νηνεμίαις κατέχεται. καὶ μάλιστα τό τε ἡνίκα ἐτησίαι τὴν ἄλλην γῆν κα/
ταψύχουσιν ἐκκεκαυμένην ὑπὸ τῶν καυμάτων. πολύσιτος δ' ἄγαν ἐστίν. ὥς τε ἑκατοντάχουν διόμα/
λοῦ, καὶ κριθὴν καὶ πυρὸν ἐκφέρειν. ἔστι δ' ὅτε καὶ διακοσιοντάχουν. διόπερ οὐ δὲ πυκνὰς τὰς αὔ-
λακας τέμνουσι. πυκνούμεναι γὰρ κωλύουσιν αἱ ῥίζαι τὴν βλάστην. τὴν δ' ἄμπελον οὐ φυομένην πρό
τερον, μακεδόνες κατεφύτευσαν κἀκεῖ, καὶ ἐν βαβυλῶνι. οὐ ταφρεύοντες, ἀλλὰ παττάλους ἅτε σεσι
δηρωμένους ἐξ ἄκρων πήττοντες. εἶτ' ἐξαιροῦντες. ἀντὶ δ' αὐτῶν τὰ κλήματα καθιέντες εὐθέως. ἡ μὲν
δὴ μεσόγαια πολλάκις, καὶ δὴ καὶ ἐφ' ἡμῶν ἄλλοτ' ἄλλως συνέβη. καὶ φησὶν ὁ νέαρχος μηδὲ καθο/
δηγῶν ἐπιχωρίων τυγχάνειν, ἡνίκα τῷ στόλῳ παρέπλει πρὸς τὴν βαβυλωνίαν ἐκ τῆς ἰνδικῆς, ἔτι προ
σόρμους οὐκ ἔχειν. οὐδ' ἀνθρώπων εὐπορεῖν οἷός τ' ἦν τῶν ἡγησομένων κατ' ἐμπειρίαν. γειτνιᾷ δὲ τῇ σου/
σίδι τῆς βαβυλωνίας, ἡ σιτακηνὴ μὲν πρότερον. ἀπολλωνιᾶτις δὲ ὕστερον προσαγορευθεῖσα. ἀπὸ τῶν
ἄρκτων δ' ὑπέρκεινται ἀμφοῖν πρὸς ἕω, ἐλυμαῖοί τε, καὶ παραιτακηνοί. ληστρικοὶ ἄνδρες, καὶ ὀρει/
νῇ τραχείᾳ πεποιθότες. μᾶλλον δ' οἱ παραιτακηνοὶ τοῖς ἀπολλωνιάταις ἐπίκεινται. ὥς τε καὶ χεῖρον
ἐκείνους διατιθέασιν. οἱ δ' ἐλυμαῖοι κἀκείνοις, καὶ τοῖς σουσίοις, τούτοις δὲ καὶ οἱ οὔξιοι προσπολεμοῦ/
σιν. ἧττον δὲ νῦν, ὡς εἰκὸς διὰ τὴν τῶν παρθυαίων ἰσχὺν, ὑφ' ἧς εἰσὶν ἅπαντες οἱ ταύτῃ. εὖ μὲν οὖν πραττ/
τόντων ἐκείνων, εὖ πράττουσιν ἅπαντες, καὶ οἱ ὑπήκοοι αὐτῶν. στασιαζόντων δὲ ὅπερ συμβαίνει πολλά
κις, καὶ δὴ καὶ ἐφ' ἡμῶν, ἄλλοτ' ἄλλως συμβαίνει. καὶ δὴ καὶ τὰ αὐτὰ πᾶσι. τοῖς μὲν, γὰρ συνήνεγ
κεν ἡ ταραχή. τοῖς δὲ, παρὰ γνώμην ἀπήντησεν. ἡ μὲν δὴ χώρα ἥ τε περσὶς, καὶ ἡ σουσιανὴ τοιαύτη. ἡ
δὲ παραλία τεναγώδης ἐστὶ, καὶ ἀλίμενος. διὰ τοῦτο οὖν τὰ ἔθνη τὰ περσικὰ, καὶ τούτοις, καὶ μήδοις
τὰ αὐτὰ, καὶ ἄλλοις πλείοσι. περὶ ὧν εἰρήκασι μὲν πλείους. τὰ δὲ καίρια, καὶ ἡμῖν λεκτέον. πέρσαι
τοίνυν ἀγάλματα μὲν, καὶ βωμοὺς οὐχ ἱδρύονται. θύουσι δὲ ἐν ὑψηλῷ τόπῳ. τὸν οὐρανὸν, ἡγούμε/
νοι δία. τιμῶσι δὲ καὶ ἥλιον ὃν καλοῦσι μίθραν. καὶ σελήνην, καὶ ἀφροδίτην καὶ πῦρ, καὶ γῆν καὶ ἀνέ
μους. καὶ ὕδωρ. θύουσι δ' ἐν καθαρῷ τόπῳ. καὶ ἐπευξάμενοι, παραστησάμενοι τὸ ἱερεῖον ἐστεμμένον,

μελίσαντος δὲ τοῦ μάγου τὰ κρέα τοῦ ὑφηγουμένου τὴν ἱερουργίαν, ἀπίασι διελόμενοι τοῖς θεοῖς· οὐδὲν
ἀπονείμαντες μέρος· τῆς γὰρ ψυχῆς φασι τοῦ ἱερείου δεῖσθαι τὸν θεόν· ἄλλου δὲ οὐδενός· ὅμως δὲ τοῦ
ἐπίπλου τι μικρὸν τιθέασιν ὡς λέγουσί τινες ἐπὶ τὸ πῦρ· διαφερόντως δὲ τῷ πυρὶ, καὶ τῷ ὕδατι
θύουσι· τῷ μὲν πυρὶ προστιθέντες ξηρὰ ξύλα τοῦ λέπους χωρίς· πιμελὴν ἐπιτιθέντες ἄνωθεν·
εἶθ' ὑφάπτουσιν ἔλαιον καταχέαντες· οὐ φυσῶντες· ἀλλὰ ῥιπίζοντες· τοὺς δὲ φυσήσαντας ἢ νεκρὸν
ἐπὶ πῦρ θέντας ἢ βόλβιτον, θανατοῦσι· τῷ δ' ὕδατι ἐπὶ λίμνην ἢ ποταμὸν ἢ κρήνην ἐλθόντες, βόθρον
ὀρύξαντες εἰς τοῦτον σφαγιάζονται· φυλαττόμενοι μή τι τοῦ πλησίον αἵματος αἱμαχθείη· ὡς μιανοῦντες·
εἶτ' ἐπὶ μυρσίνην ἢ δάφνην διαθέντες τὰ κρέα· ῥάβδοις λεπτοῖς ἐφάπτονται οἱ μάγοι, καὶ ἐπᾴδουσιν,
ἀποσπένδοντες ἔλαιον ὁμοῦ γάλακτι καὶ μέλιτι κεκραμένον· οὐκ εἰς πῦρ· οὐχ ὕδωρ· ἀλλ' εἰς τοὔδαφος· τὰς
δ' ἐπῳδὰς ποιοῦνται πολὺν χρόνον ῥάβδων μυρικίνων λεπτῶν δέσμην κατέχοντες· ἐν δὲ τῇ καππα-
δοκίᾳ, πολὺ γάρ ἐστι ἐκεῖ τῶν μάγων φῦλον, οἳ καὶ πύραιθοι καλοῦνται· πολλὰ δὲ καὶ τῶν περσικῶν θε-
ῶν ἱερά· οὐδὲ μαχαίρᾳ θύουσι· ἀλλὰ κορμῷ τινι ὡς ἂν ὑπέρῳ τύπτοντες· ἔστι δὲ, καὶ πυραιθεῖα, σηκοί
τινες ἀξιόλογοι· ἐν δὲ τούτοις μέσοις βωμός· ἐν ᾧ πολλή τε σποδὸς, καὶ πῦρ ἄσβεστον φυλάττουσιν,
οἱ μάγοι· καθ' ἡμέραν δὲ εἰσιόντες, ἐπᾴδουσιν ὥραν σχεδόν τι· πρὸ τοῦ πυρὸς τὴν δέσμην τῶν ῥάβδων
ἔχοντες· τιάρας περικείμενοι πιλωτάς· καθεικυίας ἑκατέρωθεν, μέχρι τοῦ καλύπτειν τὰ χείλη καὶ τὰς
παραγναθίδας· ταῦτα δ' ἐν τοῖς τῆς ναΐτιδος, καὶ τοῦ ὁμανοῦ ἱεροῖς νενόμισται, τούτων δὲ, καὶ
σηκοί εἰσι καὶ ξόανον τοῦ ὁμανοῦ πομπεύει· ταῦτα μὲν οὖν ἡμεῖς ἑωράκαμεν· ἐκεῖνα δ' ἐν ταῖς ἄλλαις
ἱστορίαις λέγεται, καὶ τὰ ἐφεξῆς· εἰς γὰρ ποταμὸν οὔτ' οὐροῦσιν οὔτε νίπτονται πέρσαι· οὐδὲ λού-
ονται· οὐδὲ νεκρὸν ἐκβάλλουσιν· οὐδ' ἄλλα τῶν δοκούντων εἶναι μιαρῶν· ὅτῳ δ' ἂν θύσωσι θεῷ πρώ-
τῳ τῷ πυρὶ εὔχονται· βασιλεύονται δ' ὑπὸ τῶν ἀπὸ γένους· ὁ δ' ἀπειθῶν ἀποτμηθεὶς κεφαλὴν καὶ βραχίονα ῥί-
πτεται· γαμοῦσι δὲ πολλὰς καὶ ἅμα παλλακὰς τρέφουσι πλείους πολυτεκνίας χάριν· τιθέασι δὲ, καὶ οἱ βασι-
λεῖς ἆθλα πολυτεκνίας κατ' ἔτος· τὰ δὲ τρεφόμενα μέχρι τῶν τεττάρων ἐτῶν, οὐκ ἄγεται τοῖς γο-
νεῦσιν εἰς ὄψιν· οἱ δὲ γάμοι κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ἐαρινῆς ἰσημερίας ἐπιτελοῦνται· παρέρχεται δ' εἰς
τὸν θάλαμον προφαγὼν μῆλον ἢ καμήλου μυελόν· ἄλλο δ' οὐδὲν τὴν ἡμέραν ἐκείνην· ἀπὸ δὲ πέντε ἐ-
τῶν ἕως τετάρτου, καὶ εἴκοσι· παιδεύονται, τοξεύειν, καὶ ἀκοντίζειν καὶ ἱππάζεσθαι, καὶ ἀληθεύειν·
διδασκάλοις τε λόγων τοῖς σωφρονεστάτοις χρῶνται· οἳ καὶ τὸ μυθῶδες πρὸς τὸ συμφέρον ἐπανά-
γοντες πλέκουσι· καὶ μέλους χωρὶς καὶ μετ' ᾠδῆς, ἔργα θεῶν τε, καὶ τῶν ἀρίστων ἀναδιδόντες· συνά-
γουσι δ' εἰς ἕνα τόπον ψόφῳ χαλκοῦ πρὸ ὄρθρου· διεγείροντες ἐπὶ ἐξοπλισίαν ἢ θήραν· τάξαντες δ' ἀ-
νὰ πεντήκοντα ἡγεμόνα τῶν βασιλέως τινὰ παίδων αὐτοῖς ἢ σατράπου, τρέχοντι κελεύουσιν ἕπε-
σθαι· χωρίον ἀφορίσαντες τριάκοντα ἢ τετταράκοντα σταδίων· ἀπαιτοῦσι δὲ, καὶ λόγον ἑκάστου μαθήμα-
τος· ἅμα καὶ μεγαλοφωνίαν, καὶ πνεῦμα, καὶ πλευρὰν ἀσκοῦντες· καὶ πρὸς καῦμα δὲ καὶ πρὸς ψῦ-
χος, καὶ ὄμβρου καὶ χειμάρρου διαβάσεις· ὥστ' ἄβροχα φυλάττειν, καὶ ὅπλα, καὶ ἐσθῆτα· καὶ ποιμαί-
νειν δὲ καὶ ἀγραυλεῖν, καὶ καρποῖς ἀγρίοις χρῆσθαι τερμίνθῳ· δρυοβαλάνοις· ἀχράδι· καλοῦνται
δ' οὗτοι κάρδακες· ἀπὸ κλοπείας τρεφόμενοι· κάρδα γὰρ τὸ ἀνδρῶδες, καὶ πολεμικὸν λέγεται· ἡ
δὲ καθ' ἡμέραν, δίαιτα, ἄρτος μετὰ τὸ γυμνάσιον, καὶ μᾶζα, καὶ κάρδαμον, καὶ ἁλῶν χόνδρος, καὶ
κρέα ὀπτά· ἢ ἑφθὰ ἐξ ὕδατος· ποτὸν δ' ὕδωρ· θηρεύουσι δὲ σαύνια ἀφ' ἵππων βάλλοντες, καὶ τοξεύμα-
τα, καὶ σφενδονῶντες· δείλης δὲ φυτουργεῖν, καὶ ῥιζοτομεῖν ἀσκοῦσι· καὶ ὁπλοποιεῖν καὶ λίνα· καὶ ἄρκυς φιλο-
τεχνεῖν· οὐχ ἅπτονται δὲ τῶν θηρευμάτων οἱ παῖδες ἀλλὰ κομίζειν οἴκαδε ἔθος· τίθεται δ' ὑπὸ βασι-
λέως ἆθλα δρόμου· καὶ τῶν ἐν τοῖς πεντάθλοις· κοσμοῦνται δ' οἱ παῖδες χρυσῷ· τὸ πυρωπὸν τιθε-
μένων ἐν τιμῇ· διὸ οὐδὲ νεκρῷ προσφέρουσι· καθάπερ οὐδὲ τὸ πῦρ κατὰ τιμήν· στρατεύουσι δὲ
καὶ ἄρχουσιν ἀπὸ εἴκοσιν ἐτῶν ἕως πεντήκοντα· πεζοί τε, καὶ ἱππεῖς· ἀγορᾶς δὲ οὐχ ἅπτονται· οὔ-
τε γὰρ πωλοῦσιν· οὔτ' ὠνοῦνται· ὁπλίζονται δὲ γέρρῳ ῥομβοειδεῖ· παρὰ δὲ τὰς φαρέτρας, σαγάρεις
ἔχουσι καὶ κοπίδας· περὶ δὲ τῇ κεφαλῇ πίλημα πυργωτόν· θώραξ δ' ἐστὶν αὐτοῖς φολιδωτός· ἐσθὴς
δὲ τοῖς ἡγεμόσι μὲν ἀναξυρὶς τριπλῆ· χιτὼν δὲ χειριδωτὸς διπλοῦς ἕως γόνατος· ὁ ὑπενδύτης μὲν λευκὸς ἀν-
θινὸς δ' ὁ ἐπάνω ἱμάτιον θέρους μὲν πορφυροῦν ἢ ἀνθινόν· χειμῶνος δ' ἀνθινόν· τιάραι παραπλήσιαι ταῖς
τῶν μάγων· ὑπόδημα κοῖλον διπλοῦν· τοῖς δὲ πολλοῖς χιτὼν ἕως μεσοκνημίου, καὶ διπλοῦς· ῥάκος δὲ
σινδόνιόν τι περὶ τῇ κεφαλῇ· ἔχει δ' ἕκαστος τόξον, καὶ σφενδόνην· δειπνοῦσι πολυτελῶς πέρ-
σαι· τιθέντες, καὶ ὁλομελῆ, καὶ πολλὰ καὶ ποικίλα, κόσμος τε λαμπρὸς στολῆς· ἐκ πωμάτων τε
τῶν ἄλλων· ὥς τε χρυσῷ, καὶ ἀργύρῳ καταλάμπεσθαι· ἐν οἴνῳ τὰ μέγιστα βουλεύονται, καὶ βε-
βαιότερα τῶν ἐν νήψει τίθενται· τῶν κατὰ τὰς ὁδοὺς συναντώντων, τοὺς μὲν γνωρίμους καὶ ἰσοτίμους
φιλοῦσι προσιόντας· τοῖς δὲ ταπεινοτέροις παραβάλλουσι τὴν γνάθον· καὶ δέχονται ταύτῃ τὸ φίλημα·
οἱ δ' ἔτι ταπεινότεροι προσκυνοῦσι μόνον· θάπτουσι δὲ κηρῷ περιπλάσαντες τὰ σώματα· τοὺς δὲ μά-
γους οὐ θάπτουσιν· ἀλλ' οἰωνοβρώτους ἐῶσι· τούτοις δὲ, καὶ μητράσι συνέρχεσθαι νενόμισται· τοιαῦ-

τα μὲν τὰ

τα μὲν τὰ ἤθη. ἔστι δ' ἴσως, καὶ ταῦτα τῶν ἐθίμων, ἅ φησι πολύκλειτος. ἐν γὰρ σούσοις ἑκάστῳ τῶν βασιλέων ἐπὶ τῆς ἄκρας ἰδίαν κατεσκευάσθαι οἴκησιν. καὶ θησαυροὺς, καὶ παραθέσεις ὧν ἐπράττοντο φόρων, ὑπομνήματα τῆς οἰκονομίας. πράττεσθαι δ' ἐκ μὲν τῆς παραλίας ἀργύριον. ἐκ δὲ τῆς μεσογαίας ἃ φέρει ἑκάστη χώρα. ὥστε καὶ χρώματα καὶ φάρμακα, καὶ τρίχα ἢ ἔρια. ἤτοι τοιοῦτ' ἕτερον. καὶ θρέμματα ὁμοίως. τὸν δὲ διατάξαντα τοὺς φόρους, δαρεῖον εἶναι τὸν μακρόχειρα, καὶ κάλλιστον ἀνθρώπων, πλὴν τοῦ μήκους τῶν βραχιόνων, καὶ τῶν πήχεων. ἅπτεσθαι γὰρ καὶ τῶν γονάτων. τὸ δὲ πλεῖστον, καὶ χρυσὸν, καὶ ἄργυρον ἐν κατασκευαῖς εἶναι. νομίσματι δὲ οὐ πολλῷ πρός τε τὰς δωρεάς. ἐκεῖνα κεχαρισμένα νομίζειν μᾶλλον, καὶ πρὸς κειμηλίων ἀπόθεσιν. τὸ δὲ νόμισμα τὸ πρὸς τὰς χρείας ἀρκοῦν ἱκανὸν εἶναι. κόπτειν δὲ πάλιν τὸ τοῖς ἀναλώμασι σύμμετρον. τὰ μὲν οὖν ἤθη σωφρονικὰ τὰ πλείω. διὰ δὲ τὸν πλοῦτον εἰς τρυφὴν ἐξέπεσον οἱ βασιλεῖς. ὥστε πυρὸν μὲν ἐξ ἄσσου τῆς αἰολίδος μετιέναι. οἶνον δ' ἐκ συρίας τὸν χαλυβώνιον. ὕδωρ δὲ ἐκ τοῦ εὐλαίου πάντων ἐλαφρότατον. ὥστ' ἐν ἀττικῇ κοτύλῃ δραχμῇ ἀφολκότερον εἶναι. συνέβη δὲ τοῖς πέρσαις ἐνδοξοτάτοις γενέσθαι τῶν βαρβάρων, παρὰ τοῖς ἕλλησιν. ὅτι τῶν μὲν ἄλλων οὐδένες τῶν τῆς ἀσίας ἀρξάντων ἑλλήνων ἦρξαν. οὐδ' ᾔδεισαν. οὐδ' ἐκεῖνοι τούτους. οὐδ' οἱ ἕλληνες τοὺς βαρβάρους. ἀλλ' ἤδη μικρὸν μόνον ἐκ τῆς πόρρωθεν ἀκοῆς. ὅμηρος γοῦν, οὔτε τὴν τῶν σύρων, οὔτε τὴν μήδων ἀρχὴν οἶδεν. οὐδὲ γὰρ ἂν θήβας αἰγυπτίας ὀνομάζων, καὶ τὸν ἐκεῖ, καὶ τὸν ἐν φοινίκῃ πλοῦτον. τὸν ἐν βαβυλῶνι, καὶ νίνῳ, καὶ ἐκβατάνοις παρεσιώπησε. πρῶτοι δὲ πέρσαι, καὶ ἑλλήνων ἐπῆρξαν. λυδοὶ δὲ, ἐπῆρξαν μέν. ἀλλ' οὔτε τῆς ἀσίας ὅλης ἐπάρξαντες. ἀλλὰ μέρους τινὸς μικροῦ, τοῦ ἐντὸς ἅλυος μόνον. καὶ ταῦτ' ἐπ' ὀλίγον χρόνον τὸν κατὰ κροῖσον, καὶ ἀλυάττην. κρατηθέντες δ' ὑπὸ περσῶν, ἐκ ταὐτοῦ τῆς δόξης ἣν αὐτοῖς, ἀφῃρέθησαν τὸ ὑπ' ἐκείνων. πέρσαι δ' ἀφ' οὗ κατέλυσαν τὰ μήδων, εὐθὺς καὶ λυδῶν ἐκράτησαν, καὶ τοὺς ἐν ἀσίᾳ ἕλληνας ὑπηκόους ἔσχον. ὕστερον δὲ καὶ διέβησαν εἰς τὴν ἑλλάδα. καὶ ἡττηθέντες πολλοῖς καὶ πολλάκις ἀγῶσιν, ὅμως διετέλεσαν τὴν ἀσίαν μέχρι τῶν ἐπὶ θαλάττῃ τόπων κατέχοντες, ἕως ὑπὸ μακεδόνων κατεπολεμήθησαν. ὁ μὲν οὖν εἰς τὴν ἡγεμονίαν καταστήσας αὐτοὺς κῦρος ἦν. διαδεξάμενος δὲ τοῦτον καμβύσης υἱὸς ὑπὸ τῶν μάγων κατελύθη. τούτους δ' ἀνελόντες οἱ ἑπτὰ πέρσαι, δαρείῳ τῷ ὑστάσπου παρέδοσαν τὴν ἀρχήν. εἶθ' οἱ ἀπὸ τούτου διαδεχόμενοι κατέλυξαν εἰς ἀρσήν. ὃν ἀποκτείνας βαγώος ὁ εὐνοῦχος, κατέστησε δαρεῖον οὐκ ὄντα τοῦ γένους τῶν βασιλέων. τοῦτον δὲ καταλύσας ἀλέξανδρος, αὐτὸς ἦρξε δὲ καὶ ἕνδεκα ἔτη. εἶτ' εἰς πλείους τοὺς διαδεξαμένους, καὶ τοὺς ἐπιγόνους τούτων μερισθεῖσα ἡ ἡγεμονία τῆς ἀσίας διελύθη. συνέμεινε δ' ὅσον πεντήκοντα ἐπὶ τοῖς διακοσίοις ἔτη. νῦν δ' ἤδη καθ' αὑτοὺς συνεστῶτες οἱ πέρσαι, βασιλέας ἔχουσιν, ὑπηκόους ἑτέροις βασιλεῦσι. πρότερον μὲν μακεδόσι. νῦν δὲ παρθυαίοις.

ΤΕΛΟΣ ΤΟΥ ΠΕΝΤΕΚΑΙΔΕΚΑΤΟΥ.

## ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ ΕΞΚΑΙΔΕΚΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

Τὸ ἑξκαιδέκατον περὶ τὴν ἀσσυρίαν χώραν. ἐν ᾗ βαβυλὼν, καὶ νίσιβις, πόλις μεγίστη. καὶ τὴν ἀδιαβηνὴν, καὶ μεσοποταμίαν. συρίαν πᾶσαν. φοινίκην. παλαιστίνην. ἀραβίαν πᾶσαν καὶ ὅσα τῆς ἰνδικῆς τῇ ἀραβίᾳ ἣ συνάπτει, καὶ τὴν σαρακηνῶν. ἣν σκηνῖτιν καλεῖ, καὶ πᾶσαν τὴν παρακειμένην τῇ νεκρᾷ θαλάσσῃ, καὶ τῇ ἐρυθρᾷ.

## ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΕΞΚΑΙΔΕΚΑΤΟΝ.

ῇ περσίδι καὶ τῇ σουσιανῇ συνάπτουσιν οἱ ἀσσύριοι. καλοῦσι δ' οὕτω τὴν βαβυλωνίαν, καὶ πολλὴν τῆς κύκλῳ γῆς. ἧς ἐν μέρει, καὶ ἡ ἀτουρία ἐστίν. ἐν ᾗ περ ἡ νίνος καὶ ἡ ἀπολλωνιάτις. καὶ ἐλυμαῖοι. καὶ παραιτάκαι. καὶ ἡ περὶ τὸ ζάγρον ὄρος χαλωνῖτις. καὶ τὰ περὶ τὴν νίνον πεδία, δολομηνή τε, καὶ καλαχηνὴ καὶ χαζηνὴ καὶ ἀδιαβηνή. καὶ τὰ τῆς μεσοποταμίας ἔθνη. τὰ περὶ γορδυαίους, καὶ τοὺς περὶ νίσιβιν μυγδόνας, μέχρι τοῦ ζεύγματος, τοῦ κατὰ τὸν εὐφράτην. καὶ τῆς πέραν τοῦ εὐφράτου πολλῆς, ἣν ἄραβες κατέχουσι. καὶ οἱ ἰδίως ὑπὸ τῶν νῦν λεγόμενοι σύροι. μέχρι κιλίκων καὶ φοινίκων, καὶ λιβύων. καὶ τῆς θαλάττης τῆς κατὰ τὸ αἰγύπτιον πέλαγος. καὶ τὸν ἰσσικὸν κόλπον. δοκεῖ δὲ τὸ τῶν σύρων ὄνομα διατεῖναι. ἀπὸ μὲν τῆς βαβυλωνίας μέχρι τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου. ἀπὸ δὲ τούτου μέχρι τοῦ εὐξείνου τὸ παλαιὸν, ἤγουν καππάδοκες ἀμφότεροι. οἵ τε πρὸς τῷ ταύρῳ, καὶ οἱ πρὸς τῷ πόντῳ, μέχρι νῦν λευκόσυροι καλοῦνται. ὡς ἂν ὄντων τινῶν σύρων, καὶ μελάνων. οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ ἐκτὸς τοῦ ταύρου. λέγω δὲ ταῦρον μέχρι τοῦ ἀμανοῦ διατείνων τοὔνομα. οἱ δ' ἱστοροῦντες τὴν σύρων ἀρχὴν, ὅταν φῶσι μήδους μὲν ὑπὸ περσῶν καταλυθῆναι, σύρους δὲ ὑπὸ μήδων, οὐκ ἄλλους τινὰς τοὺς σύρους λέγουσιν. ἀλλὰ τοὺς ἐν βαβυλῶνι, καὶ νίνῳ κατασκευασμένους τὸ βασίλειον. ὧν ὁ μὲν νῖνος ἦν ὁ τὴν νῖνον ἐν τῇ ἀτουρίᾳ κτίσας. ἡ δὲ τούτου γυνὴ ἥπερ καὶ διεδέξατο τὸν ἄνδρα. σεμίραμις. ἧς ἐστι κτίσμα, ἡ βαβυλών. οὗτοι δ' ἐκράτησαν τῆς ἀσίας, καὶ τῆς σεμιράμιδος, χωρὶς τῶν ἐν βαβυλῶνι ἔργων. πολλὰ γὰρ καὶ ἄλλα κατὰ πᾶσαν γῆν σχεδὸν δείκνυται, ὅση τῆς ἠπείρου ταύτης ἐστί. τά τε χώματα. ἃ δὴ καλοῦσι σεμιράμιδος, καὶ τείχη, καὶ ἐρυμάτων κατασκευαὶ, καὶ συρίγγων τῶν ἐν αὐτοῖς, καὶ ὑδρείων. καὶ κλιμάκων, καὶ διωρύχων ἐν ποταμοῖς. καὶ λίμναις, καὶ ὁδῶν, καὶ γεφυρῶν, ἀπέλιπον δὲ, τοῖς μεθ' ἑαυτοὺς τὴν ἀρχὴν, μέχρι τῆς σαρδαναπάλου, καὶ ἀρβάκου. μετέστη δ' εἰς μήδους ὕστερον ἡ μὲν οὖν νίνος πόλις ἠφανίσθη παραχρῆμα μετὰ τὴν τῶν σύρων κατάλυσιν. πολὺ δὲ μείζων ἦν τῆς βαβυλῶνος, ἐν πεδίῳ κειμένη τῆς ἀτουρίας. ἡ δ' ἀτουρία, τοῖς περὶ ἄρβηλα τόποις. ὁμοία ἐστὶ μεταξὺ ἔχουσα τὸν λύκον ποταμόν. τὰ μὲν οὖν ἄρβηλα τῆς βαβυλωνίας ὑπάρχει, ἃ κατ' αὐτήν ἐστιν. ἐν δὲ τῇ περαίᾳ τοῦ λύκου, τὰ τῆς ἀτουρίας πεδία, τῇ νίνῳ περίκειται. ἐν δὲ τῇ ἀτουρίᾳ ἐστὶ γαυγάμηλα κώμη. ἐν ᾗ συνέβη νικηθῆναι, καὶ ἀποβαλεῖν τὴν ἀρχὴν δαρεῖον. ἔστι μὲν οὖν τόπος ἐπίσημος οὗτος, καὶ τοὔνομα μεθερμηνευθὲν γάρ ἐστι καμήλου οἶκος. ὠνόμασε δ' οὕτω δαρεῖος ὁ ὑστάσπου. κτῆμα δοὺς εἰς διατροφὴν τῇ καμήλῳ τῇ συνεκπεπονηκυίᾳ μάλιστα τὴν ὁδὸν, τὴν διὰ τῆς ἐρήμου σκυθίας μετὰ τῶν φορτίων. ἐν οἷς ἦν καὶ ἡ διατροφὴ τῷ βασιλεῖ. οἱ μέντοι μακεδόνες, τοῦ μὲν ὁρῶντες κώμιον εὐτελὲς, τὰ δὲ ἄρβηλα κατοικίαν ἀξιόλογον, κτίσμα ὥς φασιν ἀρβήλου τοῦ ἀθμονέως, περὶ ἄρβηλα τὴν μάχην καὶ νίκην κατεφήμισαν, καὶ τοῖς συγγραφεῦσιν οὕτω παρέδωκαν. μετὰ δὲ τὴν ἄρβηλα, τὰ τὸ νικατόριον ὄρος ὃ προσωνόμασεν ἀλέξανδρος νικήσας τὴν περὶ ἄρβηλα μάχην, ὁ κάπρος ἐστὶ ποταμός. ἐν ἴσῳ διαστήματι, ὅσῳ καὶ ὁ λύκος. ἡ δὲ χώρα ἀρτακηνὴ λέγεται. περὶ ἄρβηλα δέ ἐστι, καὶ δημητριὰς πόλις. εἶθ' ἡ τοῦ νάφθα πηγή. καὶ τὰ πυρά. καὶ τὸ τῆς ἀνέας ἱερόν. καὶ σαδράκαι τὸ δαρείου τοῦ ὑστάσπου βασίλειον. καὶ ὁ κυπαρισσών. καὶ ἡ τοῦ κάπρου διάβασις, συνάπτουσα ἤδη σελευκείᾳ, καὶ βαβυλῶνι. ἡ δὲ βαβυλὼν, καὶ αὐτὴ μέν ἐστιν ἐν πεδίῳ. τὸν δὲ κύκλον ἔχει τοῦ τείχους τριακοσίων ὀγδοήκοντα πέντε σταδίων. πάχος δὲ τοῦ τείχους ποδῶν δύο καὶ τριάκοντα. ὕψος δὲ τῶν μὲν μεσοπυργίων, πήχεις πεντήκοντα, τῶν δὲ,

πήχεων ἑξήκοντα. ἡ δὲ πάροδος τῆς ἐπὶ τοῦ τείχους, ὡς τεθρίππα ἐναντιοδρομεῖν ἀλλήλοις ῥα-
δίως. διόπερ τῶν ἑπτὰ θεαμάτων λέγεται καὶ τοῦτο. καὶ ὁ κρεμαστὸς κῆπος, ἔχων ἐν τετραγώνῳ σχήμα-
τι ἑκάστην πλευρὰν τεττάρων πλέθρων. συνέχεται δὲ ψαλιδώμασι καμαρωτοῖς. ἐπὶ πέττων ἱδρυ-
μένοις κυβοειδῶν ἄλλης ἐπ' ἄλλῃ. οἱ δὲ πέττοι κοῖλοι πλήρεις γῆς. ὥστε δέξασθαι φυτὰ δένδρων τῶν
μεγίστων, ἐξ ὀπτῆς πλίνθου καὶ ἀσφάλτου κατεσκευασμένοι, καὶ αὐτοὶ καὶ αἱ ψαλίδες, καὶ τὰ κα-
μαρώματα. ἡ δ' ἀνωτάτω στέγη προβάσεις κλιμακωτὰς ἔχει. παρακειμένους δ' αὐταῖς καὶ κοχλίας, δι'
ὧν τὸ ὕδωρ ἀνῆγον εἰς τὸν κῆπον, ἀπὸ τοῦ εὐφράτου συνεχῶς, οἱ πρὸς τοῦτο τεταγμένοι. ὁ γὰρ ποτα-
μὸς διὰ μέσον ῥεῖ τῆς πόλεως σταδιαῖος τὸ πλάτος. ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ ὁ κῆπος. ἔστι δὲ καὶ ὁ τοῦ βήλου
τάφος αὐτόθι, νῦν μὲν κατεσκαμμένος, ξέρξης δ' αὐτὸν κατέσπασεν ὥς φασιν. ἦν δὲ πυραμὶς τετρά-
γωνος ἐξ ὀπτῆς πλίνθου. καὶ αὐτὴ σταδιαία τὸ ὕψος. σταδιαία καὶ ἑκάστη τῶν πλευρῶν. ἣν ἀλέξανδρος
ἐβούλετο ἀνασκευάσαι. πολὺ δ' ἦν ἔργον καὶ πολλοῦ χρόνου. αὐτὴ γὰρ ἡ χοῦς εἰς ἀνακάθαρσιν μυρίοις
ἀνδράσι δυοῖν μηνῶν ἔργον ἦν. ὥστ' οὐκ ἔφθη τὸ ἐγχειρηθὲν ἐπιτελέσαι. παραχρῆμα γὰρ ἡ νόσος,
καὶ ἡ τελευτὴ συνέπεσε τῷ βασιλεῖ. τῶν δ' ὕστερον οὐδεὶς ἐφρόντισεν. ἀλλὰ καὶ τὰ λοιπὰ ὠλιγωρήθη
καὶ κατήρειψαν τῆς πόλεως. τὰ μὲν, οἱ πέρσαι. τὰ δὲ, ὁ χρόνος. καὶ ἡ τῶν μακεδόνων ὀλιγωρία περὶ
τὰ τοιαῦτα. καὶ μάλιστα ἐπειδὴ τὴν σελεύκειαν ἐπὶ τῷ τίγρι τὴν πλησίον τῆς βαβυλῶνος ἐν τριακο
σίοις που σταδίοις ἐτείχισε σέλευκος ὁ νικάτωρ. καὶ γὰρ ἐκεῖνος καὶ οἱ μετ' αὐτὸν ἅπαντες περὶ ταύτην
ἐσπούδασαν τὴν πόλιν. καὶ τὸ βασίλειον ἐνταῦθα μετήνεγκαν. καὶ δὴ καὶ νῦν ἡ μὲν, γέγονε βαβυλῶ-
νος μείζων. ἡ δ' ἔρημος ἡ πολλή. ὥστ' ἐπ' αὐτῆς, μὴ ἂν ὀκνῆσαί τινα εἰπεῖν ὅπερ ἔφη τις τῶν κωμικῶν
ἐπὶ τῶν μεγαλοπολιτῶν τῶν ἐν ἀρκαδίᾳ. ἐρημία μεγάλη 'στὶν ἡ μεγάλη πόλις. διὰ δὲ τὴν τῆς ὕλης σπά-
νιν, ἐκ φοινίκων ξύλων αἱ οἰκοδομαὶ συντελοῦνται, καὶ δοκοῖς καὶ στύλοις. περὶ δὲ τοὺς στύλους στρέφον-
τες ἐκ τῆς καλάμης σχοινία περιτιθέασιν. εἶτ' ἐπαλείφοντες χρώμασι καταγράφουσι. τὰς δὲ θύρας ἀ-
σφάλτῳ. ὑψηλαὶ δὲ καὶ αὗται. καὶ οἱ οἶκοι καμαρωτοὶ πάντες διὰ τὴν ἀξυλίαν. ψιλὴ γὰρ ἡ χώρα,
καὶ θαμνώδης ἡ πολλή. πλὴν φοίνικος. οὗτος δὲ πλεῖστος ἐν τῇ βαβυλωνίᾳ. πολὺς δὲ καὶ ἐν σούσοις.
καὶ ἐν τῇ παραλίᾳ περσίδι. καὶ ἐν τῇ καρμανίᾳ. κεράμῳ δ' οὐ χρῶνται. οὐδὲ γὰρ κατομβροῦνται. πα-
ραπλήσια δὲ καὶ τὰ ἐν σούσοις, καὶ τῇ σιτακηνῇ. ἀφώριστο δ' ἐν τῇ βαβυλωνίᾳ κατοικία τοῖς ἐπιχω-
ρίοις φιλοσόφοις, τοῖς χαλδαίοις προσαγορευομένοις, οἳ περὶ ἀστρονομίαν εἰσὶ τὸ πλέον. προσποιοῦν-
ται δέ τινες καὶ γενεθλιαλογεῖν. οὓς οὐ καταδέχονται οἱ ἕτεροι. ἔστι δὲ καὶ φῦλόν τι τὸ τῶν χαλδαίων
καὶ χώρα τῆς βαβυλωνίας ὑπ' ἐκείνων οἰκουμένη. πλησιάζουσα καὶ τοῖς ἄραψι, καὶ τῇ κατὰ πέρσας
λεγομένῃ θαλάττῃ. ἔστι δὲ καὶ τῶν χαλδαίων τῶν ἀστρονομικῶν, γένη πλείω. καὶ γὰρ ὀρχηνοί τινες προ
σαγορεύονται. καὶ βορσιππηνοί. καὶ ἄλλοι πλείους, ὡς ἂν κατὰ αἱρέσεις. ἄλλα καὶ ἄλλα λέγοντες πε-
ρὶ τῶν αὐτῶν δόγματα. μέμνηνται δὲ καὶ τῶν ἀνδρῶν ἐνίων οἱ μαθηματικοί. καθάπερ κιδηνᾶ τε καὶ
ναβουριανοῦ. καὶ σουδίνου. καὶ σέλευκος δ' ὁ ἀπὸ τῆς σελευκείας χαλδαῖός ἐστι. καὶ ἄλλοι πλείους ἀ-
ξιόλογοι ἄνδρες. τὰ δὲ βόρσιππα, ἱερὰ πόλις ἐστὶν ἀρτέμιδος καὶ ἀπόλλωνος. λινουργεῖον μέγα. πλη-
θύουσι δὲ ἐν αὐτῇ νυκτερίδες μείζους τῶν ἐν ἄλλοις τόποις. ἁλίσκονται δ' εἰς βρῶσιν, καὶ ταριχεύον-
ται. περιέχεται δ' ἡ χώρα τῶν βαβυλωνίων. ἀπὸ μὲν τῆς ἠοῦς, ὑπό τε σουσίων καὶ ἐλυμαίων καὶ πα-
ραιτακηνῶν. ἀπὸ δὲ τῆς μεσημβρίας, ὑπὸ τοῦ περσικοῦ κόλπου, καὶ τῶν χαλδαίων, μέχρις ἀράβων
τῶν ἀλεσηνῶν. ἀπὸ δὲ τῆς ἑσπέρας ὑπό τε ἀράβων τῶν σκηνιτῶν μέχρι τῆς ἀδιαβηνῆς, καὶ τῆς γορ-
δυαίας. ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ὑπό τε ἀρμενίων καὶ μήδων, μέχρι τοῦ ζάγρου καὶ τῶν περὶ αὐτὸ ἐθνῶν.
διαρρεῖται δ' ὑπὸ πλειόνων μὲν ποταμῶν ἡ χώρα. μεγίστων δὲ τοῦ τε εὐφράτου καὶ τοῦ τίγριος. μετὰ
γὰρ τοὺς ἰνδικοὺς οὗτοι λέγονται δευτερεύειν, κατὰ τὰ νότια μέρη τῆς ἀσίας οἱ ποταμοί. ἔχουσι
δ' ἀνάπλους. ὁ μὲν, ἐπὶ τὴν ὦπιν καὶ τὴν νῦν σελεύκειαν. ἡ δὲ ὦπις, κώμη ἐμπορεῖον τῶν κύκλῳ τόπων.
ὁ δ' ἐπὶ βαβυλῶνα, πλειόνων, ἢ τρισχιλίων σταδίων. οἱ μὲν οὖν πέρσαι τοὺς ἀνάπλους ἐπιτηδὲς κω-
λύειν ἐθέλοντες φόβῳ τῶν ἔξωθεν ἐφόδων, καταρράκτας χειροποιήτους κατεσκευάκεισαν. ὁ δὲ ἀλέ-
ξανδρος ἐπιὼν ὅσους οἷός τε ἦν ἀνεσκεύασε, καὶ μάλιστα τοὺς ἐπὶ τὴν ὦπιν. ἐπεμελήθη δὲ καὶ τῶν
διωρύγων. πλημμυρεῖ γὰρ ὁ εὐφράτης κατὰ τὴν ἀρχὴν τοῦ θέρους, ἀπὸ τοῦ ἔαρος ἀρξάμενος. ἡνί-
κα τήκονται αἱ χιόνες ἀπὸ τῆς ἀρμενίας. ὥστ' ἀνάγκη λιμνάζειν, καὶ κατακλύζεσθαι τὰς ἀρού-
ρας. εἰ μὴ διοχετεύοι τις ταφρείαις καὶ διώρυξι τὸ ἐκπῖπτον τοῦ ῥοῦ καὶ ἐπιπολάζον ὕδωρ. καθάπερ
καὶ ἐν αἰγύπτῳ τὸ τοῦ νείλου. ἐντεῦθεν μὲν οὖν αἱ διώρυγες γεγένηνται. χρεία δὲ ἐστὶν ὑπουργίας μεγά-
λης. βαθεῖα γὰρ ἡ γῆ, καὶ μαλακὴ, καὶ εὐένδοτος. ὥστε καὶ ἐκσύρεται ῥᾳδίως ὑπὸ τῶν ῥευμάτων.
καὶ γυμνοῖ τὰ πεδία. πληροῖ δὲ τὰς διώρυγας. καὶ τὰ στόματα αὐτῶν ἐμφράττει ῥᾳδίως ἡ χοῦς. οὕτω
δὲ συμβαίνει πάλιν τὴν ὑπέρχυσιν τῶν ὑδάτων εἰς τὰ πρὸς τῇ θαλάττῃ πεδία ἐκπίπτουσαν, λίμνας
ἀποτελεῖν καὶ ἕλη. καὶ καλαμῶνας. ἐξ ὧν καλάμινα πλέκεται παντοῖα σκεύη. τὰ μὲν, ὑγροῦ δεκτικὰ, τῇ
ἀσφάλτῳ περιαλειφόντων. τοῖς δ' ἄλλοις ψιλῶς χρωμένων. καὶ ἱστία δὲ ποιοῦνται καλάμινα. ψιάθοις, ἢ ῥι-
ψὶ παραπλήσια. τὸ μὲν οὖν παντάπασι κωλύειν τὴν τοιαύτην πλημμύραν οὐχ οἷόν τε ἴσως. τὸ δὲ τὴν

δυνατὴν προσφέρειν βοήθειαν, ἡγεμόνων ἀγαθῶν ἐστιν. ἡ δὲ βοήθεια αὕτη, τὴν μὲν πολλὴν παρέκχυσιν ἐμφράξει κωλύειν. τὴν δὲ πλήρωσιν ἣν ἡ χοῦς ἐργάζεται, τοὐναντίον, ἀνακαθάρσει τῶν διωρύγων. καὶ διανοίξει τῶν στομάτων. ἡ μὲν οὖν ἀνακάθαρσις, ῥᾳδία. ἡ δὲ ἔμφραξις, πολυχειρίας δεῖται. εὐένδοτος γὰρ οὖσα ἡ γῆ καὶ μαλακὴ τὴν ἐπιφορηθεῖσαν οὐχ ὑπομένει χοῦν ἀλλ' ἀεὶ συνεφέλκεται κἀκείνην. καὶ ποιεῖ δυσεύχωστον τὸ στόμα. καὶ τάχους δεῖ γὰρ πρὸς τὸ ταχέως κλεισθῆναι τὰς διώρυγας, καὶ μὴ πᾶν ἐκπεσεῖν ἐξ αὐτῶν τὸ ὕδωρ. ξηρανθεῖσαι γὰρ τοῦ θέρους, ξηραίνουσι καὶ τὸν ποταμόν. ταπεινωθεὶς δὲ τὰς ἐποχετείας οὐ δύναται παρέχεσθαι κατὰ καιρόν. ὧν δεῖται πλεῖστον τοῦ θέρους ἔμπυρος οὖσα ἡ χώρα καὶ καυματηρά. διαφέρει δ' οὐδὲν ἢ τῷ πλήθει τῶν ὑδάτων κατακλύζεσθαι τοὺς καρπούς, ἢ τῇ λειψυδρίᾳ, τῷ δίψει διαφθείρεσθαι. ἅμα δὲ καὶ τοὺς ἀνάπλους πολὺ τὸ χρήσιμον ἔχοντας ἀεί. λυμαινομένους γὰρ ὑπ' ἀμφοτέρων τῶν λεχθέντων παθῶν, οὐχ οἷόν τε ἐπανορθοῦν. εἰ μὴ ταχὺ μὲν διανοίγοιτο τὰ στόματα τῶν διωρύγων. ταχὺ δὲ κλείοιντο, καὶ αἱ διώρυγες ἀεὶ μετριάζοιεν. ὥστε μήτε πλεονάζειν ἐν αὐταῖς τὸ ὕδωρ, μήτ' ἐλλείπειν. φησὶ δ' Ἀριστόβουλος τὸν Ἀλέξανδρον αὐτὸν ἀναπλέοντα καὶ κυβερνῶντα τὸ σκάφος, ἐπισκοπεῖν, καὶ ἀνακαθαίρειν τὰς διώρυγας μετὰ τοῦ πλήθους τῶν συνακολουθησάντων. ὡς δ' αὕτως, καὶ τὰ στόματα ἐμφράττειν. τὰ δ' ἀνοίγειν. κατανοήσαντα δὲ μίαν συντείνουσαν ἐπὶ τὰ ἕλη, καὶ τὰς λίμνας τὰς πρὸ τῆς Ἀραβίας. δυσμεταχείριστον ἔχουσαν τὸ στόμα, καὶ μὴ ῥᾳδίως ἐμφράττεσθαι δυναμένην διὰ τὸ εὐένδοτον, καὶ μαλακόγειον, ἄλλο ἀνοῖξαι καινὸν στόμα ἀπὸ σταδίων τριάκοντα ὑπόπετρον λαβόντα χωρίον. κἀκεῖ μεταγαγεῖν τὸ ῥεῖθρον. ταῦτα δὲ ποιεῖν. προνοοῦντα ἅμα καὶ τοῦ μὴ τὴν Ἀραβίαν δυσείσβολον τελέως ὑπὸ τῶν λιμνῶν ἢ καὶ τῶν ἑλῶν ἀποτελεσθῆναι νησιάζουσαν ἤδη διὰ τὸ πλῆθος τοῦ ὕδατος. διενοεῖτο γοῦν δὴ κατακτᾶσθαι τὴν χώραν ταύτην καὶ στόλους καὶ ὁρμητήρια ἤδη κατεσκευάσατο. τὰ πλοῖα. τὰ μὲν ἐν Φοινίκῃ τε καὶ Κύπρῳ ναυπηγησάμενον διάλυτά τε, καὶ γομφωτά. ἃ κομισθέντα εἰς Θάψακον, σταθμοῖς ἑπτὰ εἶτα τῷ ποταμῷ κατακομισθῆναι μέχρι Βαβυλῶνος. τὰ δ' ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ συμπηξάμενον τῶν ἐν τοῖς ἄλσεσι καὶ τοῖς παραδείσοις κυπαρίττων. σπάνις γὰρ ὕλης ἐνταῦθα, ἐν δὲ Κοσσαίοις καὶ ἄλλοις τισὶ μετρία τίς ἐστιν εὐπορία. σκήψασθαι μὲν οὖν αἰτίαν τοῦ πολέμου φασίν. ἐπειδὴ μόνοι τῶν ἁπάντων οὐ πρεσβεύσαιντο οἱ Ἄραβες ὡς αὐτόν. τὸ δ' ἀληθὲς ὀρεγόμενον πάντων εἶναι κύριον. καὶ ἐπειδὴ δύο θεοὺς ἐπυνθάνετο τιμᾶσθαι μόνους ὑπ' αὐτῶν, τόν τε Δία καὶ τὸν Διόνυσον τοὺς τὰ κυριώτατα πρὸς τὴν ζωὴν παρέχοντας, τρίτον ὑπολαβεῖν ἑαυτὸν τιμήσεσθαι. κρατήσαντα, καὶ ἐπιτρέψαντα τὴν πάτριον αὐτονομίαν ἔχειν, ἣν εἶχον πρότερον. ταῦτά τε δὴ ἐπραγματεύεσθαι τὸν περὶ τὰς διώρυγας τὸν Ἀλέξανδρον. καὶ τοὺς τάφους σκευωρεῖσθαι τοὺς τῶν βασιλέων καὶ δυναστῶν. τοὺς γοῦν πλείστους ἐν ταῖς λίμναις εἶναι. Ἐρατοσθένης δὲ τῶν λιμνῶν μνησθεὶς τῶν πρὸς τῇ Ἀραβίᾳ φησὶ τὸ ὕδωρ ἀπορούμενον διεξόδων ἀνοῖξαι πόρους ὑπὸ γῆς. καὶ δι' ἐκείνων ὑποφέρεσθαι μέχρι Κοιλοσύρων. ἀναθλίβεσθαι δὲ εἰς τοὺς περὶ Ῥινοκόρουρα, καὶ τὸ Κάσιον ὄρος ποταμούς, καὶ ποιεῖν τὰς ἐκεῖ λίμνας, καὶ τὰ βάραθρα. οὐκ οἶδα δ' εἰ πιθανῶς εἴρηκεν. αἱ γὰρ τοῦ Εὐφράτου παρεκχύσεις αἱ ποιοῦσαι τὰς πρὸς τῇ Ἀραβίᾳ λίμνας, καὶ τὰ ἕλη, πλησίον εἰσὶ τῆς κατὰ Πέρσας θαλάττης. ὁ δὲ διείργων ἰσθμὸς, οὔτε πολύς ἐστιν οὔτε πετρώδης. ὥστε ταύτῃ μᾶλλον εἰκὸς ἦν βιάσασθαι τὸ ὕδωρ εἰς τὴν θάλατταν. εἴθ' ὑπὸ γῆς, εἴτ' ἐπιπολῆς. ἢ πλέον ἢ τῶν ἑξακισχιλίων σταδίων διανύειν, ἄνυδρον καὶ ξηρὰν οὕτω καὶ ταῦτα ὄρων ἐν μέσῳ κειμένων. τοῦ τε Λιβάνου καὶ τοῦ Ἀντιλιβάνου τοῦ Κασίου. οἱ μὲν δὴ τοιαῦτα λέγουσι. Πολύκλειτος δέ φησι μὴ πλημμυρεῖν τὸν Εὐφράτην. διὰ γὰρ πεδίων φέρεσθαι μεγάλων, τὰ δ' ὄρη τὰ μὲν, δισχιλίους ἀφεστάναι σταδίους. τὰ δὲ Κόσσαια μόλις χιλίους. οὐ πάνυ ὑψηλὰ οὐδὲ νιφόμενα σφοδρῶς. οὐδ' ἀθρόαν ἐπιφέροντα τῇ χιόνι τὴν τῆξιν εἶναι. καὶ γὰρ καὶ τὰ ὕψη τῶν ὀρῶν ἐν τοῖς ὑπὲρ Ἐκβατάνων μέρεσι τοῖς προσβορείοις. ἀεὶ δὲ τοῖς πρὸς νότον σχιζόμενα, καὶ πλατυνόμενα πολὺ ταπεινοῦσθαι. ἅμα δὲ, καὶ τὸ πολὺ τοῦ ὕδατος ἐκδέχεσθαι τὸν Τίγριν. τὸ μὲν οὖν ὕστατον ἐνθέως φανερῶς ἄτοπον. εἰς γὰρ τὰ αὐτὰ κατέρχεται πεδία, καὶ οὕτως τὰ πλημμυρεῖν λεχθέντα ὕψη τῶν ὀρῶν ἀνωμαλίαν ἔχει. τῇ μὲν ἐξηρμένου μᾶλλον τὰ βόρεια. τῇ δὲ πλατυνόμενα τὰ μεσημβρινά. ἡ δὲ χιὼν οὐ τοῖς ὕψεσι κρίνεται μόνον. ἀλλὰ καὶ τοῖς κλίμασι. τό τε αὐτὸ ὄρος τὰ βόρεια μέρη νίφεται μᾶλλον ἢ τὰ νότια. καὶ τὴν χιόνα συμμένουσαν ἔχει μᾶλλον ἐκεῖνα, ἢ ταῦτα. ὁ μὲν οὖν Τίγρις ἐκ τῶν νοτιωτάτων μερῶν τῆς Ἀρμενίας, ἃ πλησίον ἐστὶ τῆς Βαβυλωνίας, δεχόμενος τὸ ἐκ τῶν χιόνων ὕδωρ οὐ πολὺ ὄν, ἅτε ἐκ τῆς νοτίου πλευρᾶς, ἧττον ἂν πλημμυροῖ. ὁ δὲ Εὐφράτης, τὸ ἐξ ἀμφοτέρων δέχεται τῶν μερῶν. καὶ οὐκ ἐξ ἑνὸς ὄρους. ἀλλὰ πολλῶν, ὡς ἐδηλοῦμεν ἐν τῇ περιηγήσει τῆς Ἀρμενίας, προστιθεὶς τὸ μῆκος τοῦ ποταμοῦ, ὅσον μέν, τὸ ἐν τῇ μεγάλῃ Ἀρμενίᾳ διέξεισι, καὶ τῇ μικρᾷ. ὅσον δὲ ἐκ τῆς Ἀρμενίας, καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας καὶ τῆς Καππαδοκίας διὰ τοῦ Ταύρου διεκβαλὼν ἕως Θαψάκου φέρεται, τὴν κάτω Συρίαν καὶ τὴν Μεσοποταμίαν ἀφορίζων. ὅσον δὲ τὸ λοιπὸν μέχρι Βαβυλῶνος καὶ τῆς ἐκβολῆς ὁμοῦ, τρισμυρίων καὶ ἑξακισχιλίων σταδίων. τὰ μὲν οὖν περὶ τὰς διώρυγας τοιαῦτα. ἡ δὲ χώρα φέρει κριθὰς μὲν ὅσας οὐκ ἄλλη. καὶ γὰρ τριακοσιοχοΐα λέγουσι. τὰ δὲ ἄλλα ἐκ τοῦ φοίνικος παρέχοντι, καὶ γὰρ ἄρτον καὶ οἶνον, καὶ ὄξος καὶ μέλι καὶ ἄλφιτα. τά τε πλεκτὰ παντοῖα ἐκ τούτου.

τοῖς δὲ πυρῆσιν ἀντ' ἀνθράκων οἱ χαλκεῖς χρῶνται. βρεχόμενοι δὲ τοῖς σιτιζομένοις εἰς τροφὴν βουσί, καὶ προβάτοις. φασὶ δ' εἶναι καὶ περσικὴν ᾠδήν, ἐν ᾗ τὰς ὠφελείας τοῦ φοίνικος, τριακοσίας καὶ ἑξήκοντα διαριθμοῦνται. ἐλαίῳ δὲ χρῶνται τῷ σησαμίνῳ τὸ πλέον. οἱ δ' ἄλλοι τόποι σπανίζονται τούτου τοῦ φυτοῦ. γίνεται δ' ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ ἡ ἄσφαλτος πολλή. περὶ ἧς Ἐρατοσθένης μὲν οὕτως εἴρηκεν. ὅτι ἡ μὲν ὑγρὰ ἣν καλοῦσι νάφθαν, γίνεται ἐν τῇ Σουσίδι. ἡ δὲ ξηρὰ δυναμένη πήττεσθαι ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ. ταύτης δ' ἐστὶν ἡ πηγὴ τοῦ νάφθα πλησίον. πλημμυροῦντος δὲ τούτου κατὰ τὰς τῶν χιόνων τήξεις, καὶ αὐτὴ πληροῦται. καὶ ὑπέρχυσιν εἰς τὸν ποταμὸν λαμβάνει. ἐνταῦθα δὲ συνίστανται βῶλοι μεγάλαι πρὸς τὰς οἰκοδομὰς ἐπιτήδειαι, τὰς διὰ τῆς ὀπτῆς πλίνθου. ἄλλοι δὲ καὶ τὴν ὑγρὰν ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ γίνεσθαί φασι. περὶ μὲν οὖν τῆς ξηρᾶς, εἴρηται πόσον τὸ χρήσιμον τὸ ἐκ τῶν οἰκοδομιῶν μάλιστα. φασὶ δὲ καὶ πλοῖα πλέκεσθαι. ἐμπλασθέντα δ' ἀσφάλτῳ πυκνοῦσθαι. τὴν δ' ὑγρὰν ἣν νάφθαν καλοῦσι, παράδοξον ἔχειν συμβαίνει τὴν φύσιν. προσαχθεὶς γὰρ ὁ νάφθας πυρὶ πλησίον, ἀναρπάζει τὸ πῦρ. κἂν ἐπιχρίσας αὐτῷ σῶμα προσαγάγῃς φλέγεται. σβέσαι δ' ὕδατι οὐχ οἷόν τε. ἐκκαίεται γὰρ μᾶλλον. πλὴν εἰ πάνυ πολλῷ. ἀλλὰ πηλῷ καὶ ὄξει. καὶ στυπτηρίᾳ. καὶ ἰξῷ πνιγέντα, σβέννυται. πεῖρας δὲ χάριν φασὶν Ἀλέξανδρον ἐν λουτρῷ προσχέαι παιδὶ τοῦ νάφθα. καὶ προσαγαγεῖν λύχνον. φλεγόμενον δὲ τὸν παῖδα, ἐγγὺς ἐλθεῖν τοῦ ἀπολέσθαι. πλὴν πολλῷ σφόδρα καταντλοῦντες τῷ ὕδατι, ἐξίσχυσαν καὶ διέσωσαν οἱ παρεστῶτες. Ποσειδώνιος δέ φησι τοῦ ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ νάφθα τὰς πηγάς, τὰς μὲν εἶναι λευκοῦ. τὰς δέ, μέλανος. τούτων δὲ τὰς μὲν, εἶναι θείου ὑγροῦ. λέγω δὲ τὰς τοῦ λευκοῦ. ταύτας δ' εἶναι τὰς ἐπισπώσας τὰς φλόγας. τὰς δὲ τοῦ μέλανος, ἀσφάλτου ὑγρᾶς. ᾧ ἀντ' ἐλαίου τοὺς λύχνους καίουσι. πάλαι μὲν οὖν ἡ Βαβυλὼν ἦν μητρόπολις τῆς Ἀσσυρίας. νῦν δὲ Σελεύκεια ἡ ἐπὶ τῷ Τίγρει λεγομένη. πλησίον δ' ἐστὶ κώμη Κτησιφῶν λεγομένη μεγάλη. ταύτην δ' ἐποιοῦντο χειμάδιον οἱ τῶν Παρθυαίων βασιλεῖς. φειδόμενοι τῶν Σελευκείων. ἵνα μὴ κατασταθμεύοιντο ὑπὸ τοῦ σκυθικοῦ φύλου, καὶ στρατιωτικοῦ. δυνάμει οὖν παρθυικῇ πόλις ἀντὶ κώμης ἐστί. καὶ τὸ μέγεθος τοσοῦτόν γε πλῆθος δεχομένη. καὶ τὴν κατασκευὴν ὑπ' ἐκείνων αὐτῶν κατεσκευασμένη. καὶ τὰ ὤνια καὶ τὰς τέχνας προσφόρους ἐκείνοις πεπορισμένη. εἰώθασι γὰρ ἐνταῦθα τοῦ χειμῶνος διάγειν οἱ βασιλεῖς διὰ τὸ εὐάερον. θέρους δὲ ἐν Ἐκβατάνοις, καὶ τῇ Ὑρκανίᾳ διὰ τὴν ἐπικράτειαν τῆς παλαιᾶς δόξης. ὥσπερ δὲ Βαβυλωνίαν τὴν χώραν καλοῦμεν, οὕτω καὶ τοὺς ἄνδρας τοὺς ἐκεῖθεν Βαβυλωνίους καλοῦμεν. οὐκ ἀπὸ τῆς πόλεως. ἀλλ' ἀπὸ τῆς χώρας. ἀπὸ δὲ τῆς Σελευκείας ἧττον κἂν ἐκεῖθεν ὦσι. καθάπερ Διογένη τὸν στωϊκὸν φιλόσοφον. ἔστι δὲ καὶ Ἀρτεμίτα πόλις ἀξιόλογος. διέχουσα πεντακοσίους τῆς Σελευκείας σταδίους, πρὸς ἕω τὸ πλέον. καθάπερ καὶ ἡ Σιτακηνή. καὶ γὰρ αὕτη πολλή τε καὶ ἀγαθή. μέση Βαβυλῶνος τέτακται καὶ Σουσίδος. ὥστε τοῖς ἐκ Βαβυλῶνος εἰς Σοῦσα βαδίζουσι διὰ τῆς Σιτακηνῆς ἡ ὁδὸς ἅπασα. πρὸς ἕω δ' ἐστί. καὶ τοῖς ἐκ Σούσων εἰς τὴν μεσόγαιαν τῆς Περσίδος, διὰ τῆς Οὐξίας, καὶ τῆς ἐκ τῆς Περσίδος, εἰς τὰ μέσα τῆς Καρμανίας. τὴν μὲν οὖν Καρμανίαν, ἐγκυκλοῦται πρὸς ἄρκτον ἡ Περσίς. πολλὴ οὖσα. ταύτῃ δὲ συνάπτει ἡ Παραιτακηνὴ καὶ ἡ Κοσσαία μέχρι Κασπίων πυλῶν. ὀρεινὰ καὶ λῃστρικὰ ἔθνη. τῇ δὲ Σουσίδι ἡ Ἐλυμαΐς. καὶ αὕτη τραχεῖα ἡ πολλή, καὶ λῃστρική. τῇ δὲ Ἐλυμάτιδι, τὰ περὶ τὸν Ζάγρον καὶ ἡ Μηδία. Κοσσαῖοι μὲν οὖν εἰσι τοξόται τὸ πλέον. καθάπερ καὶ οἱ συνεχεῖς ὀρεινοὶ προνομεύοντες ἀεί. χώραν γὰρ ἔχουσιν ὀλίγην τε καὶ λυπράν. ὥστ' ἐκ τῶν ἀλλοτρίων ἀνάγκη ζῆν. ἀνάγκη δὲ καὶ ἰσχύειν. ἅπαντες γάρ εἰσι μάχιμοι. τοῖς γοῦν Ἐλυμαίοις συνεμάχουν μύριοι καὶ τρισχίλιοι. πολεμοῦσι πρός τε Βαβυλωνίους καὶ Σουσίους. οἱ δὲ Παραιτακηνοὶ μᾶλλον μὲν τῆς Κοσσαίων ἐπιμελοῦνται γῆς. ὅμως δὲ καὶ αὐτοὶ λῃστηρίων οὐκ ἀπέχονται. Ἐλυμαῖοι δὲ καὶ μείζω τούτων κέκτηνται χώραν καὶ ποικιλωτέραν. ὅση μὲν οὖν ἀγαθή, γεωργοὺς ἔχει τοὺς ἐνοικοῦντας. ἡ δ' ὀρεινὴ στρατιώτας τρέφει. τοξότας τοὺς πλείστους. πολλὴ δ' οὖσα, πολὺ καὶ τὸ στρατιωτικὸν παρέχεται. ὥστε καὶ ὁ βασιλεὺς αὐτῶν δύναμιν κεκτημένος μεγάλην, οὐκ ἀξιοῖ τῷ τῶν Παρθυαίων βασιλεῖ παραπλησίως τοῖς ἄλλοις ὑπήκοος εἶναι. ὁμοίως δὲ καὶ πρὸς τοὺς Μακεδόνας ὕστερον τοὺς τῆς Συρίας ἄρχοντας διέκειτο. Ἀντίοχον μὲν οὖν τὸν μέγαν τὸ τοῦ Βήλου συλᾶν ἱερὸν ἐπιχειρήσαντα, ἀνεῖλον ἐπιθέμενοι καθ' αὑτοὺς οἱ πλησίον βάρβαροι. ἐκ δὲ τῶν ἐκείνῳ συμβάντων παιδευθεὶς ὁ Παρθυαῖος. χρόνοις ὕστερον ἀκούων τὰ ἱερὰ πλούσια παρ' αὐτοῖς, ὁρῶν δ' ἀπειθοῦντας ἐμβάλλει μετὰ δυνάμεως μεγάλης. καὶ τό τε τῆς Ἀθηνᾶς ἱερὸν εἷλε, καὶ τὸ τῆς Ἀρτέμιδος τὰ Ἄζαρα. καὶ ἦρε ταλάντων μυρίων γάζαν. ᾑρέθη δὲ καὶ πρὸς τῷ Ἡδυφῶντι ποταμῷ Σελεύκεια μεγάλη πόλις. Σολόκη δ' ἐκαλεῖτο πρότερον. τρεῖς δ' εἰσὶν εἰς τὴν χώραν εὐφυεῖς εἰσβολαί. ἐκ μὲν τῆς Μηδίας καὶ τῆς περὶ τὸν Ζάγρον τόπων διὰ τῆς Μασσαβατικῆς. ἐκ δὲ τῆς Σουσίδος διὰ τῆς Γαβιανῆς. ἐπαρχίαι δ' εἰσὶν αὗται τῆς Ἐλυμαΐας. ἥ τε Γαβιανὴ καὶ ἡ Μασσαβατική. τρίτη δ' ἐστὶν ἡ ἐκ τῆς Περσίδος. ἔστι δὲ καὶ Κορβιανὴ ἐπαρχία τῆς Ἐλυμαΐδος. ὅμοροι δ' εἰσὶ τούτοις Σαγαπηνοί τε καὶ Σιλακηνοί, δυναστεῖαι μικραί. τοσαῦτα μὲν καὶ τοιαῦτα τὰ ἔθνη πρὸς ἕω τὰ ὑπερκείμενα τῆς Βαβυλωνίας. πρὸς ἄρκτον δὲ τὴν Μηδίαν ἔφαμεν, καὶ τὴν Ἀρμενίαν. ἀπὸ δὲ δύσεως ἡ Ἀδιαβηνή, καὶ ἡ Μεσοποταμία. τῆς μὲν οὖν Ἀδιαβηνῆς ἡ πλείστη πεδιάς ἐστι, καὶ αὐτὴ τῆς Βαβυλωνίας μέρος οὖσα. ἔχουσα δ' ὅμως ἄρχοντα ἴδιον, ἔστιν ὅπῃ καὶ τῇ Ἀρμενίᾳ προσχωροῦσα. οἱ γὰρ Μῆδοι καὶ οἱ Ἀρμένιοι. τρίτοι δὲ Βαβυλώνιοι, τὰ μέγιστα τῶν ἐθνῶν τῶν ταύτῃ διετέλουν

οὕτως ἐξ ἀρχῆς συνεστῶτες, ὥστ' ἀλλήλοις ἐπιτίθεσθαι, κατὰ καιροὺς τοὺς οἰκείους ἑκάστοι, καὶ πάλιν
διαλύεσθαι. καὶ τοῦτο μέχρι καὶ τῆς τῶν παρθυαίων ἐπικρατείας διέμεινε. τῶν μὲν οὖν μήδων
καὶ τῶν βαβυλωνίων ἐπάρχουσι παρθυαῖοι. τῶν δ' ἀρμενίων οὐδ' ἅπαξ. ἀλλ' ἔφοδοι μὲν γεγόνασι
πολλάκις. ἀνακράτος δ' οὐχ ἑάλωσαν. ἀλλ' ὅ γε τιγράνης, καὶ ἐρρωμένως ἀντεπεκράτησεν, ὡς ἐν τοῖς ἀρ
μενιακοῖς εἴρηται. ἡ μὲν οὖν ἀδιαβηνὴ τοιαύτη. καλοῦνται δ' οἱ ἀδιαβηνοὶ, καὶ σακκόποδες. περὶ δὲ
τῆς μεσοποταμίας ὅρου μὲν ἐφεξῆς καὶ τῶν πρὸς μεσημβρίαν ἐθνῶν ἐπιόντες, ἐπὶ μικρὸν πρότε-
ρον τὰ λεγόμενα περὶ τῶν ἐθνῶν τῶν παρὰ τοῖς ἀσσυρίοις. τ' ἄλλα μὲν οὖν ἔοικε τοῖς περσικοῖς. ἴδιον
δὲ τὸ καθίστασθαι τρεῖς ἄνδρας σώφρονας ἑκάστης ἄρχοντας φυλῆς. οἳ τὰς ἐπιγάμους κόρας προ-
σάγοντες εἰς τὸ πλῆθος ἀποκηρύττουσι τοῖς νυμφίοις ἀεὶ τὰς ἐντιμοτέρας πρώτας. οὕτω μὲν αἱ
συζυγίαι τελοῦνται. ὁσάκις δ' ἂν μιχθῶσιν ἀλλήλοις ἐπιθυμιάσαντες, ἐξανίστανται ἑκάτερος χω
ρίς. ὄρθρου δὲ λούονται πρὶν ἀγγείου τινὸς ἅψασθαι. παραπλησίως γὰρ ὥσπερ ἀπὸ νεκροῦ τὸ λου
τρὸν ἐν ἔθει ἐστὶν, οὕτω καὶ ἀπὸ συνουσίας. πάσαις δὲ ταῖς βαβυλωνίαις ἔθος κατά τι λόγιον, ξένῳ
μίγνυσθαι πρός τι ἀφροδίσιον. ἀφικνουμέναις μετὰ πολλῆς θεραπείας καὶ ὄχλου. θώμιγγι δ' ἔστε
πται ἑκάστη. ὁ δὲ προσιὼν καταθεὶς ἐπὶ τὰ γόνατα ὅσον καλῶς ἔχει ἀργύριον, συγγίνεται, ἄποθεν,
τοῦ τεμένους ἀπαγαγών. τὸ δ' ἀργύριον ἱερὸν τῆς ἀφροδίτης νομίζεται. ἀρχεῖα δ' ἐστὶ τρία. τὸ τῶν
ἀφειμένων ἤδη τῆς στρατείας, καὶ τὸ τῶν ἐνδοξοτάτων. καὶ τὸ τῶν γερόντων. χωρὶς τοῦ ὑπὸ τοῦ
βασιλέως καθισταμένου. τούτου δ' ἐστὶ καὶ τὸ τὰς παρθένους ἐκδιδόναι, καὶ τὸ τὰς περὶ τῆς μοιχείας δι
κάζειν δίκας. ἄλλου δὲ τὸ τὰς τῆς κλοπῆς. τρίτου τὸ περὶ τῶν βιαίων. τοὺς δ' ἀρρώστους εἰς τὰς τριόδους
ἐκτιθέντες, πυνθάνονται τῶν παριόντων εἴ τις τι ἔχοι λέγειν τοῦ πάθους ἄκος. οὐδείς τέ ἐστιν οὕτω
κακὸς τῶν παριόντων ὃς οὐκ ἐντυχὼν ἔτι φρονεῖ σωτήριον ὑποτίθεται. ἐσθὴς δ' αὐτοῖς ἐστὶ χι-
τὼν λινοῦς ποδήρης, καὶ ἐπενδύτης ἐρεοῦς ἱμάτιον λευκόν. κόμη μικρά. ὑπόδημα ἐμβάδι ὅμοιον.
φοροῦσι δὲ, καὶ σφραγῖδα. καὶ σκῆπτρον οὐ λιτόν. ἀλλ' ἐπίσημον. ἔχον ἐπάνω μῆλον ἢ ῥόδον ἢ κρίνον
ἤ τι τοιοῦτον. ἀλείφονται δ' ἐκ τοῦ σησάμου. θρηνοῦσι δὲ τοὺς ἀποθανόντας ὡς οἱ αἰγύπτιοι καὶ πολλοὶ
τῶν ἄλλων. θάπτουσι δ' ἐν μέλιτι κηρῷ περιπλάσαντες. τρεῖς δ' εἰσὶ φατρίαι τῶν ἀπόρων. σίτου. ἕλεια
δ' εἰσὶν οὗτοι καὶ ἰχθυοφάγοι. διαιτώμενοι παραπλησίως τοῖς κατὰ τὴν γεδρωσίαν. μεσοποταμία
δ' ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ὠνόμασται. εἴρηται δ' ὅτι κεῖται μεταξὺ τοῦ εὐφράτου, καὶ τοῦ τίγρις. καὶ
διότι ὁ μὲν τίγρις τὸ ἑωθινὸν αὐτῆς μόνον κλύζει πλευρὸν, τὸ δὲ ἑσπέριον, καὶ νότιον ὁ εὐφρά
της. πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ ταῦρος ὁ τοὺς ἀρμενίους διορίζων ἀπὸ τῆς μεσοποταμίας. τὸ μὲν οὖν
μέγιστον ὃ ἀφίστανται διάστημα ἀπ' ἀλλήλων, τὸ πρὸς τοῖς ὄρεσιν ἐστί. τοῦτο δ' ἂν εἴη τὸ αὐτὸ ὅπερ εἴρη
κεν ἐρατοσθένης. τὸ ἀπὸ θαψάκου. καθ' ὃ ἦν τὸ ζεῦγμα τοῦ εὐφράτου τὸ παλαιὸν ἐπὶ τὴν τοῦ τίγρι-
δος διάβασιν, καθ' ἣν διέβη ἀλέξανδρος αὐτὸν, δισχιλίων τετρακοσίων. τὸ δ' ἐλάχιστον μικρῷ πλέον
τῶν διακοσίων. κατὰ σελεύκειάν που, καὶ βαβυλῶνα. διαρρεῖ δ' ὁ τίγρις τὴν θωπῖτιν καλουμένην λί
μνην κατὰ πλάτος μέσην. περαιωθεὶς δ' ἐπὶ θάτερον χεῖλος, κατὰ γῆς δύεται μετὰ πολλοῦ ψόφου
καὶ ἀναφυσημάτων. ἐπὶ πολὺ δ' ἐνεχθεὶς ἀφανὴς, ἀνίσχει πάλιν οὐ πολὺ ἄποθεν τῆς γορδυαίας. οὕτω
δὲ σφοδρῶς διεκβάλλει, τὴν λίμνην ὥς φησιν ἐρατοσθένης, ὥστε ἁλμυρὰν αὐτὴν οὖσαν, καὶ ἀνι-
χθυν, γλυκεῖαν κατὰ τοῦτ' εἶναι τὸ μέρος, καὶ ῥοώδη, καὶ ἰχθύων πλήρη. ἐπὶ μῆκος δὲ συχνὸν προπέ
πτωκεν ἡ συναγωγὴ τῆς μεσοποταμίας, καὶ πλοίῳ πως ἔοικε. ποιεῖ δὲ τὸ πλεῖστον τῆς περιφερεί-
ας ὁ εὐφράτης. καὶ ἔστι τὸ μὲν ἀπὸ τῆς θαψάκου μέχρι βαβυλῶνος ὡς εἴρηκεν ἐρατοσθένης τετρακισχίλιοι
καὶ ὀκτακόσιοι στάδιοι. τὸ δ' ἀπὸ τοῦ κατὰ κομμαγηνὴν ζεύγματος, ἥπερ ἐστὶν ἀρχὴ τῆς μεσοποταμί
ας, οὐκ ἔλαττον τῶν δισχιλίων σταδίων ἕως ἐπὶ θάψακον. ἔστι δ' ἡ μὲν παρόρειος εὐδαίμων ἱκανῶς,
ἔχουσι δ' αὐτῆς τὰ μὲν πρὸς τῷ εὐφράτῃ, καὶ τῷ ζεύγματι, τῷ τε νῦν τῷ κατὰ τὴν κομμαγηνήν.
καὶ τῷ πάλαι τῷ κατὰ τὴν θάψακον, οἵ τε μυγδόνες κατονομασθέντες ὑπὸ τῶν μακεδόνων. ἐν οἷς ἐστιν
ἡ νίσιβις, ἣν καὶ αὐτὴν ἀντιόχειαν τὴν ἐν τῇ μυγδονίᾳ προσηγόρευσαν. ὑπὸ τῷ μασίῳ ὄρει κειμένην.
καὶ τιγρανόκερτα. καὶ τὰ περὶ κάρρας, καὶ νικηφόριον χωρία. καὶ χορδίραζα. καὶ σίννακα. ἐν ᾗ κράσ
σος διεφθάρη δόλῳ ληφθεὶς ὑπὸ σουρήνα τοῦ τῶν παρθυαίων στρατηγοῦ. πρὸς δὲ τῷ τίγρει τὰ τῶν παρ
θυαίων χωρία, οὓς οἱ πάλαι καρδούχους ἔλεγον, καὶ αἱ πόλεις ὧν σάρασά τε καὶ σιτάλκα καὶ πι
νάκα κράτιστον ἔρυμα. τρεῖς ἄκρας ἔχουσα. ἑκάστην ἰδίῳ τείχει τετειχισμένην. ὥστε οἷον τρίπολιν εἶναι.
ἀλλ' ὅμως, καὶ ὁ ἀρμένιος εἶχεν ὑπήκοον, καὶ οἱ ῥωμαῖοι βίᾳ παρέλαβον. εἰ καὶ περ ἔδοξαν οἱ γορ
δυαῖοι διαφερόντως ἀρχιτεκτονικοί τινες εἶναι. καὶ πολιορκητικῶν ὀργάνων ἔμπειροι. διό περ αὐτοῖς
εἰς ταῦτα ὁ τιγράνης ἐχρῆτο. ἐγένετο δὲ καὶ ἡ λοιπὴ μεσοποταμία ὑπὸ ῥωμαίοις, πομπήιος δ' αὐ
τῷ τὰ πολλὰ τῷ τιγράνῃ προσένειμεν, ὅσα ἦν ἀξιόλογα. ἔστι τε εὔβοτος ἡ χώρα, καὶ εὐκαρπής. ὥστε καὶ τὰ
ἀειθαλῆ τρέφειν. καὶ ἄρωμα τὸ ἄμωμον, καὶ λεοντόβοτός ἐστι. φέρει δὲ, καὶ τὴν νάφθαν, καὶ τὴν γαγγίτιν
λίθον, ἣν φεύγει τὰ ἑρπετά. λέγεται δὲ γόρδυς ὁ τριπτολέμου τὴν γορδυηνὴν οἰκῆσαι. ὕστερον δὲ, καὶ
ἐρετριεῖς οἱ ἀναρπασθέντες ὑπὸ περσῶν. περὶ μὲν οὖν τριπτολέμου δηλώσομεν ἐν τοῖς συριακοῖς αὖθις.

τὰ δὲ πρὸς μεσημβρίαν κεκλιμένα τῆς μεσοποταμίας, καὶ ἀπωτέρω τῶν ὀρῶν, ἄνυδρα, καὶ λυπρὰ ὄντα ἔχουσιν οἱ σκηνῖται ἄραβες. λῃστρικοί τινες καὶ ποιμενικοί. μεθιστάμενοι ῥαδίως εἰς ἄλλους τόπους ὅταν ἐπιλείπωσιν αἱ νομαὶ καὶ αἱ λεηλασίαι. τοῖς οὖν παρορείοις ὑπό τε τούτων κακοῦσθαι συμβαίνει, καὶ ἀπὸ τῶν ἀρμενίων. ὑπέρκεινται δὲ καὶ καταδυναστεύουσι διὰ τὴν ἰσχύν. τέλος δ' ὑπ' ἐκείνοις εἰσὶ τὸ πλέον, ἢ τοῖς παρθυαίοις. ἐν πλευραῖς γάρ εἰσι κἀκεῖνοι. τήν τε μηδίαν ἔχοντες καὶ τὴν βαβυλωνίαν. μεταξὺ δὲ τοῦ εὐφράτου καὶ τοῦ τίγριος ῥεῖ, καὶ ἄλλος ποταμὸς βασίλειος καλούμενος. καὶ περὶ τὴν ἀνθεμουσίαν ἄλλος ἀβόρρας. διὰ δὲ τῶν σκηνιτῶν ἀπὸ τῶν μαλίων νυνὶ λεγομένων, καὶ τῆς ἐκείνων ἐρημίας, ἡ ὁδὸς τοῖς ἐκ τῆς συρίας εἰς σελεύκειαν, καὶ βαβυλῶνα ἐμπορευομένοις ἐστίν. ἡ μὲν οὖν ἀνάβασις τοῦ εὐφράτου, κατὰ τὴν ἀνθεμουσίαν ἐστὶν αὐτοῖς. τόπος τῆς μεσοποταμίας. ὑπέρκειται δὲ τοῦ ποταμοῦ, σχοίνους τέτταρας διέχουσα ἡ βαμβύκη. ἣν καὶ ἔδεσσαν καὶ ἱερὰν πόλιν καλοῦσιν. ἐν ᾗ τιμῶσι τὴν συρίαν θεὸν τὴν ἀταργάτιν. διαβάντων γὰρ ἡ ὁδός ἐστι διὰ τῆς ἐρήμου μέχρι σκηνῶν ἀξιολόγου πόλεως. ἐπὶ τοὺς τῆς βαβυλωνίας ὅρους. ἀπό τινος διώρυγχος ἱδρυμένης. ἔστι δ' ἀπὸ τῆς διαβάσεως μέχρι σκηνῶν, ἡμερῶν πέντε καὶ εἴκοσιν ὁδός. καμηλῖται δ' εἰσὶ καταγωγὰς ἔχοντες. τοτὲ μὲν ὑδρείων εὐπόρους τῶν λακκαίων τὸ πλέον. τοτὲ δ' ἐπακτοῖς χρώμενοι τοῖς ὕδασι. παρέχουσι δ' αὐτοῖς οἱ σκηνῖται τήν τε εἰρήνην, καὶ τὴν μετριότητα. τῆς γὰρ τῶν τελῶν πράξεως. ἧς χάριν φεύγοντες τὴν παραποταμίαν, διὰ τῆς ἐρήμου παραβάλλονται. καταλιπόντες ἐν δεξιᾷ τὸν ποταμόν. ἡμερῶν σχεδόν τι τριῶν ὁδόν, οἱ γὰρ παροικοῦντες ἑκατέρωθεν τὸν ποταμὸν φύλαρχοι. χώραν οὐκ εὔπορον ἔχοντες. ἧττον δὲ ἄπορον νεμόμενοι. δυναστείαν ἕκαστος ἰδίαν περιβεβλημένος. ἴδιον καὶ τελώνιον ἔχει. καὶ τοῦτ' οὐ μέτριον. χαλεπὸν γὰρ ἐν τοῖς τοσούτοις, καὶ τοῖς αὐθάδεσι κοινὸν ἀφορισθῆναι μέτρον τὸ τῷ ἐμπόρῳ λυσιτελές. διέχουσι δὲ τῆς σελευκείας αἱ σκηναί, σχοίνους ὀκτωκαίδεκα. ὅριον δ' ἐστὶ τῆς παρθυαίων ἀρχῆς ὁ εὐφράτης καὶ ἡ περαία. τὰ δ' ἐντὸς ἔχουσι ῥωμαῖοι, καὶ τῶν ἀράβων οἱ φύλαρχοι, μέχρι βαβυλωνίας. οἱ μέν, μᾶλλον ἐκείνοις. οἱ δέ, τοῖς ῥωμαίοις προσέχοντες. οἷς περ καὶ πλησιόχωροί εἰσιν. ἧττον μὲν σκηνῖται οἱ νομάδες οἱ τῷ ποταμῷ πλησίον. μᾶλλον δ' οἱ ἄποθεν. καὶ πρὸς τῇ εὐδαίμονι ἀραβίᾳ. οἱ δὲ παρθυαῖοι καὶ πρότερον μὲν ἐφρόντιζον τῆς πρὸς ῥωμαίους φιλίας. τὸν δὲ ἄρξαντα πολέμου κράσσον ἠμύναντο. καὶ αὐτοὶ ἄρξαντες τῆς μάχης τῶν ἴσων ἔτυχον, ἡνίκα ἔπεμψαν ἐπὶ τὴν ἀσίαν πάκορον. ἀντώνιος δὲ συμβούλῳ τῷ ἀρμενίῳ χρώμενος, προυδόθη καὶ κακῶς ἐπολέμησεν. ὁ δ' ἐκεῖνον διαδεξάμενος φραάτης, τοσοῦτον ἐσπούδασε περὶ τὴν φιλίαν τὴν πρὸς καίσαρα τὸν σεβαστόν, ὥστε καὶ τὰ τρόπαια ἔπεμψεν, ἃ κατὰ ῥωμαίων ἀνέστησαν παρθυαῖοι. καὶ καλέσας εἰς σύλλογον τίτιον, τὸν ἐπιστατοῦντα τότε τῆς συρίας, τέτταρας παῖδας γνησίους ἐνεχείρισεν ὅμηρα αὐτῷ. σαρασπάδην. καὶ κεροσπάδην. καὶ φραάτην. καὶ βοώνην. καὶ γυναῖκας τούτων δύο. καὶ υἱεῖς τέτταρας. δεδιὼς τὰς στάσεις καὶ τοὺς ἐπιτιθεμένους αὐτῷ. ᾔδει γὰρ μηδένα ἰσχύσοντα καθ' ἑαυτόν, ἂν μή τινα ὑπολάβῃ τοῦ ἀρσακίου γένους διὰ τὸ εἶναι σφόδρα φιλοάρσακας τοὺς παρθυαίους. ἐκποδὼν οὖν ἐποίησε τοὺς παῖδας. ἀφελέσθαι ζητῶν τὴν ἐλπίδα ταύτην τοὺς κακουργοῦντας. τῶν μὲν οὖν παίδων ὅσοι περίεισιν ἐν ῥώμῃ, δημοσίᾳ βασιλικῶς τημελοῦνται. καὶ οἱ λοιποὶ δὲ βασιλεῖς πρεσβευόμενοι, καὶ εἰς συλλόγους ἀφικνούμενοι διατετελέκασιν. ἡ δὲ συρία πρὸς ἄρκτον μὲν ἀφώρισται τῇ κιλικίᾳ, καὶ τῷ ἀμανῷ. ἀπὸ θαλάττης δ' ἐπὶ τὸ ζεῦγμα τοῦ εὐφράτου, στάδιοί εἰσιν ἀπὸ τοῦ ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τοῦ ζεύγματος τοῦ κατὰ κομμαγηνήν. οἱ τὸ λεχθὲν πλευρὸν ἀφορίζοντες, οὐκ ἐλάττους τῶν τετρακοσίων. πρὸς ἕω δὲ τῷ εὐφράτῃ. καὶ τοῖς ἐντὸς τοῦ εὐφράτου σκηνίταις ἄραψι. πρὸς δὲ νότον τῇ εὐδαίμονι ἀραβίᾳ. καὶ τῇ αἰγύπτῳ. πρὸς δύσιν δὲ τῷ αἰγυπτιακῷ πελάγει μέχρι ἰσσοῦ. μέρη δ' αὐτῆς τίθεμεν, ἀπὸ τῆς κιλικίας ἀρξάμενοι καὶ τοῦ ἀμανοῦ. τήν τε κομμαγηνήν, καὶ τὴν σελευκίδα καλουμένην τῆς συρίας. ἔπειτα τὴν κοίλην συρίαν. τελευταίαν δ' ἐν μὲν τῇ παραλίᾳ τὴν φοινίκην. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ, τὴν ἰουδαίαν. ἔνιοι δὲ τὴν συρίαν ὅλην εἴς τε κοιλοσύρους, καὶ φοίνικας διελόντες, τούτοις ἀναμεμίχθαί φασι τέτταρα ἔθνη. ἰουδαίους. ἰδουμαίους. γαζαίους. ἀζωτίους. γεωργικοὺς μέν, ὡς τοὺς σύρους, καὶ κοιλοσύρους. ἐμπορικοὺς δέ, ὡς τοὺς φοίνικας. καθόλου μὲν οὕτω. καθ' ἕκαστα δὲ ἡ κομμαγηνὴ μικρά τις ἐστίν. ἔχει δ' ἐρυμνὴν πόλιν σαμόσατα. ἐν ᾗ τὸ βασίλειον ὑπῆρχε. νῦν δ' ἐπαρχία γέγονε. χώρα δὲ περίκειται σφόδρα εὐδαίμων ὀλίγη. ἐνταῦθα δὲ νῦν ἐστι τὸ ζεῦγμα τοῦ εὐφράτου. κατὰ τοῦτο δὲ σελεύκεια ἵδρυται φρούριον τῆς μεσοποταμίας. προσωρισμένον ἀπὸ πομπηΐου τῇ κομμαγηνῇ. ἐν ᾧ τὴν σελήνην ἐπικληθεῖσαν κλεοπάτραν, τιγράνης ἀνεῖλε καθείρξας χρόνον τινά. ἡνίκα τῆς συρίας ἐξέπεσεν. ἡ δὲ σελευκὶς ἀρίστη μέν ἐστι τῶν λεχθεισῶν μερίδων. καλεῖται δὲ τετράπολις. καὶ ἔστι κατὰ τὰς ἐξεχούσας ἐν αὐτῇ πόλεις, ἐπεὶ πλείους γ' εἰσί. μέγισται δὲ τέτταρες. ἀντιόχεια ἡ ἐπὶ δάφνῃ. καὶ σελεύκεια ἡ ἐν πιερίᾳ. καὶ ἀπάμεια δὲ καὶ λαοδίκεια. αἵπερ καὶ ἐλέγοντο ἀλλήλων ἀδελφαὶ διὰ τὴν ὁμόνοιαν. σελεύκου τοῦ νικάτορος κτίσματα. ἡ μὲν οὖν μεγίστη, τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐπώνυμος. ἡ δ' ἐρυμνοτάτη αὐτοῦ, αἱ δ' ἄλλαι. ἡ μὲν ἀπάμεια τῆς γυναικὸς αὐτοῦ ἀπάμας. ἡ δὲ λαοδίκεια τῆς μητρός, οἰκείως δὲ τῇ τετραπόλει, καὶ εἰς σατραπείας διῃρέθη τέτταρας. ἡ δὲ σελευκὶς ὥς φησι ποσειδώνιος, εἰς ὅσας

καὶ ἡ κοίλη συρία, εἰς μίαν τὴν μεσοποταμίαν. ἔστι δ' ἡ μὲν ἀντιόχεια, καὶ αὕτη τετράπολις. ἐκ τετ-
τάρων συνεστῶσα μερῶν. τετείχισται δὲ καὶ κοινῷ τείχει καὶ ἰδίῳ καθ' ἕκαστον τὸ κτίσμα. τὸ μὲν οὖν πρῶ-
τον αὐτῶν ὁ νικάτωρ συνῴκισε. μεταγαγὼν ἐκ τῆς ἀντιγονίας τοὺς οἰκήτορας. τὴν πλησίον ἐτείχισεν
ἀντίγονος ὁ φιλίππου μικρῷ πρότερον. τὸ δὲ δεύτερον, τοῦ πλήθους τῶν οἰκητόρων ἐστὶ κτίσμα. τὸ δὲ
τρίτον σελεύκου τοῦ καλλινίκου. τὸ δὲ τέταρτον ἀντιόχου τοῦ ἐπιφανοῦς. καὶ δὴ καὶ μητρόπολίς ἐστιν
αὕτη τῆς συρίας. καὶ τὸ βασίλειον ἐνταῦθα ἵδρυτο τοῖς ἄρχουσι τῆς χώρας. οὐ πολύ τε λείπεται,
καὶ δυνάμει καὶ μεγέθει σελευκείας τῆς ἐπὶ τῷ τίγρει. καὶ ἀλεξανδρείας τῆς πρὸς αἰγύπτῳ. συ-
νῴκισε δ' ὁ νικάτωρ ἐνταῦθα, καὶ τοὺς ἀπογόνους τριπτολέμου. περὶ οὗ μικρῷ πρόσθεν ἐμνήσθημεν.
διόπερ ἀντιοχεῖς, ὡς ἥρωα τιμῶσι. καὶ ἄγουσιν ἑορτὴν ἐν τῷ κασίῳ ὄρει τῷ περὶ σελεύκειαν. φασὶ δ'
αὐτὸν ὑπ' ἀργείων πεμφθέντα ἐπὶ τὴν τῆς ἰοῦς ζήτησιν, ἐν τύρῳ πρῶτον ἀφανοῦς γενηθείσης, πλα-
νᾶσθαι κατὰ τὴν κιλικίαν. ἐνταῦθα δὲ τῶν σὺν αὐτῷ τινὰς ἀργείων, κτίσαι τὴν ταρσὸν ἀπελθέντας
παρ' αὐτούς, τοὺς δ' ἄλλους συνακολουθήσαντας εἰς τὴν ἑξῆς παραλίαν, ἀπογνόντας τῆς ζητήσεως
ἐν τῇ ποταμίᾳ τοῦ ὀρόντου καταμεῖναι σὺν αὐτῷ. τὸν μὲν οὖν υἱὸν τοῦ τριπτολέμου γόρδυν, ἔχοντά
τινας τῶν σὺν αὐτῷ πατρὶ λαῶν. εἰς τὴν γορδυαίαν ἀφικέσθαι. τῶν δ' ἄλλων τοὺς ἀπογόνους συνοίκους γε-
νέσθαι τοῖς ἀντιοχεῦσιν. ὑπέρκειται δὲ τετταράκοντα σταδίοις ἡ δάφνη. κατοικία μετρία. μέγα δὲ καὶ
συνηρεφὲς ἄλσος, διαῤῥεόμενον πηγαίοις ὕδασιν. ἐν μέσῳ δὲ ἄσυλον τέμενος. καὶ νεὼς ἀπόλλωνος, καὶ
ἀρτέμιδος. ἐνταῦθα δὲ πανηγυρίζειν ἔθος τοῖς ἀντιοχεῦσι, καὶ τοῖς ἀστυγείτοσι. κύκλος δὲ τοῦ ἄλσους
ὀγδοήκοντα στάδιοι. ῥεῖ δὲ τῆς πόλεως πλησίον ὀρόντης ποταμός. οὗτος δ' ἐκ τῆς κοίλης συρίας τὰς
ἀρχὰς ἔχων. εἶθ' ὑπὸ γῆν ἐνεχθείς, ἀναδίδωσι πάλιν τὸ ῥεῦμα. καὶ διὰ τῆς ἀπαμέων εἰς τὴν ἀντιόχειαν
προελθών, πλησιάσας τῇ πόλει. πρὸς τὴν θάλατταν καταφέρεται τὴν κατὰ σελεύκειαν. τὸ δ' ὄνομα
τοῦ γεφυρώσαντος αὐτὸν ὀρόντου μετέλαβε. καλούμενος πρότερον τυφῶν. μυθεύουσι δ' ἐνταῦθά που
τὰ περὶ τὴν κεραύνωσιν τοῦ τυφῶνος. τοὺς ἀρίμους, περὶ ὧν εἴπομεν καὶ πρότερον. φασὶ δὲ τυπτό-
μενον τοῖς κεραυνοῖς, ἐστὶν δὲ δράκοντα, φεύγειν κατάδυσιν ζητοῦντα. τοῖς μὲν οὖν ὁλκοῖς ἐντεμεῖν
τὴν γῆν, καὶ ποιῆσαι τὸ ῥεῖθρον πηγήν. ἐκ δὲ τούτου γενέσθαι τοὔνομα τῷ ποταμῷ. πρὸς δύσιν μὲν οὖν
θάλαττα ὑπόκειται τῇ ἀντιοχείᾳ κατὰ σελεύκειαν. πρὸς ἣν καὶ τὰς ἐκβολὰς ὁ ὀρόντης ποιεῖται. διέ-
χουσι τῶν μὲν ἐκβολῶν, σταδίους τετταράκοντα. τῆς δ' ἀντιοχείας ἑκατὸν εἴκοσιν. ἀνάπλους δ' ἐκ θαλάτ-
της ἐστὶν εἰς τὴν ἀντιόχειαν, αὐθημερόν. πρὸς ἕω δ' ὁ εὐφράτης ἐστί. καὶ ἡ βαμβύκη. καὶ ἡ βέροια. τῇ ἀν-
τιοχείᾳ πολίχνια τυραννούμενά ποτε ὑπὸ διονυσίου τοῦ ἡρακλέωνος. διέχει δ' ἡ ἡράκλεια, σταδίους εἴκοσι
τοῦ τῆς ἀθηνᾶς ἱεροῦ τῆς κυρρηστίδος. εἶτα ἡ κυρρηστικὴ μέχρι τῆς ἀντιοχίδος. ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ἐστὶ τό τε
ἀμανὸν πλησίον, καὶ ἡ κομμαγηνή. συνάπτει δὲ τούτοις ἡ κυρρηστικὴ μέχρι δεῦρο παρατείνουσα. ἐνταῦθα
δ' ἐστὶ πόλις γίνδαρος. ἀκρόπολις τῆς κυρρηστικῆς. καὶ λῃστήριον εὐφυές. καὶ ἡράκλειόν τι καλούμενον
πλησίον. περὶ οὓς τόπους ὑπὸ οὐεντιδίου, πάκορος διεφθάρη ὁ πρεσβύτατος τῶν τοῦ παρθυαίου
παίδων ἐπιστρατεύσας τῇ συρίᾳ. τῇ δὲ γινδάρῳ συνάπτουσιν αἱ πάγραι τῆς ἀντιοχίδος, χωρίον εὐ-
ερυμνὸν κατὰ τὴν ὑπέρθεσιν τοῦ ἀμανοῦ. τὴν ἐκ τῶν ἀμανίδων πυλῶν εἰς τὴν συρίαν κείμενον. ὑποπί-
πτει μὲν οὖν ταῖς πάγραις τὸ τῶν ἀντιοχέων πεδίον. δι' οὗ ῥεῖ ὁ ἀρκευθος ποταμός, καὶ ὁ ὀρόντης καὶ
ὁ λαβώτας. ἐν δὲ τούτῳ ἐστὶ τῷ πεδίῳ, καὶ ὁ μελεάγρου χάραξ. καὶ ὁ οἰνοπάρας ποταμός. ἐφ' ᾧ τὸν
βάλαν ἀλεξάνδρου μάχῃ νικήσας ὁ φιλομήτωρ πτολεμαῖος ἐτελεύτησεν ἐκ τραύματος. ὑπέρκειται
δ' αὐτῶν λόφος τραπεζὼν ἀπὸ τῆς ὁμοιότητος καλούμενος. ἐφ' ᾧ οὐεντίδιος πρὸς φρανικάτην τὸν παρ-
θυαίων στρατηγὸν ἔσχε τὸν ἀγῶνα. πρὸς θαλάττῃ δὲ τούτων ἐστὶν ἡ σελεύκεια. καὶ ἡ πιερία. ὄρος συνεχὲς
τῷ ἀμανῷ. καὶ ἡ ῥωσσὸς μεταξὺ ἰσσοῦ, καὶ σελευκείας ἱδρυμένη. ἐκαλεῖτο δ' ἡ σελεύκεια πρότερον ὕ-
δατος ποταμοί. ἔρυμα δέ ἐστιν ἀξιόλογον καὶ κρείττων βίας ἡ πόλις. διόπερ καὶ ἐλευθέραν αὐτὴν ἔκρι-
νε πομπήϊος ἀποκλείσας τιγράνην. πρὸς νότον δ' ἐστὶ τοῖς μὲν ἀντιοχεῦσιν, ἀπάμεια ἐν μεσογαίᾳ κειμέ-
νη. τοῖς δὲ σελευκεῦσι τὸ κάσιον ὄρος καὶ τὸ ἀντικάσιον. ἔτι δὲ πρότερον μετὰ τὴν σελεύκειαν αἱ ἐκβο-
λαὶ τοῦ ὀρόντου. εἶτα τὸ νυμφαῖον σπήλαιόν τι ἱερόν. εἶτα τὸ κάσιον. ἐφεξῆς δὲ ποσίδιον πολίχνη καὶ
ἡράκλεια. εἶτα λαοδίκεια, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ κάλλιστα ἐκτισμένη. καὶ εὐλίμενος πόλις. χώραν τε ἔχουσα
πολύοινον πρὸς τῇ ἄλλῃ εὐκαρπίᾳ. τοῖς μὲν οὖν ἀλεξανδρεῦσιν αὕτη παρέχει τὸ πλεῖστον τοῦ οἴνου. τὸ
ὑπερκείμενον τῆς πόλεως ὄρος πᾶν κατάμπελον ἔχουσα μέχρι σχεδόν τι τῶν κορυφῶν. αἱ δὲ κορυφαὶ
τῆς μὲν λαοδικείας πολὺ ἄπωθεν εἰσίν. ἠρέμα ἀπ' αὐτῆς καὶ κατ' ὀλίγον ἀνακλινόμεναι. τῆς ἀπα-
μείας δ' ὑπερκύπτουσιν ἐπ' ὄρθιον ὕψος ἀνατεταμέναι. ἐλύπησε δ' οὐ μετρίως δολοβέλλας καταφυ-
φυγὼν εἰς αὐτὴν καὶ ἐμπολιορκηθεὶς ὑπὸ κασσίου μέχρι θανάτου. συνδιαφθείρας ἑαυτῷ, καὶ τῆς πό-
λεως πολλὰ μέρη. ἡ δ' ἀπάμεια καὶ πόλιν ἔχει τὸ πλέον εὐερκῆ. λόφος γάρ ἐστιν ἐν πεδίῳ κοίλῳ τετει-
χισμένος καλῶς. ὃν ποιεῖ χεῤῥονησίζοντα ὁ ὀρόντης. καὶ λίμνη περικειμένη μεγάλη. καὶ ἕλη
πλατέα. λειμῶνας τε βουβότους, καὶ ἱπποβότους διαχεομένους ὑπερβάλλοντας τὸ μέγεθος. ἥ
τε δὴ πόλις οὕτως ἀσφαλῶς. καὶ δὴ καὶ χεῤῥόνησος ἐκλήθη. διὰ τὸ συμβεβηκός, καὶ χώρας εὐπορεῖ

παμπόλλης εὐθηνούμενος. δίχα δὲ ὁ ὀρόντης ῥεῖ, καὶ περιρρεῖ συχνὴ ἐν ταύτῃ. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ νικά-
τωρ σέλευκος τοὺς πεντακοσίους ἔτρεφεν ἐλέφαντας. καὶ τὸ πλεῖον τῆς στρατιᾶς, καὶ οἱ ὕστερον βασιλεῖς.
ἐκαλεῖτο δὲ καὶ πέλλα ποτὲ ὑπὸ τῶν πρώτων μακεδόνων. διὰ τὸ τοὺς πλείστους τῶν μακεδόνων ἐνταῦ-
θα οἰκῆσαι τῶν στρατευομένων. τὴν δὲ πέλλαν ὡς ἂν μητρόπολιν γεγονέναι τῶν μακεδόνων τὴν φιλίπ-
που, καὶ ἀλεξάνδρου πατρίδα. ἐνταῦθα δὲ, καὶ τὸ λογιστήριον τὸ στρατιωτικὸν, καὶ τὸ ἱπποτροφεῖον,
θήλειαι μὲν ἵπποι βασιλικαὶ πλείους τῶν τρισμυρίων. ὀχεῖα δὲ τούτων τρισχίλια. ἐνταῦθα δὲ καὶ
πωλοδάμναι καὶ ὁπλομάχοι. καὶ ὅσοι παιδευταὶ τῶν πολεμικῶν ἐμισθοδοτοῦντο. δηλοῖ δὲ,
τὴν δύναμιν ταύτην ἥ τε τοῦ τρύφωνος ἐπικληθέντος διοδότου παραύξησις, καὶ ἐπίθεσις τῇ βασιλείᾳ
τῶν σύρων, ἐντεῦθεν ὁρμηθέντος. ἐγεγένητο μὲν γὰρ ἐν σηκοανοῖς. φρουρίῳ τινὶ τῆς ἀπαμέων γῆς. τρα-
φεὶς δ' ἐν τῇ ἀπαμείᾳ, καὶ συσταθεὶς τῷ βασιλεῖ, καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν, ἐπειδὴ νεωτερίζειν ὥρμησεν,
ἐκ τῆς πόλεως ταύτης ἔσχε τὰς ἀφορμὰς τῶν περιοικίδων. λαρίσης τε καὶ τῶν κασιανῶν, καὶ με-
γάρων καὶ ἀπολλωνίας καὶ ἄλλων τοιούτων, αἳ συνετέλουν εἰς ἀπάμειαν ἅπασαι. ἐκεῖνός τε δὴ βασι-
λεὺς τῆς δὲ τῆς χώρας ἀνεδείχθη, καὶ ἀντέσχε πολὺν χρόνον. βάσσος δὲ, καὶ κίλιος μετὰ δυοῖν ταγ-
μάτων ἀποστήσας τὴν ἀπάμειαν διεκαρτέρησε τοσοῦτον χρόνον πολιορκούμενος ὑπὸ δυοῖν στρατο-
πέδων μεγάλων ῥωμαϊκῶν. ὥστ' οὐ πρότερον εἰς τὴν ἐξουσίαν ἧκε, πρὶν ἑκὼν ἐνεχείρισεν ἑαυτὸν
ἐφ' οἷς ἐβεβούλητο. καὶ γὰρ τὴν στρατιὰν ἀπέτρεφεν ἡ χώρα, καὶ συμμάχων εὐπόρει τῶν πλησίων φυ-
λάρχων. ἐχόντων ἐρυμνὰ χωρία. ὧν ἐστι καὶ ἡ λυσιάς. ὑπὲρ τῆς λίμνης κειμένη τῆς πρὸς ἀπα-
μείᾳ. καὶ ἀρέθουσα, καὶ ἡ σαμψικεράμου, καὶ ἰαμβλίχου τοῦ ἐκείνου παιδὸς φυλάρχων τοῦ ἐμεσ-
νῶν ἔθνους. οὐ πόρρω δ' οὐδ' ἡλιούπολις καὶ χαλκὶς ὑπὸ πτολεμαίῳ τῷ μενναίου. τῷ τὸν μαρσύαν
κατέχοντι, καὶ τῶν ἰτουραίων ὀρεινήν. τῶν δὲ συμμαχούντων τῷ βάσσῳ, ἦν καὶ ἀλχαίδαμνος ὁ τῶν
ῥαμβαίων βασιλεὺς τῶν ἐντὸς τοῦ εὐφράτου νομάδων, ἦν δὲ φίλος ῥωμαίων. ἀδικεῖσθαι δὲ νομίσας ὑ-
πὸ τῶν ἡγεμόνων, ἐκπεσὼν εἰς τὴν μεσοποταμίαν ἐμισθοφόρει τότε τῷ βάσσῳ. ἐντεῦθεν δ' ἐστὶ ποσει-
δώνιος ὁ στωϊκός. ἀνὴρ τῶν καθ' ἡμᾶς φιλοσόφων πολυμαθέστατος. ὅμορος δ' ἐστὶ τῇ ἀπαμέων, πρὸς ἕω
μὲν ἡ τῶν φυλάρχων ἀράβων καλουμένη παραποταμία. καὶ ἡ χαλκιδικὴ, ἀπὸ τοῦ μαρσύου καθή-
κουσα, καὶ πᾶσα ἡ πρὸς νότον τοῖς ἀπαμεῦσιν. ἀνδρῶν σκηνιτῶν τὸ πλέον παραπλήσιοι δ' εἰσὶ τοῖς
ἐν τῇ μεσοποταμίᾳ νομάσιν. ἀεὶ δ' οἱ πλησιαίτεροι τοῖς σύροις ἡμερώτεροι. καὶ ἧττον ἄραβες, καὶ σκη-
νῖται. ἡγεμονίας ἔχοντες συντεταγμένας μᾶλλον. καθάπερ ἡ σαμψικεράμου ἀρέθουσα. καὶ ἡ
γαμβάρου. καὶ ἡ θέμελλα, καὶ ἄλλων τοιούτων. τοιαύτη μὲν ἡ μεσόγαια τῆς σελευκίδος. ὁ δὲ παρά-
πλους ὁ λοιπὸς ἀπὸ τῆς λαοδικείας ἐστὶ τοιοῦτος. τῇ γὰρ λαοδικείᾳ πλησιάζει πολίχνια. τό τε πο-
σείδιον, καὶ τὸ ἡράκλειον, καὶ τὰ γάβαλα. εἶτ' ἤδη ἡ τῶν ἀραδίων παραλία πάλτος. καὶ βαλαναία, καὶ
καρανὸς τὸ ἐπίνειον τῆς ἀράδου. λιμένιον ἔχον. εἶτ' ἔνυδρα, καὶ μάραθος πόλις ἀρχαία φοινίκων κα-
τεσπασμένη. τὴν δὲ χώραν ἀράδιοι κατεκληρούχησαν. καὶ τὰ ξύμυρα τὸ ἐφεξῆς χωρίον τούτοις δ' ἡ
ὀρθωσιὰς συνεχής ἐστι. καὶ ὁ ἐλεύθερος ὁ πλησίον ποταμός. ὅν περ ὅριον ποιοῦνταί τινες τῆς σελευ-
κίδος πρὸς τὴν φοινίκην καὶ τὴν κοίλην συρίαν. πρόκειται δ' ἡ ἄραδος ῥαχιώδους τινὸς, καὶ ἀλιμέ-
νου παραλίας. μεταξὺ τοῦ τε ἐπινείου αὐτῆς μάλιστα, καὶ τῆς μαράθου. διέχουσα τῆς γῆς σταδίους
εἴκοσιν. ἔστι δὲ πέτρα περίκλυστος. ὅσον ἑπτὰ τὸν κύκλον σταδίων. πλήρης κατοικίας. τοσαύτη δ' εὐαν-
δρίᾳ κέχρηται μέχρι, καὶ νῦν, ὥστε πολυορόφους οἰκοῦσι τὰς οἰκίας. ἔκτισαν δ' αὐτὴν φυγάδες ὥς
φασιν ἐκ σιδῶνος. τὴν δ' ὑδρείαν τὴν μὲν, ἐκ τῶν ὀμβρίων, καὶ λακκαίων ὑδάτων ἔχουσι. τὴν δ' ἐκ τῆς
περαίας. ἐν δὲ τοῖς πολέμοις ἐκ τοῦ πόρου μικρὸν πρὸ τῆς πόλεως ὑδρεύονται, πηγὴν ἔχοντος ἀφθό-
νου ὕδατος. εἰς ἣν περικατεστρέφεται κλίβανος. καθιεθεὶς ἀπὸ τοῦ ὑδρευομένου σκάφους μολυ-
βοῦς, εὐρύστομος. εἰς πυθμένα συνηγμένος στενόν. ἔχοντα τρῆμα μέτριον. τῷ δὲ πυθμένι περιέσφιγκται
σωλὴν σκύτινος. εἴτ' ἄσκωμα δεῖ λέγειν, ὁ δεχόμενος τὸ ἀναθλιβόμενον. ἐκ τῆς πηγῆς διὰ τοῦ κλιβά-
νου ὕδωρ. τὸ μὲν οὖν πρῶτον ἀναθλιβὲν τὸ τῆς θαλάττης ἐστί. περιμένοντες δὲ τὴν τοῦ καθαροῦ καὶ
ποτίμου ὕδατος ῥύσιν, ὑπολαμβάνουσιν εἰς ἀγγεῖα παρεσκευασμένα ὅσον ἂν δέῃ, καὶ πορθμεύουσιν
εἰς τὴν πόλιν. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν οἱ ἀράδιοι καθ' αὑτοὺς ἐβασιλεύοντο παραπλησίως. ὥσπερ καὶ τῶν
ἄλλων ἑκάστη πόλεων τῶν φοινικίδων. ἔπειτα τὰ μὲν, οἱ πέρσαι. τὰ δ' οἱ μακεδόνες, τὰ δὲ νῦν ῥω-
μαῖοι μετέθηκαν εἰς τὴν παροῦσαν τάξιν. οἱ δ' οὖν ἀράδιοι μετὰ τῶν ἄλλων φοινίκων ὑπήκουον τῶν
συριακῶν βασιλέων ἅτε φίλων. ἔπειτα στασιασάντων ἀδελφῶν δυοῖν. τοῦ τε καλλινίκου σελεύκου. καὶ
ἀντιόχου τοῦ ἱέρακος προσαγορευθέντα, προσθέμενοι τῷ καλλινίκῳ, ποιοῦνται συμβάσεις. ὥστ' ἐ-
ξεῖναι δέχεσθαι τοὺς καταφεύγοντας ἐκ τῆς βασιλείας παρ' αὐτοὺς, καὶ μὴ ἐκδιδόναι ἄκοντας. μὴ
μέντοι μηδ' ἐκπλεῖν ἐᾶν ἄνευ τοῦ ἐπιτρέψαι βασιλέα. συνέβη δ' ἐκ τούτου αὐτοῖς μεγάλα πλεο-
νεκτήματα. οἱ γὰρ καταφεύγοντες ἐπ' αὐτοὺς οὐχ οἱ τυχόντες ἦσαν. ἀλλ' οἱ τὰ μέγιστα πεπιστευμένοι,
καὶ περὶ τῶν μεγίστων δεδιότες. ἐπιξενούμενοι δ' αὐτοῖς εὐεργέτας ἡγοῦντο, καὶ σωτῆρας τοὺς ὑπο-
δεξαμένους. ἀπεμνημόνευόν τε τὴν χάριν, καὶ μάλιστα ἐπανελθόντες εἰς τὴν οἰκείαν. ὥστ' ἐκ τού-

του χώραν τε ἐκτήσαντο τῆς περαίας πολλήν· ἧς τὴν πλείστην ἔχουσι καὶ νῦν. καὶ τἄλλα εὐθυ-
νοῦσι. προσέλαβον δὲ τῇ εὐτυχίᾳ ταύτῃ, καὶ πρόνοιαν καὶ φιλοπονίαν πρὸς τὴν θαλαττουργίαν. ὁρῶν-
τες γε τοὺς γειτονεύοντας κίλικας τὰ πειρατήρια συνισταμένους, οὐδ' ἅπαξ ἐκοινώνουν αὐτοῖς τῆς τοι-
αύτης ἐπιτηδεύσεως. μετὰ δὲ ὀρθωσίαν ἐστὶ τὸ ἐλεύθερον τρίπολις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τὴν ἐπίκλη-
σιν εἰληφυῖα. τριῶν γάρ ἐστι πόλεων κτίσμα. τύρου. σιδῶνος. ἀράδου. τῇ δὲ τριπόλει συνεχές ἐστι τὸ
τοῦ θεοῦ πρόσωπον. εἰς ὃ τελευτᾷ ὁ λίβανος τὸ ὄρος. μεταξὺ δὲ τριήρης χωρίον τι. δύο δὲ ταῦτ' ἐστὶν ὄρη
τὰ ποιοῦντα τὴν κοίλην καλουμένην συρίαν, ὡς ἂν παράλληλα. ὅ, τε λίβανος καὶ ὁ ἀντιλίβανος· μι-
κρὸν ὕπερθεν τῆς θαλάττης ἀρχόμενα ἄμφω. ὁ μὲν λίβανος τῆς κατὰ τρίπολιν καὶ τὰ τοῦ θεοῦ πρό-
σωπον μάλιστα. ὁ δ' ἀντιλίβανος τῆς κατὰ σιδῶνα. τελευτῶσι δ' ἐγγύς πως τῶν ἀραβίων ὀρῶν. τῶν
ὑπὲρ τῆς δαμασκηνῆς, καὶ τῶν τραχώνων ἐκεῖ λεγομένων εἰς ἄλλα ὄρη γεώλοφα, καὶ καλλίκαρπα.
ἀπολείπουσι δὲ μεταξὺ πεδίον κοῖλον. πλάτος μὲν τὸ ἐπὶ τῇ θαλάττῃ διακοσίων σταδίων. μῆκος δὲ τὸ
ἀπὸ τῆς θαλάττης ἐς τὴν μεσόγαιαν ὁμοῦ τι διπλάσιον. διαρρεῖται δὲ ποταμοῖς ἄρδουσι χώραν εὐ-
δαίμονά τε, καὶ πάμφορον. μέγιστος δὲ τῷ ἰορδάνῃ. ἔχει δὲ καὶ λίμνην ἣ φέρει τὴν ἀρωματῖτιν
σχοῖνον, καὶ κάλαμον. ὡς δ' αὕτως καὶ ἕλη. καλεῖται δ' ἡ λίμνη γεννησαρῖτις. φέρει δὲ, καὶ βάλσα-
μον. τῶν δὲ ποταμῶν ὁ μὲν χρυσορρόας ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς δαμασκηνῶν πόλεως, καὶ χώρας εἰς
τὰς ὀχετείας ἀναλίσκεται σχεδόν τι. πολλὴν γὰρ ἐπάρδει, καὶ βαθεῖαν σφόδρα. τὸν δὲ λύκον, καὶ
τὸν ἰορδάνην ἀναπλέουσι φορτίοις. ἀράδιοι δὲ μάλιστα. τῶν δὲ πεδίων τὸ μὲν πρῶτον τὸ ἀπὸ τῆς θα-
λάττης, μάκρας καλεῖται. καὶ μάκρα πεδίον. ἐν τούτῳ δὲ ποσειδώνιος ἱστορεῖ τὸν δράκοντα πεπτω-
κότα ὁραθῆναι νεκρόν. μῆκος σχεδόν τι, καὶ πλεθριαῖος. πάχος δὲ ὥσθ' ἱππέας ἑκατέρωθεν παρα-
στάντας ἀλλήλους μὴ καθορᾶν. χάσμα δὲ ὥστ' ἔφιππον δέξασθαι. τῆς δὲ φολίδος λεπίδα ἑκάστην
ὑπεραίρουσαν θυρεοῦ. μετὰ δὲ τὴν μάκραν ἐστὶν ὁ μασύας. ἔχων τινὰ, καὶ ὀρεινὰ, ἐν οἷς ἡ χαλκίς. ὥσ-
περ ἀκρόπολις τοῦ μασύου. ἀρχὴ δ' αὐτοῦ λαοδίκεια ἡ πρὸς λιβάνῳ. τὰ μὲν οὖν ὀρεινὰ ἔχουσι πάν-
τα ἰτουραῖοί τε καὶ ἄραβες. κακοῦργοι πάντες. οἱ δ' ἐν τοῖς πεδίοις γεωργοί, κακούμενοι δ' ὑπ' ἐκεί-
νων, ἄλλοτε ἄλλης βοηθείας δέονται. ὁρμητηρίοις δ' ἐρυμνοῖς χρῶνται. καθάπερ οἱ τὸν λίβανον ἔχον-
τες. ἄνω μὲν ἐν τῷ ὄρει σινᾶν. καὶ βόρραμα, καὶ ἄλλα τινὰ τοιαῦτα ἔχουσι τείχη. κάτω δὲ βόστρα, καὶ
γίγαρτον, καὶ τὰ ἐπὶ τῆς θαλάττης σπήλαια, καὶ τὸ ἐπὶ τῷ θεοῦ προσώπῳ φρούριον ἐπιτεθέν.
ἃ κατέσπασε πομπήϊος. ἀφ' ὧν τήν τε βύβλον κατέτρεχε καὶ τὴν ἐφεξῆς ταύτῃ βηρυτόν. αἳ μεταξὺ
κεῖνται σιδῶνος, καὶ τοῦ θεοῦ προσώπου. ἡ μὲν οὖν βύβλος τὸ τοῦ κινύρου βασίλειον, ἱερά ἐστι τοῦ ἀ-
δώνιδος. ἣν τυραννουμένην ἠλευθέρωσε πομπήϊος πελεκίσας ἐκεῖνον. κεῖται δ' ἐφ' ὕψους τινὸς μι-
κρὸν ἄπωθεν τῆς θαλάττης. εἶτα μετὰ ταύτην ἄδωνις ποταμὸς καὶ ὄρος κλίμαξ καὶ βύβλος. εἶθ' ὁ λύ-
κος ποταμὸς καὶ βηρυτός. αὕτη δὲ κατεσπάσθη μὲν ὑπὸ τρύφωνος. ἀνελήφθη δὲ νῦν ὑπὸ ῥωμαίων.
δεξαμένη δύο τάγματα ἃ ἵδρυσεν ἀγρίππας ἐνταῦθα. προσθεὶς καὶ τοῦ μασύου πολλὴν, μέχρι καὶ τῶν
τοῦ ὀρόντου πηγῶν. αἳ πλησίον τοῦ τε λιβάνου καὶ τοῦ παραδείσου καὶ τοῦ αἰγυπτίου τείχους περὶ τὴν
ἀπαμέων γῆν εἰσι. ταῦτα μὲν οὖν τὰ ἐπὶ θαλάττῃ. ὑπὲρ δὲ τοῦ μασύου ἐστὶν ὁ καλούμενος αὐλὼν βασι-
λικός. καὶ ἡ δαμασκηνὴ χώρα διαφερόντως ἐπαινουμένη. ἔστι δὲ καὶ ἡ δαμασκὸς πόλις ἀξιόλογος σχε-
δόν τι καὶ ἐπιφανεστάτη τῶν ταύτῃ κατὰ τὰ περσικά. ὑπέρκεινται δ' αὐτῆς δύο λεγόμενοι τράχωνες.
ἔπειτα πρὸς τὰ ἀράβων μέρη καὶ τῶν ἰτουραίων ἀναμὶξ, ὄρη δύσβατα ἦν. ἐν οἷς καὶ σπήλαια ἦν βα-
θύστομα. ὧν ἓν καὶ τετρακισχιλίους ἀνθρώπους δέξασθαι δυνάμενον ἐν καταδρομαῖς. αἳ τοῖς δαμα-
σκηνοῖς γίνονται πολλαχόθεν. τὸ μέντοι πλέον τὸ ἀπὸ τῆς εὐδαίμονος ἀραβίας, ἐμπόρους λεηλατοῦσιν
οἱ βάρβαροι. ἧττον δὲ συμβαίνει καταλυθέντων νυνὶ τῶν περὶ ζηνόδωρον τῶν λῃστῶν, διὰ τὴν ἐκ τῶν ῥωμαί-
ων εὐνομίαν. καὶ διὰ τὴν ἐκ τῶν στρατιωτῶν ἀσφάλειαν τῶν ἐν τῇ συρίᾳ τρεφομένων. ἅπασα μὲν οὖν
ὑπὲρ τῆς σελευκίδος, ὡς ἐπὶ τὴν αἴγυπτον καὶ τὴν ἀραβίαν ἀνίσχουσα χώρα, κοίλη συρία καλεῖται.
ἰδίως δ' ἡ τῷ λιβάνῳ καὶ τῷ ἀντιλιβάνῳ ἀφωρισμένη. τῆς δὲ λοιπῆς ἡ μὲν ἀπὸ ὀρθωσίας μέχρι πηλου-
σίου παραλία φοινίκη καλεῖται. στενή τις, καὶ ἀλιτενής. ἡ δ' ὑπὲρ ταύτης μεσόγαια μέχρι τῶν ἀράβων.
ἡ μεταξὺ γάζης καὶ ἀντιλιβάνου, ἰουδαία λέγεται. ἐπεὶ οὖν τὴν ἰδίως λεγομένην κοίλην συρίαν ἐπε-
ληλύθαμεν, ἐπὶ τὴν φοινίκην μέτιμεν. ταύτης δὲ τὰ μὲν ἀπὸ ὀρθωσίας μέχρι βηρυτοῦ, λόγου τετύ-
χηκε. μετὰ δὲ βηρυτὸν ἔστι σιδὼν ὅσον ἐν τετρακοσίοις σταδίοις. μεταξὺ δὲ ὁ ταμύρας ποταμός. καὶ τὸ τοῦ
ἀσκληπιοῦ ἄλσος. καὶ λεόντων πόλις. μετὰ δὲ σιδῶνα, μεγίστη τῶν φοινίκων καὶ ἀρχαιοτάτη πόλις τύρος ἐστὶν
ἡ ἐνάμιλλος αὐτῇ κατά τε μέγεθος καὶ κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν καὶ τὴν ἀρχαιότητα ἐκ πολλῶν μύθων
παραδεδομένη. οἱ μὲν οὖν ποιηταὶ, τὴν σιδῶνα τεθρυλλήκασι μᾶλλον. ὅμηρος δὲ οὐ μέμνηται τῆς τύρου.
αἱ δ' εἰς τὴν λιβύην καὶ τὴν ἰβηρίαν ἀποικίαι, μέχρι καὶ ἔξω στηλῶν, τὴν τύρον πλέον ἐξυμνοῦσι μᾶλλον.
ἀμφότεραι δ' οὖν ἔνδοξοι καὶ λαμπραὶ καὶ πάλαι καὶ νῦν. ὁποτέραν δ' ἄν τις εἴποι μητρόπολιν φοι-
νίκων, ἔρις ἐν ἀμφοτέραις ἐστίν. ἡ μὲν οὖν σιδὼν ἐπὶ εὐφυεῖ λιμένι τῆς ἠπείρου τὴν ἵδρυσιν ἔχει. τύρος
δ' ἐστὶν ὅλη νῆσος σχεδόν τι συνῳκισμένη παραπλησίως ὥσπερ ἡ ἄραδος. συνῆπται δὲ χώματι πρὸς τὴν

ἤπειρον, ὃ κατεσκεύασε πολιορκῶν ἀλέξανδρος. δύο δ᾽ ἔχει λιμένας. τὸν μὲν κλειστόν. τὸν δ᾽ ἀνειμένον. ὃν αἰγύπτιον καλοῦσιν. ἐνταῦθα δέ φασι πολυστέγους τὰς οἰκίας. ὥστε καὶ τῶν ἐν ῥώμῃ μᾶλλον. διὸ καὶ σεισμοὺς γενομένους, ἀπολιπεῖν μικρὸν τοῦ ἄρδην ἀφανίσαι τὴν πόλιν. ἐτύχησε δὲ καὶ ὑπ᾽ ἀλεξάνδρου πολιορκίᾳ ληφθεῖσα. ἀλλὰ τῶν τοιούτων συμφορῶν, κατέστη κρείττων καὶ ἀνέλαβεν αὐτήν. τῇ τε ναυτιλίᾳ. καθ᾽ ἣν ἁπάντων τῶν ἀεὶ κρείττους εἰσὶ κοινῇ φοίνικες, καὶ τοῖς πορφυρείοις. πολὺ γὰρ ἐξήτασται πασῶν ἡ τυρία καλλίστη πορφύρα. καὶ ἡ θήρα πλησίον. καὶ τἄλλα εὔπορα τὰ πρὸς βαφὴν ἐπιτήδεια. καὶ δυσδίαιτον μὲν ποιεῖ τὴν πόλιν ἡ πολυπληθία τῶν βαφείων. πλουσίαν δὲ διὰ τὴν τοιαύτην ἀνδρείαν. οὐχ ὑπὸ τῶν βασιλέων δ᾽ ἐκρίθησαν αὐτόνομοι μόνον, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τῶν ῥωμαίων. μικρὰ ἀναλώσαντες βεβαιωσάντων τὴν ἐκείνων γνώμην. τιμᾶται δὲ καθ᾽ ὑπερβολὴν ἡρακλῆς ὑπ᾽ αὐτῶν. τῆς δὲ περὶ τὰς ναυστολίας δυνάμεως, τὸ πλῆθος, καὶ τὸ μέγεθος τῶν ἀποικίδων ἐστὶ πόλεων τεκμήριον. οὗτοι μὲν οὖν τοιοῦτοι. σιδόνιοι δὲ πολύτεχνοί τινες παραδέδονται καὶ καλλίτεχνοι καθάπερ καὶ ὁ ποιητὴς δηλοῖ. πρὸς δὲ, καὶ φιλόσοφοι. περί τε ἀστρονομίαν καὶ ἀριθμητικήν. ἀπὸ τῆς λογιστικῆς ἀρξάμενοι, καὶ τῆς νυκτιπλοΐας. ἐμπορικὸν γὰρ ναυκληρικὸν ἑκάτερον. καθάπερ καὶ τῶν αἰγυπτίων εὕρημα γεωμετρίαν φασὶν, ἀπὸ τῆς χωρομετρίας ἣν ὁ νεῖλος ἀπεργάζεται. συγχέων τοὺς ὅρους κατὰ τὰς ἀναβάσεις. ταύτην μὲν οὖν παρ᾽ αἰγυπτίων ἥκειν εἰς τοὺς ἕλληνας πεπιστεύκασιν. ἀστρονομίαν δὲ καὶ ἀριθμητικὴν, παρὰ φοινίκων. νυνὶ δὲ πάσης καὶ τῆς ἄλλης φιλοσοφίας εὐπορίαν, πολὺ πλείστην λαβεῖν ἐστὶν ἐκ τούτων τῶν πόλεων. εἰ δὲ δεῖ ποσειδωνίῳ πιστεῦσαι, καὶ τὸ περὶ τῶν ἀτόμων δόγμα, παλαιόν ἐστιν ἀνδρὸς σιδωνίου μώχου πρὸ τῶν τρωϊκῶν χρόνων γεγονότος. τὰ μὲν οὖν παλαιὰ ἐάσθω. καθ᾽ ἡμᾶς δὲ ἐκ σιδῶνος μὲν, ἔνδοξοι φιλόσοφοι γεγόνασι. βοηθές τε ᾧ συνεφιλοσοφήσαμεν ἡμεῖς τὰ ἀριστοτέλεια. καὶ διόδοτος ἀδελφὸς αὐτοῦ. ἐκ τύρου δὲ ἀντίπατρος. καὶ μικρὸν πρὸ ἡμῶν ἀπολλώνιος ὁ τὸν πίνακα ἐκθεὶς τῶν ἀπὸ ζήνωνος φιλοσόφων καὶ τῶν βιβλίων. διέχει δὲ τῆς σιδῶνος ἡ τύρος, οὐ πλείους τῶν διακοσίων σταδίων. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ πολίχνιον. ὀρνίθων πόλις λεγομένη. εἶτα πρὸς τύρῳ ποταμὸς ἐξίησι. μετὰ δὲ τὴν τύρον ἡ παλαίτυρος ἐν τριάκοντα σταδίοις. εἶθ᾽ ἡ πτολεμαΐς ἐστὶ μεγάλη πόλις. ἣν ἄκην ὠνόμαζον πρότερον. ᾗ ἐχρῶντο ὁρμητηρίῳ πρὸς τὴν αἴγυπτον οἱ πέρσαι. μεταξὺ δὲ τῆς ἄκης καὶ τύρου, θινώδης αἰγιαλός ἐστιν ὁ φέρων τὴν ὑαλῖτιν ἄμμον. ἐνταῦθα μὲν οὖν φασὶ μὴ χεῖσθαι κομισθεῖσαν. εἰς σιδῶνα δὲ τὴν χωνείαν δέχεσθαι. τινὲς δὲ καὶ τοῖς σιδωνίοις εἶναι τὴν ὑαλῖτιν ψάμμον ἐπιτηδείαν εἰς χύσιν, οἱ δὲ, πᾶσαν πανταχοῦ κινεῖσθαι φασίν. ἤκουσα δ᾽ ἐν τῇ ἀλεξανδρείᾳ παρὰ τῶν ὑαλουργῶν, εἶναί τινα καὶ κατ᾽ αἴγυπτον ὑαλῖτιν γῆν. ἧς χωρὶς οὐχ οἷόν τε τὰς πολυχρόους καὶ πολυτελεῖς κατασκευὰς ἀποτελεσθῆναι. καθάπερ καὶ ἐν ἄλλοις ἄλλων μιγμάτων δεῖν. καὶ ἐν ῥώμῃ δὲ πολλὰ παρευρίσκεσθαι φασί. καὶ πρὸς τὰς χρόας καὶ πρὸς τὴν ῥᾳστώνην τῆς κατασκευῆς. καθάπερ ἐπὶ τῶν κρυσταλλοφανῶν. ὅπου γε καὶ τρυβλίον χαλκοῦ πρίασθαι καὶ ἐκπωμάτιον ἐστίν. ἱστορεῖται δὲ παράδοξον πάθος τῶν πάνυ σπανίων. κατὰ τὸν αἰγιαλὸν τοῦτον τὸν μεταξὺ τῆς τε τύρου, καὶ τῆς πτολεμαΐδος. καθ᾽ ὃν γὰρ καιρὸν οἱ πτολεμαεῖς μάχην συνάψαντες πρὸς σαρπηδόνα τὸν στρατηγὸν ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, τροπῆς γενομένης λαμπρᾶς, ἐπέκλυσεν ἐκ τοῦ πελάγους κῦμα τοὺς φεύγοντας ὅμοιον πλημμυρίδι. καὶ τοὺς μὲν, εἰς τὸ πέλαγος ἀφήρπασε καὶ διέφθειρεν. οἱ δ᾽ ἐν τοῖς κοίλοις τόποις ἔμειναν νεκροί. διαδεξαμένη δὲ ἡ ἄμπωτις πάλιν ἀνεκάλυψε. καὶ ἔδειξε τὰ σώματα τῶν κειμένων ἀναμὶξ ἐν νεκροῖς ἰχθύσι. τοιαῦτα δὲ καὶ περὶ τὸ κάσιον συμβαίνει τὸ πρὸς αἰγύπτῳ. σπασμῷ τινὶ ὀξεῖ, καὶ ἁπλῷ περιπιπτούσης τῆς γῆς, καὶ εἰς ἑκάτερον μεταβαλλομένης ἅπαξ. ὥστε τὸ μὲν μετεωρισθὲν αὐτῆς μέρος ἐπάγειν τὴν θάλατταν. τὸ δὲ συνίζησιν δέξασθαι. στρεφομένης δὲ, τὴν ἀρχαίαν πάλιν ἕδραν ἀπολαβεῖν τὸν τόπον. ποτὲ μὲν οὖν καὶ ἐξαλλάξεώς τινος γενομένης. ποτὲ δ᾽ οὔ. τάχα καὶ περιόδοις τισὶν ἐνδεδεμένων τῶν τοιούτων παθῶν. ἀδήλως ἡμῖν καθάπερ τοῦτο καὶ ἐπὶ τῶν κατὰ τὸν νεῖλον ἀναβάσεων λέγεται, διαφόρως γινομένων, ἄδηλον δὲ τὴν τάξιν ἐχουσῶν. μετὰ δὲ τὴν ἄκην, στράτωνος πύργος πρόσορμον ἔχων. μεταξὺ δὲ ὅ τε κάρμηλος τὸ ὄρος. καὶ πολιχνίων ὀνόματα. πλέον δ᾽ οὐδὲν συκαμίνων πόλις βουκόλων. καὶ κροκοδείλων πόλις. καὶ ἄλλα τοιαῦτα. εἶτα δρυμὸς μέγας τις. εἶτα ἰόππη. καθ᾽ ἣν ἡ ἀπὸ τῆς αἰγύπτου παραλία σημειωδῶς ἐπὶ τὴν ἄρκτον κάμπτεται. πρότερον ἐπὶ τὴν ἕω τεταμένη. ἐνταῦθα δὲ μυθεύουσί τινες τὴν ἀνδρομέδαν ἐκτεθῆναι τῷ κήτει. ἐν ὕψει γάρ ἐστιν ἱκανῶς τὸ χωρίον. ὥστ᾽ ἀφορᾶσθαι φασὶν ἀπ᾽ αὐτοῦ τὰ ἱεροσόλυμα τὴν τῶν ἰουδαίων μητρόπολιν. καὶ δὴ καὶ ἐπινείῳ τούτῳ κέχρηνται. καταβάντες μέχρι θαλάττης οἱ ἰουδαῖοι. τὰ δ᾽ ἐπίνεια τῶν ληστῶν ληστήρια δηλονότι ἐστί. τούτων δὲ καὶ ὁ κάρμηλος ὑπῆρξε. καὶ ὁ δρυμός. καὶ δὴ καὶ εὐάνδρησεν οὗτος ὁ τόπος. ὥστ᾽ ἐκ τῆς πλησίον κώμης ἰαμνείας, καὶ τῶν κατοικιῶν τῶν κύκλῳ τέτταρας μυριάδας ὁπλίζεσθαι. εἰσὶ δ᾽ ἐντεῦθεν εἰς τὸ κάσιον τὸ πρὸς πηλουσίῳ μικρῷ πλείους, ἢ χίλιοι στάδιοι. τριακόσιοι δ᾽ ἄλλοι πρὸς αὐτὸ τὸ πηλούσιον. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ, καὶ ἡ γαδαρίς ἐστιν. ἣν καὶ αὐτὴν ἐξιδιάσαντο οἱ ἰουδαῖοι. εἶτ᾽ ἄζωτος, καὶ ἀσκάλων. ἀπὸ δὲ ἰαμνείας εἰς ἄζωτον καὶ ἀσκάλωνα εἰσὶν ὅσον διακόσιοι στάδιοι. κρομμύων τ᾽ ἀγαθός ἐστιν ἡ χώρα τῶν ἀσκαλωνιτῶν. πόλισμα δὲ μικρόν. ἐντεῦθεν ἦν ἀντίοχος ὁ φιλόσοφος. μικρὸν πρὸ ἡ-

μῶν γειτονιῶς. ἐκ δὲ τῶν γαδαρῶν φιλόδημός τε ὁ ἐπικούρειος γεγονὼς, καὶ μελέαγρος. καὶ μένιππος ὁ σπου-
δογελοῖος. καὶ θεόδωρος ὁ καθ᾽ ἡμᾶς ῥήτωρ. εἶθ᾽ ὁ τῶν γαζαίων λιμὴν πλησίον. ὑπέρκειται δὲ καὶ ἡ πό-
λις ἐν ἑπτὰ σταδίοις, ἔνδοξός ποτε γενομένη. κατεσπασμένη δ᾽ ὑπὸ ἀλεξάνδρου, καὶ μένουσα ἔρημος.
ἐντεῦθεν δ᾽ ὑπέρβασις λέγεται χιλίων διακοσίων ἑξήκοντα σταδίων εἰς ἄιλαν πόλιν ἐπὶ τῷ μυχῷ τοῦ
ἀραβίου κόλπου κειμένην. διττός δ᾽ ἐστίν. ὁ μὲν εἰς ἔχων τὸ πρὸς τῇ ἀραβίᾳ, καὶ τῇ γάζῃ μέρος. ὃν ἀλα-
νίτην προσαγορεύουσιν ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῷ πόλεως. ὁ δ᾽ εἰς τὸ πρὸς αἰγύπτῳ κατὰ τὴν ἡρώων πόλιν. εἰς ὃν
ἐκ πηλουσίου ἡ ὑπέρθεσις ἐπιτομωτέρα. δι᾽ ἐρήμων δὲ καὶ ἀμμωδῶν χωρίων αἱ ὑπερβάσεις ἐπὶ
καμήλων. πολὺ δὲ καὶ τὸ τῶν ἑρπετῶν ἐν αὐταῖς πλῆθος. μετὰ δὲ γάζαν, ῥαφία. ἐν ᾗ μάχη συνέβη πτο-
λεμαίῳ τε τῷ τετάρτῳ. καὶ ἀντιόχῳ τῷ μεγάλῳ. εἶτα ῥινοκόλουρα. ἀπὸ τῶν ἐσωκισμένων τὰς ῥῖ-
νας οὕτω καλουμένη. τῶν γὰρ αἰθιόπων τις ἐπελθὼν ἐπὶ τὴν αἴγυπτον, ἀντὶ τοῦ ἀναιρεῖν τοὺς κακούρ-
γους, ἀποτέμνων τὰς ῥῖνας ἐνταῦθα κατῴκισεν. ὡς οὐκ ἂν ἔτι τολμήσοντας ἀναιρεῖν, διὰ τὴν αἰσχύνην
τῆς ὄψεως. καὶ αὕτη μὲν οὖν ἡ ἀπὸ γάζης λυπρὰ πᾶσα, καὶ ἀμμώδης. ἔτι δὲ μᾶλλον ἐφεξῆς τοιαύ-
την ὑπερκειμένην ἔχουσι τὴν σερβωνίδα λίμνην παράλληλον πρὸς τῇ θαλάττῃ μικρὰν δίοδον ἀπο-
λείπουσαν μεταξὺ μέχρι τοῦ ἐκρήγματος καλουμένου μήκους, ὅσον διακοσίων σταδίων. πλάτος δὲ τὸ μέγι-
στον πεντήκοντα. τὸ δ᾽ ἔκρηγμα συγκέχωσται. εἶτα συνεχὴς ἄλλη τοιαύτη ἡ ἐπὶ τὸ κάσιον. κἀκεῖθεν
ἐπὶ τὸ πηλούσιον. ἔστι δὲ τὸ κάσιον, θινώδης τις λόφος ἀκρωτηριάζων. ἄνυδρος. ὅπου τὸ πομπηΐου τοῦ
μάγνου σῶμα κεῖται. καὶ διός ἐστιν ἱερὸν κασίου. πλησίον δὲ καὶ ἐσφάγη ὁ μάγνος δολοφονηθεὶς ὑπὸ
„ τῶν αἰγυπτίων. εἶτ᾽ ἐπὶ πηλούσιον ὁδὸς ἐν ᾗ τὰ γέρρα, καὶ ὁ χαβρίου λεγόμενος χάραξ. καὶ τὰ πρὸς
τῷ πηλουσίῳ βάραθρα. ἃ ποιεῖ ὁ παρεκχεόμενος νεῖλος. φύσει κοίλων καὶ ἑλωδῶν ὄντων τῶν τόπων.
τοιαύτη μὲν ἡ φοινίκη. φησὶ δ᾽ ἀρτεμίδωρος εἰς τὸ πηλούσιον ἐκ μὲν ὀρθωσίας εἶναι σταδίους τρισχι-
λίους ἑξακοσίους πεντήκοντα κατακολπίζοντι. ἐκ δὲ μελαινῶν, ἢ μελαινίων τῆς κιλικίας τὴν πρὸς κε-
λένδερειν, ἐπὶ μὲν τὰ μεθόρια τῆς κιλικίας, καὶ τῆς συρίας, χιλίους καὶ ἐννακοσίους. ἐντεῦθεν δὲ ἐ-
πὶ τὸν ὀρόντην πεντακοσίους εἴκοσιν. εἶτ᾽ ἐπὶ ὀρθωσίαν, χιλίους ἑκατὸν τριάκοντα. τῆς δ᾽ ἰουδαίας τὰ
μὲν ἑσπέρια ἄκρα τὰ πρὸς τῷ κασίῳ κατέχουσιν ἰδουμαῖοί τε καὶ ἡ λίμνη. ναβαταῖοι δ᾽ εἰσὶν οἱ ἰδου-
μαῖοι. κατὰ στάσιν δ᾽ ἐκπεσόντες ἐκεῖθεν προσεχώρησαν τοῖς ἰουδαίοις. καὶ τῶν νομίμων τῶν αὐτῶν
ἐκείνοις ἐκοινώνησαν. πρὸς θαλάττῃ δὲ ἡ σερβωνὶς τὰ πολλὰ κατέχει, καὶ ἡ συνεχὴς μέχρι ἱεροσολύμων.
καὶ γὰρ ταῦτα πρὸς θαλάττῃ ἐστίν. ἀπὸ γὰρ τοῦ ἐπινείου τῆς ἰόπης εἴρηται, ὅτι ἐστὶν ἐν ὄψει. ταῦτα μὲν προ-
σάρκτια. τὰ πολλὰ δ᾽ ὡς ἕκαστα εἰσὶν ὑπὸ φύλων οἰκούμενα μικτῶν. ἔκ τε αἰγυπτίων ἐθνῶν, καὶ ἀρα-
βίων, καὶ φοινίκων. τοιοῦτοι γὰρ οἱ τὴν γαλιλαίαν ἔχοντες, καὶ τὸν ἱερικοῦντα. καὶ τὴν φιλαδέλφειαν
καὶ σαμάρειαν. ἣν ἡρώδης σεβαστὴν ἐπωνόμασεν. οὕτω δ᾽ ὄντων μιγάδων, ἡ κρατοῦσα μάλιστα φήμη τῶν
περὶ τὸ ἱερὸν τὸ ἐν τοῖς ἱεροσολύμοις πιστευομένων, αἰγυπτίους ἀποφαίνει τοὺς προγόνους τῶν νῦν ἰου-
„ δαίων λεγομένων. μωσῆς γάρ τις τῶν αἰγυπτίων ἱερέων ἔχων τι μέρος τῆς καλουμένης χώρας, ἀπῆ-
„ ρεν ἐκεῖσε ἐνθένδε. δυσχεράνας τὰ καθεστῶτα. καὶ συνεξῆραν αὐτῷ πολλοὶ τιμῶντες τὸ θεῖον. ἔφη τε
„ ἐκεῖνος καὶ ἐδίδασκεν, ὡς οὐκ ὀρθῶς φρονοῦσιν οἱ αἰγύπτιοι θηρίοις εἰκάζοντες, καὶ βασκήμασι τὸ θεῖον.
„ οὐδ᾽ οἱ λίβυες. οὐ δ᾽ οὐδ᾽ οἱ ἕλληνες, ἀνθρωπομόρφους τυποῦντες. εἴη γὰρ ἓν τοῦτο μόνον θεὸς τὸ περιέ-
„ χον ἡμᾶς ἅπαντας καὶ γῆν καὶ θάλατταν. ὃ καλοῦμεν οὐρανὸν, καὶ κόσμον. καὶ τὴν τῶν ὄντων φύσιν.
„ τούτου δὴ τίς ἂν εἰκόνα πλάττειν θαρρήσειε νοῦν ἔχων ὁμοίαν τινὶ τῶν παρ᾽ ἡμῖν. ἀλλ᾽ ἐᾶν δεῖ πᾶσαν ξοα-
„ νοποιΐαν. τέμενος ἀφορίσαντας καὶ σηκὸν ἀξιόλογον τιμᾶν ἕδους χωρίς. ἐγκοιμᾶσθαι δὲ καὶ αὐτοὺς ὑ-
„ πὲρ ἑαυτῶν καὶ ὑπὲρ τῶν ἄλλων ἄλλους τοὺς εὐονείρους. καὶ προσδοκᾶν δεῖν παρὰ τοῦ θεοῦ καὶ δῶ-
„ ρον ἀεί τι καὶ σημεῖον τοὺς σωφρόνως ζῶντας καὶ μετὰ δικαιοσύνης. τοὺς δ᾽ ἄλλους μὴ προσδοκᾶν. ἐκεῖ-
νος μὲν οὖν τοιαῦτα λέγων ἔπεισεν εὐγνώμονας ἄνδρας. καὶ ἀπήγαγεν ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ὅπου
νῦν ἐστι τὸ ἐν τοῖς ἱεροσολύμοις κτίσμα. κατέσχε δὲ ῥᾳδίως. οὐκ ἐπίφθονον ὂν τὸ χωρίον. οὐδ᾽ ὑπὲρ οὗ ἄν
τις ἐσπουδασμένως μαχέσαιτο. ἔστι γὰρ πετρῶδες. αὐτὸ μὲν εὔυδρον. τὴν δὲ κύκλῳ χώραν ἔχει λυπρὰν
καὶ ἄνυδρον. τὴν δ᾽ ἐντὸς ἑξήκοντα σταδίων, καὶ ὑπόπετρον. ἅμα δ᾽ ἀντὶ τῶν ὅπλων τὰ ἱερὰ προὐβάλ-
λετο καὶ τὸ θεῖον. ἵδρυσιν τούτου ζητεῖν ἀξιῶν. καὶ παραδώσειν ὑπισχνούμενος τοιοῦτον σεβασμὸν, καὶ
τοιαύτην ἱεροποιΐαν. ἥτις οὐ δὲ δαπάναις ὀχλήσει τοὺς χρωμένους. οὔτε θεοφορίαις, οὔτε ἄλλαις πραγ-
ματείαις ἀτόποις. οὗτος μὲν οὖν εὐδοκιμήσας τούτοις συνεστήσατο ἀρχὴν οὐ τὴν τυχοῦσαν. ἁπάν-
των προσχωρησάντων ῥᾳδίως τῶν κύκλῳ διὰ τὴν ὁμιλίαν, καὶ τὰ προτεινόμενα. οἱ δὲ διαδεξάμενοι,
χρόνους μέν τινας ἐν τοῖς αὐτοῖς διέμενον δικαιοπραγοῦντες. καὶ θεοσεβεῖς ὡς ἀληθῶς ὄντες. ἔπει-
τ᾽ ἐφισταμένων ἐπὶ τὴν ἱερωσύνην τὸ μὲν πρῶτον δυσδαιμόνων, ἔπειτα τυραννικῶν ἀνθρώ-
πων, ἐκ μὲν τῆς δυσειδαιμονίας αἱ τῶν βρωμάτων ἀποσχέσεις. ὧν περ καὶ νῦν ἔθος ἐστὶν αὐτοῖς
ἀπέχεσθαι. καὶ περιτομαί. καὶ ἐκτομαί. καὶ εἴ τινα τοιαῦτα ἐνομίσθη. ἐκ δὲ τῶν τυραννίδων τὰ
ληστήρια. οἱ μὲν γὰρ ἀφιστάμενοι τὴν χώραν ἐκάκουν, καὶ αὐτὴν καὶ τὴν γειτνιάζουσαν. οἱ δὲ συμπράτ-
τοντες τοῖς ἄρχουσι καθήρπαζον τὰ ἀλλότρια. καὶ τῆς συρίας κατεστρέφοντο, καὶ τῆς φοινίκης

τι μᾶλλον. ἦν δ᾽ ὅμως εὐπρέπειά τις περὶ τὴν ἀκρόπολιν αὐτῶν. οὐχ ὡς τυραννεῖον βδελυττομένων
ἀλλ᾽ ὡς ἱερὸν σεμνυνόντων τε καὶ σεβομένων. πέφυκε γὰρ οὕτω. καὶ κοινόν ἐστι τοῦτο καὶ τοῖς ἕλλησι καὶ
τοῖς βαρβάροις. πολιτικοὶ γὰρ ὄντες ἀπὸ προστάγματος κοινοῦ ζῶσιν. ἄλλως γὰρ οὐχ οἷόν τε τοὺς πολ-
λοὺς, ἕν τι καὶ ταυτὸ ποιεῖν ἡρμοσμένως ἀλλήλοις. ὅπερ ἦν τὸ πολιτεύεσθαι. καὶ ἄλλως πως νέμειν
βίον κοινόν. τὸ δὲ πρόσταγμα διττόν. ἢ γὰρ παρὰ θεῶν ἢ παρὰ ἀνθρώπων. καὶ οἵ γε ἀρχαῖοι τὸ παρὰ
τῶν θεῶν ἐπρέσβευον μᾶλλον καὶ ἐσέμνυνον. καὶ διὰ τοῦτο καὶ ὁ χρηστηριαζόμενος ἦν τότε πολὺς καὶ
τρέχων. εἰς μὲν δωδώνην, ὅπως ἐκ δρυὸς ὑψικόμοιο διὸς βουλὴν ὑπακούσῃ συμβούλῳ τῷ διῒ χρώ-
μενος. εἰς δὲ δελφοὺς τὸν ἐκτεθέντα παῖδα μαστεύων μαθεῖν εἰ μηκέτι εἴη. αὐτὸς δ᾽ ὁ παῖς ἔστειχε τοὺς τε-
κόντας ἐκμαθεῖν θέλων πρὸς δῶμα φοίβου. καὶ ὁ μίνως παρὰ τοῖς κρησίν. ἐννέωρος βασίλευε διὸς με-
γάλου ὀαριστής δι᾽ ἐννέα ὥς φησι πλάτων ἀναβαίνων ἐπὶ τὸ ἄντρον τοῦ διός. καὶ παρ᾽ ἐκείνου τὰ προ-
στάγματα λαμβάνων καὶ παρακομίζων εἰς τοὺς ἀνθρώπους. τὰ δ᾽ ὅμοια ἐποίει καὶ λυκοῦργος ὁ ζηλω-
τὴς αὐτοῦ. πυκνὰ γὰρ ὡς ἔοικεν ἀποδημῶν, ἐπυνθάνετο παρὰ τῆς πυθίας ἃ προσήκει παραγγέλλειν
τοῖς λακεδαιμονίοις. ταῦτα γὰρ ὅπως ποτὲ ἀληθείας ἔχει παρά γε τοῖς ἀνθρώποις ἐπεπίστευτο καὶ
ἐνενόμιστο. καὶ διὰ τοῦτο καὶ οἱ μάντεις ἐτιμῶντο. ὥστε καὶ βασιλείας ἀξιοῦσθαι. ὡς τὰ παρὰ τῶν
θεῶν ἡμῖν ἐκφέροντες παραγγέλματα καὶ ἐπανορθώματα καὶ ζῶντες καὶ ἀποθανόντες. καθά περ
καὶ ὁ τειρεσίας. τῷ καὶ τεθνηῶτι, νόον πόρε περσεφόνεια. οἴῳ πεπνῦσθαι. ταὶ δὲ σκιαὶ ἀΐσσουσι. τοιοῦ-
τος δὲ ὁ ἀμφιαράως, καὶ ὁ τροφώνιος καὶ ὁ ὀρφεὺς. καὶ ὁ μουσαῖος. καὶ ὁ παρὰ τοῖς γέταις θεός. τὸ
μὲν παλαιὸν ζάμολξις πυθαγόρειός τις. καθ᾽ ἡμᾶς δὲ ὁ τῷ βυρεβίστᾳ θεσπίζων, δεκενέος. παρὰ δὲ βο-
σπορηνοῖς ἀχαΐκαρος. παρὰ δὲ τοῖς ἰνδοῖς οἱ γυμνοσοφισταί. παρὰ δὲ τοῖς πέρσαις οἱ μάγοι καὶ νεκυο-
μάντεις. καὶ ἔτι οἱ λεγόμενοι λεκανομάντεις, καὶ ὑδρομάντεις. παρὰ δὲ τοῖς ἀσσυρίοις οἱ χαλδαῖοι.
παρὰ δὲ τοῖς ῥωμαίοις, οἱ τυρρηνικοὶ ὡροσκόποι. τοιοῦτος δέ τις ἦν καὶ ὁ μωσῆς, καὶ οἱ διαδεξάμενοι
ἐκεῖνον. τὰς μὲν ἀρχὰς λαβόντες οὐ φαύλας. ἐκτραπόμενοι δ᾽ ἐπὶ τὸ χεῖρον. ἤδη δ᾽ οὖν φανερῶς τυ-
ραννουμένης τῆς ἰουδαίας, πρῶτος ἀνθ᾽ ἱερέως ἀνέδειξεν ἑαυτὸν βασιλέα ἀλέξανδρος. τούτου δ᾽ ἦσαν
υἱὸς ὑρκανός τε καὶ ἀριστόβουλος. διαφερομένων δὲ περὶ τῆς ἀρχῆς, ἐπῆλθε πομπήϊος καὶ κατέλυσεν
αὐτούς. καὶ τὰ ἐρύματα αὐτῶν κατέσπασε. καὶ αὐτὰ ἐν πρώτοις τὰ ἱεροσόλυμα βίᾳ καταβαλών.
ἦν γὰρ πετρῶδες εὐερκὲς ἔρυμα. ἐντὸς μὲν εὔυδρον. ἐκτὸς δὲ παντελῶς διψηρόν. τάφρον λατομητὴν
ἔχων. βάθος μὲν ἑξήκοντα ποδῶν. πλάτος δὲ πεντήκοντα καὶ διακοσίων. ἐκ δὲ τοῦ λίθου τοῦ λατομη-
θέντος ἐπεπύργωτο τὸ τεῖχος τοῦ ἱεροῦ. κατελάβετο δ᾽ ὥς φησι τηρήσας τὴν τῆς νηστείας ἡμέραν, ἡνίκα
ἀπείχοντο οἱ ἰουδαῖοι παντὸς ἔργου, πληρώσας τὴν τάφρον καὶ ἐπιβαλὼν τὰς διαβάθρας. κατα-
σπάσαι δ᾽ οὖν ἐκέλευσε τὰ τείχη πάντα. καὶ ἀνεῖλεν εἰς δύναμιν τὰ λῃστήρια. καὶ τὰ γαζοφυλάκια
τῶν τυράννων. ἦν δὲ δύο μὲν τὰ ταῖς εἰσβολαῖς ἐπικείμενα τοῦ ἱερικοῦντος θρήξ τε καὶ ταῦρος. ἄλλα
δὲ ἀλεξάνδριόν τε καὶ ὑρκάνιον. καὶ μαχαιροῦς, καὶ λυσιάς. καὶ τὰ περὶ τὴν φιλαδέλφειαν. καὶ ἡ
περὶ γαλιλαίαν σκυθόπολις. ἱερικοῦς δ᾽ ἐστὶ πεδίον κύκλῳ περιεχόμενον ὀρεινῇ τινι καί που καὶ θεα-
τροειδῶς πρὸς αὐτὸ κεκλιμένῃ. ἐνταῦθα δ᾽ ἐστὶν ὁ φοινικών. μεμιγμένην ἔχων καὶ ἄλλην ὕλην ἥμερον
καὶ εὔκαρπον. πλεονάζων δὲ τῷ φοίνικι, ἐπὶ μῆκος σταδίων ἑκατόν. διάρρυτος ἅπας καὶ μεστὸς κατοι-
κιῶν. ἔστι δ᾽ αὐτοῦ καὶ βασίλειον. καὶ ὁ τοῦ βαλσάμου παράδεισος. ἔστι δὲ τὸ φυτὸν θαμνῶδες. κυτίσῳ ἐοικὸς
καὶ τερμίνθῳ. ἀρωματίζον. οὗ τὸν φλοιὸν ἐπισχίσαντες, ὑπολαμβάνουσιν ἀγγείοις τὸν ὀπόν. γλίσχρῳ
γάλακτι παραπλήσιον. ἀναληφθεὶς δ᾽ εἰς κογχάρια λαμβάνει πῆξιν. λύει δὲ κεφαλαλγίας θαυμαστῶς
καὶ ὑποχύσεις ἀρχομένας. καὶ ἀμβλυωπίας. τίμιος οὖν ἐστι καὶ διότι ἐνταῦθα μόνον γεννᾶται. καὶ
ὁ φοινικὼν δὲ τοιοῦτος. ἔχων τὸν καρυωτὸν φοίνικα ἐνταῦθα μόνον. πλὴν τοῦ βαβυλωνίου καὶ τοῦ ἐπέ-
κεινα πρὸς τὴν ἕω. μεγάλη οὖν ἀπ᾽ αὐτῶν ἡ πρόσοδος. καὶ τῷ ξυλοβαλσάμῳ δὲ ὡς ἀρώματι χρῶνται.
ἡ δὲ σερβωνὶς δὲ λίμνη, πολλὴ μέν ἐστι. καὶ γὰρ χιλίων σταδίων εἰρήκασί τινες τὸν κύκλον. τῇ μέντοι πα-
ραλίᾳ παρεκτέταται. μικρῷ τι πλέον τῶν διακοσίων σταδίων μῆκος ἐπιλαμβάνουσα. ἀγχιβαθής.
βαθύτατον ἔχουσα ὕδωρ. ὥστε μὴ δεῖν κολύμβου. ἀλλὰ τὸν ἐμβάντα καὶ μέχρις ὀμφαλοῦ προεμ-
βάντα. εὐθὺς ἐξαίρεσθαι. μεστὴ δ᾽ ἐστὶν ἀσφάλτου αὕτη. ταύτην δὲ ἀναφυσᾶται κατὰ καιροὺς ἀτά-
κτους ἐκ μέσου τοῦ βάθους μετὰ πομφολύγων, ὡς ἂν ζέοντος ὕδατος. κυρτουμένη δ᾽ ἡ ἐπιφάνεια, λόφου
φαντασίαν παρέχει. συναναφέρεται δὲ καὶ ἄσβολος πολλὴ καπνώδης μὲν πρὸς δὲ τὴν ὄψιν ἄδηλος.
ὑφ᾽ ἧς κατιοῦται καὶ χαλκὸς καὶ ἄργυρος καὶ πᾶν τὸ στιλπνὸν μέχρι καὶ χρυσοῦ. ἀπὸ δὲ τοῦ κατιοῦσθαι τὰ
σκεύη γνωρίζουσιν οἱ περιοικοῦντες ἀρχομένην τὴν ἀναβολὴν τοῦ ἀσφάλτου. καὶ παρασκευάζοντες
πρὸς τὴν μεταλλείαν αὐτοῦ, ποιησάμενοι σχεδίας καλαμίνας. ἔστι δ᾽ ἡ ἄσφαλτος γῆς βῶλος. ὑγραινο-
μένη μὲν ὑπὸ θερμοῦ. καὶ ἀναφυσωμένη, καὶ διαχεομένη. πάλιν δὲ μεταβάλλουσα εἰς πάγον ἰσχυρὸν
ὑπὸ τοῦ ψυχροῦ ὕδατος. οἷόν ἐστι τὸ τῆς λίμνης ὕδωρ. ὥστε τομῆς καὶ κοπῆς δεῖσθαι. εἶτ᾽ ἐπιπολάζουσα
διὰ τὴν φύσιν τοῦ ὕδατος ἣν ἔφαμεν. μηδὲ κολύμβου δεῖσθαι μηδὲ βαπτίζεσθαι τὸν ἐμβάντα. ἀλλ᾽ ἐξαί-
ρεσθαι. προσπλεύσαντες δὲ ταῖς σχεδίαις. κόπτουσι καὶ φέρουσι τῆς ἀσφάλτου ὅσον ἕκαστος δύναται.

τὸ μὲν οὖν συμβαῖνον τοιοῦτον. γόητας δὲ ὄντας, σκήπτεσθαι φησὶν ἐπῳδὰς ὁ ποσειδώνιος τοὺς ἀνθρώ-
πους, καὶ οὖρα καὶ ἄλλα δυσώδη ὑγρά. ἃ περιχέαντας καὶ ἐκπιάσαντας, πήττειν τὴν ἄσφαλ-
τον. εἶτα τέμνειν, εἰ μή τις ἐστὶν ἐπιτηδειότης τῶν οὔρων τοιαύτη. καθάπερ καὶ ἐν ταῖς κύστεσι τῶν λι-
θιώντων. καὶ ἐκ τῶν παιδικῶν οὔρων συνίσταται. ἐν μέσῃ δὲ τῇ λίμνῃ τὸ πλῆθος συμβαίνειν εὔλογον.
ὅτι καὶ ἡ πηγὴ τοῦ πυρὸς, καὶ τοῦ ἀσφάλτου κατὰ μέσον ἐστὶ, καὶ τὸ πλῆθος. ἄτακτος δὲ ἡ ἀναφύσ-
σις. ὅτι καὶ ἡ τοῦ πυρὸς κίνησις, οὐκ ἔχει τάξιν ἡμῖν φανερὰν, ὡς καὶ ἄλλων πνευμάτων πολλῶν.
τοιαῦτα δὲ καὶ τὰ ἐν ἀπολλωνίᾳ τῇ ἠπειρώτιδι. τοῦ δ᾽ ἔμπυρον τὴν χώραν εἶναι καὶ ἄλλα τεκμήρια φέ-
ρουσι πολλά. καὶ γὰρ πέτρας τινὰς ἐπικεκαυμένας δεικνύουσι τραχείας περὶ μοασάδα. καὶ σύραγ-
γας πολλαχοῦ. καὶ γῆν τεφρώδη. σταγόνας τε πίσσης ἐκ λισσάδων λαμβανομένας. καὶ δυσώδεις
πόρρωθεν ποταμοὺς ζέοντας. κατοικίας δὲ ἀνατετραμμένας σποράδην. ὥστε πιστεύειν τοῖς θρυλλου-
μένοις ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων, ὡς ἄρα ᾠκοῦντό ποτε τρεισκαίδεκα πόλεις ἐνταῦθα. ὧν τῆς μητροπόλεως
σοδόμων, σώζοιτο κύκλος ἑξήκοντά που σταδίων. ὑπὸ δὲ σεισμῶν καὶ ἀναφυσημάτων πυρὸς καὶ θερ-
μῶν ὑδάτων ἀσφαλτωδῶν τε καὶ θειωδῶν ἡ λίμνη προπέσοι. καὶ πέτραι πυρίληπτοι γένοιντο. αἵ τε
πόλεις αἱ μὲν, καταποθεῖεν. ἃς δ᾽ ἐκλείποιεν οἱ δυνάμενοι φυγεῖν. ἐρατοσθένης δέ φησι τἀναντία. λιμνα-
ζούσης τῆς χώρας, ἐκρήγμασιν ἀνακαλυφθῆναι τὴν πλείστην, καθάπερ τὴν θάλατταν. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ
γαδαρίδι ὕδωρ μοχθηρὸν λιμναῖον. οὗ τὰ γευσάμενα κτήνη, τρίχας καὶ ὁπλὰς καὶ κέρατα ἀποβάλ-
λει. ἐν δὲ ταῖς καλουμέναις ταριχείαις, ἡ λίμνη μὲν ταριχείας ἰχθύων ἀστείας παρέχει. φύει δὲ δέν-
δρα καρποφόρα. μηλέαις ἐμφερῆ. χρῶνται δ᾽ αἰγύπτιοι τῇ ἀσφάλτῳ πρὸς τὰς ταριχείας τῶν νε-
κρῶν. πομπήϊος μὲν οὖν περικόψας τινὰ τῶν ἐξιδιασθέντων ὑπὸ τῶν ἰουδαίων κατὰ βίαν, ἀπέδει-
ξεν ἡρώδῃ τὴν ἱερωσύνην. τῶν δ᾽ ἀπὸ γένους τισὶν ὕστερον, ἡρώδης ἀνὴρ ἐπιχώριος, παραδὺς εἰς τὴν ἱε-
ρωσύνην, τοσοῦτον διήνεγκε τῶν πρὸ αὐτοῦ, καὶ μάλιστα τῇ πρὸς ῥωμαίους ὁμιλίᾳ, καὶ πολιτείᾳ,
ὥστε καὶ βασιλεὺς ἐχρημάτισε. δόντος τὸ μὲν πρῶτον ἀντωνίου τὴν ἐξουσίαν. ὕστερον δὲ καὶ καίσαρος
τοῦ σεβαστοῦ. τῶν δ᾽ υἱῶν τοὺς μὲν, αὐτὸς ἀνεῖλεν, ὡς ἐπιβουλεύσαντας αὐτῷ. τοὺς δὲ, τελευτῶν διαδό-
χους ἀπέλιπε. μερίδας αὐτοῖς ἀποδοὺς, καῖσαρ δὲ καὶ τοὺς υἱοὺς ἐτίμησε τοῦ ἡρώδου. καὶ τὴν ἀδελφὴν
σαλώμην. καὶ τὴν ταύτης θυγατέρα βερενίκην. οὐ μέντοι εὐτύχησαν οἱ παῖδες. ἀλλ᾽ ἐν αἰτίαις ἐγένον-
το. καὶ ὁ μὲν, ἐν φυγῇ διετέλεσε. παρὰ τοῖς ἀλλόβριξι γαλάταις λαβὼν οἴκησιν. οἱ δὲ, θεραπείᾳ πολ-
λῇ μόλις εὕροντο κάθοδον, τετραρχίας ἀποδοθείσης ἑκατέρῳ. ὑπέρκειται δὲ τῆς ἰουδαίας καὶ τῆς κοί-
λης συρίας μέχρι βαβυλωνίας, καὶ τῆς τοῦ εὐφράτου ποταμίας πρὸς νότον ἀραβία πᾶσα. χωρὶς
τῶν ἐν τῇ μεσοποταμίᾳ σκηνιτῶν. περὶ μὲν οὖν τῆς μεσοποταμίας, καὶ τῶν νεμομένων αὐτὴν ἐθνῶν,
εἴρηται. τὰ δὲ πέραν τοῦ εὐφράτου τὰ μὲν πρὸς ταῖς ἐκβολαῖς αὐτοῦ, νέμονται βαβυλώνιοι, καὶ τὸ
τῶν χαλδαίων ἔθνος. εἴρηται δὲ περὶ τούτων. τὰ δ᾽ ἑξῆς τῆς μεσοποταμίας μέχρι κοίλης συρίας, τὸ
μὲν πλεονάζον τῷ ποταμῷ καὶ τὴν μεσοποταμίαν, σκηνῖται κατέχουσιν ἄραβες. δυναστείας ἀπο-
τετμημένοι μικρὰς ἐν λυπροῖς χωρίοις διὰ τὰς ἀνυδρίας. γεωργοῦντες μὲν, ἢ οὐδὲν, νομὰς δὲ ἔχοντες
παντοδαπῶν θρεμμάτων. καὶ μάλιστα καμήλων. ὑπὲρ δὲ τούτων ἐρημός ἐστι πολλή. τὰ δὲ τούτων ἔ-
τι νοτιώτερα ἔχουσιν, οἱ τὴν εὐδαίμονα καλουμένην ἀραβίαν οἰκοῦντες. ταύτης δὲ τὸ μὲν προσάρ-
κτιον πλευρὸν ἡ λεχθεῖσά ἐστιν ἔρημος. τὸ δὲ ἑῷον, ὁ περσικὸς κόλπος. τὸ δ᾽ ἑσπέριον ὁ ἀράβιος. τὸ δὲ νό-
τιον ἡ μεγάλη θάλαττα ἡ ἔξω τῶν κόλπων ἀμφοῖν. ἣν ἅπασαν ἐρυθρὰν καλοῦσιν. ὁ μὲν οὖν περσικὸς κόλ-
πος λέγεται, καὶ ἡ κατὰ πέρσας θάλαττα. φησὶ δὲ περὶ αὐτῆς ἐρατοσθένης οὕτως. ὅτι τὸ μὲν στόμα φη-
σὶν εἶναι στενὸν οὕτως ὥστ᾽ ἐξαρμόζον τοῦ τῆς καρμανίας ἀκρωτηρίου τῆς ἀραβίας, ἀφορᾶται τὸ ἐν
μάκαις. ἀπὸ δὲ τοῦ στόματος ἡ ἐν δεξιᾷ παραλία περιφερὴς οὖσα. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν ἀπὸ τῆς καρμανίας
πρὸς ἕω μικρόν. εἶτα πρὸς ἄρκτον νεύει. καὶ μετὰ ταῦτα πρὸς τὴν ἑσπέραν μέχρι τερηδόνος καὶ τῆς
ἐκβολῆς τοῦ εὐφράτου. περιέχει δὲ τήν τε καρμανίων παραλίαν, καὶ τὴν περσῶν καὶ σουσίων. καὶ βα-
βυλωνίων ἀπὸ μέρους. ὅσον μυρίων οὖσαν σταδίων. περὶ ὧν καὶ ἡμεῖς εἰρήκαμεν. τὸ δ᾽ ἐντεῦθεν ἑξῆς ἤδη
τὸ στόμα πάλιν ἄλλοι τοσοῦτοι. καθάπερ καὶ ἀνδροσθένη λέγειν φασὶ τὸν θάσιον. τὸν καὶ νεάρχῳ συμ-
πλεύσαντα καθ᾽ αὑτόν. ὥστε δῆλον ἐκ τούτων εἶναι, διότι μικρὸν ἀπολείπεται τῷ μεγέθει τῆς κα-
τὰ τὸν εὔξεινον θαλάττης αὕτη ἡ θάλαττα. λέγειν δέ φησιν ἐκεῖνον περιπεπλευκότα στόλῳ τὸν κόλπον,
ὅτι ἀπὸ τερηδόνος, ἑξῆς ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὴν ἤπειρον, ὁ παράπλους ἔχει προκειμένην νῆσον ἰκάριον,
καὶ ἱερὸν ἀπόλλωνος ἅγιον ἐν αὐτῇ, καὶ μαντεῖον ταυροπόλου. παραπλεύσαντι δὲ τῆς ἀραβίας εἰς δι-
σχιλίους, καὶ τετρακοσίους σταδίους, ἐν βαθεῖ κόλπῳ κεῖται πόλις γέῤῥα. χαλδαίων φυγάδων ἐκ βα-
βυλῶνος οἰκούντων τὴν ἁλμυρίδα, καὶ ἐχόντων ἁλίνας τὰς οἰκίας. ἃς ἐπειδὴ λεπίδες τῶν ἁλῶν
ἀφιστάμεναι κατὰ τὴν ἐπίκαυσιν τὴν ἐκ τῶν ἡλίων, συνεχεῖς ἀποπίπτουσι. καταῤῥαίνοντες ὕδασι
πυκνὰ τοὺς τοίχους συνέχουσι. διέχει δὲ τῆς θαλάττης, διακοσίους σταδίους ἡ πόλις, πεζέμποροι
δ᾽ εἰσὶν οἱ γεῤῥαῖοι τὸ πλέον. τῶν ἀραβίων φορτίων, καὶ ἀρωματικῶν. ἀριστόβουλος δὲ τοὐναν-
τίον φησὶ, τοὺς γεῤῥαίους τὰ πολλὰ σχεδίαις εἰς τὴν βαβυλωνίαν ἐμπορεύεσθαι. ἐκεῖθεν δὲ τῷ

εὐφράτη τὰ φορτία ἀναπλεῖν εἰς θάψακον· εἶτα πεζῇ κομίζεσθαι πάντη. πλεύσαντι δ' ἐπὶ
πλέον ἄλλαι νῆσοι. τύρος καὶ ἄραδος εἰσίν. ἱερὰ ἔχουσαι τοῖς φοινικοῖς ὅμοια· καί φασί γε οἱ ἐν αὐ/
ταῖς οἰκοῦντες τὰς ὁμωνύμους τῶν φοινίκων νήσους, καὶ πόλεις, ἀποίκους ἑαυτῶν εἶναι. διέχου-
σι δὲ αἱ νῆσοι αὗται τερηδόνος μὲν, δεχήμερον πλοῦν· τῆς δὲ κατὰ τὸ στόμα ἄκρας τῆς ἐν μά/
κους, ἡμερήσιον. ἀπὸ δὲ τῆς καρμανίας, εἰρήκασι, καὶ νέαρχος, καὶ ὀρθαγόρας, νῆσον, τυρρίνην
κεῖσθαι πρὸς νότον πελαγίαν ἐν δισχιλίοις σταδίοις. ἐν ᾗ τάφος ἐρυθρᾶ δείκνυται χῶμα μέγα. ἀγρίοις
φοίνιξι κατάφυτον· τούτων δὲ βασιλεῦσαι τῶν τόπων· καὶ ἀπ' αὐτοῦ τὴν θάλατταν ἐπώνυμον κατα-
λιπεῖν. δηλῶσαι δὲ ταῦτά φησιν αὐτοῖς μιθρωπάστην τὸν ἀρσίνου τοῦ φρυγίας σατράπου· φυγόντα
μὲν δαρεῖον· διατρίψαντα δ' ἐν τῇ νήσῳ· συμμίξαντα δὲ αὐτοῖς καταχθεῖσιν εἰς τὸν περσικὸν κόλπον·
καὶ ζητοῦντα κάθοδον δι' αὐτῶν εἰς τὴν οἰκείαν· καθ' ὅλην δὲ τὴν τῆς ἐρυθρᾶς, παραλίαν, κατὰ βυθοῦ
φύεται δένδρα ὅμοια δάφνῃ καὶ ἐλαίᾳ· ταῖς μὲν ἀμπώτεσιν ὅλα ὑπερφανῆ γιγνόμενα· ταῖς δὲ πλημ
μυρίσιν ἔσθ' ὅτε ὅλα καλυπτόμενα· καὶ ταῦτα τῆς ὑπερκειμένης γῆς ἀδένδρου οὔσης, ὥστε ἐπι-
γίνεσθαι τὸ παράδοξον· περὶ μὲν οὖν τῆς κατὰ πέρσας θαλάττης, ἣν ἑῴαν πλευρὰν ἔφαμεν εἶναι
τῆς εὐδαίμονος ἀραβίας, τοιαῦτα εἴρηκεν ἐρατοσθένης. φησὶ δ' ὁ νέαρχος τὴν μιθρωπάστην ἐντυχεῖν
αὐτοῖς μετὰ μαζήνου. τὸν δὲ ἀμαζήνην ἐπάρχειν νήσου τινὸς τῶν ἐν τῷ περσικῷ κόλπῳ· καλεῖσθαι δὲ
τὴν νῆσον δωράκτα εἰς ταύτην δὲ τὸν μιθροπάστην καταφυγόντα, ξενίας τυχεῖν κατὰ τὴν ἐξ ὠγύρας
γενομένην ἄφοδον· καὶ δὴ καὶ συνελθεῖν τῷ ἀμαζήνῃ συσταθησόμενον τοῖς ἐν τῷ στόλῳ μακεδόσι, τὸν δὲ
μαζήνην καὶ καθηγεμόνα τοῦ πλοῦ γενέσθαι. λέγει δὲ καὶ ἐν ἀρχῇ τοῦ περσικοῦ παράπλου νῆσον·
ἐν ᾗ μαργαρίτης πολὺς καὶ πολύτιμός ἐστιν. ἐν ἄλλαις δὲ ψῆφοι τῶν διαυγῶν καὶ λαμπρῶν, ἐν δὲ ταῖς
πρὸ τοῦ εὐφράτου νήσοις, δένδρα φύεσθαι λιβάνου πνέοντα· ὧν τὰς ῥίζας κλωμένων, ὀπὸν ῥεῖν· πα-
γούρων δὲ καὶ ἐχίδνων μεγέθη· ὅπερ κοινὸν ἐν πάσῃ τῇ ἔξω θαλάσσῃ· τοὺς μὲν, γὰρ εἶναι μείζους καυ/
σίων· τοὺς δὲ, καὶ δικοτύλους. ἐποκεῖλαι δὲ κῆτος ἰδεῖν πεντήκοντα πηχῶν. ἀρχὴ δὲ τῆς ἀραβίας ἀπὸ
τῆς βαβυλωνίας ἐστὶν ἡ μαικηνή.. πρόκειται δὲ ταύτης τῇ μὲν ἡ ἔρημος τῶν ἀράβων· τῇ δὲ, τὰ ἕλη
τὰ κατὰ χαλδαίους. ἃ ποιεῖ παρεκχεόμενος ὁ εὐφράτης· τῇ δὲ, ἡ κατὰ πέρσας θάλαττα. δυσάερος οὖ
σα καὶ ὁμιχλώδης· καὶ ἔπομβρος ἅμα καὶ καυματηρά· καλλίκαρπος δέ ἐστιν ὅμως. ἡ δ' ἄμπελος ἐν ἕ/
λεσι φύεται· καλαμίναις ῥιψὶν ἐπιβαλλομένης γῆς ὅσην δέξαιτ' ἂν τὸ φυτόν. ὥστε φορητὸν γίνεσθαι
πολλάκις. εἶτα κοντοῖς ἀπωθεῖσθαι πάλιν εἰς τὴν οἰκείαν ἕδραν. ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὰς ἐρατοσθένους
ἀποφάσεις. ἃς ἑξῆς περὶ τῆς ἀραβίας ἐκτίθεται. φησὶ δὲ περὶ τῆς προσαρκτίου καὶ ἐρήμης, ἥτις
ἐστὶ μεταξὺ τῆς τε εὐδαίμονος ἀραβίας καὶ τῆς κοιλοσύρων καὶ ἰουδαίων, μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ ἀρα-
βίου κόλπου. διότι ἀπὸ ἡρώων πόλεως ἥτις ἐστὶ πρὸς τῷ νείλῳ μυχὸς τοῦ ἀραβίου κόλπου, πρὸς μὲν τὴν
ναβαταίων πέτραν εἰς βαβυλῶνα, πεντακισχίλιοι ἑξακόσιοι. πᾶσα μὲν πρὸς ἀνατολὰς θερινάς. διὰ δὲ
τῶν παρακειμένων ἀραβίων ἐθνῶν ναβαταίων τε καὶ χαυλοταίων καὶ ἀγραίων. ὑπὲρ δὲ τούτων ἡ
εὐδαίμων ἐστίν. ἐπὶ μυρίους καὶ δισχιλίους ἐκκειμένη σταδίους πρὸς νότον, μέχρι τοῦ ἀτλαντικοῦ πε-
λάγους. ἔχουσι δ' αὐτὴν οἱ μὲν πρῶτοι μετὰ τοὺς σύρους καὶ τοὺς ἰουδαίους. ἄνθρωποι γεωργοί. μετὰ δὲ
τούτους ψαμμώδης ἐστὶ γῆ καὶ λυπρὰ φοίνικας ἔχουσα ὀλίγους. καὶ ἄκανθαν καὶ μυρίκην καὶ ὀρυκτὰ ὕ
δατα. κατάπερ καὶ ἡ γεδρωσία. σκηνῖται δ' ἔχουσιν αὐτὴν. ἄραβες καμηλοβοσκοί. τὰ δ' ἔσχατα πρὸς
νότον καὶ ἀνταίροντα τῇ αἰθιοπίᾳ βρέχεται θερινοῖς ὄμβροις καὶ δισπορεῖται παραπλησίως τῇ
ἰνδικῇ. ποταμοὺς δ' ἔχει καταναλισκομένους εἰς πεδία καὶ λίμνας. εὐκαρπία δ' ἐστὶν ἥτε ἄλλη καὶ μελι/
τουργία δαψιλής. βοσκημάτων τε ἀφθονία. πλὴν ἵππων καὶ ἡμιόνων καὶ ὑῶν. ὄρνεά τε παντοῖα
πλὴν χηνῶν καὶ ἀλεκτορίδων. κατοικεῖ δὲ τὰ μέγιστα ἔθνη τὴν ἐσχάτην λεχθεῖσαν χώραν. μιναῖοι μὲν ἐν τῷ
πρὸς τὴν ἐρυθρὰν μέρει. πόλις αὐτῶν ἡ μεγίστη κάρνα, ἢ καρανά. ἐχόμενοι δὲ τούτων σαβαῖοι. μητρόπολις
δ' αὐτῶν μαρίαβα. τρίτοι δὲ καταβανεῖς. καθήκοντες πρὸς τὰ στενὰ καὶ τὴν διάβασιν τοῦ ἀραβίου κόλπου·
τὸ δὲ βασίλειον αὐτῶν τάμνα καλεῖται. πρὸς ἕω δὲ μάλιστα χατραμωτεῖται. πόλιν δ' ἔχουσι καβά-
τανον. μοναρχοῦνται δὲ πᾶσαι καὶ εἰσὶν εὐδαίμονες. κατεσκευασμέναι καλῶς ἱεροῖς τε καὶ βασιλείοις.
αἵ τε οἰκίαι ταῖς αἰγυπτίαις ἐοίκασι κατὰ τὴν τῶν ξύλων ἔνδεσιν. χώραν δ' ἐπέχουσιν οἱ τέτταρες νόμοι
μείζω τοῦ κατ' αἴγυπτον δέλτα. διαδέχεται δὲ τὴν βασιλείαν οὐ παῖς παρὰ πατρός. ἀλλ' ὃς ἂν πρῶτος
γεννηθῇ τινι τῶν ἐπιφανῶν παῖς, μετὰ τὴν κατάστασιν τοῦ βασιλέως. ἅμα γὰρ τῷ κατασταθῆναί τινα
εἰς τὴν ἀρχὴν, ἀναγράφονται τὰς ἐγκύους γυναῖκας τῶν ἐπιφανῶν ἀνδρῶν. καὶ ἐφιστᾶσι φύλακας.
ἥτις ἂν πρώτη τέκοι νόμος ἐστὶν ἀναληφθέντα τρέφεσθαι βασιλικῶς, ὡς διαδεξάμενον. φέρει δὲ λιβα
νωτὸν μὲν ἡ κατταβανία. σμύρναν δὲ ἡ χατραμωτῖτις. καὶ ταῦτα δὲ καὶ τὰ ἄλλα ἀρώματα μεταβάλ
λονται τοῖς ἐμπόροις. ἔρχονται δὲ πρὸς αὐτοὺς ἐξ αἰλανῶν μὲν εἰς μιναίαν ἐν ἑβδομήκοντα ἡμέραις.
ἔστι δ' ἡ ἔλανα πόλις. ἐν θατέρῳ μυχῷ τοῦ ἀραβίου κόλπου, τῷ κατὰ γάζαν τῷ αἰλανίτῃ καλουμένῳ
καθάπερ εἰρήκαμεν. γαβαῖοι δ' εἰς τὴν χατραμωτῖτιν ἐν τετταράκοντα ἡμέραις ἀφικνοῦνται. τοῦ δ' ἀρα
βίου κόλπου, τὸ μὲν παρὰ τὴν ἀραβίαν πλευρὰν ἀρχομένοις ἀπὸ τοῦ ἐλανίτου μυχοῦ καθάπερ οἱ περὶ

ἀλεξάνδρου αἰγύπτου καὶ ἀναξικράτη μυρίων καὶ τετρακισχιλίων σταδίων ἐστίν. εἴρηται δὲ ἐπὶ πλεῖον. τὸ δὲ κατὰ τὴν τρωγλοδυτικὴν, ὅπερ ἐστὶν ἐν δεξιᾷ ἀποπλέουσιν ἀφ᾽ ἡρώων πόλεως, μέχρι μὲν πτολεμαΐδος, καὶ τῆς τῶν ἐλεφάντων θήρας, ἐνακισχίλιοι πρὸς μεσημβρίαν στάδιοι, καὶ μικρὸν ἐπὶ τὴν ἕω. ἐντεῦθεν δὲ μέχρι τῶν στενῶν, ὡς τετρακισχίλιοι, καὶ πεντακόσιοι πρὸς τὴν ἕω μᾶλλον. ποιεῖ δὲ ἄκρα τὰ στενὰ πρὸς τὴν αἰθιοπίαν, δειρὴ καλουμένη. καὶ πολίχνιον ὁμώνυμον αὐτῇ. κατοικοῦσι δ᾽ ἰχθυοφάγοι. καὶ φασὶν ἐνταῦθα στήλην εἶναι σεσώστριος τοῦ αἰγυπτίου, μηνύουσαν ἱεροῖς γράμμασι τὴν διάβασιν αὐτοῦ. φαίνεται γὰρ τὴν αἰθιοπίδα, καὶ τὴν τρωγλοδυτικὴν πρῶτος καταστρεψάμενος οὗτος. εἶτα διαβὰς εἰς τὴν ἀραβίαν. κἀντεῦθεν τὴν ἀσίαν ἐπελθὼν τὴν σύμπασαν. διὸ δὴ πολλαχοῦ σεσώστριος χάρακες προσαγορεύονται. καὶ ἀφιδρύματά ἐστιν αἰγυπτίων θεῶν ἱερῶν. τὰ δὲ κατὰ δειρὴν στενὰ, συνάγεται εἰς σταδίους ἑξήκοντα. οὐ μὴν ταῦτά γε καλεῖται νυνὶ στενά. ἀλλὰ προσωτέρω πλεύσασιν ἀπωτέρω, καθὸ τὸ μὲν δίαρμά ἐστι τὸ μεταξὺ τῶν ἠπείρων διακοσίων που σταδίων. ἓξ δὲ νῆσοι συνεχεῖς ἀλλήλαις τὸ δίαρμα ἐκπληροῦσαι, στενοὺς τελέως διάπλους ἀπολείπουσι. δι᾽ ὧν σχεδίαις τὰ φορτία κομίζουσι δεῦρο κἀκεῖσε. καὶ λέγουσι ταῦτα στενά. μετὰ δὲ τὰς νήσους ὁ ἑξῆς πλοῦς ἐστιν ἐγκολπίζουσι παρὰ τὴν σμυρνοφόρον, ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν ἅμα, καὶ τὴν ἕω μέχρι πρὸς τὴν τὸ κιννάμωμον φέρουσαν, ὅσον πεντακισχιλίων. περαιτέρω δὲ ταύτης οὐδένα ἀφῖχθαι φασὶ μέχρι νῦν. πόλεις δ᾽ ἐν μὲν τῇ παραλίᾳ μὴ πολλὰς εἶναι. κατὰ δὲ τὴν μεσόγαιαν πολλὰς οἰκουμένας καλῶς. τὰ μὲν δὴ τοῦ ἐρατοσθένους περὶ τῆς ἀραβίας, τοιαῦτα. προσθετέον δὲ, καὶ τὰ παρὰ τῶν ἄλλων. φησὶ δ᾽ ἀρτεμίδωρος τὸ ἀντικείμενον ἐκ τῆς ἀραβίας ἀκρωτήριον τῇ δειρῇ καλεῖσθαι ἀκίλαν. τοὺς δὲ περὶ τὴν δειρὴν κολοβοὺς εἶναι τὰς βαλάνους. ἀπὸ δὲ ἡρώων πόλεως πλέουσι κατὰ τὴν τρωγλοδυτικὴν, πόλιν εἶναι φιλωτέραν ἀπὸ τῆς ἀδελφῆς τοῦ δευτέρου πτολεμαίου προσαγορευθεῖσαν. σατύρου κτίσμα τοῦ πεμφθέντος ἐπὶ τὴν καὶ διερεύνησιν τῆς τῶν ἐλεφάντων θήρας τῆς τρωγλοδυτικῆς. εἶτα ἄλλην πόλιν ἀρσινόην. εἶτα θερμῶν ὑδάτων ἐκβολὰς πικρῶν καὶ ἁλμυρῶν. κατὰ πέτρας τινὸς ὑψηλῆς ἐκδιδόντων εἰς τὴν θάλατταν, καὶ πλησίον ὄρος ἐστὶν ἐν πεδίῳ μιλτῶδες. εἶτα μυὸς ὅρμος ἀφροδίτης ὅρμος καλεῖσθαι λιμένα μέγαν, τὸν εἴσπλουν ἔχοντα σκολιόν. προκεῖσθαι δὲ νήσους τρεῖς. δύο μὲν ἐλαίαις κατασκίους. μίαν δ᾽ ἧττον κατάσκιον. μελεαγρίδων μεστήν. εἶθ᾽ ἑξῆς τὸν ἀκάθαρτον κόλπον. καὶ αὐτὸν κατὰ τὴν θηβαΐδα κείμενον. καθάπερ τὸν μυὸς ὅρμον. οὕτω δὲ ἀκάθαρτον. καὶ γὰρ ὑφάλοις χοιράσι καὶ ῥαχίαις ἐκτετράχυνται. καὶ πνοιαῖς καταιγιζούσαις τὸ πλεῖστον. ἐνταῦθα δὲ ἱδρῦσθαι βερενίκην πόλιν ἐν βάθει τοῦ κόλπου. μετὰ δὲ τὸν κόλπον ἡ ὀφιώδης καλουμένη νῆσος ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ἣν ἠλευθέρωσε τῶν ἑρπετῶν ὁ βασιλεὺς, ἅμα καὶ διὰ τὰς φθορὰς τῶν προσορμιζομένων ἀνθρώπων ἐκ τῶν θηρίων. καὶ διὰ τὰ τοπάζια. λίθος δ᾽ ἐστὶ διαφανὴς χρυσοειδὴς ἀπολάμπων φέγγος ὅ γε μεθ᾽ ἡμέραν μὲν οὐ ῥᾴδιον ἰδεῖν ἐστι. περιαυγεῖται γάρ, νύκτωρ δ᾽ ὁρῶσιν οἱ συλλέγοντες. περικαθάψαντες δὲ ἀγγεῖον σημείου χάριν μεθ᾽ ἡμέραν ἀνορύττουσι. καὶ ἦν σύστημα ἀνθρώπων ἀποδεδειγμένον εἰς τὴν φυλακὴν τῆς λιθίας ταύτης καὶ τὴν συναγωγὴν, σιταρχούμενον ὑπὸ τῶν τῆς αἰγύπτου βασιλέων. μετὰ δὲ τὴν νῆσον ταύτην. πολλὰ ἐστὶν ἰχθυοφάγων ἔθνη καὶ νομάδων. εἶθ᾽ ὁ τῆς σωτείρας λιμὴν. ὃν ἐκ κινδύνων μεγάλων τινὲς σωθέντες τῶν ἡγεμόνων ἀπὸ συμβεβηκότος οὕτως ἐκάλεσαν. μετὰ δὲ ταῦτα ἐξάλλαξις πολλὴ τῆς παραλίας καὶ τοῦ κόλπου. τὸν γὰρ παράπλουν οὐκέτι συμβαίνει τραχὺν εἶναι. συνάπτει τέ πως τῇ ἀραβίᾳ, καὶ τὸ πέλαγος ταπεινὸν εἶναι σχεδόν τι, καὶ ἐπὶ δύο ὀργυιάς. πρασίζειν τε τὴν ἐπιφάνειαν διαφαινομένου τοῦ μνίου, καὶ τοῦ φύκους, ὅπου πλεονάζει κατὰ τὸν πόρον. ὅπου γε καὶ δένδρα φύεται καθ᾽ ὕδατος, παρὰ τοῖς ἐνταῦθα. ἔχει δὲ καὶ κυνῶν πλῆθος τῶν θαλαττίων ὁ πόρος. εἶθ᾽ οἱ ταῦροι δύο ὄρη. τύπον τινὰ πόρρωθεν δεικνύντα τοῖς ζῴοις ὅμοιον. εἶτ᾽ ἄλλο ὄρος ἱερὸν ἔχον τῆς ἴσιδος σεσώστριος ἀφίδρυμα. εἶτα νῆσος ἐλαίαις κατάφυτος ἐπικλυζομένη. μεθ᾽ ἣν ἡ πτολεμαΐς πρὸς τῇ θήρᾳ τῶν ἐλεφάντων. κτίσμα εὐμήδους τοῦ πεμφθέντος ἐπὶ τὴν θήραν ὑπὸ τοῦ φιλαδέλφου. λάθρᾳ περιβαλλομένου χερρόνησόν τινι τάφρον, καὶ περίβολον. εἶτ᾽ ἐκθεραπεύσαντος τοὺς κωλύοντας καὶ κατασκευασμένους φίλους ἀντὶ δυσμενῶν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ ἐκδίδωσιν ἀπόσπασμα τοῦ ἀσταβόρα καλουμένου ποταμοῦ. ὃς ἐκ λίμνης τὴν ἀρχὴν ἔχων, μέρος τι ἐκδίδωσι. τὸ δὲ πλέον συμβάλλει τῷ νείλῳ. εἶτα νῆσοι ἓξ λατομίαι καλούμεναι. καὶ μετὰ ταῦτα τὸ σαβαϊτικὸν στόμα λεγόμενον. καὶ ἐν τῇ μεσογαίᾳ φρούριον τοῦ σουχοῦ ἵδρυμα. εἶτα λιμὴν καλούμενος ἐλαία. καὶ ἡ στράτωνος νῆσος. εἶτα λιμὴν σαβὰ καὶ κυνήγιον ἐλεφάντων ὁμώνυμον αὐτῷ. ἡ δ᾽ ἐν βάθει τούτων χώρα, τηνεσὶς λέγεται. ἔχουσι δ᾽ αὐτὴν οἱ παρὰ ψαμμιτίχου φυγάδες αἰγυπτίων. ἐπονομάζονται δὲ σεβρῖται ὡς ἂν ἐπήλυδες. βασιλεύονται δ᾽ ὑπὸ γυναικὸς, ὑφ᾽ ἣν ἐστι, καὶ ἡ μερόη πλησίον τῶν τόπων τούτων οὖσα ἐν τῷ νείλῳ νῆσος, ὑπὲρ ἧς ἄλλη ἐστὶ νῆσος οὐ πολὺ ἄποθεν ἐν τῷ ποταμῷ κατοικία τῶν αὐτῶν τούτων φυγάδων. ἀπὸ δὲ μερόης ἐπὶ τὴν θάλατταν εὐζώνῳ ὁδὸς ἡμερῶν πεντεκαίδεκα. περὶ δὲ τὴν μερόην, καὶ ἡ συμβολὴ τοῦ τε ἀσταβόρα καὶ τοῦ ἀστάπου καὶ ἔτι τοῦ ἀστασόβα πρὸς τὸν νεῖλον. παροικοῦσι δὲ τούτοις οἱ ῥιζοφάγοι καὶ οἱ ἕλειοι προσαγορευόμενοι

σαγορευόμενοι. διὰ τὸ ἐκ τοῦ παρακειμένου ῥιζοτομοῦντας ἕλους, κόπτειν λίθοις, καὶ ἀναπλάσσειν εἰς
μάζας. ἡλιάσαντας δὲ σιτεῖσθαι. λεοντόβατα δ' ἐστὶ τὰ χωρία. τοὺς δ' ἀπὸ κυνὸς ἐπὶ πολλὰς ἡμέ-
ρας ὑπὸ κωνώπων μεγάλων ἐξελαύνεσθαι τὰ θηρία ἐκ τῶν τόπων. εἰσὶ δὲ καὶ σπερματοφάγοι πλησίον.
οἳ τῶν σπερμάτων ἐπιλειπόντων, ἀπὸ τῶν ἀκροδρύων τρέφονται. σκευάζοντες παραπλησίως ὥσπερ
οἱ ῥιζοφάγοι τὰς ῥίζας. μετὰ δὲ τὴν ἐλαίαν αἱ δημητρίου σκοπαὶ καὶ βωμοὶ κόνωνος. ἐν δὲ τῇ μεσο-
γαίᾳ καλάμων ἰνδικῶν φύεται πλῆθος· καλεῖται δὲ ἡ χώρα κορακίου. ἦν δέ τι ἐν βάθει ἐνδέρα γυμνη-
ἀνδρῶν κατοικία. τόξοις χρωμένων καλαμίνοις καὶ πεπυρακτωμένοις οἰστοῖς. ἀπὸ δένδρων δὲ τοξεύουσι τὰ θη-
ρία τὸ πλέον. ἔστι δ' ὅτε καὶ ἀπὸ γῆς. πολὺ δ' ἐστὶ παρ' αὐτοῖς πλῆθος τῶν ἀγρίων βοῶν. ἀπὸ δὲ τῆς τούτων,
καὶ τῶν ἄλλων θηρίων κρεωφαγίας ζῶσιν. ἐπὰν δὲ μηδὲν θηρεύσωσι, τὰ ξηρὰ δέρματα ἐπ' ἀνθρακιᾶς
ὀπτῶντες, ἀρκοῦνται τῇ τοιαύτῃ τροφῇ. ἔθος δ' ἐστὶν αὐτοῖς ἀγῶνα τοξείας προτιθέναι τοῖς ἀνήβοις
παισί. μετὰ δὲ τοὺς κόνωνος βωμούς, ὁ μήλινος λιμήν. ὑπέρκειται δ' αὐτοῦ φρούριον καὶ κυνήγια πλείω.
εἶτα ὁ ἀντιφίλου λιμήν. καὶ οἱ ὑπὲρ τούτου κρεωφάγοι. κολοβοὶ τὰς βαλάνους. καὶ αἱ γυναῖκες ἰου-
δαϊκῶς ἐκτετμημέναι. ἔτι δὲ πρὸ τούτων ὡς πρὸς μεσημβρίαν οἱ κυναμολγοί. ἀπὸ δὲ τῶν ἐντοπίων
ἄγριοι καλούμενοι. κατάκομοι. καταπώγωνες. κύνας ἐκτρέφοντες εὐμεγέθεις. οἷς θηρεύουσι τοὺς ἐπερ-
χομένους ἐκ τῆς πλησιοχώρας βόας ἰνδικούς. εἴθ' ἀπὸ θηρίων ἐξελαυνομένους, εἴτε σπάνει νομῆς. ἡ δ' ἔ-
φοδος αὐτῶν ἀπὸ θερινῶν τροπῶν μέχρι μέσου χειμῶνος. τῷ δ' ἀντιφίλου λιμένι ἑξῆς ἐστι λιμὴν κα-
λούμενος κολοβῶν ἄλσος. καὶ βερενίκη πόλις ἡ κατὰ σαβάς. καὶ σαβαὶ πόλις εὐμεγέθης. εἶτα τὸ
τοῦ εὐμενοῦς ἄλσος. ὑπέρκειται δὲ πόλις δαραβά, καὶ κυνήγιον ἐλεφάντων, τὸ πρὸς τῷ φρέατι κα-
λούμενον. κατοικοῦσι δ' ἐλεφαντοφάγοι. τὴν θήραν ποιούμενοι τοιαύτην ἀπὸ τῶν δένδρων. ἰδόντες ἀ-
γέλην διὰ τοῦ δρυμοῦ φερομένην, τῇ μὲν, οὐκ ἐπιτίθενται. τοὺς δ' ἀποπλανηθέντας ἐκ τῶν ὄ-
πισθεν λάθρα προσιόντες νευροκοποῦσι, τινὲς δὲ, καὶ τοξεύμασιν ἀναιροῦσιν αὐτοὺς χολῇ βεβαμ-
μένοις ὄφεων οἰστοῖς. ἡ δὲ τοξεία διὰ τριῶν ἀνδρῶν συντελεῖται. τῶν μὲν, κατεχόντων τὸ τόξον, καὶ προ-
βεβηκότων τοῖς ποσί. τοῦ δ' ἕλκοντος τὴν νευράν. ἄλλοι δὲ σημειωσάμενοι τὰ δένδρα, οἷς εἰώθασι
προσαναπαύεσθαι, προσιόντες ἐκ θατέρου μέρους τὸ στέλεχος ὑποκόπτουσιν. ἐπὰν οὖν προσιὸν
τὸ θηρίον ἀποκλίνῃ πρὸς αὐτό, πεσόντος τοῦ δένδρου πίπτει καὶ αὐτό. ἀναστῆναι δὲ μὴ δυναμένου διὰ τὸ
τὰ σκέλη διηνεκὲς ὀστοῦν ἔχειν καὶ ἀκαμπές, καταπηδήσαντες ἀπὸ τῶν δένδρων ἀνατέμνουσιν αὐτό.
τοὺς δὲ κυνηγοὺς οἱ νομάδες ἀκαθάρτους καλοῦσιν. ὑπέρκειται δὲ τούτων ἔθνος οὐ μέγα στρουθοφάγων.
παρ' οἷς ὄρνεις εἰσὶ μέγεθος ἐλάφων ἔχοντες. πέτασθαι μὲν, οὐ δυνάμενοι. θέοντες δὲ ὀξέως, καθάπερ
οἱ στρουθοκάμηλοι. θηρεύουσι δ' αὐτοὺς οἱ μὲν, τόξοις, οἱ δὲ ταῖς δοραῖς τῶν στρουθῶν σκεπασθέντες, τὴν
μὲν δεξιὰν καλύπτουσι τῷ τραχηλιμαίῳ μέρει, καὶ κινοῦσιν οὕτως ὥσπερ τὰ ζῶα κινεῖται τοῖς τρα-
χήλοις. τῇ δὲ ἀριστερᾷ σπέρμα προχέουσιν ἀπὸ πήρας παρηρτημένης, καὶ τούτῳ δελεάσαντες τὰ
ζῶα εἰς φάραγγας συνωθοῦσιν, ἐνταῦθα δ' ἐφεστῶτες ξυλοκόποι κατακόπτουσι. καὶ ἀμπέχονται δὲ,
καὶ ὑποστρώννυνται τὰ δέρματα ταῦτα. πολεμοῦσι δὲ τούτοις οἱ σῖμοι καλούμενοι αἰθίοπες, κέ-
ρασιν ὀρύγων ὅπλοις χρώμενοι. πλησιόχωροι δὲ τούτοις εἰσὶ μελανώτεροί τε τῶν ἄλλων, καὶ βραχύτεροι
καὶ βραχυβιώτατοι. τὰ γὰρ τετταράκοντα ἔτη σπανίως ὑπερτιθέασιν. ἀποθηριουμένης αὐτῶν
τῆς σαρκός. ζῶσι δ' ἀπὸ ἀκρίδων. ἃς οἱ ἐαρινοὶ λίβες, καὶ ζέφυροι πνέοντες μεγάλοι, συνελαύνου-
σιν εἰς τοὺς τόπους. τούτους ἐν ταῖς χαράδραις δὲ ἐμβάλλοντες ὕλην καπνώδη, καὶ ὑφάψαντες μικρὸν
ὑπερπετόμεναι κατὰ τὸν καπνὸν σκοτοῦνται. καὶ πίπτουσι. συγκόψαντες δ' αὐτὰς μεθ' ἁλμυρίδος μά-
ζας, σιτοῦνται καὶ χρῶνται. τούτων δ' ἔρημος ὑπέρκειται, νομὰς δαψιλεῖς ἔχουσα. ἐκλειφθεῖσα δ' ὑπὸ πλή-
θους σκορπίων, καὶ φαλαγγίων τῶν τετραγνάθων καλουμένων. ἐπιπλάσαντός ποτε καὶ ἀπεργασαμένου τοῖς
ἀνθρώποις φυγὴν παντελῆ. μετὰ δὲ εὐμενοῦς λιμένα μέχρι δειρῆς καὶ τῶν κατὰ τὰς ἓξ νήσους στενῶν, ἰχθυο-
φάγοι καὶ κρεωφάγοι κατοικοῦσι, καὶ κολοβοὶ μέχρι τῆς μεσογαίας. εἰσὶ δὲ, καὶ θῆραι πλείους ἐλεφάν-
των. καὶ πόλεις ἄσημοι, καὶ νησία πρὸ τῆς παραλίας νομάδες δ' οἱ πλείους. ὀλίγοι δ' οἱ γεωργοῦντες. πα-
ρά τισι δὲ τούτων φύεται στύραξ οὐκ ὀλίγος. συνάγουσι δὲ ταῖς ἀμπώτεσιν οἱ ἰχθυοφάγοι τοὺς ἰχθῦς. ἐπιρρί-
ψαντες δὲ ταῖς πέτραις κατοπτῶσι πρὸς τὸν ἥλιον. εἶτ' ἐξοπτήσαντες τὰς ἀκάνθας μὲν σωρεύουσι. τὴν δὲ
σάρκα πατήσαντες μάζας ποιοῦνται. πάλιν δὲ ταύτας ἡλιάζοντες σιτοῦνται. χειμῶνος δ' ἀδυνατή-
σαντες συνάγειν τοὺς ἰχθῦς, τὰς σεσωρευμένας ἀκάνθας κόψαντες, μάζας ἀναπλάττονται, καὶ χρῶνται.
τὰς δὲ νεαρὰς ἐκμυζῶσι. ἔνιοι δὲ τὰς κόγχας ἐχούσας τὴν σάρκα σιτεύουσι, καταβάλλοντες εἰς χαράδρια
καὶ συστάδας θαλάττης. εἶτ' ἰχθύδια παραρριπτοῦντες τροφῇ αὐτοῖς χρῶνται ἐν τῇ τῶν ἰχθύων σπάνει. ἔστι
δ' αὐτοῖς καὶ ἰχθυοτροφεῖα παντοῖα, ἀφ' ὧν ταμιεύονται. ἔνιοι δὲ τῶν τὴν ἄνυδρον παραλίαν οἰκούντων, διὰ
πέντε ἡμερῶν, μετὰ τὰ ὑδρεῖα ἀναβαίνουσι πανοικὶ μετὰ παιανισμοῦ. ῥίψαντες δὲ πρηνεῖς πίνουσι βοῶν
δίκην. ἕως ἐκτυμπανώσεως τῆς γαστρός. εἶτα ἀπίασιν ἐπὶ θάλατταν πάλιν. οἰκοῦσι δ' ἐν σπηλαίοις
ἢ μάνδραις στεγασταῖς. ἀπὸ δοκῶν μὲν καὶ στρωτήρων τῶν κητείων ὀστέων, καὶ ἀκανθῶν. φυλάδος δ' ἐ-
λαίνης. οἱ δὲ χελωνοφάγοι. τοῖς ὀστράκοις αὐτῶν σκεπάζονται μεγάλοις οὖσιν. ὥστε καὶ πλεῖσται ἐν

αὐτοῖς. ἐνίων δὲ τοῦ φύκους ἐκβεβλημένου πολλοῦ καὶ θῖνας ὑψηλοὺς καὶ λοφώδεις ποιοῦντος, ὑπο-
ρύττοντες ταύτας ὑποικοῦσι. τοὺς δὲ νεκροὺς ῥίπτουσι τροφὴν τοῖς ἰχθύσιν, ἀναλαμβανομένους ὑπὸ
τῶν πλημμυρίδων. τῶν δὲ νήσων τινὲς τρεῖς ἐφεξῆς κεῖνται. ἡ μὲν, χελωνῶν, ἡ δὲ, φωκῶν, ἡ δ' ἱεράκων
λεγομένη. πᾶσα δ' ἡ παραλία φοίνικάς τε ἔχει καὶ ἐλαιῶνας καὶ δαφνῶνας. οὐχ ἡ ἐντὸς τῶν στενῶν μόνον,
ἀλλὰ καὶ τῆς ἐκτὸς πολλή, ἔστι δέ τις καὶ φιλίππου νῆσος. καθ' ἣν ὑπέρκειται τὸ πυθαγγέλου καλού-
μενον τῶν ἐλεφάντων κυνήγιον. εἶτ' ἀρσινόη πόλις καὶ λιμήν. καὶ μετὰ ταῦτα ἡ δειρή. καὶ τούτων ὑπέρ-
κειται θήρα τῶν ἐλεφάντων. ἀπὸ δὲ τῆς δειρῆς ἡ ἐφεξῆς ἐστιν ἀρωματοφόρος. πρώτη μὲν ἡ τὴν σμύρναν
φέρουσα. καὶ αὕτη μὲν ἰχθυοφάγων καὶ κρεωφάγων. φύει δὲ καὶ περσέαν, καὶ συκάμινον αἰγύπτιον.
ὑπέρκειται δ' ἡ λίχα θήρα τῶν ἐλεφάντων. πολλαχοῦ δ' εἰσὶ συστάδες τῶν ὀμβρίων ὑδάτων. ὧν ἀναξηρανθεισῶν, οἱ
ἐλέφαντες ταῖς προβοσκίσι καὶ τοῖς ὀδοῦσι φρεωρυχοῦσι καὶ ἀνευρίσκουσιν ὕδωρ. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ
ταύτῃ, δύο λίμναι μέχρι τοῦ πυθολάου ἀκρωτηρίου εἰσὶν εὐμεγέθεις. ἡ μὲν, ἁλμυροῦ ὕδατος ἣν καλοῦσι
θάλατταν. ἡ δὲ, γλυκέος. ἣ τρέφει καὶ ἵππους ποταμίους καὶ κροκοδείλους. περὶ δὲ τὰ χείλη πάπυρον.
ὁρῶνται γὰρ καὶ ἴβεις περὶ τὸν τόπον. ἤδη δὲ καὶ οἱ πλησίον τῆς ἄκρας τοῦ πυθαγγέλου τὰ σώματα ὁλό-
κληροί εἰσι. μετὰ δὲ τούτους, ἡ λιβανωτοφόρος ἐνταῦθα ἄκρα ἐστί. καὶ ἱερὸν αἰγείρωνα ἔχον. ἐν δὲ τῇ μεσο-
γαίᾳ ποταμία τις ἴσιδος λεγομένη καὶ ἄλλη τις νεῖλος. ἄμφω καὶ λίβανον καὶ σμύρναν παραπεφυκότα
ἔχουσαι. ἔστι δὲ καὶ δεξαμενή τις τοῖς ἐκ τῶν ὀρῶν ὕδασι πληρουμένη. καὶ μετὰ ταῦτα λέοντος σκοπή, καὶ
πυθαγγέλου λιμήν. ἡ δ' ἑξῆς ἔχει καὶ ψευδοκασσίαν. συνεχῶς δ' εἰσὶ ποταμίαι τε πλείους. ἔχουσαι λί-
βανον παραπεφυκότα. καὶ ποταμὸς μέχρι κινναμωμοφόρου. ὁ δ' ὁρίζων ταύτην ποταμὸς φέρει καὶ
φλοῦν πάμπολυν. εἶτ' ἄλλος ποταμός. καὶ δαφνοῦς λιμήν. καὶ ποταμία ἀπόλλωνος καλουμένη. ἔχου-
σα πρὸς τῷ λιβάνῳ καὶ σμύρναν καὶ κιννάμωμον. τοῦτο δὲ πλεῖον ἀκμάζει μᾶλλον περὶ τοὺς ἐν βάθει
τόπους, εἶθ' ὁ ἐλέφας τὸ ὄρος. ἐκκείμενον εἰς θάλατταν. καὶ διώρυξ. καὶ ἐφεξῆς ψυγμοῦ λιμὴν μέγας. καὶ
ὕδρευμα τὸ κυνοκεφάλων καλούμενον. καὶ τελευταῖον ἀκρωτήριον τῆς παραλίας ταύτης τὸ νότου
κέρας. καὶ κάμψαντι δὲ τοῦτο, ὡς ἐπὶ μεσημβρίαν, οὐκέτι φησὶν ἔχομεν λιμένων ἀναγραφὰς οὐδὲ τό-
πων διὰ τὸ μηκέτι εἶναι γνώριμον. ἐν δὲ τῇ ἑξῆς παραλίᾳ, εἰσὶ καὶ στῆλαι καὶ βωμοὶ πυθολάου καὶ λίχα
καὶ πυθαγγέλου, καὶ λέοντος καὶ χαριμόρτου, κατὰ τὴν γνώριμον παραλίαν τὴν ἀπὸ δειρῆς μέχρι νότου
κέρως. τὸ δὲ διάστημα οὐ γνώριμον, πληθύει δ' ἐλέφασιν ἡ χώρα καὶ λέουσι τοῖς καλουμένοις μύρμηξιν.
ἀπεστραμμένα δ' ἔχουσι τὰ αἰδοῖα καὶ χρυσοειδεῖς τὴν χρόαν. ψιλότεροι δὲ τῶν κατὰ τὴν ἀραβίαν. φέρει
δὲ καὶ παρδάλεις ἀλκίμους, καὶ ῥινοκέρωτας. οὗτοι δὲ μικρὸν ἀπολείπονται τῶν ἐλεφάντων οἱ ῥινοκέ-
ρωτες. ὡς μὲν ἀρτεμίδωρος φησὶν τῷ σειρὰν μήκει. καίπερ ἑωρακέναι φήσας ἐν ἀλεξανδρείᾳ. ἀλλὰ
σχεδόν τι ὅσον τῷ ὕψει ἀπό γε τοῦ ἀφ' ἡμῶν ὁραθέντος. οὔτε πύξῳ τὸ χρῶμα ἐμφερές. ἀλλ' ἐλέφαντι μᾶλ-
λον. μέγεθος δ' ἐστὶ ταύρου. μορφὴ δ' ἐγγύτατον συάγρου. καὶ μάλιστα κατὰ τὴν προτομὴν, πλὴν τῆς
ῥινός. ὅτι ἔστι κέρας σιμὸν στερεώτερον ὀστέου παντός. χρῆται δ' ὅπλῳ καθάπερ καὶ τοῖς ὀδοῦσιν ὁ σύα-
γρος. ἔχει δὲ καὶ τύλους δύο, ὡς ἂν σπείρας δρακόντων, ἀπὸ τῆς ῥάχεως μέχρι τῆς γαστρὸς περικειμένας
τὴν μὲν πρὸς τῷ λόφῳ. τῇ δὲ, πρὸς τῇ ὀσφύϊ. ἐκ μὲν δὴ τοῦ ὑφ' ἡμῶν ὁραθέντος ταῦτα φαμὲν ἡμεῖς. ἐκεῖ-
νος δὲ προσδιασαφεῖ, διότι καὶ ἐλεφαντόμαχον ἰδίως ἐστὶ τὸ ζῶον περὶ τῆς νομῆς ὑπαντῶν τῇ προτομῇ.
καὶ ἀνακεῖρον τὴν γαστέρα ἂν μὴ προληφθῇ τῇ προβοσκίδι καὶ τοῖς ὀδοῦσι. γίγνονται δ' ἐν τούτοις τοῖς
τόποις καὶ αἱ καμηλοπαρδάλεις. οὐδὲν ὅμοιον ἔχουσαι παρδάλει. τὸ γὰρ ποικίλον τῆς χρόας, νεβρίσι
μᾶλλον ἔοικε ῥαβδωτοῖς σπίλοις κατεστιγμέναις. τελέως δὲ τὰ ὀπίσθια ταπεινότερα τῶν ἐμπροσθίων
ἐστίν. ὥστε δοκεῖν συγκαθῆσθαι τῷ οὐραίῳ μέρει, τὸ ὕψος βοὸς ἔχοντι. τὰ δὲ ἐμπρόσθια σκέλη τῶν καμη-
λείων οὐ λείπεται. τράχηλος δ' εἰς ὕψος ἐξηρτημένος ὀρθός τὴν κορυφὴν δὲ πολὺ ὑπερτέραν ἔχει τῆς
καμήλου. διὰ δὲ τὴν ἀσυμμετρίαν ταύτην, οὐδὲ τάχος οἶμαι τοσοῦτον εἶναι περὶ τὸ ζῶον ὅσον εἴρηκεν
ἀρτεμίδωρος ἀνυπέρβλητον φήσας, ἀλλ' οὐδὲ θηρίον ἐστίν. ἀλλὰ βόσκημα μᾶλλον. οὐδεμίαν γὰρ ἀγριό-
τητα ἐμφαίνει. γίγνονται δέ φησι καὶ σφίγγες καὶ κυνοκέφαλοι. καὶ κῆποι. λέοντος μὲν πρόσωπον ἔχοντες.
τὸ δὲ λοιπὸν σῶμα πάνθηρος. μέγεθος δὲ δορκάδος. καὶ ταῦροι δ' εἰσὶν ἄγριοι καὶ σαρκοφάγοι. μεγέθει πολλῷ
τοὺς παρ' ἡμῖν ὑπερβεβλημένοι καὶ τάχει. πυρροὶ τὴν χρόαν. κροκούττας δ' ἐστὶ μίγμα λύκου καὶ κυνὸς
ὥς φησιν οὗτος. ἃ δ' ὁ σκήψιος λέγει μητρόδωρος ἐν τῷ περὶ συνηθείας βιβλίῳ, μύθοις ἔοικε. καὶ οὐ φρον-
τιστέον αὐτῶν. καὶ δρακόντων δ' εἴρηκε μεγέθη τριάκοντα πηχῶν ὁ ἀρτεμίδωρος, ἐλέφαντας καὶ ταύ-
ρους χειρουμένων. μετριάζει ταύτῃ γε. οἱ γὰρ ἰνδικοὶ μυθωδέστεροι καὶ οἱ λιβυκοί. οἷς τε καὶ ποῖα ἐπιπε-
φυκέναι λέγεται. νομαδικὸς μὲν οὖν ὁ βίος τῶν τρωγλοδυτῶν. τυραννοῦνται δὲ καθ' ἕκαστα. κοιναὶ δὲ καὶ
γυναῖκες καὶ τέκνα. πλὴν τοῖς τυράννοις. τῷ δὲ τὴν τυράννου φθείραντι. πρόβατον ἡ ζημία ἐστί. στιβί-
ζονται δ' ἐπιμελῶς αἱ γυναῖκες. περίκεινται δὲ τοῖς τραχήλοις κογχία ἀντὶ βασκανίων. πολεμοῦσι δὲ
περὶ τῆς νομῆς. κατ' ἀρχὰς μὲν διορθούμενοι ταῖς χερσίν. εἶτα λίθοις. ὅταν δὲ τραῦμα γένηται καὶ το-
ξεύμασι καὶ μαχαιρίοις, διαλύουσι γυναῖκες μέσον ἐπιοῦσαι καὶ δεήσεις προσενέγκασαι. τροφὴ δ' ἔκ τε
σαρκῶν καὶ τῶν ὀστέων κοπτομένων ἀναμὶξ καὶ εἰς τὰς δορὰς ἐνειλουμένων. εἶτ' ὀπτωμένων. καὶ ἄλλως

πολλαχῶς σκευαζομένων ἀπὸ τῶν μαγείρων, οὓς καλοῦσιν ἀκαθάρτους· ὥς τε μὴ κρεωφαγεῖν μόνον
ἀλλὰ καὶ ὀστοφαγεῖν· καὶ δερματοφαγεῖν· χρῶνται δὲ καὶ τῷ αἵματι, καὶ τῷ γάλακτι καταμίξαντες·
ποτὸν δὲ τοῖς μὲν πολλοῖς, ἀπόβρεγμα παλιούρου· τοῖς δὲ τυράννοις μελίκρατον, ἀπ᾽ ἄνθους τινὸς ἐκ
πιεζομένου τοῦ μέλιτος. ἔστι δ᾽ αὐτοῖς χειμὼν μὲν ἡνίκα οἱ ἐτησίαι πνέουσι· καταομβροῦνται γάρ· θέ
ρος δ᾽ ὁ λοιπὸς χρόνος, γυμνῆται δὲ καὶ δερματοφόροι, καὶ σκυταληφόροι διατελοῦσιν· εἰσὶ δ᾽ οἱ κολο
βοὶ μόνον, ἀλλὰ καὶ περιτετμημένοι τινὲς καθάπερ αἰγύπτιοι. οἱ δὲ μέγαροι αἰθίοπες τοῖς ῥοπάλοις
καὶ τύλους προστιθέασι σιδηροῦς χρῶνται δὲ, καὶ λόγχαις καὶ ἀσπίσιν ὠμοβυρσίναις· οἱ δὲ λοιποὶ αἰ
θίοπες τόξοις, καὶ λόγχαις. θάπτουσι δέ τινες τῶν τρωγλοδυτῶν, ῥάβδοις παλιουρίνοις δήσαντες τὸν αὐ
χένα τῶν νεκρῶν πρὸς τὰ σκέλη· ἔπειτα εὐθὺς καταλεύουσιν ἱλαροὶ, γελῶντες ἅμα, ἕως ἂν τοῦ
σώματος τὴν ὄψιν ἀποκρύψωσιν· εἶτ᾽ ἐπιθέντες κέρας αἴγειον ἀπίασιν· ὁδοιποροῦσι δὲ νύκτωρ ἐκ
τῶν ἀρρένων θρεμμάτων κώδωνας ἐξάψαντες, ὥστ᾽ ἐξίστασθαι τὰ θηρία τῷ ψόφῳ, καὶ λαμπά-
σι τε καὶ τόξοις ἤδη τὰ θηρία χρῶνται. καὶ διαγρυπνοῦσι δὲ τῶν ποιμνίων χάριν, ᾠδῇ τινι χρώ-
μενοι πρὸς τῷ πυρί. ταῦτ᾽ εἰπὼν περὶ τῶν τρωγλοδυτῶν, καὶ τῶν προσχώρων αἰθιόπων, ἐπάνεισιν
ἤδη τοὺς ἄραβας. καὶ πρώτους ἔπεισι τοὺς τὸν ἀράβιον κόλπον ἀφορίζοντας καὶ ἀντικειμένους
τοῖς τρωγλοδύταις. ἀρξάμενος ἀπὸ τοῦ ποσειδίου φησὶ δ᾽ ἐνδοτέρω κεῖσθαι τοῦτο τοῦ ἐλανίτου
μυχοῦ. συνεχῆ δὲ τῷ ποσειδίῳ φοινικῶνα εἶναι εὔυδρον· τιμᾶσθαι τε κομιδῇ, διὰ τὸ πᾶσαν τὴν κύ-
κλῳ καυματηράν τε καὶ ἄνυδρον, καὶ ἄσκιον ὑπάρχειν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν εὐκαρπίαν τῶν φοι-
νίκων εἶναι θαυμαστήν. προέστηκε δὲ τοῦ ἄλσους ἀνὴρ, καὶ γυνὴ, διὰ γένους ἀποδεδειγμένοι δερμα-
τοφόροι· τροφὴν ἀπὸ τῶν φοινίκων ἔχοντες. κοιτάζονται δ᾽ ἐπὶ δένδρων καλυβοποιησάμενοι διὰ τὸ πλῆ-
θος τῶν θηρίων. εἶθ᾽ ἑξῆς ἐστὶ νῆσος φωκῶν· ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν θηρίων τούτων ὠνομασμένη πλησίον δ᾽ αὐτῆς
ἀκρωτήριον, ὃ διατείνει πρὸς τὴν πέτραν τὴν τῶν ναβαταίων καλουμένων ἀράβων καὶ τὴν παλαιστίνην
χώραν. εἰς ἣν μειναῖοι τε καὶ γερραῖοι, καὶ πάντες οἱ πλησιόχωροι τὰ τῶν ἀρωμάτων φορτία κομί-
ζουσιν. εἶτ᾽ ἄλλη παραλία. πρότερον μὲν μαρανειτῶν καλουμένη· ὧν οἱ μὲν ἦσαν γεωργοί· τινὲς δὲ σκη
νῖται. νῦν δὲ γαρινδαίων ἀνελόντων ἐκείνους δόλῳ. ἐπέθεντο γὰρ αὐτοῖς πενταετηρικήν τινα πα-
νήγυριν ἄγουσι, καὶ τούτους δὲ διέφθειραν, καὶ τοὺς ἄλλους ἐπελθόντες ἄρδην διελυμήναντο. εἶτ᾽ ἐ
λανίτης κόλπος καὶ ἡ ναβαταία. πολυάνδρος οὖσα ἡ χώρα καὶ εὔβοτος. οἰκοῦσι δὲ καὶ νήσους προ-
κειμένας πλησίον· οἳ πρότερον μὲν καθ᾽ ἡσυχίαν ἦσαν· ὕστερον δὲ σχεδίαις ἐλῄζοντο τοὺς ἐκ τῆς αἰγύπτου
πλέοντας. δίκας δ᾽ ἔτισαν ἐπελθόντος στόλου καὶ ἐκπορθήσαντος αὐτούς. ἑξῆς δ᾽ ἐστὶ πεδίον εὔδενδρόν τε
καὶ εὔυδρον· καὶ βοσκημάτων παντοίων μεστόν· ἄλλων τε καὶ ἡμιόνων ἀγρίων, καὶ καμήλων, καὶ
ἐλάφων, καὶ δορκάδων πλῆθος. λέοντές τε, καὶ παρδάλεις, καὶ λύκοι συχνοί. πρόκειται δὲ νῆσος καλου
μένη δία. εἶτα κόλπος ὅσον πεντακοσίων σταδίων· ὄρεσι περικλειόμενος καὶ δυσεισβόλῳ στόματι. περι
οικοῦσι δὲ θηρευτικοὶ ἄνδρες τῶν χερσαίων ἀγρευμάτων. εἶτ᾽ ἔρημοι τρεῖς νῆσοι πλήρεις ἐλαιῶν οὐ τῶν
παρ᾽ ἡμῖν. ἀλλὰ τῶν ἐντοπίων. ἃς καλοῦμεν αἰθιοπικάς· ὧν τὸ δάκρυον, καὶ ἰατρικῆς δυνάμεώς ἐστιν.
ἐφεξῆς δ᾽ ἐστὶν αἰγιαλὸς λιθώδης· καὶ μετὰ τοῦτον τραχεῖα, καὶ δυσπαράπλους, ὅσον χιλίων σταδίων
παραλία, σπάνει λιμένων, καὶ ἀγκυροβολίων· ὄρος γὰρ παρατείνει τραχὺ, καὶ ὑψηλόν. εἶθ᾽ ὑπώρειαι
σπιλαδώδεις μέχρι τῆς θαλάττης. τοῖς ἐτησίαις μάλιστα καὶ ταῖς τότε ἀπομβρίαις ἀβοήθητον πα
ρέχουσαι τὸν κίνδυνον. ἑξῆς δ᾽ ἐστὶ κόλπος νήσους ἔχων σποράδας. καὶ συνεχεῖς θῖνες ψάμμου μελαί
νης τρεῖς ἄγαν ὑψηλοί· καὶ μετὰ τούτους χαρμόθας λιμὴν, ὅσον σταδίων τὸν κύκλον ἑκατὸν, στενὸν, καὶ
ἐπικίνδυνον ἔχων τὸν εἴσπλουν παντὶ σκάφει· ῥεῖ δὲ καὶ ποταμὸς εἰς αὐτόν. ἐν μέσῳ δὲ νῆσος εὔδεν
δρος, καὶ γεωργήσιμος. εἶτ᾽ ἐστὶ παραλία τραχεῖα, καὶ μετὰ ταύτην κόλποι τινὲς, καὶ χώρα νομάδων.
ἀπὸ καμήλων ἐχόντων τὸν βίον, καὶ γὰρ πολεμοῦσιν ἀπ᾽ αὐτῶν· καὶ ὁδεύουσι· καὶ τρέφονται τῷ τε γά
λακτι χρώμενοι, καὶ ταῖς σαρξί. ῥεῖ δὲ ποταμὸς δι᾽ αὐτῶν ψῆγμα χρυσοῦ καταφέρων. οὐκ ἴσασι δ᾽ αὐτὸ κα
τεργάζεσθαι. καλοῦνται δὲ δέβαι. οἱ μὲν νομάδες· οἱ δὲ καὶ γεωργοί. οὐ λέγω δὲ τῶν ἐθνῶν τὰ ὀνόματα τὰ πα
λαιὰ διὰ τὴν ἀδοξίαν, καὶ ἅμα ἀτοπίαν τῆς ἐκφορᾶς αὐτῶν. ἐχόμενοι δ᾽ εἰσὶν ἡμερώτεροι τούτων ἄνδρες.
εὐκρατοτέραν οἰκοῦντες γῆν. καὶ γὰρ εὔυδρός ἐστι καὶ εὔομβρος χρυσός τε ὀρυκτὸς γίνεται παρ᾽ αὐτοῖς οὐ
ψήγματος. ἀλλὰ βωλαρίων χρυσοῦ καθάρσεως οὐ πολλῆς δεομένου. μέγεθος δ᾽ ἐχόντων ἐλάχιστον μὲν πυ
ρῆνος. μέσον δὲ μεσπίλου. μέγιστον δὲ καρύου. τρήσαντες δὲ ταῦτα ἐναλλὰξ διαφανέσι λίθοις ὅρμους ποιοῦσι
διείροντες λίνον. περιτίθενται δὲ περὶ τοὺς τραχήλους, καὶ καρπούς, πωλοῦσι δὲ καὶ πρὸς τοὺς ἀστυγείτονας εὔω
νον τὸν χρυσόν. τριπλάσιον ἀντιδόντες τοῦ χαλκοῦ. διπλάσιον δὲ τοῦ ἀργύρου. διὰ δὲ τὴν ἀπειρίαν τῆς ἐρ
γασίας, καὶ τὴν σπάνιν τῶν ἀντιλαμβανομένων, ὧν ἡ χρεία πρὸς τὸν βίον, ἀναγκαιοτέρα. συνάπτει
δ᾽ ἡ τῶν σαβαίων εὐδαιμονεστάτη μεγίστου ἔθνους· παρ᾽ οἷς, καὶ σμύρνα, καὶ λίβανος, καὶ κιννάμωμον. ἐν δὲ
τῇ παραλίᾳ, καὶ βάλσαμον, καὶ ἄλλη τις πόα σφόδρα εὐώδης. ταχὺ δ᾽ ἐξίτηλον τὴν ὀδμὴν ἔχου
σα. εἰσὶ δὲ καὶ φοίνικες εὐώδεις, καὶ κάλαμος. ὄφεις δὲ σπιθαμιαῖοι. φοινικοῖ τὴν χρόαν. προσαλλόμενοι
καὶ μέχρι λαγόνος. τὸ δῆγμα ἔχοντες ἀνήκεστον. διὰ δὲ τὴν ἀφθονίαν τῶν καρπῶν, ἀργοὶ καὶ ῥάθυμοι

τοῖς βίοις εἰσὶν οἱ ἄνθρωποι. κοιτάζονται δὲ ἐπὶ τῶν ῥιζῶν τῶν δένδρων, ἐκτέμνοντες οἱ πολλοὶ καὶ δη-
μοτικοί. διαδεχόμενοι δ' οἱ σύνεγγυς ἀεὶ τὰ φορτία, τοῖς μετ' αὐτοὺς παραδιδόασι μέχρι συρίας καὶ
μεσοποταμίας. καρούμενοι δ' ὑπὸ τῶν εὐωδιῶν, αἴρουσι τὸν κάρον ἀσφάλτου θυμιάματι. καὶ τράγου πώ-
γωνος. ἡ δὲ πόλις τῶν σαβαίων, ἡ μερίαβα, κεῖται μὲν ἐπ' ὄρους εὐδένδρου. βασιλέα δ' ἔχει κύριον τῶν
κρίσεων καὶ τῶν ἄλλων, ἐκ δὲ τῶν βασιλείων, οὐ θέμις ἐξεῖναι. ἢ καταλεύουσιν αὐτὸν παραχρῆ-
μα οἱ ὄχλοι κατά τι λόγιον. ἐν χλιδῇ δ' ἐστὶ γυναικεία καὶ αὐτὸς, καὶ οἱ περὶ αὐτὸν, τὰ δὲ πλήθη τὰ
μὲν, γεωργεῖ. τὰ δ' ἐμπορεύεται τὰ ἀρώματα. τά τε ἐπιχώρια καὶ τὰ ἀπὸ τῆς αἰθιοπίας, πλέοντες
ἐπ' αὐτὰ διὰ τῶν στενῶν δερματίνοις πλοίοις. τοσαῦτα δ' ἐστὶ τὸ πλῆθος, ὥστ' ἀντὶ φρυγάνων, καὶ τῆς
καυσίμου ὕλης, χρῆσθαι κινναμώμῳ, καὶ κασίᾳ καὶ τοῖς ἄλλοις. γίνεται δ' ἐν τοῖς σαβαίοις, καὶ τὸ λά-
ριμνον. εὐωδέστατον θυμίαμα. ἐκ δὲ τῆς ἐμπορείας οὗτοί τε, καὶ γερραῖοι πλουσιώτατοι πάντων εἰσίν. ἔχου-
σί τε παμπληθῆ κατασκευὴν χρυσωμάτων τε καὶ ἀργυρωμάτων, κλινῶν τε καὶ τριπόδων καὶ κρατή-
ρων, σὺν ἐκπώμασι καὶ τῇ τῶν οἴκων πολυτελείᾳ. καὶ γὰρ θυρώματα καὶ τείχη, καὶ ὀροφαὶ δι' ἐλέφαντος
καὶ χρυσοῦ καὶ ἀργύρου καὶ λιθοκολλήτου τυγχάνει διαπεποικιλμένα. ταῦτα μὲν περὶ τούτων εἴρηκε.
τἆλλα δὲ τὰ μὲν, παραπλησίως τῷ ἐρατοσθένει λέγει. τὰ δὲ, καὶ παρὰ τῶν ἄλλων ἱστορικῶν παρατί-
θησιν. ἐρυθρὰν γὰρ λέγειν τινὰς τὴν θάλατταν ἀπὸ τῆς χροιᾶς τῆς ἐμφαινομένης κατ' ἀνάκλασιν. εἴτε ἀπὸ
τοῦ ἡλίου κατὰ κορυφὴν ὄντος, εἴτε ἀπὸ τῶν ὀρῶν ἐρυθραινομένων ἐκ τῆς ἀποκαύσεως. ἀμφοτέρως γὰρ
εἰκάζειν. κτησίαν δὲ τὸν κνίδιον, πηγὴν ἱστορεῖν ἐκδιδοῦσαν εἰς τὴν θάλατταν, ἐρευθὲς, καὶ μιλτῶδες ὕ-
δωρ. ἀγαθαρχίδην δὲ τὸν ἐκείνου πολίτην, παρά τινος βόξου τὸ γένος ἱστορῆσαι. διότι πέρσης τις ἐρύ-
θρας ἱπποφορβίου τινὸς ὑπὸ λεαίνης οἴστρῳ κατασχομένου, ἐξελαθέντος δὲ μέχρι θαλάττης, κἀκεῖ-
θεν εἰς νῆσόν τινα διαράντος, σχεδίαν πηξάμενος, πρῶτος περαιωθείη πρὸς τὴν νῆσον. ἰδὼν δὲ καλῶς οἰ-
κήσιμον, τὴν μὲν ἀγέλην εἰς τὴν περσίδα ἀπαγάγοι πάλιν. ἀποίκους δ' ἐκεῖ στέλλεται, καὶ τὰς ἄλλας
νήσους, καὶ τὴν παραλίαν. ἐπώνυμον δὲ ποιήσειεν ἑαυτοῦ τὸ πέλαγος. τοὺς δὲ, περσέως υἱὸν ἀποφαίνεσθαι
τὸν ἐρύθραν. ἡγήσασθαί τε τῶν τόπων. λέγεται δ' ὑπό τινων τὰ ἀπὸ τῶν στενῶν τοῦ ἀραβίου κόλπου μέχρι
τῆς κινναμωμοφόρου τῆς ἐσχάτης πεντακισχιλίων σταδίων οὐκ εὐκρινῶς, ὅτι ἐπὶ νότον, ἢ ἐπὶ τὰς ἀνατολάς.
λέγεται δὲ καὶ διότι ὁ σμάραγδος, καὶ ὁ βήρυλλος ἐν τοῖς τοῦ χρυσίου μετάλλοις ἐγγίνεται. εἰσὶ δὲ ἅλες
εὐώδεις ἐν ἄραψιν ὥς φησι ποσειδώνιος. πρῶτοι δ' ὑπὲρ τῆς συρίας ναβαταῖοι, καὶ σουῆβοι τὴν εὐδαί-
μονα, ἀραβίαν νέμονται. καὶ πολλάκις κατέτρεχον αὐτῆς, πρὶν ἢ ῥωμαίων γενέσθαι. νῦν δὲ κἀκεῖνοι
ῥωμαίοις εἰσὶν ὑπήκοοι καὶ σύροι. μητρόπολις δὲ τῶν ναβαταίων, ἐστὶν ἡ πέτρα καλουμένη. κεῖται γὰρ ἐπὶ
χωρίου τἆλλα ὁμαλοῦ, καὶ ἐπιπέδου. κύκλῳ δὲ πέτρᾳ φρουρουμένου. τὰ μὲν ἐκτὸς κρημνοῦ ἀποτόμου.
τὰ δ' ἐντὸς πηγὰς ἀφθόνους ἔχοντος εἴς τε ὑδρείαν καὶ κηπείαν. ἔξω δὲ τοῦ περιβόλου, χώρα ἔρημος ἡ
πλείστη. καὶ μάλιστα ἡ πρὸς ἰουδαίαν. ταύτῃ δὲ καὶ ἐγγυτάτω ἐστὶ τριῶν ἢ τεττάρων ὁδὸς ἡμερῶν εἰς ἱερι-
κοῦντα. εἰς δὲ τὸν φοινικῶνα πέντε. βασιλεύεται μὲν οὖν ὑπό τινος ἀεὶ τῶν ἐκ τοῦ βασιλικοῦ γένους. ἔχει
δ' ὁ βασιλεὺς ἐπίτροπον, τῶν ἑταίρων τινὰ καλούμενον ἀδελφόν. σφόδρα δ' εὐνομεῖται. γενόμενος γοῦν
παρὰ τοῖς πετραίοις ἀθηνόδωρος ἀνὴρ φιλόσοφος, καὶ ἡμῖν ἑταῖρος διηγεῖτο θαυμάζων. εὑρεῖν γὰρ ἐπι-
δημοῦντας ἔφη πολλοὺς μὲν ῥωμαίων. πολλοὺς δὲ καὶ τῶν ἄλλων ξένων. τοὺς μὲν οὖν ξένους ὁρᾶν κρινομέ-
νους πολλάκις, καὶ πρὸς ἀλλήλους καὶ πρὸς τοὺς ἐπιχωρίους. τῶν δ' ἐπιχωρίων οὐδένας ἀλλήλοις ἐγκα-
λοῦντας. ἀλλὰ τὴν πᾶσαν ἡσυχίαν ἄγοντας πρὸς ἑαυτούς. πολλὰ δὲ καὶ ἡ τῶν ῥωμαίων ἐπὶ τοὺς ἄ-
ραβας στρατεία νεωστὶ γενηθεῖσα ἐφ' ἡμῶν, ὧν ἡγεμὼν ἦν αἴλιος γάλλος, διδάσκει τῶν τῆς χώρας ἰδιω-
μάτων. τοῦτον δ' ἔπεμψεν ὁ σεβαστὸς, καῖσαρ διαπειρασόμενον τῶν ἐθνῶν, καὶ τῶν τόπων τούτων, τε καὶ τῶν
αἰθιοπικῶν ὁρῶν. τήν τε τρωγλοδυτικὴν τὴν προσεχῆ τῇ αἰγύπτῳ. γειτονεύουσαν τούτοις. καὶ τὸν ἀρά-
βιον κόλπον στενὸν ὄντα τελέως, τὸν διείργοντα ἀπὸ τῶν τρωγλοδυτῶν τοὺς ἄραβας. προσοικειοῦσθαι δὴ δι-
ενοήθη τούτους, ἢ καταστρέφεσθαι. ἦν δέ τι καὶ τὸ πολυχρημάτους ἀκούειν ἐκ παντὸς χρόνου πρὸς ἄργυρον
καὶ χρυσὸν τὰ ἀρώματα διατιθεμένους. καὶ τὴν πολυτελεστάτην λιθίαν ἀναλίσκοντας τῶν λαμβανο-
μένων τοῖς ἔξω μηδέν. ἢ γὰρ φίλοις ἤλπιζε πλουσίοις χρήσεσθαι, ἢ ἐχθρῶν κρατήσειν πλουσίων. ἐπῆρε δ'
αὐτὸν καὶ ἡ παρὰ τῶν ναβαταίων ἐλπὶς, φίλων ὄντων. καὶ συμπράξειν ἅπαντα ὑπισχνουμένων. ἐπὶ τού-
τοις μὲν οὖν ἔστειλε τὴν στρατείαν ὁ γάλλος. ἐξηπάτησε δ' αὐτὸν ὁ τῶν ναβαταίων ἐπίτροπος συλλαῖος.
ὑποσχόμενος μὲν ἡγήσασθαι τὴν ὁδὸν. καὶ χορηγήσειν ἅπαντα καὶ συμπράξειν. ἅπαντα δ' ἐξ ἐπιβου-
λῆς πράξας. καὶ οὔτε παράπλουν ἀσφαλῆ μηνύων οὐδ' ὁδὸν. ἀλλὰ ἀνοδίαις καὶ κυκλοπορείαις καὶ
πάντων ἀπόροις χωρίοις, ἢ ῥαχίαις ἀλιμένοις παραβαλὼν, ἢ χοιράδων ὑφάλων μεσταῖς, ἢ τεναγώδεσι.
πλεῖστον δὲ αἱ πλημμυρίδες ἐλύπουν ἐν τοιούτοις, καὶ ταῦτα χωρίοις, καὶ αἱ ἀμπώτεις. πρῶτον μὲν
δὴ τοῦθ' ἁμάρτημα συνέβη. τὰ μακρὰ κατασκευάσασθαι πλοῖα. μηδενὸς ὄντος μηδ' ἐσομένου κατὰ θά-
λατταν πολέμου. οὐδὲ γὰρ κατὰ γῆν σφόδρα πολεμισταί εἰσιν. ἀλλὰ κάπηλοι μᾶλλον οἱ ἄραβες, καὶ ἐμπο-
ρικοί. μήτοι γε κατὰ θάλατταν. ὃ δ' οὐκ ἔλαττον ὀγδοήκοντα ἐναυπηγήσατο δίκροτα. καὶ τριήρεις καὶ
φασήλους, κατὰ κλεοπατρίδα τὴν πρὸς τῇ παλαιᾷ διώρυγι τῇ ἀπὸ τοῦ νείλου. γνοὺς δὲ διεψευσμένος,

ἐναυπηγήσατο σκευαγωγὰ ἑκατὸν, καὶ τριάκοντα· οἷς ἔπλευσεν ἔχων περὶ μυρίους πεζοὺς τῶν ἐκ τῆς αἰγύπτου ῥωμαίων καὶ τῶν συμμάχων· ὧν ἦσαν ἰουδαῖοι μὲν πεντακόσιοι· ναβαταῖοι δὲ χίλιοι μετὰ τοῦ συλλαίου· πολλὰ δὲ παθὼν, καὶ ταλαιπωρηθεὶς, πεντεκαιδεκαταῖος ἧκεν εἰς λευκὴν κώμην τῆς ναβαταίων γῆς· ἐμπορεῖον μέγα· πολλὰ τῶν πλοίων ἀποβαλὼν, ὧν ἔνια, καὶ αὔτανδρα ὑπὸ δυσπλοίας· πολεμίου δ' οὐδενός. τοῦτο δ' ἀπειργάσατο ἡ τοῦ συλλαίου κακία τοῦ πεζῇ φήσαντος ἀνόδευτα εἶναι στρατοπέδοις εἰς τὴν λευκὴν κώμην· εἰς ἣν καὶ ἐξ ἧς, οἱ καμηλέμποροι, τοσούτῳ πλήθει ἀνδρῶν, καὶ καμήλων ὁδεύουσιν ἀσφαλῶς καὶ εὐπόρως εἰς πέτραν ἐκ πέτρας, ὥστε μὴ διαφέρειν μηδὲν στρατοπέδου. συνέβαινε δὲ τοῦτο, τοῦ μὲν βασιλέως τοῦ ὀβέδα μὴ πολὺ φροντίζοντος τῶν κοινῶν· καὶ μάλιστα τῶν κατὰ πόλεμον· κοινὸν δὲ τοῦτο πᾶσι τοῖς ἀράβων βασιλεῦσιν· ἅπαντα δὲ ἐπὶ τῇ τοῦ ἐπιτρόπου ποιουμένου ἐξουσίᾳ τοῦ συλλαίου· τοῦτον δ' ἅπαντα δόλῳ στρατηγοῦντες καὶ ζητοῦντες ὡς οἶμαι, κατοπτεῦσαι μὲν, τὴν χώραν, καὶ συνεξελεῖν τινὰς αὐτῶν, πόλεις, καὶ ἔθνη μετὰ τῶν ῥωμαίων· αὐτὸν δὲ καταστῆναι κύριον ἁπάντων, ἀφανισθέντων ἐκείνων ὑπὸ λιμοῦ καὶ κόπου, καὶ νόσων, καὶ ἄλλων ὅσα δόλῳ παρεσκεύασεν ἐκεῖνος· εἰς γοῦν τὴν λευκὴν κώμην κατῆρεν ἤδη, στομακάκκῃ τε καὶ σκελοτύρβῃ· πειραζομένης τῆς στρατιᾶς ἐπιχωρίοις πάθεσι· τῶν μὲν, περὶ τὸ στόμα, τῶν δὲ περὶ τὰ σκέλη παράλυσίν τινα δηλούντων, ἔκ τε τῶν ὑδρείων, καὶ τῶν βοτανῶν· ἠναγκάσθη γοῦν τό τε θέρος καὶ τὸν χειμῶνα διατελέσαι αὐτόθι, τοὺς ἀσθενοῦντας ἀνακτώμενος· ἐκ μὲν οὖν τῆς λευκῆς κώμης εἰς πέτραν· ἐντεῦθεν δ' εἰς ῥινοκόλουρα τῆς πρὸς αἰγύπτῳ φοινίκης τὰ φορτία κομίζεται· κἀντεῦθεν εἰς τοὺς ἄλλους· νυνὶ δὲ τὸ πλέον εἰς τὴν ἀλεξάνδρειαν τῷ νείλῳ κατάγεται· τὰ δ' ἐκ τῆς ἀραβίας καὶ τῆς ἰνδικῆς εἰς μυὸς ὅρμον· εἶθ' ὑπερθέσεις εἰς κοπτὸν τῆς θηβαΐδος καμήλοις ἐν διώρυγι τοῦ νείλου κειμένην εἰς ἀλεξάνδρειαν· πάλιν ἐκ τῆς λευκῆς κώμης ὁ γάλλος ἀναζεύξας τὴν στρατιὰν, διὰ τοιούτων ᾔει χωρίων, ὥστε, καὶ ὕδωρ καμήλοις κομίζειν μοχθηρίᾳ τῶν ἡγεμόνων τῆς ὁδοῦ· διόπερ πολλαῖς ἡμέραις ἧκεν εἰς τὴν ἀρέτα γῆν συγγενοῦς τῷ ὀβέδα· ἐδέξατο μὲν οὖν αὐτὸν ἀρέτας φιλικῶς, καὶ δῶρα προσήνεγκεν· ἡ δὲ τοῦ συλλαίου προδοσία κἀκείνην ἐποίησε τὴν χώραν δυσπόρευτον· τριάκοντα γοῦν ἡμέραις διῆλθεν αὐτὴν, ζειὰς, καὶ φοίνικας ὀλίγας παρέχουσαν καὶ βούτυρον ἀντ' ἐλαίου διὰ τὰς ἀνοδίας. ἡ δ' ἐξῆς ἣν ἐπῄει, νομάδων ἦν, καὶ ἐρήματα πολλὰ ὡς ἀληθῶς ἐκαλεῖτο ἀραρηνὴ, βασιλεὺς δ' ἦν σάβος· καὶ ταύτην ἀνοδίαις διῆλθε κατατρίψας ἡμέρας πεντήκοντα, μέχρι πόλεως ἀγρανῶν καὶ χώρας εἰρηνικῆς τε· καὶ ἀγαθῆς· ὁ μὲν οὖν βασιλεὺς ἔφυγεν· ἡ δὲ πόλις ἐξ ἐφόδου κατελήφθη· ἐκεῖθεν ἡμέραις ἓξ ἧκεν ἐπὶ τὸν ποταμόν· συναψάντων δ' αὐτόθι τῶν βαρβάρων εἰς μάχην, περὶ μυρίους αὐτῶν ἔπεσον· τῶν δὲ ῥωμαίων δύο· ἐχρῶντο γὰρ ἀπείρως τοῖς ὅπλοις ἀπόλεμοι τελέως ὄντες τόξοις τε καὶ λόγχαις ξίφεσι, καὶ σφενδόναις· οἱ πλεῖστοι δ' αὐτῶν ἀμφιστόμοις πελέκεσιν· εὐθὺς δὲ, καὶ τὴν πόλιν εἷλε καλουμένην ἀσκᾶ· συλληφθεῖσαν ὑπὸ τοῦ βασιλέως· ἐντεῦθεν εἰς ἄθρουλλα πόλιν ἧκε, κρατήσας αὐτῆς ἀκονιτὶ, φρουρὰν ἐμβαλὼν, καὶ παρασκευάσας σίτου, καὶ φοινίκων· εἰς πόλιν μάρσυαβαὶ προῆλθεν· ἔθνους τοῦ ῥαμανιτῶν· οἳ ἦσαν ὑπὸ ἰλασάρῳ· ἓξ μὲν οὖν ἡμέρας προσβαλὼν ἐπολιόρκει· λειψυδρίας δ' οὔσης ἀπέστη· δύο μὲν οὖν ἡμερῶν ὁδὸν ἀπεῖχε τῆς ἀρωματοφόρου, καθάπερ τῶν αἰχμαλώτων ἀκούειν ἦν· ἓξ δὲ μηνῶν χρόνον ἐν ταῖς ὁδοῖς κατέτριψε φαύλως ἀγόμενος· ἔγνω δ' ἀναστρέφων ὀψὲ τὴν ἐπιβουλήν· καὶ καταμαθὼν καὶ καθ' ἑτέρας ὁδοὺς ἐπανελθὼν, ἐνναταῖος, μὲν εἰς ἀνάγρανα ἧκεν· ὅπου ἡ μάχη συμβεβήκει· ἐν δεκαταῖος, δ' ἐκεῖθεν, εἰς ἑπτὰ φρέατα καλούμενα ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος· ἐντεῦθεν ἤδη δ' εἰρήνης εἰς χάαλλα κώμην, καὶ πάλιν ἄλλην μαλόθαν πρὸς ποταμῷ κειμένην ἀφικνεῖται· εἶτα δι' ἐρήμης ὀλίγα ὑδρεῖα ἐχούσης ὁδὸς, μέχρι νεγρᾶς κώμης· ἔστι δὲ τοῦ ὀβέδα κειμένη δ' ἐπὶ θαλάττης, τὴν δὲ πᾶσαν ὁδὸν ἑξηκοστὸν ἤνυσε κατὰ τὴν ἐπάνοδον ἀναλώσας ἓξ μῆνας ἐν τῇ ἐξ ἀρχῆς ὁδῷ· ἐντεῦθεν δ' ἐπεραίωσε τὴν στρατιὰν ἑνδεκαταῖος εἰς μυὸς ὅρμον· εἶθ' ὑπερθέσεις εἰς κοπτόν· μετὰ τῶν σωθῆναι δυναμένων κατῆρεν εἰς ἀλεξάνδρειαν, τοὺς δ' ἄλλους ἀπέβαλεν, οὐχ ὑπὸ πολεμίων· ἀλλὰ νόσων καὶ κόπων, καὶ λιμοῦ καὶ μοχθηρίας τῶν ὁδῶν· ἐπεὶ κατὰ πόλεμον ἑπτὰ γενομένων, διαφθαρῆναι συνέβη, δι' ἃς αἰτίας οὐδ' ἐπὶ πολὺ πρὸς τὴν γνῶσιν τῶν τόπων ὤνησεν ἡ στρατιὰ αὕτη· μικρὰ δ' ὅμως συνήργησεν ὅ, τ' αἴτιος τούτων ὁ συλλαῖος· ἔτισε δὲ, καὶ δίκας ἐν ῥώμῃ· προσποιούμενος μὲν φιλίαν· ἐλεγχθεὶς δὲ πρὸς αὐτῇ τῇ πονηρίᾳ, καὶ ἄλλα κακουργῶν· καὶ ἀποτμηθεὶς τὴν κεφαλήν· τὴν μὲν οὖν ἀρωματοφόρον διαιροῦσιν εἰς τέτταρας μερίδας ὡς προειρήκαμεν τῶν ἀρωμάτων δὲ, λίβανον μὲν καὶ σμύρναν ἐκ δένδρων πήγνυσθαι φασί· κασσίαν δὲ καὶ ἐκ λιμνῶν· τινὲς δὲ τὴν πλείω ἐξ ἰνδῶν εἶναι· τοῦ δὲ λιβάνου βέλτιστον τὸν πρὸς τῇ περσίδι· κατ' ἄλλων δὲ διαίρεσιν σύμπασαν τὴν εὐδαίμονα πενταχῇ σχίζουσιν εἰς βασιλείας· ὧν ἡ μὲν, τοὺς μαχίμους ἔχει, καὶ προαγωνιστὰς ἁπάντων· ἡ δὲ τοὺς γεωργοὺς· παρ' ὧν ὁ σῖτος εἰς τοὺς ἄλλους εἰσάγεται· ἡ δὲ τοὺς βαναυσοτεχνοῦντας, καὶ ἡ μὲν σμυρνοφόρος ἡ δὲ λιβανοτοφόρος· αἱ δ' αὐταὶ καὶ τὴν κασσίαν, καὶ τὸ κιννάμωμον, καὶ τὴν νάρδον φέρουσι· παρ' ἀλλήλων δ' οὐ μεθίστανται τὰ ἐπιτηδεύματα· ἀλλ' ἐν τοῖς πατρῴοις διαμένουσιν ἕκαστοι· οἶνος δ' ἐκ φοινίκων ὁ πλείων· ἀδελφοὶ τιμιώτεροι τῶν τέκνων κατὰ πρεσβυγένειαν· καὶ βασιλεύουσιν οἱ ἐκ τοῦ γένους· καὶ ἄλλας ἀρχὰς ἄρχουσι· κοινὴ κτῆσις ἅπασι τοῖς συγγενέσι· κύριος δὲ πρεσβύτατος· μία δὲ καὶ γυνὴ πᾶσιν· ὁ δὲ φθάσας εἰ-

σιὼν μίγνυται· προθεὶς τῆς θύρας τὴν ῥάβδον· ἑκάστῳ δὲ ῥαβδοφορεῖν ἔθος· νυκτερεύει δὲ παρὰ τῷ πρεσβυτάτῳ· διὸ καὶ πάντες ἀδελφοὶ πάντων εἰσί· μίγνυνται δὲ καὶ μητράσι· μοιχῷ δὲ ζημία θάνατος· μοιχὸς δ' ἐστὶν ὁ ἐξ ἄλλου γένους. θυγάτηρ δὲ τῶν βασιλέων τινὸς θαυμαστὴ τὸ κάλλος ἔχουσα ἀδελφοὺς πεντεκαίδεκα, ἐρῶντας αὐτῆς πάντας, καὶ διὰ τοῦτ' ἀδιαλείπτως ἄλλον ἐπ' ἄλλῳ παριόντα, ὡς αὐτὴν κάμνουσαν ἤδη, παραδίδοται νοήματι χρήσασθαι τοιούτῳ· ποιησαμένη ῥάβδους ὁμοίας ταῖς ἐκείνων, ὅτ' ἐξίοι παρ' αὐτῆς τις, ἀεί τινα προυτίθει τῆς θύρας τὴν ὁμοίαν ἐκείνῃ· καὶ μικρὸν ὕστερον ἄλλην· στοχαζομένη ὅπως μὴ ἐκείνην τὴν παραπλησίαν ἔχῃ ὁ μέλλων προσιέναι· καὶ δὴ πάντων κατ' ἀγορὰν ὄντων, ἕνα προσιόντα τῇ θύρᾳ, καὶ ἰδόντα τὴν ῥάβδον, ἐκ μὲν ταύτης εἰκάσαι διότι παρ' αὐτήν τις εἴσεισι· ἐκ δὲ τοῦ τοὺς ἀδελφοὺς πάντας ἐν τῇ ἀγορᾷ καταλιπεῖν, ὑπονοῆσαι μοιχόν· δραμόντα δὲ πρὸς τὸν πατέρα καὶ ἀπαγαγόντα, ἐκεῖνον ἐλεγχθῆναι καταψευσάμενον τοῖς ἀδελφοῖς. σώφρονες δ' εἰσὶν οἱ ναβαταῖοι καὶ κτητικοί· ὥστε καὶ δημοσίᾳ τῷ μὲν μειώσαντι τὴν οὐσίαν ζημία κεῖται· τῷ δ' αὐξήσαντι τιμαί· ὀλιγόδουλοι δ' ὄντες, ὑπὸ τῶν συγγενῶν διακονοῦνται τὸ πλέον, ἢ ὑπ' ἀλλήλων, ἢ αὐτοδιάκονοι· ὥστε καὶ μέχρι τῶν βασιλέων διατείνειν τὸ ἔθος. συσσίτεια δὲ ποιοῦνται κατὰ τρεισκαίδεκα ἀνθρώπους· μουσουργοὶ δὲ δύο τῷ συμποσίῳ ἑκάστῳ· ὁ δὲ βασιλεὺς ἐν οἴκῳ μεγάλῳ πολλὰ συνέχει συμπόσια· πίνει δ' οὐδεὶς πλέω τῶν ἕνδεκα ποτηρίων ἄλλῳ καὶ ἄλλῳ χρυσῷ ἐκπώματι· οὕτω δ' ὁ βασιλεύς ἐστι δημοτικός, ὥστε πρὸς τῷ αὐτοδιακόνῳ, καὶ τὸν ἀντιδιάκονον τοῖς ἄλλοις αὐτὸν γίνεσθαι· πολλάκις δὲ καὶ ἐν τῷ δήμῳ δίδωσιν εὐθύνας· ἔσθ' ὅτε δὲ καὶ ἐξετάζεται τὰ περὶ τὸν βίον· οἰκήσεις δὲ διὰ λίθου πολυτελεῖς· αἱ δὲ πόλεις ἀτείχιστοι δι' εἰρήνην· εὔκαρπος ἡ πολλὴ πλὴν ἐλαίου· χρῶνται δὲ σησαμίνῳ· πρόβατα λευκότριχα· βόες μεγάλοι· ἵππων ἄφορος ἡ χώρα· κάμηλοι δὲ τὴν ὑπουργίαν ἀντ' ἐκείνων παρέχονται· χιτῶνες δ' ἐν περιζώμασι, καὶ βλαυτίοις· προΐασι καὶ οἱ βασιλεῖς· ἐν πορφύρᾳ δ' οὗτοι. εἰσαγώγιμα δ' ἐστὶ τὰ μέν, τελέως· τὰ δ' οὐ παντελῶς· ἄλλως τε καὶ ἐπιχωριάζει καθάπερ χρυσὸν καὶ ἄργυρον, καὶ τὰ πολλὰ τῶν ἀρωμάτων· χαλκὸς δὲ καὶ σίδηρος, καὶ ἔτι πορφυρᾶ ἐσθής· στύραξ· κρόκος δὲ καὶ κοστάρια· κόρημα γραφὴ πλάσμα, οὐκ ἐπιχώρια. ἴσα κοπρίαις ἡγοῦνται τὰ νεκρὰ σώματα· καθάπερ ἡράκλειτός φησι· νέκυες κοπρίων ἐκβλητότεροι· διὸ καὶ παρὰ τοὺς κοπρῶνας κατορύττουσι καὶ τοὺς βασιλεῖς. ἥλιον τιμῶσιν ἐπὶ τοῦ δώματος ἱδρυσάμενοι βωμόν· σπένδοντες ἐν αὐτῷ καθ' ἡμέραν, καὶ λιβανωτίζοντες. τοῦ δὲ ποιητοῦ λέγοντος αἰθίοπας θ' ἱκόμην καὶ σιδονίους, καὶ ἐρεμβούς, διαποροῦσι· καὶ περὶ τῶν σιδονίων μὲν τινάς χρὴ λέγειν τῶν ἐν τῷ περσικῷ κόλπῳ κατοικούντων· ὧν ἄποικοι οἱ παρ' ἡμῖν σιδόνιοι· καθάπερ καὶ τυρίους τινὰς ἐκεῖ νησιώτας ἱστοροῦσι· καὶ ἀραδίους· ὧν ἀποίκους τοὺς παρ' ἡμῖν φασιν· εἴτ' αὐτοὺς τοὺς σιδονίους· ἀλλὰ μᾶλλον ἡ περὶ τῶν ἐρεμβῶν ἡ ζήτησις· εἴτε τοὺς τρωγλοδύτας ὑπονοητέον λέγεσθαι καθάπερ οἱ τὴν ἐτυμολογίαν βιαζόμενοι ἀπὸ τοῦ εἰς τὴν ἔραν ἐμβαίνειν, ὅπερ ἐστὶν εἰς τὴν γῆν, εἴτε τοὺς ἄραβας. ὁ μὲν οὖν ζήνων ὁ ἡμέτερος μεταγράφει οὕτως· καὶ σιδονίους ἄραβάς τε· πιθανώτερον δὲ ποσειδώνιος γράφει· τῷ παρὰ μικρὸν ἀλλάξαι, καὶ σιδονίους, καὶ ἐρεμβούς· ὡς τοῦ ποιητοῦ τοὺς νῦν ἄραβας οὕτω καλέσαντος· καθάπερ καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων ὠνομάζοντο κατ' αὐτόν. φησὶ δὲ ταῦτα τρία ἔθνη συνεχῆ ἀλλήλοις ἱδρυμένα· ὁμογένειάν τινα ἐμφαίνειν πρὸς ἄλληλα· καὶ διὰ τοῦτο παρακειμένοις ὀνόμασι κεκλῆσθαι, τοὺς μὲν, ἀρμονίους· τοὺς δὲ, ἄραβας· τοὺς δὲ, ἐρεμβούς· ὥσπερ δὲ ἀπὸ ἔθνους ὑπολαμβάνειν ἐστὶν, εἰς τρία διῃρῆσθαι κατὰ τὰς τῶν κλιμάτων διαφορὰς ἀεὶ καὶ μᾶλλον ἐξαλλαττομένων, οὕτω καὶ τοῖς ὀνόμασι χρῆσθαι πλείοσιν ἀνθ' ἑνός. οὐδ' οἱ ἐρεμνοὺς γράφοντες πιθανοί· τῶν γὰρ αἰθιόπων μᾶλλον ἴδιον. λέγει δὲ καὶ τοὺς ἀρίμους ὁ ποιητής, οὕς φησιν ὁ ποσειδώνιος δέχεσθαι δεῖν, μὴ τόπον τινὰ τῆς συρίας, ἢ τῆς κιλικίας, ἢ ἄλλης τινὸς γῆς· ἀλλὰ τὴν συρίαν αὐτήν· ἀριμαῖοι γὰρ οἱ ἐν αὐτῇ· τάχα δ' οἱ ἕλληνες ἀραμαίους ἐκάλουν, ἢ ἀρίμους· αἱ δὲ τῶν ὀνομάτων μεταπτώσεις, καὶ μάλιστα τῶν βαρβαρικῶν πολλαί· καθάπερ τὸν δαριήκην δαρεῖον ἐκάλεσαν· τὴν δὲ φάρζιριν παρύσατιν· ἀταργάτιν δὲ τὴν ἀθάραν· δερκετὼ δ' αὐτὴν κτησίας καλεῖ. τῆς δὲ τῶν ἀράβων εὐδαιμονίας, καὶ ἀλέξανδρον ἄν τις ποιήσαιτο μάρτυρα τὸν διανοηθέντα ὥς φασι καὶ βασίλειον αὐτὴν ποιήσασθαι μετὰ τὴν ἐξ ἰνδῶν ἐπάνοδον. πᾶσαι μὲν οὖν αἱ ἐπιχειρήσεις αὐτοῦ κατελύθησαν τελευτήσαντος παραχρῆμα τὸν βίον· μία δ' οὖν καὶ αὕτη τῶν ἐπιχειρήσεων ἦν· εἰ μὲν ἑκόντες παραδέχοιντο αὐτόν· εἰ δὲ μή, ὡς πολεμήσοντος· καὶ δὴ ὁρῶν μήτε πρότερον μήθ' ὕστερον πέμψαντας, ὡς αὐτὸν πρέσβεις, παρεσκευάζετο πρὸς τὸν πόλεμον ὥσπερ εἰρήκαμεν ἐν τοῖς ἔμπροσθεν.

## ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΟΥ ΕΠΤΑΚΑΙΔΕΚΑΤΟΥ ΒΙΒΛΙΟΥ.

τὸ ἑπτακαιδέκατον περιέχει Αἴγυπτον ἅπασαν καὶ Λιβύην πᾶσαν

# ΣΤΡΑΒΩΝΟΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ΕΠΤΑΚΑΙΔΕΚΑΤΟΝ.

Ἐπεὶ δὲ τὴν Ἀραβίαν ἐφοδεύοντες καὶ τοὺς κόλπους συμπεριελάβομεν τοὺς σφίγγοντας αὐτὴν καὶ ποιοῦντας χερρόνησον, τόν τε Περσικὸν καὶ τὸν Ἀράβιον. τούτῳ δὲ τινὰ συμπεριωδεύθη, καὶ τῆς Αἰγύπτου, καὶ τῆς Αἰθιοπίας τὰ τῶν Τρωγλοδυτῶν, καὶ τῶν ἑξῆς μέχρι τῶν ἐσχάτων τῆς Κινναμωμοφόρου, τὰ λειπόμενα, καὶ συνεχῆ τοῖς ἔθνεσι τούτοις. ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ περὶ τὸν Νεῖλον ἐκθετέον. μετὰ δὲ ταῦτα τὴν Λιβύην ἔπειμεν, ἥπερ ἐστὶ λοιπὴ τῆς συμπάσης γεωγραφίας. καὶ ἐνταῦθα δ' Ἐρατοσθένους ἀποφάσεις προεκθετέον. φησὶ δὲ τοῦ Ἀραβίου κόλπου πρὸς τὴν ἑσπέραν ἐνακισχιλίους σταδίους διέχειν τὸν Νεῖλον. παραπλήσιον ὄντα κατὰ τὸ σχῆμα τῷ γράμματι τῷ ν κειμένῳ ἀνάπαλιν, ἀναστρέφει πρὸς μεσημβρίαν, καὶ τὴν χειμερινὴν δύσιν ὡς τρισχιλίους, καὶ ἑπτακοσίους σταδίους, καὶ σχεδὸν ἀντάρας τοῖς κατὰ Μερόην τόποις, καὶ εἰς τὴν Λιβύην πολὺ προπεσών, καὶ τὴν ἑτέραν ἐπιστροφὴν ποιησάμενος, πρὸς τὰς ἄρκτους φέρεται. πεντακισχιλίους μὲν καὶ τριακοσίους σταδίους ἐπὶ τὸν μέγαν καταράκτην, παρεπιστρέφων μικρὸν πρὸς τὴν ἕω χιλίους δὲ καὶ διακοσίους τοὺς ἐπὶ τὸν ἐλάττω τὸν κατὰ Συήνην. πεντακισχιλίους δὲ ἄλλους καὶ τριακοσίους ἐπὶ τὴν θάλατταν. ἐμβάλλουσι δ' εἰς αὐτὸν δύο ποταμοί. φερόμενοι μὲν ἔκ τινων λιμνῶν ἀπὸ τῆς ἕω, περιλαμβάνοντες δὲ νῆσον εὐμεγέθη τὴν Μερόην ὧν ὁ μὲν, Ἀσταβόρας καλεῖται, κατὰ τὸ πρὸς ἕω πλευρὸν ῥέων, ἅτερος δ' Ἀστάπους. οἱ δ' Ἀστασόβαν καλοῦσι. τὸν δ' Ἀστάπουν εἶναι ῥέοντα ἔκ τινων λιμνῶν ἀπὸ μεσημβρίας, καὶ σχεδὸν τὸ κατ' εὐθεῖαν σῶμα τοῦ Νείλου τοῦτον ποιεῖν. τὴν δὲ πλήρωσιν αὐτοῦ τοὺς θερινοὺς ὄμβρους παρασκευάζειν. ὑπὲρ δὲ τὰς συμβολὰς τοῦ Ἀσταβόρα, καὶ τοῦ Νείλου σταδίοις ἑπτακοσίοις Μερόην εἶναι πόλιν ὁμώνυμον τῇ νήσῳ. ἄλλην δ' εἶναι νῆσον ὑπὲρ τῆς Μερόης, ἣν ἔχουσιν οἱ Αἰγυπτίων φυγάδες οἱ ἀποστάντες ἐπὶ Ψαμμιτίχου. καλοῦνται δὲ Σεμβρῖται ὡς ἂν ἐπήλυδες. βασιλεύονται δέ, ὑπὸ γυναικός. ὑπακούουσι δὲ τῷ ἐν Μερόῃ, τὰ δὲ κατωτέρω ἑκατέρωθεν Μερόης, παρὰ μὲν τὸν Νεῖλον πρὸς τὴν ἐρυθρὰν, Μεγάβαροι, καὶ Βλέμμυες. Αἰθιόπων ὑπακούοντες. Αἰγυπτίων δ' ὅμοροι. παρὰ θάλατταν δὲ Τρωγλοδύται. διεστᾶσι δὲ εἰς δέκα ἢ δώδεκα ἡμερῶν ὁδόν. οἱ κατὰ τὴν Μερόην Τρωγλοδύται τοῦ Νείλου. ἐξ ἀριστερῶν δὲ τῆς ῥύσεως τοῦ Νείλου, Νοῦβαι κατοικοῦσιν ἐν τῇ Λιβύῃ μέγα ἔθνος ἀπὸ τῆς Μερόης ἀρξάμενον μέχρι τῶν ἀγκώνων. οὐχ ὑποταττόμενοι τοῖς Αἰθίοψιν. ἀλλ' ἰδίᾳ κατὰ πλείους βασιλείας διειλημμένοι. τῆς δ' Αἰγύπτου τὸ παρὰ τὴν θάλατταν ἐστὶν ἀπὸ τοῦ Πηλουσιακοῦ στόματος πρὸς τὸ Κανωβικὸν στάδιοι τρισχίλιοι τριακόσιοι. Ἐρατοσθένης μὲν οὖν οὕτως. δεῖ δὲ ἐπὶ πλεῖον εἰπεῖν. καὶ πρῶτον τὰ περὶ τὴν Αἴγυπτον, ὡς ἀπὸ τῶν γνωριμωτέρων ἐπὶ τὰ ἑξῆς προΐωμεν. κοινὰ μὲν γάρ τινα, καὶ ταύτῃ τῇ χώρᾳ, καὶ τῇ συνεχεῖ, καὶ ὑπὲρ αὐτήν, τῇ τῶν Αἰθιόπων ὁ Νεῖλος παρασκευάζει. ποτίζων τε αὐτὰς κατὰ τὰς ἀναβάσεις. καὶ τὸ οἰκήσιμον αὐτῶν μέρος ἀπολείπων μόνον τὸ καλυπτόμενον ἐν ταῖς πλημμυρίσι. τὸ δ' ὑπερδέξιον, καὶ μετεωρότερον τοῦ ῥεύματος πᾶν, ἀοίκητον ἑκατέρωθεν διεξιὼν καὶ ἔρημον διὰ τὴν αὐτὴν ἀνυδρίαν. ἀλλὰ τὴν μὲν Αἰθιοπίαν οὔτε πᾶσαν διέξεισιν ὁ Νεῖλος, οὔτε μόνος οὔτ' ἐπ' εὐθείας οὔτ' οἰκουμένην καλῶς. τὴν δὲ Αἴγυπτον, καὶ μόνος, καὶ πᾶσαν. καὶ ἐπ' εὐθείας ἀπὸ τοῦ μικροῦ καταράκτου, ὑπὲρ Συήνης, καὶ Ἐλεφαντίνης ἀρξάμενος. οἵπερ εἰσὶν ὅροι τῆς Αἰγύπτου καὶ τῆς Αἰθιοπίας, ἕως τῶν ἐπὶ θάλατταν ἐκβολῶν τοῦ Νείλου. καὶ νῦν οἱ γε Αἰθίοπες τὸ πλέον νομαδικῶς ζῶσι καὶ ἀπόρως, διά τε τὴν λυπρότητα τῆς χώρας καὶ τῆς τῶν ἀέρων ἀσυμμετρίαν, καὶ τὸν ἀφ' ἡμῶν ἐκτοπισμόν. τοῖς δ' Αἰγυπτίοις ἅπαντα τἀναντία συμβέβηκε, καὶ πολιτικῶς, καὶ ἡμέρως ἐξ ἀρχῆς ζῶσι, καὶ ἐν γνωρίμοις ἵδρυνται τόποις. ὥς τε καὶ αἱ διατάξεις αὐτῶν μνημονεύονται, καὶ ἐπαινοῦνταί γε, δοκοῦντες ἀξιοχρέως χρήσασθαι τῇ τῆς χώρας εὐδαιμονίᾳ, μερίσαντες τε εὖ, καὶ ἐπιμεληθέντες, βασιλέα γὰρ ἀποδείξαντες, τριχῇ τὸ πλῆθος διεῖλον. καὶ τοὺς μὲν στρατιώτας ἐκάλεσαν. τοὺς δὲ γεωργούς. τοὺς δὲ ἱερέας, καὶ τοὺς μὲν, τῶν ἱερῶν ἐπιμελητάς. τοὺς δ' ἄλλους τῶν

περὶ τὸν ἄνθρωπον. καὶ τὰ μὲν, ἐν τῷ πολέμῳ. τοὺς δ᾽ ὅσα ἐν εἰρήνῃ γῆν τε καὶ τέχνας ἐργαζομένους. ἀφ᾽ ὧνπερ καὶ αἱ πρόσοδοι συνήγοντο τῷ βασιλεῖ. οἱ δ᾽ ἱερεῖς καὶ φιλοσοφίαν ἤσκουν, καὶ ἀστρονομίαν. ὁμιληταί τε τῶν βασιλέων ἦσαν. ἡ δὲ χώρα τὴν μὲν πρώτην διαίρεσιν εἰς νομοὺς ἔσχε. δέκα μὲν ἡ θηβαΐς, δέκα δ᾽ ἡ ἐν τῷ δέλτα. ἑκκαίδεκα δ᾽ ἡ μεταξύ. ὡς δέ τινες τοσοῦτοι ἦσαν οἱ σύμπαντες νομοί, ὅσαι αἱ ἐν τῷ λαβυρίνθῳ αὐλαί. αὗται δ᾽ ἐλάττους τῶν τριάκοντα. πάλιν δ᾽ οἱ νομοὶ τομὰς ἄλλας ἔσχον. εἰς γὰρ τοπαρχίας οἱ πλεῖστοι διῄρηντο. καὶ αὗται δ᾽ εἰς ἄλλας τομάς. ἐλάχισται δ᾽ αἱ ἄρουραι μερίδες. ἐδέησε δὲ τῆς ἐπ᾽ ἀκριβὲς καὶ κατὰ λεπτὸν διαιρέσεως διὰ τὰς συνεχεῖς τῶν ὅρων συγχύσεις, ἃς ὁ νεῖλος ἀπεργάζεται κατὰ τὰς αὐξήσεις. ἀφαιρῶν καὶ προστιθεὶς, καὶ ἐναλλάττων τὰ σχήματα. καὶ τἆλλα σημεῖα ἀποκρύπτων, οἷς διακρίνεται τό, τε ἀλλότριον, καὶ τὸ ἴδιον. ἀνάγκη δὴ ἀναμετρεῖσθαι πάλιν καὶ πάλιν. ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὴν γεωμετρίαν συστῆναί φασιν, ὡς τὴν λογιστικὴν, καὶ ἀριθμητικὴν, παρὰ φοινίκων διὰ τὰς ἐμπορίας. τριχῇ δ᾽ διῄρητο ὡς τὸ σύμπαν. καὶ τὸ ἐν ἑκάστῳ τῷ νομῷ πλῆθος. εἰς τρία ἴσα μερισθείσης τῆς χώρας. ἡ δὲ περὶ τὸν ποταμὸν πραγματεία, διαφέρει τοσοῦτον, ὅσον τῇ ἐπιμελείᾳ νικᾶν τὴν φύσιν. φύσει γὰρ πλείονα φέρει καρπὸν. καὶ ποτισθεῖσα μᾶλλον. φύσει δὲ καὶ ἡ μείζων ἀνάβασις τοῦ ποταμοῦ πλείω ποτίζει γῆν. ἀλλ᾽ ἡ ἐπιμέλεια πολλάκις, καὶ τῆς φύσεως ἐξίσχυσεν ἐπιλειπούσης. ὥστε καὶ κατὰ τὰς ἐλάττους ἀναβάσεις τοσαύτην ποτισθῆναι γῆν ὅσην ἐν ταῖς μείζοσι. διά τε τῶν διωρύγων, καὶ τῶν παραχωμάτων. ἐπὶ γοῦν τῶν πρὸ πετρωνίου χρόνων ἡ μεγίστη μὲν ἦν φορὰ, καὶ ἀνάβασις, ἡνίκα ἐπὶ τεσσαρεσκαίδεκα πήχεις ἀνέβαινεν ὁ νεῖλος. ἡνίκα δ᾽ ἐπ᾽ ὀκτὼ συνέβαινε λιμός. ἐπ᾽ ἐκείνου δὲ ἄρξαντος τῆς χώρας, καὶ δώδεκα μόνον πληρώσαντος πήχεις τοῦ νείλου μέτρου, μεγίστη ἦν φορά. καὶ ὀκτώ ποτε μόνον πληρώσαντος, λιμοῦ οὐδεὶς ᾔσθετο. τοιαύτη μὲν ἡ διάταξις. τὰ δ᾽ ἑξῆς λέγωμεν νυνί. ἀπὸ γὰρ τῶν αἰθιοπικῶν τερμόνων, ῥεῖ ἐπ᾽ εὐθείας πρὸς ἄρκτους ὁ νεῖλος, ἕως τοῦ καλουμένου χωρίου δέλτα. εἶτ᾽ ἐπὶ κορυφὴν σχιζόμενος ὁ νεῖλος ὥς φησιν ὁ πλάτων, ὡς ἂν τριγώνου κορυφὴν ἀποτελεῖ τὸν τόπον τοῦτον. πλευρὰς δὲ τοῦ τριγώνου τὰ σχιζόμενα ἐφ᾽ ἑκάτερα ῥεῖθρα καθήκοντα μέχρι τῆς θαλάττης. τὸ μὲν ἐν δεξιᾷ τῆς κατὰ πηλούσιον. τὸ δ᾽ ἐν ἀριστερᾷ τῆς κατὰ κάνωβον, καὶ τὸ πλησίον ἡράκλειον προσαγορευόμενον, βάσιν δὲ τὴν παραλίαν τὴν μεταξὺ τοῦ πηλουσίου, καὶ τοῦ ἡρακλείου. γέγονε δὲ ἡ νῆσος ἔκ τε τῆς θαλάττης, καὶ τῶν ῥευμάτων ἀμφοῖν τοῦ ποταμοῦ. καὶ καλεῖται δέλτα, διὰ τὴν ὁμοιότητα τοῦ σχήματος. τὸ δ᾽ ἐπὶ τῇ κορυφῇ χωρίον ὁμωνύμως κέκληται διὰ τὸ ἀρχὴν εἶναι τοῦ λεχθέντος σχήματος. καὶ ἡ κώμη δὲ ἡ ἐπ᾽ αὐτῷ καλεῖται δέλτα. δύο μὲν οὖν ταῦτα τοῦ νείλου στόματα. ὧν τὸ μὲν, πηλουσιακὸν καλεῖται. τὸ δὲ κανωβικὸν, καὶ ἡρακλεωτικόν. μεταξὺ δὲ τούτων ἄλλαι πέντε εἰσὶν ἐκβολαὶ αἵ γε ἀξιόλογοι. λεπτότεραι δὲ πλείους. ἀπὸ γὰρ τῶν πρώτων μερῶν, ἀπορρῶγες πολλαὶ καθ᾽ ὅλην μερισθεῖσαι τὴν νῆσον, πολλὰ καὶ ῥεῖθρα, καὶ νήσους ἐποίησαν. ὥσθ᾽ ὅλην γενέσθαι πλωτήν, διωρύγων ἐπὶ διώρυξι τμηθεισῶν. αἳ κατὰ ῥᾳστώνην πλέονται τοσαύτην, ὥστε καὶ ὀστράκινα ἐνίοις εἶναι πορθμεῖα. τὴν μὲν οὖν περίμετρον ὅσον τρισχιλίων σταδίων ἐστὶν ἡ σύμπασα νῆσος. καλοῦσι δ᾽ αὐτὴν, καὶ τὴν κατὰ χώραν σὺν ταῖς ἀντικρὺ ποταμίαις τοῦ δέλτα. ἐν δὲ ταῖς ἀναβάσεσι τοῦ νείλου, καλύπτεται πᾶσα, καὶ πελαγίζει, πλὴν τῶν οἰκήσεων. αὗται δ᾽ ἐπὶ λόφων αὐτοφυῶν, ἢ χωμάτων ἵδρυνται. πόλεις τε ἀξιόλογοι καὶ κῶμαι. νησίζουσαι κατὰ τὴν πόρρωθεν ὄψιν. πλείους δ᾽ ἢ τετταράκοντα ἡμέρας τοῦ θέρους διαμεῖναν τὸ ὕδωρ, ἔπειθ᾽ ὑπόβασιν λαμβάνει κατ᾽ ὀλίγον, καθάπερ καὶ τὴν αὔξησιν ἔσχεν. ἐν ἑξήκοντα δὲ ἡμέραις τελέως γυμνοῦται. καὶ ἀναψύχεται τὸ πεδίον. ὅσῳ δὲ θᾶττον ἡ ἀνάψυξις, τοσῷδε θᾶττον ὁ ἀροτὸς, καὶ ὁ σπόρος. θᾶττον δὲ παρ᾽ οἷς τὰ μείζω θάλπει. τὸν αὐτὸν τρόπον, καὶ τὰ ἐπάνω τοῦ δέλτα ποτίζεται. πλὴν ὅτι ἐπ᾽ εὐθείας ὅσον τετρακισχιλίοις σταδίοις, δι᾽ ἑνὸς ῥείθρου τοῦ ποταμοῦ φερομένου. πλὴν εἰ μή που τις ἐντρέχοι νῆσος. ὧν ἀξιολογωτάτη ἡ τὸν ἡρακλεωτικὸν νομὸν περιέχουσα. ἢ εἴ που τὶς ἐκτροπὴ διώρυγι ἐπὶ πλέον εἰς λίμνην μεγάλην καὶ χώραν, ἣν ποτίζειν δύναται. καθάπερ ἐπὶ τῆς τὸν ἀρσινοΐτην νομὸν ποιούσης, καὶ τὴν μοίριδος λίμνην, καὶ τῶν εἰς τὴν μαρεῶτιν ἀναχεομένων. συλλήβδην δ᾽ εἰπεῖν ἡ ποταμία, μόνον ἐστὶν αἴγυπτος ἡ ἑκατέρωθεν ἐσχάτη τοῦ νείλου, σπάνιον εἴ που τριακοσίων σταδίων ἐπέχουσα συνεχῶς πλάτος τὸ οἰκήσιμον. ἀρξαμένη ἀπὸ τῶν ὅρων τῆς αἰθιοπίας, μέχρι τῆς κορυφῆς τοῦ δέλτα. ἔοικεν οὖν κειρία ψυχομένη ἐπὶ μῆκος. ὑπεξαιρουμένων τῶν ἐπὶ πλέον ἐκτροπῶν. ποιεῖ δὲ τὸ σχῆμα τοῦτο τῆς ποταμίας ἧς λέγω, καὶ τῆς χώρας, τὰ ὄρη τὰ ἑκατέρωθεν, ἀπὸ τῶν περὶ συήνην τόπων κατατείνοντα, μέχρι τοῦ αἰγυπτίου πελάγους. ἐφ᾽ ὅσον γὰρ ταῦτα παρατείνει, καὶ διέστηκεν ἀπ᾽ ἀλλήλων, ἐπὶ τοσοῦτον καὶ ὁ ποταμὸς συνάγεταί τε καὶ διασχηματίζει τὴν χώραν διαφόρως τὴν οἰκήσιμον. ἡ δ᾽ ὑπὲρ τῶν ὄρων ἐπὶ συχνὸν ἀοίκητός ἐστιν. οἱ μὲν οὖν ἀρχαῖοι στοχασμῷ τὸ πλέον. οἱ δ᾽ ὕστερον αὐτόπται γενηθέντες, ᾔσθοντο ὑπὸ ὄμβρων θερινῶν πληρούμενον τὸν νεῖλον, τῆς αἰθιοπίας τῆς ἄνω κλυζομένης. καὶ μάλιστα ἐν τοῖς ἐσχάτοις ὄρεσι. παυσαμένων δὲ τῶν ὄμβρων, παυομένην κατ᾽ ὀλίγον τὴν πλημμυρίδα. τοῦτο δ᾽ ὑπῆρξε μάλιστα δῆλον τοῖς πλέουσι τὸν ἀράβιον κόλπον μέχρι τῆς κινναμωμοφόρου. καὶ τοῖς ἐκπεμπομένοις ἐπὶ τὴν τῶν ἐλεφάντων

θήραν· καὶ ἔτι δὲ ἄλλαι χρεῖαι παρώξυνον ἐκεῖσε ἄνδρας προχειρίζεσθαι τοὺς τῆς Αἰγύπτου βασιλέας τοὺς Πτολεμαϊκούς· οὗτοι γὰρ ἐφρόντισαν τῶν τοιούτων· διαφερόντως δ' ὁ Φιλάδελφος ἐπικληθείς· φιλιστορῶν καὶ διὰ τὴν ἀσθένειαν τοῦ σώματος, διαγωγὰς ἀεί τινας καὶ τέρψεις ζητῶν καινοτέρας. οἱ πάλαι δὲ βασιλεῖς, οὐ πάνυ ἐφρόντισαν τῶν τοιούτων· καίπερ οἰκεῖοι σοφίας γεγονότες καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ ἱερεῖς· μεθ' ὧν ἦν αὐτοῖς ὁ πλείων βίος. ὥστε καὶ θαυμάζειν ἄξιον· καὶ διὰ τοῦτο. καὶ διότι Σέσωστρις τὴν Αἰθιοπίαν ἐπῆλθεν ἅπασαν μέχρι τῆς κινναμωμοφόρου· καὶ ὑπομνήματα τὰ τῆς στρατείας αὐτοῦ, καὶ νῦν ἔτι δείκνυνται στῆλαι καὶ ἐπιγραφαί· Καμβύσης τε τὴν Αἴγυπτον κατασχὼν, προῆλθε καὶ μέχρι τῆς Μερόης μετὰ τῶν Αἰγυπτίων· καὶ δὴ καὶ τοὔνομα τῇ τε νήσῳ καὶ τῇ πόλει τοῦτο παρ' ἐκείνου τεθῆναί φασιν· ἐκεῖ τῆς ἀδελφῆς ἀποθανούσης αὐτῷ Μερόης· οἱ δὲ, γυναῖκα φασί· τὴν ἐπωνυμίαν οὖν ἐχαρίσατο αὐτῇ τιμῶν τὴν ἄνθρωπον. θαυμαστὸν οὖν πῶς ἐκ τῶν τοιούτων ἀφορμῶν, οὐ τελέως ἐναργὴς ἦν ἡ περὶ τῶν ὄμβρων ἱστορία τοῖς τότε. καὶ ταῦτα τῶν ἱερέων φιλοπραγμονέστερον ἀναφερόντων εἰς τὰ ἱερὰ γράμματα· καὶ ἀποτιθεμένων ὅσα μάθησιν περιττὴν ἐπιφαίνει. εἰ γὰρ ἄρα, τοῦτ' ἐχρῆν ζητεῖν ὅπερ καὶ νῦν ἔτι ζητεῖται, τί δή ποτε θέρους, χειμῶνος δ' οὔ· καὶ ἐν τοῖς νοτιωτάτοις. ἐν δὲ τῇ Θηβαΐδι καὶ τῇ περὶ Συήνην οὐ συμπίπτουσιν ὄμβροι. τὸ δ' ὅτι ἐξ ὄμβρων αἱ ἀναβάσεις, μὴ ζητεῖν· μηδὲ τοιούτων δεῖσθαι μαρτύρων, οἵους Ποσειδώνιος εἴρηκε. φασὶ γὰρ Καλλισθένη λέγειν τὴν ἐκ τῶν ὄμβρων αἰτίαν τῶν θερινῶν, παρὰ Ἀριστοτέλους λαβόντα· ἐκεῖνον δὲ παρὰ Θρασυάλκου τοῦ Θασίου· τῶν ἀρχαίων δὲ φυσικῶν εἷς οὗτος· ἐκεῖνον δὲ παρ' ἄλλου· τὸν δὲ, παρ' Ὁμήρου διιπετέα φάσκοντος τὸν Νεῖλον. ἂψ δ' εἰς Αἰγύπτοιο διιπετέος ποταμοῖο. Ἀλλ' ἐῶ ταῦτα πολλῶν εἰρηκότων· ὧν ἀρκέσει δύο μηνῦσαι τοὺς ποιήσαντας καθ' ἡμᾶς τὸ περὶ τοῦ Νείλου βιβλίον, Εὔδωρόν τε καὶ Ἀρίστωνα τὸν ἐκ τῶν Περιπάτων. πλὴν γὰρ τῆς τάξεως τά τε ἄλλα καὶ τῇ φράσει καὶ τῇ ἐπιχειρήσει ταὐτά ἐστι κείμενα παρ' ἀμφοτέροις. ἐγὼ γοῦν ἀπορούμενος ἀντιγράφων εἰς τὴν ἀντιβολὴν ἐκ θατέρου θάτερον ἀντέβαλον. πότερος δ' ἦν ὁ τἀλλότρια ὑποβαλλόμενος, ἐν Ἄμμωνος εὕροι τις ἄν. Εὔδωρος δ' ᾐτιᾶτο τὸν Ἀρίστωνα· ἡ μέντοι φράσις Ἀριστώνειος μᾶλλον ἐστίν. οἱ μὲν οὖν ἀρχαῖοι τὸ οἰκούμενον αὐτὸ καὶ ποτιζόμενον ἀπὸ τοῦ Νείλου μόνον Αἴγυπτον ἐκάλουν. ἀπὸ τῶν περὶ Συήνην τόπων ἀρξάμενοι μέχρι τῆς θαλάττης. οἱ δ' ὕστερον μέχρι νῦν προσέλαβον ἐκ τῶν πρὸς ἕω μερῶν, τὰ μεταξὺ τοῦ Ἀραβίου κόλπου καὶ τοῦ Νείλου σχεδόν τι πάντα. οἱ δ' Αἰθίοπες οὐ πάνυ χρῶνται τῇ Ἐρυθρᾷ θαλάττῃ. ἐκ δὲ τῶν ἑσπερίων τὰ μέχρι τῶν ἀνάσεων· καὶ ἐν τῇ παραλίᾳ τὰ ἀπὸ τοῦ Κανωβικοῦ στόματος μέχρι Καταβαθμοῦ καὶ τῆς Κυρηναίων ἐπικρατείας. οἵ τε γὰρ ἀπὸ τοῦ Πτολεμαίου βασιλεῖς ἴσχυσαν ἐπὶ τοσοῦτον. οἵ γε καὶ τὴν Κυρηναίαν αὐτὴν κατέσχον, καὶ διενείμαντο πρὸς τὴν Αἴγυπτον καὶ τὴν Κύπρον. Ῥωμαῖοί τε οἱ διαδεξάμενοι τὴν ἐκείνων ἐπαρχίαν, κρίναντες τὴν Αἴγυπτον ἐν τοῖς αὐτοῖς ὅροις διεφύλαξαν. ἀνάσεις δ' οἱ Αἰγύπτιοι καλοῦσι τὰς οἰκουμένας χώρας περιεχομένας κύκλῳ μεγάλαις ἐρημίαις, ὡς ἂν νήσους πελαγίας. πολὺ δὲ τοῦτ' ἐστὶ κατὰ τὴν Λιβύην. τρεῖς δ' εἰσὶν αἱ πρόσχωροι τῇ Αἰγύπτῳ καὶ ὑπ' αὐτῇ τεταγμέναι. τὰ μὲν οὖν καθόλου καὶ ἀνωτάτω περὶ τῆς Αἰγύπτου, ταῦτα λέγομεν, τὰ καθ' ἕκαστα δὲ καὶ τὰς ἀρετὰς αὐτῆς νῦν διέξιμεν. ἐπεὶ δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ ἔργου τούτου καὶ τὸ κυριώτατον ἡ Ἀλεξάνδρειά ἐστι καὶ τὰ περὶ αὐτήν, ἐντεῦθεν ἀρκτέον. ἔστι τοίνυν ἡ ἀπὸ Πηλουσίου παραλία πρὸς τὴν ἑσπέραν πλέουσι, μέχρι μὲν τοῦ Κανωβικοῦ στόματος, χιλίων που καὶ διακοσίων σταδίων. ὃ δὴ καὶ βάσιν τοῦ Δέλτα ἔφαμεν. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ Φάρον τὴν νῆσον ἄλλοι στάδιοι πεντήκοντα πρὸς τοῖς ἑκατόν. ἡ δὲ Φάρος νησίον ἐστὶ παράμηκες πρὸς ἔσχατον τῇ ἠπείρῳ. λιμένα πρὸς αὐτὴν ποιοῦν ἀμφίστομον. ἠιὼν γάρ ἐστι κολπώδης, ἄκρας εἰς τὸ πέλαγος προβεβλημένη δύο. τούτων δὲ μεταξὺ ἡ νῆσος ἵδρυται κλείουσα τὸν κόλπον. παραβέβληται γὰρ αὐτῷ κατὰ μῆκος. τῶν δ' ἄκρων τῆς Φάρου τὸ μὲν οὖν ἑῷον μᾶλλον ἐστὶ προσεχὲς τῇ ἠπείρῳ καὶ τῇ κατ' αὐτὴν ἄκρᾳ. καλεῖται δ' ἀκρολοχιάς. καὶ ποιεῖ τὸν λιμένα ἀρτίστομον. πρὸς δὲ τῇ στενότητι τοῦ μεταξὺ πόρου καὶ πέτραι εἰσίν. αἱ μὲν, ὕφαλοι. αἱ δὲ, καὶ ἐξέχουσαι. τραχύνουσαι πᾶσαν ὥραν τὸ προσπῖπτον ἐκ τοῦ πελάγους κλυδώνιον. ἔστι δὲ καὶ αὐτὸ τὸ τῆς νησῖδος ἄκρον πέτρα περίκλυστος. ἔχουσα πύργον θαυμαστῶς κατεσκευασμένον λευκοῦ λίθου. πολυόροφον. ὁμώνυμον τῇ νήσῳ. τοῦτον δ' ἀνέθηκε Σώστρατος Κνίδιος φίλος τῶν βασιλέων, τῆς τῶν πλοϊζομένων σωτηρίας χάριν, ὥς φησιν ἡ ἐπιγραφή. ἐπίγραμμα. Σώστρατος Κνίδιος Δεξιφάνους, θεοῖς σωτῆρσιν ὑπὲρ τῶν πλωιζομένων. ἀλιμένου γὰρ οὔσης καὶ ταπεινῆς τῆς ἑκατέρωθεν παραλίας. ἐχούσης δὲ καὶ χοιράδας καὶ βράχη τινά, ἔδει σημείου τινὸς ὑψηλοῦ καὶ λαμπροῦ τοῖς ἀπὸ τοῦ πελάγους προσπλέουσιν, ὥστ' εὐστοχεῖν τῆς εἰσβολῆς τοῦ λιμένος, καὶ τὸ ἑσπέριον δὲ στόμα οὐκ εὐείσβολόν ἐστιν. οὐ μὴν τοσαύτης γε δεῖται προνοίας. ποιεῖ δὲ καὶ τοῦτο ἄλλον λιμένα τὸν τοῦ Εὐνόστου καλούμενον. πρόκειται δ' οὗτος τοῦ ὀρυκτοῦ καὶ κλειστοῦ λιμένος. ὁ μὲν γὰρ ἐκ τοῦ λεχθέντος πύργου τῆς Φάρου τὸν εἴσπλουν ἔχων, ὁ μέγας ἐστὶ λιμήν. οὗτοι δὲ συνεχεῖς ἐν βάθει ἐκείνῳ τῷ ἑπτασταδίῳ καλουμένῳ χώματι διειργόμενοι ἀπ' αὐτοῦ παράκεινται. τὸ δὲ χῶμα ἐστὶν ἀπὸ τῆς ἠπείρου γέφυρα ἐπὶ τὴν νῆσον καὶ τὸ ἑσπέριον αὐτῆς μέρος ἐκτεταμένη. δύο διάπλους διαλείπουσα μόνον εἰς τὸν Εὐνόστου λιμένα. καὶ αὐτοὺς γεγεφυρωμένους. ἦν δ' οὐ γέφυρα μόνον ἐπὶ τὴν νῆσον τὸ ἔργον τοῦτο, ἀλλὰ καὶ ὑδραγώγιον ὅτε γε ᾠκεῖτο. νῦν δ' ἠρήμωσεν αὐτὴν ὁ θεὸς Καῖσαρ ἐν τῷ πρὸς Ἀλεξανδρέας πολέμῳ τεταγμένην μετὰ τῶν βασι-

λέων. ὀλίγοι δ' οἰκοῦσι πρὸς τῷ πύργῳ ναυτικοὶ ἄνδρες. ὁ γοῦν μέγας λιμὴν πρὸς τῷ κεκλεῖσθαι καλῶς τῷ τε χώματι, καὶ τῇ φύσει, ἀγχιβαθής τέ ἐστιν, ὥστε τὴν μεγίστην ναῦν ἐπὶ κλίμακος ὁρμεῖν, καὶ εἰς πλείους δὲ σχίζεται λιμένας. οἱ μὲν οὖν πρότεροι τῶν αἰγυπτίων βασιλεῖς ἀγαπῶντες οἷς εἶχον, καὶ οὐ πάνυ ἐπεισάκτων δεόμενοι, διαβεβλημένοι πρὸς ἅπαντας τοὺς πλέοντας, καὶ μάλιστα τοὺς ἕλληνας, πορθηταὶ γὰρ ἦσαν καὶ ἐπιθυμηταὶ τῆς ἀλλοτρίας κατὰ σπάνιν γῆς, ἐπέστησαν φυλακὴν τῷ τόπῳ τούτῳ, κελεύσαντες ἀπείργειν τοὺς προσιόντας. κατοικίαν δ' αὐτοῖς ἔδοσαν τὴν προσαγορευομένην ῥακῶτιν. ἣ νῦν μὲν τῆς ἀλεξανδρέων πόλεώς ἐστι μέρος τὸ ὑπερκείμενον τῶν νεωρίων. τότε δὲ κώμη ὑπῆρχε. τὰ δὲ κύκλῳ τῆς κώμης βουκόλοις παρέδοσαν, δυναμένοις καὶ αὐτοῖς κωλύειν τοὺς ἔξωθεν ἐπιόντας. ἐπελθὼν δὲ ἀλέξανδρος καὶ ἰδὼν τὴν εὐκαιρίαν, ἔγνω τειχίζειν ἐπὶ τῷ λιμένι τὴν πόλιν. τῆς δ' ὕστερον ἐπηκολουθηκυίας εὐδαιμονίας τῇ πόλει, μνημονεύουσί τι σημεῖον κατὰ τὴν ὑπογραφὴν τοῦ κτίσματος συμβάν. τῶν γὰρ ἀρχιτεκτόνων τῇ λευκῇ διασημαινομένων, τὴν τοῦ περιβόλου γραμμὴν ἐπιλειπούσης τῆς γῆς, καὶ τοῦ βασιλέως ἐπιόντος, οἱ διοικηταὶ τῶν ἀλφίτων μέρος τῶν παρεσκευασμένων τοῖς ἐργάταις παρέσχον. δι' ὧν καὶ αἱ ὁδοὶ κατετμήθησαν εἰς πλείους. τοῦτ' οὖν οἰωνίσασθαι λέγονται πρὸς ἀγαθοῦ γεγονός. ἡ δ' εὐκαιρία πολύτροπος. ἀμφίκλυστόν τε γάρ ἐστι τὸ χωρίον δυσὶ πελάγεσι. τῷ μὲν, ἀπὸ τῶν ἄρκτων τῷ αἰγυπτίῳ λεγομένῳ. τῷ δ' ἀπὸ μεσημβρίας τῷ τῆς λίμνης τῆς μαρείας. ἣ καὶ μαρεῶτις λέγεται. πληροῖ δὲ ταύτην πολλαῖς διώρυξιν ὁ νεῖλος. ἄνωθεν δὲ καὶ ἐκ πλαγίων. δι' ὧν καὶ τὰ εἰσκομιζόμενα πολλῷ πλείω τῶν ἀπὸ θαλάττης ἐστίν. ὥσθ' ὁ λιμὴν ὁ λιμναῖος ὑπῆρχε πλουσιώτερος τοῦ θαλαττίου. ταύτῃ καὶ τὰ ἐκκομιζόμενα ἐξ ἀλεξανδρείας πλείω τῶν εἰσκομιζομένων ἐστί. γνοίη δ' ἄν τις ἔν τε τῇ ἀλεξανδρείᾳ καὶ τῇ δικαιαρχίᾳ γενόμενος. ὁρῶν τὰς ὁλκάδας. ἐν δὲ τῷ κατάπλῳ καὶ ἐν ταῖς ἀναγωγαῖς ὅσον βαρύτεραί τε καὶ κουφότεραι δεῦρο κἀκεῖσε πλέοιεν. πρὸς δὲ τῷ πλούτῳ τῶν κατακομιζομένων, ἑκατέρωσε εἴς τε τὸν κατὰ θάλατταν λιμένα, καὶ εἰς τὸν λιμναῖον. καὶ τὸ εὐάερον ἄξιον σημειώσεως ἐστίν. ὃ καὶ αὐτὸ συμβαίνει διὰ τὸ ἀμφίκλυστον, καὶ τὸ εὔκαιρον τῆς ἀναβάσεως τοῦ νείλου. αἱ μὲν γὰρ ἄλλαι πόλεις αἱ ἐπὶ λιμνῶν ἱδρυμέναι, βαρεῖς καὶ πνιγώδεις ἔχουσι τοὺς ἀέρας ἐν τοῖς καύμασι τοῦ θέρους. ἐπὶ γὰρ τοῖς χείλεσιν αἱ λίμναι τελματοῦνται διὰ τὴν ἐκ τῶν ἡλίων ἀναθυμίασιν. βορβορώδους οὖν ἀναφερομένης τοσαύτης ἰκμάδος, νοσώδης ὁ ἀὴρ ἕλκεται, καὶ λοιμικῶν κατάρχει παθῶν. ἐν ἀλεξανδρείᾳ δὲ τοῦ θέρους ἀρχομένου πληρούμενος ὁ νεῖλος, πληροῖ καὶ τὴν λίμνην. καὶ οὐδὲν ἐᾷ τελματῶδες τὸ τὴν ἀναφορὰν ποιῆσαι μοχθηράν. τότε δὲ καὶ οἱ ἐτησίαι πνέουσιν ἐκ τῶν βορείων, καὶ τοῦ τοσούτου πελάγους. ὥστε κάλλιστα τοῦ θέρους ἀλεξανδρεῖς διάγουσιν. ἔστι δὲ χλαμυδοειδὲς τὸ σχῆμα τοῦ ἐδάφους τῆς πόλεως. οὗ τὰ μὲν ἐπὶ μῆκος πλευρά ἐστι τὰ ἀμφίκλυστα, ὅσον τριάκοντα σταδίων ἔχοντα διάμετρον. τὰ δ' ἐπὶ πλάτος οἱ ἰσθμοί, ἑπτὰ ἢ ὀκτὼ σταδίων ἑκάτερος σφιγγόμενος. τῇ μὲν, ὑπὸ θαλάττης. τῇ δ' ἀπὸ τῆς λίμνης. ἅπασα μὲν ὁδοῖς κατατέτμηται ἱππηλάταις καὶ ἁρματηλάταις. δυσὶ δὲ πλατυτάταις. αἳ δὴ δίχα καὶ πρὸς ὀρθὰς τέμνουσιν ἀλλήλας. ἔχει δ' ἡ πόλις τεμένη, τά τε κοινὰ κάλλιστα καὶ τὰ βασίλεια. τέταρτον, ἢ καὶ τρίτον τοῦ παντὸς περιβόλου μέρος. τῶν γὰρ βασιλέων ἕκαστος ὥσπερ τοῖς κοινοῖς ἀναθήμασι προσεφιλοκάλει τινὰ κόσμον, οὕτω καὶ οἴκησιν ἰδίᾳ περιεβάλλετο πρὸς ταῖς ὑπαρχούσαις. ὥστε νῦν τὸ τοῦ ποιητοῦ ἐξ ἑτέρων ἕτερ' ἐστίν. ἅπαντα μὲν συναφῆ καὶ ἀλλήλοις καὶ τῷ λιμένι. καὶ ὅσα ἔξω αὐτοῦ. τοῦ δὲ βασιλείων μέρος ἐστί, καὶ τὸ μουσεῖον. ἔχον περίπατον καὶ ἐξέδραν, καὶ οἶκον μέγαν. ἐν ᾧ τὸ συσσίτιον τῶν μετεχόντων τοῦ μουσείου φιλολόγων ἀνδρῶν. ἔστι δὲ τῇ συνόδῳ ταύτῃ καὶ χρήματα κοινά. καὶ ἱερεὺς ὁ ἐπὶ τῷ μουσείῳ τεταγμένος. τότε μὲν ὑπὸ τῶν βασιλέων. νῦν δ' ὑπὸ καίσαρος. μέρος δὲ τῶν βασιλείων ἐστὶ καὶ τὸ καλούμενον σῶμα, ὃ περίβολος ἦν. ἐν ᾧ αἱ τῶν βασιλέων ταφαὶ καὶ ἡ ἀλεξάνδρου. ἔφθη γὰρ τὸ σῶμα ἀφελόμενος περδίκαν ὁ τοῦ λάγου πτολεμαῖος. κατακομίζοντα ἐκ τῆς βαβυλῶνος, καὶ ἐκτρεπόμενον ταύτῃ κατὰ πλεονεξίαν καὶ ἐξιδιασμὸν τῆς αἰγύπτου. καὶ δὴ καὶ ἀπώλετο διαφθαρεὶς ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν. ἐπελθόντος τοῦ πτολεμαίου, καὶ κατακλείσαντος αὐτὸν ἐν νήσῳ ἐρήμῃ. ἐκεῖνος μὲν οὖν ἀπέθανεν ἐμπεριπαρεὶς ταῖς σαρίσαις, ἐπελθόντων ἐπ' αὐτῷ τῶν στρατιωτῶν. σὺν αὐτῷ δὲ καὶ οἱ βασιλεῖς. ἀριδαῖός τε καὶ τὰ παιδία τὰ ἀλεξάνδρου. καὶ ἡ γυνὴ ῥωξάνη, ἀπῆρεν εἰς μακεδονίαν. τὸ δὲ σῶμα τοῦ ἀλεξάνδρου κομίσας ὁ πτολεμαῖος ἐκήδευσεν ἐν τῇ ἀλεξανδρείᾳ ὅπου νῦν κεῖται. οὐ μὴν ἐν τῇ αὐτῇ πυέλῳ. ὑαλίνη γὰρ αὕτη. ἐκεῖνος δ' ἐν χρυσῇ κατέθηκεν. ἐσύλησε δ' αὐτὴν ὁ κόκκης. καὶ παρείσακτος ἐπικληθεὶς πτολεμαῖος. ἐκ τῆς συρίας ἐπελθών, καὶ ἐκπεσὼν εὐθύς. ὥστ' ἀνόνητα αὐτῷ τὰ σῦλα γενέσθαι. ἔστι δ' ἐν τῷ μεγάλῳ λιμένι κατὰ μὲν τὸν εἴσπλουν, ἐν δεξιᾷ ἡ νῆσος καὶ ὁ πύργος ὁ φάρος. κατὰ δὲ τὴν ἑτέραν χεῖρα αἵ τε χοιράδες καὶ ἡ λοχιὰς ἄκρα, ἔχουσα βασίλειον. εἰσπλεύσαντι δ' ἐν ἀριστερᾷ, ἐστὶ συνεχῆ τοῖς ἐν τῇ λοχιάδι, τὰ ἐνδοτέρω βασίλεια. πολλὰς καὶ ποικίλας ἔχοντα διαίτας καὶ ἄλση. τούτοις δ' ὑπόκειται ὅ τε κρυπτὸς λιμὴν καὶ κλειστὸς ἴδιος τῶν βασιλέων. καὶ ἡ ἀντίρροδος νησίον προκείμενον τοῦ ὀρυκτοῦ λιμένος. βασίλειον ἅμα καὶ λιμένιον ἔχον. ἐκάλεσαν δ' οὕτως, ὡς ἂν τῇ ῥόδῳ ἐνάμιλλον. ὑπέρκειται δὲ τούτου τὸ θέατρον. εἶτα τὸ ποσείδιον. ἀγκών τις ἀπὸ τοῦ ἐμπορίου καλουμένου προπεπτωκώς. ἔχων ἱερὸν ποσειδῶνος. ᾧ προσθεὶς χῶμα ἀντώνιος ἔτι μᾶλλον προνεῦον εἰς μέσον τὸν λιμένα ἐπὶ τῷ ἄκρῳ κατεσκεύασε δίαιταν βασι-

λικήν. ἣν τιμώνιον προσηγόρευσε. τοῦτο δ' ἔπραξε τὸ τελευταῖον, ἡνίκα προληφθεὶς ὑπὸ τῶν φίλων
ἀπῆρεν εἰς ἀλεξάνδρειαν μετὰ τὴν ἐν ἀκτίῳ κακοπραγίαν. τιμώνιον αὐτῷ κρίνας τὸν λοιπὸν βίον, ἐν
διάξειν ἔμελλεν ἔρημος τῶν τοσούτων φίλων. εἶτα τὸ καισάρειον καὶ τὸ ἐμπόριον. καὶ ἀποστάσεις.
μετὰ ταῦτα τὰ νεώρια, μέχρι τοῦ ἑπτασταδίου. ταῦτα μὲν τὰ περὶ τὸν μέγαν λιμένα. ἑξῆς δ' εὐνό-
στου λιμὴν μετὰ τὸ ἑπτασταδίον. καὶ ὑπὲρ τούτου ὀρυκτὸς, ὃν καὶ κιβωτὸν καλοῦσιν, ἔχων καὶ αὐτὸς νεώ-
ρια. ἐνδοτέρω δὲ τούτου διῶρυξ πλωτὴ μέχρι τῆς λίμνης τεταμένη τῆς μαρεώτιδος. ἔξω μὲν οὖν τῆς
διώρυγος μικρὸν ἔτι λείπεται τῆς πόλεως. εἶθ' ἡ νεκρόπολις. καὶ τὸ προάστειον ἐν ᾧ κῆποί τε πολλοὶ καὶ ταφαὶ
καὶ καταγωγαὶ, πρὸς τὰς ταριχείας τῶν νεκρῶν ἐπιτήδειαι. ἐντὸς δὲ τῆς διώρυγος τό τε σαράπιον
καὶ ἄλλα τεμένη ἀρχαῖα ἐκλελειμμένα πως διὰ τὴν τῶν νέων κατασκευὴν τῶν ἐν νικοπόλει. καὶ γὰρ ἀμφι-
θέατρον καὶ στάδιον. καὶ οἱ πεντετηρικοὶ ἀγῶνες ἐκεῖ συντελοῦνται. τὰ δὲ παλαιὰ ὠλιγώρηται. συλλήβ-
δην δ' εἰπεῖν ἡ πόλις μεστή ἐστιν ἀναθημάτων καὶ ἱερῶν. κάλλιστον δὲ τὸ γυμνάσιον. μείζους ἢ σταδιαίας ἔ-
χον τὰς στοὰς ἐν μέσῳ, τὸ δὲ δικαστήριον καὶ τὰ ἄλση. ἔστι δὲ καὶ πάνειον, ὕψος τι χειροποίητον. στροβιλοειδὲς.
ἐμφερὲς ὄχθῳ πετρώδει. διὰ κοχλίου τὴν ἀνάβασιν ἔχον. ἀπὸ δὲ τῆς κορυφῆς ἔστιν ἀπιδεῖν ὅλην τὴν πόλιν
ὑποκειμένην αὐτῷ πανταχόθεν. ἀπὸ δὲ τῆς νεκροπόλεως ἡ ἐπὶ τὸ μῆκος πλατεῖα διατείνει παρὰ τὸ γυμνά-
σιον μέχρι τῆς πύλης τῆς κανωβικῆς. εἶθ' ἱππόδρομος καλούμενός ἐστι. καὶ αἱ παρακείμεναι αἱ ἄλλαι μέχρι
τῆς διώρυγος τῆς κανωβικῆς. διὰ δὲ τοῦ ἱπποδρόμου διελθόντι ἡ νικόπολις ἔχουσα κατοικίαν ἐπὶ θα-
λάττῃ πόλεως οὐκ ἐλάττω. τριάκοντα δ' εἰσὶν ἀπὸ τῆς ἀλεξανδρείας στάδιοι. τοῦτον δ' ἐτίμησεν ὁ σεβα-
στὸς καῖσαρ τὸν τόπον. ὅτι ἐνταῦθα ἐνίκα τῇ μάχῃ τοὺς ἐπεξιόντας αὐτῷ μετ' ἀντωνίου. καὶ λαβὼν ἐξ
ἐφόδου τὴν πόλιν, ἠνάγκασε τὸν μὲν ἀντώνιον ἑαυτὸν διαχειρίσασθαι. τὴν δὲ κλεοπάτραν ζῶσαν ἐλθεῖν εἰς
τὴν ἐξουσίαν. μικρὸν δ' ὕστερον κἀκείνη ἑαυτὴν ἐν τῇ φρουρᾷ διεχειρίσατο λάθρα δήγματι ἀσπίδος ἢ
φαρμάκῳ ἐπιχρίστῳ. λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως. καὶ συνέβη καταλυθῆναι τὴν τῶν λαγιδῶν ἀρχὴν πολλὰ
συμμείνασαν ἔτη. Πτολεμαῖος γὰρ ὁ λάγου διεδέξατο ἀλέξανδρον. ἐκεῖνον δὲ φιλάδελφος. τοῦτον δὲ
ὁ εὐεργέτης. εἶθ' ὁ φιλοπάτωρ ὁ τῆς ἀγαθοκλείας, εἶθ' ὁ ἐπιφανής. εἶθ' ὁ φιλομήτωρ. παῖς παρὰ πα-
τρὸς ἀεὶ διαδεχόμενος. τοῦτον δ' ἀδελφὸς διεδέξατο ὁ δεύτερος εὐεργέτης. ὃν καὶ φύσκωνα προσαγορεύ-
ουσι. τοῦτον δ' ὁ λάθουρος ἐπικληθεὶς πτολεμαῖος. τοῦτον δ' ὁ αὐλητὴς ὁ καθ' ἡμᾶς. ὅσπερ ἦν τῆς κλεο-
πάτρας πατήρ. ἅπαντες μὲν οὖν οἱ μετὰ τὸν τρίτον πτολεμαῖον ὑπὸ τρυφῆς διεφθαρμένοι, χεῖρον ἐπο-
λιτεύσαντο. χείριστα δ' ὁ τέταρτος καὶ ἕβδομος καὶ ὁ ὕστατος ὁ αὐλητής. ὃς χωρὶς τῆς ἄλλης ἀσελγείας
χοραυλεῖν ἤσκησε. καὶ ἐπ' αὐτῷ γε ἐσεμνύνετο ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστ' οὐκ ὤκνει συντελεῖν ἀγῶνας ἐν τοῖς
βασιλείοις. εἰς οὓς παρῄει διαμιλλησόμενος τοῖς ἀνταγωνισταῖς. τοῦτον μὲν οὖν οἱ ἀλεξανδρεῖς ἐξέβα-
λον. τριῶν δ' αὐτῷ θυγατέρων οὐσῶν, ὧν μία γνησία ἡ πρεσβυτάτη, ταύτην ἀνέδειξαν βασίλισσαν. οἱ
δ' υἱοὶ δύο νήπιοι τῆς τότε χρείας ἐξέπιπτον τελέως. τῇ δὲ κατασταθείσῃ μετεπέμψαντο ἄνδρα ἐκ τῆς
συρίας κυβιοσάκτην τινά. προσποιησάμενον τοῦ γένους εἶναι τῶν συριακῶν βασιλέων. τοῦτον μὲν οὖν ὀλίγων ἡ-
μερῶν ἀπεστραγγάλισεν ἡ βασίλισσα. οὐ φέρουσα τὸ βάναυσον αὐτοῦ καὶ τὸ ἀνελεύθερον. ἧκε δ' ἀντ' ἐκείνου προ-
σποιησάμενος καὶ αὐτὸς εἶναι μιθριδάτου υἱὸς τοῦ εὐπάτορος ἀρχέλαος. ὃς ἦν υἱὸς μὲν ἀρχελάου τοῦ πρὸς
σύλλαν διαπολεμήσαντος. καὶ μετὰ ταῦτα τιμηθέντος ὑπὸ ῥωμαίων. πάππος δὲ τοῦ βασιλεύσαντος καπ-
παδόκων ὕστατα καθ' ἡμᾶς. ἱερεὺς δὲ τῶν ἐν πόντῳ κομάνων. γαβινίῳ δὲ τότε συνδιέτριβεν ὡς συστρα-
τεύσων ἐπὶ παρθυαίους. λαθὼν δὲ τοῦτον κομίζεται διά τινος εἰς τὴν βασίλισσαν. καὶ ἀναδείκνυται βασι-
λεύς. ἐν τούτῳ τὸν αὐλητὴν ἀφικόμενον εἰς ῥώμην, δεξάμενος πομπήιος μάγνος, συνίστησι τῇ συγκλήτῳ
καὶ διαπράττεται κάθοδον μὲν τούτῳ. τῶν δὲ πρέσβεων τῶν πλείστων ἑκατὸν ὄντων ὄλεθρον τῶν κατα πρεσ-
βευσάντων αὐτοῦ. τούτων δ' ἦν καὶ δίων ὁ ἀκαδημαϊκὸς ἀρχιπρεσβευτὴς γεγονώς. καταχθεὶς δὲ ὑπὸ
γαβινίου πτολεμαῖος, τόν τε ἀρχέλαον ἀναιρεῖ καὶ τὴν θυγατέρα. χρόνον δ' οὐ πολὺν τῇ βασιλείᾳ προσθείς,
τελευτᾷ νόσῳ. καταλιπὼν δύο μὲν υἱεῖς. δύο δὲ θυγατέρας. πρεσβυτάτην τε κλεοπάτραν. οἱ μὲν οὖν
ἀλεξανδρεῖς ἀπέδειξαν βασιλέας τόν τε πρεσβύτερον τῶν υἱῶν καὶ τὴν κλεοπάτραν. καὶ ἀπῆρε μετὰ τῆς
ἀδελφῆς εἰς τὴν συρίαν. ἐν τούτῳ πομπήιος μάγνος ἧκε φεύγων ἐκ παλαιφαρσάλου πρὸς τὸ πηλού-
σιον καὶ τὸ κάσιον ὄρος. τοῦτον μὲν οὖν δολοφονοῦσιν οἱ μετὰ τοῦ βασιλέως. ἐπελθὼν δὲ καῖσαρ τόν τε μειρακί-
σκον διαφθείρει καὶ καθίστησι βασίλισσαν αἰγύπτου τὴν κλεοπάτραν, μεταπεμψάμενος ἐκ τῆς φυγῆς. συμ-
βασιλεύειν δ' ἀπέδειξε τὸν λοιπὸν ἀδελφὸν αὐτῇ, νέον παντελῶς ὄντα. μετὰ δὲ τὴν καίσαρος τελευτὴν
καὶ τὰ ἐν φιλίπποις, διαβὰς ἀντώνιος εἰς τὴν ἀσίαν, ἐξετίμησεν ἐπὶ πλέον τὴν κλεοπάτραν. ὥστε καὶ
γυναῖκα ἔκρινε. καὶ ἐτεκνοποιήσατο ἐξ αὐτῆς. τόν τε ἀκτιακὸν πόλεμον συνήρατο ἐκείνῃ καὶ συνέφυγε. καὶ
μετὰ ταῦτα ἐπακολουθήσας ὁ σεβαστὸς καῖσαρ ἀμφοτέρους κατέλυσε. καὶ τὴν αἴγυπτον ἔπαυσε πα-
ροινουμένην. ἐπαρχία δὲ νῦν ἐστι. φόρους μὲν τελοῦσα ἀξιολόγους. ὑπὸ σωφρόνων δ' ἀνδρῶν διοικουμένη τῶν
πεμπομένων ἐπάρχων αἰεί. ὁ μὲν οὖν πεμφθεὶς τὴν τοῦ βασιλέως ἔχει τάξιν. ὑπ' αὐτῷ δ' ἐστὶν ὁ δικαιοδό-
της. ὁ τῶν πολλῶν κρίσεων κύριος. ἄλλος δ' ἐστὶν ὁ προσαγορευόμενος ἴδιος λόγος. ὃς τῶν ἀδεσπότων καὶ
τῶν εἰς καίσαρα πίπτειν ὀφειλόντων ἐξεταστής ἐστι. παρέπονται δὲ τούτοις ἀπελεύθεροι καίσαρος

καὶ οἰκονόμοι, μείζω καὶ ἐλάττω πεπιστευμένοι πράγματα. ἔστι δὲ καὶ στρατιωτικοῦ τρία τάγματα. ὧν
τὸ ἓν κατὰ τὴν πόλιν ἵδρυται. τἆλλα δ' ἐν τῇ χώρᾳ. χωρὶς δὲ τούτων ἐννέα μὲν εἰσὶ σπεῖραι ῥωμαίων.
τρεῖς μὲν ἐν τῇ πόλει. τρεῖς δ' ἐπὶ τῶν ὅρων τῆς αἰθιοπίας ἐν συήνῃ φρουρὰ τοῖς τόποις. τρεῖς δὲ κατὰ τὴν
ἄλλην χώραν. εἰσὶ δὲ καὶ ἱππαρχίαι τρεῖς ὁμοίως διατεταγμέναι κατὰ τοὺς ἐπικαιρίους τόπους. τῶν δ' ἐπι
χωρίων ἀρχόντων κατὰ πόλιν μὲν ὅ τε ἐξηγητής ἐστι πορφύραν ἀμπεχόμενος. καὶ ἔχων πατρίους τιμὰς
καὶ ἐπιμέλειαν τῶν τῇ πόλει χρησίμων. καὶ ὁ ὑπομνηματογράφος, καὶ ἀρχιδικαστής. τέταρτος δὲ ὁ νυ
κτερινὸς στρατηγός. ἦσαν δ' οὖν καὶ κατὰ τῶν βασιλέων αὗται αἱ ἀρχαί. κακῶς δὲ τῶν βασιλέων πολι
τευομένων, ἠφανίζετο καὶ ἡ τῆς πόλεως εὐκαιρία διὰ τὴν ἀνομίαν. ὁ γοῦν πολύβιος γεγονὼς ἐν τῇ πό
λει βδελύττεται τὴν τότε κατάστασιν, καὶ φησὶ τρία γένη τὴν πόλιν οἰκεῖν. τό τε αἰγύπτιον, καὶ τὸ ἐπιχώ
ριον φῦλον ὀξὺ, καὶ πολιτικὸν, καὶ τὸ μισθοφορικὸν πολὺ, καὶ ἀνάγωγον. ἐξ ἔθους γὰρ παλαιοῦ ξένους ἔ
τρεφον τοὺς τὰ ὅπλα ἔχοντας. ἄρχειν μᾶλλον, ἢ ἄρχεσθαι δεδιδαγμένους διὰ τὴν τῶν βασιλέων οὐδέ
νειαν. τρίτον δ' ἦν γένος τὸ τῶν ἀλεξανδρέων. οὐδ' αὐτὸ εὐκρινῶς πολιτικὸν διὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. κρείτ
τον δ' ἐκείνων ὅμως. καὶ γὰρ εἰ μιγάδες, ἕλληνες ὅμως ἀνέκαθεν ἦσαν. καὶ ἐμέμνηντο τοῦ κοινοῦ τῶν ἑλ
λήνων ἔθους. ἠφανισμένου δὲ καὶ τούτου τοῦ πλήθους, μάλιστα ὑπὸ τοῦ εὐεργέτου τοῦ φύσκωνος καθ' ὃν
ἧκεν εἰς τὴν ἀλεξάνδρειαν ὁ πολύβιος. καταστασιαζόμενος γὰρ ὁ φύσκων, πλεονάκις τοῖς στρατιώταις
ἐφίει τὰ πλήθη καὶ διέφθειρε. τοιούτων δὴ φησὶν ὄντων τῶν ἐν τῇ πόλει, λοιπὸν ἦν τῷ ὄντι τὸ τοῦ ποιη
τοῦ. αἴγυπτον δ' ἰέναι δολιχὴν ἀργαλέην τε. τοιαῦτα δ' ἦν εἰ μὴ χείρω, καὶ τὰ τῶν ὕστερον βασιλέων. καὶ
ῥωμαῖοι δ' εἰς δύναμιν, ὡς εἰπεῖν ἐπηνώρθωσαν τὰ πολλά. τὴν μὲν πόλιν διατάξαντες ὡς εἶπον. κατὰ
δὲ τὴν χώραν ἐπιστρατηγούς τινας, καὶ νομάρχας καὶ ἐθνάρχας καλουμένους. ἀποδείξαντες πραγμάτων
οὐ μεγάλων ἐπιστατεῖν ἠξιωμένους. τῆς δ' εὐκαιρίας τῆς κατὰ τὴν πόλιν τὸ μέγιστόν ἐστιν, ὅτι τῆς αἰγύπτου
πάσης μόνος ἐστὶν ὁ τόπος οὗτος. πρὸς ἄμφω πεφυκὼς εὖ. τά τε ἐκ θαλάττης διὰ τὸ εὐλίμενον. καὶ τὰ
ἐκ τῆς χώρας. ὅτι πάντα εὐμαρῶς ὁ ποταμὸς πορθμεύει. συνάγει τε εἰς τοιοῦτο χωρίον ὃ πολὺ μέγιστον
ἐμπορεῖον τῆς οἰκουμένης ἐστί, τῆς μὲν οὖν πόλεως ταύτας ἄν τις λέγοι τὰς ἀρετάς. τῆς αἰγύπτου δὲ
τὰς προσόδους, ἄς ἔν τινι λόγῳ κικέρων φράζει. φήσας κατ' ἐνιαυτὸν τῷ τῆς κλεοπάτρας πατρὶ τῷ
αὐλητῇ προσφέρεσθαι φόρον ταλάντων μυρίων καὶ δισχιλίων πεντακοσίων. ὅπου οὖν ὁ κάκιστα καὶ ῥα
θυμότατα τὴν βασιλείαν διοικῶν τοσαῦτα προσωδεύετο, τί χρὴ νομίσαι τὰ νῦν διὰ τοσαύτης ἐπι
μελείας οἰκονομούμενα. καὶ τῶν ἰνδικῶν ἐμπορειῶν καὶ τῶν τρωγλοδυτικῶν ἐπηυξημένων ἐπὶ τοσοῦτον. πρό
τερον μὲν γε οὐδ' εἴκοσι πλοῖα ἐθάρρει τὸν ἀράβιον κόλπον διαπερᾶν, ὥστε ἔξω τῶν στενῶν ὑπερκύπτειν.
νῦν δὲ καὶ στόλοι μεγάλοι στέλλονται μέχρι τῆς ἰνδικῆς καὶ τῶν ἄκρων τῶν αἰθιοπικῶν. ἐξ ὧν ὁ πολυτιμό
τατος κομίζεται φόρτος εἰς τὴν αἴγυπτον. κἀντεῦθεν πάλιν εἰς τοὺς ἄλλους ἐκπέμπεται τόπους. ὥστε
τὰ τέλη διπλάσια συνάγεται. τὰ μὲν, εἰσαγωγικά. τὰ δὲ, ἐξαγωγικά. τῶν δὲ βαρυτίμων βαρέα καὶ
τὰ τέλη. καὶ γὰρ δὴ καὶ μονοπωλείας ἔχει. μόνη γὰρ ἡ ἀλεξάνδρεια τῶν τοιούτων, ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ, καὶ ὑπο
δοχεῖόν ἐστι, καὶ χορηγεῖ τοῖς ἐκτός. ἔτι δὲ μᾶλλον κατιδεῖν ἐστι τὴν εὐφυΐαν ταύτην περιοδεύοντι τὴν χώ
ραν. καὶ πρῶτον τὴν παραλίαν ἀρξαμένην ἀπὸ τοῦ καταβαθμοῦ. μέχρι δεῦρο γάρ ἐστιν ἡ αἴγυπτος. ἡ δ' ἑ
ξῆς ἐστὶ κυρηναία καὶ οἱ περιοικοῦντες βάρβαροι, μαρμαρίδαι. ἀπὸ μὲν οὖν καταβαθμοῦ εἰς παραιτόνιον
εὐθυπλοοῦντι, σταδίων ἐστὶν ἐννακοσίων ὁ δρόμος. πόλις δ' ἐστὶ καὶ λιμὴν μέγας τετταράκοντά που στα
δίων. καλοῦσι δ' οἱ μὲν, παραιτόνιον τὴν πόλιν. οἱ δ' ἀμμωνίαν, μεταξὺ δὲ ἥ τε αἰγυπτίων κώμη καὶ ἡ ἑνησι
σφυρα ἄκρα. καὶ τυνδάρειοι σκόπελοι νησίδια τέτταρα ἔχοντα λιμένα. εἶθ' ἑξῆς ἄκρα δρέπανον. καὶ νῆ
σος αἰνησίππεια ἔχουσα λιμένα. καὶ κώμη ἄπις. ἀφ' ἧς εἰς μὲν παραιτόνιον στάδιοι ἑκατόν. εἰς δὲ ἄμμωνος, ὁ
δὸς ἡμερῶν πέντε. ἀπὸ δὲ τοῦ παραιτονίου χίλιοί που καὶ διακόσιοι στάδιοι. μεταξὺ δὲ πρῶτον μὲν ἄκρα λευ
κόγαιος λευκὴ ἀκτὴ καλουμένη. ἔπειτα φοινικοῦς λιμὴν, καὶ πνιγεὺς κώμη. εἶτα νῆσος σιδωνία. λιμένα ἔχου
σα. εἶτ' ἀντίφραι, μικρὸν ἀπωτέρω τῆς θαλάττης. ἅπασα μὲν ἡ χώρα αὕτη οὐκ εὔοινος. πλείω δεχομέ
νου τοῦ κεράμου θαλάττης, ἢ οἶνον. ὃν δὴ καλοῦσι λιβυκόν. ᾧ δὴ καὶ τῷ ζύθῳ τὸ πολὺ φῦλον χρῆται τῶν
ἀλεξανδρέων. σκώπτονται δὲ μάλιστα αἱ ἀντίφραι. εἶθ' ὁ δέρρις λιμὴν καλούμενος οὕτως, διὰ τὴν πλησία
πέτραν μέλαιναν δέρρει ἐοικυῖαν. ὀνομάζουσι δὲ καὶ ζεφύριον τὸν πλησίον τόπον. εἶτ' ἄλλος λιμὴν λευκά
σπις. καὶ ἄλλοι πλείους. εἶτα κυνὸς σῆμα. εἶτα πόσειρις οὐκ ἐπὶ θαλάττῃ. πανήγυριν δεχομένη μεγάλην.
καὶ ἄλλη δ' ἐστὶ ταπόσειρις ἐπέκεινα τῆς πόλεως ἱκανῶς. αὐτῆς δὲ πλησίον ἐπὶ τῇ θαλάττῃ πετρῶδες χωρίον.
καὶ αὐτὸ δεχόμενον πολλοὺς τοὺς ἀκμάζοντας ἅπασαν ὥραν ἔτους. εἶθ' ἡ πλινθίνη, καὶ νικίου κώμη. καὶ χερ
ρόννησος φρούριον, πλησίον ἤδη τῆς ἀλεξανδρείας καὶ τῆς νεκροπόλεως ἐν ἑβδομήκοντα σταδίοις. ἡ δὲ
μαρεία λίμνη παρατείνουσα μέχρι καὶ δεῦρο, πλάτος μὲν ἔχει πλειόνων, ἢ πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίων.
μῆκος δ' ἐλαττόνων, ἢ διακοσίων. ἔχει δ' ὀκτὼ νήσους. καὶ τὰ κύκλῳ πάντα οἰκούμενα καλῶς. εὐοινία τε ἐστὶ
περὶ τοὺς τόπους. ὥστε καὶ διαχεῖσθαι πρὸς παλαίωσιν τὸν μαρεώτην οἶνον. φύεται δ' ἐν τοῖς αἰγυπτιακοῖς ἕλεσι καὶ
ταῖς λίμναις, ἥ τε βίβλος καὶ ὁ αἰγύπτιος κάλαμος. ἐξ οὗ τὸ κυβώριον. σχεδόν τι ἰσοϋψεῖς ῥάβδοι ὅσον δεκάπο
δες. ἀλλ' ἡ μὲν βίβλος ψιλὴ ῥάβδος ἐστὶν ἐπ' ἄκρου ἔχουσα χαίτην. ὁ δὲ κύαμος κατὰ πολλὰ μέρη φύλλα καὶ ἄνθη

ἐκφέρει. καὶ καρπὸν ὅμοιον τῷ παρ' ἡμῖν κυάμῳ. μεγέθει μόνον καὶ γεύσει διαλλάττοντα. οἱ οὖν κυαμῶνες ἡδεῖαν ὄψιν παρέχουσι καὶ τέρψιν. τοῖς εὐωχεῖσθαι βουλομένοις. εὐωχοῦνται δ' ἐν σκάφαις θαλαμηγοῖς, ἐνδύνοντες εἰς τὸ πύκνωμα τῶν κυάμων. καὶ συσκιαζόμενοι τοῖς φύλλοις. ἔστι γὰρ σφόδρα μεγάλα. ὥς καὶ ἀντὶ ποτηρίων καὶ τρυβλίων χρῆσθαι. ἔχει γάρ τινα καὶ κοιλότητα ἐπιτηδείαν πρὸς τοῦτο. καὶ δὴ καὶ ἡ ἀλεξάνδρεια μεστὴ τούτων ἐστὶ κατὰ τὰ ἐργαστήρια, ὡς σκεύεσι χρωμένων. καὶ οἱ ἀγροί, μίαν τινὰ τῶν προσόδων καὶ ταύτην ἔχουσι τὴν ἀπὸ τῶν φύλλων. ὁ μὲν δὴ κύαμος τοιοῦτος. ἡ δὲ βίβλος ἐνταῦθα μὲν οὐ πολλὴ φύεται. οὐ γὰρ ἀσκεῖται. ἐν δὲ τοῖς κάτω μέρεσι τοῦ δέλτα, πολλὴ ἡ μέν, χείρων. ἡ δὲ βελτίων ἡ ἱερατική. κἀνταῦθα δέ τινες τῶν τὰς προσόδους ἐπικτείνειν βουλομένων μετήνεγκαν τὴν ἰουδαϊκὴν ἐντρέχειαν. ἣν ἐκεῖνοι παρεῦρον ἐπὶ τοῦ φοίνικος τοῦ καρυωτικοῦ καὶ βαλσάμου. οὐ γὰρ ἐῶσι πολλαχοῦ φύεσθαι. τῇ δὲ σπάνει τιμὴν ἐπιτιθέντες, τὴν πρόσοδον οὕτως αὔξουσι. τὴν δὲ κοινὴν χρείαν διαλυμαίνονται. ἐν δεξιᾷ δὲ τῆς κανωβικῆς πύλης ἐξιόντι, ἡ διῶρυξ ἐστὶν ἡ ἐπὶ κάνωβον συνάπτουσα τῇ λίμνῃ. ταύτῃ δὲ καὶ ἐπὶ σχεδίαν ὁ πλοῦς ἐπὶ τὸν μέγαν ποταμὸν καὶ ἐπὶ τὸν κάνωβον. πρῶτον δὲ ἐπὶ τὴν ἐλευσῖνα. ἔστι δ' αὕτη κατοικία πλησίον τῆς τε ἀλεξανδρείας καὶ τῆς νικοπόλεως ἐπ' αὐτῇ τῇ διώρυγι κειμένη. διαίτας ἔχουσα καὶ ἀπόψεις τοῖς καπυρίοις βουλομένοις καὶ ἀνδράσι καὶ γυναιξίν. ἀρχή τις κανωβισμοῦ καὶ τῆς ἐκεῖ λαμυρείας. ἀπὸ δὲ τῆς ἐλευσῖνος προελθοῦσι μικρόν, ἐν δεξιᾷ ἐστὶν ἡ διῶρυξ. ἀνάγουσα ἐπὶ τὴν σχεδίαν. διέχει δὲ τετράσχοινον τῆς ἀλεξανδρείας ἡ σχεδία κατοικία πόλεως. ἐν ᾗ τὸ ναύσταθμον τῶν θαλαμηγῶν πλοίων. ἐφ' οἷς οἱ ἡγεμόνες εἰς τὴν ἄνω χώραν ἀναπλέουσιν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ τελώνιον τῶν ἄνωθεν καταγομένων καὶ ἀναγομένων. οὗ χάριν καὶ σχεδία ἔζευκται ἐπὶ τῷ ποταμῷ. ἀφ' ἧς καὶ τοὔνομα τῷ τόπῳ. μετὰ δὲ τὴν διώρυγα τὴν ἐπὶ σχεδίαν ἄγουσαν, ὁ ἑξῆς ἐπὶ τὸν κάνωβον πλοῦς ἐστι παράλληλος τῇ παραλίᾳ τῇ ἀπὸ φάρου μέχρι τοῦ κανωβικοῦ στόματος. στενὴ γάρ τις ταινία μεταξὺ διήκει τοῦ τε πελάγους καὶ τῆς διώρυγος. ἐν ᾗ ἐστὶν ἥτε μικρὰ ταποσείρις, μετὰ τὴν νικόπολιν καὶ τὸ ζεφύριον. ἄκραν ναΐσκον ἔχουσα ἀρσινόης ἀφροδίτης. τὸ δὲ παλαιὸν καὶ θῶνιν τινὰ πόλιν ἐνταῦθα φασίν, ἐπώνυμον τοῦ βασιλέως τοῦ δεξαμένου μενέλαόν τε καὶ ἑλένην ξενίᾳ. περὶ οὖν τῶν τῆς ἑλένης φαρμάκων φησὶν οὕτως ὁ ποιητής.

» ἐσθλά, τά οἱ πολυδάμνα πόρεν θῶνος παράκοιτις.

Κάνωβος δ' ἐστὶ πόλις ἐν εἴκοσι καὶ ἑκατὸν σταδίοις ἀπὸ ἀλεξανδρείας πεζῇ ἰοῦσιν. ἐπώνυμος κανώβου τοῦ μενελάου κυβερνήτου. ἀποθανόντος αὐτόθι. ἔχουσα τὸ τοῦ σεράπιδος ἱερὸν πολλῇ ἁγιστείᾳ τιμώμενον. καὶ θεραπείας ἐκφέρον. ὥστε καὶ τοὺς ἐλλογιμωτάτους ἄνδρας πιστεύειν. καὶ ἐγκοιμᾶσθαι αὐτοὺς ὑπὲρ ἑαυτῶν ἢ ἑτέρων. συγγράφουσι δέ τινες καὶ τὰς θεραπείας. ἄλλοι δὲ ἀρετὰς τῶν ἐνταῦθα λογίων. ἀντὶ πάντων δ' ἐστὶν ὁ τῶν πανηγυριστῶν ὄχλος. τῶν ἐκ τῆς ἀλεξανδρείας κατιόντων τῇ διώρυγι. πᾶσα γὰρ ἡμέρα καὶ πᾶσα νὺξ πληθύει τῶν ἐν τοῖς πλοιαρίοις καταυλουμένων καὶ κατορχουμένων ἀνέδην μετὰ τῆς ἐσχάτης ἀκολασίας καὶ ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν. τῶν δ' ἐν αὐτῷ τῷ κανώβῳ καταγωγὰς ἐχόντων ἐπὶ κειμένας τῇ διώρυγι εὐφυεῖς πρὸς τὴν τοιαύτην ἄνεσιν καὶ εὐωχίαν. μετὰ δὲ τὸν κάνωβον ἐστὶ τὸ ἡράκλειον τὸ ἡρακλέους ἔχον ἱερόν. εἶτα τὸ κανωβικὸν στόμα καὶ ἡ ἀρχὴ τοῦ δέλτα. τὰ δ' ἐν δεξιᾷ τῆς κανωβικῆς διώρυγος, ὁ μενελαΐτης ἐστὶν νομός. ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ πρώτου πτολεμαίου καλουμένου. οὐ μὰ δία ἀπὸ τοῦ ἥρωος, ὥς ἔνιοι φασίν, ὧν καὶ ἀρτεμίδωρος. μετὰ δὲ στόμα τὸ κανωβικόν ἐστι τὸ βολβιτικόν. εἶτα τὸ σεβεννυτικὸν καὶ τὸ φατνικόν. τρίτον ὑπάρχον τῷ μεγέθει παρὰ τὰ πρῶτα δύο. οἷς ὥρισται τὸ δέλτα. καὶ γὰρ οὐ δὲ πόρρω τῆς κορυφῆς σχίζεται εἰς τὸν ἐντὸς τοῦ δέλτα. τῷ δὲ φατνικῷ συνάπτει τὸ μενδήσιον. εἶτα τὸ τανιτικόν. καὶ τελευταῖον τὸ πηλουσιακόν. ἔστι δὲ καὶ ἄλλα τούτων μεταξύ, ὡς ἂν ψευδοστόματα ἀσημότερα. ἔχει μὲν οὖν εἰσαγωγὰς τὰ στόματα. ἀλλ' οὐκ εὐφυεῖς, οὐδὲ μεγάλοις πλοίοις. ἀλλ' ὑπηρετικοῖς, διὰ τὸ βραχέα εἶναι καὶ ἑλώδη. μάλιστα μέντοι τῷ κανωβικῷ στόματι ἐχρῶντο, ὡς ἐμπορείῳ, τῶν κατ' ἀλεξάνδρειαν λιμένων ἀποκεκλιμένων ὡς προείρηται. μετὰ δὲ τὸ βολβιτινὸν στόμα ἐπὶ πλέον ἔκκειται ταπεινὴ καὶ ἀμμώδης ἄκρα. καλεῖται δὲ ἀγνοῦ κέρας. εἶθ' ἡ περσέως σκοπή. καὶ τὸ μιλησίων τεῖχος. πλεύσαντες γὰρ ἐπὶ ψαμμιτίχου τριάκοντα ναυσὶ μιλήσιοι. κατὰ κυαξάρη οὗτος δ' ἦν τῶν μήδων, κατέσχον εἰς τὸ στόμα τὸ βολβίτινον. εἶτ' ἐκβάντες ἐτείχισαν τὸ λεχθὲν κτίσμα. χρόνῳ δ' ἀναπλεύσαντες εἰς τὸν σαΐτικὸν νομόν, καταναυμαχήσαντες ἰνάρων, πόλιν ἔκτισαν ναύκρατον. οὐ πολὺ τῆς σχεδίας ὕπερθεν. μετὰ δὲ τὸ τῶν μιλησίων τεῖχος ἐπὶ τὸ σεβεννυτικὸν προσιόντι στόμα, λίμναι εἰσίν. ὧν ἡ ἑτέρα βουτικὴ καλεῖται ἀπὸ βούτου πόλεως. καὶ ἡ σεβεννυτικὴ δὲ πόλις, καὶ ἡ σαΐς μητρόπολις τῆς κάτω χώρας ἐν ᾗ τιμῶσι τὴν ἀθηνᾶν. ἐν δὲ τῷ ἱερῷ αὐτῆς ἡ θήκη κεῖται τοῦ ψαμμιτίχου. περὶ δὲ τὴν βοῦτον καὶ ἑρμοῦ πόλιν ἐν νήσῳ κειμένη. ἐν δὲ τῇ βούτῳ λητοῦς ἐστι μαντεῖον. ἐν δὲ τῇ μεσογείᾳ τῇ ὑπὲρ τοῦ σεβεννυτικοῦ καὶ φατνικοῦ στόματος ξόϊς ἐστὶ καὶ νῆσος καὶ πόλις ἐν τῷ σεβεννυτικῷ νομῷ. ἔστι δὲ καὶ ἑρμούπολις καὶ λύκου πόλις καὶ μένδης. ὅπου τὸν πᾶνα τιμῶσι. καὶ τῶν ζώων τράγον. ὡς δὲ πίνδαρός φησιν, οἱ τράγοι ἐνταῦθα γυναιξὶ μίγνυνται.

» Μένδητα παρὰ κρημνὸν θαλάσσης ἔσχατον νείλου κέρας. αἰγίβατοι ὅθι τράγοι γυναιξὶ μίσγονται.

Πλησίον δὲ μένδητος καὶ διὸς πόλις. καὶ αἱ περὶ αὐτὴν λίμναι, καὶ λεοντόπολις. εἶτ' ἀπωτέρω ἡ βουσείρεις πό

λις ἐν τῷ βουσειρίτῃ νόμῳ. καὶ κανὸς πόλις. φησὶ δ' ἐρατοσθένης, κοινὸν μὲν εἶναι τοῖς βαρβάροις
πᾶσιν ἔθος, τὴν ξενηλασίαν. τοὺς δ' αἰγυπτίους ἐλέγχεσθαι διὰ τῶν περὶ τὸν βούσειριν μεμυθευμέ-
νων ἐν τῷ βουσειρίτῃ νόμῳ, διαβάλλειν τὴν ἀξενίαν βουλομένων τοῦ τόπου τούτου τῶν ὕστερον. οὐ δὲ βα
σιλέως μὰ δία. οὐ δὲ τυράννου γενομένου τινὸς τοῦ βουσείριδος. προσεπιφημισθῆναι δὲ καὶ τὸ, αἴγυ-
πτον δ' ἴμεναι δολιχὴν ὁδὸν ἀργαλέην τε. προσλαμβάνοντος πρὸς τοῦτο πάμπολυ, καὶ τοῦ ἀλιμένου, καὶ
» τοῦ μηδὲ τὸν ὄντα λιμένα ἀνεῖσθαι τὸν πρὸς τῇ φάρῳ. φρουρεῖσθαι δ' ὑπὸ βουκόλων λῃστῶν ἐπιτι-
θεμένων τοῖς προσορμιζομένοις. καρχηδονίους δὲ καταποντοῦν, εἴ τις τῶν ξένων εἰς σαρδὼ παραπλεύ-
σειεν, ἢ ἐπὶ στήλας. διὰ δὴ ταῦτ' ἀπιστεῖσθαι τὰ πολλὰ τῶν ἑσπερίων. καὶ τοὺς πέρσας δὲ κακῶς ἡγεῖ-
σθαι τοῖς πρέσβεσι κύκλῳ, καὶ διὰ δυσκόλων. συνάπτει δὲ καὶ ὁ ἀθρειβίτης νομὸς, καὶ ἔτι ὁ ἀπροσο
πίτης νομός. ἐν ᾧ ἀφροδίτης πόλις. ὑπὲρ δὲ τὸ μενδήσιον στόμα, καὶ τὸ τανιτικὸν, λίμνη μεγάλη. καὶ
ὁ μενδήσιος ἐστὶ νομὸς, καὶ ὁ λεοντοπολίτης. καὶ πόλις ἀφροδίτης. καὶ ὁ φαρβητίτης νομὸς, εἶτα τὸ τα
νιτικὸν στόμα. ὅ τινες σαϊτικὸν λέγουσι. καὶ ὁ τανίτης νομὸς, καὶ πόλις ἐν αὐτῇ μεγάλη τάνις. μεταξὺ
δ' αἱ τοῦ τανιτικοῦ καὶ τοῦ πηλουσιακοῦ λίμναι. καὶ ἕλη μεγάλα, καὶ συνεχῆ κώμας ἔχοντα. καὶ αὐ-
τὸ δὲ τὸ πηλούσιον κύκλῳ περικείμενα ἔχει ἕλη. ἅ τινες βάραθρα καλοῦσι, καὶ τέλματα. ὤκισται δ' ἀπὸ
θαλάττης ἐν πλείοσιν, ἢ εἴκοσι σταδίοις. τὸν δὲ κύκλον ἔχει τοῦ τείχους σταδίους εἴκοσιν. ὠνόμασται δ' ἀπὸ τοῦ
πηλοῦ, καὶ τῶν τελμάτων. ταύτῃ δὲ καὶ δυσείσβολός ἐστιν ἡ αἴγυπτος ἐκ τῶν ἑωθινῶν τόπων τῶν κα-
τὰ φοινίκην. καὶ τὴν ἰουδαίαν. καὶ ἐκ τῆς ἀραβίας δὲ τὴν ναβαταίων ἥτις ἐστὶ προσεχής. διὰ τούτων
ἐπὶ τὴν αἴγυπτον ἡ ὁδός. ἡ δὲ μεταξὺ τοῦ νείλου καὶ τοῦ ἀραβίου κόλπου, ἀραβία μέν ἐστι. καὶ ἐπί γε τῶν
ἄκρων αὐτῆς ἵδρυται τὸ πηλούσιον. ἀλλ' ἔρημος ἅπασα ἐστὶ, καὶ ἄβατος στρατοπέδῳ. ὁ δὲ μεταξὺ ἰσθμὸς
τοῦ πηλουσίου, καὶ τοῦ μυχοῦ τοῦ καθ' ἡρώων πόλιν, ἐννακοσίων μέν ἐστι σταδίων. ὡς δὲ ποσειδώνιος φησὶν.
ἐλαττόνων, ἢ χιλίων καὶ πεντακοσίων. πρὸς δὲ τῷ ἄνυδρος εἶναι καὶ ἀμμώδης, ἑρπετῶν πλῆθος ἔ-
χει τῶν ἀμμοδυτῶν. ἀπὸ δὲ σχεδίας ἀναπλέουσιν ἐπὶ μέμφιν, ἐν δεξιᾷ μέν εἰσι πάμπολλαι κῶμαι μέ-
χρι τῆς μαρείας λίμνης. ὧν ἐστὶ καὶ ἡ χαβρίου κώμη λεγομένη. ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ ἑρμούπολις ἐστίν.
εἶτα γυναικῶν πόλις. καὶ νομὸς γυναικοπολίτης. ἐφεξῆς δὲ μώμεμφις, καὶ μωμεμφίτης νομός. με-
ταξὺ δὲ διώρυγες πλείους εἰς τὴν μαρεώτιν. οἱ δὲ μωμεμφῖται τὴν ἀφροδίτην τιμῶσι. καὶ τρέφε-
ται θήλεια βοῦς ἱερὰ καθάπερ ἐν μέμφει. ὁ ἆπις ἐν μέμφει. ἐν ἡλίου δὲ πόλει ὁ μνεῦις. οὗτοι μὲν οὖν
θεοὶ νομίζονται. οἱ δὲ, παρὰ τοῖς ἄλλοις. καὶ παρὰ πολλοῖς γὰρ δή. ἐν δὲ τῷ δέλτα, καὶ ἔξω αὐτοῦ, τοῖς
μὲν, ἄρρην. τοῖς δὲ θήλεια τρέφεται. οὗτοι δὲ θεοὶ μὲν οὐ νομίζονται. ἱεροὶ δέ. ὑπὲρ δὲ μωμέμφεως
εἰσὶ δύο νιτρίαι. πλεῖστον νίτρον ἔχουσαι. καὶ νομὸς νιτριώτης. τιμᾶται δ' ἐνταῦθα ὁ σάραπις, καὶ πα
ρὰ μόνοις τούτοις θύεται ἐν αἰγύπτῳ πρόβατον. πλησίον δὲ καὶ ἐνταῦθα πόλις μενέλαος. ἐν ἀριστερᾷ
δὲ ἐν τῷ δέλτα ἐπὶ μὲν τῷ ποταμῷ ναύκρατις. ἀπὸ δὲ τοῦ ποταμοῦ δίσχοινον διέχουσα ἡ σάϊς. καὶ μι-
κρὸν ταύτης ὑπεράνω τὸ τοῦ ὀσίριδος ἄσυλον. ἐν ᾧ κεῖσθαι τὸν ὄσιριν φασίν. ἀμφισβητοῦσι δὲ τούτου πολ
λοί. καὶ μάλιστα οἱ τὰς φιλὰς οἰκοῦντες τὰς ὑπὲρ συήνης, καὶ τῆς ἐλεφαντίνης. μυθεύουσι γὰρ δὴ
διότι ἡ ἶσις κατὰ πολλοὺς τόπους κατὰ γῆς θείη σοροὺς τοῦ ὀσίριδος. μία δὲ τούτων ἦν ἔχουσα τὸν
ὄσιριν, ἀφανὴς πᾶσι. τοῦτο δὲ πράξειε λαθεῖν βουλομένη τὸν τυφῶνα. μὴ ἐπελθὼν ἐκρίψῃ τὸ σῶμα
τῆς θήκης. ἀπὸ μὲν δὴ ἀλεξανδρείας ἐπὶ τὴν τοῦ δέλτα κορυφὴν αὕτη ἡ περιήγησις. φησὶ δ' ὁ ἀρτε-
μίδωρος σχοίνων ὀκτὼ, καὶ εἴκοσι τὸν ἀνάπλουν. τοῦτο δ' εἶναι σταδίων ὀκτακοσίων τετταράκοντα. λο
γιζόμενος τριακοντα στάδιον τὴν σχοῖνον. ἡμῖν μέντοι πλέουσιν ἄλλοτ' ἄλλῳ μέτρῳ χρωμένοις τῶν σχοί-
νων, ἀπεδίδοσαν τὰ διαστήματα. ὥστε καὶ τετταράκοντα σταδίους, καὶ ἔτι μείζους κατὰ τόπους ὁμο-
λογεῖσθαι παρ' αὐτῶν. καὶ διότι παρὰ τοῖς αἰγυπτίοις ἄστατόν ἐστι τὸ τῆς σχοίνου μέτρον, αὐτὸς ἀρτεμί-
δωρος ἐν τοῖς ἑξῆς δηλοῖ. ἀπὸ μὲν γὰρ μέμφεως μέχρι θηβαΐδος τὴν σχοῖνον ἑκάστην φησὶν εἶναι σταδίων ἑκα-
τὸν εἴκοσιν. ἀπὸ δὲ τῆς θηβαΐδος μέχρι συήνης ἑξήκοντα. ἀπὸ δὲ πηλουσίου πρὸς τὴν αὐτὴν ἀναπλέ-
ουσι κορυφὴν, σχοίνους μὲν πέντε, καὶ εἴκοσι φησὶ σταδίους δὲ ἑπτακοσίους πεντήκοντα τῷ αὐτῷ
μέτρῳ χρησάμενος. πρῶτον δ' ἐκ τοῦ πηλουσίου προελθοῦσιν εἶναι διώρυγα τὴν πληροῦσαν τὰς κα-
τὰ τὰ ἕλη καλουμένας λίμνας. αἳ δύο μέν εἰσιν. ἐν ἀριστερᾷ δὲ κεῖνται τοῦ μεγάλου ποταμοῦ ὑπὲρ τὸ
πηλούσιον ἐν τῇ ἀραβίᾳ. καὶ ἄλλας δὲ λίμνας λέγει καὶ διώρυγας ἐν τοῖς αὐτοῖς μέρεσιν ἔξω τοῦ
δέλτα. ἔστι δὲ καὶ νομὸς σεθρωίτης παρὰ τὴν ἑτέραν λίμνην. ἕνα δὲ τῶν δέκα τῶν ἐν τῷ δέλτα διαρι-
θμεῖται. καὶ τοῦτον. εἰς δὲ ταύτας λίμνας, συμβάλλουσι, καὶ ἄλλαι δύο διώρυγες. ἄλλη δ' ἐστὶν ἐκδι-
δοῦσα εἰς τὴν ἐρυθρὰν, καὶ τὸν ἀράβιον κόλπον. καὶ πόλιν ἀρσινόην, ἣν ἔνιοι κλεοπατρίδα καλοῦσι. διαῤῥεῖ
δὲ καὶ διὰ τῶν πικρῶν καλουμένων λιμνῶν, αἳ πρότερον μὲν ἦσαν πικραί. τμηθείσης δὲ τῆς διώρυγος
τῆς λεχθείσης, μετεβάλλοντο τῇ κράσει τοῦ ποταμοῦ, καὶ νῦν εἰσὶν εὔοψοι. μεσταὶ δὲ καὶ τῶν λιμναίων
ὀρνέων. ἐτμήθη δὲ ἡ διώρυξ κατ' ἀρχὰς μὲν ὑπὸ σεσώστριος πρὸ τῶν τρωϊκῶν. οἱ δὲ, ὑπὸ τοῦ ψαμμι-
τίχου παιδὸς. ἀρξαμένου μόνον, εἶτ' ἐκλιπόντος τὸν βίον. ὕστερον δὲ ὑπὸ δαρείου τοῦ πρώτου διαδε-
ξαμένου τὸ ἑξῆς ἔργον. καὶ οὗτος δὲ δόξῃ ψευδεῖ πεισθεὶς ἀφῆκε τὸ ἔργον περὶ συντέλειαν ἤδη. ἐπεί-

θη γὰρ μετεωροτέραν εἶναι τὴν ἐρυθρὰν θάλατταν τῆς αἰγύπτου. καὶ εἰ διακοπείη πᾶς ὁ μεταξὺ ἰσθμὸς,
ἐπικλυσθήσεσθαι τῇ θαλάττῃ τὴν αἴγυπτον. οἱ μέντοι πτολεμαϊκοὶ βασιλεῖς διακόψαντες, κλειστὸν ἐποί-
ησαν τὸν εὔριπον. ὥστε βούλοιντο ἐκπλεῖν ἀκωλύτως εἰς τὴν ἔξω θάλατταν, καὶ εἰσπλεῖν πάλιν. εἴρηται
δὲ καὶ περὶ τῆς τῶν ὑδάτων ἐπιφανείας, καὶ ἐν τοῖς πρώτοις ὑπομνήμασι. πλησίον δὲ τῆς ἀρσινόης, καὶ ἡ τῶν
ἡρώων ἐστὶ πόλις. καὶ ἡ κλεοπατρὶς ἐν τῷ μυχῷ τοῦ ἀραβίου κόλπου. τῷ πρὸς αἴγυπτον. καὶ λιμένες καὶ
κατοικίαι. διώρυγες δὲ πλείους. καὶ λίμναι πλησιάζουσαι ταύταις. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ καὶ ὁ φαγρωριοπολί-
της νομός. καὶ πόλις φαγρωριόπολις. ἡ δ' ἀρχὴ τῆς διώρυγος τῆς ἐκ διδούσης εἰς τὴν ἐρυθρὰν, ἀπὸ κώμης ἄρ-
χεται φακκούσης. ᾗ συνεχής ἐστι, καὶ ἡ φίλωνος κώμη. πλάτος δ' ἔχει πηχῶν ἑκατὸν ἡ διῶρυξ. βάθος δ'
ὅσον ἀρκεῖ μυριοφόρῳ νηΐ. οὗτοι δ' οἱ τόποι πλησιάζουσι τῇ κορυφῇ τοῦ δέλτα. αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ βουβα-
στὸς πόλις, καὶ ὁ βουβαστίτης νομός. καὶ ὑπὲρ αὐτὸν ὁ ἡλιοπολίτης νομός. ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ἡ τοῦ ἡλίου
πόλις. ἐπὶ χώματος ἀξιολόγου κειμένη. τὸ ἱερὸν ἔχουσα τοῦ ἡλίου. καὶ τὸν βοῦν τὸν μνεῦιν ἐν σηκῷ τι-
νὶ τρεφόμενον. ὃς παρ' αὐτοῖς νομίζεται θεός. ὥσπερ καὶ ἐν μέμφει ὁ ἆπις. πρόκεινται δὲ τοῦ χώμα-
τος λίμναι. τὴν ἀνάχυσιν ἐκ τῆς πλησίον διώρυγος ἔχουσαι. νυνὶ μὲν οὖν ἐστι πανέρημος ἡ πόλις. τὸ
ἱερὸν ἔχουσα τῷ αἰγυπτίῳ τρόπῳ κατεσκευασμένον ἀρχαῖον. ἔχον πολλὰ τεκμήρια τῆς καμβύσου
μανίας, καὶ ἱεροσυλίας. ὃς τὰ μὲν, πυρί. τὰ δὲ, σιδήρῳ διελωβᾶτο τῶν ἱερῶν. ἀκρωτηριάζων,
καὶ περικαίων, καθάπερ καὶ τοὺς ὀβελίσκους. ὧν δύο καὶ εἰς ῥώμην ἐκομίσθησαν οἱ μὴ κεκακωμένοι
τελέως. ἄλλοι δ' εἰσὶ κἀκεῖ. καὶ ἐν θήβαις τῇ νῦν διοσπόλει. οἱ μὲν, ἑστῶτες ἀκμὴν πυρίβρωτοι. οἱ δὲ, καὶ
κείμενοι. τῆς δὲ κατασκευῆς τῶν ἱερῶν ἡ διάθεσις τοιαύτη. κατὰ τὴν εἰσβολὴν τὴν εἰς τὸ τέμενος,
λιθόστρωτόν ἐστιν ἔδαφος. πλάτος μὲν ὅσον πλεθριαῖον, ἢ καὶ ἔλαττον. μῆκος δὲ καὶ τριπλάσιον,
καὶ τετραπλάσιον. ἔστιν ὅπου καὶ μεῖζον. καλεῖται δὲ δρόμος τοῦτο. καθάπερ καλλίμαχος εἴρηκεν. ὁ
δρόμος ἱερὸς οὗτος ἀνούβιδος. διὰ δὲ τοῦ μήκους παντὸς ἑξῆς ἐφ' ἑκάτερα τοῦ πλάτους σφίγγες ἵδρυν-
ται λίθιναι. πήχεις εἴκοσιν, ἢ μικρῷ πλείους, ἀπ' ἀλλήλων διέχουσαι. ὥσθ' ἕνα μὲν ἐκ δεξιῶν εἶναι στί-
χον τῶν σφιγγῶν. ἕνα δ' ἐξ εὐωνύμων. μετὰ δὲ τὰς σφίγγας, πρόπυλον μέγα. εἶτ' ἄλλο προελθόντι
πρόπυλον. εἶτ' ἄλλο. οὐκ ἔστι δὲ διωρισμένος ἀριθμός. οὔτε τῶν προπύλων, οὔτε τῶν σφιγγῶν. ἄλλα
δ' ἐν ἄλλοις ἱεροῖς, ὥσπερ τὰ μήκη, καὶ τὰ πλάτη τῶν δρόμων. μετὰ δὲ τὰ προπύλαια, ὁ νεὼς πρό-
ναον ἔχων μέγαν, καὶ ἀξιόλογον. τὸν δὲ σηκὸν σύμμετρον. ξόανον δ' οὐδὲν, ἢ οὐκ ἀνθρωπόμορφον. ἀλ-
λὰ τῶν ἀλόγων ζώων τινός. τοῦ δὲ προνάου παρ' ἑκάτερον πρόκειται τὰ λεγόμενα πτερά. ἔστι δὲ ταῦ-
τα ἰσοϋψῆ τῷ νεῷ τείχη δύο. κατ' ἀρχὰς μὲν ἀφεστῶτα ἀπ' ἀλλήλων μικρὸν πλέον, ἢ τὸ πλάτος ἐστὶ
τῆς κρηπῖδος τοῦ νεώ. ἔπειτ' εἰς τὸ πρόσθεν προϊόντι, κατεπινευούσας γραμμὰς μέχρι πηχῶν πεντή-
κοντα, ἢ ἑξήκοντα. ἀναγλυφὰς δ' ἔχουσιν οἱ τοῖχοι οὗτοι μεγάλων εἰδώλων, τοῖς τυρρηνικοῖς, καὶ
τοῖς ἀρχαίοις σφόδρα τῶν παρὰ τοῖς ἕλλησι δημιουργημάτων. ἔστι δέ τις καὶ πολύστυλος οἶκος κα-
θάπερ ἐν μέμφει, βαρβαρικὴν ἔχων τὴν κατασκευήν. πλὴν γὰρ τοῦ μεγάλων εἶναι, καὶ πολλῶν
καὶ πολυστίχων τῶν στύλων, οὐδὲν ἔχει χαρίεν οὐδὲ γραφικόν. ἀλλὰ ματαιοπονίαν ἐμφαίνει μᾶλλον.
ἐν δὲ τῇ ἡλιουπόλει, καὶ οἴκους εἴδομεν μεγάλους, ἐν οἷς διέτριβον οἱ ἱερεῖς. μάλιστα γὰρ δὴ ταύτην
κατοικίαν ἱερέων γεγονέναι φασὶ τὸ παλαιὸν, φιλοσόφων ἀνδρῶν, καὶ ἀστρονομικῶν. ἐκλέλοιπε
δὲ καὶ τοῦτο νυνὶ τὸ σύστημα, καὶ ἡ ἄσκησις. ἐκεῖ μὲν οὖν οὐδεὶς ἡμῖν ἐδείκνυτο τῆς τοιαύτης ἀσκή-
σεως προεστώς. ἀλλ' οἱ ἱεροποιοὶ μόνον, καὶ ἐξηγηταὶ τοῖς ξένοις τῶν περὶ τὰ ἱερά. παρηκολούθει
δέ τις ἐξ ἀλεξανδρείας ἀναπλέοντι εἰς τὴν αἴγυπτον, αἰλίῳ γάλλῳ τῷ ἡγεμόνι χαιρήμων τοὔνο-
μα. προσποιούμενος τοιαύτην τινὰ ἐπιστήμην. γελώμενος δὲ τὸ πλέον, ὡς ἀλαζὼν, καὶ ἰδιώτης. ἐ-
κεῖ οὖν ἐδείκνυντο οἵ τε τῶν ἱερέων οἶκοι, καὶ πλάτωνος, καὶ εὐδόξου διατριβαί. συνανέβη γὰρ
δὴ τῷ πλάτωνι, ὁ εὔδοξος δεῦρο. καὶ συνδιέτριψαν ἱερεῦσιν ἐκεῖνοι ἐνταῦθα τρισκαίδεκα ἔ-
τη, ὡς εἴρηταί τισι. περιττοὺς γὰρ ὄντας κατὰ τὴν ἐπιστήμην τῶν οὐρανίων. μυστικοὺς δὲ καὶ δυσμε-
ταδότους τῷ χρόνῳ καὶ ταῖς θεραπείαις ἐξελιπάρησαν, ὥστε τινὰ τῶν θεωρημάτων ἱστορῆσαι. τὰ
πολλὰ δὲ ἀπεκρύψαντο οἱ βάρβαροι. οὗτοι δὲ τὰ ἐπιτρέχοντα τῆς ἡμέρας καὶ τῆς νυκτὸς μόρια
ταῖς τριακοσίαις ἑξήκοντα πέντε ἡμέραις εἰς τὴν ἐκπλήρωσιν τοῦ ἐνιαυσίου χρόνου παρέδοσαν. ἀλλ' ἠ-
γνοεῖτο τέως ὁ ἐνιαυτὸς παρὰ τοῖς ἕλλησιν, ὡς καὶ ἄλλα πλείω. ἕως οἱ νεώτεροι ἀστρολόγοι παρέλαβον
παρὰ τῶν μεθερμηνευσάντων εἰς τὸ ἑλληνικὸν τὰ τῶν ἱερέων ὑπομνήματα. καὶ ἔτι νῦν παραλαμβά-
νουσι τὰ ἀπ' ἐκείνων, ὁμοίως καὶ τὰ τῶν χαλδαίων. ἐντεῦθεν δὴ ὁ νεῖλός ἐστιν ὁ ὑπὲρ τοῦ δέλτα. τούτου
δὲ τὰ μὲν δεξιὰ καλοῦσι λιβύην, ἀναπλέοντι. ὥσπερ καὶ τὰ περὶ τὴν ἀλεξάνδρειαν καὶ τὴν μάρεω-
τιν. τὰ δ' ἐν ἀριστερᾷ ἀραβίαν. ἡ μὲν οὖν ἡλιοπολῖτις ἐν τῇ ἀραβίᾳ ἐστίν. ἐν δὲ τῇ λιβύῃ κερκέσουρα
πόλις κατὰ τὰς εὐδόξου κειμένη σκοπάς. δείκνυται γὰρ σκοπή τις πρὸ τῆς ἡλίου πόλεως καθάπερ
καὶ πρὸ τῆς κνίδου. καθ' ἣν ἐσημειοῦτο ἐκεῖνος τῶν οὐρανίων τινὰς κινήσεις. ὁ δὲ νομὸς λιτοπολίτης οὗτος.
ἀναπλεύσαντι δ' ἐστὶ βαβυλὼν φρούριον ἐρυμνόν. ἀποστάντων ἐνταῦθα βαβυλωνίων τινῶν. εἶτα δια-
πραξαμένων ἐνταῦθα κατοικίαν παρὰ τῶν βασιλέων. νυνὶ δ' ἐστὶ στρατόπεδον ἑνὸς τῶν τριῶν ταγμά-

των τῶν φρουρούντων τὴν αἴγυπτον. ῥάχις δ' ἐστὶν ἀπὸ τοῦ στρατοπέδου καὶ μέχρι νείλου καθήκουσα. δι' ἧς
ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τροχοὶ καὶ κοχλίαι τὸ ὕδωρ ἀνάγουσιν. ἀνδρῶν ἑκατὸν πεντήκοντα ἐργαζομένων, δε-
σμίων. ἀφορῶνται δ' ἐνθάδε τηλαυγῶς αἱ πυραμίδες ἐν τῇ περαίᾳ ἐν μέμφει. καὶ εἰσὶ πλησίον. ἐγγὺς
δὲ καὶ ἡ μέμφις αὐτὴ τὸ βασίλειον τῶν αἰγυπτίων. ἔστι γὰρ ἀπὸ τοῦ δέλτα τρίσχοινον εἰς αὐτήν. ἔχει δὲ ἱε-
ρά τό, τε τοῦ ἄπιδος, ὅς ἐστιν ὁ αὐτὸς καὶ ὄσιρις. ὅπου ὁ βοῦς ὁ ἄπις ἐν σηκῷ τινι τρέφεται, θεὸς ὡς ἔφην νομι-
ζόμενος. διάλευκος τὸ μέτωπον καὶ ἄλλα τινὰ μικρὰ τοῦ σώματος. τὰ δ' ἄλλα μέλας. οἷς σημείοις ἀεὶ
κρίνουσι τὸν ἐπιτήδειον εἰς τὴν διαδοχὴν, ἀπογενομένου τοῦ τὴν τιμὴν ἔχοντος. ἔστι δ' αὐλὴ προκειμένη τοῦ
σηκοῦ. ἐν ᾧ καὶ ἄλλος σηκὸς τῆς μητρὸς τοῦ βοός. εἰς ταύτην δὲ τὴν αὐλὴν ἐξαφιᾶσι τὸν ἄπιν καθ' ὥραν
τινὰ, καὶ μάλιστα πρὸς ἐπίδειξιν τοῖς ξένοις. ὁρῶσι μὲν γὰρ καὶ διὰ θυρίδος ἐν τῷ σηκῷ. βούλονται
δὲ καὶ ἔξω. ἀποσκιρτήσαντα δ' ἐν αὐτῇ μικρὰ, ἀναλαμβάνουσι πάλιν εἰς τὴν οἰκείαν στάσιν. τό τε δὴ τοῦ
ἄπιδός ἐστιν ἱερὸν παρακείμενον τῷ ἡφαιστείῳ, καὶ αὐτὸ τὸ ἡφαίστειον πολυτελῶς κατεσκευασμένον, ναοῦ
τε μεγέθει, καὶ τοῖς ἄλλοις. πρόκειται δ' ἐν τῷ δρόμῳ τούτῳ ταύρων ἀγῶνας συντελεῖσθαι πρὸς
ἀλλήλους οὓς ἐπίτηδες τρέφουσί τινες ὥσπερ οἱ ἱπποτρόφοι. συμβάλλουσι γὰρ εἰς μάχην ἀφέντες. ὁ
δὲ κρείττων νομισθεὶς, ἄθλου τυγχάνει. ἔστι δ' ἐν μέμφει καὶ ἀφροδίτης ἱερὸν, θεᾶς ἑλληνίδος νομιζομέ-
νης. τινὲς δὲ σελήνης ἱερὸν εἶναι φασίν. ἔστι δὲ καὶ σεράπιον ἐν ἀμμώδει τόπῳ σφόδρα. ὥσθ' ὑπ' ἀνέμων
θῖνας ἄμμων σωρεύεσθαι. ἀφ' ὧν αἱ σφίγγες. αἱ μὲν, καὶ μέχρι τῆς κεφαλῆς ἑωρῶντο ὑφ' ἡμῶν κατα-
κεχωσμέναι. αἱ δ' ἡμιφανεῖς. ἐξ ὧν εἰκάζειν παρῆν τὸν κίνδυνον, εἰ βαδίζοντι πρὸς τὸ ἱερὸν λαῖλαψ ἐμ-
πίπτοι. πόλις δ' ἐστὶ μεγάλη τε καὶ εὔανδρος. δευτέρα μετὰ ἀλεξάνδρειαν μιγάδων ἀνδρῶν, καθάπερ
καὶ τῶν ἐκεῖ συνῳκισμένων. πρόκεινται δὲ καὶ λίμναι τῆς πόλεως καὶ τῶν βασιλείων. ἃ νῦν μὲν κατέσπασται.
καὶ ἔστιν ἔρημα. ἵδρυται δ' ἐφ' ὕψους καθήκοντα μέχρι τοῦ κάτω τῆς πόλεως ἐδάφους. συνάπτει δ' ἄλσος αὐτῷ
καὶ λίμνη. τετταράκοντα δ' ἀπὸ τῆς πόλεως σταδίους προελθόντι, ὀρεινή τις ὀφρύς ἐστιν. ἐφ' ᾗ πολλαὶ μὲν πυ-
ραμίδες εἰσὶ τάφοι τῶν βασιλέων. τρεῖς δ' ἀξιόλογοι. τὰς δὲ δύο τούτων καὶ ἐν τοῖς ἑπτὰ θεάμασι κατα-
ριθμοῦνται. εἰσὶ γὰρ σταδιαῖαι τὸ ὕψος. τετράγωνοι τῷ σχήματι. τῆς πλευρᾶς ἑκάστης μικρῷ μεῖζον τὸ
ὕψος ἔχουσαι. μικρῷ δὲ καὶ ἡ ἑτέρα τῆς ἑτέρας ἐστὶ μείζων. ἔχει δ' ἐν ὕψει μέσως πως τῶν πλευρῶν λί-
θον ἐξαιρέσιμον. ἀρθέντος δὲ σύριγξ ἐστὶ σκολιὰ μέχρι τῆς θήκης. αὗται μὲν οὖν ἐγγὺς ἀλλήλων εἰσὶ
τῷ αὐτῷ ἐπιπέδῳ. ἀπωτέρω δ' ἐστὶν ἐν ὕψει μείζονι τῆς ὀρεινῆς ἡ τρίτη πολὺ ἐλάττων τοῖν δυοῖν. πολὺ
δὲ μείζονος δαπάνης κατασκευασμένη. ἀπὸ γὰρ θεμελίων μέχρι μέσου σχεδόν τι, μέλανος λίθου ἐστίν.
ἐξ οὗ καὶ τὰς θυΐας κατασκευάζουσι κομίζοντες πόρρωθεν. ἀπὸ τῶν γὰρ τῆς αἰθιοπίας ὀρῶν καὶ τῷ
σκληρὸς εἶναι καὶ δυσκατέργαστος, πολυτελῆ τὴν πραγματείαν παρέσχε. λέγεται δὲ τῆς ἑταίρας
τάφος γεγονὼς ὑπὸ τῶν ἐραστῶν. ἣν σαπφὼ μὲν ἡ τῶν μελῶν ποιήτρια, καλεῖ δωρίχαν ἐρωμένην τοῦ
ἀδελφοῦ αὐτῆς χαράξου γεγονυῖαν. οἶνον κατάγοντος εἰς ναύκρατιν λέσβιον κατ' ἐμπορείαν. ἄλλοι δ' ὀνο-
μάζουσι ῥοδώπην μυθεύουσι δ' ὅτι λουομένης αὐτῆς, ἓν τῶν ὑποδημάτων αὐτῆς ἁρπάσας ἀετὸς παρὰ
τῆς θεραπαίνης κομίσειεν εἰς μέμφιν. καὶ τοῦ βασιλέως δικαιοδοτοῦντος, ὑπαίθριος γενόμενος, κα-
τὰ κορυφὴν αὐτοῦ ῥίψειε τὸ ὑπόδημα εἰς τὸν κόλπον. ὁ δὲ, καὶ τῷ ῥυθμῷ τοῦ ὑποδήματος, καὶ τῷ παρα-
δόξῳ κινηθεὶς, περιπέμψειεν εἰς τὴν χώραν κατὰ ζήτησιν τῆς φορούσης ἀνθρώπου. ἐν τῇ πόλει δὲ εὑρε-
θεῖσα τῶν ναυκρατικῶν, ἀναχθείη καὶ γένοιτο γυνὴ τοῦ βασιλέως τελευτήσασα δὲ τοῦ λεχθέντος τύχοι
τάφου. ἓν δέ τι τῶν ὁραθέντων ὑφ' ἡμῶν ἐν ταῖς πυραμίσι παραδόξων οὐκ ἄξιον παραλιπεῖν. ἐκ γὰρ
τῆς λατύπης σωροί τινες πρὸ τῶν πυραμίδων κεῖνται. ἐν τούτοις δ' εὑρίσκεται ψήγματα καὶ τύπῳ
καὶ μεγέθει φακοειδῆ. ἐνίοις δὲ καὶ ὡς ἂν πτίσμα οἷον ἡμιλέπιστον ὑποτρέχει. φασὶ δ' ἀπολιθωθῆναι λεί-
ψανα τῆς τῶν ἐργαζομένων τροφῆς. οὐκ ἀπέοικε δέ. καὶ γὰρ οἴκοι παρ' ἡμῖν, λόφος τίς ἐστιν ἐν πεδίῳ πα-
ραμήκης. οὗτος δ' ἐστὶ μεστὸς ψήφου φακοειδῶν λίθου πορείας. καὶ αἱ θαλάττιαι δὲ καὶ αἱ ποτάμιαι
ψῆφοι, σχεδόν τι τὴν αὐτὴν ἀπορίαν ὑπογράφουσιν. ἀλλ' αὗται μὲν ἐν τῇ κινήσει τῇ διὰ τοῦ ῥεύματος
εὑρεσιλογίαν τινὰ ἔχουσιν. ἐκεῖ δ' ἀπορωτέρα ἡ σκέψις. εἴρηται δ' ἐν ἄλλοις καὶ διότι περὶ τὸ μέταλλον
τῶν λίθων, ἐξ ὧν αἱ πυραμίδες γεγόνασιν ἐν ὄψει ταῖς πυραμίσιν ὂν πέραν ἐν τῇ ἀραβίᾳ. τρωικόν τι
καλεῖται πετρῶδες ἱκανῶς ὄρος καὶ σπήλαια ὑπ' αὐτῷ. καὶ κώμη πλησίον καὶ τούτοις καὶ τῷ ποτα-
μῷ τροία καλουμένη, κατοικία παλαιὰ τῶν μενελάῳ συγκατακολουθησάντων αἰχμαλώτων τρώων.
καταμεινάντων δ' αὐτόθι. μετὰ δὲ μέμφιν ἄκανθος πόλις ὁμοίως, ὡς ἐν τῇ λιβύῃ καὶ τὸ τοῦ ὀσίριδος
ἱερόν. καὶ τὸ τῆς ἀκάνθης ἄλσος τῆς θηβαϊκῆς, ἐξ ἧς τὸ κόμμι. εἶθ' ὁ ἀφροδιτοπολίτης νομός. καὶ ἡ ὁ-
μώνυμος πόλις ἐν τῇ ἀραβίᾳ. ἐν ᾗ λευκὴ βοῦς ἱερὰ τρέφεται. εἶθ' ὁ ἡρακλεώτης νομὸς ἐν νήσῳ μεγά-
λῃ. καθ' ἣν ἡ διῶρυξ ἐστὶν ἐν δεξιᾷ εἰς τὴν λιβύην ἐπὶ τὴν ἀρσινοΐτην νομόν. ὥστε καὶ δίστομον εἶναι
τὴν διώρυγα. μεταξὺ μέρους τινὸς τῆς νήσου παρεμπίπτοντος. ἔστι δ' ὁ νομὸς οὗτος ἀξιολογώτατος τῶν
ἁπάντων κατά τε τὴν ὄψιν καὶ τὴν ἀρετὴν καὶ τὴν κατασκευήν. ἐλαιόφυτός τε γὰρ μόνος ἐστὶ μεγά-
λοις καὶ τελείοις δένδρεσι καὶ καλλικάρποις. εἰ δὲ συγκομίζοι καλῶς τις, καὶ εὔελαιος. ὀλιγωροῦντες
δὲ τούτου, πολὺ μὲν ποιοῦσιν ἔλαιον. μοχθηρὸν δὲ κατὰ τὴν ὀσμήν. ἡ δ' ἄλλη αἴγυπτος ἀνέλαιός ἐστι πλὴν

τῶν κατ' Ἀλεξάνδρειαν κήπων· οἱ μέχρι τοῦ ἐλαίου χορηγεῖν ἱκανοί εἰσιν· ἔλαιον δ' οὐχ ὑπουργοῦσιν· οἶνον
δὲ οὐκ ὀλίγον ἐκφέρει· σῖτόν τε καὶ ὄσπρια καὶ τἆλλα σπέρματα πάμπολλα. θαυμαστὴν δὲ καὶ τὴν λί-
μνην ἔχει τὴν Μοίριδος καλουμένην· πελαγίαν τῷ μεγέθει καὶ τῇ χρόᾳ θαλαττοειδῆ· καὶ τοὺς αἰγιαλοὺς
δ' ἐστὶν ὁρᾶν ἐοικότας τοῖς θαλαττίοις· ὡς ὑπονοεῖν τὰ αὐτὰ περὶ τῶν κατὰ Ἄμμωνα τόπων καὶ τούτων·
καὶ γὰρ οὐδὲ πάμπολυ ἀφεστᾶσιν ἀλλήλων καὶ τοῦ Παραιτονίου. μὴ ὥσπερ τὸ ἱερὸν ἐκεῖνο εἰκάζειν
ἐστὶ πρότερον ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἱδρῦσθαι διὰ τὸ πλῆθος τῶν τεκμηρίων· καὶ ταῦθ' ὁμοίως τὰ χωρία
πρότερον ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ὑπάρχειν· ἡ δὲ κάτω Αἴγυπτος καὶ τὰ μέχρι τῆς λίμνης τῆς Σερβωνίδος,
πέλαγος ἦν σύρρουν τυχὸν ἴσως τῇ Ἐρυθρᾷ τῇ κατὰ Ἡρώων πόλει καὶ τὸν Ἐλανίτην μυχόν. εἴρηται δὲ
περὶ τούτων διὰ πλειόνων ἐν τῷ πρώτῳ ὑπομνήματι τῆς γεωγραφίας· καὶ νῦν δ' ἐπὶ τοσοῦτον ὑπο-
μνηστέον, τῆς φύσεως ἅμα καὶ τὸ τῆς προνοίας ἔργον εἰς ἓν συμφέροντας· τὸ μὲν τῆς φύσεως ὅτι τῶν
πάντων εἰς ἓν συννευόντων τὸ τοῦ ὅλου μέσον· καὶ σφαιρουμένων περὶ τοῦτο. καὶ τὸ μὲν πυκνότα-
τον καὶ μεσαίτατόν ἐστι τῇ γῇ· τὸ δ' ἧττον τοιοῦτον· καὶ ἐφεξῆς τὸ ὕδωρ, ἑκάτερον δὲ σφαῖρα. ἡ μὲν, στερεά,
ἡ δὲ, κοίλη. ἐντὸς ἔχουσα τὴν γῆν. τὸ δὲ τῆς προνοίας ὅτι βεβούληται καὶ αὐτὴ ποικιλτρία τις οὖ-
σα, καὶ μυρίων ἔργων δημιουργὸς, ἐν τοῖς πρώτοις ζῷα γεννᾶν, ὡς πολὺ διαφέροντα τῶν ἄλλων· καὶ
τούτων τὰ κράτιστα θεούς τε καὶ ἀνθρώπους, ὧν ἕνεκεν καὶ τὰ ἄλλα συνέστηκε. τοῖς μὲν οὖν θεοῖς ἀ-
πέδειξε τὸν οὐρανόν. τοῖς δ' ἀνθρώποις τὴν γῆν, τὰ ἄκρα τῶν τοῦ κόσμου μερῶν. ἄκρα δὲ τῆς σφαίρας
τὸ μέσον, καὶ τὸ ἐξωτάτω. ἀλλ' ἐπειδὴ τῇ γῇ περίκειται τὸ ὕδωρ, οὐκ ἔστι δ' ἔνυδρον ζῷον ὁ ἄνθρωπος,
ἀλλὰ χερσαῖον καὶ ἐναέριον, καὶ πολλοῦ κοινωνικὸν φωτὸς ἐποίησεν ἐξοχὰς ἐν τῇ γῇ πολλὰς καὶ εἰσο-
χὰς ὥστ' ἐν αἷς μὲν ἀπολαμβάνεσθαι τὸ σύμπαν, ἢ καὶ τὸ πλέον ὕδωρ ἀποκρύπτον τὴν ὑπ' αὐτῷ γῆν.
ἐν αἷς δ' ἐξέχειν τὴν γῆν ἀποκρύπτουσαν ὑφ' ἑαυτῇ τὸ ὕδωρ. πλὴν ὅσον χρήσιμον τῷ ἀνθρωπείῳ γένει, καὶ
τοῖς περὶ αὐτὸ ζῴοις καὶ φυτοῖς. ἐπεὶ δ' ἐν κινήσει συνεχεῖ τὰ σύμπαντα, καὶ μεταβολαῖς μεγάλαις,
οὐ γὰρ οἷόν τε ἄλλως τὰ τοιαῦτα καὶ τοσαῦτα καὶ τηλικαῦτα ἐν τῷ κόσμῳ διοικεῖσθαι, ὑπολη-
πτέον μήτε τὴν γῆν ἀεὶ συμμένειν οὕτως, ὥστ' ἀεὶ τηλικαύτην οὖσαν μηδὲν προστιθεῖσαν ἑαυτῇ μηδ'
ἀφαιροῦσαν, μήτε τὸ ὕδωρ· μήτε τὴν ἕδραν ἔχειν τὴν αὐτὴν ἑκάτερον. καὶ ταῦτα εἰς ἄλληλα, φυ-
σικωτάτης οὔσης καὶ ἐγγυτάτω τῆς μεταπτώσεως. ἀλλὰ καὶ τῆς γῆς πολλὴν εἰς ὕδωρ μεταβάλλειν·
καὶ τῶν ὑδάτων πολλὰ χερσοῦσθαι τὸν αὐτὸν τρόπον, ὅνπερ καὶ ἐν τῇ γῇ. καθ' ἑαυτὴν τοσαῦται δια-
φοραί. ἡ μὲν, γὰρ εὔθρυπτος. ἡ δὲ, στερεὰ καὶ πετρώδης. καὶ σιδηρῖτις. καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων. ὁμοίως
δὲ καὶ ἐπὶ τῆς ἁλμυρᾶς οὐσίας. ἡ μὲν, γὰρ ἁλμυρίς. ἡ δὲ, γλυκεῖα καὶ πότιμος. ἡ δὲ, φαρμακώδης καὶ
σωτήριος. καὶ ὀλέθριος. καὶ ψυχρὰ, καὶ θερμή. τί οὖν θαυμαστὸν, εἴ τινα μέρη τῆς γῆς ἃ νῦν οἰκεῖται,
θαλάττῃ πρότερον κατείχετο. τὰ δὲ νῦν πελάγη πρότερον ᾠκεῖτο. καθάπερ καὶ πηγὰς τὰς πρότε-
ρον ἐκλιπεῖν συνέβη. τὰς δ' ἀνεῖσθαι, καὶ ποταμοὺς καὶ λίμνας. οὕτω δὲ καὶ ὄρη, καὶ πεδία εἰς ἄλ-
ληλα μεταπίπτειν. περὶ ὧν καὶ πρότερον εἴρηται μὲν πολλὰ καὶ νῦν εἰρήσθω. ἡ δ' οὖν Μοίριδος λίμνη
διὰ τὸ μέγεθος, καὶ τὸ βάθος ἱκανή ἐστι, κατά τε τὰς ἀναβάσεις τὴν πλημμυρίδα φέρειν, καὶ μὴ ὑπερ-
πολάζειν εἰς τὰ οἰκούμενα, καὶ πεφυτευμένα. εἶτα ἐν τῇ ἀποβάσει τὸ πλεονάζον ἀποδοῦσα τῇ αὐτῇ
διώρυγι κατὰ θάτερον τῶν στομάτων, ἔχειν ὑπολειπόμενον τὸ χρήσιμον πρὸς τὰς ἐποχετείας, καὶ αὐ-
τὴ ἡ διῶρυξ. ταῦτα μὲν φυσικά. ἐπίκειται δὲ τοῖς στόμασιν ἀμφοτέροις τῆς διώρυγος κλεῖθρα. οἷς
ταμιεύουσιν οἱ ἀρχιτέκτονες τό, τε εἰσρέον ὕδωρ καὶ τὸ ἐκρέον. πρὸς δὲ τούτοις ἡ τοῦ λαβυρίνθου κα-
τασκευὴ, πάρισον ταῖς πυραμίσιν ἐστὶν ἔργον. καὶ ὁ παρακείμενος τάφος τοῦ κατασκευάσαντος βασι-
λέως τὸν λαβύρινθον. ἔστι δὲ τῷ κατὰ τὸν πρῶτον εἴσπλουν τὸν εἰς τὴν διώρυγα προελθόντι, ὅσον τριά-
κοντα ἢ τετταράκοντα σταδίους ἐπίπεδόν τι τραπεζῶδες χωρίον. ἔχον κώμην τε καὶ βασίλειον μέγα
ἐκ πολλῶν βασιλείων, ὅσοι πρότερον ἦσαν νομοί. τοσαῦται γάρ εἰσιν αὐλαὶ περίστυλοι συνεχεῖς ἀλ-
λήλαις. ἐφ' ἕνα στίχον πᾶσαι καὶ ἐφ' ἑνὸς τοίχου. ὡς ἂν τείχους μακροῦ προκειμένας ἔχοντος τὰς αὐ-
λάς. αἱ δ' εἰς αὐτὰς ὁδοὶ καταντικρὺ τοῦ τείχους εἰσί. πρόκεινται δὲ τῶν εἰσόδων κρυπταί τινες μα-
κραὶ καὶ πολλαί. δι' ἀλλήλων ἔχουσαι σκολιὰς τὰς ὁδούς. ὥστε χωρὶς ἡγεμόνος, μηδενὶ τῶν ξένων εἶ-
ναι δυνατὴν τὴν εἰς ἑκάστην αὐλὴν πάροδόν τε καὶ ἔξοδον. τὸ δὲ θαυμαστὸν, ὅτι αἱ στέγαι τῶν οἴκων ἑκά-
στου μονολίθῳ. καὶ τῶν κρυπτῶν τὰ πλάτη μονολίθοις ὡσαύτως ἐστέγασται πλαξίν, ὑπερβαλλού-
σαις τὸ μέγεθος. ξύλων οὐδαμοῦ καταμεμιγμένων, οὐδ' ἄλλης οὐδεμιᾶς. ἀναβάντα τε ἐπὶ τὸ στέ-
γος, οὐ μεγάλῳ ὕψει, ἅτε μονοστέγῳ ἔστιν ἰδεῖν πεδίον λίθινον ἐκ τηλικούτων λίθων. ἐντεῦθεν δὲ πά-
λιν εἰς τὰς αὐλὰς ἐκπίπτοντα, ἑξῆς ὁρᾶν κειμένας ὑπὸ μονολίθων κιόνων ὑπηρεισμένας ἑπτὰ καὶ εἴκοσι.
καὶ οἱ τοῖχοι δὲ οὐκ ἐξ ἐλαττόνων τὸ μέγεθος λίθων σύγκεινται. ἐπὶ τέλει δὲ τῆς οἰκοδομίας ταύτης πλέον
ἢ στάδιον ἀπεχούσης, ὁ τάφος ἐστὶ πυραμὶς τετράγωνος. ἑκάστην τετράπλεθρόν πως ἔχουσα τὴν πλευρὰν
καὶ τὸ ὕψος ἴσον. Ἰμάνδης δ' ὄνομα ὁ ταφείς. πεποιῆσθαι δέ φασι τὰς αὐλὰς τοσαύτας, ὅτι τοὺς νομοὺς
ἔθος ἦν ἐκεῖσε συνέρχεσθαι πάντας ἀριστίνδην μετὰ τῶν οἰκείων ἱερῶν καὶ ἱερέων θυσίας τε καὶ θεοδοσίας
καὶ δικαιοδοσίας τῶν μεγίστων χάριν. κατήγετο δὲ τῶν νομῶν ἕκαστος εἰς τὴν ἀποδειχθεῖσαν αὐλὴν αὐτῷ.

παραπλεύσαντι δὲ ταῦτα ἐφ' ἑκατὸν σταδίους, πόλις ἐστὶν ἀρσινόη. κροκοδείλων δὲ πόλις ἐκαλεῖτο πρό-
τερον. σφόδρα γὰρ ἐν τῷ νομῷ τούτῳ τιμῶσι τὸν κροκόδειλον. καὶ ἔστιν ἱερὸς παρ' αὐτοῖς ἐν λίμνῃ
καθ' αὑτὸν τρεφόμενος. χειροήθης τοῖς ἱερεῦσι. καλεῖται δὲ σοῦχος. τρέφεται δὲ σιτίοις, καὶ κρέασι.
καὶ οἴνῳ προσφερόντων ἀεὶ τῶν ξένων, τῶν ἐπὶ τὴν θέαν ἀφικνουμένων. ὁ γοῦν ἡμέτερος ξένος ἀνὴρ
τῶν ἐντίμων, αὐτόθι μυσταγωγῶν ἡμᾶς, συνῆλθεν ἐπὶ τὴν λίμνην. κομίζων ἀπὸ τοῦ δείπνου πλα-
κουντάριόν τι καὶ κρέας ὀπτόν. καὶ προχοΐδιόν τι μελικράτου. εὕρομεν δὲ ἐπὶ τῷ χείλει κείμενον τὸ
θηρίον, προσιόντες δὲ, οἱ ἱερεῖς, οἱ μὲν, διέστειλαν αὐτοῦ τὸ στόμα, ὁ δὲ ἐπέθηκε τὸ πέμμα. καὶ πάλιν
τὸ κρέας. εἶτα τὸ μελίκρατον κατήρασε. καθαλόμενος δὲ εἰς τὴν λίμνην, διῆξεν εἰς τὸ πέραν. ἐπελ-
θόντος δὲ καὶ ἄλλου τῶν ξένων, κομίζοντος ὁμοίως ἀπαρχὴν, λαβόντες περιῆλθον δρόμῳ, καὶ κατα-
λαβόντες προσήνεγκαν, ὁμοίως τὰ προσενεχθέντα. μετὰ δὲ τὸν ἀρσινοΐτην, καὶ τὸν ἡρακλεωτικὸν
νομόν. ἡρακλέους πόλις. ἐν ᾗ ὁ ἰχνεύμων τιμᾶται ὑπεναντίως τοῖς ἀρσινοΐταις. οἱ μὲν, γὰρ τοὺς κρο-
κοδείλους τιμῶσι, καὶ διὰ τοῦτο ἡ διῶρυξ αὐτῶν μεστή ἐστι τῶν κροκοδείλων. καὶ ἡ τοῦ μοίριδος λίμνη.
σέβονται γὰρ καὶ ἀπέχονται αὐτῶν ἢ τοὺς ἰχνεύμονας τοὺς ὀλεθριωτάτους τοῖς κροκοδείλοις. καθά-
περ καὶ ταῖς ἀσπίσι. καὶ γὰρ τὰ ὠὰ διαφθείρουσιν αὐτῶν, καὶ αὐτὰ τὰ θηρία τῷ πηλῷ θωρακισθέν-
τα. κυλισθέντα γὰρ αὐτῷ, ξηραίνονται πρὸς τὸν ἥλιον. εἶτα τὰς ἀσπίδας μὲν ἢ τῆς κεφαλῆς ἢ τῆς οὐ-
ρᾶς λαβόμενοι, κατασπῶσιν εἰς τὸν ποταμὸν, καὶ διαφθείρουσι. τοὺς δὲ κροκοδείλους ἐνεδρεύσαντες
ἡνίκ' ἂν ἡλιάζωνται κεχηνότες, ἐμπίπτουσιν εἰς τὰ χάσματα. καὶ διαφαγόντες τὰ σπλάγχνα, καὶ
τὰς γαστέρας ἐκδύουσιν ἐκ νεκρῶν τῶν σωμάτων. ἑξῆς δ' ἐστὶν ὁ κυνοπολίτης νομὸς, καὶ κυνῶν πό-
λις ἐν ᾗ ὁ ἄνουβις τιμᾶται. καὶ τοῖς κυσὶ τιμὴ, καὶ σίτισις τέτακταί τις ἱερά. ἐν δὲ τῇ περαίᾳ ὀξύ-
ρυγχος πόλις, καὶ νομὸς ὁμώνυμος. τιμῶσι δὲ τὸν ὀξύρυγχον. καὶ ἔστιν αὐτοῖς ἱερὸν ὀξυρύγχου. καί-
τοι καὶ τῶν ἄλλων αἰγυπτίων κοινῇ τιμώντων τὸν ὀξύρυγχον. τινὰ μὲν γὰρ τῶν ζώων ἅπαντες κοινῇ τι-
μῶσιν αἰγύπτιοι. καθάπερ τῶν πεζῶν μὲν τρία. βοῦν. κύνα. αἴλουρον. τῶν δὲ πτηνῶν δύο. ἱέρακα. καὶ ἶβιν, τῶν
δ' ἐνύδρων δύο, λεπιδωτὸν ἰχθὺν, ὀξύρυγχον. ἄλλα δ' ἐστὶν ἃ τιμῶσι καθ' ἑαυτοὺς, ἕκαστοι καθάπερ σαΐται
πρόβατον, καὶ θηβαῖται. λάτον δὲ τὸν ἐν τῷ νείλῳ τινὰ ἰχθὺν, λατοπολῖται. λύκον τε λυκοπολῖται. κυνο-
κέφαλον δὲ ἑρμοπολῖται. κῆπον δὲ βαβυλώνιοι οἱ κατὰ μέμφιν. ἔστι δ' ὁ κῆπος τὸ μὲν πρόσωπον ἐοικὼς
σατύρῳ. τ' ἄλλα δὲ κυνὸς, καὶ ἄρκτου μεταξύ. γεννᾶται δ' ἐν αἰθιοπίᾳ. ἀετὸν δὲ θηβαῖοι. λέοντα δὲ
λεοντοπολῖται. αἶγα δὲ καὶ τράγον μενδήσιοι. μυγαλῆν δὲ ἀθριβῖται. ἄλλοι δ' ἄλλο τι. τὰς δ' αἰ-
τίας οὐχ ὁμολογουμένας λέγουσιν. ἑξῆς δ' ἐστὶν ἑρμοπολιτικὴ φυλακή. τελώνιόν τι τῶν ἐκ τῆς θη-
βαΐδος καταφερομένων. ἐντεῦθεν ἀρχὴ τῶν ἑξήκοντα σταδίων σχοίνων. ἕως συήνης, καὶ ἐλεφαντί-
νης. εἶτα ἡ θηβαϊκὴ φυλακή. καὶ διῶρυξ φέρουσα ἐπὶ τάνιν. εἶτα λύκων πόλις, καὶ ἀφροδίτης,
καὶ πανῶν πόλις. λινουργῶν, καὶ λιθουργῶν κατοικία παλαιά. ἔπειτα πτολεμαϊκὴ πόλις, μεγίστη
τῶν ἐν τῇ θηβαΐδι. καὶ οὐκ ἐλάττων μέμφεως. ἔχουσα καὶ σύστημα πολιτικὸν ἐν τῷ ἑλληνικῷ τρόπῳ.
ὑπὲρ δὲ ταύτης ἡ ἄβυδος, ἐν ᾗ τὸ μεμνόνειον βασίλειον θαυμαστῶς κατεσκευασμένον. ὁλόλιθον τῇ αὐ-
τῇ κατασκευῇ ἧπερ τὸν λαβύρινθον ἔφαμεν. οὐ πολλαπλοῦν δὲ. καὶ κρήνην ἐν βάθει κειμένην, ὥστε
καταβαίνειν εἰς αὐτὴν, κατακαμφθεισῶν ψαλίδων διὰ μονολίθων ὑπερβαλλόντων τῷ μεγέθει, καὶ
τῇ κατασκευῇ. ἔστι δὲ διῶρυξ ἡ ἄγουσα ἐπὶ τὸν τόπον ἀπὸ τοῦ μεγάλου ποταμοῦ. περὶ δὲ τὴν διώρυγα
ἀκανθῶν τῶν αἰγυπτίων ἄλσος ἐστὶν ἱερὸν τοῦ ἀπόλλωνος. ἔοικε δὲ ὑπάρξαι ποτὲ ἡ ἄβυδος πόλις μεγά-
λη. δευτέρα οὖσα μετὰ τὰς θήβας. νυνὶ δ' ἐστὶ κατοικία μικρά. εἰ δ' ὡς φασιν ὁ μέμνων ὑπὸ τῶν αἰ-
γυπτίων ἰσμάνδης λέγεται. καὶ ὁ λαβύρινθος μεμνόνειον ἂν εἴη καὶ τοῦ αὐτοῦ ἔργον καὶ τὰ ἐν ἀβύδῳ.
καὶ τὰ ἐν θήβαις. καὶ γὰρ ἐκεῖ λέγεταί τινα μεμνόνεια. κατὰ δὲ τὴν ἄβυδον ἐστὶν ἡ πρώτη αὔασις ἐκ
τῶν λεχθεισῶν τριῶν. ἐν τῇ λιβύῃ. διέχουσα ὁδὸν ἡμερῶν ἑπτὰ ἐν θεῖ δὲ δι' ἐρημίας. εὔυδρός τε κα-
τοικία καὶ εὔοινος, καὶ τοῖς ἄλλοις ἱκανή. δευτέρα δ' ἡ κατὰ τὴν μοίριδος λίμνην. τρίτη δὲ ἡ κατὰ τὸ
μαντεῖον τὸ ἐν ἄμμωνι. καὶ αὗται δὲ κατοικίαι εἰσὶν ἀξιόλογοι. πολλὰ δ' εἰρηκότες περὶ τοῦ ἄμμωνος το-
σοῦτον εἰπεῖν βουλόμεθα. ὅτι τοῖς ἀρχαίοις μᾶλλον ἦν ἐν τιμῇ, καὶ ἡ μαντικὴ καθόλου, καὶ τὰ χρηστή-
ρια. νυνὶ δ' ὀλιγωρία κατέχει πολλὴ τῶν ῥωμαίων ἀρκουμένων τοῖς σιβύλλης χρησμοῖς, καὶ τοῖς τυρ-
ρηνικοῖς θεοπροπίοις, διά τε σπλάγχνων, καὶ ὀρνιθείας, καὶ διοσημείων. διόπερ καὶ τὸ ἐν ἄμμωνι σχε-
δόν τι ἐκλέλειπται χρηστήριον. πρότερον ἐτετίμητο. δηλοῦσι δὲ μάλιστα τοῦτο οἱ τὰς ἀλεξάνδρου πρά-
ξεις ἀναγράψαντες. προστιθέντες μὲν πολὺ, καὶ τὸ τῆς κολακείας. εἶδος ἐμφαίνοντες δ' ὅτι καὶ πίστεως
ἄξιον. ὁ γοῦν καλλισθένης φησὶ τὸν ἀλέξανδρον φιλοδοξῆσαι μάλιστα. ἀνελθεῖν τε ἐπὶ τὸ χρηστήριον. ἐπεί
δὴ καὶ περσέα ἤκουσε πρότερον ἀναβῆναι καὶ ἡρακλέα. ὁρμήσαντα δ' ἐκ παραιτονίου καίπερ νότων ἐπι-
πεσόντων βιάσασθαι. πλανώμενον γ' ὑπὸ τοῦ κονιορτοῦ σωθῆναι γενομένων, ὄμβρων καὶ δυοῖν κοράκων ἡγη-
σαμένων τὴν ὁδὸν, ἤδη τούτων κολακευτικῶς λεγομένων. τοιαῦτα δὲ καὶ τὰ ἑξῆς. μόνῳ, γὰρ δὴ τῷ βασιλεῖ τὸν
ἱερέα ἐπιτρέψαι παρελθεῖν εἰς τὸν νεὼ μετὰ τῆς συνήθους στολῆς, τοὺς δ' ἄλλους μετενδῦναι τὴν ἐσθῆτα. ἔξω-
θέν τε τῆς θεμιστείας ἀκροάσασθαι πάντας, πλὴν ἀλεξάνδρου τοῦτον δ' ἔνδοθεν εἶναι. οὐχ ὥσπερ ἐν δελφοῖς καὶ

βραγχίδαις τὰς ἀποθεσπίσεις διὰ λόγων· αἰνίγμασι, συμβόλοις τὸ πλέον· ὡς καὶ παρ᾽ ὁμήρῳ·
Ἦ, καὶ κυανέῃσιν ἐπ᾽ ὀφρύσι νεῦσε κρονίων.

Τοῦ προφήτου τὸν δία ὑποκειμένου. τοῦτο μέντοι ῥητῶς εἰπεῖν τὸν ἄνθρωπον πρὸς τὸν βασιλέα, ὅτι εἴη διὸς υἱός. προσεπιτραγῳδῶν δὲ τούτοις ὁ καλλισθένης, ὅτι τοῦ ἀπόλλωνος τὸ ἐν βραγχίδαις μαντεῖον ἐκλελοιπότος, ἐξ ὅτου τὸ ἱερὸν ὑπὸ τῶν βραγχιδῶν σεσύλητο ἐπὶ ξέρξου περσισάντων, ἐκλελοιπυίας δὲ καὶ τῆς κρήνης τότε, ἥ τε κρήνη ἀνάσχοι, καὶ μαντεῖα πολλὰ οἱ μιλησίων πρέσβεις κομισθέντες εἰς μέμφιν περὶ τῆς ἐκ διὸς γενέσεως τοῦ ἀλεξάνδρου· καὶ τῆς ἐσομένης περὶ ἄρβηλα νίκης, καὶ τοῦ δαρείου θανάτου· καὶ τῶν ἐν λακεδαίμονι νεωτερισμῶν· περὶ δὲ τῆς εὐγενείας καὶ τὴν ἐρυθραίαν ἀθηναΐδα φησὶν ἀνειπεῖν. καὶ γὰρ ταύτην ὁμοίαν γενέσθαι τῇ παλαιᾷ σιβύλλῃ τῇ ἐρυθραίᾳ. τὰ μὲν δὴ τῶν συγγραφέων τοιαῦτα. ἐν δὲ τῇ ἀβύδῳ τιμῶσι τὸν ὄσιριν. ἐν δὲ τῷ ἱερῷ τοῦ ὀσίριδος οὐκ ἔξεστιν, οὔτε ᾠδὸν, οὔτε αὐλητὴν, οὔτε ψάλτην ἀπάρχεσθαι τῷ θεῷ· καθάπερ τοῖς ἄλλοις θεοῖς ἔθος. μετὰ δὲ τὴν ἄβυδον διόσπολις ἡ μικρά· εἶτα τέντυρα πόλις. ἐνταῦθα δὲ διαφερόντως παρὰ τοὺς ἄλλους αἰγυπτίους ὁ κροκόδειλος ἠτίμωται· καὶ ἔχθιστος τῶν ἁπάντων θηρίων νενόμισται. οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι καίπερ εἰδότες τὴν κακίαν τοῦ ζώου, καὶ ὡς ὀλέθριος τῷ ἀνθρωπίνῳ γένει, σέβονται ὅμως καὶ ἀπέχονται· οὗτοι δὲ πάντα τρόπον ἀνιχνεύουσι, καὶ διαφθείρουσιν αὐτούς. ἔνιοι δ᾽ ὥσπερ τοὺς ψύλλους τοὺς πρὸς τῇ κυρηναίᾳ, φυσικήν τινα ἀντιπάθειαν ἔχειν πρὸς τὰ ἑρπετὰ, οὕτως καὶ τοὺς τεντυρίτας πρὸς τοὺς κροκοδείλους· ὥστε μηδὲν ὑπ᾽ αὐτῶν πάσχειν. ἀλλὰ καὶ κολυμβᾶν ἀδεῶς, καὶ διαπεραῖν, μηδενὸς ἄλλου θαρροῦντος. εἴς τε τὴν ῥώμην κομισθεῖσι τοῖς κροκοδείλοις ἐπιδείξεως χάριν, συνηκολούθουν οἱ τεντυρῖται. γενομένης τε δεξαμενῆς καὶ τρήματός τινος ὑπὲρ μιᾶς τῶν πλευρῶν. ὥστε καὶ τοῖς θηρίοις ἔκβασιν τοῦ ὕδατος, ἡλιαστήριον εἶναι. ἐκεῖνοι ἦσαν οἱ τότε μὲν ἐξέλκοντες δικτύῳ πρὸς τὸ ἡλιαστήριον, ὥστε καὶ ὑπὸ τῶν θεατῶν ὁρᾶσθαι· ἐμβαίνοντες ἅμα εἰς τὸ ὕδωρ. τότε δὲ πάλιν εἰς τὴν δεξαμενὴν κατασπῶντες. τιμῶσι δὲ ἀφροδίτην. ὄπισθεν δὲ τοῦ νεὼ τῆς ἀφροδίτης. ἴσιδος ἐστὶν ἱερόν. εἶτα τυφώνεια καλούμενα· καὶ ἡ εἰς κοπτὸν διῶρυξ. πόλιν κοινὴν αἰγυπτίων τε καὶ ἀράβων. ἐντεῦθεν ἐστὶν ἰσθμὸς εἰς τὴν ἐρυθρὰν κατὰ πόλιν βερενίκην. ἀλίμενον μὲν, τῇ δ᾽ εὐκαιρίᾳ τοῦ ἰσθμοῦ καταγωγὰς ἐπιτηδείους ἔχουσαν. λέγεται δ᾽ ὁ φιλάδελφος πρῶτος στρατοπέδῳ τεμεῖν τὴν ὁδὸν ταύτην ἄνυδρον οὖσαν· καὶ κατασκευάσαι σταθμὸν ὥσπερ τοῖς ἐμπορίοις ὁδεύμασι, καὶ διὰ τῶν καμήλων. τοῦτο δὲ πράττειν διὰ τὸ τὴν ἐρυθρὰν δύσπλουν εἶναι· καὶ μάλιστα τοῖς ἐκ τοῦ μυχοῦ πλοϊζομένοις. ἐφάνη δὲ τῇ πείρᾳ πολὺ τὸ χρήσιμον. καὶ νῦν ὁ ἰνδικὸς φόρος ἅπας καὶ ὁ ἀράβιος. καὶ τοῦ αἰθιοπικοῦ ὁ τῷ ἀραβίῳ κόλπῳ κατακομιζόμενος εἰς κοπτὸν φέρεται· καὶ τοῦτ᾽ ἐστὶν ἐμπορεῖον τῶν τοιούτων φορτίων. οὐκ ἄπωθεν δὲ τῆς βερενίκης ἐστὶ μυὸς ὅρμος πόλις. ἔχουσα τὸν ναύσταθμον τῶν πλοϊζομένων καὶ τῆς κοπτοῦ. οὐ πολὺ ἀφέστηκεν ἡ καλουμένη ἀπόλλωνος πόλις. ὥστε καὶ αἱ διορίζουσαι τὸν ἰσθμὸν δύο πόλεις, ἑκατέρωθέν εἰσιν. ἀλλὰ νῦν ἡ κοπτὸς, καὶ ὁ μυὸς ὅρμος, εὐδοκιμεῖ· καὶ χρῶνται τοῖς τόποις τούτοις. πρότερον μὲν οὖν ἐνυκτοπόρουν πρὸς τὰ ἄστρα βλέποντες οἱ καμηλέμποροι· καὶ καθάπερ οἱ πλέοντες ὥδευον. κομίζοντες καὶ ὕδωρ. νυνὶ δὲ καὶ ὑδρεῖα κατεσκευάκασιν, ὀρύξαντες πολὺ βάθος· καὶ ἐκ τῶν οὐρανίων καίπερ ὄντων σπανίων, ὅμως δεξαμενὰς πεποίηνται. ἡ δ᾽ ὁδὸς ἐστὶν ἓξ, ἢ ἑπτὰ ἡμερῶν. ἐπὶ δὲ τῷ ἰσθμῷ τούτῳ, καὶ τὰ τῆς σμαράγδου μέταλλα ἐστί· καὶ ἄλλων λίθων πολυτελῶν. τῶν ἀράβων ὀρυττόντων βαθεῖς τινὰς ὑπονόμους. μετὰ δὲ τὴν ἀπόλλωνος πόλιν, αἱ θῆβαι· καλεῖται δὲ νῦν διὸς πόλις· αἵ θ᾽ ἑκατόμπυλοι εἰσί· διηκόσιοι δ᾽ ἀν᾽ ἑκάστην ἀνέρες ἐξοιχνεῦσι σὺν ἵπποισι, καὶ ὄχεσφιν. ὅμηρος μὲν οὕτω· λέγει δὲ καὶ τὸν πλοῦτον.
Οὐδ᾽ ὅσα θήβης αἰγυπτίας ὅθι πλεῖστα δόμοις ἐνὶ, κτήματα κεῖται.
Καὶ ἄλλοι δὲ τοιαῦτα λέγουσι· μητρόπολιν τιθέντες τῆς αἰγύπτου ταύτην. καὶ νῦν δείκνυται δ᾽ ἴχνη τοῦ μεγέθους αὐτῆς, ἐπὶ ὀγδοήκοντα σταδίους τὸ μῆκος. ἔστι δ᾽ ἱερὰ πλείω· καὶ τούτων δὲ τὰ πολλὰ ἠκρωτηρίασε καμβύσης. νυνὶ δὲ κωμηδὸν συνοικεῖται. μέρος δ᾽ ἐστὶν ἐν τῇ ἀραβίᾳ ἐν ἧπερ ἡ πόλις. μέρος δ᾽ ἐστὶ καὶ ἐν τῇ περαίᾳ ὅπου τὸ μεμνόνιον. ἐνταῦθα δὲ δυοῖν κολοσσῶν ὄντων μονολίθων ἀλλήλων πλησίον, ὁ μὲν, σώζεται. τοῦ δ᾽ ἑτέρου τὰ ἄνω μέρη τὰ ἀπὸ τῆς καθέδρας πέπτωκε σεισμοῦ γενηθέντος ὥς φασι. πεπίστευται δ᾽ ἔτι ἅπαξ καθ᾽ ἡμέραν ἑκάστην, ψόφος ὡς ἂν πληγῆς οὐ μεγάλης ἀποτελεῖται· ἀπὸ τοῦ μένοντος ἐν τῷ θρόνῳ, καὶ τῇ βάσει μέρους. κἀγὼ δὲ παρὼν ἐπὶ τῶν τόπων μετὰ γάλλου αἰλίου, καὶ τοῦ πλήθους τῶν συνόντων αὐτῷ φίλων τε καὶ στρατιωτῶν, περὶ ὥραν πρώτην ἤκουσα τοῦ ψόφου· εἴτε δὲ ἀπὸ τῆς βάσεως εἴτε ἀπὸ τοῦ κολοσσοῦ, εἴτ᾽ ἐπίτηδες τῶν κύκλῳ, καὶ περὶ τὴν βάσιν ἱδρυμένων τινὸς ποιήσαντος τὸν ψόφον, οὐκ ἔχω διϊσχυρίσασθαι. διὰ γὰρ τὸ ἄδηλον τῆς αἰτίας, πᾶν μᾶλλον ἐπέρχεται πιστεύειν, ἢ τὸ ἐκ τῶν λίθων οὕτω τεταγμένων ἐκπέμπεσθαι τὸν ἦχον, ὑπὲρ δὲ τοῦ μεμνονείου, θῆκαι βασιλέων ἐν σπηλαίοις λατομηταὶ περὶ τετταράκοντα· θαυμαστῶς κατεσκευασμέναι· θέας ἄξιαι. ἐν δὲ ταῖς θήκαις ἐπί τινων ὀβελίσκων ἀναγραφαὶ δηλοῦσι τὸν πλοῦτον τῶν τότε βασιλέων, καὶ τὴν ἐπικράτειαν. ὡς μέχρι σκυθῶν, καὶ βακτρίων, καὶ ἰν

δῶν, καὶ τῆς νῦν ἰωνίας διατείνασαν. καὶ φόρων πλῆθος. καὶ στρατιᾶς περὶ ἑκατὸν μυριάδας. λέ-
γονται δὲ, καὶ ἀστρονόμοι, καὶ φιλόσοφοι μάλιστα οἱ ἐνταῦθα ἱερεῖς. τούτων δ' ἐστὶ καὶ τὸ τὰς ἡμέ-
ρας μὴ κατὰ σελήνην ἄγειν, ἀλλὰ κατὰ ἥλιον τοῖς τριακονθημέροις δώδεκα μησὶν, ἐπαγόντων
πέντε ἡμέρας κατ' ἐνιαυτὸν ἕκαστον. εἰς δὲ τὴν ἐκπλήρωσιν τοῦ ὅλου ἐνιαυτοῦ, ἐπιτρέχοντος μορίου τι-
νὸς τῆς ἡμέρας. περίοδόν τινα συντιθέασιν ἐξ ὅλων ἡμερῶν, καὶ ὅλων ἐνιαυτῶν τοσούτων. ὅσα μό-
ρια τὰ ἐπιτρέχοντα συνελθόντα ποιεῖ ἡμέραν. ἀνατιθέασι δὲ τῷ ἑρμῇ πᾶσαν τὴν τοιαύτην σοφίαν.
τῷ δὲ διὶ ὃν μάλιστα τιμῶσιν, εὐειδεστάτη, καὶ γένους λαμπροτάτου παρθένος ἱερᾶται. ἃς καλοῦ-
σιν οἱ ἕλληνες παλλάδας. αὕτη δὲ καὶ παλλακεύει, καὶ σύνεστιν οἷς βούλεται μέχρις ἂν ἡ φυσικὴ
γένηται τοῦ σώματος κάθαρσις. μετὰ δὲ τὴν κάθαρσιν δίδοται πρὸς ἄνδρα, πρὶν δὲ δοθῆναι, πέν-
θος αὐτῆς ἄγεται μετὰ τὸν τῆς παλλακείας καιρόν. μετὰ δὲ θήβας ἑρμονθὶς πόλις. ἐν ᾗ ὅ τε ἀπόλ-
λων τιμᾶται, καὶ ὁ ζεύς. τρέφεται δὲ, καὶ ἐνταῦθα βοῦς. ἔπειτα κροκοδείλων πόλις τιμῶσα τὸ θη-
ρίον. εἶτα ἀφροδίτης πόλις καὶ μετὰ ταῦτα λατόπολις. τιμῶσα ἀθηνᾶν καὶ τὸν λάτον. εἶτα εἰλη-
θυίας πόλις καὶ ἱερόν. ἐν δὲ τῇ περαίᾳ ἱεράκων πόλις τὸν ἱέρακα τιμῶσα. εἶτ' ἀπόλλωνος πόλις, καὶ
αὕτη πολεμοῦσα τοῖς κροκοδείλοις. ἡ δὲ συήνη, καὶ ἡ ἐλεφαντίνη, ἡ μὲν ἐπὶ τῶν ὅρων τῆς αἰθιοπίας,
καὶ τῆς αἰγύπτου πόλις. ἡ δ' ἐν τῷ νείλῳ προκειμένη τῆς συήνης νῆσος ἐν ἡμισταδίῳ. καὶ ἐν ταύτῃ πόλις
ἔχουσα ἱερὸν κνούφιδος. καὶ νειλομέτριον σὺν μονολίθῳ κατεσκευασμένον ἐπὶ τῇ ὄχθῃ τοῦ νείλου
φρέαρ. ἐν ᾧ τὰς ἀναβάσεις τοῦ νείλου σημειοῦνται. τὰς μεγίστας τε καὶ ἐλαχίστας, καὶ τὰς μέσας.
συναναβαίνει γὰρ καὶ συνταπεινοῦται τῷ ποταμῷ τὸ ἐν τῷ φρέατι ὕδωρ. εἰσὶν οὖν ἐν τῷ τοίχῳ
τοῦ φρέατος παραχαραγαί. μέτρα τῶν τελείων καὶ τῶν ἄλλων ἀναβάσεων. ἐπισκοποῦντες οὖν ταύτας
ἐπισημαίνουσι τοῖς ἄλλοις ὅπως εἰδεῖεν. πρὸ πολλοῦ γὰρ ἴσασιν ἐκ τῶν τοιούτων σημείων, καὶ τῶν
ἡμερῶν τὴν ἐσομένην ἀνάβασιν, καὶ προδηλοῦσι. τοῦτο δὲ καὶ τοῖς γεωργοῖς χρήσιμον, τῆς τῶν ὑδά-
των ταμιείας χάριν. καὶ παραχωμάτων. καὶ διωρύγων. καὶ ἄλλων τοιούτων. καὶ τοῖς ἡγεμόσι τῶν προ-
σόδων χάριν. αἱ γὰρ μείζους ἀναβάσεις, μείζους καὶ τὰς προσόδους ὑπαγορεύουσιν. ἐν δὲ τῇ συήνῃ, καὶ
τὸ φρέαρ ἐστὶ τὸ διασημαῖνον τὰς θερινὰς τροπάς. καὶ διότι τῷ τροπικῷ κύκλῳ ὑπόκεινται οἱ τό-
ποι οὗτοι, καὶ ποιοῦσιν ἀσκίους τοὺς γνώμονας κατὰ μεσημβρίαν. ἐνταῦθα πρῶτον ὁ ἥλιος κατὰ κο-
ρυφὴν ἡμῖν γίνεται. καὶ ποιεῖ τοὺς γνώμονας ἀσκίους κατὰ μεσημβρίαν. ἀνάγκη δὲ κατὰ κορυφὴν
ἡμῖν γινομένου, καὶ εἰς τὰ φρέατα βάλλειν μέχρι τοῦ ὕδατος τὰς αὐγὰς, κἂν βαθύτατα ᾖ. κατὰ κάθε-
τον γὰρ ἡμεῖς γε ἕσταμεν. καὶ τὰ ὀρύγματα τῶν φρεάτων κατασκευάζεται. εἰσὶ δ' ἐνταῦθα τρεῖς σπεῖραι
ῥωμαίων ἱδρυμέναι φρουρᾶς χάριν. μικρὸν δ' ὑπὲρ τῆς ἐλεφαντίνης ἐστὶν ὁ μικρὸς καταράκτης. ἐφ'
ᾧ καὶ θέαν τινὰ οἱ σκαφῖται τοῖς ἡγεμόσιν ἐπιδείκνυνται. ὁ μὲν γὰρ καταράκτης ἐστὶ κατὰ μέσον τὸν
ποταμόν. πετρώδης τις ὀφρύς. ἐπίπεδος, μὲν ἄνωθεν. ὥστε δέχεσθαι τὸν ποταμόν. τελευτῶσα δ' εἰς
κρημνὸν καθ' οὗ καταρρήγνυται τὸ ὕδωρ. ἑκατέρωθεν δὲ πρὸς τῇ γῇ ῥεῖθρον. ὃ μάλιστα, καὶ ἀνάπλουν
ἔχει. ἀναπλεύσαντες οὖν ταύτῃ καταρρέουσιν ἐπὶ τὸν καταράκτην. καὶ ὠθοῦνται μετὰ τῆς σκά-
φης ἐπὶ τὸν κρημνὸν, καὶ σώζονται σὺν αὐτοῖς ἀπαθεῖς. τοῦ δὲ καταρράκτου μικρὸν ἐπάνω,
τὰς φυλὰς εἶναι συμβαίνει, κοινὴν κατοικίαν αἰθιόπων τε, καὶ αἰγυπτίων κατεσκευασμένην. ὥς-
περ, καὶ τὴν ἐλεφαντίνην. καὶ τὸ μέγεθος ἴσην, ἱερὰ ἔχουσαν αἰγύπτια. ὅπου, καὶ ὄρνεον τιμᾶται.
ὃ καλοῦσι μὲν ἱέρακα. οὐδὲν δὲ ὅμοιον ἔμοιγε ἐφαίνετο ἔχειν τοῖς παρ' ἡμῖν, καὶ ἐν αἰγύπτῳ ἱέ-
ραξιν. ἀλλὰ, καὶ τῷ μεγέθει μεῖζον ἦν, καὶ τῇ ποικιλίᾳ πολὺ ἐξηλλαγμένον. αἰθιοπικὸν δ' ἔφασαν
εἶναι. κἀκεῖθεν κομίζεσθαι ὅταν ἐκλίπῃ. καὶ πρότερον, καὶ δὴ καὶ τό τε ἐδείχθη ἡμῖν πρὸς ἐκ-
λείψει ὂν διὰ νόσον. ἤλθομεν δ' εἰς φυλὰς ἐκ συήνης ἀπήνῃ, δι' ὁμαλοῦ σφόδρα πεδίου σταδίους ὁ-
μοῦ τι ἑκατόν. παρ' ὅλην δὲ τὴν ὁδὸν ἦν ἰδεῖν ἑκατέρωθεν πολλαχοῦ ὥσπερ, ἑρμαῖα πέτρον ἠλί-
βατον στρογγύλον. λεῖον ἱκανῶς. ἐγγὺς σφαιροειδοῦς τοῦ μέλανος καὶ σκληροῦ λίθου. ἐξ οὗ ἐθυεῖαι
γίνονται ἐπὶ πέτρῳ κείμενον μείζονι.. καὶ ἐπ' ἐκείνῳ πάλιν ἄλλο. ἔστι δ' ὅτε αὐτοὶ καθ' αὑτοὺς ἔ-
κειντο οἱ πέτροι. ἦν δ' ὁ μὲν μέγιστος τὴν διάμετρον ποδῶν οὐκ ἐλαττόνων ἢ δώδεκα. ἅπαντες δὲ μεί-
ζους ἢ ἡμίσεις τούτων. διέβημεν δὲ εἰς τὴν νῆσον ἐπὶ πάκτωνος. ὁ δὲ πάκτων διὰ σκυταλίδων πε-
πηγώς ἐστι σκαφίον, ὥστ' ἐοικέναι διαπλοκίνῳ. ἑστῶτες δ' ἐν ὕδατι ἢ καὶ σανιδίοις τισὶ προσκαθήμε-
νοι, ῥᾳδίως ἐπεραιώθημεν δεδιότες. ἀκίνδυνα γάρ ἐστιν ἂν μή τις ὑπέρογκον ποιήσῃ τὸ πορθμεῖον.
καθ' ὅλην δὲ τὴν αἴγυπτον τοῦ φοίνικος ἀγενοῦς ὄντος καὶ ἐκφέροντος καρπὸν οὐκ εὔβρωτον ἐν τοῖς
περὶ τὸ δέλτα τόποις, καὶ τὸν περὶ ἀλεξάνδρειαν, ὁ ἐν τῇ θηβαΐδι φοίνιξ ἄριστος τῶν ἄλλων φύεται.
θαυμάζειν οὖν ἄξιον πῶς ταυτὸ κλίμα οἰκοῦντες, τῇ ἰουδαίᾳ, καὶ ὅμοροι, οἱ περὶ τὸ δέλτα, καὶ
τὴν ἀλεξάνδρειαν, τοσοῦτον διαλλάττουσιν ἐκείνης. πρὸς ἄλλῳ φοίνικι καὶ τὸν καρυωτὸν γεννώσης. οὐ
πολυκρείττονα τοῦ βαβυλωνίου. διττὸς δ' ἐστίν. ὅ, τε ἐν τῇ θηβαΐδι, καὶ ὁ ἐν τῇ ἰουδαίᾳ, ὅ τε ἄλλος καὶ ὁ κα-
ρυωτός. σκληρότερος δ' ὁ θηβαϊκός. ἀλλὰ τῇ γεύσει εὐστομώτερος. ἔστι δὲ καὶ νῆσος ἣ μάλιστα ἐκ φέ-
ρουσα τὸν ἄριστον μεγίστην τελοῦσα πρόσοδον, τοῖς ἡγεμόσι. βασιλικὴ γὰρ ἦν, ἰδιώτῃ οὐδ' οὐμετῆν, καὶ

νιῶν τῶν ἡγεμόνων ἐστί. πολλὰ δ' ἡρόδοτός τε καὶ ἄλλοι φλυαροῦσιν. ὡς πρὸ μέλος, ἢ ῥυθμὸν, ἢ ἥδυσμά
τι τῷ λόγῳ τὴν τερατείαν προσφέροντες. οἷον καὶ τὸ φάσκειν περὶ τὰς νήσους τὰς πρὸς τῇ συήνῃ
καὶ τῇ ἐλεφαντίνῃ. πλείους δ' εἰσὶ, τὰς πηγὰς τοῦ νείλου εἶναι. καὶ βάθος ἄβυσσον ἔχειν τὸν πόρον
κατὰ τοῦτον τὸν τόπον. νήσους δ' ὁ νεῖλος κατεσπαρμένας ἔχει παμπόλλας. τὰς μὲν, καλυπτομένας
ὅλας ἐν ταῖς ἀναβάσεσι. τὰς δ' ἐκ μέρους. ἐποχετεύεται δὲ τοῖς κοχλίαις τὰ λίαν ἔξαλα. ἡ μὲν
οὖν ἡ αἴγυπτος εἰρηνικὴ τὸ πλέον ὑπῆρχεν ἐξ ἀρχῆς διὰ τὸ αὔταρκες τῆς χώρας, καὶ τὸ δυσείσβολον τοῖς ἔ-
ξωθεν. ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων ἀλιμένῳ παραλίᾳ, καὶ πελάγει τῷ αἰγυπτίῳ φρουρουμένη. ἀπὸ δὲ τῆς
ἕω, καὶ τῆς ἑσπέρας ἐρήμοις ὄρεσι τοῖς τε λιβυκοῖς, καὶ τοῖς ἀραβίοις ὡς πρὸ ἔφαμεν. λοιπὰ δὲ τὰ
πρὸς νότον. τρωγλοδύται. βλέμμυες. καὶ νοῦβαι καὶ μεγάβαροι οἱ ὑπὲρ συήνης αἰθίοπες. εἰσὶ δ'
οὗτοι νομάδες, καὶ οὐ πολλοί. οὐδὲ μάχιμοι. δοκοῦντες δὲ τοῖς πάλαι διὰ τὸ λῃστρικῶς ἀφυλάκτοις ἐ-
πιτίθεσθαι πολλάκις. οἱ δὲ πρὸς μεσημβρίαν, καὶ μερόην ἀνήκοντες αἰθίοπες, οὐδ' οὗτοι πολλοί. οὔ-
τε ἐν συστροφῇ. ἅτε ποταμίαν μακρὰν, καὶ στενὴν καὶ σκολιὰν οἰκοῦντες, οἵαν προείπομεν. οὐδὲ πα-
ρεσκευασμένοι καλῶς, οὔτε πρὸς πόλεμον, οὔτε πρὸς τὸν ἄλλον βίον. καὶ νῦν δὲ διάκειται παρα-
πλησίως, ἡ χώρα πᾶσα. σημεῖον δέ. τρισὶ γὰρ σπείραις, οὐδὲ ταύταις ἐν τελείσιν ἱκανῶς ὑπὸ τῶν
ῥωμαίων ἡ χώρα φρουρεῖται. τολμήσασι δὲ τοῖς αἰθίοψιν ἐπιθέσθαι, κινδυνεῦσαι τῇ χώρᾳ συνέ-
πεσε τῇ σφετέρᾳ. καὶ αἱ λοιπαὶ δὲ δυνάμεις αἱ ἐν αἰγύπτῳ, οὔτε τοσαῦταί τινες εἰσὶν, οὔτε ἀθρόαις ἐ-
χρήσαντο, οὐδ' ἅπαξ ῥωμαῖοι. οὔτε γὰρ εἰσὶν, οὔτ' αὐτοὶ οἱ αἰγύπτιοι πολεμισταὶ καίπερ ὄντες παμ-
πληθεῖς, οὔτε τὰ πέριξ ἔθνη. γάλλος μὲν γε κορνήλιος ὁ πρῶτος κατασταθεὶς ἔπαρχος τῆς χώ-
ρας ὑπὸ καίσαρος, τήν τε ἡρώων πόλιν ἀποστᾶσαν ἐπελθὼν, δι' ὀλίγων εἷλε. στάσιν τε γενηθεῖσαν ἐν
δὲ τῇ θηβαΐδι διὰ τοὺς φόρους ἐν βραχεῖ κατέλυσε. πετρώνιός τε ὕστερον τῷ ἀλεξανδρέων πλήθους
τοσούτων μυριάδων ὁρμήσαντων ἐπ' αὐτὸν μετὰ λίθων βολῆς, αὐτοῖς τοῖς περὶ αὐτὸν στρατιώταις
ἀντέσχε. καὶ διαφθείρας τινὰς αὐτῶν, τοὺς λοιποὺς ἔπαυσε. γάλλος τε αἴλιος μέρει τῆς ἐν αἰγύ-
πτῳ φρουρᾶς εἰς τὴν ἀραβίαν ἐμβαλὼν, εἴρηται τίνα τρόπον ἐξήλεγξε τοὺς ἀνθρώπους ἀπολέμους
ὄντας. εἰ δὲ μὴ ὁ συλλαῖος αὐτὸν προυδίδου, κἂν κατεστρέψατο τὴν εὐδαίμονα πᾶσαν. ἐπειδὴ δὲ οἱ
αἰθίοπες καταφρονήσαντες τῷ μέρει τι τῆς αἰγύπτου δυνάμεως ἀπεσπάσθαι μετὰ γάλλου αἰλίου
πολεμοῦντος πρὸς τοὺς ἄραβας, ἐπελθόντες τῇ θηβαΐδι, καὶ τῇ φρουρᾷ τῶν τριῶν σπειρῶν τῶν
κατὰ συήνην, καὶ τὴν ἐλεφαντίνην, καὶ φιλὰς ἐξ ἐφόδου διὰ τὸ αἰφνίδιον καὶ ἐξηνδραποδίσαντο,
ἀνέσπασαν, καὶ τοὺς καίσαρος ἀνδριάντας, ἐπελθὼν ἐλάττοσιν ἢ μυρίοις πεζοῖς πετρώνιος, ἱππεῦ-
σι δὲ ὀκτακοσίοις πρὸς ἄνδρας τρισμυρίους, πρῶτον μὲν ἠνάγκασεν αὐτοὺς εἰς ψέλχιν πόλιν αἰ-
θιοπικήν. καὶ πρεσβεύεται τά τε ληφθέντα ἀπαιτῶν, καὶ τὰς αἰτίας δι' ἃς ἦρξαν πολέμου. λε-
γόντων δ' ὡς ἀδικοῖντο ὑπὸ τῶν νομαρχῶν, ἀλλ' οὐκ ἔφη τούτους ἡγεμόνας εἶναι τῆς χώρας. ἀλ-
λὰ καίσαρα. αἰτησαμένων ἡμέρας τρεῖς βουλὴν καὶ μηδὲν ὧν ἐχρῆν, ποιούντων, προσβαλὼν ἠ-
νάγκασε προελθεῖν εἰς μάχην. ταχὺ δὲ τροπὴν ἐποίησε. συντεταγμένων τε κακῶς καὶ ὡπλισμένων.
μεγάλους γὰρ εἶχον θυρεοὺς καὶ τούτους ὠμοβοΐνους, ἀμυντήρια δὲ πελέκεις. οἱ δὲ, κοντούς. οἱ δὲ, καὶ
ξίφη. τινὲς μὲν οὖν εἰς τὴν πόλιν συνηλάθησαν. οἱ δ' εἰς τὴν ἐρημίαν ἔφυγον. τινὰς δὲ νῆσος πλησίον
ἐδέξατο ἐμβάντας εἰς τὸν πόρον. οὐ γὰρ πολλοὶ ἦσαν ἐνταῦθα οἱ κροκόδειλοι διὰ τὸν ῥοῦν. τούτων δ' ἦ-
σαν καὶ οἱ τῆς βασιλίσσης στρατηγοὶ τῆς κανδάκης. ἣ καθ' ἡμᾶς ἦρξε τῶν αἰθιόπων. ἀνδρική τις γυνή.
πεπηρωμένη τὸν ὀφθαλμόν. τούτους δὲ δὴ ζωγρίᾳ λαμβάνει ἅπαντας, ἐπιπλεύσας σχεδίαις τε καὶ
ναυσί. καὶ καταπέμπει παραχρῆμα εἰς ἀλεξάνδρειαν, ἐπελθών τε τὴν ψέλχιν αἱρεῖ. προστιθεμέ-
νου δὲ τοῖς ἑαλωκόσι τοῦ πλήθους τῶν πεσόντων ἐν τῇ μάχῃ, τοὺς σωθέντας ὀλίγους παντάπα-
σι συνέβη γενέσθαι. ἐκ δὲ ψέλχιος ἧκεν εἰς πρῆμνιν ἐρυμνὴν πόλιν. διελθὼν τοὺς θῖνας. ἐν οἷς ὁ καμβύ-
σου κατεχώσθη στρατός. ἐμπεσόντος ἀνέμου. προσβαλὼν δὲ ἐξ ἐφόδου τὸ φρούριον αἱρεῖ. καὶ μετὰ ταῦ-
τα ὥρμησεν ἐπὶ νάπατον. τοῦτο δ' ἦν τὸ βασίλειον τῆς κανδάκης. καὶ ἦν ἐνταῦθα υἱὸς αὐτῆς. καὶ αὐ-
τὴ δ' ἐν τινι πλησίον ἵδρυτο χωρίῳ. πρεσβευσαμένης δὲ περὶ φιλίας, καὶ ἀποδούσης τοὺς ἐκ συήνης
αἰχμαλώτους καὶ τοὺς ἀνδριάντας ἐπελθὼν, λαμβάνει καὶ τὰ νάπατα φυγόντος τοῦ παιδός. καὶ
κατασκάπτει. ἐξανδραποδισάμενος δ' ἀνέστρεφε πάλιν εἰς τοὐπίσω μετὰ τῶν λαφύρων. δύσοδα κρί-
νας τὰ προσωτέρω. τὴν δὲ πρῆμνιν τειχίσας βέλτιον. φρουρὰν ἐμβαλὼν καὶ τροφὴν δυεῖν ἐνιαυτῶν,
τετρακοσίοις ἀνδράσιν, ἀπῆρεν εἰς ἀλεξάνδρειαν. καὶ τῶν αἰχμαλώτων τοὺς μὲν, ἐλαφυροπώλησε. χι-
λίους δὲ καίσαρι ἔπεμψε νεωστὶ ἐκ κανταβρῶν ἥκοντι. τοὺς δὲ καὶ νόσοι διεχρήσαντο. ἐν τούτῳ μυριάσι
κανδάκη πολλαῖς ἐπὶ τὴν φρουρὰν ἐπῆλθε. πετρώνιος δ' ἐξεβοήθησε. καὶ φθάνει προεισελθὼν εἰς
τὸ φρούριον. καὶ πλείοσι παρασκευαῖς ἐξασφαλισάμενος τὸν τόπον, πρεσβευσαμένων ἐκέλευσεν, ὡς καί-
σαρα πρεσβεύεσθαι. οὐκ εἰδέναι δὲ φασκόντων ὅς τις εἴη καῖσαρ, καὶ ὅπῃ βαδιστέον εἴη παρ' αὐτὸν,
ἔδωκε τοὺς παραπέμψοντας. καὶ ἧκον εἰς σάμον. ἐνταῦθα, τοῦ καίσαρος ὄντος, καὶ μέλλοντος εἰς

συρίαν ἐντεῦθεν προϊέναι, τιβέριον εἰς ἀρμενίαν στέλλοντος. πάντων δὲ τυχόντων ὧν ἐδέοντο, ἀφῆκεν αὐτοῖς καὶ τοὺς φόρους οὓς ἐπέταξε. πολλὰ δ᾽ εἴρηται περὶ τῶν αἰθιοπικῶν ἐν τοῖς πρότερον. ὥστε συμπεριωδευμένα ἂν εἴη τῇ αἰγύπτῳ, καὶ τὰ τούτων. ὡς δ᾽ εἰπεῖν, καὶ τὰ ἄκρα τῆς οἰκουμένης τὰ παρακείμενα τῇ δυσκράτῳ, καὶ ἀοικήτῳ διὰ καῦμα ἢ ψῦχος, ἀνάγκη ἀποτεύγματα εἶναι τῆς εὐκράτου καὶ ἐλαττώματα. ταῦτα δ᾽ ἐκ τῶν βίων δῆλα, καὶ τῆς πρὸς τὰς χρείας τὰς ἀνθρωπικὰς ἀπορίας. κακόβιοί τε δὴ καὶ γυμνῆτές εἰσι τὰ πολλά. καὶ νομάδες. τά τε βοσκήματα αὐτοῖς ἐστὶ μικρά, πρόβατα, καὶ κύνες, καὶ βόες μικροί. τραχεῖς δὲ καὶ μάχιμοι οἱ κύνες μικροὶ ὄντες. τάχα δὲ καὶ τοὺς πυγμαίους ἀπὸ τῆς τούτων μικροφυΐας ἐπενόησαν, καὶ ἀνέπλασαν. ἑωρακὼς μὲν γὰρ οὐδεὶς ἐξηγεῖται τῶν πίστεων ἀξίων ἀνδρῶν. ζῶσι δ᾽ ἀπὸ κέγχρου, καὶ κριθῆς. ἀφ᾽ ὧν, καὶ ποτὸν ποιοῦσιν αὐτοῖς. ἔστι δὲ ἔλαιον, καὶ βούτυρον καὶ στέαρ. οὐδ᾽ ἀκρόδρυα ἔχουσι πλὴν φοινίκων ὀλίγων ἐν κήποις βασιλικοῖς. ἔνιοι δὲ, καὶ πόαν σιτοῦνται, καὶ κλῶνας ἁπαλούς, καὶ λωτόν, καὶ καλάμου ῥίζαν. κρέασι δὲ χρῶνται, καὶ αἵματι, καὶ γάλακτι, καὶ τυρῷ. σέβονται δ᾽ ὡς θεοὺς τοὺς βασιλέας, κατακλείστους ὄντας, καὶ οἰκουροὺς τὸ πλέον. ἔστι δὲ τὸ μέγιστον αὐτοῖς βασίλειον, ἡ μερόη πόλις ὁμώνυμος τῇ νήσῳ. τὴν δὲ νῆσον θυρεοειδῆ φασι τὸ σχῆμα. τό τε μέγεθος τάχα πρὸς ὑπερβολὴν εἴρηται. μῆκος μὲν ὅσον τρισχιλίων σταδίων. εὖρος δὲ χιλίων. ἔχει δὲ συχνά, καὶ ὄρη, καὶ δάση μεγάλα. οἰκοῦσι δ᾽ οἱ μὲν, νομάδες. οἱ δὲ θηρευτικοί. οἱ δὲ γεωργοί. ἔστι δὲ, καὶ χαλκωρυχεῖα, καὶ σιδηρουργεῖα καὶ χρυσεῖα, καὶ λίθων καὶ γένη πολυτελῶν. περιέχεται δ᾽ ἀπὸ μὲν τῆς λιβύης θισὶ μεγάλοις. ἀπὸ δὲ τῆς ἀραβίας κρημνοῖς συνεχέσιν. ἄνωθεν δ᾽ ἐκ νότου ταῖς συμβολαῖς τῶν ποταμῶν τοῦ τε ἀσταβόρα, καὶ τοῦ ἀστάποδος, καὶ τοῦ ἀστασόβα πρὸς ἄρκτον δὲ ἡ ἐφεξῆς ῥύσις τοῦ νείλου, καὶ μέχρι αἰγύπτου, κατὰ τὴν λεχθεῖσαν πρότερον σκολιότητα τοῦ ποταμοῦ. ἐν δὲ ταῖς πόλεσιν αἱ οἰκήσεις ἐκ φοινικίνων σχιζῶν διαπλεκόμεναι τοίχων ἢ πλίνθων. ὀρυκτοὶ δὲ ἅλες καθάπερ τοῖς ἄραψι. πλεονάζει δὲ, τῶν φυτῶν ὅ, τε φοῖνιξ καὶ ἡ περσέα, καὶ ὁ ἔβενος, καὶ ἡ κερατεία. θήρα δὲ, καὶ ἐλεφάντων ἐστί, καὶ λεόντων, καὶ παρδάλεων. εἰσὶ δὲ καὶ δράκοντες οἱ ἐλεφαντομάχοι, καὶ ἄλλα θηρία πλείω. καταφεύγει γὰρ ἀπὸ τῶν ἐμπυροτέρων, καὶ αὐχμηροτέρων ἐπὶ τὰ ὕδρηλά, καὶ ἑλώδη. ὑπέρκειται δὲ τῆς μερόης ἥ τε ψεβώα λίμνη, μεγάλη. νῆσον ἔχουσα οἰκουμένην ἱκανῶς. συμβαίνει δὲ τοῦ νείλου τὴν μὲν δυσμικὴν παραποταμίαν ἐχόντων τῶν λιβύων, τὴν δὲ πέραν αἰθιόπων, παρὰ μέρος αὐτῶν τὴν ἐπικράτειαν εἶναι τῶν νήσων, καὶ τῆς ποταμίας, ἐξελαυνομένων τῶν ἑτέρων, καὶ παραχωρούντων τοῖς κρείττοσι γενομένοις. χρῶνται δὲ, καὶ τόξοις αἰθίοπες τετραπήχεσι ξυλίνοις πεπυρακτωμένοις. ὁπλίζουσι δὲ, καὶ τὰς γυναῖκας. ὧν αἱ πλείους κεκρίκωνται τὸ χεῖλος τοῦ στόματος χαλκῷ κρίκῳ. κωδιοφόροι δ᾽ εἰσίν. ἐρέας οὐκ ἔχοντες τῶν προβάτων αἰγοτριχούντων. οἱ δὲ γυμνῆταί εἰσιν. ἢ καὶ περιεζώνται μικρὰ κώδια, ἢ τρίχινα πλέγματα εὐφυῆ. θεὸν δὲ νομίζουσι, τὸν μὲν, ἀθάνατον. τοῦτον δ᾽ εἶναι τὸν αἴτιον τῶν πάντων. τὸν δὲ θνητὸν, ἀνώνυμόν τινα καὶ οὐ σαφῆ. ὡς δ᾽ ἐπὶ τὸ πολὺ τοὺς εὐεργέτας, καὶ βασιλικοὺς θεοὺς νομίζουσι. καὶ τούτων τοὺς μὲν βασιλέας κοινοὺς ἁπάντων μὲν σωτῆρας, καὶ φύλακας. τοὺς δ᾽ ἰδιώτας. ἰδίως τοῖς εὖ παθοῦσιν ὑπ᾽ αὐτῶν. τῶν δὲ πρὸς τῇ διακεκαυμένῃ τινές, καὶ ἄθεοι νομίζονται. οἵ γε καὶ τὸν ἥλιον ἐχθαίρειν, καὶ κακῶς λέγειν ἐπειδὰν προσίδωσιν ἀνίσχοντα, ὡς καίοντα καὶ πολεμοῦντα αὐτοῖς. καταφεύγειν τε εἰς τὰ ἕλη. οἱ δ᾽ ἐν μερόῃ, καὶ ἡρακλέα, καὶ πᾶνα, καὶ ἶσιν σέβονται πρὸς ἄλλῳ τινὶ βαρβαρικῷ θεῷ. τοὺς δὲ νεκρούς. οἱ μὲν, εἰς τὸν ποταμὸν ἐκρίπτουσιν. οἱ δ᾽ οἴκοι κατέχουσι περιχέαντες ὕαλον. τινὲς δὲ ἐν κεραμέαις σοροῖς κατορύττουσι κύκλῳ τῶν ἱερῶν. ὅρκον τε τὸν ὑπὲρ αὐτῶν ἀπαιτοῦσι. καὶ πάντων ἁγιστεύουσι. μάλιστα βασιλέας τε καθιστᾶσι τοὺς κάλλει διαφέροντας ἢ ἀρετῇ, κτηνοτροφίας ἢ ἀνδρείας ἢ πλούτου. ἐν δὲ τῇ μερόῃ κυριωτάτην τάξιν ἐπεῖχον οἱ ἱερεῖς τὸ παλαιόν. οἵ γε καὶ τῷ βασιλεῖ προσέταττον ἐσθ᾽ ὅτε ἀποθνήσκειν πέμψαντες ἄγγελον. καὶ καθίστασαν ἀντ᾽ αὐτοῦ ἕτερον. ὕστερον δὲ κατέλυσέ τις τῶν βασιλέων τὸ ἔθος. ἐπελθὼν μεθ᾽ ὅπλων ἐπὶ τὸ ἱερὸν ὅπου ὁ χρυσοῦς νεώς ἐστι. καὶ τοὺς ἱερέας ἀποσφάξας πάντας. ἔστι δὲ καὶ τοῦτο ἔθος αἰθιοπικόν. ὃς γὰρ ἂν τῶν βασιλέων πηρωθῇ μέρος τι τοῦ σώματος, ὁπωσοῦν τὸ αὐτὸ πάσχουσιν, οἱ συνόντες αὐτῷ μάλιστα. οἱ δ᾽ αὐτοὶ καὶ συναποθνήσκουσιν. ἐκ δὲ τούτου φυλακὴ τοῦ βασιλέως ἐστὶ πλείστη παρ᾽ αὐτῶν. περὶ μὲν αἰθιόπων ἀρκέσει ταῦτα. τοῖς δ᾽ αἰγυπτιακοῖς, καὶ ταῦτα προσθετέον ὅσα ἰδιάζοντα. οἷον ὁ αἰγύπτιος λεγόμενος κύαμος. ἐξ οὗ τὸ κιβώριον, καὶ ἡ βίβλος. ἐνταῦθα καὶ παρ᾽ ἰνδοῖς μόνον. ἡ δὲ περσέα ἐνταῦθα μόνον. καὶ παρ᾽ αἰθίοψι δένδρον μέγα καρπὸν ἔχον γλυκὺν καὶ μέγαν. καὶ ἡ συκάμινος ἡ ἐκφέρουσα τὸν λεγόμενον καρπὸν συκόμορον. σύκῳ γὰρ ἔοικεν. ἄτιμον δ᾽ ἐστὶ κατὰ τὴν γεῦσιν. γίνεται δὲ καὶ τὸ κόρσιον. καὶ ὅμοιον τῷ πεπέρει τρῶγμα. μικρῷ αὐτοῦ μεῖζον. ἰχθύες δ᾽ ἐν τῷ νείλῳ πολλοὶ μὲν, καὶ ἄλλοι. χαρακτῆρα ἴδιον ἔχοντες καὶ ἐπιχώριον. γνωριμώτατοι δ᾽, ὅ, τε ὀξύρυγχος, καὶ ὁ λεπιδωτός. καὶ λάτος καὶ ἀλαβής. καὶ κορακῖνος καὶ χοῖρος. καὶ φαγρώριος, ὃν καὶ φάγρον καλοῦσιν. ἔτι σίλουρος. κίθαρος. θρίσσα, κεστρεύς.

στρακίων· δίλυχνος· φῦσα βοῦς· κοχλίαι μεγάλοι· φωνὴν ὀλολυγόσιν ὁμοίαν φθεγγόμενοι. ζῶα ἐπιχώρια·
καὶ ὁ ἰχνεύμων, καὶ ἡ ἀσπὶς καὶ ἡ αἰγυπτία. ἴδιον δέ τι ἔχουσα πρὸς τὰς ἐν ἄλλοις· διττὴ δ' ἐστίν. ἡ μὲν, σπιθαμιαία·
ἥπερ καὶ ὀξυθανατωτέρα. ἡ δ' ἐγγὺς ὀργυιᾶς· ὥς τε καὶ νίκανδρος ὁ τὰ θηριακὰ γράψας εἴρηκε. καὶ τῶν
ὀρνέων ἴβις, καὶ ἱέραξ ὁ αἰγύπτιος· ἥμερος γὰρ παρὰ τοὺς ἄλλους, ὡς καὶ ἡ αἴλουρος. καὶ ὁ νυκτικόραξ
ἰδιότροπος ἐνθάδε. παρ' ἡμῖν μὲν γὰρ ἀετοῦ μέγεθος ἔχει. καὶ φθέγγεται βαρύ. ἐν αἰγύπτῳ δὲ κολοιοῦ
μέγεθος. καὶ φθογγὴν διάφορον. ἡμερώτατον δ' ἡ ἴβις. πελαργώδης μὲν κατὰ σχῆμα, καὶ μέγεθος.
διττὴ δὲ τὴν χρόαν. ἡ μὲν, πελαργώδης. ἡ δὲ ὅλη μέλαινα. μεστὴ δ' αὐτῶν ἅπασα τρίοδος, ἐν ἀλεξαν-
δρείᾳ. πῆ μὲν χρησίμως, πῆ δ' οὐ χρησίμως. χρησίμως μὲν ὅτι πᾶν θηρίον ἐκλέγει. καὶ τὰ ἐν κρεω-
πωλείοις, καὶ τοῖς ὀψοπώλαις ἀποκαθάρματα. δυσχρήστως δὲ, ὅτι παμφάγον καὶ ἀκάθαρτον. καὶ δυ-
σκόλως ἀπειργόμενον, ἀπὸ τῶν καθαρίων, καὶ τῶν ἀλλοτρίων, καὶ μολυσμοῦ παντός. ἀληθὲς δὲ καὶ
τὸ ἡροδότου. καὶ ἔστιν αἰγυπτιακόν. τὸ τὸν μὲν πηλὸν ταῖς χερσὶ φυρᾶν. τὸ δὲ στέαρ τὸ εἰς τὴν ἀρτοποιΐαν
τοῖς ποσί. καὶ οἱ κάκεις δὲ ἴδιόν τι ἄρτου γένους. στατικὸν κοιλίας. καὶ τὸ κίκι, καρπός τις σπειρόμε-
νος ἐν ἀρούραις. ἐξ οὗ ἔλαιον ἀποθλίβεται. εἰς μὲν λύχνον τοῖς ἀπὸ τῆς χώρας σχεδόν τι πᾶσιν. εἰς ἄ-
λειμμα δὲ τοῖς πενεστέροις καὶ ἐργατικωτέροις. καὶ ἀνδράσι καὶ γυναιξί. καὶ κατακόκκινα δὲ πλέγ-
ματα αἰγυπτιακὰ ἐστὶ φυτοῦ τινος, ὅμοια τοῖς σχοινίοις, ἢ φοινικίοις. τὸ δὲ ζῦθος ἰδίως μὲν σκευάζεται
παρ' ἐκείνοις. κοινὸν δ' ἐστὶ πολλοῖς. καὶ παρ' ἑκάστοις δὲ αἱ σκευασίαι διάφοροι. καὶ τοῦτο δὲ τῶν ζηλουμέ-
νων μάλιστα παρ' αὐτοῖς, τὸ πάντα τρέφειν τὰ γεννώμενα παιδία. καὶ τὸ περιτέμνειν, καὶ τὰ θήλεα
ἐκτέμνειν. ὅπερ καὶ τοῖς ἰουδαίοις νόμιμον. καὶ οὗτοι εἰσὶν αἰγύπτιοι τὸ ἀνέκαθεν καθάπερ εἰρήκα-
μεν ἐν τῷ περὶ ἐκείνων λόγῳ. φησὶ δ' ἀριστόβουλος μηδὲν ἀναστρέφειν ὄψον εἰς τὸν νεῖλον ἐκ τῆς θαλάτ-
της. πλὴν κεστρέως, καὶ θρήσσης, καὶ δελφῖνος διὰ τοὺς κροκοδείλους. τοὺς μὲν δελφῖνας διὰ τὸ κρείτ-
τους πέμπεσθαι ὑπὸ τῶν χοίρων παρὰ γῆν, κατά τινα οἰκείωσιν φυσικήν. τῶν δὲ χοίρων ἀπέχεσθαι
τοὺς κροκοδείλους. στρογγύλων ὄντων καὶ ἐχόντων ἀκάνθας ἐπὶ τῇ κεφαλῇ φερούσας κίνδυνον
τοῖς θηρίοις. ἀναθεῖν μὲν οὖν ἔαρος τοὺς κεστρέας γόνον ἔχοντας. μικρὸν δὲ πρὸ δύσεως πλειάδος
καταβαίνειν τεξομένους ἀθρόους. ὅτε καὶ ἡ ἅλωσις αὐτῶν γίνεται περιπιπτόντων τοῖς φράγμα-
σιν ἀθρόον. τοιαύτην δέ τινα εἰκάζειν ἐστὶ, καὶ περὶ τῆς θρίσσης αἰτίαν. ταῦτα καὶ περὶ αἰγύπτου.

Περὶ δὲ λιβύης ἐφεξῆς λέγωμεν. ὅπερ συμπάσης τῆς γεωγραφίας λείπεται μέρος. εἴρηται μὲν καὶ
πρότερον πολλὰ περὶ αὐτῆς. ἀλλὰ καὶ νῦν ὅσα καίρια προσυπομνηστέον, προσθέντας, καὶ τὰ μὴ λε-
χθέντα πρότερον. οἱ μὲν πρὸς ἠπείρους τὴν οἰκουμένην διελόντες, ἀνίσως διεῖλον. ἐμφαίνει γὰρ τὸ
τριχῇ τὸ εἰς τρία ἴσα. τοσοῦτον δ' ἀπολείπεται τοῦ τρίτον εἶναι μέρος τῆς οἰκουμένης ἡ λιβύη, ὥσ-
τε καὶ συντεθεῖσα μετὰ τῆς εὐρώπης οὐκ ἂν ἐξισάζειν δόξοι τῇ ἀσίᾳ. τάχα δὲ καὶ τῆς εὐρώπης ἐλάτ-
των ἐστί. κατὰ δὲ τὴν δύναμιν, καὶ πολλῷ τινι. ἔρημος γάρ ἐστιν ἡ πολλὴ τῆς μεσογαίας, καὶ τῆς πα-
ρωκεανίτιδος. κατοικίαις δὲ κατάστικτός ἐστι μικραῖς, καὶ σποράσι καὶ νομαδικαῖς ταῖς πλείσταις. πρὸς
δὲ τῇ ἐρημίᾳ, καὶ τὸ θηριοτρόφον ἐξελαύνειν, καὶ ἐκ τῆς δυναμένης οἰκεῖσθαι. πολὺ δὲ καὶ τῆς δια-
κεκαυμένης ἐπιλαμβάνει ζώνης. ἡ μέντοι καθ' ἡμᾶς εὐδαιμόνως οἰκεῖται πᾶσα παραλία ἡ μεταξὺ νεί-
λου καὶ στηλῶν. καὶ μάλιστα ἡ ὑπὸ καρχηδονίοις γενομένη. ἀνυδρίαι τέ τινες κἀνταῦθα παρεμπί-
πτουσιν, οἷαι αἱ περί τε τὰς σύρτεις, καὶ τὰς μαρμαρείδας καὶ τὸν καταβαθμόν. ἔστι δὲ ὀρθογωνίου τρι-
γώνου τὸ σχῆμα. ὡς ἄν τις ἐν ἐπιπέδῳ νοήσειε. βάσιν μὲν ἔχον τὴν καθ' ἡμᾶς παραλίαν, τὴν ἀπὸ τῆς αἰ-
γύπτου, καὶ νείλου μέχρι μαυρουσίας καὶ στηλῶν. πρὸς ὀρθὴν δὲ ταύτῃ πλευρὰν ἣν ὁ νεῖλος ποιεῖ μέ-
χρι αἰθιοπίας. προσεκβαλλόντων ἡμῶν ἕως ὠκεανοῦ. τὴν δ' ὑποτείνουσαν τῇ ὀρθῇ τὴν παρωκεανῖ-
τιν ἅπασαν τὴν μεταξὺ αἰθιόπων, καὶ μαυρουσίων. τὸ μὲν οὖν κατ' αὐτὴν τὴν κορυφὴν τοῦ λεχθέντος
σχήματος, ἤδη πως ὑποπίπτον τῇ διακεκαυμένῃ, λέγομεν ἐξ εἰκασμοῦ διὰ τὸ ἀπρόσιτον. ὥστ' οὐδὲ τὸ
μέγιστον ἂν πλάτος τῆς χώρας ἔχοιμεν ἂν λέγειν. τὸ μέντοι τοσοῦτον, ἐν τοῖς πρόσθεν λόγοις ἔφαμεν.
ὅτι ἐξ ἀλεξανδρείας εἰς μερόην τὸ βασίλειον τῶν αἰθιόπων πρὸς νότον ἰόντι, στάδιοι εἰσὶ περὶ μυρί-
ους. ἐκεῖθεν δ' ἐπ' εὐθείας ἐπὶ τοὺς ὅρους τῆς διακεκαυμένης, καὶ τῆς οἰκουμένης, ἄλλοι τρισχίλιοι. τὸ
γοῦν αὐτὸ θετέον τὸ μέγιστον πλάτος τῆς λιβύης, μυρίους, καὶ τρισχιλίους, ἢ τετρακισχιλίους σταδί-
ους. μῆκος δὲ μικρῷ ἔλαττον, ἢ διπλάσιον. τὰ καθόλου μὲν ταῦτα περὶ λιβύης. τὰ καθέκαστα δὲ λε-
κτέον. ἀρξαμένοις ἀπὸ τῶν ἑσπερίων μερῶν καὶ τῶν ἐπιφανεστέρων. οἰκοῦσι δ' ἐνταῦθα μαυρούσιοι μὲν
ὑπὸ τῶν ἑλλήνων λεγόμενοι. λιβυκὸν ἔθνος μέγα, καὶ εὔδαιμον. μαῦροι δ' ὑπὸ τῶν ῥωμαίων, καὶ τῶν
ἐπιχωρίων, ἀντίπορθμον τῇ ἰβηρίᾳ. κατὰ τοῦτο δὲ καὶ ὁ κατὰ τὰς στήλας τὰς ἡρακλείους πορθμός ἐστι.
περὶ οὗ πολλὰ εἴρηται. ἔξω δὴ προελθόντι τοῦ κατὰ τὰς στήλας πορθμοῦ, τὴν λιβύην ἐν ἀριστερᾷ ἔχον-
τι, ὄρος ἐστὶν, ὅπερ οἱ μὲν ἕλληνες ἄτλαντα καλοῦσιν. οἱ βάρβαροι δὲ δύριν. ἐντεῦθεν δὲ πρόπους ἔκκειται
τις ὕστατος πρὸς δύσιν τῆς μαυρουσίας, αἱ κώτεις λεγόμεναι. πλησίον δὲ καὶ πολίχνιον μικρὸν ὑπὲρ
τῆς θαλάττης. ὅπερ τίγγα καλοῦσιν οἱ βάρβαροι. λίγγα δὲ ἀρτεμίδωρος προσηγόρευκε. ἐρατο-

τονησις δὲ λίξον. κεῖται δ' αὕτη ἐπὶ πορθμὸν τοῖς γαδείροις ἐν διάρματι σταδίων ἑξακοσίων, ὅσον ἑκατέρα
διέχει τοῦ κατὰ τὰς στήλας πορθμοῦ. πρὸς νότον δὲ τῇ λίξῳ καὶ ταῖς κώτεσι, παράκειται κόλπος
ἐμπορικὸς καλούμενος. ἔχων φοινικικὰς ἐμπορικὰς κατοικίας. ἔστι μὲν οὖν πᾶσα ἡ συνεχὴς τῷ κόλ
πῳ τούτῳ παραλία κολπώδης. ὑπεξαιρουμένῳ δὲ τοὺς κόλπους καὶ τὰς ἐξοχὰς κατὰ τὸ σχῆμα τὸ
τετραγωνοειδὲς ὃ ὑπέγραψα, νοείσθω μᾶλλον ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν ἅμα, καὶ τὴν ἕω λαμβάνουσα
τὴν αὔξησιν ἡ ἤπειρος. τὸ δ' ὄρος διὰ μέσης ἐκτεινόμενον τῆς μαυρουσίας τὸ ἀπὸ τῶν κώτεων μέχρι
σύρτεων. οἰκεῖται, καὶ αὐτὸ καὶ ἄλλα παράλληλα, αὐτῷ. κατ' ἀρχὰς μὲν ὑπὸ τῶν μαυρουσίων. ἐν βά
θει δὲ τῆς χώρας ὑπὸ τοῦ μεγίστου τῶν λιβυκῶν ἐθνῶν. οἳ γαιτοῦλοι λέγονται. πλεῖστα δὲ πλάσμα
τα τῇ λιβυκῇ παραλίᾳ τῇ ἐκτὸς προσέψευσαν οἱ συγγραφεῖς, ἀρξάμενοι ἀπὸ τοῦ ὀφελᾶ περί-
πλου. περὶ ὧν ἐμνήσθημέν που, καὶ πρότερον, καὶ νῦν δὲ λέγομεν, συγγνώμην αἰτούμενοι τῆς τε
ρατολογίας. ἐάν που βιασθῶμεν ἐκπεσεῖν εἴς τι τοιοῦτον. φεύγοντες τὸ πάντα σιγῇ παραπέμπειν
καὶ τρόπον τινὰ πηροῦν τὴν ἱστορίαν. φασὶ γοῦν τὸν ἐμπορικὸν κόλπον ἄντρον ἔχειν εἴσω δεχόμενον
τὴν θάλατταν ἐν ταῖς πλημμυρίσι, μέχρι, καὶ ἑπτὰ σταδίων. προκείμενον δὲ τούτου ταπεινὸν, καὶ ὁ
μαλὸν χωρίον. ἔχον ἡρακλέους βωμόν. ὃν οὐκ ἐπικλύζεσθαι φασὶν ὑπὸ τῆς πλημμυρίδος. ἐν δὲ
δή τι τῶν πλασμάτων νομίζω τοῦτο, ἐγγὺς δὲ τούτου τὸ ἐν τοῖς ἑξῆς, κόλποις κατοικίας λέγεσθαι πα
λαιὰς τυρίων. ἃς ἐρήμους εἶναι νῦν, οὐκ ἐλαττόνων ἢ τριακοσίων πόλεων. ἃς οἱ φαρούσιοι καὶ οἱ νιγρῖται ἐξεπόρ
θησαν. διέχειν δὲ τούτους τῆς λιγγὸς φασὶν ἡμερῶν τριάκοντα ὁδὸν, τὸ μέντοι τὴν μαυρουσίαν εὐ-
δαίμονα εἶναι χώραν, πλὴν ὀλίγης ἐρήμου, καὶ ποταμοῖς, καὶ λίμναις κεχορηγεῖσθαι, παρὰ πάν
των ὁμολογεῖται μεγαλόδενδρός τε, καὶ πολύδενδρος ὑπερβαλόντως ἐστὶ, καὶ πάμφορος. τὰς γοῦν
μονοξύλους τραπέζας, ποικιλωτάτας, καὶ μεγίστας ἐκείνη τοῖς ῥωμαίοις χορηγεῖ. τοὺς δὲ ποταμοὺς
ἔχειν φασὶ καὶ κροκοδείλους. καὶ ἄλλα γένη ζώων ἐμφερῆ τοῖς ἐν τῷ νείλῳ. τινὲς δὲ καὶ τὰς τοῦ νείλου
πηγὰς πλησιάζειν οἴονται τοῖς ἄκροις τῆς μαυρουσίας. ἐν ποταμῷ δέ τινι γεννᾶσθαι βδέλλας ἑπτὰ
πήχεις κατατετρημένα ἔχουσας τὰ βράγχια δι' ὧν ἀναπνέουσι. καὶ ταῦτα δὲ λέγουσι περὶ τῆς
χώρας, ὅτι ἄμπελος φύεται δυσὶν ἀνδράσι, τὸ πάχος δυσπερίληπτος. βότρυν πηχυαῖόν πως ἀπο
διδοῦσα. βοτάνη τε ὑψηλὴ πᾶσα καὶ λάχανον ἄρον καὶ δρακόντιον. οἱ δὲ τῶν σταφυλίνων καυ
λοὶ καὶ ἱππομαράθου, καὶ σκολύμων δώδεκα πήχεις. τὸ δὲ πάχος παλαιστῶν τεττάρων. καὶ δρα-
κόντων δὲ, καὶ ἐλεφάντων, καὶ δορκάδων καὶ βουβάλων, καὶ τῶν παραπλησίων ζώων. λεόντων τε
καὶ παρδάλεων, παντοδαπὴ τροφὸς ἡ χώρα ἐστί. φέρει δὲ, καὶ γαλᾶς αἰλούρους ἴσας, καὶ ὁμοίας.
πλὴν ὅτι τὰ ῥύγχη προπέπτωκε μᾶλλον. πιθήκων τε πάμπολυ πλῆθος. περὶ ὧν καὶ ποσειδώνιος εἴρη
κεν ὅτι πλέων ἐκ γαδείρων εἰς τὴν ἰταλίαν, προσενεχθείη τῇ λιβυκῇ παραλίᾳ. καὶ ἴδοι, τῶν θη
ρίων μεστόν τινα τοῦτον ἀλιτενῆ δρυμόν. τῶν μὲν ἐπὶ τοῖς δένδρεσι. τῶν δ' ἐπὶ γῆς ἐνίων ἐχόντων,
καὶ σκύμνους, καὶ ἐπεχόντων μαστόν. καὶ γελᾶν ὁρῶν βαρυμάστους, ἐνίους δὲ φαλακρούς, καὶ κηλή
τας. καὶ ἄλλα τοιαῦτα ἐπιφαίνοντες. ὑπὲρ ταύτης δ' ἐστὶν ἐπὶ τῇ ἔξω θαλάσσῃ ἡ τῶν ἑσπερίων,
καλουμένων αἰθιόπων χώρα. κακῶς οἰκουμένη τὸ πλέον. ἐνταῦθα δὲ, καὶ καμηλοπαρδάλεις φησὶν
ἰφικράτης γεννᾶσθαι, καὶ ἐλέφαντας. καὶ τοὺς καλουμένους ῥίζας. οἳ ταυροειδεῖς μέν εἰσι τὴν μορφὴν
κατὰ δὲ τὴν δίαιταν καὶ τὸ μέγεθος, καὶ τὴν ἀλκὴν τὴν πρὸς μάχην, ἐλέφασιν ἐοίκασι. δράκοντάς τε
λέγει μεγάλους. ὥστε καὶ πόαν ἐπιπεφυκέναι. τοὺς δὲ λέοντας τοῖς πώλοις τῶν ἐλεφάντων ἐπιτί
θεσθαι. αἱμάξαντας δὲ φεύγειν ἐπιουσῶν τῶν μητέρων. τὰς δ' ἐπειδὰν ἴδωσιν ἡμαγμένας, κτείνειν.
ἐπανιόντας δὲ τοὺς λέοντας ἐπὶ τὰ πτώματα, νεκροφαγεῖν. βόγον δὲ τὸν βασιλέα τῶν μαυρουσίων,
ἀναβάντα ἐπὶ τοὺς ἑσπερίους αἰθίοπας, καταπέμψαι τῇ γυναικὶ δῶρα, καλάμους τοῖς ἰνδικοῖς ὁ
μοίους. ὧν ἕκαστον γόνυ χοίνικας χωροῦν ὀκτώ. καὶ ἀσπαράγων δ' ἐμφερῆ μεγέθη. εἰς δὲ τὴν ἐκτὸς
θάλατταν πλέουσιν ἀπὸ λίγγος. πόλις ἐστὶ ζῆλις καὶ τίγα. εἶτα τῶν ἑπτὰ ἀδελφῶν μνήματα, καὶ
τὸ ὑπερκείμενον ὄρος ὄνομα ἀβύλη. πολύθηρον, καὶ μεγαλόδενδρον. τοῦ δὲ κατὰ τὰς στήλας πορ
θμοῦ, τὸ μὲν μῆκος λέγεται, σταδίων ἑκατὸν εἴκοσι. τὸ δ' ἐλάχιστον πλάτος κατὰ τὴν ἐλέφαντα ἑξή
κοντα. εἰς πλεύσαντι δ' ἑξῆς, πόλεις τε καὶ ποταμοὶ πλείους μέχρι μολοχὰθ ποταμοῦ. ὃς ὁρίζει
τὴν μαυρουσίων, καὶ τὴν μασαισυλίων γῆν. καλεῖται δὲ καὶ ἄκρα μεγάλη πλησίον τοῦ ποταμοῦ, καὶ
μεταγώνιον τόπος ἄνυδρος καὶ λυπρὸς, σχεδὸν δέ τι τὸ ὄρος τὸ ἀπὸ τῶν κωτίων μέχρι δεῦρο παρατεί
νει. μῆκος δὲ ἐστι τὸ ἀπὸ τῶν κωτίων ἐπὶ τοὺς ὅρους τῶν μασαισυλίων, στάδιοι πεντακισχίλιοι. ἔστι δὲ τὸ με
ταγώνιον κατὰ νέαν που καρχηδόνα ἐν τῇ περαίᾳ. τιμοσθένης δ' οὐκ εὖ, κατὰ μασσαλίαν φησὶν
εἶναι ἐκ καρχηδόνος νέας δίαρμα, εἰς μεταγώνιον, στάδιοι τρισχίλιοι. παράπλους δὲ εἰς μασσαλίαν
ὑπὲρ ἑξακισχιλίων. οὕτω δ' εὐδαίμονα χώραν οἰκοῦντες τὴν πλείστην οἱ μαυρούσιοι, διατελοῦσιν ὅ-
μως, καὶ μέχρι δεῦρο τοῦ χρόνου νομαδικῶς ζῶντες οἱ πολλοί. καλλωπίζονται δ' ὅμως κόμης ἐμ
πλοκῇ καὶ πώγωνι καὶ χρυσοφορίᾳ. σμήξει τε ὀδόντων. καὶ ὀνυχισμῷ. σπανίως τ' ἂν ἴδοις ἅπτο

μένους ἀλλήλοις ἐν τοῖς περιπάτοις τοῦ παραμένειν αὐτοῖς ἄθικτον τὸν κόσμον τῶν τριχῶν. μάχον-
ται δ' ἱππόται τὸ πλέον ἀπ' ἄκοντος, σχοινοχαλίνοις χρώμενοι τοῖς ἵπποις, καὶ γυμνοῖς. ἔχου-
σι δὲ καὶ μαχαίρας. οἱ δὲ πεζοὶ τὰς τῶν ἐλεφάντων δορὰς, ὡς ἀσπίδας προβάλλονται. τὰς δὲ τῶν
λεόντων καὶ παρδάλεων καὶ ἄρκτων, ἀμπέχονται, καὶ ἐγκοιμῶνται. σχεδὸν δέ τι καὶ οὗτοι καὶ οἱ
ἐφεξῆς μασαισύλοι, καὶ κοινῶς λίβυες κατὰ τὸ πλέον, ὁμοιόσκευοί εἰσι καὶ τἆλλα ἐμφερεῖς. μικροῖς
ἵπποις χρώμενοι. ὀξέσι δὲ καὶ εὐπειθέσιν. ὥστ' ἀπὸ ῥαβδίου οἰακίζεσθαι. περιτραχήλια δὲ ξύλινα, ἢ τρί-
χινα. ἀφ' ὧν ὁ ῥυτὴρ ἀπήρτηται. ἔνιοι δὲ καὶ χωρὶς ὁλκῆς ἕπονται, ὡς κύνες. πέλτη μικρὰ βυρσίνη. πλα-
τύλογχα μικρά. ἄζωστοι. πλατύσημοι χιτῶνες. ὑπένδυμα, ὡς ἔφην δορὰ καὶ προθωράκιον. φαυρού-
σιοι δὲ καὶ νιγρῖτες οἱ ὑπὲρ τούτων οἰκοῦντες, πρὸς τοῖς ἑσπερίοις αἰθίοψι. καὶ τοξεύουσι καθάπερ
οἱ αἰθίοπες. χρῶνται δὲ καὶ δρεπανηφόροις ἅρμασι. μίσγονται δὲ καὶ τοῖς μαυρουσίοις οἱ φαυρούσιοι
διὰ τῆς ἐρήμου σπανίως ὑπὸ ταῖς κοιλίαις τῶν ἵππων, ὑπαρτῶντες τοὺς ἀσκοὺς τοῦ ὕδατος. ἔστι
δ' ὅτε καὶ εἰς κύρταν ἀφικνοῦνται διά τινων τόπων ἑλωδῶν καὶ λιμνωδῶν. τινὰς δ' αὐτῶν καὶ τρω-
γλοδυτικῶς οἰκεῖν φασὶν, ὀρύττοντας τὴν γῆν. λέγεται δὲ κἀνταῦθα τοὺς θερινοὺς ὄμβρους ἐπιπο-
λάζειν. χειμῶνος δὲ εἶναι ἀνυδρίαν. ἐνίους δὲ τῶν ταύτῃ βαρβάρων, καὶ ὄφεων καὶ ἰχθύων δορᾶς
ἀμπεχέσθαι καὶ στρώμασι χρῆσθαι. τοὺς δὲ μαυρουσίους ἔνιοι φασὶν ἰνδοὺς εἶναι, τοὺς συγκατελθόν-
τας ἡρακλεῖ δεῦρο. μικρὸν μὲν οὖν πρὸ ἡμῶν οἱ περὶ βόγον βασιλεῖς, καὶ βόγχοι κατεῖχον αὐτὴν,
φίλοι ῥωμαίων ὄντες. ἐκλιπόντων δὲ τούτων, ἰούβας παρέλαβε τὴν ἀρχὴν δόντος τοῦ σεβαστοῦ καί-
σαρος, καὶ ταύτην αὐτῷ τὴν ἀρχὴν πρὸς τῇ πατρῴᾳ. υἱὸς δ' ἦν ἰούβα τοῦ πρὸς καίσαρα τὸν θεὸν πο-
λεμήσαντος μετὰ σκηπίωνος. ἰούβας μὲν οὖν νεωστὶ ἐτελεύτα τὸν βίον. διαδέχεται δὲ τὴν ἀρχὴν υἱὸς
πτολεμαῖος, γεγονὼς ἐξ ἀντωνίου θυγατρὸς καὶ κλεοπάτρας. ἀρτεμίδωρος δ' ἐρατοσθένει μὲν
ἀντιλέγει. διότι λίξον τινὰ φησὶ πόλιν περὶ τὰ ἄκρα τῆς μαυρουσίας τὰ ἑσπέρια, ἀντὶ λιγκός. φοι-
νικικὰς δὲ πόλεις κατεσκευασμένας παμπόλλας τινάς. ὧν οὐδὲν ἐστὶν ἰδεῖν ἴχνος. ἐν δὲ τοῖς ἑσπερί-
οις αἰθίοψι τοὺς ἀέρας πλατεῖς φήσας ταῖς τε ὀρθριναῖς ὥραις καὶ ταῖς δειλιναῖς, παχεῖς, καὶ ἀ-
χλυώδεις φήσας τοὺς ἀέρας. πῶς γὰρ ἐν αὐχμώδεσι καὶ καυματηροῖς τόποις ταῦτ' εἶναι. αὐτὸς δὲ
τούτων πολὺ χείρω λέγει περὶ τοὺς αὐτοὺς τόπους. μετανάστας γάρ τινας ἱστορεῖ λωτοφάγους. οἳ τὴν
ἄνυδρον νέμοιντο. σιτεῖσθαι δὲ λωτὸν πόαν τινὰ καὶ ῥίζαν, ἀφ' ἧς οὐδὲν δέοιντο ποτοῦ. παρήκειν δ' αὐ-
τοὺς μέχρι τῶν ὑπὲρ κυρήνης τόπων. τοὺς δ' ἐκεῖ καὶ γαλακτοποτεῖν καὶ κρεωφαγεῖν, καίπερ ταυ-
τοκλινεῖς ὄντας. καὶ γαβίνιος δὲ ὁ τῶν ῥωμαίων συγγραφεὺς, οὐκ ἀπέχεται τῆς τερατολογίας τῆς
περὶ τὴν μαυρουσίαν. πρὸς τῇ λυγγὶ ἀνταίου μνῆμα ἱστορεῖ. καὶ σκελετὸν πηχῶν ἑξήκοντα. ὃν σερ-
τώριον γυμνῶσαι καὶ πάλιν ἐπιβαλεῖν γῆν. καὶ τὰ περὶ τῶν ἐλεφάντων μυθώδη. φησὶ γὰρ τἆλ-
λα μὲν θηρία φεύγειν τὸ πῦρ. τοὺς δ' ἐλέφαντας πολεμεῖν, καὶ ἀμύνεσθαι. διότι τὴν ὕλην φθείρει. πρὸς
δὲ τοὺς ἀνθρώπους διαμάχεσθαι κατασκόπους προπέμποντας. καὶ ὅταν ἴδωσιν ἐκεῖνον φεύγειν, καὶ
αὐτοὺς, ἐπειδὰν τραύματα λάβωσιν ἱκετήριον προτείνειν κλάδους, ἢ βοτάνην, ἢ κόνιν. μετὰ δὲ τὴν
τῶν μαυρουσίων γῆν τῶν μασαισυλίων ἐστίν. ἀπὸ τοῦ μολοχὰθ ποταμοῦ τὴν ἀρχὴν λαμβάνουσα. τε-
λευτῶσα δὲ ἐπὶ τὴν ἄκραν. ἣ καλεῖται ὅριον τῆς τε μασαισύλων, καὶ τῆς μασυλίβων γῆς. στάδιοι δ'
εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μεταγωνίου μέχρι τοῦ τρητοῦ ἑξακισχίλιοι. οἱ δ' ἐλάττους φασίν. ἔχει δ' ἡ παραλία πόλεις τε
πλείους καὶ ποταμοὺς, καὶ χώραν εὐφυῆ, τῶν δ' ἐν ὀνόματι ἀρκεῖ μνησθῆναι. ἔστι δὲ πόλις σίγα ἐν χι-
λίοις σταδίοις ἀπὸ τῶν λεχθέντων ὅρων. καὶ βασίλειον συφάκος. κατέσπασται δὲ νῦν. τὴν δὲ χώραν με-
τὰ συφάκα κατέσχε μασανάσσης. εἶτα μικίψας. εἶτα καὶ οἱ ἐκεῖνον διαδεξάμενοι. καθ' ἡμᾶς δὲ ἰού-
βας ὁ πατὴρ τοῦ νεωστὶ τελευτήσαντος ἰούβα. κατέσπασται δὲ καὶ ζάμα τὸ τούτου βασίλειον ὑπὸ ῥω-
μαίων. μετὰ δὲ τὴν σίγα θεῶν λιμὴν ἐν ἑξακοσίοις σταδίοις. εἶτ' ἄλλοι ἄσημοι τόποι. τὰ μὲν οὖν ἐν βάθει
τῆς χώρας ὀρεινὰ, καὶ ἐρῆμα, ἔσθ' ὅτε παρέσπαρται ἃ κατέχουσιν οἱ γετοῦλοι μέχρι καὶ σύρτεων.
τὰ δ' ἐκεῖ πρὸς θαλάττῃ καὶ πεδία εὐδαίμονά ἐστι. καὶ πόλεις πολλαὶ καὶ ποταμοὶ, καὶ λίμναι. ποσει-
δώνιος δ' οὐκ οἶδ' εἰ ἀληθῆ φήσας ὀλίγοις καὶ μικροῖς διαρρεῖσθαι ποταμοῖς τὴν λιβύην. αὐτοὺς γὰρ
οὓς ἀρτεμίδωρος εἴρηκε, καὶ μεγάλους. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ ταῦτ' ἀληθέστερον εἰπεῖν. εἴρηκε δὲ τούτου
τὴν αἰτίαν αὐτός. μὴ γὰρ κατομβρεῖσθαι τοῖς ἀρκτικοῖς μέρεσι. καθάπερ οὐδὲ τὴν αἰθιοπίαν φασί.
διὸ πολλάκις λοιμικὰ ἐμπίπτειν ὑπὸ αὐχμῶν. καὶ τὰς λίμνας τελμάτων ἀναπίμπλασθαι. καὶ τὴν
ἀκρίδα ἐπιπολάζειν. ἔτι φησὶ τὰ μὲν ἀνατολικὰ ὑγρὰ εἶναι. τὸν γὰρ ἥλιον ἀνίσχοντα ταχὺ παραλ-
λάττειν. τὰ δ' ἑσπέρια ξηρά. ἐκεῖ γὰρ καταστρέφειν. ὑγρὰ γὰρ καὶ ξηρὰ τὰ μὲν, παρ' ὑδάτων ἀφθονίαν,
ἢ σπάνιν λέγεται. τὰ δὲ, παρὰ τὴν τῶν ἡλίων. βούλεται δὲ λέγειν τὰ παρὰ τοὺς ἡλίους. ταῦτα δὲ πάν-
τες ἀρκτικοῖς καὶ μεσημβρινοῖς κλίμασιν ἀφορίζουσι, καὶ μὴν ἀνατολικά τε καὶ δυσμικά. τὰ μὲν πρὸς
τὰς οἰκήσεις λεγόμενα καθ' ἑκάστην τὴν οἴκησιν, καὶ τὴν μετάπτωσιν τῶν ὁριζόντων, ἄλλα καὶ ἄλλα ἐστίν.
ὥστ' οὐδὲν ἔστι καθολικῶς, εἰπεῖν ἐπὶ τὸ ἀπερίληπτον τὸ πλῆθος. ὅτι τὰ μὲν ἀνατολικὰ ὑγρά. τὰ δὲ

δυσμικὰ ξηρά. ὡς δὲ λέγεται πρὸς τὴν οἰκουμένην ὅλην καὶ τὰς ἐσχατιὰς τὰς τοιαύτας. ἧς καὶ ἡ ἰνδικὴ
καὶ ἡ ἰβηρία λέγοιτ᾽ ἂν κατά γε τὴν τοιαύτην ἀπόφασιν. τίς οὖν ἡ πιθανότης τῆς αἰτιολογίας. ἐν
γὰρ περιφορᾷ συνεχεῖ τε καὶ ἀδιαλείπτῳ τοῦ ἡλίου, τίς ἂν εἴη καταστροφὴ, τό τε τάχος τῆς παραλ-
λαγῆς πάντα χοῦ ἴσον. ἄλλως τε παρὰ τὴν ἐνάργειάν ἐστι τὰ ἔσχατα τῆς ἰβηρίας, ἢ τῆς μαυρουσίας
τὰ πρὸς δύσιν, ξηρὰ λέγειν ἅπερ πάντων μάλιστα. καὶ τὸ περιέχον εὔκρατον ἔχειν, καὶ πλείστων ὑδάτων
εὐπορεῖ. εἰ δὲ τὸ καταστρέφειν τοιοῦτον εἴληπται, ὅτι ἐνταῦθα τὰ ὕστατα τῆς οἰκουμένης ὑπὲρ γῆς γί-
νεται, τί τοῦτο συντείνει πρὸς ξηρασίαν. καὶ γὰρ ἐνταῦθα καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις τόποις τῆς οἰκουμένης τοῖς
ταυτοκλινέσι, τὸν ἴσον διαλιπὼν χρόνον τὸν τῆς νυκτὸς, ἐπάνεισι πάλιν καὶ θερμαίνει τὴν γῆν. ἔστι δέ
που αὐτόθι καὶ ἀσφάλτου πηγή. καὶ χαλκωρυχίας. καὶ σκορπίων δὲ καὶ πτηνῶν καὶ ἀπτέρων λέ-
γεται πλῆθος. μεγέθει δὲ ἑπτὰ σπονδύλων. ὁμοίως δὲ καὶ φαλάγγια καὶ μεγέθει καὶ πλήθει διαφέροντα.
σαύρας δὲ διπήχεις φασίν. ἐν μὲν οὖν τῇ παρωρείᾳ λίθους εὑρίσκεσθαι φασὶ τοὺς λυχνίτας καὶ καρχη-
δονίους λεγομένους. ἐν δὲ τοῖς πεδίοις ὀστρακίων καὶ χηραμύδων πλῆθος. οἷον ἐν τοῖς περὶ τὸν ἄμμωνος
λόγοις εἰρήκαμεν. καὶ δένδρον δέ ἐστι μελίλωτον καλούμενον. ἐξ οὗ σκευάζουσιν οἶνον. τινὲς δ᾽ αὐτῶν καὶ
δικάρπους ἔχουσι τὴν γῆν. καὶ δύο θεριστικοὺς καρποῦνται. τὰ μὲν, θερινά. τὰ δὲ, ἐαρινά. ἔστι δὲ ἡ καλά-
μη πεντάπηχυς τὸ ὕψος. πάχος δὲ τοῦ μικροῦ δακτύλου. τὸν δὲ καρπὸν διακοσίῳ καὶ τετρακοντάχουν
ἀποδίδωσι. τοῦ δὲ ἔαρος οὐδὲ σπείρουσιν. ἀλλὰ παλιούροις συνδεδεμέναις ἐπικατεψηφίσαντες τὴν χώραν.
τῷ ἐκπεσόντι στάχυϊ κατὰ τὸν θερισμὸν ἀρκοῦνται. τελεσικαρπεῖ γὰρ τὸν θερινὸν καρπόν. διὰ δὲ τὸ
πλῆθος τῶν θηρίων κνημῖδας ἔχοντες ἐργάζονται. καὶ τἄλλα δὲ μέρη διφθεροῦνται. καθεύδοντες
δὲ περιχρίουσι τοὺς κλινόποδας σκορόδοις, τῶν σκορπίων χάριν. καὶ παλιούροις περιδοῦσιν. ἦν δὲ τῇ
παραλίᾳ ταύτῃ πόλις ἰὼλ ὄνομα. ἣν ἐπικτίσας ἰούβας ὁ τοῦ πτολεμαίου πατὴρ μετωνόμασε καί-
σάρειαν, ἔχουσαν καὶ λιμένα. καὶ πρὸ τοῦ λιμένος νησίον. μεταξὺ δὲ τῆς καισαρείας καὶ τοῦ τρητοῦ μέ-
γας ἐστὶ λιμὴν, ὃν σάρδαν καλοῦσι. ταῦτα δ᾽ ἐστὶν ὅριον τῆς ὑπὸ τῷ ἰούβᾳ καὶ τῆς ὑπὸ ῥωμαίοις. πολυ-
τρόπως γὰρ οἱ μερισμοὶ γεγόνασι τῆς χώρας, ἅτε τῶν νεμομένων αὐτὴν πλειόνων γενομένων. καὶ τῶν
ῥωμαίων ἄλλοτ᾽ ἄλλως τούτων, τοῖς μὲν, φίλοις χρωμένων. τοῖς δὲ, καὶ πολεμίοις. ὥς τε καὶ ἀφαιρεῖσθαι
καὶ χαρίζεσθαι συνέβαινεν ἄλλοις ἄλλα, καὶ οὐ τὸν αὐτὸν τρόπον. ἦν δὲ ἡ μὲν πρὸς τῇ μαυρουσίᾳ, προ-
σοδικωτέρα τε καὶ δυναμικωτέρα. ἡ δὲ πρὸς τῇ καρχηδονίᾳ καὶ μασαισυλίων ἀνθηροτέρα τε καὶ
κατεσκευασμένη βέλτιον. καίπερ κεκακωμένη διὰ τὰ καρχηδόνια τὸ πρῶτον. ἔπειτα διὰ τὸν πρὸς ἰου-
γύρθαν πόλεμον. ἐκεῖνος γὰρ ἀδάρβαλα ἐκπολιορκήσας ἐν ἰτύκῃ καὶ ἀνελὼν φίλον ὄντα ῥωμαίων, ἐνέπλη-
σε τὴν χώραν πολέμου. εἶτ᾽ ἄλλοι ἐπ᾽ ἄλλοις συνέστησαν πόλεμοι. τελευταῖος δὲ ὁ πρὸς σκηπίωνα καίσαρι
τῷ θεῷ συστάς. ἐν ᾧ καὶ ἰούβας ἀπέθανε. συνηφανίσθησαν δὲ τοῖς ἡγεμόσι καὶ αἱ πόλεις. τισιαοῦς τε
καὶ οὔατα καὶ θάλα. ἔτι δὲ καὶ κάψα τὸ γαζοφυλάκιον τοῦ ἰουγούρθα. καὶ ζάκμα. καὶ ζίγχα. καὶ πρὸς
αἷς κατεπολέμησε καίσαρ σκηπίωνα ὁ θεός. πρὸς ῥουσπῖνον μὲν πρῶτον νικῶν. εἶτα πρὸς οὐζίτους. εἶτα
πρὸς θάψῳ. καὶ τῇ πλησίον λίμνῃ καὶ ταῖς ἄλλαις. πλησίον δὲ καὶ ζέλλα καὶ ἀχόλλα. ἐλεύθεραι πό-
λεις. εἷλε δ᾽ ἐξ ἐφόδου καίσαρ τὴν νῆσον. καὶ θέναι πολίχνιον ἐπιθαλαττίδιον. τούτων πασῶν αἱ μὲν,
τελέως ἠφανίσθησαν. αἱ δ᾽ ἡμίσπαστοι κατελείφθησαν. φαραὶ δ᾽ οἱ σκηπίωνος ἱππεῖς ἐνέπρησαν. μετὰ
δ᾽ οὖν τὴν τὸν ἡ μασυλιαίων ἐστὶ καὶ ἡ καρχηδονίων παραπλησία χώρα. κίρτα τέ ἐστιν ἐν μεσογαίᾳ. τὸ
μασανάσσου καὶ τῶν ἑξῆς διαδόχων βασίλειον. πόλις εὐερκεστάτη. κατεσκευασμένη καλῶς τοῖς πᾶσι. καὶ
μάλιστα ὑπὸ μικίψα, ὅς τις ἕλληνας συνῴκισεν ἐκεῖ. καὶ τοσαύτην ἐποίησεν, ὥστ᾽ ἐκπέμπειν μυρί-
ους ἱππέας. διπλασίους δὲ πεζούς. ἥ τε δὴ κίρτα ἐνταῦθα. καὶ οἱ δύο ἱππῶνες, ὁ μὲν, πλησίον ἰτύκης.
ὁ δὲ, ἀπωτέρω πρὸς τῇ τρητῷ μᾶλλον, ἄμφω βασίλεια. ἡ δὲ ἰτύκη δευτέρα μετὰ καρχηδόνα τῷ μεγέθει
καὶ τῷ ἀξιώματι. καταλυθείσης δὲ τῆς καρχηδόνος, ἐκείνη ἦν ὡς ἂν μητρόπολις τοῖς ῥωμαίοις. καὶ ὁρμη-
τήριον πρὸς τὰς ἐν λιβύῃ πράξεις. ἵδρυται δ᾽ ἐν τῷ αὐτῷ κόλπῳ τῷ καρχηδονιακῷ, πρὸς θατέρῳ
τῶν ἀκρωτηρίων τῶν ποιούντων τὸν κόλπον. ὧν τὸ μὲν πρὸς τῇ ἰτύκῃ, καλοῦσιν ἀπολλώνιον. θάτερον
δ᾽ ἑρμαίαν. καὶ εἰσὶν ἐν ἐπόψει ἀλλήλαις αἱ πόλεις. ῥεῖ δὲ τῆς ἰτύκης πλησίον ὁ βαγάδρας ποταμός. εἰσὶ
δ᾽ ἀπὸ τρητοῦ μέχρι καρχηδόνος στάδιοι δισχίλιοι πεντακόσιοι, οὐδὲ τοῦθ᾽ ὁμολογεῖται τὸ διάστημα. οὔ τε
τὸ μέχρι σύρτεων. ἡ καρχηδὼν δὲ ἐπὶ χερρονήσου τινὸς ἵδρυται. περιγραφούσης κύκλον τριακοσίων
ἑξήκοντα σταδίων ἔχοντα τεῖχος. οὗ τὸ ἑξηκοντάστάδιον μῆκος αὐτὸς ὁ αὐχὴν ἐπέχει. καθήκων ἀπὸ θα-
λάττης ἐπὶ θάλατταν. ὅπου τοῖς καρχηδονίοις ἦσαν αἱ τῶν ἐλεφάντων στάσεις. καὶ τόπος εὐρυχωρής.
κατὰ μέσην δὲ τὴν πόλιν ἡ ἀκρόπολις. ἣν ἐκάλουν βύρσαν. ὀφρὺς ἱκανῶς ὀρθία. κύκλῳ περιοικου-
μένη. κατὰ δὲ τὴν κορυφὴν ἔχουσαν ἀσκληπιεῖον. ὅπερ κατὰ τὴν ἅλωσιν ἡ γυνὴ τοῦ ἀσδρούβα συνέπρη-
σεν αὐτῇ. ὑπόκεινται δὲ τῇ ἀκροπόλει οἵ τε λιμένες καὶ ὁ κώθων. νησίον περιφερὲς εὐρίπῳ περιε-
χόμενον. ἔχοντι νεωσοίκους ἑκατέρωθεν κύκλῳ. κτίσμα δ᾽ ἐστὶ διδοῦς. ἀγαγούσης ἐκ τύρου λαόν. οὕτω δ᾽
εὐτυχὴς ἡ ἀποικία τοῖς φοίνιξιν ὑπῆρξε καὶ αὕτη, καὶ ἡ μέχρι τῆς ἰβηρίας τῆς τε ἄλλης καὶ τῆς ἔξω στη-

λων, ὥς τε καὶ τῆς εὐρώπης ἔτι νῦν τὴν ἀρίστην νέμονται φοίνικες κατὰ τὴν ἤπειρον καὶ τὰς προσεχεῖς νήσους. τήν τε λιβύην κατεκτήσαντο πᾶσαν ὅσην μὴ νομαδικῶς οἷον τ' ἦν οἰκεῖν, ἀφ' ἧς δυνάμεως πόλιν τε ἀντίπαλον τῇ ῥώμῃ κατεσκεύασαν. καὶ τρεῖς ἐπολέμησαν πρὸς αὐτοὺς μεγάλους πολέμους. γένοιτο δ' ἂν εὔδηλος ἡ δύναμις αὐτῶν ἐκ τοῦ ὑστάτου πολέμου ἐν ᾧ κατελύθησαν ὑπὸ σκιπίωνος τοῦ αἰμυλιανοῦ. καὶ ἡ πόλις ἄρδην ἠφανίσθη. ὅτε γὰρ ἤρξαντο πολεμεῖν τοῦτον τὸν τρόπον, πόλεις μὲν εἶχον τριακοσίας ἐν τῇ λιβύῃ. ἀνθρώπων δ' ἐν τῇ πόλει μυριάδας ἑβδομήκοντα. πολιορκούμενοι δὲ καὶ ἀναγκασθέντες τρέπεσθαι πρὸς ἔνδοσιν, πανοπλιῶν μὲν ἔδοσαν μυριάδας εἴκοσι. καταπελτικὰ δὲ ὄργανα τρισχίλια, ὡς οὐ πολεμηθησόμενοι. κριθέντες δὲ πάλιν τοῦ ἀναπολεμεῖν, ἐξαίφνης ὁπλοποιΐαν συνεστήσαντο. καὶ ἑκάστης ἡμέρας ἀνεφέροντο θυρεοὶ μὲν ἑκατὸν καὶ τετταράκοντα πεπηγότες. μάχαιραι δὲ τριακόσιαι. καὶ λόγχαι πεντακόσιαι. χίλια δὲ βέλη καταπελτικά. τρίχα δὲ τοῖς καταπέλταις αἱ θεράπαιναι παρεῖχον. ἔτι τοίνυν ναῦς ἔχοντες δώδεκα ἐξ ἐτῶν πεντήκοντα κατὰ τὰς ἐν τῷ δευτέρῳ πολέμῳ συνθήκας. τότε καίπερ ἤδη συμπεφευγότες εἰς τὴν βύρσαν, ἐν δίμηνῳ κατεσκευάσαντο ναῦς εἴκοσι καὶ ἑκατὸν καταφράκτους. καὶ τοῦ στόματος τοῦ κώθωνος φρουρουμένου, διώρυξαν ἄλλο στόμα. καὶ προῆλθεν αἰφνιδίως ὁ στόλος. ὕλη γὰρ ἦν ἀποκειμένη παλαιά. καὶ τεχνιτῶν πλῆθος προσεδρεῦον καὶ σιταρκούμενον δημοσίᾳ. τοιαύτη δ' οὖσα καρχηδὼν ὅμως ἑάλω καὶ κατεσκάφη. τὴν δὲ χώραν ἐπαρχίαν ἀπέδειξαν οἱ ῥωμαῖοι τὴν ὑπὸ τοῖς καρχηδονίοις. τῆς δὲ, μασσανάσσην ἀπέδειξαν κύριον. καὶ τοὺς ἀπογόνους τοὺς περὶ μικίψαν. μάλιστα γὰρ ἐσπουδάσθη παρὰ τοῖς ῥωμαίοις ὁ μασσανάσσης διὰ τὴν ἀρετὴν καὶ φιλίαν. καὶ γὰρ δὴ καὶ οὗτός ἐστιν ὁ τοὺς νομάδας πολιτικοὺς κατασκευάσας καὶ γεωργούς. ἔτι δ' ἀντὶ τοῦ λῃστεύειν διδάξας στρατεύειν. ἴδιον γάρ τοι τοῖς ἀνθρώποις συνέβη τούτοις. χώραν γὰρ οἰκοῦντες εὐδαίμονα πλὴν τοῦ θηρία πλεονάζειν, ἐάσαντες ἐκφθείρειν ταῦτα, καὶ τὴν γῆν ἐργάζεσθαι μετ' ἀδείας, ἐπ' ἀλλήλους ἐτρέποντο. τὴν δὲ γῆν τοῖς θηρίοις ἀφεῖσαν. οὕτω δ' αὐτοῖς συνέβαινε πλάνητα καὶ μετανάστην βίον ζῆν. μηδὲν ἧττον τῶν ἀπὸ ἀπορείας καὶ λυπρότητος τόπων ἢ ἀέρων εἰς τοῦτο περιισταμένων τὸν βίον, ὥστε καὶ ἴδιον τοῦτ' εὑρίσκεσθαι τοὔνομα τοὺς μασαισυλίους. καλοῦνται γὰρ νομάδες. ἀνάγκη δὲ τοὺς τοιούτους εὐτελεῖς εἶναι τὸν βίον. καὶ τὸ πλέον ῥιζοφάγους ἢ κρεωφάγους. γάλακτι δὲ καὶ τυρῷ τρεφομένους. ἠρημωμένης δ' οὖν ἤδη πολὺν χρόνον τῆς καρχηδόνος, καὶ σχεδόν τι τὸν αὐτὸν χρόνον ὅνπερ καὶ κόρινθος, ἀνελήφθη πάλιν περὶ τοὺς αὐτοὺς χρόνους ὑπὸ καίσαρος τοῦ θεοῦ. πέμψαντος ἐποίκους ῥωμαίων τοὺς προαιρουμένους καὶ τῶν στρατιωτῶν τινάς. καὶ νῦν εἴ τις ἄλλη καλῶς οἰκεῖται τῶν ἐν λιβύῃ πόλεων. κατὰ μέσον δὲ τὸ στόμα τοῦ καρχηδονίου κόλπου, νῆσός ἐστι κόρσουρα. ἀντίπορθμος δ' ἐστὶν ἡ σικελία τοῖς τόποις τούτοις ἡ κατὰ λιλύβαιον. ὅσον ἐν διαστήματι χιλίων καὶ πεντακοσίων σταδίων. τοσοῦτον γάρ φασι τὸ ἐκ λιλυβαίου μέχρι καρχηδόνος. οὐ πολὺ δὲ τῆς κορσούρας διέχουσιν, οὐδὲ τῆς σικελίας ἄλλαι τε νῆσοι καὶ αἰγίμουρος. διάπλους δ' ἐστὶν ἐκ καρχηδόνος ἑξήκοντα σταδίων εἰς τὴν προσεχῆ περαίαν. ὅθεν εἰς νέφεριν ἀνάβασις σταδίων ἑκατὸν εἴκοσι. πόλιν δ' ἐρυμνὴν ἐπὶ πέτρας ᾠκισμένην. ἐν αὐτῷ δὲ τῷ κόλπῳ ἐν ᾧπερ καὶ ἡ καρχηδών, τύνις ἐστὶ πόλις. καὶ θερμὰ καὶ λατομίαι τινὲς καὶ ἐπ' αὐτὴν πόλιν ὁμώνυμος. εἶθ' ἡ ἑρμαία ἄκρα τραχεῖα εἶτα νεάπολις. εἶτ' ἄκρα ταφῖτις. καὶ ἐπ' αὐτῇ λόφος ἀσπὶς καλούμενος ἀπὸ τῆς ὁμοιότητος. ὅνπερ συνῴκισεν ὁ τῆς σικελίας τύραννος ἀγαθοκλῆς. καθ' ὃν καιρὸν ἐπέπλευσε τοῖς καρχηδονίοις. συγκατεσπάσθησαν δὲ τῇ καρχηδονίᾳ ὑπὸ ῥωμαίων αἱ πόλεις αὗται. ἀπὸ δὲ τῆς ταφίδος ἐν τετρακοσίοις σταδίοις νῆσός ἐστι κόρσουρα κατὰ σελινοῦντα τῆς σικελίας ποταμόν. καὶ πόλιν ἔχουσα ὁμώνυμον, ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα σταδίων οὖσα τὴν περίμετρον. διέχουσα τῆς σικελίας περὶ ἑξακοσίους σταδίους. ἔστι δὲ καὶ μελίτη νῆσος ἐν πεντακοσίοις σταδίοις ἀπὸ τῆς κορσούρας. εἶτα ἀδρύμη πόλις. ἐν ᾗ καὶ νεώρια ἦν. εἶθ' αἱ ταριχεῖαι λεγόμεναι, νησία πολλὰ καὶ πυκνά. εἶτα θάψος πόλις. καὶ μετὰ ταύτην νῆσος πελαγία λοπάδουσα. εἶτα ἄκρα ἄμμωνος βαλίθωνος πρὸς θυννοσκοπίαν. εἶτα θαῖνα πόλις περὶ τὴν ἀρχὴν κειμένη τῆς μικρᾶς σύρτεως. πολλαὶ δ' εἰσὶ καὶ ἄλλαι μεταξὺ πολίχναι οὐκ ἄξιαι μνήμης. παράκειται δὲ τῇ ἀρχῇ τῆς σύρτεως νῆσος παραμήκης, ἡ κέρκιννα εὐμεγέθης. ἔχουσα ὁμώνυμον πόλιν. καὶ ἄλλη ἐλάττων κερκιννῖτις. συνεχὴς δ' ἐστὶν ἡ μικρὰ σύρτις. ἣν καὶ λωτοφαγῖτιν σύρτιν λέγουσιν. ἔστι δ' ὁ μὲν κύκλος τοῦ κόλπου τούτου, σταδίων χιλίων ἑξακοσίων. τὸ δὲ πλάτος τοῦ στόματος ἑξακοσίων καθ' ἑκατέραν ἄκραν τὴν ποιοῦσαν τὸ στόμα, προσεχεῖς εἰσὶν νῆσοι τῇ ἠπείρῳ ἥ τε λεχθεῖσα κέρκιννα καὶ ἡ μῆνιγξ. πάρισος τοῖς μεγέθεσι. τὴν δὲ μήνιγγα νομίζουσιν εἶναι τὴν τῶν λωτοφάγων γῆν. τὴν ὑφ' ὁμήρου λεγομένην. καὶ δείκνυταί τινα σύμβολα. καὶ βωμὸς ὀδυσσέως καὶ αὐτὸς ὁ καρπός. πολὺ γάρ ἐστι τὸ δένδρον ἐν αὐτῇ τὸ καλούμενον λωτὸν ἔχον ἥδιστον καρπόν. πλείους δ' εἰσὶν ἐν αὐτῇ πολίχναι. μία δ' ὁμώνυμος τῇ νήσῳ. καὶ ἐν αὐτῇ δὲ τῇ σύρτει πολίχναι τινές εἰσι. κατὰ δὲ τὸν μυχὸν ἔστι παμμέγεθες ἐμπορεῖον. ποταμὸν ἔχον ἐμβάλλοντα εἰς τὸν κόλπον. διατείνει δὲ μέχρι δεῦρο τὰ τῶν ἀμπώτεων πάθη καὶ τῶν πλημμυρίδων. καθ' ὃν καιρὸν ἤδη τὴν θήραν τῶν ἰχθύων ἤδη πηδῶσιν οἱ πρόσχωροι κατὰ σπουδὴν θέοντες. μετὰ δὲ τὴν σύρτιν, ζοῦχις ἐστὶ λίμνη σταδίων τετρακοσίων.

στενὸν ἔχουσα εἴσπλουν. καὶ παρ' αὐτὴν πόλις ὁμώνυμος. πορφυροβαφεῖα ἔχουσα καὶ ταριχεῖας παν
τοδαπάς. εἶτ' ἄλλη λίμνη πολὺ ἐλάττων. καὶ μετὰ ταύτην ἀβρότονον πόλις. καὶ ἄλλαι τινές, συνεχῶς δὲ νεά
πολις, ἣν καὶ λέπτιν καλοῦσιν. ἐντεῦθεν δ' ἐστὶ δίαρμα τῶν λοκρῶν τῶν ἐπιζεφυρίων τρισχίλιοι ἑξακόσιοι
στάδιοι. ἑξῆς δ' ἐστὶ ποταμός. καὶ μετὰ ταῦτα διατείχισμά τι ὃ ἐποίησαν καρχηδόνιοι. γεφυροῦντες βά
θρά τινα εἰς τὴν χώραν ἀνέχοντα. εἰσὶ δὲ καὶ ἀλίμενοί τινες ἐνταῦθα τόποι. τῆς ἄλλης παραλίας ἐχούσης
λιμένας. εἶτ' ἄκρα ὑψηλὴ καὶ ὑλώδης, ἀρχὴ τῆς μεγάλης σύρτεως. καλοῦσι δὲ κεφαλάς. εἰς ταύτην δὲ
τὴν ἄκραν ἐκ καρχηδόνος, στάδιοι εἰσὶ μικρῷ πλείους τῶν πεντακισχιλίων. ὑπέρκειται δὲ τῆς ἀπὸ καρ
χηδόνος παραλίας μέχρι κεφαλῶν, καὶ μέχρι τῆς μασσαισυλίων καὶ τῶν λιβοφοινίκων γῆς, μέχρι τῆς
τῶν γετούλων ὀρεινῆς, ἤδη λιβυκῆς οὔσης. ἡ δ' ὑπὲρ τῶν γετούλων ἐστὶν ἡ τῶν γαραμαντῶν γῆ παράλληλος
ἐκείνοις. ὅθεν οἱ καρχηδόνιοι κομίζονται λίθοι. τοὺς δὲ γαράμαντας ἀπὸ τῶν αἰθιόπων καὶ τῶν παρω
κεανιτῶν ἀφεστάναι φασὶν ἡμερῶν ἐννέα, ἢ καὶ δέκα ὁδῶν. τοῦ δὲ ἄμμωνος καὶ πεντεκαίδεκα. μεταξὺ δὲ
τῆς γετούλων καὶ τῆς ἡμετέρας παραλίας, πολλὰ μὲν πεδία. πολλὰ δὲ ὄρη καὶ λίμναι μεγάλαι καὶ
ποταμοί. ὧν τινὲς καὶ καταδύοντες ὑπὸ γῆς ἀφανεῖς γίνονται. λιτοὶ δὲ σφόδρα τοῖς βίοις εἰσὶ καὶ
τῷ κόσμῳ. πολυγύναικες δὲ, καὶ πολύπαιδες. τἄλλα δὲ ἐμφερεῖς τοῖς νομάσι τῶν ἀράβων. καὶ ἵπποι δὲ
καὶ βόες μακροτραχηλότεροι τῶν παρ' ἄλλοις. ἱπποφόρβια δ' ἐστὶν ἐσπουδασμένα διαφερόντως τοῖς βα
σιλεῦσιν. ὥστε καὶ ἀριθμὸν ἐξετάζεσθαι πώλων κατ' ἔτος εἰς μυριάδας δέκα. τὰ δὲ πρόβατα γάλακτι
καὶ κρέασιν ἐκτρέφεται. καὶ μάλιστα πρὸς τοῖς αἰθίοψι. τοιαῦτα μὲν τὰ ἐν τῇ μεσογαίᾳ. ἡ δὲ μεγάλη σύρ
τις, τὸν κύκλον ἔχει σταδίων ἐννακοσίων τριάκοντά που. τὴν δ' ἐπὶ τὸν μυχὸν διάμετρον, χιλίων πεντα
κοσίων. τοσοῦτον δέ που καὶ τοῦ στόματος πλάτος. ἡ χαλεπότης δὲ ταύτης τῆς σύρτεως καὶ τῆς μικρᾶς,
ὅτι πολλαχοῦ τεναγώδης ἐστὶν ὁ βυθὸς κατὰ τὰς ἀμπώτεις καὶ τὰς πλημμυρίδας, συμβαίνει τισὶν
ἐμπίπτειν εἰς τὰ βράχη καὶ καθίζειν. σπάνιον δ' εἶναι τὸ σωζόμενον σκάφος. διόπερ πόρρωθεν τὸν
παράπλουν ποιοῦνται. φυλαττόμενοι μὴ ἐμπέσοιεν εἰς τοὺς κόλπους ὑπ' ἀνέμων ἀφύλακτοι ληφθέν
τες. τὸ μέντοι παρακίνδυνον τῶν ἀνθρώπων ἁπάντων διαπειρᾶσθαι ποιεῖ. καὶ μάλιστα τῶν παρὰ γῆς
περίπλων. εἰσπλέοντι δὲ τὴν μεγάλην σύρτιν ἐν δεξιᾷ μετὰ τὰς κεφαλάς, ἔστι λίμνη τριακοσίων που
σταδίων τὸ μῆκος. ἑβδομήκοντα δὲ τὸ πλάτος, ἐκδιδοῦσα εἰς τὸν κόλπον. ἔχουσα καὶ νησία καὶ ὕφορμον
πρὸ τοῦ στόματος. μετὰ δὲ τὴν λίμνην τόπος ἐστὶν ἀσπίς. καὶ λιμὴν κάλλιστος τῶν ἐν τῇ σύρτῃ. συνεχὴς δὲ
ὁ εὐφράντης πύργος ἐστίν. ὅριον τῆς πρότερον καρχηδονίας γῆς, καὶ τῆς κυρηναίας τῆς ὑπὸ πτολε-
μαίῳ. εἶτ' ἄλλος τόπος χάραξ καλούμενος. ᾧ ἐμπορείῳ ἐχρῶντο καρχηδόνιοι. κομίζοντες οἶνον. ἀντιφορ
τιζόμενοι δὲ ὀπὸν καὶ σίλφιον παρὰ τῶν ἐκ κυρήνης λάθρα κομιζόντων. εἶθ' οἱ φιλαίνων βωμοί. καὶ
μετὰ τούτους αὐτόμαλα φρούριον. φυλακὴν ἔχον. ἱδρυμένον κατὰ τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου παντός. ἔστι
δ' ὁ διὰ τοῦ μυχοῦ τούτου παράλληλος. τοῦ μὲν δι' ἀλεξανδρείας μικρῷ νοτιώτερος χιλίοις σταδίοις.
τοῦ δὲ διὰ καρχηδόνος ἐλάττοσιν, ἢ δισχιλίοις. πίπτοι δ' ἂν τῇ μὲν καθ' ἡρώων πόλει τὴν ἐν τῷ μυχῷ τοῦ ἀ
ραβίου κόλπου. τῇ δὲ κατὰ τὴν μεσόγαιαν τῶν μασσαισυλίων, καὶ τῶν μαυρουσίων ὅπου τὸ λειπόμε
νον ἤδη τῆς παραλίας ἐστὶν εἰς πόλιν βερενίκην, στάδιοι ἐννακισχίλιοι πεντακόσιοι. ὑπέρκεινται δὲ τοῦ
μήκους. τοῦ δὲ πλάτους παρήκοντες, καὶ μέχρι τῶν φιλαίνου βωμῶν, οἱ προσαγορευόμενοι νασαμῶ
νες, λιβυκὸν ἔθνος. ἔχει δὲ τὸ μεταξὺ διάστημα, καὶ λιμένας οὐ πολλούς. ὑδρεῖα δὲ σπάνια. ἔστι δὲ ἄκρα
λεγομένη ψευδοπενιάς. ἐφ' ἧς ἡ βερενίκη τὴν θέσιν ἔχει. παρὰ λίμνην τινὰ τριτωνίδα. ἐν ᾗ μάλιστα
νησίον ἐστὶ, καὶ ἱερὸν τῆς ἀφροδίτης ἐν αὐτῷ. ἔστι δὲ καὶ λιμὴν ἑσπερειδῶν. καὶ ποταμὸς ἐμβάλλει λά
θων. ἐνδοτέρω δὲ τῆς βερενίκης ἐστὶ τὸ μικρὸν ἀκρωτήριον λεγόμενον βόρειον. ὃ ποιεῖ τὸ στόμα τῆς σύρ-
τεως πρὸς τὰς κεφαλάς. κεῖται δ' ἡ βερενίκη κατὰ τὰ ἄκρα τῆς πελοποννήσου κατὰ τὸν καλούμε-
νον ἰχθὺν. καὶ ἔτι κατὰ τὴν ζάκυνθον. ἐν διάρματι σταδίων τρισχιλίων ἑξακοσίων. ἐκ ταύτης τῆς πό
λεως πενθημεραῖος πεζῇ περιώδευσε τὴν σύρτιν μάρκος κάτων. καθηγούμενος στρατιᾶς πλειόνων, ἢ μυρίων
ἀνδρῶν. ὃ εἰς μέρη διελὼν τῶν ὑδρείων χάριν. ὥδευσε δὲ πεζὸς ἐν ἄμμῳ βαθείᾳ καὶ καύμασι. μετὰ δὲ βε
ρενίκην πόλις ἐστὶ τεύχειρα. ἣν καὶ ἀρσινόην καλοῦσιν. εἶθ' ἡ βάρκη πρότερον. νῦν δὲ πτολεμαΐς. εἶτα
φυκοῦς ἄκρα. ταπεινὴ μὲν, πλεῖστον δὲ κεκλιμένη πρὸς ἄρκτον παρὰ τὴν λιβυκὴν παραλίαν. κεῖται δὲ
κατὰ ταίναρον τῆς λακωνικῆς ἐν διάρματι δισχιλίων ὀκτακοσίων. ἔστι δὲ καὶ πολίχνιον ὁμώνυμον
τῇ ἄκρᾳ. οὐ πολὺ δὲ τοῦ φυκοῦντος ἀπέχει τὸ τῶν κυρηναίων ἐπίνειον ἡ ἀπολλωνιάς, ὅσον ἑκατὸν καὶ ἑβδομή
κοντα σταδίοις. τῆς δὲ βερενίκης χιλίοις. τῆς δὲ κυρήνης ὀγδοήκοντα. πόλεως μεγάλης ἐν τραπεζοει
δεῖ πεδίῳ κειμένης, ὡς ἐκ τοῦ πελάγους ἑωρῶμεν αὐτήν. ἔστι δὲ θηραίων κτίσμα λακωνικῆς νήσου. ἣν καὶ
καλλίστην ὠνόμαζον τὸ παλαιὸν, ὡς φησὶ καὶ καλλίμαχος.

» Καλλίστη τὸ πάροιθε. τὸ δ' ὕστερον οὔνομα θήρη.

» Μήτηρ εὐίππου πατρίδος ἡμετέρης.

. Κεῖται δὲ τὸ τῶν κυρηναίων ἐπίνειον, κατὰ τὸ ἑσπέρειον ἄκρον, τῆς κρήτης. τὸ τοῦ κριοῦ μέτωπον ἐν

διάρματι χιλίων σταδίων. ὁ δὲ πλοῦς λευκονότῳ. λέγεται δὲ ἡ κυρήνη κτίσμα βάττου. πρόγονον δὲ τοῦτον ἑαυτοῦ φάσκει καλλίμαχος. ηὔξηται δὲ διὰ τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας. καὶ γὰρ ἱπποτρόφος ἐστὶν ἀρίστη. καὶ καλλίκαρπος, καὶ πολλοὺς ἄνδρας ἀξιολόγους ἔσχε. καὶ δυναμένους ἀξιολόγως ἐλευθερίας προΐστασθαι. καὶ πρὸς τοὺς ὑπερκειμένους βαρβάρους ἰσχυρῶς ἀντέχειν. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν αὐτόνομος ἦν ἡ πόλις. εἶτα οἱ τὴν αἴγυπτον κατασχόντες μακεδόνες αὐξηθέντες ἐπέθεντο αὐτοῖς, ἀρξάντων τῶν περὶ θίμβρωνα τῶν ἀνελόντων τὸν ἅρπαλον. βασιλευθέντες δὲ χρόνους τινὰς, εἰς τὴν ῥωμαίων ἐξουσίαν ἦλθον. καὶ νῦν ἐστιν ἐπαρχία τῇ κρήτῃ συνεζευγμένη. τῆς δὲ κυρήνης ἐστὶ περιπόλια, ἥ τε ἀπολλωνία καὶ ἡ βάρκη καὶ ἡ τεύχειρα. καὶ βερενίκη καὶ τὰ ἄλλα πολίχνια τὰ πλησίον. ὁμορεῖ δὲ τῷ κυρηναίῳ ἡ τὸ σίλφιον φέρουσα. καὶ τὸν ὀπὸν τὸν κυρηναϊκὸν ὃν ἐκφέρει τὸ σίλφιον ὀπισθέν. ἐγγὺς δ᾽ ἦλθε τοῦ ἐκλιπεῖν, ἐπελθόντων τῶν βαρβάρων κατὰ ἔχθραν τινὰ καὶ φθειράντων τὰς ῥίζας τοῦ φυτοῦ. εἰσὶ δὲ νομάδες. ἄνδρες δ᾽ ἐγένοντο γνώριμοι κυρηναῖοι. ἀρίστιππός τε ὁ σωκρατικὸς, ὅς τις καὶ τὴν κυρηναϊκὴν κατεβάλετο φιλοσοφίαν. καὶ θυγάτηρ ἀρήτη τοὔνομα, ἥπερ διεδέξατο τὴν σχολήν. καὶ ὁ ταύτην πάλιν διαδεξάμενος υἱὸς ἀρίστιππος, ὁ κληθεὶς μητροδίδακτος. καὶ ἀννίκερος ὁ δοκῶν ἐπανορθῶσαι τὴν κυρηναϊκὴν αἵρεσιν, καὶ παραγαγεῖν ἀντ᾽ αὐτῆς τὴν ἀννικερείαν. κυρηναῖος δ᾽ ἐστὶ καὶ καλλίμαχος. καὶ ἐρατοσθένης. ἀμφότεροι τετιμημένοι παρὰ τοῖς αἰγυπτίων βασιλεῦσιν. ὁ μὲν, ποιητὴς ἅμα καὶ περὶ γραμματικὴν ἐσπουδακώς. ὁ δὲ, καὶ ταῦτα καὶ περὶ φιλοσοφίαν. καὶ τὰ μαθήματα εἴ τις ἄλλος διαφέρων. ἀλλὰ μὴν καὶ καρνεάδης. οὗτοι δὲ τῶν ἐξ ἀκαδημίας ἄριστοι φιλοσόφων ὁμολογοῦνται. καὶ ὁ κρόνος δὲ ἀπολλώνιος ἐκεῖθέν ἐστιν, ὁ τοῦ διαλεκτικοῦ διοδώρου διδάσκαλος τοῦ καὶ αὐτοῦ κρόνου προσαγορευθέντος. μετενεγκάντων τινῶν τὸ τοῦ διδασκάλου ἐπίθετον ἐπὶ τὸν μαθητήν. μετὰ δὲ τὴν ἀπολλωνίαν ἐστὶν ἡ λοιπὴ τῶν κυρηναίων παραλία, μέχρι καταβαθμοῦ σταδίων, δισχιλίων διακοσίων. οὐ πάνυ εὐπαράπλους. καὶ γὰρ λιμένες ὀλίγοι καὶ ὕφορμοι καὶ κατοικίαι, καὶ ὑδρεῖαι. τῶν δὲ μάλιστα ὀνομαζομένων κατὰ τὸν παράπλουν τόπον, τό τε ναύσταθμόν ἐστι. καὶ τὸ ζεφύριον, πρόσορμον ἔχον. καὶ ἄλλο ζεφύριον. καὶ ἄκρα χερρόννησος λιμένα ἔχουσα. κεῖται δὲ κατὰ κύκλον τῆς κρήτης ἐν διάρματι χιλίων καὶ πεντακοσίων σταδίων νότῳ. εἶτα ἡράκλειόν τι ἱερόν. καὶ ὑπὲρ αὐτοῦ κώμη παλίουρος. εἶτα λιμὴν μενέλαος καὶ ἀρδανιξὶς. ἄκρα ταπεινὴ ὕφορμον ἔχουσα. εἶτα μέγας λιμήν. καθ᾽ ὃν ἡ ἐν τῇ κρήτῃ χερρόννησος ἵδρυται. δισχιλίων που σταδίων δίαρμα ἀπολιποῦσα μεταξύ. ὅλη γὰρ σχεδόν τι τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἀντίκειται παράλληλος ἡ κρήτη στενὴ καὶ μακρά. μετὰ δὲ τὸν μέγαν λιμένα ἄλλος λιμὴν πλυνός. καὶ ὑπὲρ αὐτὸν τετραπύργιον. τὸ δὲ λοιπὸν ἤδη μέχρι παραιτονίου. κἀκεῖθεν εἰς ἀλεξάνδρειαν. καλεῖται δὲ ὁ τόπος καταβαθμός. μέχρι δεῦρο ἡ κυρηναία. ἣ καὶ εἴρηται ἡμῖν ἐν τοῖς αἰγυπτιακοῖς. τὴν δ᾽ ὑπερκειμένην ἐν βάθει χώραν τῆς σύρτεως καὶ τῆς κυρηναίας κατέχουσιν οἱ λίβυες, παράλυπον καὶ αὐχμηράν. πρῶτον μὲν οἱ νασαμῶνες. ἔπειτα ψύλλοι. καί τινες γαιτοῦλοι, καὶ γαράμαντες. πρὸς ἕω δ᾽ ἔτι μᾶλλον οἱ μαρμαρίδαι. προσχωροῦντες ἐπὶ πλέον τῇ κυρηναίᾳ. καὶ παρατείνοντες μέχρι ἄμμωνος. τεταρταίους μὲν οὖν φασὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τῆς μεγάλης σύρτεως τοὺς καθ᾽ αὐτὸ μαλακῶς βαδίζοντας, ὡς ἐπὶ χειμερινὰς ἀνατολὰς ἀφικνεῖσθαι. ἔστι δ᾽ ὁ τόπος οὗτος ἐμφερὴς τῷ ἄμμωνι, φοινικοτρόφος τε καὶ εὔυδρος. ὑπέρκειται δὲ τῆς κυρηναίας τῆς πρὸς μεσημβρίαν. μέχρι μὲν σταδίων ἑκατὸν καὶ δενδροφόρος ἐστὶν ἡ γῆ. μέχρι δ᾽ ἄλλων ἑκατὸν σπείρεται μᾶλλον. ὀρυζοτροφεῖ δ᾽ ἡ γῆ διὰ τὸν αὐχμόν. ὑπὲρ δὲ τούτων ἡ τὸ σίλφιον ἔχουσα ἐστίν. εἶθ᾽ ἡ ἀοίκητος καὶ ἡ τῶν γαραμάντων. ἔστι δ᾽ ἡ τὸ σίλφιον φέρουσα, στενὴ καὶ παραμήκης καὶ παράξηρος. μῆκος μὲν ὡς ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς ἰόντι, ὅσον σταδίων χιλίων. πλάτος δὲ τριακοσίων ἢ μικρῷ πλειόνων τὸ γνώριμον. εἰκάζειν μὲν γὰρ πάρεστι συνεχῶς τὴν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου κειμένην, τοιαύτην εἶναι κατά τε τοὺς ἀέρας καὶ τὴν τοῦ φυτοῦ φοράν, ἐπεὶ δ᾽ ἐμπίπτουσιν ἐρημίαι πλείους, τοὺς πάντας τόπους ἴσμεν. παραπλησίως δ᾽ ἀγνοεῖται καὶ τὰ ὑπὲρ τοῦ ἄμμωνος καὶ τῶν αὐάσεων μέχρι τῆς αἰθιοπίας. οὐδ᾽ ἂν ἔχοιμεν λέγειν τοὺς ὅρους οὔτε τῆς αἰθιοπίας. οὔτε τῆς λιβύης. ἀλλ᾽ οὐδὲ τῆς πρὸς αἰγύπτῳ τρανῶς. μήτιγε τῆς πρὸς τῷ ὠκεανῷ. τὰ μὲν οὖν καθ᾽ ἡμᾶς μέρη τῆς οἰκουμένης οὕτω διάκειται. ἐπεὶ δ᾽ οἱ ῥωμαῖοι τὴν ἀρίστην αὐτῆς καὶ γνωριμωτάτην κατέχουσιν, ἅπαντας ὑπερβεβλημένοι τοὺς πρότερον ἡγεμόνας ὧν μνήμην ἴσμεν, ἄξιον διὰ βραχέων καὶ τὰ τούτων εἰπεῖν. ὅτι μὲν οὖν ἐκ μιᾶς ὁρμηθέντες πόλεως τῆς ῥώμης, ἅπασαν τὴν ἰταλίαν ἔσχον διὰ τὸ πολεμεῖν καὶ πολιτικῶς ἄρχειν, εἴρηται. καὶ διότι μετὰ τὴν ἰταλίαν τὰ κύκλῳ προσεκτήσαντο τῇ αὐτῇ ἀρετῇ χρώμενοι. τριῶν δὲ ἠπείρων οὐσῶν, τὴν μὲν εὐρώπην σχεδόν τι πᾶσαν ἔχουσι. πλὴν τῆς ἔξω τοῦ ἴστρου, καὶ τῶν μεταξὺ τοῦ ῥήνου καὶ τοῦ τανάϊδος παρωκεανιτῶν. τῆς δὲ λιβύης ἡ καθ᾽ ἡμᾶς παραλία πᾶσα ὑπ᾽ αὐτοῖς ἐστιν. ἡ δὲ ἄλλη ἀοίκητός ἐστιν. ἢ λυπρῶς καὶ νομαδικῶς οἰκεῖται. ὁμοίως δὲ καὶ τῆς ἀσίας ἡ καθ᾽ ἡμᾶς παραλία πᾶσα ὑποχείριος ἐστιν. εἰ μή τις τὰ τῶν ἀχαιῶν καὶ ζυγῶν καὶ ἡνιόχων ἐν λόγῳ τίθεται. λῃστρικῶς καὶ νομαδικῶς ζώντων ἐν στενοῖς καὶ λυπροῖς χωρίοις. τῆς δὲ μεσογαίας καὶ τῆς ἐν βάθει, τὴν μὲν, ἔχουσιν αὐτοὶ τὴν δὲ, παρθυαῖοι. καὶ ὑπὲρ τούτων βάρβαροι. πρόσεστι ταῖς ἀνατολαῖς καὶ ταῖς ἄρκτοις ἰνδοὶ καὶ βάκτριοι καὶ σκύθαι. εἶτ᾽ ἄραβες καὶ αἰθίοπες. προστίθεται δὲ ἀεί τι παρ᾽ ἐκείνων αὐτοῖς.

ταύτης δὲ τῆς συμπάσης χώρας τῆς ὑπὸ ῥωμαίοις, ἡ μὲν, βασιλεύεται. ἣν δ' ἔχουσιν αὐτοὶ καλέσαντες ἐπαρχίαν. καὶ πέμπουσιν ἡγεμόνας καὶ φορολόγους. εἰσὶ δὲ καὶ ἐλεύθεραι πόλεις, αἱ μὲν, ἐξ ἀρχῆς κατὰ φιλίαν προσελθοῦσαι. τὰς δ' ἠλευθέρωσαν αὐτοὶ κατὰ τιμήν. εἰσὶ δὲ καὶ δυνάσται τινὲς καὶ φύλαρχοι καὶ ἱερεῖς ὑπ' αὐτοῖς. οὗτοι μὲν δὴ ζῶσι κατά τινας πατρίους νόμους. αἱ δ' ἐπαρχίαι διῄρηνται. ἄλλοτε μὲν ἄλλως. ἐν δὲ τῷ παρόντι ὡς καῖσαρ ὁ σεβαστὸς διέταξεν. ἐπεὶ γὰρ ἡ πατρὶς ἐπέτρεψεν αὐτῷ τὴν προστασίαν τῆς ἡγεμονίας, καὶ πολέμου καὶ εἰρήνης κατέστη κύριος διὰ βίου, δίχα διεῖλε πᾶσαν τὴν χώραν. καὶ τὴν μὲν, ἀπέδειξεν ἑαυτοῦ τὴν δὲ τοῦ δήμου, ἑαυτοῦ μὲν, ὅση στρατιωτικῆς φρουρᾶς ἔχει χρείαν. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ βάρβαρος καὶ πλησιόχωρος, τοῖς μήπω κεχειρωμένοις ἔθνεσιν. ἢ λυπρὰ καὶ δυσγεώργητος, ὥσθ' ὑπὸ ἀπορίας τῶν ἄλλων, ὀχυρωμάτων δ' εὐπορίας, ἀφηνιάζειν καὶ ἀπειθεῖν. τῷ δήμῳ δὲ τὴν ἄλλην ὅση εἰρηνική, καὶ χωρὶς ὅπλων ἄρχεσθαι ῥᾳδία. ἑκατέραν δὲ τὴν μερίδα εἰς ἐπαρχίας διένειμε πλείους. ὧν αἱ μὲν, καλοῦνται καίσαρος. αἱ δὲ, τοῦ δήμου. καὶ εἰς μὲν τὰς καίσαρος ἡγεμόνας καὶ διοικητὰς, καῖσαρ πέμπει διαιρῶν ἄλλοτε ἄλλως τὰς χώρας, καὶ πρὸς τοὺς καιροὺς πολιτευόμενος. εἰς δὲ τὰς δημοσίας ὁ δῆμος στρατηγοὺς ἢ ὑπάτους. καὶ αὗται δ' εἰς μερισμοὺς ἄγονται διαφόρους. ἐπειδὰν κελεύῃ τὸ συμφέρον. ἀλλ' ἐν ἀρχαῖς γε διέθηκε ποιήσας ὑπάτους μὲν δύο. λιβύην δ' ὅση ὑπὸ ῥωμαίοις, ἔξω τῆς ὑπὸ ἰούβα μὲν πρότερον. νῦν δὲ πτολεμαίῳ τῷ ἐκείνου παιδί. καὶ ἀσίαν τὴν ἐντὸς ἅλυος καὶ τοῦ ταύρου πλὴν γαλατῶν καὶ τῶν ὑπὸ ἀμύντου γενομένων ἐθνῶν. ἔτι δὲ βιθυνίας καὶ τῆς προποντίδος. δέκα δὲ στρατηγίας κατὰ μὲν τὴν εὐρώπην καὶ τὰς πρὸς αὐτῇ νήσους. τήν τε ἐκτὸς ἰβηρίαν λεγομένην, ὅση περὶ τὸν βαῖτιν ποταμόν καὶ τὸν ἄνα, καὶ τῆς κελτικῆς τὴν ναρβωνῖτιν. τρίτην δὲ σαρδὼ μετὰ κύρνου. καὶ σικελίαν τετάρτην. πέμπτην δὲ καὶ ἕκτην τῆς ἰλλυρίδος τὴν πρὸς τῇ ἠπείρῳ καὶ μακεδονίαν. ἑβδόμην δ' ἀχαΐαν μέχρι θετταλίας καὶ αἰτωλῶν καὶ ἀκαρνανῶν. καί τινων ἠπειρωτικῶν ἐθνῶν. ὅσα τῇ μακεδονίᾳ προσώριστο. ὀγδόην δὲ κρήτην μετὰ τῆς κυρηναίας. ἐνάτην δὲ κύπρον. δεκάτην δὲ βιθυνίαν μετὰ τῆς προποντίδος καὶ τοῦ πόντου τινῶν μερῶν. τὰς δὲ ἄλλας ἐπαρχίας ἔχει καῖσαρ. ὧν εἰς ἃς μὲν πέμπει τοὺς ἐπιμελησομένους ὑπατικοὺς ἄνδρας. εἰς ἃς δὲ στρατηγικούς. εἰς ἃς δὲ καὶ ἱππικούς. καὶ βασιλεῖς δὲ καὶ δυναρχίαι καὶ δυνάσται τῆς ἐκείνου μερίδος καὶ εἰσὶ καὶ ὑπῆρξαν ἀεί.

ΤΕ΄ΛΟΣ.

a α b β c γ d δ e ε f ζ g η h θ i ι k κ l λ m μ n ν
o ξ p ο q π r ρ s ς t τ u υ x φ y χ z ψ.

Omnes sunt quaterniones.

V E N E T I I S I N A E D I B V S
A L D I, E T A N D R E A E
S O C E R I M E N S E
N O V E M B R I
M. D. X V I.

ALDVS M. R.